

القرآن الكريم

पवित्र कुरआन

مختصر تفسير أحسن البيان

(بالملة الهندية)

अहसनुल बयान

तर्जमा

हिन्दी

मौलाना मोहम्मद जूनागढ़ी

तफसीर

हाफिज़ सलाहुद्दीन यूसुफ

हिन्दी तर्जमा व तरतीब

मोहम्मद ताहिर हनीफ



दारुस्सलाम पब्लिशर्स

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

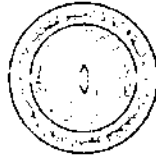
معزز قارئین توجہ فرمائیں!

منہاج السنہ ڈاٹ کام پر تمام ”پی ڈی ایف“ کتب قارئین کے مطالعے اور دعوتی و اصلاحی مقاصد کے لئے اپلوڈ کی جاتی ہیں۔

تنبیہ

کسی بھی کتاب کو تجارتی یا مادی نفع کے حصول کی خاطر استعمال کرنے کی سخت ممانعت ہے، اور ان کتب کو تجارتی یا دیگر مادی مقاصد کے لیے استعمال کرنا اخلاقی، قانونی و شرعی جرم ہے۔

منہاج السنہ النبویہ ﷺ لائبریری ٹیم



مختصر
تفسير أحسن البيان
(باللغة الهندية)

मुख्तसर तफसीर
अहसनुल बयान
हिन्दी

तजमा

मौलाना मोहम्मद जूनागढी

तफसीर

हाफिज़ सलाहुद्दीन यूसुफ

हिन्दी तर्जमा व तरतीब

मोहम्मद ताहिर हनीफ



SALAM Int.

Publishers & Distributors Pvt. Ltd.

Matia Mahal, Urdu Market, Jama Masjid, Delhi -6

Mob: +91 9716172647 Email: ahmedhesham@yahoo.com

Address:

1- Maktaba Darussalam Delhi- 6 Mobile: +91 9716172647

3- Maktaba Tarjuman, Delhi-6. Ph: 011 23273407

4- Idarah Dawat Kitab o Sunnah, Patna-4. +91 9135822076

सलाम इन्टरनेशनल
पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
मटिया महल, चर्च मार्केट, जामा मस्जिद, दिल्ली - ६
Mob:- 9716172647 abu.ehtesham@yahoo.com

प्रकाशक की ओर से

पूरी इंसानियत पर अल्लाह तआला का यह सबसे बड़ा एहसान है कि उसने उनको अपने पाक कलाम कुरआन मजीद के जरिये मुखातब किया और इतना बड़ा इआम उन्हें अता किया जिस पर वे जितना भी फख्र करें कम है। लेकिन अल्लाह के इस कलाम और पैगाम को वही समझ सकता है जो अपने रब के इस अजीम पैगाम की असल रूह को जानता हो, इसकी मिठास को महसूस करता और इसके मआनी और मक़ासिद को समझकर अपना किरदार, अख़ालक़ और जिंदगी को सुधार सके।

अपने रब के सच्चे और पाक कलाम को समझने के लिये कुरआन को समझने का इल्म होना बहुत जरूरी है। इसलिए बहुत समय से यह जरूरत महसूस हो रही थी कि कुरआन मजीद की एक ऐसी मुख़्तसर तफ़सीर, हाशिया और तर्जमा तैयार किया जाये जो सलफ़ सालेहीन के कुरआन को समझने के आधार पर आधारित (मबनी) हो। जिस में आयात की तफ़सीर हदीस पाक और सहाबा رضي الله عنهم के विचारों के मुताबिक हो, जिसे पढ़कर पाठक ताबीलात के फंदों से निकल जाये।

मजकूरा मक़सद के लिये दारुस्सलाम ने उर्दू भाषा में "अहसनुल बयान" के नाम से एक तफ़सीर पेश किया जो बहुत मक़बूल साबित हुई और अब तक उस के अनेक एडीशन निकल चुके हैं والله الحمد والفضل على ذلك।

हिन्दी भाषा में किताब व सुन्नत पर आधारित और असलाफ़ के विचार पर मबनी कुरआन मजीद का कोई तर्जमा और तफ़सीर मुयस्सर नहीं थी। इसलिए पाठकों की गुज़ारिश पर उस तफ़सीर "अहसनुल बयान" का हिन्दी तर्जमा पेश किया जो दो जिल्दों में था और उस के भी दो एडीशन अब तक प्रकाशित हो चुके हैं। फिर पाठकों ने गुज़ारिश की के इसे मुख़्तसर करके एक जिल्द में किया जाये, इसकी भाषा सरल (आसान) की जाये और इसका टीका (तफ़सीर) भी मुख़्तसर किया जाये, इसलिए अब यह मुख़्तसर तफ़सीर एक जिल्द में आप के सामने पेश है। हम शुक्रगुज़ार है जनाब मौलाना मोहम्मद ताहिर साहब के जिन्होंने रात दिन मेहनत करके इसे आप तक पहुँचाया। इसी तरह शुक्रगुज़ार है सैयद अली हैदर के जिन्होंने टाईप सेटिंग का भार संभाला और इसको खूबसूरत बनाया।

अल्लाह से हमारी दुआ है कि वह हमारी इस कोशिश और अमल को क़ुवूलियत बढ़ाये और इस से लोग जहाँ ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठा सकें, वही उसे हम सब के आमालनामा में लिखे। आमीन

मैनेजर

अब्दुल मालिक मुज़ाहिद

अपनी बात

सब तारीफें और शुक्र व एहसान उस अल्लाह अजीम के लिए है जिस ने हम सबको अपनी तमाम मखलूक में सब से बेहतर बनाया और हमारी हिदायत के लिए केवल अम्बिया केराम को ही नहीं भेजा बल्कि आकाश से पाक कलाम भी नाज़िल किया ताकि इंसान उस के आधार पर अपनी जिन्दगी का निज़ाम बना सके। वहयी के नाज़िल होने का यह सिलसिला कुरआन मजीद के उतरने के बाद खत्म हो गया, इस तरह यह कलाम जिसकी आयतें जामे और अजीम हैं, कयामत तक के लिए सभी इंसान और जिन्नात का आखिरी दस्तूर करार पाया।

इस पाक कलाम के साथ जो इंसानी जिंदगी के हर पहलू के लिए यक़्सा रहनुमा और रहबर है, आलिमों और आम लोगों की रूचि उस के नाज़िल होने के समय से ही रही है और जितने उलूम व फ़ुनून, किताब और रिसर्च इस किताब के बारे में किये गये हैं या किये जा रहे हैं वह किसी दूसरी किताब में नहीं किये गये। चूँकि यह अध्यादेश (दस्तावेज़) अल्लाह तआला की ओर लोगों को आमन्त्रित करने और इंसानी समाज के सुधार की बुनियाद है, इसलिए दुनिया की दूसरी बहुत सी जुबानों में उसका तर्जमा किया गया। बल्कि एक-एक भाषा में कई-कई सौ तर्जमों और तफ़ासीर मौजूद हैं। मुस्लिम समुदाय (उम्मह) के आलिमों ने अब और सवाब की नीयत से इसकी सेवा करके बाद में आने वालों के लिए एक बड़ा काम और पूंजी उपलब्ध (मुहय्या) कर दिया है।

हिन्दी भाषा चूँकि इस्लामी संस्कृति और इस्लामी उलूम से काफ़ी दूर रही इसलिए उस में इस्लाम से मुतअल्लिक किताबें बहुत कम लिखी गयीं, इस के विपरीत (खिलाफ़) उर्दू भाषा इस्लामी उलूम और फ़ुनून से मालामाल है।

आज के दौर में कुछ सालों में इस्लामी दावत (शुभ आमन्त्रण) का काम दुनिया की अनेक भाषाओं में बहुत हद तक फैल गया है, इंसानों का एक बड़ा समूह केवल हिन्दी भाषा प्रयोग (इस्तेमाल) करता है, बहुत से मुस्लिम नौजवान और विद्यार्थी (तलबा) हिन्दी भाषा लिखने पढ़ने पर मजबूर हो गये हैं और कुछ इलाकों में केवल हिन्दी बोली और पढ़ी जाती है। इसी तरह इस्लाम धर्म कुबूल करने वाले बहुत सारे साथी हिन्दी के अलावा दूसरी भाषा नहीं जानते, इसलिए बहुत ज़रूरत महसूस की जा रही थी कि कुरआन करीम का एक ऐसा तर्जमा मुख्तसर नोट के साथ हिन्दी भाषा में पेश किया जाये, जिसकी तफ़ासीर और तर्जमा सहीह अहादीस और असलाफ़ के कुरआन को समझने के सिद्धान्त (उसूल) पर आधारित हो। इस

जरूरत के लिए दारुस्सलाम-रियाद ने एक तर्जमा और तफसीर «अहसनुल बयान» के नाम से हिन्दी में पेश किया जो बड़ा मक़बूल हुआ और उस के दो एडीशन प्रकाशित हो गये । लेकिन वह दो जिल्दों में था और उसकी भाषा शुद्ध (खालिस) हिन्दी पर मबनी थी । इसलिए पाठकों की गुजारिश थी कि इसको मुख्तसर और आसान किया जाये । चुनांचि उनकी बार-बार गुजारिश को देखते हुए हम ने इस काम को शुरू किया और अल्लाह के फ़ज़ल व करम से यह मुख्तसर तफसीर और तर्जमा आप के सामने है । हम खास तौर से मोहतरम मौलाना अब्दुल मालिक मुजाहिद के शुक्रगुजार हैं जिन्होंने इस परियोजना (मशरूअ) की इजाजत दी और दारुस्सलाम ने इसे प्रकाशित किया ।

हमारी इस कोशिश में जो कुछ खूबी है वह अल्लाह के करम और उसकी मेहरबानी से है और जो कमी है वह हमारी खुद की कमी का नतीजा है ।

यह जाहिर है कि कुरआन मजीद के अलावा दुनिया की कोई किताब इन्सानी भूल-चूक से खाली नहीं, हम ने पूरी कोशिश की है कि कुरआन मजीद के मआनी को हिन्दी भाषा में नक़ल करने में कोई गलती या कमी न हो, लेकिन इन्सानी भूल-चूक और अपनी इल्मी कमी की वजह से अगर उस में कोई दोष या गलती रह गई हो तो पाठक महोदय (हज़रात) और उल्मा व तलबा से गुजारिश है कि उस से सूचित करें ।

अल्लाह तआला हम सब को अपने पाक कलाम की ख़िदमत (सेवा) करने की तौफ़ीक़ अता करे, हमारी ग़लतियों को माफ़ करे और हमें इज़्लास (विशुद्धता) के साथ इस्लाम के पैग़ाम को आम लोगों तक पहुँचाने की सआदत अता करे । आमीन

मोहम्मद ताहिर हनीफ
रियाद, २९-६-१४२६ हिजरी

अहसनुल बयान की अहम खूसूसियात

यह कुरआन करीम की टीका या मुक़्तसर तफ़सीर "अहसनुल बयान" इस समय जो आप के हाथों में है। इस में अगरचे जगह की कमी के कारण ज़्यादा तफ़सील से काम नहीं लिया गया है, फिर भी यह कोशिश की गयी है कि आम लोगों को कुरआन समझने के लिये और इस के कठिन मक़ाम के लिये जितनी तफ़सीर की ज़रूरत है, उसे मुक़्तसर मगर पूरे मतलब के साथ ज़रूर पेश किया जाये। इस में हमें कहीं तक कामयाबी मिली है, पाठक और इल्म वाले लोग पढ़कर ही इसका पता कर सकते हैं। इसकी दूसरी विशेषताएँ (खूसूसियात) निम्नलिखित हैं :

- ❖ इसाईली, मनगढ़त और जर्ईफ़ रिवायतों को बयान करने से परहेज किया गया है और सिर्फ़ सहीह रिवायतों का ही एहतेमाम किया गया है।
- ❖ आयतों के नुज़ूल के असबाब और उनकी फ़ज़ीलत के लिए बहुत सी रिवायतें आई हैं, लेकिन उस में पूर्ण प्रमाणित (मरफूअ) और सहीह रिवायतें बहुत कम हैं। इक़्तिसार की वजह से मशहूर और जर्ईफ़ रिवायतों पर कलाम मुमकिन नहीं, इसलिए यह कोशिश की गई है कि केवल सहीह तरीन रिवायतों को ही बयान किया जाये। इसका मतलब यह है कि जो रिवायतें इस में बयान नहीं हुई हैं वह चाहे कितनी भी मशहूर क्यों न हों, सहीह और मुत्तसिल नहीं हैं।
- ❖ इल्मी मसायेल और वहसों से इसे कठिन नहीं बनाया गया है, क्योंकि उसका मक़ाम तफ़सीली तफ़सीर है। केवल कुरआन करीम के सीधे सादे मआनी और मफ़हूम को वाज़ेह किया गया है।
- ❖ कुछ जगहों के अलावा पूरी तफ़सीर में हदीसों के मुक़म्मल हवालों का एहतेमाम किया गया है, ताकि तफ़सीली इल्म चाहने वाले असहाब को उसे ढूँढ़ने में आसानी हो।
- ❖ तफ़सीर इब्ने कसीर, तफ़सीर फ़तहूल कदीर, तफ़सीर इब्ने जरीर तवरी, ऐसरूत्तफ़ासीर वगैरह जैसी सलफ़ी तफ़ासीर इस के माख़ज़ हैं। ज़्यादातर उन्हीं को सामने रखा गया है, दूसरी अरबी और उर्दू तफ़सीरों से बहुत कम एहतेमाम किये गये हैं।
- ❖ तशरीह और तफ़सीर में बुज़ुर्गों (नबी ﷺ के सहाबा और उन के बाद की पीढ़ी के नेक लोग) के मन्हज़ और उन के उसूल (सिद्धान्त) को आधार बनाया गया है। इस नज़रिये से यह सलफ़ी तफ़ासीर का इक़्तिसार, अस्लाफ़ के मनहज़ और उसूल का आईना और सहीह हदीसों का खूबसूरत नमूना है।
- ❖ कुरआन करीम ने पिछली जातियों और क़ौमों का बयान किया है लेकिन तारीख़ी तौर से नहीं बल्कि नसीहत के नज़रिये से। इसलिए कुरआन करीम के

इस उद्देश्य (मकसद) को सामने रख कर पिछली जातियों और सम्प्रदायों (क्रौमों) के आम लोगों के इस अखलाक और आमाल के असबाब से जो उनकी तबाही का सबब बने, मुसलमान आम लोगों के किरदार और अखलाक की तुलना (मुवाजना) की गई है ताकि इस उम्मत (सम्प्रदाय) के हर बर्ग (उलमा और आम लोग) इस गिरावट से निकलने की कोशिश करें, जिस में वह गुज़िशता क्रौमों और जातियों के अखलाक अपनाने की वजह से फंसे हुए हैं।

अल्लाह तआला को किसी जाति या क्रौम से मुहब्बत या नफरत नहीं है, उसको खास जाति या आदमी से मुहब्बत और नफरत सिर्फ उन के अमलों और अखलाक की बुनियाद पर होती है। अगर कोई खास जाति या खास आदमी अच्छे काम करता है, ईमान (विश्वास) और उस के तकाजों को ठीक ढंग से पूरा करता है तो वह उसका पसंदीदा होता है और उसका सहायक (मददगार) होता है। और इस के खिलाफ विश्वास (ईमान) और उस के मूताबिक अमलों से नावाक़िफ़ जाति या आदमी है जो अल्लाह को नापसंद है, दुनिया और आखिरत की बेइज्जती और रसवाई उसका मुकद्दर है।

यह तो मुमकिन ही नहीं कि पिछली इसानी जातियाँ और क्रौमों अपने तकब्बुर और सच्चाई से मुखालफ़त के सबब अल्लाह और उस के रसूल को झुठलाये जिस के नतीजे में हलाक हों (जैसाकि कुरआन ने उन के बारे में बयान किया है) और मुस्लिम उम्मत वही झुठलाने और मुखालफ़त का ढंग अपनाये, तो उसे तरक्की, बुल्न्दी और खुशनसीबी हासिल हो, यह तो अल्लाह की सुन्नत के खिलाफ़ है।

इन विगड़े हुए हर बर्ग (गुट) के लिए यह मुख्तसर तफ़सीर एक आईना है जिस में वह अपने अखलाक और अमल की गिरावट को और अपने इल्म को वाजेह तौर से अगर देखना चाहें तो देख सकते हैं। जब तक यह उम्मत कुरआन पर सच्चे मन से यकीन न करे और उसकी रौशनी में अपनी धारणाओं (अकीदा) और अमलों के आधार को तबदील न करेगी, दुनिया और आखिरत में कामयाबी हासिल नहीं कर पायगी। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस कौल का भी यही मतलब है, जिसमें आप ने कहा है।

«إِنَّ اللَّهَ يَرْفَعُ بِهَذَا الْكِتَابِ أَقْوَامًا وَيَضَعُ بِهِ الْآخَرِينَ» (صحیح مسلم)

..अल्लाह तआला इस किताब के जरिये बहुत से लोगों को तरक्की अता करता है, और इसी के सबब दूसरों को ज़वाल की तरफ़ ढकेल देता है।..

अल्लाह करे कि इस किताब का जो अहम मकसद है वह हासिल हो, और इस के जरिये अकायद और आमाल में ऐसा सुधार हो जिस की वजह से यह समुदाय (उम्मत) अल्लाह की खास रहमत और नेमत का मुस्तहक़ हो सके।

मुफ़सिर

कुरआन मजीद के सूरतों की फ़ेहरिस्त (सूची)

क्रम नं.	सूरतों के नाम	पैज नं.	भाग नं.	क्रम नं.	सूरतों के नाम	पैज नं.	भाग नं.
1.	सूरतुल फ़ातिहा	11		31.	सूरतु लुकमान	719	21
2.	सूरतुल बकरः	13	1,2,3	32.	सूरतुस्मजदः	727	21
3.	सूरतु आले इमरान	85	3,4	33.	सूरतुल अहजाब	733	21,22
4.	सूरतुन निसा	133	4,5,6	34.	सूरतु सवा	753	22
5.	सूरतुल मायेदः	182	6,7	35.	सूरतु फ़ातिर	766	22
6.	सूरतुल अंआम	217	7,8	36.	सूरतु यासीन	776	22,23
7.	सूरतुल आराफ	256	8,9	37.	सूरतुस्सापफ़ात	789	23
8.	सूरतुल अफ़ाल	298	9,10	38.	सूरतु साद	807	25
9.	सूरतुत्तौबः	316	10,11	39.	सूरतुज्जुमर	819	26
10.	सूरतु युनुस	350	11	40.	सूरतुल मोमिन	836	26
11.	सूरतु हूद	374	11,12	41.	सूरतु हा.मीम. अस्सज्द	852	26
12.	सूरतु यूसुफ़	400	12,13	42.	सूरतुश्शूरा	864	26
13.	सूरतु रअद	422	13	43.	सूरतुज जुख़रफ़	875	26
14.	सूरतु इब्राहीम	432	13	44.	सूरतुद दुख़ान	888	26,27
15.	सूरतुल हिज़	443	13,14	45.	सूरतुल जासियः	894	27
16.	सूरतुन-नहल	454	14	46.	सूरतुल अहकाफ़	901	27
17.	सूरतु इस़ा	475	15	47.	सूरतु मोहम्मद	910	27
18.	सूरतुल कहफ़	497	15,16	48.	सूरतुल फ़तह	918	27
19.	सूरतु मरियम	519	16	49.	सूरतुल हुजुरात	926	27
20.	सूरतु ताहा	532	16	50.	सूरतु क़ाफ़	932	27
21.	सूरतुल अम्बिया	552	17	51.	सूरतुज ज़ारियात	939	28
22.	सूरतुल हज्ज	572	17	52.	सूरतुच़ूर	945	28
23.	सूरतुल मोमिनून	589	18	53.	सूरतुन नज्म	951	28
24.	सूरतुन नूर	604	18	54.	सूरतुल कमर	957	28
25.	सूरतुल फ़ुरक़ान	622	18,19	55.	सूरतुर्हमान	964	28
26.	सूरतुश्शुअरा	635	19	56.	सूरतुल वाक्किअः	972	28
27.	सूरतुन नमल	657	19,20	57.	सूरतुल हदीद	981	28
28.	सूरतुल कमस	673	20	58.	सूरतुल मुजादिलः	990	28
29.	सूरतुल अनकबूत	692	20,21	59.	सूरतुल हथ	996	28
30.	सूरतुरूम	707	21	60.	सूरतुल मुत्तहिनः	1003	29

क्रम नं.	सूरतों के नाम	पेज नं.	भाग नं.	क्रम नं.	सूरतों के नाम	पेज नं.	भाग नं.
61.	सूरतुस-सपफः	1008	29	88.	सूरतुल गाथिया	1118	30
62.	सूरतुल-जुमअः	1012	29	89.	सूरतुल फज्र	1120	30
63.	सूरतुल-मुनाफिकून	1014	29	90.	सूरतुल बलद	1124	30
64.	सूरतुल-तगामुन	1018	29	91.	सूरतुब शम्स	1126	30
65.	सूरतुललाक	1022	29	92.	सूरतुल लैल	1127	30
66.	सूरतुलहरीम	1027	29	93.	सूरतुददुहा	1130	30
67.	सूरतुल मुल्क	1032	29	94.	सूरतु बरह	1131	30
68.	सूरतुल कलम	1037	29	95.	सूरतुत्तीन	1132	30
69.	सूरतुल हाककः	1044	29	96.	सूरतुल अलक	1133	30
70.	सूरतुल मआरिज	1050	29	97.	सूरतुल कद	1135	30
71.	सूरतु नूह	1055	30	98.	सूरतुल बय्यिनः	1136	30
72.	सूरतुल जिन्न	1059	30	99.	सूरतुज जिल्लाल	1138	30
73.	सूरतुल मुज्जम्मिल	1064	30	100.	सूरतुल आदियात	1139	30
74.	सूरतुल मुहस्सिर	1068	30	101.	सूरतुल कारिअः	1140	30
75.	सूरतुल क्रियामः	1074	30	102.	सूरतुत तकासुर	1141	30
76.	सूरतुल इंसान	1078	30	103.	सूरतुल अघ	1142	30
77.	सूरतुल मुर्सलात	1082	30	104.	सूरतुल हुमजः	1143	30
78.	सूरतुन नवा	1088	30	105.	सूरतुल फील	1144	30
79.	सूरतुन नाजिआत	1092	30	106.	सूरतु कुरैश	1145	30
80.	सूरतु अयस	1097	30	107.	सूरतुल माऊन	1145	30
81.	सूरतुत तकवीर	1100	30	108.	सूरतुल कौसर	1146	30
82.	सूरतुल इफितार	1103	30	109.	सूरतुल काफिरून	1147	30
83.	सूरतुल मुतपफेफीन	1105	30	110.	सूरतुन नस्र	1148	30
84.	सूरतुल इधिकक	1109	30	111.	सूरतुल्लहब	1148	30
85.	सूरतुल धुरूज	1112	30	112.	सूरतुल इल्लाम	1150	30
86.	सूरतुत्तारिक	1114	30	113.	सूरतुल फलक	1151	30
87.	सूरतुल आला	1116	30	114.	सूरतुन नास	1152	30



सूरतुल फ़ातिहा

सूर: फ़ातिहा^१ मक्का में उतरी^२ इस में सात आयतें हैं^३

१. अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

२. सब तारीफें अल्लाह सारे जहान के रब के लिये हैं^४

३. बड़ा मेहरबान, बहुत रहम करने वाला है

४. बदले के दिन (क्रियामत) का मालिक है

५. हम तेरी ही इबादत^५ (उपासना) करते और तुझ ही से मदद मांगते हैं

سُورَةُ الْفَاتِحَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ②

الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ③

مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ④

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ⑤

^१ सूर: फ़ातिहा कुरआन की पहली सूर: है, जिसकी हदीसों में बड़ी अहमियत है। फ़ातिहा (फ़ातिहा) का मतलब शुरू है, इसलिए इसे الفاتحة अलफ़ातिहा यानी फ़ातिहतुल किताब कहा जाता है, इस के दूसरे भी बहुत से नाम हदीसों से साबित हैं।

^२ यह सूर: मक्की है, मक्की या मदनी का मतलब है जो सूरतें हिजरत (१३ नवूबत) से पहले नाज़िल हुई वह मक्की है चाहे उनका उतरना मक्का में हुआ या उन के आसपास। मदनी वह सूरतें हैं जो हिजरत के बाद नाज़िल हुई चाहे मदीना या उस के आसपास के इलाकों में नाज़िल हुई या उन से दूर, यहाँ तक कि मक्का और उस के आसपास ही क्यों न नाज़िल हुई हो।

^३ اسم الله के बारे में इखितेलाफ़ (मतभेद) है कि यह हर एक सूर: की आयत है या हर एक सूर: की आयत का हिस्सा है।

^४ رب (रब्ब), अल्लाह के अच्छे नामों में से एक नाम है, जिसका मतलब है हर चीज को पैदा करके उसकी ज़रूरतों को पूरी कराने वाला और उसे पूर्ति (तकमील) तक पहुँचाने वाला।

^५ इबादत का मतलब है किसी की खुशी के लिये बहुत आजिजी, बेवसी और विनय का इजहार, और इब्ने कसीर के क़ौल के ऐतबार से दिन में पूरी मुहब्बत, आजिजी और डर के मज़मुआ का नाम है, यानी जिस के साथ प्रेम भी हो और उसकी ताकत के आगे लाचारी और बेवसी का इजहार भी हो, और जाहिरी या वातिनी अस्वाब के जरिये उसकी पकड़ का डर भी हो। सीधा जुमला है نَعْبُدُكَ وَنَسْتَعِينُكَ। हम तेरी इबादत करते हैं और तुझ से मदद मांगते हैं। लेकिन अल्लाह ने यहाँ दूसरे कारक (मफ़उल) को क्रिया (फ़ैल) से पहले करके (إِيَّاكَ نَسْتَعِينُ وَإِيَّاكَ نَعْبُدُ) फ़रमाया: मक़सूद खुसूसियत पैदा करना है, यानी हम तेरी ही इबादत करते और तुझ ही से मदद चाहते हैं, न इबादत अल्लाह के सिवा किसी और की जायेज है न मदद ही किसी से मांगनी जायेज (मान्य) है। इन लफ़्ज़ों (शब्दों) से शिर्क का दरवाजा बन्द कर दिया गया है।

६. हमें सीधा (सत्य) रास्ता^१ दिखा^२

७. उन लोगों का रास्ता जिन पर तूने इआम किया उन का नहीं जिन पर तेरा ग़ज़ब^३ हुआ और न गुमराहों का^४

إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿٦﴾
صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۗ غَيْرِ
الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ﴿٧﴾

^१ هداية (हिदायत) के कई मतलब हैं। रास्ता दिखाना, रास्ता पर चला देना, मजिल तक पहुँचा देना, इसे अरबी में इरशाद, तौफीक, इलहाम और दलालत से तावीर किया जाता है, यानी हमें सीधा रास्ता दिखा दे, इस पर चलने की तौफीक दे इस पर मजबूत कर दे ताकि हमें तेरी खुशी हासिल हो जाये, यह सीधा रास्ता केवल अक़ल से हासिल नहीं हो सकता। यह सीधा रास्ता वही "इस्लाम" है जिसे नबी ﷺ ने दुनियाँ के सामने पेश किया और अब जो क़ुरआन और सहीह हदीस में महफूज़ (सुरक्षित) है।

^२ यह صراط-मुस्तिम (सीधा रास्ता) की तफ़सीर (व्याख्या) है कि सीधा रास्ता वह है जिस पर वह लोग चले जिन पर तेरी नेमत (अनुकम्पा) हुई। यह منعم عليه गरौह है अम्बिया, षहीदों, सिद्दीकों, और (नेक लोगों) का।

^३ कुछ हदीसों से साबित है कि منغ़ुब عليهم (जिन पर अल्लाह का ग़ज़ब (क्रोध) उतरा) से मुराद यहूदी हैं, और ضालين (गुमराह) से मुराद नसारा (इसाई) हैं।

^४ सूर: फातिहा के आखिर में आमीन कहने पर नबी ﷺ ने वज़ा जोर दिया है और उसकी प्रतिष्ठा (फ़ज़ीलत) को बयान किया है, इसलिए इमाम और मुक्त्दी दोनों को आमीन (आमीन) कहना चाहिए।

सूरतुल बकर:-२

सूर: बकर:। मदीने में नाज़िल हुई इस में दो सौ छयासी आयतें और चालीस रुकुऊ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अलिफ. लाम. मीम।^१

२. इस किताब (के अल्लाह की किताब होने) में कोई शक नहीं, परहेजगारों को हिदायत (मार्गदर्शन) करने वाली है।

३. जो लोग गैब (परलोक) पर ईमान लाते हैं^२ और नमाज़ को कायम करते हैं^३ और हमारे जरिये अता किये हुए (माल) में से खर्च करते हैं।

४. और जो लोग ईमान लाते हैं उस पर जो आप की ओर उतारा गया और जो आप से पहले उतारा गया^४ और वह आखिरत पर भी यकीन रखते हैं।

سُورَةُ الْبَقَرَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْمِ

ذَلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ

الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمِمَّا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ

^१ इस सूर: में आगे चलकर गाय की घटना (वाक़ेआ) का बयान हुआ है, इसलिए इसे बकर: गाय की घटना वाली सूर: (अरबी में "बकर:" गाय को कहते हैं) कहा जाता है।

^२ इन्हें अरबी में हरफे-मुक्ता (अलग-अलग अक्षर) कहा जाता है, यानी अलग-अलग पढ़े जाने वाले अक्षर। इन के मतलब के बारे में कोई प्रमाणित कथन (कौल) नहीं है।

^३ गैब का अर्थ (मायने) वे चीज़ें हैं जिनका हल दिमाग और अक़ल के जरिये नहीं, जैसे अल्लाह तआला का होना, वहयी (प्रकाशनायें) इलाही, जन्नत, जहन्नम, मलायका (फरिश्ते, ईशदूत), क़ब्र का अज़ाब, हश्र का होना आदि (वगैरह)। इस से मालूम हुआ कि अल्लाह और रसूल की बतायी हुई ख़बरों पर अक़ल, आभास के सिवाय पर यकीन करना ईमान का हिस्सा है और इनका इकार कुफ़ व गुमराही है।

^४ नमाज़ कायम करने का मतलब है कि पाबन्दी से सुन्नते नबवी के अनुसार नमाज़ पढ़ना, नहीं तो नमाज़ तो भुनाफ़िक (जो ऊपर से मुसलमान अन्दर से कुछ और) भी पढ़ते थे।

^५ पिछली किताबों पर ईमान लाने का मतलब यह है कि जो किताबें नबियों पर नाज़िल हुईं, वे सभी सच्ची हैं, अगरचे अब उन के अनुसार अमल नहीं किया जा सकता, अब अमल केवल क़ुरआन और नबी ﷺ की हदीस के अनुसार ही किया जाएगा।

५. यही लोग अपने रब की ओर से सच्चे रास्ते पर हैं और यही लोग कामयाबी (और नजात) हासिल करने वाले हैं।

६. बेशक काफ़िरों को आप का डराना या न डराना समान है, यह लोग ईमान न लायेंगे।

७. अल्लाह तआला ने उन के दिल और कानों पर ठप्पा लगा दिया है और उनकी आँखों पर पर्दा है, और उन के लिए बड़ा अजाब है।^१

८. और लोगों में से कुछ कहते हैं, हम अल्लाह (परमेश्वर) पर और आखिरी दिन पर ईमान लाये हैं, लेकिन हकीकत में वे ईमान वाले नहीं हैं।^२

९. वह अल्लाह को और ईमान लाने वालों को धोखा दे रहे हैं, लेकिन हकीकत में वह खुद अपने आप को धोखा दे रहे हैं, और उन को समझ नहीं है।

१०. उन के दिलों में रोग है, अल्लाह ने उनके रोग को और बढ़ा दिया और उनके झूठ बोलने के कारण उन के लिए दर्दनाक अजाब है।

११. और जब उन से कहा जाता है कि धरती पर बिगाड़ मत पैदा करो, तो जवाब देते हैं कि हम तो सिर्फ सुधारक हैं।

१२. सावधान! हकीकत में यही लोग बिगाड़ पैदा करने वाले हैं,^३ लेकिन समझ (ज्ञान) नहीं रखते।

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ
الْمُتَّبِعُونَ ﴿٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ
أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾

حَتَّمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ وَوَضَعَ
أَبْصَارَهُمْ غِشَاوَةً ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٧﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ
وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٨﴾

يُخَدِّعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا
يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾

فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿١٠﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ
قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ﴿١١﴾

إِنَّا أَنهَمُهُمُ الْفُسَادَ ۖ وَلَٰكِن
لَّا يَشْعُرُونَ ﴿١٢﴾

^१ यह उन के ईमान न लाने का सबब बताया गया है कि चूंकि कुफ़ और गुनाह के लगातार करने के कारण उन के दिलों से सच्चाई को कुबूल करने की ताकत खत्म हो चुकी है तो वह ईमान किस तरह ला सकते हैं?

^२ यहाँ से तीसरे गुट मुनाफ़िकों का बयान होता है, जिन के दिल ईमान से खाली थे लेकिन ईमानवालों को धोखा देने के लिए मुँह से ईमान का दिखावा करते थे।

^३ बिगाड़, सुधार का उल्टा है। कुफ़ और गुनाह से धरती पर बिगाड़ फैलता है और अल्लाह के हुक्म के पालन से शांति (सुकून) मिलती है।

१३. और जब उन से कहा जाता है कि दूसरे लोगों (यानी सहावा) की तरह तुम भी ईमान लाओ, तो जवाब देते हैं कि क्या हम ऐसा ईमान लायें जैसा मूर्ख (बेवकूफ) लाये हैं। सावधान! हकीकत में यही मूर्ख है, लेकिन यह नहीं जानते।

१४. और जब ईमानवालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम भी ईमानवाले हैं, और जब अकेले में अपने बड़ों (चैतान सिपत लोग) के पास जाते हैं तो कहते हैं कि हम तो तुम्हारे साथ हैं, हम तो केवल उनसे मजाक करते हैं।

१५. अल्लाह तआला भी उन से मजाक करता है। और उनको सरकशी और बहकावे में और बढ़ा देता है।

१६. यह वे लोग हैं जिन्होंने गुमराही को हिदायत के बदले में खरीद लिया है। लेकिन इनका व्यापार^१ न फायदेमंद हुआ, न वह हिदायत हासिल कर सके।

१७. इन लोगों की भिसाल उस इंसान जैसी है जिस ने आग जलाई लेकिन जब आग ने उसके आसपास को रोशन कर दिया, तो अल्लाह ने उनकी रोशनी छीन ली और उन्हें अन्धेरे में छोड़ दिया, जो नहीं देखते।

१८. (ये) गुंगे, बहरे और अन्धे हैं, अब ये लौटने वाले नहीं हैं।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ امْنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاءُ أَلَا أَنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاءُ وَلَكِنْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۱۳﴾

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَا إِلَىٰ شِيْطَانِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُونَ ﴿۱۴﴾

اللَّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿۱۵﴾

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ فَمَا رَبِحَتْ تِجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿۱۶﴾

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ۖ فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمٍ لَا يَبْصُرُونَ ﴿۱۷﴾

صُمٌّ بُكْمٌ عُمَىٰ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿۱۸﴾

१. अल्लाह तआला भी उन से मजाक करता है। इसका एक मतलब तो यह है कि जिस तरह वे मुसलमानों के साथ मजाक और बेइज्जती का मामला करते हैं, अल्लाह तआला भी उनसे ऐसा ही मामला करते हुए उन्हें बेइज्जत करता है। इसको मजाक से संबोधित (मुख़ातिब) करना भाषा का नियम है, वरन् यह हकीकत में मजाक नहीं है, उनके मजाक करने की सजा है।

२. इस आयत में तिजारत का मतलब सच्चे रास्ते को छोड़कर गुमराही में पड़ जाना है जो सीधा-सीधा मुकसान का सौदा है।

१९. या आकाश की वर्षा की तरह, जिस में अंधकार, गरज और बिजली हो। बिजली की गरज के कारण मौत से डरकर वे कानों में उंगलियां डाल लेते हैं, और अल्लाह तआला काफिरों को घेरने वाला है।

२०. लगता है कि बिजली उनकी आंखें झपट लेगी, जब उन के लिए उजाला करती है तो चलते हैं और जब अंधेरा करती है तो खड़े हो जाते हैं और अगर अल्लाह चाहे तो उनके कानों और आंखों को छीन ले, बेशक अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है।

२१. हे लोगो! अपने उस पालनहार की इबादत करो जिस ने तुम को और तुम से पहले के लोगों को पैदा किया ताकि तुम परहेजगार हो जाओ।

२२. जिस ने तुम्हारे लिए धरती को बिछावन और आकाश को छत बनाया, और आकाश से वर्षा की और उस से फल पैदा करके तुम्हें जीविका (रिज़क) अता की, अतः यह जानते हुए किसी को अल्लाह का शरीक न बनाओ।

२३. और अगर तुम्हें उस में शक हो जिसे हम ने अपने बन्दे पर नाज़िल किया है, और तुम सच्चे हो तो इसी जैसी एक सूर: बना लाओ, तुम्हें छूट है कि अल्लाह के सिवाय अपने सहयोगियों को भी बुला लो।

أَوْ كَصَيْبٍ مِّنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ
وَبُرْقٌ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِّنَ
الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ۗ وَاللَّهُ مُجِيبٌ
بِالْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾

يَكَادُ الْبُرْقُ يَخطفُ أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا أَضَاءَ
لَهُمْ نَسُوا فِيهِ ۗ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارَهُمْ
إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ
وَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١﴾

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً
وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ
الشَّجَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ
أندَادًا
وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٢﴾

وَإِن كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عِبَادِنَا
فَاتُوا بِسُورَةٍ مِّمَّنْ مِثْلِهِ ۖ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ
مِّن دُونِ اللَّهِ ۖ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٣﴾

1 तौहीद (अल्लाह को एक मानना और उसकी इबादत करना) के बाद अब रिसालत (ईशदूत) के बारे में बताया जा रहा है, हम ने अपने बन्दे पर जो किताब उतारी उसका अल्लाह की ओर से नाज़िल होने में तुम्हें अगर शक है तो तुम अपने सभी मदद करने वालों को भिना कर इस जैसी एक सूर: ही बनाकर दिखाओ और अगर तुम ऐसा नहीं कर सकते तो तुम्हें समझ लेना चाहिए कि हकीकत में यह कलाम किसी इंसान की इजाद नहीं है बल्कि अल्लाह का ही कलाम है और हम पर और मोहम्मद ﷺ की रिसालत पर ईमान लाकर जहन्नम की आग से बचने की कोशिश करो, जहन्नम की आग जो काफिरों के लिए ही तैयार की गई है।

२४. फिर अगर तुम ने नहीं किया और तुम कभी भी नहीं कर सकते,¹ तो (उसे सच्चा समझ कर) उस आग से डरो, जिसका ईंधन इंसान और पत्थर है, जो काफिरों के लिए तैयार की गई है।

२५. और ईमानवालों और नेक काम करने वालों को,² उन स्वर्गों की खुशखबरी दो जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जब उन्हें उन से फल खाने के लिए दिए जाएंगे तो कहेंगे कि इस से पहले हमें खाने को यही दिया गया, वह समारूपी फल होंगे और उन के लिए उस में पकीजा बीवियां होंगी और वे उस में हमेशा रहेंगे।

२६. हकीकत में अल्लाह तआला किसी मिसाल को बयान करने से लज्जित नहीं होता, चाहे वह मच्छर की हो या उससे भी तुच्छ चीज की, ईमानवाले उसे अपने खब की ओर से सच समझते हैं और काफिर कहते हैं कि ऐसी मिसाल देने से अल्लाह का मतलब क्या है? इसी के द्वारा बहुतों को गुमराह करता है और बहुत लोगों को सच्चे रास्ते पर लाता है। और गुमराह वह केवल अवज्ञाकारियों (फ्रासिकों) को ही करता है।

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَكِنْ تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ
الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ ۗ
أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ﴿٢٤﴾

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا
وَيْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِزْقًا قَالُوا هَذَا الَّذِي
رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ وَأَتُوا بِهِمْ مُمْتَلِبِينَ ۗ وَلَهُمْ
فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٥﴾

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَنْ يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً
فَمَا فَوْقَهَا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ ۗ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا
فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا
يُبْضِلُ بِهِ كَثِيرًا ۗ وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا وَمَا يُبْضِلُ
بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾

¹ यह कुरआन करीम की सच्चाई को एक वाजेह सबूत हे कि अरब व दूसरे इलाके के सभी काफिरों को ललकारा गया, लेकिन वह आज तक इसका जवाब नहीं दे सके और बेशक क्रयामत आने तक ऐसा नहीं कर सकेंगे।

² कुरआन पाक में हर जगह ईमान के साथ नेक काम का बयान करके इस बात को वाजेह कर दिया गया है कि ईमान और नेक काम का चोली-दामन का साथ है। नेक काम के बिना ईमान का कोई फायदा नहीं और ईमान के बिना नेक काम की अल्लाह के पास कोई कीमत नहीं और नेक काम क्या है? जो सुन्नत के अनुसार हो और सही तरीके से अल्लाह की खुशी के लिए किया जाये। सुन्नत के खिलाफ अमल भी कुबूल नहीं है और दिखावे और रियाकारी के लिए किये गये काम भी बेकार और बेफायदा हैं।

२७. जो लोग अल्लाह तआला के साथ की गयी मजबूत अहद (प्रतिज्ञा) को तोड़ देते हैं, और अल्लाह तआला ने जिन चीजों को जोड़ने का हुक्म दिया है, उसे काटते हैं और धरती पर फ़साद फैलाते हैं, यही लोग नुकसान उठाने वाले हैं।

२८. तुम अल्लाह को कैसे नहीं मानते, जबकि तुम बेजान थे तो उस ने तुम्हें जीवन दिया, फिर तुम्हें मौत देगा, फिर दोबारा ज़िन्दा करेगा, फिर तुम को उसी के पास जाना है।

२९. उसी ने तुम्हारे लिए, जो कुछ धरती में है सब पैदा किया, फिर आकाश का इरादा किया और उस ने सात बराबर आसमान बना दिये और वह हर चीज़ का जानने वाला है।

३०. और जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि, मैं धरती में एक ख़लीफ़ा (ऐसा गिरोह जो एक-दूसरे के बाद आयेगा) बनाने जा रहा हूँ, तो उन्होंने कहा क्या तू उस में ऐसे लोगों को पैदा करेगा जो उसमें फ़साद और ख़ून-ख़ाराबा करे, और हम तेरी तारीफ़ के साथ तेरी तस्बीह करते और तेरी पाकीज़गी बयान करते हैं, उस ने कहा जो मैं जानता हूँ तुम नहीं जानते।

الَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٢٧﴾

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ۖ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٢٨﴾

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوٰتٍ ۗ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٩﴾

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۗ قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۗ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

1 इस्लाम धर्म (दीन) के कुछ आलिमों ने इसका अनुवाद (तर्जुमा) :

(ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ)

«फिर आसमान की ओर चढ़ गया» किया है। (सहीह बुखारी)

अल्लाह तआला का आसमानों के ऊपर अर्ब पर चढ़ना और ख़ास-ख़ास मौकों पर दुनियाँ के करीब आसमान पर उतरना अल्लाह की सिफ़ात में से है। जिस पर इसी तरह ईमान रखना ज़रूरी है, जिस तरह से कुरआन और हदीस में बयान किया गया है।

2 मलायिका (फ़रिश्ते) अल्लाह के प्रकाश से पैदा की गई मख़लूक है जिनका ठिकाना आसमान पर है, जो अपने रब के हुक्म का पालन करते हैं और उसकी तारीफ़ और पाकीज़गी के बयान में व्यस्त (मशगूल) रहते हैं और उसके किसी हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करते।

3 ख़लीफ़ा का मतलब ऐसा प्राणी (मख़लूक) है जो एक-दूसरे के बाद आयेगा। (इब्ने कसीर)

३१. और उस (अल्लाह तआला) ने आदम को सभी नाम सिखा कर उन चीजों को फरिश्तों के सामने पेश कर दिया और फरमाया कि अगर तुम सच्चे हो तो इन चीजों के नाम बताओ ।

३२. उन सभी ने कहा, हे अल्लाह! तू पाक जात है, हमें तो बस उतना ही इल्म है, जितना तूने हमें सिखाया है, पूरे इल्म और हिक्मत वाला तू ही है ।

३३. अल्लाह तआला ने आदम (عليه) से फरमाया, "तुम इन के नाम बता दो ।" जब उन्होंने बत्ता दिये, तो फरमाया क्या मैंने तुम्हें पहले नहीं कहा था कि मैं आसमानों और जमीन के ग़ैब को जानता हूँ और जो तुम करते एवं छुपाते हो जानता हूँ ।

३४. और जब हम ने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस के सिवाय सभी ने सज्दा किया । उस ने नकारा और घमंड किया^१ और वह था ही काफ़िरों में ।^२

३५. और हम ने कह दिया, हे आदम! तुम और तुम्हारी बीबी जन्नत में रहो, और जहाँ से चाहो जी भरकर खाओ-पियो, लेकिन इस पेड़^३ के पास न जाना, वरना जालिम हो जाओगे ।

وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَائِكَةِ فَقَالَ أَنْبِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣١﴾

قَالُوا سُبْحَانَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٣٢﴾

قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ إِنْ عَلِمْتُ الْغَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٣٣﴾

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ طُيَ فِيهَا وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٤﴾

وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٣٥﴾

^१ इब्लीस ने सज्दा से इन्कार किया और जलील हुआ । कुरआन के अनुसार इब्लीस जिन्नातों में से था, लेकिन अल्लाह तआला ने उसे सम्मानस्वरूप (वाइज्जत) फरिश्तों में शामिल कर लिया था, इसलिए अल्लाह के हुक्म से उसको भी सज्दा करना जरूरी था, लेकिन उस ने हसद और घमंड की वजह से सज्दा करने से इन्कार कर दिया, यानी हसद और घमंड वह पाप है जिनको इंसानियत की दुनिया में सब से पहले किया गया और इसका करने वाला इब्लीस था ।

^२ अर्थात् (यानी) अल्लाह तआला के पहले से इल्म में था ।

^३ यह पेड़ किस चीज का था? इसके बारे में कुरआन और हदीस में वाजेह तौर से कुछ नहीं मिलता, इस को गेहूँ का पौधा मशहूर कर दिया गया है, जो अवास्तविक है, हमें उस के नाम को मालूम करने की जरूरत नहीं है और न उसका कोई फायदा है ।

३६. लेकिन शैतान ने उन्हें भटका कर वहाँ से निकलवा ही दिया, और हम ने कह दिया कि "उतरो, तुम एक-दूसरे के दुश्मन हो, और एक मुकर्रर वक़्त तक तुम्हें धरती पर ठहरना और फ़ायदा उठाना है।"

३७. आदम (عليه السلام) ने अपने पालनहार से कुछ बातें सीख ली (और अल्लाह से तौबा की) उस ने उनकी तौबा क़बूल कर ली, बेशक वही तौबा क़बूल करने वाला रहम करने वाला है।

३८. हम ने कहा तुम सभी यहाँ से उतरो, फिर अगर तुम्हारे पास मेरी ओर से हिदायत आये तो जो मेरे सही रास्ते को अपनायेगा उन पर कोई डर नहीं होगा न वे उदासीन होंगे।

३९. और जो कुफ़ व भूठ के जरिये हमारी आयतों को झुठलायें, वे जहन्नम में रहने वाले हैं, और हमेशा उसी में रहेंगे।

४०. हे इस्राईल के बेटों! मेरी उस नेमत को याद करो जो मैंने तुम पर की, और मुझ से किया बादा पूरा करो, मैं तुम से किया बादा पूरा करूँगा, और सिर्फ़ मुझ से ही डरो।

४१. और उस (शरीअत) पर ईमान लाओ जिसे मैंने उस को साबित करने के लिए उतारा जो (तौरात) तुम्हारे साथ है और तुम इस के पहले इंकारी न बनो, और मेरी आयतों को थोड़े मूल्य पर न बेचो, और सिर्फ़ मुझ से डरो।

فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدَاوَةٌ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٣٦﴾

فَتَلَقَىٰ آدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۗ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا ۖ فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى فَمَنِ تَّبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٨﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٩﴾

يَذَرِي اسْرَائِيلَ إِذْ كُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْصَبْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أَوْفٍ بِعَهْدِكُمْ ۖ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونَ ﴿٤٠﴾

وَأَمِنُوا بِمَا آتَيْنَا مُصَدِّقًا لِمَا مَعَكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا أَوْلَٰئِ الْكَافِرِينَ ۖ وَلَا تَشْكُرُوا بِآيَاتِي تَشْكُرًا قَلِيلًا ۖ وَإِيَّايَ فَاتَّقُونَ ﴿٤١﴾

१. थोड़े मूल्य (कीमत) पर मत बेचो- इसका मतलब यह कभी नहीं कि ज्यादा कीमत मिल जाये तो अल्लाह के हुक्म का सौदा कर लो, बल्कि इसका मतलब यह है कि अल्लाह के हुक्म के मुकाबले में दुनिया के फ़ायदे को अहमियत न दो। अल्लाह के हुक्म तो इतने कीमती हैं कि सारी दुनिया का सामान और चीजें उन के मुकाबले में हकीर हैं। आयत में अगरचे इस्राईल के बेटों की तरफ इशारा किया गया है लेकिन यह हुक्म क़ायमत तक सभी इंसानों के लिए है, जो कोई भी सच को छोड़ झूठ का पक्ष करे या जिहालत (अज्ञानता) को जाहिर कर सच से सिर्फ़ दुनियावी फल पाने के लिए मुंह मोड़ेगा, वह इस हुक्म में शामिल है। (फ़तहूल कदीर)

४२. और सत्य (हक) का असत्य (वातिल) के साथ मिलावट मत करो और न सच को छुपाओ, तुम्हें तो खुद इसका इल्म है।

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَكُنْتُمُ
الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ٤٢

४३. और नमाज कायम करो, और जकात दो, और रुकुउ करने (भुक्ने) वालों के साथ रुकुउ करो (भुक् जाओ)।

وَاقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا
مَعَ الرَّاكِعِينَ ٤٣

४४. क्या लोगों को नेकी का हुक्म देते हो? और खुद अपने आप को भूल जाते हो, जबकि तुम किताब पढ़ते हो, क्या इतनी भी तुम में अक्ल नहीं?

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ
وَأَنْتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ٤٤

४५. और सब व नमाज के जरिये मदद हासिल करो।^१ और यह बड़ी चीज है, लेकिन अल्लाह से डरने वालों के लिए नहीं।

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ
إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ ٤٥

४६. जो जानते हैं कि अपने रब से मिलना है और उसकी ओर पलट कर जाने वाले हैं।

الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُلْقَوْنَ رَبَّهُمْ وَأَنَّهُمْ
رَاجِعُونَ ٤٦

४७. हे (याकब) इस्राईल की सन्तानों! मेरी उस नेमत को याद करो, जो मैंने तुम पर उपकार किया और मैंने तुम्हें सारी दुनिया पर फजीलत दी।

يَبْنَؤُا إِسْرَائِيلَ أَذْكَرٌ وَنَسِيتُ الْيَقِيْنَ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ
وَ اِنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ٤٧

४८. और उस दिन से डरो जिस दिन कोई किसी के काम नहीं आएगा, न उसकी कोई सिफारिश कुबूल की जाएगी, न उस से कोई बदला कुबूल किया जाएगा और न उन्हें मदद दी जाएगी।

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْزِي نَفْسٌ عَنْ نَفْسٍ شَيْئًا
وَلَا يَقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةً وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ٤٨

४९. और जब हम न तुम्हें फिरऔन के आदिमियों^२ से छुटकारा दिलाया, जो तुम्हें बुरा अजाब देते रहे, तुम्हारे बेटों को कत्ल करते रहे, और तुम्हारी बेटियाँ जिन्दा छोड़ते रहे, इस

وَلَدًا نَجَّيْنَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءًا
الْعَدَاةِ ابْنِ بَدَيْحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ ط
وَإِذْ ذُكِّرْتُمْ بَلَاءًا مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمًا ٤٩

^१ सब और नमाज दोनों अल्लाह वालों के दो बड़े हथियार हैं। नमाज के जरिये एक मोमिन को अल्लाह से सम्बन्ध आसानी से होता है, जिससे उसे अल्लाह की मर्जी और मदद हासिल होती है, सब के जरिये उसके चरित्र (किरदार) में मजबूती और धर्म में इस्तिक्वामत पैदा होती है।

^२ आले फिरऔन से मुराद केवल फिरऔन और उसका परिवार ही नहीं, बल्कि फिरऔन के सभी साथी हैं।

से छुटकारा दिलाने में तुम्हारे रब का बड़ा उपकार था ।

५०. और जब हम ने तुम्हारे लिए सागर को फाड़ दिया^१ और उस से तुम्हें पार कर दिया और फिर औन के साथियों को तुम्हारी आँखों के सामने डुबो दिया ।

५१. और हम ने मूसा (عليه السلام) को चालीस रातों का वचन दिया, फिर तुम ने बछड़े को माबूद बना लिया, और जालिम बन गए ।

५२. लेकिन हम ने इस के बावजूद भी तुम्हें माफ़ कर दिया, ताकि तुम शुक्रगुजार रहो ।

५३. और हम ने मूसा (عليه السلام) को तुम्हारी हिदायत के लिए किताब (तौरात) और मोजिजा अता किये ।

५४. और जब मूसा (عليه السلام) ने अपनी कौम वालों से कहा कि "हे मेरी कौम वालों! तुम ने बछड़े को (देवता) बनाकर खुद अपने ऊपर जुल्म किया है, अब तुम अपने पैदा करने वाले की तरफ तवज्जोह करो, अपने आप को (अपराधी को) अपने हाथों कत्ल करो, तुम्हारे लिए भलाई अल्लाह तआला के पास इसी में है" तो उस ने तुम्हारी तौबा (क्षमा-याचना) कुबूल की। बेशक वही तौबा कुबूल करने वाला और रहम करने वाला है ।

५५. और (तुम उसे भी याद करो) जब तुम ने मूसा (عليه السلام) से कहा था कि - जब तक हम अल्लाह को सामने न देख लेंगे कभी भी ईमान न लाएंगे (जिस नाफरमानी के दण्डस्वरूप) तुम पर तुम्हारे देखते हुए बिजली गिर पड़ी ।

وَإِذْ قَرَقَرْنَا بِكُمْ الْبَحْرَ فَأَنْجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا
أَالَ فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٠﴾

وَإِذْ وَعَدْنَا مُوسَىٰ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ
الْجِبْلَ مِنْ عِبَادِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ﴿٥١﴾

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ﴿٥٢﴾

وَإِذْ أَنْزَلْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُونَ ﴿٥٣﴾

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ
أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوا إِلَىٰ بَارِيكُمْ
فَاعْتَبُوا الْقِسْمَ الَّذِي أَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ عِنْدَ بَارِيكُمْ
فَنَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوْبُ الْرَاجِعُ ﴿٥٤﴾

وَإِذْ تُلَّكُمْ بِمُوسَىٰ لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَرَىٰ اللَّهُ
جَهَنَّمَ فَاخِذْ بِكُمْ الضُّعْفَةَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ﴿٥٥﴾

^१ सागर का फाड़ना और उस में रास्ता बना देना, यह एक मोजिजा था, जिसका पूरा बयान सूर: "शोआरा" में किया गया है। यह समुद्र का ज्वार-भाटा नहीं था, जैसाकि सर सैय्यद अहमद ख़ाँ और दूसरे मोजिजा का इंकार करने वालों का विचार है।

५६. (लेकिन) फिर हम ने तुम्हें मौत के बाद जिंदगी इसलिए दिया ताकि तुम शुक्रिया अदा करो।

५७. और हमने तुम्हारे ऊपर बादलों की छाया की और तुम पर मन्न व सलवा उतारा! (और कह दिया) हमारी अता की हुई पाक चीजें खाओ, और उन्होंने हम पर जुल्म नहीं किया बल्कि खुद अपने आप पर जुल्म करते थे।

५८. और हम ने तुम से कहा कि इस बस्ती में जाओ ¹ और जो कुछ जहाँ कहीं से भी चाहो जी भर कर खाओ-पियो और दरवाजे में से सिर झुकाए हुए दाखिल हो² और मुंह से कहो कि "हम माफ़ी चाहते हैं।"³ हम तुम्हारी गलतियों को माफ़ कर देंगे और भलाई करने वालों को और ज्यादा अता करेंगे।

५९. फिर उन जालिमों ने यह बात जो उन से कही गई, बदल डाली, हम ने भी उन जालिमों पर उनकी नाफरमानी की वजह से आकाश से अज्ञाब उतारा।⁴

ثُمَّ بَعَثْنَاكُمْ مِنْ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ 56

وَوَلَلْنَا عَيْنِيكَمُ الصَّامِرَ وَاتْرَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَىٰ كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ 57

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ وَسَبِّحُوا الْحُسَيْنِينَ 58

قَبَدَلِ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْسُقُونَ 59

¹ (मन्न) कुछ के पास तुरंजवीन है, या ओस, जो पेड़ या पत्थर पर गिरती तो सहद के तरह मीठी हो जाती और सूख कर गोंद की तरह हो जाती। कुछ के नजदीक सहद की तरह मीठा पानी है। हदीस है कि :

«الكساء نوع من المَنَّ»

«कुम्भी मन्न की तरह है।» (बुखारी, मुस्लिम)

सलवा बटेर या एक तरह की चिड़िया थी जो जिन्ह (वध) करके खा लेते थे। (फतहल क़दीर)

² उस बस्ती से मुराद ज्यादातर मुफ़सिरों के नजदीक बैतुल मुक़दस है।

³ सज्दा से मुराद कुछ लोगों ने झुकते हुए दाखिल होने से लिया है और कुछ ने शुक्रिया को सज्दा ही माना है। मुराद यह है कि अल्लाह के सामने शुक्रिया अदा करते हुए आजिजी जाहिर करते हुए दाखिल हो।

⁴ حِطَّة का मतलब है "हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे।"

⁵ ये आकाश से अज्ञाब क्या था? कुछ के नजदीक अल्लाह का गुस्ता, अधिक धुन्ध और प्लेग था, इस आखिरी मतलब का पक्ष हदीस से हासिल होता है।

६३. और जब हम ने तुम से वचन लिया और तुम्हारे ऊपर तूर पहाड़ ला खड़ा कर दिया।¹ और कहा-जो हम ने तुम्हें दिया है, उसे मजबूती से पकड़े रहो और जो कुछ उस में है उसे याद करो, ताकि तुम बच सको।

६४. फिर तुम उस के बाद भी फिर गए, फिर अगर अल्लाह तआला का फज्ल और रहमत तुम पर न होती, तो तुम नुकसान उठाने वाले होते।

६५. और अबश्य ही तुम्हें उन लोगों के बारे में इल्म भी है, जो तुम में से 'शनिवार'² के बारे में हद से तजाउज्ज कर गए और हम ने (भी) कह दिया कि तुम जलील बन्दर बन जाओ।

६६. इसे हमने अगले-पिछलों के लिए होशियार रहने की बजह बना दिया, और डरने वालों के लिए नसीहत है।

६७. और मूसा (عليه السلام) ने जब अपनी जाति से कहा कि - अल्लाह तआला तुम्हें एक गाय³ जिब्ह करने का हुक्म देता है, तो उन्होंने कहा कि "हम से क्यों मजाक करते हो?" आप ने जवाब दिया कि "मैं ऐसी बेवकूफी से अल्लाह तआला की पनाह लेता हूँ।"

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ
خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ
عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٦٤﴾

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدُوا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ
فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قَوْمَ خَبِيرِينَ ﴿٦٥﴾

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالًا لِبَائِمَن يَدِيهَا وَمَا خَلْفَهَا
وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٦٦﴾

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ
أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً قَالُوا أَتَجِدْنَا هَارُونَ قَالَ
أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٦٧﴾

¹ जब तौरात के हुक्मों के लिए यहूदियों ने दुश्मनी के तौर पर कहा कि - हम से तो इन हुक्मों का पालन नहीं हो सकेगा तो अल्लाह तआला ने तूर पहाड़ को छत की तरह उन के ऊपर उठा दिया, जिससे डर कर उन्होंने पालन करने का वचन दिया।

² (शनिवार) के दिन यहूदियों को मछली का शिकार, बल्कि कोई भी काम करने से रोका गया था, लेकिन उन्होंने एक बहाना निकाल कर अल्लाह के हुक्म की नाफरमानी की। शनिवार के दिन (इस्तेहान के लिए) मछलियां ज़्यादा आतीं, उन्होंने गडबड़े खोद लिए ताकि मछलियां उस में फंसी रहें और फिर रविवार के दिन उन को पकड़ लेते।

³ इस्राईल की औलाद में बिना किसी औलाद के एक आदमी था, उस का एक ही वारिस उस का भतीजा था, एक रात उस भतीजे ने अपने चाचा का कत्ल करके लाश किसी दूसरे आदमी के दरवाजे पर डाल दी, असली कातिल की खोज में वे एक-दूसरे को कहने लगे, आखिर में बात मूसा तक पहुँची, तो उन्हें एक गाय जिब्ह करने का हुक्म हुआ, गाय के गोश्त का एक टुकड़ा लाश पर मारा गया, जिससे वह जिन्दा हो गया और कातिल को पहचान कराते ही मर गया। (फतहल क़दीर)

६८. उन्होंने कहा-हे मूसा! (وَقِيلَ) अल्लाह से दुआ कीजिए की हमें उस के बारे में बता दे। आप ने फरमाया, सुनो! वह गाय न तो बूढ़ी हो और न बछिया, बल्कि दरमियानी उम्र की हो, अब तुम्हें जो हुक्म दिया गया है उसका पालन करो।

६९. वे फिर कहने लगे कि अल्लाह से दुआ कीजिए कि वह हमें बता दे कि उसका रंग कैसा हो? फरमाया वह कहता है कि गाय सुनहरे तीखे रंग की हो, और देखने वालों को खुश कर देती हो।

७०. वे कहने लगे कि अपने रब से दुआ कीजिए कि वह हमें खोल कर बता दे कि वह कैसी हो? इस तरह की बहुत सी गायें हैं पता नहीं चलता, अगर अल्लाह ने चाहा तो हमें हिदायत हासिल हो जाएगी।

७१. उस ने कहा कि अल्लाह का हुक्म है कि वह गाय खेती वाली जमीन में हल जोतने वाली और खेतों को पानी पिलाने वाली नहीं, वह स्वस्थ और बेदाग है। उन्होंने कहा अब आप ने वाजेह कर दिया, फिर भी वह आदेशों का पालन करने वाले नहीं थे, लेकिन उसे माना और गाय की कुर्बानी दी।

७२. और जब तुम ने एक जान को कल्ल कर दिया, फिर एक-दूसरे पर इल्जाम लगाने लगे, और अल्लाह को तुम्हारी छुपाई बात जाहिर करनी थी।

७३. हम ने कहा कि उस गाय का एक टुकड़ा मुर्दा के जिस्म पर मारो (वह ज़िन्दा हो जाएगा) उसी तरह अल्लाह तआला मुर्दा को ज़िन्दा करके तुम्हारी अक्लमदी के लिए निशानिया दिखाता है।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِصَ وَلَا يَكَرُهُ عَيْنٌ بَيْنَ ذَلِكَ فَأَفْعَلُوا مَا كُومَرُونَ ﴿٦٨﴾

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا لَوْنُهَا قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاءٌ فَاقِعٌ لَوْنُهَا تَسُرُّ التُّظَافِيرَ ﴿٦٩﴾

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشْبَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاءَ اللَّهُ لَكَاهِنُونَ ﴿٧٠﴾

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا ذَلُولَ تُثِيرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِ الْعَرْتَ مَسْلَمَةٌ لَا أَشْيَةَ فِيهَا قَالُوا الْفَن جُنَّتْ بِالْحَقِّ قَدْ بَعُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾

وَأذَقْتُمْ نَفْسًا قَادِرَةٌ فِيهَا وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٧٢﴾

فَقُلْنَا اضْرِبُوهَا بِعُضْوِهَا كَذَلِكَ يُعَذِّبُ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٧٣﴾

७४. फिर उस के बाद तुम्हारे दिल पत्थर जैसे बल्कि उस से भी ज्यादा मजबूत हो गए, कुछ पत्थरों से तो नहरें वह निकलती हैं तथा कुछ फट जाते हैं और उन से पानी निकलता है, और कुछ अल्लाह तआला के डर से गिर पड़ते हैं, और तुम अल्लाह तआला को अपने अमल से अन्जान न जानो ।

७५. (हे मुसलमानों!) क्या तुम चाहते हो कि वह (यहूदी) तुम्हारा यक्रीन कर ले - जबकि उन में ऐसे भी हैं जो अल्लाह का कलाम सुनते हैं फिर उसे समझने के बाद उसे फेर-बदल कर देते हैं, और ऐसा वे जानकर करते हैं ।

७६. और जब ईमान वालों से मिलते हैं तो अपनी ईमानदारी जाहिर करते हैं, और जब आपस में मिलते हैं तो कहते हैं कि मुसलमानों तक क्यों वह बातें पहुँचाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखायी है, क्या जानते नहीं कि ये तो अल्लाह के सामने तुम पर उनका सुबूत हो जाएगा ।

७७. क्या ये नहीं जानते कि अल्लाह तआला उनकी छुपी और जाहिर सभी बातें जानता है ।

७८. और उन में से कुछ अनपढ़ ऐसे भी हैं जो उम्मीदों के सिवाय किताब नहीं जानते और सिर्फ अटकल करते हैं ।

७९. उन लोगों के लिए हलाकत है, जो खुद अपने हाथों लिखी किताब को अल्लाह की किताब कहते हैं, और इस तरह दुनिया (धन) कमाते हैं, अपने हाथों लिखने की वजह से उनकी बरबादी है और अपनी इस कमाई की वजह से उनका विनाश है ।

८०. और ये लोग कहते हैं कि हम तो कुछ ही दिन जहन्नम में रहेंगे, (उन से) कहो कि क्या तुम ने अल्लाह तआला से कोई वादा लिया है? अगर है तो बेशक अल्लाह तआला अपना

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبَكُمْ وَفَعَلْنَا بِذَلِكَ قِيَمًا
كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدَّ كَسُوفَهُ دُونَ مِنَ الْحِجَارَةِ
لَمَّا تَصَعَّدُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَّا يَنْسُقْنَ
فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَّا يَنْهَيضُ مِنَ
حُسْبِيَةِ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَنَّا تَعْلَمُونَ ﴿٧٤﴾

أَتَعْظَمُونَ أَنْ يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ
مِنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ يَحَرِّفُونَهُ مِنْ بَعْدِ
مَا عَقَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

وَإِذْ تَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَا
بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ قَالُوا أَتُحِبُّونَهُمْ بِمَا نَجَّحَ
اللَّهُ عَلَيْهِمُ لِيُحَاجُّوكُمْ بِهِ عِنْدَ رَبِّكُمْ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٧٦﴾

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ
وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٧﴾

وَمِنْهُمْ أُمِّيُونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمْوَئًا
وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٧٨﴾

قَوْلِيلَ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ
ثُمَّ يَقُولُونَ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ لِيُشْرَوْا بِهِ ثَمَنًا
قَوْلِيلَ قَوْلِيلَ لَهُمْ وَمَا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ
لَهُمْ وَمَا يَكْسِبُونَ ﴿٧٩﴾

وَكَانُوا لَنْ تَسْتَنَّا الْكَافِرَ إِلَّا آيَاتِنَا مَعْدُودَةً
قُلْ أَخَذْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَنْ تُخْلِفُوا اللَّهَ
عَهْدَةً أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨٠﴾

यहूदी कहते थे कि दुनिया का बज्र केवल सात हजार साल के लिए है और हम हजार साल के बदले एक दिन जहन्नम में रहेंगे, इस तरह सिर्फ सात दिन नरक में रहेंगे । कुछ कहते थे कि हम ने चालीस दिन वछड़े की इबादत की थी, चालीस दिन नरक में रहेंगे । अल्लाह तआला फरमाता है कि

वादा तोड़ेगा नहीं, या तुम अल्लाह के ऊपर वह बातें लगाते हो जिन्हें तुम नहीं जानते ॥

८१. बेशक जिसने भी गुनाह किया और उस के गुनाह ने उसे घेर लिया वह जहन्नमी है। वह हमेशा जहन्नम में रहेगा।

८२. और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किये वे जन्नती हैं, जो हमेशा जन्नत में रहेंगे।

८३. और जब हम ने इसराईल के पुत्रों से वादा लिया कि-तुम अल्लाह के सिवाय किसी और की इबादत न करना और मां-बाप के साथ अच्छा सुलक करना, और उसी तरह करीबी रिस्तेदारों, यतीमों और गरीबों के साथ, और लोगों को अच्छी बातें बताना, नमाज कायम करना और जकात देते रहना, लेकिन थोड़े से लोगों के सिवाय तुम सभी मुकर गये और मुंह मोड़ लिये।

८४. और जब हम ने तुम से वादा लिया कि आपस में खून न बहाना (कत्ल न करना) और अपनों को देश से न निकालना, तुम ने क्रबूल किया और तुम उस के गवाह बने।

८५. फिर भी तुम ने अपनों का कत्ल किया और अपने एक गुट को देश से निकाला और गुनाह और जलन करने के काम में उन के खिलाफ दूसरे का पक्ष लिया। हां जब वे बन्दी बनकर तुम्हारे पास आए तो तुम ने उन के बदले में माल दिया (जिसे फिदिया कहते हैं), लेकिन उनका निकालना जो तुम पर हराम था (उसकी कुछ फिक्र न की)। क्या तुम किताब की कुछ बातें मानते हो और कुछ को नकारते हो? तुम में से जो भी ऐसा करे उसकी सजा इस के सिवाय क्या हो कि दुनिया में जिल्लत और

بَلْ مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ

فَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (81)

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (82)

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَا تَعْبُدُونَ

إِلَّا اللَّهَ - وَبِالْوَالِدِينَ إِحْسَانًا وَبِالْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ

وَالسُّكَّرِينِ وَكُلُوا الرِّبَا نَسِيًّا حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ

وَآتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ

مُعْرِضُونَ (83)

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ

وَلَا تُخْرِجُونَ أَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ

أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تَسْهَوُونَ (84)

ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ

فِرْيَاقًا مِّنْكُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ تَظْهَرُونَ عَلَيْهِم بِالْإِيمَةِ

وَالْعُدْوَانِ وَأَنْ يَأْتُواكُمْ أَسْرَىٰ تَفْعَلُونَ وَهُمْ وَهُمْ

مُحَرَّمٌ عَلَيْهِمْ إِخْرَاجُهُمْ أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ

الْكِتَابِ وَتَنْكُرُونَ بِبَعْضِ فَمَا جَزَاءُ مَنْ يَفْعَلْ

ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا جِزَاءُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ

الْقِيَامَةِ يَرُدُّونَ إِلَىٰ أَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللَّهُ

بِغَافِلٍ عَنَّا تَصَلُّونَ (85)

क्या तुम ने अल्लाह से समझौता किया है? अल्लाह तआला के साथ इस तरह का कोई वादा नहीं है। या तुम्हारा यह दावा कि अगर हम नरक में गये भी तो सिर्फ कुछ दिनों के लिए जाएंगे, तुम्हारे अपनी तरफ से है, और इस तरह तुम अल्लाह के ऊपर ऐसी बातें लगाते हो, जिनका तुम्हें खुद इल्म नहीं है। आगे अल्लाह तआला अपना वह कानून बयान कर रहा है जिस के आधार पर क़ायमत के दिन वह नेकी करने वाले और बुरों को उन की नेकी और बुरे काम की सजा देगा।

क्यामत के दिन कठिन सजाओं की मार! और अल्लाह तुम्हारे आमाल से अज्ञान नहीं है।

८६. ये वे लोग हैं जिन्होंने दुनिया की ज़िदगी को आखिरत के बदले खरीद लिया है, उनकी न सजायें क्रम होंगी न उनकी मदद की जाएगी।

८७. और हम ने मूसा (عليه السلام) को किताब अता की और उन के बाद लगातार रसूल भी भेजे और हम ने ईसा (عليه السلام) बिन मरियम को वाजेह निशानिया अता की और पाकीजा रूह (हजरत जिब्रील) से उनकी ताईद करायी, लेकिन जब कभी भी तुम्हारे पास रसूल वह चीज लाए जो तुम्हारे विचारों के खिलाफ थी, तुम ने फौरन तकब्बुर किया, फिर कुछ को तुम ने झुठला दिया और कुछ को क्रत्ल कर दिया।

८८. और उन्होंने कहा कि हमारे दिल ढंके हुए हैं, (नहीं, नहीं) बल्कि उन के कुफ्र की वजह से उन्हें अल्लाह ने धिक्कार दिया है, तो उन में ईमान वाले सिर्फ थोड़े हैं।

८९. और जब उन के पास उनकी किताब (तौरात) की पुष्टि (तसदीक) करने के लिए एक किताब (पाक कुरआन) आ गई, अगरचे इस से पहले ये खुद इस के द्वारा काफिरों पर जीत चाहते थे, तो आ जाने के बावजूद और पहचान लेने के बावजूद उन्हें नकार दिया, अल्लाह (तआला) की लानत हो काफिरों पर।

९०. बहुत बुरी है वह चीज जिसके बदले उन्होंने अपने को बेच डाला, वह उनका कुफ्र करना है अल्लाह तआला की तरफ से उतरी किताब को, सिर्फ इस बात से जल कर कि अल्लाह ने अपनी नेमत अपने जिस बन्दे पर चाहा उतारा, इस कारण वे क्रोध (ग़ज़ब) पर क्रोध के भागी हो गए और उन काफिरों के लिये अपमानजनक

أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ
فَلَا يَخَفُفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٨٦﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِنْ بَعْدِهِ
بِالرُّسُلِ وَأَتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيْتِ
وَآتَيْنَاهُ بَرُوجَ الْقُدْسِ أَفَكُلَّمَا جَاءَكُمْ
رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى أَنْفُسُكُمْ اسْتَكْبَرْتُمْ
فَتَرْفِقُوا لَكُمْ لِيُنصَرُوا وَكَرِهُوا قَتْلَ الَّذِينَ
﴿٨٧﴾

وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ بَلْ نَعْنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ
فَقَلِيلًا مِمَّا يَوْمِنُونَ ﴿٨٨﴾

وَلَمَّا جَاءَهُمْ كِتَابٌ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ
لِمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى
الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَمَّا جَاءَهُمْ مَا عَرَفُوا كَفَرُوا
بِهِ فَلَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكٰفِرِينَ ﴿٨٩﴾

بِمَسَا شَرَوْا بِهَا أَنْفُسَهُمْ أَنْ يَكْفُرُوا بِمَا آتَوْنَا
اللَّهُ بَغْيًا أَنْ يَنْزِلَ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ عَلَى مَنْ
يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ قَبْأَةً وَيُعْظِبُ عَلَى غَضَبٍ
وَاللَّكْفِرِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿٩٠﴾

1 दिलों पर सच्ची बातों का असर न पड़ना, कोई बड़प्पन की बात नहीं बल्कि यह निन्दनीय (जलील) होने की निशानी है, इसलिए उनका ईमान भी तनिक है (जो अल्लाह के यहाँ कुबूल नहीं है) या उन में ईमान लाने वाले भी थोड़े ही लोग होंगे।

2 क्रोध (गुस्सा) पर क्रोध का मतलब होता है, बहुत ज्यादा क्रोध। क्योंकि बार-बार वे क्रोध का

(रूखा करने वाला) अजाब है ।

९१. और जब उन से कहा गया कि उस पर ईमान लाओ जिसे अल्लाह ने उतारा है, तो उन्होंने कह दिया कि जो हम पर (तौरात) नाज़िल हुई उस पर हमारा ईमान है, और वह उस के सिवाय (पाक कुरआन) का इन्कार करते हैं, जब कि वह सच है, उन के पास (धर्मग्रन्थ) की तसदीक कर रहा है । (हे! रसूल) उन से कहो कि अगर तुम अपनी किताब पर यकीन रखते हो तो इस से पहले अल्लाह के रसूलों का कत्ल क्यों किया ।

९२. और तुम्हारे पास मूसा (عليه السلام) यही निशानियाँ लेकर आए, लेकिन फिर भी तुम ने बछड़े की पूजा की, तुम हो ही जालिम ।

९३. और जब हम ने तुम से वादा लिया और तुम पर तूर पहाड़ खड़ा कर दिया (और कह दिया) कि हमारी अता की हुई चीजों को मज़बूती से पकड़ो और सुनो, तो उन्होंने कहा हम ने सुना और नाफरमानी की, और उन के दिलों में बछड़े का प्रेम (जैसा कि) पिला दिया गया, उन के कुफ्र की वजह से । (उनसे) कह दीजिए कि तुम्हारा ईमान तुम्हे बुरा हुकम दे रहा है, अगर तुम ईमान वाले हो ।

९४. (आप) कह दीजिए कि अगर अल्लाह के पास आखिरत का घर तुम्हारे ही लिए है और किसी के लिए नहीं, तो आओ अपनी सच्चाई की पुष्टि (तसदीक) के लिए मौत मांगो ।

وَذَا قَبِيلٍ لَهُمْ أَمْنًا بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأَلَوُا الْكُوفِينَ
بِمَا أَنْزَلَ عَلَيْنَا وَيُكْفَرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ وَهُمْ
الْحَقُّ مَصَدِّقًا لِمَا مَعَهُمْ قُلْ لِمَ تَقْتُلُونَ

أَنْبِيََاءَ اللَّهِ مِنَ قَبْلِ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ①

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ مُوسَى بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اخْتَلَفْتُمْ
الْأَيْمَانَ مِنْ بَعْدِهِ وَأَنْتُمْ ظَالِمُونَ ②

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ
خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ بِقُوَّةٍ وَأَسْمُوا قَالُوا سَمِعْنَا
وَعَصَيْنَا وَأَنشُرِيَانِي فَاكْفُرْ بِهِمُ الْعِبْلُ بِكُفْرِهِمْ
قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهِ إِيمَانُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ③

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمْ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِنْدَ اللَّهِ
خَالِصَةً مِمَّنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَتُّوا أَمْوَاتٍ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ④

काम करते रहे, जैसा कि तफसील से गुजर चुका है और अब सिर्फ हसद की वजह से कुरआन और हज़रत मोहम्मद ﷺ का इन्कार किया ।

एक तो प्यार खुद ही ऐसा ज़बा है कि इंसान को अंधा और बहरा बना देता है । दूसरे इसको (पिला दी गई) से तुलना (मुआजना) की गई है क्योंकि पानी इंसान के नस-नस और जिस्म की आतों में दौड़ता है जबकि खाने का सामान इस तरह नहीं होता । (फ़तहुल कदीर)

९५. लेकिन अपने अमल को देखते हुए वे कभी भी मौत नहीं मांगेंगे और अल्लाह (तआला) ज़ालिमों को अच्छी तरह जानता है।

وَلَنْ يَسْتَمْتُوا أَبَدًا لِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٩٥﴾

९६. बल्कि सब से ज्यादा दुनिया की जिन्दगी को प्यार करने वाला (ऐ नबी!) आप उन्हीं को पाएंगे, ये जिन्दगी की लालच में मूश्रिकों (मूर्तिपूजकों) से भी ज्यादा है। उन में से हर ख़ुस एक-एक हजार साल की उम्र चाहता है, अगरचे ये उम्र दिया जाना भी उन्हें अजाबों से नहीं बचा सकता, अल्लाह (तआला) उन के अमल को अच्छी तरह देख रहा है।

وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَى حَيَاتِهِمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرَ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَجَّجٍ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُعَمَّرَ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

९७. (ऐ नबी!) आप कह दीजिए कि जो जिब्रील के दुश्मन हों, जिस ने आप के दिल पर अल्लाह का पैगाम उतारा है, जो पैगाम उनके पास की किताब की तसदीक करने वाला और ईमान वालों को हिदायत और खुशखबरी देने वाला है। (तो अल्लाह भी उनका दुश्मन है)।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِجِبْرِيْلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلٰى قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِمَا بَدَأَ يَدَىٰهِ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٧﴾

९८. जो इंसान अल्लाह का और उसके फरिश्तो और उसके रसूलों व जिब्रील और मीकाईल का दुश्मन हो, ऐसे काफिरों (अधर्मियों) का दुश्मन खुद अल्लाह है।

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيْلَ وَمِيكَائِلَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ ﴿٩٨﴾

९९. और बेशक हम ने आप की तरफ वाज़ेह निशानियाँ भेजी हैं, जिनको फ्रासिकों के सिवाय और कोई इन्कार नहीं करता।

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ وَبَيَّنَّا فِيهِ مَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفٰسِقُونَ ﴿٩٩﴾

१००. ये लोग जब कभी भी वादा करते हैं तो उन का एक न एक गुट उसे तोड़ देता है। बल्कि उन में से ज्यादातर ईमान से खाली हैं।

أَوْ كَلِمًا وَعَهْدًا وَإِنَّا لَمَدَّاءٌ فَتٰقِيْنَ مِنْهُمْ مُّبٰلِغٌ أَلَكُرْهُمُ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٠﴾

¹ हदीसों में है कि यहूदियों के कुछ ज़ालिम नबी ﷺ के पास आए और कहा कि अगर आप ﷺ ने उनका ठीक जवाब दे दिया तो हम ईमान ले आयेगे, क्योंकि नबी के सिवा उनका जवाब कोई नहीं दे सकता। जब आप ﷺ ने उन के सवालों का जवाब ठीक-ठीक दे दिया तो उन्होंने कहा कि आप ﷺ पर प्रकाशना (बह्यी) कौन लाता है? आप ﷺ ने फरमाया «जिब्रील» यहूदी कहने लगे कि जिब्रील तो हमारा दुश्मन है, वही तो लड़ाई, क़त्ल और अजाब लेकर उतरता रहा है और इस बहाने से आप (ﷺ) को मानने से इन्कार कर दिया। (इब्ने कसीर और फ़तहूल कदीर)

१०१. और जब कभी उन के पास अल्लाह का कोई रसूल उनकी किताब की तसदीक (पुष्टि) करने आया, तो उन अहले किताब के एक गुट ने अल्लाह की किताब को इस तरह पीछे डाल दिया जैसे जानते नहीं थे।

१०२. और उस के पीछे लग गये जिसे शैतान, (हज़रत) सुलेमान के मुल्क में पढ़ते थे। सुलेमान ने तो कुफ़्र न किया था बल्कि यह कुफ़्र शैतानों का था, वे लोगों को जादू सिखाते थे, और बाबिल में हास्त और मारुत दो फ़रिश्तों पर जो उतारा गया था, वह दोनों भी किसी शख्स को उस वक़्त तक न सिखाते थे जब तक वे यह न कह दें कि हम तो एक इम्तेहान हैं, तू कुफ़्र न कर, फिर लोग उन से वह सीखते जिससे पति-पत्नी में फूट डाल दें। हकीकत में वे बिना अल्लाह की मर्ज़ी के किसी को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते। ये लोग वह सीखते हैं जो इन्हें न नुकसान पहुँचाए और न फ़ायदेदा पहुँचा सके, और वह निश्चित रूप से जानते हैं कि इस के लेने वाले का आखिरत में कोई हिस्सा नहीं है। और वह बहुत ही बुरी चीज़ है जिसके बदले वे अपने आप को बेच रहे हैं, अगर ये जानते होते।

१०३. और अगर ये लोग ईमान लाते और अल्लाह से डर रखते तो अल्लाह (तआला) की ओर से भलाई मिलती, अगर ये जानते होते।

१०४. ऐ ईमानवालो! तुम (नबी ﷺ को) راعيا (हमारा ध्यान दीजिए या हमारा ख्याल कीजिए) न कहा करो, बल्कि انظروا (हमारी ओर देखिये)

وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَّأَ قَوْمٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ ۚ كَتَبَ اللَّهُ وِرَاءَهُمْ ظُهُورَهُمْ كَانَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠١﴾

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيْطَانُ عَلَىٰ مَلِكٍ مُّسْلِمٍ ۖ وَمَا كَفَرُوا سُلَيْمَانَ وَلَكِنَّ الشَّيْطَانَ كَفَرُوا يَعْلَمُونَ ۗ النَّاسُ السَّخِرُونَ وَمَا أَنْزَلَ عَلَى السَّكَّانِينَ بَيِّنَاتٍ هَارُوتَ وَمَارُوتَ ۖ وَمَا يَعْلَمِينَ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ قَتْلُهُ فَلَا تَنْفَرُوا فَيَعْلَمُونَ مِنْهَا مَا يَفْعَلُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَرَوْجِهِ ۖ وَمَا هُمْ بِضَآئِرِينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ۖ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۗ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٢﴾

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَنُوبَهُ مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ خَيْرٌ لَّو كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمَعُوا ۗ وَلِلَّغَيْرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٤﴾

¹ यह जादू भी उस समय तक किसी को नुकसान नहीं पहुँचा सकता, जब तक अल्लाह का हुक्म और मर्ज़ी न हो, इसलिए उस के सीखने का क्या फ़ायदेदा है? यही वजह है कि इस्लाम ने जादू सीखने और करने को कुफ़्र कहा है, हर तरह की भलाई की कामना और नुकसान से बचाव के लिए केवल अल्लाह तआला से ही दुआ की जाये क्योंकि वही हर चीज़ का करने वाला है और मख़लूक का हर काम उसी की मर्ज़ी से होता है।

कहो ।¹ और सुनते रहा करो और काफिरों के लिए दुखदायी अजाब है ।

१०५. न तो अहले किताब के काफिर और न मूर्तिपूजक चाहते हैं कि तुम पर तुम्हारे रब की तरफ से भलाई उतरे (उन के इस हसद से क्या हुआ?) अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपनी रहमत खास तरीके से अता कर दे और अल्लाह बड़ा फज़ल वाला है ।

१०६. जिस आयत को हम मंसूख कर दें या भुला दें उससे अच्छी या उस जैसी और लाते हैं² क्या तू नहीं जानता कि अल्लाह हर चीज की कुदरत रखता है ।

१०७. क्या तुम्हें मालूम नहीं कि धरती और आकाशों का मुल्क अल्लाह ही के लिए है । और अल्लाह के सिवाय तुम्हारा कोई संरक्षक (वली) और मददगार नहीं ।

१०८. क्या तुम अपने रसूल से वैसे सवाल करना चाहते हो जैसे इससे पहले मूसा (عليه السلام) से पूछा गया³ (सुनो!) जो ईमान को कुफ़्र से बदलता है वह सीधी राह से भटक जाता है ।

مَا يُوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا
الْمُشْرِكِينَ أَنْ يُنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِنْ سَمِّ مِنَ
رَبِّكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ (105)

مَا نَنْسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ
بِهَا أَوْ مِثْلَهَا أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (106)

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مَلَكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ (107)

أَمْ سُرِيْدُونَ أَنْ تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سَأَلِ
مُوسَى مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَتَّبِعِ الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ (108)

¹ راجع का मतलब है, हमारा विचार कीजिये, लेकिन यहूदी अपने हसद की वजह से इस ज़पज को थोड़ा सा बिगाड़ कर इस्तेमाल करते थे, जिससे उसका मतलब बदल जाता था, वे कहते थे रاجع जिसका मतलब हमारे चरबाहे । या راجع का मतलब है 'भूख' बग़ैरह, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम انظروا कहा करो ।

² نسخ के शाब्दिक अर्थ (लफ़्ज़ी मायने) तो 'नक्श' करने के हैं, लेकिन धार्मिक परिभाषा में एक हुक्म को मंसूख करके दूसरा हुक्म उतारने के हैं, यह बदलाव अल्लाह तआला की तरफ़ से हुआ है, जैसे आदम (عليه السلام) के समय में सगे वहन-भाई में शदी जायज़ थी, बाद में इसे हराम कर दिया गया आदि, इसी तरह कुरआन में भी अल्लाह तआला ने कुछ हुक्म मंसूख करके उनकी जगह पर नये ब्रानून उतारे हैं ।

³ मुसलमानों (सहाबा) को चेतावनी (तंबीह) दी जा रही है कि तुम यहूदियों की तरह अपने रसूल से अपनी मनमानी ग़ैर ज़रूरी सवाल मत किया करो, इस में कुफ़्र की उम्मीद है ।

१०९. इन अहले किताब के ज्यादातर लोग सच्चाई जाहिर हो जाने के बावजूद सिर्फ हसद और जलन की वजह से तुम्हें भी ईमान से हटा देना चाहते हैं तुम भी माफ़ करो और छोड़ दो यहाँ तक कि अल्लाह अपना फैसला लागू कर दे। बेशक अल्लाह (तआला) हर काम करने की कुदरत रखता है।

११०. तुम नमाज की अदायगी करो और जकात (धर्मदान) देते रहो और जो भलाई तुम अपने लिये आगे भेजोगे सब कुछ अल्लाह के पास पा लोगे, बेशक अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमल को देख रहा है।

१११. और ये कहते हैं कि जन्नत में यहूदी और इसाई के सिवाय कोई न जायेगा, ये सिर्फ उन की तमन्नायें हैं, उन से कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो कोई सुवूत तो पेश करो।

११२. सुनों! जिस ने अपने को अल्लाह के सपुर्द कर दिया, और नेक है उसी के लिये उस के रब के यहाँ अज़्र है और न उन पर कोई डर होगा न कोई गम।

११३. यहूदी कहते हैं इसाई सही रास्ते पर नहीं, और इसाई कहते हैं कि यहूदी सही रास्ते पर नहीं। जबकि ये तौरात पढ़ते हैं, इसी तरह इन ही जैसी बात जाहिल भी कहते हैं, कयामत के दिन अल्लाह इन के इस इख्तिलाफ का फैसला कर देगा।

وَدَا كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّونَكُمْ مِن بَعْدِ إِسْلَامِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّمَّنْ عِنْدَ أَهْلِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا بَيَّنَّ لَهُمُ الْحَقَّ فَاعْتَصُوا وَأَصْحَابًا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٠٩﴾

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَوَمَا تَقَدَّمُوا لَكُمْ مِّنْ مَّا لَمْ يَأْتِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوا عِنْدَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٠﴾

وَقَالُوا لَنْ نَبْدُخَلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُودًا أَوْ نَصْرًا ذَلِكَ مِمَّا إِنَّمَا بُرِّهَانَكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١١١﴾

بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِنْدَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١١٢﴾

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصْرِيُّ عَلَىٰ شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصْرِيُّ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَهُمْ يَتَّبِعُونَ الْكِتَابَ كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ وَمثلَ قَوْمِهِمْ قَالَ اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١١٣﴾

¹ अहले किताब के मुकाबले में अरब के मूर्तिपूजक पढ़े लिखे नहीं थे, इसलिए उन्हें जाहिल कहा गया, लेकिन वे भी मूर्तिपूजक होने के बावजूद यहूदी और इसाईयों की तरह इस झूठी उम्मीदों में लिप्त (मुक्तिला) थे कि वही सच्चाई पर हैं इसीलिए वे नबी ﷺ को अधर्मी कहते थे।

११४. और उस से बड़ा जालिम कौन है? जो अल्लाह (तआला) की मस्जिदों में अल्लाह का जिक्र करने से रोके, और उनको बर्बाद करने की कोशिश करे, ऐसे लोगों को डरते हुए उस में दाखिल होना चाहिए, उन के लिए दुनिया में भी जिल्लत है और आखिरत में भी बड़ी-बड़ी सजायें हैं।

११५. और पूरब व पश्चिम का मालिक अल्लाह ही है, तुम जिधर भी मुंह करो उधर ही अल्लाह का मुंह है,^१ अल्लाह (तआला) बहुत ताकत वाला जानने वाला है।

११६. और ये कहते हैं कि अल्लाह (तआला) की औलाद है (नहीं बल्कि) वह पाक है, धरती और आकाशों की सारी मखलूक पर उसकी हुकूमत है और हर एक उसका फरमाविरदार है।

११७. वह आकाशों और धरती का ईजाद करने वाला है, और वह जिस काम का फैसला करता है कह देता है कि हो जा, वह हो जाता है।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَنَعَ مَسْجِدَ اللَّهِ أَنْ يُذَكَّرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسُئِلَ فِي خَرَابِهَا أُولَئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَدْخُلُوهَا إِلَّا عَذَابًا لَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حِزْبٌ ۖ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١١٤﴾

وَاللَّهُ الْمَشْرِقِيُّ وَالْمَغْرِبِيُّ فَأَيْنَمَا تُولُوا فَدَعَّمْ وَجْهَهُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ ۚ بَلْ لَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط كُلُّ لَّهُ قُنُوٰنٌ ﴿١١٦﴾

يَبْدِئُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿١١٧﴾

^१ तबही सिर्फ यही नहीं है कि उसे दा दिया जाये तथा इमारत को नुकसान पहुंचाया जाये, बल्कि उन में अल्लाह की इबादत और जिक्र करने से रोकना, धार्मिक नियमों की स्थापना (क़ायम करना) और बिर्क के प्रदर्शन (मजाहिर) से पाक करने से मना करना भी जुल्म और अल्लाह के घरों को बरबाद करना है।

^२ हिजरत के बाद जब मुसलमान 'बैतुल मुकद्दस' की ओर मुंह करके नमाज़ पढ़ा करते थे, तो मुसलमानों को इसका दुख था, इस मौका पर यह आयत उतरी। कुछ कहते हैं कि यह आयत उस समय उतरी जब 'बैतुल मुकद्दस' से फिर खाने काज़बा की ओर मुंह करने का हुकम हुआ तो यहूदियों ने तरह-तरह की बातें गढ़ी, कुछ के नजदीक इसके उतरने की वजह सफर में सवारी पर नफिल नमाज़ों को पढ़ने की इजाज़त हुई कि सवारी का मुंह किधर भी हो, नमाज़ पढ़ सकते हो, कभी कुछ वजह से जमा हो जाते हैं और उन सभी के हुकम के लिए एक ही आयत उतरती है, ऐसी आयतों के लिए कई कथन (अकवाल) जमा होते हैं, किसी कथन में एक उतरने की वजह का बयान होता है और किसी में दूसरा। ये आयत भी इसी तरह की है। (अहसनुल तफ़ासीर)

११८. और इसी तरह अनपढ़ लोगों ने भी कहा कि खुद अल्लाह (तआला) हम से बातें क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती, इसी तरह ऐसी ही बात उन के पहले लोगों ने भी की थी, उन के और इन के दिल एक जैसे हो गये, हम ने तो यक्रीन करने वालों के लिए निशानियों का बयान कर दिया।

११९. हम ने आप को हक के साथ खुशखबरी देने वाला और आगाह कराने वाला बनाकर भेजा है और नरकवासियों के बारे में आप से नहीं पूछा जायेगा।

१२०. और आप से यहूदी और इसाई कभी भी खुश न होंगे, जब तक कि आप उन के मजहब का अनुकरण (पैरवी) न कर लें, (आप) कह दीजिए कि अल्लाह की हिदायत ही हिदायत होती है, ^१ और अगर आप ने अपने पास इल्म आ जान के बावजूद फिर भी उनकी इच्छाओं की पैरवी की तो अल्लाह के पास न तो आप का कोई बली होगा न कोई मददगार।

१२१. जिन्हें हमने किताब दी^२ और वे उसे पढ़ने के हक के साथ पढ़ते हैं^३ वे इस किताब पर भी ईमान रखते हैं और जो इस पर ईमान नहीं रखते वह खुद अपना घाटा करते हैं।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَنْزِيلُنَا آيَةً كَذَلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ تَمَثَّلُوا لَنَا أَيُّهَا الْقَوْمُ فَيُوقِنُونَ ﴿١١٨﴾

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَا تُسْئَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ ﴿١١٩﴾

وَكُنْ تَرْضَىٰ عَنْكَ الْيَهُودَ وَلَا النَّصَارَىٰ حَتَّىٰ يَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ قُلْ إِنْ هَدَىٰ اللَّهُ فَمَا لَهُدَىٰ وَلَيْسَ أَتَّعَبْتُ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ فَوْقٍ وَلَا تُصِيبُ ﴿١٢٠﴾

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَةٍ وَأُولَٰئِكَ يُوَفُّونَ بِهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَيْرُونَ ﴿١٢١﴾

^१ जो अब इस्लाम धर्म की शकल में है जिसकी दावत नबी ﷺ दे रहे हैं, न कि बदले हुए रूप में यहूदी और इसाई धर्म।

^२ अहले किताब के बुरे लोगों के बुरे चरित्र और अश्वलाक का जरूरी बयान करने के बाद उन में जो कुछ लोग अच्छे काम करने वाले और सच्चे थे, इस आयत में उनकी सिफतों और उन को ईमानवाले होने की खबर दी जा रही है। इन में अब्दुल्लाह बिन सलाम और उन जैसे और ईसान हैं जिनको यहूदियों में से इस्लाम धर्म कबूल करने की खुशखबरी हासिल हुई।

^३ वह इस तरह पढ़ते हैं, जिस तरह पढ़ने का हक है। के कई मतलब बयान किये गये हैं जैसे, १- ध्यानपूर्वक पढ़ते हैं। जन्नत का बयान आता है तो जन्नत की तमन्ना करते हैं तथा जहन्नम का बयान आता है तो उससे बचे रहने की दुआ करते हैं। (२) इस के हलाल को हलाल, हराम को हराम समझते और अल्लाह के कलाम को बदला नहीं करते, जैसे दूसरे यहूदी करते थे। (३) उस में जो कुछ लिखा है लोगों को बताते हैं, उसकी कोई बात नहीं छिपाते। (४) इसकी बाज्रेह (स्पष्ट) बातों के अनुसार अमल करते हैं, अस्पष्ट (गैर बाज्रेह) बातों पर ईमान रखते हैं और जो बातें समझ में नहीं आती उन्हें आलिमों से हल करवाते हैं। (५) इसकी एक-एक बात का पालन करते हैं। (फतहूल कदीर)

१२२. ऐ इब्राईल के पुत्रों! मैंने तुम को जो नेमतें दी हैं उन्हें याद करो और यह कि मैंने तुम्हें सारे जहाँ में फ़ज़ीलत अता कर रखी थी।

१२३. और उस दिन से डरो जिस दिन कोई इंसान किसी इंसान को कोई फ़ायेदा न पहुँचा सकेगा न किसी इंसान से कोई बदला कुबूल किया जायेगा न उसे कोई सिफ़ारिश फ़ायेदा पहुँचा सकेगी न उसकी मदद की जायेगी।

१२४. और जब इब्राहीम (عليه السلام) की उन के रब ने कई-कई बातों से परीक्षा ली, और उन्होंने सभी को पूरा कर दिखाया तो (अल्लाह ने) फ़रमाया कि मैं तुम्हें लोगों का इमाम बना दूँगा। पूछा- और मेरी औलाद को, जवाब दिया कि मेरा वादा ज़ालिमों से नहीं।

१२५. और हम ने बैतुल्लाह (कअबा) को इंसानों के लिए सवाब और अमन की जगह बनाया, तुम «मुकामे इब्राहीम» (इब्राहीम का मुकाम- मस्जिद हराम में एक मुक़र्रर जगह का नाम है जो कअबा के दरवाज़े के सामने थोड़ी बायें हटकर है) को «मुसल्ला» (नमाज़ पढ़ने का मुकाम) मुक़र्रर कर लो, और हम ने इब्राहीम और इस्माईल (عليهم السلام) से वादा लिया कि मेरे घर को तवाफ़ और एतिकाफ़ करने वालों और रकूउ करने और सज्दा करने वालों के लिए पाक और साफ़ रखो।

يٰۤاَيُّهَا اِسْرٰٓءِيْلُ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيْ الَّتِيْ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاِنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَيِ الطّٰغُوْتِ (122)

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَا تَجْرِيْ فِىْ نَفْسٍ عَنْ نَفْسٍ شَيْءًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنصَرُوْنَ (123)

وَاذْكُرْ اِسْمَ رَبِّهِمْ رَبِّكَ يٰۤكَلِيْبُ فَاتَّخَذُوْا كَالِ اِنۡۢيٰۤىۤىۤىۡ جَابِلِكَ لِلنّٰسِ اِمَامًا وَّكَانَ مِنْ دُوْرِيْنِيْ ؕ قَالَ لَا يَبۡتٰلُ عَهۡدِيْ الطّٰغُوْتِ (124)

وَاذْكُرْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةَ لِّلنّٰسِ وَاَمۡنًا وَّاَتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ رَبِّهِمْ مَّصَلًۢىۡ ؕ وَعَهۡدَنَاۤ اِلٰى رَبِّهِمْ وَاَسۡمِعِلۡ اَنَّ طَهَرًا بِنۡوِيۡ لِّلطّٰٓغُوْتِ (125)

¹ कलिमात से मुराद धार्मिक हुकम, हज के कानून, बेटे की कुर्बानी, हिजरत, नमस्द की आग, और वह सभी इस्तेहान है जिन से हजरत इब्राहीम (عليه السلام) गुजारे गये, और वह हर इस्तेहान में कामयाब रहे जिसके नतीजे में इंसानों के मुखिया पद से सम्मानित (सरफ़राज) किये गये। इसलिए मुसलमान ही नहीं, यहूदी इसाई यहाँ तक कि अरब के मूर्तिपूजकों, सब ही में उन के व्यक्तित्व का सम्मान (एहतेराम) है और उनको अगुवा माना और समझर जाता है।

² इब्राहीम का मुकाम से मतलब वह पत्थर है, जिस पर खड़े होकर हजरत इब्राहीम (عليه السلام) कअबा को बनाया करते थे, इस पत्थर पर हजरत इब्राहीम (عليه السلام) के पैर के निशान हैं। अब इस पत्थर को एक शीशे में महफूज कर दिया गया है, जिसे हर हाजी और उमरा करने वाला इंसान बैतुल्लाह की ज़ियारत के बक्त देख सकता है, इस जगह पर तवाफ़ पूरा करने के बाद दो रकाअत नमाज़ पढ़ना सुन्नत है।

१३०. और इब्राहीम के धर्म (दीन) से वही मूह मोड़ेगा जो खुद बेवकूफ हो, हम ने तो उसे दुनिया में भी अपना लिया और आखिरत में भी वह नेक लोगों में से है।

१३१. जब (भी) उन के रब ने कहा कि आत्म-समर्पण कर दो तो कहा कि मैंने सारे जहाँ के रब के लिए आत्मसमर्पण कर दिया।

१३२. इसी की बसीयत इब्राहीम और याकूब ने अपनी औलाद को की, कि हमारे बच्चों! अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए इस धर्म को निर्धारित कर दिया है, खबरदार! तुम मुसलमान ही मरना।¹

१३३. क्या तुम (हजरत) याकूब की मौत के वक़्त हाज़िर थे? जब उन्होंने अपनी औलाद से कहा कि तुम मेरी मौत के बाद किसकी इबादत करोगे, तो सभी ने जवाब दिया था कि आप के रब की और आप के वुज़ुर्ग इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक के मावूद की, जो एक ही है और हम उसी के ताबेदार रहेंगे।

१३४. यह उम्मत तो गुज़र चुकी, जो उन्होंने किया वो उन के लिए है और जो तुम करोगे वह तुम्हारे लिए है, उन के अमल के बारे में तुम से नहीं पूछा जायेगा।

१३५. ये कहते हैं कि यहूदी और इसाई बन जाओ तो हिदायत पाओगे, तुम कहो कि सही रास्ते पर तो इब्राहीम (عليه السلام) के पैरोकार हैं, और इब्राहीम (عليه السلام) सिर्फ अल्लाह के फ़रमावर्दार थे वे मूर्तिपूजक नहीं थे।²

وَمَنْ يَرْغَبْ عَنْ مِلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ
نَفْسَهُ وَلَقَدْ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي
الْآخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ قَالَ أَسْلَمْتُ
لِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ ﴿١٣١﴾

وَوَهَبْنَا لَهُ إِبْرَاهِيمَ وَيَسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ مِيسِرِينَ إِنَّ
اللّهَ اصْطَفَىٰ لَكُمْ الدِّيْنَ فَلَا تَتَّبِعُوْنَ إِلَّا وَآئْتَكُمْ
مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

أَمْ لَكُمْ شُهَدَآءُ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتَ
إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ بَعْدِي قَالُوا
نَعْبُدُ إِلَهَكَ وَإِلَهَ آبَائِكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحٰقَ
وَيَسْحٰقَ إِلَهًا وَاحِدًا وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿١٣٣﴾

بِتِلْكَ أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلكُمْ مَا
كَسَبْتُمْ وَلَا تَسْأَلُونَ عَنَّا كَالَّذِينَ يَعْملُونَ ﴿١٣٤﴾

وَقَالُوا لَوْ لَوْ هُوَ أَوْ نَصْرِي تَهْتَدُوا قُلْ بَلْ
مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾

¹ हजरत इब्राहीम (عليه السلام) और हजरत याकूब (عليه السلام) ने (सत्यधर्म) की बसीयत अपनी औलाद को किया जो यहूदी धर्म नहीं इस्लाम धर्म ही है। जैसा कि यहाँ भी इसका बयान मौजूद है और कुरआन करीम में कई जगहों पर भी इसका तफ़सीली बयान है।

² यहूदी, मुसलमानों को यहूदी धर्म की और इसाई, इसाई धर्म की दावत देते और कहते कि हिदायत का नूर इसी में है। अल्लाह तआला ने कहा कि उन से कहो कि हिदायत इब्राहीम के धर्म की अनुकरण (पैरोवी) में है, जो हनीफ था (यानी सिर्फ एक अल्लाह ही का पैरोकार और उसकी इबादत करने वाला) वह मूर्तिपूजक नहीं था।

१३६. (ऐ मुसलमानों!) तुम सब कहो हम अल्लाह पर ईमान लाये और उस पर भी जो हमारी तरफ उतारी गई और जो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब और उनकी औलाद पर उतारी गई और जो कुछ अल्लाह की तरफ से मूसा, ईसा और दूसरे नबियों को दिये गए, हम उन में से किसी के बीच फर्क नहीं करते, हम अल्लाह के ताबेदार हैं।¹

قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ إِلَىٰ
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْفَاطِ
وَمَا أُوْتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ
مِن دَرَبِهِمْ ۗ إِلَّا نَفَرٌ بَيْنَ يَدَيْهِمْ
وَكَفَرٌ لَهُم مِّن مِّلَّةِ رَبِّهِمْ ۗ

१३७. अगर वह तुम जैसा ईमान लाए तो हिदायत पाएंगे, और अगर मुंह मोड़े तो खिलाफ में है, अल्लाह (तआला) उन से निकट भविष्य (मुस्तक़बिल) में तुम्हारी मदद करेगा। वह अच्छी तरह से सुनने और जानने वाला है।

فَإِن آمَنُوا بِبَشِيرٍ مَّا أَمَنْتُمْ بِهِ فَقَدِ اهْتَدَوْا
وَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ ۗ فَسَيَكْفِيكَهُمُ
اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۗ

१३८. अल्लाह का रंग अपनाओ और अल्लाह (तआला) से अच्छा रंग किसका होगा?² हम तो उसी की इबादत करने वाले हैं।

صِبْغَةَ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً
وَكَفَرٌ لَهُ عِيسَىٰ ۗ

¹ यानी ईमान यह है कि सभी नबियों को अल्लाह तआला की ओर से जो कुछ मिला या उन पर उतरा, सभी पर ईमान लाया जाए, किसी भी किताब या रसूल का इकार न किया जाए, किसी एक किताब या नबी को मानना, किसी को न मानना, यह नबियों में फर्क जाहिर करता है जिसे इस्लाम ने ठीक नहीं कहा है, लेकिन अब अमल केवल कुरआन करीम के कानूनों और आदेशानुसार होंगे, पहले किताबों में लिखी हुई के अनुसार नहीं, क्योंकि पहले तो वे अपने असल रूप (शकल) में नहीं है, परिवर्तित (बदले हुए) हैं, दूसरे कुरआन ने उन सभी के हुक्मों को मंसूख कर दिया है।

² इसाईयों ने एक पीले रंग का पानी निर्धारित (मुकरर) कर रखा है, जो हर इसाई लड़के को और हर उस इंसान को भी दिया जाता है जिसका मकसद इसाई धर्म कुबूल करना होता है। इस रीति का नाम उन के यहाँ «बैप्टिज्म» है। यह उन के यहाँ बहुत जरूरी है इस के बिना वे किसी के पाक होने की कल्पना (तसव्वुर) नहीं करते, अल्लाह तआला ने उनका खण्डन (तरदीद) किया है और कहा है कि सच्चा रंग तो अल्लाह का रंग है, उस से बड़ा कोई रंग नहीं। अल्लाह के रंग का मतलब वह प्राकृतिक धर्म है, या इस्लाम धर्म है, जिसकी तरफ हर नबी ने अपने-अपने जमाने में अपनी-अपनी उम्मत को दावत दिया या एकेश्वरवाद (तौहीद) की दावत।

१३९. (आप) कह दीजिए क्या तुम हम से अल्लाह के बारे में भगइते हो, जो हमारा और तुम्हारा रब है, हमारे लिए हमारे अमल है, तुम्हारे लिए तुम्हारे अमल, हम तो उसी के लिए मुख्लिस है।

قُلْ اتَّخَذْتُنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ ﴿١٣٩﴾

१४०. क्या तुम कहते हो इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक और याकूब और उनकी औलाद यहूदी या इसाई थी? कह दो क्या तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह (तआला)? अल्लाह के पास सबूत छुपाने वालों से ज़्यादा जालिम और कौन है? और अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमल से गाफिल नहीं।

أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ ۚ قُلْ ءَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللَّهُ ۗ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهُ مِنَ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَنِ الْعَمَّالِينَ ﴿١٤٠﴾

१४१. यह समुदाय (उम्मत) है जो गुजर चुका, जो उन्होंने किया उन के लिए है और जो तुम ने किया तुम्हारे लिये, तुम से उन के अमल के बारे में सबाल नहीं किया जाएगा।

ذَلِكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلكُمْ مَا كَسَبْتُمْ ۗ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤١﴾

इस आयत में फिर फ़ायदेदा और अमल की विशेषता (फ़ज़ीलत) का बयान करके बुज़ुर्गों और महात्माओं से रिश्ता या उन पर भरोसा को बेकार बताया गया है। क्योंकि :

(مَنْ عَمِلَ بِهِ عَمَلُهُ لَمْ يَسْأَلْ بِهِ نَسَبَهُ)

“जिसको उसका कर्म (अमल) पीछे छोड़ गया, उसका बंश उसे आगे नहीं बढ़ाएगा।” (सहीह मुस्लिम)

मतलब है कि बुज़ुर्गों के अच्छे काम से तुम्हें कोई फ़ायदेदा और उन के गुनाहों पर तुम से कोई पूछताछ न होगी, बल्कि उन के अमल के बारे में तुम से या तुम्हारे अमल के बारे में उन से नहीं पूछा जाएगा।

(وَلَا تُؤْرَ وَأَبْدَةٌ وَبِذَ أُخْرَىٰ)

“कोई किसी का बोझ नहीं उठाएगा।” (सूर: फ़ातिर-१८)

(وَأَنْ تَبْسُ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ)

“इंसान के लिए वही कुछ है जिस के लिए उस ने कोशिश की।” (सूर: अल-नजम-३९)

१४२. करीब ही वेवकूफ लोग कहेंगे कि जिस किब्ला (जिस दिशा की तरफ मुंह करके नमाज़ पढ़ी जाती है) पर यह थे उस से इन्हें किस चीज ने फेर दिया? (आप) कह दीजिए कि पूरब और पश्चिम का मालिक अल्लाह (तआला) है वह जिसे चाहे सीधा रास्ता दिखाता है।¹

१४३. और हम ने इसी तरह तुम्हें बीच की (संतुलित) उम्मत बनाया है।² ताकि तुम लोगों पर गवाह हो जाओ और रसूल (ﷺ) तुम पर गवाह हो जाएं और जिस किब्ले पर तुम पहले से थे, उसे हम ने सिर्फ इसलिए मुहर्रर किया था कि हम जान लें कि रसूल के सच्चे ताबेदार कौन-कौन हैं और कौन है जो अपनी एड़ियों के बल पलट जाता है, जबकि यह काम कठिन है, लेकिन जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी है (उन पर कोई कठिनाई नहीं) अल्लाह (तआला) तुम्हारा ईमान बर्बाद नहीं करेगा, अल्लाह (तआला) लोगों के साथ प्यार और रहम करने वाला है।

१४४. हम आप के मुंह को आसमान की तरफ, बार-बार उठते हुए देख रहे हैं, अब हम आप को उस किब्ले की तरफ फेर देंगे, जिस से आप खुश हो जायें, आप अपना मुंह मस्जिद हराम (कअबा) की तरफ फेर लें और आप जहाँ कही भी हों आप अपना मुंह उसी ओर फेरा करें। अहले किताब को इस बात के अल्लाह की तरफ से सच होने का सच्चा इल्म है और अल्लाह तआला उन अमलों से गाफिल नहीं, जो ये करते हैं।

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّهُمْ عَن قِبَلِهِمُ الْبَيْتِ كَانُوا عَلَيْهَا قُلْ لِلَّهِ الشَّرِيقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ (42)

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقْبَيْهِ ۗ وَإِن كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا إِذَا هَدَىٰ لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ الْأَمْرِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ (43)

قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ ۗ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا ۗ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۗ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ ۗ وَإِن لِّلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لِيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ ۗ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ (44)

¹ यह आयत किब्ला के बारे में नाज़िल हुई।

² وَسَطًا का मतलब है, 'मध्य' (बीच), लेकिन यह बड़ाई और फ़ज़ीलत के लिए भी इस्तेमाल होता है, यहाँ भी इसी मतलब में इस्तेमाल हुआ है।

१४५. और आप अगर अहले किताब को सभी सुबूत पेश कर दें, फिर भी वे आप के किब्ले का अनुकरण (पैरवी) नहीं करेंगे और न आप उन के किब्ले को मानने वाले, न ये आपस में एक-दूसरे के किब्ले को मानने वाले हैं। अगर आप इस के बावजूद कि आप के पास इल्म आ चुका फिर भी उनकी इच्छाओं को पूरी करने के लिए पैरवी करने लगे तो बेशक आप भी जालिम हो जाएंगे।¹

१४६. जिन्हें हमने किताब दी है वे तो इसे ऐसा पहचानते हैं, जैसे कोई अपने पुत्रों को पहचानता है, उनका एक गुट सच को पहचान कर फिर छुपाता है।

१४७. आपके रब की तरफ से यह पूरा सच है, होशियार! आप शक करने वालों में से न हों।

१४८. और हर इंसान एक न एक ओर आकृष्ट (मुतवज्जिह) हो रहा है, तुम नेकी की तरफ दौड़ो जहाँ कहीं भी तुम रहोगे, अल्लाह तुम्हें ले आयेगा, अल्लाह (तआला) को हर चीज की कुदरत है।

१४९. और आप जहाँ से निकलें अपना मुंह मस्जिदे हराम की तरफ कर लिया करें, यही सच है आप के रब की तरफ से और जो कुछ तुम कर रहे हो उस से अल्लाह अन्जान नहीं।

१५०. और जिस जगह से आप निकलें अपना मुंह मस्जिदे हराम की तरफ फेर लें और जहाँ कहीं तुम रहो अपना मुंह उसी तरफ कर लिया करो, ताकि लोगों की कोई हज्जत तुम पर बाक्री न रह जाए, उनके सिवाय जिन्होंने उन में से जन्म किये हैं, तुम उन से मत डरो,² मूख से ही डरो ताकि मैं अपनी नेमत तुम पर पूरी कर

وَلَيْنَ اتَّخَذَتِ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِحُكِّي آيَةً
مَا آتَيْنَاهُمْ قِيلَتِكَ ۖ وَمَا أَنْتَ بِتَارِعٍ قِبَلَتَهُمْ ۖ
وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَارِعٍ قِبَلَةَ بَعْضٍ ۖ وَلَئِن
اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ
الْعِلْمِ لَأَنْتَ إِذَا لَيْسَ الظَّالِمِينَ (145)

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ
ابْنَاءَهُمْ وَإِنَّ فَرِيقًا مِنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ
يَعْلَمُونَ (146)

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ (147)

وَلَئِن وَجَّهَهُمْ هُوَ مَوْلَاهَا فَاستَبِقُوا الْخَيْرَاتِ
أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمْ اللهُ جَمِيعًا إِنَّ اللهَ
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (148)

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ وَإِنَّهُ لِلْحَقِّ مِنْ رَبِّكَ ۖ وَمَا اللهُ بِعَاقِلٍ
عَبَا تَهْلُكُونَ (149)

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ ۖ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ
لِيَكَلَّامُ يَكُونُ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ذِكْرًا لِلَّذِينَ
ظَلَمُوا مِنْهُمْ ۖ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي ۚ وَلَا تَمَرَّ
بِعَصِيَّتِهِمْ وَعَلَّامٌ لَهْتَدُونَ (150)

¹ यह चेतावनी (तंबीह) पहले गुजर चुकी है, मकसद उम्मत को होशियार करना है कि कुरआन और हदीस के इल्म के बावजूद अहले विदअत के पीछे लगना ज़ुम और भटकाव है।

² जालिमों से न डरो, यानी मूर्तिपूजकों की बालों की फिक्र न करो।

दूँ और इसलिए भी कि तुम हिदायत पा सको ।

१५१. जिस तरह हम ने तुम में तुम्ही में से रसूल (ईशदूत-मोहम्मद ﷺ) को भेजा, जो हमारी आयतें (पाक कुरआन) तुम्हारे सामने तिलावत करता है और तुम्हें पाक करता है और तुम्हें किताब और हिकमत और उन बातों का जिन से तुम लाइलम थे इल्म दे रहा है ।

१५२. इसलिए तुम मुझे याद करो मैं भी तुम्हें याद करूँगा और मेरे शुकुगुजार रहो और नाशुक्री से बचो ।

१५३. हे ईमानवालो! सब और नमाज के जरिये मदद चाहो, अल्लाह (तआला) सब करने वालों का साथ देता है ।^१

१५४. और अल्लाह (तआला) की राह में शहीद होने वालों को मुर्दा न कहो,^२ वे जिन्दा हैं, लेकिन तुम नहीं समझते ।

१५५. और हम किसी न किसी तरह तुम्हारा इम्तेहान जरूर लेंगे, दुश्मन के डर से, भूख-प्यास से, माल व जान, फलों की कमी से और उन सब करने वालों को खुशखबरी दे दीजिए ।

१५६. उन्हें जब कभी भी कोई कठिनाई आती है, तो कह किया करते हैं कि हम तो खुद अल्लाह (तआला) के लिए हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं ।

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ يَتْلُوا عَلَيْكُمْ
آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ ﴿١٥١﴾

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونَ ﴿١٥٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ
وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٣﴾

وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْواتٌ
بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَكِن لَّا تَعْقِلُونَ ﴿١٥٤﴾

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ
وَقَفْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالشَّرْبِ
وَيَبْقُرُ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ قَالُوا
إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١٥٦﴾

^१ इंसान की दो ही हालतें होती हैं । सुख-सुविधा (ऐशो-आराम) या दुख और मुसीबत, सुख में अल्लाह का शुकुर करने पर जोर और दुख में सब और अल्लाह से मदद लेने पर बल है ।

^२ शहीदों को मरा हुआ न कहना उनके मान-सम्मान के लिए है । यह जिन्दगी बर्ख (आलोक-परलोक) के बीच का जीवन है जिसे हमारी अकल समझने में क़ासिर है । यह जिन्दगी सम्मान के अनुसार नबियों, ईमानवालों यहाँ तक कि काफ़िरों को भी हासिल है । शहीद की रूह और कुछ क़ौल के अनुसार ईमान वालों की रूहें भी एक चिड़िया की बकल में जन्मत में जहाँ चाहती है फिरती है । (इन्ने कसीर और सूरे आले-इमरान-१६९ देखें)

१५७. यही है जिन पर उन के रब की रहमत और नवाज़िबें हैं और यही लोग सच्चे रास्ते पर हैं।

१५८. बेचक सफ़ा (पहाड़) और मरवह (पहाड़) अल्लाह (तआला) की निशानियों में से है।¹ इसलिए अल्लाह के घर का हज और उमरा करने वाले पर इनका तवाफ़ कर लेने में भी कोई हर्ज नहीं। अपनी खुशी से भलाई करने वालों का अल्लाह सम्मान करता है और उन्हें अच्छी तरह जानने वाला है।

१५९. जो लोग हमारी उतारी हुई निशानियों और निर्देशों (हिदायत) को छुपाते हैं इस के बावजूद कि हम उसे अपनी किताब (पाक कुरआन) में लोगों के लिए बयान कर चुके हैं उन लोगों पर अल्लाह की और सभी धिक्कारने वालों की धिक्कार है।²

१६०. लेकिन वह लोग जो तौबा कर लें और सुधार कर लें और बयान करें तो मैं उनकी तौबा क़बूल कर लेता हूँ, और मैं तौबा क़बूल करने वाला और रहम करने वाला हूँ।

१६१. बेचक जो काफ़िर कुफ़्री की हालत में मर जाएं उन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और सभी लोगों की लानत है।

१६२. जिस में वे हमेशा रहेंगे न उन से अज़ाब हल्का किया जायेगा और न उन्हें ढील दी जायेगी।

أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَابِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوْ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿١٥٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَىٰ مِنْ بَدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ النَّاسُ ﴿١٥٩﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنَّاهُ فَأُولَئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارًا أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ لعنةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿١٦١﴾

خُلِيْدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿١٦٢﴾

¹ शिब्रे बहुवचन (जमा) शिब्रे का है, जिसका मतलब निशानी के है, यहाँ हज के काम (जैसे अरफ़ात में रुकना, सई करना, सफ़ा-मरवह पहाड़ों के बीच मुक़रर रास्ते का चक्कर लगाना, कंकरीया मारना, कुर्बानी देना से) मुराद है जो अल्लाह तआला ने मुक़रर किया है।

² अल्लाह तआला ने जो बातें अपनी किताब में उतारी हैं उन्हें छिपाना इतना बड़ा गुनाह है कि अल्लाह की लानतों के सिवा दूसरे लानतें करने वालों के जरिये भी लानत की जाती है। हदीस में है (من سئل عن علم فكمه أجمع يوم القيامة بلجام من النار)

१६३. और तुम सब का मावूद एक अल्लाह ही है उस के सिवाय कोई सच्चा मावूद नहीं, वह बहुत कृपालु और बड़ा दयालु है।

१६४. बेशक आकाश और धरती का बनाना, रात दिन का फेर बदल, नावों का लोगों को फ्रायेदा देने वाली चीजों को लेकर समुद्र में चलना, आकाश से वर्षा उतार कर मरुदा धरती को जिन्दा कर देना, इस में हर तरह के जीव को फैला देना, हवा की दिशा परिवर्तन (बदलना) करना, और बादल जो आकाश व धरती के बीच मुसखबर हैं, इस में अक्लमदो के लिए अल्लाह की क़ुदरत की निशानी है।

१६५. और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह के साझीदार दूसरों को ठहरा कर उनसे ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से होना चाहिए और ईमानवाले अल्लाह से प्रेम में सख्त होते हैं, काश कि मूर्तिपूजक जानते जबकि अल्लाह के अज़ाबों को देखकर (जान लेंगे) कि सभी ताकत अल्लाह ही को है और अल्लाह सख्त अज़ाब देने वाला है। (तो कभी भी मूर्तिपूजा न करते)

१६६. जिस समय मुखिया लोग अपने पैरोंकारों से अलग हो जायेंगे और अज़ाब को अपनी आँखों से देख लेंगे और सभी रिस्ते टूट जायेंगे।

१६७. और ताबेदार कहने लगेंगे, काश हम दुनिया की तरफ़ दोबारा जायें तो हम भी उन से इसी तरह अलग हो जायें, जैसे ये हम से हैं। इसी तरह अल्लाह तआला उन्हें उन के अमल दिखाएगा उनको पछतावे के लिए, ये कभी भी जहन्नम से न निकल पाएंगे।¹

وَاللَّهُمُّ إِلَهٌ وَاحِدٌ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ

الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ﴿١٦٣﴾

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْخِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ مَاءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا بَيِّنَاتٍ لِّهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ سَرَ وَتَضْرِيْفِ الرِّيحِ وَالسَّحَابِ السَّخِرِ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٦٤﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَتَّخِذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْدَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللَّهِ وَالَّذِينَ أَمْثَلُوا أَشَدَّ حُبًّا لِّلَّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرُونَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ ﴿١٦٥﴾

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوْا الْعَذَابَ وَتَقَطَعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ ﴿١٦٦﴾

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةٌ فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوا وَإِنَّا لَكَاذِبُونَ ﴿١٦٧﴾

مِنَ النَّارِ ﴿١٦٧﴾

¹ मुशरिक आखिरत में धर्मगृह और धर्माचारियों की मजबूरी और ख्यानत पर अफसोस करेंगे, लेकिन इस अफसोस का कोई फ्रायेदा न होगा, काश दुनिया में ही शिर्क से तौबा कर ले।

१६८. हे लोगों ! धरती में जितनी भी हलाल और पाक चीजें हैं, उन्हें खाओ-पियो और शैतान के रास्ते पर न चलो, वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

१६९. वह तुम्हें सिर्फ बुराई और बेहयाई का और अल्लाह (तआला) पर उन बातों के कहने का हुकम देता है जिनका तुम्हें इल्म नहीं।

१७०. और उन से जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) की उतारी हुई किताब पर अमल करो तो जवाब देते हैं कि हम तो उस रास्ते का पालन करेंगे जिस पर हम ने अपने वजुर्गों (बाप-दादा) को पाया, जबकि उन के वजुर्ग बेवकूफ और भटके हुए हों।^१

१७१. और काफिर उन जानवरों की तरह हैं जो अपने चरवाहे की सिर्फ पुकार और आवाज ही को सुनते हैं (समझते नहीं) वह बहरे गूंगे और अंधे हैं, उन्हें अक़ल नहीं है।^२

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلَالًا طَيِّبًا وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ

فُؤِيْنٌ ﴿١٦٨﴾

إِنَّمَا يَأْمُرُكُم بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَإِن

تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٦٩﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَل

نَتَّبِعُ مَا الْفَرَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوْ لَوْ كَانَ

آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٧٠﴾

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الذِّبْءِ يَتَّبِعُ بِمَا

لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءَ وَنِدَاءَ صُمٌّ بُكْمٌ عُمْى

فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٧١﴾

^१ यानी शैतान के तावेदार बनकर अल्लाह की हलाल की हुई चीजों को हराम न कहो, जिस तरह से मूर्तिपूजकों ने किया कि अपनी मूर्तियों के नाम से समर्पित (बकूफ) जानवरों को अपने लिए हराम कर लेते थे, जिसका तफसीली बयान सूर: अल-अन्आम में आयेगा।

^२ आज भी अहले विद्वत को समझाया जाए कि इन नई बातों की धर्म में कोई कीमत नहीं, तो वह यही जवाब देंगे कि ये रीति-रिवाज हमारे वजुर्गों से चली आ रही है, जबकि वजुर्ग भी दीन के इल्म से नावाक़िफ और हिदायत से महरूम हो सकते हैं, इसलिए मज़हबी दलीलों के सुबूत के सामने वजुर्गों के हुकम को मानना, इमामों की पैरवी (बिना सुबूत के उनकी बात माने जाना) पूरी तरह से भटकाव है, अल्लाह तआला मुसलमानों को भटकाव के दलदल से निकाले।

^३ इन काफिरों की मिसाल, जिन्होंने अपने वजुर्गों की पैरवी में अपनी अक़ल और इल्म को छोड़ दिया है, उन जानवरों की तरह है, जिनको चरवाहा बुलाता और पुकारता है, तो वह जानवर आवाज तो सुनते हैं, लेकिन यह नहीं समझते कि उन्हें क्यों बुलाया और पुकारा जा रहा है? इसी तरह यह तावेदार भी बहरे है कि सच की आवाज नहीं सुनते, गूंगे हैं कि सच बात मुँह से नहीं निकालते, अंधे हैं कि सच देख नहीं सकते और अक़ल से खाली हैं कि सच की दावत और एकेस्वरवाद (तौहीद) और सुन्नत की दावत को समझने के लायक नहीं हैं, यहाँ दुआ से करीब की आवाज और निदाअ से दूर की आवाज मुराद है।

१७२. ऐ ईमानवालो! जो (पाक) चीज हम ने तुम्हें अता की है, उन्हें खाओ-पियो और अल्लाह (तआला) के शुकुगुजार रहो, अगर तुम सिर्फ उसी की इवादत करते हो !

१७३. तुम पर मुर्दा और खून (बहा हुआ), सूअर का गोश्त और वह हर चीज जिस पर अल्लाह के नाम के सिवाय दूसरों के नाम पुकारे जायें हाराम है, लेकिन जो मजबूर हो जाये और वह सीमा उल्लंघन करने वाला और जालिम न हो, उसको उन को खाने में कोई गुनाह नहीं, अल्लाह (तआला) बख्शने वाला रहम करने वाला है ।

१७४. बेचक जो लोम अल्लाह तआला की उतारी हुई किताब छिपाते हैं, और उसे थोड़ी-थोड़ी कीमत पर बेचते हैं, यकीन करो वे अपने पेट में आग भर रहे हैं, कयामत के दिन अल्लाह तआला उन से बात भी नहीं करेगा, न उन्हें पाक करेगा, उन के लिए सख्त अजाब हैं ।

१७५. यही वह लोग है जिन्होंने गुमराही को हिदायत के बदले और अजाब को मगफिरत के बदले खरीद लिया है, यह लोग आग का अजाब कितना सहन करने वाले हैं ।

१७६. इन अजाबों की वजह यही है कि अल्लाह तआला ने सच्ची किताब उतारी और इस किताब में इखितेलाफ रखने वाले जरूर दूर के विभेद (खिलाफ) में हैं ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ
وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِنَّكُمْ لِرَأَاه تَعْبُونَ ﴿١٧٢﴾

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ
الْخِنْزِيرِ وَمَا أُهْلَ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ فَمَنْ
أَضْطَرَّ عَلَيْهِ بِأَخٍ وَلَا عَمَلٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ
إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٧٣﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ
وَيُسْتَرُونَ بِهِ كِتَابًا قَلِيلًا أُولَئِكَ مَا يَأْكُلُونَ
فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٧٤﴾

أُولَئِكَ الَّذِينَ اشْتَرُوا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَى وَالْعَذَابَ
بِالْمَغْفِرَةِ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ ﴿١٧٥﴾

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَّلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ الَّذِينَ
اختلفوا في الكتاب لفي شقاقٍ بعيبي ﴿١٧٦﴾

¹ इस में ईमानवालों को उन सभी चीजों के खाने का हुक्म है, जिन्हें अल्लाह ने हलाल की है और उस पर अल्लाह का शुकुगुजार होने की बात कही गयी है, उस से तो एक बात यह मालूम हुई कि अल्लाह की हलाल की हुई चीज ही पाक और पाकीजा है, हाराम की हुई चीज पाक नहीं चाहे वे मन को कितनी ही पसंद क्यों न हो (जैसे पश्चिमी देशों को सुअर का गोश्त बहुत ज्यादा पसन्द है ।

१७७. सारी अच्छाई पूरब और पश्चिम की तरफ मुंह करने में ही नहीं, बल्कि हकीकत में अच्छा वह इंसान है जो अल्लाह (तआला) पर, क़यामत के दिन पर, फ़रिश्तों पर, अल्लाह की किताब पर और नबियों पर ईमान रखने वाला है, जो माल से प्रेम करने पर भी रिश्तेदारों, यतीमों, गरीबों, मुसाफ़िरो और भिखारियों को दे, कैदियों को आज़ाद करे, नमाज़ की पाबंदी और ज़कात को अदा करे, जब वादा करे तो उस को पूरा करे, माल की कमी, दुख-दर्द और लड़ाई के समय सब्र करे, यही सच्चे लोग हैं और यही परहेजगार (बुराई से बचने वाले) हैं।

१७८. हे ईमानवालों! तुम पर क़त्ल किये गये इंसान का बदला लेना फ़र्ज़ किया गया है, आज़ाद आज़ाद के बदले, गुलाम गुलाम के बदले, नारी नारी के बदले, हाँ अगर जिस किसी को उस के भाई की तरफ से माफ़ कर दिया जाये, उसे भलाई का सम्मान (एहतेराम) करना चाहिए और आसानी के साथ देयत (माल जो क़त्ल के बदले लिया जाये फ़िदिया) अदा करना चाहिए,^१ तुम्हारे रब की तरफ से यह छूट और रहमत है^२ उस के बाद भी जो उल्लंघन (तजावुज़) करे, उसे बहुत अजाब का सामना करना पड़ेगा।^३

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوْتُوا وَجُوْهُكُمْ قِبَلَ الشَّرْقِ
وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَالسَّلٰمَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيِّنَ ۗ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ
ذُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتٰمَىٰ وَالسَّلٰمِينَ وَأَمِنَ السَّبِيلِ ۗ
وَالسَّاهِلِينَ ۗ وَفِي الرِّقَابِ ۗ وَأَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ
آتَى الزَّكٰوةَ ۗ وَالْمُؤْمِنُ بِعَهْدِهِ إِذًا عَهْدُهُ ۗ
وَالظَّالِمِينَ فِي الْمَسَآءِ وَالصُّبْحِ ۗ إِنَّ الْإِنسَانَ
لِرَبِّهِ الْكَفٰرُ الْاَكْبَرُ ۗ (177)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي
الْقَتْلِ ۗ بِالْحَرِّ بِالْحَرِّ ۗ وَالْعَبْدِ بِالْعَبْدِ ۗ وَالْاُنثٰى
بِالْاُنثٰى ۗ فَمَنْ عَفِيَ عَنْهُ فَاِخِيْرُ شَيْءٍ فَاَتٰ بِهَا
بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَاِذَاءَ اِلَيْهِ بِاِحْسٰنٍ ۗ ذٰلِكَ تَخْفِيْطٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ۗ فَمَنْ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ
فَلَهُ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (178)

^१ माफ़ी की दो हालतें हैं, एक तो बिना कोई माल बदले में लिए यानि देयत लिए बिना हो सिर्फ अल्लाह की खुशी का हक्दार बनने के लिए माफ़ करना, दूसरी हालत क़त्ल के बजाये देयत कुबूल कर लेना। अगर यह दूसरी हालत अपनायी जाये, तो कहा जा रहा है कि देयत लेने वाला भलाई का पालन करे। आ. आ. إليه بإحسان में क़ातिल से कहा जा रहा है कि बिना किसी कपट दिये अच्छी तरह से देयत को अदा करे, क़त्ल हुये इंसान के नज़दीकी रिश्तेदारों ने उस पर मेहरबानी की है उस के बदले में शुक्रिया ही के साथ दे। (अर्हमान)

^२ यह छूट और मेहरबानी (यानि बदला, माफ़ी या देयत तीनों हालतें) अल्लाह तआला की तरफ से तुम पर हुई है, नहीं तो इससे पहले तौरात वालों के लिए बदला या माफ़ी थी, लेकिन देयत नहीं थी और इज़ील वालों (इसाईयों) में केवल माफ़ी ही थी, बदला था न देयत। (इब्ने कसीर)

^३ देयत, (माल जो मक़तूल के वारेसीन क़ातिल से क़त्ल के बदले में सज़ाये मौत माफ़ करने के लिए मांगे) कुबूल करने या ले लेने के बाद भी उसका क़त्ल कर दे, तो यह जुल्म और ज़्यादती

१७९. अकलमंदों! किंसास (प्रतिहत्या, हत्यादण्ड) में तुम्हारे लिए जिदगी है इस वजह से तुम (कत्ल करने से) रुकोगे ।¹

१८०. तुम पर फर्ज कर दिया गया है कि जब तुम में से कोई मरने लगे और माल छोड़ जाता हो, तो अपने माँ-बाप और रिश्तोदारों के लिए अच्छाई के साथ वसीयत कर जाये ।² परहेजगारों पर यह फर्ज वाजेह है ।

१८१. अब जो इंसान उसे सुनने के बाद बदल दे, तो उसका गुनाह बदलने वाले पर ही होगा, बेशक अल्लाह तआला सुनने वाला और जानने वाला है ।

१८२. हाँ जो वसीयत करने वाले के पक्षपात और गुनाह से डरे और अगर वह उन में आपस में सुधार करा दे, तो उस पर गुनाह नहीं, अल्लाह (तआला) माफ करने वाला मेहरबान है ।

१८३. ऐ ईमानवालो! तुम पर रोज़े (व्रत जो रमजान के महीने में रखे जाते हैं) फर्ज किये गये, जिस तरह से तुम से पहले लोगों पर फर्ज किये गये थे, ताकि तुम तक्वा (अल्लाह से डर) का रास्ता अपनाओ ।³

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَوةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧٩﴾

كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةَ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ﴿١٨٠﴾

فَمَنْ بَدَلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَأَنَّى يُؤْتَى عَلَى الَّذِينَ يَنْتَوُونَ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٨١﴾

فَمَنْ خَافَ مِنْ مَوْصٍ بَعَثْنَا أَوْ تَوَلَّى فَاصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٨٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٨٣﴾

है, जिसकी सजा उसको दुनिया और आखिरत दोनों में भुगतना पड़ेगा ।

¹ जब क्रांतिल को यह डर होगा कि कत्ल के बदले में उसे भी मार डाला जायेगा, तो वह किसी को भी कत्ल करने की हिम्मत नहीं करेगा और जिस समाज में कत्ल के बदले में यह कानून लागू हो जाता है, वहाँ यह डर समाज को कत्ल और खून बहाने से महफूज रखता है, जिस से समाज में बहुत सुख-शान्ति (अमनो-अमान) रहती है । इसका अवलोकन (मुचाहदा) सऊदी अरब के समाज में किया जा सकता है, जहाँ इस्लामी कानून के पालन के ही वजह से अल्लाह की नेमत से सुख-शान्ति का माहौल है ।

² वसीयत करने का यह हुक्म विरासत की आयत उतरने से पहले दिया गया था, अब यह मन्सूख है ।

³ صيام (रोज़ा, व्रत) का मतलब है सुबह सूरज निकलने से पहले रात के अंशेरे के बाद जो

१८४. गिनती में कुछ ही दिन हैं, लेकिन अगर तुम में से जो इंसान बीमार हो या सफर में हो, तो वह दूसरे दिनों में गिनती पूरी कर ले और जो इसकी कुदरत रखता हो फिदिया में एक गरीब को खाना दे, फिर जो इंसान भलाई में बढ़ जाये वह उसी के लिए बेहतर है, लेकिन तुम्हारे हक में बेहतर अमल रोजे (ब्रत) रखना ही है अगर तुम जानते हो।

१८५. रमजान का महीना वह है, जिस में कुरआन उतारा गया। जो लोगों के लिए हिदायत है, और जो हिदायत और हक व बातिल के दरमियान फ़ैसलाकून है, तो तुम में जो भी इस महीने को पाये उसे रोज़ा रखना चाहिए, हाँ जो रोगी हो या सफर में हो, तो उसे दूसरे दिन में यह गिनती पूरी करनी चाहिए, अल्लाह (तआला) की मंजी तुम्हारे साथ आसानी की है सख्ती की नहीं, वह चाहता है कि तुम गिनती पूरी कर लो और अल्लाह (तआला) की अता की गई हिदायत के अनुसार उसकी बड़ाई बयान करो और उसके शुक्रगुजार रहो।

१८६. और जब मेरे बन्दे (भक्त) मेरे बारे में आप से सवाल करें तो कह दें कि मैं बहुत ही करीब हूँ, हर पुकारने वाले की पुकार को जब कभी भी वह मुझे पुकारे मैं कुबूल करता हूँ, इसलिए लोगों को भी चाहिए कि वह मेरी बात मानें और मुझ पर इमाम रखें यही उनकी भलाई का कारण (वाईस) है।

إِنَّمَا مَعَدُّوَاتٌ طَمَعْنُ كَانَ مِنْكُمْ قَرِيْبًا ۗ
عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ط وَعَلَى الَّذِيْنَ
يُطِيقُوْنَ فِدْيَةَ طَعَامِهِمْ وَسِيْكِيْنَ طَمَعْنُ تَطَوَّعَ
خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ ط وَأَنْ تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (184)

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى
لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَى وَالْفُرْقَانِ ۗ
فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۗ وَمَنْ كَانَ
مَرِيْبًا ۖ أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ط يُرِيدُ
اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۖ وَلِتُكْمِلُوا
الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ (185)

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيْبٌ ط
أُجِِبُّ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا
لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ (186)

सफेद रौशनी वातावरण में होती है, के वक्त से लेकर सूरज के डूबने तक खाने-पीने की वी वी से हमबिस्तरी करने से, अल्लाह की खुशी हासिल करने के लिए रुके रहना, यह इबादत नपस की पाकी और सफाई के लिए बहुत जरूरी है, इसलिए इसे तुम से पहले की उम्मतों पर भी फर्ज किया गया था।

१ रमजान में कुरआन उतरने का मतलब यह नहीं कि पूरा कुरआन किसी एक रमजान में उतरा, बल्कि यह है कि रमजान की शबे कद्र (एहतेराम वाली रात) में लौह महफूज (अल्लाह की वह किताब जिस में शुरू से आखिर तक सभी कुछ लिखा है) से दुनिया के आसमान में उतार दिया गया और वहाँ वैतुल इज्जत (इज्जत वाला घर) में रख दिया गया, वहाँ से हालात के एतबार से लगभग २३ साल तक उतरता रहा। (इब्ने कसीर) इसलिए यह कहना कि कुरआन रमजान में या लैलतुल कद्र या लैलतुल मुबारक में उतरा यह सब सच है।

१८७. रोजे की रातों में अपनी बीवियों से मिलने की तुम्हें इजाजत है, वह तुम्हारा लिबास हैं और तुम उन के लिबास हो, तुम्हारी छिपी खयानत का अल्लाह को इल्म है, उस ने तुम्हारी तौबा को कुबूल कर तुम्हें माफ कर दिया, अब तुम्हें उन से हमबिस्तरी की और अल्लाह (तआला) की लिखी हुई चीज को बूढ़ने का हुक्म है, तुम खाते-पीते रहो, यहाँ तक की फज्र की सफेदी का धागा अंधेरे के काले धागे से वाजेह हो जाये, फिर रात तक रोजे को पूरा करो और बीवियों से उस समय हमबिस्तरी न करो जब कि तुम मस्जिदों में ऐतेकाफ (एक मुकर्ररा वक्त के लिए अल्लाह की इबादत के मकसद से अपने आप को मस्जिद तक ही महदूद कर लेना) में हो, यह अल्लाह (तआला) के हुदूद है, तुम इन के करीब भी न जाओ, इसी तरह अल्लाह अपनी निशानियाँ लोगों पर बयान करता है, ताकि वे वचें !

१८८. और एक-दूसरे का माल गलत तरीके से ना खाया करो, न हकदार इंसानों को रिश्वत पहुँचाकर किसी का कुछ माल जुल्म से हड़प कर लिया करो, अगरचें कि तुम जानते हो ।¹

१८९. लोग आप से नये चाँद के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए कि यह लोगों (की इबादत) के वक्त और हज के मौसम के लिए है (एहराम की हालत में) और घरों के पीछे से तुम्हारा आना कोई नेक काम नहीं, बल्कि नेक काम वह है जो अल्लाह से डरता हो । घरों में

أَجْنَ لَكُمْ لَيْلَةَ الضِّيَامِ الرَّفَقَ إِلَى نِسَائِكُمْ هُنَّ لِبَاسِكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسُهُنَّ عَلَيْهِمُ اللَّهُ أَنْتُمْ لَنْ تَخْتَفُوا عَلَيْهِمْ وَعَسَا عَنْكُمْ فَالْتَنَ بِأَشْرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَبَيِّنَ لَكُمْ الْخَيْطُ الْأَبْيَضَ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ أَتُوا الضِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسْجِدِ يَذُكُ حُدُودَ اللَّهِ فَلَا تَقْرُبُوهَا ذَٰلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لِيَتِيهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٨٧﴾

وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْنُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٨٨﴾

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَهْلِ ذُ قُلْ مِنْ مَوَاقِيَتِ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ وَالنَّكَاحِ الْيَرُ بَانَ تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْيَرُ مِنَ النُّفَى وَأَمَّا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا فَأْتُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْخِحُونَ ﴿١٨٩﴾

¹ इस्लाम के शुरू में एक हुक्म यह था कि रोजा खोल लेने के बाद इंचा (रात) की नमाज या सोने तक खाने-पीने और पत्नी से हमबिस्तरी करने का हुक्म था, सोने के बाद इन में से कोई काम नहीं किया जा सकता था। वाजेह है यह मना करना कठिन था और इस के हिसाब से काम करना कठिन था, अल्लाह तआला ने इस आयत में यह दोनों पाबन्दी मन्सूख कर दी।

² यह ऐसे इंसान के बारे में है जिसके पास किसी का हक हो और मालिक के पास कोई सुबूत न हो, जिसका फ्रायेदा उठाकर वह इंसान अदालत या हकदार से अपने हक में फैसला करा ले, इस तरह दूसरे का हक ले ले, यह जुल्म और हराम है, अदालत का फैसला जुल्म और हराम को जायेज नहीं कर सकता, यह जालिम अल्लाह तआला के सामने मुजरिम होगा। (इब्ने कसीर)

उन के दरवाजे से आया करो,¹ और अल्लाह से डरते रहा करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ।

१९०. और लड़ो अल्लाह की राह में उन से जो तुमसे लड़ते हैं और जुल्म न करो² अल्लाह (तआला) जालिम को पसंद नहीं करता है।

१९१. और उन्हें मारो जहाँ भी पाओ और उन्हें निकालो जहाँ से उन्होंने तुम्हें निकाला है और (सुनो) फितना (लड़ाई-भगड़ा, फसाद) कत्ल से ज्यादा बुरा है³ और मस्जिदे हराम के पास उन से लड़ाई न करो, जब तक कि वे खुद तुम से न लड़ें, अगर वे तुम से लड़ें, तो तुम भी उन्हें मारो,⁴ काफिरों का बदला यही है।

१९२. अगर वे रुक जायें, तो अल्लाह (तआला) बहुत बख्शने वाला रहम करने वाला है।

१९३. और उन से लड़ो, जब तक कि फितना न मिट जाये और अल्लाह (तआला) का दीन रह जाये, अगर वह रुक जायें (तो तुम भी रुक जाओ) जुल्म तो केवल जालिमों पर है।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿١٩٠﴾

وَأَقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُمْ مِنْ

حَيْثُ أَخْرَجُوهُمْ ۗ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۗ

وَلَا تَقَاتِلُوهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّىٰ

يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ ۗ وَإِنْ فَتَنُوكُمْ فَأَقْتُلُوهُمْ ۗ

كَذَلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿١٩١﴾

فَإِنْ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٩٢﴾

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ

بِلَهُمْ ۗ فَإِنْ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى

الظَّالِمِينَ ﴿١٩٣﴾

¹ अन्सार जाहिलियत के दौर में जब हज्ज या उमर: का एहराम (हज और उमर: के लिए एक खास हालत जिस में मर्द एक लुंगी और एक ओढ़ने की चादर जो धार्मिक नियमानुसार लपेटी जाये, बांधता है) बांध लेते और फिर उसके बाद किसी चीज की जरूरत पड़ती, तो अपने घरों में मुख्य दरवाजे से न दाखिल होते, बल्कि पीछे की दीवार लोथ कर दाखिल होते, इसको वह सवाब समझते, अल्लाह तआला ने कहा कि यह सवाब नहीं है। (ऐसरुत्तफासीर)

² इस आयत में पहली बार उन लोगों में लड़ने का हुक्म दिया गया है, जो हमेशा मुसलमानों के कत्ल करने के ख्याल में रहते थे, फिर भी ज्यादाती से रोका गया है, जिसका मतलब यह है कि कुचलो नहीं, औरतों, बच्चों, वृद्धों को जिनका जंग में योगदान न हो कत्ल मत करो, पैड़ बगैरह को जला देना, जानवरों को बिला वजह मार डालना भी ज्यादाती है, इन से बचा जाये। (इब्ने कसीर)

³ मजहब इस्लाम के शुरुआती दौर में मक्का शहर में चीक मुसलमान कमजोर और बिखरे हुए थे, इसलिए काफिरों से लड़ना मना था, जब मुसलमान मक्का शहर से हिजरत करके मदीने आये तो मुसलमान की सारी ताकत जमा हो गयी, फिर उनको जिहाद करने का हुक्म अता किया गया, शुरु में आप केवल उन्हीं से लड़ते जो मुसलमानों से लड़ते, लेकिन इस के बाद इसको और बढ़ाया गया और मुसलमानों ने जरूरत के ऐतबार से काफिरों के इलाके में भी जाकर जिहाद किया।

⁴ हरम के हद्द में लड़ना मना है, लेकिन अगर काफिर इसकी रिआयत न करें और तुम में लड़ें तो तुम्हें भी उन से लड़ने का हुक्म है।

१९४. हरमत वाले महीने के बदले हरमत वाले महीने हैं और हरमतें अदले-बदले की हैं, जो तुम पर जुल्म करे तुम भी उस पर उसी तरह का जुल्म करो जो तुम पर किया है और अल्लाह तआला से डरते रहा करो और जान रखो कि अल्लाह (तआला) परहेजगारों के साथ है।

१९५. और अल्लाह की राह में खर्च करो और अपने हाथों कष्ट में न पड़ो। भलाई करो अल्लाह भलाई करने वालों से प्रेम करता है।

१९६. और हज व उमरे को अल्लाह तआला के लिए पूरा करो, और अगर तुम रोक दिये जाओ, तो जो भी कुर्वानी का जानवर हो उसे कुर्वानी कर डालो। और अपने सिर न मुंडवाओ जब तक कि कुर्वानी कुर्वानगाह तक न पहुँच जाये। और तुम में से जो बीमार हो या उसके सिर में कोई दर्द हो जिसकी वजह से वह सिर मुंडवा ले तो उस पर फिदिया है कि चाहे तो रोज़ा रख ले, या चाहे तो सदका दे, या कुर्वानी करे लेकिन जैसे ही शान्ति की हालत हो जाये, तो जो उमरे से लेकर हज तक तमत्तुअ (लाभाश्वित) करे, बस उसे जो भी कुर्वानी मौजूद हो उसे कर डाले। जिसमें ताकत न हो वह तीन रोजे तो हज के दिनों में रख ले और सात वापसी में यह पूरे दस हो गये।^१ यह हुक्म

الشَّهْرُ الْحَرَامَ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَتِ
قِصَاصٌ فَمَنِ اعْتَدَى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ
بِمِثْلِ مَا اعْتَدَى عَلَيْكُمْ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩٤﴾

وَأَنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ
إِلَى التَّهْلُكَةِ ۗ وَأَحْسِنُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ

الْمُحْسِنِينَ ﴿١٩٥﴾

وَأَتُوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ بِاللَّيْلِ ۖ فَإِنِ أَحْصَرْتُم مِّنْهَا
اسْتَيْسَرُوا إِلَيْهِ ۖ وَلَا تَمْلِكُوا لَهُ سُلْطَةً
شَيْئًا ۚ يَبْتَاعُ الْهَدْيَ مَجْلَةً ۖ فَمَنْ كَانَ مِنكُمْ مَّرِيضًا أَوْ
بِهِ آذَىٰ مِّنْ رَأْسِهِ فِدْيَةٌ مِّن صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ

أَوْ نَسِيَةٍ ۗ فَإِذَا أَمِنْتُمْ مِّنْهُ فَمَنْ تَمَسَّ بِالْعُمْرَةِ
إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۖ فَمَنْ لَّمْ
يَجِدْ فِصْيَامًا فَلْيَتَزَوَّجْ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةَ إِذَا
رَجَعْتُمْ ۖ تِلْكَ عَشْرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ فَمَنْ لَّمْ يَمُنْ
أَهْلُهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ
وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾

1 यानी हज्ज या उमरे का "एहराम" बाध लो, तो उसको पूरा करना जरूरी है, चाहे नफली हज्ज व उमर: ही हो। (ऐसरूत्तफासीर)

2 अगर रास्ते में दुश्मन या भयंकर बीमारी की वजह से रुकवट आ जाये, तो एक जानवर (हदी) बकरी, गाय या ऊँट जो भी हो, वही कुर्वानी देकर सिर मुंडा लो और एहराम खोल दो, जिस तरह नबी ﷺ और आप के तहाबा ने हुदैबिया की जगह पर कुर्वानियों की बलि दी थी, हुदैबिया का मुकाम "हरम" के हृदय से बाहर है। (फतहल कदीर) और अगले साल उसकी कजा दो जैसे नबी ﷺ ने ६ हिजरी वाले उमरे की कजा (बदला) ७ हिजरी में दी।

3 यानी (अर्थात) उसको कोई ऐसा रोग हो जाये कि उसको सिर मुंडवाना पड़ जाये, तो उसका फिदिया (प्रतिबोध) जरूरी है। हदीस के अनुसार ऐसे इंसान को चाहिए कि वह ६ भूखे लोगों को भोजन कराये या एक बकरी की बलि (कुर्वानी) दे या तीन रोजे (व्रत) रखे।

4 हज तीन तरह से किया जा सकता है, जिन के तीन नाम हैं, (१) इफ़राद - सिर्फ हज्ज के इरादे

उन के लिए है जो मस्जिदें हराम (मक्का) के रहने वाले न हों ॥ (लोगों)! अल्लाह से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह (तआला) सख्त सजाये देने वाला है ।

१९७. हज के महीने मुकर्रर है,^१ इसलिए जो इन में हज वाजिब करे वह अपनी बीबी से जिमाअ करने, गुनाह करने और लड़ाई-भगड़ा करने से बचता रहे, तुम जो सवाब का काम करोगे उसे अल्लाह (तआला) जानने वाला है, और अपने साथ रास्ता का खर्च ले लिया करो, सब से बेहतर रास्ता खर्च तो अल्लाह का डर है और ऐ अक्लमंदों! मुझ से डरते रहा करो ।

१९८. तुम पर अपने ख का फजल बढ़ाने में कोई गुनाह नहीं ॥^२ जब तुम अरफात से लौटो तो मशअरे हराम (मुज्दलिफा) के करीब अल्लाह का जिक्र करो और उस के जिक्र का बयान उस तरह करो, जैसे कि उस ने तुम्हें निर्देश दिये है, हालाकि तुम उस से पहले गुमराहों में थे ।

الْحَجَّ أَشْهُرَ مَعْلُومَاتٍ ۖ فَمَنْ قَرَضَ فِيهِنَّ
الْحَجَّ فَلَا رَفْعَ وَلَا نُسُوقَ ۖ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ ۗ
وَمَا تَعْلَمُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمُهُ اللَّهُ ۗ وَكَرَّوْا وَاوَابِقَ
خَيْرَ الرِّوَادِ الْمُتَشَوِّبِ ۖ وَاتَّقُوا يَأُولِي الْأَلْبَابِ ۗ (१९७)

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوا فَضْلًا مِنْ رَبِّكُمْ ۗ
فَإِذَا أَقَضْتُمْ مِنْ عَرَفَاتٍ فَأَذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ
الْمَشْعَرِ الْعَرَابِ ۖ وَأَذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ ۗ وَإِنْ
كُنْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ لَمَنِ الضَّالِّينَ (१९८)

से एहराम बांधना, (२) किरान - हज्ज और उमर: दोनो का इरादा एक साथ करके एहराम बांधना, इन दोनो हालतों में हज्ज के सभी अरकान पूरा किये बिना एहराम खोलना जायज (उचित) नहीं है । (३) हज्ज-ए-तमत्तुअ - इस में भी हज्ज और उमर: दोनो का इरादा होता है, लेकिन पहले केवल उमर: का इरादा करके एहराम बांधा जाता है, और फिर उमर: करके एहराम खोल दिया जाता है और फिर ८ जिलहिज्जा को ही हज्ज के लिए मक्का ही से दोबारा एहराम बांधा जाता है, तमत्तुअ का मतलब है, फायेदा उठाना, या एहराम उतारकर उमर: और हज्ज के बीच फायेदा उठा लिया जाता है, हज्ज-किरान और हज्ज-तमत्तुअ दोनो में ही एक हदी (एक जानवर की कुर्बानी) देनी है । इस आयत में इसी हज्ज तमत्तुअ के हुक्म का बयान है, तमत्तुअ करने वाला ताकत के एतबार से १० जिलहिज्जा को एक जानवर की कुर्बानी दे, अगर कुर्बानी देने की ताकत न हो, तो तीन रोजे हज्ज के दिनों में और सात घर जाकर पूरा करे, हज्ज के दिन, जिन में रोजे रखने है ९ जिलहिज्जा (अरफात का दिन) से पहले या तथरीक के दिन है । (फतहूल कदीर)

- १ या तमत्तुअ और उसके कारण हदी या रोजे सिर्फ उन लोगों के लिए है जो मक्कावासी न हों ।
- २ और यह है शवाल, जीकाद, और जिलहिज्ज के दस दिन । मतलब यह है कि उमर: तो साल के दिनों में भी हो सकता है, लेकिन हज्ज तो कुछ मुकर्रर दिनों में ही होता है, इसलिए उसका एहराम हज्ज के महीनों के सिवाय बांधना जायज नहीं । (इब्ने कसीर)
- ३ फजल का मतलब तिजारत और काम है यानी हज्ज का सफर करते वक्त तिजारत करने में कोई हकावट नहीं ।

१९९. फिर तुम उस जगह से लौटो जिस जगह से सभी लोग लौटते हैं और अल्लाह (तआला) से इस्तेगफार करते रहो, बेशक अल्लाह (तआला) बख्शने वाला, रहम करने वाला है।

२००. फिर जब तुम हज के हर काम पूरे कर लो, तो अल्लाह (तआला) को याद करो, जिस तरह से तुम अपने बुजुर्गों को याद करते थे, बल्कि उससे ज्यादा।^१ कुछ लोग वह भी हैं जो कहते हैं «हमारे रब! हमें इस दुनिया में दे दे, ऐसे लोगों का आखिरत में कोई हिस्सा नहीं है।»

२०१. और कुछ लोग वह भी हैं, जो कहते हैं, «ऐ हमारे पालनहार! हमें इस दुनिया में भलाई अता कर और आखिरत में भी भलाई अता कर और हमें जहन्नम के अजाब से बचा दे।»

२०२. ये वह लोग हैं जिन के लिए उन के अमलों का हिस्सा है और अल्लाह (तआला) जल्द ही हिमाव लेने वाला है।

२०३. और अल्लाह (तआला) की याद उन गिनती के कुछ दिनों (तशरीक के दिन) में करो,^२ दो दिन की जल्दी करने वाले पर कोई गुनाह नहीं, और जो पीछे रह जाये उस पर भी कोई गुनाह नहीं^३ यह परहेजगार (महान इंसान)

ثُمَّ أفيضوا مِنْ حَيْثُ أَقْبَضَ الْكَاسُ وَاسْتَغْفِرُوا
اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٩٩﴾

فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا كُنتُمْ
أَبَاءَهُمْ أَوْ أَصْنَادًا ذُكِّرُوا طَائِفِينَ لَمَّا كُنْتُمْ
رَبِّتًا أَيْتَانًا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَكُمْ فِي الْأَخِرَّةِ
مِنْ حِلَاقِي ﴿٢٠٠﴾

وَمِنْهُمْ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ
النَّارِ ﴿٢٠١﴾

أُولَئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا
وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٢٠٢﴾

وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ فَمَنْ تَعَجَّلَ
فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَا
إِثْمَ عَلَيْهِ ۗ لِمَنِ انْتِفَىٰ ذُو الْأُنثَىٰ وَاللَّهُ وَاعِلْمُوا
أَنكُمُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٠٣﴾

^१ अरब के लोग हज्ज के बाद मिना के मुकाम पर मेला लगाते और अपने-अपने बुजुर्गों की तारीफें करते, मुसलमानों से कहा जा रहा है कि जब १० जिलहिज्जा को कंकरीयां मारकर, कुर्बानी देकर, सिर मूडवाकर, काअबा का तबाफ करके और सफा और मरवा के बीच सअई करके छूटकारा पाओ तो उसके बाद तीन दिन मिना में रुकना है, और वहाँ अल्लाह को बहुत याद करो, जैसे कि जाहिलियत के दौर में तुम अपने बुजुर्गों की चर्चा करते थे।

^२ मतलब तशरीक के दिन हैं, यानी ११, १२ और १३ जिलहिज्जा। इन दिनों में अल्लाह तआला के जिक्र से मतलब यह है कि उंची आवाज के साथ सुन्नत के ऐतबार से मुकरर तकबीर कहे, केवल फ़र्ज नमाज़ों के बाद ही नहीं (जैसा कि एक अस्पष्ट हदीस के आधार पर मशहूर है), बल्कि हर वक़्त यह तकबीर पढ़ी जाये (अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाह, वल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर बलिल्लाहिलहम्द) जमरात को कंकरीयां मारते वक़्त हर कंकरी के साथ तकबीर पढ़नी सुन्नत के अनुरूप (मुताबिक) है।

^३ जमरात को कंकरीयां मारना, तीन दिन बेहतर है, लेकिन अगर कोई दो दिन के बाद मिना से वापस आ जाये तो उसका भी हुकम है।

के लिए है, और अल्लाह (तआला) से डरते रहो, और जान रखो, कि तुम सब उसी की ओर जमा किये जाओगे।

२०४. और कुछ लोगों की दुनियावी बातें आप को खुश कर देती हैं और वह अपने दिल की बातों पर अल्लाह को गवाह करता है, हालांकि हकीकत में वह बड़ा भगड़ालू है।

२०५. और जब वह लौटकर जाता है, तो जमीन में फसाद फैलाने, खेती और नसल की वर्वादी की कोशिश में लगा रहता है और अल्लाह (तआला) फसाद को पसंद नहीं करता है।

२०६. और जब उस से कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो घमण्ड उसे गुनाह पर उकसा देता है, ऐसे के लिए सिर्फ जहन्नम ही है, और बेशक वह बहुत दुरी जगह है।

२०७. और कुछ लोग वह भी हैं जो कि अल्लाह (तआला) की मर्जी हासिल करने के लिए अपनी जान तक बेच डालते हैं। और अल्लाह (तआला) अपने बन्दों पर बड़ी शफकत करने वाला है।

२०८. ऐ ईमानवालो! इस्लाम में पूरे तौर पर दाखिल हो और शैतान के पद चिन्हीं की पैरवी न करो,^१ वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

२०९. अगर तुम निशानियों के आ जाने के वावजूद भी फिसल जाओ, तो जान लो कि अल्लाह (तआला) जबरदस्त और हिक्मत वाला है।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهَدُ اللَّهُ عَلَىٰ مَا فِي قَلْبِهِ ۗ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ ﴿٢٠٤﴾

وَإِذَا تَوَلَّىٰ سَفَىٰ فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَجِبُ الْفَسَادَ ﴿٢٠٥﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُ جَهَنَّمَ وَلَيْسَ الْيَهُادُ ﴿٢٠٦﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ﴿٢٠٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السُّلْمِ كَمَا كُنْتُمْ تُدْخِلُونَ الْإِيمَانَ تَكْتُمُونَ ۗ وَالشَّيْطَانُ الْكَافِرُ ۗ وَإِن لَّكُم عِدَاؤُهُمْ وَمِنْهُمْ مَّن جَاءَ كُفْرًا يَكْفُرُ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٠٩﴾

^१ यह आयत, कहते हैं कि हजरत सुहैब रमी के लिए उतरी है, जब वह हिजरत करने लगे, तो कफिरों ने कहा कि यह भाल तो यहाँ का कमाया हुआ है, इसे हम साथ नहीं ले जाने देंगे, हजरत सुहैब रमी ने यह सारा माल उन के हवाले कर दिया और धर्म साथ लेकर नबी ﷺ की खिदमत में हाजिर हो गये, आप ने सुनकर कहा "सुहैब ने फ़ायदेमंद तिजारत किया है" दो बार कहा। (फतहूल कदीर)

^२ ईमानवालों को कहा जा रहा है कि पूरी तरह से इस्लाम में दाखिल हो जाओ, इस तरह न करो कि जो बातें तुम्हारे अपने फ़ायदा और मन के मुताबिक हैं तो उन्हें अपना लो, बाकी को छोड़ दो। इसी तरह जो बातें तुम छोड़ आये हो उसे दीन इस्लाम में मिलावट करने की कोशिश न करो, बल्कि सिर्फ दीन इस्लाम के क़ानून को पूरी तरह से अपनाओ।

२१०. क्या लोगों को इस बात का इंतजार है कि अल्लाह (तआला) खुद बादलों के झुरमुट में आ जाये, और फरिश्ते भी, और काम का अन्त कर दिया जाये, अल्लाह ही की तरफ सभी काम लौटाये जाते हैं।

هَلْ يَظُنُّونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلْمَلٍ مِنَ السَّمَاءِ وَالسَّبْكَةِ وَتُخْطِ الْأُمُوطُ وَالْيَاقُوتُ إِلَى اللَّهِ تُوجِعُ الْأُمُوطُ ۚ (210)

२११. इस्राईल की औलाद से पूछे कि हम ने उन्हें कितनी वाज़ेह निशानियाँ अता कीं और जो अल्लाह (तआला) की नेमत अपने पास पहुँच जाने के बावजूद बदल डाले (वह जान लें) कि अल्लाह (तआला) भी कठिन सजाओं का देने वाला है।

سَلَّ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَرَّاتِنَهُمْ مِنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ ۚ وَمَنْ يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۚ (211)

२१२. काफिरों के लिए दुनियावी जिन्दगी मजबूत कर दी गई है, और वह ईमानवालों से हंसी मजाक करते हैं मगर जो परहेजगार हैं क़यामत के दिन उनसे बहुत बड़े होंगे, अल्लाह (तआला) जिसे चाहता है वेशुमार अता करता है।

رَبِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَالْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَيَسْحَرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوْا فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۗ وَاللَّهُ يَرِثُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۚ (212)

२१३. हकीकत में लोग एक ही उम्मत थे, फिर अल्लाह (तआला) ने नवियों को खुशखबरी देने और आगाह करने को भेजा और उन के साथ किताब उतारी, ताकि लोगों के हर इख़िलाफ का फ़ैसला हो जाये। और केवल उन्हीं लोगों ने जो उसे दिये गये थे अपने पास दलील आ जाने के बावजूद आपसी हसद और घमण्ड की वजह से उस में इख़िलाफ किया, इसलिए अल्लाह (तआला) ने ईमानवालों के इस इख़िलाफ में भी सच्चाई की तरफ अपनी इजाज़त के जरिये हिदायत की और अल्लाह जिसको चाहे सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई करता है।

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً ۗ فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيِّينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ ۖ وَأَنزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيُحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِي مَا اختلفوا فِيهِ ۚ وَمَا اختلف فِيهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ وَمِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا أَيْسَارًا اختلفوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِأُذُنِهِ ۗ وَاللَّهُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ (213)

1 मिसाल के तौर पर मूसा की छड़ी, जिस के जरिये हम ने जादूगारों के जादू को तोड़ा, समुद्र में रास्ता बनाया, पत्थर से बारह चश्में निकाले, बादलों का साया, मन्न व सलवा का उतरना और जो अल्लाह तआला की ताकत और हमारे पैगम्बरों की सच्चाई के सुबूत थे, लेकिन उस के बाद भी उन्होंने अल्लाह तआला के हुकम की नाफरमानी की।

2 चूँकि मुसलमानों की अकसरियत गरीबों पर आधारित (मुस्तमिल) थी, जो दुनियावी दौलत और आराम से मुक्त थे, इसलिए काफिर यानि मक्का के क़ुरैश उनका मजाक उड़ाते थे, जैसाकि धनवानों का हर ज़माने में यही अमल रहा है।

२१४. क्या तुम यह विचार (खयाल) कर बैठे हो कि जन्नत में चले जाओगे? अगरचे अब तक तुम पर वह हालत नहीं आयी जो तुम से अगलों पर आयी। उन्हें गरीबी और बीमारी पहुँची, और वह यहाँ तक फिभ्रोडे गये कि रसूल और उन के साथ के ईमान वाले लोग कहने लगे कि अल्लाह की मदद कब आयेगी? सुन रखो कि अल्लाह की मदद करीब ही है।

२१५. आप से पूछते हैं कि वह क्या खर्च करें, आप कह दीजिए कि जो माल तुम खर्च करो वह माँ-बाप के लिए, रिश्तेदारों, यतीमों व गरीबों और मुसाफिरोँ के लिए है और तुम जो कुछ भलाई करोगे अल्लाह (तआला) को उस का इल्म है।

२१६. तुम पर जिहाद फर्ज किया गया, अगरचे कि वह तुम्हारे लिए कठिन मालूम होता हो, हो सकता है कि तुम किसी चीज़ को बुरी जानो और हकीकत में वही तुम्हारे लिए भली हो, और यह भी हो सकता है कि तुम जिस चीज़ को अच्छी समझो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो, सच्चा इल्म अल्लाह ही को है, तुम सिर्फ अंजान हो।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُكَلَّمُوا الْجِنَّةَ وَالنَّاسَ بِأَيْتِكُمْ مَثَلِ
الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ مَسْتَهْمِبِينَ وَالنَّاسُ
الضَّالُّونَ وَزُلُّوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا
مَعَهُ مَتَى نَصُرَ اللَّهُ أَالَا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ ﴿٢١٤﴾

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ قُلْ مَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ
خَيْرٍ فَلِلَّهِ وَالْيَوْمِئَاتِ وَاللَّذِينَ وَالسَّكِينِ
وَالَّذِينَ السَّبِيلِ وَمَا تَفَعَّلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ
بِهِ عَلِيمٌ ﴿٢١٥﴾

لَيَسَّ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُوْفٌ لَكُمْ وَعَسَى أَنْ
تُكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَعَسَى أَنْ تُحِبُّوا
شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾

१ मदीना की ओर हिजरत (मक्का से मदीना मजहबे इस्लाम कुबल करने की वजह से जो हिजरत हुई है) के बाद जब मुसलमानों को यहूदियों, मुनाफिकों और अरब के मूर्तिपूजकों के जरिये कई तरह के कष्ट और कठिनाईयाँ पहुँचने के बाद कुछ मुसलमानों ने नबी ﷺ से शिकायत की जिस पर मुसलमानों को अल्लाह तआला ने यह आयत उतारकर तसल्ली दी और खुद नबी ﷺ ने फरमाया तुम से पहले लोगों को उन के सिर से लेकर पैर तक आरे से चीरा गया और लोहे की कंधी के द्वारा उनका गोश्त खुर्चा गया, लेकिन यह जुल्म और तकलीफें भी उनको अपने दीन से नहीं फिरा सकी। फिर फरमाया «अल्लाह की कसम! अल्लाह तआला इस मामले को पूरा (यानी इस्लाम को फलह) करेगा।» यहाँ तक कि एक सवार सन्ना से (यमन की राजधानी है) हजर भूत तक अकेला सफर करेगा और उसे अल्लाह के सिवाय किसी का डर न होगा।

२१७. लोग आप से हुरमत वाले महीनों में जंग के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए उन में जंग करना बहुत बड़ा गुनाह है, लेकिन अल्लाह के रास्ते से रोकना, उन के साथ कुफ्र करना, मस्जिदे हराम से रोकना और वहाँ के रहने वालों को वहाँ से निकालना अल्लाह के करीब उस से भी बड़ा गुनाह है और फितना कत्ल से भी बड़ा गुनाह है, यह लोग तुम से लड़ाई-भगड़ा करते ही रहेंगे यहाँ तक कि अगर उन से हो सके तो तुम्हें तुम्हारे धर्म से फेर दें और तुम में से जो लोग अपने धर्म से पलट जायें और उसी कुफ्र की हालत में मरें, उन के आमाल दुनिया और आखिरत के सभी बर्बाद हो गये, यह लोग जहन्नमी होंगे और हमेशा जहन्नम में ही रहेंगे।¹

يَسْتَأْذِنُكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ ط قَتَالَ فِيهِ كَيْدٌ ط وَصَدَّ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرًا بِهِ وَالتَّسْبِيحِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجِ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ط وَلَا يَزَالُ الَّذِينَ يَقَاتِلُونَكُمْ حَتَّى يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا ط وَمَنْ يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢١٧﴾

२१८. हाँ जिन्होंने ईमान कुबूल किया और हिजरत की और अल्लाह की राह में जिहाद किया (दीन की हिफाजत के लिए अल्लाह की राह में लड़े) वही अल्लाह की रहमत की उम्मीद रखते हैं और अल्लाह (तआला) बड़ा बड़बुने वाला रहम करने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ أُولَئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ ط وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢١٨﴾

- १ राजव, जुलकादा, जिलहिज्जा, और मोहर्रम, यह चार महीने जाहिलियत में भी हुरमत वाले महीने माने जाते थे, जिन में कत्ल और जंग करना अच्छा नहीं समझा जाता था, इस्लाम ने भी इन के एहतेराम को उसी तरह रखा।
- २ जब यह अपनी चालों और साजिशों और तुम्हें मुर्तद (इस्लाम धर्म से फिरने वाला) बनाने की कोशिश से रुकने वाले नहीं, तो फिर तुम उन से सामना करने में हुरमत वाले महीने की वजह से बर्बाद होके रहो?
- ३ जो इस्लाम धर्म से पलट जाये यानी मुर्तद हो जाये (यदि वह माफ़ी न मागे) तो उसकी दुनियावी सजा कत्ल है, हदीस में है (مَنْ بَدَلَ بَيْتَهُ فَاطْلُوا) (सहीह बुखारी, हदीस ३०१७, किताबुल जिहाद) इस आयत में उसके आखिरत की सजा का बयान है।

२१९. लोग आप से शराब और जुआ के बारे में सवाल करते हैं, आप कह दीजिए इन दोनों में बड़ा गुनाह है, और लोगों को इस से दुनियावी फायेदा भी होता है, लेकिन उनका गुनाह उन के फायेदा से कहीं ज़्यादा है, आप से यह भी पूछते हैं कि क्या खर्च करें, आप कह दीजिए जरूरत से ज़्यादा को। अल्लाह (तआला) इसी तरह अपना हुक्म वाजेह तौर से तुम्हारे लिए बयान कर रहा है कि तुम सोच समझ सको।

२२०. दुनियावी और आखिरत के अमलों को, और आप से यतीमों के बारे में भी सवाल करते हैं। आप कह दीजिए कि उन की भलाई करना ही अच्छा है, तुम अगर अपने माल उनके माल में मिला भी लो तो वह तुम्हारे भाई है, वदूनियत और नेक नियत सब को अल्लाह पूरी तरह से जानता है, और अगर अल्लाह चाहता तो तुम्हें कठिनाई में डाल देता। बेशक अल्लाह (तआला) जबरदस्त और हिक्मत वाला है।

२२१. और मुशरिक औरतों से उस वक्त तक शादी न करो जब तक कि वह ईमान न ले आयें^१ ईमानवाली लौंडी (दासी) भी मुशरिक (बहुदेववादी) आजाद औरत से बेहतर है, अगरचे कि तुम्हें मुशरिक ही अच्छी लगती हो और न मुशरिक मर्दों को अपनी औरतों से विवाह करने दो, जब तक की वह ईमान न ले आयें, ईमानदार गुलाम (मुसलमान दास) आजाद

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْمِرِ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنْفَعٌ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِنْ نَفْعِهِمَا قُلْ وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنْفِقُونَ قُلْ الْعَفْوَ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٢١٩﴾

فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَى قُلْ إِصْلَاحٌ لَهُمْ خَيْرٌ وَإِنْ تُخَاطَبُوا عَنْهُ فَأَخَذُوا كَلِمَةً وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَاعْتَدَلَكُمْ إِنْ اللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٠﴾

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتَّى يُؤْمِنُ ۚ وَلَكُمْ مُمْسِكَةٌ خَيْرٌ مِنْ مُشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْبَبْتُمْ ۚ وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتَّى يُؤْمِنُوا ۚ وَأَعْبَدُوا مِمَّنْ خَيْرٌ مِنْ مُشْرِكِهِمْ ۚ وَأَعْبَدُوا إِلَهُكُمْ إِلَى النَّارِ ۚ وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَطْهَرِ ۚ بِإِذْنِهِ ۚ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٢١﴾

^१ जब यतीमों के माल जुल्म करके खाने वालों के लिए सज़ा का हुक्म आया, तो सहाबा डर गये और यतीमों की हर चीज़ अलग कर दी, यहाँ तक कि खाना-पीना अलग कर दिया, अगर उन के खाने-पीने की चीज़ बच जाती, तो उसको इस्तेमाल में न लाते, जिससे वह चीज़ खराब हो जाती; इस डर से कि कहीं इस सज़ा के हकदार न बना दिये जायें, इस पर यह आयत उतरी। (इब्ने कसीर)

^२ मुशरिक औरतों से मुराद मूर्तिपूजक या मुशरिक औरतें हैं, क्योंकि किताब वालों (यहूदी और ईसाई) औरतों से शादी करने का हुक्म कुरआन ने दिया है, लेकिन किसी मुसलमान औरत की शादी अहले किताब मर्दों से नहीं हो सकती, फिर भी हज़रत उमर ने मसलहतन यहूदी ईसाई औरतों से शादी करना अच्छा नहीं समझा है। (इब्ने कसीर)

मुशरिक (से ज्यादा अच्छा है, अगरचे कि तुम्हें मुशरिक अच्छा लगे, ये लोग जहन्नम की तरफ बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत की तरफ और मगफिरत की तरफ अपने हुक्म से बुलाता है, वह अपनी निश्चानियां लोगों के लिए वयान कर रहा है, ताकि नसीहत हासिल करें।

२२२. और आप से माहवारी के बारे में सवाल करते हैं, कह दीजिए वह गंदगी है, माहवारी के वक़्त औरतों से अलग रहो' और जब तक वह पाक न हो जायें उनके करीब न जाओ, हाँ जब वह पाक हो जायें, तो उन के पास जाओ जहाँ से अल्लाह ने तुम्हें इजाजत दी है अल्लाह माफ़ी माँगने वाले को और पाक रहने वाले को पसंद करता है।

२२३. तुम्हारी बीवियां तुम्हारी खेतियां हैं, अपनी खेतियों में जिस तरह चाहो आओ और अपने लिए (सवाव) आगे भेजो, और अल्लाह (तआला) से डरते रहो, और जान रखो, कि तुम उस से मिलने वाले हो और ईमानवालों को खुशखबरी सुना दीजिए।

२२४. और अल्लाह (तआला) को अपनी कसमों का (इस तरह) निश्चाना न बनाओ कि भलाई और परहेजगारी और लोगों के बीच सुधार करने को छोड़ बैठो! और अल्लाह (तआला)

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَيْمُونِ ۚ قُلْ هُوَ آذَىٰ فَاعْتَزِلُوا
النِّسَاءَ فِي الْمَيْمُونِ ۖ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهَرْنَ ۗ
فَإِذَا طَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ ۗ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ ﴿٢٢٢﴾

نِسَاءَكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۖ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ ۗ
وَقَدْ مَوَّالًا أَنْفُسِكُمْ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ
مُسْلِقُونَ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٢٣﴾

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَن تَبَرُّوا
وَتَتَّقُوا ۗ وَتَصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ
عَلِيمٌ ﴿٢٢٤﴾

1 अपनी जवानी पर पहुँचने पर हर औरत को जो माहवारी का खून आता है, उसे हैज कहते हैं और कई बार अप्राकृतिक रूप (गैर फितरी) से बीमारी की वजह से जो खून आता है, उसे इस्तेहाजा कहते हैं, जिसका हुक्म व कानून हैज से मखतलिफ है, हैज के दिनों में औरत को नमाज माफ़ है, और रोज़ा रखने से रोका गया है, लेकिन उन के बदले दूसरे दिनों में रखना फर्ज है, मर्दों के लिए सिर्फ़ जिमाअ से रोका गया है।

2 यानी गुस्सा में ऐसी कसम मत उठाओ कि मैं फर्लाई इंसान के ऊपर भलाई नहीं करूँगा, फर्लाई इंसान से नहीं बोलूँगा, फर्लाई इंसान के बीच सुलह नहीं कराऊँगा। इस तरह की कसमों के बारे में हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर इस तरह की कसम खा भी लो तो उसे तोड़ दो, और कसम का कफ़ारः (कसम खाने के बाद अगर तोड़ दी जाये, तो उसकी सजा) अदा करो। (कसम के कफ़ारे के लिए देखिए मूरः अल-मायेदः, आयत ८९)

सुनने वाला जानने वाला है ।

२२५. अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी उन कसमों पर न पकड़ेगा जो मजबूत न हों ।¹ हाँ तुम्हारी पकड़ उस चीज पर है, जो तुम्हारे दिलों का अमल है, अल्लाह (तआला) माफ करने वाला सहनशील है ।

لَا يُؤْخَذُكُمْ اللَّهُ بِالَّذِي قَالْتُمْ وَلَكِنْ
يُؤْخَذُكُمْ بِمَا كَسَبْتُمْ فَلَوْ كُنتُمْ
عَافِينَ ۚ وَاللَّهُ عَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿٢٢٥﴾

२२६. जो लोग अपनी बीवियों (पत्नियों) से (न मिलने की) कसम खाये उन के लिए चार महीने की मुद्दत है ।² फिर अगर वह लौट आये, तो अल्लाह (तआला) बख्शने वाला रहम करने वाला है ।

لِلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ تَرِيصٌ أَرْبَعَةَ
أَشْهُرٍ ۚ فَإِنْ قَاءُوا فَإِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢٦﴾

२२७. और अगर तलाक़ का ही इरादा कर ले तो अल्लाह (तआला) बहुत सुनने वाला जानने वाला है ।

وَأَنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٢٧﴾

¹ यानी जो बिना सोचे समझे और आदत के तौर पर हो, लेकिन जान बूझकर कसम खाना बहुत बड़ा गुनाह है ।

² ४. का मतलब कसम खाने के है अगर कोई शौहर कसम खा ले कि मैं अपनी बीवी के साथ एक माह या दो माह (मिसाल के तौर पर) सम्बन्ध नहीं रखूँगा, फिर कसम की मुद्दत पूरी करके कोई सम्बन्ध स्थापित (कायम) करता है, तो कोई सजा नहीं है, और अगर फिर कसम की मुद्दत पूरी होने के पहले सम्बन्ध स्थापित कर ले तो कसम तोड़ने का कफ़ारा अदा करना होगा ।

अगर चार माह की मुद्दत से ज्यादा या बिना मुद्दत के कसम खायी गयी है, तो उन के लिए इस आयत में मुद्दत मुक़र्रर कर दी गयी है कि वह चार माह बाद अगर चाहे तो सम्बन्ध स्थापित कर ले या उन्हें तलाक़ दे दे (उसे चार माह से ज्यादा लटकाये रहने का हुक्म नहीं है) पहली हालत में उसे कसम तोड़ने की सजा भुगतना पड़ेगा और अगर दोनों में से कोई हालत नहीं अपनायेगा, तो अदालत उसको दोनों में से किसी एक को अपनाते पर मजबूर करेगा कि वह उस से सम्बन्ध स्थापित कर ले या तलाक़ दे दे ताकि उस स्त्री पर जुल्म न हो । (तफ़सीर इब्ने कसीर)

२२६. तलाक़ शूदा औरतें अपने आप को तीन माहवारी तक रोकें रखें।^१ उन के लिये जायज नहीं कि अल्लाह ने उन के रिहम में जो पैदा किया हो उसे छिपायें, अगर उन्हें अल्लाह (तआला) पर और क़ायमत के दिन पर ईमान हो। उनके शौहर को इस मुद्दत में उन्हें लौटा लेने का पूरा हक़ है, अगर उनका इरादा सुधार का हो,^२ औरतों के भी वैसे ही हक़ है, जैसे उन पर मर्दों के हैं अच्छाई के साथ।^३ हाँ, मर्दों की औरतों पर फ़ज़ीलत है, और अल्लाह (तआला) ज़बरदस्त हिवमत वाला है।

२२९. ये तलाक़ दो बार है^४ फिर या तो अच्छाई से रोकना।^५ या जायज तरीक़े से छोड़ देना है^६ और तुम्हें उचित नहीं कि तुम ने उन्हें जो दिया है, उस में से कुछ भी लो, हाँ! यह और बात है कि दोनों को अल्लाह के हुद्द कायम न रखने का डर हो, इसलिए यदि तुम्हें डर हो कि यह दोनों अल्लाह के हुद्द कायम न रख सकेंगे, तो स्वी आज़ादी हासिल करने के लिए कुछ दे डाले, इस में दोनों पर कोई गुनाह नहीं^७ यह अल्लाह के हुद्द है, होशियार। इन से

وَالْحَالِقَاتُ يَكْرَهُنَّ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ
وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي
أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرَةِ
وَيُعَوِّذُهُنَّ حَتَّىٰ يَرْضَيْنَ فِي ذَلِكَ إِنْ أَرَادُوا
إِصْلَاحًا مَّا كَرِهْنَ مِمَّا لَدَىٰ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ
وَالْبُحَايِلَ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ مَّا لَللَّهِ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٦﴾

الطَّلَاقِ مَرَّتَيْنِ، فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ
بِإِخْلَافٍ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوا مِمَّا
أَنْتُمْ مَوْلَاهُمْ شَيْئًا إِلَّا أَنْ يَخَافَا أَلَّا يُقِيمَا
حُدُودَ اللَّهِ طَوَّانَ يَخْفَاؤُا أَلَّا يُقِيمَا حُدُودَ
اللَّهِ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ
بِتِلْكَ حُدُودِ اللَّهِ فَلَا تَعْتَدُوا هَٰذَا وَمَنْ يَتَعَدَّ
حُدُودَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٢٩﴾

^१ इस से मुराद वह तलाक़ शूदा औरतें है जो गर्भवती (हामला) भी न हो (क्योंकि हामला औरत के लिए प्रसव की मुद्दत मुकरर है) जिसे जिमाअ से पहले ही तलाक़ हो गयी हो वह भी न हो (क्योंकि उसकी कोई इद्दत ही नहीं है) वूदी भी न हो जिसको माहवारी आना बंद हो गया हो (क्योंकि उनकी इद्दत तीन माह है)

^२ लौटाने से शौहर का मक़सद अगर परेशान करना न हो, तो शौहर को इद्दत के अन्दर लौटने का पूरा हक़ है, बीबी के बली को इस में रुकावट डालने का कोई हक़ नहीं है।

^३ यानी दोनों के हक़ एक-दूसरे से मिलते जुलते हैं, जिनको पूरा करने के दोनों धार्मिक नियमों से प्रतिबन्धित है, लेकिन मर्द को औरत पर फ़ज़ीलत प्राकृतिक शक्ति (फ़ितरी ताक़त) में, जिहाद (धर्मयुद्ध) के हुक्म में, जायदाद के बँटवारे में औरत से दुगना मर्द को तलाक़ और लौटाने के हक़ (वग़ैरह) में हासिल है।

^४ यानी वह तलाक़ जिस में शौहर को रुज़अ का हक़ है, वह दो बार है। पहली बार तलाक़ के बाद भी और दूसरी बार तलाक़ के बाद भी शौहर अपनी बीबी से सम्बन्ध फिर से कायम कर सकता है, तीसरी बार तलाक़ देने के बाद यह सम्बन्ध स्थापित करने का हक़ नहीं।

^५ यानी सम्बन्ध कायम करके उसे अच्छी तरह से बसाना।

^६ यानि तीसरी बार तलाक़ देकर।

^७ इस में 'ख़ुलअ' का वयान है, जिस के अनुसार बीबी अपने शौहर से रिश्ता तोड़ना चाहें तो

आगे न बढ़ना और जो लोग अल्लाह के हुद्द को तजाउज्ज कर जायें, वह जालिम हैं।

२३०. फिर यदि उसको (तीसरी बार) तलाक दे दे, तो अब वह उस के लिए हलाल नहीं जब तक कि वह स्त्री उस के सिवाय दूसरे से विवाह न करे, फिर अगर वह तलाक दे दे, तो उन दोनों को मेलजोल कर लेने में कोई गुनाह नहीं। जबकि वे जान लें कि अल्लाह के हुद्द को कायम रख सकेंगे, यह अल्लाह (तआला) के हुद्द है, जिन्हें वह जानने वाले के लिए बयान कर रहा है।

२३१. और जब तुम औरतों को तलाक दो और वह अपनी इद्दत (तीन माहवारी की मुद्दत को कहते हैं) खत्म करने के करीब हों, तो अब उन्हें अच्छी तरह से बसाओ या भलाई के साथ अलग कर दो। और उन्हें नुकसान पहुँचाने के मकसद से जुल्म व ज्यादाती करने के लिए न रोकें, जो इंसान ऐसा करे उस ने अपनी जान पर जुल्म किया, तुम अल्लाह के हुक्म का मजाक न बनाओ। और अल्लाह की नेमत जो तुम पर है याद करो और जो कुछ किताब व हिक्मत उस ने उतारी है, जिस से तुम्हें तालीम दे रहा है उसे भी, और अल्लाह (तआला) से डरते रहा

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهُ مِنْ بَعْدِ حَتَّىٰ تَنْكِحَ
رَوْحًا غَيْرَهُ ۗ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ
يَتَرَاجَعَا إِنْ ظَنَّا أَنْ يُقِيمَا حُدُودَ اللَّهِ ۗ وَبِكَ
حُدُودِ اللَّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣٠﴾

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ يَكُنْ لَكُمْ
فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سِرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ
وَلَا تُنْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا لِنَفْسِنَّ ۚ وَأَنْ يَفْعَلُ
ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ ۗ وَلَا تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللَّهِ
هُزُوًا ۚ وَأَذْكُرُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنْزَلَ
عَلَيْكُمْ مِنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةَ يَعِظْكُمْ بِهِ ۗ
وَاتَّقُوا اللَّهَ ۗ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمٌ ﴿٢٣١﴾

उस हालत में शौहर को हक है कि वह अपना महर वापस ले ले। पति अगर रिश्ता तोड़ना न कुबूल करे, तो अदालत शौहर को तलाक देने का हुक्म करेगी, अगर वह उसे न माने तो अदालत शादी खत्म करेगी। यानि यह खुलअ, तलाक के जरिये भी हो सकता है और तोड़ने के जरिये भी दोनों हालतों में इद्दत एक माहवारी है।

१ इस तलाक से मुराद तीसरी तलाक है और इसके बाद शौहर को न तो सम्बन्ध स्थापित करने का हक है और न शादी करने का, अब यह औरत किसी दूसरे मर्द से शादी करे और वह अपनी मर्जी से तलाक दे या उसकी मौत हो जाये, तो उसके बाद वह अपने पहले शौहर से शादी कर सकती है, लेकिन हमारे देश में जो इस प्रकार का «हलाला» करने और कराने की बुरी रस्म है। नबी ﷺ ने ऐसे «हलाला» करने और कराने वाले पर लानत की है, हलाला की वजह से की गई शादी, शादी नहीं होती यह जिना है, इस शादी से औरत अपने शौहर के लिए हलाल नहीं होगी।

२ कुछ लोग मजाक में तलाक दे देते या शादी कर लेते या आजाद कर देते, फिर कहते कि मैंने तो मजाक किया था। अल्लाह तआला ने इसे अपनी आयत में मजाक कहा है जिसका मकसद इस तरह के कामों से रोकना है, इसलिए नबी ﷺ ने फरमाया कि मजाक से भी अगर ऊपर बयान किया गया काम करेगा तो वह हकीकत माना जायेगा और मजाक की तलाक, शादी और आजादी लागू हो जायेगी। (तफसीर इब्ने कसीर)

करो और याद रखो कि अल्लाह (तआला) हर एक चीज को जानता है।

२३२. और जब तुम अपनी औरतों को तलाक दो और वह अपनी इहत पूरी कर ले, तो उन्हें उन के पतियों से शादी करने से न रोको, जबकि वह आपस में भलाई के ऐतबार से राजी हों। यह तालीम उन्हें दी जाती है जिन्हें तुम में से अल्लाह (तआला) पर और क़यामत के दिन पर यक़ीन और ईमान हो, इस में तुम्हारी अच्छी सफ़ाई और पाकीज़गी है और अल्लाह (तआला) जानता है तुम नहीं जानते।

२३३. और मायें अपनी औलादों को पूरे दो साल दूध पिलायें, जिनका इरादा दूध पिलाने की पूरी मुद्त का हो,¹ और जिनकी औलाद है उनकी जिम्मेदारी है कि उनको रोटी कपड़ा दे, जो भलाई के साथ हो। हर एक इंसान को इतनी ही कठिनाई दी जाती है, जितनी उसकी ताकत हो, माँ को उसकी औलाद की वजह से या बाप को उसकी औलाद की वजह से उसे कोई नुकसान न पहुँचाया जाये,² वारिस पर भी उसी जैसी जिम्मेदारी है, फिर अगर दोनों (यानी माँ-बाप) अपनी रज़ामंदी और आपसी इरादा से दूध छुड़ाना चाहें, तो दोनों पर कोई गुनाह नहीं, और अगर तुम अपनी औलादों को दूध पिलाना चाहते हो तो भी तुम पर कोई गुनाह नहीं,

وَإِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَلْيُكُنَّ لَكُمْ نِسَاءً فَلَا تُحْسِنُوا لَهُنَّ إِذَا تَرَاهُنَّ إِذَا تَرَاضُوا بَيْنَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ذَلِكَ يُوعِظُ بِهِ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَمْ آيَاتُ اللَّهِ وَلِيُعَلِّمُوا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٢﴾

وَالْوَالِدَاتُ يُرِضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنَ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُنْفِقَ الرِّضَاعَةَ مَوْلًى السَّوْلُؤَلَةُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَلَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ وِإِلَّا وُسْعَهَا ۗ لَا ظَهْرًا وَالِدًا يُوَكِّلُهَا وَلَا مَوْلُؤَةً يُوَكِّلُهَا ۗ وَعَلَى الْوَالِدِ مِثْلُ ذَلِكَ ۗ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِنْهُمَا وَتَشَاوُرًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَإِنْ أَرَدْتُمْ أَنْ تُسْرِعُوا فَأَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَا آتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمَاعًا تَحْتَمِلُونَ بِيَوْمٍ ۙ ﴿٢٣٣﴾

¹ इस आयत में दूध पिलाने के मसले का हल बयान किया गया है, इसमें पहली बात कही गयी है वह यह है कि जो पूरी मुद्त तक दूध पिलाना चाहे, तो यह मुद्त दो साल की है, इन लफ्जों से इस से कम मुद्त तक दूध पिलाने की गुंजाईश निकलती है, दूसरी बात यह कि दूध पिलाने की ज़्यादा से ज़्यादा मुद्त दो साल है।

² माँ को तकलीफ पहुँचाने का मतलब यह है कि जैसे माँ अपने बच्चे को अपने पास रखना चाहे लेकिन ममता को ठुकराकर उसका बच्चा उस से जबरदस्ती छीन लिया जाये या यह कि बिना खर्च की जिम्मेदारी लिए उसको दूध पिलाने पर मजबूर किया जाये, बाप को तकलीफ पहुँचाने का मतलब यह है कि माँ दूध पिलाने से इंकार कर दे या उसकी ताकत से ज़्यादा उस से धन की माँग करे।

जबकि तुम उन के दुनियावी दस्तूर के ऐतबार से उन को दे दो, अल्लाह तआला से डरते रहो और जानते रहो कि अल्लाह तुम्हारे अमलों को देख रहा है।

२३४. तुम में से जो लोग मर जायें और बीवियाँ छोड़ जायें, वह औरतें अपने आप को चार महीने और दस (दिन) इद्दत में रखें। फिर जब मुद्दत खत्म कर लें तो जो अच्छाई के साथ अपने लिए करे उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं, और अल्लाह (तआला) तुम्हारे हर अमल को जानने वाला है।

२३५. और तुम पर इस में कोई गुनाह नहीं कि तुम इशारा से या अस्पष्ट रूप से इन औरतों से शादी के बारे में कहो या अपने दिल में इरादा छिपाओ, अल्लाह (तआला) को इल्म है कि तुम जरूर उनको याद करोगे, लेकिन तुम उनसे छिपाकर वादा न कर लो। हाँ, यह बात और है कि तुम अच्छी बात बोला करो और जब तक इद्दत की मुद्दत पूरी नहीं हो शादी का बन्धन मजबूत न करो। जान लो, कि अल्लाह (तआला) को तुम्हारे दिलों की बातों का भी इल्म है, तुम उस से डरते रहा करो और यह भी जान रखो, कि अल्लाह (तआला) बख्शने वाला और सहनशील है।

२३६. अगर तुम औरतों को बिना हाथ लगाये और बिना महर मुकरर किये तलाक़ दे दो तो भी तुम पर कोई गुनाह नहीं, हाँ उन्हें कुछ न कुछ फ़ायेदा दो, भालदार अपने हिसाब और गरीब अपनी ताकत के हिसाब से दस्तूर के हिसाब से अच्छा फ़ायेदा दें। भलाई करने वालों के लिए यह जरूरी है।^१

وَالَّذِينَ يَتَوَقَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا
يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا
فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا
فَعَلْنَ فِي أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٣٤﴾

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُمْ بِهِ مِنْ
خُطْبَةِ النِّسَاءِ أَوْ أَكْتَمْتُمْ فِي أَنْفُسِكُمْ ۗ عَلِمَ
اللَّهُ أَنَّكُمْ سَتَدُّوهُنَّ وَلَكِنْ لَا تَأْوَدُوهُنَّ
سِرًّا إِلَّا أَنْ تَقُولُوا قَوْلًا مَعْرُوفًا ۗ وَلَا تَعْرَضُوا
عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْكِتَابَ أَجَلَهُ ۗ وَلَوْ عَلِمُوا
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ فَاصْدِرُوا ۗ وَأَعْلَمُوا
أَنَّ اللَّهَ عَفُورٌ ذَلِيلٌ ﴿٢٣٥﴾

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَقْتُمْ النِّسَاءَ مَا لَمْ تَمْسُوهُنَّ
أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً ۗ وَمَتَّعُوهُنَّ عَلَى
الْمُؤْتَبَرِ قَدْرًا ۗ وَعَلَى الْمُقْتَرِ قَدْرًا ۗ مَتَاعًا
بِالْمَعْرُوفِ ۗ حَتَّىٰ عَلَى الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٣٦﴾

^१ मौत की यह इद्दत हर बीवी के लिए है औरत ने उस से जिमाअ किया हो या न किया हो। गर्भवती (हामला) के लिए यह क़ानून नहीं क्योंकि उसकी इद्दत प्रसव हो जाना है।

^२ यह उस औरत के बारे में हुक्म है कि शादी के वक्त महर (स्त्री धन) मुकरर नहीं की गयी थी और औरत हमबिस्ती करके के पहले तलाक़ भी दे दे, तो उसे कुछ न कुछ फ़ायेदा देकर विदा

२३७. और अगर तुम औरतों को इस से पहले तलाक दे दो कि तुम ने उन्हें हाथ लगाया हो और तुम ने उनका महर भी मुकर्रर किया हो, तो मुकर्रर महर का आधा (महर) दे दो, यह बात और है कि वह खुद माफ कर दे, या वह इंसान माफ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गांठ है। तुम्हारा माफ कर देना तकवा से बहुत करीब है और आपसी फजीलत को न भूलो। बेशक अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमलों को देख रहा है।

وَأَنْ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ وَقَدْ قَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً مَتَّعْتُمْ مَا قَرَضْتُمْ إِلَّا أَنْ يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوا إِلَيْكُمْ بِرِيبَةٍ عَقْدًا ۗ وَالْحَاكِجُ ۗ وَأَنْ تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ ۗ وَلَا تَنْسُوا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٢٣٧﴾

حَفِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَىٰ ۗ

وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ ﴿٢٣٨﴾

وَإِنْ خِفْتُمْ فِرَاجَ أَوْ ذُرْبَانَ ۗ فَإِذَا أَمِنْتُمْ

فَادْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَيْكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا

تَعْلَمُونَ ﴿٢٣٩﴾

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا ۖ

وَصِيَّةٌ لِّأَزْوَاجِهِمْ مَتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرِ

إِخْرَاجٍ ۗ وَإِنْ خَرَجْتُمْ فَلا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي

مَا تَعْلَمُونَ فِي النِّسْبَةِ ۗ مِنَ مَعْرُوفٍ ۗ وَاللَّهُ

عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٤٠﴾

२३८. नमाजों की हिफाजत करो खासकर बीच वाली नमाज की और अल्लाह (तआला) के लिए नम्रतापूर्वक (वाअदब) खड़े रहा करो।

२३९. अगर तुम्हें डर हो तो पैदल ही या सवार ही सहीह, और अगर शान्ति हो जाये तो अल्लाह (तआला) की बड़ाई को बयान करो जिस तरह कि उस ने तुम्हें उस बात की तालीम दी है, जिसे तुम नहीं जानते थे।^१

२४०. और जो तुममें से मर जायें और बीविया छोड़ जाये, वह वसीयत कर जायें कि उनकी बीविया साल भर फ्रायेदा उठायें।^२ उन्हें कोई न निकाले, और अगर वे खुद निकल जायें तो तुम पर इस में कोई गुनाह नहीं जो वह अपने लिए अच्छाई से करें अल्लाह (तआला) जबरदस्त और हिक्मत वाला है।

करो, यह फ्रायेदा (तलाक का फ्रायेदा) मर्द की ताकत के हिसाब से होना चाहिए या मालदार अपने हिसाब और गरीब अपनी ताकत भर दे।

^१ बीच वाली नमाज से मुराद अन्न नमाज है, जिसको इस हदीस रसूलुल्लाह ﷺ के आधार पर मुकर्रर कर दिया गया है, जो जग खन्दक के दिन अन्न की नमाज को *صلوة وسطى* कहा है।

^२ यानी दुश्मन से डर की वजह से जिस तरह भी मुमकिन हो, पैदल चलते हुए, सवारी पर बैठे हुए नमाज पढ़ लो, लेकिन जब डर की हालत खत्म हो जाये तो उसी तरह नमाज पढ़ो, जिस तरह सिखलाया गया है।

^३ यह आयत अगरचे तरतीब में वाद की है लेकिन मन्सूख है, इसकी मन्सूखी की आयत पहले आ चुकी है जिस में मौत की इहत चार महीना दस दिन बताई गई है, इस के सिवाय विरासत की आयत ने बीबी का हिस्सा मुकर्रर कर दिया है, अब शौहर को बीबी के लिए वसीयत (उत्तरदान) करने की कोई जरूरत नहीं रही न घर और न खर्च की।

२४१. और तलाक दी हुई औरतों को अच्छी तरह फायदा पहुँचाना परहेजगारों पर जरूरी है।

२४२. इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिये अपनी आयतों (आदेशों) को बयान करता है ताकि तुम समझो।

२४३. क्या तुम ने उन्हें नहीं देखा जो हजारों की तादाद में मौत की वजह से अपने घरों से निकल पड़े अल्लाह ने उन से कहा कि मर जाओ फिर उन्हें ज़िन्दा कर दिया।¹ बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फ़जल वाला है मगर ज़्यादा लोग शुक़िया अदा नहीं करते।

२४४. और अल्लाह की राह में लड़ो और यह जान लो कि अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है।

२४५. कौन अल्लाह को अच्छा उधार देगा जिसे वह फिर उसे कई गुना ज़्यादा अता करेगा और अल्लाह ही कमी और ज़्यादाती करता है और तुम उसी की ओर दोबारा जाओगे।

२४६. क्या आप ने इस्राईल के वंश की "मूसा" के वाद की जमाअत को नहीं देखा जब उन्होंने अपने नबी (ईशदत) से कहा कि हमारा एक राजा बना दीजिये ताकि हम अल्लाह की राह में लड़ें उन्होंने कहा कि हो सकता है कि जिहाद फ़र्ज़ हो जाने के बाद, तुम जिहाद न करो। उन्होंने कहा कि भला हम अल्लाह की राह में जिहाद क्यों न करेंगे? हम तो अपने घरों से उजाड़े गये हैं और औलादों से दूर कर दिये गये हैं। फिर जब उन पर जिहाद फ़र्ज़ हुआ, तो सिवाय थोड़े से इंसानों के सब फिर गये और अल्लाह

وَالْمُطَلَّقَاتُ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ٢٤١

كَذَلِكَ يبينُ اللهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ٢٤٢

أَمْ تَرَى إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ٢٤٣

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَعِلْمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ٢٤٤

مَنْ ذَا الَّذِي يُقرضُ الله قَرْضًا حَسَنًا فَيضْعِفُهُ لَهُ أضعافًا كثيرة ٢٤٥ وَالله يقرضُ وَيضْعِفُ وَيؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ٢٤٦

أَمْ تَرَى إِلَى الْمَلَائِكَةِ إِذْ أُنزِلَ مِنْ عِنْدِ مُوسَى مُدًا قَالُوا لَنَبِيِّهِمْ لَهُمْ إِبْرَاهِيمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ٢٤٧ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُنْتُمْ عَلَيْهِمْ مِنَ الْقَاتِلِينَ أَنْ تَتَذَكَّرُوا ٢٤٨ قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا ٢٤٩ فَلَمَّا كُنِيَ عَلَيْهِمُ الْغِيَاثُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ ٢٥٠ وَالله عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ٢٥١

¹ यह हादसा किसी पिछली उम्मत का है, जिसकी तफ़सील किसी हदीस में नहीं मिलती।

² अच्छे उधार से मुराद अल्लाह की राह में और जिहाद में माल सदाका करना है यानी जान की तरह माल देने में भी संकोच न करो, माल में बढ़ोतरी और कमी भी अल्लाह के हाथ में है और वह दोनों तरह से तुम्हारा इम्नेहान लेता है। कभी माल में बढ़ोतरी करके और कभी माल में कमी करके, फिर अल्लाह की राह में ख़र्च करने से कमी भी नहीं होती है, अल्लाह तआला इसमें कई-कई गुना बढ़ोतरी करता है, कभी जाहिरी तौर से कभी छिपे तौर से और रूहानी तौर पर और आख़िरत में तो जरूर उस में अधिकता आश्चर्यचकित होगी।

जालिमों को अच्छी तरह से जानता है ।

२४७. और उन से उन के नबी ने कहा कि अल्लाह (तआला) ने तालूत (यह एक नाम है) को तुम्हारा बादशाह बना दिया है, तो कहने लगे भला उसका हम पर राज्य कैसे हो सकता है, उस से बहुत अधिक राज्य के हकदार हम हैं, उसको तो धन की ज्यादाती भी नहीं अता की गई है । उस (नबी) ने कहा सुनो! अल्लाह (तआला) ने उस को तुम पर फजीलत दी है और उसे इल्म और जिस्मानी ताकत भी ज्यादा अता किया है। हकीकत बात यह है कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपना मुल्क दे, अल्लाह (तआला) कुशादगी वाला और इल्म वाला है ।

२४८. और उन के नबी ने फिर उन से कहा, उस के मुल्क की वाजेह निशानी यह है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक आ जायेगा? जिस में तुम्हारे रब की तरफ से दिल के सुकून का सामान है और मूसा की औलाद और हारुन की

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا قَالُوا أَنَّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِنَ الْمَالِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٤٧﴾

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّكُمُ الَّذِينَ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٤٨﴾

¹ हजरत तालूत उस वंश से नहीं थे, जिससे इस्राईल की औलादों के बादशाहों का सिलसिला चला आ रहा था, यह गरीब और एक आम सेनानी थे, जिस पर उन्होंने आबाज उठायी थी, पैगम्बर ने कहा कि यह मेरा चुनाव नहीं है । अल्लाह ने उन्हें तैनात किया है, फिर भी नेतृत्व (कियादत) के लिए माल से ज्यादा अक्ल, इल्म और जिस्मानी ताकत की जरूरत है और तालूत इस में तुम सभी से अच्छे हैं, इसलिए अल्लाह ने उन्हें इस पद के लिए चुन लिया है ।

² सन्दूक यानी ताबूत, जो तोब से है, जिसके मतलब पलटने के हैं, क्योंकि इस्राईल की औलाद प्रसाद (तबरक) के लिए इसकी ओर पलटते थे । (फतहुल कदीर) इस ताबूत में हजरत मूसा व हारुन عليهما السلام की पाक चीजें थीं, यह ताबूत भी उन के दुश्मन उन से छीन कर ले गये थे । यह ताबूत अल्लाह तआला ने निशानी के शकल में फरिश्तों के जरिये हजरत तालूत के घर के दरवाजे पर रखवा दिया, इसे देखकर इस्राईल की औलादें खुश भी हुईं और इसे अल्लाह तआला की तरफ से निशानी मानकर तालूत को अपना राजा मान लिया और अल्लाह तआला ने भी इसे उन के लिए एक चमत्कार (आयत) व फतह और सब की वजह बना दिया سكينة का मतलब ही अल्लाह तआला की तरफ से ख़ास मदद का उतरना जिसे वह अपने ख़ास बन्दों पर उतारता है जिसकी वजह से भयानक जंग में जब बड़े-बड़े बहादुरों के दिल काँप जाते हैं तो ईमानवालों के दिल दुश्मन के डर और धाक से खाली और फतह व कामयाबी की उम्मीद से भरे होते हैं । इस से मालूम हुआ कि नवियों की अवबेष (वाकिआत) अल्लाह के हुक्म से जरूर फजीलत और उपयोगिता (अहमियत) रखती है, लेकिन यह जरूरी है कि वह सही तरीके से उनकी (तबरक़ात) हो ।

२५०. और जब उनका जालूत और उसकी फौजों से मुकाबला हुआ, तो उन्होंने दुआ की, हे हमारे पालनहार! हमें सब अता कर और सावित कदम बना दे और काफिर कौम पर हमारी मदद कर !¹

२५१. अतः उन्हें अल्लाह के हुक्म से पराजित कर दिया और दाऊद ने जालूत का कत्ल कर दिया और अल्लाह ने उसे मुल्क और हिक्मत² और जितना चाहा इल्म भी अता किया और अगर अल्लाह कुछ लोगों को दूसरे गरोह से हटाता न रहता तो धरती में फसाद फैल जाता, लेकिन अल्लाह दुनिया के लोगों पर बड़ा फ़ज़ल करने वाला है।³

२५२. यह अल्लाह की आयतें (सूत्र) हैं जिन्हें हम आप पर सच्चाई के साथ पढ़ते हैं और निश्चय ही आप रसूलों (ईशदूतों) में से हैं।⁴

وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا
أَخْرِجْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٥٠﴾

فَهَذَا مَوْهُمُ بِأُذُنِ اللَّهِ ۖ وَقَتْلُ دَاوُدَ جَالُوتَ
وَإِنَّهُ اللَّهُ الْمُلْكُ وَالْحِكْمَةُ وَعَلِمَةٌ مِنَّمَا
يَشَاءُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ لَفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَكِنَّ اللَّهَ
ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٢٥١﴾

يَذِكُ آيَاتِ اللَّهِ يَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۗ وَوَكَأَنَّكَ
لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢٥٢﴾

¹ जालूत उस दुश्मन कौम का सेना नायक था, जिस से तालूत और साथियों का मुकाबला था, यह अमालिका की कौम थी, जो अपने वक्त में योद्धा और बहादुर लोग समझे जाते थे, उनकी इसी प्रसिद्धता (शहरत) के वजह से ठीक जंग के समय में ईमानवालों ने अल्लाह के दरबार में सब और मजबूती के लिए और कुफ्र के सामने ईमानवालों को फ़त्ह और कामयाबी की दुआ की, यानी भौतिक कारणों (माद्दी अस्वाब) के साथ-साथ ईमानवालों के लिए ज़रूरी है कि वह अल्लाह की ओर से कामयाबी और फ़त्ह के लिए खास तरीके से दुआ करें, जिस तरह वद्र की जंग के वक्त नबी ﷺ ने अल्लाह के दरबार में बड़ी आप्रहता और विनम्रता (इन्कसारी-इसरार) से फ़त्ह और कामयाबी के लिए दुआ की थी, जिसे अल्लाह ने कुबूल किया जिसकी वजह से मुसलमानों की छोटी सी तादाद ने काफ़िरों की बहुत बड़ी तादाद पर फ़त्ह हासिल किया।

² हज़रत दाऊद जो अभी न पैगम्बर थे और न बादशाह, इस तालूत की सेना में एक फौजी थे, उन के हाथों जालूत मारा गया और इस थोड़े से ईमानवालों को घड़ी लड़ाकू कौम पर जीत दिलवाई।

³ इस के बाद अल्लाह तआला ने हज़रत दाऊद को बादशाहत और नववत दोनों अता किया।

⁴ इस में अल्लाह के एक क़नून की चर्चा है कि वह इसानो ही के एक उम्मत के जरिये दूसरी उम्मत के ज़ुल्म और ग़ल्बा को ख़त्म करता रहता है अगर वह ऐसा न करता और किसी एक ही उम्मत को सदा ताक़्त और ग़ल्बा का सौभाग्य दिये रहता तो यह धरती ज़ुल्म और फ़साद से भर जाती।

⁵ यह पिछले वाकिआत जिनका इल्म आप पर नाज़िल पाक क़ुरआन के जरिये दुनिया को हो रहा है, हे मुहम्मद (ﷺ) बेशक आप की नववत और सच्चाई का सबूत है, इनका बयान न किसी किताब में किया है न किसी से सुना है, जिस से वाज़ेह है कि यह ग़ैब की ख़बर है जो वहयी (ईशवाणी) के जरिये अल्लाह आप पर उतार रहा है।

२५३. यह रसूल है, जिन में से हम ने कुछ को कुछ पर फज़ीलत दी है उन में से कुछ है जिन से अल्लाह (तआला) ने बात की है और कुछ का मर्तबा ऊँचा किया है और हम ने ईसा पुत्र मरियम को मोजिजा अता किया और पाक रूह से उनका समर्थन कराया, अगर अल्लाह चाहता तो उन के बाद वाले अपने पास निशानियाँ आ जाने के बाद आपस में कभी भी लड़ाई-भिड़ाई न करते, लेकिन उन लोगों ने इच्छितेलाफ़ किया, उन में से कुछ ने ईमान कुबूल किया और कुछ काफ़िर हुए, और अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो यह आपस में न लड़ते लेकिन अल्लाह (तआला) जो चाहता है, करता है।

२५४. हे ईमानवालो ! जो हम ने तुन्हें दे रखा है, उस में से खर्च करते रहो, इस से पहले कि वह दिन आये जिस दिन न तिज़ारत है न दोस्ती और न सिफ़ारिश, और काफ़िर ही ज़ालिम हैं।

२५५. अल्लाह (तआला) ही सच्चा मावूद है, जिस के सिवाये कोई मावूद नहीं, जो जिन्दा है, और सबका थामने वाला है, जिसे न ऊँघ आये न नींद उस की मिल्कियत में ज़मीन व आसमान की सभी चीज़ें हैं, कौन है जो उस के हुक्म के बिना उस के सामने सिफ़ारिश कर सके, वह जानता है जो उन के सामने हैं, जो उन के पीछे हैं और वह उस के इल्म में से किसी चीज़ का घेरा नहीं कर सकते, लेकिन वह जितना चाहे ! उसकी कुर्सी की वुसअत ने ज़मीन व आसमान को घेर रखा है, वह अल्लाह (तआला) उनकी

تِلْكَ الرُّسُلُ فَسَلْنَا بَعْضَهُم عَلَىٰ بَعْضٍ
مِّنْهُمْ مَنْ كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ
وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ
بِرُوحِ الْقُدُسِ ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَفْتَنَّا
الَّذِينَ صَرَفُوا بَعْضُهُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمْ
الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنْ اٰخْتَلَفُوا فَيَنْهَمُ مِنْ أَمِنٍ
وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ۗ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَفْتَنَّا
وَلَكِنَّ اللَّهَ يُفَعِّلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ
قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خِلَّةَ وَلَا
شَفَاعَةَ ۗ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٥٤﴾

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۗ الْعَلِيُّ الْقَيُّومُ ۗ لَا تَأْخُذُهُ
سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ ۗ لَدَا مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۗ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۗ
وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ ۗ
وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ ۗ وَلَا يَئُودُهُ
حِفْظُهُمَا ۗ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾

1 मतलब वह मोजिजा है, जो हज़रत ईसा को अता किये गये थे, जैसे मरे हुए को जिलाना आदि जिसकी तफ़सील सूर: आले इमरान में आयेगी, पाक रूह से मुराद जिवील है, जैसाकि पहले भी गुज़र चुका है।

2 यह आयतुल कुर्सी है। सहीह हदीसों में इसका बहुत महत्व (फज़ीलत) बयान किया गया है, जैसे यह क़ुरआन की सब से अज़ीम आयत है, इसको रात को पढ़ने से शैतान से महफूज़ रहता है, इस को हर नमाज़ के बाद पढ़ना चाहिए। (इब्ने कसीर)

२५९. या उस इंसान के समान जिसका गुजर उस वस्ती पर हुआ, जो छत के बल औंधी पड़ी हुई थी, कहने लगा उसकी मौत के बाद अल्लाह (तआला) उसे किस तरह जिन्दा करेगा तो अल्लाह (तआला) ने उसे सौ साल के लिये मार दिया, फिर उसे (जिन्दा) उठाया, पूछा, "कितनी मुहत तुझे पर गुजरी?" जवाब दिया कि "एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा।" कहा कि "तू बल्कि सौ साल तक रहा, फिर अब तू अपने खाने-पीने को देख कि बिल्कुल खराब नहीं हुआ और अपने गधे को भी देख, हम तुझे लोगों के लिये निशानी बनाते हैं, तू देख कि हम हड्डियों को किस तरह खड़ी करते हैं, फिर उन पर गोस्त चढ़ाते हैं।" जब यह सब वाजेह हो चुका, तो कहने लगा, "मैं जानता हूँ कि अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने वाला है।"

२६०. और जब इब्राहीम (عليه السلام) ने कहा, "हे मेरे रब! मुझे दिखा कि तू मुर्दा को किस तरह जिन्दा करेगा?" अल्लाह (तआला) ने कहा "क्या तुम्हें ईमान नहीं?" जवाब दिया, "ईमान तो है, लेकिन मेरे दिल को इत्मेनान हो जायेगा।" कहा, "चार परिन्दे लो, उन के टुकड़े कर डालो, फिर हर पहाड़ पर उनका एक-एक हिस्सा रख दो, फिर उन्हें पुकारो तुम्हारे पास दौड़ते हुए आ जायेंगे।" और जान रखो कि अल्लाह (तआला) जबरदस्त हिक्मत वाला है।

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوسِهَا ۚ قَالَ اتَىٰ يَمِينِي هُنَا ۖ وَاللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ فَأَمَاتَهُ اللَّهُ وَآتَاهُ عَايِرًا ثُمَّ بَعَثَهُ ۚ قَالَ كَمْ لَيْسَتْ ۚ قَالَ لَيْسَتْ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۚ قَالَ بَل لَّيْسَتْ وَآتَاهُ عَايِرًا فَأَنْظَرُوهُ إِلَىٰ عَمَّاكُم وَشُرَاكِكُمْ لَمْ يُكْسَبْتَهُ ۚ وَأَنْظَرُوهُ إِلَىٰ جَارِكُمْ ۚ وَاجْعَلْكُمْ آيَةً لِلنَّاسِ وَأَنْظَرُوهُ إِلَىٰ عَمَّاكُم كَيْفَ تُنْشِرُهَا ثُمَّ تَكْسُوهَا لِحْمًا ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ ۖ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ ارْنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۚ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِنْ ۚ قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قُلُوبِي ۚ قَالَ فَعُودًا أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّنَجِينِ كَمَا أَنبَأَ إِيَّاكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾

¹ कहा जाता है कि जब वह इंसान मरा था तो थोड़ा दिन चढ़ा था, और जब वह जिन्दा हुआ तो भी खाम नहीं हुई थी तो उस ने हिसाब लगाया था कि अगर मैं कल आया था, तो एक दिन बीता या दिन का कुछ हिस्सा गुजरा है जबकि हकीकत यह है कि इस के इस बाकिआ की मुहत सौ साल की थी।

² यानी यकीन तो मुझे पहले भी था, लेकिन अब आँखों से देखकर यकीन और इल्म में और मजबूती आ गयी है।

२६१. जो लोग अल्लाह (तआला) की राह में अपना माल खर्च करते हैं, उनकी मिसाल उस दाने जैसी है, जिस में से सात वालियाँ निकलें और हर वाली में सौ दाने हों, और अल्लाह (तआला) जिसे चाहे कई गुना दे और अल्लाह (तआला) बड़ा कुशदा और इल्म वाला है।

२६२. जो लोग अपना माल अल्लाह (तआला) की राह में खर्च करते हैं, फिर उसके बाद एहसान नहीं जताते और न तकलीफ देते हों। उनका फल उन के रब के पास है, उन पर न तो कोई डर है न वह उदास होंगे।

२६३. भली बात कहना और माफ करना उस सदका से बेहतर है, जिस के बाद दुख दिया जाये और अल्लाह बेनियाज और सहनशील है।

२६४. हे ईमानवालो! अपने सदका को एहसान जताकर और दुख पहुँचाकर देकार न करो, जिस तरह से वह इंसान जो अपना माल दिखावे के लिये खर्च करे और न अल्लाह (तआला) पर ईमान रखे और न क्रयामत पर, उसकी मिसाल उस चिकने पत्थर की है, जिस पर थोड़ी सी मिट्टी हो, फिर उस पर जोरदार बारिश हो और वह उस बिल्कुल साफ और सख्त छोड़ दे, इन रियाकारों

مَثَلِ الذَّرِينِ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَكْبَدَتْ سَبْعَ سَنَابِلٍ فِي
كُلِّ سُنْبُلَةٍ مِائَةٌ حَبَّةٌ وَاللَّهُ يُضِعِفُ
لِمَنْ يَشَاءُ طَوَالَهٗ وَيَسِيعُ عَلَيْهِمُ ﴿٢٦١﴾

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ
لَا يَتَّبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا مَتًّا وَلَا أَدَىٰ لَهُمْ
أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا
هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾

قَوْلٍ مَّعْرُوفٍ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ
يَتَّبِعُهَا أَدَىٰ ۗ وَاللَّهُ عَنِّي حَلِيمٌ ﴿٢٦٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَبْطُلُوا صَدَقَتَكُمْ
بِالسَّيِّئِ وَالْأَدَىٰ ۗ كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ رِثَاءَ
النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَتُكَلِّمُ كَثِيرًا
صَفْوَانٍ عَلَيْهِ ثَرَابٌ فَأَصَابُهُ وَابِلٌ فَتَكُونُ
صَلْدًا ۗ وَلَا يُغْنِي رُؤُوسَ عَلَىٰ شَيْءٍ ۗ وَسَيَا سَوَادًا
وَاللَّهُ لَا يُهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦٤﴾

¹ अल्लाह की राह में माल खर्च करने की फ़ज़ीलत का जो वयान गुजर चुका है, केवल उस इंसान को हासिल हो सकेगा, जो माल खर्च करने के बाद एहसान न जताये, और मुँह में ऐसे लपज़ न कहे जिससे किसी गरीब के सम्मान को ठेस पहुँचे और उसको तकलीफ़ का एहसास हो, यह इतना बड़ा गुनाह है कि नबी ﷺ ने फरमाया :

«क्रयामत के दिन अल्लाह तआला तीन तरह के इंसानों से बात नहीं करेगा उन में एक एहसान जताने वाला है ...» मुस्लिम, किताबुल ईमान।

² इस आयत में यह कहा गया है कि, सदका व सवाव करके, भलाई करके जताना और दुख देने वाली बातें करना ईमानवालों को ज़ेद नहीं देते, बल्कि उन लोगों की आदत है जो सुनाफ़िक (अवसरवादी) हैं वह दिखावे के लिये खर्च करते हैं। दूसरे ऐसे खर्च करने की मिसाल ऐसी है कि जैसे पत्थर की चट्टान पर मिट्टी जम जाये और कोई उस में बीज बो दे और उस के बाद बारिश का एक झोंका आये, तो सब कुछ वह जाये और वह पत्थर मिट्टी से बिल्कुल साफ़ हो जाये, या जिम तरह वह बारिश उस पत्थर के लिये फ़ायदेमंद नहीं हुई उसी तरह दिखावे का दान भी उसको कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा सकेगा।

२६८. शैतान तुम्हें गरीबी से डराता है, और वेहयाई का हुक्म देता है' और अल्लाह (तआला) तुम को अपनी रहमत और फ़ज़ल का वायेदा करता है। अल्लाह (तआला) बहुत मेहरबान और इल्म वाला है।

२६९. वह जिसे चाहे इल्म, अक्ल देता है और जिसे अक्लमंदी दे दी गई उसे बहुत सारी भलाई दी गई और नसीहत केवल अक्लमंद ही हासिल करते हैं।

२७०. तुम चाहे जितना खर्च करो (या सदका करो) और जो कुछ नज़र मानो^२ उसे अल्लाह (तआला) जानता है और जालिमों का कोई सहायक नहीं।

२७१. अगर तुम दान-पुण्य (सदकात) को जाहिर करो, तो वह भी अच्छा है, और अगर तुम उसे छिपा कर गरीबों को दे दो, तो यह तुम्हारे लिये सबसे अच्छा है। अल्लाह (तआला) तुम्हारे गुनाहों को खत्म कर देगा और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सभी अमलों से बख़्शव है।

الْكٰفِرِيْنَ يُعِدُّ لَكُمْ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ
وَإِنَّهُ يُعِدُّ لَكُمْ عُقُوْبَةً مِنْهُ وَفَضْلًا وَإِنَّهُ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٨﴾

يُوْفِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَآءُ، وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ
فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا وَمَا يَدْرِكُوْا
أَوْلُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ
سَدَقَةٍ قَانَ اللَّهُ يَعْلَمُهَا وَمَا لِلظَّالِمِيْنَ
مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾

إِنْ تَبَدَّ وَالصَّدَقَاتُ فَيَعْبَأْ بِهَا، وَإِنْ تَخْفَوْهَا
وَأَتَوْنَهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَيَكْفُرُ
عَنْكُمْ مَنْ سَخَا بَكُمْ، وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٧١﴾

^१ यानी नेक काम में माल खर्च करना हो, तो शैतान यह डर पैदा करता है कि इस से तुम गरीब और भिखारी हो जाओगे, लेकिन बुरे कामों में बेकार करने में ऐसे डरावों को करीब नहीं आने देता बल्कि उन बुरे कामों को इस तरह बना-सँवार के पेश करता है कि उन के लिए छिपी हुई इच्छायें इस तरह जाग जाती हैं कि उन पर इंसान बड़े से बड़ा माल खर्च कर डालता है।

^२ मनौती (नज़र) का मतलब है कि मेरा पला काम हो गया या पला दुःख का खाल्ता हो जायेगा, तो मैं अल्लाह की राह में इतना सदका करूँगा, इस नज़र को पूरा करना जरूरी है, अगर किसी नाफरमानी और नाजायेज काम की नज़र मानी है तो उसे पूरा करना जरूरी नहीं है। नज़र भी नमाज और रोजे की तरह इबादत है, इसलिये अल्लाह के सिवाय किसी और की नज़र मानना उसकी इबादत है जो शिर्क है, जैसाकि आजकल मसहूर मजारों पर मनौती और चढ़ावे का यह काम आम है, अल्लाह तआला इस शिर्क से बचाये।

२७२. उन्हें हिदायत पर ला खड़ा करना तुम्हारे अधिकार में नहीं, बल्कि हिदायत (मार्गदर्शन) अल्लाह (तआला) देता है जिसे चाहता है, और तुम जो अच्छी चीज अल्लाह की राह में दोगे उसका फायदा खुद पाओगे, तुम्हें सिर्फ अल्लाह (तआला) की खुशी हासिल (प्राप्त) करने के लिये खर्च करना चाहिये, तुम जो कुछ माल खर्च करोगे उसका पूरा-पूरा बदला तुम्हें दिया जायेगा और तुम्हारा हक (अधिकार) न मारा जायेगा।

२७३. दान के लायक सिर्फ वह गरीब हैं जो अल्लाह की राह में रोक दिये गये, जो देश में चल-फिर नहीं सकते,^१ बेवकूफ लोग उनके सवाल न करने की वजह से उन्हें मालदार समझते हैं, आप उन के मुँह को देखकर अलामत से उन्हें पहचान लेंगे, वह लोगों से चिमटकर भीख नहीं माँगते, तुम जो कुछ माल खर्च करो अल्लाह (तआला) उसका जानने वाला है।

२७४. जो लोग अपने माल को रात-दिन छुपा कर या खुल्लम-खुल्ला खर्च करते हैं, उन के लिये उन के रब के पास बदला है, न उन्हें कोई डर है और न कोई गम।

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَا تُنْفِكُمْ ۗ وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ ۗ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَفِّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُكْفَرُونَ ﴿٢٧٢﴾

لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أَحْصَوْا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُمْ بِسِيمَاهُمْ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ الْمَاعَاةَ ۗ وَمَا تَنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٢٧٣﴾

الَّذِينَ يَنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٤﴾

^१ इस से मुराद वह मुहाजिर हैं जो मक्का से मदीना आये और अल्लाह की राह में आने की वजह से उनकी हर चीज छूट गयी, इस परिधि (जुमरा) में दीन की तालीम हासिल करने वाले विद्यार्थी और आलिम (धार्मिक शिक्षक) भी आते हैं।

२७५. ब्याज खाने वाले लोग न खड़े होंगे, लेकिन उसी तरह, जिस तरह वह खड़ा होता है, जिसे शैतान लग कर पागल बना देता है ! यह इसलिये कि यह कहा करते थे कि तिजारत भी तो ब्याज ही की तरह है, ^२ जबकि अल्लाह (तआला) ने तिजारत को हलाल किया और ब्याज को हराम । और जो इंसान अपने पास आयी हुई अल्लाह (तआला) की नसीहत सुन कर रूक गया उस के लिये वह है जो गुजर गया, ^३ और उसका मामला अल्लाह (तआला) के पास है और जो फिर (हराम की ओर) पलटा वह जहन्नमी है, वे हमेशा उसी में रहेंगे ।

२७६. अल्लाह (तआला) ब्याज को मिटाता है और दान को बढ़ाता है, ^४ और अल्लाह (तआला) किसी नाबुक्का और काफिर को मित्र नहीं बनाता ।

२७७. जो लोग ईमान के साथ (सुन्नत के अनुसार) काम करते, नमाजों को कायम करते हैं और जकात अदा करते हैं, उनका फल उन के रज के पास है, उन पर न तो कोई डर है और न कोई दुख ।

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقْوَمُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ
الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَيْمِ ذَٰلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا
وَاحْتَلَّ اللَّهُ بِالنَّبِيِّ وَالرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ
مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَاتَّهَىٰ فَلَهُ مَا سَلَفَ
وَأَمْرًا إِلَىٰ اللَّهِ وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧٥﴾

يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُرِي الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ
لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ ﴿٢٧٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٧٧﴾

^१ ब्याज लेने वाले की यह हालत क्रय से उठते वक्त या क्यामत के मैदान में होगी ।

^२ हालांकि तिजारत में तो सामान और पैसे का बराबर लेन देन होता रहता है, दूसरे इस में फायदा व नुकसान की उम्मीद रहती है, जबकि ब्याज में यह दोनों बातें नहीं होती हैं, इसलिए अल्लाह ने बेचने को हलाल और ब्याज को हराम कहा है, फिर यह दोनों एक कैसे हो सकते हैं?

^३ ईमान लाने और माफी मांग लेने के बाद पिछला ब्याज लेने पर पकड़ नहीं होगी ।

^४ यह ब्याज के वास्तविक (हकीकी) और आत्मिक नुकसान के बाद सदका के फायदा की तफसील है, ब्याज से देखने में तो बढ़ोत्तरी होती है, लेकिन उसके असल मायने के अनुसार परिणामस्वरूप (अंजाम के ऐतबार से) ब्याज का माल उसकी बरबादी और खराबी की वजह बनती है, इस बात का समर्थन (ताइद) अब पश्चिमी देशों के अर्थशास्त्री भी करने लगे हैं ।

२७८. हे ईमानवालो! अल्लाह (तआला) से डरो और जो ब्याज बाकी रह गया है, वह छोड़ दो अगर तुम सचमुच ईमानवाले हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ
مِنَ الرِّبَا إِن كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٧٨﴾

२७९. अगर ऐसा नहीं करते तो अल्लाह (तआला) और उस के रसूल से लड़ने के लिये तैयार हो जाओ।¹ और अगर माफी मांग लो तो तुम्हारा असल माल तुम्हारा ही है न तुम जुल्म करो और न तुम पर जुल्म किया जाये।²

إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ فَأَذِّنُوا حَرْبًا مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَإِن تَسْتَمْتُوا فَلَكُمْ رُءُوسُ أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ
وَلَا تُظْلَمُونَ ﴿٢٧٩﴾

२८०. और अगर कोई गरीब हो तो उसे संहलत तक वक्त देना चाहिये, और सदका कर दो तो तुम्हारे लिये ज्यादा अच्छा है, अगर तुम में इल्म हो।

وَإِن كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ وَأَن
تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾

२८१. और उस दिन से डरो, जिस में तुम सब (अल्लाह तआला) की तरफ लौटाये जाओगे और हर इंसान को उस के अमल के ऐतबार से पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर जुल्म नहीं किया जायेगा।³

وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَىٰ اللَّهِ عَسَىٰ تَمُوتُوا
وَكُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٨١﴾

¹ यह ऐसी कड़ी चेतावनी (तबीह) है जो किसी दूसरे गुनाह के करने पर नहीं आई है, इसलिये हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने कहा कि जो इंसान इस्लामी मुल्क में ब्याज छोड़ने के लिये तैयार न हो तो ब्रत के राज्य प्रमुख (हाकिम) की जिम्मेदारी है कि उससे तौबा कराये। क्योंकि वह अल्लाह और रसूल से जंग का एलान कर रहा है। और न रुकने की हालत में उसकी गर्दन मार दे। (इब्ने कसीर)

² तुम अगर असल माल से ज्यादा माल बसूल करोगे, तो यह तुम्हारा जुल्म होगा और अगर तुम्हें असल माल न दिया जाये तो यह तुम पर जुल्म होगा।

³ कुछ कौल के ऐतबार से यह नबी करीम ﷺ पर नाजिल आखिरी आयत (श्लोक) है जिस के बाद ही आप का इतिकाल हो गया।

२६२. हे इमानवालो! जब तुम आपस में मुकरर मुद्दत के लिए एक-दूसरे से उधार का लेन-देन करो तो लिख लिया करो और लेखक को चाहिये कि आपस का मामला इसाफ के साथ लिखे, लेखक (लिखने वाले) को चाहिये कि लिखने से इंकार न करे, जैसे अल्लाह (तआला) ने उसे सिखाया है उसी तरह उसे भी लिख देना चाहिये और जिस के जिम्मे हक हो वह लिखवाये और अपने अल्लाह (तआला) से डरे जो उसका रब है, और हुक्क में से कुछ घटाये नहीं, हाँ जिस इंसान पर हुक्क हो और वह जाहिल हो या कमजोर हो या लिखवाने की ताकत न रखता हो तो उसका वली इसाफ के साथ लिखवा दे और अपने में से दो मर्दों को गवाह रख लो, अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें जिन्हें तुम गवाह के तौर पर पसन्द कर लो, ताकि एक की भूल-चूक को दूसरी याद दिला दे। और गवाहों को चाहिये कि वे जब बुलाये जायें तो इंकार न करें, और कर्ज को जिसकी मुद्दत मुकरर है चाहे छोटा हो या बड़ा हो लिखने में सुस्ती न करो, अल्लाह तआला के करीब यह बात बहुत इसाफ वाली है, और गवाही को ठीक रखने वाली और शक से भी ज्यादा बचाने वाली है। और

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِعِثْرٍ إِلَىٰ آخِيٍّ فَمَسَىٰ فَاتَّبِعُواهُ وَلْيَكْتُبْ بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ - وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ - وَلْيَمْلِكِ الَّذِينَ يَدِينُ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا فَإِنْ كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْطِيعُ أَنْ يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِكْ وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ وَأَسْشْهَدُوا شَهِيدَيْنِ مِنْ رَجَائِكُمْ فَإِنْ لَمْ يَكُنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتٌ مِنْ تَرْحُمُونَ مِنَ الشَّهَدَاءِ أَوْ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرْ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَى وَلَا يَأْبَ الشَّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا وَلَا تَسْتَمُوا أَنْ تَكْتُمُوا صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ آخِيهِ ذَلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِشَهَادَةٍ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ

1 यह एक मर्द के सामने दो औरतों को मुकरर करने की फजीलत और अक्लमदी है, या औरत अक्ल और याद रखने में मर्द से कमजोर है। (जैसाकि सहीह मुस्तिम की एक हदीस में औरत को कम अक्ल कहा गया है) यह औरत के हुक्क का हनन और बेइज्जती का सूत्र नहीं है, (जैसाकि कुछ लोग कहते हैं) बल्कि उनकी फितरी कमजोरी का बयान है जो अल्लाह तआला के इल्म और मर्जी पर मवनी है। घमंड की वजह से कोई इसको कुबूल न करे तो और बात है, लेकिन हकीकत और घटनाओं के आधार पर इसका खण्डन नहीं किया जा सकता।

2 लिखने का फायदा है कि इससे इसाफ की मांग पूरी होगी, गवाही भी सही होगी (कि गवाह के मौजूद न होने या मौत के बाद उनका लिखा हुआ लेख गवाह बन जायेगा) और किसी तरह के शक से दोनों पक्ष महफूज रहेंगे, क्योंकि शक होने की हालत में लेख देख लेने पर शक दूर कर लिया जायेगा।

यह बात अलग है कि वह मामला नगद तिजारत की शकल में हो जो आपस में लेन-देन कर रहे हो तो तुम पर उसके न लिखने में कोई गुनाह नहीं। खरीदने बेचने के वक़्त भी गवाह मुकर्रर कर लिया करो, और (याद रखो) न तो लिखने वाले को नुक़सान पहुँचाया जाये और न गवाहों को¹ और अगर तुम ऐसा करो तो यह तुम्हारी खुली नाफ़रमानी है। अल्लाह (तआला) से डरो, अल्लाह (तआला) तुम्हें नसीहत दे रहा है और अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने वाला है।

२८३. और अगर तुम सफ़र में हो और लिखने वाला न पाओ तो गिरवी अपने पास रख लिया करो, और अगर आपस में एक-दूसरे पर यक़ीन हो, तो जिसे अमानत दी गयी है वह उसे अदा कर दे, और अल्लाह (तआला) से डरता रहे जो उसका रब है² और गवाही को न छुपाओ और जो उसे छिपा ले वह मन का पापी है,³ और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह (तआला) उसे अच्छी तरह जानता है।

أَلَا تَتْلُوهُ هَاتُوا أَشْهَادًا وَإِذَا تَبَايَعْتُمْ وَلَا يُضَارُّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ وَإِنْ تَفَعَّلُوا فَإِنَّهُ كُفْرٌ بِكُمْ وَأَنْتُمْ وَاللَّهُ يُعَذِّبُكُمْ اللَّهُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ شَيْءًا عَلَيْهِمْ 283

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَى سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهٌ مَّقْبُوضَةٌ فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي الْوُضِعَ الْأَمَانَةُ وَلْيَسْتَعِذَّ اللَّهُ رَبَّهُ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ أُمٌّ قَلْبُهُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ 283

¹ इनको नुक़सान पहुँचाने से मुराद यह है कि बहुत दूर से उन्हें बुलाया जाये, जिस से उनकी व्यस्तता (मशगूलियत) में अड़चन और तिजारत में नुक़सान हो या उनकी झूठी बात लिखने या उसका गवाह बनने के लिए मजबूर किया जाये।

² अगर एक-दूसरे पर भरोसा हो तो बिना गिरवी रखे भी कर्ज़ का सौदा कर सकते हो। अमानत से मुराद यहाँ कर्ज़ है, अल्लाह से डरते हुए उसे जायेज तरीक़े से अदा कर दो।

³ गवाही को छिपाना बहुत बड़ा गुनाह है, इसलिये इसकी बहुत बुराई यहाँ कुरआन में और हदीस में की गयी है, इसलिये सही गवाही की बड़ी अहमियत भी है। सहीह मुस्लिम की हदीस है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया :

«أَخْبِرْكُمْ بِخَيْرِ الشَّهَادَةِ الَّذِي يَأْتِي بِشَهَادَتِهِ قَبْلَ أَنْ يَسْأَلَهَا»

वह सब से अच्छा गवाह है, जो बिना गवाही की माँग के खुद गवाही के लिये हाज़िर हो जाये (सहीह मुस्लिम)

२८४. जमीनो आसमान की हर चीज अल्लाह (तआला) के अधिकार में है। तुम्हारे दिलों में जो कुछ है, उसे चाहे जाहिर करो या छुपाओ, अल्लाह (तआला) उसका हिसाब लेगा, फिर जिसे चाहे माफ कर दे और जिसे चाहे सजा दे और अल्लाह (तआला) हर चीज पर कुदरत रखता है।

२८५. रसूल उस चीज पर ईमान लाये जो उसकी तरफ अल्लाह (तआला) की तरफ से उतारी गयी और मुसलमान भी ईमान लाये। यह सब अल्लाह (तआला) और उसके फरिश्ते पर, और उस की किताबों पर, और उस के रसूलों पर ईमान लाये, उस के रसूलों में से किसी के बीच हम फर्क नहीं करते, उन्होंने कहा कि हम ने सुना और इताअत की, हम तुझ से माफी चाहते हैं। हे हमारे रब! और हमें तेरी ही तरफ लौटना है।

२८६. अल्लाह किसी भी आत्मा (नफस) पर उस की ताकत से ज्यादा बोज़ नही डालता, जो सबाब वह करे वह उस के लिए है और जो बुराई वह करे वह उसी पर है। हे हमारे रब! अगर हम भूल गये हों या गलती की हो तो हमें न पकड़ना। हे हमारे रब! हम पर वह बोज़ न डाल जो हम से पहले लोगों पर डाला था। हे हमारे रब! हम पर वह बोज़ न डाल जो हमारी ताकत में न हो और हमें माफ कर दे, और हमें माफी अता कर, और हम पर रहम कर, तू ही हमारा मालिक है, हमें काफिर क्रौम पर फतह अता कर।

يَلُو مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لَوْلَا نُفِثُوا
مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفَوْنَ يُحَاسِبُكُمْ بِهِ اللَّهُ ۗ
فَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٨٤﴾

أَمَّنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ
وَالْمُؤْمِنُونَ ۗ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَيْكَتِهِ
وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نَقَرُّقِي بَيْنَ أَحَدٍ مِنْ
رُسُلِهِ ۗ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۗ غُفْرَانَكَ
رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾

لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ
وَعَلَيْهَا مَا كَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْ لَنَا إِنْ كُنَّا
أَوْ آخِطَانَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تُحِثْ عَلَيْنَا ۗ إِضْرًا كَمَا
حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِنَا ۗ رَبَّنَا وَلَا تُحِثْ عَلَيْنَا
مَا لَا لَاطِقَةَ لَنَا بِهِ ۗ وَاعْفُ عَنَّا ۗ وَاعْفِرْ لَنَا ۗ
وَارْحَمْنَا ۗ إِنَّكَ أَنْتَ مَوْلَانَا ۗ فَاصْرُتْنَا عَلَى الْقَوْرِ
الْكُفْرِينَ ﴿٢٨٦﴾

सूरतु आले इमरान-३

سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ

सूर: आले इमरान मदीना में उतरी। इस में दो सौ आयतें हैं और बीस रूकुऊ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अलिफ • लाम • मीम

२. अल्लाह (तआला) वह है जिसके सिवाय कोई माबूद नहीं, जो जिन्दा है और सभी का रक्षक है।

३. जिसने हक के साथ इस किताब (पाक कुरआन) को उतारा, जो अपने से पहले के (धर्मशास्त्रों) को प्रमाणित करती है, और उसी ने [इस से पहले (धर्मग्रन्थ)] तौरात और इंजील उतारा।

४. इससे पहले लोगों की हिदायत के लिए और कुरआन भी उसी ने उतारा। जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों से कुफ्र करते हैं उनके लिये सख्त अजाब हैं। और अल्लाह (तआला)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْقَافِ

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ

يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ

مِن قَبْلِ هُدَىٰ لِلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ

شَدِيدٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انْتِقَامٍ

१ यह सूर: मदीनी है। इसकी सभी आयतें मुज्तलिफ अवकात में मदीने में ही उतरी और इसका शुरूआती हिस्सा यानी ८३ आयतों तक इसाईयों के नजरान के बफद (यह नगर अब सऊदी अरब में है) के वारे में उतरा हुआ है, जो ९ हिजरी में नबी ﷺ की खिदमत में हाजिर हुआ था, इसाईयों ने आकर नबी करीम ﷺ से अपने इसाई अक्रीदा और इस्लाम के वारे में बहस मुबाहिसा किया, जिसकी तरदीद करते हुए उन्हें मुवाहिला (एक तरीका है, जिसके अनुसार कसम खाकर अपनी बात कही जाती है) की दावत भी दी गई, जिसका तफसीली बयान आगे आयेगा, उसी पृष्ठभूमि में कुरआन करीम की इन आयतों का अध्ययन किया जायेगा।

२ और अल्लाह तआला के बहुत खास नाम है, हई का मतलब है कि वह शुरू से है और आखिर तक रहेगा, उसे मौत और फना नहीं। कयूम का मतलब वह सारी मखलूक को कायम रखने वाला, रक्षक और संरक्षक (निगरी) है, सारी दुनिया को उसकी जरूरत है उसे किसी की जरूरत नहीं।

३ यानी अपने-अपने वकत में तौरात और इंजील भी जरूर लोगों की हिदायत का चरमा थी, इसलिये कि उन के उतारने का मकसद ही यही था फिर भी उस के बाद और الفرقान कह कर वाजेह कर दिया कि तौरात और इंजील का जमाना खत्म हो गया। अब कुरआन उतर चुका वह फुरकान है और अब सिर्फ वही सच व झूठ की पहचान है, इसको सच माने बिना अल्लाह के करीब कोई मुसलमान और मोमिन नहीं।

जवरदस्त है और बदला लेने वाला है।

५. वेशक अल्लाह (तआला) से जमीन और आसमान की कोई चीज छिपी नहीं है।

६. वही माता के गर्भ में तुम्हारी शकल जिस तरह चाहता है बनाता है उस के सिवाय कोई भी हकीकत में इबादत के लायक नहीं है, वह ताकत वाला और हिक्मत वाला है।

७. वही अल्लाह (तआला) है जिस ने तुझ पर किताब उतारी, जिस में वाजेह और ठोस आयतें हैं, जो असल किताब हैं और कुछ समान (मुतशविह) आयतें हैं, फिर जिन के दिलों में खराबी है तो वह मुतशविह आयतों के पीछे लग जाते हैं, फितना तलाश करने के लिये और उनकी तावील के लिये, लेकिन उन के मकसद हकीकी को अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई नहीं जानता^१ और कामिल व मजबूत इल्म वाले यही कहते हैं कि हम तो उन पर ईमान ला चुके यह सब हमारे रब की तरफ से है, और नसीहत तो सिर्फ अक़लमंद ही हासिल करते हैं।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ ⑤

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ⑥

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ
مُّحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ
فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ رَيْبٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ
مِنْهُ ابْتِغَاءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ
تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ مَوَازِينُ يُنْزَلُونَ فِي الْعُلُومِ يُقُولُونَ
أَمْ كَلِمَاتٍ لَا كُلٌّ مِنْ بِنْدِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا
أُولُو الْأَلْبَابِ ⑦

१ 'मुहकमात' से मतलब वह आयतें हैं जिन में अम्र व नहयी (आदेश-निदेश), समस्यायें (मसायेल) और कथायें हैं, जिनका मतलब वाजेह और अटल है, उनके समझने में किसी तरह की कठिनाई नहीं आती। इस के खिलाफ «आयात मुताशविहात» है। जैसे अल्लाह का वुजूद और तकदीर की समस्यायें, जन्नत, जहन्नम और मलायका आदि (वगैरह)।

२ तावील का एक मतलब है किसी चीज के असल का इल्म। इस मायने के ऐतबार से لا اله الا الله पर रूकना जरूरी है, क्योंकि हर विषय की असल हकीकत का इल्म सिर्फ अल्लाह ही को है, दूसरा मतलब किसी विषय की व्याख्या, तफसीर, बयान और स्पष्टीकरण (बजाहत) है, इस मायने के ऐतबार से والراسخون पर रुका जा सकता है, क्योंकि आलिम लोग भी सहीह तफसीर और बयान का इल्म रखते हैं। (इध्ने कसीर)

८. हे हमारे रब! हमें हिदायत देने के बाद हमारे दिल टूटने न कर दे और हमें अपने पास से रहमत अता कर, बेशक तू ही सब से बड़ा दाता है।

९. हे हमारे रब ! तू बेशक लोगों को एक दिन जमा करने वाला है, जिस के आने में कोई शक नहीं, बेशक अल्लाह (तआला) वादा खिलाफी नहीं करता।

१०. काफिरों को उन के माल और उन की औलाद अल्लाह (तआला) के अजाबों से छुड़ाने में कुछ काम न आ सकेगी, यह तो जहन्नम का ईधन ही है।

११. जैसाकि फिरऔन की औलाद का हाल हुआ और उन का जो उन से पहले थे, उन्होंने हमारी निशानियों को झूठलाया, फिर अल्लाह (तआला) ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ लिया और अल्लाह (तआला) सख्त सजा देने वाला है।

१२. काफिरों से कह दीजिये कि तुम लोग निकट भविष्य (मुस्तकविल करीब) में पराजित किये जाओगे। और जहन्नम की तरफ जमा किये जाओगे और वह बुरा बिछौना है।

१३. बेशक तुम्हारे लिये (इवरत की) निशानी थी, उन दो गुटों में जो गुथ गये थे, एक गुट अल्लाह की राह में लड़ रहा था, और दूसरा गुट काफिरों का था, वह उन्हें आँखों से अपने से दुगना देखते थे, और अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपनी मदद से मजबूत कर देता है। बेशक इस में आँखों वालों के लिये बड़ी नसीहत है।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا
مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٨﴾

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْلِفُ الْوَعْدَ ﴿٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِي عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ
وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَئِكَ
هُمُ وَقُودُ النَّارِ ﴿١٠﴾

كُذِّبَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
كُذِّبُوا بِآيَاتِنَا فَآخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ
وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١١﴾

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا سَعْتَابُونَ وَهُمْ حُشْرُونَ
إِلَى جَهَنَّمَ ذُوَيْبَسِ الْوَيْهَادِ ﴿١٢﴾

فَدَّكَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِتْنَتَيْنِ التَّقَاتِ فِتْنَةً
تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَى كَافِرَةٌ
يَرَوْنَهُمْ فَعَلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ وَاللَّهُ يُؤْتِي
بِنَصْرِهِ مَنْ يَشَاءُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً
لِأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿١٣﴾

१४. पसंदीदा चीजों की मुहब्बत लोगों के लिये मुजय्यन कर दी गई है, जैसे स्त्रियाँ और पुत्र, सोना, चांदी के जमा किये हुए खजाने और निशानदार घोड़े और चौपाये और खेती! यह दुनियावी जिन्दगी का सामान है, और लौटने का अच्छा ठिकाना तो अल्लाह (तआला) ही के पास है।

१५. आप कह दीजिये कि क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर चीज बताऊँ? अल्लाह से डरने वाले लोगों के लिये उन के रब के पास जन्नत है जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में वे हमेशा रहेंगे,^१ और पत्नीजा रीविया^२ और अल्लाह (तआला) की खुशी है और सभी वन्दे अल्लाह (तआला) की निगाह में है।

१६. जो कहते हैं कि हे हमारे रब! हम ईमान ला चुके, इसलिये हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अजाब से बचा।

१७. जो सब्र करने वाले, और सच्चे और फरमाबर्दार और अल्लाह की राह में माल खर्च करने वाले हैं और पिछली रात को (मोक्ष प्राप्त

رُبَّيْنَ لِلنَّاسِ حُبَّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ
وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرَ الْمُقَنْطَرَةَ مِنَ الذَّهَبِ
وَالْفِطْرَةَ وَالْخَيْلَ الْمُسَوَّمَةَ وَالْأَنْعَامَ
وَالْحَرْثَ ذَلِكَ مَتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الْمَبَادِ (۱۴)

قُلْ أُوْتَيْتُكُمْ بِخَيْرٍ مِنْ ذِكْرِ الَّذِينَ اتَّقَوْا
عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِنَ
اللَّهِ وَاللَّهُ يُصَوِّرُ الْعِبَادَ (۱۵)

الَّذِينَ يُقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّا أَمَكْنَا فَأَغْفِرْ لَنَا
ذُنُوبَنَا وَوَقْنَا عَذَابَ النَّارِ (۱۶)

الضَّالِّينَ وَالضَّالِّينَ وَالْقَاتِلِينَ وَالسُّفْهِينَ
وَالسُّفْهِيرِينَ بِالْأَسْحَارِ (۱۷)

^१ शहवत से यहाँ मुराद मुशहेत है, यानी वह चीजें जो इंसान को प्राकृतिक रूप (फितरी तौर) से पसंद हैं, इसलिये इन से लगाव और उन से मुहब्बत नाजायेज नहीं है, लेकिन यह मुहब्बत मजहबे इस्लाम के कानून की परिधि (दायरे) में और संतुलित (मुतवाजिन) हो, उनकी खूबसूरती भी अल्लाह तआला की तरफ से इम्तेहान है।

﴿إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ رِيشَةً لَهَا لِلنَّوْعِ﴾

“हम ने जमीन पर जो कुछ बनाया है इसे जमीन की खूबसूरती के लिये बनाया है, ताकि लोगों का हम इम्तेहान लें।” (अल-कहफ-७)

^२ इस आयत में ईमानवालों को बताया जा रहा है कि दुनिया की ऊपर बयान की गई चीजों में ही न खो जाना, बल्कि उनसे बेहतर तो वह जिन्दगी और उसकी रहमत है जो रब के पास है, जिस के हकदार अल्लाह के डर से डरने वाले हैं, इसलिये अल्लाह से डरो, अगर यह तुम्हारे अन्दर पैदा हो गया तो बिला शक दुनिया और अखिरत की सारी भलाइयाँ अपने दामन में बटोर लोगे।

^३ पाक का मतलब है कि वह दुनियावी गंदगी और मैल-कुचैल, माहवारी और दूसरी गंदगी से पाक होगी और पाक दामन होगी, इसलिये अगली दो आयतों में अल्लाह के डर से डरने वालों की फजीलतों का ध्यान है।

करने की कामना के लिये) इस्तिगफार करने वाले हैं।

१८. अल्लाह उस के फरिश्तों और आलिमों ने गवाही दी है कि अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं, वह इन्साफ को कायम रखने वाला है, वही जवरदस्त हिक्मत वाला है, उस के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं।

१९. वैशक अल्लाह के पास दीन इस्लाम ही है। (अल्लाह के लिए मुकम्मल सिपुर्दगी) और जो किताब दिये गये उन्होंने इल्म आने के वाद आपस में हसद की वजह से इस्तिफाफ किया, और जो अल्लाह की आयतों (पाक कुरआन) को न माने तो अल्लाह जल्द ही हिसाब लेगा।

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَ الْمَلَكُوتِ
وَأُولُو الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ ۗ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ
الْعِلْمُ بِغَيْبٍ بَيْنَهُمْ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِآيَاتِ
اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٩﴾

इस्लाम वही दीन है जिसकी तबलीग और तालीम हर नबी अपने दौर में देते रहे और अब यह उसकी मुकम्मल शक्त है जिसे आखिरी रसूल मोहम्मद ﷺ दुनिया के सामने पेश कर रहे हैं। जिस में एकेश्वरवाद (तौहीद), रिसालत और आखिरत के लिए इस तरह यकीन रखना है जैसे आप ﷺ ने बताया है, अब सिर्फ यह यकीन रख लेना कि अल्लाह (परमेस्वर) एक है या कुछ अच्छा काम कर लेना इस्लाम नहीं न इससे आखिरत में नजात हासिल होगी, अकीदा और दीन यह है कि अल्लाह को एक माना जाये, सिर्फ उसी एक अल्लाह की इबादत की जाये, मोहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ समेत सभी रसूलों के लिए यकीन रखा जाये और आप ﷺ पर रिसालत का खातमा माना जाये और उम्मीद के साथ वह यकीन और अमल किये जाये जो कुरआन और रसूलों के कौल (हदीस) में बयान है अब इस दीन इस्लाम के सिवाय कोई दूसरा दीन अल्लाह के यहाँ कुबूल न होगा।

﴿وَمَنْ يَتَّبِعْ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾

..और जो इंसान इस्लाम के सिवाय किसी दूसरे दीन की खोज कर उसका दीन कुबूल नहीं होगा और आखिरत में वह नुकसान उठाने वालों में होगा। (आले इमरान : ८५)

﴿قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا﴾

..कह दीजिये कि हे लोगो! मैं तुम सबकी तरफ अल्लाह का रसूल हूँ। (सू: आराफ-१५८)

﴿تَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ لِيَكُونَ لِلْعَالَمِينَ نَذِيرًا﴾

..शुभ है वह जिस ने अपने बन्दे पर फुरकान (विवेकारी शास्त्र) उतारा ताकि वह दुनिया को खबरदार करे। (अल-फुरकान-१)

आप ﷺ ने फरमाया : उस अल्लाह की क्रसम जिसके हाथ में मेरी जान है जो यहूदी या इसाई मुझ पर यकीन किये बिना मर जाये वह जहन्नमी है। (सहीह मुस्लिम) यह भी कहा कि मैं लाल-काले (सभी इंसान) के लिये भेजा गया हूँ इसीलिए आप ने अपने दौर के सभी राजाओं को खत लिखकर उनको इस्लाम दीन कुबूल करने की दावत दी। (सहीहैन, माध्यम इन्ने कसीर)

२०. अगर वह आप से झगड़ा करें तो आप कह दें कि मैंने और मेरे पैरोंकारों ने खुद को अल्लाह के लिए समर्पित कर दिया और आप अहले किताब और अनपढ़ लोगों को कहें कि क्या तुम इस्लाम लाये। अगर वह इस्लाम को कबूल कर ले तो सीधा रास्ता पा गये और अगर मुंह फेर तो आप को सिर्फ पहुंचाना है और अल्लाह वन्दों को देख रहा है।

२१. वंशक जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों में कुफ़ करते हैं, और ईशूदतों (अम्बिया) को नाजायज कत्ल करने हैं और जो लोग इसाफ़ की बात करें, उन्हें भी कत्ल करते हैं तो (हे नबी) आप उन्हें बड़े अजाब में वाख़बर कर दीजिये।

२२. उन्हीं के (पुण्य) काम दुनिया और आख़िरत में बेकार हो गये और इनका कोई महायक (मददगार) नहीं।

२३. क्या आपने उन्हें नहीं देखा, जिन्हें किताब का एक हिस्सा दिया गया है, वह अपने आपस के फ़ैसले के लिये अल्लाह (तआला) की किताब की तरफ़ बुलाये जाते हैं, फिर भी उनका एक गिरोह मुंह फेर कर लौट जाता है।^१

२४. इसकी वजह उन का यह कहना है कि उन्हें गिनती के कुछ दिन ही आग़ स्पर्श (छू) करेगी, यह उनकी मनगढ़न्त बातों ने उन्हें उन के दीन के बारे में धोखे में डाल रखा है।

فَإِنْ حَاجَّكَ قَوْمٌ فَأَسْلَمْتُمْ وَيَجْهَىٰ رَبَّهُ وَمَنْ
أَبْغَيْنَ ۖ وَقُلْ لِلَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأَسْمِينَ
ءَأَسْلَمْتُمْ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۖ وَإِنْ تَوَلَّوْا
فَأِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ ۖ وَاللَّهُ بِصِرِّهِمْ بِالْعَبَادِ ۙ (20)

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ
الْمُرْسَلِينَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۖ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ
بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ (21)

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ ۖ رَوْحًا لَهُمْ مِنْ نُصْرَةِ رَبِّهِمْ (22)

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ
يُدْعَوْنَ إِلَىٰ كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ
يَتَوَلَّوْا قُرُونًا مِّنْهُمُ ۖ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ (23)

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَنْ نَّبْسُتَ النَّارَ إِلَّا أَيَّامًا
مَّعْدُودَاتٍ ۖ وَوَعَدُ اللَّهِ فِي ذَٰلِكَ لَلْحَقِّ
يَقْتُلُونَ (24)

^१ अनपढ़ लोगों से मुराद अरब के मूर्तिपूजक हैं जो किताब वालों के मुक़ाबले में आम तौर पर जाहिल थे।

^२ इन किताब वालों से मुराद वह मदीने के रहने वाले यहूदी हैं जिनका बहुमत दीन इस्लाम कबूल करने लायक ही नहीं थे, और इस्लाम मुसलमानों और नबी ﷺ के खिलाफ़ मसायेल पैदा करने में मशगूल रहे, यहाँ तक कि उन के दो गिरोहों को देश निकाला और एक गिरोह को कत्ल कर दिया गया।

२५. फिर क्या हालत होगी जब उन्हें हम उस दिन जमा करेगे, जिस के आने में कोई शक नहीं, और हर इंसान को अपने किये का पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर जुल्म न किया जायेगा।

२६. आप कह दीजिए, ऐ अल्लाह, हे सारी दुनिया के मालिक! तू जिसे चाहे मुल्क दे और जिस से चाहे मुल्क छीन ले और तू जिसे चाहे इज्जत दे और जिसे चाहे जलील कर दे, तेरे ही हाथों में सारी भलाईयाँ हैं।^१ वेशक तू हर चीज पर कुदरत रखता है।

२७. तू ही रात को दिन में दाखिल करता है और दिन को रात में दाखिल करता है,^२ तू ही निर्जीव से जीव पैदा करता है,^३ और जिन्दा से बेजान निकालता है, तू ही है कि जिसे चाहता है अनगिनत रोजी अता करता है।

فَلْيَكْفُرْ إِذَا جُمِعَ لَهُمُ لِيَوْمٍ أَرَادَ رَبُّهُ وَيَوْمَئِذٍ
كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

قُلِ اللَّهُمَّ مَلِكُ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاءُ
وَتَنزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاءُ وَتُعْزِزُ مَن تَشَاءُ
وَتُضِلُّ مَن تَشَاءُ ط يَبِّئُكَ الْخَيْرُ ط إِنَّكَ عَلَٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٦﴾

تُؤَلِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ
وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ
الْحَيِّ وَتَرزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾

^१ इस आयत में अल्लाह की बेपनाह कुदरत और ताकत का बयान है, राजा को रंक और रंक को राजा बना देने का हक उसी को है *بِيَدِكَ الْخَيْرُ* की जगह पर *بِيَدِكَ الْخَيْرُ* (सूचना की प्राथमिकता के साथ) से मुराद फज्ीलत दिखाना है, यानी भलाईयाँ सिर्फ तेरे ही हाथ में हैं, तेरे सिवाय कोई भलाई नहीं दे सकता, शर (बुराई) का (खालिक) भी अगरचे अल्लाह ही है लेकिन यहाँ सिर्फ खैर (भलाई) का बयान किया गया। शर (बुराई) का नहीं इसलिये कि भलाई सिर्फ अल्लाह की मेहरबानी है, इसके खिलाफ बुराई इन्सान के अपने अमल का बदला है जो उसे मिलता है या इसलिये कि बुराई भी उसकी तकदीर के लिखे का एक हिस्सा है, जिसमें भलाई इस तरह है कि अल्लाह के सभी काम भले हैं। (फतहुल क़दीर)

^२ रात को दिन में और दिन को रात में दाखिल करने का मतलब मौसम का बदलना है, एक मौसम में रात लम्बी होती है तो दिन छोटा है, और दूसरे मौसम में इसके खिलाफ दिन लम्बा होता है और रात छोटी हो जाती है, यानी कभी रात का हिस्सा दिन में और दिन का हिस्सा रात में दाखिल कर देता है, जिस से रात और दिन छोटे बड़े हो जाते हैं।

^३ जैसे बीर्य (बेजान) पहले इंसान से निकलता है और फिर उस निर्जीव (बीर्य) से इंसान, इसी तरह बेजान अण्डे से जिन्दा मुर्गी और फिर जिन्दा मुर्गी से बेजान अण्डा या काफिर से मोमिन और मोमिन से काफिर पैदा करता है।

२८. मोमिनों को चाहिए कि ईमानवालों को छोड़कर काफिरों को अपना दोस्त न बनायें,^१ और जो ऐसा करेगा वह अल्लाह (तआला) की किसी पक्ष (हिमायत) में नहीं, लेकिन यह कि उनके (डर से) किसी तरह की हिफाजत का इरादा हो,^२ और अल्लाह (तआला) खुद तुम्हें अपने आप से डरा रहा है और अल्लाह (तआला) ही की तरफ लौटकर जाता है।

२९. कह दीजिए कि चाहे तुम अपने दिल की बातें छिपाओ या जाहिर करो, अल्लाह (तआला) सब को जानता है, आकाशों और धरती में जो कुछ है सब उसे मालूम है, अल्लाह (तआला) हर चीज पर कुदरत रखने वाला है।

३०. जिस दिन हर एक नपस (व्यक्ति) अपने किये भलाई और बुराई को मौजूद पायेगा, खवाहिश करेगा कि काश! उस के और गुनाह के बीच बहुत दूरी होती। अल्लाह (तआला) अपने आप से डरा रहा है और अल्लाह (तआला) अपने बन्दों पर बहुत मेहरवान है।

३१. कह दीजिए! अगर तुम अल्लाह (तआला) से मुहब्बत करते हो तो मेरी इत्तेबा करो, खुद अल्लाह (तआला) तुम से मुहब्बत करेगा और

لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ شَيْءٌ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحْمِلُونَ كَثِيرًا مِنْ دُونِ
الْمُؤْمِنِينَ ۗ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ
فِي شَيْءٍ ۗ إِلَّا أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ أَنْفُسَهُمْ
وَيَحِبُّرَ اللَّهُ أَنْفُسَهُمْ ۗ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝ २८

قُلْ إِنْ تَحْتَفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يُعْلَمَهُ
اللَّهُ ۗ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ
وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ २९

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مِمَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ
مُحْضَرًا ۖ وَمِمَّا عَمِلَتْ مِنْ سُوءٍ ۖ تَوَدُّ لَوْ
أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا ۗ وَيَحْذَرُكُمْ
اللَّهُ أَنْفُسَهُ ۗ وَاللَّهُ رَعُوفٌ بِالْعِبَادِ ۝ ३०

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ ३१

^१ औलिया, बली का बहुवचन (जमा) है। बली ऐसे दोस्त का कहने है जिस से दिली मुहब्बत और खास रिश्ता हो, जैसे अल्लाह तआला ने अपने आप को ईमानवालों का बली कहा है।

﴿اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا﴾

..अल्लाह ईमानवालों का बली है। (अल-बकर:-२५७)

यानी ईमानवालों को एक-दूसरे से मुहब्बत और खास रिश्ता है और वे आपस में एक-दूसरे के बली (मित्र) हैं।

^२ यह हुकम उन मुसलमानों के लिए है, जो किसी काफिर भूल्क में रहते हों और उन से दोस्ती किये बिना उनके खौफ में बचना मुर्माकिन न हो तो वह उनसे जवानी दोस्ती कर सकते हैं।

तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा।^१ और अल्लाह (तआला) बहुत बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

३२. कह दीजिये कि अल्लाह (तआला) और रसूल के हुक्म की इताअत करो, अगर वह मूह फेर लें तो बेशक अल्लाह (तआला) काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता।^२

३३. बेशक अल्लाह (तआला) ने सभी लोगों में से आदम को और नूह को और इब्राहीम के परिवार और इमरान के परिवार को चुन लिया।

३४. कि ये सभी आपस में एक-दूसरे के वंश से हैं और अल्लाह (तआला) सुनता और जानता है।

३५. जब इमरान की बीवी ने कहा कि हे मेरे पालनहार! मेरे गर्भ में जो कुछ भी है उसे तेरे नाम से आजाद करने^३ की मन्नत मान ली तो तू इसे कुबूल कर, बेशक तू अच्छी तरह से सुनने वाला और जानने वाला है।

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۚ فَإِن كُوفِرُوا فَاِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِينَ ﴿٣٢﴾

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرٰهِيْمَ
وَآلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِن بَعْضٍ وَاللَّهُ سَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّي نَذَرْتُ
لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۗ
اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾

^१ यानी रसूल अल्लाह ﷺ की इत्तेवा करने की वजह से सिर्फ तुम्हारे गुनाह को ही नहीं माफ़ किया जायेगा, बल्कि तुम उसके महबूब बन जाओगे तो यह कितनी अच्छी बात है कि अल्लाह के सामने एक इंसान अल्लाह के प्रेमी की जगह हासिल कर ले।

^२ इस आयत में अल्लाह के हुक्म की इत्तेवा के साथ-साथ रसूल अल्लाह ﷺ की इत्तेवा करने की फिर से पुनर्वावृत्ति (ताकीद) करके यह वाज़ेह किया गया है कि अब बिना मोहम्मद ﷺ की पैरवी किये नजात नहीं हासिल हो सकती और इसका नकारना कुफ़्र है, और ऐसे काफ़िरों को अल्लाह तआला पसन्द नहीं करता, चाहे वह अल्लाह की मुहब्बत और नजदीक होने के कितने ही दावेदार हों। इस आयत में हदीस के न मानने वालों और रसूल अल्लाह ﷺ की पैरवी न करने वालों की कड़ी आलोचना की गयी है क्योंकि दोनों ही अपने-अपने रूप से ऐसा काम करते हैं जिसे यहाँ कुफ़्र के बराबर बताया गया है।

^३ محرراً (तेरे नाम आजाद) का मतलब तेरी धर्मस्थली (इबादतगाह) की खिदमत के लिये पेश करती है।

३६. जब बच्चे को जन्म दिया तो कहने लगी मेरे रब! मुझे तो लड़की हुई है, अल्लाह (तआला) अच्छी तरह से जानता है कि क्या जन्म दिया है, और लड़का, लड़की की तरह नहीं, मैंने उसका नाम मरियम रखा है, मैं उसे और उसकी औलाद को मरदूद शैतान से तेरी पनाह में देती हूँ।

३७. उसे उस के रब ने अच्छी तरह से कुबूल किया और उसका सब से अच्छा पालन-पोषण कराया, उसका संरक्षक (निगहबान) ज़करिया को बनाया? जब कभी ज़करिया उनके कमरे में जाते तो उन के पास रिज़क रखी हुई पाते थे।^१ वह पूछते थे कि हे मरियम! तुम्हारे पास यह रोजी (जीविका) कहाँ से आयी? वह जवाब देती कि यह अल्लाह (तआला) के पास से है, वेशक अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अनगिनत रिज़क अता करे।

३८. उसी जगह पर ज़करिया (عليه السلام) ने अपने पालनहार से दुआ की, कहा कि ऐ मेरे पालनहार! मुझे अपने पास से नेक औलाद अता कर, वेशक तू दुआ सुनने वाला है।

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ انِّي وَضَعْتُهَا اُنْثَىٰ
وَإِنَّهُ اَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتُ وَلَيْسَ الذَّكَرُ
كَالْاُنْثَىٰ وَاِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّي اَعِدُّ لَهَا
وَدُرَّتِيهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٣٦﴾

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَاَنْبَتَهَا نَبَاتًا
حَسَنًا وَاَكْفَلَهَا زَكَرِيَّا وَلَمَّا اَدْخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا
الْمِحْرَابَ وَوَجَدَ عِنْدَ هَارِزًا قَال يَا مَرْيَمُ اَنْتِ
لِكِ هَذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ
يُرِزُّ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ
لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً اِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾

^१ अल्लाह तआला ने यह दुआ कुबूल की, जैसाकि सहीह हदीसों में है कि जब बच्चा पैदा होता है तो शैतान उसे छूता है, जिस से वह चीखता है, लेकिन अल्लाह तआला ने हज़रत मरियम और उन के बेटे ईसा को इस से महफूज़ रखा है।

«ما مِنْ مُؤْمِنٍ يُولَدُ اِلَّا اُمَّهُ الشَّيْطَانُ حِيْنَ يُولَدُ فَيَسْتَهْلِكُ صَارِحًا مِنْ سِنِّ اَبَاهُ اِلَّا مَرْيَمَ وَاِبْنَهَا»

(सहीह बुखारी, किताबुल तफ़सीर, मुस्लिम किताबुल फ़जायल)

^२ हज़रत ज़करिया मरियम के मौसा भी थे इसलिए भी, इस के सिवाय अपने समय में पैगम्बर होने की वजह से सब से अच्छे संरक्षक बन सकते थे जो कि हज़रत मरियम की आर्थिक (मुआशी) ज़रूरतों, शैक्षिक और नैतिक प्रशिक्षण (तरबीयत) का उचित प्रवन्ध कर सकते थे।

^३ मेहराब से मुराद वह कमरा है जिस में हज़रत मरियम रहा करती थी, रिज़क से मुराद फल आदि है, यह फल विना मौसम के हुआ करते थे यानी गर्मी के फल सर्दियों में और सर्दियों के फल गर्मियों में उन के कमरे में होते थे।

३९. फिर फरिश्तों ने पुकारा जब कि वह कमरे में खड़े नमाज़ पढ़ रहे थे कि अल्लाह (तआला) तुझे यहिया की यक़ीनी खुशखबरी देता है। जो अल्लाह (तआला) के कलमे की तसदीक करने वाला? मुखिया, परहेज़गार और नवी होगा नेक लोगों में से।

४०. कहने लगे हे मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा? मैं बहुत बड़ा हो गया हूँ और मेरी पत्नी बाँझ है, कहा इसी तरह अल्लाह (तआला) जो चाहे करता है।

४१. कहने लगे रब! मेरे लिए इसकी कोई निशानी बना दे, कहा निशानी यह है कि तीन दिन तक तू लोगों से बात न कर सकेगा, सिर्फ़ इशारे से समझायेगा, तू अपने रब का जिक्र ज्यादा कर और सुबह व शाम उसी की बड़ाई को ब्यान कर।

४२. और जब फरिश्तों ने कहा हे मरियम! अल्लाह (तआला) ने तुझे मुतख़ब कर लिया और तुझे पाक कर दिया, और सारी दुनिया की औरतों में तेरा चुनाव (इतिखाब) कर लिया।

فَتَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ
أَنَّ اللَّهَ يَبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ فَآبَرِكْ مَا بِكَلِمَةٍ مِّنْ
اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ﴿٣٩﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي يَكُونُ لِي عُلْمٌ وَقَدْ بَلَغَنِي
الْكِبَرُ وَأُمْرَأَتِي عَاقِرٌ قَالَ كَذَلِكِ اللَّهُ
يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿٤٠﴾

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً وَقَالَ إِنَّا نَبِّئُكَ
بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ آيَاتِنَا لِلرَّاكِبِينَ ﴿٤١﴾
كَثِيرًا وَ سَمِعَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٤٢﴾

وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ لِمَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ
وَكَلَّمَكِ وَأَصْلَحَ عَلَيْكَ فَاذْكُرِي مَا كُنْتِ عَلَيْهِ ﴿٤٣﴾

१ बिना मौसम के फल देखकर हज़रत जकरिया के दिल में (अपने बुढ़ापे और अपनी बीबी के बाँझ होने पर भी) यह उम्मीद पैदा हुई कि काश अल्लाह तआला उन्हें भी इसी तरह औलाद अता कर दे, इसी वजह से उनके हाथ दुआ के लिये उठ गये, जिसे अल्लाह तआला ने कुबूल भी कर लिया और अता भी किया।

२ अल्लाह के कलमें की तसदीक से मुराद हज़रत ईसा की तसदीक करेगा, यानी हज़रत यहिया हज़रत ईसा से बड़े हुए, दोनों आपस में मौसरे भाई थे, दोनों ने एक-दूसरे का अनुमोदन किया, ^{سيدا} का मतलब है सरदार, ^{محسورا} का मतलब है पाप से विशुद्ध यानी गुनाह के क़रीब न गये हो, इसका मतलब यह कि उनको गुनाह से रोक दिया गया हो यानी हसूर, महसूर के मतलब में लिया गया है, कुछ ने इसका मतलब नामर्द किया है, लेकिन यह ठीक नहीं है, क्योंकि यह एक ऐब है, जबकि यहाँ उनकी फज़ीलत, इज़्जत के तौर पर इस्तेमाल हुआ है।

३ हज़रत मरियम की यह इज़्जत और मान उनकी अपनी फज़ीलत और उनके दौर के एतबार से है, क्योंकि सहीह हदीसों में हज़रत मरियम के साथ हज़रत खदीजा को भी ^{خيرناها} (सभी औरतों में बेहतर) कहा गया है और कुछ हदीसों में चार औरतों को मुकम्मल कहा गया है। हज़रत मरियम, हज़रत आसिया (फ़िरऔन की बीबी), हज़रत खदीजा, हज़रत आयेशा और

४३. हे मरियम ! तू अपने रब के हुक्मों का पालन और सज्दा कर और झुकने वालों (रुकुऊ करने वालों) के साथ झुका कर (रुकुऊ कर)।

४४. यह गैब की खबरों में से है, जिसे हम आप को बहयी कर रहे हैं, तब आप उस वक्त उन के पास न थे जब वह अपने कलम डाल रहे थे कि उन में से मरियम की परवरिश कौन करेगा? और न आप उन के झगड़ों के वक्त उन के पास थे।

४५. जब फ़रिश्तों ने कहा हे मरियम! तुझे अल्लाह (तआला) अपने एक कलिमा^२ की खुशखबरी देता है कि जिसका नाम मसीह ईसा इब्ने मरियम है जो दुनिया और आखिरत में सम्मानित है और वह मेरे निकटवर्तियों (मुकर्रबीन) में से है।

४६. वह लोगों से पालने में बात करेगा और अंधेड़ उम्र में भी,^३ और वह नेकों में से होगा।

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَاسْجُدِي وَارْكَعِي
مَعَ الرَّاكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

ذٰلِكَ مِنْ اَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيْهِ اِلَيْكَ ۗ وَمَا كُنْتَ
لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَتُهُمْ يَكْتُلُ
مَرْيَمَ ۗ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

اِذْ قَالَتِ السَّائِلَةُ لِمَرْيَمَ اِنَّ اللهَ يَبْعَثُكِ
بِكَلِمَةٍ فَاِنَّهٗ لَاسْمُ الْمَسِيْحِ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ
وَوَجَّهًا فِى الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾

وَوَكَّلِمُ النَّاسِ فِى الْهَيْدِ وَكَهْلًا
وَمِنَ الضَّالِّحِيْنَ ﴿٤٦﴾

हजरत आयेशा के बारे में कहा गया है कि उनकी फ़ज़ीलत औरतों में वैसे ही है, जैसे सरीद (हलुबा या खीर) को सभी खानों में फ़ज़ीलत है। (इब्ने कसीर) और तिर्मिजी में हजरत फ़ातिमा पुत्री मोहम्मद ﷺ को भी अच्छी औरतों में शामिल किया गया है। (इब्ने कसीर) इसका यह भी मतलब हो सकता है कि ऊपर बयान की गई औरतों को दूसरी औरतों में फ़ज़ीलत और बड़ाई अता की गयी है कि वे अपने-अपने दौर में फ़ज़ीलत रखती हैं।

^१ आजकल अहले बिदात ने नबी करीम ﷺ की मान-मर्यादा में अतिर्योक्ति (गुलू) करते हुए उन्हें अल्लाह तआला की तरह गैब का आलम और सर्वव्यापी (हाज़िर व नाज़िर) मानने का अकीदा गढ़ लिया है। इस आयत में इन दोनों बातों का स्पष्ट खण्डन (तरदीद) हो रहा है, अगर आप ﷺ को गैब का इल्म होता तो अल्लाह तआला यह न फरमाता कि हम गैब की खबरें आप को दे रहे हैं क्योंकि जिसको पहले ही से यह इल्म हो उससे ऐसे नहीं कहा जाता।

^२ हजरत ईसा को कलमा या अल्लाह का कलमा इसलिये कहा गया है कि उनकी पैदाईश एक चमत्कारिक रूप से आम इन्सानी उसूल के खिलाफ बिना बाप के अल्लाह की विशेष सामर्थ्य (कुदरत) और उस के कथन ۞ (हो जा) की उत्पत्ति है।

^३ हजरत ईसा के (पालने) माँ की गोद में बातचीत करने का बयान खुद क़ुरआन करीम की सूर: मरियम में है, इस के सिवाय सहीह हदीस में दो दूसरे बच्चों के माँ की गोद में बात करने का बयान है, एक साहवे ज़ुरैज और एक इसाईली स्त्री का बच्चा। (सहीह बुखारी, किताबुल अम्बिया)

४७. कहने लगी, "मेरे रब! मुझे लड़का कैसे होगा? हालांकि मुझे किसी मर्द ने छुआ भी नहीं है।" फिरश्ते ने कहा, "इसी तरह अल्लाह (तआला) जो चाहे पैदा करता है, जब कभी वह किसी काम को करना चाहता है तो सिर्फ कह देता है "हो जा" तो वह हो जाता है।"

४८. और अल्लाह (तआला) उसे लिखना और हिक्मत और तौरात व इंजील सिखायेगा !

४९. और वह इस्राईल की औलाद का रसूल होगा कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी लाया हूँ, मैं तुम्हारे लिए पक्षी के रूप के ही तरह का मिर्ची की चिड़िया बनाता हूँ, फिर उस में फूँक मारता हूँ तो वह अल्लाह (तआला) के हुक्म से पक्षी बन जाता है और मैं अल्लाह (तआला) के हुक्म से पैदाईशी अंधे को और कोढ़ी को अच्छा कर देता हूँ और मर्दा को जिन्दा कर देता हूँ और जो कुछ तुम खाओ और जो कुछ भी तुम अपने घरों में जमा करो मैं तुम्हें बता देता हूँ, इस में तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है अगर तुम ईमानवाले हो।

५०. और मैं तौरात की तसदीक करने वाला हूँ जो मेरे सामने है, और मैं इसलिये आया हूँ कि तुम पर कुछ उन चीजों को हलाल करूँ जो तुम पर हराम कर दी गयी है, और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की निशानी लाया हूँ, इसलिये तुम अल्लाह (तआला) से डरो और मेरी ही पैरवी करो।

५१. यक़ीन करो! मेरा और तुम्हारा रब अल्लाह ही है, तुम सब उसी की इबादत करो, यही सीधी राह है।

قَالَتْ رَبِّ أَلَيْسَ لِي وَلَدٌ وَكَلَّمْتُ سَمْرِي
بَشَرًا قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَإِذَا قَضَى
أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ
وَالْإِنْجِيلَ ﴿٤٨﴾

وَرَسُولًا إِلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنِّي قَدْ
جِئْتُكُمْ بِآيَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ إِنِّي أَخْلَقُ لَكُمْ
مِنَ الظُّلُمِ كَهَيْئَةِ الظُّلُمِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ
طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَةَ ۖ وَالْأَبْرَصَ
وَأُنحِي الْمَوْتَ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأَنْتِ بِنْتُ مَرْيَمَ إِتَانُكَ
وَمَا تَتَخَوْنَ فِي بُيُوتِكُمْ إِن فِي ذَلِكَ لَآيَةً
لِّكُمْ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٤٩﴾

وَمُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ
وَأَنْزِلَ لَكُمْ بَحْصَ النَّبِيِّ حُزْمَ عَلَيْهِمْ وَجِئْتُكُمْ
بِآيَةٍ مِنْ رَبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۝ ﴿٥٠﴾

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَذَا صِرَاطٌ
مُسْتَقِيمٌ ﴿٥١﴾

1 इस से मुराद या तो वह चीजें हैं, जो अल्लाह तआला ने सजा के तौर पर उन पर हराम कर दी थी या फिर वह चीजें जो उनके आलियों ने खुद अपने ऊपर हराम कर ली थी, अल्लाह का हुक्म नहीं था। (कुर्तबी) या ऐसी चीज भी हो सकती है जो उनके आलियों ने अपने सोच-विचार से हराम कर रखी थी और सोच-विचार में उन से गलती हुई और हजरत ईसा ने इन गलतियों को दूर करके उन्हें हलाल कर दिया। (इब्ने कसीर)

५२. लेकिन जब (हजरत) ईसा (عيسى) ने उनका इंकार महसूस कर लिया तो कहने लगे अल्लाह (तआला) की राह में मेरी मदद करने वाला कौन-कौन है? हवारियों ने जवाब दिया कि हम अल्लाह (तआला) की राह में सहायक हैं, हम अल्लाह (तआला) पर ईमान लाये और आप गवाह रहिये कि हम मुसलमान हैं।

५३. हे हमारे रब ! हम तेरी उतारी हुई बह्यी पर ईमान लाये और हम ने तेरे रसूल की इत्तेवा किया, बस अब तू हमें गवाहों में लिख ले।

५४. और काफिरों ने चाल चली और अल्लाह (तआला) ने भी योजना बनायी और अल्लाह (तआला) सभी योजनाकारों से अच्छा है।

५५. जब अल्लाह (तआला) ने फरमाया हे ईसा! मैं तुझे पूरी तरह से लेने वाला हूँ और तुझे अपनी तरफ उठाने वाला हूँ और तुझे काफिरों से पाक करने वाला हूँ, तरफ तुम्हारे पैरोकारों को काफिरों से क्रयामत के दिन तक ऊपर रखने वाला हूँ, फिर तुम सब का लौटना मेरी ही तरफ है, मैं ही तुम्हारे बीच सभी इख्तिलाफों का फैसला करूँगा।

فَلَمَّا أَحْسَسَ عَيْسَىٰ مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ ؕ آمَنَّا بِاللَّهِ ؕ وَأَشْهَدُ بِأَنَّكَ مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾

رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٣﴾

وَمَكُرُوا وَمَكَّرَ اللَّهُ ۗ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكْرِينِ ﴿٥٤﴾

إِذْ قَالَ اللَّهُ لِيَسَىٰ إِنِّي مُتَوَقِّفُكَ وَرَأَيْكَ إِلَىٰ وَمَطْفُوعِكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاءَ عِلَّ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ لَوْ أَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِهِمْ فَأَسْمِعْهُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْمَا تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾

1 हवारियों, हवारी का बहुवचन (जमा) है जिसका मतलब है अन्सार (अन्सार) सहायक। जिस तरह नबी ﷺ का कौल है "إِن لِّكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيًّا وَحَوَارِي الرَّسُولِ" "हर नबी का कोई खास सहायक होता है और मेरा सहायक जुबैर है।" (सहीह बुखारी)

2 (मक़) अरबी भाषा में बारीक और गुप्त (छिपे) उपाय को कहते हैं और इसी मतलब में यहाँ अल्लाह को ख़िरास कहा गया है, मानो यह तरीका बुरा भी हो सकता अच्छा भी, अगर बुरे प्रयोजन (मक़सद) के लिये हो तो बुरा अच्छे मक़सद के लिये हो तो अच्छा है।

3 यह نوق से बना जिसका धातु (मसदर) وق है इसका असल मायने पूरी तरह से लेना है, ईसान की मौत पर 'वफात' लफ़्ज इसलिये बोला जाता है, कि उसके शरीरिक अधिकार (हक) पूरी तरह से छीन लिये जाते हैं, इसलिए इस शब्दार्थ के कई शब्दों में से मौत सिर्फ एक शब्द है। नीद में भी साम्यिक रूप (बक़री तौर) से मानवी अधिकार (इंसानी हुकूक) निलम्बित कर दिये जाते हैं, इस वजह से नीद के लिये भी पाक क़ुरआन ने 'वफात' के लफ़्ज का इस्तेमाल किया है, जिस से मालूम हुआ कि कि इसका असल मायने पूरी तरह से लेना ही है। إِنِّي مُتَوَقِّفُكَ यहाँ अपने असल मायने में इस्तेमाल हुआ है, यानी हे ईसा! मैं तुझे यहूदियों, इसाईयों से बचाकर पूरी तरह से अपनी तरफ आकाश पर उठा लूँगा, और ऐसा ही हुआ।

५६. फिर काफिरों को तो मैं इस दुनिया और आखिरत में सख्त अजाब दूंगा और उनका कोई मददगार न होगा।

५७. लेकिन ईमानवालों और नेक काम करने वालों को अल्लाह (तआला) उनका पूरा-पूरा बदला देगा और अल्लाह तआला जालिमों से मुहब्बत नहीं करता।

५८. यह जिसे हम तेरे ऊपर पढ़ रहे हैं आयतें हैं और दृढ़ उपदेश (हिक्मत वाली नसीहत) हैं।

५९. अल्लाह (तआला) के पास ईसा की मिसाल आदम की तरह है, जिसे मिट्टी से पैदा करके कह दिया कि हो जा, वस वह हो गया।

६०. तेरे रब की ओर से हक यही है, खबरदार! शक करने वालों में से न होना।

६१. इसलिए जो भी आप के पास इस इल्म के आ जाने के बाद भी आप से इस में झगड़े तो आप कह दीजिए कि आओ हम तुम अपने-अपने बेटों को और हम तुम अपनी वीवियों को और हम और तुम अपने आप को बुला लें फिर हम मिल कर दुआ करें और झूठों पर अल्लाह की फिटकार (लानत) भेजें।¹

६२. बेशक सिर्फ यही सच्चा वयान है और अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई दूसरा इवादत के लायक नहीं, और बेशक अल्लाह ताकतवर और हिक्मत वाला है।

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَاعْتَدِ لَهُمُ عَذَابًا شَدِيدًا
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٥٦﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ
أُجُورَهُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٥٧﴾

ذَلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾

إِنَّ مَثَلَ عِيسَى عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾

الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ ۗ فَلَا تَكُنَ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿٦٠﴾

فَمَنْ حَادَّكَ فِيمَ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ
فَقُلْ تَمَالَوْا تَدْعُوا أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا
وَنِسَاءَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ ۗ ثُمَّ نَبْتَهِلْ
فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكٰذِبِينَ ﴿٦١﴾

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۗ وَمَا مِنْ إِلٰهٍ
إِلَّا اللَّهُ ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾

¹ यह मोवाहला की आयत कहलाती है, मोवाहला का मतलब है दो गिरोह का एक-दूसरे पर लानत यानी वहुआ देना, मतलब यह है कि जब दो गिरोहों में किसी वारे में झगड़ा और इत्तिलाफ हो जाये और बहस ब मुवाहसा से उसका खात्मा होता न दिखाई दे तो दोनों अल्लाह से यह दुआ करें कि हम में जो झूठा हो उस पर लानत हो।

६३. फिर भी अगर वे कुवूल न करें तो अल्लाह (तआला) भी अच्छी तरह विद्रोहियों (फ्रसादियों) को जानने वाला है।

६४. आप कह दीजिए कि हे अहले किताब! ऐसी इन्साफ़ वाली बात की ओर आओ जो हम में तुम में बराबर है कि हम अल्लाह (तआला) के सिवाय किसी की इबादत न करें और न उसके साथ किसी को शामिल करें, न अल्लाह (तआला) को छोड़ कर आपस में-एक-दूसरे को रब ही बना लें, अगर वह मुंह मोड़ ले तो कह दो कि गवाह रहना कि हम तो मुसलमान हैं।^१

६५. ऐ अहले किताब ! तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो? जबकि तौरात और इंजील तो उन के बाद उतारी गयी, क्या तुम फिर भी नहीं समझते?^२

६६. सुनो! तुम लोग उस में झगड़ चुके जिसका तुम्हें इल्म था, अब इस में क्यों झगड़ते हो जिस का तुम्हें इल्म ही नहीं है? और अल्लाह (तआला) जानता है तुम नहीं जानते।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمُتَّبِعِيكُمْ (63)

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ (64)

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنزِلَتِ التَّوْرَةُ وَالْإِنْجِيلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ (65)

هَذَا نَسَبُ هَوَالَاهُ حَاجَّتُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ قَلِمٌ تَحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ (66)

^१ सहीह बुखारी में है कि कुरआन करीम के इस हुक्म से आप ﷺ ने हिरकल बादशाह रोम को खत भेजा, उस में इस आयत के हवाले से दीन इस्लाम कुवूल करने की दावत दी और उसे कहा कि तू मुसलमान हो जायेगा तो दुगुना सवाब मिलेगा, वरना तेरी पूरी रियाआ का भी गुनाह तेरे सिर पर होगा।

^२ हजरत इब्राहीम के बारे में झगड़े का भतलव है कि यहूदी और इसाई दोनों यह दावा करते थे कि हजरत इब्राहीम उनके दीन के मानने वाले थे, अगरचे तौरात जिस पर यहूदी यक्रीन करते हैं और इंजील जिसे इसाई पाक किताब मानते हैं, दोनों हजरत इब्राहीम के सैकड़ों साल बाद उतरी, फिर हजरत इब्राहीम यहूदी या इसाई किस तरह हो सकते थे? कहते हैं कि हजरत इब्राहीम और हजरत मूसा के बीच एक हजार साल की मुदत का फर्क है और हजरत मूसा और हजरत ईसा के बीच दो हजार साल का फर्क था। (कुतबी)।

६७. इब्राहीम न तो यहूदी थे न इसाई, बल्कि वह पूरी तरह से सिर्फ मुसलमान थे, वहाँ मूर्तिपूजक भी न थे।

६८. सब लोगों से ज्यादा इब्राहीम के करीब वह लोग हैं जिन्होंने उनका कहना माना और यह नबी और जो लोग ईमान लाये, ईमानवालों का बली और मददगार अल्लाह है।

६९. अहले किताब का एक गुट चाहता है कि तुम्हें भटका दे, हकीकत में वे खुद अपने आप को भटका रहे हैं और समझते नहीं।^{६९}

७०. ऐ अहले किताब! तुम खुद गवाह होने के बावजूद भी अल्लाह की आयतों को क्यों नहीं मानते।

७१. ऐ अहले किताब! जानने के बावजूद भी सच और झूठ को क्यों मिला रहे हो और सच्चाई को क्यों छिपा रहे हो?

७२. और अहले किताब के एक गुट ने कहा कि जो कुछ भी ईमानवालों पर उतारा गया है उस पर दिन चढ़े तो ईमान लाओ और शाम के वक्त इन्कार कर दो ताकि यह लोग भी पलट जायें।

७३. और सिवाय तुम्हारे दिन पर चलने वालों के और किसी पर यकीन न करो, आप कह दीजिए! बेशक हिदायत तो अल्लाह ही की हिदायत है। (और यह भी कहते हैं कि इस बात पर भी यकीन न करो) कि कोई उस जैसा दिया जाये जैसा तुम दिये गये हो, या यह कि यह तुम

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا قَبْلَهُ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ 67

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَدُنَّ الَّذِينَ آتَبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ 68

وَدَّتْ كَلْبَةَ مِنَ الْكَتِبِ لِتُضِلُّوكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ 69

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تُشْهِدُونَ 70

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَتْلُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ 71

وَقَالَتْ كَلْبَةُ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أَمِنُوا بِالَّذِي أُنزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجِئَتْهُمْ السَّخَابُ وَالْقُرْآنُ آخِرَةً لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ 72

وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَىٰ هُدَىٰ اللَّهِ أَنْ يُؤْتَىٰ أَحَدًا مِمَّا لَمْ يَأْتِيكُمْ أَوْ يُخَفَىٰ عَنْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ 73

1 खालिस मुसलमान) यानी शिक से नफरत करने वाला और सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करने वाला।

2 यह यहूदियों के हसद और जलन की वजाहत है जो वह ईमानवालों से रखते थे और इसी हसद की वजह से मुसलमानों को भटकाने की कोशिश करते थे, अल्लाह तआला ने फरमाया कि इस तरह वह खुद ही अज्ञान में अपने आप को भटका रहे हैं।

से तुम्हारे रव के पास झगड़ा करेंगे, आप कह दीजिए कि फ़ज़ल तो अल्लाह (तआला) के हाथ में है, वह जिसे चाहे उसे अता करे, अल्लाह (तआला) बहुत बड़ा और जानने वाला है।

७४. वह अपनी रहमत से जिसे चाहे खास कर ले, और अल्लाह (तआला) फ़ज़ल वाला और बहुत बड़ा है।

७५. और कुछ अहले किताब ऐसे भी हैं कि तू खजाने का अमानतदार उन्हें बना दे तो भी तुझे वापस कर दें, और उन में कुछ ऐसे भी हैं कि अगर तू उन्हें एक दीनार भी अमानत के तौर पर दे तो तुझे अदा न करें, हा! यह और बात है कि तू उन के सिर पर ही खड़ा रहे, यह इसलिए कि उन्होंने कह रखा है कि हम पर इन अनपढ़ों के हक का कोई गुनाह नहीं, यह लोग जानने के वावजूद भी अल्लाह पर झूठ बोलते हैं।

७६. क्यों नहीं (पकड़ होगी) लेकिन जो इंसान अपना वादा पूरा करे और अल्लाह तआला से डरे, तो अल्लाह तआला भी ऐसे डरने वालों को अपना दोस्त रखता है।

७७. वेशक जो अल्लाह (तआला) के वादे और अपनी कसमों को थोड़ी सी कीमत पर बेच डालते हैं, उन के लिए आखिरत में कोई हिस्सा नहीं है, अल्लाह (तआला) न तो उन से बातचीत करेगा, न क्रियामत के दिन उनकी ओर देखेगा, न उन्हें पाक करेगा और उन के लिए बहुत बड़ा अजाब है।

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ (74)

وَمِنَ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنَ إِن تَأْمَنَهُ بِقِنطَارٍ يُؤَدُّهُ إِلَيْكَ، وَمِنْهُمْ مَنَ إِن تَأْمَنَهُ بِدِينَارٍ لَّا يُؤَدُّهُ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمَّتْ عَلَيْهِ قَائِمًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيِّينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكِبْرَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ (75)

بَلَىٰ مَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ وَاتَّقَىٰ فَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ (76)

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ عَهْدَ اللَّهِ وَآيَاتِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (77)

1. "वादा पूरा करे" का मतलब है वह वादा पूरा करे जो अहले किताब से या हर नबी के वास्ते से उनकी उम्मतों से नबी ﷺ पर इमान लाने के बारे में लिया गया है। "और अल्लाह से डरे" अल्लाह तआला के जरिये रोके गये कामों से रूके और उन बातों के अनुसार कर्म (अमल) करें जो नबी ﷺ वयान करें, ऐसे लोग वेशक अल्लाह की पकड़ से बचे रहेंगे, बल्कि अल्लाह के प्यारे होंगे।

७८. अवश्य उन में ऐसा गिरोह भी है जो किताब पढ़ते हुए अपनी जवान मरोड़ लेता है, ताकि तुम उसे किताब ही का लेख समझो, हालांकि हकीकत में वह किताब में से नहीं और यह कहते भी हैं कि वह अल्लाह (तआला) की तरफ से है, हालांकि हकीकत में वह अल्लाह तआला की तरफ से नहीं, वह तो जान बूझ कर अल्लाह (तआला) पर झूठ बोलते हैं।

७९. किसी ऐसे इंसान को जिसे अल्लाह (तआला) किताब, हिक्मत और नबूअत अता करे, यह जायेज नहीं कि फिर भी लोगों से कहे कि अल्लाह (तआला) को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ बल्कि वह तो कहेगा कि तुम सब लोग रब के हो जाओ,^१ तुम्हें किताब सिखाने और तुम को पढ़ाने की बजह से।

وَإِنْ مِنْهُمْ لَمَفْزِقًا يَلُونُ أَلَيْسَتْ لَهُمْ بِالْكِتَابِ
لِتَصَبُّوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ
وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِّبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ٧٨

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يُوْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ
وَالنَّبُوءَةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِي مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّكُمْ أَحْسَبِينَ بِمَا
كُنْتُمْ لَمُؤْمِنِينَ ٧٩

^१ यह उन यहूदियों का वयान है जिन्होंने अल्लाह की किताब (तौरात) में न केवल बदलाव किया बल्कि दो गुनाह और किये, एक तो जवान को मरोड़कर किताब के लफ्जों को पढ़ते, जिस से जनता को हकीकत के खिलाफ असर देने में वह सफल हो जाते, दूसरे अपनी मन-गढ़न्त बातों को अल्लाह की बातें कहते, दुर्भाग्य (बदकिस्मती) से मुसलमानों के धार्मिक-अगवाओं (पेशवाओं) में भी, नबी ﷺ की भविष्यवाणी (पेशीनगोई) "تَمَّتْ سُنَّةُ مَنْ كَانَ يُنْعَمُ" (तुम अपने से पहली उम्मतों की कदम-कदम पर पैरवी करोगे) के हिसाब से ऐसे बहुत से लोग हैं जो दुनियावी स्वार्थ (मार्ज) या गिरोही तअस्सुब या इङ्गितेलाफे राय की बजह से कुरआन करीम के साथ भी यही सुलूक करते हैं। पढ़ते कुरआन की आयत है और विषय खुद गढ़ते हैं, जनता समझती है कि मोलवी साहब ने मसले का हल कुरआन से निकाला है, हकीकत में इस हल का कुरआन से कोई वास्ता नहीं होता या आयत के अर्थों में बदलाव या बनावट से काम लिया जाता है ताकि साबित किया जा सके कि यह अल्लाह की तरफ से है।

^२ यह इसाईयों के वारे में कहा जा रहा है कि उन्होंने हजरत ईसा जे माबूद बना दिया है, अगरचे वह एक इंसान थे जिन्हें किताब, हिक्मत और नबूअत से नवाजा गया था, और ऐसा कोई इंसान यह दावा नहीं कर सकता कि अल्लाह को छोड़कर मेरे पुजारी और भक्त बन जाओ, बल्कि वह यह कहता है कि अल्लाह वाले बन जाओ।

८०. और वह तुम्हें यह हुक्म नहीं देगा कि फ़रिश्तों (स्वर्गदूतों) और नवियों (ईशूदूतों) को माबूद बना लो, क्या फ़रमावदार होने के बाद तुम्हें नाफ़रमान बन जाने का हुक्म देगा।

८१. और जब अल्लाह (तआला) ने नवियों से वायेदा लिया कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब और हिकमत दूँ, फिर तुम्हारे पास वह रसूल आये जो तुम्हारे पास की चीज़ को सच बताये तो तुम्हारे लिए उस पर ईमान लाना और उसकी मदद करना ज़रूरी है। फ़रमाया कि तुम क्या इस को क़बूल करते हो और उस पर मेरा जिम्मा ले रहे हो सब ने कहा हमें क़बूल है, फ़रमाया तो गवाह रहो और मैं खुद भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ।

८२. अब इस के बाद भी जो पलट जाये, वह ज़रूर नाफ़रमान है।¹

८३. क्या वह अल्लाह (तआला) के दीन के सिवाय किसी दूसरे दीन की खोज में है? जब कि सभी आसमानों वाले और ज़मीन वाले अल्लाह (तआला) के फ़रमावदार हैं, खुशी से हों तो और नाखुशी से हों तो,² सभी को उसकी तरफ़ लौटाया जायेगा।

وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُتَّخَذَ الْهَيْكَلَةٌ وَالذَّبَابُ حُرُومًا ۗ إِنَّ أَمْرَكُمْ بِالْكَفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ﴿٨٠﴾

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْنَاكُمْ مِنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُصَدِّقٌ لِمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ ۗ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَىٰ ذَٰلِكُمْ إِصْرِي ۗ قَالُوا أَقْرَرْنَا ۗ قَالَ فَاشْهَدُوا ۗ وَأَنَا مَعَكُمْ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨١﴾

فَمَنْ تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿٨٢﴾
أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَئِنِ اسْتَلِمُوا فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾

¹ यह अहले किताब (यहूदी और इसाई) और दूसरे धर्म वालों को तंबीह है कि मोहम्मद ﷺ के आ जाने के बाद भी उन पर ईमान लाने के बजाये अपने-अपने दीन का पालन करना इस बादा के खिलाफ है, जो अल्लाह तआला ने हर नबी के जरिये हर उम्मत (समुदायों) से लिया है और इस बादा को तोड़ देना अधर्म है, फिसक यहाँ कुफ़ के मतलब में है क्योंकि नबूअते मोहम्मदी (ﷺ) से इन्कार केवल फिसक नहीं कुफ़ है।

² जब ज़मीन व आसमान की कोई चीज़ अल्लाह तआला की क़दरत और ताक़त से बाहर नहीं है, चाहे खुशी से या नाखुशी से, तो तुम उस के सामने सिर झुकाने (या इस्लाम क़बूल करने से) कहाँ भाग रहे हो? अगली आयत में ईमान लाने का तरीका बताकर फिर कहा जा रहा है कि हर नबी को हर आसमान से उतरी किताब पर बिना किसी इख़्तिलाफ़ के ईमान लाना ज़रूरी है, फिर कहा जा रहा है कि इस्लाम दीन के सिवाय दूसरा दीन क़बूल नहीं होगा। किसी दूसरे दीन के पैरोंकारों की तक्रदीर में सिर्फ़ नुक़सान के और कुछ न होगा।

८४. आप कह दीजिए कि हम अल्लाह (तआला) पर और जो कुछ हम पर उतारा गया है और जो इब्राहीम (عليه السلام) और इस्माईल (عليه السلام) और याकूब (عليه السلام) और उनकी संतान (औलाद) पर उतारा गया, और जो कुछ मूसा (عليه السلام) और ईसा (عليه السلام) और दूसरे नबियों को अल्लाह (तआला) की तरफ से अता किये गये उन सब पर ईमान लाये । हम उन में से किसी के बीच फर्क नहीं करते और हम अल्लाह (तआला) के फरमबिन्दार हैं ।

८५. और जो (इंसान) इस्लाम के सिवाय किसी दूसरे दीन की खोज करे उसका दीन क़बूल नहीं होगा और वह आखिरत में घाटा उठाने वालों में होगा ।

८६. अल्लाह (तआला) किस तरह से उन लोगों को हिदायत देगा जो अपने ईमान लाने, रसूल की सच्चाई जानने की गवाही देने और अपने पास वाजेह निशानी आ जाने के बाद भी काफिर हो जायें । अल्लाह (तआला) ऐसे जालिमों को सीधी राह नहीं दिखाता ।

८७. उन की सज़ा यह है कि उन पर अल्लाह की लानत है और फ़रिश्तों की और सब लोगों की ।

كُلٌّ أُمَّتًا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَا آتَيْنَا عَلَىٰ
إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْفَاطِ
وَمَا آتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَارُونَ وَالنَّبِيِّينَ مِنْ رَبِّهِمْ
لَا نَفْقِرُ بِئِنَّ أَجْرِي مِنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ
مُسْلِمُونَ (84)

وَمَنْ يَلْتَبِعْ عَذِيبَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ
مِنْهُ ۗ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَيْرِينَ (85)

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِسْمَاعِيلَ
وَشِهْدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ
وَأَنَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ (86)

أُولَٰئِكَ جَزَاءُهُمْ أَن عَشِيَهُمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ (87)

1 मतलब सभी नबियों पर ईमान लाना कि वह अपने-अपने वक़्त में अल्लाह की तरफ से भेजे गये थे, और उन पर जो क़िताबें और सहीफे उतारे गये, उनके बारे में यह यकीन रखना कि वह आसमानी क़िताबें थी, जो हकीकत में अल्लाह की तरफ से उतारी हुई थी जरूरी है, लेकिन अब पैरवी सिर्फ़ क़ुरआन के हुबम के ऐतवार से होगी, क्योंकि क़ुरआन ने पिछली क़िताबों को मंसूख कर दिया है ।

८८. वह उस में हमेशा रहेंगे न उन से सजा हल्की की जायेगी और न छूट दिया जायेगा ।

८९. लेकिन जो लोग इस के बाद तौबा और सुधार कर लें तो बेशक अल्लाह बख्शने वाला मेहरवान है ।¹

९०. बेशक जो लोग अपने ईमान (विश्वास) के बाद कुफ्र (अविश्वास) करें फिर कुफ्र में बढ़ जायें² उनकी तौबा कभी भी कुबूल न की जायेगी³ और यही गुमराह है ।

९१. बेशक जो लोग काफिर हों और मरते वक़्त तक काफिर रहें, उन में से अगर कोई ज़मीन भर सोना दे, अगरचे (यद्यपि) फ़िदिया में हो तो भी कभी भी कुबूल न होगा, इन्हीं के लिए सख्त अजाब है और उनका कोई मददगार नहीं ।

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ
وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٨٨﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٨٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ أَزْدَادُوا كُفْرًا
لَنْ نَقْبَلَ تَوْبَتَهُمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَصَاةُونَ ﴿٩٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفْرًا قَلْبًا
مِنْ أَحَدِهِمْ قُلُوبُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوْ افْتَدَى
بِهِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا لَهُمْ مِنْ
نَاصِرِينَ ﴿٩١﴾

¹ अन्सार में से एक मुसलमान धर्मभ्रष्ट (मुर्तद) हो गया और मूर्तिपूजकों से जा भिला, लेकिन जल्द ही उसे पछतावा हुआ और उस ने लोगों के जरिये रसूल अल्लाह ﷺ तक खबर भिजवायी कि (فذل من توبه) (क्या मेरी तौबा कुबूल हो सकती है) उस पर यह आयत उतरी । इस से मालूम हुआ कि मुर्तद की सजा जबकि सख्त है, क्योंकि उस ने हक को पहचान लेने के बाद हसद, जलन और सरकशी से सच्चाई से मुंह फेरा और इंकार किया, लेकिन अगर कोई साफ दिल से माफी मांगे और अपना सुधार कर ले तो अल्लाह तआला माफ करने वाला और रहम करने वाला है, उसकी तौबा कुबूल है ।

² इस आयत में उनकी सजा का बयान हो रहा है, जो मुर्तद होने के बाद माफी न मांगे और इंकार की हालत में मर जाये ।

³ इस से वह माफी का मतलब है जो मौत के वक़्त मांगी जाये, बल्कि माफी का दरवाजा हर इंसान के लिए हर वक़्त खुला हुआ है ।

९२. जब तक तुम अपनी पसंदीदा माल से अल्लाह (तआला) की राह में न खर्च करोगे, कभी भी भलाई न पाओगे और जो कुछ तुम खर्च करो उसे अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है।

९३. तौरात उतरने से पहले ही (हजरत) याकूब (عليه السلام) ने जिस चीज को अपने ऊपर हाराम कर लिया था उस के सिवाय सभी खाने इस्राईल की औलाद के लिए हलाल थे। आप कह दीजिए कि अगर तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और पढ़ सुनाओ।

९४. उस के बाद भी जो लोग अल्लाह (तआला) पर झूठा बुहतान लगायें वही जालिम हैं।

९५. कह दीजिए कि अल्लाह (तआला) सच्चा है, तुम सभी इब्राहीम हनीफ की मिल्लत की पैरवी करो, जो मूर्तिपूजक न थे।

९६. बेश्क (अल्लाह तआला) का पहला घर जो लोगों के लिये बनाया गया, वही है जो मक्का (नगरी) में है जो पूरी दुनिया के लिये मुबारक और हिदायत है।

९७. जिस में वाजेह निशानियाँ हैं, «मुकामे इब्राहीम» (एक पत्थर है जिस पर खाना कअबा की तामीर के वक़्त हजरत इब्राहीम खड़े होते थे) इस में जो आ जाये बेख़ौफ हो जाता है। अल्लाह (तआला) ने उन लोगों पर जो उस की तरफ राह पा सकते हों, उस घर का हज्ज जरूरी कर दिया है! और जो कोई कुफ़र करे, तो अल्लाह

لَنْ نُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ عَلَيْنَا ۗ وَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ ﴿٩٢﴾

كُلُّ الظَّالِمِ كَانَ جَلًّا لِيَسْبِي إِسْرَائِيلَ إِلَّا مَا حَزَمَ إِسْرَائِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنزَلَ التَّوْرَةُ ۗ قُلْ فَأَتُوا بِالتَّوْرَةِ فَاتْلُوهَا إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٩٣﴾

فَمَنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٩٤﴾

قُلْ صَدَقَ اللَّهُ ۗ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٥﴾

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِّلْعَالَمِينَ ﴿٩٦﴾

فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مِّمَّا رُبِّهِمْ ۗ وَرَمَّنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا ۗ وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا ۗ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾

1. «रास्ता पा सकते हों» का मतलब यह है कि रास्ते के खर्च का इंतजाम हो, यानी इतना माल हो कि रास्ते का खर्च आसानी से पूरा हो जाये, इस के सिवाय इंतजाम से मुराद यह भी है कि रास्ते में अमन हो और जान व माल महफूज हो। इसी तरह यह भी जरूरी है कि सेहत सफर

(तआला) पूरी दुनिया से बेनियाज़ है।'

९८. आप कह दीजिए कि ऐ अहले किताब! तुम अल्लाह की आयतों का इंकार क्यों करते हो? और जो कुछ करते हो अल्लाह (तआला) उस पर गवाह है।

९९. उन अहले किताब से कह दीजिए कि तुम अल्लाह (तआला) की गह (धर्म) से जो ईमान लाये हैं उन्हें क्यों रोकते हो और उस में बुराई डूढ़ते हो, जबकि तुम खुद गवाह हो? और अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमलों से अजान नहीं।

१००. ऐ ईमानवालो! अगर तुम अहले किताब के किसी गिरोह की बातें मानोगे तो वह तुम्हारे ईमान लाने के बाद तुम्हें कुफ्र की तरफ फेर देंगे।

१०१. और (यानी यह बाजेह है) तुम किस तरह कुफ्र कर सकते हो? जबकि तुम पर अल्लाह (तआला) की आयतें पढ़ी जाती हैं और तुम में रसूल (ﷺ) मौजूद हैं, और जो अल्लाह (तआला) के दीन को मजबूती से पकड़ ले वेशक उसे सीधा रास्ता दिखा दिया गया है।

१०२. ऐ ईमानवालो! अल्लाह से उतना डरो जितना उस से डरना चाहिए और (देखो) मरते दम तक मुसलमान ही रहना।

قُلْ يَا هَلْ الْكِتَابَ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ۗ
وَأَنَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا تَعْمَلُونَ ۝۹۸

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ
اللَّهِ مَن آمَنَ تَبْغُونَهَا عِوَجًا وَأَنتُمْ شُهَدَاءُ
وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝۹۹

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَطِيعُوا آفْرِيضًا مِّنَ الَّذِينَ
أوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كُفْرِينَ ۝۱००

وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنتُمْ تُشَلُّ عَلَيْهِمْ آيَاتِ
اللَّهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهُ ۗ وَمَن يَعْتَصِم بِاللَّهِ
فَقَدْ هَدَىٰ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ۝۱०१

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ حَتَّىٰ تَقْبَلِيهِ
وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُمْ مُسْلِمُونَ ۝۱०२

के लायक हो, इस के अलावा औरत के लिए उसका महरम जरूरी है। (फतहूल कदीर) यह आयत हर उस इंसान के लिए है जो इस तरह की ताकत रखे, उस के लिए हज फर्ज होने की दलील (तर्क) है। और हदीसों से इस मसले की बजाहत होती है कि जिन्दगी में एक बार हज फर्ज है। (तफसीर इब्ने कसीर)।

हज की ताकत होने के बाद भी हज न करना कुरआन ने इसे कुफ्र से नावीर किया है, जिस से हज के फर्ज होने को और भी ताकत मिलती है, हदीसों में भी ऐसे इमान को सख्त तबीह की गयी है। (तफसीर इब्ने कसीर)।

१०३. और अल्लाह (तआला) की रस्ती को सब मिलकर मजबूती से थाम लो, और गुटबन्दी न करो, और अल्लाह (तआला) की उस वक़्त की नेमत को याद करो जब तुम लोग आपस में एक-दूसरे के दुश्मन थे, उस ने तुम्हारे दिल में प्रेम डाल दिया और तुम उस की नेमत से भाई-भाई हो गये, और तुम आग के गड्ढे के किनारे तक पहुँच चुके थे तो उस ने तुम्हें बचा लिया। अल्लाह (तआला) इसी तरह अपनी निश्चानियों को बयान करता है ताकि तुम हिदायत पा सको।

१०४. और तुम में से एक गिरोह ऐसा होना चाहिए, जो भलाई की ओर बुलाये और नेक कामों का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके और यही लोग सफल (कामयाब) होने वाले हैं।

१०५. और तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने अपने पास वाज़ेह दलील आ जाने के बावजूद भी फूट और भेद डाला, इन्हीं के लिए सख़्त अज़ाब है।

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللَّهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا ۗ
وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ
أَعْدَاءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ
بِرِيحَتِهِ إِخْوَانًا ۗ وَكُنْتُمْ عَلَىٰ شَفَا حُفْرَةٍ
مِّنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُم مِّنْهَا ۗ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٣﴾

وَلْتَكُنْ مِنْكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ
وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ
أُوٰلَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٤﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِنْ بَعْدِ مَا
جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ ۗ وَأُوٰلَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٥﴾

१ (और गुटबन्दी न करो) के जरिये गुटों में बँटने से रोक लगा दी गयी है, इसका मतलब यह है कि उन दो नियमों से जिनका बयान हो चुका है मुँह फेर लेने की वजह से आपस में फूट पड़ सकती है और तुम अलग-अलग गुटों में बँट जाओगे, इसलिए गुटबन्दी का इतिहास देख लीजिए यही वजह वाज़ेह होकर सामने आयेंगी। कुरआन और हदीस को समझने और उसकी तफ़सीर में कुछ इख़्तिलाफ़, यह गुटबन्दी की वजह नहीं है, यह इख़्तिलाफ़ तो सहाबा और ताबईन के वक़्त में भी था, लेकिन मुसलमान गुटों में नहीं बँटे थे, क्योंकि आपसी इख़्तिलाफ़ के बाद भी सभी की इताअत का केन्द्र (मरकज़) और यक़ीन का बिन्दु एक ही था और वह है कुरआन और रसूलुल्लाह ﷺ की हदीस, लेकिन जब शफ़िसयत के नाम पर झ्यालों का प्रदर्शन (इज़हार) होने लगा, तो इताअत और अक़ीदा के यह केन्द्र और बिन्दु बदल गये। अपने-अपने पेशवाओं और उन के क़ौल और झ्यालात पहले मुक़ाम पर और अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के क़ौल और हुक्म दूसरे मुक़ाम पर कर दिये गये और यही से उम्मत मुसलिमा में गुटबन्दी शुरू हुई, जो रोज़ वरोज़ बढ़ती ही गयी और बहुत मजबूत हो गयी।

१०६. जिस दिन कुछ मुंह सफेद होंगे और कुछ काले! काले मुंह वालों (से कहा जायेगा) कि तुम ने ईमान लाने के बाद कुफ्र क्यों किया? अपने इकार की सजा चखो।

१०७. और सफेद मुंह वाले अल्लाह (तआला) की रहमत में होंगे और उस में हमेशा रहेंगे।

१०८. (हे नबी!) हम इन सच्ची आयतों की तिलावत आप पर कर रहे हैं और अल्लाह (तआला) का इरादा लोगों पर जुल्म करने का नहीं है।

१०९. और अल्लाह (तआला) के लिए है जो कुछ आसमानों और जमीन में है और अल्लाह (तआला) की तरफ सभी कामों को लौटना है।

११०. तुम सब से अच्छी उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गयी है कि तुम नेक कामों का हुक्म देते हो और बुरे कामों से रोकते हो, और अल्लाह (तआला) पर ईमान रखते हो। अगर अहले किताब ईमान लाते तो उन के लिए बेहतर होता, उन में ईमानवाले भी हैं, लेकिन ज्यादातर लोग फासिक हैं।

१११. यह लोग तुम्हें सताने के सिवाय और ज्यादा कुछ नुकसान नहीं पहुँचा सकते और अगर तुम से लड़ाई हो तो पीठ फेर लेंगे, फिर वे मदद नहीं दिये जायेंगे।

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكْفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٠٦﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٠٧﴾

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ تَنْزَلُهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظَلَمًا لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٨﴾

وَاللَّهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُورُ ﴿١٠٩﴾

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللّٰهِ وَكُنتُمْ اَهْلَ الْكِتٰبِ لَئِنْ كَانَ خَيْرًا لَّهُمْ مِنْهُمْ لَأَرْسَلْنَا رُسُلًا بَلِّغُوهُمُ الْاٰيٰتِ الْفٰسِقِيْنَ ﴿١١٠﴾

لَنْ يَضُرَّوْكُمْ اِلَّا اَذًى ۗ وَاِنْ يُقَاتِلُوْكُمْ يُؤَلُّوْكُمْ الْاَدْبَارَ ۗ لَنْ يَضُرَّوْكُمْ

لَنْ يَضُرَّوْكُمْ اِلَّا اَذًى ۗ وَاِنْ يُقَاتِلُوْكُمْ يُؤَلُّوْكُمْ الْاَدْبَارَ ۗ لَنْ يَضُرَّوْكُمْ

हजरत इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) ने इस से अहले सुन्नत वल जमाअत और अहले बिदअत मुराद लिया है। (इब्ने कसीर और फतहुल कदीर) इस से मालूम हुआ कि इस्लाम वही है जिस पर अहले सुन्नत वल जमाअत काम कर रहे हैं, और अहले विदअत और मुखालिफीन लोग इस्लाम के उस बरदान (नेमत) से महरूम हैं, जो नजात (मोक्ष) का सबब है।

११२. यह हर जगह पर जलील है, यह और बात है कि अल्लाह (तआला) की या लोगों की पनाह में हों, यह अल्लाह के गजब के हकदार हो गये, और उन पर गरीबी धोप दी गयी। यह इसलिए कि यह लोग अल्लाह (तआला) की आयतों को नहीं मानते थे और बिला वजह नबियों को कत्ल करते थे, यह बदला इनकी नाफरमानियों और हुदूद तोड़ने (सीमा लांघने) का है।

११३. यह सारे के सारे एक जैसे नहीं, बल्कि इन अहले किताब में एक गिरोह (सच्चाई पर) कायम भी है जो रात में अल्लाह की आयत पढ़ते और सज्दा करते हैं।

११४. यह अल्लाह और कयामत (प्रलय) पर विश्वास (ईमान) रखते हैं, भलाईयों का आदेश करते और बुराईयों से रोकते हैं, और भलाई के कामों में जल्दी करते हैं, यह नेक लोगों में से हैं।

११५. और यह जो कुछ भी भलाई करे उसका अन्यादर (नाकदरी) न किया जायेगा और अल्लाह (तआला) परहेजगारों को अच्छी तरह जानता है।

११६. बेशक काफिरों को उन के माल और उन की औलाद अल्लाह के यहाँ कुः काम न आयेंगी, यह तो जहन्नमी (नरकीय) है जिस में वे हमेशा रहेंगे।

طُوبَتْ عَلَيْهِمُ الذَّارَةُ إِنَّ مَا تُقْفَلُونَ إِلَّا بِحَبْلِ
مِنَ اللَّهِ وَحَبْلِ مِنَ النَّاسِ وَبَاءُ وَبَخْسِ
مِنَ اللَّهِ وَطُوبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ذَلِكَ
بِأَنَّهُمْ كَانُوا يُكْفَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ
الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقِّ ذَلِكَ بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا
يَعْتَدُونَ ﴿١١٢﴾

لَيْسُوا سَوَاءً مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَائِمَةٌ
يَتْلُونَ آيَاتِ اللَّهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ ﴿١١٣﴾

يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَأْمُرُونَ
بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُونَ
فِي الْخَيْرَاتِ وَأُولَئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿١١٤﴾

وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُكْفَرُوا بِهِ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ ﴿١١٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ
وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١١٦﴾

११७. वह जो भी इस दुनियावी जिंदगी में खर्च करते हैं उस हवा के समान है जिसमें पाला हो जो किसी जालिम क्रौम के खेत को लग कर उसका नाश कर दे, अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया लेकिन वह खुद अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे ।

११८. ऐ ईमानवालो ! तुम अपना हार्दिक मित्र (जिगरी दोस्त) ईमानवालों के सिवाय किसी दूसरे को न बनाओ, (तुम नहीं देखते दूसरे लोग तो) तुम्हारी तबाही में कोई कसर उठा नहीं रखते, वह तो चाहते यह है कि तुम दुख में पड़ो, उनकी दुश्मनी तो खुद उनके मुंह से भी बाज़ेह हो चुकी है और वह जो उन के सीनों में छिपा है वह बहुत ज्यादा है, हम ने तुम्हारे लिए आयतों को बयान कर दिया तुम अक्लमंद हो (तो फिक्र करो)

११९. हाँ, तुम तो उन से मुहब्बत करते हो और वह तुम से मुहब्बत नहीं करते, तुम पूरी किताब को मानते हो और (वह नहीं मानते फिर मुहब्बत कैसी?) यह तुम्हारे सामने तो अपने ईमान को कुबूल करते हैं, लेकिन अकेले में गुस्से में ऊंगलियाँ चवाते हैं^१ कह दो अपने गुस्से में ही मर जाओगे, अल्लाह तआला सीनों की छुपी बातों को अच्छी तरह जानता है ।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُونَ فِي هَذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ
ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكْتَهُمْ وَمَا ظَلَمَهُمُ
اللَّهُ وَلَكِنْ أَنْفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بِطَانَةَ مَن
دُونِكُمْ لَا يَأْتُونَكُمْ خَبْرًا دُونَ مَا عَرَفْتُمْ
قَدْ بَدَتِ الْبَغْيَاءُ مِنْ أَلْوَاهِمُمْ وَمَا تُحْفِقُ
صُدُورُهُمْ أَكْثَرُ مِمَّا قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِنْ
كُنْتُمْ تَعْقِلُونَ ﴿١١٨﴾

هَآئِنَّمْ أَوْلَادُ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ
بِالْكِتَابِ عَلَيْهِ وَإِذَا الْقَوْلُ أَمَّا لَكُمْ وَإِذَا حَلُّوا
عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْعَيْظِ ط قُلْ مُؤْمِنُوا
بِعَيْظِكُمْ ط إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿١١٩﴾

^१ कयामत के दिन काफिरों के माल काम आयेंगे न औलाद, यहाँ तक कि भलाई के कामों में खर्च किया हुआ माल भी बेकार हो जायेगा, और उनका मुवाजना उस पाले की जैसी है जो हरी-भरी खेती को जलाकर बर्बाद कर देता है, जालिम इन खेतियों को देखकर खुश हो रहे होते हैं और फायेदा की उम्मीद करते हैं कि अचानक उनकी उम्मीदें मिट्टी में मिल जाती हैं । इस से मालूम हुआ कि जब तक ईमान नहीं होगा तब तक भलाई में माल खर्च करने वालों की दुनिया में चाहे जितनी मशहूर क्यों न हो, आखिरत में उन्हें उसका बदला कुछ न मिलेगा, वहाँ तो उन के लिए रोजाना जहन्नम में रहने का अजाब ही है ।

^२ عَضُّ بَعْضٍ का मतलब दाँत से काटने के हैं, यह उनके गुस्से की ज़्यादती व तेज़ी का बयान है, जैसाकि अगली आयत (وَإِنْ نَسِيتُمْ) में भी उनकी इसी हालत को बाज़ेह किया जा रहा है ।

१२०. तुम्हें अगर भलाई मिले तो उन्हें बुरा लगता है, (ही), अगर बुराई पहुँचे तो खुश होते हैं, अगर तुम सब करो और परहेजगारी करो तो उनकी चाल तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचायेगी। अल्लाह (तआला) ने उन के अमलों को घेर रखा है।

إِنْ تَسْتَكْبِرُوا فَسَتَكْبِرُونَ كَيْدُكُمْ لَا يُلَاقِيكُمْ إِلَّا مِنْ جَنْبٍ وَأَنْ تَصِيبُوا مَقَالِيدَ السُّبُحَاتِ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٠﴾

१२१. (ऐ नबी! उस वक़्त को भी याद करो) जब सुबह ही सुबह आप अपने घर से निकल कर मुसलमानों को मैदाने जंग में लड़ाई के मोर्चे पर ठीक तरह से^१ बिठा रहे थे, और अल्लाह तआला सुनने जानने वाला है।

وَإِذْ عَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ نَبِيًّا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٢١﴾

१२२. जब तुम्हारे दो गिरोह ने हिम्मत खो दिया,^२ उनका वली अल्लाह है,^३ और उसी अल्लाह पर मुसलमानों को भरोसा करना चाहिए।

إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا ۗ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٢٢﴾

१२३. और अल्लाह ने वदर की जंग में तुम्हारी उस वक़्त मदद की जबकि तुम गिरी हुई हालत में थे,^४ इसलिए अल्लाह से डरो ताकि शुक्रगुजार बनो।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ ۗ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢٣﴾

१२४. जब आप मुसलमानों को तसल्ली दे रहे थे, क्या तुम्हें यह काफी नहीं होगा कि अल्लाह तीन हजार फ़रिश्ते उतार कर तुम्हारी मदद करे।

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُبَدِّلَ اللَّهُ رِجْلَكُمْ بِثَلَاثَةِ آيٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُنزَلِينَ ﴿١٢٤﴾

^१ ज्यादातर व्याख्याकारों (मुफ़ससिरो) के नजदीक यह ओहद के जंग की घटना (बाकेआ) है, जो शब्वाल (रमजान के बाद का महीना जिसे ईद का महीना भी कहते हैं लेकिन वास्तविक (हकीकी) अरबी नाम यह है) ३ हिजरी में हुई।

^२ यह औस और खजरज के दो कबीले (बनू हारिसा और बनू सलमा) थे।

^३ इस से मालूम हुआ के अल्लाह ने उन की मदद की और उन की कमजोरी को दूर करके उन को हिम्मत दिया।

^४ तादाद और सामान की कमी के आधार पर, क्योंकि वदर की जंग में मुसलमानों की तादाद ३१३ थी और वह भी बिना सामान के, सिर्फ दो घोड़े और सत्तर ऊँट थे, बाकी सभी पैदल थे। (इब्ने कसीर)

१२५. क्यों नहीं? अगर तुम सब्र और परहेजगारी करो और यह लोग इसी दम तुम्हारे पास आ जायें तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद पाँच हजार फरिश्तों से करेगा जो निशानदार होंगे।

१२६. और हम ने इसे तुम्हारे लिये सिर्फ खुशखबरी और तुम्हारे दिलों के इत्मिनान के लिए बनाया, वरना मदद तो गालिब, हिक्मत वाले अल्लाह की तरफ से ही होती है।

१२७. (इस अल्लाह की मदद का मकसद यह था कि अल्लाह) काफिरों के एक गिरोह को काट दे या ज़लील कर दे और वह नाकाम होकर लौटें।

१२८. (हे पैगम्बर) आप के वश में कुछ नहीं! अल्लाह (तआला) चाहे तो उनकी तौबा कुबूल कर ले या अज़ाब दे, क्योंकि वे ज़ालिम हैं।

१२९. आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब अल्लाह ही का है, वह जिसे चाहे माफ करे और जिसे चाहे अज़ाब दे और अल्लाह (तआला) बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।

بَلَىٰ إِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّن فَوْرِهِمْ هَذَا تُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ ﴿١٢٥﴾

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُم بِهِ ۗ وَمَا النُّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٢٦﴾

لِيَقْطَعَ طَرَقًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوا خَائِبِينَ ﴿١٢٧﴾

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ ﴿١٢٨﴾

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۗ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢٩﴾

। यानी उन काफिरों को हिदायत देना या उनके वारे में किसी तरह का फ़ैसला करना अल्लाह के वश में है, हदीस में आता है कि ओहद की जंग में नबी ﷺ के दांत भी शहीद हुए और चेहरा भी ज़ख्मी हुआ तो आप ने कहा कि, "वह कौम किस तरह कामयाब होगी जिस ने अपने नबी को घायल कर दिया।" यानी आप ने उनकी हिदायत से नाउम्मीदी जाहिर की, इस पर यह आयत उतरी। इस तरह कुछ कथनों में आता है कि आप ﷺ ने कुछ काफिरों के लिए कुनूते नाज़िल: का एहतेमाम किया, जिस में उन के लिये बढुआ दिया, जिस पर यह आयत अल्लाह तआला ने उतारी, इसलिए आप ने बढुआ बन्द कर दिया। (इब्ने कसीर व फतहूल कदीर)

इस आयत से उन लोगों को नसीहत लेनी चाहिए जो नबी ﷺ को मुज़्तार कुल मानते हैं कि उन को इतना भी हक नहीं था कि किसी को सच्ची राह पर लगा दें, अगरचे कि आप मार्ग (हिदायत) की तरफ बुलाने के लिये भेजे गये थे।

१३०. ऐ ईमानवालो! दुगुना तिगुना कर ब्याज न खाओ,¹ और अल्लाह (तआला) से डरो ताकि तुम्हें कामयाबी मिले।

१३१. और उस आग से डरो जो काफिरों के लिए तैयार की गयी है।

१३२. और अल्लाह और उसके रसूल के हुक्मों की पैरवी करो, ताकि तुम पर मेहरबानी की जाये।

१३३. और अपने रब की माफ़ी की तरफ और उस जन्नत की ओर दौड़ो² जिसकी चौड़ाई आसमानों और ज़मीन के बराबर है, जो परहेजगारों के लिए तैयार की गयी है।

१३४. जो लोग आसानी में और तकलीफ में (भी अल्लाह की राह में) खर्च करते हैं, गुस्से को पी जाते हैं, और लोगों को माफ़ करने वाले हैं।³ अल्लाह उन परहेजगारों को दोस्त रखता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا
مُضَاعَفَةً ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٣٠﴾

وَ اتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ ۗ ﴿١٣١﴾

وَ اطِيعُوا اللَّهَ وَ الرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٣٢﴾

وَ سَارِعُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَ جَنَّاتٍ عَرْضُهَا
السَّمَاوَاتُ وَ الْأَرْضُ ۖ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٣﴾

الَّذِينَ يُنْفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَ الضَّرَّاءِ وَ الْكَلِيمِينَ
الْعَظِيمِ وَ الْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ ۗ وَ اللَّهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿١٣٤﴾

¹ चूंकि ओहद की जंग में नाकामी रसूल अल्लाह ﷺ के हुक्म पर अमल न करने और दुनियावी दौलत से लालच की वजह से हुई थी, इसलिए अब दुनिया के लालच की सब से ज्यादा खतरनाक और स्थाई (भुस्तकिल) रूप ब्याज से मना किया जा रहा है और हुक्म को बजा लाने पर जोर दिया जा रहा है, और बड़ा-चढ़ा कर ब्याज न खाओ का यह कभी भी मतलब नहीं है कि अगर आम ब्याज है तो जायेज है, बल्कि ब्याज थोड़ा हो ज़्यादा, अकेला हो या मिला हुआ सभी नाजायेज है जैसा कि पहले गुजर चुका है। अल्लाह तआला ने फरमाया कि अल्लाह से डरो और उस आग से डरो जो काफिरों के लिए तैयार की गयी है, जिस से यह तबीह भी है कि अगर ब्याज लेने से न रुके तो यह अमल तुम्हें कुफ़्र तक पहुंचा सकता है, क्योंकि ऐसा करना अल्लाह और उस के रसूल से जंग का एलान है।

² धन-दौलत और दुनिया के पीछे लगकर आखिरत (परलोक) बर्बाद करने के बजाय अल्लाह और रसूल के हुक्मों की पैरवी करो और अल्लाह की माफ़ी और उसकी जन्नत की राह अपनाओ जो फ़रमावदार्दों के लिए बनायी गयी है, इसलिए आगे फ़रमावदार्दों की कुछ फज़ीलतें बतायी गयी हैं।

³ यानी जब उन्हें गुस्सा आता है तो उसे पी जाते हैं, यानी गुस्से में काम नहीं करते और उन्हें माफ़ कर देते हैं जो उन के साथ बुराई करते हैं।

१३५. जब उन से कोई बुरा काम हो जाये या कोई गुनाह कर बैठें, तो जल्दी ही अल्लाह की याद और अपने गुनाहों के लिए तौबा करते हैं। और हकीकत में अल्लाह (तआला) के सिवाय गुनाहों को कौन माफ़ कर सकता है, और वे जानते हुये अपने किये पर इसरार नहीं करते।

१३६. उन्हीं का बदला उन के पालनहार की ओर से माफ़ी और वाश है जिन के नीचे नहरें बह रही हैं जिस में वह हमेशा रहेंगे और सदाचारियों (नेक काम करने वालों) का यह कितना अच्छा अज्र है।

१३७. तुम से पहले से नियम चला आ रहा है, तुम धरती में यात्रा (सफ़र) करो तथा देखो कि जो अल्लाह की आयतों को नहीं माने उनका अन्त (अंजाम) कैसा हुआ।

१३८. यह लोगों के लिये एक बयान और परहेजगारों के लिये हिदायत और नसीहत है।

१३९. तुम हिम्मत न खोओ, न फिक्र करो, अगर तुम ईमानदार हो तो तुम्हीं विजयी होगे।

१४०. (इस जंग में) अगर तुम ज़हमी हुये हो तो वह भी (बदर की जंग में) इसी तरह ज़हमी हुये हैं और इन दिनों को हम लोगों के बीच बदलते-बदलते रहते हैं। ताकि अल्लाह ईमान वालों को (अलग करके) देख ले, और तुम में से

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا قَابِئَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَنْ
يَغْفِرُ اللَّهُ ذُنُوبَهُ إِلَّا اللَّهُ تَدْرُكُهُمْ يَوْمَ يَدْعُ
مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٣٥﴾

أُولَئِكَ جَزَاءُكُمْ مَغْفُورَةٌ مِنْ رَبِّهِمْ وَجَنَّتْ
تَجْوِيٌّ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَلِيلِينَ فِيهَا
وَيَعْمَرُ أَمْجَارَ الْعَالَمِينَ ﴿١٣٦﴾

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ
فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكْذِبِينَ ﴿١٣٧﴾

هَذَا بَيَانٌ لِنَبَأِ هُدَىٰ وَمَوْجِبَةٍ
لِّلْمُتَّقِينَ ﴿١٣٨﴾

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ
إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٣٩﴾

إِنْ يَسْسَلْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ
مِثْلُهُ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدُوبُهَا بَيْنَ النَّاسِ
وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَجْزِيَ مَنْكُمْ
شَهَادَاتٍ وَأَنَّ لَهُ لَا يَجِبُ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٠﴾

१ यानी उन के इंसान होने की वजह से जब उन से कोई गुनाह या गलती हो जाती है, तो फौरन तौबा करने लगते हैं।

२ एक और तरह से मुसलमानों को तसल्ली दी जा रही है कि अगर ओहद में तुम्हारे कुछ लोग घायल हुये हैं तो क्या हुआ? तुम्हारे मुखालिफ भी तो बदर की जंग में और ओहद के शुरू में इसी तरह घायल हो चुके हैं और यह अल्लाह की रीति है कि वह जीत हार के दिनों को बदलता रहता है, कभी जीतने वाले को हरा कर कभी हारने वाले को जिता कर देता है।

कुछ को शहीद बना दे, और अल्लाह जालिमों से मुहब्बत नहीं करता।

१४१. और ताकि अल्लाह मोमिनों को अलग कर ले और काफिरों का सत्यानाश कर दे।

१४२. क्या तुम ने सोचा है कि जन्नत (स्वर्ग) में दाखिल हो जाओगे हालांकि अभी अल्लाह ने यह नहीं देखा है कि कौन तुम में जिहाद (धर्मयुद्ध) करते हैं और कौन सब करते हैं।

१४३. और तुम इस से पहले मौत की तमन्ना करते थे अब तो तुम ने उसे आंखों से देख लिया।

१४४. और मुहम्मद तो सिर्फ एक रसूल है। इस से पहले बहुत से रसूल गुजरे हैं तो अगर वह मर जायें या मार दिये जायें तो क्या तुम (इस्लाम) से एडियों के बल फिर जाओगे और जो कोई अपनी एड़ी के बल फिर जाये वह अल्लाह को कोई नुकसान (हानि नहीं पहुंचा सकेगा, और अल्लाह शुकुगुजारों को जल्द बदला देगा।

१४५. और बिना अल्लाह तआला के हुक्म के कोई जीव नहीं मर सकता, मुकर्ररा बक्त लिखा हुआ है, दुनिया से मुहब्बत करने वालों को हम कुछ दुनिया अता कर देते हैं और आखिरत का सबाब चाहने वालों को हम वह भी अता करेंगे और शुक्रिया अदा करने वालों को हम जल्द ही अच्छा बदला देंगे।

وَلِيصِّحَّصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكَافِرِينَ ۚ (141)

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُدْخَلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الضَّالِّينَ (142)

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَسْتَوُونَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقُولُوا مَا قَدَرْنَا مَوْتَ وَآئِنَّا رَبُّنَا لَأَعْلَمُ ۚ (143)

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ ۖ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۗ أَفَأَنْتُمْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ ۗ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَى عَقْبَيْهِ فَكُنْ بِرَبِّكَ اللَّهُ شَرِيحًا ۗ وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ۚ (144)

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كَيْتَابًا مُوَجَّلًا ۗ وَمَنْ يُؤَدِّ تَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا ۗ وَمَنْ يُؤَدِّ تَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا ۗ وَسَيَجْزِي الشَّاكِرِينَ ۚ (145)

1 मुहम्मद ﷺ सिर्फ रसूल (ईशूत) ही है, यानी उनकी विशेषता (खुसूसियत) भी रिसालत है यह नहीं कि वह इसानी खुसूसियत से ऊपर और खुदाई सिफात से युक्त (मुत्तसिफ) है कि उन्हें मौत से पाला न पड़े।

१४६. और बहुत से नवियों के साथ बहुत से अल्लाह वाले जिहाद (धर्मयुद्ध) कर चुके हैं, उन्हें भी अल्लाह की राह में दुख पहुंचे, लेकिन न तो उन्होंने हिम्मत खोई न कमजोर रहे और न दबे और अल्लाह सब करने वालों को ही चाहता है।

१४७. और वह यही कहते रहे कि हे हमारे रब हमारे गुनाहों को माफ कर दे और हम से हमारे कामों में अकारण ज्यादाती हुई हो, उसे माफ कर और हमें मजबूती अता कर और हमें काफिरों की क्रौम पर मदद अता कर।

१४८. और अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया का सबाब दिया और आखिरत के पुण्य (सबाब) की विशेषता (फज्जिलत) भी प्रदान (अता) की और अल्लाह तआला नेकी करने वालों को दोस्त रखता है।

१४९. हे ईमानवालो! अगर तुम काफिरों की बातें मानोगे तो वह तुम्हें तुम्हारी एड़ी के बल पलटा देंगे (यानी तुम्हें मुर्तद् बना देंगे) फिर तुम घाटे में हो जाओगे।

१५०. बल्कि अल्लाह (तआला) तुम्हारा मालिक है और वही सब से अच्छा मददगार है।

१५१. हम जल्द ही काफिरों के दिलों में डर डाल देंगे, इस बजह से कि वे अल्लाह के साथ उन चीजों को साम्नी करते हैं, जिस की कोई दलील अल्लाह ने नहीं उतारी, उनका ठिकाना

وَكَايِنَ مِنْ يَبِيْنٍ قَتَلَ مَعَهُ رِبِّيُّونَ كَثِيْرًا ۗ
فَمَا وَهَنُوا لِمَا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا
ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الضَّٰعِيْنَ ۝۱۴۶

وَمَا كَانَ قَوْلُهُمْ اِلَّا اَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا
ذُنُوْبَنَا وَاَسْرَافَنَا فِيْ اَمْرِنَا وَوَقِيْتِ اَقْدَامَنَا
وَاَنْصُرْنَا عَلٰى الْقَوْمِ الْكَافِرِيْنَ ۝۱۴۷

فَاَتَاهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحَسْنَ ثَوَابِ
الْآخِرَةِ ۗ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝۱۴۸

يَاۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنْ تُطِيعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يَرُدُّوْكُمْ عَلٰى اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝۱۴۹

بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۗ وَهُوَ خَيْرُ النَّصِيْرِيْنَ ۝۱۵۰

سَنَلْقٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا الرَّعْبَ يَمًا
اَسْرَدُوْا بِاَنفُسِهِمْ مَا لَمْ يَكُنْ بِهٖ سُلْطٰنٌ ۗ
وَمَا وٰهَهُمُ النَّارُ وَاَوْيَسُ مَثْوٰى الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۵۱

१ मुसलमानों की हार देखते हुए कुछ काफिरों के दिलों में यह ख्याल आया कि यह मुसलमानों को खत्म करने का अच्छा मौका है, इस मौका पर अल्लाह तआला ने उन के दिलों में मुसलमानों का डर डाल दिया, फिर उन्हें अपने इस ख्याल को पूरा करने की हिम्मत न रही। (फतहुल कदीर) सहीहैन की हदीस में है कि नबी ﷺ ने फरमाया कि मुझे पांच चीजें ऐसी अता

जहन्नम (नरक) है और उन जालिमों की बुरी जगह है।

१५२. और अल्लाह (तआला) ने अपना वादा सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उस के हुक्म से उन्हें काट रहे थे, यहाँ तक कि जब तुम अपना हौसला खो रहे थे और काम में भगड़ने लगे, और नाफरमानी की उस के वाद कि उस ने तुम्हारी मनपसंद चीजें तुम्हें दिखा दी, तुम में से कुछ दुनिया चाहते थे और कुछ का आखिरत का विचार (इयाल) था तो फिर उस ने तुम्हें उन से फेर दिया ताकि तुम्हारा इम्तेहान ले और बेशक उस ने तुम्हारी गलती को माफ़ कर दिया और ईमानवालों पर अल्लाह (तआला) बहुत फ़ज़ल वाला है!

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللَّهُ وَعْدًا إِذْ تَضَوُّوهُمْ بِأَذْيَابِهِمْ
حَتَّى إِذَا أَفْشَلْتُمْ وَتَوَارَعْتُمْ فِي الْأُمُورِ وَعَصَيْتُمْ
قَوْلَ بَعْدِ مَا أَرْسَلْنَا مَا تُحِبُّونَ مِنْكُمْ مَنْ
يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمَنْ يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ ثُمَّ
صَرَّفَكُمُ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۗ وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ
وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥٢﴾

(प्रदान) की गयी हैं, जो मुझ से पहले किसी नबी को नहीं अता की गयी उन में एक यह है कि (نُصِرْتُ بِالرُّغْبِ سَبْعَةَ شَهْرٍ) "दुरमन के दिल में एक माह की दूरी तक मेरा डर डालकर, मेरी मदद की गयी है।"

इस हदीस से मालूम हुआ कि आप ﷺ का डर स्याई (मुस्तक्रिल) रूप से दुरमनों के दिलों में डाल दिया गया, इस आयत से मालूम होता है कि आप ﷺ के साथ आप की उम्मत यानी मुसलमानों का भी डर मूर्तिपूजकों के दिलों में डाल दिया गया है, इसकी वजह उन का शिर्क है, यानी मूर्तिपूजकों का दिल दूसरों के डर से कोपता रहता है, शायद यही वजह है कि मुसलमानों की एक बड़ी तादाद मूर्तिपूजकों की तरह यक्रीन और अमल की वजह से ही दुरमन उन से डरने के वजाय वह दुरमनों से डरते हैं।

1 इस में सहाबा किराम रिजवानुल्लाह अलैहिम अजमईन की उस खुसूसियत का बयान है जो उनकी कमियों के बाद भी अल्लाह ने उन पर फ़रमाया, यानी उनकी गलतियों का स्पष्टीकरण (बजाहत) करके कि भविष्य (मुस्तक्रिल) में ऐसा न करें, अल्लाह ने उन के लिए माफ़ी का एलान कर दिया ताकि कोई हासिद उन पर इल्जाम न लगा सके, जब अल्लाह तआला ने ही क़ुरआन करीम में उन के लिए सामान्य (आम) माफ़ी का एलान कर दिया, तो अब किसी को ताना या इल्जाम लगाने का कोई मौका कहाँ रह गया ?

१५३. जबकि तुम चढ़े चले जा रहे थे, किसी की ओर ध्यान तक नहीं करते थे और अल्लाह के रसूल तुम को पीछे से पुकार रहे थे, बस तुम्हें दुख पर दुख पहुँचा ताकि तुम अपनी खोयी (विजय) पर गम न करो और न उस (सदमा) पर जो तुम्हें पहुँचा^१ और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सारे कर्मों (आमाल) को जानता है।

१५४. फिर उस दुख के बाद तुम पर शान्ति उतारी और तुम में से एक गिरोह को शान्ति की नींद आने लगी, और हाँ, कुछ वह लोग भी थे जिन्हें अपनी जानों की पड़ी थी^२ वह अल्लाह तआला के लिए नाहक मूर्खता जैसा गलत ख्याल करने लगे और कहते थे कि हमें भी कुछ हक है, आप कह दीजिए काम तो कुल का कुल अल्लाह के वश में है, यह लोग अपने दिलों के भेद आप को नहीं बताते, कहते हैं कि अगर हमें कुछ भी अधिकार (हक) होता तो यहाँ कत्ल न किये जाते। आप कह दीजिए कि अगर तुम अपने घरों में होते तो भी जिन के नसीब में कत्ल होना था वह कत्ल के मुक़ाम की तरफ़ चल खड़े होते। अल्लाह (तआला) को तुम्हारे सीनों के अन्दर का इम्तेहान लेना था और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उस से पाक करना था, और अल्लाह (तआला) ग़ैब का जानने वाला है (दिलों के भेद अच्छी तरह जानता है)।

إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوَنَ عَلَى أَحَدٍ مِنَ الرِّسُولِ
يَدْعُوكُمْ فِي أَخْرَابِكُمْ فَأَتَاكُمْ عَثَا بِغَيْرِ
لِكَيْلًا تَحْزَنُوا عَلَى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا آصَابَكُمْ
وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٥٣﴾

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نَاعَسًا
يَغْشَى طَآئِفَةً مِنْكُمْ وَطَآئِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ
أَفْسُهُمْ يَظُنُّونَ بِأَنَّهُ غَيْرُ آخِذٍ بِظَنِّ الْجَاهِلِيَّةِ
يَقُولُونَ هَلْ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ وَقُلْ
إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ يُخْفُونَ فِي أَنْفُسِهِمْ
مَا لَا يُبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ
الْأَمْرِ شَيْءٌ مَا قَاتَلْنَا هَهُنَا وَقُلْ لَوْ كُنْتُمْ
فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ
إِلَى مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ
وَلِيُمَيِّضَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِدَاخِلِ الصُّدُورِ ﴿١٥٤﴾

^१ यानी यह दुख पर दुख इसलिए दिया ताकि तुम्हारे अन्दर दुःख सहन करने की ताकत और मजबूत इरादा और हिम्मत पैदा हो, जब यह ताकत और हिम्मत पैदा हो जाती है तो फिर इंसान को खोई चीज पर दुख नहीं होता, तकलीफ़ पर किसी तरह की आधीरता (मलाल) नहीं होती है।

^२ इस से मुराद मुनाफ़िक हैं, वाजेह (स्पष्ट) है कि ऐसी हालत में उन को तो अपनी जानों की ही पड़ी थी।

१५५. तुम में से जिन लोगों ने उस दिन पीठ दिखाई जिस दिन दोनों गिरोहों में मुठभेड़ हुई थी, यह लोग अपने कुछ कर्मों (आमाल) की वजह से शैतान के वहकावे में आ गये, लेकिन यकीन करो कि अल्लाह ने उन्हें माफ कर दिया, अल्लाह तआला माफ करने वाला धैर्य (हिल्म) वाला है।

१५६. हे मुसलमानों! तुम उनकी तरह न बनो जो नाशुके हो गये और उन के भाईयों ने जब जमीन में सफ़र किया या जिहाद के लिये निकले तो कहा कि अगर वह हमारे पास रहते तो उन्हें मौत न आती न उनका कत्ल होता, (उन के इस ख्याल की वजह यह है कि) अल्लाह इसे उन के दिलों के हसरत की वजह बना दे, जिन्दगी और मौत अल्लाह ही देता है और अल्लाह तुम्हारे अमलों को देख रहा है।

१५७. अगर तुम अल्लाह की राह में शहीद हो जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की माफ़ी और रहमत उस (माल) से अच्छी है जो वे जमा कर रहे हैं।¹

१५८. और तुम मरो या मारे जाओ तुम्हें अल्लाह के पास ही जमा होना है।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ ۗ
إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا ۗ
وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ ۝١٥٥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا
وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا
غُرَىٰ لَوْ كَانُوا عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا ۗ
لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ
يُخَيِّبُ وَيُيَسِّتُ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝١٥٦

وَلَكِن قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُمْتَلِفِينَ ۗ
مِنَ اللَّهِ وَرَحْمَةً خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ۝١٥٧

وَلَكِن مُمْتَلِفِينَ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ ۝١٥٨

¹ ईमानवालों को काफ़िरो और मुनाफ़िकों के जैसे ईमान से रोका जा रहा है, क्योंकि यह ईमान युज्दिली का आधार है। इस के खिलाफ़ जब यकीन हो कि मौत व हयात अल्लाह तआला के हाथ में है, फिर यह कि मौत का वक्त मुकर्रर है तो इस से इंसान के अन्दर इरादा, हिम्मत और अल्लाह की राह में लड़ने की भावना (ख्वाहिश) पैदा होती है।

² मौत तो यकीनी आनी है, लेकिन अगर मौत ऐसी आये जिस के बाद इंसान अल्लाह की माफ़ी और कृपा का पात्र (मुस्तहिक्क) हो जाये, तो यह दुनिया की धन-दौलत से बेहतर है, जिस को जमा करने में इंसान जिन्दगी खपा देता है, इसलिए अल्लाह की राह में जिहाद करने से पीछे नहीं हटना चाहिए इससे लगाव और मुहब्बत होनी चाहिए क्योंकि इस से अल्लाह की माफ़ी और रहमत हासिल हो जाती है, लेकिन इस के साथ शर्त है कि मन की पाकीज़गी के साथ हो।

१५९. अल्लाह की रहमत की वजह से आप उन के लिये कोमल बन गये हैं और अगर आप वदजुबान और सख्त दिल होते तो यह सब आप के पास से भाग खड़े होते, इसलिए आप उन्हें माफ़ करें,^१ और उन के लिए क्षमा-याचना करें और काम का मशवरा उन से किया करें,^२ फिर जब आप का पुख्ता इरादा हो जाये तो अल्लाह (तआला) पर भरोसा करें^३ और अल्लाह (तआला) भरोसा करने वालों को दोस्त रखता है।

१६०. अगर अल्लाह तआला तुम्हारी मदद करे तो तुम पर कोई गालिब नहीं हो सकता, और अगर वह तुम्हें छोड़ दे तो कौन है जो तुम्हारी मदद करे? और ईमानवालों को अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए।

१६१. और यह नामुमकिन है कि नबी के जरिये ख्यानत हो जाये, हर ख्यानत करने वाला क्रयामत के दिन ख्यानत को लेकर हाजिर होगा, फिर हर इंसान को अपने अमल का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर जुल्म न किया जायेगा।

فِيمَا رَحِمَهُ مِنَ اللَّهِ لِنْتَ لَهُمْ ۗ وَكَوْنْتَ
فَقَطًّا غَلِيظًا عَلَى الْقَلْبِ لِأَنْفُسِنَا مِنْ حَوْلِكَ ۗ
فَاعْتَفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي
الْأَمْرِ ۗ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۗ إِنَّ
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ ﴿١٥٩﴾

إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ۗ وَإِنْ
يَعْدِيكُمْ فَسَبِّحْ ذَا الَّذِي يَنْصُرْكُم مِّنْ
بَعْدِهِ ۗ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٦٠﴾

وَمَا كَانَ لِنَبِيِّ أَنْ يُغْلَبَ ۗ وَمَنْ يُغْلَبْ يَأْتِ بِمَا
عَنْ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۗ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦١﴾

^१ नबी ﷺ जो ऊंचे अखलाक वाले थे, अल्लाह तआला अपने इस पैगम्बर पर एक परोपकार (एहसान) का बयान कर रहा है कि आप ﷺ के अन्दर जो नमी है वह अल्लाह तआला की खास रहमत का नतीजा है, अगर आप ﷺ के अन्दर यह न होती इसके विपरीत आप ﷺ दुर्व्यवहारी (बद्अखलाक) और सख्त दिल के होते तो लोग आप ﷺ से करीब होने के वजाय दूर भागते, इसलिए आप ﷺ माफ़ी से ही काम लें।

^२ यानी मुसलमानों की तसल्ली के लिए मशविरा कर लिया करें, इस आयत से मशविरा की अहमियत, फ़जीलत, फ़ायदा, उसकी जरूरत और अच्छा होना साबित होता है। मशविरा लेने का यह हुक्म कुछ आलिमों के नजदीक जरूरी है और कुछ के विचार में समुचित (मुस्तहब)।

^३ यानी मशविरा के बाद जिस पर आप का इरादा पक्का हो जाये, फिर अल्लाह पर भरोसा करके कर डालें, इस से तो एक बात यह मालूम हुई कि मशविरा के बाद आखिरी फैसला हाकिम ही का होगा न कि परामर्शदाता (मशवरा देने वाला) या उन के बहुमत (अकसरियत) का जैसाकि लोकतन्त्र में है। दूसरी यह कि सारा भरोसा अल्लाह पर ही होगा न कि मशविरा देने वालों की अक्ल या समझ पर। अगली आयत में भी अल्लाह पर भरोसा करने पर और जोर दिया जा रहा है।

१६२. क्या वह इंसान जिस ने अल्लाह की खुशी का अनुसरण (इतेबा) किया उस के समान है जो अल्लाह के गुस्से के साथ लौटा? और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह बहुत बुरी जगह है।

१६३. अल्लाह तआला के पास उन के अलग-अलग दर्जे हैं और उन के सभी अमलों को अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

१६४. बेशक मुसलमानों पर अल्लाह का उपकार (एहसान) है कि उस ने उन्हीं में से एक रसूल उन में भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब और सूझ-बूझ सिखाता है, और बेशक यह सब उस से पहले वाज़ेह तौर से भटके हुए थे।

१६५. (क्या बात है) कि जब तुम पर एक मुसीबत आई जिस के दुगना तुम ने उन्हें पहुँचाई है तो तुम ने कहा कि यह कहाँ से आयी। (हे रसूल) आप कह दें कि यह तुम ने खुद अपने ऊपर डाली है, बेशक हर चीज पर अल्लाह कुदरत

أَفَرَأَيْتَ إِذْ أَخْرَجَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَرْتًا بَاءَ سَخَطٍ مِّنَ اللَّهِ وَ مَا وَهُ جَهَنَّمُ وَيُسَّ الْمَصِيرُ ﴿١٦٢﴾

هُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ يَصِيرُ لِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٣﴾

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١٦٤﴾

أَوَلَيْسَ أَصَابَتْكُمْ مُصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِثْلَهَا قُلْتُمْ أَنَّى هَذَا قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنفُسِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٦٥﴾

१ इस आयत में रिसालत के तीन खास मकसद का बयान है। (१) आयतों की तिलावत (२) पाक करना (३) किताब और सूझ-बूझ की नसीहत। किताब की शिक्षा (इल्म) में तिलावत खुद आ जाती है, तिलावत के साथ ही शिक्षा मुमकिन है, तिलावत के बिना शिक्षा का अस्तित्व (वजूद) नहीं, इस के सिवाय तिलावत को एक मकसद के तौर पर बयान किया गया है, इससे इस बिन्दु का स्पष्टीकरण (बजाहत) होता है कि तिलावत खुद भी पाकी और सबाव का काम है, चाहे पढ़ने वाला उसका मतलब समझे या न समझे। कुरआन का मतलब और मकसद समझने की कोशिश करना हर मुसलमान के लिए जरूरी है, लेकिन जब तक यह मकसद हासिल न हो या इतनी समझ व काबलियत न हो, कुरआन की तिलावत में सुस्ती या रूके रहना ठीक नहीं, पाकी का मतलब है ईमान, अमल और अखलाक का सुधार। जिस तरह आप ﷺ ने उन्हें मूर्तिपूजा से हटाकर तौहीद की तरफ लगाया, इसी तरह बहुत असभ्य (गैर मुहज्जब) और गलत समाज को सभ्य (तहज़ीब) और चरित्र (अखलाक) के रास्ते पर चलाया, हिक्मत (समझ-बूझ) व्याख्याकारों (मुफ़त्सिरो) के क़रीब हदीस है।

रखता है।

१६६. और दोनों गिरोहों की मुठभेड़ के दिन तुम्हें जो कुछ पहुंचा तो यह अल्लाह के हुक्म से पहुंचा और ताकि अल्लाह मुसलमानों को जाहिरी तौर से जान ले।

१६७. और मुनाफिकों को जान ले जिन से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में लड़ो या हमले से बचाव करो तो उन्होंने कहा कि अगर हम जानते कि लड़ाई होगी तो जरूर तुम्हारा साथ देते, वह उस दिन ईमान की निसबत कुफ्र से करीब थे, अपने मुख से वह बात कर रहे थे जो उन के दिलों में न थी, और अल्लाह उसे जानता है जिसे वे छुपाते हैं।

१६८. जिन्होंने अपने भाइयों के लिये कहा और खुद भी बैठे रहे कि अगर वह हमारी बात मानते तो क्रल्ल न किये जाते, कह दो कि अगर तुम सच्चे हो तो अपनी मौत को टाल दो।

१६९. और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गये उन्हें मुर्दा न समझो बल्कि वे जिन्दा हैं, अपने रब के पास रोजी दिये जा रहे हैं।^१

وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ التَّنْقِ الْجَعْنِ فَيَاذِنِ اللَّهُ
وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٦٦﴾

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ نَاقَرُوا ۖ وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا
فَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ ادْعُوا ۗ قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ
مَتَىٰ لَا آتِيَعُنَا هُمْ لَلْكَفْرِ يَوْمَهِمْ أَقْرَبُ
مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ ۚ يَقُولُونَ بِأَنفُسِهِمْ مَا لَيْسَ
فِي قُلُوبِهِمْ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ ﴿١٦٧﴾

الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَعَعَدُوا لَوْ طَاعُونَا
مَا قَاتِلُوا ۗ قُلْ قَادِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِكُمْ أَتَلْمِزُونَ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٦٨﴾

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْواتًا ۗ
بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرَدُّونَ ﴿١٦٩﴾

1 यह मुनाफिकों के उस कौल का खण्डन (तरदीद) है कि "अगर वह हमारी बात मान लेते तो मारे न जाते।" अल्लाह तआला ने फरमाया अगर तुम सच्चे हो तो तुम अपने ऊपर से मौत को टाल दो, मुराद यह है कि नसीब से किसी को अलग नहीं किया गया, मौत भी जहाँ और जिस तरह नसीब में है, उसी जगह पर और उसी तरह आकर रहेगी, इसलिए जिहाद और अल्लाह की राह में लड़ने से रुकने या भागने से कोई मौत के पंजे से नहीं बच सकता।

2 शहीदों की यह जिन्दगी वास्तविक (हकीकी) है या कल्पनिक (छ्याली)? बेशक वास्तविक है, लेकिन इसका इल्म दुनिया वालों को नहीं है, जैसाकि कुरआन ने बाजेह कर दिया है। देखिए सूर: अल-बकर: -१५४। फिर इस जिन्दगी का मतलब क्या है? कुछ कहते हैं कि कश्शों में उनकी रूहें लौटा दी जाती हैं और वह अल्लाह की अता की गयी नेमतों को हासिल करके खुश होते हैं, कुछ कहते हैं कि जन्नत के फलों की खुशबू उन्हें आती रहती है, जिस से उनकी पाक रूहें भगन रहती है, लेकिन हदीस से एक तीसरी हालत सामने आती है, इसलिए बही सही है वह यह कि उनकी रूहें हरे पक्षियों के जिस्म में या सीने में दाखिल कर दी जाती हैं और वह जन्नत

१७०. अल्लाह तआला ने अपनी कृपा (फ़ज़ल) जो उन को दे रखी है, उस से वह बहुत खुश हैं और खुशियाँ मना रहे हैं उन लोगों के बारे में जो अब तक उन से नहीं मिले उन के पीछे हैं, इस बात पर कि उन को न कोई डर है और न कोई ग़म ।

فَرِحْنَ بِمَا أَنَّهُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ
بِالَّذِينَ لَهُمْ يَلْحَقُوا بِهِمْ مِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿١٧٠﴾

१७१. वह अल्लाह की नेमत और फ़ज़ल से खुश होते हैं और उस से भी कि अल्लाह तआला ईमानवालों के अज़्र को बर्बाद नहीं करता ।

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةِ اللَّهِ وَفَضْلِهِ وَإِنَّ اللَّهَ
لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٧١﴾

१७२. जिन लोगों ने घायल होने के बाद (भी) अल्लाह और रसूल का हुक्म मान लिया उन में से जो नेक काम किये और परहेज़गार रहे उन के लिए बड़ा अज़्र है ।

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِنْ بَعْدِ مَا
أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ الَّذِينَ أَحْسَنُوا لِنَفْسِهِمْ وَأَتَقُوا
أَجْرَ عَظِيمٍ ﴿١٧٢﴾

१७३. जिनसे लोगों ने कहा कि लोग तुम्हारे लिये जमा हो चुके हैं इसलिए उन से डरो, तो उनका ईमान बढ़ गया और कहा कि अल्लाह हमारे लिये बस है और वह सब से अच्छा संरक्षक (वली) है ।

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا
لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا ۖ وَقَالُوا
حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ ﴿١٧٣﴾

में खाती पीती फिरती है और वहाँ की नेमतों से फ़ायदेमंद होती रहती है । (फ़तहुल क़दीर, निर्देशित सहीह मुस्लिम किताबुल ईमारः)

१. «हमराउल असद» और कहा जाता है कि छोटे बद्र के मुक़ाम पर अबू सुफ़ियान ने कुछ लोगों की खिदमत पैसा देकर हासिल की और उन के जरिये मुसलमानों में यह अफ़वाह फैला दी कि मक्का के मूर्तिपूजक जंग के लिए भरपूर तैयारी कर रहे हैं, ताकि यह सुन कर मुसलमानों की हिम्मत टूट जाये । कुछ कथनों (रिवायतों) में यह है कि यह काम शैतान ने अपने चेलों से लिया, लेकिन मुसलमान यह अफ़वाह सुन कर और भी मजबूत इरादे और हिम्मत से तैयार हो गये, जिसको यहाँ ईमान की अधिकता से तुलना (तावीर) की गयी है क्योंकि ईमान जितना मजबूत होगा जिहद की हिम्मत और इरादा भी उतना ही ज़्यादा होगा । यह आयत इस बात की गवाह है कि ईमान कोई ठोस चीज़ नहीं है, बल्कि इस में कमी और ज़्यादाती होती रहती है जैसाकि मोहदिसीन का ख़्याल है, यह भी मालूम हुआ कि दुख में ईमान वाले अल्लाह पर यक़ीन और भरोसा करते हैं इसीलिए हदीस में ﴿حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ﴾ पढ़ने पर बल दिया गया है, इसी तरह सहीह बुख़ारी में है हज़रत इब्राहीम رضي الله عنه को जब आग में डाला गया तो आप की जवान पर यही लफ़्ज़ थे । (फ़तहुल क़दीर)

१७४. (साबित यह हुआ कि) वह अल्लाह की नेमत के साथ वापस हुए उन्हें कोई दुख नहीं पहुंचा, उन्होंने अल्लाह की रजामदी का रास्ता अपनाया और अल्लाह बड़ा फज़ल वाला है।

१७५. यह शैतान ही है जो अपने दोस्तों से डराता है, इसलिए उन से न डरो मुझ से ही डरो अगर तुम ईमान वाले हो।

१७६. जो तेजी से कुफ्र में जा रहे हैं, उन से आप गमगीन न हों, वह अल्लाह तआला का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, अल्लाह आखिरत में उन्हें कोई हिस्सा नहीं देना चाहता¹ और उन के लिए बड़ा अजाब है।

१७७. कुफ्र को ईमान के बदले खरीदने वाले लोग कदापि-कदापि अल्लाह (तआला) को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते और उन्हीं के लिए सख्त अजाब है।

१७८. काफिर लोग यह न सोचे कि हमारा उन्हें मुहलत देना उन के लिये अच्छा है, हम यह मुहलत इसलिये दे रहे हैं कि वह और ज्यादा गुनाह कर लें, और उन्हीं के लिये अपमानित (रुस्वा करने वाला) यातना (अजाब) है।²

فَاتَّقَبُوا بِنِعْمَةِ مِّنَ اللَّهِ وَقَضِيَ
لَهُمْ يَسْسَنُهُمْ سُوءًا وَأَتَّبِعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ
وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ (174)

إِنَّمَا ذُكِرَ الشَّيْطَانُ يُغْوِي أَوْلِيَاءَهُ فَلَا
تَخَافُوهُمْ وَخَافُوا إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ (175)

وَلَا يَحْزُنُكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ
لَن يَصُرُوا اللَّهَ شَيْئًا يُرِيدُونَ أَن يَجْعَلَ
لَهُمْ حَقًّا فِي الْأَخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (176)

إِنَّ الَّذِينَ اسْتَرَوْا الْكُفْرَ بِالْإِسْلَامِ لَن يَصُرُوا
إِلَى اللَّهِ شَيْئًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (177)

وَلَا يَحْصِبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّمَا نَسِئِلُ لَهُمْ خَيْرٌ
لِّأَنفُسِهِمْ إِنَّمَا نَسِئِلُ لَهُمْ لِيُزَادُوا إِثْمًا
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ (178)

¹ नबी ﷺ की दिली तमन्ना थी कि सभी लोग मुसलमान हो जायें, इसी वजह से उन के इन्कार और भुठलाने से आप को दुख होता था, अल्लाह तआला ने इस आयत में आप ﷺ को तसल्ली दी है कि आप दुखी न हों यह अल्लाह का कुछ न बिगाड़ सकेंगे, अपनी ही आखिरत खराब कर रहे हैं।

² इस आयत में अल्लाह तआला के वक्त देने के कानून का बयान है, यानी अल्लाह तआला अपने कानून और मर्जी से काफिरों को वक्त अता करता है, वक्ती तौर से उन्हें सांसारिक खुशहाली और माल व औलाद अता (प्रदान) करता है, लोग समझते हैं कि उन पर अल्लाह की रहमत हो रही है, लेकिन अगर अल्लाह की अता की हुई सुख-समृद्धि (ऐशो-आराम) से लाभान्वित होने वाले सवाब और अल्लाह के हुक्म का पालन (पैरवी) करने का मार्ग (रास्ता) नहीं अपनाते तो

१७९. जिस हाल पर तुम हो उसी पर अल्लाह ईमानवालों को छोड़ नहीं देगा, जब तक कि पाक और नापाक को अलग-अलग न कर दे, और न अल्लाह ऐसा है कि तुम्हें गैब से वाखबर कर दे, लेकिन अल्लाह अपने रसूलों में से जिसको चाहे चुन लेता है, इसलिए तुम अल्लाह (तआला) पर और उसके रसूलों पर ईमान रखो, अगर तुम ईमान लाओ और अल्लाह से परहेजगारी करो तो तुम्हारे लिए बहुत बड़ा बदला है।

१८०. और जिन को अल्लाह ने अपनी कृपा (फ़ज़ल) से (धन) दिया है और वह उस में कंजूसी करते हैं तो इसे अच्छा न समझें वल्कि वह उन के लिए बहुत बुरा है, उन्होंने जिस (धन) में कंजूसी की है क़यामत के दिन उन के (गले का) तौक़ होगा! और आसमानों व ज़मीन का हक़ (मीरास) सिर्फ़ अल्लाह के लिये है, और वह तुम्हारे आमाल से वाखबर है।

१८१. बेशक अल्लाह ने उन लोगों की बात सुन ली है जिन्होंने कहा कि अल्लाह गरीब है और हम गनी हैं, हम उनकी यह बात लिख लेंगे और इन के जरिये रसूलों का नाहक क़त्ल को भी और हम कहेंगे कि जलने का अज़ाब चखो।

مَا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَجْعَلُ مِنْ رُسُلِهِ مَن يَشَاءُ ۗ فَمَأْمُونًا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ ۗ وَإِن تَوَلَّيْتُمْ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّكُمْ لَعِندَ اللَّهِ عَظِيمُونَ ﴿١٧٩﴾

وَلَا يَصْبِرَنَّ الَّذِينَ يَبْخُلُونَ بِمَا أَنَّهُمْ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ ۗ هُوَ خَيْرٌ لَّهُمْ ۖ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۖ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخُلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَاللَّهُ يَمِيزُ الْخَبِيثَاتِ وَالطَّيِّبَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١٨٠﴾

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ ۚ مَسَلْنَا مَا قَالُوا وَقَتَّلَهُمُ الْأَنْبِيَاءَ بَغْيًا حَتَّىٰ ۖ وَقَوْلُ دُونِ عَذَابِ الْحَرِيقِ ﴿١٨١﴾

यह दुनियावी सुख अल्लाह तआला की नेमत नहीं, अल्लाह कि तरफ से बक्त अता करना है, जिस से उन के कुफ़्र और नाफ़रमानी में बढ़ोतरी ही होती है, आखिर वह नरक की स्थाई (दायमी) यातना के हक़दार हो जाते हैं।

इस में उस कंजूस का बयान किया गया है, जो अल्लाह के दिये हुए माल को अल्लाह की राह में खर्च नहीं करता, यहाँ तक कि उन में से फ़र्ज ज़कात भी नहीं निकालता। सहीह बुखारी की हदीस में आता है कि क़यामत के दिन उसके माल को एक ज़हरीले साप बनाकर जंजीर की तरह गले में डाल दिया जायेगा, वह साप उस की वहिं पकड़ेगा और कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ, तेरा ख़जाना हूँ।

१८२. यह तुम्हारे करतूत हैं और वेशक अल्लाह अपने बन्दों पर ज़रा भी जुल्म नहीं करता ।

१८३. इन्होंने कहा कि हम से अल्लाह ने वादा लिया है कि हम किसी रसूल को न मानें जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी कुर्बानी न लाये जिसे आग खा जाये, आप कहिये कि तुम्हारे पास मुझ से पहले रसूल दलायेल और उस के साथ वह भी लाये जो तुम ने कहा तो तुम ने उन्हें क्यों क़त्ल किया अगर तुम सच्चे हो ।

१८४. फिर भी अगर यह लोग आप को भुठलायें, तो आप से पहले बहुत से रसूल भुठलाये गये, जो अपने साथ स्पष्ट प्रमाण, (वाज़िह दलायल) सहीफे और रौशन किताब लेकर आये ।¹

१८५. हर जानदार को मौत का मजा चखना ही है और क़यामत के दिन तुम अपने बदले पूरे-पूरे दिये जाओगे, लेकिन जो इंसान आग से हटा दिया जाये और जन्नत (स्वर्ग) में दाखिल करा दिया जाये, वेशक वह सफल हो गया और दुनिया की ज़िन्दगी सिर्फ धोखे का सामान है ।²

ذَٰلِكَ بِمَا كَفَرْتُمْ أَيْدِيَكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ كَيْسٌ
بِظُلْمِ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٢﴾

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهْدُ إِلَيْنَا أَلَّا نُؤْمِنَ
بِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ مِنْ
قَدِّ جَاءَ كَمْ رَسُولٌ مِنْ قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ وَالَّذِينَ
كَلَّمْتُمْ فَلَمْ تَمُوتُوا لَهُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٨٣﴾

فَإِنْ كَذَّبْتُمْ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ رَسُولًا مِنْ قَبْلِكُمْ
جَاءَ بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ﴿١٨٤﴾

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ
أَجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ
وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
إِلَّا مَتَاعٌ الْعُرُورِ ﴿١٨٥﴾

¹ नबी ﷺ को तसल्ली दी जा रही है कि आप यहूदियों की कटहुज्जती से उदास न हों, इस तरह का सुलूक सिर्फ आप के साथ नहीं किया जा रहा है, बल्कि आप से पहले आने वाले पैगम्बरों के साथ भी यही किया जा चुका है ।

² इस आयत में एक अटल हकीकत का वयान है कि मौत से कोई भाग नहीं सकता । दूसरा यह कि दुनिया में जिस ने भी अच्छा या बुरा जो कुछ किया है, उसको उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा । तीसरा कामयाबी की हद बतायी गयी है कि हकीकत में कामयाब वह है जिस ने दुनिया में रहकर अपने रब को खुश कर लिया जिसके नतीजे में वह जहन्नम से आजाद कर दिया गया और जन्नत में दाखिल कर दिया गया । चौथा यह कि दुनिया की ज़िन्दगी धोखे का सामान है, जो उस से अपना दामन बचाकर निकल गया, वह नसीब वाला है और जो उस में फँस गया, नाकाम और वदनसीब है ।

१८६. वेशक तुम्हारे माल व जान में तुम्हारा इम्तेहान लिया जायेगा, और जरूर तुम्हें उन लोगों की जो तुम से पहले किताब दिये गये और मूर्तिपूजकों की बहुत सी दुख देने वाली बातें सुननी पड़ेगी और अगर तुम सब्र करो और हुकम को मानो, तो जरूर यह बहुत बड़े हिम्मत का काम है।¹

१८७. और जब अल्लाह (तआला) ने अहले किताब से वादा लिया कि तुम उसे सभी लोगों से जरूर बयान करोगे और उसे छिपाओगे नहीं, तो फिर भी उन लोगों ने उस वादा को पीठ पीछे डाल दिया और उसे बहुत कम दाम पर बेच डाला, उनकी यह तिजारत बहुत बुरी है।

१८८. वह लोग जो अपने करतूतों पर खुश हैं और चाहते हैं कि जो उन्होंने नहीं किया उस पर भी उनकी तारीफ की जाये, आप उन्हें अजाब से आजाद न समझिये, उन के लिए तो दर्दनाक अजाब हैं।

لَتُبْلَوْنَ فِيْ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا اَذٰى كَثِيْرًا وَاِنْ تَصِيْرُوْا وَاَتَقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزِيْمِ الْاُمُوْرِ (186)

وَاِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثٰقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّ لِلنّٰسِ وَاَلَا تَكْتُمُوْنَ ۗ فَبَيَّنُوْهُ وَاَرٰآ ظُهُوْرِهِمْ وَاَشْرَكُوْا بِهٖ سَمًا وَّلِيْلًا ۗ فَبَيَّنَسْ مَا يَشْكُرُوْنَ (187)

لَا تَصْبِرَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَا اٰتٰوْا وَيُجِبُوْنَ اَنْ يُحْسِنُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَصْبِرْهُمْ بِمَنَازِقَةٍ مِنَ الْعَذٰبِ وَاَلَهُمْ عَذٰبٌ اَلِيْمٌ (188)

¹ अहले किताब से मुराद यहूदी और इसाई है, यह नबी ﷺ, इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ गलत कलिमात अदा करते थे, यही हालत अरब के मूर्तिपूजकों की थी, इनके सिवाय मदीने में आने के बाद मुनाफिक्र खास तौर से उनका मुखिया अब्दुल्लाह बिन उबैय्य भी आप की मान-मर्यादा (इज्जत-वक्रार) पर वार करता था, आप ﷺ के मदीना आने से पहले मदीनावासी उसे अपना सरदार बनाने वाले थे, और उसके ताज पहनाने की तैयारी पूरी हो चुकी थी कि आप ﷺ के आने से उसका यह ख्वाब टूट गया, जिसका उसे बहुत दुख था, इसलिए प्रतिशोध (इतिक्राम) की भावना की बजह से वह आप के खिलाफ अपमान और निन्दा (मुजम्मत) करने का कोई मौका हाथ से नहीं जाने देता था (जैसाकि बुखारी के हवाले से इसका आवश्यक विवरण पिछले हाथिया में गुजर चुका है)। इस हालत में मुसलमानों को माफ करने और सब्र करने की तालीम दी जा रही है, जिस से मालूम हुआ कि इस्लाम की दावत देने वालों को दुखों और तकलीफों का होना इस सच्चे रास्ते में अटल परिस्थिति (हालात) में से है और इसका इलाज सब्र अल्लाह के दीन की मजबूती के लिए अल्लाह की मदद की तमन्ना और अल्लाह की ओर लौटने के सिवाय कुछ भी नहीं। (इब्ने कसीर)

१८९. और आसमानों व जमीन का मालिक अल्लाह (तआला) ही है और अल्लाह (तआला) हर चीज पर कुदरत रखता है।

१९०. बेशक आसमानों और जमीन के बनाने में और रात-दिन के हेर-फेर में यकीनन अकल वालों के लिए निशानियाँ हैं।

१९१. जो अल्लाह (तआला) की याद खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर लेटे हुए करते हैं और आसमानों व जमीन की पैदाईश पर विचार करते हैं (और कहते हैं) कि हे हमारे रब! तूने यह सब दिना फ़ायदा के नही बनाया, तू पाक है, बस तू हमें आग के अजाब से बचा ले।

१९२. ऐ हमारे पालनहार! तू जिसे आग में डाले बेशक तूने उसे अपमानित (जलील) किया और जालिमों का मददगार कोई नहीं है।

१९३. हे हमारे रब! हम ने सुना कि एक पुकारने वाला ईमान की तरफ पुकार रहा है कि लोगो! अपने रब पर ईमान लाओ और हम ईमान लाये। हे हमारे रब! अब तो हमारे गुनाह माफ़ कर दे और हमारी बुराईयाँ हम से दूर कर दे और हमारी मौत नेक लोगों के साथ कर।

१९४. हे हमारे रब! हमें वह अता कर जिसका वादा तूने हम से अपने रसूलों के मुँह से किया है और हमें क़यामत के दिन रुखा न कर, बेशक तू वादा के खिलाफ़ नहीं करता।

وَلَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٨٩﴾

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ
الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿١٩٠﴾

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ وِثْمًا وَحُسُودًا ۗ وَعَلَىٰ
جُوهِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۗ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَذَا بَاطِلًا ۗ
سُبْحَانَكَ قَوْلًا عَدَّآبِ النَّارِ ﴿١٩١﴾

رَبَّنَا إِنَّكَ مِنْ تَدخِيلِ النَّارِ فَقَدْ أَخَذَيْتَهُ ۗ
وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿١٩٢﴾

رَبَّنَا إِنَّا أَسْبَغْنَا مِنَّا وَيَا يُتَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ
أَوْفُوا بِوَعْدِكُمْ قَامَةً ۗ رَبَّنَا فَاعْفُورَنَا ذُنُوبَنَا
وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَكَّلْنَا مَعَ الْإِبْرَارِ ﴿١٩٣﴾

رَبَّنَا وَإِنَّا مَا وَعَدْتَنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْوَعْدَ ﴿١٩٤﴾

। इन दस आतयों में से पहली आयत में अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत व ताक़त के कुछ लक्षणों (नमूनों) की चर्चा की है और फ़रमाया कि यह निशानियाँ जरूर हैं लेकिन किन के लिए? अकलमंदों और आलिमों के लिए यानी इसका मतलब यह हुआ कि इन अजायबे कुदरत और उस के सामर्थ्य (कुदरत) को देखकर भी जिसे अल्लाह का इल्म (ज्ञान) न हो वह अकलमंद नहीं है।

१९५. अतः उन के पालनहार ने उन की दुआ कुबूल की। कि तुम में से किसी अमल करने वाले के अमल को चाहे वह मर्द हो या औरत में कभी बेकार नहीं करता।^१ तुम आपस में एक-दूसरे से हो, इसलिए वह लोग जिन्होंने हिजरत (धर्म के कारण स्थानान्तरण) किया और अपने घरों से निकाल दिये गये और जिन्हें मेरी राह में तकलीफ दी गई और जिन्होंने जिहाद किया और शहीद किये गये, जरूर मैं उनकी बुराईयाँ उन से दूर कर दूँगा और जरूर उन को उस जन्नत में ले जाऊँगा, जिन के नीचे नहरें वह रही हैं, यह है सबाब अल्लाह (तआला) की तरफ से और अल्लाह (तआला) ही के पास अच्छा बदला है।

१९६. नगरों में काफ़िरो का आना-जाना तुम्हें धोखे में न डाल दे।

१९७. यह तो बहुत ही थोड़ा फ़ायदा है,^२ उस के बाद उनका ठिकाना तो जहन्नम है और वह बुरी जगह है।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِنْكُمْ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ ۖ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ ۗ وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۗ تُوَافَيْنَهُمْ فِي اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ عِنْدَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ (195)

لَا يَغْرِبُكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ (196)

مَتَاعٌ قَلِيلٌ ۗ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْوِجَادُ (197)

^१ فاستجاب यहाँ اجاب यानी कुबूल किया के अर्थ (मायने) में इस्तेमाल हुआ है।

^२ मर्द हो या औरत का बयान इसलिये कर दिया गया है कि इस्लाम ने कुछ कामों में मर्द-औरत के बीच उन के एक-दूसरे से फ़ितरी इख़्तिलाफ़ और गुणों (सिपतों) के आधार पर जो अन्तर (फ़र्क) किया है। जैसे विलायत और हाकमियत में, जीविका उर्पाजन में जिहाद में भाग लेने में और बिरासत में आधा हिस्सा मिलने में, इस से यह मतलब न निकाल लिया जाये कि सबाब के कामों के बदला में भी शायद मर्द-औरत में कुछ फ़र्क किया जायेगा, नहीं, ऐसा नहीं होगा। सब का बराबर बदला मिलेगा, वही सबाब अगर एक औरत करेगी तो उसको भी वही बदला मिलेगा।

^३ यह दुनिया के साधन, आराम और सहूलतें खुले तौर से चाहे जितने ब्यादा बयों न हों, हकीकत में थोड़ी सी सामग्री है क्योंकि आख़िर में उनको बरबाद होना है और उनकी तबाही से पहले वह लोग खुद भी बरबाद हो जायेंगे, जो उन को हासिल करने की बजह से अल्लाह तआला को भी भूल जाते हैं और हर तरह के सामाजिक बन्धनों और अल्लाह की सीमाओं (हुदूद) का उल्लंघन (तजाबुज) करते हैं।

१९८. लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे उन के लिए जन्नत है, जिन के नीचे नहरें वह रही हैं, उन में वे हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह की ओर से मेहमान नवाजी है, और सबाब का काम करने वालों के लिए अल्लाह (तआला) के पास जो कुछ भी है वह सब से बेहतर और अच्छा है।¹

१९९. और जरूर अहले किताब में से भी कुछ लोग ऐसे हैं, जो अल्लाह (तआला) पर ईमान लाते हैं और तुम्हारी तरफ जो उतारा गया है और जो उनकी ओर उतारा गया उस पर भी। अल्लाह तआला से डर के रहते हैं, और अल्लाह (तआला) की आयतों को छोटे-छोटे दामों पर नहीं बेचते,² उनका बदला उन के रब के पास है। बेशक अल्लाह (तआला) जल्द ही हिसाब लेने वाला है।

२००. ऐ ईमानवालो! तुम सब (धैर्य) करो, और एक-दूसरे को धामे रखो और जिहाद (धर्मयुद्ध) के लिए तैयार रहो ताकि तुम कामयाबी को पहुँचो।

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ لِمَنْ يَرْتَابِ ۗ (198)

وَرَأَى مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَشِيعَةً لِلَّهِ لَا يَشْتُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ (199)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ (200)

¹ उन के खिलाफ जो परहेजगारी और अल्लाह के डर से जिन्दगी गुजार के अल्लाह के घर में हाजिर होंगे, अगरचे उन के पास अल्लाह को भूल जाने वालों की तरह माल की ज्यादाती और दौलत उस तरह उपलब्ध (हासिल) न होंगी, लेकिन वह अल्लाह के मेहमान होंगे जो तमाम कायनात का मालिक है, और वहाँ उन को जो बदला मिलेगा, वह उस से ज्यादा होगा जो दुनिया में काफ़िरो को सामायिक रूप (बक़ती तौर) से हासिल हुआ था।

² इस आयत में अहले किताब के उस गिरोह का वयान है, जिन्हें रसूल करीम ﷺ की रिमालत पर ईमान लाने की खुशनसीबी हासिल हुई, उन के ईमान और ईमान के गुणों (सिफ़तों) का वयान करके अल्लाह तआला ने दूसरे अहले किताब से उन्हें बेहतर कर दिया।

सूरतुन निसा-४

سُورَةُ النِّسَاءِ

सूर: निसा' मदीना में उतरी और इस में एक सौ छिहत्तर आयतें और चौबीस रूकूउ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

१. हे लोगो! अपने उस पालनहार से डरो जिस ने तुम को एक जान से पैदा किया और उसी से उसकी वीवी को पैदा किया^१ और दोनों से बहुत से मर्द-औरत फैला दिये और उस अल्लाह से डरो जिस के नाम पर एक-दूसरे से मांगते हो और रिश्ता तोड़ने^२ से (भी बचो), बेशक अल्लाह तुम पर संरक्षक (निगहवाँ) है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً، وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا ۝١

१ सूरतुन निसा-

निसा का मतलब «औरतें» है, इस सूर: में औरतों के बहुत से मसले का वयान है, इसलिए इसे सूर: निसा कहा जाता है।

२ «एक जान» से मतलब इंसानों के परम पिता हजरत आदम عليه السلام है, और «(وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا)» में سُورَةُ से «वही जीव» यानी आदम और उन से उनकी वीवी हजरत हौवा को पैदा किया, हजरत हौवा हजरत आदम से किस तरह पैदा हुई, इस में इब्तिलाफ़ है। हजरत इब्ने अब्बास के क़ौल के हिसाब से हजरत हौवा मर्द (यानी आदम) से पैदा हुई यानी उनकी बायीं पसली से, एक हदीस में भी कहा गया है।

«إِنَّ الْمَرْأَةَ خَلِقَتْ مِنْ ضِلْعٍ وَإِنْ أَعْوَجَ شَرِبَ فِي الضِّلْعِ أَعْلَامًا»

(सहीह बुखारी, किताब बद्ऊल खल्क, सहीह मुस्लिम, किताबुल रिदाओं)

«औरत पसली से पैदा की गयी है और पसली में सब से टेढ़ी ऊपरी है, अगर तू उसे सीधा करना चाहे तो तोड़ बैठेगा और अगर तू उस से फ़ायदा उठाना चाहे, टेढ़ेपन से ही फ़ायदा उठा सकता है।»

१ والأرحام का मतलब है रिश्तों को तोड़ने से बचो। رحم-أرحام का बहुवचन (जमा) है, मतलब रिश्ता है, जो माँ के गर्भ के आधार पर बनते हैं इस से शादी के लायक और शादी के लायक नहीं (क़रीबी रिश्तेदार) दोनों रिश्ता मुराद है, रिश्तों का तोड़ना बहुत बड़ा गुनाह है। हदीस में क़रीबी रिश्तेदारों को हर हालत में रिश्ता जोड़ने और उन के हुक्क को अदा करने पर ख़ास जोर दिया गया है, जिसे रिश्ता जोड़ना कहा जाता है।

२. और यतीमों को उन का माल दे दो और पाक के बदले नापाक न लो और अपने माल में मिलाकर उनका माल न खाओ, बेशक यह बड़ा गुनाह है ।

३. और अगर तुम्हें डर हो कि यतीम लड़कियों से शादी करके तुम इंसान न कर सकोगे तो और औरतों में जो तुम्हें अच्छी लगें तुम उन से शादी कर लो, दो-दो, तीन-तीन, चार-चार, लेकिन अगर अदल न रखने का डर है तो एक ही काफी है या तुम्हारी मिलिकयत की दासियाँ यह ज्यादा करीब है कि (ऐसा करने से नाइंसाफी और) एक ओर भ्रुक जाने से बचो ।^१

४. और औरतों को उन के महर (जो राशि विवाह के लिए मान्य हो) मर्जी से दे दो, और अगर वह खुद अपनी मर्जी से कुछ महर छोड़ दें तो उसे अपनी मर्जी से खाओ पिओ ।

५. और बेअम्लों को अपना माल जिसे अल्लाह ने तुम्हारा सहारा बनाया है न दो और उन में से उन्हें खिलाओ और पहनाओ और उन से नर्म बात बोलो ।

وَأُولَ الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا الْوَعْدَ بِهَا بِالْحَسَنَاتِ
بِالْظُّلْمِ ۖ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ ۚ إِنَّكُمْ
إِنَّكُمْ كَانُوا حُوبًا كَبِيرًا ۝۲

وَأَنْ حِفْظُهُمْ إِلَّا تُفْسِدُوا فِي الْيَتَامَىٰ فَالْحُكْمُ
مَا كَلَّابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ مَنَّىٰ وَكُنْتُمْ وَرَبِّعٌ
فَإِنْ حِفْظُهُمْ إِلَّا تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةٌ أَوْ مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ ۚ ذَلِكَ أَدْنَىٰ ۖ أَلَّا تَعْلَمُونَ ۝۳

وَأُولَ النِّسَاءِ صَدُقَتِهِنَّ يَخْلَعْنَ ۚ فَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ
عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُنَّ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَّرِيئًا ۝۴

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَاءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ
قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ مِنْهَا وَأَسْوَاهُمْ ۚ فَوَلُوا لَهُمْ
قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝۵

^१ यानी एक ही औरत से शादी करने में भलाई है, क्योंकि एक से ज्यादा बीवियाँ रखने की हालत में सभी के साथ इंसान करना मुश्किल है, जिसकी तरफ दिली मुहब्बत ज्यादा होती उसी की तरफ जीवन-सामग्री उपलब्ध (मुहब्बत) करने में ज्यादा ध्यान होगा, इस तरह बीवियों के बीच इंसान करने में नाकाम होगा और अल्लाह के यहाँ गुनहागार होगा, कुरआन ने इस हकीकत को दूसरी जगह पर बहुत बाजेह तौर से इस तरह बयान किया है ।

﴿وَلَنْ نَسْتَعِينُوا أَنْ نَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمْلِكُوا كُلَّ الْمَالِ فَذَرُوا مَا كَانُوا مَلِكَةً﴾

«और तुम कभी भी इस बात की ताकत न रखोगे कि बीवियों के बीच इंसान रख सको, अगरचे तुम ख्वाहिश् रखो (तो यह जरूर करो) कि एक तरफ न भ्रुक जाओ और दूसरी बीवियों को बीच पर लटका दो ।» (सूर: निसा-१२९)

इस से मालूम हुआ कि एक से ज्यादा शादियाँ और बीवियों के साथ इंसान न करना गलत है और बहुत भयानक भी ।

६. और यतीमों को उनके बालिग हो जाने तक सुधारते और आजमाईश करते रहे, फिर अगर तुम उन में सुधार देखो तो उन्हें उन के माल सौंप दो, और उन के बड़े हो जाने के डर से उन के माल को जल्दी-जल्दी फुजल खर्चों से न खाओ, धनवानों को चाहिए कि उन के माल से बचते रहें, अगर गरीब हों तो नियमानुसार खा लो, फिर जब उन्हें उन के माल सौंपो तो गवाह बना लो, और लेखा-जोखा के लिये अल्लाह काफी है।

७. माता-पिता और क़रीबी रिश्तेदारों की सम्पत्ति में मर्दों का हिस्सा है और औरतों का भी (जो धन-सम्पत्ति माँ-बाप और क़रीबी रिश्तेदार छोड़ कर मरें) चाहे वह धन कम हो या ज़्यादा (उसमें) हिस्सा मुकर्रर किया हुआ है।

८. और जब बंटवारे के वक़्त रिश्तेदार, यतीम और गरीब आ जायें, तो तुम उस में से थोड़ा बहुत उन्हें भी दे दो और उन से नमी से बोलो।

९. और चाहिए कि वह इस बात से डरें कि अगर वह अपने पीछे (नन्हें-नन्हें) कमज़ोर बच्चे छोड़ जाते, जिनके खराब हो जाने का डर रहता है (तो उन की मुहब्बत क्या होती), तो बस अल्लाह तआला से डर कर दुरुस्त बात कहा करें।

१०. जो लोग नाहक जुल्म से यतीमों का माल खा जाते हैं, वह अपने पेट में आग ही भर रहे हैं और वह जहन्नम में जायेंगे।

وَابْتَلُوا الْيَتَامَىٰ حَتَّىٰ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ۚ فَإِنْ أَنَسْتُمْ مِنَّهُمْ رُسْدًا فَادْعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَنْ يَكْبَرُوا ۚ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعِظْ ۖ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ ۗ فَإِذَا دُعِيتُمْ إِلَىٰ مَوَالِيهِمْ فَاتَّصِحُّوا بِهَا ۗ وَالَّذِينَ يَأْتُواكُم بِلَاكُم مِّمَّا كُنْتُمْ حَرِّمُوا

لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدِينَ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ۗ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا ۗ

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينُ فَارْزُقُوهُمْ مِنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۗ

وَلْيَحْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَةً ضِعْفًا خَافُوا عَلَيْهِمْ ۗ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ۗ

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ غُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا ۖ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا ۗ

1 इस्लाम से पहले यह भी जुल्म था कि औरतों और छोटे बच्चों को उत्तराधिकार (वारिस) के रूप में कुछ भी भाग नहीं दिया जाता था, सिर्फ बड़े लड़के जो लड़ने के लायक होते थे, वही सारी सम्पत्ति (जायदाद) के उत्तराधिकारी माने जाते थे, इस आयत में अल्लाह तआला ने फरमाया कि मर्दों की तरह औरतें, और बच्चे-बच्चियाँ भी अपने माँ-बाप और रिश्तेदारों के उत्तराधिकारी होंगी उन्हें महकूम नहीं किया जायेगा।

2 इसे कुछ आलमों ने उत्तराधिकार (विरासत) की आयत से मंसूख कहा है, लेकिन ठीक बात यह है कि यह मंसूख का हुक्म नहीं है, बल्कि एक खास अखलाकी हिदायत है कि मदद के लायक रिश्तेदार जिनका विरासत में कोई हिस्सा न हो, उन्हें भी बंटवारे के वक़्त कुछ दे दो, इस के सिवाय उन से प्यार से नर्म बात कहो, माल को आते देख कर कारून और फिराँन न बनो।

११. अल्लाह तआला तुम्हें तुम्हारी औलाद के बारे में हुक्म देता है कि एक लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के बराबर है,^१ अगर सिर्फ लड़कियां ही और दो से ज्यादा हों, तो उन्हें मिरास के माल में से दो तिहाई मिलेगा,^२ और अगर एक ही लड़की हो तो उस के लिए आधा है और मरने वाले के मां-बाप में से हर के लिए उस के छोड़े हुये माल का छठा भाग है, अगर उस (मृतक) की औलाद हो,^३ अगर औलाद न हो, और मां-बाप वारिस हों तो फिर उसकी मां के लिए तीसरा हिस्सा है,^४ हां,

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِهِ لِلذَّكَرِ مِثْلُ مِثْلِ الْأُنثَيَيْنِ ۗ وَإِن كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَاهِلْنَ لَكُنَّ مَا تَرَكَ ۗ وَإِن كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۗ وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا الشُّمُّسُ وَمِمَّا تَرَكَ إِن كَانَ لَهُ وَلَدٌ ۗ فَإِن لَّمْ يَكُن لَّهُ وَلَدٌ وَوَرِثَتْهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ النِّصْفُ ۗ وَإِن كَانَ لَكُم مِّنْ إِخْوَةٍ فَلِأُمِّهِ

^१ इस की हिक्मत और इसाफ़ वाला होने का वयान हम पहले कर आये हैं, वारिस लड़का और लड़की दोनों हों तो फिर इस उसूल के अनुसार बटवारा होगा, लड़का और लड़की छोटे हों या बड़े सब वारिस होंगे, यहाँ तक कि पेट का बच्चा भी वारिस होगा, हां काफिर औलाद वारिस नहीं होगी।

^२ यानी लड़का न हो तो माल का दो तिहाई (२/३) दो से ज्यादा लड़कियों को दिये जायेंगे और अगर दो ही लड़कियां हों तो भी उन्हें दो तिहाई (२/३) हिस्सा दिया जायेगा, जैसाकि हदीस में आता है कि साद यिन रबीअ «ओहद» में शहीद हो गये, उनकी दो लड़कियां थीं, लेकिन साद के पूरे माल पर उन के एक भाई ने कब्जा कर लिया, तो नबी ﷺ ने उन के चचा से दो तिहाई (२/३) उनको दिलाया (त्रिमिजी, अबू दाऊद, इब्ने माजा, क्रिताबुल फ़राईद) इस के सिवाये सूर: निसा के आखिर में बताया गया है कि अगर मरने वाले की वारिस दो बहनें हो तो दो तिहाई (२/३) माल की वारिस होगी तो फिर दो लड़कियां दो तिहाई (२/३) माल की ज्यादा वारिस होगी, जिस तरह दो बहनों से ज्यादा होने की हालत में उन्हें दो से ज्यादा लड़कियों के क़ानून के अनुसार रख गया है। (फतहूल क़दीर) सारांश (खुलासा) यह हुआ कि दो या दो से ज्यादा लड़कियां हों तो तरका (छोड़े माल) में दो तिहाई लड़कियों का हिस्सा होगा, बाकी माल असबा (वह वारिस जिस का हिस्सा मुकर्रर नहीं है) में बटवारा होगा।

^३ मां-बाप के हिस्सा की तीन हालतें वयान की गई हैं, पहला यह कि मरने वाले की औलाद हों तो मां-बाप हर एक को सिर्फ छठवां (१/६) हिस्सा मिलेगा, बाकी दो तिहाई माल औलाद में बटवारा होगा, हां अगर मरने वाले की औलाद में एक लड़की ही तो उसमें से सिर्फ आधा माल (यानी छः हिस्सों में से तीन हिस्सा) लड़की के हांके और छठा हिस्सा (१/६) मां को या १/६ बाप को देने बाद (१/६) बाकी रह जायेगा और यह बाकी (१/६) असबा होकर बाप के हिस्सा में जायेगा, यानी उसे दो (१/६) मिलेगा, एक बाप के रूप में दूसरा अस्बा के रूप में।

^४ यह दूसरी हालत है कि मरने वाले की औलाद नहीं है (याद रहे कि पौता-पौती औलाद में सर्वसम्पत्ति से शामिल हैं) इस हालत में मां के लिये तीसरा हिस्सा (१/३) और बाकी दो हिस्सा (२/३) बाप को अस्बा के तौर पर मिलेगे, और अगर मां-बाप के साथ मरने वाले की वीवी या मरने वाली औरत का शौहर भी जिन्दा हो तो बेहतर है कि शौहर या वीवी का हिस्सा (जिसकी

अगर मरने वाले के कई भाई हों तो फिर उसकी माँ का छठा हिस्सा है,¹ यह हिस्सा उस वसीयत (की तकमील) के बाद है जो मरने वाला कर गया हो या कर्ज अदा करने के बाद तुम्हारे पिता हों, या तुम्हारी औलाद तुम्हें नहीं मालूम कि उन में से कौन तुम्हें फ़ायेदा पहुँचाने में ज्यादा करीब है,² यह हिस्सा अल्लाह (तआला) की तरफ से मुकर्रर किये हुए है, वेशक अल्लाह तआला जानने वाला हिक्मत वाला है।

१२. और तुम्हारी बीवियाँ जो कुछ छोड़ कर मरें और उनकी औलाद न हो तो आधा तुम्हारा है और अगर उनकी औलाद हो तो उन के छोड़े हुए माल में से तुम्हारे लिए चौथाई है³ उस वसीयत को अदा करने के बाद जो वह कर गयी हों या कर्ज को अदा करने के बाद और जो (तरका) तुम छोड़ जाओ उस में से उन के लिए

السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ يُورِثُ بِهَا أَوْلَادِيْنَ
أَبَاؤَكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ
تَفْعًا مَقْرِيْبَةً مِنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝۱۱

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ
لَهُنَّ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمْ
الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَنَّ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةِ يُورِثْنَ
بِهَا أَوْلَادِيْنَ ۝ وَلَهُنَّ الرُّبْعُ مِمَّا تَرَكَنَّ
إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ

तफ़सील आगे आ रही है। निकाल कर बाक़ी माल में से माँ के लिये एक तिहाई (१/३) और बाक़ी (२/३) बाप का हांका।

- ¹ तीसरी हालत यह है कि मरने वाले के भाई-बहिन ज़िन्दा हों तो वे भाई-बहिन सगे (ऐनी) यानी एक ही माँ-बाप की औलाद हो, या अल्लाती यानी बाप एक माँ कई हों, या बाप कई माँ एक हो यानी अख्याफ़ी भाई-बहिन हों, अगरचे ये भाई-बहिन मरने वाले के बाप के रहते मीरास के हकदार नहीं होंगे, लेकिन माँ के लिये "हजब" हिस्सा कम करने की बजह घन जायेंगे, यानी अगर एक से ज्यादा होंगे तो माँ के तिहाई भाग (१/३) को छठवें हिस्सा (१/६) में बदल देंगे, बाक़ी पूरा माल (५/६) बाप के हिस्सा में चला जायेगा, लेकिन कोई अन्य वारिस न हो तब, हाफ़िज़ इब्ने कसीर लिखते हैं कि जम्हूर के क़रीब दो भाई का वही क़ानून है जो दो से ज्यादा का बयान हुआ है, इस का मतलब यह हुआ कि अगर एक भाई-बहिन हो तो माँ का तिहाई हिस्सा रह जायेगा, वह (१/६) में परिवर्तित (तब्दील) नहीं होगा। (तफ़सीर इब्ने कसीर)
- ² अतः तुम अपनी अक़ल के अनुसार विरासत का वटवारा न करो, बल्कि अल्लाह के हुक्म के ऐतवार से जिसका जितना हिस्सा मुकर्रर है वह उन्हें दो।
- ³ औलाद के न होने की हालत में लड़के की औलाद यानी पौता भी औलाद के बराबर है, इस पर उम्मत मुसलेमा की रज़ामदी है, (फतहूल क़दीर और इब्ने कसीर) इसी तरह मरने वाले शौहर की औलाद चाहे वह उसकी वर्तमान (मौजूदा) पत्नी से हो या किसी दूसरी बीवी से, इसी तरह मरने वाली बीवी की औलाद चाहे उस के मौजूदा पति से हो या पहले के किसी शौहर से।

चौथाई है, अगर तुम्हारी औलाद न हो, और अगर तुम्हारी औलाद हो तो फिर उन्हें तुम्हारे छोड़े हुए माल में से आठवाँ हिस्सा मिलेगा,¹ उस वसीयत के बाद जो तुम कर गये हो और कर्ज को अदा करने के बाद, और जिनकी मीरास ली जाती है, वह मर्द या औरत कलाल हो (यानी उसका वाप या लड़का न हो) और उस का एक भाई या एक बहन हो,² तो उन में से हर एक का छठाँ हिस्सा है, और उस से ज्यादा हो तो एक तिहाई में सभी शामिल हैं,³ उस वसीयत के बाद जो की गयी हो और कर्ज के अदा होने के बाद जबकि दूसरों को नुकसान न पहुँचाई गयी हो,⁴ यह मुकर्रर किया हुआ अल्लाह (तआला) की तरफ से है और अल्लाह (तआला) हर बात का जानने वाला और सहनशील है।

فَلَهُنَّ الشَّمْنُ مِمَّا تَرَكْتُم مِّن بَعْدِ وَصِيَّةٍ
تُوصُونَ بِهَا أَوْ دِينٍ ط وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ
كَلِمَةً أَوْ امْرَأَةً وَوَلَةٌ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ
مِّنْهُمَا الشُّدُسُ إِنْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَلِكَ فَهُمْ
شُرَكَاءُ فِي الثَّلَاثِ مِّن بَعْدِ وَصِيَّتِهِ يُوْصَى بِهَا
أَوْ دِينٍ لَا غَيْرَ مَصَادِقٌ وَصِيَّةٌ مِّنَ اللَّهِ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿١٢﴾

¹ बीवी अगर एक हो या कई हों, चौथा या आठवाँ हिस्सा मिलेगा यही हिस्सा उन में बटवारा होगा, हर एक को चौथाई (१/४) या आठवाँ (१/८) हिस्सा नहीं मिलेगा, यह सर्वसम्मति नियम (मसअला) है।

² इस से मुराद माँ जाये भाई-बहन हैं, यानी जिनकी माँ एक हो वाप अलग-अलग, क्योंकि सगे भाई-बहन या अल्लाती (कई माँ और एक वाप से) भाई-बहन का हिस्सा मीरास में इस तरह नहीं है, और इस का बयान इसी सूर: में आखिर में आ रहा है, और यह मसअला भी सर्वसम्मति से है। (फतहल कदीर) हकीकत में वंश के लिये (سلكى ملى حظ الاشياء) का कानून चलता है, यही वजह है कि लड़के-लड़कियों के लिये यहाँ और बहन-भाईयों के लिए इस सूर: की आखिरी आयत हर दो में यही कानून है, लेकिन माँ की औलाद में चूँकि वंशज (नसली) हिस्सा नहीं होता इसलिये वहाँ हर भाई-बहन को बराबर हिस्सा दिया जाता है, जो भी हालत हो एक भाई को या एक बहन को हर को छठवाँ (१/६) हिस्सा मिलेगा।

³ एक से ज्यादा होने पर यह सब एक तिहाई (१/३) हिस्सा में सांभने होंगे, मर्द-औरत में कोई फर्क नहीं किया जायेगा, बिना फर्क सभी को बराबर हिस्सा मिलेगा, मर्द हों या औरत।

⁴ इस तरह की वसीयत के जरिये किसी वारिस को महरूम कर दिया जाये, या किसी का हिस्सा घटा दिया जाये, या यूँ ही वारिसों को नुकसान पहुँचाने के लिये कह दे कि पलाँ इसान से मैंने इतना कर्ज लिया है जब कि कुछ भी न लिया हो, मानो नुकसान पहुँचाने का संबंध उत्तराधिकार (विरासत) और कर्ज दोनों से है, और दोनों के जरिये नुकसान पहुँचाना मना और गुनाह है और ऐसी वसीयत भी अनृत (वातिल) होगी।

१३. यह हुदूद अल्लाह तआला के मुकर्रर किये है और जो अल्लाह (तआला) और उस के रसूल (ﷺ) के हुकम को बजा लायेगा उसे अल्लाह (तआला) जन्नत में ले जायेगा, जिन के नीचे नहरें वह रही है, जिन में वह हमेशा रहेंगे और यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

१४. और जो इंसान अल्लाह (तआला) की और रसूल (ﷺ) की नाफरमानी करे और उसकी मुकर्रर हुदूद को लांघ जाये, उसे वह जहन्नम में डाल देगा, जिस में वह हमेशा रहेगा, ऐसी के लिए ही रुस्वा करने वाला अजाब है।

१५. तुम्हारी औरतों में से जो जिना का काम करें, उन पर अपने में से चार गवाह तलब करो, अगर वह गवाही दें तो उन औरतों को घर में बन्दी बना दो, यहाँ तक कि मौत उनकी उम्र को पूरा कर दे, या अल्लाह तआला उन के लिए कोई दूसरा रास्ता निकाले।^१

१६. और तुम में से जो दो इंसान ऐसा काम कर लें^२ उन्हें तकलीफ दो,^३ अगर वह माफी माँग लें और सुधार कर लें, तो उन से मुह फेर लो। बेशक अल्लाह तआला तौबा कुबूल करने वाला और रहम करने वाला है।

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾

وَمَنْ يُعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ يَدْخُلْهُ
نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُهِينٌ ﴿١٤﴾

وَالَّذِي يَأْتِيَنَّ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِسَائِكُمْ
فَأَسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةٌ مِنْكُمْ فَإِنْ شَهِدُوا
فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّى يَتَوَفَّيَهُنَّ الْمَوْتُ
أَوْ يُجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ﴿١٥﴾

وَالَّذِينَ يَأْتِيَنَّهَا مِنْكُمْ فَادْوَاهَا إِنْ تَابَا
وَاصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ
كَوَابًا رَحِيمًا ﴿١٦﴾

^१ यह जिना औरतों की वह सजा है जो इस्लाम के शुरूआती दौर में जब जिना की सजा मुकर्रर नहीं हुई थी, सामायिक (वक्ती) रूप से मुकर्रर की गई थी।

^२ इस से जिना की वह सजा मुराद है जो बाद में मुकर्रर की गई, यानी शादी शुदा जानी मर्द-औरत के लिये रजम यानी पत्थरों से मार डालना और गैर शादी शुदा जानी मर्द-औरत के लिये सौ-सौ कोड़े की सजा, जिसकी तफसीर सूर: नूर और सहीह हदीसों में बयान है।

^३ कुछ ने इस से बाल मैथुन (लित्तावत) मायेना लिया है, यानी दो मर्दों का आपसी सभोग और कुछ ने इस से कुआरे मर्द-औरत मतलब लिया है, और इस से पहले की आयत को शादी शुदा के साथ खास किया है और कुछ ने इस कौल से मुराद मर्द-औरत लिया है वह कुआरे हो या शादी शुदा। इन्ने जर्रीर ने दूसरे मायने को प्रधानता दी है और पहली आयत में बयान सजा को सूर: नूर में बयान सजा से मंसूख माना है। (तफसीर तबरी)

^४ यानी मुह से डाटना, फटकारना और धिक्कारना या हाथ से कुछ मार पीट देना और अब यह मंसूख है।

१७. अल्लाह तआला केवल उन्हीं लोगों की तौबा (क्षमा) स्वीकार (कुबूल) करता है जो अंजान होने के कारण बुराई करें और जल्द ही उस से रुक जायें और माफ़ी मांगें तो अल्लाह (तआला) भी उनकी तौबा कुबूल करता है। अल्लाह (तआला) बड़ा ज्ञानी बुद्धिमान है।

१८. और उनकी तौबा कुबूल नहीं, जो बुराईयाँ करते चले जायें यहाँ तक कि उन में से किसी की मौत करीब आ जाये, तो कह दें कि मैंने अब माफ़ी मांगी' उनकी माफ़ी भी कुबूल नहीं होती जो कुफ़ की हालत में मर जाये, यही लोग हैं जिन के लिए हम ने सख्त अज़ाब तैयार कर रखा है।

१९. ऐ इमानवालो! तुम्हारे लिये मना है कि ज़वरदस्ती औरतों को वारिस के रूप में ले बैठो,^१ उन्हें इसलिए न रोक रखो कि जो तुम ने उन्हें दे रखा है उस में से कुछ ले लो। हाँ, यह और बात है कि वह कोई खुली बुराई और जिना का व्यवहार (सुलूक) करें^२ उन के साथ अच्छा सुलूक करो, अगरचे कि तुम उन्हें पसन्द न करो लेकिन बहुत मुमकिन है कि तुम एक चीज को

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِنْ قَرِيبٍ فَأُولَئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا (17)

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ حَتَّى إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ إِلَهُنَّ وَلَا الَّذِينَ يَتُوبُونَ وَهُمْ نَقَارًا أُولَئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا (18)

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَجِدُ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرِهًا وَلَا تَتَّصِلُوهُنَّ لِبَدِّهِمَا بِمَعْضٍ مِمَّا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ بِغَاشٍ مُّشْتَبِهٍ ۚ وَعَايِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ وَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَبِيرًا كَثِيرًا (19)

^१ इससे बाज़ेह है कि मौत के वक़्त की तौबा कुबूल नहीं है, जैसा कि हदीस में भी आता है जिसका बयान आले इमरान की आयत ९ में गुजर हो चुका।

^२ इस्लाम से पहले औरत पर यह ज़ुल्म भी होता था कि किसी के मरने के बाद उस के घर के लोग उस के माल की तरह उसकी वीवी के भी ज़वरदस्ती वारिस बन जाते थे, और खुद अपनी मर्जी से उसकी खुशी के बिना उस से शादी कर लेते, या अपन भाई, भतीजे से उसकी शादी कर देते, यहाँ तक की सौतेला लड़का अपने मरहूम बाप की वीवी से शादी कर लेता, या अगर चाहते तो उसे किसी से शादी करने की इजाज़त न देते और वह पूरी उम्र वू ही गुज़ारा करने के लिये मजबूर होती, इस्लाम ने ज़ुल्म के इन सभी तरीकों को हाराम कर दिया।

^३ खुली धुराई से भुराद जिना या बदजुबानी और नाफरमानी है, इन दोनों ही हालत में शौहर को यह इजाज़त दी गई है कि उस के साथ ऐसा सुलूक करे कि वह उसका दिया हुआ माल या महर वापस करके खुलाअ कराने पर मजबूर हो जायें। (ज़ैसाकि खुलाअ में शौहर को महर वापस लेने का हक दिया गया है)। (देखिये सूर: बक्रः-२२९)

बुरा जानो, और अल्लाह (तआला) उस में बहुत सी भलाई कर दे।¹

२०. और अगर तुम एक बीबी की जगह पर दूसरी बीबी करना ही चाहो और उन में से किसी को तुम ने माल का खजाना दे रखा हो तो भी उस में से कुछ न लो,² क्या तुम उसे बदनाम करके खुले गुनाह से ले लोगे।

२१. और तुम उसे कैसे ले लोगे? बावजूद इस के कि तुम एक-दूसरे से मिल चुके हो³ और उन औरतों ने तुम से मजबूत वादा ले रखा है।⁴

२२. और उन औरतों से शादी न करो, जिनसे तुम्हारे बापों ने शादी किया हो⁵ लेकिन जो हो चुका, यह बेशर्मी का काम और कीना की वजह से है और बड़ा बुरा रास्ता है।

وَلَنْ أَرْضُكُمْ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَكَانَ زَوْجٍ
وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ وَنَطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا بِمَنْعِهِ
شَيْئًا مَّا تَأْخُذُوا وَنَهَيْتُمَا وَإِذَا قُمْتُمَا ⑳

وَكَيفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَى بَعْضُكُمْ إِلَى بَعْضٍ
وَآخَذَانَ مِنْكُمْ فِيمَا ثَمَرًا عَدِيبًا ㉑

وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا
مَا قَدْ سَلَفَ وَإِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا
وَإِسَاءً سَمِيًّا ㉒

1 यह बीबी के साथ अच्छे सुलूक का वह हुक्म है जिस पर कुरआन ने बहुत जोर दिया है, और हदीस में भी नबी ﷺ ने इस को बहुत महत्व (अहमियत) दिया है, एक हदीस में आयत के उसी अर्थ (मायने) को बयान किया गया है।

2 खुद तलाक़ देने की हालत में महर वापस लेने को सख्ती से रोक दिया गया है, نَطَارًا माल का खजाना और बहुत ज़्यादा माल को कहते हैं, यानी कितना भी महर दे दिया हो वापस नहीं ले सकते, अगर ऐसा करोगे तो यह झुल्म वाज़ेह गुनाह होगा।

3 एक-दूसरे से मिल चुके हो का मायने सहवास (जिमाअ) है, जिसे अल्लाह तआला ने इशारा के रूप में बयान किया है।

4 मजबूत वादा से उस वादे का मतलब है जो शादी के वक़्त मरद से लिया जाता है कि तुम इसे अच्छी तरह से रखना या नर्मी के साथ छोड़ देना।

5 अज्ञान युग (जमाना जाहिलियत) में सौतेला लड़का अपने बाप की बीबी से शादी कर लेता था, उस से रोका जा रहा है कि यह बड़ी बेशर्मी का काम है। ﴿وَلَا تَنْكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُمْ﴾ आम हुक्म है जो ऐसी औरत से शादी को भी वर्जित (मम्नूअ) एलान कर रहा है, जिस से उस के बाप ने शादी किया, किन्तु समागम (दुखूल) से पहले तलाक़ दे दिया, यह बात हज़रत इब्ने अब्बास से साबित है, और धर्म विशेषज्ञ (उलमा) इसी को मानते हैं! (तफ़सीर तवरी)

२३. तुम पर हराम की गयी। तुम्हारी मायें, तुम्हारी बेटियाँ, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी फूफियाँ, तुम्हारी खालायें, भाई की बेटियाँ, वहन की बेटियाँ और तुम्हारी वह मायें जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो। और तुम्हारी दूध में भागीदार बहनें, तुम्हारी सास और तुम्हारी वह पालन-पोषण की गयी लड़कियाँ जो तुम्हारी गोद में हैं; तुम्हारी उन औरतों से जिन से तुम जिमाअ

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ
وَءَخَوَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأَخِ
وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُمُ اللَّاتِي فِي
الرِّضَاعِ وَأَهْلُهَا نِسَاءٌ بِأُمَّهَاتِكُمْ وَأُولَئِكَ فِي
حُرْمَتِكُمْ مِثْلُ بَنَاتِكُمْ اللَّاتِي دَخَلْتُمْ بِهِنَّ

। जिन औरतों से शादी हराम है उनकी तफसील दी जा रही है, इन में सात मुहरमात नसब से हैं, सात दुग्ध कर्म (रदाअत) से और चार ससुराली, इन के सिवा हदीस से साबित है कि भतीजी, फूफी, भांजी और खाला को एक साथ शादी करके रखना हराम है।

सात बंशज निषेधित (नसबी हराम) औरतें हैं। मायें, बेटियाँ, बहनें, फूफियाँ, खालायें, भतीजी और भांजी, रदाअत (दुग्धकर्म) से निषेधित (हराम) सात, रदाअत से माँ, उसकी बेटियाँ, बहनें, फूफियाँ, खालायें। रदाअत से भतीजियाँ और भाजियाँ हैं। ससुराली निषेधित स्त्रियाँ (मुहरमात) सास, संभोगित पत्नी की पहले शौहर से बेटियाँ, बहुयें और दो सगी बहनों को एक साथ शादी करके रखना, इनके सिवा बाप की बीवी जिसकी चर्चा इस से पहले की आयत में हो चुकी है। हदीस के मुताबिक औरत जब तक विवाह (निकाह) में है, उसकी फूफी, खाला, उसकी भतीजी और भांजी से भी विवाह वर्जित है, बंशज निषेधित स्त्रियों की सूची में माँ की भाँ (नानियाँ) उनकी दादियाँ, और बाप की मायें नीचे तक शामिल हैं, जिना से पैदा हुई बेटी, बेटी है या नहीं, इस में एखितलाफ है, तीनों इमाम उसे बेटी मानते हैं और उस से शादी हराम समझते हैं। इमाम शफई कहते हैं कि वह शरीअत के अनुसार बेटी नहीं, इसलिए वह जिस तरह **بِوَالِدِكُمْ** (अल्लाह तुम्हें औलाद में त्यक्त धन (तरका) बटवारा करने का हुक्म देता है) के अन्तर्गत नहीं और सर्वसम्पत्ति से वारिस नहीं। इसी तरह इस आयत के भी अन्तर्गत नहीं **وَاللَّهُ أَعْلَمُ** "बहनें" सगी हों या माँ से या बाप से। "फूफियाँ" में बाप की और सभी मूल पुरुष (यानी नाना, दादा) की तीनों तरह की बहनें आती हैं। "खालायें" इस के अन्तर्गत माँ की और सभी मूल स्त्री (यानी दादी, नानी) की तीनों तरह की बहनें आती हैं। "भतीजियों" में तीनों तरह के भाईयों की औलाद सीधे हों या वास्ता से। ऐसे ही "भाजियों" में तीनों तरह की बहनों की औलाद खुद उनकी हों या उनकी औलाद की औलाद शामिल हैं।

दूसरी तरह रदाअत से निषेधित औरतें। दूध पिलाने वाली माँ, जिसका दूध, दूध पीने की मुहत्त में पिया हो। (यानी दो साल के भीतर) दूध से वहन जिसे तुम्हारी सगी माँ या दूध पिलाने वाली माँ ने दूध पिलाया, तुम्हारे साथ पिलाया या तुम से पहले या बाद तुम्हारे दूसरे भाई-बहन के साथ पिलाया या जिस औरत की सगी माँ या दूध वाली माँ ने तुम्हें दूध पिलाया, चाहे कई बन्त

कर चुके हो। हाँ, अगर तुम ने उन से जिमाअ न किया हो तो तुम पर कोई गुनाह नहीं, और तुम्हारे अपने सगे बेटों की वीवियाँ और तुम्हारा दो सगी बहनों को एक साथ शादी करना। हाँ, जो हो चुका सो हो चुका, बेशक अल्लाह तआला माफ करने वाला मेहरबान रहम करने वाला है।

وَإِنْ لَمْ تَكُونُوا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَاجْتِاحٍ عَلَيْكُمْ
وَخَلَائِلَ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَنْ
تَصْعَقُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُورًا رَحِيمًا ﴿٢٣﴾

में पिलाया हो, दूध से भी वह सभी रिश्ते वर्जित (हराम) हो जायेंगे जो वंश से वर्जित होते हैं, इसकी तफसील यह है कि दूध पिलाने वाली माँ की खुद अपनी औलाद, और जिनको दूध पिलाया है, दूध पीने वाले बच्चे के भाई-बहन, दूध पिलाने वाली माँ का शौहर, उसका बाप और उस मर्द की बहनें, उसकी फूफियाँ, उस औरत की बहनें, खालायें, उस औरत के जेठ, देवर उस के चचा, ताया बन जायेंगे, और इस दूध पीने वाले बच्चे के सगे भाई-बहन आदि इस घराने पर दूध पीने की वजह से वर्जित न होंगे।

तीसरी किस्म, ससुराली हराम की हुई स्त्रियाँ (मुहरमात) बीबी की माँ यानी सास (बीबी की नानी, दादी भी इस में शामिल हैं) और किसी ने औरत से शादी करके बिना जिमाअ कि तलाक दे दिया, तब भी उसकी माँ (सास) से विवाह हराम होगा, किन्तु किसी औरत से शादी कर के बिना हमवित्तरी «तलाक» दे दी हो तो उसकी बेटे से उसकी शादी जायेज होगी। (फतहूल कदीर)

रबीब: बीबी की पहले शौहर से बेटे इसका हराम होना मशरूत है, यानी उसकी माँ से जिमाअ कर लिया होगा तो, «रबीबा» से विवाह हराम नहीं तो हलाल होगा, في حرجوم (वह रबीब: जिनका पालन, पोषण तुम्हारी गोद में हुआ) यह बंधन आम हालत की वजह से है, शर्त के रूप में नहीं, अगर वह बेटे किसी दूसरी जगह में पाली जायेगी या रहेगी, तब भी शादी वर्जित होगी, बीबी को हलील: कहा जाता है, क्योंकि अरबी में उसका मतलब उतरने की जगह है और बीबी शौहर के साथ रहती और जाती है, बेटों में पौते और नवासे भी आते हैं, यानी उनकी बीवियों से भी शादी वर्जित होगी, इसी तरह दूध पिलाई औलाद के जोड़े भी हराम होंगे من اصلا بكم (तुम्हारे सगे बेटों की बीवियाँ) के बन्धन से यह वाजिह हो गया कि लेपालक की बीवियों से शादी नाजायज नहीं, दो बहनें सगी हों या दूध की उन से एक बक्त में विवाह हराम है, लेकिन एक के मरने या तलाक की हालत में इहत पूरी होने के बाद दूसरी से विवाह जायेज है। इसी तरह चार बीवियों में से एक को तलाक देने के बाद पाँचवीं से शादी की इजाजत नहीं, जब तक तलाक शुदा औरत इहत न पूरी कर ले।

२४. और (तुम्हारे लिए) शादी-बुदा औरतें (हराम की गई हैं) लेकिन जो (दासी) तुम्हारी मिल्कियत में हों, यह हुक्म तुम पर अल्लाह ने फ़र्ज कर दिये हैं, और इन के सिवाय दूसरी औरतें तुम्हारे लिए हलाल की गई कि अपने माल (महर) से उन से विवाह करो, बदकारी के लिए नहीं पाकी के लिए, इसलिए जिन से तुम फ़ायेदा उठाओ उन्हें उनका महर दो,^२ और तुम मुकर्रर महर के बाद आपसी रज़ामंदी से जो चाहो तय कर लो तुम पर कोई बुराई नहीं, बेशक अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है।

२५. और तुम में से जो आज़ाद मुसलमान औरत से शादी की ताकत न रखता हो वह उस मुसलमान दासी से (शादी करे) जो तुम्हारी मिल्कियत में हो। अल्लाह तुम्हारे अमल से पूरी तरह वाख़बर है, तुम आपस में एक ही हो, इसलिए तुम उन के घर वालों की इज़ाज़त से उन से शादी करो^३ और नियम के मुताबिक उनका महर दे दो, वह पाक हों बदकार न हों, न गुप्त (पोशीदा) प्रेमी रखने वालीयाँ, तो जब यह शादी बुदा हो जायें फिर बदकारी करे तो उन पर आज़ाद औरतों की आधी सज़ा है^४ यह शादी का हुक्म उस के लिये है जिसे बदकारी का डर हो और सहन करना तुम्हारे लिये अच्छा है और

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ ۖ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ ۖ وَأُحِلَّ لَكُمْ مَا
وَرَاءَ ذَلِكَ أَنْ تَبْتَغُوا بِأَمْوَالِكُمْ مُحْصَنَاتٍ
غَيْرَ مُسْفِيحِينَ ۖ فَمَا اسْتَعْتَمَرْتُمْ بِهِ مِنْهُنَّ
فَأْتُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ فَرِيضَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
فِيمَا تَرَضَيْتُمْ بِهِ مِنْ بَعْدِ الْفَرِيضَةِ ۚ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝

وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ
الْمُؤْمِنَاتِ فِيمَنْ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِنْ نَتَائِبِكُمْ
الْمُؤْمِنَاتِ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَيْمَانِكُمْ بِبَعْضِكُمْ مِنْ
بَعْضٍ ۚ فَاتَّكِحُوهُنَّ بِأَذْنِ أَهْلِيهِنَّ وَأَتُوهُنَّ
أَجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ ۚ الْمُحْصَنَاتُ غَيْرَ مُسْفِيحَاتٍ
وَلَا مُسْخِذَاتٍ أَخْدَانٍ ۚ وَإِذَا أَحْبَبْتُمْ ۚ فَإِنْ اتَّخَذْتُمْ
بِهَا حَيَاةً فَلَعَلَّيْهِنَّ رِضْفٌ مِمَّا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ
مِنَ الْعَذَابِ ۚ ذَلِكَ لِمَنْ حَتَّيْنِ الْعَنْتِ مِنْكُمْ ۗ
وَأَنْ تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

^१ कुरआन करीम में إحصان चार मानों में इस्तेमाल हुआ है (१) शादी (२) आज़ादी (३) पाकीजगी (४) और इस्लाम, इस बिना पर عصमत के चार मतलब हैं (१) शादी-बुदा औरतें (२) आज़ाद औरतें (३) पाक दामन औरतें (४) और मुसलमान औरतें। यहाँ पहला मायने मुराद है।

^२ यह इस बात पर जोर है कि जिन औरतों से तुम शादी धार्मिक रूप से करके फ़ायेदा और सुख हासिल करो, उन्हें उनका मुकर्रर महर जरूर अदा कर दो।

^३ इस से मालूम हुआ कि दासी का मालिक ही दासी का संरक्षक (वली) है, दासी की शादी किसी से उसकी मर्जी के बिना नहीं किया जा सकता, इसी तरह दास भी मालिक के हुक्म के बिना किसी से शादी नहीं कर सकता।

^४ यानी दासियों को सौ के बजाय (आधे यानी) पचास कोड़े की सज़ा दी जायेगी, यानी उनके लिए पत्थर मारकर मार डालने की सज़ा नहीं हो सकती, क्योंकि वह आधी नहीं हो सकती, और क़ुबारी दासी को ताज़ीरी दंड होगा। (तफ़सीली जानकारी के लिए तफ़सीर इब्ने कसीर देखें)

अल्लाह बख्शने वाला रहम करने वाला है।¹

२६. अल्लाह (तआला) तुम्हारे लिये वाज्हेह करना और तुम्हें तुम से पहले के (नेक लोगों का) रास्ता दिखाना और तुम्हारी तौबा कुबूल करना चाहता है और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है।

२७. और अल्लाह तआला चाहता है कि तुम्हारी तौबा कुबूल करे और जो लोग कामवासना के अधीन (ख्वाहिशात के पैरो) हैं वह चाहते हैं कि तुम उस से बहुत दूर हट जाओ।

२८. अल्लाह तुम्हारा बोझ हलका करना चाहता है, और इंसान कमजोर पैदा किया गया है।

२९. हे मुसलमानो! अपना माल आपस में नाजायज तरीके से न खाओ, लेकिन यह कि तुम्हारी आपस की रजामंदी से तिजारत हो,² और अपने आप को कत्ल न करो,³ वेशक अल्लाह तआला तुम पर रहम करने वाला है।

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذَيِّبَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦﴾

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدَ الَّذِينَ
يَتَّبِعُونَ الشَّهْوَاتِ أَنْ تَبِئُوا مِثْلًا عَظِيمًا ﴿٢٧﴾

يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُخَفِّفَ عَنْكُمْ وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ
ضَعِيفًا ﴿٢٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ
مِنْكُمْ وَلَا تَقْتُلُوا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
بِكُمْ رَحِيمًا ﴿٢٩﴾

¹ यानी दासी के साथ शदी वही लोंग कर सकते हैं, जो अपनी जवानी के ज़ब्वात पर क्राबू रखने की ताकत न रखते हों, और बुराई में पड़ने का डर हो, अगर ऐसा डर न हो तो उस वक्त तक सब्र करना अच्छा है जब तक किसी आज़ाद खानदानी औरत से शदी करने लायक न हों।

² इसके लिए यह शर्त है कि लेन-देन जायज कामों का हो, हराम की तिजारत आपसी रजामंदी से भी नाजायज ही रहेगा, इस के सिवाय रजामंदी में खियार-ए-मजलिस का भी मसला आता है, यानी जब तक एक-दूसरे से जुदा न हो, तौदा खत्म करने का हक रहेगा, जैसा कि हदीस में है:

«الْبَيْعَانِ بِالْخِيَارِ مَا لَمْ يَفْرَقَا»

«दोनों आपस में सौदा करने वाले को, जब तक जुदा न हों हक है।» (सहीह बुखारी व मुस्लिम किताबुल बोयुअ)

³ इसका मतलब खुदकशी भी हो सकती है, जो बड़ा गुनाह है और गुनाह करना भी जो तबाही की वजह है, और किसी मुसलमान का कत्ल करना भी, क्योंकि सभी मुसलमान एक जिस्म की तरह हैं, इसलिए उसका कत्ल करना भी ऐसा ही है जैसे अपने आपको खुद कत्ल कर लिया हो।

३०. और जो इंसान यह (नाफरमानी) हद लांघ कर और जूलम से करेगा तो करीब मुस्तकबिल में हम उसे आग में डालेंगे, और यह अल्लाह के लिए बड़ा आसान है।

३१. अगर तुम इन बड़े गुनाहों से बचते रहोगे जिन से तुम को मना किया जाता है तो हम तुम्हारे छोटे गुनाहों को दूर कर देंगे और इज़्जत के दरवाज़े में दाखिल कर देंगे।

३२. और उस चीज़ की तमन्ना न करो, जिस की वजह से अल्लाह ने तुम में से किसी को किसी पर फ़ज़ीलत अता की है, मर्दों का वह हिस्सा है जो उन्होंने कमाया और औरतों के लिए वह हिस्सा है जो उन्होंने कमाया, और अल्लाह (तआला) से उसका फ़ज़ल माँगो, बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज़ का जानकार है।

३३. और माँ-बाप या करीबी रिस्तेदार जो छोड़कर मरें, उसके वारिस हम ने हर इंसान के मुक़रर कर रखे हैं,¹ और जिन से तुम ने अपने हाथों मुआहदा किया है उन्हें उनका हिस्सा दो, हकीकत में अल्लाह तआला हर चीज़ को देख रहा है।

३४. मर्द औरत पर हाकिम है, इस वजह से कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर फ़ज़ीलत दी है, और इस वजह से कि मर्दों ने अपना माल खर्च किया है,² इसलिए नेक फ़रमावर्दार औरतें सौहर की ग़ैर मौज़दगी में अल्लाह की हिफ़ाज़त के जरिये

وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ عُدْوَانًا وَكُلْمًا فَسَوْفَ

نُصَلِّيْهِ نَارًا ۗ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيْرًا ۝ ٣٠

إِنْ تَجَاهَدُوا كِبًا يَوْمًا تَجَاهَدُوا لَنَا يَوْمًا ۚ لَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝ ٣١

سَيَأْتِيْكُمْ وَتُدْخِلَكُمْ مُدْخَلًا كَرِيْمًا ۝ ٣١

وَلَا تَتَّبِعُوا مَا فَضَّلَ اللَّهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيْبٌ

مِّمَّا كَسَبْنَ ۚ وَرَبُّهُنَّ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ

كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝ ٣٢

وَلِكُلِّ جَعَلْنَا مَوَالِي مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدِيْنَ

وَالْأَقْرَبِيْنَ ۚ وَالَّذِيْنَ عَقَدْتُمْ

عَاقِبَةً مِّمَّا كَسَبْتُمْ فَآتُوْهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ

شَيْءٍ شَهِِيْدًا ۝ ٣٣

الرِّجَالِ قَوْمُوْنَ عَلَىٰ النِّسَاءِ ۚ مَا فَضَّلَ اللَّهُ

بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَبِمَا أَنْفَقُوْا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ۚ

فَالضَّالِيْحَةُ فُرِيْتَتْ حِفْظًا لِلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ

¹ बहुवचन (जमा) है मरु का, और मरु के कई मतलब हैं, दोस्त, आजाद किया गया गुलाम, चचेरा भाई, पड़ोसी। लेकिन यहाँ पर इससे मुराद वारिस हैं, मतलब यह है कि हर मर्द-औरत जो कुछ छोड़ कर मर जायेंगे उस के वारिस माँ-बाप और दूसरे करीबी रिस्तेदार होंगे।

² इस में मर्द की हाकमियत और फ़ज़ीलत की दो वजह बताई गई है, एक फितरी है जो उस की जिस्मानी ताकत और दिमागी सलाहियत है, जिस में मर्द औरत से यकीनी तौर से बेहतर है। दूसरा सबब यह है, जिसको हासिल करने का हक़ दीन इस्लाम ने मर्द को दिया है, और औरत को उसकी फितरी कमजोरी और खास इस्लम के सबब जो इस्लाम ने औरत को इस्मत और उसकी पाकीजगी की हिफ़ाज़त के लिए जरूरी बताया है, औरत को आर्थिक उलभनों से दूर रखा है।

(इज्जत और माल) की मुहाफिज औरतें हैं और जिन औरतों से तुम्हें नाफरमानी का डर हो उन्हें तंबीह करो, और उनका विस्तर अलग कर दो (फिर भी न मानें) तो मारो और अगर तुम्हारा कहना मान लें तो उन पर रास्ते की खोज न करो,¹ बेशक अल्लाह बहुत बड़ा है।

३५. अगर तुमको (शौहर-बीवी के) बीच अनवन होने का डर हो तो एक पंच पति के परिवार से और एक बीवी के परिवार से मुकर्रर करो, अगर ये दोनों सुलह कराना चाहें तो अल्लाह उन दोनों को मिला देगा, बेशक अल्लाह जानने वाला खबर रखने वाला है।

३६. और अल्लाह की इबादत करो, उस के साथ किसी को शरीक न करो, और माँ-बाप, रिस्तेदारों, यतीमों, गरीबों, करीब के पड़ोसी, दूर के पड़ोसी² और साथ के मुसाफिर के साथ एहसान करो, और मुसाफिर और जो तुम्हारे ताबे हैं (उन के साथ), बेशक अल्लाह डींग मारने वाले, घमडी से मुहब्बत नहीं करता।

३७. जो लोग (खुद) कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी करने को कहते हैं, और अल्लाह तआला ने जो अपने फ़ज़ल से उन्हें अता कर रखा है उसे छिपाते हैं, हम ने उन नाशुक्रों के लिए ह्स्वा करने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है।

اللَّهُ وَالَّذِينَ تَخَوَّنَ فَشَوْرُهُنَّ فَحِطُّوهُنَّ
وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَصَاحِجِ وَاطْرُبُوهُنَّ
فَإِنْ أَطَعْتَكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿34﴾

وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَنِيهِمَا فَأَبْتُوهَا حَكْمًا
مِّنْ أَهْلِهَا وَحَكْمًا مِّنْ أَهْلِهَا ۚ إِنَّ يُرِيدَ
إِصْلَاحًا يُوَفِّقُ اللَّهُ بَيْنَهُمَا ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ
عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿35﴾

وَأَعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ
إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ
وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ
بِالْحَبِيبِ وَإِنِ السَّبِيلَ ۗ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَجِبُ مَن كَانَ مُخْتَلًا فِخْوَرًا ﴿36﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَخْتَفُونَ بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَأَنْفُسِهِمْ
يَتَكُونُونَ وَهُمْ لَا يَسْتَكْفِرُونَ ۚ
وَيَتْلُونَ مَا أَنزَلْنَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ
وَاعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿37﴾

¹ नाफरमानी की हालत में सब से पहले औरत को समझाना-बुझाना है, फिर वक्ती तौर से अलग हो जाना है, जो एक अक्लमंद औरत के लिए बहुत बड़ी चेतावनी है। जब इस से भी न माने तो थोड़ी मार मारने का हुक्म है, लेकिन यह मार पशुओं वाली या जालिमाना न हो जैसाकि जाहिल लोगों की आदत है।

² रिस्तेदार पड़ोसी की मुकाबले में इस्तेमाल हुआ है, जिसका मतलब है ऐसा पड़ोसी जो रिस्तेदार न हो, यानी यह कि पड़ोसी से पड़ोसी के रूप में प्रेम व्यवहार (सुलूक) किया जाये, वह रिस्तेदार हो या रिस्तेदार न हो, जिस तरह से हदीस में भी इस बात पर बड़ा जोर देकर बयान किया गया है।

३८. और जो लोग अपना माल लोगों को दिखाने के लिए खर्च करते हैं और अल्लाह (तआला) पर और क्रयामत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिसका संगी-साथी शैतान हो वह बहुत बुरा साथी है।

३९. और भला उनका क्या नुकसान (हानि) था अगर यह अल्लाह (तआला) पर और क्रयामत के दिन पर ईमान लाते और अल्लाह (तआला) ने जो उन्हें अता कर रखा है, उस में से खर्च करते, अल्लाह (तआला) उन्हें अच्छी तरह से जानने वाला है।

४०. बेशक, अल्लाह (तआला) एक जर्ई के बराबर जुल्म नहीं करता, और अगर नेकी हो तो उसे दुगुना कर देता है, और खास तौर से अपने पास से बहुत बड़ा अजर अता (प्रदा) करता है।

४१. तो क्या हाल होगा जिस वक्त हर उम्मत में से एक गवाह हम लायेंगे और आप को उन लोगों पर गवाह बनाकर लायेंगे।¹

४२. जिस दिन काफिर और रसूल के नाफरमान यह तमन्ना करेंगे कि काश उन्हें जमीन के साथ बराबर कर दिया जाता और अल्लाह (तआला) से कोई बात न छिपा सके।

وَالَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَنْ يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا ﴿٣٨﴾

وَمَا آذَانُهُمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَانْفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا ﴿٣٩﴾

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ وَإِنْ تَكَ حَسَنَةً يَظْعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾

فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَى هَؤُلَاءِ شَهِيدًا ﴿٤١﴾

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُوا الرُّسُلَ لَوْ تُسَوَّى بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ لِلَّهِ حَدِيثًا ﴿٤٢﴾

¹ हर उम्मत का पैगम्बर (सन्देश्ठा) अल्लाह के दरबार में गवाही देगा "हे अल्लाह! हम ने तो तेरा पैगाम अपनी कौम तक पहुंचा दिया था, अब उन्होंने नहीं माना तो इसमें हमारी क्या खता है?" फिर उन पर नबी करीम ﷺ गवाही देंगे "हे अल्लाह! यह सच कहते हैं।" आप ﷺ यह गवाही उस कुरआन के जरिये देंगे जो आप पर उतरा और जिस में पहले के नबियों और उनकी कौमों के हादसे जरूरत के ऐतबार से बयान हैं।

४३. हे ईमानवालो ! अगर तुम नशे में धुत हो तो नमाज़ के करीब न जाओ ! जब तक कि अपनी बात समझने न लगे, और जनाबत (की हालत में जब तक मुस्ल न कर लो^२ ही, अगर राह चलते गुजर जाने वाले हो तो और बात है, और अगर तुम रोगी हो, या सफर में हो या तुम में से कोई शौच से आया हो या तुम ने औरतों के साथ जिमाअ किया हो और तुम्हें पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मूम करो और अपने मुँह और अपने हाथ मल लो !^३ बेशक अल्लाह (तआला) बहुत माफ करने वाला वख़शने वाला है ।

४४. क्या तुम ने उन्हें नहीं देखा जिन्हें किताब का कुछ भाग दिया गया? वह गुमराही खरीदते हैं और चाहते हैं कि तुम भी गुमराह हो जाओ ।

४५. और अल्लाह (तआला) तुम्हारे दुश्मनों को अच्छी तरह से जानने वाला है और अल्लाह (तआला) का दोस्त होना ही काफी है और अल्लाह (तआला) का मददगार होना बस है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَرَىٰ حَتَّىٰ تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّىٰ تَغْتَسِلُوا ۗ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَمَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِرُءُوسِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُورًا ﴿٤٣﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ يُشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَنْ يُضِلُّوا السَّبِيلَ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَلِيًّا ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ نَصِيرًا ﴿٤٥﴾

^१ यह हुक्म उस वक़्त दिया गया था, जब तक शराब हराम नहीं की गयी थी । इसलिए एक दावत में शराब पीने के बाद जब नमाज़ के लिए खड़े हुए तो नशे में क़ुरआन के सपज़ भी इमाम साहब गलत पढ़ गये। (तफसील के लिए देखिए तिर्मिज़ी, तफसीर सूर: अन-निसा) जिस पर यह आयत उतरती कि नशे की हालत में नमाज़ न पढ़ा करो, यानी उस समय तक नमाज़ के वक़्त शराब पीना हराम किया गया था, पूरी तरह हराम और मना होने का हुक्म बाद में उतरा ।

^२ यानी नापाकी की हालत में भी नमाज़ न पढ़ो, क्योंकि नमाज़ के लिए पाकीज़गी ज़रूरी है ।

^३ रोगी से मुराद वह रोगी है जिसे पानी के इस्तेमाल से नुक़सान या रोग के बढ़ जाने का डर हो (२) आम मुसाफ़िर, लम्बा सफर हो या छोटा, अगर पानी मुयस्सर न हो तो उसे तयम्मूम करने का हुक्म है । पानी न मिलने की हालत में यह हुक्म निवासी (मोकीम) को भी है, लेकिन रोगी और मुसाफ़िर को चूँकि इस तरह की हालत आम तौर से आती थी इसलिए ख़ास तौर से उन के लिए हुक्म को बयान कर दिया गया है (३) शौच (क़ज़ाये हाज़त) से आने वाला (४) और वीवी के साथ जिमाअ करने वाला, उनको भी पानी न मिलने की हालत में तयम्मूम करके नमाज़ पढ़ने का हुक्म है ।

४६. कुछ यहूदी कलाम को उनके सही मुकाम से फेर बदल कर देते हैं और कहते हैं कि हम ने सुना और नाफरमानी की और सुन उस के बिना कि तू सुना जाये और हमारी ताबेदारी कबूल करो (लेकिन इस के कहने में) अपनी जुबान मरोड़ लेते हैं और दीन को कलंकित करते हैं, और अगर यह लोग कहते कि हम ने सुना और हम ने मान लिया और आप सुनिये और हमें देखिये तो यह उनके लिए बहुत अच्छा था और ज्यादा बेहतर था, लेकिन अल्लाह (तआला) ने उन के कुफ्र की वजह से उन पर लानत की है तो यह बहुत कम ईमान लाते हैं !

४७. हे अहले किताब ! जो कुछ हम ने उतारा है, जो उस की तसदीक करने वाला है जो तुम्हारे पास है, इस पर उससे पहले ईमान लाओ कि हम चेहरे बिगाड़ दें और उन्हें घुमा कर पीठ की तरफ कर दें या उन पर लानत भेजें, जैसाकि हम ने शनिवार वाले दिन के लोगों पर लानत की है और अल्लाह (तआला) का फ़ैसला ज़रूर पूरा किया हुआ है ।

४८. बेश्क अल्लाह (तआला) अपने साथ शिर्क किये जाने को माफ नहीं करता और इस के सिवाय जिसे चाहे माफ कर दे,² और जो अल्लाह (तआला) के साथ शिर्क करे उस ने अल्लाह पर भारी आरोप घड़ा ।³

مِنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَنْ مَوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأَسْمَعُ غَيْرَ مُسْمِعٍ وَرَاعَيْنَا لَكِبًا بِلِسَانِهِمْ وَطَعْنَا فِي الدِّينِ ۗ وَكُؤُوتُهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ۗ وَأَسْمَعُ ۖ وَالنَّظْرُنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمًا ۗ وَلَكِنْ لَعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٤٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا الْكِتَابَ آمَنُوا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِمَا مَعَكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَطَّيْسَ وَجُوهَهَا فَتَرُدَّهَا عَلَىٰ آذَانِهَا أَوْ تَلْعَنُوهَا كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ النَّبِيِّ ۗ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٤٧﴾

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا ﴿٤٨﴾

¹ यानी ईमान लाने वाले बहुत थोड़े हैं, जैसा कि पहले बयान हो चुका है कि यहूदियों में से ईमान लाने वालों की संख्या दस तक भी नहीं पहुँची, या यह मतलब है कि बहुत कम बातों पर ईमान लाते हैं, जब कि फ़ायदेमंद ईमान यह है कि सब बातों पर ईमान लाया जाये ।

² यानी ऐसे गुनाह जिन से ईमान वाले माफ़ी मागें बिना मर जायें, अल्लाह तआला अगर किसी को चाहे तो बिना सजा दिये माफ कर देगा, बहुत से लोगों को सजा देने के बाद और बहुत से लोगों को नबी ﷺ की शिफ़ाअत (सिफ़ारिश) पर माफ कर देगा, लेकिन शिर्क किसी भी हालत में माफ नहीं होगा क्योंकि मुश्रिक पर अल्लाह तआला ने जन्नत हराम कर दिया है ।

³ दूसरी जगह फ़रमाया ﴿إِنَّ الشُّرْكَ لظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ (लुकमान) - शिर्क बहुत बड़ा जुल्म है ।- हदीस में इसे बहुत बड़ा गुनाह कहा गया है "أكبر الكبائر الشرك بالله" ।

४९. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जो अपनी पाकीजगी (और तारीफ) खुद करते हैं? बल्कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे पाक करता है, और वे एक धागे बराबर भी जुल्म न किये जायेंगे।

५०. देखो यह लोग अल्लाह (तआला) पर किस तरह झूठा इल्जाम लगाते हैं, और यह बड़े गुनाह के लिये बहुत है।

५१. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जिन्हें किताब का कुछ हिस्सा मिला है, जो मूर्तियों पर और भूठे देवों पर ईमान रखते हैं, और काफिरों के हक में कहते हैं कि यह लोग ईमानवालों से ज्यादा सच्चे रास्ते पर हैं?

५२. यही वह लोग हैं जिन पर अल्लाह (तआला) ने लानत की है और जिसे अल्लाह (तआला) लानती कह दे तो तू किसी को उसका मदद करने वाला नहीं पायेगा।

५३. क्या उनका कोई हिस्सा मुल्क में है? अगर ऐसा हो तो फिर यह किसी को एक खजूर की गुठली की फाँक के बराबर भी कुछ न देगे।

५४. या यह लोगों से हसद रखते हैं, उस पर जो अल्लाह (तआला) ने अपने फज़ल से उन्हें अता किया है तो हम ने तो इब्राहीम की औलाद को किताब और हिकमत भी अता किया और बड़ा मुल्क भी अता किया।

५५. फिर उन में से कुछ ने तो उस किताब को माना और कुछ उस से रुक गये। और जहन्नम का जलाना काफी है।

أَمْ تَرَى إِلَى الَّذِينَ يَزُكُّونَ أَنْفُسَهُمْ طِبًّا لِلَّهِ
يُزَكِّي مِنْ مَن يَشَاءُ وَلَا يَظُنُّونَ قَبِيْلًا ﴿٤٩﴾

أَنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكُذِبَ
وَكَفَى بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٠﴾

أَمْ تَرَى إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيْبًا مِنَ الْكِتَابِ
يُؤْمِنُونَ بِالْحَبِيبِ وَالظَّالِمَاتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ
كَفَرُوا هَؤُلَاءِ أَهْدَى مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا
سَبِيْلًا ﴿٥١﴾

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ ط وَمَنْ يَلْعَن
اللَّهُ فَكَانَ تَجَدَّ لَهُ نَصِيْرًا ﴿٥٢﴾

أَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِنَ الْمَلِكِ قَادًا
لَا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيْرًا ﴿٥٣﴾

أَمْ يَحْسَدُونَ النَّاسَ عَلَى مَا آتَاهُمُ اللَّهُ
مِنْ فَضْلِهِ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيْمَ الْكِتَابَ
وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَهُمْ مُلْكًا عَظِيْمًا ﴿٥٤﴾

فِيهِمْ مَن آمَنَ بِهِ وَمِنْهُمْ مَن صَدَّ عَنْهُ ط
وَكَفَى بِهِمْ سَجِيْرًا ﴿٥٥﴾

। यानी इस्राईल की औलाद को जो हजरत इब्राहीम के खानदान और कबीला में से हैं, हम ने नबवत भी दी और बड़ा मुल्क और हुकूमत भी, फिर भी यह सभी यहूदी उन पर ईमान नहीं लाये कुछ ईमान लाये और कुछ रुक गये। मतलब यह है कि हे मोहम्मद ﷺ अगर यह आप पर ईमान नहीं ला रहे हैं तो यह कोई अनोखी बात नहीं है, इनकी तो तारीख ही नबियों को झुठलाने से भरी पड़ी है, यहाँ तक कि यह तो अपने वश के नबियों पर भी ईमान नहीं लाये।

५६. जिन लोगों ने हमारी आयतों का इंकार किया उन्हें हम जरूर आग में डाल देंगे, जब उन की खालें (चर्म) पक जायेंगी, हम उन के अलावा और खालें बदल देंगे, ताकि वह अजाब का मजा चखते रहें, बेशक अल्लाह तआला जबरदस्त हिक्मत वाला है।

५७. और जो लोग ईमान लाये और नेक अमल किये, हम करीब मुस्तकबिल में उन्हें उन जन्नतों में ले जायेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में वे हमेशा रहेंगे, उन के लिए वहाँ पाक वीवियाँ होंगी और हम उन्हें घनी छाँव (पूरी आरामदायक जगह) में ले जायेंगे।

५८. अल्लाह (तआला) तुम्हें हुक्म देता है कि अमानत (धरोहर) उन के मालिकों को पहुँचा दो, और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो अदल के साथ फ़ैसला करो, बेशक वह अच्छी बात है जिसकी शिक्षा अल्लाह (तआला) तुम्हें दे रहा है, बेशक अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है।

५९. हे ईमानवालो! अल्लाह के हुक्म की पैरवी करो और रसूल (ﷺ) की ओर अपने में से हाकिमों के हुक्म को मानो, फिर अगर किसी बात में एख़िलाफ़ करो तो उसे लौटाओ अल्लाह (तआला) और रसूल (ﷺ) की तरफ़, अगर तुम्हें अल्लाह और क़यामत के दिन पर ईमान है, यह सब से अच्छा है और नतीजा के ऐतबार से बहुत अच्छा है।¹

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصَلِّيهِمْ نَارًا
كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُمْ بِدَلِّهِمْ جُلُودًا غَيْرَهَا
يَسْتَوُونَ وَالْعَذَابُ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا ٥٦

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا طَاهِرِينَ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ
وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا ٥٧

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَى
أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ
تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ
بِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا ٥٨

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ
وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ
فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ
بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ
تَأْوِيلًا ٥٩

¹ इस में हाकिमों को ख़ास तौर से इंसफ़ करने का हुक्म दिया गया है। एक हदीस में है हाकिम जब तक जुल्म न करे, अल्लाह तआला उसके साथ होता है, जब वह जुल्म करना शुरू कर देता है, अल्लाह उसको उसकी इन्द्रियों (नपस) को सौंप देता है। (सुनन इब्ने माज़ा, किताबुल अहकाम)

² अल्लाह की ओर लौटाने से मुराद कुरआन करीम तथा रसूल (ﷺ) से है, अब रसूल (ﷺ) की हदीस

६०. क्या आप ने उन्हें नहीं देखा जिसका ह्याल है कि जो कुछ आप पर और जो कुछ आप से पहले उतारा गया है, उस पर उनका ईमान है, लेकिन वह अपने फ़ैसले अल्लाह के सिवाय दूसरों के पास ले जाना चाहते हैं, अगरचे उन्हें हुक्म दिया गया है कि वह उनका (शैतान का) इन्कार करें? शैतान तो यह चाहता है कि उन्हें भटका कर दूर डाल दे।

६१. और उन से जब कभी कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) ने जो (पाक किताब) उतारा है उसकी तरफ और रसूल की तरफ आओ, तो आप देखेंगे कि यह मुनाफ़िक (अवसरवादी) आप से मुंह फेर कर रुक जाते हैं।¹

६२. फिर क्या वजह है कि जब उन पर उनके अमल की वजह से कोई मुसीबत आ पड़ती है, तो फिर यह आप के पास आकर अल्लाह (तआला) की क्रम (अपथ) लेते हैं कि हमारा इरादा तो सिर्फ़ भलाई और अच्छा तअल्लुक ही का था।

६३. यह वह लोग हैं जिन के दिलों का भेद अल्लाह (तआला) को अच्छी तरह मालूम है, आप उन से अनसुनी कीजिये, और उन्हें तालीम देते रहिए और उन्हें वह बात कहिए जो उन के दिलों में घर करने वाली हो।

لَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَنْ يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ ۗ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٦٠﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنْكَ صُدُودًا ﴿٦١﴾

فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُمُ مُصِيبَةٌ ۖ إِنَّا بِمَا قَدَّمْت أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاءَ وَكَى يَصِفُونَ ۗ بِاللَّهِ إِنَّ آرِدْنَا إِلَّا الْإِحْسَانَ وَتَوْفِيقًا ﴿٦٢﴾

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَهُمْ فِي أَنفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا ﴿٦٣﴾

है, यह आपसी एख़्तिलाफ़ ख़त्म करने के लिए एक सब से अच्छा क़ानून बताया गया है, इस क़ानून से भी बाज़ेह होता है कि तीसरे इंसान का हुक्म मानना ज़रूरी नहीं है।

¹ यह आयत ऐसे लोगों के बारे में उतरी है, जो अपना फ़ैसला कराने के लिए मोहम्मद ﷺ की अदालत में ले जाने के बजाय यहूदियों के मुखिया या कुरैब के मुखिया के पास ले जाना चाहते थे, लेकिन यह हुक्म आम लोगों के लिए है और इस में सभी वह लोग शामिल हैं जो कुरआन और सुन्नत के खिलाफ अपने फ़ैसले के लिए इन दोनों को छोड़ कर दूसरों की तरफ जाते हैं।

६४. और हम ने हर रसूल को सिर्फ इसीलिए भेजा कि अल्लाह (तआला) के हुक्म से उस के हुक्म की पैरवी की जाये और अगर यह लोग जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया तेरे पास आ जाते, और अल्लाह (तआला) से तौबा करते और रसूल भी उन के लिए माफी तलब करते, तो बेशक यह लोग अल्लाह तआला को माफ करने वाला रहम करने वाला पाते ।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ ط وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ جَاءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَحِيمًا ﴿64﴾

६५. तो कसम है तेरे रब की! यह (तब तक) ईमानवाले नहीं हो सकते जब तक कि सभी आपस के एखितलाफ में आप को फ़ैसला करने वाला न कुबूल कर लें, फिर जो फ़ैसला आप कर दें उन से अपने दिलों में ज़रा भी तंगी और नाखुशी न पायें और फरमाबरदार की तरह कुबूल कर लें ।

فَلَا وَرَيْكَ لَا يَأْمُرُونَ حَتَّى يَحْكُمَ لَكَ فِيهَا شَيْعَرٌ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّتُوا تَسْلِيمًا ﴿65﴾

६६. और अगर हम उन पर यह फ़र्ज कर देते कि अपने आप को क़त्ल कर लो या अपने घरों से निकल जाओ, तो उसे उन में से बहुत ही कम लोग पालन करते, और अगर यह वही करें जिसकी उन्हें तालीम दी जाती है, तो ज़रूर ही उन के लिए बहुत अच्छा होता और बहुत ज़्यादा मजबूत होता ।

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنْ اقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ أَوِ اخْرَجُوا مِنْ دِيَارِكُمْ مَا فَصَلَوْهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِنْهُمْ ط وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا ﴿66﴾

६७. और तब तो हम उन्हें अपने पास से बहुत सबाब अता करते ।

وَإِذَا لَأْتَيْنَهُمْ مِنْ لَدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا ﴿67﴾

६८. और बेशक उन्हें सत्य सीधा रास्ता अता कर देते ।

وَلَهَدَيْنَهُمْ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ﴿68﴾

६९. और जो भी अल्लाह (तआला) और रसूल (ﷺ) के हुक्म की पैरवी करे, वह उन लोगों के साथ होगा, जिन पर अल्लाह (तआला) ने अपनी नेमतों की है, जैसे नबियों, सिद्दीकों, शहीदों और नेक लोगों के (साथ), यह अच्छे साथी हैं ।

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ وَالصَّالِحِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَئِكَ رَفِيقًا ﴿69﴾

७०. यह अल्लाह (तआला) की तरफ से फजल है और अल्लाह (तआला) ही काफी जानकार है।

७१. हे मुसलमानो! अपने बचाव का सामान ले लो, ' फिर गिरोह-गिरोह बनकर प्रस्थान करो या सब के सब एक साथ प्रस्थान करो।

७२. और बेशक तुम में कुछ ऐसे भी हैं जो संकोच (तरदुद) करते हैं^१ फिर अगर तुम्हें कोई नुकसान होता है तो कहते हैं कि अल्लाह (तआला) ने मुझ पर बड़ी नेमत की कि मैं उनके साथ मौजूद नहीं था।

७३. और अगर तुम को अल्लाह (तआला) का कोई फजल हासिल हो जाये तो जैसे कि तुम में और उन में रिश्ता था ही नहीं, कहते हैं कि काश! मैं भी उन के साथ होता तो बड़ी कामयाबी को पहुँच जाता।

७४. लेकिन जो लोग दुनिया की जिन्दगी आखिरत के बदले बेच चुके हैं, उन्हें अल्लाह (तआला) की राह में जिहाद करना चाहिए और जो अल्लाह (तआला) की राह में जिहाद करते हुए शहीद हो जाये या विजयी हो जाये तो बेशक हम उसे बहुत अच्छा बदला अता करेंगे।

७५. भला क्या बजह है कि तुम अल्लाह की राह में और उन कमजोर मर्दों, औरतों और नन्हे-नन्हे बच्चों के छूटकारे के लिए जिहाद न करो? जो इस तरह से दुआ कर रहे हैं कि हे हमारे रब! इन ज़ालिमों की बस्ती से हमें निकाल दे और हमारे लिए खुद अपने पास से हिमायती मुकर्रर कर और हमारे लिए खास तौर से अपने

ذَٰلِكَ الْقَضَٰلُ مِنَ اللَّهِ ۗ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَزِيمًا ۗ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا حُذُّوا جُنُودَكُمْ فَاثْبُرُوا
ثُبَاتٍ أَوْ تَنْصُرُوا جَيْبِيًّا ۗ

وَإِنْ مِنْكُمْ لَمَن لَّيُبْتَغِي ۗ إِنْ أَصَابَكُمْ
مُصِيبَةٌ قَالُوا قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْنَا إِذْ لَمْ
أَكُنْ مَعَهُمْ شَاهِدِينَ ۗ

وَلَمِنَ أَصَابِكُمْ قَضَٰلٌ مِنَ اللَّهِ لَيَقُولُنَّ كَانَ لَمْ
تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَأْتِيَنِي كُنْتُ مَعَهُمْ
فَأَنْفَرُوا قُوْرًا عَظِيمًا ۗ

فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ ۗ وَمَن يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۗ

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ
مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ
رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا
وَاجْعَلْ لَّنَا مِن لَّدُنكَ وَلِيًّا ۗ وَاجْعَلْ لَّنَا
مِن لَّدُنكَ نَصِيرًا ۗ

^१ अपना बचाव करो, अस्त्र-शस्त्र (हथियार) और जंग का सामान और दूसरे साधन (जरिये) से।

^२ यह मुनाफिकों का बयान है। संकोच का मतलब जिहाद में जाने से कतराते और पीछे रह जाते हैं।

पास से सहायक बना ॥

७६. जो लोग ईमान लाये हैं, वह तो अल्लाह (तआला) की राह में जिहाद करते हैं और जिन लोगों ने कुफ्र किया है वह तो तागत की राह में लड़ते हैं बस,^२ तुम शैतान के दोस्तों से जंग करो, यकीन करो कि शैतान की चाल (बिल्कुल कमजोर और) बहुत कमजोर है।

७७. क्या तुम ने उन्हें नहीं देखा जिन्हें हुक्म दिया गया कि अपने हाथों को रोके रखें और नमाजें पढ़ते रहो और जकात अदा करते रहो, फिर जब उन्हें जिहाद का हुक्म दिया गया तो उसी वक्त उनका एक गिरोह लोगों से इस तरह डरा हुआ था जैसे अल्लाह (तआला) का डर हो, बल्कि इससे भी अधिक। और कहने लगे, हे हमारे रब! तुने हम पर जिहाद क्यों फर्ज किया? क्यो हमें थोड़ी जिन्दगी और न गुजारने दिया? आप कह दीजिए कि दुनिया का फायदा तो बहुत कम है और परहेजचारों के लिए आखिरत बेहतर है, और तुम एक धागे के बराबर भी जुलम न किये जाओगे।

الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ
كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا
أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ
ضَعِيفًا ﴿٧٦﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ
وَأَقِمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَكَلَّمْنَا نَسَبَهُمْ
فَاتَّقُوا النَّاسَ إِذَا قَرَّبُوا فَمِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ
كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ
كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَى أَجَلٍ
قَرِيبٍ لَقُلْنَا مَتَاعَ الدُّنْيَا قَلِيلًا وَالْآخِرَةُ
خَيْرٌ لِّنَّا أَغْلَى وَلَا تَطْلُمُونَّ قَبِيلًا ﴿٧٧﴾

^१ जालिमों की बस्ती से। आयत के उतरने के आधार पर) मुराद मक्का है। हिजरत के बाद वहाँ वाक़ी रह जाने वाले मुसलमान खास तौर से बूढ़े मर्द, औरत और बच्चे काफ़िरों के जुलम से तंग आकर अल्लाह के दरबार में मदद की दुआ करते थे, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को दख़्खरदार किया कि तुम مستضعفين (ऊपर बयान कमजोर इंसानों) को काफ़िरों से आज़ाद कराने के लिए जिहाद क्यों नहीं करते?

^२ मुसलमान और काफ़िर दोनों को जंग की ज़रूरत होती है, लेकिन दोनों के जंग के मक़सद में बड़ा फ़र्क है। मुसलमान अल्लाह के लिए लड़ता है, सिर्फ़ दुनिया या मुल्क बढ़ाने के लिए नहीं, जब कि काफ़िर का मक़सद यही दुनिया और उस के फ़ायदे होते हैं।

^३ मक्के में मुसलमान चूँकि तादाद और संसाधन की कमी की वजह से लड़ने के लायक नहीं थे, इसलिए उनकी मर्जी के खिलाफ़ उन्हें जंग से रोके रखा गया, और दो बातों पर ज़ोर दिया जाता रहा, एक यह कि काफ़िरों के जुलम को सब्र और हिम्मत से बरदाश्त करें और माफ़ी और हौसले से ही काम लें। दूसरे यह कि नमाज़, जकात और दूसरी इबादत और तालीम के हिसाब से अमल करें ताकि अल्लाह तआला से रिश्ता मजबूत बुनियादों पर कायम हो, लेकिन हिजरत के बाद मदीने में जब मुसलमानों की ताक़त जमा हो गयी तो फिर उन्हें लड़ने की इजाज़त दी गयी।

७८. तुम जहाँ कहीं भी होंगे मौत तुम्हें आ पकड़ेगी चाहे तुम मजबूत किलों में हो, और अगर इन्हें कोई भलाई मिलती है तो कहते हैं कि यह अल्लाह (तआला) की तरफ से है, और अगर कोई बुराई पहुँचती है, तो कह उठते हैं कि यह तेरी ओर से है।¹ उन्हें कह दो, यह सब कुछ अल्लाह (तआला) की तरफ से है, उन्हें क्या हो गया है कि कोई बात समझने के करीब भी नहीं?

७९. तुम्हें जो भलाई मिलती है वह अल्लाह (तआला) की तरफ से है और जो बुराई पहुँचती है वह तेरे अपने खुद की तरफ से है, हम ने तुम्हें मानव जाति के लिए रसूल बनाकर भेजा है और अल्लाह (तआला) गवाह काफी है।

८०. इस रसूल (ﷺ) की जो इताअत करे उसी ने अल्लाह (तआला) की इताअत की और जो मुंह फेर ले तो हम ने आप को कोई उन पर रक्षक (निगरा) बना कर नहीं भेजा।

८१. और यह कहते तो हैं कि इताअत है, फिर जब आप के पास से उठ कर बाहर निकलते हैं तो उन में का एक गुट जो बात आप ने या उसने कही है उसके खिलाफ रातों को विचार-विमर्श (राय-मसिवरा) करता है,² उन की रातों की बातचीत अल्लाह (तआला) लिख रहा है, आप उन से मुंह फेर लें और अल्लाह तआला पर भरोसा रखें, अल्लाह तआला काफी काम बनाने वाला है।

أَيِّن مَّا تَكُونُوا يَدْرِكَكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشِيدَةٍ وَإِنْ تُضِيبُهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَإِنْ تُضِيبُهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِكَ قُلْ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا (٧٨)

مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنَ نَفْسِكَ وَأَرْسَلْنَاكَ بِاللَّيْلِ رَسُولًا وَقُلَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا (٧٩)

مَنْ يُطِيعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ وَمَنْ تَوَلَّىٰ فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا (٨٠)

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَأُوا مِنَ اللَّهِ عَيْنِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّنُونَ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَقُلِ بِاللهِ وَكَيْلًا (٨١)

¹ यहाँ से फिर से मुनाफिकों की बातों का बयान हो रहा है।

² यह मुनाफिकीन आप के पास जो बातें जाहिर करते हैं, रातों को इस के खिलाफ बातें करते हैं और साजिश करते हैं। आप ﷺ उन से बचें और अल्लाह पर भरोसा करें, इनकी साजिश आप को नुकसान नहीं पहुँचा सकती, क्योंकि आप का निगहबान और कामों को बनाने वाला अल्लाह है।

८२. क्या यह लोग कुरआन पर विचार नहीं करते? अगर यह अल्लाह (तआला) के सिवाय किसी दूसरे की तरफ से होता तो बेशक इस में बहुत कुछ इख्तिलाफ पाते।¹

८३. और जहाँ उन को कोई खबर अमन या डर की मिली कि उन्होंने उसका प्रचार करना शुरू कर दिया, और अगर ये लोग उसे रसूल (ﷺ) के और अपने में से ऐसी बातों के जरिये तक पहुँचने वालों के हवाले कर देते, तो इस की हकीकत वह लोग मालूम कर लेते जो नतीजा मालूम करने की अक्ल रखते हैं और अगर अल्लाह (तआला) का फज़ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो कुछ इंसानों के सिवाय तुम सभी शैतान के पैरोकार बन जाते।

८४. तो तू अल्लाह तआला की राह में जिहाद करता रह, तुझे सिर्फ तेरे लिए ही हुक्म दिया जाता है। हाँ, ईमानवालों को आकर्षित (मुतवज्जिह) करता रह, बहुत मुमकिन है कि अल्लाह (तआला) काफिरों के हमले को रोक दे और अल्लाह (तआला) बहुत ताक़त वाला है और सज़ा देने में भी बहुत सख़्त है।

८५. जो इंसान किसी सबाब और भले काम करने की सिफ़ारिश करे, उसे भी उसका कुछ हिस्सा मिलेगा और जो बुराई और बुरे काम करने की सिफ़ारिश करे, उस के लिए भी उस में से

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ طَوَلَوْا كَانَ مِنْ عِنْدِ
عَبْدِ اللَّهِ لَوْ جَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا (82)

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا
بِهِ طَوَلَوْا رُدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَى أُولِي الْأَمْرِ
وَمَنْهُمْ لَعَلِمَةٌ آلِيَيْنِ يَسْتَلْطِطُونَ مِنْهُمْ
وَلَوْ لَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ
الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا (83)

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ
وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَكْفِ بِكَ بِأَسْ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَاللَّهُ أَشَدُّ بِأَسًا وَأَشَدُّ تَنْكِيلًا (84)

مَنْ يُشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُنْ لَهُ نَصِيبٌ مِنْهَا
وَمَنْ يُشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُنْ لَهُ كِفْلٌ مِنْهَا
وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَوِيًّا (85)

¹ कुरआन करीम से हिदायत हासिल करने के लिए उस में गौर करने पर जोर दिया जा रहा है और उसकी सच्चाई जांचने के लिए एक स्तर (मेयार) भी बताया जा रहा है कि अगर यह किसी इंसान के जरिये लिखा हुआ होता (जैसा कि काफिरों का ख्याल है) तो इसके विषय और बयान किये गये हादसों में टकराव और एख्तिलाफ होता, क्योंकि यह एक छोटी किताब नहीं है। एक बड़ी और तफ़सीली किताब है, जिसका हर हिस्सा मोजिज़ा और अदब में बेमिसाल है, जबकि इंसान के जरिये बनाई किताब में जुबान का मेयार और उसकी कोमलता और सरलता स्थिर (कायम) नहीं रहती।

एक हिस्सा है और अल्लाह (तआला) हर चीज पर कुदरत रखने वाला है।

८६. और जब तुम्हें सलाम किया जाये तो उस से अच्छा जवाब दो, या उन्हीं लफ्जों को पलट दो, बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज का हिसाब लेने वाला है।

८७. अल्लाह वह है, जिस के सिवाय कोई (सच्चा) माबूद नहीं, वह तुम सब को जरूर कयामत के दिन जमा करेगा, जिस के (आने) में कोई शक नहीं, अल्लाह (तआला) से ज्यादा सच किस की बात होगी।

८८. तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफिकों के बारे में 'दो गुट हो रहे हो?' उन्हें तो उन के अमलों की वजह से अल्लाह (तआला) ने औघा कर दिया है! अब क्या तुम यह चाहते हो कि उसे राह दिखाओ, जिसे अल्लाह ने गुमराह कर दिया है, तो जिसे अल्लाह गुमराह कर दे कभी तुम उस के लिए कोई राह न पाओगे।

८९. वह तमन्ना करते हैं कि जैसे काफिर वे हैं तुम भी उनकी तरह ईमान का इंकार करने लगे और तुम सभी बराबर बन जाओ, इसलिए उनमें से किसी को हक्रीकी दोस्त न बनाओ^१ जब तक वह अल्लाह की राह में हिजरत न करें, फिर अगर (इस से) मुँह फेरें तो उन्हें पकड़ो^२ और क़त्ल करो जहाँ पाओ। होशियार! उन में से किसी को दोस्त और मददगार न समझ बैठो।

وَإِذَا حُيِّئْتُمْ بِهِ فَأَقْبِرُوا بِأَصْنَافِهَا أَوْ رُدُّوهُنَّ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا ﴿٨٦﴾

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِيكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْوَيْسَةِ
لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ وَمَنْ أَضِدِّيٰ مِنَ اللَّهِ حَتَّىٰ يُبَدِّلَ
﴿٨٧﴾

مَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِتْنَةٌ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُمْ
بِمَا كَسَبُوا ۗ أُرِيدُونَ أَنْ تَهْتَدُوا مِنْ أَعْدِ
اللَّهُ ۚ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ﴿٨٨﴾

وَدُّوا لَوْ تُكْفِرُونَ لَمَا كَفَرُوا ۖ فَتَلَوْنَ سَوَاءً وَلَا
تَسْتَعِدُّوهُم مِّنْهُم ۗ أَوْلِيَاءُ حَتَّىٰ يُهَاجَرُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَضَلُّوهُمْ ۖ وَقَاتَلُوهُمْ حَيْثُ
وَجَدْتُمُوهُمْ ۖ وَلَا تَسْتَعِدُّوهُم مِّنْهُم ۚ وَإِنَّا
﴿٨٩﴾

^१ यह सवाल इंकार के लिए है यानी तुम्हारे बीच इन मुनाफिकों के बारे में एकतलाफ नहीं होना चाहिए था, इन मुनाफिकों से मुराद वह लोग हैं जो ओहद की जंग के वन्त मदीना शहर के बाहर कुछ दूर जाने के बाद वापस आ गये थे कि हमारी बात नहीं मानी गयी।

^२ हिजरत (इस्लाम के लिए देश छोड़ना) इस बात का सबूत है कि अब यह खालिस मुसलमान बन गये हैं, इस हालत में दोस्ती और मुहब्बत जायेज होगी।

^३ यानी जब तुम्हें उन पर बश और हक़ हासिल हो जाये।

९०. लेकिन जो उस क़ौम से रिश्ता रखते हों जिनके और तुम्हारे बीच सुलह हो चुकी हो या जो तुम्हारे पास आयें तो उन के दिल तंग हो रहे हों कि तुम से लड़ें, और अपनी क़ौम से लड़ें, और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें तुम पर क़ूवत अता कर देता और वह जरूर तुम से लड़ते, तो अगर वह तुम से अलग रहे और लड़ाई न करें और तुम्हारी ओर सलामती का पैगाम पेश करें, तो (फिर) अल्लाह ने तुम्हारे लिये उन पर कोई राह जंग की नहीं बनाई है।

إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَى قَوْمِ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقًا أَوْ جَاءُوكُمْ حَوْرَتٍ صَدُورَهُمْ أَنْ يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ وَلَا تَوَّشَاءُ اللَّهُ لَسُلْطَتِهِمْ عَلَيْكُمْ فَلْتَقَاتِلُوهُمْ فَإِنْ امْتُزَّكُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَالْقَوَالِيكُمُ السَّلَامَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا ٩٠

९१. तुम कुछ दुसरो को पाओगे जो तुम से और अपनी क़ौम से महफ़ूज रहना चाहते हैं, और जब कभी वह फितना की तरफ फेरे जाते हैं तो उस में औंधे मुँह पड़ जाते हैं, अगर वह तुम से अलग न रहे और तुम से सुलह न करें और अपने हाथ न रोके तो उन्हें पकड़ो और जहाँ पाओ क़त्ल करो, यही वह है जिन पर हम ने तुम को खुली हुज्जत दिया है।

سَيَجِدُونَ آخَرِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلِّمَا رُدُّوْا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكَسُوا فِيهَا فَإِنْ لَمْ يَعْتَرِلُوكُمْ وَالْقَوَالِيكُمُ السَّلَامَ وَيُكَلِّمُوا أَيْدِيَهُمْ فَبَشِّرُوهُمْ وَأَقْبَلُوهُمْ حَتَّى تَقْتُلُوهُمْ وَلَا تُولِيَهُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِينًا ٩١

९२. किसी मुसलमान के लिये जायज नहीं कि किसी मुसलमान का क़त्ल कर दे, लेकिन चूक से हो जाये (तो और बात है) और जो इंसान किसी मुसलमान का क़त्ल चूक से कर दे तो उस पर एक मुसलमान गुलाम (या दासी) आज़ाद करना और मक़तूल के रिश्तेदारों को खून की क़ीमत देना है।^१ लेकिन यह और बात

وَمَا كَانَ لِيُؤْمِنَنَّ أَنْ يُقْتَلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَاةً وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَاةً فَتَجْزِيهِ رَقَبَةٌ أَوْ كَفَّارَةٌ أَوْ دِيَةٌ مَسْلُومَةٍ إِلَى أَهْلِهَا إِنْ كَانَ مِنَ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَجْزِيهِ رَقَبَةٌ أَوْ كَفَّارَةٌ أَوْ دِيَةٌ مَسْلُومَةٍ

^१ फितना से मुराद चिर्क भी हो सकता है। उसी चिर्क में लौटा दिये जाते, या फितना से मुराद लड़ाई है कि जब उन्हें मुसलमानों के साथ लड़ने के लिए बुलाया या लौटाया जाता है, तो वह उस पर तैयार हो जाते हैं।

^२ ग़लती की वजह और हालात कई एक हो सकती हैं, मक़सद है कि ख़्याल और इरादा क़त्ल करने का न हो, लेकिन किसी वजह से क़त्ल हो जाये।

^३ यह ग़लती से क़त्ल के गुनाह की सजा का बयान हो रहा है, जो दो रूप में है। एक कफ़ारा और तौबा के रूप में है, या एक मुसलमान गुलाम को आज़ाद करना और दूसरे इंसानी हुकूम के रूप में है, और वह है दियत (खून की क़ीमत) मरने वाले के खून के बदले मरने वाले के बग़िरसों को जो कुछ भी दिया जाये, वह दियत है। और दियत की भिन्नदार हद्दियों की बुनियाद

है कि वह माफ कर दें, और अगर वह मकतूल तुम्हारे दुश्मन कौम से हो और मुसलमान हो तो एक मुसलमान गुलाम आजाद करना जरूरी है, और अगर मकतूल उस कौम से है जिसके और तुम्हारे (मुसलमानों के) बीच सुलह है तो खून की कीमत उसके रिश्तेदारों को अदा करना है और एक मुसलमान गुलाम आजाद करना भी है, और जो न पाये उस की दो महीने लगातार रोजा रखना है! अल्लाह से माफ करवाने के लिए, और अल्लाह जानने वाला व हिक्मत वाला है।

९३. और जो कोई किसी मुसलमान को जान-बूझ कर कत्ल कर डाले उसकी सजा जहन्नम है, जिस में वह हमेशा रहेगा, उस पर अल्लाह (तआला) का ग़ज़व है।^१ उसे अल्लाह (तआला)

وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ
قَدِيمَةٌ مَسْلُوبَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ قَبِيَّةٍ
مُّؤْمِنَةٍ ۖ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامَ شَهْرَيْنِ
مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِنَ اللَّهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿٩٣﴾

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَدِّيًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ
خَالِدًا فِيهَا وَكَرِهَ اللَّهُ عَلَىٰ وَجْهِهِ
وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا ﴿٩٣﴾

पर सौ ऊँट या उसके बराबर नगद सोना, चांदी या रूपया के रूप में होगी।

टिप्पणी : ध्यान रहे कि जान बूझ कर कत्ल में खून का बदला खून है (जिसे क्रिसास कहते हैं)। या सज़ा के तौर पर दियत है, और सज़ा के तौर पर दियत की मिकदार सौ ऊँट है जो उम्र और सेहत के हिसाब से तीन तरह का होना चाहिए, जबकि भूल-चूक में कत्ल होने से सिर्फ दियत है, क्रिसास नहीं है।

- यानी अगर गुलाम आजाद करने की ताकत न हो तो पहली हालत और इस आखिरी हालत में दियत के साथ लगातार (बिना नागा) के दो माह रोजे हैं, अगर बीच में नागा हो गया तो पुनः नये सिर से रोजे रखने जरूरी होंगे, लेकिन दीनी वजह से नागा हो जाने पर नये सिर से रोजा रखने की जरूरत नहीं है। जैसे माहवारी, प्रसव रक्त या कठिन रोग की वजह से रोजा रखने में रुकावट हो, सफ़र को दीनी वजह मानने में एख़िलाफ़ है। (इब्ने कसीर)
- यह जान बूझकर किये गये कत्ल की सजा है। कत्ल तीन तरह का होता है : (१) अनजाने में कत्ल (जिसका बयान इस आयत से पहली आयत में है)। (२) जान बूझकर कत्ल की तरह (जो हदीस से साबित है)। (३) जान बूझकर कत्ल, जिसका मतलब है किसी का इरादये कत्ल से कत्ल किया गया हो, और इसके लिए उस साधन तंत्र का इस्तेमाल करना जिससे आम तौर पर कत्ल किया जाता है, जैसे तलवार, भाला वगैरह। इस आयत में मुसलमान के कत्ल पर बहुत सख्त चेतावनी (तंबीह) दी गयी है जैसे : इसकी सजा जहन्नम है, जिसमें हमेशा रहना होगा, इसके सिवाय अल्लाह तआला का ग़ज़व और उसकी लानत और बहुत बड़ा अज़ाब भी होगा, इतनी सख्त सजा एक ही वक्त में किसी दूसरे गुनाह में बयान नहीं की गई है, जिससे यह बाज़ेह होता है कि एक मुसलमान का कत्ल अल्लाह तआला के यहाँ कितना सख्त गुनाह है।

ने लानत की है और उस के लिए बहुत बड़ी सजा तैयार कर रखी है !

९४. हे ईमानवालो ! जब तुम अल्लाह की राह में जा रहे हो तो जाँच-पड़ताल कर लो और जो तुम से सलाम अलैक कहे तुम उसे यह न कहो कि तू ईमानवाला नहीं। तुम दुनियावी जिन्दगी के असवाब की खोज में हो तो अल्लाह (तआला) के पास बहुत से सुख के असवाब हैं, पहले तुम भी ऐसे ही थे, फिर अल्लाह (तआला) ने तुम पर एहसान किया, इसलिए तुम जरूर खोज (छानबीन) कर लिया करो, बेशक अल्लाह (तआला) तुम्हारे अमलों को अच्छी तरह जानता है।

९५. जो मुसलमान बिला वजह बैठे रहें और जो अल्लाह की राह में अपने तन-धन के साथ जिहाद करते हों बराबर न होंगे, अल्लाह ने उन्हें जो अपने मालों और जानों के साथ जिहाद करते हैं उन पर जो बैठे रहते हैं दर्जों में फ़जीलत दी है और वैसे तो हर एक को शुभवचन^१ दिया है, लेकिन अल्लाह ने जो जिहाद करने वाले हैं उनको बैठे रहने वालों पर बड़े अज़्र की फ़जीलत दी है।

९६. अपनी तरफ से दर्जे की भी, माफ़ी की भी और रहम की भी, और अल्लाह बरक़शने वाला रहम करने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ
اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَى إِلَيْكُمُ السَّلَامَ
لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
فَعِنْدَ اللَّهِ مَعَانِمٌ كَثِيرَةٌ ۖ كَذَلِكَ كُنْتُمْ
مِن قَبْلُ فَمَنْ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا ۗ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿٩٤﴾

لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ
أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ۖ فَضَلَّ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً ۗ
وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَى ۗ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ
عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿٩٥﴾

دَرَجَاتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۗ
وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٩٦﴾

हदीस में भी इसकी कड़ी आलोचना और इस पर सख्त चेतावनी का बयान है।

^१ यानी तन, मन और धन से जिहाद करने वालों को जो मुकाम हासिल होगा, जिहाद में हिस्सा न लेने वाले जबकि इस से महरूम रहेंगे, फिर भी अल्लाह तआला ने दोनों को भलाई का वादा किया है। इस से आलिमों ने यह मतलब निकाला है कि आम हालतों में जिहाद फ़र्ज नहीं, जरूरत के मुताबिक फ़र्ज है यानी अगर आवश्यकतानुसार लोग जिहाद में हिस्सा ले लें तो उस इलाके के दूसरे लोगों की ओर से इस फ़र्ज की अदायगी समझी जायेगी।

९७. जो लोग अपने आप पर जुल्म करने वाले हैं, जब फरिश्ते उनकी जान निकालते हैं तो कहते हैं कि तुम किस हालत में थे? वह कहते हैं कि हम जमीन में कमजोर थे,¹ तो वे सवाल करते हैं कि क्या अल्लाह की जमीन कुशादा न थी कि तुम उस में हिजरत कर जाते? इन्हीं लोगों का मुकाम जहन्नम है और वह बुरा मुकाम है।

९८. लेकिन जो मर्द, औरत और बच्चे मजबूर हैं जो कोई उपाय नहीं कर सकते और न रास्ता जानते हैं²

९९. तो बहुत मुमकिन है कि अल्लाह (तआला) उन्हें माफ कर दे, और अल्लाह माफ करने वाला बरूश्ने वाला है।

१००. और जो कोई अल्लाह की राह में हिजरत करेगा, वह जमीन पर बहुत से रहने की जगह भी पायेगा और कुशादगी भी, और जो कोई अपने घर से अल्लाह (तआला) और उस के रसूल (ﷺ) की तरफ निकल पड़ा, फिर उसे मौत ने पकड़ लिया हो तो भी जरूर उसका अज्र अल्लाह (तआला) के ऊपर होगा, और अल्लाह (तआला) माफ करने वाला रहीम है।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّيْتُمُ الْمَلَائِكَةَ ظَالِمِينَ أَنْفُسِهِمْ
قَالُوا فِيمَ كُنْتُمْ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي
الْأَرْضِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضَ اللَّهِ وَاسِعَةً
فَتُهَاجِرُوا فِيهَا قَالُوا لَيْكَ مَا دَرَبُهُمْ جَهَنَّمُ
وَسَاءَتْ مَصِيرًا (97)

إِنَّ الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ
وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً
وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا (98)

قَالُوا لَيْكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْطُو عَنْهُمْ
وَكَانَ اللَّهُ عَفُورًا عَقُورًا (99)

وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ
مُرْعًا كَثِيرًا وَسَعَةً وَمَنْ يُخْرَجْ مِنْ
بَيْتِهِ مِهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ
الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ
عَفُورًا رَحِيمًا (100)

¹ यहाँ "जमीन" से मुराद आयत के उतरने की फजीलत की बुनियाद पर मक्का और उसका करीबी इलाका है और अल्लाह की जमीन से मुराद मदीना है, लेकिन हुकम के बुनियाद पर आम धरती है यानी पहला मुकाम काफिरों का इलाका होगा, जहाँ इस्लाम की तालीम के हिसाब से काम करना कठिन हो जाये। और अल्लाह की जमीन से मुराद वह हर इलाका होगा जहाँ इंसान अल्लाह के दीन की पैरवी के मकसद से हिजरत करके जाते हैं।

² यह उन मर्दों, औरतों और बच्चों को इस हुकम से अलग किया है, जो वसायेल से महरूम और जो राह से भी अंजान थे। बच्चे अगरचे दीनी कानून की पैरवी करने के लिए मजबूर नहीं हैं, लेकिन यहाँ उनका बयान करके हिजरत की फजीलत को और वाजेह किया गया है कि बच्चे भी हिजरत करें या फिर यहाँ पर बालिग उम्र के करीब पहुँचने वाले बच्चे होंगे।

१०१. और जब ज़मीन में सफ़र करो तो तुम पर नमाज़ क़स्र करने (चार रक़अत की नमाज़ दो रक़अत पढ़ने में) कोई बुराई नहीं, अगर तुम्हें यह डर हो कि काफ़िर (विश्वासहीन) तुम्हें तकलीफ़ देंगे,^१ बेशक कुफ़रार तुम्हारे खुले दुश्मन है।

१०२. और जब आप उन में हों और उन के लिए नमाज़ को कायम करें तो चाहिए कि उनका एक गुट आप के साथ हथियार लिए खड़ा हो, फिर जब यह सज़्दा कर चुके तो यह हट कर तुम्हारे पीछे आ जायें और दूसरा गुट जिस ने नमाज़ नहीं पढ़ी है वह आ जाये, और तेरे साथ नमाज़ अदा करे और अपना वचाव और अपने हथियार लिए रहे, काफ़िर चाहते हैं कि तुम किसी तरह अपने हथियार और अपने सामानों से देखबर हो जाओ, तो वह तुम पर अचानक हमला कर दें^२ और हाँ, अपने हथियार उतारकर रखने में उस वक़्त तुम पर कोई बुराई नहीं जबकि तुम तकलीफ़ में हो, या वारिश् की वजह या रोग होने की वजह हो और

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِذَا فِيكُمْ مِنْ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِكُمْ أَنْ يَبْسُطُوا قُلُوبَهُمْ عَلَيْكُمْ ۚ وَكَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُّهِينًا ﴿١٠١﴾

وَإِذَا كُنْتُمْ فِيهِمْ فَأَقْبِتْ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقِمُوا طَائِفَةَ مِنْهُمْ مَعَكُمْ وَلْيَأْخُذُوا سِلَاحَهُمْ ۖ وَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ قَوْمِكُمْ ۖ وَلْيَأْتِ بِخَافِقَةٍ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكُمْ ۚ وَلْيَأْخُذُوا جُدْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ۚ وَدَلَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُمْ مَيْلَةً ۚ وَاحِدَةً ۖ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذَىٰ مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَنْ تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوا جُدْرَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا ﴿١٠٢﴾

^१ इस में सफ़र की हालत में नमाज़ क़स्र करना (चार रक़अत वाली नमाज़ को दो रक़अत ही पढ़ने) की इजाज़त दी जा रही है।—अगर तुम्हें डर हो— ग़ालिब हालात की बुनियाद पर है, क्योंकि उस समय पूरा अरब मैदाने जंग बना हुआ था, किसी तरफ़ का सफ़र खतरे से ख़ाली नहीं था, यानी यह रुकावट नहीं है कि अगर रास्ता में डर हो तो क़स्र का हुबूम है, क्योंकि कुरआन करीम के दूसरे मुक़ामों पर इसी तरह की शर्तों का बयान है जो ग़ालिब हालात से ऐसा मुमकिन हो सकता है। जैसे—“तुम अपनी दासियों को बदकारी के लिए मजबूर न करो, अगर वह इससे बचना चाहे”— चूँकि वह बचना चाहती थी इसलिए अल्लाह तआला ने बयान किया, नहीं तो इसका मतलब यह कदापि नहीं कि अगर वह तैयार हों तो तुम्हारे लिए ज़ायेज है कि तुम उन से कुकर्म करवा लिया करो।

^२ इस आयत में सलातुल ख़ौफ़ (डर के वक़्त की नमाज़) की आज्ञा, बल्कि हुबूम दिया जा रहा है। सलातुल ख़ौफ़ का मतलब है डर की नमाज़, यह उस वक़्त ज़ायेज है, जब मुसलमान और काफ़िरों की फ़ौजें आमने-सामने जंग के लिए तैयार खड़ी हों और एक पल की भी ग़फलत मुसलमानों के लिए बहुत ही नुक़सानदह साबित हो सकती है, ऐसे वक़्त में अगर नमाज़ का वक़्त आ जाये तो सलातुल ख़ौफ़ का हुबूम है।

अपने वचाव के सामान साथ में लिये रखो। बेशक अल्लाह तआला ने नकारने वालों के लिए रुसवाई का अजाब तैयार कर रखा है।

१०३. फिर जब तुम नमाज पढ़ चुको तो उठते, बैठते और लेटते अल्लाह (तआला) का जिक्र करते रहो^१ और शांति प्राप्त (हासिल) हो तो नमाज कायम करो, बेशक^२ नमाज मुसलमानों पर निश्चित और निर्धारित (मुकर्रर) वक़्त पर फ़र्ज़ की गयी है।^३

१०४. और उन लोगों का पीछा करने से सुस्ती न करो, अगर तुम्हें तकलीफ़ होती है, तो उन्हें भी तकलीफ़ होती है जैसे तुम्हें होती है, और तुम अल्लाह (तआला) से वह उम्मीदें रखते हो जो उन्हें नहीं, और अल्लाह (तआला) जानने वाला हिक्मत वाला है।

१०५. बेशक, हम ने तुम्हारी तरफ़ हक़ के साथ किताब उतारा है, ताकि तुम लोगों के बीच उस के हिसाब से इंसाफ़ करो जिस से अल्लाह (तआला) ने तुम्हें बाख़बर कराया, और ख़्यानत करने वालों के हिमायती न बनो।

१०६. और अल्लाह (तआला) से माफ़ी माँगो, बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

فَإِذَا أَقَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَادْكُرُوا اللَّهَ وِيَمًا وَكَعُودًا
وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ ۚ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا
الصَّلَاةَ ۚ إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَىٰ الْمُؤْمِنِينَ
كِتَابًا مَّقْرُونًا ﴿١٠٣﴾

وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ ۗ إِن تَكُونُوا تَأْمِنُونَ
فَأِنَّهُمْ يَأْتُونَ كَمَا تَأْتُونَ ۚ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ
مَا لَا يَرْجُونَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٠٤﴾

إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ
النَّاسِ بِمَا أَرَادَ اللَّهُ ۗ وَلَا تَكُن لِّلْكَافِرِينَ
حَصِيبًا ﴿١٠٥﴾

وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٠٦﴾

^१ मुराद यही डर की नमाज है, इस में चूँकि सहूलत दी गयी है, इसलिए इसको पूरा करने के लिए कहा जा रहा है कि खड़े, बैठे, और लेटे अल्लाह का बयान करते रहो।

^२ इस से मुराद यह है कि जब जंग के बादल छूट जायें तो फिर नमाज को उस के उसी तरीके के हिसाब से पढ़ना है, जो आम हालत में पढ़ी जाती है।

^३ इस में नमाज को मुकर्रर वक़्त से पढ़ने पर जोर दिया जा रहा है, जिस से मालूम होता है कि दीनी वजुहात के बग़ैर दो नमाजों को जमा करना सही नहीं है, क्योंकि इस तरह कम से कम एक नमाज अपने मुकर्रर वक़्त पर नहीं पढ़ी जायेगी, जो इस आयत के खिलाफ़ है।

१०७. और उनकी ओर से भगड़ा न करो जो खुद अपना ही विश्वासघात करते हैं, बेशक धोखेबाज पापी अल्लाह (तआला) को अच्छा नहीं लगता।

१०८. वह लोगों से तो छुप जाते हैं, लेकिन अल्लाह से नहीं छुप सकते, वह उन के साथ है जब कि वे रात में अप्रिय बातों की योजना बनाते हैं और अल्लाह उन के करतूत को घेरे हुये है।

१०९. हाँ, यह तुम लोग हो जो उन के हक में दुनिया में लड़े, लेकिन क़्यामत के दिन उन की तरफ से अल्लाह से कौन बहस करेगा और कौन उनका वकील बनकर खड़ा होगा।

११०. और जो भी कोई वुराई करे या खुद अपने ऊपर जुल्म करे, फिर अल्लाह से माफ़ी मांगे तो अल्लाह को बख़्शने वाला, रहम करने वाला पायेगा।

१११. और जो गुनाह करता है उसका बोझ उसी पर है,^१ और अल्लाह जानने वाला, हिक्मत वाला है।

११२. और जो कोई वुराई या गुनाह करता है फिर किसी बेगुनाह पर थोप देता है, उस ने खुला बुहतान और वहुत गुनाह किया।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَفُونَ أَنفُسُهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوَاتِمًا كَثِيرًا ﴿١٠٧﴾

يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ ۗ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَىٰ مِنَ الْقَوْلِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ﴿١٠٨﴾

هَآأَنْتُمْ هَآؤَآءِ ۖ جَدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَوةِ الدُّنْيَا ۗ فَمَن يُجَادِلِ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَمْ مَن يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿١٠٩﴾

وَمَن يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١١٠﴾

وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١١١﴾

وَمَن يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرُوهُ بَرَئًا فَكَذَّبَ بِبُرْهَانِهِ ۗ إِنَّهُ مِمَّنْ مُّبِينًا ﴿١١٢﴾

^१ यानी जब इस गुनाह की वजह से उसकी पकड़ होगी, तो कौन अल्लाह की पकड़ से उसे बचा सकेगा?

^२ इस विषय को दूसरी आयत में अल्लाह तआला फरमाता है :

﴿وَلَا تُؤْزِرُونَ وَآئِرَةً وَزَرَ الْآخِرَىٰ﴾

«कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा।» (सूर: वनी इस्राइल-१५)

यानी कोई किसी का उत्तरदायी (जबाबदेह) नहीं होगा, हर इंसान को वही कुछ मिलेगा जो कमा कर साथ ले गया होगा।

११३. और अगर आप पर अल्लाह का फज़ल और रहमत न होती तो उन के एक गुट ने आप को गुमराह करने की साजिश कर लिया था, लेकिन वह खुद को गुमराह करते हैं और वह आप को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते और अल्लाह ने आप पर किताब और इल्म उतारा है और आप जिसको नहीं जानते थे उसका इल्म दिया है और आप पर अल्लाह का भारी फज़ल है।

११४. उनकी ज़्यादातर कानाफूसी में कोई भलाई नहीं, लेकिन जिस ने एहसान या भलाई या लोगों के बीच सुधार के लिये हुक्म दिया^१ और जो यह काम अल्लाह की मर्जी की खोज के लिए करेगा^२ हम उसे हकीकत में बहुत बड़ा बदला देंगे।

११५. और जो सच्ची राह के वाजेह होने के बाद रसूल (मुहम्मद ﷺ) की मुखालफत करेगा और मुसलमानों के रास्ते के सिवाय खोज करेगा, हम उसे उसी ओर जिस ओर वह फिरता हो फेर देंगे, फिर हम उसे जहन्नम में झोंक^३ देंगे और वह बहुत बुरी जगह है।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ
لَهَمَّتْ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ أَنْ يُضِلُّوكَ
وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّونَكَ
مِنْ شَيْءٍ ۗ وَأَنْزَلْنَا اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ
وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ ۗ
وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا ﴿١١٣﴾

لَا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّنْ نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ
بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ۗ
وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ
نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١١٤﴾

وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ
لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ لُوَلِّهِ
مَا تَوَلَّىٰ وَنُصِّبْ بِهِ جَهَنَّمَ ۗ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ﴿١١٥﴾

^१ नजवा (कानफूसी) से मुराद वह बातें हैं जो मुनाफिक आपस में मुसलमानों के खिलाफ या एक-दूसरे के खिलाफ करते थे।

^२ यानी दान-पुण्य (सदकात), भलाई (जो हर तरह के सबाब को शामिल है) और लोगों के बीच सुधार करने के बारे में मशविरा सबाब पर आधारित हैं, जैसाकि इन कामों की फज़ीलत और अहमियत पर हदीस में भी ज़ोर दिया गया है।

^३ क्योंकि अगर इस्लास (यानी अल्लाह की खुशी का मक़सद) नहीं होगा, तो बड़े से बड़ा कर्म भी बेकार जायेगा, बल्कि फितना बन जायेगा। अल्लाह हमें फितना और दिखावे के काम से बचाये।

^४ हिदायत वाजेह हो जाने के बाद रसूलुल्लाह ﷺ के खिलाफ और मुसलमानों का रास्ता छोड़ कर किसी दूसरे रास्ते की पैरवी इस्लाम में से निकलना है, जिस पर यहाँ जहन्नम की धमकी दी गयी है।

११६. अल्लाह अपने साथ शिर्क किये जाने को कभी भी माफ नहीं करेगा और इस के सिवाय (गुनाहों) को जिस के लिये चाहे माफ कर देगा और जिस ने अल्लाह के साथ शिर्क किया वह बहुत दूर बहक गया।

११७. यह तो अल्लाह (तआला) को छोड़कर केवल देवियों को पुकारते हैं। और हकीकत में यह दुष्ट (मरदूद) शैतान को पुकारते हैं!²

११८. जिसे अल्लाह (तआला) ने लानत की है, और उस ने कहा है कि तेरे बन्दों में से मैं मुकर्रर हिस्सा ले कर रहूँगा।³

११९. और उन्हें राह से भटकाता रहूँगा और भूठी उम्मीदें दिलाता रहूँगा⁴ और उन्हें तालीम दूँगा कि जानवरों के कान चीरें⁵ और उन से कहूँगा कि अल्लाह की बनाई हुई शकल बिगाड़ दें। सुनो, जो अल्लाह को छोड़ कर शैतान को अपना दोस्त बनायेगा वह खुले घाटे में होगा।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلًّا بَعِيدًا ﴿١١٦﴾

إِنْ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ إِلَّا إِنْسَانًا ۗ وَإِنْ يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَرِيدًا ﴿١١٧﴾

لَعْنَةُ اللَّهِ مَوْ قَالَ لَا تَخْفَدَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَوِيْبًا مَفْرُوضًا ﴿١١٨﴾

وَلَا يُلَاقِيهِمْ وَلَا تَلْمِزُهُمْ وَلَا مَرْئِيَةً لَهُمْ فَلْيَتَّخِذْ أذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَا مَرْئِيَةً فليَغْوِينَ خَلَقَ اللَّهُ ط وَمَنْ يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِنْ دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُبِينًا ﴿١١٩﴾

¹ إن (इनास) (औरतों) से मुराद या तो मूर्तियाँ हैं, जिनके नाम स्त्रीलिंग में थे। जैसे لات (लात), हज़ी (उज़्ज़ा), मना (मनात) और मूज़ (नायेलः) आदि। या मुराद फरिश्ते हैं, क्योंकि अरब के मूर्तिपूजक फरिश्तों को अल्लाह की बेटीयाँ समझते थे और उनकी इबादत करते थे।

² मूर्ति, फरिश्तों और दूसरे लोगों की इबादत हकीकत में शैतान की इबादत है, क्योंकि शैतान ही इंसान को अल्लाह के दरवाजे से बहका कर दूसरे के दरबार में और चौखट पर भुकाता है, जैसा कि अगली आयत में है।

³ "मुकर्रर हिस्सा" से मुराद नज़र-नियाज़ भी हो सकता है, जो मूर्तिपूजक, कब्रों में दफन (गड़े) इंसान के नाम पर निकालते हैं और नरकवासियों का वह हिस्सा भी हो सकता है, जिन्हें शैतान भटका कर अपने साथ जहन्नम में ले जायेगा।

⁴ यह वह भूठी उम्मीदें हैं, जो शैतान के लालच और हस्तक्षेप (दखलअंदाजी) से पैदा होती हैं और इंसानों के भटकावे की वजह बनती हैं।

⁵ यह بحيرة (बहीरः) और سائبة (सायबः) जानवरों के निशान और शकल हैं। मुशरिक उनको मूर्तियों के नाम से दान कर देते थे, तो पहचान के लिए कान आदि चीर दिया करते थे।

१२०. वह उन से (जबानी) वादे करता रहेगा और हरे बाग दिखाता रहेगा (लेकिन याद रखो) बैतान के जो वादे उन से हैं वह पूरी तरह से धोखा है।

يَعِدُّهُمْ وَيَبْتَغِيهِمْ ۖ وَمَا يَعِدُّهُمْ الشَّيْطَانُ إِلَّا عُرْوًا (120)

१२१. यह वह लोग हैं जिनका मुकाम जहन्नम है, जहाँ से उन्हें छुटकारा नहीं मिलेगा।

أُولَٰئِكَ مَا لَهُمْ جَهَنَّمُ زَوْلًا يَعِدُّونَ عَنْهَا مَحِيضًا (121)

१२२. और जो ईमान लायें और भले काम करें, हम उन्हें उन जन्नतों में ले जायेंगे, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वह हमेशा रहेंगे। यह है अल्लाह का वादा जो बेशक सच है और अल्लाह से अधिक सच्चा अपनी बात में कौन हो सकता है?

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا ۖ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا (122)

१२३. तुम्हारी आरजूओं और अहले किताब की आरजूओं से कुछ नहीं होना है, जो बुरा करेगा उस की सजा पायेगा और अल्लाह के सिवाय अपना कोई वली और मददगार नहीं पायेगा।

لَيْسَ بِأَمَانِيكُمْ وَلَا أَمَانِي أَهْلِ الْكِتَابِ ۖ مَنْ يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ ۖ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا (123)

१२४. और जो ईमानवाला हो मर्द हो या औरत और वह नेक अमल करे, बेशक इस तरह के लोग जन्नत में जायेंगे और खजूर की गुठली की फाँक के बराबर भी उस का हक नहीं मारा जायेगा।

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يظْلَمُونَ نَقِيرًا (124)

१२५. और उस से अच्छे दीन वाला कौन हो सकता है जो अल्लाह के लिए पूर्ण आत्म-समर्पण (मुकम्मल खुद सपुर्दगी) कर दे और वह नेक भी हो, और इब्राहीम के दीन की पैरवी किया हो जो यकसू थे और इब्राहीम को अल्लाह ने अपना दोस्त बना लिया है।

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۗ وَاتَّخَذَ اللَّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلًا (125)

। यहाँ कामयाबी का एक मेयार और उसके एक नमूना का बयान किया जा रहा है, पैमाना यह है कि खुद को अल्लाह के हवाले कर दे, भलाई करने वाला बन जाये और इब्राहीम के दीन की पैरवी करे और हजरत इब्राहीम वह हैं, जिनको अल्लाह तआला ने अपना खलील बनाया।

१२६. और जो कुछ भी आसमानों और जमीन में है अल्लाह का है और अल्लाह हर चीज को घेरने वाला है ।

१२७. वे औरतों के बारे में आप से सवाल करते हैं, आप कह दें कि खुद अल्लाह तुम्हें उन के बारे में हुक्म देता है और जो कुछ किताब (कुरआन) में तुम्हारे सामने पढ़ा जाता है, उन यतीम औरतों (लड़कियों) के बारे में जिन को तुम उन का वाजिब हक्क नहीं देते और उन से शादी करना चाहते हो और कमजोर बच्चों के बारे में और यह कि तुम यतीमों के बारे में इंसाफ करो, और तुम जो भी नेक काम करोगे अल्लाह उसे अच्छी तरह जानने वाला है ।

१२८. और अगर किसी बीवी को अपने शौहर की बेरूखी और बेपरवाही का डर हो तो दोनों पर आपस में सुलह कर लेने में कोई बुराई नहीं^१ और सुलह बेहतर है, और लालच हर मन में शामिल कर दी गई है, और अगर तुम एहसान करो और तक्वा अख्तियार करो तो अल्लाह तुम्हारे करतूतों से बाखबर है ।

१२९. और तुम बीवियों के बीच कभी भी इंसाफ न कर सकोगे, अगरचे इसकी आरजू रखो, इसलिए तुम (एक की ओर) पूरी तरह न झुक जाओ कि दूसरी को अधर में लटकती हुई छोड़ दो, और अगर तुम सुधार कर लो और (नाइसाफ़ी से) बचो तो बेशक अल्लाह बख्शने वाला, रहम करने वाला है ।

وَاللّٰهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ

وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا ۝

وَيَسْتَفْتُوْكَ فِي النِّسَآءِ ۗ كُلُّ اللّٰهُ يَفْتِيْكُمْ

فِيْهِنَّ ۗ وَمَا يُثَلِّ عَلَيْكُمْ فِي الْكَيْسِ فِي

يَشَى النِّسَآءِ الْبَيِّنَ لَا تُوْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ

لَهُنَّ وَتُرْعَبُوْنَ اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ

وَالْمُسْتَغْفِيْنَ مِنَ الْوٰلِدٰنِ وَاَنْ تُكُوْمُوْا

لِيَتَشَى بِالْقِسْطِ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ

يَاۤنَ اللّٰهُ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ۝

وَإِن مَّرَأَةً خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَنْ يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا

وَالصُّلْحُ خَيْرٌ وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ وَإِن

تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ

خَبِيرًا ۝

وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْا أَنْ تُعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ

فَلَا تَبْلُوْا كَلِمَ السَّبِيْلِ فِتْنَةً وَهِيَ كَالْمَعْلَقَةِ ۗ وَإِن

تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝

^१ शौहर अगर किसी वजह से अपनी बीवी को पसन्द न करे और उस से दूरी और बेरूखी और इंकार रोज़ का अमल बना ले या एक से अधिक बीवियाँ होने की हालत में किसी कम खूबसूरत बीवी से दूर रहे तो बीवी अपना कुछ हक्क छोड़ कर शौहर से सुलह कर ले, तो इम सुलह से शौहर-बीवी पर कोई गुनाह न होगा, क्योंकि सुलह हर हालत में बेहतर है । मोमिनो की माँ हज़रत सौदा (رضی اللہ عنہا) ने भी अपने बुढ़ापे में अपनी बारी हज़रत आयेशा को दे दिया था, जिसे नबी ﷺ ने कुबूल किया था । (सहीह बुख़ारी, मुस्लिम, किताबुन निकाह)।

१३०. और अगर दोनों जुदा हो जायें तो अल्लाह अपनी रहमत से दोनों को बेनियाज कर देगा, और अल्लाह कुशादगी वाला हिक्मत वाला है।

१३१. और आसमानों और जमीन का सब कुछ अल्लाह ही का है, और हम ने तुम से पहले के लोग जो किताब दिये गये थे, उन को और तुम को यही हुक्म दिया है कि अल्लाह से डरो और अगर तुम न मानो तो बेशक जो आसमानों में और जमीन में है सब अल्लाह ही का है और अल्लाह बेनियाज, तारीफ किया गया है।

१३२. और जो भी आसमानों में और जमीन में है सभी अल्लाह का है और अल्लाह काम बनाने वाला बस है।

१३३. हे लोगो ! अगर वह चाहे तो तुम सब को ले जाये और दूसरों को ले आये, और अल्लाह इस पर पूरी क़ुदरत रखने वाला है।

१३४. जो इंसान दुनियावी बदला चाहता हो, तो (याद रखो कि) अल्लाह के पास दुनिया व आखिरत (दोनों का) बदला मौजूद है और अल्लाह सुनता देखता है।

१३५. हे ईमानवालो! इसाफ़ पर मजबूत रहने वाले और अल्लाह के लिये सच गवाही देने वाले बन जाओ, अगरचे वह खुद तुम्हारे अपने और माँ-बाप और रिश्तेदारों के^१ खिलाफ़ हो, अगर वह इंसान धनी हो तो या गरीब हो तो उन दोनों से अल्लाह का रिश्ता ज़्यादा है^२ इसलिए

وَأَنْ يَتَقَرَّبَا إِلَى اللَّهِ كَلًّا مِنْ سَعْيِهِ ۖ
وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا ﴿١٣٠﴾

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَلَقَدْ
وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰتٰوْا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِتٰكُمْ
اَنْ اٰتِقُوا اللَّهَ ۗ وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيْزًا
حَكِيْمًا ﴿١٣١﴾

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿١٣٢﴾

اِنْ يَشَآءْ يُدْرِهٖمَكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَاَيَّ اٰمِرِيْنَ ۗ
وَكَانَ اللَّهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ﴿١٣٣﴾

مَنْ كَانَ يُرِيْدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللَّهِ ثَوَابٌ
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا ﴿١٣٤﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ
شٰهَدَآءَ لِلّٰهِ وَاَوْعٰى اَنْفُسِكُمْ اَوْ الْوَالِدِيْنَ
وَالْاَقْرَبِيْنَ ۗ اِنْ يَكُنْ عَضِيْبًا اَوْ فَقِيْرًا فَاِنَّهُ
اَوْلىٰ بِهٖمَا ۗ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰى اِنْ تَعَدٰوْا ۗ

^१ इस में अल्लाह तआला ने ईमानवालों को इसाफ़ कायम करने और सच्ची गवाही देने पर जोर दिया है, चाहे उसकी वजह से उनको खुद या माँ-बाप और रिश्तेदारों को नुकसान ही क्यों न उठाना पड़े, इसलिए कि सच्चाई सब से बड़ी है और प्रभावशाली (गालिब) है।

^२ यानी किसी धनवान के धन की वजह से छूट दी जाये, और न किसी गरीब की गरीबी का डर तुम्हें सच बात कहने से रोके बल्कि अल्लाह इन दोनों से तुम्हारे ज़्यादा करीब और अच्छा है।

इसाफ करने में मनमानी न करो और अगर गलत वयान दोगे या न मानोमे तो अल्लाह तुम्हारे अमल से बाखबर है।

१३६. हे ईमानवालो! अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) और उस किताब (पाक कुरआन) पर जिसे उस ने अपने रसूल (ﷺ) पर उतारी है और उन किताबों के ऊपर ईमान लाओ जो इस से पहले उतारी गयी, और जो अल्लाह और उस के फरिश्तों और उसकी किताबों और उस के रसूलों और क्रयामत के दिन को नहीं माने वह बहुत दूर बहक गया।

१३७. बेशक जो ईमान लाये फिर नकार दिये, फिर ईमान लाये फिर इंकार किये और इंकार में बढ़ गये, अल्लाह हकीकत में उन्हें माफ नहीं करेगा और न सीधा रस्ता दिखायेगा।

१३८. मुनाफिकों को बाखबर कर दो कि उन के लिये दुःखद अजाब जरूरी है।

१३९. जो मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को दोस्त बनाते हैं, क्या वह उन के पास इज्जत की खोज करते हैं? (तो याद रहे कि) सभी इज्जत अल्लाह के हक में है।

१४०. और अल्लाह (तआला) ने तुम पर अपनी किताब (पाक कुरआन) में यह हुकम उतारा है कि जब तुम अल्लाह की आयतों के साथ इंकार और मजाक होते सुनो तो उनके साथ उस मजलिस में न बैठो, जब तक कि वे दूसरी बात में न लग जायें, क्योंकि इस वक़्त तुम उन्हीं के समान होगे, बेशक अल्लाह मुनाफिकों और

وَأَنْ تَلَوْا أَوْ تَعْرَضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ﴿١٣٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَى رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ
الَّذِي أُنزِلَ مِنْ قَبْلُ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ
وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿١٣٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا
ثُمَّ أَرَادُوا كُفْرًا ثُمَّ لَمْ يَكُنِ اللَّهُ يَغْفِرْ لَهُمْ وَلَا
يَهْدِي لَهُمْ سَبِيلًا ﴿١٣٧﴾

بَشِيرِ الْمُنَافِقِينَ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا

إِلَّا الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ
الْمُؤْمِنِينَ أَيْبَتَعُونَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ
الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا ﴿١٣٩﴾

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَعَيْتُمْ
أَيْتَ اللَّهُ يَكْفُرْ بِهَا وَيَسْتَهْزَأْ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا
مَعَهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ وَإِذَا كُنْتُمْ
إِذَا تَشَأْتُمْ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ
فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا ﴿١٤٠﴾

1 यानी मना करने के बावजूद अगर तुम ऐसी मजलिसों में जहाँ अल्लाह की आयतों का मजाक उड़ाया जा रहा हो बैठोगे और उसे रोकोगे नहीं, तो फिर तुम भी उन के बराबर गुनाह के हिस्सेदार बनोगे।

काफिरों (विश्वासहीनों) को जहन्नम में इकट्ठा करने वाला है।

१४१. जो तुम्हारे बारे में इंतजार (प्रतीक्षा) करते हैं, फिर अगर तुम्हारी जीत अल्लाह की तरफ से हो तो ये कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे और अगर विश्वासहीनों (काफिरों) को जरा-सी कामयाबी मिले तो कहते हैं कि क्या हम ने तुम्हें घेर नहीं लिया और मुसलमानों से नहीं बचाया था? तो क़्यामत (प्रलय) के दिन अल्लाह ही तुम्हारे बीच फैसला करेगा और अल्लाह कभी भी काफिरों को मुसलमानों पर कोई रास्ता (गल्बा) नहीं देगा।

१४२. वेशक मुनाफिकीन अल्लाह (तआला) से छल कर रहे हैं, और वह उन्हें उस छल का बदला देने वाला है, और जब नमाज़ को खड़े होते हैं, तो बड़ी सुस्ती की हालत में खड़े होते हैं^१ सिर्फ लोगों को दिखाते हैं^२ और अल्लाह की याद बस बहुत कम करते हैं।

وَالَّذِينَ يَرْتَابُونَ يَكْفُرُونَ ۚ إِنَّ كَافِرًا لَّكُم مَّقْتُلٌ مِّنْ
اللَّهِ قَالُوا لَمْ نَكُنْ مَعَكُمْ ۗ وَإِن كَانَ لِلْكَافِرِينَ
نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا لَمْ يَنْتَهِزُوا عَلَيْكُمْ وَاَتَاكُمْ مِنْ
الْمُؤْمِنِينَ فَآلَهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ وَكَونَ
يَجْعَلُ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا ﴿١٤١﴾

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ
وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كَسَالًا ۗ يُرَاءُونَ
النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٤٢﴾

^१ नमाज़ इस्लाम का खास रुबन है और सब से बड़ा अमल है, और इस में भी वह काहिली और सुस्ती का दिखावा करते थे, क्योंकि उनका दिल ईमान और अल्लाह के डर और पाकी से महरूम था। यही वजह थी कि ईशा (रात) और फ़ज्र (सुबह) की नमाज़ें खास तौर से उन पर भारी थी, जैसाकि नबी ﷺ का फ़रमान है।

«أثقل الصلاة على المنافقين صلاة العشاء وصلاة الفجر...»

«मुनाफिकों के ऊपर ईशा और फ़ज्र की नमाज़ सब से भारी है।» (सहीह बुखारी, मबाकीतुसस्लात, सहीह मुस्लिम, कित़ाबुल मसाजिद)

^२ यह नमाज़ भी वह मक्कारी और दिखावे के लिए पढ़ते थे ताकि मुसलमानों को धोखा दे सकें।

१४३. वह बीच में ही असमंजस्य (शक व शुब्हा) में हैं, न पूरी तरह से उनकी ओर न जायज तरीके से इन की तरफ, और जिसे अल्लाह (तआला) भटका दे, तो तू उस के लिए कोई रास्ता नहीं पायेगा।

१४४. हे ईमानवालो! ईमानवालों को छोड़कर काफिरों को दोस्त न बनाओ, क्या तुम यह चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह (तआला) की खुली हज्जत कायम कर लो।

१४५. मुनाफिकीन तो बेशक (निःसदेह) जहन्नम के सब से निचले दर्जे में जायेंगे। नामुमकिन है कि तू उनका कोई मदद करने वाला पा ले।

१४६. हाँ, अगर माफी माँग लें और सुधार कर लें और अल्लाह (तआला) पर पूरा यकीन करें और सच्चे तौर से अल्लाह ही के लिए दीनी काम करें, तो यह लोग ईमानवालों के साथ हैं। अल्लाह (तआला) ईमानवालों को बहुत बड़ा बदला देगा।

१४७. अल्लाह (तआला) तुम्हें सजा देकर क्या करेगा, अगर तुम शुकुगुजार रहो और ईमान के साथ रहो? और अल्लाह (तआला) बहुत इज्जत करने वाला पूरा जानने वाला है।

مُدْبِدًا بَيْنَ بَيْنَ ذَلِكَ لَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَلَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۗ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَهُوَ لِئَلَّا يَجِدَ لَهُ سَبِيلًا ﴿١٤٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۗ أَتُرِيدُونَ أَنْ تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿١٤٤﴾

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرَجَاتِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ۗ وَهُمْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا ﴿١٤٥﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ۗ وَسَوْفَ يُؤْتِي اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٤٦﴾

مَا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَآمَنْتُمْ ۗ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا ﴿١٤٧﴾

१ जहन्नम का सब से निचला दर्जा ماوية (हाबियः) कहलाता है, अल्लाह से अल्लाह (तआला) मुनाफिकों के बयानों अमलों और बुराईयों से हम सभी मुसलमानों की अल्लाह तआला हिफाजत करे।

२ यानी मुनाफिकों में से जो इन चार बातों का साफ दिल से एहतेराम करेगा, वह जहन्नम में जाने के बजाय जन्नत में ईमानवालों के साथ होगा।

१४८. अल्लाह बुराई के साथ उंची आवाज से मूहव्वत नहीं करता, लेकिन मजलूम को इस की इजाजत है और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है।

१४९. अगर तुम कोई नेक काम खुल कर करो या छिपाकर या किसी बुराई को माफ करते हो, तो बेशक अल्लाह (तआला) माफ करने वाला, कुदरत वाला है।

१५०. जो लोग अल्लाह और उस के रसूलों पर इमान नहीं रखते हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उस के रसूलों के बीच अलगाव करें और कहते हैं कि हम कुछ को मानते हैं और कुछ को नहीं मानते और इस के बीच रास्ता बनाना चाहते हैं।

१५१. यकीन करो, कि यह सभी लोग असली काफिर हैं! और काफिरों के लिये हम ने बहुत सख्त अजाब तैयार कर रखा है।

१५२. और जो अल्लाह और उस के रसूलों पर इमान लाये और उन में से किसी के बीच इख्तिलाफ नहीं किये उन्हीं को अल्लाह उनका पूरा बदला देगा और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

१५३. आप से अहले किताब यह सवाल करते हैं कि आप उन पर आसमान से कोई किताब उतारें^२ तो उन्होंने मूसा से इस से बड़ी माँग की थी और कहा कि हमें वाजेह तौर से अल्लाह

لَا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوِّءِ مِنَ الْقَوْلِ
إِلَّا مَنْ ظَلِمَ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا ﴿١٤٨﴾

إِنْ تَتُوبَا خَيْرًا أَوْ تَخْفَوْهُ أَوْ تُخْفَوُا عَنْ سُوءِ
فَاتَّكَ اللَّهُ كَانَ عَفْوًا قَدِيرًا ﴿١٤٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ
أَنْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيَقُولُونَ نُؤْمِنُ
بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَنْ يَتَّخِذُوا
بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلًا ﴿١٥٠﴾

أُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ
عَذَابًا مُهِينًا ﴿١٥١﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ
أَحَدٍ مِنْهُمْ أُولَئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أَجْرَهُمْ
وَكَانَ اللَّهُ عَفْوًّا رَحِيمًا ﴿١٥٢﴾

يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتَابًا
مِنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىٰ أَكْبَرَ مِنْ ذَلِكَ
فَقَالُوا إِنَّا لِلَّهِ جَهْرَةٌ فَاتَّخَذْنَا لَهُمُ الضُّعْفَةَ

^१ अहले किताब के बारे में पहले बयान हो चुका है कि वह कुछ नबियों को मानते और कुछ को नहीं मानते। जैसे यहूदी हजरत ईसा और हजरत मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को नहीं मानते, और ईसाई हजरत मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को कुबूल नहीं करते, अल्लाह तआला ने फरमाया कि नबियों के बीच फर्क करने वाले पक्के काफिर हैं।

^२ यानी जिस तरह हजरत मूसा عليه السلام तूर पहाड़ पर गये और तख्तियों पर लिखी हुई तौरात लेकर आये, उसी तरह आप आसमान पर जाकर लिखा हुआ कुरआन मजीद लेकर आइये, यह माँग सिर्फ फितना, इंकार करने और हसद की बिना पर था।

को दिखाओ, फिर उन्हें बिजली ने घेर लिया उन के जुल्म की वजह से फिर उन्होंने बाजेह दलीलों के आ जाने के बाद बछड़े को (पूज्य) बना लिया, और हम ने उन्हें माफ कर दिया और मूसा (नबी) को खुली दलील दिया।

१५४. और उन से वादा लेने के लिए तूर (पहाड़) हम उन के ऊपर ले आये और उन्हें हुकम दिया कि सज्दा करते हुए दरवाजे में दाखिल हो और यह भी हुकम किया कि शनिवार के दिन उल्लंघन (तजावुज) न करना और हम ने उन से सख्त से सख्त वादा लिया।

१५५. ऐसा उन के वादा खिलाफी करने और अल्लाह की आयतों के इकार और बिला वजह रसूलों (ईशदतों) के कत्ल करने और उन के इस कौल की वजह से हुआ कि हमारे दिल ढँके हुये हैं (नहीं) अल्लाह ने उन के कुफ्र की वजह से उन के दिलों पर मुहर लगा दी है, इसलिये यह थोड़े ही ईमान रखते हैं।

१५६. और उन के कुफ्र की वजह और मरियम पर बूहतान लगाने की वजह से।

१५७. और उन के यह कहने की वजह से कि हम ने मसीह, मरियम के बेटे ईसा, अल्लाह के रसूल को कत्ल कर दिया, हालांकि न तो उन्होंने कत्ल किया न उन्हें फासी दी^१ लेकिन उन के

يُظْلِمُهُمْ ثُمَّ أَخَذُوا الْحَبْلَ مِنَ بَعْدِ مَا
جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ فَعَقَبْنَا عَنْ ذَلِكَ وَأَتَيْنَا
مُوسَى سُلْطَانًا مُّبِينًا ﴿١٥٣﴾

وَرَضْنَا قَوْلَهُمُ الظُّورَ بَيِّنَاتٍ لَهُمْ وَقُلْنَا لَهُمْ
اِضْلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوا
فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ﴿١٥٤﴾

فِيمَا نَقَضْتُمْ مِيثَاقَهُمْ وَكَفَرْتُمْ بِآيَاتِ اللَّهِ
وَقَتْلِهِمُ الْأَنْبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا
غُلْفٌ أَذِلَّةٌ فَطَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا
يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٥٥﴾

وَبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَى مَرْيَمَ بُهْتَانًا
عَظِيمًا ﴿١٥٦﴾

وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ
رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِنْ

^१ इस से मुराद यूसुफ बढई के साथ हजरत मरियम के गलत सम्बन्ध का आरोप (इल्जाम) है, आजकल भी कुछ लोग इस बहुत बड़े गुनाह (इल्जाम) को एक "हकीकत" साबित करने पर तुले हुए हैं और कहते हैं कि यूसुफ बढई (अल्लाह की पनाह) हजरत ईसा के बाप थे। और इस तरह (हजरत) ईसा के बिना बाप के चमत्कारी जन्म का इकार करते हैं।

^२ इस से बाजेह हुआ कि यहूदी हजरत ईसा के कत्ल या फासी देने में कामयाब नहीं हुए, जैसेकि सूर: आले इमरान की आयत नं. ५५ की टिप्पणी में मुब्तसर बयान आ चुका है।

लिये शवीह बना दिया गया !¹ यकीन करो कि ईसा के बारे में इखितलाफ़ करने वाले उन के बारे में शक में है, उन्हें इसका कोई इल्म नहीं सिवाय गुमान वाली बातों पर काम करने के, इतना तय है कि उन्होंने उनका क़त्ल नहीं किया।

१५८. बल्कि अल्लाह (तआला) ने उन्हें अपनी तरफ़ उठा लिया,² और अल्लाह जबरदस्त हिक्मत वाला है।

१५९. अहले किताब में से कोई ऐसा न बाकी बचेगा जो (हज़रत) ईसा (عليه السلام) की मौत से पहले उन पर ईमान न लाये और क़्यामत के दिन वह उन पर गवाह होंगे।

१६०. यहूदियों के जुल्म की वजह से हम ने उन पर हलाल चीज़ें हराम कर दिया और उन के अल्लाह के रास्ते से ज़्यादा (लंगो) को रोकने की वजह से।

१६१. और उन के व्याज लेने की वजह से जिस से उन्हें रोक दिया गया था, और लोगों का माल नाहक लेने से, और हम ने उन में से काफ़िरो के लिये दुःखद अज़ाब तैयार किया है।

شِبْهَهُمْ ۖ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ ۗ مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الْكُفْرِ ۗ وَمَا كَتَبُوا بِقَبْلِهِ ۗ (157)

بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا (158)

وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لِيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ ۗ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شِهَادًا (159)

فَيُظَلِّمُونَ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ وَكَانُوا عَلَيْهِمْ كَافِرِينَ ۗ أَجَلَتْ لَهُمْ وِصْدِقَتُهُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا (160)

وَأَخَذْنَا مِنْهُمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْبَرَهُمْ ۗ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ۗ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا (161)

¹ इसका मतलब यह है कि जब हज़रत ईसा को यहूदियों की योजना का पता चला तो उन्होंने अपने पैरोकारों को, जिनकी तादाद १२ या १७ थी, जमा किया और फ़रमाया कि तुम में से कौन मेरी जगह पर क़र्बानी देने को तैयार है? ताकि अल्लाह तआला उसकी शक़्लो सूरत मेरी जैसी बना दे, एक नौजवान इसके लिए तैयार हो गया, इसलिए हज़रत ईसा (عليه السلام) को वहाँ से आसमान पर उठा लिया गया, उसके बाद यहूदी आये और उन्होंने उस नौजवान को फाँसी पर चढ़ा दिया, जिसे ईसा की तरह बना दिया गया था, यहूदी यही समझते रहे कि हम ने हज़रत ईसा को फाँसी पर चढ़ा दिया। हकीकत यह है कि हज़रत ईसा वहाँ मौजूद ही नहीं थे, वह जिन्दा अपने जिसम के साथ आसमान पर उठाये जा चुके थे। (इब्ने कसीर और फतहूल क़दीर)

² यह हकीकत है कि अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से हज़रत ईसा को जिन्दा आसमान पर उठा लिया और मृतवातिर सहीह हदीस से भी इस बात की ताईद होती है। यह हदीसों, हदीस की सभी किताबों के अलावा सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में लिखी हुई है। इन हदीसों से आसमान पर उठा जाने के सिवाय क़्यामत से पहले उनके ज़मीन पर उतरने और दूसरी बातों का वयान है।

१६२. लेकिन उनमें जो कामिल और मजबूत इल्म वाले हैं,^१ और ईमानवाले हैं जो उस पर ईमान लाते हैं, जो आप की तरफ उतारा गया, और जो आप से पहले उतारा गया और नमाज़ को कायम करने वाले हैं, जकात को अदा करने वाले हैं, अल्लाह पर और कयामत के दिन पर ईमान रखने वाले हैं, यह वह है जिन्हें हम बहुत बड़ा बदला अता करेंगे।

१६३. वेशक हम ने आप की तरफ उसी तरह बह्यी की है, जैसे कि नूह (ﷺ) और उन के बाद के नबियों की तरफ हम ने बह्यी की, और इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक और याकूब और उनकी औलादों पर और ईसा व अय्यूब और यूनस और हाकून और सुलैमान की तरफ। और हम ने दाऊद (ﷺ) को जबूर अता की।

१६४. और आप से पहले के बहुत से रसूलों के बाक़ेआत हम ने आप से बयान किये हैं,^२ और बहुत से रसूलों की नही भी की है^३ और मूसा से अल्लाह ने सीधे बात की।

لَكِنَ الرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِآيَاتِهِ وَالْيَوْمِ الْأَخِيرِ ۗ أُولَٰئِكَ سَنُعْطِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٦٢﴾

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالْيُسُفِّ بْنِ مَرْيَمَ ۗ وَأَوْحَيْنَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ ۗ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ ۗ وَيَسَىٰ وَالْيُسُفَّ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ ۗ وَآتَيْنَا دَاوُدَ زُبُورًا ﴿١٦٣﴾

وَوَسَّلْنَا قَدْ قَضَيْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۗ وَسَلْنَا لَمْ نَقْضِهِمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَلَوُّنًا ﴿١٦٤﴾

^१ इन से मुराद हजरत अब्दुल्लाह बिन सलाम वगैरह हैं, जो यहूदियों में से मुसलमान हुए थे।

^२ जिन रसूलों के नाम और उन के बाक़ेआत कुरआन में बयान किये गये हैं, उनकी तादाद २५ है। (१) आदम (२) इदरीस (३) नूह (४) हूद (५) स्वालेह (६) इब्राहीम (७) लूत (८) इस्माईल (९) इसहाक (१०) याकूब (११) यूसुफ (१२) अय्यूब (१३) शुऐब (१४) मूसा (१५) हाकून (१६) यूनस (१७) दाऊद (१८) सुलैमान (१९) इलियास (२०) अल-यसअ (२१) जकरिया (२२) यहिया (२३) ईसा (२४) जुलक़िफ़ल, ज़्यादातर राबियों के नजदीक (२५) हजरत मोहम्मद सलवातुल्लाह व सलामुह अलैहि व अलैहिम अजमईन।

^३ जिन नबियों और रसूलों के नाम और बाक़ेआत कुरआन में बयान नहीं हैं उनकी तादाद कितनी है? अल्लाह तआला ही अच्छी तरह से जानता है। एक हदीस में जो बहुत मशहूर है एक लाख चौबीस हजार और एक हदीस में आठ हजार बताई गयी है, लेकिन यह क़ौल बहुत कमजोर है, कुरआन और हदीस से सिर्फ यही मालूम होता है कि मुखतलिफ बक़्त में और हालतों में ख़ुशख़बरी देने वाले और होशियार करने वाले (नबी) आते रहे हैं, आखिर में यह नबूवत का सिलसिला हजरत मोहम्मद ﷺ पर ख़तम हो गया। आप ﷺ से पहले कितने नबी आये उनकी सही तादाद का इल्म सिर्फ अल्लाह को है, आप ﷺ के बाद जितने भी लोग नबूवत का दावा करें वह दज़ाल और भूटे हैं, और उन पर ईमान लाने वाले इस्लाम से बाहर हैं, और मोहम्मद ﷺ की उम्मत से अलग एक मुखालिफ उम्मत है। जैसे- बहाई, बाबिया और मिर्जाई उम्मत।

१६५. (हम ने इन्हें) खुशखबरी और आगाह करने वाला रसूल बनाया, ताकि लोगों को कोई बहाना रसूलों की भेजने के बाद अल्लाह (तआला) पर न रह जाये, और अल्लाह (तआला) बड़ा जबरदस्त और हिक्मत वाला है।

१६६. जो कुछ आप की तरफ उतारा है, उस वारे में अल्लाह तआला खुद गवाही देता है कि उसे अपने इल्म से उतारा है, और फरिश्ते भी गवाही देते हैं और अल्लाह (तआला) की गवाही बस है।

१६७. बेशक जिन्होंने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते (दीन) से रोकवा वह बहुत दूर भटक गये।

१६८. बेशक जिन्होंने कुफ्र किया और जुल्म किया, अल्लाह उन्हें माफ नहीं करेगा न उन्हें किसी राह की हिदायत करायेगा।¹

१६९. लेकिन जहन्नम का रास्ता, जिस में वह हमेशा रहेंगे और यह अल्लाह पर आसान है।

१७०. हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से सच लेकर रसूल (मुहम्मद ﷺ) आ गये उन पर ईमान लाओ, तुम्हारे लिये बेहतर है और अगर तुम ने नकार दिया तो आसमानों और जमीन में जो भी है अल्लाह का है और अल्लाह जानने वाला हिक्मत वाला है।

१७१. हे अहले किताब! अपने दीन में गुल न करो² और अल्लाह के ऊपर सच ही बोलो, बेशक मरियम के बेटे ईसा मसीह सिर्फ अल्लाह

رُسُلًا تُبَشِّرِينَ وَنُذِرِينَ لَعَلَّ يَكُونَ لِلنَّاسِ
عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ ۖ وَكَانَ اللَّهُ
عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿١٦٥﴾

لَكِنِ اللَّهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهُ
بِعِلْمِهِ ۗ وَالْمَلَكَةُ يَشْهَدُونَ ۗ وَكَفَى
بِاللَّهِ شَهِيدًا ﴿١٦٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ
فَإِنَّ صَدُورَهُمْ لَصَلَاتٌ ۖ بَعِيدَةٌ ﴿١٦٧﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَنُّوا أَنَّهُمْ لَمْ يَكُنِ
اللَّهُ لِيُغْفِرْ لَهُمْ وَلَا لِيُهْدِيَهُمْ طَرِيقًا ﴿١٦٨﴾

إِلَّا طَرِيقًا جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۗ
وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٦٩﴾

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِن
رَبِّكُمْ فَآمِنُوا خَيْرًا لَكُمْ ۖ وَإِن تَظَاهَرُوا
عَٰلَيْهِ فَمَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَكَانَ اللَّهُ
عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٧٠﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلِبُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا
عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ ۗ إِنَّهَا السَّبْحُ عِندَ رَبِّنَا

¹ क्योंकि लगातार अधर्म (कुफ्र) और जुल्म करके उन्होंने अपने दिलों को काला कर लिया है, जिस से अब उनकी हिदायत और नजात की कोई उम्मीद की किरण नहीं दिखायी देती।

² غلظ का मतलब हद से सिबा (किसी चीज को बढ़ा-चढ़ा कर बयान करना) है। जैसे ईसाईयों ने हजरत ईसा और उनकी माँ के बारे में किया कि उनको रिसालत और बन्दगी के मुकाम से उठा कर माबूद के पद पर आसीन कर दिया, और उनकी अल्लाह की तरह इबादत करने लगे, इसी तरह हजरत ईसा के मानने वालों को भी गुलू का प्रदर्शन करके उन्हें मासूम (प्राकृतिक निष्पाप) बनाकर उन्हें हाराम और हलाल बनाने का हक दे दिया।

के रसूल और कलिमा हैं।¹ जिसे मरियम की तरफ डाल दिया और उसकी तरफ से रूह है, इसलिए अल्लाह और उस के रसूलों पर इमान लाओ और न कहो कि अल्लाह तीन है,² रुक जाओ यह तुम्हारे लिये भला है। बेशक तुम्हारा इलाह सिर्फ एक अल्लाह है, वह पाक है इस से कि उसकी कोई औलाद हो, उसी के लिए है जो आसमानों और जमीन में है और अल्लाह काम बनाने के लिये काफी है।

१७२. मसीह अल्लाह के दास होने से कभी भी नफरत नहीं करते और न करीबी फरिश्ते³ और जो अल्लाह की इबादत से नफरत और घमंड करेगा वह उन सभी को अपनी ओर जमा करेगा।

१७३. तो जो इमान लाये और नेक काम किये उन्हें उनका पूरा बदला देगा और अपने फज़ल से और भी ज़्यादा देगा, लेकिन जो नफरत किये और घमंड किये उन्हें दुःखद अज़ाब देगा और वे अल्लाह के सिवाय अपने लिए कोई वली और मददगार नहीं पायेंगे।

مَرِيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَكَلِمَةَ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ
وَرُوحَ قَبْلَهُ نَفَاثَاتُ اللَّهِ وَرُسُلِهِ سَدَّوَلَا
تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ خَيْرًا لَكُمْ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَهٌ
وَاحِدٌ سُبْحَانَ أَنْ يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ مَلَأَ مَا فِي
السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكُلُّ يَأْتِيهِ الْكَلِمَاتُ
١٧٢

لَنْ يَسْتَكْبِفَ السَّيِّئُ أَنْ يَكُونَ عَبْدًا لِلَّهِ
وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ وَمَنْ يَسْتَكْبِفْ عَنْ
عِبَادَتِي وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْمُرُهُمُ اللَّهُ جُوعًا ١٧٣

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فَيُؤْتِيهِمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ
وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنَفَقُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيَحْضُرُهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ تَنْدُونَ
اللَّهُ وَرَبِّيًّا وَلَا نَصِيرًا ١٧٣

¹ अल्लाह के कलिमा का मतलब यह है कि कलिमा (हो जा) से वाप के बिना उनकी पैदाईश हुई, और यह कलिमा हज़रत जिब्रील के जरिये हज़रत मरियम तक पहुँचाया गया, अल्लाह की रूह का मतलब वह फूँक है, जो हज़रत जिब्रील ने अल्लाह के हुक्म से हज़रत मरियम के गरेवान में फूँका, जिसे अल्लाह तआला ने वाप के मनी की जगह पर बना दिया। इस तरह ईसा अल्लाह के लफ़्ज भी है जो फरिश्ते ने हज़रत मरियम की तरफ डाला और उसकी वह रूह है जिसे लेकर जिब्रील मरियम की तरफ भेजे गये। (तफ़्सीर इब्ने कसीर)

² इसाईयों के कई गुट हैं, कुछ हज़रत ईसा को अल्लाह, कुछ अल्लाह के साथी और कुछ अल्लाह का बेटा मानते हैं, फिर जो अल्लाह मानते हैं वह तीन अल्लाह के और हज़रत ईसा को तीन में से एक होने पर यकीन करते हैं। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि तीन अल्लाह कहने से रुक जाओ, अल्लाह तआला सिर्फ एक है।

³ हज़रत ईसा की तरह कुछ लोगों ने फरिश्तों को भी अल्लाह का साथी बना रखा था, अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि यह सब के सब अल्लाह के बंदे हैं, और इस से उन्हें कभी कोई इन्कार नहीं है, तुम उन को अल्लाह या उसकी इबादत में किस बिना पर शरीक करते हो।

१७४. हे लोगो ! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की तरफ से दलील आ चुकी है¹ और हम ने तुम्हारी तरफ नूर (पाक कुरआन) उतार दिया है²

१७५. फिर जो लोग अल्लाह के ऊपर ईमान लाये और उसे मजबूती से पकड़ लिया उन्हें अपने फज़ल और रहमत में दाखिल करेगा और उन्हें अपने तरफ का सीधा रास्ता दिखायेगा ।

१७६. वे आप से सवाल करते हैं, आप कह दें तुम्हें अल्लाह कलालः के बारे में निर्देश करता है³ कि अगर किसी मर्द की मौत हो जाये और उस के वारिसों में कोई औलाद न हो और उसकी एक बहन हो तो उस के लिये छोड़े हुए (धन) का आधा है, और वह उस (बहन) का वारिस है अगर उस के कोई औलाद न हो, अगर दो बहनें हों तो दोनों के लिये दो तिहाई है उसमें से जिसे वह छोड़ गया⁴ और अगर भाई बहन दोनों हों, मर्द भी और औरतें भी, तो मर्द के लिये दो औरतों के बराबर (हिस्सा) है अल्लाह तुम्हारे लिये बयान कर रहा है ताकि तुम भटक न जाओ और अल्लाह सब कुछ जानने वाला है ।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّن

رَبِّكُمْ وَأُنزِلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا ۝١٧٤

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَعَصَوْا بِرِجَالِهِمْ

فِي رَحْمَةٍ مِنَّا وَفَضْلٍ ۝ وَيَهْدِيهِمُ إِلَيْهِ

صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ۝١٧٥

يَسْتَفْتُونَكَ ط لَقَدْ أَنذَرْتُكُمْ فِي الْكَلْبَةِ ۝ إِن

أَمْرًا هَلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا

نِصْفٌ مَّا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَا إِن لَّمْ يَكُنْ

لَهَا وَلَدٌ ۚ وَإِن كَانَتَا أُخْتَيْنِ فَلَهُمَا الشَّدْرَيْنِ

مِمَّا تَرَكَ ۚ وَإِن كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً

فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثِيَيْنِ ط يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ

أَنَّ تَضَاوَعُوا وَاللَّهُ بِحَسْبِ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝١٧٦

¹ बुरहान, का मतलब है ऐसा अकाद्यू तर्क, जिस के बाद किसी को वहाने का कोई मौका न रहे, ऐसी तरकीब जिस से हर तरह के शुद्दात खत्म हो जायें, इसीलिए इसे आगे आसमानी नूर कहा गया है ।

² इस से मुराद पाक कुरआन है जो कुफ्र और शिक के अंधेरे में रौशनी है, गुमराही की पगडंडियों पर सीधा रास्ता और अल्लाह तआला की मजबूत रस्सी है, इसलिए इस के हिसाब से ईमान वाले अल्लाह के फज़ल और रहमत के मुस्तहिक होंगे ।

³ कलालः के बारे में पहले बयान हो चुका है कि उस मरने वाले को कहते हैं, जिनका न बाप हो और न बेटा ।

⁴ यही हुबम दो से ज्यादा बहनो की हालत में होगा, यानी यह मतलब हुआ कि अगर कलालः इंसान की दो या दो से ज्यादा बहनें होंगी तो उन्हें कुल माल का दो तिहाई मिलेगा ।

सूरतुल मायेद:-५

सूरतुल मायेद: मदीने में उतरी, इस में एक सौ बीस आयतें और सोलह रूकूज हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. हे ईमानवालो! बंधनों (वादों) को पूरा करो, तुम्हारे लिये चौपाये जानवर हलाल कर दिये गये हैं^१ उनके सिवाये जो पढ़कर तुम को सुनाये जाते हैं लेकिन एहराम की हालत में शिकार न करो, वेशक अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है।

२. हे ईमानवालो! अल्लाह के धर्म अनुष्ठानों (शुआईर) की बेहुरमती न करो, न हुरमत वाले महीने की,^२ न कुर्बानी के लिये हरम तक ले जाये जा रहे और पट्टा पहनाये जानवर की,^३ न हुरमत वाले घर (कअबा) को जा रहे लोगों की, जो अल्लाह की दया और खुशी की खोज कर रहे हैं, और जब एहराम खोला तो फिर शिकार कर सकते हो, और जिन्होंने तुम्हें भस्जिदे हराम से रोका उनकी दुश्मनी तुम्हें हुदूद लांघ जाने पर तैयार न करे, और नेकी और परहेजगारी पर आपस में मदद करो, गुनाह और जुल्म में मदद

سُورَةُ الْمَائِدَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ أُحِلَّتْ لَكُمْ
بِهَيْبَةِ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُنْتَهَى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي

السَّيِّئِ وَأَنْتُمْ حُرْمٌ طَائِفٌ اللَّهُ يُحْكُمُ مَا يَرِيدُ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْلُوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا

الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الضَّلَامَةَ وَلَا

أَمْوَالَ الْيَتَامَى الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ فَضْلًا مِنْ رَبِّهِمْ

وَرِضْوَانًا مَوْلَادًا فَصَلِّمْ قَاصِدُوا مَوْلَا وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ

شَتَانُ قَوْمٍ أَنْ صَدَّكُمْ عَنِ الْبَيْتِ الْحَرَامِ أَنْ

تَعْتَدُوا وَمَنْ عَادَ عَلَيَّ وَالشَّقَوَىٰ وَلَا تَعَاوَنُوا

عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَنْتُمْ لِلَّهِ إِتِقَانٌ

سُورَةُ الْحَقَّابِ ②

^१ चौपाये जानवर को कहा जाता है, कर्कट, गाय, बकरी और भेड़ को कहा जाता है, क्योंकि इनकी चाल में नमी होती है, यह पालतू चौपाये नर और मादा मिलाकर आठ तरह के हैं, जिनकी तफ़सीली जानकारी सूर: अल-अआम की आयत नं० १२४ में आयेगी। इस के सिवाय जो जानवर जंगली कहलाते हैं, जैसे: हिरन, नील गाय आदि, जिनका आम तौर पर शिकार किया जाता है, यह भी जायेज है, जैसा कि सूर: अल-बकर: की आयत नं० १७३ में तफ़सीली बयान हो चुका है। हाँ नुकीले दाँत वाले वह जानवर जो अपने शिकार को पकड़ कर चीरता हो। जैसे: भैंर, चीता, कुत्ता, बिल्ली, भेड़िया आदि नुकीले दाँत वाले जानवर हैं, वह पक्षी जो अपना शिकार पंजे से भ्रूषट कर पकड़ता है, जैसे: शिकरा, बाज, शाहीन, गिद्ध आदि ये सब हराम हैं।

^२ बह्रूल हराम से मुराद हुरमत वाले चार महीने (रजब, जुलकादा, जुलहिज्जा और मोहर्रम) हैं इन का एहेतराम बाकी रखो और उन में कल्ल न करो, कुछ न इस से सिर्फ एक महीना यानी जुलहिज्जा का महीना (हज का महीना) लिया है।

^३ हदी ऐसे जानवर को कहा जाता है, जो हाजी हरम में कुर्बानी देने के लिए साथ ले जाते थे।

न करो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह सख्त अजाब देने वाला है।

३. तुम पर हराम कर दिया गया है मुरदार, और खून, और सूअर का गोश्त और जिस पर अल्लाह के सिवाय दूसरों का नाम पुकारा गया हो^१ और गला घुट कर मरा,^२ और चोट से मरा,^३ और गिरकर मरा^४ और दूसरे जानवर के सीध मारने से मरा^५ और जिसका कुछ हिस्सा दरिन्दों ने खा लिया हो^६ लेकिन जिसे तुम ने जिब्ह कर दिया,^७ और जो थानों पर जिब्ह किया जाये और पसि (लाटरी) के जरिये बाँटना यह सभी बहुत

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخَائِزِ
دَمًا أَهْلٌ يَغْرِبُونَ وَيَتَمَنَّى مِيتَةً وَالسُّوْفُوفُ
وَالْمُتَرِّبَةُ وَالزَّيْبَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا
مَا ذَلَلْتُمْ عَلَيْهِ وَمَا دُيِّعَ عَلَى الثَّوْبِ وَأَنْ
تَتَقَسَّبُوا بِالْأَذْهَانِ ذَٰلِكُمْ فَسُقُطٌ أَيُّوْمَرِيْسٍ

^१ यहाँ से उन हराम (प्रतिबन्धित) चीजों का बयान शुरू होता है, जिनका इशारा सूर: के शुरू में दिया गया है। आयत का इतना हिस्सा सूर: अल-बकर: में गुजर चुका है। (देखिए आयत नं- १७३)

^२ गला कोई इंसान घोट दे या किसी चीज से फंस कर खुद गला घुट जाये, दोनों हालत में मरे हुए जानवर हराम है।

^३ किसी ने पत्थर, लाठी या कोई और चीज भारी जिस से वह बिना जिब्ह (इस्लामी तरीके के हिसाब से गले पर छुरी चलाना) किये ही मर गया, जाहिलियत के दौर में ऐसे जानवरों को खा लिया जाता था, इस्लामी कानून ने मना कर दिया।

बन्दूक का शिकार : बन्दूक से शिकार किए हुए जानवरों के बारे में आलिमों (इस्लामी धर्मगुरुओं) के बीच एख्तिलाफ है। इमाम शौकानी ने एक हदीस से मतलब निकालते हुए बन्दूक के शिकार को जायज माना है। (फतहूल कदीर) यानी अगर बिस्मिल्लाह पढ़ कर गोली चलायी गयी और शिकार जिब्ह करने से पहले ही मर गया तो उसका खाना इस क़ौल के एतवार से जायज है।

^४ चाहे वह खुद गिरा हो या किसी ने पहाड़ आदि (बगैरह) से धक्का देकर गिराया हो।

^५ यानी किसी ने उसे टक्कर मार दी और बिना जिब्ह किये वह मर गया।

^६ यानी ब्रेर, चीता और भेड़िया जैसे दरिन्दों ने उसे खाया हो और वह मर गया हो, दौर जाहिलियत में मर जाने के बावजूद ऐसे जानवरों को खा लिया जाता था।

^७ आम रावियों के नज़दीक यह छूट सभी बयान किये जानवरों के लिए है यानी गला घोटने से चोट के जरिये घायल, ऊँचे मुक़म से गिरने से या टक्कर के जरिये या किसी दरिन्दे से घायल जानवर, अगर तुम इस हालत में पाओ कि उनमें जिन्दगी की किरण पायी जाती हो और फिर तुम उसे इस्लामी कानून के हिसाब से जिब्ह कर लो, तो फिर तुम्हारे लिए खाना जायज होगा।

बड़े गुनाह है। आज काफिर (मूर्तिपूजक) तुम्हारे दीन की तरफ से मायूस हो गये, इसलिए उनसे न डरो सिर्फ मुझ से डरो, आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमतें पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम दीन को पसन्द कर लिया, लेकिन जो भूख में बेकरार हो जाये और कोई गुनाह न करना चाहता हो तो वेशक अल्लाह माफ करने वाला, बड़ा रहम करने वाला है !

५. वह आप (रसूल) से सवाल करते हैं कि उन के लिये क्या (खाना) जायज है आप कह दें कि तुम्हारे लिये पाक चीजें जायज हैं, और वह शिकारी जानवर जो तुम ने सधा रखे हों जिन को कुछ बातें सिखाते हो जो अल्लाह ने तुम्हें सिखाई, तो अगर तुम्हारे लिये वह (शिकार) को दबोच रखें और उसे छोड़ते समय अल्लाह का नाम उस पर लो तो उसे (शिकार को) खाओ,^१ और अल्लाह से डरो, वेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

५. आज सभी पाक चीजें तुम्हारे लिए हलाल कर दी गयीं और अहले किताब का ज़बीहा तुम्हारे लिये हलाल है^२ और तुम्हारा ज़बीहा उनके लिये जायज है, और पाक दामन मुसलमान औरतें

الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ دِينِكُمْ فَلَا تَحْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي
 الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتَمَمْتُ عَلَيْكُمْ
 نِعْمَتِي وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا وَالَّذِينَ أَخْطَرُوا
 فِي مَقْصَصِهِ عَنِّي مَتَجَانِفٍ لِيَظْمُرَ ۖ فَإِنَّ اللَّهَ
 عَفُورٌ رَحِيمٌ ③

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ ۖ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ
 وَمَا عَلَّمْتُم مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَيِّدِينَ تُلْمَوْنَهُنَّ
 وَمِنَ الْمَاءِ عَلِيمٌ ۖ قُلْ لَكُمْ وَمِنَ الْأَسْنَانِ عَلَيْهِمُ
 وَادْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ طَرِيقَ اللَّهِ
 سَوِيحُ الْجَنَابِ ④

الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ ۖ وَطَعَامُ الَّذِينَ
 أُوتُوا الْكِتَابَ حَلَالٌ لَّكُمْ ۖ وَطَعَامُكُمْ حَلَالٌ لَهُمْ
 وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ

^१ यह भूख की बेकरारी की हालत में हाराम खाने की इजाजत है, लेकिन इस के जरिये अल्लाह की नाफरमानी और हुदूद तोड़ने का इरादा न हो, सिर्फ जान बचना ही मकसद हो।

^२ ऐसे सिखाये हुए जानवरों का शिकार किया हुआ जानवर दो शर्तों के साथ जायेज है, एक यह कि उसे शिकार पर छोड़ते समय बिस्मिल्लाह पढ़ लिया गया हो, दूसरा यह कि शिकारी जानवर शिकार करके अपने मालिक के लिए रख छोड़े और उसका इतेजार करे, खुद न खाये। अगरचे उसने उसे मार भी डाला हो, तब भी वह मरा हुआ शिकार किया हुआ जानवर जायेज होगा, जबकि उस के शिकार के लिए सिखाये और छोड़े हुए जानवर के सिवाय किसी दूसरे जानवर को शामिल न किया हो। (सहीह बुखारी, कितुज्जबाएहे वसैदे-मुस्लिम किताबुसैदे)

^३ अहले किताब का वही जिब्ह किया जानवर जायेज होगा जिसमें खून बह गया होगा, यानी उनका मशीन के जरिये जिब्ह जायेज नहीं है, क्योंकि इस में खून का बहना जो जरूरी है पाया नहीं जाता।

और जो तुम से पहले किताब (धर्मशास्त्र) दिये गये उन में से पाक दामन औरतें जब तुम उन्हें उनकी महर दे दो, शादी करके बदकारी के लिये नहीं और न गुप्त प्रेमी बनाने के लिये, और जो ईमान को नकार दे उसका अमल बेकार हो गया, और वह आखिरत में घाटे में रहेगा।

الَّذِينَ آتَوْا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ
أُجْرَهُنَّ مُحْصِيَاتٍ غَيْرَ مُسْفَحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي
أَحْذَانٍ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ
وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٥﴾

६. हे ईमानवालो ! जब तुम नमाज के लिये उठो तो अपने मुँह और कोहनियों तक अपने हाथों को धो लिया करो^२ और अपने सिर का मसह (दोनों हाथ तर करके सिर पर फेरना) कर लो^३ और अपने पाँव टखनों तक धुल लो,^४ और अगर तुम नापाक हो तो गुस्ल कर लो,^५ और अगर

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا
وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا
بُرُءُؤُسَيْكُمْ وَرِجْلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ۗ وَإِنْ كُنْتُمْ
جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا ۗ وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ

- १ अहले किताब की औरतों के साथ शादी की इजाजत के साथ एक तो पाक दामन जरूरी है, जो आजकल ज्यादातर अहले किताब औरतों में नहीं मिलता है, दूसरे उस के बाद यह कहा गया है कि जो ईमान के साथ कुफ्र करे, उसके आमाल बर्बाद हो गये। इस से यह तंबीह करना है कि अगर ऐसी औरत से शादी करने से ईमान के बर्बाद होने का डर है, तो यह बहुत नुकसान वाली तिजारत है, और आजकल अहले किताब की औरतों से शादी करने में ईमान को जो खतरा है, उस के बयान की जरूरत नहीं।
- २ "मुँह धोओ," यानी एक-एक, दो-दो या तीन-तीन बार दोनों हाथ कलाईयों तक धोने, कुल्ली करने, नाक में पानी डालकर छींकने के बाद, जैसाकि हदीस से साबित है, मुँह धोने के बाद हाथों को कोहनियों तक धोया जाये।
- ३ मसह (यानी दोनों हाथ भीगा कर सर पर फेरना) पूरे सिर का किया जाये, जैसाकि हदीस से साबित है, "अपने हाथ आगे से पीछे (गुद्दी) तक ले जाये और फिर वापस वहाँ से आगे लाये जहाँ से शुरू किया था।" इसी के साथ कानों का मसह कर ले, अगर सिर पर पगड़ी या मुरेठा हो तो हदीस के हिसाब से मोजों की तरह उस पर भी मसह जायेज है। (सहीह मुस्लिम, किताबुल तहार:) इस तरह एक बार मसह कर लेना काफी है।
- ४ "ووجوهكم" का लगाव से है, यानी अपने पैर टखनों तक धुलो, और अगर मोजे या इस तरह के दूसरे कपड़े पैरों पर चढ़े हों तो (जबकि बजू की हालत में पहना हो) सहीह हदीस के अनुसार पैर धोने के बजाय मोजों आदि पर मसह भी जायेज है।
- ५ नांपाकी से मुराद वह नापाकी है जो एहतिलाम या बीबी से जिमाअ के बजह से होती है, और इसी हुक्म में माहवारी और प्रसव रक्त भी है, माहवारी और प्रसव रक्त रुक जाये तो पाकी के लिए गुस्ल करना फर्ज है, लेकिन पानी न मिलने की हालत में तयम्मूम की इजाजत है। (फतहुल कदीर और ऐसरुलफासीर)

तुम बीमार या सफ़र पर हो, या तुम में से कोई औचालय से आये या तुम वीवी से मिले हो और पानी न मिले तो पाक मिट्टी से तयम्मूम कर लो उसे अपने चेहरों और हाथों पर मलो, अल्लाह तुम पर तंगी नहीं चाहता, लेकिन तुम्हें पाक बनाना चाहता है और ताकि तुम पर अपनी नेमत पूरी करे और ताकि तुम शुक्रगुजार रहो।

७. और अपने ऊपर अल्लाह की नेमत और उस अहद को याद करो जिसका तुम से मुआहिदा हुआ, जब तुम ने कहा कि हम ने सुना और मान लिया और अल्लाह (तआला) से डरते रहो, बेशक अल्लाह (तआला) दिलों की बातों का जानकार है

८. हे ईमानवालो! अल्लाह के लिये सच पर मज़बूत, इसाफ़ पर गवाह हो जाओ, और किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इसाफ़ न करने पर तैयार न करे, इसाफ़ करो वह परहेजगारी से बहुत करीब है और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह तुम्हारे आमाल से बाख़बर है।

९. जिन्होंने यक़ीन किया और नेक अमल किये अल्लाह ने उनको माफ़ और भारी बदला का वायेदा दिया है।

१०. और जिन्होंने यक़ीन नहीं किया और हमारे हुकमों को झूठलाया वही जहन्नमी है।

११. हे ईमानवालों! अल्लाह (तआला) ने जो एहसान तुम पर किये हैं उसे याद करो, जब कि एक क़ौम ने तुम पर जुल्म करना चाहा तो अल्लाह (तआला) ने उन के हाथों को तुम तक पहुँचने से रोक दिया, और अल्लाह (तआला) से डरते रहो और ईमानवालों को अल्लाह तआला पर ही भरोसा करना चाहिए।

أَوْ جَاءَ أَحَدًا مِّنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَسْتُمْ
الرِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا
فَأَمْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ مِنْهُ مَا يُرِيدُ
اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِنْ حَرَجٍ وَلَكِنْ يُرِيدُ
لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمِّمَ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ

تَشْكُرُونَ ﴿٦﴾

وَأَذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّتِي
وَأَتَّقُوا اللَّهَ ط إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوِّمِينَ فِي شَهَادَةِ
بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَتَانُ قَوْمٍ عَلَى
الَّذِينَ هُمُ أَعْيُنُكُمْ أُولَئِكَ هُمُ الَّذِينَ يَلْعَنُونَ
وَأَتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾

وَعَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٩﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَئِكَ
أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١٠﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذْ كُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
إِذْ هُمْ قَوْمٌ أَنْ يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ
أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللَّهَ ؕ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

१२. और अल्लाह तआला ने इस्राईल के बेटों से वादा लिया और उन्हीं में से बारह सरदार हम ने मुकर्रर किये,^१ और अल्लाह (तआला) ने फरमा दिया, मैं बेशक तुम्हारे साथ हूँ, अगर तुम नमाज कायम रखोगे, और जकात देते रहोगे और मेरे रसूलों को मानते रहोगे और उनकी मदद करते रहोगे और अल्लाह (तआला) को बेहतर कर्ज देते रहोगे, तो बेशक मैं तुम्हारी घुराईयाँ तुम से दूर रखूँगा और तुम्हें उन जन्नतों में ले जाऊँगा जिन के नीचे नहरें वह रही हैं, अब इस वादा के वाद भी तुम में से जो इंकार करे, वह बेशक सीधे रास्ते से भटक गया।

१३. फिर उन के वादा तोड़ने के सबब हम ने उन पर लानत किया और उन के दिल सख्त कर दिये कि वह कलिमा को उन के उस जगह से तबदील कर देते हैं,^२ और जो कुछ नसीहत उन को दी गयी उसका बहुत बड़ा हिस्सा भुला बैठे, उन के एक न एक खयानत की खबर तुम्हें मिलती रहेगी, लेकिन थोड़े से (लोग) ऐसे नहीं भी हैं, फिर भी उन्हें माफ करता जा और माफ करता जा, बेशक अल्लाह तआला एहसान करने वालों को दोस्त रखता है।

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ
وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا وَقَالَ
اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ
الزَّكَاةَ وَآمَنْتُمْ بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ
وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذَلِكَ مِنْكُمْ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ (١٢)

بِمَا نَقَضْتُمْ مِيثَاقَهُمْ لَعْنَتُهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ
قَاسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهَا وَتَسَوَّأَ
حَقًّا مِمَّا دُفِّرُوا بِهِ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَى
خَآفِيَةٍ مِنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِنْهُمْ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ
وَاصْفَحْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ (١٣)

^१ यह उस समय का वाक्रेआ है, जब हजरत मूसा जवाबरः से जंग के लिए तैयार हुए तो उन्होंने अपनी उम्मत के बारह जातियों के बारह संरक्षक नियुक्त कर दिये ताकि वे उन्हें जंग के लिए तैयार भी करें, और अगुवाई भी करें और दूसरे मुआमलात का एहतेमाम भी करें।

^२ यानी इतने इतनेजाम और वादे के वावजूद भी इस्राईल की औलाद ने वादा तोड़ दिया, जिस के सबब वे अल्लाह के नानती हुए, इस लानत का दुनियावी नतीजा यह हुआ कि उन के दिल सख्त कर दिये गये, जिस से उन के दिल असरअंदाज होने से महरूम हो गये और नबियों की तकरीर और तालीम उन के लिए बेकार हो गयी।

१५. और जो अपने आप को इसाई कहते हैं, हम ने उन से (भी) वादा लिया था, उन्होंने भी उसका बड़ा हिस्सा भुला दिया, जो उन्हें शिक्षा दी गयी थी, तो हम ने भी उन के बीच दुश्मनी और नफरत डाल दिया जो क़यामत तक रहेगी। और जो कुछ यह करते हैं जल्द ही अल्लाह तआला उन्हें सब बता देगा।

१५. हे अहले किताब! तुम्हारे पास हमारे रसूल (मुहम्मद! ﷺ) आ गये जो बहुत सी वह बातें बता रहे हैं जो किताब (तौरात और इंजील) की बातें तुम छुपा रहे थे^१ और बहुत-सी बातों को छोड़ रहे हैं, तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ से नूर और खुली किताब (पाक कुरआन) आ चुकी है।^२

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نُنزِرُ الْحَدِيثَ لِيُتَّبَعَ وَإِنَّا لَمُبَشِّرُونَ
فَتَسَوَّأُوا حَقًّا وَمَا يَكْتُمُونَ إِلَّا لِيُحْذَرُوا بِهِمْ ۚ فَأَعْرَبْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۗ وَسَوْفَ
يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿١٤﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ
كَثِيرًا مِمَّا كُنْتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو
عَن كَثِيرٍ ۗ قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ
مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

^१ यह अल्लाह को दिये गये वादे के खिलाफ अमल करने की वह सजा है, जो अल्लाह तआला की तरफ से उन पर क़यामत तक के लिए थोप दी गयी है, इसलिए इसाईयों के कई गुट हैं जो एक-दूसरे से बहुत नफरत और हसद रखते हैं, एक-दूसरे को काफिर कहते हैं और एक-दूसरे की इबादतगाहों में इबादत नहीं करते, लगता है कि मुसलमानों पर भी यह दण्ड थोप दिया गया है, यह कौम भी कई गुटों में बंट गई है, जिन के बीच बहुत ज़्यादा इख़िलाफ़ हैं और नफरत व हसद की दीवार खड़ी है।

^२ यानी उन्होंने तौरात और इंजील में जो तबदीली की और उलट फेर किये उन्हें उजागर किया और जिनको छिपाते थे उन्हें जाहिर किया, जैसे पत्थर से मारने की सजा, जैसा कि हदीस में इसकी तफ़सीली जानकारी मिलती है।

^३ नूर और खुली किताब दोनों से भुराद एक ही कुरआन करीम है, इनके बीच अरबी लफ़्ज बॉब (ج) तफ़सीर के लिए है, लेकिन दोनों से भुराद एक यानी पाक कुरआन ही है, जिसका वाज़ेह सुबूत कुरआन करीम की अगली आयत है जिसमें कहा जा रहा है يَهْدِي بِهِ اللَّهُ कि इस के जरिये अल्लाह तआला हिदायत देता है, अगर नूर और किताब दो होते तो कलिमा इस तरह होते يَهْدِي بِهِمُ اللَّهُ अल्लाह तआला इन दोनों के जरिये हिदायत देता है, लेकिन ऐसा नहीं है। इसलिए कुरआन करीम के इन लफ़्जों से यह वाज़ेह हो गया कि नूर और खुली किताब दोनों का मतलब एक ही यानी कुरआन करीम है, यह नहीं कि नूर से नबी करीम ﷺ और खुली किताब से पाक कुरआन का मतलब है, जैसाकि इस्लाम मज़हब में नई बातें गढ़ने वालों ने गढ़ लिया है।

१६. जिस के जरिये अल्लाह उन्हें सलामती का रास्ता दिखाता है जो उसकी खुशी की पैरवी करें और उन्हें अंधेरे से अपनी रहमत से नूर की तरफ निकाल लाता है और उन्हें सीधा रास्ता दिखाता है।

१७. बेशक वह लोग काफिर हो गये जिन्होंने कहा कि मरियम का बेटा मसीह अल्लाह है। कह दो कि अगर मरियम का बेटा मसीह और उसकी माँ और दुनिया के सभी लोगों को वह हलाक करना चाहे तो कौन है जिसका अल्लाह के सामने ज़रा भी हक है? और आसमानों और ज़मीन और जो दोनों के बीच है अल्लाह ही का मुल्क है, वह जो (भी) चाहे पैदा करता है और अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है।

१८. और यहूदी और इसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और दोस्त हैं। आप कह दीजिए कि फिर अल्लाह (तआला) तुम्हारे गुनाहों के सबब तुम्हें सज़ा क्यों देता है? नहीं बल्कि तुम उसकी मखलूक में एक इंसान हो, वह जिसे चाहता है माफ़ करता है और जिसे चाहता है सज़ा देता है और अल्लाह (तआला) की मिल्कियत आसमानों और ज़मीन पर और उनके बीच जो कुछ है हर चीज़ पर है और उसी की ओर पलट कर आना है।

१९. हे अहले किताब! रसूलों के आने में एक विलम्ब (वक्रफ़े) के बाद हमारा रसूल (मुहम्मद ﷺ) आ चुका है जो तुम्हारे लिये (धर्म विधानों) को बयान कर रहा है ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई खुशख़बरी देने वाला और आगाह करने वाला नहीं आया तो तुम्हारे पास एक खुशख़बरी देने वाला और सतर्क (आगाह)

يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ
السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ
بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٦﴾

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ
ابْنُ مَرْيَمَ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا
إِنْ أَرَادَ أَنْ يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ
وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا مَا يَشَاءُ
وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٧﴾

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ
وَأَحِبَّاؤُهُ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوبِكُمْ
بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّثْلَ سَائِرِ الْخَلْقِ يُعَذِّبُ
مَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿١٨﴾

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ
عَلَى قُرْبَىٰ مِمَّن الرُّسُلُ أَنْ تَقُولُوا مَا جَاءَنَا
مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ قَدْ جَاءَكُمْ بَشِيرٌ
وَنَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٩﴾

१ यहूदियों ने हजरत उज़ैर को और इसाईयों ने हजरत ईसा को अल्लाह का बेटा कहा और खुद को भी अल्लाह का बेटा और उसका प्यारा समझने लगे।

करने वाला (आखिरी रसूल) आ गया है! वेशक अल्लाह हर चीज पर कादिर है।

२०. और याद करो जब मूसा (عليه السلام) ने अपनी कौम से कहा हे मेरी कौम के लोगो! अल्लाह (तआला) के उस एहसान को याद करो कि उस ने तुम में से पैगम्बर बनाये और तुम्हें मुल्क अता किया,^२ और तुम्हें वह अता किया जो सारी दुनिया में किसी को अता नहीं किया।

२१. मेरी कौम वालो! उस पाक जमीन में दाखिल हो, जो अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे नाम लिख दी है,^३ और अपनी पीठ न दिखाओ^४ कि नुकसान में पड़ जाओगे।

२२. उन्होंने जवाब दिया हे मूसा! वहाँ तो ताकतवर लड़ाकू लोग हैं और जब तक वह वहाँ से निकल न जायें, हम तो कभी भी नहीं जायेंगे, अगर वे वहाँ से निकल जायें तो हम (खुशी से) वहाँ चले जायेंगे।

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ ادْكُرُوا لِعِمَّتِهِ
اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنْبِيَاءَ وَجَعَلَكُمْ مُلُوكًا
وَأَنْتُمْ كَمَا تَهْتَكُونَ أَحَادًا مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٠﴾

يُقَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ
لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَى أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خَائِبِينَ ﴿٢١﴾

قَالُوا لِمُوسَى إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ ۖ وَإِنَّا لَكُنْ
نَدَّخِلُهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا ۚ فَإِن يَخْرُجُوا
مِنْهَا فَإِنَّا ذٰلِكُمْ ﴿٢٢﴾

^१ हजरत ईसा और हजरत मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के बीच के वक़्त में जो लगभग ५७० साल का फ़र्क है, यह फ़र्क एक अवकाश (वक़फ़ा) कहलाता है। अहले किताब से कहा जा रहा है कि इस अवकाश के बाद हम ने अपने आखिरी रसूल (ﷺ) को भेज दिया है, अब तुम यह भी न कह सकोगे कि हमारे पास कोई खुशख़बरी देने वाला और बाख़बर करने वाला पैगम्बर ही नहीं आया।

^२ ज्यादातर नबी इस्राईल की औलादों में हुये हैं जिनका सिलसिला हजरत ईसा पर ख़तम कर दिया गया और पैगम्बर मुहम्मद इस्माईल की औलाद से हुए -ﷺ। इसी तरह कई बादशाह भी इस्राईल की औलाद में हुए और कुछ नबियों को भी अल्लाह तआला ने मुल्क अता किया, जैसे हजरत सुलेमान ﷺ।

^३ इस से मुराद जीत है, जिस का वादा अल्लाह तआला ने जिहाद की शकल में उन से कर रखा था।

^४ यानी जिहाद से मुंह न मोड़ो।

२३. लेकिन जो अल्लाह से डर रहे थे उन में से दो मर्दों ने कहा जिन पर अल्लाह ने इंआम किया कि तुम उन पर दरवाजे से दाखिल हो जाओ, जब दाखिल हो जाओगे तो तुम्ही गालिब रहोगे और अगर इंमान रखते हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो ।

२४. उन्होंने कहा कि हे मूसा ! हम कभी भी वहाँ न जायेंगे जब तक वह उसमें रहेंगे, इसलिए तुम और तुम्हारा रब जाकर दोनों लड़ो हम यहीं बैठे हैं ।

२५. उस (मूसा) ने कहा मेरे रब ! मैं सिर्फ खुद पर और अपने भाई (हारून) पर हक रखता हूँ इसलिए हमारे और फ्रासिकों के बीच अलगाव कर दे ।

२६. उस (अल्लाह) ने कहा यह चालीस साल तक उन पर हराम है, वह धरती में घूमते फिरते रहेंगे^३ इसलिए आप (मूसा) फ्रासिकों पर अफसोस न करें ।

قَالَ رَجُلَيْنِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ عَلَيْهِمْ ءَ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِنَّ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٢٣﴾

قَالُوا يَمْشُونَ إِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا أَبَدًا مَا دَامُوا فِيهَا فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هُنَا مُعْتَدُونَ ﴿٢٤﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي فَافْرِقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٥﴾

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً يَتِيَهُونَ فِي الْأَرْضِ طَقْلًا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾

- १ मूसा की क्रीम में सिर्फ यही दो इंसान निकले जिन्हें अल्लाह तआला की तरफ से मदद पर यकीन था, उन्होंने क्रीम को समझाया कि तुम हिम्मत तो करो, तो फिर देखो कि अल्लाह तआला किस तरह कामयाबी अता करता है ।
- २ इस में फ्रासिक क्रीम के सामने अपनी मजबूरी का इजहार भी है, और उन से अलग होने का एलान भी ।
- ३ यह तीह का मैदान कहलाता है, जिस में चालीस साल यह लोग अपनी नाफरमानी और जिहाद से इंकार के कारण फिरते रहे, फिर भी इस मैदान में अल्लाह ने उन्हें खाने के लिये मन्न (एक तरह की मीठी गोंद) और सल्बा (एक तरह की चिड़िया) उतारे, जिस से उकताकर उन्होंने अपने रसूल से कहा कि रोज एक तरह के खाने से हमारा मन भर गया, इसलिए अपने रब (अल्लाह) से दुआ करो कि वह कई तरह की वनस्पतियाँ और दालें हमारे लिये उपजाये, यही उन पर बादलों ने छाया की, पत्थर पर हजरत मूसा के लाठी मारने से बारह जातियों के लिये बारह चश्मे जारी हुये, ऐसे ही दूसरे मोजिजे भी होते रहे, चालीस साल बाद फिर ऐसी हावत पैदा की गई कि यह बैतुल मकदिस में दाखिल हुए ।

२७. और आदम के दो बेटों की सच्ची कहानी उन्हें पढ़कर सुना दो। जबकि दोनों ने एक-एक कुर्बानी भेंट दी तो एक से कुबूल की गई और दूसरे से कुबूल नहीं की गयी^१ तो उस ने कहा कि मैं तुझे जरूर मार डालूंगा तो उस ने कहा कि अल्लाह परहेजगारों से ही कुबूल करता है।

२८. अगर तू मुझे कत्ल करने के लिये हाथ बढ़ायेगा तो मैं तुझे कत्ल करने के लिए हाथ नहीं बढ़ा सकता, मैं अल्लाह सारी दुनिया के रब से डरता हूँ।

२९. मैं चाहता हूँ कि तू मेरा गुनाह और अपना गुनाह समेट ले और जहन्नमियों में हो जाये, और यही ज़ालिमों का चुरा बदला है।

३०. बस उसकी इच्छाओं ने उसे भाई का कत्ल करने के लिए तैयार कर दिया और उस ने उस का कत्ल कर दिया, जिस से वह नुकसान उठाने वालों में हो गया।

३१. फिर अल्लाह (तआला) ने एक कव्चे को भेजा जो धरती खोद-रहा था कि उसे दिखाये कि वह अपने भाई की लाश (शव) को किस तरह छिपा दे, वह कहने लगा हाय अफसोस ! क्या मैं ऐसा करने के लायक भी न रहा कि अपने भाई की लाश को इस कौए की तरह गाड़ सकता? फिर तो वह बड़ा दुखी और शर्मिन्दा हो गया।

وَأْتَىٰ عَلَيْهِمُ نَبَأُ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ ط قَالَ لَا أَتُكَلِّمُكَ ط قَالَ إِنْ مَنَّا يَتَقَبَّلَ اللَّهُ مِنْ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٧﴾

لِيُنْزِلَ عَلَيْكَ رَبُّكَ آيَاتِهِ مِنْ سَمَاوَاتِهِ بِمِائَةِ مِائَةٍ أَوْ مِائَةٍ عَشْرٍ أَلْفِ عَسْرِينَ ط قَالَ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ط اللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٨﴾

إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبِئُوا بِي آيَاتِي وَأُتِمَّكُمْ فَتَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾

فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٣٠﴾

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُورِثُ سَوْءَةَ أَخِيهِ ط قَالَ يُورِثُنِي أَخْبَرْتُ أَنْ أَلُوتَ وَمِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُورِثُ سَوْءَةَ أَخِي ط فَأَصْبَحَ مِنَ التَّوَّابِينَ ﴿٣١﴾

^१ आदम के इन दो बेटों का नाम हाबील और काबील था।

^२ यह चढ़ावा था कुर्बानी किसलिए पेश की गयी? इस के बारे में कोई सही कौल नहीं है, लेकिन यह जरूर मज़हूर है कि आदम के दो बेटों ने अल्लाह के लिए कुर्बानी की, एक की कुबूल हुई दूसरे की नहीं, इसलिए दूसरा हसद का शिकार हो गया और अपने भाई को मार डाला।

३२. इसी कारण हम ने इस्राईल की औलाद पर लिख दिया कि जो इंसान किसी को बिना इस के कि वह किसी का क्रांतिल हो या धरती पर फसाद पैदा करने वाला हो, क़त्ल कर डाले तो ऐसा है कि उस ने सभी लोगों को क़त्ल कर दिया, और जो इंसान एक की जान बचाये, उस ने मानो सभी को जिन्दा कर दिया।¹ और उन के पास हमारे रसूल बहुत-सी वाजेह निशानियाँ लेकर आये, लेकिन फिर भी उन में से ज्यादातर लोग धरती पर जुल्म (और ज्यादाती और क्रूरता) करने वाले ही रहे।

३३. उनकी सज़ा जो अल्लाह (तआला) से और उसके रसूल से लड़े और धरती पर फसाद करें यही है कि वे मार दिये जायें या फाँसी पर चढ़ा दिये जायें या उलटी तरफ से उन के हाथ पैर काट दिये जायें, या उन्हें देश से निकाल दिया जाये, यह तो हुई उन की दुनियावी ज़िल्लत और वेदज़ज़ती और आखिरत में उनके लिए भारी अजाब है।

३४. लेकिन जो अपने ऊपर तुम्हारे काबू पाने से पहले माफ़ी माँग लें, तो बेशक अल्लाह तआला बड़ा माफ़ करने वाला, वड़ा रहम व करम करने वाला है।

३५. हे मुसलमानों! अल्लाह तआला से डरते रहो और उसकी ओर नज़दीकी हासिल करने की कोशिश करो।² और उसकी राह में जिहाद करो ताकि तुम्हारी भलाई हो।

وَمَنْ أَجْلٌ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ بَعَدَ ذَلِكَ فِي الْأَرْضِ لَسُفُورُونَ ﴿٣٢﴾

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَادِّثُونَ اللَّهَ وَرُسُلَهُ وَيَسْعُونَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِّنْ خَلْفٍ أَوْ يُنْفَخُوا مِنَ الْأَرْضِ ذَلِكَ لَهُمْ جَزَاءُ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٣٣﴾

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٣٥﴾

¹ इस नाजायेज क़त्ल के बाद अल्लाह तआला ने इंसानों की कीमत को जाहिर करने के लिये इस्राईल की औलाद को यह हुक्म उतारा, इस से अनुमान लगाया जा सकता है कि अल्लाह तआला के यहाँ इंसानों की कितनी अहमियत है।

² वसीला (وسيلة) का मतलब ऐसी चीज़ है जो किसी मक़सद को हासिल और उसकी नज़दीकी का जरिया बने, «अल्लाह तआला की नज़दीकी हासिल करने का सबब तलाश करो» का मतलब होगा कि ऐसे अमल करो जिस से तुम्हें अल्लाह की ख़ुशी और उसकी नज़दीकी हासिल हो। इमाम शौक़ानी का क़ौल है: «वसीला वह नेक अमल है जिन के जरिये से बन्दा अल्लाह की नज़दीकी हासिल करते हैं।» इसी तरह मना करदा और हराम चीज़ों और कामों से बचने से भी अल्लाह की नज़दीकी हासिल होती है, इसलिए मना करदा और हराम चीज़ों और कामों को छोड़ना भी अल्लाह की नज़दीकी हासिल करने का जरिया है, लेकिन बेचकूफ़ों (मूर्खों) ने इस हक्कीकी जरिया को छोड़ कर क़ब्र में गड़े लोगों को अपना जरिया बना लिया है, जिसका इस्लामी क़ानून में कोई नगह नहीं है।

३६. यकीन करो, कि काफिरों के लिए अगर वह सब कुछ हो जो सारी धरती में है, और उस के बराबर और ज्यादा भी हो और वह उन सब को क्रयामत के दिन के अजाब के बदले फिदिया में देना चाहें तो भी असम्भव है कि उन से क़बूल कर लिया जाये, उन के लिए तो दुखदायी अजाब है।

३७. वे चाहेंगे कि जहन्नम से निकल जायें, लेकिन वे कभी भी उस में से न निकल सकेंगे, उन के लिए तो दायमी अजाब है।¹

३८. चोर और चोरनी का हाथ काट दो,² यह उनके करनत का बदला और अल्लाह की तरफ से सज़ा है, और अल्लाह तआला ताक़तवाला और हिक्मत वाला है।

३९. जो अपने गुनाह के बाद माफी मांग ले और सुधार कर ले, तो अल्लाह (तआला) उसकी तौबा क़बूल करता है।³ बेशक अल्लाह तआला माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है।

४०. क्या तुम्हें इल्म नहीं कि अल्लाह (तआला) के लिए आसमानो ज़मीन का मुल्क है? जिसे चाहे अजाब दे जिसे चाहे माफ़ कर दे, अल्लाह तआला हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَ أَنَّ لَهُمْ مَا فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ
يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقْبَلُ مِنْهُمْ وَلَا لَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ (36)

يُرِيدُونَ أَنْ يُخْرِجُوكَ مِنَ الدَّارِ وَمَا هُمْ
بَخَارِجُونَ مِنْهَا وَلَا لَهُمْ عَذَابٌ مُّؤَلِّمٌ (37)

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا
جَزَاءً بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ
عَزِيزٌ حَكِيمٌ (38)

فَمَنْ تَابَ مِنْ بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللَّهَ
يُؤْتِي عَفْوَ عَظِيمًا (39)

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ
يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (40)

¹ यह आयत काफिरों (विश्वासहीन) के लिए है, क्योंकि ईमानवालों को सज़ा के बावजूद जहन्नम से निकाल लिया जायेगा, जैसा कि हदीस से इसकी तसदीक होती है।

² कुछ आलिमों के अनुसार चोरी का यह हुक्म आम है, चोरी थोड़ी सी चीज़ की हो या बहुत-सी चीज़ की। इसी तरह वह महफ़ूज़ मुकाम पर रखी हो या ग़ैर महफ़ूज़ मुकाम पर रखी हो, हर हालत में चोरी की सज़ा दी जायेगी, जब कि दूसरे उलमा के क़रीब इसके लिए महफ़ूज़ और मुकरर जरूरी है, फिर तादाद के निर्धारण में इख़तिलाफ़ है। हदीस के आलिमों के नज़दीक कम से कम तादाद चौथाई दीनार या तीन दिरहम के या उसकी क़ीमत के बराबर की कोई चीज़ हो, इस से कम की चोरी पर हाथ नहीं काटा जायेगा। इसी तरह हाथ कलाईयों से काटे जायेंगे, कोहनी या कंधों से नहीं, जैसा कि कुछ का क़याल है। (तफ़सीली जानकारी के लिए हदीस, फ़िक्ह और तफ़सीर की किताबों को पढ़ा जाये)

³ इस माफी से मुराद अल्लाह के यहाँ माफी की क़बूलियत है, यह नहीं कि माफी मांग लेने से चोरी या किसी हद वाले अपराध (गुनाह) की सज़ा माफ़ हो जायेगी, हुदूद, तौबा से माफ़ नहीं की जायेगी।

४१. हे रसूल! आप उन के लिये दुखी न हों जो कुफ्र में दौड़ लगा रहे हैं, जिन्होंने अपने मुंह से कहा कि हम ने यकीन किया और उनके दिलों ने यकीन नहीं किया, और जो यहूदी हो गये, उनमें कुछ भूठ सुनने के अभ्यासी और दूसरे लोगों के गुप्तचर हैं, जो आप के पास नहीं आये, वह कलिमा को उन के जगहों से फेर देते हैं, कहते हैं कि अगर तुम यह दिये जाओ तो मान लो और यह (हुकम) न दिये जाओ तो अलग रहो, और जिसे अल्लाह भटकाना चाहे उस के लिये अल्लाह पर आप का जरा भी हक नहीं है, इन्हीं के दिलों को अल्लाह पाक नहीं करना चाहता, इन्हीं के लिये दुनिया में जिल्लत और आखिरत में भारी अजाब है।

४२. यह कान लगा-लगा कर भूठ सुनने वाले और जी भर-भर कर हराम खाने वाले हैं, अगर यह तुम्हारे पास आयें तो तुम्हें हक है चाहो तो उन के बीच फ़ैसला कर दो चाहो तो न करो, अगर तुम उन से मुंह मोड़ भी लोगे तो भी ये तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते और अगर तुम फ़ैसला करो तो उन में इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करो, बेशक इंसाफ़ करने वालों के साथ अल्लाह तआला मुहब्बत रखता है।

४३. और (तअज्जुब की बात है कि) वह कैसे अपने पास तौरात होते हुए, जिस में अल्लाह का हुकम है तुम को फ़ैसला करने वाला बनाते हैं, फिर उस के बाद पलट जाते हैं, वास्तव (हकीकत) में ये ईमान और यकीन वाले नहीं हैं।

يَا أَيُّهَا الرُّسُولُ لَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ
فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَقْوَابِهِمْ
وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوبُهُمْ ۗ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا ۗ
سَمِعُوا لِلْكَذِبِ سَمْعُونَ يَلْمِزُونَ إِقْرَبِينَ ۗ
لَهُمُ يَأْتُواكَ ۖ يَحْزِنُونَ الْكَلِمَةَ مِنْ بَعْدِ

مَوَاضِعِهِ ۗ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِينَاهُمْ هَذَا فَخَدُّوا
وَأِنْ لَمْ تُؤْتُوهُ فَاخْتَدُّوا ۗ وَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ
فِي شِئْنِهِ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهُ مِنْ اللَّهِ شَيْئًا ۗ وَأُولَئِكَ
الَّذِينَ لَمْ يَرْجُوا إِلَهَ إِلَّا اللَّهَ أَن يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ ۗ لَهُمْ
فِي الدُّنْيَا حِزْبٌ ۖ وَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ
عَظِيمٌ (41)

سَمِعُونَ لِلْكَذِبِ أَكْثَرُونَ لِلسَّخَةِ ۖ فَإِنْ
جَاءُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۗ
وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَصُدُّوكَ شَيْئًا ۗ
وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۗ
إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ (42)

وَكَيفَ يُعَذِّبُوكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرَةُ فِيهَا
حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ ۗ
وَمَا أَوْلَيْكَ بِالْمُؤْمِنِينَ (43)

1 सَمِعُونَ (सम्भाऊना) का मतलब है "बहुत सुनने वाला" इस के दो मतलब हो सकते हैं, भेद जानने के लिए बहुत ज्यादा सुनना या दूसरों की बातें जानने के लिए सुनना, कुछ रावियों ने पहला मतलब लिया है और कुछ ने दूसरा।

४४. हम ने तौरात उतारी है जिसमें हिदायत और नूर है, यहूदियों में इसी तौरात के ज़रिये अल्लाह के मानने वाले, अंबिया (عليهم السلام) और अल्लाह वाले और आलिम फ़ैसला किया करते थे, क्योंकि उन्हें अल्लाह की इस किताब की हिफाजत का हुक्म दिया गया था, और वे इस पर क़बूल करने वाले गवाह थे, अब तुम्हें चाहिए कि लोगों से न डरो, वल्कि मुझ से डरो, मेरी आयतों को थोड़े-थोड़े दाम पर न बेचो और जो अल्लाह की उतारी हुई वहुयी की बिना पर फ़ैसला न करें वे पूरा और मुकम्मल काफ़िर है !

४५. और हमने (तौरात) में यहूदियों के हक में यह बात मुक़रर कर दी है कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख, और नाक के बदले नाक, और कान के बदले कान व दाँत के बदले दाँत और ख़ास घावों का भी बदला है, फिर जो इंसान उसको माफ़ कर दे तो वह उस के लिए पछतावा है और जो लोग अल्लाह के हुक्मों के एतबार से फ़ैसला न करें, वही लोग ज़ालिम है ।

४६. और हम ने उन के पीछे ईसा इब्ने मरियम को भेजा, जो अपने से पहले की किताब यानी तौरात की तसदीक करने वाले थे, और हम ने उन्हें इज़ील अता की, जिसमें नूर और हिदायत थी, और वह अपने से पहले की किताब तौरात की तसदीक करती थी और वह बाज़ेह हिदायत और तालीम थी, अल्लाह तआला से डरने वालों के लिए ।

إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ
يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا مِنْ
هَادُوا وَالتَّوْبَتِيُّونَ وَالْأَحْبَابُ بِمَا اسْتَحْفُظُوا
مِنْ كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ
فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَخَشَوُا اللَّهَ
بِأَيْبَىٰ مَنَاصًا طَيِّبًا ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ
بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ (44)

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ
بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ
وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصًا ۚ فَمَنْ
تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ ۚ وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ
بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ (45)

وَقَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ
مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ
وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ
وَمُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَةِ
وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ (46)

1 (असलम्) यह नबियों की फ़ज़ीलत का बयान है कि वे सभी नबी दीन इस्लाम के मानने वाले थे, जिसकी तरफ़ मोहम्मद ﷺ दावत दे रहे हैं, यानी सभी नबियों का दीन एक ही रहा है, इस्लाम जिसकी बुनियाद है कि एक अल्लाह की इबादत (उपासना) और उसकी इबादत में किसी को शामिल न किया जाये, हर नबी ने सच से पहले अल्लाह और उस के साथ किसी को भी शामिल न करने की दावत दी ।

५७ और इजील वालों को भी चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो कुछ इजील में उतारा है, उसी के ऐतबार से फ़ैसला करें, और जो अल्लाह तआला के उतारे हुए से ही फ़ैसला न करें वे फ़ासिक हैं।

५८. और हम ने आप की तरफ सच्चाई से भरी यह किताब उतारी है, जो अपने से पहले की सभी किताबों की तसदीक करती है और उनकी मुहाफिज है, इसलिए आप उन के बीच अल्लाह की उतारी हुई किताब के ऐतबार से फ़ैसला कीजिए, इस सच्चाई से हटकर उनकी तमन्नाओं पर न जाईये, तुम में से हर एक लिए हम ने एक शरीअत और रास्ता मुकरर कर दिया है^१ अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब को एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वह चाहता है कि जो तुम्हें दिया है, उस में तुम्हारा इम्तेहान ले, तो तुम सवाब की तरफ जल्दी करो, तुम सबको अल्लाह ही की तरफ पलट कर जाना है, फिर वह तुम्हें हर वह चीज बता देगा जिस में तुम इख्तिलाफ रखते हो।

५९. और आप उन के झगड़े में अल्लाह की उतारी हुई वहुयी के अनुसार फ़ैसला दीजिए, उनकी इच्छाओं की पैरवी न कीजिए और उन से होशियार रहिये कि कहीं ये आप को अल्लाह के उतारे हुए किसी हुक्म से इधर-उधर न कर दें, अगर यह मुंह मोड़ लें तो यक्रीन करो कि अल्लाह का यही इरादा है कि उन्हें उन के कुछ

وَلِيَحْكُمَ أَهْلَ الْأَنْجِيلِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فِيهِ
وَمَنْ لَمْ يَحْكَمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْفَاسِقُونَ ﴿٥٧﴾

وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ
يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيِّبًا عَلَيْهِ فَاخْكُم
بِآيَاتِهِ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ هُمْ
عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلِّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ
شِرْعَةً وَمِنْهَا جَاءُوا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً
وَاحِدَةً وَلَكِنْ لِيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَيْتُم مَّا سَأَلْتُمُوهُ
الْحَدِيثُ إِي إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُهُمْ جَمِيعًا أَيُّبُؤُنَا
بِمَا آتَيْنَاهُمْ فِيهِ فَنَحْكُمُ لَهُمْ ﴿٥٨﴾

وَأَنَّ احْكُمَ بَيْنَهُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ
أَهْوَاءَهُمْ وَأَخَذَ لَهُمْ أَنْ يَفْتُرُواكَ عَنْ بَعْضِ
مَا أَنْزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّمَا
يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُصِيبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ
وَإِنْ كَثُرُوا مِنَ النَّاسِ لَفَيْسِقُونَ ﴿٥٩﴾

^१ इजील के मानने वालों को यह हुक्म उस वक्त तक था, जब तक हजरत ईसा की नबूवत का दौर था, नबी ﷺ के आने के बाद हजरत ईसा की नबूवत का दौर भी खत्म हो गया और इजील के हुक्मों की पैरवी भी खत्म हो गई, अब ईमानवाला वही समझा जायेगा जो मोहम्मद ﷺ की रिसालत पर ईमान लायेगा और कुरआन करीम के हुक्म की पैरवी करेगा।

^२ इस से मुराद पहले के दीनी कानून हैं, जिन में कुछ हुक्म एक-दूसरे से अलग थे, एक दीन के कानून में कोई चीज हाराम और दूसरे दीन के कानून में वही हलाल थी, कुछ में किसी मसले में कड़ाई थी तो दूसरे में आसानी थी, लेकिन दीन सभी एक यानी तौहीद पर आधारित (मबनी) था, इस तरह सभी की दावत एक थी।

गुनाहों की सज़ा दे ही दे और ज़्यादातर लोग नाफरमान होते हैं।

५०. क्या यह लोग फिर से जाहिलीयत का फ़ैसला चाहते हैं? और यकीन रखने वालों के लिए अल्लाह (तआला) से बेहतर फ़ैसला करने वाला और हुक्म करने वाला कौन हो सकता है।

५१. हे ईमानवालो! तुम यहूदियों और इसाईयों को दोस्त न बनाओ, यह तो आपस में ही एक-दूसरे के दोस्त हैं, तुम में से जो कोई भी इन से दोस्ती करे तो वह उन में से है, ज़ालिमों को अल्लाह तआला कभी भी हिदायत नहीं देता।

५२. आप देखेंगे कि जिन के दिलों में रोग है, वह दौड़-दौड़ कर उन में घुस रहे हैं और कहते हैं कि हमें डर है कि ऐसा न हो कि कोई हादसा हम पर बाकेअ हो जाये, बहुत मुमकिन है कि अल्लाह (तआला) जीत अता कर दे या अपने पास से कोई दूसरा फ़ैसला लाये, फिर तो यह अपने दिल में छिपाई हुई बात पर बहुत शर्मिन्दा होंगे।

५३. और ईमानवाले कहेंगे कि क्या यही वे लोग हैं जो बड़े यकीन से अल्लाह की कसम खा-खा कर कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, उन के आमाल बर्बाद हो गये और ये नाकाम हो गये।

५४. हे ईमानवालो! तुम में से जो अपने दीन से पलट जाये तो अल्लाह (तआला) बहुत जल्द ऐसी क़ौम के लोगों को लायेगा जो अल्लाह के प्यारे होंगे और वे भी अल्लाह से प्यार करते होंगे^१ वह नरम दिल होंगे मुसलमानों पर, सज़त

أَقْرَبَكُمْ الْجَاهِلِيَّةَ يَبْعُونَ ط وَمَنْ أَحْسَنَ
مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٥٠﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ
وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ
وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ يَتَوَلَّهُمْ أَكُلَّهُ مِنْهُمْ ط
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٥١﴾

تَكَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ قُرْصٌ يَسَارِعُونَ
فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَىٰ أَنْ تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ ط
فَعَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ
عِنْدِهِ فَيُصِيبُوا عَلَىٰ مَا أَسْرَوْا فِي أَنفُسِهِمْ
نُذِيرِينَ ﴿٥٢﴾

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَوْلِيَاءَ الَّذِينَ أَقْسَمُوا
بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۗ إِنَّهُمْ لَبَعْلَكُمْ حَبِطَتْ
أَعْيَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَيْرِينَ ﴿٥٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ
دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ
وَيُحِبُّونَهُ ۗ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ

^१ अल्लाह तआला की ओर से बहयी है जो नबी ﷺ की बफ़ात के बाद बाकेअ हुई, इस फ़ितना को कुचलने का सेहरा हज़रत अबू बक्र (رضي الله عنه) और उन के साथियों को हासिल हुआ।

^२ मुर्तद (दीन के किसी क़ानून पर यकीन न रखने वाले) के ख़िलाफ़ जिस क़ौम को अल्लाह तआला खड़ा करेगा, उन के चार अवसाफ़ को बाजेह करके बयान किया जा रहा है। १. अल्लाह से मुहब्बत करना और उसका प्यारा होना, २. ईमानवालों के लिए नरम और काफ़िरों के लिए सज़त होना, ३. अल्लाह की राह में जिहाद करना, ४. अल्लाह के वारे में

और बेरहम होंगे काफिरों पर, अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे, किसी मलामत करने वाले इंसान की मलामत करने की फिक्र न करेंगे, ये है अल्लाह (तआला) का फज़ल जिसे चाहे अता करे, अल्लाह तआला सर्वशक्तिमान है और बहुत इल्म वाला है।

५५. (मुसलमानों)! तुम्हारा दोस्त खुद अल्लाह और उस का रसूल है और ईमानवाले हैं। जो नमाजों को कायम करते हैं और जकात अदा करते हैं और वे रूकूउ (खचूअ के साथ और ध्यानमग्न होकर) करने वाले हैं।

५६. और जो इंसान अल्लाह (तआला) से और उस के रसूल और मुसलमानों से दोस्ती करे उसे यकीन करना चाहिए कि अल्लाह (तआला) के बन्दे ही ग़ालिब होंगे।^१

५७. मुसलमानों! उन लोगों को दोस्त न बनाओ जो तुम्हारे दीन को हंसी-खेल बनाये हुए हैं, (चाहे) वे उन में से हों जो तुम से पहले किताब दिये गये या काफिर हों, अगर तुम ईमानवाले हो तो अल्लाह से डरते रहो।

عَلَى الْكَافِرِينَ رِيحًا هَدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَلَا يَخَافُونَ كَوْمَةً لَّا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ فَضَّلَ اللَّهُ
يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ط وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٥﴾

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا
الَّذِينَ يَقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَهُمْ رَاكِعُونَ ﴿٥٥﴾

وَمَنْ يَتَّوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا
فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ ﴿٥٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا
دِينَكُمْ هُزُوءًا وَكِبْرًا مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكَفَّارَ أَوْلِيَاءَ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ
إِنَّ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٥٧﴾

किसी के मलामत करने की फिक्र न करना। सहाबा किराम (رضي الله عنهم) इन अवसाफ और फज़ीलतों से मुजय्यन थे, इसलिए अल्लाह तआला ने उन्हें दुनिया और आखिरत के सभी सुखों से नवाजा और दुनिया में ही अपनी खुशी का सर्टीफिकेट उन्हें अता कर दिया।

^१ जब यहूदियों और ईसाईयों की दोस्ती से मना किया गया तो अब इसका जवाब दिया जा रहा है कि फिर वह दोस्ती किससे करें? कहा कि ईमानवालों का सब से पहला दोस्त अल्लाह तआला खुद है और उस के रसूल हैं और फिर उसके पैरोकार ईमानवाले हैं, आगे उन के कुछ एक गुण बताये गये हैं।

^२ यह अल्लाह तआला की जमाअत की अलामत है और उसकी कामयाबी की खबर दी जा रही है। अल्लाह तआला के बन्दों का गुट वही है जो सिर्फ अल्लाह, उस के रसूल और ईमानवालों से नाता रखे, और काफिरों, मूर्तिपूजकों, यहूदियों और ईसाईयों से दोस्ती और तरफदारी का नाता न रखे, चाहे वे उन के सगे-सम्बन्धी बयों न हों, जैसाकि सूर: मुजादिल: के आखिर में फरमाया गया है।

५८. और जब तुम नमाज के लिए पुकारते हो, तो वह उसे हंसी-खेल ठहरा लेता है, यह इसलिए कि यह अक्ल नहीं रखते हैं।

५९. आप कह दीजिए हे यहूदियों और इसाईयों! तुम हम से केवल इसलिए दूरमनी रखते हो कि हम अल्लाह (तआला) पर और जो कुछ हमारी तरफ उतारा गया है और जो कुछ इस से पहले उतारा गया है उस पर ईमान लाये हैं, और इसलिए भी कि तुम में ज्यादातर फासिक हैं।

६०. कह दीजिए कि क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि इस से भी ज्यादा बुरे बदले का पाने वाला अल्लाह तआला के करीब कौन है? वह जिस पर अल्लाह तआला ने लानत की हो और उस पर वह ग़ज़बनाक हुआ हो, और उन में से कुछ को बन्दर और सूअर बना दिया, और जिन्होंने भूटे देवताओं की इबादत की, यही लोग बुरे दर्जे वाले हैं और यही सच्चे रास्ते से बहुत ज्यादा भटके हुए हैं।

६१. और जब वे आप के पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, अगरचे वह कुफ़्र लिये हुए आये थे और उसी कुफ़्र के साथ गये भी, और यह जो कुछ छिपा रहे हैं उसे अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है।

६२. और आप देखेंगे कि इन में से बहुत से गुनाह के कामों की ओर, जुल्म और सरकशी की तरफ और हराम माल खाने की तरफ लपक रहे हैं, जो कुछ यह कर रहे हैं वह बहुत बुरे अमल हैं।

६३. उन्हें उन के पुजारी और आलिम उनको भूट बोलने और हराम खाने से क्यों नहीं रोकते? बेशक ये बुरे काम हैं, जो यह कर रहे हैं।

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوا حُزُومًا
وَعِيبًا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٥٨﴾

قُلْ يَا هَلْهُنَّ الْكُتُبُ هَلْ تَنْظُمُونَ وَمَثَلًا لِّأَن
أَمَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ مِن
قَبْلُ ۖ وَإِنَّا أَكْثَرُكُمْ فَيَسْقُونَ ﴿٥٩﴾

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرِّ مِمَّنْ ذَٰلِكَ مُتَوَبِّعًا عِنْدَ
اللَّهِ مِمَّن لَعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ
مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ
أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضَلُّ عَن سَوَاءِ
السَّبِيلِ ﴿٦٠﴾

وَإِذَا جَاءَهُمْ قَالُوا آمَنَّا وَقَدْ دَخَلْنَا
بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ حَرَجُوا بِهِ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ
بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ ﴿٦١﴾

وَرَأَى كَثِيرًا مِنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَأَكْبِهِمُ الشُّحَّ ۗ لَيْسَ مَا كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٦٢﴾

لَوْلَا يَتَّبِعُهُمُ الْرَأْيُ يُؤَيِّنُونَ وَالأَخْبَارُ عَن قَوْلِهِمْ
الْإِثْمُ وَأَكْبِهِمُ الشُّحَّ ۗ لَيْسَ مَا كَانُوا
يَصْنَعُونَ ﴿٦٣﴾

यह आलिमों, धर्मगुरुओं और साधु, संतों की मज्जमत है कि आम लोगों में से ज्यादातर तुम्हारे सामने नाफरमानी और बुरे काम करते हैं लेकिन तुम उन्हें रोकते नहीं, ऐसी हालत में तुम्हारी क्षमोशी बहुत बड़ा गुनाह है, इस से मालूम होता है कि नेक काम की तत्लीम और बुरे काम से रोकने का काम कितना अहम है और इसे छोड़ देने पर कितनी कड़ी धमकी है, जैसाकि अहादीस (रसूल के कौल) में इस मामले को तफसीली और बाज़ेह तौर से बयान किया गया है।

६४. और यहूदियों ने कहा कि अल्लाह (तआला) का हा। बंधा हुआ है, उन्ही के हाथ बंधे हुए हैं, और उन के इस क्रील के सबब उन पर लानत की गयी, बल्कि अल्लाह तआला के दोनों हाथ खुले हुए हैं, जिस तरह चाहता है खर्च करता है और जो कुछ तेरी ओर तेरे रब की ओर से उतारा जाता है वह उनमें से ज्यादातर को सरकशी और कुफ्र में बढ़ा देता है, और हम ने उन में आपस में ही क्रियामत तक के लिए दुश्मनी और हसद डाल दिया है, वह जब कभी भी जंग की आग को भड़काना चाहते हैं अल्लाह तआला उसके बुझा देता है, यह देश भर में खौफ और फसाद मचाते फिरते हैं^१ और अल्लाह तआला फसादियों से मुहब्बत नहीं करता।

६५. और अगर यह अहले किताब ईमान लाते और अल्लाह से डरते, तो हम उनकी सभी बुराईयाँ मिटा देते और उन्हें जरूर सुखद जन्नत में ले जाते।

६६. अगर वह तौरात और इजील और उन धर्मशास्त्रों की पाबन्दी करते जो उनकी तरफ उन के रब की ओर से उतारी गई है तो अपने ऊपर और पैरों के नीचे से खाते,^३ उन में एक धिरोह तो बीच का है और ज्यादातर लोग बुरा काम कर रहे हैं।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَرْغُولَةٌ أَيْدِيهِمْ
وَأَيْدِي سَاءِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ
كَيْفَ يَشَاءُ مَا وَكَيْزٍ يَدَانِ كَثِيرًا وَيَتَنَبَّهًا
أَنْزَلَ إِلَيْنَا مِنْ رَبِّكَ طُفْيَانًا وَكُفْرًا وَأَنْقَبْنَا
بَيْنَهُمْ أَعْدَاءً وَالْبَعْضَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَكَلَّمَا
أَوْفَدُوا نَارًا لِلصَّرْبِ أَخْفَاهَا اللَّهُ وَوَسِعُونَ
فِي الْأَرْضِ فَسَادًا وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ (٦٤)

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكُنَّا عَنْهُمْ
سَاهِينَمْ وَلَا كَلِمَةَ يَتْلُونَ (٦٥)

وَلَوْ أَنَّهُمْ آتَمُوا أَوَّلَ الْوَعْدَةِ وَالْإِنْجِيلَ وَمَا أَنْزَلْنَا
إِلَيْهِمْ مِنْ رَبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِنْ ثَمَرِهِمْ وَمِنْ
تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَمِنْهُمْ أُمَّةٌ مُقْتَصِدَةٌ وَكَثِيرٌ
مِنْهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ (٦٦)

^१ यानी यह जब भी आप के खिलाफ कोई साजिश करते हैं या लड़ाई का सबब पैदा करते हैं, तो अल्लाह तआला उनको नाकाम कर देता और उनकी साजिश को उन्ही पर पलटा देता है।

^२ उनका दूसरा आचरण (आदत) यह है कि जमीन पर फसाद फैलाने की भरपूर कोशिश करते हैं। हकीकत यह है कि अल्लाह तआला फसादियों को प्रिय नहीं रखता।

^३ ऊपर-नीचे का मतलब कुशादगी के लिया गया है, या ऊपर से का मतलब जरूरत के ऐतबार से आसमान से और नीचे से का मतलब जमीन से है जिसका नतीजा गल्ला की कसरत है।

६७. हे रसूल! (सन्देशवाहक) आप की तरफ आप के रब के पास से जो पैगाम उतारा गया है उसे पहुँचा दें, अगर आप ने यह नहीं किया तो अपने रब का पैगाम नहीं पहुँचाया और अल्लाह लोगों से आप की हिफाजत करेगा, बेशक अल्लाह काफिरों को हिदायत नहीं देता।

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٦٧﴾

६८. आप कह दें कि हे अहले किताब! तुम्हारा कोई आधार नहीं, जब तक कि तौरात और इंजील और जो भी (धर्मशास्त्र) तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे पास उतारा गया है, उसकी पाबन्दी (पालन) न करो और जो आप की तरफ (पाक क़ुरआन) आप के रब की तरफ से उतारा गया है वह इन में से ज़्यादातर की हठ और कुफ़्र को बढ़ायेगा! इसलिए आप काफिरों पर अफसोस न करें।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُ عَلَىٰ شَيْءٍ حَتَّىٰ تُؤْتُوا الْقُرْآنَ وَالْإِنجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ وَلَا تَزِيدُكُمْ نِكْرًا قَدْ كَفَرْتُمْ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۗ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾

६९. मुसलमानों, यहूदियों, तारों के पुजारियों और इसाईयों में से जो भी अल्लाह और आखिरी दिन (क्यामत) पर ईमान लायेगा और नेक काम करेगा उन पर कोई डर नहीं न वह गम करेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِقُونَ وَالصَّابِرُونَ مِنَ الْبُحْرَىٰ وَاللَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلُوا صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٩﴾

७०. हम ने इसाईल के बेटों (यहूदियों) से वादा लिया और उन के पास रसूलों को भेजा, जब कोई रसूल उन के पास ऐसा हुकम लाया जो उन का मन कुबूल न करता था तो उन्होंने एक गुट को झुठलाया और एक गुट को क़त्ल करते रहे।

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَرَأْسُنَا لِيُحْمَلَهُمْ رُسُلًا ۗ كَلَّمْنَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَىٰ أَنفُسُهُمْ فَذَرَبْنَا كَذِبًا وَفَرَقْنَا بِمَنَافِقِ الْمُشْرِكِينَ ﴿٧٠﴾

७१. और समझ बैठे कि कोई सजा न मिलेगी इसलिये अंधे-बहरे हो गये, फिर अल्लाह (तआला) ने उन को माफ़ कर दिया उस के वावजूद भी उन में से ज़्यादातर लोग अंधे-बहरे हो गये, और अल्लाह (तआला) उन के अमलों को अच्छी तरह देखने वाला है।

وَحَسِبُوا أَنَّهُمْ لَمْ يُحْمَلُوا بِهِمْ سَبْعًا ۗ وَوَعَدُ اللَّهِ إِنَّهُمْ كَانُوا لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٧١﴾

१ यह हिदायत और भटकाव उस नियमानुसार है जो अल्लाह तआला का क़ानून है, यानी जिस तरह कुछ कामों और चीजों के कारण ईमान, नेक काम और फ़ायदेमंद इल्म में बढ़ोत्तरी होती है।

७२. वह लोग काफिर हो गये जिन्होंने कहा कि मरियम का बेटा मसीह ही अल्लाह है, जबकि मसीह ने (खुद) कहा कि हे इस्राईल के बेटो! मेरे रब और अपने रब अल्लाह की इबादत करो क्योंकि जो अल्लाह के साथ शिर्क करेगा अल्लाह ने उस पर जन्नत हराम कर दी है और उसका ठिकाना जहन्नम है और जालिमों का कोई मददगार न होगा।¹

७३. वह लोग भी पूरी तरह से काफिर हो गये जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन का तीसरा है,² हकीकत में अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई माबूद नहीं और अगर यह लोग अपने कौल से न रुके तो उन में से जो कुफ्र में रहेंगे उन्हें सख्त अजाब जरूर पहुंचेगा।

७४. यह लोग अल्लाह (तआला) की तरफ क्यों नहीं झुकते और क्यों नहीं तौबा करते? अल्लाह (तआला) बहुत माफ करने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।

७५. मरियम के बेटे मसीह सिर्फ पैगम्बर होने के सिवाय कुछ भी नहीं, उस से पहले भी बहुत से पैगम्बर हो चुके हैं, उसकी माँ एक पाक और सच्ची औरत थी,³ दोनो (माँ-बेटे) खाना खाया करते थे।⁴ आप देखिये हम किस तरह दलील

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ
ابْنُ مَرْيَمَ ۗ وَقَالَ الْمَسِيحُ يَبْنِي لِسِرِّي
عِبَادُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ
فَقَدْ حَزَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ رَبِّئْتَهُ تَوَاسُتًا
وَمَا لَظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ ﴿٧٢﴾

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ ثَلَاثَةٌ
وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا إِلَهُ وَاحِدٌ وَإِنْ لَمْ
يَشْتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٣﴾

أَفَلَا يَتُوبُونَ إِلَى اللَّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لَهُ
وَ اللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٧٤﴾

مَا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ۗ وَأَمَّا صِدْقُهُ ۗ
كَانَا يَأْكُلِينَ الْكَفَّارَةُ ۗ انظُرْ كَيْفَ بُدِّلَتْ
لَهُمُ الْآيَاتُ ثُمَّ انظُرْ أَنَّى يُؤْتَوْنَ ﴿٧٥﴾

¹ हजरत मसीह ने अपनी बंदगी और रिसालत का इजहार उस वक्त भी किया था जब वह माँ की गोद में दूध पीने की उम्र में थे, फिर बलुगत में भी यही एलान किया और साथ ही साथ शिर्क की पहचान और बचावो का तरीका और बुराईयाँ भी बयान कर दी कि मूर्तिपूजक पर जन्नत हराम है और उसका कोई मददगार भी न होगा, जो उसे जहन्नम से निकाल लाये, जैसाकि जालिमों का भ्रम है।

² यह इस्राईयों के दूसरे गुट का बयान है, जो तीन के जोड़ को अल्लाह मानता है और उसे त्रिमूर्ति कहता है।

³ **حَدِيث** का मतलब है ईमानवाली और पाक यानी उन्होंने भी हजरत ईसा की रिसालत को माना और उस पर यकीन किया, इसका मतलब यह हुआ कि वह रसूल नहीं थी जैसा कि कुछ लोगों को भ्रम हुआ है।

⁴ इस में हजरत मसीह और हजरत मरियम दोनों के माबूद न होने और इंसान होने को साबित किया है, क्योंकि खाना खाना, यह इंसान की जरूरत और मर्जी के मुताबिक है। जो माबूद हो, वह तो इन गुणों (सिपतों) से तो पाक है, बल्कि हर तरह से पाक होता है, यानी दोनो आम इंसान थे और उन में सभी इंसानी खुसूसियत पाई जाती थी।

उनके सामने पेश करते हैं, फिर ख्याल कीजिए कि वे किस तरह पलटायें जाते हैं।

७६. आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह के सिवाय उनको पूजते हो जो न तो तुम्हारे नुकसान के मालिक हैं और न किसी तरह के फायदे के, अल्लाह (तआला) ही अच्छी तरह सुनने वाला और पूरी तरह से जानने वाला है।

७७. कह दीजिए हे अहले किताब! अपने दीन में गुलू न करो^१ और उन लोगों की इच्छाओं की पैरवी न करो, जो पहले से भटक चुके हैं और बहुतों को भटका चुके हैं और सीधे रास्ते से हट गये हैं।

७८. इस्राईल की औलाद के काफिरों को (हजरत) दाऊद और (हजरत) ईसा इब्ने मरियम के मुँह से लानत किया गया, इस सबब कि वे नाफरमानी करते थे और हद से तजाबुज करते थे।

७९. वे आपस में एक-दूसरे को बुरे कामों से जो वह करते थे रोकते न थे, जो कुछ यह करते थे जरूर वह बहुत बुरा था।

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ
لَكُمْ ضَرًّا وَلَا نَفْعًا وَاللَّهُ هُوَ السَّمِيعُ
الْعَلِيمُ ﴿٧٦﴾

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ
غَيْرِ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ قَوْمٍ قَدْ
ضَلُّوا مِنْ قَبْلُ وَأَضَلُّوا كَثِيرًا وَضَلُّوا
عَنْ سَوَاءِ السَّبِيلِ ﴿٧٧﴾

لَعْنُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى
لِسَانِ دَاوُدَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ
بِمَا عَصَوْا وَكَانُوا يَعْتَدُونَ ﴿٧٨﴾

كَانُوا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُنْكَرٍ فَعَلُوهُ
لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٧٩﴾

^१ यह मूर्तिपूजकों की बेअकली को सावित किया जा रहा है कि उन्होंने ऐसों को पूज्य बना रखा है जो किसी को न फायदेदा पहुँचा सकते हैं और न नुकसान, बल्कि फायदे-नुकसान तो दूर की बात, वह तो किसी बात को सुनने और किसी की हालत को जानने की ही ताकत नहीं रखते हैं, यह ताकत सिर्फ अल्लाह ही को है, इसलिए मुदिकल कुशा और हाजत रवा सिर्फ वही है।

^२ यानी सच्चाई की पैरवी करने में हद से तजाबुज न करो, और जिनका एहतेराम करने का हुक्म दिया गया है, उसमें गुलू करके नवूत के पद से उठा कर माबूद के मुकाम पर न बिठा दो, जैसे कि हजरत मसीह के वारे में तुम ने किया, गुलू हर बक्त में शिर्क और भटकाव का जरिया रहा है। मुसलमान भी इस गुलू से महफूज नहीं रह सके, उन्होंने कुछ बिद्वानों (आलिमों) के वारे में गुलू किया और उनके ख्याल, कौल यहाँ तक कि उन से जुड़े हुए दीनी फ़ैसले और इरादों को भी रसूल अल्लाह ﷺ की हदीस के मुकाबले में तरजीह दी।

८०. उन में के ज्यादातर लोगों को आप देखेंगे कि वे काफिरों से दोस्ती करते हैं, जो कुछ उन्होंने अपने आगे भेज रखा है वह बहुत बुरा है, (यह) कि अल्लाह (तआला) उन से नाराज हुआ और वे हमेशा अज्ञाब में रहेंगे।

८१. अगर उन्हें अल्लाह (तआला) पर, नबी पर और जो उतारा गया है, उस पर ईमान होता तो यह काफिरों से दोस्ती न करते, लेकिन उन में से ज्यादातर लोग दुराचारी (मलतकार) हैं।

८२. बेशक आप ईमानवालों का सख्त दुश्मन यहूदियों और मूर्तिपूजकों को पायेंगे,^१ और ईमानवालों के सब से ज्यादा करीब की दोस्ती, आप जरूर उन में पायेंगे जो अपने आप को इसाई कहते हैं, यह इसलिए कि उन में आलिम और वैरागी हैं और इस सबब कि वे घमण्ड नहीं करते।^२

تَرَىٰ كَثِيرًا مِنْهُمْ يَتَوَكَّلُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا مُوَظَّفِينَ
مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللَّهُ
عَلَيْهِمْ فِي الصَّالِحِينَ ۝٨٠

وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنزِلَ
إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوا هُمُ الْوَلِيَاءَ وَلَكِنْ كَثِيرًا
مِّنْهُمْ فَسِقُونَ ۝٨١

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ
آمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا ۚ وَلَتَجِدَنَّ
أَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا
إِنَّا نَصْرِيٰ وَمَذَلِكُ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِيَسِينَ
وَرُهْبَانًا ۚ إِنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝٨٢

^१ यह काफिरों से दोस्ती का नतीजा है कि अल्लाह तआला उन पर गजबनाक हुआ और इसी गजब के सबब दायमी तौर से जहन्नम का अज्ञाब है।

^२ इसका मतलब यह है कि जिस इंसान के अन्दर सच में यकीन होगा वह गुमराहों से कभी दोस्ती नहीं करेगा।

^३ इसलिए कि यहूदियों में दुश्मनी और इंकार, सच्चाई से भूह मोड़ना, घमण्ड, आलिमों और ईमानवालों की आलोचना की भावना बहुत पायी जाती है। यही वजह है कि नबियों का कत्ल और उन को झुठलाना उनका किरदार रहा है, यहाँ तक कि उन्होंने रसूल अल्लाह ﷺ के कत्ल की कई बार साजिश की, आप ﷺ पर जादू भी किया, हर तरह से नुकसान पहुँचाने की घृणित (मकरूह) योजना बनाई और इस बारे में मूर्तिपूजकों की भी यही हालत रही है।

^४ رُهْبَان से मुराद, नेक और वैरागी और قِسِيَس से मुराद उलमा और आलिम है, यानी इन इसाईयों में इल्म और नमी है, इसलिये उन में यहूदियों की तरह इंकार और घमण्ड नहीं। इस के सिवाय इसाई दीन में माफ़ी की शिक्षा (तालीम) की प्रधानता है, यहाँ तक कि उन के ग्रन्थों में लिखा है कि कोई तुम्हारे दायें गाल पर मारे तो बायाँ गाल उस के सामने कर दो, इन सबकों से यह यहूदियों के मुक़ाबले मुसलमानों से करीब है।

८३. और जब वह रसूल की तरफ उतारे हुए (पैगाम) सुनते हैं, तो आप उनकी आखों से बहते आंसू की धारा को देखते हैं, इस वजह से कि उन्होंने हक को पहचान लिया, वह कहते हैं हे हमारे रब! हम मुसलमान हो गये, वस तू हमें भी गवाहों में लिख ले।

८४. और हमें क्या है कि अल्लाह और उस सच्चाई पर यकीन न करें जो हमारे पास आया है और यह उम्मीद न करें कि हमारा रब हमें सालिहीन में शामिल कर देगा।

८५. तो अल्लाह ने उनकी इस दुआ के सबब ऐसे बाग दिये जिन के नीचे नहरें जारी हैं, जिस में हमेशा रहेंगे और यही नेक लोगों का बदला है।

८६. और जो काफिर हो गये और हमारी आयतों को झुठला दिये वही जहन्नमी है।

८७. हे ईमानवालो! उन पाक चीजों को हराम न बनाओ जिन्हें अल्लाह ने तुम्हारे लिये हलाल बना दिया^१ और ज्यादाती न करो, बेशक अल्लाह ज्यादाती करने वालों से प्यार नहीं करता।

८८. और अल्लाह (तआला) ने जो चीजें तुम्हें दी हैं उन में से पाकीजा हलाल चीजें खाओ और अल्लाह तआला से डरो, जिस पर तुम ईमान रखते हो।

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَوَلَّى
أَعْيُنُهُمْ تَفِيضٌ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ
يَقُولُونَ رَبَّنَا مَا كُنَّا مَعَ الشَّاهِدِينَ ۝۸۳

وَمَا كُنَّا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ
وَنَطَّلِعُ أَنْ يُدْخِلَنَا رَبَّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ ۝۸۴

فَأَنزَلْنَا لَهُمُ اللَّهُ بَاقًا لَّهُمْ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝۸۵

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَهَنَّمَ ۝۸۶

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحْرَمُوا حَالِالِ
مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ
لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝۸۷

وَكُلُوا مِنَّمَا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۝۸۸
وَأَقْبُوا اللَّهَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِحُبِّ
الَّذِي آتَاكُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ ۝۸۹

^१ हदीस में आता है कि एक आदमी नबी ﷺ की खिदमत में हाजिर हुआ और कहने लगा हे रसूलुल्लाह ﷺ! जब मैं गोश्त खाता हूँ तो जिमाज की इच्छा (ख्वाहिश) ज्यादा हो जाती है, इसलिए मैंने अपने ऊपर गोश्त हराम कर लिया है, जिस पर यह आयत उतरी। (सहीह तिमिजी, अलबानी, भाग ३, पेज ४६)

८९. अल्त्याह तआला तुम्हारी कसमों में बेकार कसमों पर तुम को नहीं पकड़ता, लेकिन पकड़ उसकी करता है तुम जिन कसमों को मजबूत कर दो,^१ उसका कफ़ारा दस गरीबों को खाना देना है औसत दर्जे का, जो अपने घरवालों को खिलाते हो,^२ या उनको कपड़ा देना,^३ या एक गुलाम या लौण्डी आजाद करना है,^४ और जिस से यह न हो सके वह तीन दिन रोजे रखे।^५ यह तुम्हारी कसमों का कफ़ारा है जबकि तुम कसम खा लो और अपनी कसमों की हिफाजत

لَا يُؤْخَذُ كَلِمَةُ اللَّهِ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ
يُؤْخَذُ كَلِمَةً بِمَا عَقَدْتُمُ الْأَيْمَانَ ۖ فَكَلِمَاتُكُمْ
إِطْعَامُ عَشْرَةِ مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا نَطْوُونَ
أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَعْرِيفُ رَقَبَةٍ ۚ مَنْ لَمْ
يَجِدْ قِيَامًا ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ ذِكْرَ كَفَّارَةِ أَيْمَانِكُمْ
إِذَا حَلَفْتُمْ ۚ وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ ۚ كَذَلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٨٩﴾

१ कसम को अरबी जुवान में हलफ या यमीन कहते हैं, जिनका बहुवचन (जमा) अहलाफ और ऐमान है। कसम की तीन किस्में हैं: (१) लगव (२) गमूस (३) मोअक्कद। (१) लगव वह कसम है जो इंसान बात-बात पर आदतन बिना किसी वजह और मकसद के खाता रहता है, इस में कोई पकड़ न होगी। (२) गमूस वह झूठी कसम है जो इंसान धोखा देने या छल के लिए खाता है, यह बहुत बड़ा गुनाह है, लेकिन इस का कोई कफ़ारा नहीं है। (३) मोअक्कद वह कसम है जो इंसान अपनी बात में जोर और पुख्तगी के लिए जानबूझ कर खाये, इस तरह की कसम को अगर तोड़ेगा तो उसका वह कफ़ारा अदा करेगा, जिसका आगे आयत में बयान है।

२ इस खाने की तादाद के लिए कोई एक सही क़ौल नहीं है, इसलिए इख़ितालाफ है, लेकिन इमाम शारफ़ ने उस हदीस से दलील देते हुए, जिस में रमजान में रोज़े की हालत में बीबी से जिमाअ करने का जो कफ़ारा है, लगभग आधा किलो हर गरीब का खाना मुकरर किया है, क्योंकि नबी ﷺ ने उस इंसान को बीबी के साथ रोज़े की हालत में जिमाअ करने के कफ़ारा के तौर पर १५ साअ खजूरे दिलवायी थी, जिन्हें साठ गरीबों में बाँटा गया था, एक साअ में चार मुह और एक मुह (लगभग छः सौ ग्राम होता है) इस बिना पर बिना शोरवे के सालन के दस गरीबों को देने के लिए दस मुह (यानी छः किलो) खाना कफ़ारा होगा। (इब्ने कसीर)

३ कपड़े के बारे में भी इख़ितालाफ है, जाहिरी तौर से मुराद कपड़े का जोड़ा है जिसमें इंसान नमाअ पढ़ सके, कुछ आलिमों ने खाना और कपड़ा दोनों के लिए रीति और रिवाज को विश्वस्त (मोतबर) माना है।

४ कुछ आलिमों ने चूक से क़त्ल के कफ़ारा पर हिसाब करके दास और दासियों के लिए ईमान का प्रतिबन्ध (शर्त) लगाया है। इमाम शौकानी कहते हैं, आयत आम है जिस के अन्दर मोमिन और काफिर दोनों आते हैं।

५ यानी जिस इंसान को ऊपर के तीनों विषयों में से किसी की ताकत न हो वह तीन दिन रोज़ा रखे, कुछ आलिम लगातार रोज़े (ब्रत) रखने के हक़ में हैं और कुछ के ख़्याल से दोनों जायज़ हैं।

करो, इस तरह अल्लाह तआला तुम्हारे लिए अपने हुक्मों को बयान करता है, ताकि तुम शुक्रिया अदा करो।

९०. हे ईमानवालो! शराब, जुआ और मूर्तियों की जगह और पासे मन्दे शैतानी काम हैं, इसलिए तुम इस से अलग रहो ताकि कामयाब हो जाओ।^१

९१. शैतान चाहता ही है कि शराब और जुआ के जरिये तुम्हारे बीच दुश्मनी और हसद डाल दे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज से रोक दे तो तुम रुकते हो या नहीं।^२

९२. और अल्लाह के हुक्म की पैरवी करो और रसूल की इताअत करो और होशियार रहो और अगर तुम ने मुंह फेरा तो जान लो कि हमारे रसूल पर खुला सदेह (पैगाम) पहुँचा देना है।

९३. ऐसे लोगों पर जो ईमान रखते हैं और नेकी का काम करते हैं, उस चीज में कोई गुनाह नहीं जिस को वह खाते-पीते हों, जबकि वह लोग अल्लाह से डरते हैं और ईमान रखते हैं और नेकी का काम करते हैं, फिर परहेजगारी करते हैं और ईमान रखते हैं फिर परहेजगारी करते हैं और बहुत ज्यादा नेकी का काम करते हैं, अल्लाह ऐसे नेक काम करने वालों से मुहब्बत करता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ
وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ
الشَّيْطَانِ فَأَجْرِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿٩٠﴾

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ
وَالْبُغْضَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَسَدَّ كُمْ عَنْ ذِكْرِ
اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ فَهَلْ أَنْتُمْ مُنْتَهُونَ ﴿٩١﴾

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْتَرُوا
تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلِمُوا إِنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَيِّنَاتُ
الْمُبِينَاتُ ﴿٩٢﴾

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ
فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
ذُرِّيَّةً تُحَرِّمُ اتَّقُوا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوْا وَ
أَحْسَنُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٣﴾

^१ यह शराब के बारे में तीसरा हुक्म है। पहले दो हुक्मों में उसे वाजेह तौर से हराम नहीं किया गया है, लेकिन यहाँ उस के साथ जुआ, इबादतगाहों या धानों और शगून के तीरों को बुरा और शैतानी काम एलान करके वाजेह लफ्जों में इन सभी से महफूज रहने का हुक्म दे दिया गया है।

^२ यह जुआ और शराब के दूसरे सामाजिक और दीनी नुकसान हैं, जिन के बयान की जरूरत नहीं, इसी वजह से शराब को सभी बुराईयों की माँ कहा जाता है और जुआ भी ऐसी ही बुरी लत है, यह इंसान को किसी काम का नहीं रखता और ज्यादातर धनवानों और खानदानी जागीरदारों को भीखारी और दरिद्र बना देता है, हमें अल्लाह दोनों से महफूज रखे।

१४. हे ईमानवालो! अल्लाह (तआला) कुछ शिकार के जरिये तुम्हारा इम्तेहान लेता है,^१ जिन तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे भाले पहुँच सकेंगे ताकि अल्लाह (तआला) मालूम कर ले कि कौन इंसान उस से बिना देखे डरता है, जो इंसान इस के बाद हद से बढ़ जायेगा उसे सज़ा सज़ा है।

१५. हे ईमानवालो! जब तुम (हज या उमरः का) एहराम की हालत में रहो तो शिकार न करो और तुम में से जो भी जान बूझ कर उसे मारे^२ तो उसे फिदिया देना है उसी के समान,^३ पालतू जानवर से जिसका फैसला तुम में से दो आदिल करेंगे जो कुर्बानी के लिये कअबा तक पहुँचाया जायेगा या फिदिया के तौर पर भिस्कीनों को खाना देना है या उस के बराबर रोजे (व्रत) रखना है ताकि अपने किये की सज़ा चखो, जो पहले हो चुका अल्लाह ने उसे माफ़ कर दिया और जो इस (मना के हुक्म) के बाद ऐसा फिर करेगा अल्लाह उस से बदला लेगा, अल्लाह ताक़तवर बदला लेने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيُبَيِّنَ اللَّهُ لَكُمُ الْيَسْرَ
مِنَ الصَّيْدِ تَنَاءُ أَيِّدِيكُمْ وَمَا حُمِلَ لَيْسَ
اللَّهُ مِنْ يَحْفَافِهِ بِالْفَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدَى
بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٩٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ حُرُمٌ
وَمَنْ قَتَلَهُ مِنْكُمْ مُتَعَمِّدًا فَجَزَاءٌ مِمَّا قَتَلَ
مِنَ النَّعْمِ يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِنْكُمْ هَدْيًا بَالِغَ
الْكَيْبَةِ أَوْ كِفَارًا ذَكَرَ طَعَامُ مُسْكِينٍ أَوْ عَدْلٌ ذَلِكَ
بِمِثْلِ مَا لَيْدُونَ وَيَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَسَى أَنْ يَكُونَ
دُونِهَا حَقِيرًا ﴿٩٥﴾

^१ शिकार अरबों के जिन्दगी गुज़ारने का एक खास जरिया था, इसलिए एहराम की हालत में इसे हराम करके उनका इम्तेहान लिया गया, खास तौर से हुदैबिया में रहने के वक़्त शिकार ज़्यादा सहाबा के नजदीक आते, लेकिन उन्हीं दिनों में यह चार आयतें उतरी, जिस में उस से मुतअल्लिक हुक्म दिये गये।

^२ "जान-बूझ कर" के कलिमा से कुछ आलिमों ने यह दलील निकाली है कि बिना कोशिश के अगर भूल से अंजाने में क़त्ल हो जाये तो उस में फिदिया नहीं है, लेकिन ज़्यादातर आलिमों के नजदीक मर्जी और ग़ैर मर्जी दोनों हालतों में जानवर क़त्ल करने पर फिदिया देना होगा, जान-बूझ कर की बात हालतों के हिसाब से है शर्त की के शकल में नहीं है।

^३ बराबर जानवर से मुराद फितरी यानी जिस्म और दर्जे में बराबर होना है, क़ीमत में बराबर होना नहीं है, जैसाकि अगर हिरण का क़त्ल हुआ तो उसके बराबर बकरी है, गाय के बराबर नील गाय है आदि। लेकिन जिस जानवर का बराबर नहीं मिल सकता हो, वहाँ उस कीमत के तौर पर फिदिया लेकर मक्का पहुँचा दिया जायेगा। (इब्ने कसीर)

९६. तुम्हारे लिए समुन्दर का शिकार पकड़ना और खाना हलाल किया गया है।^१ तुम्हारे इस्तेमाल के लिए और मुसाफिरों के लिए, और खुशकी का शिकार हराम किया गया जब तक तुम एहराम की हालत में हो, और अल्लाह (तआला) से डरो जिस के पास जमा किये जाओगे।

९७. अल्लाह ने कअबा को जो हुरमत वाला घर है, लोगों के लिये क्रायम रहने का सबब बनाया और हुरमत वाले महीने को और हरम में क़ुर्बानी दिये जाने वाले जानवरों को भी और उन जानवरों को भी जिन के गले में पट्टे हों।^२ यह इसलिए ताकि तुम इस बात पर यक़ीन कर लो कि बेशक अल्लाह (तआला) आसमानों और ज़मीन के अन्दर की चीज़ों का इल्म रखता है और बेशक अल्लाह सभी चीज़ को अच्छी तरह जानता है।

९८. तुम यक़ीन करो कि अल्लाह तआला सजा भी सज़त देने वाला है और अल्लाह (तआला) बड़ा बख़्शने वाला और बहुत रहम करने वाला भी है।

९९. रसूल का फ़र्ज तो सिर्फ़ पहूँचाना है और अल्लाह (तआला) सभी कुछ जानता है जो कुछ तुम जाहिर करते हो और जो कुछ छिपा रखते हो।

أَجَلٌ لَّكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ
وَاللَّيْتَارُ ۗ وَحُومٌ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مِمَّا دُمِمَتْ
حُرْمَتُهُ وَالْقَوَا اللَّهُ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٩٦﴾

جَعَلَ اللَّهُ الْكعبةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِلنَّاسِ
وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالقَلَائِدَ ذَلِكُمْ
لِتَعْلَمُوا أَنَّهُ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ وَأَنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٩٧﴾

اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللَّهَ
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٨﴾

مَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ﴿٩٩﴾

^१ حَيْثُ (सैद) से मुराद जिन्दा जानवर और طَعَامُهُ (तआमुह) से मुराद मुदा (मछली वगैरह) है जिसे समुद्र या नदी बाहर फेंक दे या पानी के ऊपर आ जाये, जिस तरह से हदीस में बाब्रह तौर से कहा गया है कि समुद्र का मुदा जानवर हलाल है। (तफ़सीली जानकारी के लिए देखें तफ़सीर इब्ने कसीर, और नैनुल औतार वगैरह)

^२ कअबा को बैतुल-हराम इसलिए कहा जाता है कि उस के हद के अन्दर शिकार करना, पेड़ काटना वगैरह हराम है, इसी तरह अगर इस में बाप के कातिल से भी सामना हो जाये तो उसे छोड़ा नहीं जाता था।

१००. आप कह दीजिए कि नापाक और पाक बराबर नहीं, अगरचे आप को नापाक की ज्यादाती अच्छी लगती हो, अल्लाह (तआला) से डरते रहो, हे अक्लमंदो! ताकि तुम कामयाब हो।

१०१. हे ईमानवालो ! ऐसे विषय में सवाल न करो कि जिसे जाहिर कर दिया जाये तो तुम्हें बुरा लग जाये और अगर कुरआन उतारे जाने के वक्त सवाल करोगे तो तुम्हारे ऊपर जाहिर कर दिया जायेगा, जो हो चुका अल्लाह ने उसे माफ़ कर दिया और अल्लाह बड़बुदने वाला सहन करने वाला है।

१०२. तुम से पहले कुछ लोगों ने यही सवाल किया फिर उन के इकारी हो गये।

१०३. अल्लाह ने हुक्म नहीं दिया है बहीर: की न साएब: की न बसील: की न हाम की^१ लेकिन काफिर अल्लाह पर झूठा इल्जाम लगाते हैं और उन में ज्यादातर अक्ल नहीं रखते।

قُلْ لَا يَسْتَوِي الْغَنِيُّ وَالْفَيْسُ وَلَوْ أَنَّجَبْتُمْ
كَثْرَةَ الْغَنِيِّ فَآتَوْا اللَّهَ يَأُولِي الْأَنْبَابِ
لَعَلَّكُمْ تَفْلِحُونَ ﴿١٠٠﴾

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِلَّا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ
إِنْ سَأَلْتُمْ لَكُمْ شُرُوكُ ۗ وَإِنْ سَأَلْتُمْ عَنْهَا
حِينَ يُنزَّلَ الْقُرْآنُ ثَبَدْنَا لَكُمْ طَعْفًا اللَّهُ
عَنْهَا ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٠١﴾

قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوا بِهَا
كُفْرِينَ ﴿١٠٢﴾

مَا جَعَلَ اللَّهُ مِنْ بَحِيرَةَ وَلَا سَابِيحَةَ وَلَا وَجِيلَةَ
وَلَا حَابِرَةَ ۗ وَلَكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى
اللَّهِ الْكُذِبَ ۗ وَالْأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿١٠٣﴾

^१ यह निषेधाज्ञा (ममानिअत) कुरआन के उतरने के वक्त थी, खुद नबी ﷺ भी सहाबा को ज्यादा सवाल करने से रोकते थे। एक हदीस में आप ﷺ ने फरमाया: "मुसलमानों में सब से बड़ा गुनहगार वह है जिस के सवाल करने के सबब कोई चीज हराम हो गयी, जबकि उससे पहले वह हलाल थी।"

^२ यह उन जानवरों की किस्में हैं जो अरबवासी अपनी मूर्तियों के नाम पर आजाद करते थे, इनकी कई तफसीरों की गयी हैं। हूजरत सईद बिन मुसयिब के कौल के मुताबिक सहीह बुखारी में इसकी तफसीर निम्न रूप से संकलित की गयी है। बहीर:- वह जानवर है जिसका दूध दूहना छोड़ दिया जाता था और कहा जाता था कि यह मूर्तियों के लिए है, इसलिए कोई भी इसान उस के धनों को हाथ नहीं लगाता। साएब: वह जानवर जिन्हें वे मूर्तियों के नाम पर छोड़ देते उन पर न सवारी करते न माल लादते, जैसे छूटे सांड। बसील:- वह ऊंटनी जिससे सब से पहले मादा पैदा होती और फिर दूसरी बार भी मादा होती (यानी एक मादा के बाद दूसरी मादा हुई और किसी नर के पैदा न होने के सबब बीच में भेद न हुआ) तो ऐसी उंटनियों को भी मूर्तियों के नाम आजाद छोड़ दिया करते थे और हाम- वह नर ऊंट है जिसके जरिये उसकी नस्ल से कई ऊंट पैदा हो चुके होते हैं, तो उनको भी मूर्तियों के नाम पर छोड़ देते, उससे भी सवारी और भार बाहन का काम नहीं लेते और हामी पशु कहते।

१०४. और जब उन से कहा गया कि उस (पाक कुरआन) की और रसूल (मुहम्मद ﷺ) की तरफ आओ तो उन्होंने कहा कि जिस (रीति) पर हम ने अपने बुजुर्गों को पाया है वह हमें वस है, अगरचे उन के बुजुर्ग कुछ न जान रहे हों और सही रास्ते पर न हों।

१०५. हे ईमानवालो! अपनी फिक्र करो, जब तुम सच्चे रास्ते पर चल रहे हो तो जो इंसान भटक जाये उस से तुम्हारा कोई नुकसान नहीं, अल्लाह ही के पास तुम सभी को जाना है, फिर वह तुम सब को वतला देगा जो कुछ तुम करते थे।

१०६. हे ईमानवालो! जब तुम में किसी की मौत का वक़्त हो तो वसीयत के वक़्त तुम में से दो आदिल इंसान को गवाह होना चाहिये^१ या तुम्हारे सिवाये दो अन्य को अगर तुम ज़मीन में सफ़र कर रहे हो और तुम पर मौत की मुसीबत आ जाये,^२ (शक़ की हालत में) तुम दोनों (गवाहों) को (जमाअत की) नमाज़ के बाद रोकोगे फिर दोनो अल्लाह की क़सम लेंगे कि हम इस (गवाही) के बदले कोई क़ीमत नहीं लेना चाहते^३ अगरचे वह क़रीबी हो और हम अल्लाह

وَإِذَا قِيلَ لَهُم تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَكُنَّا آبَاءَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ ﴿١٠٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ لَا تَعْمَلُوا مِمَّنْ صَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَيْنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ آخَرَيْنِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ صَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَاصْبِرْكُمْ فَصِيبَةُ الْمَوْتِ تَحْبِسُونَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمْنَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِنَّ شَيْئًا وَكُنَّا ذَا قُرْبَىٰ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَبِينَ الْأَشْيَاءِ ﴿١٠٦﴾

१. "तुम में से हों" का मतलब कुछ ने यह लिया है कि मुसलमानों में से हों, और कुछ ने कहा है कि (مُؤْمِنِينَ) (वसीयत करने वाले) की क़ौम के हों, इसी तरह (أَخْرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ) में दोनों मतलब होंगे, यानी (مِنْ غَيْرِكُمْ) से मुराद जो मुसलमान न हों (अहले किताब) होंगे या उत्तरदान कर्ता की क़ौम के सिवाय दूसरी क़ौम से।

२. यानी सफ़र में ऐसा रोग हो जाये जिससे बचने की उम्मीद न हो तो वह सफ़र में दो आदिल गवाह बनाकर जो वसीयत करना चाहे कर दे।

३. अगर मरने वाले के वारिस को यह शक़ हो जाये कि गवाहों ने ख़ियानत की या फेर-बदल किया है, तो वह नमाज़ के बाद यानी लोगों की मौजूदगी में उन से क़सम लें और वह क़सम खाकर कहें कि हम अपनी क़सम के बदले दुनिया का कोई फ़ायदा नहीं हासिल कर रहे हैं यानी झूठी क़सम नहीं खा रहे हैं।

की गवाही नहीं छुपा सकते, अगर ऐसा करेंगे तो हम दोषी है।

१०७. फिर अगर पता लग जाये कि वह दोनों (गवाह) किसी गुनाह के पात्र (मुस्तहक) हुये हैं तो जिन के ऊपर गुनाह के पात्र हुए हैं उन में से दो करीबी रिश्तेदार दोनों (गवाहों) की जगह खड़े होंगे और अल्लाह की कसम लेंगे कि हमारी गवाहियाँ इन दोनों की गवाहियों से ज्यादा सच है और हम ने ज्यादाती नहीं किया है, हम इस हालत में जालिम होंगे।

१०८. यह सबसे करीबी जरिया है कि वे लोग सच्ची गवाही दे या उन्हें यह डर हो कि कसमों के वाद फिर कसम उल्टी पड़ जायेगी और अल्लाह से डरो और सुन लो कि अल्लाह फासिकों को हिदायत नहीं देता।

१०९. जिस (क्यामत) दिन अल्लाह (तआला) पैगम्बरों (उपदेशकों) को जमा करेगा, फिर पूछेगा कि तुम को क्या जवाब मिला था? वह जवाब देंगे हम को कुछ नहीं मालूम, सिर्फ तू ही गैब का जानकार है।

११०. जब अल्लाह कहेगा कि हे मरियम के बेटे ईसा! अपने और अपनी माँ के ऊपर मेरी नेमत को याद करो जब मैंने पाकीजा रूह^१ (जिब्रील) के जरिये तुम्हारी मदद की, तुम पालने में और अघेड़ उम्र में लोगों से बात करते रहे और जब हम ने किताब और हिकमत और तौरात और इंजील का इल्म दिया और जब तुम मेरे हुक्म से पक्षी की प्रतिमा (मुजस्समा) मिट्टी से बनाते थे और उस में फूँकते थे तो मेरे हुक्म से पक्षी बन

وَأَنْ عَثُرَ عَلَىٰ أَلْهَمًا سَخَقَ لِئَلَّا يَأْكُرُوا بِمَا عَمِلُوا
مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَادِ
فَيُقْسِمُونَ بِاللَّهِ كَتْمًا وَكِبْرًا مِنْ شَهَادَتِهِمَا
وَمَا اسْتَدْبَرْتُمَا إِنَّا إِذَا تُرِيبَ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٧﴾

ذَلِكَ أَذَىٰ أَنْ يَأْتُوا بِاللَّهَادَىٰ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ أَوْ يَخَافُوا
أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانُ بَعْدَ آيْمَانِهِمْ وَالْقَوْلَ اللَّهُ وَسَمِعُوا
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿١٠٨﴾

يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ
قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١٠٩﴾

إِذْ قَالَ اللَّهُ لِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ادْكُرِي عَنِّي
عَلَيْكَ وَعَلَى الْوَالِدِ الْكَرِيمِ إِذْ أَمَرْنَاكَ بِالْحَقِّ
ثُمَّ لَمَسْتَ فِي السَّمَاءِ وَكَلَّمْنَاكَ وَإِذْ عَلَّمْنَاكَ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالشُّرُوءَ وَالْإِنْجِيلَ وَإِذْ
خَلَقْنَا مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِأَذْنٍ فَتَنَفَّخُ

^१ यानी भूठी कसम खाई है।

^२ इस से मुराद हजरत जिब्रील है, जैसाकि सूर: अल-यक्र: की आयत नं० ८७ में गुजरा।

जाता था और तुम मेरे हुक्म से पैदाईशी अन्धे और कोढ़ी को सेहतयाब कर रहे थे और मेरे हुक्म से मुद्दों को निकालते थे और जब मैंने इस्राइल के बेटों को तुम से रोका जब तुम उन के पास मोजिजा लाये । तो उन में से काफिरों ने कहा कि यह सिर्फ खुला जादू है ।

१११. और जबकि मैंने हवारियों को प्रेरणा (इल्हाम किया) दी कि तुम मुझ पर और मेरे रसूलों पर ईमान लाओ, उन्होंने कहा, हम ईमान लाये और आप गवाह रहिए कि हम पूरी तरह से फरमाबिर्दार हैं ।

११२. याद करो जब हवारियों ने कहा कि हे ईसा मरियम के बेटे! क्या तुम्हारा रब हम पर आसमान से एक धाल उतार सकता है ?^१ उस (ईसा) ने कहा अगर तुम ईमान रखते हो तो अल्लाह से डरो ।

فِيهَا فَتَكُونُ ظَلِيمًا بِلَادِي وَتَكْفُرُ بِالْآيَةِ
وَإِلَّا يَرَوْسَ بِلَادِي^١ وَإِذْ تُخْرِجُ النُّوٓى بِلَادِي
وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُمْ
بِالْبَيْتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَذَا
إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١١١﴾

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ يُؤْمِنُوا بِي وَيُؤْمِنُوا
بِقَوْلِ أُمَّتِي وَأَشْهَدُوا بِأَنِّي مُسْلِمٌ ﴿١١٢﴾

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يُعِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ هَلْ
يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَنْ يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ
السَّمَاءِ قَالَ أَتَقْوُونَ اللَّهَ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٢﴾

^१ यह इशारा है उस साजिज की तरफ जो यहूदियों ने हजरत ईसा के क़त्ल करने और फांसी पर चढ़ाने के लिए बनाया था, जिस से महफूज करके अल्लाह तआला ने उनको आसमान पर उठा लिया ।

^२ "हवारी" से मुराद हजरत ईसा के वह मानने वाले हैं, जो उन पर ईमान लाये और उन के साथी और मददगार बने, उनकी तादाद बारह बतायी जाती है, यहाँ "वहयी" से मुराद वह वहयी नहीं जो फ़रिश्तों के जरिये रसूलों पर उतरती थी, बल्कि "मन में डालने" के मतलब में है जो अल्लाह की तरफ से कुछ लोगों के मन में पैदा कर दी जाती है, जैसे हजरत मूसा की माँ और हजरत मरियम में इसी तरह की मनोभावना पैदा की गई । इस से मालूम हुआ कि जिन लोगों ने "वहयी" के कलिमा से मूसा की माँ और मरियम को रसूल माना है वह सही नहीं, इसलिए कि इसका मतलब मन में ख्याल पैदा करना है, इसी तरह यहाँ हवारियों के रसूल होने का मतलब नहीं ।

^३ मायद: ऐसे बर्तन (तबक, सीनी, प्लेट या ट्रे) को कहते हैं जिस में खाना हो, इसलिए खाने की जगह को भी मायद: कहा जाता है, क्योंकि उस पर भी खाना रखा जाता है, सूर: का नाम भी इसी वजह से है कि इस में इसका बयान है । हवारियों ने अपने दिल के सुकून के लिए यह माँग की थी, जिस तरह से हजरत इब्राहीम ने मुद्दों को जिलाये जाने के प्रदर्शन (मुशाहिदा) की माँग की थी ।

११३. उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि उस में से खायें और हमारे दिलों को सुकून हो जाये और हमें यक्रीन हो कि आप ने हम से सच कहा और हम उस पर गवाह हो जायें ।

११४. मरियम के बेटे ईसा ने कहा, हे अल्लाह! हम पर आसमान से एक थाल उतार दे जो हम में से पहले और आखिर के लिये खुशी की बात हो जाये और तेरी तरफ से एक निशान हो और हमें रोजी अता कर तू बेहतर रोजी देने वाला है।

११५. अल्लाह (तआला) ने कहा कि मैं वह खाना तुम लोगों के लिए उतारने वाला हूँ, फिर तुम में से जो इंसान उस के बाद कुफ्र करेगा तो मैं उस को ऐसा अजाब दूंगा कि वह अजाब मैं सारी दुनिया में किसी को न दूंगा ।

११६. और (वह वक़्त भी याद करो है) जबकि अल्लाह (तआला) कहेगा कि हे ईसा इब्ने मरियम, क्या तुम ने उन लोगों से कह दिया था कि मुझ को और मेरी माँ को अल्लाह के सिवाय माबूद बना लेना? (ईसा) कहेंगे कि मैं

قَالُوا لَنُرِيدُ أَنْ نَأْكُلَ مِنْهَا وَنَحْمِلَ مِنْ ثَمَرِهَا
وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَّقْتَنَا وَكُنُونَ عَلَيْهَا مِنَ
الشَّاهِدِينَ ﴿١١٣﴾

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ
عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عَيْدًا
لِأَوْلَانَا وَأَخْرَجْنَا مِنْكَ وَأَرْزُقْنَا وَأَنْتَ
خَيْرُ الرَّزُقِينَ ﴿١١٤﴾

قَالَ اللَّهُ إِنِّي مَرْسَلُهَا عَلَيْكُمْ ۖ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدَ
مِنْكُمْ فَإِنِّي أَعَذِّبُهُ عَذَابًا لَا أَعَذِّبُهُ أَحَدًا
مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١١٥﴾

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ لِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ آتِنَا
قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمَّيَّ الْهَيْبِينَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ ۗ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ

¹ यह सवाल क्रयामत के दिन होगा, मकसद इस से अल्लाह को छोड़ कर किसी दूसरे को माबूद बनाने वालों को बाखबर करना है कि जिन को तुम माबूद और परेशानी दूर करने वाला समझते थे वह तो खुद अल्लाह के दरबार में उत्तरदायी (जवाबदेह) हैं ।

दूसरी बात यह मालूम हुई कि इसाईयों ने हज़रत मसीह के साथ हज़रत मरियम को माबूद बनाया है ।

तीसरी बात यह मालूम हुई कि अल्लाह के सिवाय माबूद वही नहीं जिन्हें मूर्तिपूजकों ने पत्थर या लकड़ियों का कोई रूप बनाकर उनकी इबादत की, जिस तरह आजकल कन्न के पूजारी आलिम अपनी जनता को यह बताकर धोखा दे रहे हैं, बल्कि अल्लाह के वे बंदे भी अल्लाह के सिवाय माबूद की परिधि (दायरे) में आते हैं जिनकी लोगों ने किसी भी रूप से इबादत की, जैसे हज़रत ईसा और मरियम की इसाईयों ने की ।

तो तुम्हें मुनज्जह (पाक) समझता हूँ, मुझ को किस तरह से शोभा (जेब) देती कि मैं ऐसी बात कहता जिस के कहने का मुझे कोई हक़ नहीं, अगर मैंने कहा होगा तो तुम्हें उस का इल्म होगा, तू तो मेरे दिल की बात जानता है, मैं तेरे जी में जो कुछ है उस को नहीं जानता, सिर्फ तू ही गैबों (परोक्षों) का जानकार है।

११७. मैंने उन से सिर्फ वही कहा जिस का तूने मुझे हुक्म दिया कि अपने ख और मेरे ख अल्लाह की इवादात करो, और जब तक मैं उन में रहा उन पर गवाह रहा और जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही उनका संरक्षक (निगरी) था और तू हर चीज़ पर गवाह है।

११८. अगर तू इन को सज़ा दे तो यह तेरे वंदे है और अगर तू इन्हें माफ़ कर दे तो तू जबरदस्त हिक्मत वाला है।

११९. अल्लाह (तआला) कहेगा कि यह वह दिन है कि सचचों का सच उन के लिए फायदेमंद होगा, उन को बाग़ मिलेंगे जिन के नीचे नहरें वह रही होंगी, जिस में वह हमेशा हमेश रहेंगे, अल्लाह तआला उन से खुश (प्रसन्न) और ये अल्लाह से खुश है, यह बहुत भारी कामयाबी (सफलता) है।

१२०. अल्लाह ही का मुल्क (राज्य) है, आसमानों का और ज़मीन का और उनका जो उन में मौजूद है और वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

أَقُولُ مَا لَيْسَ بِي ۖ بِحَقِّ ۚ إِنَّ كُنْتُ قُلْتُهُ
فَقَدْ عَلِمْتُهُ ۚ لَعَلَّهُمْ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ
مَا فِي نَفْسِكَ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ﴿١١٦﴾

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنْ أَعْبُدَ وَاللَّهِ
رَبِّي وَرَبِّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ
فِيهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ ۚ
وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١١٧﴾

إِنْ تَعَذَّبْتَهُمْ فَإِنَّهُمْ جِبَادُكَ ۚ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ
فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١١٨﴾

قَالَ اللَّهُ هَذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الضُّرِّقَيْنِ صِدْقُهُمْ ۚ
لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ
فِيهَا أَبَدًا ۚ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۚ ذَلِكَ
الْقَوْلُ الْعَظِيمُ ﴿١١٩﴾

يَهُ مَوْلَاكَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ ۚ
وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿١٢٠﴾

सूरतुल अन्आम-६

सूर: अन्आम मक्का में नाज़िल हुई और इस में एक सौ पैसठ आयतें और बीस रुकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बहुत मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. सब तारीफ उस अल्लाह के लिए है जिस ने आसमानों और जमीन को पैदा किया और अंधेरो व नूर को बनाया^१ फिर भी जो ईमान नहीं रखते (दूसरो को) अपने रब के बराबर मानते है।

२ उसी ने तुम्हें मिट्टी से बनाया, फिर एक वक़्त मुकर्रर किया,^२ और एक मुकर्रर वक़्त उस के पास है,^३ फिर भी तुम शक करते हो।

३. और वही अल्लाह है आसमानों में और जमीन में, वह तुम्हारे छुपे और जाहिर को जानता है और तुम्हारी कमाई से बाख़बर है।^४

سُورَةُ الْأَنْعَامِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِرَبِّهِمْ يُعَذِّبُونَ ①

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ طِينٍ ثُمَّ قَضَى أَجَلًا
وَآجَلَ مُسَمًّى عِنْدَهُ ثُمَّ أَنْتُمْ تَمْتَرُونَ ②

وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ

سِرُّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ ③

^१ जुलुमात से रात का अंधेरा और नूर से दिन का उजाला या कुफ़्र (अबिस्वास) का अंधेरा और ईमान का उजाला मुराद है।

^२ यानी मौत का वक़्त।

^३ यानी आखिरी दिन के वक़्त को सिर्फ़ अल्लाह जानता है, यानी पहला "अजल" लफ़्ज़ इस्तेमाल किया गया है, उसका मतलब पैदाईश से मौत तक का वक़्त (उम्र) है, दूसरे "अजलुममुस्सम्मा" क़लिमा का मतलब मौत के बाद से क़यामत तक दुनिया की उम्र है, जिस के बाद वह पतन (जवाल) और विनाश (तबाही) से मिल कर ख़त्म हो जायेंगा और एक दूसरी दुनिया यानी आखिरत की ज़िन्दगी की शुरूआत होगी।

^४ अहले सुन्नत यानी सलफ़ का अक़ीदा है कि अल्लाह तआला खुद तो अर्श पर है जैसा कि वह तारीफ़ के लायक़ है, लेकिन अपने इल्म के आधार पर हर जगह पर है, यानी उस के इल्म और ख़बर के दायरे से कोई भी चीज़ बाहर नहीं, लेकिन कुछ गुटों के लोग यह कहते हैं कि अल्लाह तआला अर्श पर नहीं बल्कि हर जगह पर है, और वह इस आयत से अपने ईमान की तसदीक़ करते हैं, लेकिन यह ईमान ठीक़ नहीं है, यह दलील भी ठीक़ नहीं है, आयत का मतलब यह है कि वह ताक़त जिसको आसमानों और जमीन पर अल्लाह कहकर पुकारते हैं और आसमानों जमीन पर जिसका मुल्क है और आसमानों जमीन पर जिसको माबूद समझ

४. और उन के पास कोई निशानी उन के रब की निशानियों में से नहीं आती बल्कि वह उस से मुंह फेरते हैं।

५. उन्होंने उस सच्ची किताब को भी झूठा बताया जबकि वह उन के पास पहुँची, तो जल्द ही उन्हें खबर मिल जायेगी, उस चीज की जिस का यह लोग मजाक करते थे।

६. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम उन से पहले कितने गुटों को बर्बाद कर चुके हैं जिन को हम ने दुनिया में इतनी ताकत अता की थी जैसी तुम्हें भी नहीं अता किया और हम ने उन पर मूसलाधार वारिश की, और हम ने उन के नीचे से नदियाँ बहायीं, फिर हम ने उन को उन के गुनाहों के सबब बर्बाद कर दिया और उन के बाद दूसरी क्रौम पैदा किया।

७. और अगर हम कागज पर लिखी हुई कोई पुस्तक भी आप पर उतारते, फिर यह लोग अपने हाथों से छू भी लेते तब भी यह काफिर लोग यही कहते कि यह कुछ भी नहीं मगर खुला जादू है।

८. और उन्होंने कहा कि आप पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं उतारा गया? और अगर हम फरिश्ता उतार देते तो विषय का फैसला कर

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ④

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ
الْكِتَابُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ⑤

أَلَمْ يَرَوْا كَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَوْمٍ
مَكَانَهُمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَهُمْ فِيهَا مِنْ
السَّاءَ عَلَيْهِمْ وَذُرَارٍ ۖ جَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهِمْ فَاهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ
بَعْدِهِمْ قَوْمًا آخَرِينَ ⑥

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَابٍ فَلَمَسُوهُ
بِأَيْدِيهِمْ لَقَالُوا الْبُرْجَانُ كَفَرُوا إِنَّ هَذَا
إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ⑦

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ۖ وَلَوْ أَنْزَلْنَا
مَلَكَ لَقُومُوا الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ ⑧

जाता है, वह अल्लाह तुम्हारे छिपे और जाहिर और जो कुछ अमल तुम लोग करते हो सब को जानता है। (फतहूल कदीर) इसकी दूसरी दलील भी पेश की गई है जिन्हें आलिम लोगों की तफसीर में देखा जा सकता है जैसे तफसीर तबरी और इब्ने कसीर आदि (वगैरह)।

यानी जब गुनाह के सबब तुम से पहले की क्रौमों को हम बर्बाद कर चुके हैं, जबकि वे ताकत में तुम से कहीं ज्यादा थे, जरिया और माल के बाहुल्य (बहुतात) में भी तुम से ज्यादा थे तो तुम्हें बर्बाद करना हमारे लिये क्या कठिन है? इस से मालूम हुआ कि किसी समाज की जाहरी तरक्की और खुशहाली से यह नहीं समझ लेना चाहिए कि वह कामयाब और विजयी है, यह मौका और वक़्त देने की वह हालत है जो इन्तेहान लेने के लिए कई क्रौमों को दी जाती है, लेकिन जब उनका वक़्त पूरा हो जाता है तो यह सारी तरक्की और खुशहाली उन्हें अल्लाह के अज़ाब से बचाने में कामयाब नहीं होती।

दिया जाता फिर उन्हें मौका नहीं दिया जाता ।¹

९. और अगर हम रसूल को फरिश्ता बनाते तो उसे मर्द बनाते और उन पर वही शक पैदा करते जो शक कर रहे हैं ।²

१०. और आप से पहले बहुत से रसूलों (ईशदूतों) का मजाक किया गया, तो जो मजाक कर रहे थे उन के मजाक का बुरा नतीजा उन पर पलट पड़ा ।

११. आप कह दीजिए कि जरा जमीन पर घूम फिर कर देख लो कि झूठलाने वालों का क्या नतीजा हुआ?

१२. आप कह दीजिए कि जो कुछ आसमानों और जमीन में है इन सब पर किस की मिल्कियत है? आप कह दीजिए, सब पर अल्लाह की मिल्कियत है, अल्लाह ने रहमत करना अपने ऊपर फर्ज कर लिया है ।³ तुम को अल्लाह (तआला) क़यामत के दिन जमा करेगा, इस में कोई शक नहीं, जिन लोगों ने खुद को बर्बाद कर लिया है, वही ईमान नहीं लायेंगे ।

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكَ لَجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَشَاشَةُ عَلَيْهِمْ مَا يَلْبَسُونَ ﴿٩﴾

وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْتُمْ بِرُسُلِنا مِنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٠﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكذِبِينَ ﴿١١﴾

قُلْ لَيْسَ لِي مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْءٌ قُلْ يَتَّبِعُ كِتَابَ عَلَى نَفْسِي الرِّضَاةُ لِيَجْعَلَ لِي مَوْرِدًا الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَالَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢﴾

¹ अल्लाह ने इंसानों को हिदायत देने के लिए, जितने भी अम्बिया और रसूल (संदेशवाहक) भेजे सभी इंसान मर्द ही थे, और हर क्रौम में उन्हीं में से एक को बहयी और रिसालत के लिए चुन लिया, यह इसलिये कि उसके बिना रसूल हिदायत का काम पूरा नहीं कर सकता था ।

² यानी अगर हम फरिश्ते ही को रसूल बनाकर भेजने का फ़ैसला करते, तो साफ़ बात है कि वह फरिश्ते की शकल में आ नहीं सकता था, क्योंकि इस तरह से इंसान उस से डर जाते और कुरवत और नज़दीक़ी पैदा करने के वजाय दूर भागते, इसलिए जरूरी था कि उसे इंसान की शकल में भेजा जाता, लेकिन तुम्हारे यह नेता फिर यही शक करते कि इंसान ही है, जो इस वक़्त भी रसूल को इंसान की शकल में पेश कर रहे हैं तो फरिश्ते के भेजने का क्या फ़ायदा?

³ जिस तरह हदीस में नबी ﷺ ने फरमाया: जब अल्लाह तआला ने दुनिया को पैदा किया तो अर्ई पर यह लिख दिया «إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي» (सहीह बुखारी) । वेशक मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब पर प्रभावी (गालिब) है, लेकिन यह रहमत क़यामत के दिन केवल ईमानवालों के लिए होगी, काफ़िरो पर अल्लाह बहुत ग़ज़बनाक होगा, इसका मतलब यह है कि दुनिया में उसकी नेमत और रहमत आम तौर से सभी के लिए है चाहे वे ईमानवाला, काफ़िर, नेक काम करने वाला या बुरे काम करने वाला ।

१३. और जो कुछ दिन और रात में रहते हैं वह सभी कुछ अल्लाह के ही हैं और वह बहुत सुनने वाला और बड़ा जानने वाला है।

१४. आप कहिये कि क्या मैं उस अल्लाह के सिवाय को दोस्त (रव, मावूद) बना लूँ जो आसमानों और ज़मीन का ख़ालिक है, और वह खिलाता है खिलाया नहीं जाता, आप कहिये कि मुझे हुकम किया गया है कि मैं उन में सब से पहले रहूँ जिस ने (अल्लाह पर) आत्मसमर्पण किया और मुशरिकों में कभी भी न रहूँ।

१५. आप कह दीजिए कि मैं अगर अपने रव का कहना न मानूँ तो मैं एक बड़े दिन के अज़ाब से डराता हूँ।

१६. जिस से उस दिन सज़ा ख़त्म कर दी जायेगी, उस पर अल्लाह ने बहुत रहमत की और यह वाज़ेह कामयाबी है।

१७. और अगर अल्लाह (तआला) तुम्ह को कोई तकलीफ़ दे तो उसको दूर करने वाला अल्लाह तआला के सिवाय कोई दूसरा नहीं है और अगर तुम्ह को अल्लाह तआला फ़ायदेदा अता करे तो वह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।

१८. वही अपने बन्दों पर प्रभावशाली (गालिब) है और वही हिक्मत वाला, ख़बर रखने वाला है।

१९. आप कहिये कि किस की गवाही बड़ी है, कहिये कि हमारे और तुम्हारे बीच अल्लाह गवाह (साक्षी) है और यह कुरआन मेरी तरफ़ वही किया गया है ताकि उस के जरिये तुम्हें और जिस तक पहुँचे उन सब को आगाह करूँ, क्या तुम गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे मावूद

وَلَكُمَا سَكَنٌ فِي النَّهَارِ وَاللَّيْلِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (13)

قُلْ أَغْوَى اللَّهُ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُهُ وَلَا يَطْعَمُهُ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ (14)

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ (15)

مَنْ يُضِرَّهُ اللَّهُ فَقَدْ رَجَعَهُ ط
وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ (16)

وَإِنْ يَنْسَخِ اللَّهُ إِلَهًا بَدَّلَهُ وَلَا يَكُنْ لَهُ آلٌ إِذَا هُوَ مُتَّخَذَ إِلَهًا لِلَّذِينَ يُؤْمِنُونَ
هُوَ ط وَإِنْ يَنْسَخِ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (17)

وَهُوَ الْغَاثُ الْهُوَ فَوْقَ عِبَادِهِ ط وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ (18)

قُلْ أُنشِئْهُ اللَّهُ ط وَكَلَّمَ اللَّهُ ط وَشَهِدْنَا ط بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ط وَأَوْحَى إِلَيَّ هَذَا الْقُرْآنَ لِأُنذِرَكُمْ بِهِ وَمَنْ يَبْلُغْ أَهْلَهُ لِيَشْهَدُوا مَعَ اللَّهِ ط إِلَهًا مَخْفَى ط قُلْ لَا أَشْهَدُ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَهٌ وَاحِدٌ وَإِنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ (19)

१. रबीअ बिन अनस कहते हैं कि अब जिस के पास भी यह कुरआन पहुँच जाये, अगर वह रसूल ﷺ का सच्चा पैरोकार है तो उसका यह फर्ज है कि वह भी लोगों को अल्लाह की तरफ़ उसी तरह दावत दे, जिस तरह रसूल ﷺ ने लोगों को दावत दिया था और उसी तरह वाख़बर करे जिस तरह से आप ﷺ ने वाख़बर किया था। (इत्ने कसीर)

हैं? आप कह दें कि मैं इस की गवाही नहीं देता, आप कहिये कि वह एक ही मावूद है और मैं तुम्हारे शिर्क से बरी हूँ।

२०. जिन्हें हम ने किताब (तौरात और इंजील) दी है वह आप (सुहम्मद ﷺ) को उसी तरह पहचानते हैं, जैसे अपने बेटों को, जो अपने आप को खो दिये हैं वही यकीन नहीं करेंगे।

२१. और उस से बढ़कर जालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठा इल्जाम लगाये और उस की निशानियों (चिन्हों) को झूठा माने, बेशक जालिम कामयाब नहीं होते।

२२. और जिस दिन हम सब को जमा करेंगे, फिर जिन्होंने शिर्क किया उन से कहेंगे वे कहाँ हैं जिन को तुम (अल्लाह का) साभ्नी समझ रहे थे (वह दिन याद है)।

२३. फिर उन के शिर्क का सिवाये इस के कोई बहाना न होगा कि कहें कि अपने रब अल्लाह की क्रसम हम मुशरिक नहीं थे।

२४. देखो कि वह कैसे अपने ऊपर भूठ बोल गये और उन का इल्जाम उन से खो गया।

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ
آبَاءَهُمْ وَالَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَوَيْلٌ
لَّيْلِيَوْمَئِذٍ ﴿٢٠﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ
بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُغْنِي عَنِ الظَّالِمِينَ ﴿٢١﴾

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا
أَيْنَ شُرَكَاءُكُمْ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٢٢﴾

ثُمَّ لَمْ يَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا وَاللَّهِ
رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ ﴿٢٣﴾

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ كَذَّبُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَفْعَرُونَ ﴿٢٤﴾

। फितना का एक मतलब शिर्क और एक मतलब तौबा के किये गये हैं, यानी आखिर में यह दलील और तौबा को पेश करके छुटकारा पाने की कोशिश करेंगे कि हम तो मूर्तिपूजक नहीं थे।

यहाँ यह शक न हो कि वहाँ तो इंसान के हाथ-पैर गवाही देंगे और मुँह पर मोहर लगा दी जायेगी, फिर यह इंकार किस तरह करेंगे? इसका जवाब हज़रत इब्ने अब्बास ने दिया है कि जब मूर्तिपूजक देखेंगे कि मुसलमान जन्नत में जा रहे हैं तो वह आपस में विचार-विमर्श (राय-मशिवरा) कर के मूर्तिपूजन से ही इंकार कर देंगे, तब अल्लाह तआला उन के मुँह पर मोहर लगा देगा और उन के हाथ-पैर उन्हींने जो किया होगा उसकी गवाही देंगे, फिर वह अल्लाह तआला से कोई बात छुपाने की ताकत न रख सकेंगे। (इब्ने कसीर)

२५. उन में से कुछ आप की ओर कान धरते हैं,^१ और हम ने उन के दिलों पर पर्दे डाल रखे हैं कि उसे समझें और उन के कान बहरे हैं, और अगर वह सभी निशानियों को देख लें तब भी उन पर यकीन नहीं करेंगे, यहाँ तक कि जब आप के पास आते हैं झगड़ा करते हैं, काफिर (विश्वासहीन) कहते हैं कि यह सिर्फ बुजुर्गों की ख्याली कहानियाँ हैं।

२६. और यह लोग इस से दूसरों को भी रोकते हैं और खुद भी दूर-दूर रहते हैं, और ये लोग अपने आप को बर्बाद कर रहे हैं और कुछ नहीं जानते।

२७. और अगर आप उस वक़्त देखें जब ये लोग जहन्नम के करीब खड़े किये जायेंगे तो कहेंगे,^२ हाय! क्या ही अच्छी बात हो कि हम फिर वापस भेज दिये जायें (और अगर ऐसा हो जाये) तो हम अपने रब की निशानियों को न भुठलायें और हम ईमानवालों में से हो जायें-

२८. बल्कि जिस चीज़ को इस के पहले छुपाया करते थे वह उन के सामने आ गयी है, अगर यह लोग फिर वापस भेज दिये जायें तब भी यह वही करेंगे जिस से इन को रोका गया था और बेशक वे लोग झूठे हैं।

२९. और यह कहते हैं कि सिर्फ यही दुनियावी जिन्दगी हमारी जिन्दगी है और हम दोबारा जिन्दा नहीं किये जायेंगे।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۗ وَجَعَلْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ
أَكِنَّةً ۖ أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا ۖ وَإِنْ يَرَوْا
كُنْ آيَةً لَا يُؤْمِنُوهَا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوكَ
يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا
إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٥﴾

وَهُمْ يَهْتَدُونَ عَنْهُ وَيَتَّخِذُونَ عَنْهُ وَإِنْ يُهْلِكُونَ
إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَقُولُ عَلَى الْكَاذِبِ كَذِبًا إِنَّا نَعْلَمُ
وَلَا نَكْتُمُ بِالْكَذِبِ رَبَّنَا إِنَّا أَكُنَّا مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٧﴾

بَلْ بَدَأْنَاهُمْ مَّا كَانُوا يَكْفُرُونَ مِنْ قَبْلُ ۖ لَوْ رَدُّوهُ
لَعَادُوا إِنَّمَا هُوَ آعْتَةٌ ۖ وَإِنَّهُمْ لَكَذِبُونَ ﴿٢٨﴾

وَقَالُوا إِنَّمَا هِيَ إِلهَاتُنَا الْأَنْثِيَا وَمَا
نَحْنُ بِمَسْبُوحِينَ ﴿٢٩﴾

^१ यानी यह मूर्तिपूजक आप के पास कुरआन तो आकर सुनते हैं, लेकिन चूँकि मकसद हिदायत हासिल करना नहीं है, इसलिए इस से कोई फ़ायदा नहीं हासिल करते।

^२ यहाँ पर अगर का जबाब ग़ायब है जो इस तरह होगा, "तो आप को भयानक मंजर दिखायी देगा।"

३०. और अगर आप उस वक़्त देखें जब ये अपने रब के सामने खड़े किये जायेंगे, अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा कि क्या यह सच नहीं है? वे कहेंगे बेशक रब की क़सम सच है, अल्लाह (तआला) फ़रमायेगा तो अपने कुफ़्र (अविश्वास) का अज़ाब सहन करो।

३१. बेशक नुक़सान में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया, यहाँ तक कि जब वह मुकर्रर वक़्त उन पर अचानक आ पड़ेगा, कहेंगे कि हाय अफ़सोस हमारी सुस्ती पर जो इस के बारे में हुई और उनकी हालत यह होगी कि अपना बोझ अपनी कमर पर लादे हुए होंगे, ख़बरदार! वह बुरा बोझ लादेंगे।

३२. और दुनियावी ज़िन्दगी तो कुछ भी नहीं सिबाये खेल-तमाचा के, और आख़िरी घर (आख़िरत) अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा है, क्या तुम सोच-विचार नहीं करते हो?

३३. हम अच्छी तरह जानते हैं कि उन के क़ौल आप को दुखी करते हैं, तो यह लोग आप को झूठा नहीं कहते, लेकिन यह ज़ालिम अल्लाह तआला की आयतों का इंकार करते हैं।

३४. और आप से पहले रसूलों को झूठा कहा जा चुका है और उन्होंने उस झुठलाये जाने पर सब्र किया, और वे तकलीफ़ दिये गये यहाँ तक कि उन के पास हमारी मदद आ गई, अल्लाह की बातें कोई बदलने वाला नहीं, और आप के

وَكُوْنَتِي اِذْ وُقُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَنْتِيْ
هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ كَالْوَالِيْنَ وَّرَبَّنَا ؕ قَالَ قَدْ وُقُوْا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِرِجَالِهِمْ ؕ اَللّٰهُ حَقِّيْ اِذَا
جَاءَتْهُمْ السَّاعَةُ ؕ بَغْتَةً ؕ كَالْوَالِيْنَ يَمْسِرُوْنَ عَلٰى
مَا قَرَرْنَا فِيْهَا ؕ وَهُمْ يَخْتَوْنَ ؕ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى
ظُهُورِهِمْ ؕ اِلَّا سَاءَ مَا يَزُرُوْنَ ﴿٣١﴾

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا اِلَّا لَهْوٌ وَّلَهْوٌ وَلَلْآخِرَةُ
خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾

قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْمُرُنَكَ الَّذِيْ يَتَّقُوْنَ
فَاَلَيْسَ لَكَ الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَّلٰكِنْ الظَّالِمِيْنَ اٰيٰتِ
اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾

وَلَقَدْ كَذَّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى
مَا كُذِّبُوْا وَاُوْدُوا حَتّٰى اَتَتْهُمْ نَصْرُنَا ؕ وَلَا مَبْتَئٰلِ
لِكَلِمَاتِ اللّٰهِ ؕ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِنْ نَّبَايِ
الرُّسُلِيْنَ ﴿٣٤﴾

नबी ﷺ को काफ़िरों के झुठलाने पर जो तकलीफ़ और दुख पहुँचता था, उस के इज़ाला और आप ﷺ को तसल्ली के लिए फ़रमाया जा रहा है कि यह आप को नहीं झुठला रहे हैं (आप को तो सच्चे और ईमानदार मानते हैं) बल्कि यह अल्लाह की आयतों को झुठलाया जा रहा है, और यह एक जुल्म है जो वह कर रहे हैं, आज भी जो लोग नबी ﷺ के अच्छे किरदार, न्यायकारी, ईमानदारी और सच्चाई का ख़ूब झम-झम कर बयान करते हैं और इस विषय पर जोरदार भाषण देते हैं, लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ की पैरवी करने में कठिनाई महसूस करते हैं, आप ﷺ के क़ौल के मुकाबले में सोच, फ़िक्र और अपने नेताओं के क़ौल को अहमियत देते हैं, उन्हें सोचना चाहिए कि यह किसका किरदार है जिसे उन्होंने अपनाया है?

पास पैगम्बरों के दाकेआत आ चुके हैं।

३५. और अगर उनका मुह फेरना आप पर भारी हो रहा है तो अगर आप से हो सके तो जमीन में कोई सुरंग या आसमान में कोई सीढ़ी खोज लें और उन के पास कोई मोजिजा ला दें और अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें सच्चे रास्ते पर जमा कर देता¹ इसलिए मुखों में न बनिये।

३६. वही लोग कुबूल करते हैं जो सुनते हैं,² और भरे हुए लोगों को अल्लाह (तआला) जिन्दा कर के उठायेगा, फिर सब उसी (अल्लाह ही) की तरफ लाये जायेंगे।

३७. और उन्होंने कहा कि उन पर उन के रब की ओर से कोई मोजिजा क्यों नहीं उतारा गया? आप कह दें कि अल्लाह कोई मोजिजा उतारने की पूरी कुदरत रखता है, लेकिन ज्यादातर लोग नहीं जानते।

३८. और जितने तरह के जानदार जमीन पर चलने वाले हैं और जितने तरह के पंख से उड़ने वाले पक्षी हैं, उन में से कोई भी ऐसा नहीं जो कि तुम्हारी तरह के गुट न हों, हम ने किताब में लिखने से कोई चीज न छोड़ी,³ फिर

وَإِنْ كَانَ كِبُرٌ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنْ اسْتَطَعْتَ
أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلْبًا فِي السَّمَاءِ
فَتَأْتِيهِمْ بَأْيَةٍ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى
الْهُدَىٰ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْخَالِئِينَ ﴿٣٥﴾

إِنَّمَا اسْتَغِيبُ الَّذِينَ يَشْعُونَ وَالْمَوْتُ يَحْكُمُهُمْ
اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٣٦﴾

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ
كَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يُنَزِّلَ آيَةً وَلَئِنْ كُنْتُمْ لَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٧﴾

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا ظَلِيمٌ يظُنُّ بِجَنَاحَيْهِ
إِلَّا أَمْرٌ أَمْثَلُكُمْ مَا قَدْ وَضَعْنَا فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ
ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ ﴿٣٨﴾

¹ नबी ﷺ को मुखालिफों और काफिरों के भुठलाने से जो तकलीफ और दुख पहुंचता था उस के बिना पर अल्लाह तआला फरमा रहा है कि ये तो अल्लाह तआला की मर्जी और तक्रदीर से होना ही था, और अल्लाह के हुक्म के बिना आप ﷺ उन्हें दीन इस्लाम कुबूल करने के लिए तैयार नहीं कर सकते, चाहे आप ﷺ जमीन में सुरंग खोदकर और आसमान पर सीढ़ी लगाकर कोई निशानी लाकर उन्हें दिखा भी दें।

² यानी उन काफिरों की हालत मुर्दों की तरह है, जिस तरह से वह बोलने और सुनने की ताकत से महरूम हैं, यह भी चूंकि अपनी अकल और फिक्र से सच के समझने का काम नहीं लेते, इसलिए यह भी मरे हुए की तरह हैं।

³ किताब से मुराद नौह महफूज है, (महफूज किताब है जिस में सभी लोगों की तक्रदीर उन के अमल के ऐतबार से अल्लाह के अजली इल्म की बुनियाद पर महफूज करके लिख दिया है) यानी -वहां हर चीज लिखी हुई है या कुरआन है, जिस में मुस्तसर और तफसीली तौर से दीन

सब अपने रब के पास जमा किये जायेंगे ।

३९. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को नहीं माना वह बहरे गुंगे अधरे में हैं, अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है और जिसे चाहता है सीधे रास्ते पर लग्न देता है ।

४०. आप कह दीजिए कि अपना हाल तो बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का कोई अज्ञाव आ पड़े या तुम पर क़्यामत ही आ पहुँचे तो क्या अल्लाह के सिवाय दूसरों को पुकारोगे? अगर तुम सच्चे हो ।

४१. बल्कि खास तौर से उसी को पुकारोगे, फिर जिस के लिए तुम पुकारोगे अगर वह चाहे तो उस को हटा भी दे और जिन को तुम साभ्रिदार ठहराते हो उन सभी को भूल जाओगे ।

४२. और हम ने दूसरी उम्मतों की तरफ भी जो कि आप से पहले गुज़र चुकी हैं, पैगम्बर भेजे थे उन को भी हम ने गरीबी और रोग से पकड़ा ताकि वे आजिजी करें ।

४३. इस तरह जब उन्हें हमारी सज़ा मिली तो वे कमज़ोर क्यों न पड़े? लेकिन उन के दिल सख्त हो गये और शैतान ने उन के अमलों को उन के ख्यालों में अच्छा कर दिया ।

४४. और जब वह उस नसीहत को भूल गये जिस की शिक्षा दी गई थी तो हम ने उन पर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये, यहाँ तक कि वह जब अपनी पाई हुई चीज़ों पर इतरा गये तो उन्हें हम ने अचानक पकड़ लिया और वह मायूस हो

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمُّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ
مَنْ يَشَأِ اللَّهُ يُضِلَّهُ ۗ وَمَنْ يَشَأِ يُصْلِحْهُ عَلَى
صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٣٩﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمْ
السَّاعَةُ أَعْبُرُوا لِلَّهِ تَدْعُونَ ۗ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٤٠﴾

بَلْ رِيبًا تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ
إِنْ شَاءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ ﴿٤١﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَآخَذْنَاهُمْ
بِأَلْبَاسٍ ۗ وَالضَّرَّاءَ لَعَلَّهُمْ يَضُرُّعُونَ ﴿٤٢﴾

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَٰكِن قَسَتْ
قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ فَتَحْنَا عَلَيْهِمُ أَبْوَابَ كُلِّ
شَيْءٍ ۗ حَتَّىٰ إِذَا فَرِحُوا بِآسَانِهِمْ أَخَذْلَهُمُ بَغْتَةً
فَإِذَا هُمْ مُبْسُؤُونَ ﴿٤٤﴾

के हर क़ानून पर रौशनी डाली गई है ।

अल्लाह की आयतों को भुठलाने वाले चूँकि अपने कानों से सच बात नहीं सुनते और अपने मुँह से सच नहीं बोलते, इसलिए वह ऐसे हैं जैसे गुंगे और बहरे होते हैं, इस के सिवाय यह क़फ़्र ज़िल्लत के अधरे में घिरे हुए होते हैं, इसलिए उन्हें कोई ऐसी चीज़ दिखायी नहीं देती जिस से वे अपना सुधार कर सकें ।

कर रह गये ।

४५. फिर जालिम लोगों की जड़ कट गयी और अल्लाह (तआला) की तारीफ है जो दुनिया का रब है ।

४६. आप कहिए कि यह बताओ अगर अल्लाह (तआला) तुम्हारे सुनने और देखने की ताकत पूरी तरह से ले ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर लगा दे तो अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई माबूद है कि यह तुम को फिर दे दे? आप देखिए कि हम किस तरह से दलील को कई रूप से पेश कर रहे हैं, फिर भी वह कतरा रहे हैं ।¹

४७. आप कहिए कि यह बताओ अगर तुम पर अल्लाह का अजाब अचानक या सावधानी में आ पड़े तो क्या सिवाये जालिमों के कोई मारा जायेगा ।

४८. और हम पैगम्बर को इसलिए भेजा करते हैं कि वे खुशखबरी दें और डरायें, फिर जो ईमान ले आये और अपना सुधार कर ले उन को न कोई डर होगा ओर न वे दुखी होंगे ।

४९. और जो लोग हमारी आयतों को झुठलायें उन को अजाब पहुँचेगा क्योंकि वे नाफरमान हैं ।

فَقَطَّعَ دَائِرَ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا وَالْحَسْبُ لِي رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٥﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللَّهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَجَعَلَ خَلْقَكُمْ مِنْ لَهٍّ غَيْرِ اللَّهِ لَأَيُّكُمْ بِهِ أَنْظَرُ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِمَنْ نَشَاءُ لِيُصْطَفُوا لِي ﴿٤٦﴾

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٤٧﴾

وَمَا تُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ فَمَنْ آمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٤٨﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا يَسْتَهْزِئُهَا الْعَذَابُ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٤٩﴾

¹ आँख कान और दिल इंसानी जिस्म के खास अंग हैं, अल्लाह कह रहा है कि अगर वह चाहे तो इन अंगों में जो खुसूसियत रखी है उन्हें छीन ले, यानी सुनने देखने की ताकत, जिस तरह गुमराहों के अंग इन खुसूसियतों से महरूम होते हैं या वह चाहे तो इन अंगों ही को खत्म कर दे वह दोनों बातों की कुदरत रखता है, उस की पकड़ से कोई बच नहीं सकता है, लेकिन यह कि वह खुद किसी को वचाना चाहे, आयतों को कई तरीके से पेश करने का मतलब यह है कि कभी डराने और खुशखबरी देने के जरिये, कभी लालच और चेतवनी (तंवीह) देने के जरिये और कभी दूसरे जरिये से ।

५०. (आप) कह दीजिए कि न तो मैं तुम से यह कहता हूँ कि मेरे पास अल्लाह का खजाना है और न मैं ग़ैब जानता हूँ, और न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ, मैं तो सिर्फ़ जो कुछ मेरे पास बहयी आती है, उसकी पैरवी करता हूँ।' (आप) कहिए कि अंधा और अंध वाला किस तरह बराबर हो सकते हैं? तो क्या तुम फ़िक्र नहीं करते!

५१. और ऐसे लोगों को डराईए जो इस बात का डर रखते हैं कि अपने रब के सामने इस हालत में जमा किये जायेंगे कि जितने अल्लाह के अलावा है न उनकी मदद करेंगे और न कोई सिफ़ारिश करने वाला होगा, इस उम्मीद के साथ कि वे डर जायेंगे।

५२. और आप उन्हें न निकालिए जो सुबह और शाम अपने रब की इबादत करते हैं, खास तौर से उसकी खुशी की फ़िक्र करते हैं, उनका हिसाब ज़रा भी आप से संबन्धित नहीं, और आप का हिसाब ज़रा भी उन से संबन्धित नहीं कि आप उन को निकाल दें, बल्कि आप जुल्म करने वालों में से हो जायेंगे।

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ
الْغَيْبَ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ ؕ إِنِّي أُنشِئُ الْوَالِدَ
مَا يَوْسَىٰ إِلَىٰ مَقَلٍ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ
أَفَلَا تَتَفَكَّرُونَ ﴿٥٠﴾

وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْ يُخْشَرُوا إِلَىٰ
رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٥١﴾

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاوَةِ
وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ
مِنْ شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِنْ شَيْءٍ
فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٥٢﴾

। 'मेरे पास अल्लाह के खजाने भी नहीं हैं, इस से मुराद यह है कि हर तरह की ताकत और कुदरत मेरे पास नहीं है कि मैं तुम्हें अल्लाह के हुक्म और मर्जी के बिना कोई मोजिजा दिखा दूँ जैसाकि तुम चाहते हो, जिसे देख कर तुम्हें मेरी सच्चाई पर यक़ीन आ जाये, मेरे पास अप्रत्यक्ष (ग़ैब) का इल्म भी नहीं है जिस से मैं मुस्तक़विल में घटित होने वाली घटनाओं से तुम्हें वाख़बर कर सकूँ। मैं फ़रिश्ता होने का दावा भी नहीं कर सकता कि तुम मुझे ऐसे काम करने के लिए मजबूर करो जो इंसान की ताकत और क़वत से बाहर की बात हो, मैं तो केवल उस बहयी का मानने वाला हूँ जो मुझ पर उतारी गयी और इस में हदीस भी है, जैसाकि आप ने फ़रमाया: 'मुझे क़ुरआन के साथ उस के समान भी अता किया गया।' यह समान हदीस रसूलुल्लाह ﷺ है।

५३. और इसी तरह हम ने उन्हें आपस में इम्तेहान में डाल दिया ताकि यह कहें कि क्या अल्लाह ने हमारे बीच से उन पर एहसान किया है,^१ क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह शुक्र अदा करने वालों को खूब जानता है।^२

५४. और आप के पास जब वह लोग आये जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो कह दीजिए, "तुम पर सलामती हो," तुम्हारे रब ने अपने ऊपर रहमत फ़र्ज कर लिया है कि तुम में से जिस ने बेवकूफी से बुरा काम कर लिया फिर उस के बाद तौबा और सुधार कर लिया तो अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

५५. इसी तरह हम अपनी आयतों का तफ़सीली बयान करते हैं ताकि मुजरिमों का रास्ता वाजेह हो जाये।

५६. आप कह दीजिए कि मुझे रोका गया है कि उन की इबादत करूँ जिन को अल्लाह के सिवाये तुम पुकारते हो, आप कहिए कि मैं तुम्हारी मनमानी की पैरवी न करूँगा, क्योंकि ऐसी हालत में मैं गुमराह हो जाऊँगा और हिदायत पर नहीं रह जाऊँगा।^३

وَكذَلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لِّيَتَوَلَّوْاْ اٰهْوَآءَهُمْ
مِّنَ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ مِّنْ بَيْنٰتٍ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ
بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿٥٣﴾

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِآيٰتِنَا فَقُلْ سَلٰمٌ
عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۖ اَنۡتَ مِّنۡ
عَسَلٍ مِّنۡكُمْ سَوِيًّا بِجَهَالَتِهِۦ ثُمَّ تَابَ مِّنۡ بَعْدِهَا
وَاصْلَحَ ۗ لَآ اَنۡتَ اَعۡقُوْرٌ رَّجِيْمٌ ﴿٥٤﴾

وَكذَلِكَ نَقُصِّلُ الْاٰيٰتِ لِّلَّذِيْنَ سَبَّلُوْا
الْحٰجِيْمِيْنَ ﴿٥٥﴾

قُلْ لِيۡ بُهِيْمٌ اِنَّ اَعۡبِدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنۡ دُونِ
اللّٰهِ قُلْ لَّا اَسۡئَعُ اَهۡوَآءَهُمْ ۗ لَآ قَدۡ صَلَلْتُ اِذًا
وَمَا اَنَا مِنَ الْمُهَيِّدِيْنَ ﴿٥٦﴾

^१ शुरू में ज़्यादातर गरीब या गुलाम लोग ही मुसलमान हुए थे, इसलिए यही बात धनवान काफ़िरों के इम्तेहान का सबब बन गयी, और वे इन गरीबों का मज़ाक उड़ाते थे और जो उन के क़ाबू में थे उन्हें वे तक़लीफ़ भी देते थे और कहते थे कि क्या यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने एहसान किया है? उनका मतलब यह होता था कि ईमान और इस्लाम पर अगर हकीकत में अल्लाह का एहसान होता तो यह सब से पहले हम पर होता, जिस तरह दूसरी जगह पर कहा है।

^२ यानी अल्लाह तआला उपरी चमक-दमक, भेष-भूषा और आन-वान को नहीं देखता, वह तो दिल की हालत को देखता और उसी से जानता है कि शुक्रगुजार और सच्चे बन्दे कौन हैं?

^३ यानी अगर मैं भी तुम्हारी तरह अल्लाह की इबादत (आराधना) के बजाय, तुम्हारी इच्छाओं (मज़ी) के अनुसार अल्लाह के सिवाय दूसरे की इबादत करना शुरू कर दूँ तो जरूर मैं भटक जाऊँगा, मतलब यह है कि अल्लाह के सिवाय दूसरे की इबादत और बदगी करना सबसे बड़ा

५७. (आप) कह दीजिए कि मेरे पास एक सूवृत है मेरे स्व की तरफ से, और तुम उस को झुठलाते हो। जिस चीज की तुम जल्दी कर रहे हो वह मेरे पास नहीं, हुबम किसी का नहीं सिवाये अल्लाह के, अल्लाह तआला वास्तविक बातों को बता देता है और वही सब से अच्छा फैसला करने वाला है।

५८. आप कह दीजिए कि अगर मेरे पास वह जिस की तुम जल्दी मांग कर रहे हो, होती तो मेरे और तुम्हारे बीच (झगड़े का) फैसला हो गया होता, और अल्लाह जालिमों को अच्छी तरह जानता है।

५९. और उसी (अल्लाह) के पास गैब की कुजियाँ हैं जिन को सिर्फ वही जानता है, और जो थल और जल में हैं उन सभी को जानता है और जो पत्ता गिरता है उसे भी जानता है और जमीन के अधेरों में कोई भी दाना नहीं पड़ता और न कोई तर और खुस्क चीज गिरती है, लेकिन ये सब खुली किताब मे है।

६०. वही (अल्लाह) है जो रात में तुम्हारी रूह को (एक गुणा) क्रवज करता है? और दिन में जो भी करते हो जानता है, फिर तुम्हें उस में एक मुकर्ररा मुद्दत पूरी करने के लिये जागृत करता है, फिर तुम्हें उसी की तरफ लौट जाना

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُمْ بِهِ ۗ مَا عِندِي مِمَّا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ إِلَّا الْكَلِمَةُ الَّتِي يَلْقَىٰ الْمُفْضِلُ الْحَقُّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَصِيلِينَ ﴿٥٧﴾

قُلْ لَوْ أَنِّي أَعْلَمُ مَا تُبَيِّنُونَ لِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقَضَىٰ إِلَيْكُمْ أَمْرًا وَيَكُونُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهِ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿٥٨﴾

وَعِنْدَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ ۗ وَ يَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِنَ سَّمَاءٍ ذَرَّةً إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حِسَابٌ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٌ وَلَا يَابِسٌ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ﴿٥٩﴾

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَدَّدٌ ۗ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُم مِّمَّا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾

भटकाव है, लेकिन बदनसीबी मे यह भटकाव उतना ही आम है, यहाँ तक कि मुसलमानों का एक गुट भी इस में लिप्त (मुद्विला) है। معاصم الله تعالى

1. "किताब मोवीन" मे सुवाद "महफूज किताब" है, इस आयत से भी मालूम हुआ कि गैब का इल्म सिर्फ अल्लाह का ही है, सभी गैब का खजाना उसी के पास है, इसलिए नाशुको, मुर्निपूजको और मुखालिफों पर कब अजाब डाला जाय इसका भी इल्म अल्लाह ही को है, और वही अपनी मर्जी से इसका फैसला करने वाला है। हदीस में आता है कि परोक्ष (गैब) की बातें पांच हैं १. क्यामत का इल्म, २. वारिश् का आना, ३. माँ के पेट मे पलने वाला बच्चा, ४. कल मुस्तकविल मे होने वाला हादसा और ५. मौत किस जगह पर आयेगी। इन पाँचों बातों का इल्म केवल अल्लाह ही का है। महीह वखारी तफसीर सूर: अल-अंआम।

यहाँ नींद को मौत कहा गया है, इसलिए इसे "छोटी मौत" और मौत को "बड़ी मौत" कहा गया है। मौत की वजाहत के लिए देख सूर: आनं इमगान आयत न. ५५ की तफसीर।

है, फिर जो तुम करते रहे उसे तुम को बता देगा।

६१. वही अपने बन्दों पर गालिब है और तुम पर निगरा (फरिश्ते) भेजता है, यहाँ तक कि जब तुम में किसी की मौत (का वक्त) आ जाये तो हमारे फरिश्ते उस की जान निकाल लेते हैं और वे जरा भी सुस्ती नहीं करते।

६२. फिर वे अपने सच्चे रच (अल्लाह) के पास लाये जायेंगे, होशियार! उसी का हुक्म चलेगा और वह बहुत जल्द हिसाब लेगा।

६३. आप कहिये कि थल और जल के अंधेरो से जब उसे नमी और चुपके से पुकारते हो कि अगर हमें इस से आजाद कर दे तो तेरे जरूर शुकुगुजार हो जायेंगे तो तुम्हें कौन बचाता है?

६४. आप खुद कहिये कि इस से और हर मुसीबत से तुम्हें अल्लाह ही बचाता है, फिर भी तुम ही शिर्क करते हो।

६५. आप कहिये कि वही तुम पर तुम्हारे ऊपर से कोई अजाब भेजने या तुम्हारे पैरो के नीचे। से (अजाब) भेजने या तुम्हें अनेक गिरोह बनाकर आपस में लड़ाई का मजा चखाने की ताकत रखता है। आप देखिये कि हम कई तरह से कैसे बातों (आयतों) को बयान कर रहे हैं ताकि वह समझ जायें।

६६. और आप की कौम ने उसे झुठला दिया जब कि वह हक़ है। आप कह दीजिए कि मैं तुम पर अधिकारी (निगरा) नहीं हूँ।

६७. हर ख़बर का एक मुकर्रर वक्त है और तुम जल्द ही जान लोगे।

وَعَوَّا الْقَاهِرُونَ عِبَادَهُ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً
حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمْ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ
لَا يُفْعِلُونَ ﴿٦١﴾

ثُمَّ رُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَيُّ ۗ لَا إِلَهَ
إِلَّا هُوَ ۗ وَسُرْعَ الْعَسِيْرِيْنَ ﴿٦٢﴾

قُلْ مَنْ يُنَجِّيكُمْ مِنْ ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ
تَدْعُوْهُ نَجْرًا وَنَجْرًا ۗ وَالْحَقِيْقَةُ ۗ لَيْسَ اَنْجِسْنَا مِنْ
هٰذَا لَنْدُوْنَنَ مِنَ الشُّكْرِیْنَ ﴿٦٣﴾

قُلْ اللّٰهُ يَنْجِيْكُمْ مِنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ
ثُمَّ اَنْتُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٦٤﴾

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى اَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذٰاِبًا
مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْضِكُمْ اَوْ يَلِيْسَكُمْ
شَيْعًا وَّيُرْسِلُ بَعْضَكُمْ بِاْسٍ بَعْضًا ۗ اَنْظُرْ كَيْفَ
نُصِرَفَ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾

وَكَذٰبَ بِهٖ قَوْمَكَ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ ۗ قُلْ لَسْتُ
عَلَيْكُمْ بِرَكِيْبٍ ﴿٦٦﴾

لِكُلِّ نَبِيٍّ مُّسْتَقَرٌّ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾

1 जैसे धसाया जाना, तूफान बाढ़, जिस मे सब कुछ डूब जाता है या मतलब है कि अधीनस्थ (मातहत) कर्मचारी, गुलामों और नौकरों की तरफ से अजाब कि वे विश्वासघाती और बेईमान हो जायें।

६८. और जब आप उन लोगों को देखें जो हमारी आयतों में कुरेद कर रहे हैं तो उन लोगों से अलग हो जायें, यहाँ तक कि वह दूसरे काम में लग जायें और अगर आप को चैतान भुला भी दे, तो याद आने के बाद फिर ऐसे ज़ालिम लोगों के साथ मत बैठें।

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ ۗ وَإِنَّمَا يُرْسِلُكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرِى مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٦٨﴾

६९. और जो लोग परहेजगारी रखते हैं उन पर उन के पकड़ का कोई असर नहीं होगा, और लेकिन उन के हक में तालीम देना है, शायद वे भी परहेजगारी रखने लगें।

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ صِيبِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۗ وَلَكِنْ ذُكِّرُوا لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٦٩﴾

७०. और ऐसे लोगों से कभी भी रिश्ता न रखें जिन्होंने अपने दीन को खेल बना रखा है और दुनियावी जिन्दगी ने उन्हें धोखे में डाल रखा है। और इस कुरआन के जरिये तालीम भी देते रहें ताकि कोई इंसान अपने अमल के सबब इस तरह न फंस जाये कि कोई अल्लाह के सिवाय उसकी न मदद करने वाला हो और न सिफारिश करने वाला और यह हालत हो कि अगर दुनिया भर के बदले दे डाले तब भी उसे न लिया जाये। वे ऐसे ही हैं कि अपने अमलों के सबब फंस गये, उन के लिए बहुत गर्म पानी पीने के लिए होगा और दुखदायी सजा होगी उन के कुफ्र के सबब।

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لُغُوبًا ۗ وَهُمْ أَغْرَيْنَاهُمْ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَذُكِّرُوا أَن تَبْسُلَ نَفْسًا بِمَا كَسَبَتْ ۗ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ ۗ وَإِن تَعَدَّ كُلُّ عَدَلٍ لَّا يُؤْخَذُ مِنْهَا ۗ أُولَئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا ۗ لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ ۗ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

† इस आयत में अगरचे खिताब नबी ﷺ को किया गया है, किन्तु इस से सम्बोधित (मुख्यतः) हर मुसलमान है, यह अल्लाह का बलपूर्वक (ताकीदी) हुक्म है जिसे पाक कुरआन में कई मुकामों में बयान किया गया है। सूर: निसाअ आयत नं० १४० में भी इस विषय की चर्चा आ चुकी है, इस से हर ऐसी मजलिस मुराद है जिस में अल्लाह और रसूल के हुक्मों का भजाक किया जाता हो या व्यवहारिक (अमली) रूप से उनकी नाफरमानी की जाती हो या गुमराह अपनी गलत विचारों के जरिया आयात (पाक कुरआन के मंत्रों) के मायनों को छिन्न-भिन्न कर रहे हों, ऐसी मजलिसों में आलोचना (तन्कीद) और सच की मदद के लिये जाना जायेज है वना बहुत बड़े गुनाह और अल्लाह के गज़ब का सबब है।

७१. आप कहिए कि क्या हम अल्लाह के सिवायें उसे पुकारें जो हमारा भला-बुरा न कर सकता हो और अल्लाह की हिदायत मिलने के बाद उस के समान एँड़यों के बल फेर दिये जायें जैसे शैतान ने वहका दिया हाँ और वह धरती में भटकता फिर रहा हो, उस के साथी उसे सही रास्ते की ओर पुकार रहे हो कि हमारे पास आओ ! आप कहिये कि अल्लाह की हिदायत ही हकीकत में हिदायत है और हमें हकम किया गया है कि दुनिया के मालिक के लिए खुदासिपुर्दगी कर दें ।

७२. और नमाज कायम करो और उस (अल्लाह) से डरो, वह वही है जिस की तरफ तुम जमा किये जाओगे ।

७३. उसी ने आसमानों और जमीन को हक के साथ पैदा किया, और जिस दिन कहेगा "हा जा" तो हो जायेगा, उसका कौल सच है और जिस दिन नरसिन्धा फूका जायेगा, मुल्क सिर्फ उसी का होगा, वह जानने वाला है, गैब और हाजिर का और वह हिबमत वाला वाखबर है ।

७४ और याद करो जब इब्राहीम ने अपने पिता आजर से कहा क्या आप मूर्तियों को माबूद बना रहे हैं? मैं आप को और आप की कौम को खुली गुमराही में देख रहा हूँ ।

قُلْ اَنْدَعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ
وَلَا يَضُرُّكُمْ وَكُرِّدْ عَلٰى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ
هَدٰنَا اللّٰهُ كَالَّذِي اسْتَمْوَتْهُ الشَّيْطٰنِيْنَ
فِي الْاَرْضِ حَيْرٰنًا ۗ لَنْ اَصْحَبَ يَدَ عُوْبُوْكَ
اِلَى الْهٰدِي الْاِْتِنٰتَا قُلْ اِنَّ هٰدِيَ اللّٰهُ هُوَ
الْهُدٰى ۗ وَاَمْرُنَا لِنَسْلِمَ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝۷۱

وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَآتُوْهُ ۗ وَهُوَ الَّذِي
اِلَيْهِ تُخْشَرُوْنَ ۝۷۲

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ
وَيَوْمَ يَقُوْلُ لَنْ فَيَتُوْنَهُ قَوْلَهُ الْحَقُّ ۗ وَلَهُ
السَّلْطٰنُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ عَلٰمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادٰتُ ۗ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْغَبِيْرُ ۝۷۳

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لٰبِيْهٖ اِزْرًا اَتَّبِعْ اَصٰمًا
اِلٰهَةً ۗ اِنِّيْ اَرٰكَ وَقَوْمَكَ فِى ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝۷۴

1 यह उन लोगों की मिसाल है जो ईमान के बाद बेईमान और एकेश्वरवाद के बाद अनेकेश्वरवाद की ओर फिर जायें, उनकी मिसाल ऐसी ही है कि वह अपने साथियों से चिछड़ कर जंगलों में चकित हो कर परेशानी की हालत में भटकता फिर रहा हो, साथी उस को बुला रहे हों लेकिन चकित होने के वजह से कुछ न दिखायी पड़ रहा हो या जिन्नातों के पंजे में फंसने के सबब सही रास्ते पर आना नामुमकिन हो ।

2 इतिहासकार हजरत इब्राहीम के बाप के दो नाम बताते हैं, यह नाम आजर और तारूख है, मुमकिन है कि दूसरा नाम उपाधि (खकब) हो । कुछ कहते हैं कि आजर आप के चचा का नाम था, लेकिन यह सही नहीं है, इसलिए कि कुरआन ने आजर की चर्चा हजरत इब्राहीम के पिता के रूप में की है, इसलिए सही "ही है" ।

७५. और इसी तरह हम ने इवाहीम को आसमानों और जमीन का मुल्क (राज्य) दिखायी ताकि वह पूरे यकीन करने वालों में हो जायें ।

७६. फिर जब उन पर रात का अंधेरा छा गया तो एक तारा देखा, कहा कि यह मेरा रव है फिर जब वह डूब गया तो कहा कि मैं डूबने वाले से मुहब्बत नहीं करता ।

७७. फिर जब चाँद को चमकते देखा तो कहा यह मेरा रव है, फिर जब वह डूब गया तो कहा कि अगर मेरे रव ने मुझे रास्ता नहीं दिखाया तो मैं गुमराहों में हो जाऊँगा ।

७८. फिर जब सूरज को चमकता हुआ देखा तो कहा कि यह मेरा रव है, यह तो सब से बड़ा है, फिर जब वह डूब गया तो कहा कि बेशक मैं तुम्हारे धिर्क से बरी हूँ ।

७९. मैंने अपना मुँह उसकी तरफ फेर दिया, जिस ने आसमानों और जमीन को पैदा किया एकसू होकर और मैं मुश्रिकों (अनेकेश्वरवादियों) में से नहीं हूँ ;

८०. और उन से उनकी क्रौम वालों ने झगड़ा करना शुरू कर दिया ² आप (हज़रत इब्राहीम) ने कहा कि क्या तुम अल्लाह के वारे में मुझ से झगड़ा करते हो, अगरचें उस ने मुझे हिदायत दी है और मैं उन चीजों से जिन को तुम अल्लाह के

وَكَذَلِكَ نُورِيٰٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوٰتِ السَّمٰوٰتِ
وَ الْاَرْضِ وَ لِيَكُوْنُ مِنَ السُّوْقِنِيْنَ ﴿٧٥﴾

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الْاَيْلُ رَا الْوَكْبَ : قَالَ هٰذَا رِبِّيْ
فَلَمَّا اَخْلَ قَالَ لَا اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿٧٦﴾

فَلَمَّا رَا الْقَمَرَ بَارِقًا قَالَ هٰذَا رِبِّيْ - فَلَمَّا اَخْلَ
قَالَ لَيْنَ لَمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَا كُوْنَنَّ مِنَ
الْقَوْمِ الضَّالِّيْنَ ﴿٧٧﴾

فَلَمَّا رَا الشَّمْسُ بَارِقَةً قَالَ هٰذَا رِبِّيْ هٰذَا
الْكَبِيْرُ - فَلَمَّا اَقْلَبْتَ قَالَ يَقُوْمُ اِنِّيْ بِرَبِّيْ
مِمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿٧٨﴾

اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِذِيْ فَطْرِ السَّمٰوٰتِ
وَ الْاَرْضِ حَقِيْقًا وَ مَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٧٩﴾

وَ حَاجَّةٌ قَوْمُهُ قَالَ اَتَّخِذُوْنِيْ فِيْ اللّٰهِ وَ قَدْ
هٰذِهِنْ دُوْلًا اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهِ اِلَّا اَنْ
يَشَاءَ رَبِّيْ فَيُتِمَّ طَوْسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا
اَقْلَبًا سَتَدَّبَّرُوْنَ ﴿٨٠﴾

¹ यानी वह सभी चीजें जिन को अल्लाह का साक्षी बनाते या जिन की पूजा करते हो, उस से मैं दुखी हूँ, इसलिए कि इन में तबदीली होती है, कभी निकलते हैं कभी डूबते हैं, जो इस बात का सबूत है कि इनकी तखलीक हुई है और उनका बनाने वाला कोई और है जिसके आदेशाधीन (तावे) ये हैं ।

² जब क्रौम वालों ने तौहीद (एकेश्वरवाद) का यह भाषण सुना जिस में उन के (खुद बनाये) देवताओं का खण्डन (तर्दीद) भी किया गया था, तो उन्होंने भी अपनी दलील पेश करना शुरू कर दिया, जिन से मालूम हुआ कि मूर्तिपूजकों ने भी अपने ईमान के लिए कुछ दलील बना रखी थी, जिसको आज भी देखा जा सकता है, जितने भी धिर्क करने वाले लोग हैं, सभी ने अपने-अपने पैरोकारों को मुतमदंन करने के लिए ऐसे मांहरें खोज रखे हैं जिन्हें वे दलील समझते हैं या जिनसे कम से कम उनके पैरोकारों को अपने जाल में फंसाये रख सकते हैं ।

साथ शामिल करते हो, नहीं डरता लेकिन यह कि मेरा रब ही किसी वजह से चाहे। मेरा रब हर चीज को अपने इल्म के दायरे में घेरे हुए है, क्या तुम फिर भी ख्याल नहीं करते:

८१. और मैं उस चीज से कैसे डरू जिसे तुम ने (अल्लाह का) साभ्नीदार बना लिया, जबकि तुम उसे अल्लाह का साभ्नी बनाने से नहीं डरते जिस का तुम्हारे पास अल्लाह ने कोई दलील नहीं उतारी है, फिर इन दोनों गिरोहों में कौन हक के ज़्यादा लायक है, अगर तुम इल्म रखते हो।

८२. जो लोग ईमान लाये और अपने ईमान को किसी शिर्क से लिप्त नहीं किया उन्हीं के लिए अमन है और वही सीधे रास्ते पर है।

८३. और यह हमारी दलील है जिसे हम ने इब्राहीम को उन के क्रौम के मुक्काबले में दिया, हम जिसका पद चाहें बढ़ाते हैं, बेशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला इल्म वाला है।

८४. और हम ने उन्हें (पुत्र) इसहाक और (पौत्र) याकूब अता किया, और हर को सीधा रास्ता दिखाया, और इस से पहले नूह को रास्ता दिखाया और उन की औलाद में दाऊद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ और मूसा और हारून को, और इसी तरह हम नेकी करने वालों को बदला अता करते हैं।

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَكْفُمْ
أَشْرَكْتُمْ بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا
فَأَيُّ الْقَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ﴿٨١﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ
أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُهْتَدُونَ ﴿٨٢﴾

وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ ۖ نَرْفَعُ
دَرَجَاتٍ مَّن نَّشَاءُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿٨٣﴾

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۗ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا
هَدَيْنَا مِن قَبْلُ ۚ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ
وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۗ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي
الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٤﴾

आयत में यहाँ जुल्म से मुराद शिर्क है, जब यह आयत उतरी तो अल्लाह के रसूल के सहाबा ने इस का आम मतलब (सुस्ती, बुराई, गुनाह, क्रूरता वगैरह) समझा और परेशान हो गये, रसूलुल्लाह ﷺ की खिदमत में आ कर कहने लगे कि हम में कौन है जिस ने जुल्म न किया हो? आप ने कहा कि इस का मतलब वह जुल्म नहीं जो तुम ने समझा है बल्कि इस से मुराद शिर्क (भिन्नधर्म) है, जैसे हज़रत लुकमान ने अपने बेटे से कहा था।

(إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ)

बेशक शिर्क सबसे बड़ा जुल्म है। (सूर: लुकमान-१३, सहीह बुखारी, तफसीर सूर: अल-अंआम)

६५. और जकरिया और यहया और ईसा¹ और इलियास को, सब सालेहीन में थे।

६६. और इस्माईल और यसअ और यूनस और नूत को, सब को हम ने दुनिया वालों पर फजीलत दी।

६७. और उन के बापों और औलादों और भाईयों में से, और हम ने उनका इन्तिखाब किया और उन्हें सीधा रास्ता दिखाया।

६८. यही अल्लाह का रास्ता है अपने बंदों में से जिसे वह चाहता है, उसे राह दिखाता है और अगर वे लोग भी शिर्क (मिश्रण) करते तो उन के अमल बेकार हो जाते।²

६९. इन्ही को हम ने किताब और हिक्मत और नुबूवत अता किया, और अगर यह लोग इसे न मानें³ तो हम ने ऐसे लोगों को तैयार कर रखा है जो इसका इंकार नहीं करेंगे।⁴

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِيلَىٰسَ كُلٌّ مِّنَ
الطَّالِبِينَ ﴿٨٥﴾

وَأِسْمٰئِيلَ وَإِسْحٰقَ وَيُوْسُفَ وَهُوْدًا وَكُلًّا فَضَّلْنَا
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٨٦﴾

وَمِنْ اٰبَائِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ وَاَجْتَبَيْنَاهُمْ
وَهَدَيْنَاهُمْ اِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٨٧﴾

ذٰلِكَ هُدٰى اللّٰهُ يَهْدِيْ بِهٖ مَن يَّشَآءُ وَمَن
عَبَادُوْهُ وَاُوْا شَرَكُوْا لِحَيْطٍ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿٨٨﴾

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَتَيْنَاهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَ وَالنُّبُوَّةَ اِذَا
يَكْفُرُ بِهَا هُوْلَاءُ فَقَدْ وُكِّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا
بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

¹ ईसा عليه السلام का बयान हजरत नूह या इब्राहीम की औलाद में इसलिए किया गया है (अगरचे उन के बाप नहीं थे) कि लड़की की औलाद भी मर्द के औलाद में शामिल होती है, जिस तरह से नबी ﷺ ने हजरत हसन (رضي الله عنه) [अपनी बेटी हजरत फातिमा (رضي الله عنها) के बेटे] को अपना बेटा बताया «إِنِّي هَذَا سَيِّدٌ وَلَعَلَّ اللَّهُ أَنْ يُصَلِّحَ بِهِ بَيْنَ فِتْنَيْنِ عَظِيمَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ» (सहीह बुखारी किताबुस सुलह) तफसीली जानकारी के लिए देखें तफसीर इब्ने कसीर।

² अट्ठारह नबियों के नामों का बयान कर के अल्लाह तआला कह रहा है, अगर वे लोग भी शिर्क में फँस जाते तो उन के सारे अमल बरबाद हो जाते, जिस तरह से नबी ﷺ को दूसरी जगह पर मुखातब करते हुए अल्लाह तआला ने फरमाया :

(لَوْ اَشْرَكْتَ لَيَحَطَّنَ عَلَيْنَكَ)

«हे पैगम्बर अगर तूने भी अल्लाह तआला के साथ किसी दूसरे को शामिल किया, तो तेरे सारे अमल बरबाद कर दिये जायेंगे।» (सूर: अज-जुमर-६५)

अगरचे पैगम्बरों से शिर्क होना मुमकिन नहीं, मकसद पैरोकारों को शिर्क की भयानकता और तबाही से साखबर करना है।

³ इस से मुराद रसूलुल्लाह ﷺ के मुखालिफ, मूर्तिपूजक और बेदीन हैं।

⁴ इस से मुराद मक्का से जाकर मदीने में बसने वाले और मदीने के वासी मुसलमान और कयामत तक आने वाले ईमान वाले हैं।

९०. यही लोग है जिन को अल्लाह ने सही रास्ता दिखाया, इसलिए आप उन के रास्ते की पैरवी करें, आप कहिये कि मैं इस पर किसी बदले की मांग नहीं करता, यह दुनिया वालों के लिये सिर्फ यादगार है।

९१. और उन्हें जिस तरह अल्लाह की कद्र करना चाहिए था कद्र नहीं किया, जब उन्होंने यह कहा कि अल्लाह ने किसी इंसान पर कुछ नहीं उतारा। आप कहिये कि मूसा जो किताब तुम्हारे पास लाये जो लोगों के लिए नूर और हिदायत है, उसे किस ने उतारा जिसे तुम मुख्तलिफ कागजों में रखते हो, जिस में से कुछ जाहिर करते और ज्यादातर छुपाते हो और तुम्हें वह इल्म दिया गया जिसे तुम और तुम्हारे बज्रुर्ग नहीं जानते थे। आप कहिए कि अल्लाह फिर उन्हें उन के कुरेद में खेलते छोड़ दीजिए।

९२. और यह भी एक सुवारक किताब है, जिसे हम ने उतारा है, अपने से पहले (धर्मशास्त्रों) की तसदीक है, ताकि आप असल वस्ती (मक्का) और उस के आसपास (के नगरों यानी पूरी इंसानी दुनिया) को बाखबर करें, और जो आखिरत पर इमान रखते हैं वही लोग इसे मानेंगे और वही अपनी नमाजों की हिफाजत करेंगे।

९३. और उस से ज्यादा जालिम कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठा इल्जाम लगाये या कहे कि मेरी तरफ वहयी आई है, जबकि उस की तरफ कुछ नहीं आयी, और जिस ने कहा कि जिस तरह अल्लाह ने उतारा मैं भी उतारूंगा, अगर आप जालिमों को मौत के सख्त अजाब में देखेंगे, जब फरिश्ते अपने हाथ लपकाये होते हैं

أُولَئِكَ الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ فَبِهِدَاهُمُ اقْتَرَبَهُمْ لِقَاءَ رَبِّهِمْ فَسَوْفَ لَا نَسْأَلُهُمْ عَلَيْهِمْ أَجْرًا ۗ إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٩٠﴾

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَتَّى قَدِيرًا إِذْ قَالُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَی بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ ۗ قُلْ مَن أَنْزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَى نُورًا وَهُدًى لِّلْبَآئِیْنَ لِيَجْزُوَنَّهُ بِقُرْطُبَیْسٍ شَدِيدٍ ۚ وَنُخْفُونَ كَثِیْرًا ۗ وَعَلَيْكُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْا ۗ أَنْتُمْ وَلَا آٰبَاؤُكُمْ ۗ قُلْ اللَّهُ ۗ لَمْ يَرِکُمْ فِی حُضُوبِهِمْ یٰلَعِبُونَ ﴿٩١﴾

وَهٰذَا كِتٰبٌ أَنْزَلْنَاهُ مَبْرُكًا ۖ مُصَدِّقًا لِّذٰلِکَ بَیْنَ یَدَیْهِ ۚ وَتَشْرِیْحًا لِّذٰلِکَ الْقُرْآٰنِ ۗ وَمَنْ حَوَّلَهَا ۙ وَالْکٰفِرِیْنَ یُجِزُّوْنَ ۗ بِالْآخِرَةِ یُؤْمِنُوْنَ بِهِ ۚ وَهُمْ عَلٰی صَلَٰتِهِمْ یُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰی عَلٰی اللّٰهِ كَذِبًا ۗ اَوْ قَالَ اُوْحٰی اِلَیَّ ۗ وَلَمْ یُوحَیْ اِلَیْهِ شَیْءٌ ۗ وَمَنْ قَالَ سَآزِجٌ ۗ وَمِثْلَ مَا أَنْزَلَ اللّٰهُ ۗ وَلَوْ تَرٰی اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِی عَذَابِ السَّوْءِ ۗ وَالسّٰلِکَةُ بِاَسْطُوْا اَیْدِیْهِمْ ۗ اَخْرَجُوْا

1 आयत की तफसीर के अनुसार अब यहदियों को मुखातब कर के कहा जा रहा है कि तुम इस किताब को विभिन्न पृष्ठों (मुख्तलिफ पन्नों) में रखते हो, जिन में से जिन को चाहते हो जाहिर करते हो जिनको चाहते हो छिपा लेते हो, जैसे पत्थरों से मार कर सजा देने का कानून और नबी ﷺ के अबसाफ की बात है।

कि अपनी जान निकालो, आज तुम्हें अल्लाह पर नाहक इल्जाम लगाने और तकब्बुर से उस की आयतों का इंकार करने के सबब अपमानकारी (स्त्राकुन) बदला दिया जायेगा।

९४. और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गये, जैसे तुम्हें पहली बार पैदा किया और तुम्हें जो दिया उसे अपने पीछे छोड़ आये और तुम्हारे सिफारिशी हमें नहीं दिख रहे हैं, जिन को तुम अपने कामों में हमारा साफी समझ रहे थे, बेशक तुम्हारे संबन्ध कट गये और तुम्हारा ख्याल तुम से खो गया।

९५. अल्लाह ही वीजों और गुठलियों को फाड़कर कोपल निकालता है, वह जानदार को बेजान से बेजान को जानदार से निकलता है, वही अल्लाह है, फिर तुम कहाँ फिरे जा रहे हो ?

९६. वह पौ फाड़ने वाला है और उस ने रात को आराम के लिये सूरज और चाँद को हिसाब लगाने के लिये बनाया, यह ठहराई बात है ज़बरदस्त इल्म वाले (अल्लाह) का।

९७. और उसी ने तुम्हारे लिये तारे बनाये ताकि तुम थल जल के अंधेरों में उन के जरिये रास्ते का पता लगाओ, हम ने उन लोगों के

أَنْفُسَكُمْ طُ أَيُّومَ تُجْرُونَ عَذَابَ الْهَوْنِ بِمَا كُنْتُمْ
تُكْفِرُونَ عَلَى اللَّهِ عَيْدَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ
تَسْكِبُونَ ﴿٩٣﴾

وَلَقَدْ جَعَلْنَا نُورَ آدَمَ كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ
ذُ تَرَكْتُمْ مَا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ وَمَا نَرَى مَعَكُمْ
شُفَعَاءَكُمْ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ
لَقَدْ نَقَطَ بَيْنَكُمْ وَصَلَ عَنْكُمْ مَا كُنْتُمْ
تَزْعُمُونَ ﴿٩٤﴾

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْغَابِطِ وَالنَّوَى يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ
الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ النَّوَى ذُ لِكُمْ اللَّهُ فَالِقُ
النُّجُومِ ﴿٩٥﴾

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ذُ ذُ لِكْ تَقْوِيرُ الْعَزِيمِ الْعَالِمِ ﴿٩٦﴾

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لِكُمْ النُّجُومَ لِيَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ
الْبَرِّ وَالْبَحْرِ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٩٧﴾

1 यहाँ से अल्लाह तआला की बेइन्तेहा ताकत और कुदरत का बयान शुरू हो रहा है। फरमाया: अल्लाह तआला दाने और गुठली को, जिसे किसान धरती के अन्दर दबा देता है, उसे फाड़ कर अनेक रंग-रूप के पेड़ उगाता है, धरती एक होती है, पानी भी जिस से खेतों की सिंचाई होती है, एक ही तरह का होता है, लेकिन जिस-जिस चीज के वे दाने और गुठलियाँ होते हैं, उन के अनुसार अल्लाह तआला उन से कई तरह के अनाज और फलों के पेड़ उगाता है, क्या अल्लाह के सिवाय दूसरा कोई है जो इस काम को करता है या कर सकता है ?

2 यहाँ सितारों का एक फ़ायदेवा और मक़सद बताया गया है और इस के दूसरे और भी दो मक़सद हैं जो दूसरी जगह पर बयान किये गये हैं। आकाशों की घोभा (जीनत) और सैतानों की सजा, यानी अगर सैतान आसमान पर जाने की कोशिश करते हैं तो यह उन पर अंगारे बन कर गिरते हैं, कुछ सलफ़ का क़ौल है, "इन तीन बातों के सिवाय इन सितारों के बारे में यदि कोई इंसान ईमान रखता हो तो वह ग़लती पर है और अल्लाह पर भूठ बाधता है।"

इस से मालूम होता है कि हमारे देश में जो ज्योतिष विज्ञान (इल्मे नुजूम) की चर्चा है, जिस में

लिए निशानियों को बयान कर दिया है जो इल्म रखते हैं।

९८. और उसी ने तुम्हें एक जान से पैदा किया फिर तुम्हारा एक दायमी और एक समर्पण (आरजी) जगह है, हम ने उन के लिये निशानियों (लक्षणों) का बयान कर दिया है जो समझते हैं।

९९. और वही है जिस ने आसमान से बारिश बरसाई, फिर हम ने उस से हर तरह के पौधे उगाये, फिर उस से हरियाली निकाली जिस से हम गुधे हुये अनाज और खजूर के गाभ से लटकते हुये गुच्छे और अंगूरों और जैतून और अनार के बाग (उद्यान) निकलते हैं जो एक तरह और अनेक तरह होते हैं, उन के फलों को देखो जब फले और उनका पकना, बेशक इस में उन लोगों के लिये चिन्ह (निशानियाँ) है जो ईमान रखते हैं।

१००. और लोगों ने जिन्नो को अल्लाह का साभी बना दिया है, जबकि उसी ने उन को पैदा किया है, और उस (अल्लाह) के लिये बेटे और बेटियाँ गढ़ ली बिना किसी इल्म के, वह (अल्लाह) इन के बयान किये अवसाफ़ से पाक और (अच्छा) है।

१०१. यह आसमानों और जमीन का पैदा करने वाला है, उस के औलाद कहाँ हो सकती है? जब कि उसकी कोई बीवी नहीं है वह हर चीज का बनाने वाला और जानने वाला है।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرًّا
وَمُسْتَوْعًا ۚ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ ﴿٩٨﴾

وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ
كُلِّ شَيْءٍ ۖ فَأَخْرِجْنَا مِنْهُ خَبَرًا مُخْرَجًا ۚ مِنْهُ جَبَّ
مُتْرًا كَيْسًا ۖ وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْحِهَا قِثَابٌ مَائِيَّةٌ
وَأَجْنَبٌ مِنَ التَّعَابِ وَالزَّيْتُونَ وَالزُّمَّانُ مُشْتَبِهًا
وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ نَاظِرُوا إِلَى شَيْءٍ إِذَا الْاْتَمَرُوا بِهِ ۚ
إِن فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٩٩﴾

وَجَعَلُوا لَهُ شُرَكَاءَ مِنَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ
وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ سُبْحٰنَهُ وَعَظْمُ عَنَّا يَصِفُونَ ﴿١٠٠﴾

بَدِيعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اُنۢى يُولُوۡنَ لَهُ وَاَلَدٌ ۗ لَٰمٌ ۗ لَٰمٌ
لَهُ صَاحِبَةُ ۙ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ۗ وَهُوَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيۡمٌ ﴿١٠١﴾

सितारों के जरिये मुस्तक़बिल के वाक़ेआत और इंसान की जिन्दगी या दुनिया में उन के असर का दावा किया जा रहा है, वह बेकार है और इस्लामी क़ानून के खिलाफ़ भी, इसलिए एक हदीस में इसे जादू का ही एक हिस्सा बताया गया है।

1. ज्यादातर व्याख्याकारों (मुफ़िस्सरो) के ख़्याल से مُسْتَقَرًّا (मुस्तकर) से गर्भाशय (रिहम) और مُسْتَوْعًا से बाप की पीठ मुराद है। (फ़तहूल-क़दीर और इब्ने कसीर)

2. यानी जैसे अल्लाह सभी उपर बयान चीज़ें पैदा करने में अकेला है, कोई उसका साभी नहीं उसी तरह वह इस लायक है कि उस की अकेले इबादत की जाये किसी और को उसकी इबादत में शामिल न किया जाये, लेकिन लोगों ने एक अकेले को छोड़कर अनेकों को उसका

१०२. वही अल्लाह तुम्हारा रब है, उस के सिवाये कोई माबूद नहीं, हर चीज का बनाने वाला है, इसलिए उसी की इबादत करो और वह हर चीज का निगरा है।

१०३. आंखें उसे देख नहीं सकती और वह सभी निगाहों को देखता है और वह गहराई से देखने वाला सर्वसूचित (बाखबर) है।

१०४. तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे पास दलील आ गई है, तो जो देखेगा वह अपने भले के लिये (देखेगा) और जो अंधा बन जायेगा वह अपना बुरा करेगा और मैं तुम्हारा मुहाफिज नहीं हूँ।

१०५. इसी तरह हम आयतों (पाक कुरआन की) को फेर-फेर कर बयान कर रहे हैं ताकि वे कहें कि आप ने पढ़ा है और ताकि उन लोगों के लिये जो जानते हैं हम उसे अच्छी तरह बयान कर दें।

१०६. आप अपने रब के हुक्म (वहयी) की इत्तेया करें कि अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं और मुश्रिकों से विमुख हो जायें।

१०७. और अगर अल्लाह चाहता तो यह शिर्क (अल्लाह के साभ्नीदार) न करते और हम ने आप को इन लोगों का निगरा नहीं बनाया, और

ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ
وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿١٠٢﴾

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ
وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ﴿١٠٣﴾

قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ
وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا لَوْ مَا آتَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿١٠٤﴾

وَكَذَلِكَ نَصْرَفُ الْأُيُوتِ وَيَقُولُوا دَرَسْتَ وَلِنَبِيِّنَا
لَقَوْمٌ يُعَالِمُونَ ﴿١٠٥﴾

إِنِّي أَخَذْتُ مِيثَاقَ الْبَنِي إِسْرَائِيلَ أَنِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
وَاعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٦﴾

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَطْرَقُوا وَأَ مَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا
وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ﴿١٠٧﴾

साभ्नी बना रखा है जब कि वह खुद अल्लाह की तखलीक हैं। मुश्रिक इबादत तो मूर्तियों या कब्रों में गड़ी लाश की करते हैं, लेकिन कहा गया है कि उन्होंने देवों को अल्लाह का साभ्नी बना रखा है, हकीकत में देवों से मुराद बैतान हैं और उन्हीं के कहने पर शिर्क किया जाता है, इसलिए मानो कि उन्हीं की इबादत की जाती है, इस वारे में पाक कुरआन में कई जगहों पर बयान किया गया है। (मिसाल के तौर पर सूर: निसाअ-११७; सूर: मरियम-४४, सूर: यासीन-६०, सूर: सबा-४१)

इस नुक्ता की वजाहत पहले की जा चुकी है कि अल्लाह की मर्जी दूसरी चीज है और उसकी खुशी तो इसी में है कि उसके साथ किसी को शामिल न किया जाये, फिर भी इंसान को इस पर मजबूर नहीं किया है क्योंकि मजबूरी से इंसान का इम्तेहान न हो पाता, बल्कि अल्लाह तआला के पास तो ऐसी ताकत है कि वह चाहे तो कोई इंसान शिर्क करने की ताकत ही नहीं रख सके। (फिर देखिये सूर: अल-बकर: -२५३ और सूर: अल-अंआम ३५ की तफसीर)

न आप उन पर हक रखने वाले हैं ॥

१०८. और जो अल्लाह के सिवा दूसरों को पुकारते हैं उन को गाली न दो नहीं तो दुश्मन होकर अंजाने वे अल्लाह को गाली देंगे,^१ इसी तरह हम ने हर उम्मत के लिये उन के अमल को सुशोभित (मुजय्यन) बना दिया है, फिर उन्हें अपने रव की ओर ही नौटना है, इसलिए वह उन्हें उस से बाखबर करेगा जो वे करते रहे ।

१०९. और उन्होंने बलपूर्वक अल्लाह की कसम खाई कि उन के पास कोई निशानी आई^३ तो वेशक मान लेंगे, आप कहिये कि आयतें अल्लाह के पास हैं और आप को क्या पता कि वह (निशानियाँ) आ जायें तब भी वह नहीं मानेंगे ।

११०. और हम उन के दिलों और आँखों को फेर देंगे जिस तरह उन्होंने पहले इस के ऊपर यकीन नहीं किया, और उनको उनकी सरकशी (के अधेरे) में भटकता रहने देंगे ।

وَلَا تَسْتَبِئُوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَسْتَبِئُوا
اللَّهَ عَدُوًّا بِغَيْرِ عِلْمٍ بِكَذَلِكَ رَبِّنَا لِكُلِّ أُمَّةٍ
عَمَلُهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ مَرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٠٨﴾

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَهُمْ آيَةٌ
لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ
وَمَا يُشْعُرُكُمْ أَنَّهُآ إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠٩﴾

وَنَقَلِبُ أَيْدِيَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ
مَرَّةٍ وَنَدَّوهُمْ فِي طَافِيئِهِمْ يُعَهِدُونَ ﴿١١٠﴾

^१ यह विषय भी कुरआन मजीद में कई जगहों पर बयान किया गया है, मकसद नबी ﷺ की दावती मंसब और बाखबर करने वाली पदवी की वजाहत है जो रिसालत की मांग है और आप ﷺ केवल इसी हद तक जिम्मेदार थे, इस से ज्यादा आप के पास अगर हक होते तो आप ﷺ अपने प्यारे चाचा अबू तालिब को जरूर मुसलमान कर लेते, जिन के दीन इस्लाम को क़यूल करने की आप बहुत तमन्ना रखते थे ।

^२ यह निषेध की विधि के इस क़ानून पर आधारित (मबनी) है कि अगर किसी जायेज काम से उस से बड़ी खराबी पैदा होती हो तो वहाँ पर जायेज को न करना ठीक और है, इस तरह नबी ﷺ ने भी फ़रमाया है कि तुम किसी के माँ-बाप को गाली मत दो कि इस तरह तुम खुद अपने माँ-बाप की गाली का वजह बन जाओगे । (सहीह मुस्लिम, किताबुल-ईमान, बाब बयानुल कबायिर व अक़बरीहा) इमाम शैकानी लिखते हैं कि मुमानअत के तरीका का यह मूलाधार है । (फतहल कदीर)

^३ यानी कोई बड़ा मोजिजा जो उनकी मर्जी से हो, जैसे मूसा की छड़ी, सुदा को ज़िन्दा और समूद की ऊँटनी जैसा ।

१११. और अगर हम उन के पास फरिस्ते उतार दें और उन से मुर्द बात करें और उन के सामने हर चीज जमा कर दें तो (भी) अल्लाह के चाहे बिना यह लोग यकीन नहीं करेंगे, लेकिन इन में से ज्यादातर लोग बेवकूफी कर रहे हैं।

११२. और इसी तरह हम ने हर नबी (उपदेशक) के लिये जिन्नो और इन्सानों के शैतानों (राक्षसों) को दुश्मन बनाया जो आपस में धोखा देने के लिये चिकनी-चुपड़ी बात क्व वसवसा देते रहे और अगर तेरा खब चाहता तो ऐसा न करते। इसलिए आप उन्हें और उन की साजिश को छोड़ दें (उनकी फिक्र न करें)।

११३. और ताकि उन के दिल उस की तरफ मायेल हो जायें जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते और उस से खुश हो जायें और वही गुनाह कर लें जो वह लोग कर रहे थे।^१

११४. तो क्या मैं अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे शासक की खोज करूँ जब कि उसी ने तुम्हारी तरफ एक मुफ़स्सल किताब (क़ुरआन) उतारा है, और हम ने जिन को किताब दिया है वे जानते हैं कि हकीकत में वह तुम्हारे खब की तरफ से हक़ के साथ है, इसलिए आप शक़ करने वाला न बनें।^२

وَلَوْ أَنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْهِمُ الْكِتَابَ وَكَلَّمَهُم
السُّورَى وَحَضَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَا
كَانُوا يُؤْمِنُوا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَلَكِنْ
أَكْثَرُهُمْ يَعْتَدُونَ ﴿١١١﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَاطِئِينَ الْإِنْسِ
وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ
غُرُورًا وَإِلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرُهُمْ
وَمَا يَغْتَوْنُ ﴿١١٢﴾

وَلِتَضْمَنَ إِلَيْهِمْ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُمْ
مُقْتَرِفُونَ ﴿١١٣﴾

أَفَعَيِّرَ اللَّهُ أَتَقِي حَكْمًا وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ
الْكِتَابَ مُفَصَّلًا وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ
يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا
تُكْفَرُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ﴿١١٤﴾

^१ यह वही बात है जो कई तरह से रसूलुल्लाह ﷺ की तसल्ली के लिए कही गयी है कि आप ﷺ से पहले जितने भी नबी आये, उनको भी झूठलाया गया, उन्हें सजायें दी गई इत्यादि (बग़ैरह)। मक़सद यह है कि जिस तरह से उन्होंने सब्र और हिम्मत से काम किया, आप ﷺ भी इन सच के दुश्मनों के लिए सब्र और मजबूती का प्रदर्शन (इजहार) करें। इस से मालूम हुआ कि शैतान के पैरोकार इंसान के सिवाय जिन्नो में से भी है और ये वे हैं जो दोनों गुटों के दुश्मन, विद्रोही, जालिम, दुराचारी और अभिमानी (मुत्कब्बिर) हैं।

^२ यानी शैतान के बुरे इरादे के शिकार वही लोग होते हैं, जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते, और यह सच है कि जिस तरह से लोगों के दिलों में आखिरत का यकीन कमजोर होता जा रहा है, उसी के अनुरूप (मुताबिक) लोग शैतानी जाल में फंस रहे हैं।

^३ आप ﷺ को मुखातब करके हकीकत में मुसलमानों को तालीम दी जा रही है।

११५. और तुम्हारे रब के कलाम सच्चे कौल और इंसाफ में पूरा हो गये, उस के कलाम को कोई बदल नहीं सकता और वह अच्छी तरह सुनने वाला जानने वाला है।

११६. और यदि आप धरतीवासियों में ज्यादातर की पैरवी करेंगे तो वह आप को अल्लाह के रास्ते से बहका देंगे, वे सिर्फ बेबुनियाद ख्याल (कल्पना) की पैरवी करते और अंदाजा लगाते हैं।^१

११७. बेशक आप का रब उन को अच्छी तरह जानता है, जो उस के रास्ते से भटक जाता है, और वह उस को भी अच्छी तरह जानता है, जो उस के रास्ते पर चलते हैं।

११८. तो जिस (जानवर) पर अल्लाह का नाम लिया जाये उस में से खाओ अगर तुम उस के हुकमो पर ईमान रखते हो।^२

وَوَقَّاتٌ كَلِمَاتٍ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا وَلَا مَبِيدَ لِكَلِمَاتِهِ ۗ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿١١٥﴾

وَإِنْ تُطِيعُوا أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ لِيُضِلُّوكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿١١٦﴾

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَضِلُّ عَنْ سَبِيلِهِ ۗ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١١٧﴾

فَكُلُوا مِمَّا ذَكَرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

^१ कुरआन में बयान इस सच्चाई का अवलोकन (मुशाहदा) हर दौर में किया जा सकता है, दूसरी जगह पर अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَمَا أَكْثَرَ النَّاسَ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ﴾

“आप की मर्जी के बावजूद ज्यादातर लोग ईमान लाने वाले नहीं।” (सूर: यूसुफ-१०३)

इस से मालूम हुआ कि सच और सच्चाई के रास्ते पर चलने वाले हमेशा थोड़े ही होते हैं, जिस से यह बात भी साबित होती है कि सच और सच्चाई की बुनियाद दलील और सुबूत है, लोगों की ज्यादा या कम तादाद नहीं, ऐसा नहीं कि जिस बात को ज्यादा लोगों ने माना हो वह सच हो और कम लोग सच्चाई पर न हों, बल्कि कुरआन के जरिये इस सच्चाई की बुनियाद पर यह मुमकिन है कि सच्चे लोग कम होते हों और झूठे लोग बहुत। जिसकी तसदीक हदीस से होती है जिस में नबी ﷺ ने फरमाया है: मेरे पैरोकार ७३ गुटों में बट जायेंगे, जिन में से केवल एक ही गुट जन्नत में जायेगा बाक़ी सभी जहन्नम में जायेंगे, और इस जन्नत में जाने वाले गुट की निशानियां बतायी कि जो «مَاتَا عَلَيْهِ وَأَحْسَبُ» “मेरे और मेरे सहाबा के रास्ते पर चलने वाला होगा।” (अबू दाऊद, किताबुस-सुन्न: बाब शरह अस-सुन्न: नं० ४५९६, तिर्मिजी, किताबुल ईमान, बाब माजाअ फी इफतराक हाजेहिल-उम्म:)

^२ यानी जिस जानवर को शिकार करते वक़्त, या कुर्बानी, या जिन्ह करते वक़्त अल्लाह का नाम लिया जाये उसे खा लो, अगर वे उन जानवरों में से हों जिन को खाने की इजाजत है, इसका मतलब यह हुआ कि जिस जानवर पर जानबूझ कर अल्लाह का नाम न लिया जाये, वे हलाल और पाक नहीं हैं। आप ﷺ ने फरमाया: «سَمُوا عَلَيْهِمْ وَكَلُوا» (सहीह बुखारी बाब जबीहतुल-आराब नं० ५५०७) तुम अल्लाह का नाम लेकर खा लो, शक की हालत में यह छूट है, इसका

११९. और तुम्हारे लिये कौन सी बात इस का सबब हो सकती है कि तुम ऐसे जानवरों में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो? अगरचे अल्लाह (तआला) ने उन सभी जानवरों की तफसील बता दी है जिन को तुम पर हराम किया गया है, लेकिन वह भी जब तुम को बहुत जरूरत पड़ जाये (तो जायेज है) और यह तय बात है कि बहुत से इंसान अपने ग़लत इरादों पर बिना किसी सुवत के भटकाते हैं, इस में कोई शक़ नहीं कि अल्लाह (तआला) ज़्यादाती करने वालों को अच्छी तरह जानता है।

१२०. तुम खुले और छिपे गुनाहों को छोड़ दो, बेशक़ जो गुनाह कमाते हैं वे अपने गुनाह करने का बदला करीब में ही दिये जायेंगे।

१२१. और उसे न खाओ जिस जानवर पर (जिन्ह के वक्त) अल्लाह का नाम न लिया गया हो और यह (कर्म) फ़िस्क का है, और शैतान अपने दोस्तों को वसवसा देते हैं ताकि वह तुम से झगड़ा करें और अगर तुम ने उनकी इताअत की तो तुम बेशक़ मुशिरक़ हो जाओगे।

१२२. और ऐसा इंसान जो पहले मुर्दा रहा फिर हम ने उसे ज़िन्दा कर दिया और उस के लिये नूर बना दिया जिस से लोगों में चलता है क्या उस के समान हो सकता है जो अधेरो में हो जिन से निकल न सकता हो? ऐसे ही काफ़िरो

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ
وَقَدْ فَضَّلَ لَكُمْ مَا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا
مَا اضْطُررْتُمْ بِهِ وَإِنَّ كَثِيرًا لَيُخَالِفُونَ بِأَهْوَاهِهِمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ ﴿١١٩﴾

وَذُرُوا ظَاهِرَهُمْ وَأَخْطِرُوا خَلْفَهُمْ وَإِنَّ الْإِنسَانَ لِرَبِّهِ
الْأَعْمَى سِجْدُونَ ﴿١٢٠﴾

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ
لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لِكُفْرًا إِلَىٰ آلِهِ هُوَمٌ
لِيَجَادِلْكُمْ وَإِنْ أَكْفَرْتُمْ عَنْهُمْ لِيُكْفِرْكُمْ ﴿١٢١﴾

أَوْ هُمْ كَانُوا صَبِيحًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا
يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ
لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنْهَا كَذَلِكَ نُزِيلُ لِّلْكَافِرِينَ

यह मतलब नहीं कि हर तरह के जानवरों का मांस बिस्मिल्लाह पढ़ लेने से जायेज हो जायेगा, इस से ज़्यादा से ज़्यादा यह साबित होता है कि मुसलमानों की मंढियों और दूकानों पर मिलने वाला गोश्त हलाल है, अगर किसी को शक़ और शुब्हा हो तो वह खाते वक्त बिस्मिल्लाह पढ़ ले।

1 यानी जानबूझ कर अल्लाह का नाम जिस जानवर पर न लिया गया हो उसका खाना फ़िस्क और नाजायज़ है। हज़रत इब्ने अब्बास (رضي الله عنهما) ने इस के यही माने बयान किये हैं, वह कहते हैं कि «जो भूल जाये उसे नाफ़रमान नहीं कहते हैं।»

2 इस आयत में अल्लाह तआला ने काफ़िर को मृतक (मरा हुआ) और ईमानवालों को ज़िन्दा

(अधर्मियों) के लिये जो वे अमल करते हैं सुशोभित (मुजय्यन) बना दिये गये हैं।

१२३. और इसी तरह हम ने हर बस्ती के बड़े मुजरिमों को साजिश रचने के लिये बनाया ताकि उस में साजिश रचे और वह अपने खिलाफ ही साजिश रचते हैं और इस का संवेदन (इदराक) नहीं कर पाते।

१२४. और जब उन के पास कोई आयत आई तो उन्होंने कहा कि हम कभी यकीन नहीं करेंगे जब तक हमें भी उसी के बराबर न दी जाये जो अल्लाह के रसूलों को दी गई, अल्लाह अच्छी तरह जानता है कि वह अपना रिसालत कहां रखे, जल्द ही जो गुनाह किये हैं उन्हें अल्लाह के पास से ज़लील होना है और जो साजिश करते रहे उस का बदला बहुत बड़ा अजाब है।

१२५. जिन को अल्लाह सच्चा रास्ता दिखाना चाहता है उस के सीने को इस्लाम (दीन) के लिये खोल देता है और जिसे गुमराह करना चाहता है उस के सीने को और तंग कर देता है जैसे कि वह आसमान में चढ़ रहा हो,^१ इसी तरह अल्लाह उनको नापाक बना देता है जो ईमान नहीं रखते।

مَا كَانُوا يَمْلِكُونَ ﴿١٢٢﴾

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكْبَرًا مُّجْرِمِيهَا
لِيَسْكَرُوا فِيهَا وَمَا يَسْكُرُونَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ
وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ حَتَّى
تُؤْتِيَنَا مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ إِنَّهُمْ أَعْلَمُ
حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ
أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ
بِمَا كَانُوا يَسْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾

فَمَنْ يُؤَدِّ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ
لِلْإِسْلَامِ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ يُضِلَّهُ يَجْعَلْ
صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصْعَقُ فِي السَّمَاءِ
كَذَلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢٥﴾

कहा है, इसलिए कि काफिर कुफ्र की जिल्लत के अंधेरे में भटकता फिरता है और उस से निकल ही नहीं पाता जिसका नतीजा मौत और तबाही है और ईमानवाले का दिल अल्लाह पर ईमान से जिन्दा रहता है, जिस से उसकी जिन्दगी के रास्ते नूरानी हो जाते हैं।

^१ यानी यह फ़ैसला करना कि किस को नबी बनाया जाये? यह तो अल्लाह का काम है क्योंकि वही हर बात की अहमियत और फ़ज़ीलत को जानता है और उसे ही मालूम है कि कौन इस पद का हकदार है? मन्का का कोई चौधरी और धनवान या हज़रत अब्दुल्लाह और हज़रत आभिना का यतीम बेटा?

^२ यानी जिस तरह ताकत लगाकर आसमान पर चढ़ना नामुमकिन है, उसी तरह से जिस इंसान के सीने को अल्लाह तआला तंग कर दे, उस में तौहीद (एकेश्वरवाद) और ईमान का दाखिल होना मुमकिन नहीं है उस के सिवाय कि अल्लाह ही उसका सीना इस के लिए खोल दे।

१२६. यह तुम्हारे रब का सीधा रास्ता है, हम ने आयतों का तफसीली बयान उस क्रौम के लिये कर दिया है जो नसीहत हासिल करते हैं।

وَهَذَا صِرَاطٌ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۚ قَدْ فَضَّلْنَا الْآيَاتِ
لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

१२७. इन्हीं के लिये उन के रब के यहाँ सलामती का घर है और वही उन के अच्छे अमल के सबब उन का दोस्त है।

لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٧﴾

१२८. और जिस दिन (अल्लाह) इन सभी को जमा करेगा (और कहेगा) हे जिन्नो के गिरोह! तुम ने इन्सानों में से बहुत अपना लिया और इंसान में से उन के दोस्त कहेंगे, हे हमारे रब हमें आपस में फायदा पहुँचा, और हम तेरे मुकर्रर वक़्त को जो तूने हमारे लिये मुकर्रर किया जा पहुँचे, (अल्लाह) कहेगा कि तुम्हारी जगह जहन्नम है जिस में तुम हमेशा रहोगे, लेकिन जो अल्लाह चाहे' वशक तुम्हारा रब हिक्मत वाला, इल्म वाला है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَيْعًا ۚ يَبْعَثُ الرَّجُلَ
قَدِ اسْتَلَمْتُمْ مِنَ الْإِنْسِ ۚ وَقَالَ أَوْلِيَاهُمْ
مِنَ الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْتَنْبَحْ بَعْضَنَا بَعْضًا وَبَلَّغْنَا
أَجَلَنَا الَّذِي أَجَلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ
خَالِدِينَ فِيهَا ۚ إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ
حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٢٨﴾

१२९. इसी तरह हम जालिमों को उन के बुरे काम के सबब आपस में दोस्त बना देते हैं।

وَكَذَلِكَ نُؤَيِّنُ بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٢٩﴾

१३०. हे जिन्नो और इन्सानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल नहीं आये, जो तुम्हारे सामने हमारी आयतें पढ़ते रहे हों और तुम्हें इस (क्यामत) के दिन का सामना करने से बाख़बर करते रहे हों। वे कहेंगे कि हम अपने

يَبْعَثُ الرَّجُلَ مِنَ الْإِنْسِ لِيَأْتِيَكُمْ رَسُولًا مِّنكُمْ
يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُزَكِّرُوكُمْ لِقاءَ يَوْمِكُمْ
هَذَا ۚ قَالُوا شَهِدْنَا عَلَىٰ أَنْفُسِنَا وَغَرَّبْنَاهُمْ

1 और अल्लाह का फ़ैसला काफ़िरो के लिए जहन्नम का दायमी अजाब ही है जिस को उस ने लगातार कुरआन करीम में वाजेह तौर से बयान किया है, छूट से किसी तरह का ग़लत अनुमान नहीं लगा लेना चाहिए क्योंकि यह छूट अल्लाह तआला ने खुद अपनी मर्जी से बयान किया है, इसे किसी दूसरी चीज़ के साथ शामिल नहीं किया जा सकता, इसलिए कि अगर वह काफ़िरो को जहन्नम से निकालना चाहे तो निकाल सकता है, इस से वह मजबूर भी नहीं है और न कोई दूसरा रोकने वाला है। (ऐसरूक्तफ़ासीर)

2 रिसालत और मुद्बूत के बारे में जिन्नात इंसानों के अधीन (ताबे) हैं, क्योंकि जिन्नातो में नबी नहीं आये हैं, लेकिन रसूलों के संदेशवाहक और खुशख़बरी पहुँचाने वाले जिन्नातो में होते रहे हैं, जो अपनी क्रौम के जिन्नो को अल्लाह की ओर दावत देते रहे हैं।

खिलाफ गवाह है, और दुनियावी जिन्दगी ने उन्हें धोखा दिया और अपने खिलाफ गवाह होंगे कि वह काफिर थे।^१

१३१. (रसूल भेजे गये) क्योंकि तुम्हारा रब किसी गांव वाले को किसी जुल्म के सबब तबाह नहीं करता जब कि उस के रहने वाले गाफिल हों।

१३२. और सब के लिये उस के अमल के ऐतबार से कई दर्जे हैं और तुम्हारा रब उन अमल से गाफिल नहीं जो वह कर रहे हैं।

१३३. और तुम्हारा रब बेनियाज रहम करने वाला है, अगर चाहे तो तुम्हारा नाश कर दे और तुम्हारे बाद जिसे चाहे तुम्हारी जगह पर रख दे जैसे तुम्हें एक दूसरी क्रौम के वंश में पैदा किया है।

१३४. जिस चीज के लिए तुम को वादा दिया जाता है, वह बेशक आने वाली चीज है, और तुम मजबूर नहीं कर सकते।^२

१३५. आप कहिये कि ऐ मेरी क्रौम! तुम अपनी जगह पर अपना अमल करते रहो, मैं भी (अपनी जगह पर) कर रहा हूँ,^३ तुम्हें जल्द ही इल्म हो जायेगा कि किस का अंजाम इस दुनिया के बाद (अच्छा) होता है, बेशक जालिम कभी भी कामयाब नहीं होंगे।

الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ﴿١٣١﴾

ذَٰلِكَ أَن لَّمْ يَكُن مِّنكَ الْقَرْبَىٰ يَطْمَئِنُّ وَآهْلَهَا غِلْوُونَ ﴿١٣٢﴾

وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ عَمَلًا وَمَا رَّبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٣﴾

وَرَبُّكَ الْعَزِيزُ ذُو الرِّحْمَةِ إِنَّ يَسَّآ يُدَبِّبُكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ مِن بَعْدِكُمْ مَا يَشَاءُ كَمَا أَنشَأَكُم مِّن ذُرِّيَّةٍ قَوْمِ الْآخَرِينَ ﴿١٣٤﴾

إِن مَّا تَعِدُونَ لَأَبَىٰ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿١٣٥﴾

قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَائِلٌ ۗ فَسَوْفَ نَعْلَمُ مَن تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۗ إِنَّهُ لَا يُغْلِبُ الظَّالِمُونَ ﴿١٣٦﴾

^१ क़्यामत के मैदान में मुशरिफ़ अनेक पैतरे बदलेंगे, कभी अपने मुशरिफ़ होने का इंकार करेंगे (अल-अंआम, २३) और कभी कुबूल किये बिना चारा नहीं होगा, जैसे यहाँ उनकी कुबूलियत का बयान किया गया है।

^२ इस से मुराद क़्यामत (प्रलय) है। "और तुम मजबूर नहीं कर सकते" का मतलब है कि वह तुम्हें फिर से जिन्दा करने की ताकत रखता है, चाहे तुम मिट्टी के कण-कण में मिल जाओ।

^३ यह कुफ़ और नाफ़रमानी पर बाकी रहने का हुक्म नहीं है, बल्कि सख़्त तबीह है, जैसा कि अगले लफ़्जों से बाज़ेह है।

१३६. और अल्लाह ने जो खेती और जानवर पैदा किये, उन्होंने उन में से कुछ हिस्सा अल्लाह का बना दिया और अपने विचारानुसार कहा कि यह अल्लाह का है और यह हमारे देवताओं का,^१ फिर जो हमारे देवताओं का (हिस्सा) है वह अल्लाह तक नहीं पहुँचता और जो अल्लाह का है वह उन के देवताओं तक पहुँचता है,^२ वे बुरा फैसला दे रहे हैं।

१३७. और इसी तरह बहुत से मुशिरकों (मूर्तिपूजकों) के लिये उन के देवताओं ने उनको तवाह करने और उन पर उन के दीन को मुश्तबः बनाने के लिये उनकी औलाद के कत्ल को सुसज्जित बना दिया है,^३ और अगर अल्लाह चाहता तो वह यह नहीं करते, इसलिए आप इन को और इन के मनघड़त को छोड़ दीजिये।

१३८. और उन्होंने कहा कि यह जानवर और खेती हराम है, इसे वही खायेगा अपने इरादे से हम जिसे चाहेंगे और कुछ जानवर की पीठ (यानी सवारी) हराम है^४ और कुछ जानवर पर (जिब्ह करते वक़्त) अल्लाह का नाम नहीं लेते अल्लाह

وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ
نَاصِبًا قَالُوا هَذَا لِلَّهِ بِرِزْقِهِمْ وَهَذَا
لِلَّذِينَ كَفَرُوا فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ
إِلَى اللَّهِ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَى
شُرَكَائِهِمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿۱۳۶﴾

وَكَذَلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ مِنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ
أَوْلَادِهِمْ شُرَكَائِهِمْ لِيُرِدُّوهُمْ وَيَلْبِسُوا
عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ
فَقَدْ رَهْمُوا وَمَا يُفْتَرُونَ ﴿۱۳۷﴾

وَقَالُوا هَذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَا يَطْعَمُهَا
إِلَّا مَن نَّشَاءُ بِرِزْقِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ طَهُورُهَا
وَأَنْعَامٌ لَا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً
عَلَيْهِ سَمِجْرٌ لَهُمْ بِهَا كَانُوا يُفْتَرُونَ ﴿۱۳۸﴾

^१ इस आयत में मूर्तिपूजकों के उस ईमान और अमल की मिसाल पेश की जा रही है जो उन्होंने खुद गढ़ लिये थे, वह खेती की पैदावार और जानवरों में से कुछ हिस्सा अल्लाह के लिए और कुछ हिस्सा झूठ और मनगढ़न्त देवताओं के नाम पर निकाल देते थे, अल्लाह के हिस्से को मेहमानों, फकीरों और रिश्तेदारों पर खर्च करते, फिर अगर मूर्तियों के हिस्से में अनुमानित पैदावार न होती तो अल्लाह के हिस्से को निकाल कर उस में शामिल कर लेते और अगर उन के खिलाफ घटता तो मूर्तियों के हिस्से से न निकालते और कहते कि अल्लाह तो बेनियाज़ है।

^२ अगर मूर्तियों के मुकर्ररः हिस्सा में कमी होती तो वह अल्लाह के मुकर्ररः हिस्सा में से लेकर मूर्तियों की ज़रूरतों पर खर्च कर लेते, यानी अल्लाह के सामने मूर्तियों का डर उन के दिलों में ज्यादा था जिस को आज के मूर्तिपूजकों के अमल से भी देखा जा सकता है।

^३ यह इशारा उन की बच्चियों (बालिकाओं) को जिन्दा गाड़ देने या मूर्तियों की कुर्बानी के तौर पर नज़र चढ़ाने की तरफ है।

^४ यह दूसरी झकल है कि वह कई तरह के जानवरों को मूर्तियों के नाम पर आज़ाद कर देते जिन से सामान ढोने या सवारी का काम नहीं लेते जैसे कि «बहीरः» और «साएवः» वगैरह का तफ़सीली बयान पहले आ चुका है।

पर भूठ बांधने के लिये, अल्लाह उन्हें उन के इल्जाम का बदला जल्द देगा।

१३९. और उन्होंने कहा कि इन जानवरों के गर्भ में जो है वह खास तौर से हमारे मर्दों के लिये है और हमारी वीवियों पर हराम है, और अगर मुर्दा हो तो सभी उस में हिस्सेदार हैं^१ वह (अल्लाह) उन के इस कौल का बदला जल्द देगा, बेशक वह हिस्मत वाला जानने वाला है।

१४०. वे नुकसान में पड़ गये जिन्होंने विना इल्म के बेवकूफी के सबब अपनी औलाद को क़त्ल किया और अल्लाह ने जो रोज़ी अता की उसे हराम कर लिया अल्लाह पर भूठ बांधने के सबब, वे गुमराह हो गये और सच्चे रास्ते पर नहीं रह गये।

१४१. वही है जिसने लताओं और विन लताओं के बागात पैदा किये^२ और खजूर और खेतियां जिन के जायके कई तरह के हैं, और जैतून और अनार एक तरह और अनेक तरह। जब फल लायें तो तुम इन को खाओ और उसकी कटाई के

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ
لِّذُنُوبِنَا وَمَعْزَرَةٌ عَلَىٰ أَرْجَائِنَا ۚ وَإِنْ يَكُن مَّيْمَةً
فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ ۖ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ إِنَّهُ
حَكِيمٌ عَلِيمٌ ﴿١٣٩﴾

قَدْ حَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَهْوًا يُعْتَدِرُ
عَلَيْهِمْ وَيَحْرَمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ
قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ﴿١٤٠﴾

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ وَعَظَيْرَ
مَّعْرُوشَاتٍ وَالزَّرْعَ وَالنَّخْلَ وَالرُّبْعَ مُخْتَلِفًا أَكْثَرًا
وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ

^१ यह तीसरी शकल है कि वह जिन्हें करते वक्त सिर्फ मूर्तियों का नाम लेते, अल्लाह का नाम नहीं लेते, कुछ ने इस का मतलब यह लिया है कि इन जानवरों पर सवार होकर वह "हज" के लिये नहीं जाते थे, जो भी हो यह सब उनकी खुद गढ़ी बातें थी जिन्हें वह अल्लाह का हुक्म साधित करना चाहते थे।

^२ यह एक दूसरी शकल है कि जो जानवर वह अपनी मूर्तियों के नाम सदका कर देते थे, इन में से कुछ के बारे में कहते थे कि इन का दूध और उन के गर्भ से जो पैदा होने वाला जिन्दा बच्चा हमारे मर्दों के लिए हलाल है, औरतों के लिए हराम है, हाँ अगर बच्चा मरा हुआ पैदा होता है तो उस के खाने में औरत और मर्द बराबर हैं।

^३ مُعْرُوشَات (मअरूशात) का मस्वर (अर्थ) है, जिसका मतलब बुलन्द करना और ऊपर उठाने के हैं, मुराद कुछ पेड़ों की लतायें हैं जो ऊपर (छप्पर छतों वगैरह पर) चढ़ाई जाती हैं, जैसे अंगूर और कुछ तरकारियों की लतायें हैं, लेकिन कुछ लतायें जो ऊपर नहीं चढ़ाई जाती हैं, बल्कि धरती पर ही फलती-फलती हैं, जैसे खरबूजे और तरबूजे वगैरह की लतायें हैं।

दिन उसका हक अदा करो¹ और इस्त्राफ न करो, बेशक अल्लाह इस्त्राफ करने वालों से मुहंभवत नहीं करता।²

१४२. और जानवरों में कुछ बोझ लादने के लायक और कुछ जमीन से लगे हुये बनाया। खाओ, जो तुम्हें अल्लाह ने दिया है और बैतान के क्रदमों के निशान की पैरवी न करो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

१४३. वह आठ तरह के जोड़े (बनाये)³ भेड़ में दो, बकरी में दो,⁴ आप कहिये कि अल्लाह ने दोनों के नर को हराम किया है या दोनों की मादा को? या उस को जो दोनों मादा के गर्भाशय (रिहम) में शामिल है? मुझे इल्म के साथ बताओ अगर सच्चे हो।

१४४. और ऊँट में दो और गाय में दो, आप कहिए कि क्या अल्लाह ने दोनों मादा को या दोनों नरों को हराम किया है? या उसको जिस पर दोनों मादा के रिहम शामिल हो। क्या तुम उस वक़्त मौजूद थे जब अल्लाह ने इस का

كُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ
وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ (141)

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةٌ وَفَرَسَانٌ كَلُوا مِنَّا رِزْقًا
اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ
عَدُوٌّ مُّبِينٌ (142)

ثَلَاثِيَّةٌ ذَوَاجٌ مِنَ الصَّانِ الثَّنَيْنِ وَمِنَ
السَّعِيرِ الثَّنَيْنِ قُلْ أَلِدَّكَرَيْنِ حَرَامٍ
الْأُنثَيَيْنِ أَمَا اسْتَمَلَّتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ
تُشَوِّقِي بَعْلَهُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ (143)

وَمِنَ الْإِبِلِ الثَّنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ الثَّنَيْنِ قُلْ
أَلِدَّكَرَيْنِ حَرَامٍ أَلِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَا اسْتَمَلَّتْ
عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ

¹ यानी जब खेत से अनाज काट कर साफ कर लो, और पेड़ से फल तोड़ लो, तो उसका हक अदा करो, इस से मुराद कुछ आलिमों के नजदीक अपनी भर्जी से सदका है, कुछ के नजदीक जरूरी सदका या दसवां हिस्सा (तराई की जमीन की पैदावार हो) या वीसवां हिस्सा (अगर जमीन कुरें, ट्यूब वेल या नहर के पानी से सींची जाती हो)

² इसलिए इस्त्राफ किसी भी चीज में अच्छा नहीं है, दान-पुण्य (सदका-खैरात) के काम में या दूसरे किसी काम में, हर काम में औसत और हुदूद के भीतर तारकत के ऐतबार से जायेज और अच्छा है और इसी पर जोर दिया गया है।

³ यानी उसी अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किये। इस आयत में अजवाज लपज का इस्तेमाल हुआ है, जो 'जौज' का बहुवचन है, एक ही जाति के नर और मादा को 'जौज' कहते हैं और उन दोनों में से सब को भी 'जौज' कह लिया जाता है, क्योंकि हए एक-दूसरे का 'जौज' होता है। कुरआन में इस जगह पर भी अजवाज हर एक के लिए ही इस्तेमाल हुआ है यानी आठ जानवर अल्लाह ने पैदा किये जो आपस में एक-दूसरे के जोड़े हैं, यह नहीं कि आठ जोड़े पैदा किये, इस तरह से उनकी तादाद १६ हो जायेगी जो आयत के अगले हिस्से के ऐतबार से ठीक नहीं है।

⁴ यह आठ की तकमील है, और मुराद दो तरह से नर और मादा है, यानी भेड़ से नर और मादा और बकरी से नर-मादा पैदा किये। (भेड़ में दुम्बा भी शामिल है।)

हुकम किया? फिर उस से ज्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा इल्जाम लगाये ताकि बिना किसी इल्म लोगों को गुमराह बना दे। वेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।

१४५. आप कहिये कि मुझे जो हुकम किया गया है उस में किसी खाने वाले के लिये कोई खाना हराम नहीं पाता, लेकिन यह कि वह मुर्दा हो या बहता खून या सूअर का गोश्त, इसलिये कि वह बिल्कुल नापाक है या जो शिक का कारण हो जिस पर अल्लाह के सिवा दूसरों का नाम पुकारा गया हो,² फिर जो कोई मजबूर हो, जब कि वागी और हृद से बाहर जाने वाला न हो तो अल्लाह बख्शने वाला रहम करने वाला है।

१४६. और हम ने यहूदियों पर नाखून वाले जानवर हराम कर दिये और गाय व बकरी की चर्बी उन पर हराम कर दी, लेकिन जो दोनों की पीठ और आंतों में हो या जो किसी हड्डी से लिपटी हो, हम ने यह उन के (दीन) बगावत का बदला दिया और हम सच्चे हैं।

१४७. अगर वह आप को भुठलायें तो कहिये कि तुम्हारे रब (अल्लाह) की रहमत बहुत बसीअ है, और उस का अजाब मुजरिमों से फेरा नहीं जाता।

إِذْ وَصَّيْنَا اللَّهُ بِهَدًى فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ اتَّخَذَى
عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ اللَّهَ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٤﴾

كُلَّ لَأَجِدُ فِي مَا أُوْحَىٰ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ طَائِفَةٍ
يَقْتَضِيهِ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَسْفُوحًا
أَوْ لَحْمَ خِنْزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ
اللَّهِ بِهِ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٤٥﴾

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفْرٍ
وَمِنَ الْبَقَرِ وَالغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهَا
إِلَّا مَا حَلَلَتْ ظُهُورُهُمْ أَوْ الْحَوَايَا أَوْ مَا
اخْتَلَطَ بِهَا مِنْ ذَلِكَ جَدِّدْنَا لَهُمْ جَنَّتَهُمْ
وَأِنَّا لَصَدِيقُونَ ﴿١٤٦﴾

فَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ رَبِّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ
وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ ﴿١٤٧﴾

¹ यानी यही सब से बड़ा जुल्म है, हदीस में आता है कि नबी ﷺ ने फरमाया कि मैंने अब्द बिन सुहैयी को जहन्नम में आंत खींचते हुए देखा, उस ने सब से पहले मूर्तियों के नाम पर बसीला और 'हाम' वगैरह जानवर छोड़ने का सिलसिला शुरू किया। (सहीह बुखारी, तफसीर सूर: मायेद., मुस्लिम किताबुल जन्नत:।)

² इस आयत में जिन चार हराम चीजों का बयान है, उसका सूर: बकर: की आयत-१७३ की तफसीर में तफसील से बयान हो चुका है।

१४८. मुझिरक कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो हम और हमारे बुजुर्ग शिर्क नहीं करते, न किसी चीज को हराम बनाते, इसी तरह इन से पहले के लोग झूठलाये यहाँ तक कि हमारा अजाब चख लिये, कहिये कि क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है तो उसे हमारे लिये निकालो (जाहिर करो), तुम कल्पना (गुमान) की पैरवी करते हो और सिर्फ अंदाजा लगाते हो।

१४९. आप कहिये कि फिर अल्लाह ही की दलील प्रभावशाली (गालिब) है, इसलिए अगर वह चाहे तो तुम सभी को हिदायत दे सकता है।

१५०. आप कहिये कि अपने उन गवाहों को लाओ जो यह गवाही दें कि अल्लाह ने इसे हराम किया है, फिर अगर वह गवाही दें तो आप उन के साथ गवाही न दें और उनकी मनमानी इरादों की इत्तेबा न करें और जिन्होंने हमारी आयतों को झूठा कहा और जो आखिरत पर यकीन नहीं करते और (दूसरों को) अपने रब की तरह मानते हैं।

१५१. आप कहिये कि आओ मैं पढ़कर सुनाऊँ कि तुम को तुम्हारे रब ने किस से मना किया है, वह ये कि उस के साथ किसी चीज का शिर्क न करो, और माँ-बाप के साथ एहसान करो,^१ और अपनी औलाद को गरीबी के सबब

سَيَقُولُ الَّذِينَ اشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اشْرَكْنَا وَلَا آبَاءُنَا وَلَا حَمَمًا مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذُاقُوا بَأْسَاءَ قُلِّ هَلْ عِنْدَكُمْ مِنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا لِمَنِ اتَّبَعُونَ إِلَّا الظَّنُّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ ﴿١٤٨﴾

قُلْ قَدِيتُ الْحَبَّةَ الْبَالِغَةَ قَلَّ شَاءَ لَهْدِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٤٩﴾

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَ كُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَزَمَ هَذَا فَإِنْ شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدُ مَعَهُمْ وَلَا تَشْوَغْ أَمْوَالُ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ ﴿١٥٠﴾

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَزَمَ رَبِّكُمْ عَلَيْكُمْ إِلَّا تَشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ مِنْ أَمْلَاقٍ نَحْنُ نَرُزِّقُكُمْ وَإِنَّا لَهُمْ

^१ यानी हराम वह नहीं है जिन को तुम ने बिना दीनी सुवूत के सिर्फ अपने झूठे शक और बुद्धा की बिना पर हराम बना दिया है, बल्कि हराम तो वह चीज है जिस को तुम्हारे रब ने हराम किया है, क्योंकि तुम्हारा जन्मदाता तो तुम्हारा रब है और हर चीज का उसी को ही इल्म है, इसलिए उसी को यह हक है कि वह जिस चीज को चाहे हलाल (उचित) और जिस चीज को चाहे हराम (अनुचित) करे, इसलिए मैं तुम्हें उन बातों की तफसीली जानकारी देता हूँ, जिनकी तंबीह तुम्हारे रब ने की है।

^२ अल्लाह तआला के एक होने और उस के हुक्म की पैरवी करने के बावजूद यहाँ भी (और कुरआन में दूसरे मुकाम पर भी) माँ-बाप के साथ दया-भाव (हुस्ने सुलूक) करने का हुक्म

कत्ल न करो, हम तुम को और उन को रोजी अता करते हैं। और जाहिर व छुपी फ़हासी के करीब न जाओ और उस जान को जिस से अल्लाह ने मना किया है कत्ल न करो, लेकिन वैधानिक (शरई) कारण से,^१ तुम को उस ने इसी का हुक्म दिया है ताकि तुम समझो।

१५२. और यतीम के माल के करीब न जाओ, लेकिन बहुत अच्छे ढंग से यहाँ तक कि वह बुलूगत को पहुँचे,^२ और इसाफ़ के साथ नाप और तौल पूरा करो,^३ हम किसी पर उस की ताक़त से ज्यादा बोझ नहीं रखते, और जब बालो तो इसाफ़ करो, अगरचें वह करीबी रिश्तेदार हों, और अल्लाह से किया वादा पूरा करो, उस ने तुम लोगों को इसी का हुक्म दिया है ताकि तुम याद रखो।

وَلَا تَقْرُبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَّنَ
وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ
ذَلِكُمْ وَضَعْنَا لَكُمْ لَعْنَةً لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۱۵۱

وَلَا تَقْرُبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ
حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا بِالْكَيْلِ وَالْوَيْزَانِ
بِالْقِسْطِ ۚ لَا تُكْفِفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۚ وَإِذَا
قُلْتُمْ فَأَعِدُوا ۚ وَتَوَكَّلْ عَلَىٰ رَبِّكَ وَبِعْدِ اللَّهِ
أَوْفُوا ۚ ذَلِكُمْ وَضَعْنَا لَكُمْ لَعْنَةً لَعَلَّكُمْ تَتَذَكَّرُونَ ۱۵۲

दिया गया है, जिसने यह बाजेह होता है कि रब के हुक्म की पैरवी के बावजूद माँ-बाप के हुक्म की पैरवी की वड़ी फ़जीलत है, अगर किसी ने इस हुक्म (माँ-बाप के हुक्म की पैरवी और उन से हुस्ने सुलूक करने) की ज़रूरतों को पूरा नहीं किया तो वह अल्लाह के हुक्म की पैरवी भी नहीं कर सकता और उस में भी नाकाम रहेगा।

^१ जर्हिलियत के दौर का यह बहुत ख़राब काम आज भी परिवार नियोजन के शकल में मौजूद है और पूरी दुनिया में इस के प्रचार-प्रसार का काम हो रहा है, अल्लाह तआला इससे महफूज रखे।

^२ यानी बदले के तौर पर न सिर्फ़ जायज़ है, बल्कि अगर मरने वाले के रिश्तेदार माफ़ न करें तो यह कत्ल बहुत ज़रूरी हो जाता है।

^३ जिस यतीम का संरक्षण (किफ़ालत) तुम्हारे हक़ में आये, उस के लिए अच्छा सोचना तुम्हारा फ़र्ज़ है, इसकी भलाई के लिए ज़रूरी है कि अगर उस के पास माल है यानी विरासत में से उस का हिस्सा मिला है चाहे नगद हो या ज़मीन-जायदाद के रूप में, अगर उस वक़्त वह उसको महफूज रखने में कामयाब न हों तो उस के माल की उस वक़्त तक बग़ैर किसी लालच से हिफ़ाज़त की जाये जब तक कि वह बुलूगत को न पहुँच जाये, यह न हो कि उस के बालिग़ होने से पहले उसके माल, ज़मीन और जायदाद को ठिकाने लगा दिया जाये।

^४ नाप-तौल में कमी करना, सेंते वक़्त तो पूरा नाप-तौल से लेना, लेकिन देते वक़्त ऐसा न करना, बल्कि डंडी मारकर दूसरों को कम देना, यह बहुत नीच और सभ्यता (तहज़ीब) से गिरी हुई बात है, जनाब शुएब की कौम में यही रोग था, जो उन की तयाही का सचब बना।

१५३. और यही^१ मेरा सीधा रास्ता है^२ इसलिए उसी पर चलो और दूसरे रास्ते पर न चलो नहीं तो तुम्हें उस के रास्ते से जुदा कर देंगे, उस ने तुम को इसी का हुक्म दिया है ताकि तुम महफूज रहो।

१५४. फिर हम ने (रसूल) मूसा को किताब दी, उस पर नेमत पूरी करने के लिये जिस ने नेक अमल किया और हर चीज की तफसील और हिदायत और रहमत के लिये^३ ताकि वे अपने रब से मिलने पर यक्रीन करें।

१५५. और यह (पाक कुरआन) एक मुबारक किताब है जिसे हम ने उतारा, इसलिए तुम इस की इत्तेबा करो ताकि तुम पर रहम (दया) किया जाये।

१५६. ताकि यह न कहो कि हम से पहले दो क़ौमों पर किताब (तौरात और इंजील) उतारी गई और हम उनकी तालीम से अंजान (अनभिज्ञ) रहे।

وَأَنَّ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا
السَّبِيلَ فَتَنَازِقُوا بِكُمْ عَنْ سَبِيلِهِ ذَلِكُمْ
وَصَلَّوْكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٣﴾

ثُمَّ أَنْزَلْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ
وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً
لَعَلَّهُمْ يَلْتَقَاءُ رَبَّهُمْ يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٤﴾

وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ
وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٥٥﴾

أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَنْزَلَ الْكِتَابَ عَلَى طَائِفَتَيْنِ
مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسِهِمْ لَغَافِلِينَ ﴿١٥٦﴾

^१ 'यह' से मुराद कुरआन मजीद है या दीन इस्लाम या वे हुक्म जो फ़ज़ीलत से इस आयत में बयान किये गये हैं, और वह है तौहीद, मरने के बाद का नतीजा और रिसालत, और यही दीन इस्लाम के तीन बुनियाद हैं, जिसकी धुरी पर पूरे इस्लामी कानून घूमते हैं, इसलिए इस का जो भी मतलब लिया जाये, एक ही मतलब है।

^२ 'सीधे मार्ग' को एकबचन (मुफ़रद) के रूप में बयान किया गया है, क्योंकि अल्लाह का या कुरआन का, और रसूलुल्लाह ﷺ का रास्ता एक ही है एक से ज़्यादा नहीं, इसलिए पैरवी सिर्फ़ उसी एक रास्ते की करना है किसी दूसरे की नहीं, यही इस्लामी उम्मत की एकता और अखण्डता की बुनियाद है जिस से हट कर यह उम्मत कई गुटों में बंट गयी है।

^३ यह पाक कुरआन का अपना अंदाज़ है कि जिसे कई जगहों पर दोहराया गया है कि जहाँ पाक कुरआन की चर्चा होती है वहाँ तौरात की, और जहाँ तौरात की चर्चा हो वहाँ पाक कुरआन की भी चर्चा कर दी जाती है।

१५७. या तुम यह न कहो कि अगर हम पर किताब नाज़िल होती तो हम उन से ज्यादा सच्चे रास्ते पर होते तो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से वाज़ेह दलील और हिदायत और रहमत आ चुकी है, फिर उस से ज्यादा पापी कौन है जिस ने अल्लाह की आयतों को झूठा कहा और उन से फिर गया, हम सख्त अज़ाब अपनी आयतों से फिरने के सबब उन्हें दोगे जो फेर रहे हैं।

१५८. वह फ़रिश्तों के आने का इंतज़ार कर रहे हैं या अपने रब (अल्लाह) के आने का या आप के रब की कुछ निशानी आने का? जिस दिन तुम्हारे रब की तरफ से निशानी आ जायेगी किसी नपस को उसका ईमान काम न देगा जिस ने उस से पहले ईमान क़बूल न किया हो या अपने ईमान में कोई नेक काम न किया हो, आप कहिये कि तुम इंतज़ार करो हम (भी) इंतज़ार कर रहे हैं।

१५९. बेशक जिन्होंने अपना दीन अलग-अलग कर दिया और अनेक धार्मिक सम्प्रदाय (फ़िर्का) बन गये^१ आप का उन से कोई रिश्ता नहीं, उनका फ़ैसला अल्लाह के पास है फिर उन्हें उस से आगाह करेगा जो वह करते रहे हैं।

१६०. जो इंसान अच्छा काम करेगा उसे उस के दस गुना मिलेंगे, और जो बुरे काम करेगा उसे उस के बराबर सज़ा मिलेगी और उन लोगों पर ज़ुल्म न होगा।

أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا
أَهْدَىٰ مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِنْ
رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّمَنِ أَنْظَمَهُمْ
مَنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَقَ عَنْهَا سَنَجُوزِي
الَّذِينَ يَصِدُّونَ عَنِ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ
بِمَا كَانُوا يَصِدُّونَ ﴿١٥٧﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ
رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ
آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ
سَبْقًا قَبْلَ أَنْ تَكُونَ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا ذَلِكُمْ
انْتَضَرُوا وَإِنَّا مُنْتَظِرُونَ ﴿١٥٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ فَزَعُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِعَابًا لَسَتْ
مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ؕ إِنَّكَ أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ
يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿١٥٩﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرٌ مِّثْلَهَا وَمَنْ
جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٦٠﴾

^१ यह ईमान न लाने वालों और तौबा न करने वालों के लिए तंबीह है, और बाख़बर किया जा रहा है। क़ुरआन करीम में इसी बारे में सूर: मोहम्मद-१८, सूर: मोमिन-८४ और ८५ में बयान किया गया है।

^२ इस से कुछ लोग यहूदी और इसाई मुराद लेते हैं, जो कई गुटों में बँटे हुए थे, कुछ मूर्तिपूजकों को लेते हैं जिन में कुछ फ़रिश्तों की, कुछ सितारों की, कुछ कई मूर्तियों की पूजा करते थे, लेकिन यह विषय आम है जिन में काफ़िर और मूर्तिपूजकों सहित वे सभी लोग भी शामिल हैं जो अल्लाह के दीन और रसूल ﷺ के रास्ते को छोड़ कर दूसरे दीन अपना कर दूसरे रास्ते अपनाकर इख़्तेलाफ़ और फूट का रास्ता अपनाते हैं। (फ़तहूल कदीर)

१६१. आप कह दीजिए कि मुझे मेरे रब ने एक सीधा रास्ता बता दिया है कि वह एक मुस्तहकम दीन है जो तरीका है इब्राहीम का, जो अल्लाह की तरफ यकसू थे और वह मुशिरकों में न थे।

१६२. आप कह दीजिए कि बेशक मेरी नमाज, और मेरी सभी इबादतें और मेरी जिन्दगी और मौत सारी दुनिया के रब अल्लाह के लिए है।

१६३. उसका कोई शरीक नहीं, मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मैं पहला हूँ जिन्होंने सब से पहले उसे माना।

१६४. आप कहिये कि क्या मैं अल्लाह के सिवाये किसी दूसरे रब की खोज करूँ जब कि वही हर चीज का रब है^१ और कोई नफस जो भी कमायेगा उसी पर होगा कोई किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा, फिर तुम्हें तुम्हारे रब की तरफ दोबारा जाना है, वह तुम्हारे इच्छितलाफों के बारे में तुम्हें बतायेगा।

१६५. और उसी ने तुम को धरती में खलीफा बनाया और एक के पदों को दूसरे पर बढ़ाया ताकि जो कुछ तुम्हें अता किया उस में तुम्हारा इम्तेहान ले, बेशक तुम्हारा रब जल्द अजाब देने वाला है, और बेशक वह बख्शने वाला रहम करने वाला है।

قُلْ إِنِّي هَدَيْتَنِي رَبِّيَ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ
دِينًا قَدِيمًا إِنَّمَا رَبُّهُمُ حَقِيقًا وَمَا كَانَ
مِنَ الشُّرَكِيِّينَ ﴿١٦١﴾

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي
لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٢﴾

لَا شَرِيكَ لَهُ ۚ وَبَدَّلَ إِلَهُ أَزْوَاجَ
الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَآنَا أَوَّلُ
الْمُسْلِمِينَ ﴿١٦٣﴾

قُلْ أَعَدَّ اللَّهُ لِكُلِّ شَرِّ قَوْمٍ
وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ
وِزْرَ أُخْرَى ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم
بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿١٦٤﴾

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ خَلِيفَتَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ
فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِيَبْلُوكُمْ فِي مَا أَنشَأْتُمْ
إِنَّ رَبَّكَ سَرِيعُ الْعِقَابِ ۚ وَإِنَّكَ لَعَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿١٦٥﴾

^१ यहाँ रब से मुराद माबूद बनाना है जिसका मूर्तिपूजक इन्कार करते रहे हैं, और जो उस के रब होने की माँग है, लेकिन मूर्तिपूजक उस के रब होने को तो मानते थे और उस में किसी को भी साझीदार नहीं ठहराते थे, लेकिन माबूद होने में साझीदार ठहराते थे।

सूरतुल आराफ-७

سُورَةُ الْأَعْرَافِ

सूर: अल-आराफ मक्का में उतरी और इस की दो सौ छः आयतें हैं और चौबीस रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अलिफ. लाम. मीम. साद।

२. यह एक किताब है जो आप की तरफ उतारी गई ताकि इस के जरिये बाखबर करने से आप के दिल में तंगी पैदा न हो और ईमान वालों के लिये शिक्षा है।

३. जो (धर्म विधान) आप के रब की तरफ से उतारा गया, उसकी इत्तेवा करो और उस के सिवाये दूसरे औलिया की इत्तेवा न करो तुम लोग बहुत कम नसीहत हासिल करते हो।

४. और बहुत सी बस्तियों को हम ने बर्बाद कर दिया और उन पर हमारा अजाब रात के वक़्त पहुँचा या ऐसी हालत में कि वे दोपहर के वक़्त आराम कर रहे थे।^१

५. तो जब उन के पास हमारा अजाब आया तो उन की पुकार सिर्फ यही रही कि उन्होंने कहा कि हम ही जालिम (पापी) रहे हैं।

६. फिर हम उन से जरूर पूछ करेंगे जिन के पास पैगाम भेजा गया और पैगम्बरों से जरूर पूछ करेंगे।^२

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

التَّص ①

كُتِبَ أَنْزِلَ إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِي صَدْرِكَ حَرَجٌ

مِنْهُ لِيُنذِرَ بِهِ وَيُذَكِّرَ لِلْمُؤْمِنِينَ ②

أَتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا مِن

دُونِهِ أَوْلِيَاءَ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ③

وَكَمْ مِّن قَرْيَةٍ أَفْلَكْنَهَا فَبَاءَ مَا بَأْسُنَا

بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ④

فَمَا كَانَ دَعْوَاهُمْ إِذْ جَاءَهُمْ بَأْسُنَا إِلَّا أَنْ

قَالُوا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ⑤

فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ

الْمُرْسَلِينَ ⑥

^१ कलिमा "दोपहर के वक़्त खाना खा के आराम करने को कहते हैं।" मतलब यह है कि हमारा अजाब अचानक ऐसे वक़्त में आया जब वे वैफिक्री से अपने बिस्तारों में आराम कर रहे थे।

^२ उम्मतों से यह पूछा जायेगा कि क्या तुम्हारे पास पैगम्बर (संदेशवाहक) आये थे? उन्होंने

७. फिर हम उन के सामने इल्म के साथ वयान कर देंगे और हम बेखबर नहीं थे।

८. और उस दिन ठीक वजन होगा फिर जिस का पलड़ा भारी होगा वही कामयाब होंगे।

९. और जिस का पलड़ा हल्का होगा, तो ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुकसान कर लिया, इस वजह से कि हमारी आयतों के साथ जुल्म करते रहे थे।

१०. और हम ने तुम को ज़मीन में रहने का स्थान दिया और उस में तुम्हारे लिये सामाने जिन्दगी बनाया, तुम बहुत कम शुक्रिया अदा करते हो।

११. और हम ने तुम को पैदा किया, फिर तुम्हारी शकल बनाई, फिर हम ने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो सभी ने सज्दा किया सिवाय इब्लीस के, कि वह सज्दा करने वालों में शामिल नहीं हुआ।

१२. (अल्लाह ने) कहा कि जब मैंने तुम्हें सज्दा करने का हुक्म दिया तो किस सबब ने तुम्हें सज्दा करने से रोक दिया, उस ने कहा मैं इस से अच्छा हूँ, तूने मुझे आग से पैदा किया और इसे मिट्टी से पैदा किया है।

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَمَا كُنَّا غَائِبِينَ ﴿٧﴾

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ ۖ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ

فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٨﴾

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا

أَنفُسَهُمْ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾

وَلَقَدْ مَكَّنَّاكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ

فِيهَا مَعَايِشَ ۖ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿١٠﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَاكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنَاكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ

اسْجُدُوا لِلْإِنسَانِ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ لَمْ يَكُن

مِنَ السَّاجِدِينَ ﴿١١﴾

قَالَ مَا مَنَعَكَ إِلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ۖ قَالَ أَنَا

خَيْرٌ مِّنْهُ خَلَقْتَنِي مِن نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ

مِن طِينٍ ﴿١٢﴾

हमारा पैगाम पहुँचाया था? वहाँ वे जवाब देंगे, «हाँ, हे अल्लाह ! तेरे पैगम्बर तो बेशक हमारे पास आये थे लेकिन हमारी ही बदनसीबी थी कि हम ने उन की फिक्र नहीं की।» और पैगम्बरों से पूछा जायेगा कि तुम ने हमारा पैगाम अपनी उम्मत को पहुँचा दिये और उन्होंने उस के मुक़ाबले में क्या अमल किये? पैगम्बर इस सवाल का जवाब देंगे जिस का तफसीली बयान पाक क़ुरआन में कई जगहों पर मौजूद है।

1 इन आयतों में अमलों के तौलने का बयान किया गया है, जो क़ायामत के दिन होगा, जिसे पाक क़ुरआन में कई जगहों पर और हदीसों में बयान किया गया है।

2 शैतान का यह उज्र उस के गुनाह से भी ज़्यादा गुनाह बन गया, एक तो उसका यह सोचना कि अच्छे को अपने से नीचे के इज़्जत व एहतेराम का हुक्म नहीं दिया जा सकता, ग़लत है।

१३. (अल्लाह तआला ने) हुक्म दिया कि तू आकाश^१ से उतर, तुझे कोई हक नहीं कि आकाश में रह के घमंड करे, इसलिए निकल, बेशक तू अपमानितों (जलीलों) में से है।^२

१४. उस (शैतान) ने कहा कि मुझे (क्यामत तक) मौका अता कीजिए जब लोग दोबारा जिन्दा किये जायेंगे।

१५. (अल्लाह ने) कहा कि तुझे मौका अता कर दिया गया।

१६. उस (शैतान) ने कहा तेरे मुझ को धिक्कारने के सबब मैं उनके लिये तेरे सीधे रास्ते पर बैठूंगा।

१७. फिर उन के सामने और पीछे से और दायें और बायें से हमला करूंगा^३ और आप इन में ज्यादातर को झुकगुजार नहीं पायेंगे।

१८. (अल्लाह ने) कहा, तू इस से (यहाँ से) अपमानित (जलील व ख़वार) होकर निकल जा, जो उन में से तेरी इतेबा करेगा मैं तुम सभी से जहन्नम को जरूर भर दूंगा।

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصَّاغِرِينَ ﴿١٣﴾

قَالَ أَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿١٤﴾

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿١٥﴾

قَالَ فِيمَا أُغْوِيَنَّهُمْ لَا قُدْرَانَ لَهُمْ صِرَاطِكَ السُّوْفِيِّمِ ﴿١٦﴾

ثُمَّ لَا يَأْتِيهِمْ مِنَ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ ﴿١٧﴾

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُومًا مَقْدُورًا لَكِنَّ تَبَعَكَ مِنْهُمْ لَأَمَلُنَّ بِهِمْ مِنْكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٨﴾

इसलिए कि असल मामला अल्लाह का हुक्म है, उस के हुक्म के आगे अच्छा और कम अच्छा की बात करना अल्लाह के हुक्म की नाफरमानी है। दूसरे उस ने अपने अच्छे होने की यह दलील दी कि मैं आग से हूँ और यह मिट्टी से है, परन्तु उस ने उस फ़ज़ीलत को अनदेखी कर दिया जो हज़रत आदम को हासिल हुई, यानी अल्लाह तआला ने खुद अपने हाथ से बनाया और अपनी तरफ से रूह फूँकी, इस फ़ज़ीलत के बराबर दुनिया की कोई इज्जत हो सकती है?

^१ ज्यादातर तफ़सीर निगारों ने "इस से" का माने यह किया है कि उस से यानी जन्नत से निकल जाओ और कुछ ने "इस से" का माने यह लिया है कि आसमान से नीचे उतरो। आदरणीय अनुवादक ने यही दूसरा माने लेकर उसका अनुवाद "आसमान से उतरो" किया है।

^२ अल्लाह के हुक्म के सामने घमण्ड करने वाला इज्जत व एहतेराम का नहीं बल्कि बेइज्जती और जिल्लत का हक़दार होता है।

^३ मतलब यह है कि हर सबाब और सुनाह के रास्ते पर मैं बैठूंगा, अच्छे काम से उन्हें रोकूंगा और सुनाह को उन के सामने अच्छा और ख़ूबसूरत बना कर पेश करूंगा और उनको अपनाने के लिए शिक्षा दूंगा।

१९. और (हम ने कहा कि) हे आदम! तुम और तुम्हारी वीवी जन्नत में रहो, फिर जिस जगह से मर्जी हो खाओ, और इस पेड़ के करीब न जाओ नहीं तो जालिम हो जाओगे !¹

२०. फिर शैतान ने दोनों में बसवसा² पैदा किया ताकि दोनों के लिये उन की शर्मगाहों को जाहिर कर दे, और कहा कि तुम दोनों के रब ने तुम्हें इस पेड़ से इसीलिए रोका है कि तुम दोनों फरिश्ता हो जाओगे या हमेशा रहने वाले हो जाओगे ।

२१. उस ने उन दोनों के सामने क्रसम खाई कि मैं तुम दोनों का शुभचिन्तक (खैरख्वाह) है ।

२२. इस तरह धोखे से दोनों को नीचे लाया, जैसे ही दोनों ने पेड़ का जायेक लिया दोनों के लिये उन के गुप्तांग जाहिर हो गये, और वे अपने ऊपर जन्नत के पत्ते चिपकाने लगे और उन के रब ने दोनों को पुकारा, कि क्या मैंने तुम दोनों को इस पेड़ से नहीं रोका था? और तुम से नहीं कहा कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है !³

२३. दोनों ने कहा, हमारे रब! हम ने अपने ऊपर जुल्म कर लिया, और अगर तूने हमें माफ नहीं किया और हम पर रहम न किया तो हम नुकसान उठाने वालों में से हो जायेंगे ।

२४. (अल्लाह तआला ने) कहा, तुम नीचे उतरो, तुम आपस में दुश्मन हो और तुम्हें एक वक्त तक धरती में रहना और फायदेमंद होना है ।

وَيَا آدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾

قُوَسُوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوَاتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَنْ تَكُونَا مَلَكَتَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْغَالِيْنَ ﴿٢٠﴾

وَقَاسَهُمَا رَبِّي لَكُمَا لَيْسَ النَّصِيْحِيْنَ ﴿٢١﴾

فَدَلَّهُمَا بِعُرُوْدِهِ فَلَئِمَا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوَاتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْضِفْنَ عَلَيْهِمَا مِنْ ذُرِّي الْجَنَّةِ ۖ وَنَادَاهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكَ الشَّجَرَةِ وَأَقُلْتُ لَكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٢٢﴾

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا ۖ وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِيْنَ ﴿٢٣﴾

قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۖ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ ﴿٢٤﴾

¹ यानी सिर्फ इस पेड़ के सिवाये जहाँ से और जितना चाहो खाओ, इस पेड़ का फल खाने पर रूकावट सिर्फ इम्तेहान के तौर पर थी ।

² बसवसा का मतलब है धीमी आवाज, और वह बुरी बात जो शैतान दिल में पैदा करता है ।

³ यानी इस तबीह के बाद भी तुम शैतान के बसवसों (शर्का) के शिकार हो गये, इस से मालूम हुआ कि शैतान के जाल भी बड़े खूबसूरत होते हैं, और उन से बचने के लिए बड़ी कोशिश और हर वक्त होशियार रहने की जरूरत है ।

२५. कहा कि तुम उसी में जिन्दगी गुजारोगे और उसी में मरोगे और उसी से निकाले जाओगे।

२६. हे आदम के बेटो! हम ने तुम्हें ऐसा कपड़ा अता किया जो तुम्हारे गुप्तांग (शर्मगाह) को ढाँके और जीनत दे,¹ और परहेजगारी का कपड़ा ही अच्छा है यह अल्लाह की निशानी है ताकि वह याद करे।

२७. हे आदम के बेटो! तुम्हें शैतान वहका न दे जैसे तुम्हारे माता-पिता को जन्नत से निकलवा दिया, वह उन का कपड़ा उतरवा दिया ताकि उन्हें उन के गुप्तांग दिखाये, बेशक वह और उस की जाति तुम्हें ऐसी जगह से देखती है कि तुम उन्हें देख नहीं सकते,² हम ने शैतानों को उन लोगों का दोस्त बना दिया जो ईमान (विश्वास)³ नहीं रखते।

२८. और वे जब कोई बुराई करते हैं तो कहते हैं कि हम ने अपने पुरखों को इसी पर पाया, और अल्लाह ने हमें इस का हुक्म दिया है। आप कह दीजिये कि अल्लाह बुराई का हुक्म नहीं देता, क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात करते हो जिसे तुम नहीं जानते।

قَالَ فِيمَا تَجَوُّونَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَفِيهَا تُخْرَجُونَ ﴿٢٥﴾

يَبْنِي أَدَمَ قَدْ أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ لِبَاسًا يُؤَدِّي سَوَاتِمَهُ وَرِيثًا وَلِبَاسَ التَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ۗ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿٢٦﴾

يَبْنِي أَدَمَ لَا يَقْبِضْتُمْ الشَّيْطَانَ كَمَا أَخْرَجَ إِبْرَاهِيمَ مِنَ الْجَنَّةِ يَتَّبِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوَاتِمَهُمَا إِنَّهُ يُرِيَكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيَاطِينَ آدِلِمَاءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٧﴾

وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا وَجَدْنَا عَلَيْهَا آبَاءَنَا وَاللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا قُلْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ اتَّقُوا اللَّهَ عَلَىٰ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

¹ जिसमें वह हिस्से हैं जिनको ढाँकना जरूरी है, जैसे गुप्तांग और रिसा, वह कपड़ा है जो जीनत और खूबसूरती के लिये पहना जाये, मानो पहला जरूरी कपड़ा है और दूसरा जीनत और इजाफा के लिये होता है, अल्लाह ने इन दोनों तरह के लिये जरिया पैदा कर दिये।

² इस में ईमानवालों को शैतान और उसकी जाति यानी उस के चेलों से होशियार किया गया है कि कहीं तुम्हारी लापरवाही और सुस्ती से फायदा उठा कर तुम्हें भी उसी तरह इम्तेहान और बुरे रास्ते में न डाल दे, जिस तरह तुम्हारे मा-बाप (आदम और हव्वा) को उस ने जन्नत से निकलवाया और जन्नत के कपड़े उतरवा दिये, खास तौर से जब वह नजर भी नहीं आते तो उन से बचने का तरीका और फिक्र ज्यादा होनी चाहिए।

³ यानी जिन में ईमान नहीं है वही उस के दोस्त हैं, और खास तौर से उस के शिकार होते हैं, फिर भी वह ईमानवालों पर भी डोरे डालता रहता है, कुछ और नहीं तो छुपा चिर्क (दिखावे के नेक काम) और खुले चिर्क (मिश्रणवाद) में लीन कर देता है, और इस तरह वह उनको ईमान के पूँजी से महरूम कर देता है।

२९. आप (रसूल) कहिये कि मेरे रब ने मुझे इंसान का हुक्म दिया है,¹ और हर सज्दा के वक्त अपने चेहरे को सीधी दिशा में कर लो और उस (अल्लाह) के लिये दीन को खालिस कर के उसे पुकारो, उस ने जैसे तुम को शुरू में पैदा किया उसी तरह फिर पैदा हागे।

३०. और उस (अल्लाह) ने कुछ को हिदायत दी और कुछ गुमराही के मुस्तहिक बन गये, उन्होंने अल्लाह के सिवाय शैतानों (असुरों) को अपना दोस्त बना लिया, और सोचते हैं कि वह हिदायत पर है।

३१. हे आदम के बेटों! मस्जिद में जाने के हर वक्त अपना कपड़ा अपना लो² और खाओ-पिओ और इस्राफ न करो, बेशक जो इस्राफ करते हैं अल्लाह उन से मुहब्बत नहीं करता।³

३२. (हे रसूल!) आप कहिये कि उस जीनत को किस ने हराम किया है जिसे अल्लाह ने अपने बन्दों के लिये पैदा किया है, और पाक रिजक को, आप कहिये कि वह दुनियावी जिन्दगी में उन लोगों के लिये है जिन्होंने यक्रीन किया (और) खास कर के क्रयामत के दिन में उन्हीं के लिये है, हम आयतों का इसी तरह तफसीली बयान कर रहे हैं उन के लिये जो इल्म रखते हैं।

قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ ﴿٢٩﴾

فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ ۗ إِنَّهُمْ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٣٠﴾

يٰٓبَنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ ۗ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ كَذٰلِكَ نَفِّضُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُعْلَمُونَ ﴿٣٢﴾

¹ इंसान का मतलब कुछ ने قاله الله لا ياني तौहीद (एकेवरवाद) लिया है।

² आयत में जीनत से मुराद कपड़ा है, इस का सम्बन्ध (तआल्लुक) भी मूर्तिपूजकों के नंगे तवाफ करने से है, इसलिए उन्हें कहा गया कि कपड़ा पहन के अल्लाह की इबादत करो।

³ इस्राफ (हद् से पार होना) किसी भी वारे में यहाँ तक कि खाने और पीने में भी ठीक नहीं माना गया है, एक हदीस में नबी ﷺ ने फरमाया: «जो चाहो खाओ, जो चाहो पहनो, लेकिन दो बातों से बचो, इस्राफ और घमण्ड से।» सहीह बुखारी, किताबुल लिबास, बाब क्रौल अल्लाह तआला कुल मन हरम जीनतल्लाह ...) कुछ सलफ का कौल है: «كُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا» इस आधी आयत में सारी बीमारियों की चिकित्सा (इलाज) जमा कर दी गयी। (इब्ने कसीर)

३३. आप कहिये कि मेरे रब ने सभी खुले और छिपे अशिष्ट (फुहृश) बातों को हराम किया है और पाप और नाहक जुल्म करने को और अल्लाह के साथ उसे शिकं करने को जिसकी उस ने कोई दलील नहीं उतारी, और अल्लाह पर नामालूम बातें बोलने को ।

३४. और हर उम्मत का एक मुकर्रर वक़्त है फिर जब उन का मुकर्रर वक़्त आ जाये तो न एक पल की देर होगी न सबेर ।

३५. हे आदम के बेटो ! अगर तुम्हारे पास तुम में से मेरे रसूल (दूत) आयें जो तुम्हारे सामने मेरी आयतों को बयान करें, तो जो तक्वा बरतेगा और सुधार कर लेगा उन पर न कोई डर होगा और न दुःखी होंगे ।

३६. और जिन्होंने हमारी आयतों को नकारा, और उन से तकब्बुर किया वही जहन्नमी हैं, वही उस में हमेशा रहेंगे ।

३७. उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन है जिस ने अल्लाह पर झूठ वाधा या उस की आयतों को झूठला दिया, इन को किताब से मुकर्रर हिस्सा पहुँचेगा, यहाँ तक कि जब उन के पास हमारे फरिस्ते उन की जान निकालने आयेंगे तो कहेंगे कि वह कहाँ है जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाये पुकारते रहे? वे कहेंगे हम से खो गये और अपने काफिर (अधर्मी) होने को खुद कुबूल कर लेंगे ।

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّي الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا
وَمَا بَطَّنَ ۖ وَالْإِثْمَ وَالنَّبِيَّ بِعَدْرِ الْغَيْبِ ۚ وَأَنْ
تُشْرِكُوا بِإِلَهِهِ مَا لَهُ يُتْرَلُ بِهِ سُلْطَانًا ۚ وَأَنْ
تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٣﴾

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ
لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً ۚ وَلَا يَسْتَقْبِلُونَ ﴿٣٤﴾

يَبْقَىٰ أَدَمٌ ۖ إِنَّمَا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَتْلُونَ
عَلَيْكُمْ آيَاتِي ۚ فَمَنْ أَتَىٰ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٣٥﴾

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٣٦﴾

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ ۚ أُولَٰئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ
مِّنَ الْكِتَابِ ۚ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُمْ رَسُولُنَا
يَنبَغَوْا عَنْهُ ۚ قَالُوا إِنَّا مَّا كُنْتُمْ تَدْعُونَ
مِن دُونِ اللَّهِ ۚ قَالُوا صَدَقُوا عَنَّا ۚ وَشَهِدُوا
عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ ﴿٣٧﴾

। गुनाह अल्लाह की नाफरमानी का नाम है, और एक हदीस में नबी ﷺ ने फरमाया: "गुनाह वह है जो तेरे सीने में खटके और लोगों को इसकी खबर हो जाने पर तू बुरा समझे ।" (सहीह मुस्लिम किताबुल जिर) और कुछ लोग कहते हैं कि गुनाह वह है जिस का असर करने वाले तक महद हो और نبی (बगय) वह है कि इस का असर दूसरों तक भी पहुँचे, यहाँ बगय के साथ नाहक का मायेना, विला बजह जुल्म और सक्ती जैसे लोगों के हकों का हनन (गसव) करना, किसी का माल छीन लेना, विला बजह मारना-पीटना और बुरा-भला और सख्त बात कह कर वेद्जहत करना बगैर है ।

३८. वह (अल्लाह) कहेगा कि जिन्नों और इन्सानों के उन गिरोहों के साथ जो तुम से पहले गुजर गये^१ जहन्नम में दाखिल हो जाओ, जब कोई गिरोह दाखिल होगा तो दूसरे को लानत करेगा, यहाँ तक कि जब उस (जहन्नम) में सभी जमा हो जायेंगे तो उनके पिछले अपने अगलों के वारे में कहेंगे कि हे हमारे रब! इन्होंने ही हम को गुमराह बनाया तू इन्हें जहन्नम की दुगनी सजा दे, (अल्लाह) कहेगा कि सब के लिये दुगना है लेकिन तुम नहीं जानते ।

३९. और अगले अपने पिछलों से कहेंगे कि हम पर तुम्हारी कोई फजीलत नहीं, इसलिए तुम भी अपने अमल के सबब अजाब का मजा लो ।

४०. बेशक जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से तकब्बुर किया, उन के लिये आसमान के दरवाजे नहीं खोले जायेंगे, और वे जन्नत में दाखिल नहीं हो पायेंगे जब तक ऊँट सुई के नाके में दाखिल न हो जाये^२ और हम पापियों को इसी तरह बदला देते हैं ।

४१. उन के लिए जहन्नम की आग का विस्तार होगा और उन के ऊपर उसी का ओढ़ना होगा, और हम जालिमों को ऐसी ही सजा देते हैं ।

४२. और जो ईमान लाये और नेक काम किये, हम किसी जान को उसकी ताकत के ऐतवार से ही उत्तरदायी (जवाबदेह) बनाते हैं, यही जन्नती हैं यही उस में हमेशा रहेंगे ।

४३. और हम उन के दिलों के कपट को दूर कर देंगे, उन के नीचे नदियाँ बहती होंगी, और वह कहेंगे, अल्लाह के लिये सभी तारीफ है

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ
الْبَشَرِ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ
لَعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّى إِذَا دَاخَلُوا فِيهَا
جَمِيعًا قَالَتْ أَخْرِطْنَاهُمْ لَأُدْخِلَنَّهُمْ فِيهَا
أَخْلَانَا فَأَتَيْتُمُ عَذَابَهَا ضِعْفًا مِنَ النَّارِ
قَالَ لَنْ يَكُنَّ لِصُغْفٍ وَلَكِنْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

وَقَالَتْ أُولَئِكَ لَئِنْ كُنَّا نَسْمَعُ لَكُمْ عَلِيمًا
فَضِيلٌ قَدْ وَفَّوْنَا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٣٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا
لَا نَفْتَحُ لَهُمُ أَبْوَابَ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ
الْجَنَّةَ حَتَّى يُلَاحِظَ فِي سَفَرِهِمُ الرِّجَالُ
وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ ﴿٤٠﴾

لَهُمْ مِنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِنْ قُوهِمْ
غَوَاشٍ وَكَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ
نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ
هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٤٢﴾

وَنُزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَيْبٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا

^१ उमम, उम्मत का बहुवचन (जमा) है, मुराद वह कौम और उम्मत है, जो कुफ्र और विरोध (मुखालिफत) और शिक व झुठलाने में एक तरह होंगें ।

^२ यह नामुमकिन बात है, जिस तरह ऊँट का सुई के छेद से पार होना नामुमकिन है उसी तरह काफिरों का जन्नत में दाखिल होना नामुमकिन है ।

जिसने हमें इस के रास्ते पर लगाया, अगर वह हिदायत न कराता तो हम खुद रास्ते पर नहीं लगते, सचमुच हमारे रब के रसूल हक के साथ आये, और उन से पुकार कर कहा जायेगा कि अपने अमल के बदले तुम इस जन्नत के हकदार बना दिये गये।

४४. और जन्नती जहन्नमियों को पुकारेंगे कि हम ने अपने रब के वादे को जो हमें दिया सच पाया, तो क्या तुम से तुम्हारे रब ने जो वादा किया सच पाया? वे कहेंगे हाँ, फिर एक पुकारने वाला उन के बीच पुकारेगा कि अल्लाह की लानत ज़ालिमों पर है।

४५. जो अपने रब के रास्ते से रोकना और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं और वे आखिरत का भी इन्कार करते हैं।

४६. और उन दोनों के बीच एक पर्दा होगा और "आराफ़" पर कुछ मर्द होंगे जो हर एक को उन के निशानों से पहचान लेंगे, और जन्नतियों को पुकारेंगे कि तुम पर सलामती हो, वह उस (जन्नत) में दाखिल नहीं हो पाये

لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلًا رَبَّنَا بِالْحَقِّ وَتُؤْتُونَ أَنْ تَكُلُمُوا الْجِنَّةَ أَوْ رَشِئُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

وَتَأَذَى أَصْحَابِ الْجِنَّةِ أَصْحَابِ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبَّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُمْ مَا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ فَإِذْ كَانَ مُؤَيَّدًا بَيْنَهُمْ أَنْ أَعْنَهُ اللَّهُ عَلَى الظَّالِمِينَ ﴿٤٤﴾

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ لَكِفْرُونَ ﴿٤٥﴾

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ وَتَأَذُوا أَصْحَابِ الْجِنَّةِ أَنْ سَلَّمَ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ ﴿٤٦﴾

¹ यही बात नबी ﷺ ने बद्र के मौक़ा पर जब काफ़िर मारे गये और उन की लाशें एक कुएँ में फेंक दी गयीं, उन्हें मुखातव करते हुए कही: जिस पर हज़रत उमर (رضي الله عنه) ने कहा: "आप ऐसे लोगों को मुखातव कर रहे हैं जो मर चुके हैं।" आप ﷺ ने फरमाया: "अल्लाह की क़सम! मैं उन्हें जो कुछ कह रहा हूँ, वह तुम से अधिक सुन रहे हैं, लेकिन अब वे जवाब देने की ताक़त नहीं रखते।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्नत, बाब अरज मक़दिल मय्यित मिनल जन्नते अबिन्नारे और बुखारी किताबुल मगाज़ी, बाब कत्ले अबी जहल)

² "इन दोनों के बीच" से मुराद जन्नत व जहन्नम के बीच या ईमानवालों और काफ़िरो के बीच है, हिजाब (حجاب) (आड़ या पट) से दीवार मुराद है जिस का बयान सूर: हदीद में है।

³ यह कौन होंगे? उन के निर्धारण के लिए व्याख्याकारों (मुफ़सिरो) में बहुत इत्तिहाम है, ज़्यादातर मुफ़सिरो का ख्याल है कि यह वे लोग होंगे जिन के सवाब और गुनाह बराबर होंगे, उन की नेकी जहन्नम में जाने से और गुनाह जन्नत में जाने से रोकेंगे, और इस तरह अल्लाह की तरफ से आखिरी फैसला होने तक वह अधर में लटके होंगे।

होगे और उसकी उम्मीद रखते होंगे ।

४७. और जब उन की आंखें जहन्नमियों पर पड़ेगी तो कहेंगे कि हमारे रब हमें जालिमों के साथ न करना ।

४८. और आराफ वाले कुछ लोगों को जिन्हें उन के निशानों से पहचानते होंगे पुकारेंगे कि तुम्हारी जमाअत और तुम्हारा घमण्ड तुम्हारे काम नहीं आया ।

४९. क्या यही है जिन के बारे में तुम जोर देकर क्रसम खा रहे थे कि इन (जन्नतियों) पर अल्लाह की रहमत' नहीं होगी (उन से कहा जायेगा) कि जन्नत में दाखिल हो जाओ तुम पर कोई डर नहीं और न तुम गमगीन होंगे ।

५०. और जहन्नम के साथी जन्नत के साथियों को पुकारेंगे कि हम पर कुछ पानी डाल दो या अल्लाह ने तुम्हें जो रिज़क अता किया है उस में से कुछ दो, वे कहेंगे अल्लाह ने दोनों को काफ़िरों के लिये हराम कर दिया है ।

५१. जिन्होंने अपने दीन को मनोरंजन और खेल बना लिया और दुनियावी जिन्दगी ने जिन को फुसला दिया, इसलिए आज हम उन्हें भूल जायेंगे, जैसे वह इस दिन को भूल गये और हमारी आयतों को नकारते रहे ।

५२. और हम ने उनके पास एक किताब इल्म पर मबनी तफसीली बयान के साथ भेज दिया है जो हिदायत और रहमत है उन के लिये जो ईमान रखते हैं ।

५३. क्या वह इस के आखिरी नतीजा का इतेजाar कर रहे हैं? जिस दिन इस का आखिरी नतीजा

وَإِذْ صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ
قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤٧﴾

وَتَأَذَىٰ أَصْحَابِ الْأَعْرَافِ رَجُلًا يَعْرِفُهُمْ
بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَىٰ عَنْكُمْ جِجَعُكُمْ وَمَا
كُنْتُمْ تَسْتَدِيرُونَ ﴿٤٨﴾

أَهْوَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَبَالُهُمُ اللَّهُ
بِرَحْمَةٍ ۖ أَدْخَلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفَ عَلَيْهِمْ
وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ﴿٤٩﴾

وَتَأَذَىٰ أَصْحَابِ النَّارِ أَصْحَابِ الْجَنَّةِ أَنْ يَفِيضُوا
عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ
اللَّهَ حَرَّمَهَا عَلَىٰ الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ هُجُوعًا وَوَعْدَهُمْ
الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۖ قَالِیَوْمَ نَسُفُهُمْ كَمَا نَسُوا
لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا ۖ وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا
يَجْحَدُونَ ﴿٥١﴾

وَلَقَدْ جَعَلْنَاهُمْ كِتَابِ فَصَلْنَاهُ عَلَىٰ عَلَيْهِمْ هُدًى
وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ ۚ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلَهُ

1 इस से भूराद ईमान वाले हैं जो दुनिया में गरीब, कंगाल, मजबूर और कमजोर तरह के लोग थे, जिन का मजाक बयान किये गये घमण्डी लोग उड़ाया करते थे और कहा करते थे कि अगर ये अल्लाह के प्यारे होते तो इन का दुनिया में यही हाल होता?

2 ताबील का मतलब है किसी चीज की हकीकत और नतीजा, यानी अल्लाह की किताब के जरिये

आ जायेगा, तो जिन लोगों ने इस से पहले उसे भुला दिया, वह कहेगे कि हमारे रब के रसूल हक ले कर आये, तो क्या कोई हमारा सिफारिशी है जो हमारे लिये सिफारिष कर दे? या हम दोबारा (दुनिया में) भेज दिये जाते तो उस के सिवाये अमल करते जो करते रहे, उन्होंने खुद को तुकसान में डाल दिया और जो बातें गढ़ते रहे उन से खो गई।

يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلٌ
رَبَّنَا بِالْحَقِّ فَهَلْ لَنَا مِنْ شُعَاءٍ فَيَسْخَرُوا
لَنَا أَوْ نُورَثُ فَمَتَعَلَّ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ
خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا
يَفْتَرُونَ ﴿٥٣﴾

५४. बेचक तुम्हारा रब अल्लाह (तआला) ही है जिस ने आसमानों और जमीन को छः दिन में बनाया, और फिर अर्ध (सिंहासन) पर मुस्तवी हो गया। वह रात को दिन से ऐसे छुपा देता है कि वह उसे तेज चाल से आ लेती है,² और सूरज व चाँद और सितारे को ताबे किया कि वे उसके मातहत हैं, सुन लो उसी की तखलीक और उसी का हुक्म है, सारे जहाँ का रब बहुत म्बारक है।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي
الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَبِيبَاتُ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ
وَالنَّجْمُومُ مَسْحَرَاتٍ بِأَمْرِهِ إِلَّا لَهُ الْخَلْقُ
وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٤﴾

वाद, तबीह और जन्नत व जहन्नम का बयान कर दिया था, लेकिन ये उस दुनिया का नतीजा अपनी आँखों से देखने के इतेजार में थे तो अब वह नतीजा उन के सामने आ गया।

¹ استواء (इस्तेवा) के मतलब हैं उच्च और स्थिर होना और सलफ ने बिना किसी दुनियावी मिसाल और बिना किसी तुलना (तबीह) के यही मतलब लिए हैं, यानी अल्लाह तआला अर्थ पर उच्च और स्थिर है, लेकिन किस तरह, किस हालत में, इसे हम बयान नहीं कर सकते न किसी तरह की तुलना या मिसाल ही पेश कर सकते हैं। नईम बिन हम्माद का कौल है: «जिस ने भी अल्लाह की तुलना या मिसाल किसी खल्क के साथ दिया उस ने भी कुफ्र किया, और जिस ने अल्लाह की, अपने बारे में बयान करदा बात का इंकार किया उस ने भी कुफ्र किया» और अल्लाह के बारे में उस की या उसके रसूल ﷺ के जरिये बयान की गई बात को बयान करना मिसाल नहीं है, इसलिए जो बातें अल्लाह तआला के बारे में शरीअत में बयान मिलते हैं और उन की तसदीक होती है उन पर बिना किसी दलील या दिना हालत जाने और बिना मिसाल के ईमान रखना जरूरी है। (इब्ने कसीर)

² حَبِيبَاتُ (हबीषन) का मतलब है बहुत तेज चाल से, और मतलब है कि एक के बाद दूसरा तुरंत आ जाता है, यानी दिन का नूर आता है तो रात का अंधेरा जल्द ही खत्म हो जाता है और रात आती है तो दिन का नूर खत्म हो जाता है और दूर और नजदीक अंधेरा छा जाता है।

५५. अपने रब को नम्रतापूर्वक (आजिजी) और चुपके से भी पुकारो, वह हद से बढ़ने वालों से सुहृदव्यत नहीं करता है।

५६. और धरती में सुधार के बाद विगाड़ न पैदा करो और डर व उम्मीद के साथ उस की इबादत करो, बेशक अल्लाह की रहमत नेक लोगों से करीब है।^१

५७. और वही अल्लाह है जो अपनी रहमत से पहले खुशखबरी के लिये हवायें भेजता है, यहाँ तक कि जब वह भारी बादलों को लाद कर लाती है तो हम उसे किसी सूखी धरती की ओर हाँक देते हैं, फिर उस से पानी की बारिश करते हैं फिर उस से हर तरह के फल निकालते हैं, हम इसी तरह मुर्दों को निकालेंगे ताकि तुम स्थूल करो।^२

५८. और पाक जमीन अपने रब के हुक्म से अपने पौधे उपजाती है, और खराब (जमीन) बहुत कम उपज लाती है, इसी तरह हम निशानियों को कई तरह से बयान करते हैं, उन लोगों के लिए जो शुक्रिया अदा करते हैं।

५९. हम ने नूह (عليه السلام) को उन की कौम के पास भेजा तो उन्होंने कहा, ऐ मेरी कौम! अल्लाह की इबादत करो उस के सिवाय कोई तुम्हारा माबूद नहीं, बेशक मैं तुम पर बड़े दिन के अजाब से डरता हूँ।

أُدْعُوا رَبَّكُمْ قَضْرًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٥٥﴾

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ حَتَّىٰ إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقِنَهُ يَسْكًا مِنِّيٍّ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ كَذَلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٥٧﴾

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِأَذْنِ رَبِّهِ وَالَّذِي خَبثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا تَكْدَامًا كَذَلِكَ نَصْرِفُ الْأَيُّتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ ﴿٥٨﴾

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنِّ إِلَهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿٥٩﴾

^१ इन आयतों में चार बातों की तालीम दी गयी है : १. अल्लाह (परमेश्वर) से रोकर और धीमी आवाज में दुआ की जाये, २. दुआ में ज्यादती न की जाये यानी अपने पद और ताकत से ज्यादा दुआ न की जाये, ३. सुधार के बाद फसाद न फैलाया जाये यानी अल्लाह के हुक्म की नाफरमानी कर के फसाद फैलाने में हिस्सा न लिया जाये, ४. उस के अजाब का डर भी दिल में हो और उस की रहमत की उम्मीद भी, इस तरह से दुआ करने वाले अच्छे इंसान हैं कि बेशक अल्लाह की रहमत उन के करीब है।

^२ जिस तरह से हम बारिश करके अक्सर मुर्दा जमीन में जिन्दगी पैदा कर देते हैं, और वह कई तरह के अनाज और फल पैदा करती है, उसी तरह क़्यामत के दिन सभी इंसानों को जो मिट्टी में मिल कर मिट्टी हो चुके होंगे, हम दोबारा जिन्दा करेंगे और फिर उन का फ़ैसला करेंगे।

६०. उन की क्रौम के सरदारों ने कहा कि हम आप को खुली गुमराही में देख रहे हैं।¹

६१. उन्होंने कहा ऐ मेरी क्रौम के लोगो! मैं गुमराह नहीं, लेकिन दुनिया के रब का रसूल हूँ।

६२. तुम्हें अपने रब का पैगाम पहुंचाता हूँ और तुम्हारी भलाई कर रहा हूँ, और अल्लाह की तरफ से वह इल्म रखता हूँ जो इल्म तुम नहीं रखते।

६३. क्या तुम्हें तअज्जुब है कि तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी क्रौम के एक मर्द पर कोई नसीहत की बात आई है ताकि तुम्हें खबर करे, और तुम तक्वा घरतो और ताकि तुम पर रहम की जाये।

६४. तो उन्होंने उन को झुठला दिया फिर हम ने नूह और उन के पैरोकारों को नाव में बचा लिया, और जो हमारी आयतें (मिशनियाँ) नहीं माने उन्हें डूबो दिया, बेशक वह एक अंधी क्रौम थी।

६५. और आद के पास उन के भाई (रसूल) हूद को भेजा? उन्होंने कहा, हे मेरी क्रौम! अल्लाह की इवादात करो, उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, क्या तुम डरते नहीं?

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرُكَ

فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٦٠﴾

قَالَ يَقَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلَالَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ

مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦١﴾

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَأَصْحِكُمْ وَأَعْلَمُ

مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

أَوْعَجِبْتُمْ أَنْ جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَى

رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَتَعْلَمُوا

تُرْحَمُونَ ﴿٦٣﴾

فَكَذَّبُوهُ فَأَنْجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلِكِ

وَأَعْرَفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا

قَوْمًا عَصِينَ ﴿٦٤﴾

وَإِلَى عَادِ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَقَوْمِ

اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِن إِلَهٍ غَيْرُهُ

أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٦٥﴾

¹ धिर्क (यानी मिश्रणवाद) इंसानी अबल को ऐसे विकार ग्रस्त (माउफ) कर देता है कि वह सीधे रास्ते को बुरा और बुरे को सीधा रास्ता समझने लगता है, रसूल नूह की क्रौम में भी यह भ्रम पैदा हुआ, रसूल नूह जो उन्हें तौहीद की ओर बुला रहे थे (अल्लाह की पनाह) वह उन्हें गुमराह दिख रहे थे।

² यह आद क्रौम पहले आद थे जिनका घर यमन की रेतीली पहाड़ियों में था और अपनी ताकत और कूबत में बेमिसाल थे, इनकी तरफ उन्हीं की जाति (क्रौम) के एक आदमी हजरत "हूद" रसूल बन कर आये।

६६. उन के कौम के काफिर प्रमुखों (सरदारों) ने कहा, हमें तुम बेवकूफ लग रहे हो, बेशक हम तुम को भूठों में से समझते हैं।

قَالَ الْمَلَائِكَةُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَنظُرُكَ مِنْ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦٦﴾

६७. उन्होंने कहा, हे मेरी कौम के लोगो! मुझ में बेवकूफ नहीं, लेकिन मैं दुनिया के रब का रसूल हूँ।

قَالَ يَقُوْمُ لَيْسَ فِي سَفَاهَةٍ وَلَكِنِّي رَسُوْلٌ مِّنْ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٦٧﴾

६८. मैं तुम्हें अपने रब का पैगाम पहुंचाता हूँ और तुम्हारा ईमानदार खैरख्वाह हूँ।

اَبْلَغُكُمْ رِسٰلِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ نٰصِيْحٌ اٰمِيْنٌ ﴿٦٨﴾

६९. क्या तमहें तअज्जुब है कि तुम्हारे रब की तरफ से कोई उपदेश (नसीहत) की बात तुम्हीं में से एक मर्द के पास आई है ताकि वह तुम्हें बाखबर करे, तुम याद करो जब कि (अल्लाह ने) तुम्हें नूह की कौम के बाद उन की जगह पर कर दिया और तुम्हारी डील-डौल को ज्यादा कुशदा किया, इसलिए तुम अल्लाह की नेमतों को याद करो ताकि कामयाब हो जाओ।

اَوْ عَجِبْتُمْ اَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَاذْكُرُوْا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ مِّنۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّاٰذْكُرُوْا فِي الْخٰلِقِ بَصۜطَةً ۗ فَاذْكُرُوْا اٰلَاءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تَفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾

७०. उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिये आये हो कि हम सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करें और अपने बुजुर्गों के भावुदों को छोड़ दें। इसलिए तुम जिस की धमकी हमें देते हो लाओ अगर तुम सच्चे हो।

قَالُوْا اِجْعَلْنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحَدًّا وَّوَنَدَّرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاؤُنَا ۗ فَاٰتِنَا بِمَا تَعِدُنَا اِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٧٠﴾

७१. उन्होंने कहा कि तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर अजाब और गजब आ ही गया, क्या तुम मुझ से कुछ ऐसे नामों के बारे में झगड़ा करते हो जो तुम ने और तुम्हारे बुजुर्गों ने रख लिये हैं, जिन की कोई दलील अल्लाह ने नहीं उतारी है, तुम इत्तेजार करो, मैं (भी) तुम्हारे साथ इत्तेजार कर रहा हूँ।

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَبِّكُمْ رِجْسٌ وَّعَصَبٌ ۗ اَنْجَادِ لُوْنِيْ فِيْ اَسْمَاءِ سَبَّيْتُوْهَا اَنْتُمْ وَاٰبَاؤُكُمْ مَا تَزُوْلُ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۗ فَاَنْتَظِرُوْا اِيَّيْكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ﴿٧١﴾

१ बुजुर्गों की पैरवी हर जमाने में भटकावे का सबब रही है, आद के कौम वालों ने भी यही दलील पेश किया और मूर्तिपूजा छोड़कर तौहीद का रास्ता अपनाते के लिए तैयार नहीं हुए, बदनसीबी से मुसलमानों में भी अपने बुजुर्गों की पैरवी का रोग आम तौर से है।

७२. तो हम ने उसे और उस के पैरोकारों को अपनी रहमत से बचा लिया और उन लोगों की जड़ काट दी, जिन्होंने हमारी आयतों को फुठलाया और वे ईमान वाले नहीं थे।¹

७३. और समुद्र के पास उन के भाई सालेह को (भेजा), उन्होंने कहा, हे मेरी क्रौम के लोगो! अल्लाह की इबादत करो उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से सुबत आ गया, यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिये निशानी है, उसे अल्लाह की धरती में खाने को छोड़ दो, उसे बुराई से हाथ न लगाना कि तुम्हें दुःखद अजाब पकड़ ले।

७४. और तुम उन हालतों को याद करो जब (अल्लाह ने) तुम को आद (क्रौम) के बाद खलीफा बनाया और धरती में तुम्हें रहने की जगह दी, तुम उसकी बराबर जमीन में घरों को बनाते हो,² और पहाड़ों को काट कर घर बनाते हो, तो अल्लाह की नेमतों को याद करो और जमीन में फसाद करते न फिरो।

७५. उन की क्रौम के घमन्डी सरदारों ने कहा अपने कमजोरों से जो ईमान लाये थे कि क्या तुम्हें यकीन है कि सालेह अपने रब के भेजे हुये हैं, उन्होंने कहा कि हम उस के ऊपर ईमान रखते हैं जिस के साथ उन्हें भेजा गया है।

७६. घमन्डी सरदारों ने कहा कि तुम जिस के ऊपर यकीन करते हो हम यकीन नहीं रखते।

فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا
وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنَّا
وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٧٢﴾

وَالَّذِينَ كَانُوا أَصْحَابَ صُلَيْحًا قَالُوا يَقُومُوا عِبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ عِتْرَةً ۚ قَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ
مِّن رَّبِّكُمْ فَهَبْ لَهُمْ نَأْفَةَ اللَّهِ لَكُمْ أَيَّةً قَدْ رُؤِيَ
تَأْكُلُ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَسُوهُمَا يُسْوَاءٌ
فِي أَخْذِ اللَّهِ عَذَابَ الْعِلمِ ﴿٧٣﴾

وَأذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ عَادٍ
وَبَوَّأَكُمْ فِي الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن
سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ
بُيُوتًا ۗ قَدْ كُرُوا الْآءِ اللَّهِ وَلَا تَعْمُوا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٧٤﴾

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ
لِلَّذِينَ اسْتَظْفَعُوا لِمَن أَمَنَ مِنْهُمْ
أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صُلَيْحًا مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِ ۗ
قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٧٥﴾

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِي آمَنْتُمْ بِهِ
كٰفِرُونَ ﴿٧٦﴾

¹ इस क्रौम पर हवाओं का अजाब आया जो लगातार सात दिन आठ रातें चलता रहा और आद के लोगों की लाशें जिन्हें अपनी ताकत पर बड़ा घमंड था खजूर के खोखले पेड़ की तरह धरती पर पड़े दिखाई दे रहे थे।

² इसका मतलब है कोमल धरती से मिट्टी लेकर ईंटें तैयार करते हो और उन ईंटों से महल तैयार करते हो, जैसे आज भी भट्टों पर इसी तरह मिट्टी से ईंटें तैयार की जाती है।

७७. इसलिए उन्होंने ऊंटनी को कत्ल कर दिया और अपने रब के हुक्म की नाफरमानी की और कहा कि हे सालेह! अगर तुम रसूल हो तो अपनी धमकी पूरी करो।

७८. तो उन्हें भूकम्प ने घेर लिया और वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

७९. वह (सालेह) उन से मुंह फेर कर चल दिये, और कहा कि हे मेरी क्रौम के लोगो! मैंने तुम को अपने रब का हुक्म पहुँचा दिया और तुम्हारा शुभचिंतक (खैरख्वाह) रहा, लेकिन तुम खैरख्वाहों से मुहब्बत नहीं करते।

८०. और (हम ने) लूत को (भेजा) जब कि उन्होंने अपनी क्रौम से कहा कि तुम ऐसा बुरा काम करते हो, जिसे तुम से पहले किसी ने सारी दुनिया में नहीं किया।

८१. तुम मर्दों के साथ सम्भोग करते हो औरतों को छोड़ कर, बल्कि तुम तो हद से गुजर गये हो।

८२. और उनकी क्रौम से कोई जवाब न बन पड़ा सिवाय इस के कि आपस में कहने लगे कि इन लोगों को अपनी बस्ती से निकाल दो, यह लोग बड़े पाक साफ बनते हैं।

८३. तो हमने उसको (लूत) और उनके घर वालों को बचा लिया सिवाय उनकी बीबी के, कि वह उन्हीं लोगों में रही जो (अजाब में) रह गये थे।

८४. और हम ने उन के ऊपर एक नयी तरह की बारिश की, तो देखो तो सही कि उन मुजरिमों का क्या नतीजा हुआ ?

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا
يَصْلِحْ أَتَيْنَا بِمَا نَكُونُ إِنَّ كُنْتُمْ مِنَ
الْمُرْسَلِينَ ﴿٧٧﴾

فَاخَذَتْهُمْ رَجْفَةٌ فَأَصْبَحُوا بِقِيَادِ
جِبْرِيلَ ﴿٧٨﴾

فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رَسُولًا
رَبِّي وَصَحْتُ لَكُمْ وَلَكِنْ لَا تُؤْمِنُونَ
الصَّحِيحِينَ ﴿٧٩﴾

وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ
مَا سَبَقْتُكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الزَّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ
النِّسَاءِ طَبِيلٌ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُسْرِفُونَ ﴿٨١﴾

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوهُمْ
مِنْ قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ يَبْغُونَ ﴿٨٢﴾

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ
الْغَابِرِينَ ﴿٨٣﴾

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا فَأَنْظَرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾

1 यह खास तरह की बारिश क्या थी? पत्थरों की बारिश, जिस तरह से दूसरी जगह पर फरमाया है :

(وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِنْ سِجِّيلٍ مُنْقُودٍ)

«हम ने उन पर तह पर तह पत्थरों की बारिश बरसायी।» (सूर: हूद-८२)

८५. और (हम ने) मदयन की तरफ उन के भाई शुऐब को (भेजा)। उन्होंने कहा कि हे मेरी क्रौम के लोगो! तुम अल्लाह की इबादत करो उसके सिवाय तुम्हारा कोई मावूद नहीं, तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारी ओर बाजेह निशानी आ चुकी है, बस तुम नाप-तौल पूरा-पूरा किया करो और लोगों को उनकी चीजें कम कर के न दो^१ और सारी धरती पर इसके वाद कि सुधार कर दिया गया फसाद मत फैलाओ, यह तुम्हारे लिए फायदेमंद है अगर तुम ईमान ले आओ।

८६. और तुम हर एक रास्ते पर उन्हें धमकी देने और अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिये जो अल्लाह पर ईमान लाये न बैठा करो, और उस में गलती की खोज करते हुए, और याद करो जब तुम थोड़े थे तो अल्लाह ने तुम्हें ज्यादा कर दिया, फिर देखो कि फसादियों का अंजाम कैसा रहा।

८७. और अगर तुम में से कुछ लोगों ने उस हुकम पर यक्रीन किया जिस के साथ मैं भेजा गया हूँ, और कुछ ने यक्रीन नहीं किया है तो थोड़ा सब रखो, यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच फैसला कर दे और वह सब से बेहतर फैसला करने वाला है।

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا
اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ قَدْ جَاءَتْكُمْ
بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْيَمَانَ
وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا
فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَكُمْ
إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿٨٥﴾

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصَدُّونَ
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ مِنْ أَمْنٍ بِهِ وَتَمَعُونَهَا عَوجَاءَ
وَإِذْ كُنْتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ وَانظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿٨٦﴾

وَإِنْ كَانَ طَائِفَةٌ مِنْكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي
أُرْسِلَتْ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّى
يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٨٧﴾

^१ मदयन हजरत इब्राहीम के बेटे और पोते का नाम था, फिर उन्हीं के वंश से सम्बन्धित कबीले का नाम भी मदयन और जिस वस्ती में वे रहते थे उसका नाम भी मदयन पड़ा गया, इस तरह इस को कबीले और वस्ती दोनों के लिए बोला जाता है, यह वस्ती हिजाज इलाके के रास्ते में मआन के करीब है, इन्हीं को कुरआन में दूसरे मुकाम पर اصحاب الأيكة (वन के निवासी) भी कहा गया है, उनकी तरफ हजरत शुऐब नबी बनाकर भेजे गये। देखिये (सूर: अश-शुअरा-१७६)।

टिप्पणी : हर नबी को उन की क्रौम का भाई कहा गया है, जिसका मतलब उसी क्रौम और जाति का एक इंसान है, जिसको कुछ जगह पर يا رسولناهم या من انهم भी कहा गया है, और मतलब उन सब का यही है कि रसूल और नबी इंसानों में से ही एक इंसान होता है जिसे अल्लाह तआला लोगों की हिदायत के लिए चुन लेता है और वहही के जरिये उस पर अपनी किताब और अहकाम उतारता है।

^२ तौहीद की दावत के बाद उस क्रौम में नाप-तौल की कमी एक बड़ी कमी थी, जिस से रोका गया और पूरा-पूरा नाप तौल कर देने की तालीम दी गई, यह बुराई भी बहुत भयानक है जिस से उस क्रौम के नैतिक (अखलाकी) गिरावट का पता लगता है जिस में यह बुराई पाई जाती है, यह बुरी ख्यानत है कि पैसे तो पूरे लिये जायें और चीज कम दी जायें, इसलिए सूर: सुतफकफिन में ऐसे ही लोगों के लिए तबाही की खबर दी गई है।

८८. उनकी कौम के घमण्डी सरदारों ने कहा हे शुरैव! हम तुम्हें और जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं उनको जरूर अपने नगरों से निकाल देंगे वरन् तुम फिर हमारे धर्म में आ जाओ, उन्होंने कहा कि जबकि हम उस से घिन करते हैं।

८९. हम तो अल्लाह पर झूठ का आरोपण करेंगे अगर हम तुम्हारे धर्म में फिर से आ गये जबकि अल्लाह ने हमें उससे आजाद कर दिया है और हमारे लिये उस में फिर से आ जाना मुमकिन नहीं, लेकिन यह कि अल्लाह चाहे जो हमारा रब है। हमारे रब ने हर चीज को अपने इल्म की परिधि (इहाते) में ले रखा है, हम ने अपने अल्लाह पर ही भरोसा कर लिया, हे हमारे रब! हमारे और हमारे लोगों के बीच फैसला कर दे सच्चाई के साथ और तू सब से बेहतर फैसला करने वाला है।

९०. और उनकी कौम के काफिर सरदारों ने कहा कि अगर तुम ने शुरैव की इताअत की तो उस वक्त तुम बेचक नुकसान उठाने वाले हो जाओगे।

९१. तो उनको भूकम्प ने आ पकड़ा, इसलिए वे अपने घरों में औंधे पड़े रह गये।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِنْ قَوْمِهِ
لَمُخْرِجَتِكَ يُشْعِبُكَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ
مِنْ قَوْمِيْنَا أَوْ نَعُودُونَ فِي مِلَّتِنَا قَالَ
أَوْ لَوْلَا كَرِهْتَ ۞ (88)

قَدْ أَفْرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنَّ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُمْ
بَعْدَ إِذْ نَجَّيْنَا اللَّهُ مِنْهَا وَمَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَعُودَ
فِيهَا إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ
شَيْءٍ عِلْمًا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا
وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنْتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ ۞ (89)

وَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ
شُعَيْبًا لَنُكَرِهَنَّكُمْ إِذْ أَخْسَرُونَ ۞ (90)

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ
جُثَمِينَ ۞ (91)

1 अपने बुजुर्गों के दीन को छोड़ना और माप-तौल में कमी न करना, यह उन के नजदीक नुकसान वाली बात थी, सच्चाई यह थी कि इस में उन्हीं का फायदा था, लेकिन दुनिया वालों की नजर में फायदा ही सभी कुछ होता है, जो माप-तौल में डडी मारने से उन्हें मिल रहा था, वह ईमानवालों के दीर्घगामी (मुस्तकिल्) फायदे के लिए उसे क्यों छोड़ते?

2 यहाँ رَجْفَةٌ (रजफ़:) आया है, जिसका मतलब भूकम्प (जलजला) है, और सूर: हूद आयत नं-९४ में صَبِيحَةٌ सफ़ज जिसका मतलब "चीख" इस्तेमाल हुआ है। इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि अजाब में यह सब हुआ, यानी छाया वाले दिन अजाब आया, सब से पहले बादलों की छाया में आग के शोले चिंगारियाँ, फिर आकाश से बहुत तेज गर्जन हुई और धरती में भूकम्प आया, जिस की वजह से उनकी आत्माओं (रूहों) ने शरीर छोड़ दिया और अजीवित लाश बन कर पक्षियों की तरह घुटनों में मुंह देकर औंधे के औंधे पड़े रह गये।

९२. जिन्होंने शुऐब को झुठलाया, उनकी यह हालत हो गयी कि जैसे उन (घरों) में कभी बसे हैं नहीं थे, जिन्होंने शुऐब को झुठलाया वही नुकसान में पड़ गये।

९३. उस वक़्त शुऐब उन से मुँह मोड़ कर चले और कहने लगे कि हे मेरी क्रौम के लोगो! मैंने अपने रब का पैगाम तुम्हें पहुंचा दिया और मैंने तुम्हारी शुभचिन्ता (खैरख्वाही) की, फिर मैं उन काफिरों पर दुखी क्यों हूँ?

९४. और हम ने किसी बस्ती में कोई नबी नहीं भेजा कि वहाँ के निवासियों को हम ने रोग और तकलीफ से पकड़ा न हो, ताकि वे गिड़गिड़ायें (विनती करें)।

९५. फिर हम ने उस दरिद्रता को खुशहाली से बदल दिया, यहाँ तक कि जब वे खुशहाल हो गये और कहने लगे कि हमारे बुजुर्गों को भी तंगी और तरक्की का सामना करना पड़ा, तो हम ने अचानक उन को पकड़ लिया और उन को खबर भी न थी।

९६. और अगर उन नगरों के रहने वाले ईमान लाते और परहेजगारी बरतते तो हम आसमान और ज़मीन की बरकतों के दरवाजे उन पर खोल देते, लेकिन उन्होंने झुठलाया तो हम ने उन्हें उन के बुराईयों के सबब पकड़ लिया।

९७. क्या फिर भी इन बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफिक्र हो गये हैं कि उन पर हमारा अज़ाब रात के वक़्त आ पड़े जिस वक़्त वह नीद में हों।

९८. और क्या उन बस्तियों के रहने वाले इस बात से बेफिक्र ही गये हैं? कि उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े में आये जिस वक़्त वे खेलों में मसरूफ हों।

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا لَمْ يَكُنُوا فِيهَا
الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٩٢﴾

قَوْلِي عَنْهُمْ وَقَالَ يَاقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَتِي
رَبِّي وَصَحْتُ لَكُمْ فَكَيْفَ أَسَى عَلَى قَوْمِ
كُفْرِينَ ﴿٩٣﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا
أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَاءِ لَعَلَّهُمْ يَضُرَّعُونَ ﴿٩٤﴾

لَمْ يَدْنُنَا مَكَانَ الشَّيْءِ الْحَسَنَةِ حَتَّىٰ عَفَوْا
وَقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ
فَلَخَذْنَاهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَتْلَعُونَ ﴿٩٥﴾

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا
عَلَيْهِمْ بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَلَكِن
كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٦﴾

أَفَأَمِّنَ أَهْلَ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا
بَيَاتًا وَهُمْ نَائِمُونَ ﴿٩٧﴾

أَوْ آمِنَ أَهْلَ الْقُرَىٰ أَنْ يَأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا صُحًى
وَهُمْ يَلْعَبُونَ ﴿٩٨﴾

१९९. क्या वह अल्लाह की योजना से बेखौफ हो गये, सो अल्लाह की योजना से नुकसान वाले लोग' ही बेखौफ होते हैं ।

१००. तो क्या जो लोग धरती में उस के रहने वालों की तबाही के बाद वारिस बने हैं उन्हें इल्म नहीं हुआ कि अगर हम चाहें तो उनके गुनाहों के सबब उन्हें मुसीबत में डाल दें और उन के दिलों पर बन्द लगा दें फिर वे सुन न सकें ।^१

१०१. इन नगरों की कुछ घटनायें हम आप को बता रहे हैं और उन के रसूल उन के पास दलील सहित आये फिर भी जिसे उन्होंने पहले नहीं माना उसे फिर मानने लायक न हुये, इसी तरह अल्लाह काफ़िरों के दिलों पर मुहर लगा देता है ।

१०२. और हम ने उन के ज्यादातर लोगों को अहद का पालन करते नहीं पाया और हम ने उन में से ज्यादातर को फ़ासिक़ पाया ।

१०३. फिर उन के बाद हम ने (रसूल) मूसा को अपनी निशानियों के साथ फिरऔन और उस के सरदारों के पास भेजा,^२ तो उन्होंने उनका हक़ पूरा न किया, फिर देखो कि फ़ासिदियों का

أَقَامُوا مَكَرَ اللَّهِ ۚ فَلَا يَأْمَنُ مَكَرَ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمَ الْخَاسِرُونَ ﴿٩٩﴾

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِينَ يَرْتُونَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَا أَنْ لَوْ نَشَاءُ أَصْبَنَهُم بِذُنُوبِهِمْ وَلَطِفْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾

بَلَغَ الْفُرَى نَقَضَ عَلَيكَ مِنْ آثَابِهَا ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۖ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الْكَافِرِينَ ﴿١٠١﴾

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِنْ عَهْدٍ ۚ وَإِنْ وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ ﴿١٠٢﴾

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِم مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا ۚ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٠٣﴾

^१ इन आयतों में अल्लाह तआला ने सब से पहले यह बयान किया है कि ईमान (विश्वास) और तक्रवा ऐसा विषय है कि जिस बस्ती के लोग उसे अपना लें उस पर अल्लाह तआला आकाश और धरती के धन-सम्पत्तियों के दरवाजे खोल देता है, यानी आवश्यकतानुसार आकाश से वर्षा करता है और धरती को उस से सिंचाई करके उपज को बढ़ाता है । नतीजतन तरक़की और खुशहाली होती है, लेकिन इसके खिलाफ़ भुठलाने वाले और कुफ़्र का रास्ता अपनाने वाली क्रौम अल्लाह के अज़ाब के अधिकारी (मुस्तहिक) होते हैं, फिर मालूम नहीं होता कि रात-दिन किस वक़्त अज़ाब आ पड़े और खेलती-खाती इस बस्ती को एक पल में खण्डहर बना कर रख दे, इसलिए अल्लाह के इन अज़ाबों से बेफ़िक़्र नहीं होना चाहिए, इस बेफ़िक़्री का नतीजा सिर्फ़ नुक़सान के सिवा कुछ नहीं । مَكْرٌ (मकर) के मतलब के लिए देखिए सूर: आले इमरान आयत ५४ की तफ़सीर ।

^२ यानी गुनाहों के नतीजे में केवल अज़ाब ही नहीं आता है, दिलों पर भी ताले लग जाते हैं । फिर बड़े से बड़े अज़ाब भी उनको बेखौफ़ी की नींद से नहीं जगा सकते ।

^३ यहाँ से मूसा का बयान शुरू हो रहा है, जो बयान किये गये नबियों के बाद आये, जो बहुत बड़े सम्मानित (इज़्ज़त वाले) पैग़म्बर थे, जिन्हें भिन्न के फिरऔन और उसकी जनता के पास निशानियाँ और भोजिज़े दे कर भेजा गया था ।

अंजाम कैसा रहा ।

१०४. और मूसा ने फरमाया: ऐ फिरऔन! मैं सारी दुनिया के रब की तरफ से पैगम्बर हूँ ।

१०५. मेरे लिए यही बेहतर है कि सच के सिवाय अल्लाह पर कोई बात न बोलूँ मैं तुम्हारे रब की तरफ से एक बड़ी निशानी भी लाया हूँ, इसलिए तू इस्राईल की औलाद को मेरे साथ भेज दे ।¹

१०६. उस (फिरऔन) ने कहा अगर आप कोई मोजिजा लेकर आये हैं तो उसे पेश कीजिए, अगर आप सच्चे हैं ।

१०७. फिर आप ने अपनी छड़ी डाल दी तो अचानक वह एब साफ अजगर साँप बन गया ।

१०८. और अपना हाथ बाहर निकाला तो वह अचानक सभी देखने वालों के सामने बहुत ही चमकता हुआ हो गया ।

१०९. फिरऔन की क्रौम के सरदारों ने कहा कि यह बड़ा माहिर जादूगर है ।

११०. वह तुम्हें तुम्हारे देश से निकलना चाहता है फिर तुम लोग क्या विचार देते हो?

१११. उन्होंने कहा कि आप उसे और उस के भाई को वक़्त दीजिए और नगरों में इकट्ठा करने वालों को भेज दीजिए ।

وَقَالَ مُوسَىٰ يُفْرَعُونَ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ
الْعَالَمِينَ ﴿١٠٤﴾

حَقِيقٌ عَلَىٰ أَنْ لَا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقُّ قَدْ
جَاءَكُمْ بَيِّنَاتٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَارْسِلْ مَعِيَ بَنِي
إِسْرَائِيلَ ﴿١٠٥﴾

قَالَ إِن كُنْتَ إِذًا بِآيَةٍ فَآتِ بِهَا إِنْ كُنْتَ
مِن الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٠٦﴾

فَأَنفَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿١٠٧﴾

وَوَضَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّظِيرِينَ ﴿١٠٨﴾

قَالَ الْهَلَاءُ مِنْ قَوْمٍ يُفْرَعُونَ إِنْ
هَذَا السَّحَرُ عَلَيْكُمْ ﴿١٠٩﴾

يُرِيدُونَ أَن يُفْرَجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ فَأَذَاتُ مَرُونَ ﴿١١٠﴾

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ
خُشْرِينَ ﴿١١١﴾

¹ इस्राईल की औलाद जिनका मूल निवास सीरिया का इलाका था, हजरत यूसुफ के वक़्त में मिस्र चली गयी थी फिर वही के निवासी हो गये । फिरऔन ने उन्हें दास बना लिया था और उन पर तरह-तरह के जुल्म करता था जिसका तफसीली बयान सूर: अल बकर: में गुजर चुका है और आगे भी आयेगा । फिरऔन और उस के दरबार के मन्त्रियों ने जब हजरत मूसा की दाबत को ठुकरा दिया तो हजरत मूसा ने दूसरी मांग की कि इस्राईल की औलाद को आजाद कर दे ताकि यह अपने असल मकान पर जाकर मान-सम्मान की जिन्दगी गुज़ारें और अल्लाह की इवादात करें ।

११२. कि वे सभी माहिर जादूगरों को आप के सामने लाकर हाज़िर करें।¹

११३. और जादूगर फिरऔन के पास आये और कहा कि अगर हम सफल हो गये तो क्या हमारे लिए कोई बदला है?

११४. उस ने कहा हाँ, और तुम सब करीबी लोगों में हो जाओगे।²

११५. उन (जादूगरों) ने कहा कि ऐ मूसा ! चाहे आप डालिए या हम ही डालें।

११६. (मूसा ने) कहा कि तुम ही डालो तो जब उन्होंने डाला तो लोगों की नज़रबन्दी कर दी और उनको डरा दिया, और एक तरह का बड़ा जादू दिखाया।

११७. और हम ने मूसा को हुकम किया कि अपनी छड़ी डाल दो, फिर वह अचानक उन के स्वांग (डोंग) को निगलने लगी।

११८. अतः सच जाहिर हो गया और उन्होंने जो कुछ बनाया था सब जाता रहा।

يَأْتُونَ بِكُلِّ سِحْرِ عَلِيمٍ ﴿١١٢﴾

وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لَكُمْ
إِنْ كُنَّا نَخُنُّ الْغُلِيَّيْنَ ﴿١١٣﴾

قَالَ تَعْمَ وَإِنَّكُمْ لِسِنِّ الْقَرَّبِيِّينَ ﴿١١٤﴾

قَالُوا يَا مُوسَى إِمَّا أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّا أَنْ نَنزُو
نَحْنُ الْمُلْقِينَ ﴿١١٥﴾

قَالَ الْقَوْمُ فَلَبَّأَ الْقَوْمُ سِحْرًا وَأَعْيُنَ النَّاسِ
وَأَسْتَرْسَبُوهُمْ وَجَاءَهُ وَبِسِحْرِ عَظِيمٍ ﴿١١٦﴾

وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ ألقِ عَصَاكَ
فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿١١٧﴾

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٨﴾

¹ हज़रत मूसा के वक़्त में जादूगरों की बड़ी इज़्जत थी, इसीलिए हज़रत मूसा के पेश किये मोज़िजे को भी उन्होंने जादू सम्भन्धा और जादू के जरिये उस के काट की योजना बनायी, जिस तरह से दूसरे मुक़ाम पर फ़रमाया कि फिरऔन और उस के दरबारियों ने कहा, हे मूसा ! क्या तू चाहता है कि अपने जादू की ताक़त से हमें अपनी धरती से निकाल दे, और हम भी इस जैसा जादू इस के मुक़ाबिले में लायेंगे, इस के लिए किसी खास मुक़ाम और वक़्त का मुक़रर हम खुद करें जिसका दोनों पालन करें। हज़रत मूसा ने कहा कि नौरोज़ का दिन और चाशत का वक़्त है, इस हिसाब से लोग जमा हो जायें।- (सूर: ताहा- ५७ से ५९)

² जादूगर चूँकि दुनिया पाने की तमन्ना रखते थे, इसलिए उन्होंने जादू की तालीम ली थी, इसलिए अच्छा मौक़ा देखा कि राजा को हमारी ज़रूरत हुई है, क्यों न मौक़ा का फ़ायदा उठा कर ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठायें। इसलिए उन्होंने कामयाबी के बाद उसके बदले में माँग पेश कर दी, जिस पर फिरऔन ने कहा कि केवल धन ही नहीं मिलेगा बल्कि हमारे करीबी लोगों में शामिल हो जाओगे।

११९. अतः वह लोग इस मौका पर हार गये और बहुत जलील होकर फिरे।

१२०. और जादूगर सज्दे में गिर गये।

१२१. कहने लगे हम ईमान लाये सारी दुनिया के रब पर।

१२२. जो मूसा और हारून का भी रब है।

१२३. फिरऔन ने कहा तुम उस (मूसा) पर ईमान मेरे हुक्म से पहले ले आए, वेशक यह एक साजिश है जो तुम ने नगर में उस के निवासियों को उस से निकालने के लिये रच लिया है, अतः तुम्हें जल्द पता चल जायेगा।

१२४. मैं तुम्हारे एक तरफ का हाथ और दूसरे तरफ की टांग काटूंगा, फिर तुम सब को फासी पर लटका दूंगा।

१२५. (उन्होंने) जवाब दिया कि हम (मर कर) अपने रब के पास ही जायेंगे।

१२६. और तुम ने हम में यही बुराई तो देखा है कि हम ने अपने रब की आयतों (लक्षणों) पर यकीन कर लिया जब वह हमारे पास आ गई, हे हमारे रब! हम पर सब उडेल दे और हमें मुसलमान ही रहते हुए मौत दे।

فَقَالُوا هَذَاكَ وَأَنْقَلَبُوا صَغِيرِينَ ﴿١١٩﴾

وَأَلْفَى السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ ﴿١٢٠﴾

قَالُوا أَمَّا رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢١﴾

رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ﴿١٢٢﴾

قَالَ فِرْعَوْنُ أَمَنْتُمْ بِهِ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ ۗ إِنَّ هَذَا لَكُذُوبٌ كَثِيرٌ فِي السَّيِّئَةِ لِيَتَّخِذُوا

مِنْهَا أَهْلَهَا ۗ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿١٢٣﴾

لَأَطْعِمَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ خَلْفٍ ثُمَّ لَأَقْبِلَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٢٤﴾

قَالُوا إِنْكَ إِلَى رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ﴿١٢٥﴾

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِآيَاتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَتْنَا ۗ رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَقَّنَا
صَالِحِينَ ﴿١٢٦﴾

1 जादूगरों ने, जो जादू की कला और उसकी असली हकीकत को जानते थे, यह देखा तो समझ गये कि मूसा ने जो कुछ यहाँ पेच किया है जादू नहीं है, यह हकीकत में अल्लाह के रसूल है और अल्लाह की मदद से ही यह मोजिजा पेच किया है जिस ने एक पल में हम सभी की कला पर पानी फेर दिया, इसलिए उन्होंने मूसा पर ईमान लाने का एलान कर दिया, इससे यह बात बाजेह हो गयी कि झूठ-झूठ है, चाहे उस पर कितने ही खूबसूरत कपड़े चढ़ा दिये जायें और सच-सच ही है, चाहे उस पर कितने ही पट डाल दिये जायें, आखिर में जीत सच की होती है।

2 इसका मतलब यह है कि अगर तू हमारे साथ ऐसा सुलूक करेगा तो तुझे भी इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि क्रयामत वाले दिन अल्लाह तआला तुझे इस गुनाह की सज़ा सजा देगा, इसलिए कि हम सभी को मरकर उसी के पास जाना है, उसकी सजा से कौन बच सकता है? यानी फिरऔन को दुनिया के अजाब के मुकाबले आखिरत के अजाब से डराया गया है।

१२७. और फिरऔन की जाति के सरदारों ने कहा कि क्या आप मूसा और उसकी जाति को यं ही रहने देंगे ताकि धरती पर फसाद करें, और आप को और आप के देवताओं को छोड़ दें, उस ने कहा हम उनके बेटों को क़त्ल करेंगे और उनकी औरतों को जिन्दा रहने देंगे, और हम उन पर प्रभावी (गालिब) हैं।

१२८. मूसा ने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह (तआला) की मदद लो और सब रखो यह धरती अल्लाह (तआला) की है, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बना देता है और आखिरी कामयाबी उन्हीं की होती है जो अल्लाह से डरते हैं १

१२९. उन्होंने कहा कि आप के आने से पहले भी? हमें कष्ट दिया गया और आप के आने के बाद भी, उन्होंने कहा कि जल्द ही तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मनों को बरबाद कर देगा और इस धरती की विरासत तुम को देगा फिर यह देखेगा कि तुम्हारा अमल कैसा है?

१३०. और हम ने फिरऔन की आल को सुखे और फलों की कमी के जरिये घेर लिया ताकि वह नसीहत हासिल कर लें १

وَقَالَ الْكَلْبُ مِنَ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّكَ لَمُوسَى
وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذُرُكَ وَيَهْتَكَ
قَالَ سَتَقْبَلُ أَهْبَاءَهُمْ وَكُنتَ تَجِي نِسَاءَهُمْ
وَأَنَا فَوْقَهُمْ فَهُمْ يُهْرُونَ ﴿١٢٧﴾

قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا
إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَنْ يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿١٢٨﴾

قَالُوا أَوْ دِينًا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا
جِئْتَنَا قَالَ عَسَى رَبُّكُمْ أَنْ يُهْلِكَ عَدُوَّكُمْ
وَيَسْتَخْلِفَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ
تَعْمَلُونَ ﴿١٢٩﴾

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَحْسٍ
مِنَ السَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣٠﴾

१ यह हर दौर के गुमराहों का काम रहा है कि वे ईमानवालों को फसादी और उन के ईमान की दाबत और एकेश्वरवाद (तौहीद) को फसाद से मुबाजना करते हैं फिरऔन के पैरोकारों ने भी यही किया।

२ जब फिरऔन की तरफ से दोबारा जुलम शुरू हुआ तो हज़रत मूसा ने अपनी जाति के लोगों को अल्लाह की मदद हासिल करने और सब करने की शिक्षा दी कि अगर तुम सच्चे रास्ते पर रहे तो आखिर में धरती का राज्य तुम्हें ही हासिल होगा।

३ यह इशारा उन जुलमों (अत्याचारों) की तरफ है जो मूसा के जन्म से पहले उन पर होते रहे।

४ फिरऔन की औलाद से मुराद फिरऔन के पैरोकार हैं और सेनीन (سین) से अकाल या सूखा यानी बारिश की कमी और पेड़ों में कीड़े लग जाने के सबब पैदावार में कमी है, इस इन्तेहान से मकसद यह था कि शायद वह इस जुलम और घमण्ड से रुक जायें जिस में वे मुक्तिला है।

१३१. अगर उन के पास भलाई आती है तो कहते हैं कि यह हमारे लिए होना ही चाहिए और अगर परेशानी आती है तो मूसा और उनके पैरोकारों से अपशुगुन लेते हैं,^१ सुन लो उन का अपशुगुन अल्लाह के पास है^२ लेकिन उन में ज्यादातर लोग नहीं जानते।

१३२. और उन्होंने कहा, कि हमारे पास जो भी निशानी हम पर जादू चलाने के लिये लाओ हम तुम्हारा यक्रीन नहीं करेंगे।

१३३. फिर हम ने उन पर तूफान और टिड्डियाँ और जूयें और मेंढक और खून भेजा अलग-अलग निशानियाँ,^३ फिर उन्होंने अहंकार किया और वह मुजरिम लोग थे।

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَذَا ۖ
وَإِنْ نُصِبْهُمْ سَبْتًا لَيَنْظُرُوا بِمُوسَى
وَمَنْ مَعَهُ إِلَّا إِنْسَاءٌ لَّا يَفْقَهُوهُمْ عِنْدَ
اللَّهِ وَلَكِنَّ الْكُفْرَ لَآ يَعْلَمُونَ ﴿١٣١﴾

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لَيَسْحَرَنَا بِهَا
فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿١٣٢﴾

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ
وَالصَّفَّادِغَ وَالنَّمْلَ آيَاتٍ مُّفَصَّلَاتٍ
فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿١٣٣﴾

^१ حَسَنَةٌ (हसनतः) से मुराद अनाज और फलों की बहुतायत और سَبْتًا का मतलब है बुराई, जिस से मुराद हसनत के खिलाफ अकाल, सूखा और बेदायार में कमी है।

^२ طَائِر का मतलब है "उड़ने वाला" यानी पक्षी। क्योंकि वे लोग पक्षी के दायें और बायें उड़ने से शुभ और अशुभ लिया करते थे, इसलिए यह कलिमा पूरी तरह से "फालनामा" के लिए इस्तेमाल होने लगा और यहाँ यह इसी मतलब में इस्तेमाल हुआ है।

^३ तूफान से मुराद है वाद, बहुत ज्यादा वर्षा, जिस से हर चीज़ डूब गयी या मुदों की ज्यादा तादाद है, जिस से हर घर में दुख के बादल छा गये। جَرَاد (जराद) टिड्डी को कहते हैं। टिड्डी दल का हमला फसलों की बरवादी का सूचक है और इस के लिए मशहूर है, ये टिड्डियाँ उन की फसलों और फलों को खाकर चट कर जाती हैं। قُمَّل (कुम्मल) से मुराद जू जो इंसान के शरीर और कपड़ों और बालों में हो जाती है या घुन का कौड़ा जो अनाज में लग जाता है, तो उस के ज्यादातर हिस्से को खत्म कर देता है। जू से इंसान को नफरत भी होती है और उसकी अधिकता से बहुत कठिनाई भी, और जब यह अजाय के रूप में हो तो उसकी कठिनाई का अंदाजा लगाया जा सकता है। इस तरह घुन का अजाव भी अधिक स्थिति को खोखला कर देने के लिए काफ़ी है। حَفَادِغ अरबी भाषा में حَفَادِغ (जिपदअ) का बहुवचन (जमा) है। यह मेंढक को कहते हैं, जो पानी, धरती और भोपड़ियों के छप्परों में रहता है, यह मेंढक उन के भोजन में, बिस्तरों पर, रखे हुए अनाजों में यानी हर जगह पर और हर तरफ मेंढक ही मेंढक हो गये, जिस से उनका खाना-पीना सोना और आराम करना कठिन हो गया। دَم (दम) का मतलब खून है, जिसका मतलब है कि पानी का खून बन जाना, इस तरह पानी पीना उन के लिए नामुमकिन हो गया। कुछ ने खून का मतलब नकसीर का रोग लिया है यानी हर इंसान की नाक से खून जारी हो गया। آیَاتٍ مُّفَصَّلَاتٍ यह स्पष्ट (वाजेह) और अलग-अलग चमत्कार (मोजिजे) थे, जो समय-समय से उन के पास आये।

१३४. और जब उन पर कोई अज्ञाव आता तो कहते कि हे मूसा ! हमारे लिये अपने रब से उस वादे के जरिये जो आप को दिया हुआ कर दीजिये, अगर आप ने हम से अज्ञाव दूर कर दिया तो हम जरूर आप पर ईमान ले आयेगे और आप के साथ इस्राईल के बेटों को भेज देंगे ।

१३५. फिर जब हम उन से उस अज्ञाव को एक खास वकत तक कि उस तक उनको पहुँचना था, हटा देते तो वे तुरंत वचन भंग (अहद शिकनी) करने लगते ।

१३६. फिर हम ने उन से बदला लिया यानी उनको समुद्र में डूबो दिया, इस वजह से कि वे हमारी निशानियों को फुठलाते थे और उन से बहुत असावधानी (गफलत) बरतते थे ।

१३७. और हम ने उन लोगों को जो बहुत कमजोर गिने जाते थे उस धरती के पूरब और पश्चिम का मालिक बना दिया जिस में हम ने बरकतें रखी हैं, और आप के रब का नेक वादा बनी इस्राईल के बारे में उन के सब के सब पूरा हो गया और हम ने फिरौन और उस की कौम के बनाये गये कारखानों को और जो ऊँचे मकान तामीर करते थे सब को तहस-नहस कर दिया ।

१३८. और हम ने बन् इस्राईल (इस्राईल के बेटों) को समुद्र के पार उतार दिया, फिर उन का एक ऐसी जाति पर गुजर हुआ जो अपने कुछ बुतों (प्रतिमाओ) से लगे बैठे थे, कहने लगे कि हे मूसा ! हमारे लिये भी एक ऐसा ही पूज्य

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يُمُوسَى
ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عٰهَدْتَ عِنْدَكَ ۗ لَئِن
كَشَفْتَعَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَكَرَّرِسْنَا
مَعَكَ بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٣٤﴾

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَىٰ أَجَلٍ هُمْ
بِلُغُوهِ إِذَا هُمْ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿١٣٥﴾

فَأَنْتَقْنَا مِنْهُمْ فَأَعْرَفْنَاهُمْ فِي الْيَوْمِ بِأَنَّهُمْ
كُذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿١٣٦﴾

وَ أَوْزَنَّا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضَعُونَ
مَشَارِقِ الْأَرْضِ وَمَغَارِبِهَا الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا
وَتَبَّتْ كَيْمَاتُ رَبِّكَ الْحُسُوفِ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ
بِمَا صَبَرُوا ۗ وَذَمَرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ
وَقَوْمُهُ ۗ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ ﴿١٣٧﴾

وَجُوزْنَا بِمُوسَىٰ إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَا عَلَىٰ
قَوْمٍ يَعْشَقُونَ عَلَىٰ أَصْنَامِهِمْ ۗ قَالُوا يُمُوسَىٰ
اجْعَلْ لَنَا إِلٰهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ ۗ قَالَ إِنَّكُمْ
قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿١٣٨﴾

उद्योग से मुराद कल-कारखाने, मकान और हथियार वगैरह है, और بنينون "जो वह ऊँचा उठाते थे" से मुराद ऊँचे-ऊँचे घर भी हो सकते हैं और अगूरो आदि की लतायें भी जो वह छप्पों पर चढ़ाते थे । मतलब यह हुआ कि उन के शहरों के ऊँचे-ऊँचे मकान, उद्योग, हथियार और दूसरे सामान भी बरबाद कर दिया और उन के वाग भी ।

मुकर्रर कर दीजिए, जैसे उन के यह देवता हैं आप ने फरमाया: हकीकत में तुम लोगों में बड़ी जिहालत है।¹

१३९. यह लोग जिस काम में लगे हुए हैं वह नाश कर दिया जायेगा और उनका यह काम सिर्फ वातिल (गलत) है।

१४०. फरमाया कि क्या अल्लाह (परमेश्वर) के सिवाय और किसी को तुम्हारा माबूद मुकर्रर कर दूँ, अगरचे उस ने सारे जहाँ वालों पर तुम्हें प्रधानता (फज्जीलत) दी है।

१४१. और वह वक्त याद करो जब हम ने तुम्हें फिरऔन के पैरोकारों से बचा लिया जो तुम्हें कड़ी सजायें देते थे, तुम्हारे बेटों को कत्ल कर देते थे और तुम्हारी औरतों को जिन्दा छोड़ देते थे और इस में तुम्हारे रव की तरफ से भारी आजमाईश थी।

१४२. और हम ने मूसा को तीस रात का वादा दिया और दस ज्यादा रात से उसको पूरा किया, इस तरह उन के रव का वक्त पूरा चालीस रात का हो गया, और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे (जाने के) वाद इन (क्रौम) का इतेजाम (प्रबन्ध) करना और सुधार करते रहना और फसादी लोगों के रास्ते की इत्तेबा न करना।²

إِنَّ هَؤُلَاءِ مُتَّبِعُونَ مَا هُم فِيهِ وَبِطُلُ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٣٩﴾

قَالَ أَعْبُدُوا اللَّهَ الَّذِي تَخْلُقُكُمْ إِلَهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ
عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٤٠﴾

وَإِذْ أَنْجَيْنَاكُمْ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ
سُوءَ الْعَذَابِ يَفْقَهُونَ آيَاتِنَا وَلَئِنْ لَمْ يَنْتَهِ
نِسَاءُكُمْ فِي ذُلِكُمْ لَمَا كَانَ مِنْ رَبِّكُمْ عَظِيمًا ﴿١٤١﴾

وَوَعَدْنَا مُوسَى ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتَمَمْنَا بِعَشْرِ
فَتَمَّ مِيقَاتُ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً وَقَالَ مُوسَى
لِأَخِي هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ
وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤٢﴾

¹ इस से बड़ी जिहालत और बेबकूफी और क्या होगी कि जिस अल्लाह ने उन्हें फिरऔन जैसे बड़े दुश्मन से न केवल आज्ञा दी बल्कि उनकी आँखों के सामने उसे उसकी सेना के साथ डूबो दिया और उन्हें भोजिजा से समुद्र पार करा दिया। वे समुद्र के पार करते ही अल्लाह को भूल कर खुद बनाये गये देवता खोजने लगे, कहते हैं यह मूर्तियाँ गाय की शकल की थीं, जो पत्थर की बनी थीं।

² हजरत हारून खुद नबी थे, सुधार करना उन की जिम्मेदारी में शामिल था, हजरत मूसा ने सिर्फ चेतावनी और सावधानी के लिये यह नसीहतें दी यहाँ मीकात से मुराद मुकर्रर समय है।

१४३. और जब मूसा हमारे बक्त पर आये और उन के रब ने उन से बातें की तो उन्होंने विनय (अर्ज) किया कि हे मेरे रब ! मुझे अपना दीदार करा दे मैं तुझे एक पल देख लूँ, आदेश हुआ कि तुम मुझको कभी भी नहीं देख सकोगे, लेकिन तुम इस पहाड़ की तरफ देखते रहो, अगर वह अपनी जगह पर खड़ा रहा तो तुम भी मुझे देख सकोगे, फिर उन के रब ने जब उस पर रौशनी डाली तो तजल्ली (प्रकाश) ने उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े, फिर जब होश में आये तो कहा कि बेशक आप पाक हैं, मैं आप से तौबा करता हूँ और मैं सब से पहले आप पर ईमान लाता हूँ।

१४४. हुक्म हुआ कि हे मूसा! मैंने अपनी रिसालत और अपने साथ कलाम से दूसरे लोगों पर तुम्हें फ़ज़ीलत दी है तो जो कुछ मैं ने तुम को अता किया है उसे ले लो और शुक्र करो।^१

१४५. और हम ने कुछ तख़्तियों पर हर तरह की नसीहतें और हर चीज़ की तफ़सील उन को लिख कर दिया,^२ तुम उनको पूरी ताकत से पकड़ लो, और अपनी क्रोम को हुक्म करो कि उन के अच्छे हुकमों पर अमल करें, अब बहुत जल्द तुम लोगों को उन फ़ासिकों की जगह दिखाता हूँ।^३

وَلَمَّا جَاءَ مُوسَىٰ لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ رَبِّ أَرِنِي أَنظُرَ إِلَيْكَ ۗ قَالَ لَنْ نَرِيَنَّكَ وَلَكِن نُّظَرُ إِلَى الْجِبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ نَرِيَنَّكَ فَلَمَّا حَتَّىٰ رَبُّهُ لِلْجِبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَىٰ صَعِقًا فَلَمَّا أَتَىٰ قَالَ سُبْحَانَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ (143)

قَالَ يُمُوسَىٰ إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَتِي وَبِكَلامِي ۗ فَخُذْ مَا آتَيْتُكَ وَكُن مِنَ الشَّاكِرِينَ (144)

وَكُنْتُمْ لَهُ فِي الْأَوَّلِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۗ فَخُذْ مَا بَعَثْنَا بِأَمْرٍ وَمَا يَأْخُذُ وَأَبَاحْصِنَهَا سَأُورِيكُمْ دَارَ الْفَاسِقِينَ (145)

^१ यह अल्लाह तआला से कलाम का दूसरा मौका था जिससे हज़रत मूसा को सम्मानित (सराफ़राज़) किया गया। इस से पहले जब आग लेने गये थे तो अल्लाह तआला से बातचीत हुई थी और रिसालत अता की गई थी।

^२ यानी तौरात तख़्तियों की बक़ल में अता की गयी थी, जिस में उन के लिए धर्मिक आदेश थे, कहने और करने के और शिक्षा-दीक्षा (तालीम व नसीहत) का पूरा बयान था।

^३ دار (दार) से मुराद या तो नतीजा यानी तवाही है, या इस से मुराद यह है कि ज़ालिमों के देश पर तुम्हें राज़ दूंगा, और इस से मुराद सीरिया देश है जिस पर उस बक्त अमालिका का राज्य था जो अल्लाह के नाफ़रमान थे।

१४६. मैं ऐसे लोगों को अपनी आयतों से विमुख ही रखूंगा जो दुनिया में तकव्वुर करते हैं, जिस का उन्हें कोई हक नहीं, अगर वह सभी निशानियाँ (लक्षण) देख भी लें तब भी उन पर यक़ीन नहीं करेंगे, और अगर वे सच्चे रास्ते को देख भी लें तो उसे अपना रास्ता न बनायें, और अगर वे गुमराही को देख लें तो उसको अपना रास्ता बना लें, यह इस वजह से है कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उन से माफ़िल रहे।¹

१४७. और वह लोग जिन्होंने हमारी आयतों और प्रलय (आखिरत) के आने को झुठलाया, उन के सब अमल बेकार हो गये, उन्हें वही यातना दी जायेगी जो ये करते थे।²

१४८. और मूसा की क्रौम ने उन के बाद अपने आभूषणों से एक बछड़ा बना कर देवता बना लिया जो एक ढाँचा था जिस में एक आवाज़ थी, क्या उन्होंने यह न देखा कि वह उन से बात नहीं करता था और न उन को कोई रास्ता बताता था, उसको उन्होंने (देवता) बना लिया और बड़ी नाइंसाफी का काम किया।³

سَأَصْرِفُ عَنْ آيَاتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِنْ يَرَوْا كَلِمَةً لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا وَإِنْ يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿١٤٦﴾

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَإِقَاءِ الْآخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْيُنُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٧﴾

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَى مِنْ بَعْدِهِ مِنْ خُلُوفِهِمْ عِجْلًا جَسَدًا آلِهَةً حَورَاءً لَمُورًا يَرَوْنَ أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا مَاتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ ﴿١٤٨﴾

¹ यह इस बात का सबब बताया जा रहा है कि लोग सवाब के बदले गुनाह और सच के मुक़ाबिल झूठ का रास्ता क्यों ज़्यादा अपनाते हैं? यह वजह है अल्लाह की आयतों को झुठलाने, और उन से असावधानी (मफ़लत) और मूह मोड़ने का। यह हर समाज में आम तौर से पाया जाता है।

² इस में अल्लाह की आयतों को झुठलाने और आखिरत को कुबूल न करने वालों का अंजाम बताया गया है, चूँकि उन के आमाल की वुनिय्याद इंसाफ़ और सच्चाई पर नहीं, बल्कि जुल्म और झूठ है, इसलिए उन के आमालनामा में गुनाह ही गुनाह होगा, जिसका अल्लाह तआला के यहाँ कोई मूल्य न होगा। हाँ, उनको इस बुराई का बदला वहाँ जरूर दिया जायेगा।

³ मूसा عليه السلام जब चालीस रातों के लिए तूर पहाड़ पर गये, तो सामरी नाम के इंसान ने सोने के आभूषण जमा करके एक बछड़ा तैयार किया, जिस में उस ने जिवील के घोड़े के खुर की मिट्टी भी, जो उस ने संभाल कर रखी हुई थी उस में शामिल कर दी, जिस में अल्लाह तआला ने जिन्दगी का असर रखा था, जिसके सबब बछड़ा कुछ-कुछ बिल की आवाज़ निकालता था।

१४९. और जब लज्जित हुए^१ और मालूम हुआ कि हकीकत में वे लोग भटकावे में पड़ गये तो कहने लगे कि अगर हमारा रब हम पर रहम न करे और हमारे गुनाह माफ न करे तो हम बिल्कुल ही नुकसान पाने वालों में हो जायेंगे।

१५०. और जब मूसा अपनी क्रौम की ओर वापस आये, गुस्सा और गम में डूबे हुए तो कहा कि तुम ने मेरे बाद यह वड़ी बुरी जानशीनी की है, क्या अपने रब के हुक्म से पहले ही तुम ने जल्दबाजी की, और जल्दी से तख्तियाँ एक तरफ डाल दी, और अपने भाई (हारून) का सिर पकड़ कर अपनी ओर घसीटने लगे। (हारून ने) कहा कि हे मेरी माँ से जन्मे (माजाई)^२ इन लोगों ने मुझे कमजोर सभझा और करीब था कि मेरा कत्ल कर दें तो तुम मुझ पर दुश्मनों को न हंसवाओ और मुझे इन जालिमों के दर्जे में न गिनो।

१५१. (मूसा ने) कहा ऐ मेरे रब! मेरी गलतियों को माफ कर और मेरे भाई की भी और हम दोनों को अपनी रहमत में दखिल कर ले और तू रहम करने वालों में सब से ज्यादा रहम करने वाला है।

१५२. बेशक जिन लोगों ने बछड़े की पूजा की है, उन पर बहुत जल्द उन के रब की तरफ से गुस्सा और अपमान इस दुनियावी जिन्दगी में ही पड़ेगा, और हम झूठा इल्जाम लगाने वालों को ऐसी ही सजा देते हैं।

وَلَمَّا سَوَّطْنَا فِي يَدَيْهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ صُوتُوا
قَالُوا الْيَهُونَ لِمَ يَرْحَمُنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَ
مِنَ الْخَيْرِينَ ﴿١٤٩﴾

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا
قَالَ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ خَلَفْتُمُونِي مِن بَعْدِي وَأَعْبَدْتُمُ
أُمْرًا دَرَكُمْ وَاللَّيْلِ وَالنَّوْحِ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ
يَحْزَنًا لِّبِهِ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضَعُّونِي
وَكَاذِبًا يَفْتَكِرُونَ ﴿١٥٠﴾ فَلَا تُحْسِبْ فِي الْإِعْدَاءِ
وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٥١﴾

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِإِخْوَتِي وَادْخُلْنَا فِي
رَحْمَتِكَ ۖ وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿١٥١﴾

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْإِجْلَ سَيَأْتِيهِمْ عَذَابٌ مِّن
رَّبِّهِمْ وَذَلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَكَذَلِكَ
نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿١٥٢﴾

^१ سقط في أيديهم यह एक मुहावरा है, जिसका मतलब शर्मिन्दा होना है, यह लज्जा मूसा के वापसी के बाद हुई जब उन्होंने आकर इस पर बुरा-भसा कहा और डांटा, जैसा सूर: ताहा में आयेगा, यहाँ इसे इसलिए पहले लाया गया है कि उनकी कथनी-करनी इकट्ठा हो जाये। (फतहुल कदीर)

^२ हजरत हारून और मूसा सगे भाई थे, लेकिन यहाँ हजरत हारून ने "माजाई" इसलिए कहा कि इन लफ्जों में प्रेम और कोमलता का पहलू ज्यादा है।

१५३. और जिन लोगों ने पाप के काम किये फिर वह उनके बाद उन से क्षमा मांग लें और ईमान ले आयें तो तुम्हारा रब उस माफी के बाद गुनाह माफ कर देने वाला रहीम है।

१५४. और जब मूसा का गुस्सा शान्त हुआ तो उन तख्तियों को उठा लिया, उन के लेखों में उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते थे, हिदायत और रहमत थी।

१५५. और मूसा ने सत्तर आदमी अपनी क्रौम में से हमारे मुकर्रर वकत के लिए मुतखब किये, तो जब उनको भूकम्प ने आ पकड़ा तो (मूसा) दुआ करने लगे कि हे मेरे रब ! अगर तुझ को यह मंजूर होता तो इस से पहले ही इनको और मुझ को नाश कर देता, क्या तू हम में से कुछ मूर्खों के सबब सब को नाश कर देगा? यह घटना केवल तेरी तरफ से एक इम्तेहान है, ऐसे इम्तेहानों से जिसे तू चाहे भटकावे में डाल दे और जिसको चाहे हिदायत दे दे, तू ही हमारा संरक्षक (निगरा) है, अब हमें माफ कर और रहम कर और तू माफ करने वालों में सब से ज्यादा माफ करने वाला है।

१५६. और हम लोगों के नाम दुनिया में भी भलाई (पुण्य) लिख दे और आखिरत में भी, हम तेरी तरफ ध्यान केन्द्रित करते हैं, (अल्लाह तआला) कहता है कि मैं अपना अजाब उसी पर नाज़िल करता हूँ जिस पर चाहता हूँ, और मेरी रहमत के दायरे में हर चीज है, तो वह रहमत उन लोगों के नाम जरूर लिखूंगा, जो अल्लाह से डरते हैं और जकात (धर्मदान) देते हैं और जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं।

وَالَّذِينَ عَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِهَا
وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٥٣﴾

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَابَ
وَفِي نُسُخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ
يَرْهَبُونَ ﴿١٥٤﴾

وَاخْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلًا رِيشِقَاتِنَاءَ
فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ
لَهَلَكْتُم مِّن قَبْلُ وَإِنِّي إِذَا أَتَيْتُم بِآيَاتِنَا لَتَنَّاهُ
سُقَاهَا وَمَتَاءَ إِنَّ هِيَ إِلَّا رِيحٌ تَنفُثُ بِهَا
مِن نُّفْسَاءٍ وَتَهْدِي مَن تَشَاءُ إِنَّتَ وَلِيُّنَا
فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ ﴿١٥٥﴾

وَأَكْتُبْ لَنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ
إِنَّا هُنَا إِنَّا إِلَيْكَ مَقَالٌ عَدُوٌّ أَصِيبُ بِهِ
مِنَ أَشْيَاءِ وَرَحْمَتِي رَوِيَعَتْ كُلَّ شَيْءٍ
فَسَاكُنِيهَا الَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٦﴾

1 तौरात को भी कुरआन की तरह, उन्हीं लोगों के लिए हिदायत और रहमत कहा गया है जो अल्लाह से डरते हैं, क्योंकि खास फायदा आसमानी किताबों का उन्हीं लोगों को होता है, दूसरे लोग तो चूँकि अपने कानों को सच सुनने से, आँखों को सच्चाई देखने से बन्द किये होते हैं, इसलिए वह रहमत से आम तौर से लाभ उठाने से महरूम ही रहते हैं।

१५७. जो लोग ऐसे अनपढ़ रसूल (दुनियावी आलिमों द्वारा शिक्षा न प्राप्त की हो) नबी की इत्तेवा करते हैं, जिनको वह लोग अपने पास तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं,^१ वह उन को नेकी के कामों का हुक्म करते हैं और बुराई के कामों से रोकते हैं,^२ और पाक चीजों को हलाल (जायेज) बताते हैं और नापाक (अशुद्ध) चीजों को हराम (नजायेज) बताते हैं, और उन लोगों पर जो भार और गले के फदे थे उन को दूर करते हैं, इसलिए जो लोग इस (नबी) पर ईमान लाते हैं और उनकी ताईद करते हैं और उनकी मदद करते हैं और उस नूर की इत्तेवा करते हैं जो उन के साथ भेजा गया है, ऐसे लोग पूरी कामयाबी हासिल करने वाले हैं।

१५८. आप कह दीजिए कि हे लोगो! मैं तुम सभी की तरफ उस अल्लाह का भेजा हुआ हूँ जिसका मुल्क सभी आकाशों और धरती में है, उस के सिवाय कोई भी इवादात के लायक नहीं, वही जिन्दगी अता करता है और वही मौत अता करता है, इसलिए अल्लाह पर और उसके रसूल अनपढ़ नबी पर यकीन करो जो कि अल्लाह पर और उस के हुक्म पर ईमान रखते हैं और उनकी इत्तेवा करो ताकि तुम सच्चे रास्ते पर आ जाओ।

१५९. और मूसा की क़ौम में एक उम्मत ऐसी भी है जो हक के ऐतबार से ही हिदायत करती है और उस के ऐतबार से ही इसाफ करती है।^३

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَةِ وَالْإِنْجِيلِ يَا أُولَئِهِمْ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ ۗ أُولَئِكَ هُمُ الْبَالِغُونَ ﴿١٥٧﴾

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جِيئًا بِالْبَيِّنَاتِ لَكُمْ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ لَآ إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۗ فَأَمَتُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۗ إِنِّي الرَّسُولُ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ ۗ وَالْبُحُورَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٥٨﴾

وَمِن قَوْمِ مُوسَى إِمَّةٌ يَهْتَدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْبُدُونَ ﴿١٥٩﴾

^१ यह आयत भी इस बात को बाज़ेह करने के लिए क़तई दलील रखती है कि मोहम्मद ﷺ की रिसालत पर ईमान लाये बिना आखिरत की कामयाबी मुमकिन नहीं, और ईमान वही है जिसका तफसीली वयान मोहम्मदुरसूलुल्लाह ﷺ ने किया है, इस आयत से भी "सर्व धर्म संभव" (बहदते अदयान) की जड़ कटती है।

^२ भला वह है जिसे शरीअत ने भला कहा, और बुरा वह है जिसे शरीअत ने नाजायेज किया है।

^३ इस से मुराद वही कुछ लोग हैं जो मुसलमान हो गये थे, अब्दुल्लाह बिन सलाम वगैरह رضي الله عنهم

१६०. और हम ने उनको बारह परिवारों में बाँट कर सब की अलग-अलग उम्मत मुकर्र कर दिया, और हम ने मूसा को हुक्म दिया जबकि उन के समुदाय (कौम) ने उन से पानी मांगा कि अपनी छड़ी को अमुक पत्थर पर मारो, फिर तुरन्त उस में से बारह चश्मे बह निकले, हर व्यक्ति ने अपने पानी पीने की जगह जान लिया, और हम ने उन पर बादलों की छाया की, और उन को तुरजबीन और वटेरें पहुँचायी कि खाओ पाक मज्जेदार चीजें, जो कि हम ने तुम को अता की है और उन्होंने हमारा कोई नुकसान नहीं किया लेकिन अपना ही नुकसान करते थे।

१६१. और जब उनको हुक्म दिया गया कि तुम लोग उस बस्ती में जाकर रहो और खाओ, उस से जिस जगह पर तुम रुचि रखो और मुँह से यह कहते जाना कि माफ़ी माँगते हैं और झुक-झुक कर दरवाजे से दाखिल होना, हम तुम्हारी गलतियाँ माफ़ कर देंगे, जो भलाई करेंगे उनको इस से ज्यादा अता करेंगे।

१६२. तो बदल डाला उन जालिमों ने एक-दूसरे कौल से जो खिलाफ था उस कौल के जिस का उन्हें हुक्म दिया गया था, इस पर हम ने आकाश से एक मुसीबत भेजी, इस सबब कि वे झुलम किया करते थे।

وَقَطَعْنَهُمْ اثْنَيْ عَشَرَ نَبِطًا وَأَصْحَابًا
إِلَىٰ مَوْتَىٰ إِذِ اسْتَسْقَىٰ قَوْمُهُ بِنِ
بِعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ
عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرِبَهُمْ وَكَلَّلْنَا
عَلَيْهِمُ الْقَامَ وَالزَّلْنَا عَلَيْهِمُ اللَّيْلَ وَالنَّوْءَ
كُلُوا مِنْ كَيْبَتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِنْ
كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٦٠﴾

وَإِذْ قِيلَ لَهُمْ اسْكُنُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا
حَيْثُ شِئْتُمْ وَتَوَلَّوْا حِطَّةً وَادْخُلُوا الْبَابَ
سُجَّدًا تُغْفِرُ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّيْلَ وَالنَّوْءَ
الْمَحِينِينَ ﴿١٦١﴾

قَبَلًا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي
قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِنَ السَّمَاءِ
بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٦٢﴾

1 बहुवचन (जभा) है का, और इस का मतलब पौत्र है, यहाँ अस्वात बंधों के लिए इस्तेमाल किया गया है, यानी हजरत याकूब के बारह बेटों से बारह बंध धरती पर बने, हर बंध पर अल्लाह तआला ने एक-एक निरीक्षक (निगरा) भी तैनात किया था और कह दिया था (وَبَنَّا مِنْهُمْ اثْنَيْ عَشَرَ نَبِطًا) (सूर: अल-मायद:-१२) यहाँ अल्लाह तआला उन बारह उम्मतों के कुछ-कुछ फ़ज़ीलतों में आपसी इस्तेमाल होने के सबब उन के अलग-अलग उम्मत होने की चर्चा एहसान जताने के लिए कर रहा है।

१६३. और आप उन लोगों से उस नागरिको का जो समुन्दर के करीब बसे थे उस वक्त की हालत पूछिये जब कि वह शनिवार के दिन के बारे में हुदूद लांघ रहे थे, जब कि उन के शनिवार के दिन उनको मछलियाँ जाहिर हो-हो कर उनके सामने आती थी, और जब शनिवार का दिन न होता तो उन के सामने न आती थी, हम उनका इस तरह इम्तेहान ले रहे थे, इस सबब से कि वे हुक्मों की नाफरमानी करते थे।

१६४. और जबकि उन में से एक गुट ने यह कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत करते हो जिनको अल्लाह पूरी तरह से तबाह करने वाला है, या उन को सख्त सजा देने वाला है, उन्होंने जवाब दिया कि तुम्हारे रब के सामने तौबा करने के लिए और इसलिए कि शायद ये डर जायें।

१६५. तो जब वह उस को भूल गये जिस को उन को याद दिलाया जाता रहा तो हम ने उन लोगों को तो बचा लिया जो उन को बुरी बातों से रोकते थे, और उन लोगों को जो सुलम करते थे एक सख्त अजाब में पकड़ लिया, इस सबब से कि वे नाफरमानी करते थे।

१६६. यानी जब वह जिस काम से मना किया गया था उस में सीमा को पार कर गये, तो हम ने उनको कह दिया कि तुम अपमानित (जलील) बन्दर बन जाओ।

१६७. और वह वक्त याद रखना चाहिए कि आप के रब ने बता दिया कि वह इन (यहूदियों) पर क्रयामत तक ऐसे इंसान को मुसल्लत रखेगा जो इन लोगों को सख्त सजा के जरिये दुख पहुँचाता रहेगा, बेशक आप का रब जल्द ही

وَسَأَلَهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةً
الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ
جِيئَتْ لَهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ
لَا تَأْتِيهِمْ كَذَلِكَ تَبْلُوهُمْ بِمَا كَانُوا
يَفْسُقُونَ (163)

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا
إِنَّهُمْ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا
قَالُوا مَعذِرَةٌ إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ (164)

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنْجَبْنَا الَّذِينَ
يَتَّقُونَ عَنِ السَّوْءِ وَآخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا
بِعَذَابٍ بَهِيمٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ (165)

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا
قِرَدَةً خَاسِئِينَ (166)

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لِيُبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ
مَنْ يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ
الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَحِيمٌ (167)

1 उस बस्ती के निर्धारण (तईअन) में इडिलेलाफ है, कोई उस का नाम ईला, कोई तबरीया, कोई ईलिया और कोई सीरिया की कोई बस्ती जो समुद्र के करीब थी बतलाता है। सुफरिसरो का ज्यादातर भुक्कव ईला की तरफ है जो मदन और तूर पहाड़ के बीच कुलजुम सागर के किनारे पर आबाद थी।

अजाब देने वाला है, और बेशक वह हकीकत में बहुत माफ करने वाला और रहीम है।¹

१६८. और हम ने संसार में उन के (विभिन्न) गुट कर दिये, कुछ उन में नेक थे और कुछ दूसरे अखलाक के थे, और हम उन को खुशहाली और बदहाली के जरिये उनका इम्तेहान लेते रहे कि शायद वे लौट जायें।²

१६९. फिर उनके बाद ऐसे लोग उनके वारिस हुए कि किताब को उन से हासिल किया, वह इस हकीर दुनिया का थोड़ा-सा भी धन ले लेते हैं और कहते हैं कि हमें जरूर नजात मिल जायेगी, अगरचे उन के पास वैसा ही धन-दौलत आने लगे तो उसे भी ले लेंगे, क्या उन से इस किताब के इस मजमून का वादा नहीं लिया गया कि अल्लाह की तरफ सच बात के सिवाय दूसरे कौल को सम्बन्धित न करें? और उन्होंने इस किताब में जो कुछ था उसको पढ़ लिया, और आखिरत का घर उन लोगों के लिए अच्छा है जो अल्लाह का डर रखते हैं, फिर क्या तुम नहीं समझते।

१७०. और जो लोग किताब पर अडिग हैं और नमाज कायम करते हैं, हम ऐसे लोगों का जो खुद का सुधार कर लें अब बेकार न करेंगे।

१७१. और वह वक्त भी याद करो जब हम ने पहाड़ को छतरी के समान उन के ऊपर लटका दिया और उन को यकीन हो गया कि अब उन पर छिरा, और कहा कि हम ने जो किताब तुम को दिया है उसे मजबूती से कुबूल

وَقَطَعْنَهُمْ فِي الْأَرْضِ أَمْسَاءَ مِنْهُمْ الْمُضِلُّونَ
وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ وَوَلَّوْنَهُمْ بِالْحَسَنَاتِ
وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٦٨﴾

فَخَلَفَ مِنْ بَدْوٍ مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيُّوا الرِّكْبِ
يَأْخُذُونَ عَرَصَ هَذَا الْأَدْنَىٰ وَيَقُولُونَ
سَيَغْفِرَ لَنَا وَإِنْ يَأْتِهِمْ عَرَصٌ مِثْلُهُ
يَأْخُذُوهَا مَا لَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِثْلُهَا
الرِّكْبِ إِنْ لَا يَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْبُحَىٰ
وَدَرَسُوا مَا فِيهِ وَالذَّارُ الْآخِرَةُ خَيْرٌ
لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦٩﴾

وَالَّذِينَ يَمْتَسِكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
إِنَّا لَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ ﴿١٧٠﴾

وَأذِّنْتَنَّا الْجِبَلِ فَوَقَّعَهُمْ كَأَنَّهُ ظِلَّةٌ
وَقَطَّعْنَاهُ أَهْلَهُ وَأَفْجَعُ بِهِمْ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُمْ
بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٧١﴾

¹ यानी अगर उन में से कोई माफी मांग कर मुसलमान हो जायेगा तो वह इस जिल्लत और सहूलत अजाब से बच जायेगा।

² इस में यहूदियों के कई गुटों में बंट जाने और उन में कुछ के नेक होने की चर्चा है, और उनकी दोनों तरह से इम्तेहान लेने का बयान है कि शायद वह अपनी करतूतों से रुक जायें और अल्लाह की तरफ पलट आयें।

करो और याद रखो जो हुक्म इस में है, उस से उम्मीद है कि तुम (अल्लाह से) डरने लगे।¹

१७२. और जब आप के रब ने आदम की औलाद की पीठों से उनकी औलाद को निकाला और उन से उन ही के बारे में वादा लिया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ? सब ने जवाब दिया, क्यों नहीं, हम सभी गवाह हैं, ताकि तुम लोग क़्यामत के दिन यह न कहो कि हम तो इस से सिर्फ अन्जान थे।

१७३. या यह कहो कि सब से पहले शिर्क तो हमारे बजुर्गों ने किया और हम उन के वाद उन के वंश में हुए, तो क्या उन ग़लत लोगों के कुकर्मों पर तू हमें तबाही में झोक देगा।

१७४. और हम इसी तरह आयतों को साफ-साफ बयान कर देते हैं ताकि वे वापस आ जायें।

१७५. और उन लोगों को उस व्यक्ति की हालत पढ़ कर सुनाईये कि जिस को हम ने अपनी निशानिया अता की, फिर वह उन से बिल्कुल निकल गया, फिर बैतान उस के पीछे लग गया, इस तरह वह भटके हुए लोगों में शामिल हो गया।²

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنْ بُنَىٰ أَدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَلَسْتَ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ ۗ شَهِدْنَا ۗ أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَرَضِينَ ﴿١٧٢﴾

أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِنْ بَعْدِهِمْ ۗ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ ﴿١٧٣﴾

وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٧٤﴾

وَإِثْلَ عَلَيْهِمْ نَبِإُ الذِّبْرِ الَّذِي أُتَيْنَاهُ أَنبَاءَنَا ۖ فَالْسَّلَاحُ مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغُورِينَ ﴿١٧٥﴾

¹ यह उस वक़्त का वाक़ेआ है जब हज़रत मूसा उन के पास तौरात लाये और उसके हुक्म उनको सुनाये, तो उन्होंने अपने अख़लाक के ऐतवार से उन के ऊपर अमल करना क़बूल न किया और नाफ़रमानी की, जिस के सबव अल्लाह तआला ने उन के सिर पर पहाड़ ला खड़ा किया कि तुम पर गिरा कर कुचल दिया जायेगा, जिस से डर कर उन्होंने वादा किया कि तौरात के हिसाब से काम करेंगे।

² मुफ़सिरो ने इसे एक ख़ास इंसान से सम्बन्धित माना है, जिसे किताबे इलाही का इल्म हासिल था, लेकिन वह संसार और बैतान का पैरोकार बन कर गुमराह हो गया, लेकिन उस के ख़ास करने में कोई सुवूत नहीं, इसलिए उस के तईअन की कोई ज़रूरत भी नहीं है।

१७६. और अगर हम चाहते तो उस को इन निशानियों के सबब ऊँचे पद पर आसीन कर देते, लेकिन वह तो दुनिया के माया मोह में पड़ गया और अपनी आरजूओं की पैरवी करने लगा तो उस की हालत कुत्ते की तरह हो गयी कि अगर तुम उस पर हमला करो तब भी हाँफे या उसको छोड़ दो तब भी हाँफे, यही हालत उन लोगों की है जिन्होंने हमारी निशानियों को भूठलाया, अतः आप इस हालत को बयान कर दीजिए, शायद वह लोग कुछ सोचें।

१७७. उन लोगों की हालत भी बुरी हालत है जो हमारी आयतों को झूठ मानते हैं, और अपना नुकसान करते हैं।

१७८. जिस को अल्लाह तआला खुद हिदायत देता है वही हिदायत पर होता है, और जिन्हें अल्लाह गुमराह कर दे वही घाटे में है।

१७९. और हम ने ऐसे बहुत से जिन्न और इंसान जहन्नम के लिए पैदा किये हैं, जिन के दिल ऐसे हैं जिन से नहीं समझते, और जिन की आँखें ऐसी हैं जिन से नहीं देखते, और जिन के कान ऐसे हैं जिन से नहीं सुनते। यह लोग चौपाये (पशु) की तरह हैं, बल्कि उन से भी ज्यादा भटके हुए हैं,^१ यही लोग गाफिल हैं।

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهَا بِهَا وَلَكِنَّهَا أَخْلَدَتْ إِلَى الْأَرْضِ
وَأَتَّبَعَ هَوَاهُ - فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ الْكَلْبِ - إِنْ
تَحِيلَ عَلَيْهِ يَلْهَثَ أَوْ تَتْرُكُهُ يَلْهَثُ
ذَلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَاقْصُصْ
الْقِصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٧٦﴾

سَاءَ مَثَلًا لِّلْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
وَأَنفُسُهُمْ كَانُوا يَظْلِمُونَ ﴿١٧٧﴾

مَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِىَّ وَمَنْ
يُضِلِّ اللَّهُ فَمَا لِلَّهِ هُمْ الْخَيْرُونَ ﴿١٧٨﴾

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ
وَإِلَٰئِيسَ ۚ لَهُمْ قُلُوبٌ لَا يَفْقَهُونَ بِهَا
وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَا يُبْصِرُونَ بِهَا ۚ وَلَهُمْ
أُذُنٌ لَا يَسْمَعُونَ بِهَا ۚ أُولَٰئِكَ كَالْإِنْعَامِ
بَلْ هُمْ أَضَلُّ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١٧٩﴾

^१ थकान या प्यास के सबब जबान निकालने को कहते हैं, कुत्ते की यही आदत होती है कि उसे डांटो-डपटो या उसकी हालत पर छोड़ दो, दोनों हालतों में यह भौकने से नहीं सकता, इसी तरह इसकी यह भी आदत है कि वह पेट भर छाये हो या भूखा हो, तंदुरुस्त हो या रोगी, थका हुआ हो या चुस्त, हर हालत में जबान निकाले हाँफता रहता है, यही हालत ऐसे इंसान की है जिसे नसीहत दो या न दो, उसकी हालत एक ही रहेगी और दुनियावी धन-दौलत के लिए लार टपकती रहेगी।

^२ यानी दिल, आँख और कान अल्लाह तआला ने इसलिए अता की है कि इंसान इन से फायदे उठाते हुए अपने रव को समझे, उसकी निशानियों को देखे और सच बात को ध्यानपूर्वक सुने, लेकिन जो इंसान इन चीजों से यह काम नहीं लेता, वह उन से फायदेमंद न होने के सबब जानवरों की तरह है, बल्कि उन से भी ज्यादा भटका हुआ है, इसलिए कि जानवर फिर भी कुछ अपने फायदे और नुकसान की समझ रखते हैं, क्योंकि वे फायदेमंद चीजों से फायदा

१८०. और अच्छे नाम अल्लाह के लिए ही हैं, इसलिए इन नामों से अल्लाह ही को पुकारो, और ऐसे लोगों से सम्बन्ध भी न रखो जो उस के नामों में टेढ़ापन करते हैं, उन लोगों को उन के किये की सजा जरूर मिलेगी।

१८१. और हमारी मखलूक में एक उम्मत ऐसी भी है जो हक के साथ हिदायत करते हैं और उसी के मुताबिक इसाफ करते हैं।

१८२. और जो लोग हमारी आयतों (चिन्हों) को झूठलाते हैं हम उनको धीरे-धीरे (पकड़ में) ऐसे लिये जा रहे हैं कि उन को पता भी नहीं।

१८३. और उन को मौका देता हूँ, बेशक मेरा तरीका बड़ा मजबूत है।

१८४. क्या उन लोगों ने इस बात पर ख्याल नहीं किया कि उन के साथी को तनिक भी जुनून नहीं, वह तो सिर्फ एक साफ डराने वाले हैं।

१८५. और क्या उन लोगों ने ख्याल नहीं किया आकाशों और धरती के लोक में और दूसरी चीजों में, जो अल्लाह ने पैदा की हैं और इस बात में कि मुमकिन है कि उनकी मौत करीब ही आ पहुँची हो, फिर उस (कुरआन) के बाद कौन सी-बात पर ये लोग ईमान लायेंगे?

وَالَّذِينَ الْأَسْمَاءِ الْحُسْنَىٰ قَادِعُونَ بِهَا
وَدَرُوا الْوَيْتَانَ يُجِدُونَ فِي أَسَابِغٍ
سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٨٠﴾

وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةً يَهْتَدُونَ بِالْحَقِّ
وَبِهِ يُعْذِرُونَ ﴿١٨١﴾

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ
مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٢﴾

وَأَمِلْ لَهُمُ رَانَ كَيْدِي مَسِينٌ ﴿١٨٣﴾

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا لِمَا يَصَاحِبُهُمْ مِنْ جَحْدٍ
إِنْ هُوَ إِلَّا تَنْزِيلٌ مِّنِّي ﴿١٨٤﴾

أَوَلَمْ يَنْظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ وَأَنْ عَسَىٰ أَنْ يَكُونَ
قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ
يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٥﴾

उठाते हैं और नुकसानदह चीजों से दूर रहते हैं, लेकिन अल्लाह तआला की हिदायत से गुमराह इंसान के अन्दर तो यह समझ भी नहीं होती कि उस के लिए फायदेमंद चीजें कौन-सी हैं और नुकसानदह चीजें कौन-सी, इसीलिए अगले कलिमे में उन्हें बेखबर कहा गया है।

1 (साहिब) से मुराद आखिरी रसूल मुहम्मद ﷺ हैं जिनको मुदिरक कभी जादूगर कभी पागल (نعوذ بالله) कहते थे, अल्लाह तआला फरमाता है कि यह तुम्हारे ख्याल न करने का नतीजा है, वह तो हमारा पैगम्बर है, जो हमारा हुक्म पहुँचाने वाला और उन से बेखबर रहने वालों और नाफरमानी करने वालों को डराने वाला है।

2 हदीस से यहाँ मुराद कुरआन मज्बूद है यानी नबी ﷺ के बाखबर करने और खुबखबरी देने और कुरआन करीम के बाद भी अगर यह ईमान न लायें तो इन से बढ़कर उनको डराने वाली चीज

१८६. जिसको अल्लाह (तआला) भटका दे उसे कोई रास्ता पर नहीं ला सकता, और अल्लाह (तआला) उन को उन की गुमराही में भटकते छोड़ देता है।

१८७. यह लोग आप से क्रयामत के 'बारे में सवाल करते हैं कि वह कब आयेगी। आप कह दीजिए कि इसका इल्म सिर्फ मेरे रब के पास ही है, इस को इस के वक़्त पर सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई दूसरा जाहिर न करेगा, वह आकाशों और धरती की बहुत बड़ी (घटना) होगी, वह तुम पर अचानक आ पड़ेगी, वह आप से इस तरह पूछते हैं जैसाकि आप उस की खोज कर चुके हैं। आप कह दीजिए कि उस का इल्म खास तौर से अल्लाह ही के पास है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

१८८. आप कह दीजिए कि खुद मैं अपनी जात खास के लिए किसी फ़ायदे का हक़ नहीं रखता और न किसी नुक़सान का, लेकिन इतना ही जितना कि अल्लाह ने चाहा हो, और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता तो मैं बहुत से फ़ायदे हासिल कर लेता, और कोई नुक़सान मुझे न पहुँचता,^१ मैं तो सिर्फ़ डराने वाला और खुशख़बरी देने वाला हूँ, उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।

مَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿١٨٦﴾

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُوسِعَاهَا
قُلْ إِنشَاءَ عَلِيمًا غَدَّتْ رَيْبًا لَا يُحِيطُ بِهَا لَوْ قَرَّبَهَا
إِلَّا هُوَ تَنَزَّلَتْ فِي الشَّمُوبِ وَالْأَرْضِ
لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ۖ يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ
حَافِيٌّ عَنْهَا قُلْ إِنشَاءَ عَلِيمًا غَدَّتْ رَيْبًا
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨٧﴾

قُلْ لَا أَمْرٌ لِي بِمَنْ يُضِلُّ اللَّهَ وَلَا ضَرَّاءَ لِي مِمَّا شَاءَ
اللَّهُ ۗ وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبِ لَا سْتَلْزَمْتُ مِنَ
الْخَيْرِ ۗ وَمَا مَسَّنِيَ الشُّوْءُ إِن أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ
وَأَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١٨٨﴾

दूसरी क्या होगी जो अल्लाह की तरफ़ से उतरे और फिर यह उस पर ईमान लायें?

^१ سَاعَة (साअः) का मतलब है (क्षण या पल) क्रयामत को साअः इसलिए कहा गया है कि यह अचानक इस तरह आ जायेगी कि यह सारी दुनिया एक पल में तहस-नहस हो जायेगी या हिसाब की जल्दी के बुनियाद पर क्रयामत के वक़्त को साअत से तुलना की गयी है।

^२ यह आयत इस बात के लिए कितनी वाज़ेह है कि नबी ﷺ ग़ैब जानने वाले नहीं, ग़ैब जानने वाला केवल अल्लाह तआला खुद है, लेकिन जुल्म और अज़ान की इन्तिहा है कि इस के बावजूद दीन में निदअत वाले आप ﷺ को ग़ैब जानने वाले साबित करने की नाकाम काशिष करते हैं।

१८९. वह (अल्लाह तआला) ऐसा है कि जिस ने तुम्हें सिर्फ एक जान से पैदा किया, और उसी से 'उसका जोड़ा बनाया,' ताकि वह अपने उस जोड़े से सुकून हासिल करे,^१ फिर पति ने पत्नी से नजदीकी की, तो उसे गर्भ रह गया, हल्का-सा, फिर वह उसको लेकर चलती फिरती रही, जब वह भार को महसूस करने लगी, तो पति-पत्नी दोनों अल्लाह से जो उनका मालिक है दुआ करने लगे कि अगर तूने हम को सहीह सालिम औलाद अता कर दी तो हम बहुत शुक्र अदा करेंगे।^२

१९०. तो जब अल्लाह ने दोनों को सहीह सालिम (औलाद) अता किया तो अल्लाह की अता में वह दोनों अल्लाह का साभ्नी ठहराने लगे,^३ इसलिए अल्लाह पाक है उनके शिर्क करने से।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ
وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا
فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلٌ خَافٍ فَهَرَّتْ
بِهِ فَلَمَّا أَثْقَلَتْ دَعَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ
آتَيْتَنَا صَالِحًا لَنُكَفِّرَنَّ مِنَ الشُّكْرِينَ (189)

فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا
آتَاهُمَا فَتَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ (190)

^१ इस से मुराद हजरत हव्वा है, जो हजरत आदम की बीवी बनी, उनकी पैदाईश हजरत आदम से हुई, जिस तरह से جنها के सर्वनाम (जमीर) से, जो एकवचन जाहिर करता है, बाजेह है। (तफसील के लिए देखिए सूर: निसा, आयत नं-१ की तफसीर)

^२ यानी एक-दूसरे से सुख और सुकून हासिल करे, इसलिए कि एक जिनस अपने ही जिनस से ज्यादा करीब और मुहब्बत कर सकती है, जो सुकून हासिल करने के लिए जरूरी है, नजदीकी के बिना यह मुमकिन ही नहीं है।

यानी अल्लाह तआला ने मर्द और औरत दोनों में एक-दूसरे के लिए जो खिचाव और लगाव रखा है, फितरत की यह देन वह जोड़ा बन कर पूरा करते हैं, एक-दूसरे से नजदीकी और मुहब्बत हासिल करते हैं, इसलिए यह सच है कि जो आपसी मुहब्बत पति और पत्नी के बीच होती है, वह दुनिया के किसी दूसरे रिस्ते में नहीं होती।

^३ भारी हो जाने से मुराद, जब बच्चा गर्भ में बढ़ा हो जाता है, तो ज्यों-ज्यों पैदाईश का वक्त करीब आता जाता है, माँ-बाप के दिल में डर और शक पैदा होता जाता है। (खास तौर से जब औरत को औरत रोग हो) तो इंसान की फितरत है कि डर के सबब अल्लाह की तरफ आकर्षित होते हैं, इसलिए वे दोनों अल्लाह से दुआ करते हैं और शुक्र अदा करने का वादा करते हैं।

^४ साभ्नीदार बना देने से मुराद या तो बच्चे का नाम ऐसा रखना है, जैसे इमामबख्श, पीरौदता, अब्दुशम्स बन्द: अली बगौरज, जिस से यह बाजेह होता है कि बच्चा फला पीर या साधू के (نعوذ بالله) नजरे करम का नतीजा है, या अपने इस यकीन को जाहिर करे कि हम तो फला पीर या साधू या फला क़ब्र पर गये थे जिसके नतीजे से बच्चा पैदा हुआ, यह सभी हालतें अल्लाह का साभ्नीदार बनाने की हैं, जो बदनसीबी से मुसलमानों में भी आम तौर से पाई जाती है।

१९१. क्या ऐसों को साभ्नीदार ठहराते हैं जो किसी चीज को न बना सकें, (वल्कि) खुद उन को ही बनाया गया हो।

१९२. और वह उन को किसी तरह की मदद नहीं दे सकते, और वे खुद अपनी मदद नहीं कर सकते।

१९३. और अगर तुम कोई बात बताने को उन को पुकारो तो तुम्हारे कहने पर न चलें, तुम्हारे लगाव से दोनों बातें बराबर हैं चाहे तुम उनको पुकारो या चुप रहो।

१९४. हक्कीकत में तुम अल्लाह को छोड़ कर जिन को पुकारते (इबादत करते) हो वह भी तुम ही जैसे बन्दे हैं, तो तुम उनको पुकारो, फिर उनको चाहिए कि वह तुम्हारा कहना कर दें, अगर तुम सच्चे हो।

१९५. क्या उन के पैर हैं जिन से वे चलते हों, या उन के हाथ हैं जिस से किसी चीज को थाम सकें, या उनकी आँखें हैं जिन से देखते हों, या उन के कान हैं जिन से वे सुनते हैं। आप कह दीजिए कि तुम अपने सभी साभ्नीदारों को बुला लो, फिर मुझे (नुक़सान पहुँचाने की) उपाय करो, फिर मुझे तनिक मौका न दो।

१९६. बेशक मेरा सहायक (वली) अल्लाह ही है, जिस ने यह किताब (पाक क़ुरआन) उतारा, और वह नेक लोगों की मदद करता है।

१९७. और तुम जिन लोगों को अल्लाह को छोड़ कर पुकारते (इबादत करते) हो वह तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकते, और न वह अपनी मदद कर सकते हैं।

أَيُّرْكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ﴿١٩١﴾

وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا

أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿١٩٢﴾

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى لَا يَتَّبِعُكُمْ ط

سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَائِرُونَ ﴿١٩٣﴾

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ

أَمْثَلَكُمْ قَادِعُوهُمْ فَلَيسْتَ جِنَبُوا لَكُمْ إِنْ

كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٩٤﴾

أَلَهُمْ أَجْرٌ يَسْتَوُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ آيٌ يَبْطِشُونَ

بِهَا أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يَنْصُرُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ

أَذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا قُلْ إِنْ أَدْعَاكُمْ إِلَى شِرْكَاءٍ كُمْ تُمْ

كَيْدًا وَإِنْ فَلَا تَنْظُرُونَ ﴿١٩٥﴾

إِنَّ وَلِيَّكَ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۖ

وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١٩٦﴾

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ

نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿١٩٧﴾

। जो अपनी मदद आप करने के काविल न हो, वे भला दूसरों की मदद क्या करेंगे।

१९८. और अगर उनको कोई बात बताने को पुकारो तो उस को न सुनें, और उन को आप देखते हैं कि वह आप को देख रहे हैं और वह कुछ भी नहीं देखते।

१९९. आप माफ़ी का रास्ता अपनायें, भलाई के क़रम की तालीम दें और जाहिलों से अलग रहें।

२००. और अगर आप को कोई शक़ शैतान की ओर से आने लगे तो अल्लाह की पनाह मांग लिया कीजिए, बेशक़ वह बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।

२०१. बेशक़ जो लोग (अल्लाह से) डरते हैं जब उनको कोई शक़ शैतान की तरफ़ से आ जाता है तो वह याद में लग जाते हैं, इसलिए अचानक़ उनकी आँखें खुल जाती हैं।¹

२०२. और जो शैतानों के पैरो है वह उनको मुसीबत में खींचे ले जाते हैं फिर वे नहीं सकते।

२०३. और जब आप कोई मोजिजा उन के सामने पेश नहीं करते तो वह लोग कहते हैं कि आप यह मोजिजा क्यों न लाये। (आप) फ़रमा दीजिए कि मैं उसकी इत्तेबा करता हूँ जो मुझ पर मेरे रब की तरफ़ से आदेश भेजा गया है, यह मानो तुम्हारे रब की तरफ़ से बहुत सी दलीलें हैं और हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिये जो ईमान रखते हैं।

२०४. और जब क़ुरआन पढ़ा जाये तो उसे ध्यानपूर्वक़ सुनो और ख़ामोश रहो, उम्मीद है

وَإِنْ تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْتَعْوَدُوا وَتُرَاهُمْ
يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٨﴾

حُنَّ الْعَفْوِ وَأَمْرٌ بِالْعُرْفِ وَأَعْرَضَ
عَنِ الْعِجْلِينَ ﴿١٩٩﴾

وَإِنَّمَا يَسْتَعْزِثُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ
بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٠٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِّنَ
الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُمْ مُبْصِرُونَ ﴿٢٠١﴾

وَإِخْوَانُهُمْ يَبْتَغُونَ فِي النَّفْسِ لَمَمًا
لَّا يُفْصِرُونَ ﴿٢٠٢﴾

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِمْ بَآيَةٌ قَالُوا لَوْلَا اجْتَبَيْتَهَا
قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يَدْعُوَنِي إِلَىٰ مِنْ رَبِّي هَذَا
بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٠٣﴾

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٢٠٤﴾

¹ इस में अल्लाह से डर रखने वालों के बारे में बताया गया है कि वे शैतान से होशियार रहते हैं। طائف या طيف उस ज़ेहनी ख़्यालों को कहते हैं जो दिल में आये या ख़्वाब में आये, यहाँ उसे शैतान के ज़रिये डाला गया शक़ के लिए इस्तेमाल हुआ है, क्योंकि शैतान के ज़रिये शक़ भी ज़ेहनी ख़्यालों में ही पैदा होते हैं। (फ़तहूल क़दीर)

कि तुम पर रहमत हो !

२०५. और (हे इंसान) ! अपने मन में आजिजी और डर कर अपने रब को याद करता रह, सुबह और शाम आवाज को कम कर के और गाफिलों में न होना ।

२०६. बेशक जो लोग तेरे रब के करीब हैं वे उस की इबादत से घमंड नहीं करते, और उस की पाकीजगी बयान करते और उस को सज्दा करते हैं ।

सूरतुल अफाल-८

सूर: अफाल मदीना में उतरी और इस की पचहत्तर आयतें और दस रकूअ हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

وَاذْكُرْ رَبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً
وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ
وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ (205)

إِنَّ الَّذِينَ يَخُفُونَ عِندَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ
وَسَيَسْجُدُونَ لَهُ يَسْجُدُونَ (206)

سُورَةُ الْاَنْفَالِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

। यहाँ काफ़िरों को कहा जा रहा है जो कुरआन के पढ़ते वक़्त शोर करते थे और अपने साथियों से कहते थे :

(لَا تَسْمَعُوا هَذَا الْقُرْآنَ وَالنَّوْءَ)

«यह कुरआन मत सुनो और शोर करो।» (सूर: हा० मीम० सज्दा-२६)

उन से कहा जा रहा है कि इसके बजाय अगर गौर से सुनो और चुप रहो, तो शायद अल्लाह तआला तुम्हें हिदायत अता कर दे, इस तरह तुम अल्लाह की रहमत के हकदार बन जाओ ।

कुछ आलिम इसे आम तौर से लेते हैं यानी जब भी कुरआन पढ़ा जाये चाहे नमाज हो या नमाज न हो सब को चुप हो कर सुनने का आदेश है, इस आम हुकम से भाव निकाल कर जोर से पढ़ी जाने वाली नमाजों में मुक्तदी (नमाज में इमाम के सिवाय सभी नमाजियों को कहते हैं) के सूर: फ़ातिहा पढ़ने को भी कुरआन के इस हुकम के खिलाफ मानते हैं, जब कि ऊँची आवाज से पढ़ी जाने वाली नमाजों में इमाम के पीछे सूर: फ़ातिहा पढ़ने के लिए हुकम नबी ﷺ से सहीह हदीसों से साबित है, जैसाकि इस के मन्की होने से भी साबित होता है, लेकिन अगर इसे आम तौर से मान भी लिया जाये तब भी इस आम से मुक्तदियों को नबी ﷺ ने निकाल दिया, और इस तरह इस आयत के आम होने के बाद भी ऊँची आवाज से पढ़ी जाने वाली नमाजों में मुक्तदियों को सूर: फ़ातिहा जरूर पढ़नी होगी, क्योंकि कुरआन के इस आम हुकम से मुक्तदियों की छूट के लिए सहीह हदीस और ठोस हदीसों से साबित होता है ।

१. ये लोग आप से जंग में मिले माल के बारे में पूछते हैं, 'आप कह दीजिए कि जंग से हासिल माल अल्लाह के है और रसूल के है, इसलिए तुम अल्लाह से डरो और अपने आपसी रिश्तों को सुधारो और अल्लाह तआला और उस के रसूल के हुक्म की इताअत करो अगर तुम ईमानवाले हो।^१

२. बस ईमान वाले ही ऐसे होते हैं कि जब अल्लाह (तआला) का बयान होता है तो उन के दिल डर जाते हैं, और जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनायी जाती हैं तो वे आयतें उन के ईमान को और ज्यादा कर देती हैं और वह लोग अपने रब पर भरोसा करते हैं।^२

३. जो कि नमाज पाबन्दी से पढ़ते हैं और हम ने जो कुछ उनको दिया है वे उस में से खर्च करते हैं।

४. सच्चे ईमानवाले यही लोग हैं, उन के लिए बड़े पद हैं उन के रब के पास और मगफिरत और इज़्जत की रोज़ी है।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا أَمْرَاتِ بَيْنِكُمْ وَأَطِيعُوا
اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ①

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَّتْ
قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُ رَبِّهِمْ
زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ②

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ
يُنْفِقُونَ ③

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ دَرَجَاتٌ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ④

१. कलिमा कलिमा का बहुवचन (जमा) है, जिसका मतलब है ज्यादा, ये उस माले गनीमत को कहा जाता है जो काफ़िरो के साथ जंग में हाथ लगे, इसे अफ़ाल इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह उन चीजों में से है जो पहले के उम्मतों के लिए हाराम थी, यानी यह मुसलमानों के लिए एक जाइद चीज जायेज की गयी है या इसलिए कि ये जिहाद के बदला से (जो अख़िरत में मिलेगा) एक अधिक चीज है, जो कई बार दुनिया ही में मिल जाती है।

२. इस का मतलब यह हुआ कि बयान किये तीनों बातों के अनुसार अमल किये बिना ईमान पूरा नहीं। इस से अल्लाह का डर (तक्वा), आपस में सम्बन्धों का सुधार, और अल्लाह और अल्लाह के रसूल ﷺ के हुक्म की पैरवी की फ़ज़ीलत को वाजेह किया गया है, खास तौर से जंग में मिले माल के बंटवारे में इन तीनों बातों को ध्यान में रखना ज़रूरी है।

३. इन आयतों में ईमानवालों के चार अवसाफ़ बताये गये हैं। १. यह अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के हुक्म की पैरवी करते हैं, न कि केवल अल्लाह का या क़ुरआन का, २. अल्लाह का बयान सुन कर उसकी वड़ाई और अज़मत के असर से दिल काफ़ उठते हैं, ३. क़ुरआन पढ़ने से उन के ईमान में बढ़ोत्तरी होती है, ४. वे अपने रब पर भरोसा करते हैं, तबक़ुल का मतलब है कि जाहिरी असबाबों को अपनाने के बावजूद अल्लाह पर भरोसा करते हैं, यानी जाहिरी असबाब से मुह नहीं मोड़ते क्योंकि उनको अपनाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है।

५. जैसा कि आप के रब ने आप के घर से सच के साथ आप को निकाला, और मुसलमानों का एक गुट इस को भारी समझता था।

६. वह वाजेह हो जाने के बाद सच के वारे में आप से भगड़ा कर रहे थे जैसेकि वह मौत की ओर हाँके जा रहे हों और (उसे) देख रहे हों।

७. और तुम लोग उस वक़्त को याद करो कि जब अल्लाह तुम से उन दो गुटों में से एक का वादा करता था कि वह तुम्हारे हाथ आ जायेगा,¹ और तुम इस उम्मीद में थे कि बिना हथियारों, बाला गुट तुम्हारे हाथ आ जाये, और अल्लाह तआला को कुबूल था कि अपने हुक्म से सच का सच होना साबित कर दे और उन काफ़िरों की जड़ काट दे।

८. ताकि सच का सच होना और झूठ का झूठ होना साबित कर दे, चाहे ये मुजरिम लोग पसन्द न करें।

९. उस वक़्त को याद करो जब कि तुम अपने रब से दुआ कर रहे थे, फिर अल्लाह तआला ने तुम्हारी सुन ली कि मैं तुम को एक हजार फ़रिश्तों से मदद दूँगा जो लगातार चले आयेंगे।²

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ
وَإِنَّ فَرِيقًا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَرِهُونَ ﴿٥﴾

يُجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ لَكُمَا
يُسْأَلُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٦﴾

وَإِذْ يَجِدُكُمْ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ
أَنَّهُمَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنْ غَيْرَ ذَاتِ الشُّوْكَةِ
تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ
بِكَلِمَتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ ﴿٧﴾

يُحِقُّ الْحَقَّ وَيَطْلُبُ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ
السُّجُومُونَ ﴿٨﴾

إِذْ تَسْتَعِينُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي
مُمِدُّكُمْ بِالْأَلْفِ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُرَدِّفِينَ ﴿٩﴾

¹ यानी या तो तिजारीती काफ़िला तुम्हें मिल जायेगा, जिस से तुम्हें लड़ाई के बिना बहुत ज़्यादा माल-सामग्री मिल जायेगी, दूसरी हालत में कुरैश की सेना से तुम्हारा मुक़बिला होगा और तुम्हारी जीत होगी और जंग से मिले माल-सामग्री मिलेगी।

² इस जंग में मुसलमानों की तादाद ३९३ थी, जब कि काफ़िर उन के तीन गुने (यानी) लगभग एक हजार थे, फिर मुसलमान निहत्थे थे और बिना हथियार के थे, जबकि काफ़िरों के पास असलहों की ज़्यादाती थी। इन हालात में मुसलमानों को सहारा केवल अल्लाह ही की ताक़त का था, जिस से वे रो रो कर विनती कर रहे थे, खुद नबी करीम ﷺ एक ख़ैम में आग्रहपूर्ण (गिरिया व ज़ारी) में लीन थे। (सहीह बुखारी किताबुल मगाज़ी) इसलिए अल्लाह तआला ने दुआयें कुबूल कीं और एक हजार फ़रिश्ते एक-दूसरे के पीछे लगातार मुसलमानों की मदद के लिए आ गये।

१०. और अल्लाह (तआला) ने यह मदद सिर्फ इस सबब से की कि खुशखबरी हो और तुम्हारे दिलों को सुकून हो जाये, और जीत सिर्फ अल्लाह की तरफ से है! बेशक अल्लाह बहुत ज्यादा ताकत वाला और हिक्मत वाला है।

११. उस वक्त को याद करो, जबकि (अल्लाह तआला) तुम पर ऊँघ तारी कर रहा था, अपनी ओर से सुकून अता करने के लिए^{१२} और तुम पर आकाश से पानी बरसा रहा था कि इस पानी के जरिये तुम को पाक कर दे और तुम से शैतानी शंकाओं को दूर कर दे, और तुम्हारे दिलों को मजबूत कर दे और तुम्हारे पाँव जमा दे।

१२. उस वक्त को याद करो, जब कि आप का रव फरिश्तों को हुक्म दे रहा था कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, इसलिए तुम ईमान वालों की हिम्मत बढ़ाओ। मैं अभी काफिरों के दिलों में डर डालता हूँ। इसलिए तुम गर्दनों पर मारो और उन के जोड़-जोड़ पर चोट लगाओ।

१३. यह इस बात की सजा है कि उन्होंने अल्लाह की और उस के रसूल की मुखालफत की और जो अल्लाह की और उस के रसूल की मुखालफत करते हैं तो अल्लाह तआला सख्त सजा देने वाला है।

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَبَطْنَيْنِ
بِهِ قُلُوبُكُمْ ۖ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ
اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿١٠﴾

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النَّعَاسَ أَمَنَةً مِنْهُ وَيُنَزِّلُ
عَلَيْكُمْ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لِيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ
عَنكُم رِجْسَ الشَّيْطَانِ ۖ وَيُزَيِّدَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ
وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ﴿١١﴾

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَأِكَةِ أُنْفِ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا
الَّذِينَ آمَنُوا وَلَا سَأْتِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ
كَفَرُوا الرِّعَابُ فَأَضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ
وَاضْرِبُوا مِنْهُم كُلَّ بَنَّانٍ ﴿١٢﴾

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۗ وَمَنْ
يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ
الْعِقَابِ ﴿١٣﴾

^१ यानी फरिश्तों का उतारना तो सिर्फ खुशखबरी और तुम्हारे दिलों के सुकून के लिए था, बल्कि असल मदद तो अल्लाह की तरफ से थी, जो फरिश्तों के बिना भी तुम्हारी मदद कर सकता था, फिर भी इस से यह समझना भी जायेज नहीं कि फरिश्तों ने जंग में हिस्सा नहीं लिया। हदीसों से मालूम होता है कि जंग में फरिश्तों ने हिस्सा लिया और कई काफिरों का क़त्ल भी किया, (देखिए सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम किताबुल मगानी व फज़ायेल अस्सहाबा)

^२ ओहुद की जंग की तरह बद्र के जंग में भी अल्लाह तआला ने मुसलमानों पर ऊँघ तारी कर दिया, जिस से उन के दिलों के भार हल्के हो गये और सुकून व आराम की एक खास हालत उन पर असरअदाज हो गयी।

१४. तो यह सजा का मजा चखो और ध्यान रहे कि कफ़िरोँ के लिए आग का अजाब मुकर्रर ही है।

१५. हे ईमानवालो! जब तुम कफ़िरोँ से मुठभेड़ करो तो उन से पीठ मत फेरना।^१

१६. और जो शख्स उन से उस मौका पर पीठ फेरगा, लेकिन अगर कोई लड़ाई के लिए पैतरा बदलता हो या जो अपने गुट की तरफ पनाह लेने आता हो, (वह अलग है) बाकी दूसरा जो ऐसा करेगा वह अल्लाह के ग़ज़ब को पायेगा, और उसका ठिकाना नरक होगा और वह बहुत ही बुरा स्थान है।

१७. तो तुम ने उन्हें क़त्ल नहीं किया, लेकिन अल्लाह तआला ने उन्हें क़त्ल किया,^२ और आप ने (धूल की मुट्ठी) नहीं फेंकी, लेकिन अल्लाह तआला ने फेंकी,^३ और ताकि मुसलमानों को अपनी तरफ से उनकी कोशिश का बहुत ज़्यादा अज़ा अता करे^४ बेशक अल्लाह तआला ज़्यादा सुनने

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنْ يُّنْكِرِيْنَ
عَدٰبَ النَّارِ ۙ (14)

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِذَا لَقِيْتُمْ الْكٰفِرِيْنَ
كُفِّرُوْا رَحْمًا فَلَا تُوَلُّوْهُمْ الْاَدْبٰرَ (15)
وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبْرَهُ اِلَّا مَتَحَوِّتًا
لِّوَتٰلٍ اَوْ مَتَحَوِّزٍ اِلٰى فِتْنَةٍ فَعَدٰۤاۤءًا بَعْضُهُمْ
لِلّٰهِ وَمَا وُجِهَتْكُمْ وَيُبْسِ الْمُوْسِرِ (16)

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ
وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰۤى
وَلِيُنَبِّلِ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلٰۤءًا حَسَنًا
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (17)

^१ (जहफन) कलिमा का मतलब है एक-दूसरे के सामने होना और संघर्ष करना, यानी मुसलमान और कफ़िर जब सामने हो कर लाम बन्दी करें तो पीठ फेर कर भागने का हुकम नहीं है।

^२ यानी बद्र की लड़ाई की यह सारी तफ़सील तुम्हारे सामने पेश कर दिया गया है और जिस-जिस तरह से अल्लाह ने तुम्हारी मदद की है, उसकी बज़ाहत के बाद तुम यह न समझ लेना कि कफ़िरोँ का क़त्ल यह तुम्हारा कारनामा है। नहीं, बल्कि यह अल्लाह ही की मदद का नतीजा है, जिस के सबब तुम्हें यह ताक़त मिली, इसलिए हकीकत में उनका क़त्ल करने वाला अल्लाह तआला है।

^३ बद्र की लड़ाई में नबी ﷺ ने कंकरियों को मुट्ठी में भर कर कफ़िरोँ की तरफ फेंका था, जिसे एक तो अल्लाह तआला ने कफ़िरोँ के मुँह और आँखों तक पहुँचा दिया। दूसरे उस में यह गुण पैदा कर दिया कि जिस के सबब उनकी आँखों के आगे अंधारा छा गया और उन्हें कुछ नहीं दिखायी देता था, यह मौज़िजा भी, जो उस वक़्त अल्लाह की मदद में जाहिर हुआ, मुसलमानों की कामयाबी में बहुत ज़्यादा मददगार साबित हुआ।

^४ (बलाअन) यहाँ एहसान के मतलब में इस्तेमाल हुआ है, यानी अल्लाह का यह समर्थन (ताईद) व रहमत अल्लाह का एहसान है, जो ईमानवालों पर हुआ।

वाला ज़्यादा जानने वाला है ।

१८. (एक बात तो) यह हुई (दूसरी बात है) कि अल्लाह तआला को काफ़िरों की चाल को नाकाम करना था ।

१९. अगर तुम लोग फ़ैसला चाहते हो तो वह फ़ैसला तुम्हारे सामने है, और अगर रुक जाओ तो यह तुम्हारे लिए बहुत बेहतर है, और अगर तुम फिर भी वही काम करोगे तो हम भी फिर वही काम करेंगे और तुम्हारा समुदाय तुम्हारे तनिक काम नहीं आयेगा, चाहे कितनी ज़्यादा तादाद हो, तथा हकीकत बात यह है कि अल्लाह तआला ईमानवालों के साथ है ।

२०. हे ईमानवालो! अल्लाह का और उस के रसूल (सदेशवाहक) का कहना मानो और उस (का कहना मानने) से मुंह न फेरो सुनते जानते हुए ।

२१. और तुम उन लोगों की तरह न होना जो दावा तो करते हैं कि हम ने सुन लिया, हालाँकि वह सुनते (सुनाते) कुछ नहीं ।^१

२२. बेशक बहुत बुरी मखलूक अल्लाह तआला के करीब वे लोग हैं जो वहरे हैं, गूंगे हैं जो कि तनिक भी नहीं समझते ।

२३. और अगर अल्लाह (तआला) उन में कोई अच्छाई देखता तो उन को सुनने की ताकत अता करता, और अगर उन को अब सुना दे तो जरूर मुंह फेरेंगे, विमुख होते हुए ।^२

ذِكْرِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنٌ كَيْدِ الْكَافِرِينَ ﴿١٨﴾

إِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمْ الْفَتْحُ ۚ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۚ وَإِنْ تَعُدُّوا نَعْدًا ۖ وَلَنْ نُغْنِي عَنْكُمْ فِتْنَتَكُمْ ۚ إِنَّهَا وَلَوْ كَثُرَتْ ۗ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنَّهُ وَاتَّكُمْ تَسْمَعُونَ ﴿٢٠﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ﴿٢١﴾

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الضَّمُّ الْبُكْمُ ۗ وَالَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٢٢﴾

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَأَسْمَعَهُمْ ۗ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾

^१ यानी सुन लेने के बावजूद उस के ऐतबार से अमल न करना यह काफ़िरों का तरीका है, तुम इस तरीका से बचो । अगली ही आयत में ऐसे लोगों को गूंगा, बहरा, अनपढ़ और नासमझ बताया गया है ।

^२ पहले सुनने से मुराद लाभकारी सुनना है, इस दूसरे सुनने से प्राकृतिक रूप (फ़ितरी तौर) से सुनने की ताकत है । यानी अगर अल्लाह तआला उन्हें सच बात सुना भी देता, तो चूँकि उन के

२४. हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह और रसूल के हुक्मों की पैरवी करो, जब कि रसूल तुम को तुम्हारी जिन्दगी बख़्त विषय की तरफ बुलाते हों, और याद रखो कि अल्लाह तआला इंसान के और उस के दिल के बीच आड़ बन जाता है, और बेशक तुम्हें अल्लाह ही के पास जमा होना है।

२५. और तुम ऐसी मुसीबत से बचो कि जो ख़ास तौर से उन ही लोगों पर नाज़िल न होगी जो तुम में से उन गुनाहों के दोषी हैं, और यह जान रखो कि अल्लाह तआला बहुत सज़ा सज़ा देने वाला है।

२६. और उस हालत को याद करो, जब कि तुम धरती पर थोड़े थे, कमजोर माने जाते थे, इस डर में रहते थे कि तुम को लोग उचक न लें, तो अल्लाह ने तुम्हें रहने के लिए जगह दी और तुम को अपनी मदद से ताक़त अता की और तुम को पक्रीज़ा रिज़क अता किये, ताकि तुम शुक्र करो।^१

२७. हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह और रसूल (के हक़) का हनन (ख़यानत) न करो और अपनी सुरक्षित चीज़ों में विश्वासघात (ख़यानत) न करो,^२ और तुम जानते हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ
إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ، وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ
بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ، وَأَنَّهُ إِلَهُ تَحْشُرُونَ ﴿٢٤﴾

وَأَنفَرُوا فَبِتَّةِ الْآيَاتِ لِأَصْحَابِنَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ
خَاصَّةً، وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾

وَاذْكُرُوا إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ مُسْتَضْعَفُونَ
فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ
فَأَوَّسَكُمْ وَأَيَّدَكُم بِنَصْرِهِ، وَرَزَقَكُم مِّنَ
الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٢٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحُونُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ
وَتَحُونُوا إِلَىٰ أَمْثَلِكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

दिल में सच जानने की खोज ही नहीं, इसलिए वे लगातार इस से भुंह फेरते रहेंगे।

^१ इस से मुराद या तो बन्दों का एक-दूसरे पर हक़ है, जो बिना किसी तरह के आम और ख़ास की छूट के जुल्म करते हैं या वे आम अज़ाब है, जो बारिश की अधिकता, या बाढ़ आदि धरती और आकाश की मुसीबत की शक़ल में नाज़िल होते हैं और सबाब व अज़ाब दोनों के करने वाले बराबर से असरअंदाज़ होते हैं, या कुछ हदीसों में सबाब के कामों का हुक्म देना और गुनाह के कामों से रोकने को छोड़ देने से जिन अज़ाब की चेतावनी (तंबीह) का बयान किया गया है, वह मुराद है।

^२ इस से मक्की जिन्दगी की कठिनाईयों और डर का बयान और उस के बावजूद मदीने की जिन्दगी में अमनो अमान और खुशहाली जो अल्लाह की रहमत से हासिल हुई उसका बयान है।

^३ अल्लाह तआला और रसूल ﷺ के हक़ों में ख़यानत का मतलब यह है कि प्रत्यक्ष रूप (जाहिरी

२८. और तुम इस बात को जान रखो कि तुम्हारा धन और तुम्हारी औलाद एक इस्तेहान के लिए है,¹ (और इस बात को भी जान रखो) कि अल्लाह तआला के पास बहुत बड़ा बदला है।

२९. हे ईमानवालो! अगर तुम अल्लाह से डरते रहोगे तो अल्लाह (तआला) तुम्हें एक फ़ैसले की चीज अता करेगा, और तुम से तुम्हारे गुनाह दूर करेगा और तुम को माफ़ कर देगा और अल्लाह (तआला) बड़ा फ़ज़ल वाला है।

३०. और उस घटना (वाक़ेआ) का भी ज़िक्र कीजिए, जबकि काफ़िर लोग आप के बारे में साजिश कर रहे थे कि आप को बंदी बना लें या आप को क़त्ल कर दें या आप को देश निकाला दे दें,² और वह अपनी साजिश कर रहे थे और अल्लाह तआला अपनी योजना बना रहा था और अल्लाह तआला सब से बेहतर योजना बनाने वाला है।

وَأَعْلَمُوا أَنَّمَا آمَاؤُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ
وَ أَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ
فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
وَ اللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢٩﴾

وَإِذْ يَسْتَكْرِهُ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ
أَوْ يُخْرِجُوكَ ۖ وَيَسْتَكْرِهُونَ وَيَسْتَكْرِهُونَ
وَ اللَّهُ خَيْرٌ الْمُسْتَكْرِهِينَ ﴿٣٠﴾

तौर) से तो अल्लाह और रसूल ﷺ के आज्ञाकारी (फ़रमावर्दार) बन कर रहें, अकेले में उस के खिलाफ़ काम करें। विश्वासघात यह भी है कि किसी ज़रूरी काम को छोड़ दे और निषेधित काम को करे। और (وَتَحُولُوا أَنفُسَكُمْ) का मतलब है कि एक इंसान दूसरे इंसान के पास कोई चीज़ हिफ़ाज़त के इरादे से रखे, उस में विश्वासघात न करे।

¹ माल और औलाद की मुहब्बत ही किसी इंसान को आम तौर से विश्वासघात (ख़यानत) करने पर और अल्लाह और रसूल ﷺ के हुक्म तोड़ने पर मजबूर करता है, इसलिए इनको मुसीबत (परीक्षा) कहा गया है, यानी इसके जरिये इंसान का इस्तेहान लिया जाता है कि उनकी मुहब्बत के साथ यकीन और हुक्म की पैरवी की मांग को पूरा करता है या नहीं? अगर वह पूरा करता है, तो समझ लो वह अपने इस्तेहान में कामयाब हो गया, उसकी दूसरी शकल में नाकाम। इस हालत में यह माल और औलाद उसके लिए अल्लाह के अजाव को भोगने का सबब बन जायेंगे।

² यह उस साजिश का बयान है जो मक्का के मूर्तिपूजक नेताओं ने एक रात दारुन नदवा में तैयार किया था, आखिर में यह तय किया गया कि हर जाति के युवकों को आप ﷺ के क़त्ल करने के लिए तैनात किया जाये, ताकि किसी एक को क़त्ल के बदले में क़त्ल न किया जा सके बल्कि धन देकर जान छूट जाये।

३१. और जब उन के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि हम ने सुन लिया, अगर हम चाहें तो हम भी इसकी तरह कह दें, यह तो कुछ भी नहीं सिर्फ पूर्वजों की बिना सुबूत की बातें हैं।

३२. और जबकि उन लोगों ने कहा, हे अल्लाह! अगर यह कुरआन हकीकत में आप की तरफ से है, तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा, या हम पर कोई तकलीफ देने वाला अज़ाब नाज़िल कर दे।

३३. और अल्लाह (तआला) ऐसा न करेगा कि उन में आप के होते हुए उन को अज़ाब दे, और अल्लाह (तआला) उनको अज़ाब न देगा! इस हालत में कि यह तौबा भी करते हों।

३४. और उन में क्या बात है कि उन को अल्लाह (तआला) सज़ा न दे, बावजूद कि वे लोगों को मस्जिद हुराम से रोकते हैं, जबकि वह लोग इस मस्जिद के संरक्षक (निगरा) नहीं, उसके संरक्षक अल्लाह के फरमावरदारों के सिवाय कोई नहीं, लेकिन उन में ज्यादातर लोग इल्म नहीं रखते।

३५. और उन की नमाज़ काअबा के करीब सिर्फ यह थी, सीटियाँ बजाना और तालियाँ बजाना^२ तो अपने कुफ़्र के सबब इस अज़ाब का मजा चखो।

وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا
لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَذَا إِنْ هَذَا إِلَّا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣١﴾

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ
مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً
مِنْ السَّمَاءِ أَوْ ائْتِنَا بَعْدَ آيِ الْكُذِّبِ ﴿٣٢﴾

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ وَمَا
كَانَ اللَّهُ مَعِيذَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْثِرُونَ ﴿٣٣﴾

وَمَا لَهُمْ آلَا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ
عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ ؕ
إِنْ أَوْلِيَاءَهُ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَلَكِنْ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً
وَتَصْلِيَةً ؕ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُونَ ﴿٣٥﴾

^१ यानी रसूलों की मौजूदगी में कौमों पर अज़ाब नहीं आता, इसलिए आप ﷺ की मौजूदगी भी उन लोगों के अमनो अमान से रहने का सबब थी।

^२ मूर्तिपूजक जिस तरह अल्लाह के घर (खानये काअबा) का नंगे होकर तवाफ करते थे, उसी तरह तवाफ करते वक्त मुंह में उंगलिया डाल कर सीटियाँ बजाते थे और तालियाँ बजाते थे, इसको भी यह इबादत और सवाब का काम समझते थे, जिस तरह आज भी अनपढ़ सूफ़ी मस्जिदों और आस्तानों पर नाचते हैं, ढोल पीटते और धमालें डालते हैं, यही हमारी नमाज़ और इबादत (अराधना) है, नाच-नाच कर अपने यार (अल्लाह) को मना लेंगे।

३६. बेशक यह काफिर लोग अपना माल इसलिए खर्च कर रहे हैं कि अल्लाह के मार्ग से रोकें, तो ये लोग अपना माल खर्च करते ही रहेंगे, फिर वह धन उन के लिए पश्चाताप का सबब बन कर रह जायेंगे, फिर पराजित हो जायेंगे, और काफिरों को नरक की तरफ ज़मा किया जायेगा।

३७. इसलिए कि अल्लाह (तआला) नापाकों को पाकों से अलग कर दे, और नापाकों को एक-दूसरे से मिला दे, फिर उन सब को इकट्ठा करे, फिर उन सब को नरक में डाल दे, ऐसे लोग पूरी तरह से नुकसान में हैं।

३८. आप काफिरों से कह दीजिए कि अगर यह लोग रुक जायें तो इन के सारे गुनाहों जो पहले कर चुके हैं, माफ़ कर दिये जायेंगे। और अगर अपनी वही रीति रखेंगे तो पहले के (काफिरों के) लिए नियम लागू हो चुका है।

३९. और तुम उन से उस समय तक संघर्ष करो कि उन के अक्रीदा में बिगाड़ न रहे? और धर्म अल्लाह ही का हो जाये, फिर अगर यह रुक जायें तो अल्लाह (तआला) उनके अमलों को खूब देखता है।

४०. और अगर संह फेरें, तो यकीन रखें कि अल्लाह (तआला) तुम्हारा दोस्त है, वह अच्छा दोस्त और अच्छा मददगार है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُتَّفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيُسَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَتَسْتَفْقُونَهَا لَمْ تَكُنْ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ ﴿٣٦﴾

لِيُؤَيِّدَ اللَّهُ الْغَيْبِثَ مِنَ الْكُفُوبِ وَيَجْعَلَ لِيُؤَيِّدَ بَعْضُهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيُدْخِلُهُمْ جُحِيمًا ﴿٣٧﴾

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَنْتَهُوا يُغْفَرْ لَهُمْ مِمَّا قَدْ سَلَفَ وَإِنْ يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنتُ الْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِلَهُ إِلَّا اللَّهُ إِنَّمَا يَسَاءِلُونَ إِلَهَ بَصِيرًا ﴿٣٩﴾

وَلَنْ تَكُونُوا قَاعِلِمُوًّا أَنْ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ وَنَعْمُ الْهَادِيَ وَالنَّصِيرُ ﴿٤٠﴾

¹ रुक जाने का मतलब मुसलमान हो जाना है, जिस तरह हदीस में भी है, "जिस ने इस्लाम धर्म कुबूल करके सबाब का रास्ता अपना लिया, उससे उसके गुनाहों की पूछ-ताछ नहीं होगी, जो उसने जाहिलियत में किये होंगे, और जिसने इस्लाम धर्म कुबूल करके भी बुराई न छोड़ी, उस से पहले और बाद सभी अमलों का हिसाब होगा।" (सहीह बुखारी) एक दूसरी हदीस में है:

"इस्लाम पहले के गुनाहों को मिटा देता है।" (मुसनद अहमद, भाग ४, पेज, ९९)

² फितना से मुराद है शिर्क (मिश्रणवाद) यानी उस समय तक जिहाद जारी रखो जब तक शिर्क खत्म न हो जाये।

४१. और जान लो कि तुम जिस तरह का जो भी लड़ाई का माल (परिहार) हासिल करो उस में से पाँचवाँ हिस्सा तो अल्लाह^२ और रसूल और रिस्तेदारों और यतीमों और गरीबों और मुसाफ़िरोँ के लिये है, अगर तुम ने अल्लाह पर ईमान रखा है और उस पर जो हम ने अपने बन्दे पर उस दिन उतारा है जो सच और झूठ के बीच विलगाव का था, जिस दिन दोनों सेनायें भिड़ गई थी, और अल्लाह हर चीज पर कुदरत रखने वाला है।

४२. जबकि तुम करीब के किनारे पर और वे दूर के किनारे पर थे, और काफ़िला तुम से (बहुत) नीचे थे, अगर तुम आपस में वादा करते तो मुकर्रर वक्त पर पहुँचने में इस्तिलाफ़ कर जाते, लेकिन अल्लाह को एक काम कर ही डलाना था जो मुकर्रर हो चुका था, ताकि जो नाश हो वह दलील पर (यानी तय जानकर) नाश हो और जो जिन्दा रह जाये वह भी दलील पर (सच पहचान कर) जिन्दा रहे और अल्लाह अच्छी तरह सुनने वाला जानने वाला है।

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ لِلَّهِ
حُسَّةً وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ
وَالسَّكِينِ وَأُولِي السَّبِيلِ إِن كُنْتُمْ أَعْتَمْتُمْ
بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ
التَّلَاقِ الْيَتَامَىٰ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤١﴾

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدَّنِيَّةِ وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَىٰ
وَالرَّكِبُ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ
لَاخْتَفْتُمْ فِي الْوَعْدِ وَلَكِن لِّيَقْضِيَ اللَّهُ
أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْ
بَيْتِنَا وَيُحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَنْ بَيْتِنَا وَإِنَّ
اللَّهَ لَاسْمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٤٢﴾

- गनीमत (परिहार) से मुराद वह माल है जो लड़ाई में काफ़िरोँ को हरा के हासिल किया जाता है, पहले की कौमों में यह रीति थी कि लड़ाई के ख़त्म होने के बाद गनीमत को जमा किया जाता और आकाश से आग आकर उसे जला कर भस्म कर देती, लेकिन मुसलमानों के लिये गनीमत जायेज बना दिया गया और जो माल बिना लड़ाई, सुलह या कर (जिज्या) के जरिये हासिल हो उसे «कैय» कहा जाता है, कभी गनीमत को भी «कैय» कहा जाता है।
- अल्लाह का लफ़्ज सिर्फ अच्छे के लिए या इसलिये है कि हर चीज का हकीकी मालिक तो वही है और हुक्म भी उसी का चलता है, मुराद अल्लाह और रसूल के हिस्सा से एक ही है।
- बद्र की लड़ाई १७ रमजानुल मुबारक २ हिजरी को हुई, उस दिन को यौमुल फुरकान इसलिये कहा गया कि यह काफ़िरोँ और मुसलमानों के बीच पहली लड़ाई थी, और मुसलमानों को जीत और असर मल्बा करके यह साबित कर दिया कि इस्लाम सच है और कुफ़ और शिर्क (बहुदेववाद) झूठ है।

४३. जब कि तुझे तेरे सपने में अल्लाह ने उन की तादाद कम दिखाई, अगर उन को ज्यादा दिखाता तो तुम बुजदिल बन जाते और इस वारे में आपसी इख्तिलाफ करते, लेकिन अल्लाह ने बचा लिया, बेशक वह सीनों की बातों को जानने वाला है।

४४. और जब कि उस ने मिलने के समय उन्हें तुम्हारी नजर में बहुत कम दिखाया और तुम्हें उन की नजर में कम दिखाया, ताकि अल्लाह (तआला) उस काम को आखिर तक पहुंचा दे, जो करना ही था, और सभी उमूर अल्लाह ही की ओर फेरे जाते हैं।

४५. हे ईमानवालो! जब तुम किसी (विरोधी) सेना से भिड़ जाओ, तो अड़ जाओ और अल्लाह को बहुत ज्यादा याद करो, ताकि तुम्हें कामयाबी हासिल हो।

४६. और अल्लाह की और उस के रसूल के हुक्म की इताअत करते रहो, आपस में इख्तिलाफ मत रखो, नहीं तो बुजदिल हो जाओगे और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी, और सब्र व यकीन रखो, बेशक अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।

४७. और उन लोगों जैसे न बनो, जो घमंड करते हुए और लोगों में अभिमान करते हुए अपने घरों से चले और अल्लाह के रास्ते से रोकते थे, जो कुछ वह कर रहे हैं अल्लाह उसे घर लेने वाला है।

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا
وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَفِشَلْتُمْ وَتَتَنَزَّعْتُمْ
فِي الْأُمْرِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٤٣﴾

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي آعْيُنِكُمْ
قَلِيلًا وَيَقَلِّلُكُمُ فِي آعْيُنِهِمْ لِيَقْضَى اللَّهُ أَمْرًا
كَانَ مَعْرُوضًا وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٤٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقَيْتُمْ فِرْعَاءَ فَاتَّبِعُوا
وَإِذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٤٥﴾

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا
فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا
إِنَّ اللَّهَ صَعَ الضَّيِّرِينَ ﴿٤٦﴾

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ
بَطْرًا وَأَوْرَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ
اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ﴿٤٧﴾

1 अल्लाह तआला ने नबी ﷺ को सपने में मूर्तिपूजकों की तादाद कम दिखायी और वही तादाद आप ﷺ ने सहाबा के सामने बयान कर दी, जिस से उनकी हिम्मत बढ़ गई, और इस के खिलाफ काफिरों की तादाद ज्यादा दिखायी जाती तो सहाबा के दिलों में बुजदिली पैदा होती और आपसी इख्तिलाफ पैदा होने की उम्मीद थी, लेकिन अल्लाह ने इन दोनों हालातों से मुसलमानों को बचा लिया।

४८. और जब कि उनके अमलों को बैतान उन्हे सुशोभित (जीनत वाला) दिखा रहा था और कह रहा था कि इंसानों में से कोई भी आज तुम पर गालिब नहीं हो सकता, मैं खुद तुम्हारा समर्थक (हिमायती) हूँ, लेकिन जब दोनों गुट जाहिर हुए, तो अपनी एड़ियों के बल पीछे पलट गया और कहने लगा कि मैं तो तुम से अलग हूँ, मैं वह देख रहा हूँ जो तुम नहीं देख रहे, मैं अल्लाह से डरता हूँ, और अल्लाह (तआला) सख्त अजाब वाला है।

४९. जब कि मुनाफिक (द्वयवादी) लोग कह रहे थे और वह भी जिनके दिलों में रोग था कि उन्हें तो उन के धर्म ने धोके में डाल दिया है, और जो भी अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह तआला बेशक जबरदस्त और हिक्मत वाला है।

५०. और काश् कि तू देखता जबकि फरिस्ते काफिरों की जान निकालते हैं, उन के मुँह और कमर पर मार मारते हैं (और कहते हैं) तुम जलने के अजाब का मजा चखो।¹

وَإِذْ رَيْنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمْ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَكُمْ فَلَمَّا تَوَارَتِ الْفِئَتَانِ نَكَصَ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنْكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿48﴾

إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ غَرْهًا هَؤُلَاءِ دِينُهُمْ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿49﴾

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَكَّلُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَأَسْتَكْبِرُوا يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿50﴾

¹ मूर्तिपूजक जब मक्का से निकले तो उन्हें अपने खिलाफ कबीले बनी वक्र बिन किनाना से यह डर था कि वे पीछे से उन्हें नुकसान न पहुँचायें, इसलिए बैतान सुराका बिन मालिक के शबल में आया, जो बनी वक्र बिन किनाना के मुखिया थे, और उन्होंने न केवल जीत की ही भविष्यवाणी (पेशीन गोई) की, बल्कि अपनी हिमायत का यकीन दिलाया, लेकिन जब फरिस्तों को उस ने देखा तो उसे अल्लाह की मदद मालूम हुई तो एड़ियों के बल भाग खड़ा हुआ।

² इस से मुराद या तो वह मुसलमान है, जो नये-नये मुसलमान हुए थे और मुसलमानों की कामयाबी पर उन्हें शक था, या इस से मुराद मूर्तिपूजक है और यह भी सुनिश्चित है कि मदीने के रहने वाले यहूदी मुराद हों।

³ कुछ मुफ्रिसिरो ने इसे बद्र की लड़ाई में मकतूल मूर्तिपूजकों के बारे में बताया है। हजरत इब्ने अब्बास फरमाते हैं कि जब मूर्तिपूजक मुसलमानों की तरफ आते तो मुसलमान उन के मुँह पर तलवारें मारते, जिस से बचने के लिए वे पीठ फेर कर भागते, तो फरिस्ते उन के पिछले हिस्से पर तलवार मारते, लेकिन यह आम आयत है जो हर काफिर और मूर्तिपूजक को शामिल किये हुए है।

५१. यह उन अमलों के सबब जो तुम्हारे हाथों ने पहले ही भेज रखा है, बेशक अल्लाह (तआला) अपने बन्दों पर जरा भी जुल्म नहीं करता।

५२. फिरऔन के पैरोकारों की हालत की तरह और उन के बुजुर्गों के, कि उन्होंने अल्लाह की आयतों पर यक्रीन नहीं किया तो अल्लाह ने उन के गुनाहों के सबब उन्हें पकड़ लिया, अल्लाह (तआला) बेशक जबरदस्त और सख्त अजाब वाला है।

५३. ये इसलिए कि अल्लाह (तआला) ऐसा नहीं कि किसी कौम पर कोई नेमत कर के फिर बदल दे, जब तक कि वह खुद अपनी उस हालत को न बदल दें, जो कि उनकी अपनी थी, और यह कि अल्लाह तआला सुनने वाला जानने वाला है।

५४. फिरऔन की आल और उनके पहले के लोगों के बराबर कि उन्होंने अपने रब की बातों को झुठलाया तो हम ने उनके गुनाहों के सबब उन्हें तबाह कर दिया और फिरऔन वालों को डुबो दिया और यह सभी जालिम थे।

५५. सभी जीवों से बुरे अल्लाह के नजदीक वह है जो कुफ्र करें फिर वह ईमान न लायें।

५६. जिन से आप ने वादा लिया, फिर भी वे अपना वादा हर बार तोड़ते हैं और कभी भी तकवा नहीं बरतते।

ذَلِكَ بِمَا كَفَرْتُمْ أَنتُمْ وَآبَاءُكُمْ
لَيْسَ بِظُلْمٍ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٥١﴾

كذآبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۖ وَآلِزَيْنَ ۖ مِن قَبْلِهِمْ ۖ
كَفَرُوا بِآيَاتِ اللّٰهِ فَآخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ
إِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٥٢﴾

ذَلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا
عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ ۗ
وَإِنَّ اللّٰهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٣﴾

كذآبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۖ وَآلِزَيْنَ ۖ مِن
قَبْلِهِمْ ۖ كذآبِ آلِ فِرْعَوْنَ ۖ فَآخَذَهُمُ
اللّٰهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ وَآخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوبِهِمْ ۗ
وَإِنَّ اللّٰهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٤﴾

إِنَّ سَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِينَ كَفَرُوا
فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٥﴾

الَّذِينَ عٰهَدتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ
عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ ۖ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ ﴿٥٦﴾

१ इसका मतलब यह है कि जब तक कोई कौम शुक का रास्ता अपनाकर और अल्लाह तआला के जरिये बताये गये नाजायेज से मुख मोड़ कर अपनी हालतों और अखलाकों को बदल नहीं लेती अल्लाह तआला उस पर अपने सुख-सुविधाओं और नेमत के दरवाजे बन्द नहीं करता, दूसरे लफ्जों में अल्लाह तआला गुनाहों के सबब अपनी नेमतें खत्म कर देता है और अल्लाह तआला की रहमत का पात्र (मुस्तहक) होने के लिए जरूरी है कि गुनाहों से बचा जाये।

५७. इसलिए जब कभी तू उन पर लड़ाई में गालिव हो जाओ तो उन्हें ऐसी मार मारो कि उन के पिछले भी भाग खड़े हों, शायद वह नसीहत हासिल कर लें।

५८. और अगर तुझे किसी क्रौम से धोखेवाजी का डर हो तो बराबरी की हालत में उन की सुलह तोड़ दे,^१ अल्लाह ख्यानत करने वालों से सुहृद्वत नहीं रखता।

५९. और काफिर यह ख्याल न करें कि वे भाग निकले, बेशक वे मजबूर नहीं कर सकते।

६०. और तुम उन से (लड़ने के) लिये अपनी इस्तेताअत भर क़ूवत तैयार करो, और घोड़े तैयार रखने की भी,^२ कि उस से तुम अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों को डरा सको और उन के सिवाय दूसरों को भी, जिन्हें तुम नहीं जानते, अल्लाह उन्हें अच्छी तरह जान रहा है, और जो कुछ भी अल्लाह के रास्ते में खर्च करोगे, वह तुम्हें पूरा-पूरा दिया जायेगा और तुम्हारे हक का नुकसान नहीं किया जायेगा।

وَمَا تَشَقَّقَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشُدْ وَبِهِمْ مَنْ
خَلَفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥٧﴾

وَمَا تَخَافَنَّ مِنْ كَوْمٍ خِيَانَةٌ فَأَبْذُرْ إِلَيْهِمْ
عَلَى سَوَاءٍ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِبِينَ ﴿٥٨﴾

وَلَا يَحْصِبْنَ الَّذِينَ نَفَرُوا سَبِقُوا
إِنَّهُمْ لَا يُعْجِدُونَ ﴿٥٩﴾

وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ
رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ
وَالْآخِرِينَ مِنْ دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُوهُمْ إِنَّ اللَّهَ
يَعْلَمُهُمْ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
يُؤْتِكُمْ إِيَّاهُ وَأَنْتُمْ لَا تظَلُمُونَ ﴿٦٠﴾

^१ शरयिम का मतलब है कि उनको ऐसी मार मारो कि जिस से उन के मानने वालों और साथियों में भगदड़ मच जाये, यहाँ तक कि वह आप की तरफ इस उम्मीद से मुख ही न करे कि कहीं उनका भी वही नतीजा न हो जो उनके पहले के लोगों का हुआ।

^२ धोखेवाजी से मुराद है जिस क्रौम से सुलह हुई, उस से यह डर कि वह सुलह तोड़ दे।

^३ क्यूँकि उस समय यह बहुत बड़ा लड़ाई का हथियार था, और महत्वपूर्ण (अहम) शिक्षा थी, जिस तरह घोड़े लड़ाई के लिए बहुत जरूरी थे, जैसाकि इस आयत से भी बाज्हे होता है, लेकिन अब तीर चलाने और घोड़े की लड़ाई में इतनी जरूरत और अहमियत नहीं रही, इसलिए (وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ) के अधीन आजकल के आधुनिक हथियार आते हैं (जैसे- मीजाईल, टैंक, बम, और लड़ाई के विमान और पोत और लड़ाई के लिए पनडुब्बियाँ वगैरह) जिनकी तैयारी जरूरी है।

६१. और अगर वे सुलह की तरफ झुकें, तो तू भी सुलह की तरफ झुक जा, और अल्लाह पर भरोसा रख, बेशक वह सुनने वाला जानने वाला है।

६२. और अगर वे तुझ से धोका करना चाहेंगे तो अल्लाह तुझे बस है, उसी ने अपनी मदद से और ईमानवालों से तेरा समर्थन कराया है।

६३. और उन के दिलों में आपसी मुहब्बत भी उसी ने पैदा किया है, अगर आप धरती की सभी चीजें खूब कर देते तो भी उन के दिलों में मुहब्बत का जज़्बा पैदा नहीं कर सकते थे। लेकिन अल्लाह ही ने उन के दिलों में मुहब्बत डाल दिया, बेशक वह गालिब हिक्मत वाला है।

६४. हे नबी (ईब्रदूत)! आप और आप के पैरोकार मुसलमानों को अल्लाह बस है।

६५. हे नबी! मुसलमानों को जिहाद (धर्मयुद्ध) का झोंक दिलाओ, अगर तुम में से बीस साबिर भी होंगे तो भी दो सौ पर गालिब रहेंगे, और अगर तुम में से एक सौ होंगे तो एक हजार काफ़िरो पर गालिब रहेंगे,^१ इस सबब कि वे नासमझ लोग हैं।

६६. अच्छा अब अल्लाह तुम्हारा बोझ हल्का करता है, वह अच्छी तरह जानता है कि तुम में कमजोरी है तो अगर तुम में से एक सौ साबिर होंगे तो वे दो सौ पर गालिब रहेंगे और अगर तुम

وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي آتَاكَ بِبَصِيرَةٍ وَالْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٢﴾

وَأَلْفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ذَلِكُمْ أَفْنَقَتْ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَّا أَفْنَتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ أَلْفَ بَيْنَهُمْ طَرِيقًا عَزِيزًا حَكِيمًا ﴿٦٣﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبِكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٤﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عَشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتِينَ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٦٥﴾

الَّذِينَ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا ۚ فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مِائَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا ۚ وَإِنْ يَأْذِنَ اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ ﴿٦٦﴾

^१ इन आयतों में अल्लाह तआला ने नबी ﷺ और ईमानवालों पर जो एहसान किये उन में से एक बड़े एहसान को बयान किया है, वह यह कि नबी ﷺ की ईमानवालों के जरिये मदद की, वे आप ﷺ के दाहिने हाथ और रक्षक और सहायक बन गये, ईमानवालों पर यह एहसान किया कि इस से पहले जो उन में दुश्मनी थी उसे मुहब्बत में बदल दिया।

^२ यह मुसलमानों के लिए खुशखबरी है कि तुम्हारे मजबूती से लड़ने वाले २० सैनिक दो सौ पर और सौ एक हजार पर गालिब रहेंगे।

मे से एक हजार होंगे तो वह अल्लाह के हुक्म से दो हजार पर गालिब रहेंगे' और अल्लाह (तआला) सब करने वालों के साथ है।

६७. नवी के हाथ में वन्दी नहीं चाहिए, जब तक कि देश में हिंसक युद्ध न हो जाये तुम तो दुनिया के धन चाहते हो और अल्लाह का इरादा आखिरत का है, और अल्लाह तआला गालिब हिक्मत वाला है।

६८. अगर पहले से ही अल्लाह की तरफ से बात लिखी न होती² तो जो कुछ तुम ने लिया है उसके बारे में तुम्हें कोई सख्त अजाब होता।

६९. और जो हलाल और पाक धन लड़ाई से हासिल करो उसे खाओ³ और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह तआला बड़ा बख्शने वाला और रहम करने वाला है।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ أَسْرَىٰ حَتَّىٰ يُفْخَرَ
فِي الْأَرْضِ مُرِيدًا وَلَا عَرَضَ الدُّنْيَا ۗ وَاللَّهُ
يُرِيدُ الْآخِرَةَ ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝۶۷

لَوْلَا كِتَابٌ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا
أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝۶۸

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا طَيِّبًا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۗ
إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝۶۹

¹ पिछला हुक्म सहाबा पर भारी हुआ, क्योंकि इसका मतलब था एक मुसलमान दस काफिरों के लिए, बीस दो सौ के लिए और एक सौ एक हजार के लिए काफी है, और काफिरों के सामने मुसलमानों की इतनी तादाद हो तो जिहाद फर्ज और इससे वचना नाजायेज है। इसलिए अल्लाह तआला ने कमी करके एक और दस के अनुपात (तनासुब) को एक और दो का अनुपात कर दिया। (सहीह बुखारी, तफसीर सूर: अल-अफाल) अब इस अनुपात पर जिहाद फर्ज और इस से कम पर फर्ज नहीं है।

² इस बारे में मुफरिसरों में इख्तिलाफ है कि यह लिखी हुई बात क्या थी? कुछ ने कहा कि इस से मुराद लड़ाई में मिली धन-सामग्री को नाजायेज करने का हुक्म है, यानी चूँकि यह तक्दीर का लेख लिखा था कि मुसलमानों को लड़ाई में मिली धन-सामग्री नाजायेज होगी, इसलिए तुम ने फिदिया ले कर जायेज काम किया, अगर ऐसा न होता तो फिदिया लेने के सबब तुम्हें बहुत अजाब सहन करना पड़ता, कुछ ने बद्र में शहीद होने वालों की तौबा इस से मुराद लिया है, कुछ ने रसूलुल्लाह ﷺ की मौजूदगी को अजाब न आने का सबब मुराद लिये है आदि (तफसीली जानकारी के लिए देखें फतहूल कदीर)

³ इस में लड़ाई से मिली माल-सामग्री को हलाल और पाक ठहराकर फिदिया को हलाल होना बताया गया है, जिस से इस बात का समर्थन (ताईद) होता है कि "लिखी हुई बात" शायद इस से मुराद लड़ाई में मिली धन-सामग्री है।

७०. हे नबी ! अपने हाथ के नीचे के बन्दियों से कह दो कि अगर अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों में अच्छा इरादा देखेगा तो जो कुछ तुम से लिया गया है, उस से अच्छा तुम्हें अता करेगा, और फिर गुनाह भी माफ़ कर देगा और अल्लाह माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

७१. और अगर वे तुझ से ख़यानत का इरादा करेंगे तो यह तो इस से पहले खुद अल्लाह के साथ ख़यानत कर चुके हैं, आख़िर उस ने उन्हें पकड़वा दिया, और अल्लाह तआला इल्म वाला हिक्मत वाला है।

७२. जो लोग (इस्लाम) धर्म पर ईमान लाये और हिजरत (प्रस्थान) कर गये और अपने माल, जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद (धर्मयुद्ध) किये, और जिन लोगों ने उन को पनाह और मदद दी, यह सब आपस में एक-दूसरे के मित्र है, और जो ईमान लाये लेकिन हिजरत (प्रवास) नहीं किया तुम से उनकी तनिक भी मित्रता नहीं जब तक कि वह हिजरत (देश त्याग) न करें।^१ हा! अगर वह धर्म के बारे में तुम से मदद मांगें तो तुम पर मदद देना ज़रूरी है, सिवायें उन लोगों के कि तुम्हारे और उन के बीच मुआहदा है, और जो भी तुम कर रहे हो अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

७३. और काफ़िर आपस में एक-दूसरे के मित्र है, अगर तुम ने ऐसा न किया तो देश में फ़ित्ना होगा और बहुत फ़साद पैदा हो जायेगा।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَن فِي أَيْدِيكُمْ مِنَ الْأَسْرَىٰ
إِن يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا إِنِّي تُكْرِمُهُمْ خَيْرًا مِّمَّا
أَخَذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرَ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٠﴾

وَإِن يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِن
قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ
وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا
وَوَصَرُوا أَوْلِيَّاهُمْ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَهَاجِرُوا مَا لَكُم مِّن
وَلَا يَحِيهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ يَهَاجِرُوا ۗ وَإِن
اسْتَضَرُّوكُم فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمْ الْكُفْرُ إِلَّا
عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ ۗ وَاللَّهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٢﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ
إِلَّا تَعْلَمُوهُ سَكُنَ فِي الْأَرْضِ
وَفَسَادٌ كَثِيرٌ ﴿٧٣﴾

^१ ये «सहाबा» मुहाजेरीन (जो मक्का नगरी छोड़ कर मदीना आये) कहलाते हैं, जो फ़जीलत में सहाबा में सब से बेहतर हैं।

^२ ये अन्सार कहलाते हैं (ये मदीना के असल निवासी हैं) ये फ़जीलत के दूसरे मुक़म पर हैं।

^३ यह सहाबा का तीसरा दर्जा है जो मुहाजिर और अन्सार के सिवाय है, ये मुसलमान होने के बाद अपने ही इलाके और जाति में रहते थे, इसलिए फ़रमाया कि तुम्हारे हक़ या विरासत के वे हकदार नहीं।

७५. जो लोग ईमान लाये और हिजरत किया और अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन्होंने पनाह दिया और मदद पहुँचायी, यही लोग सच्चे ईमानवाले हैं, उन के लिए माफ़ी और इज़्जत वाला रिज़्क है।

७५. और जो लोग इस के बाद ईमान लाये और हिजरत किया और तुम्हारे साथ होकर जिहाद किया, तो यह लोग भी तुम में से ही हैं, और रिश्ते वाले उन में से आपस में एक-दूसरे के ज्यादा करीब हैं अल्लाह के हुकम में, बेशक अल्लाह सब कुछ जानने वाला है।

सूरतुत्तौब:-९

सूर: तौब:* मदीने में उतरी और इस में एक सौ उन्तीस आयतें और सोलह रूकूअ हैं।

१. (यह) अल्लाह और उसके रसूल (दूत) की तरफ से बेजारी का एलान है^१ उन मुशरिकों के बारे में जिन से तुम ने मुआहदा किया है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوْا وَانصَرَوْا أُولَئِكَ هُمُ
الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٤﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْ بَعْدِ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا
مَعَكُمْ فَأُولَئِكَ مِنكُمْ وَأُولُو الْأَرْحَامِ
بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ
بِخَبْرِ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧٥﴾

سُورَةُ التَّوْبَةِ

بَرَاءَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ
عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١﴾

^१ भाईचारे और क्रसम की बिना पर विरासत में जो हिस्सेदार बनते थे, इस आयत में उसे खारिज कर दिया गया है, अब वारिस वही होगा जो जिसका वंशीय या ससुराली रिश्ता होगा।

* नाम का सबब : मुफ़सिरो ने इस के कई नामों का बयान किया है, लेकिन ज्यादा मशहूर दो नाम हैं, पहले 'तौबा', इसलिए कि इस में ईमानवालों की तौबा कुबूल होने का बयान है। दूसरा नाम 'बराअत' है, इसलिए कि इस में मूर्तिपूजकों से सुलह से अलग होने का एलान किया गया है। यह कुरआन मजीद का एक ही सूर: है, जिसके शुरू में बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम नहीं लिखा है, इस के भी कई सबब किताबों में लिखे हुए हैं, लेकिन ज्यादा सही बात यह लगती है कि सूर: अफ़ाल और सूर: तौबा इन दोनों के बारे में समानता पायी जाती है, इसलिए यह सूर: अफ़ाल की पूरक (तक़्मिला) या वाक़ी है, यह सात बड़ी सूरतों में से सातवी बड़ी सूर: है, जिन्हें सबआ तिवाल कहा जाता है।

^२ फ़तह मक्का के बाद ९ हिजरी में नबी ﷺ ने हजरत अबू बक़, हजरत अली (رضي الله عنهما) और दूसरे कुछ सहाबा को यह आयतें और हुकम दे कर भेजा ताकि वह मक्के में उनको आम लोगों के सामने एलान कर दें, उन्होंने आप ﷺ के हुकम के मुताबिक एलान कर दिया कि कोई इंसान अब (काबा) का नंगा तवाफ़ (परिक्रमा) नहीं कर सकेगा, बल्कि अगले साल से किसी मूर्तिपूजक को बैतुल्लाह (अल्लाह के घर) के हज़ का हुकम नहीं दिया जायेगा। (सहीह बुखारी नं० १३६९, मुस्लिम नं० ९८३)

२. इसलिए (हे मुरिरको!) तुम देश में चार महीने सफर कर लो, और जान लो कि तुम अल्लाह को मजबूर नहीं कर सकते और अल्लाह काफिरों को हत्वा करने वाला है।

३. अल्लाह और उस के रसूल (दूत) की तरफ से हज अकबर के दिन¹ साफ एलान है कि अल्लाह मुरिरकों से बेजार है और उसका रसूल भी, अगर अब भी तुम तौबा कर लो तो तुम्हारे लिये बेहतर है और अगर तुम मुंह फेरो तो जान लो कि तुम अल्लाह को मजबूर नहीं कर सकोगे और काफिरों को सख्त अजाब की खबर दे दो।

४. लेकिन वह मुरिरक जिन से तुम ने मुआहदा कर लिया है, और उन्होंने तुम्हें जरा भी नुकसान नहीं पहुंचाया और तुम्हारे खिलाफ किसी की मदद नहीं की तो तुम भी मुआहदा की मुदत उन के साथ पूरी करो, बेशक अल्लाह परहेजगारों से मुहब्बत करता है।

५. फिर हुरमत वाले महीनों² के खत्म होते ही मूर्तिपूजकों को जहाँ पाओ कत्ल करो, उन्हें

فَيَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَلِمُوا
أَنَّهُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ وَأَنَّ اللَّهَ مُخْزِي
الْكٰفِرِينَ ②

وَإِذْ أَنْزَلْنَا إِلَيْنَا الْبُرْجَانَ
الْحَقِّ الْأَكْبَرَ أَنَّ اللَّهَ بَرِيءٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ
وَرَسُولُهُ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَإِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللَّهِ
وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ③

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ
يَنْقُصُوا شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا
فَاتِمُوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَىٰ مَدَّتِهِمْ إِنَّ اللَّهَ
يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ④

فَإِذَا اسْلَخَ الْأَشْهُرَ الْحُرْمَ فَاتَّبِعُوا

¹ सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम) और दूसरी सहीह हदीस की किताबों से साबित है कि हज अकबर के दिन से मुराद योमुन्नहर (यानी १० जिलहिज्जा) का दिन है। (तिर्मिजी नं० ९५७ बुखारी नं० ४६५५, मुस्लिम नं० ९८२) उसी दिन मिना के मुकाम पर मुक्ति (बराअत) का एलान किया गया, १० जिलहिज्जा को हज अकबर इसलिए कहा जाता है कि इस दिन हज की सब से ज्यादा और खास दीनी रीतियों को अदा किया जाता है, और आम लोग उमरे को हज असगर कहा करते थे, इसलिए उमरे से अच्छा करने के लिए हज को महा हज (अकबर) कहा गया। लोगों में जो यह भ्रम है कि जुमा को आये वह हज अकबर है, बेवुनियाद है।

² इन हुरमत वाले महीनों से मुराद क्या है? इस में इख्लेलाफ है, एक ख्याल तो यह है कि इस से मुराद वही चार महीने हैं जो हुरमत वाले हैं, यानी मुहर्रम, रजब, जीकाद और जिलहिज्जा। लेकिन इमाम इब्ने कसीर के ऐतबार से यहाँ निषेधित महीने नहीं हैं, बल्कि १० जिलहिज्जा से १० रबीउस्सानी तक के चार महीने मुराद हैं, उन्हें हुरमत वाले महीने इसलिए कहा गया है कि बराअत के एलान के बिना पर इन चार महीनों में उन मूर्तिपूजकों से लड़ने और उन के खिलाफ किसी भी कार्यवाही का हुक्म नहीं था। मुक्ति (बराअत) के एलान के बुनियाद पर यह दलील ज्यादा अच्छी मालूम होती है।

बन्दी बनाओ, उनका घेराव करो और उन के ताक में हर घाटी में जा बैठो, लेकिन अगर वे तौबा कर लें और नमाज पाबन्दी से (लगातार) पढ़ने लगे और जकात अदा करने लगे तो तुम उनका रास्ता छोड़ दो, बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

६. अगर मुश्रिकों में से कोई तुम्ह से पनाह माँगे तो तु उसे पनाह दे दे, यहाँ तक कि वह अल्लाह का कौल सुन ले फिर उसे उस के शान्ति स्थान तक पहुँचा दे। यह इसलिए कि वह लोग नावाकिफ़ है।^१

७. मूर्तिपूजकों का वादा अल्लाह और उस के रसूल के करीब कैसे रह सकता है, सिवाय उन के जिन से मुआहदा तुम ने मस्जिदे हुराम के पास किया है तो जब तक वे लोग तुम से मुआहदा निभायें, तुम भी उन से वादा की पासदारी करो, अल्लाह (तआला) परहेजगार लोगों से मुहब्बत करता है।

८. उन के वादों का क्या भरोसा, उनको अगर तुम पर गल्बा मिल जाये तो न ये सम्बन्ध का ख्याल करें न अहद व पैमान का, अपने मुँह से ये तुम्हें परिचा रहे हैं, लेकिन इनके दिल नहीं

الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدْتُمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ

وَاحْصُرُوهُمْ وَأَقْبُوا إِلَيْهِمْ كُلَّ مَرْصِدٍ فَإِن

تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا

سَبِيلَهُمْ ط إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ⑤

وَإِن أَحَدًا مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ

فَاجِرُهُ حَتَّى يَسْمَعَ كَلِمَ اللَّهِ ثُمَّ ابِلِغْهُ

مَأْمَنَةً ط ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ⑥

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ

رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدْتُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ

الْحَرَامِ قَبْلَ اسْتِقْأَمُوا إِلَيْكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ ط

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ⑦

كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ

إِلَّا وَالذَّمَّةَ ط يَرِضُونَكُمْ يَا قَوْمِهِمْ وَتَابُوا

قُلُوبُهُمْ ⑧ وَالْكَرْهُمُ فَيَسْقُونَ ⑧

¹ इस आयत में जंगजू मूर्तिपूजकों के बारे में एक छूट दी गयी है कि अगर कोई मूर्तिपूजक पनाह माँगे तो उसे पनाह दे दो, यानी उसे अपनी हिफाजत में महफूज रखो ताकि कोई दूसरा मुसलमान उसे मार न सके, ताकि उसे अल्लाह की बातें सुनने और इस्लाम धर्म क़बूल करने का नसीब हासिल हो जाये, लेकिन अगर अल्लाह की बातें सुनने के बाद भी वह इस्लाम दीन नहीं क़बूल करता है, तो उसे उस के महफूज मक़ाम तक पहुँचा दो, यानी अपनी हिफाजत का कर्तव्य आखिर पल तक निभाना है, जब तक वह अपने महफूज मक़ाम तक नहीं पहुँच जाता उसकी हिफाजत की जिम्मेदारी तुम्हारे ऊपर है।

² यानी पनाहगीरों को पनाह की छूट इसलिए अता की गयी है क्योंकि यह लोग नावाकिफ़ है, मुमकिन है अल्लाह और उस के रसूल की बातें उन के इल्म में आयें और मुसलमानों के अखलाक और किरदार वह देखें, तो इस्लाम धर्म क़बूल करके आखिरत के अजाब से बच जायें, जिस तरह हुदैबिया की सुलह के बाद बहुत से काफ़िर मदीना आते-जाते रहे, तो मुसलमानों के अखलाक और किरदार को देख कर इस्लाम धर्म को समझने में बहुत मदद मिली और बहुत से लोग मुसलमान हो गये।

मानते और उनमें से ज्यादातर तो फासिक हैं।

९. उन्होंने अल्लाह की आयतों को बहुत कम दाम में बेच दिया और उस के रास्ते से रोका, बहुत बुरा है जो यह कर रहे हैं।

१०. यह तो किसी मुसलमान के हक में किसी रिश्ता का या अहद की कभी फिक्र नहीं करते, यह है ही हद से गुजरने वाले।

११. अब भी अगर ये तौबा (पश्चाताप) कर लें और नमाज लगातार पढ़नें लगे और जकात देते रहें, तो तुम्हारे दीनी भाई हैं^१ और हम तो जानकारों के लिए अपनी आयतों को तफसील के साथ बयान कर रहे हैं।

१२. अगर ये लोग अहद और वाद के बाद भी अपना अहद तोड़ दें और तुम्हारे धर्म की निन्दा भी करे, तो तुम भी उन काफिरों के सरदारों से भिड़ जाओ, उनकी कसम कोई चीज नहीं, मुमकिन है कि इस तरह वह रुक जायें।

१३. तुम उन लोगों के सिर कुचलने के लिए क्यों तैयार नहीं होते, जिन्होंने अपनी कसमों को तोड़ दिया और (आखिर) ईशदत (रसूल) को देश से निकाल देने की सोच में हैं। और खुद ही पहली बार उन्होंने तुम से छेड़ की है, क्या तुम उन से डरते हो? अल्लाह ही को सब से ज्यादा हक है कि तुम उस से डर रखो अगर तुम ईमान वाले हो।

اَشْتَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ كَيْفًا قَلِيلًا فَصَدُّوا
عَنْ سَبِيلِهِ ؕ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩﴾

لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا وَلَا ذِمَّةً ؕ
وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ ﴿١٠﴾

فَإِنْ تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ
فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ ؕ وَتَفْضِيلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ
يَعْمَلُونَ ﴿١١﴾

وَإِنْ تَكْفُرُوا أَيَّامًا تَهُمُّ مِنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ
وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا ؕ إِنَّهُمْ
أَكْفَرُ لَكُمْ لَعَلَّكُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٢﴾

أَلَا تَقَاتِلُونَ قَوْمًا نَكَثُوا آيَاتِهِمْ
وَهُمْ يُبَاخِرُجِ الرَّسُولَ وَهُمْ بَدَّءُوكُمْ
أَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ أَتَخْشَوْنَهُمْ ۖ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ
تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١٣﴾

^१ नमाज, तौहीद (एकेश्वरवाद में यकीन) और रिसालत के कुबूल करने के बाद, इस्लाम का सबसे अहम और खास रुकन है जो अल्लाह का हक है, उस में अल्लाह की इबादत के कई रूप हैं, इस में हाथ बांधकर खड़ा होना है, रुकूअ और माथा टेकना है, दुआ और अजकार है, अल्लाह की अजमत और बड़ाई का और अपनी कमजोरी और लाचारी का प्रदर्शन (इजहार) है। इबादत के यह सारे तरीके और रूप सिर्फ अल्लाह के लिए योग्य हैं, नमाज के बाद दूसरा फरीजा जकात अदा करना है, जिस में इबादती काम होने के साथ-साथ दूसरे इंसानों पर उन के नैतिक (अखलाकी) हक भी शामिल हैं।

१४. उन से तुम जंग करो, अल्लाह तुम्हारे हाथों उनको तकलीफ देगा, उन्हें ज़लील और बेइज्जत करेगा, तुम्हें उन पर मदद देगा और मुसलमानों के दिलों को ठन्डा करेगा।

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخِزَّهُمْ
وَيُنْصِرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيُغْفِرْ صُدُورَ قَوْمٍ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾

१५. और उन के दिलों के दुख और गुस्से को दूर करेगा! और वह जिसकी तरफ चाहता है रहम से आकर्षित (मुतवज्जिह) होता है, और अल्लाह तआला जानने वाला हिक्मत वाला है।

وَيُدْخِلْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ وَيَتُوبُ اللَّهُ
عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٥﴾

१६. क्या तुम यह समझ बैठ हो कि तुम छोड़ दिये जाओगे? अगरचे कि अल्लाह (तआला) ने तुम में से उन्हें मुमताज नहीं किया है जो जिहाद के सिपाही हैं, और जिन्होंने अल्लाह के और उस के रसूल के और ईमानवालों के सिवाय किसी को दोस्त नहीं बनाया, और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानने वाला है जो तुम कर रहे हो।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ
الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِنْ
دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ
وَلِيَّةً ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٦﴾

१७. मुमकिन नहीं कि मूर्तिपूजक अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जबकि हाल यह है कि यह अपने कुफ्र के खुद गवाह हैं, उन के अमल बरबाद और बेकार हैं, और वे दायमी तौर से नरकवासी हैं।^१

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَنْ يَعْمُرُوا مَسْجِدَ اللَّهِ
شَاهِدِينَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِم بِالْكَفْرِ ۗ وَأَتَىٰكَ حَيْثُ
أَعْمَلْتُمْ ۗ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ ﴿١٧﴾

^१ यानी जब यह मुसलमान कमजोर थे, तो यह मूर्तिपूजक उन पर जुल्म करते थे, जिसके सबब मुसलमानों के दिल उनसे बहुत दुखी और घायल थे, जब मुसलमानों के हाथों वह मारे जायेंगे और जिल्लत व हसबाई उनकी तकदीर में आयेगी तो फितरी बात है कि इस से उत्पीड़ित और दुखी मुसलमानों के दिलों को ठंढक मिलेगी और मन का गुस्सा कम होगा।

^२ مساجد الله से मुराद मस्जिदे हराम हैं, बहुवचन (जमा) तपज इसलिए इस्तेमाल किया गया है कि दुनिया की सभी मस्जिदों का यह केन्द्र (किब्ला) है, या अरबों में एक वचन के लिए बहुवचन का इस्तेमाल भी जायेज कहा जाता है, मतलब यह है कि अल्लाह के घर (यानी मस्जिदे हराम) की तामीर करना या बसाना मुसलमानों का काम है, न कि उनका जो कुफ्र और शिर्क करते हैं, और उसको कुबूल भी करते हैं, जैसे कि वे तलबिया में कहा करते थे :

((لَيْكُمُ الْأَشْرِكَةُ لَكَ، إِلَّا شَرِيكًا مَوْلَاكَ، تَمْلِكُهُ وَمَا تَمْلِكُ)) (सहीह मुस्लिम)

^३ यानी उन के वे अमल जो देखने में नेक लगते हैं, जैसे खानये काअबा का तवाफ, उमर: और हाजियों की खिदमत आदि (बगैरह)। लेकिन ईमान के बिना वह ऐसे पेड़ की तरह हैं जो बिना छाया और बिना फल के हो या वे उन फूलों की तरह हैं जिन में खुशबू नहीं है।

१८. अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करते हैं, जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखते हों, नमाज बराबर पढ़ते हों, जकात देते हों, और अल्लाह के सिवाय किसी से न डरते हों, मुमकिन है कि यही लोग बेशक हिदायत याफ़ता है।

१९. क्या तुम ने हाजियों को पानी पिला देना और मस्जिदे हराम की सेवा करना उस के बराबर कर दिया है जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान लाये और अल्लाह की राह में जिहाद किया, यह अल्लाह के नजदीक बराबर नहीं और अल्लाह (तआला) जालिमों को रास्ता नहीं दिखाता है।

२०. जो लोग ईमान लाये, हिजरत की, अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से जिहाद किया, वह अल्लाह के सामने बहुत ज़्यादा दर्जे वाले हैं, और यही लोग कामयाबी हासिल करने वाले हैं।

२१. उनका रब उन्हें अपनी रहमत और खुशी और ऐसी जन्नतों की खुशखबरी देता है जिन में उन के लिये दायमी सुख है।

२२. वहाँ ये हमेशा रहेंगे अल्लाह के पास, बेशक बहुत बड़े बदले हैं।²

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسْجِدَ اللَّهِ مَنِ آمَنَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى
الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَن
يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ ﴿١٨﴾

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٩﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَجَاهَدُوا وَجِهَدُوا فِي سَبِيلِ
اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَكْثَرُ دَرَجَةً
عِنْدَ اللَّهِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِنْهُ وَرِضْوَانٍ
وَجَنَّاتٍ لَهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ ﴿٢١﴾
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ
أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٢﴾

¹ मूर्तिपूजक हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम की देख भाल करने का जो काम करते थे उस पर उन्हें बड़ा घमंड था, और इसके मुकाबले में वे ईमान और जिहाद को कोई फ़ज़ीलत नहीं देते थे, जिसकी फ़ज़ीलत मुसलमानों में थी। अल्लाह ने फ़रमाया : क्या तुम हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिदे हराम का प्रबन्ध करने को अल्लाह पर ईमान और अल्लाह की राह में जिहाद के बराबर समझते हो ? याद रखो, अल्लाह के करीब ये बराबर नहीं हैं, बल्कि मूर्तिपूजक का कोई भी अमल कुबूल नहीं, चाहे वह सबाब के तौर पर ही हो।

² इन आयतों में उन ईमानवालों की प्रधानता (फ़ज़ीलत) की चर्चा की गयी है जिन्होंने हिजरत किया और अपने तन-मन-धन से जिहाद में हिस्सा लिया। फ़रमाया कि अल्लाह के यहाँ उन्हीं का पद अच्छा है और वही सफल है, यह अल्लाह की रहमत और रज़ा और दायमी इआम के पात्र हैं, न कि वे जो खुद अपने मुँह भियाँ भिडू बनते हैं और अपने पूर्वजों के रीति-रिवाजों को ही अल्लाह पर ईमान के मुकाबले में प्यारा रखते हैं।

२३. हे ईमानवालों! अपने पिताओं और अपने भाईयों को दोस्त न बनाओ अगर वह कुफ्र को ईमान से ज्यादा अच्छा समझें, तुम में से जो भी उनसे प्रेम रखेगा वह पूरी तरह (गुनाहगार और) जालिम है।

२४. आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे वंश और कमाया धन और वह तिजारत जिसकी कमी से तुम डरते हो, और वे घर जिन्हें तुम प्यारा रखते हो (अगर) यह तुम्हें अल्लाह और उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद से ज्यादा प्यारा है, तो तुम इंतजार करो कि अल्लाह तआला अपना अजाब ले आए, अल्लाह तआला फ्रासिकों को रास्ता नहीं दिखाता है।

२५. बेशक अल्लाह तआला ने तुम्हें बहुत से मैदाने जंग में फलह अता की है, और हुनैन की लड़ाई के दिन भी, जबकि तुम्हें अपनी ज्यादा तादाद पर घमन्ड था, लेकिन इसने तुम्हें कोई फायेदा नहीं दिया, लेकिन धरती अपनी विस्तार (वुसअत) के बावजूद भी तुम्हारे लिए तंग हो गयी, फिर तुम पीठ फेर कर मुड़ गये।

२६. फिर अल्लाह ने अपनी तरफ से सलामती अपने नबी पर और ईमानवालों पर उतारी और अपनी वह सेना भेजी, जिन्हें तुम देख नहीं रहे थे और काफिरों को पूरा अजाब दिया, और इन काफिरों का यही बदला था।

२७. फिर उस के बाद भी जिसे चाहे अल्लाह (तआला) माफ करे! अल्लाह ही बख्शने वाला रहम करने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ
أَوْلِيَاءَ إِن سَأَلْتُمُوهُم كَمَا سَأَلْنَا الْكَافِرِينَ وَهُمْ
يَتَرْتَابُونَ ۗ وَمَنْ يَتَرْتَبْهُمْ فَمَنْ لَمْ يَحْمِلْ
يَتَرْتَابُوا ۗ وَمَنْ يُحْمَلْ مِنْهُم فَمَا لَهُمْ
بِشَيْءٍ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٣﴾

قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ
وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ
اِقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَتَّخِذُونَ
كَسَادًا وَمَسْكِنًا تَرْضَوْنََهَا
أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ
وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا
حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرٍ ۗ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٤﴾

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ
وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ
فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَصَافَتْ
عَلَيْكُمْ ۗ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ
وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾

ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى
الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ حُدُودَ الْمَنَافِعِ وَأَعَدَّ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۗ وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦﴾

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَلَى مَنْ
يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٧﴾

हुनैन मक्का और तायफ नगरों के बीच एक घाटी का नाम है, यहाँ हवाजिन और सकीफ के दो कबीले रहते थे, जो अपनी तीरअंदाजी में मञ्हर थे, यह मुसलमानों के खिलाफ लड़ने की तैयारी कर रहे थे कि इसकी खबर रसूलुल्लाह ﷺ को मिली तो आप ﷺ बारह हजार मुसलमानों की सेना लेकर इन कबीलों से जंग करने के लिए हुनैन की घाटी में गये, यह फलह मक्का के १८ या १९ दिन के बाद शब्वाल की घटना (बाक़ेआ) है।

२८. हे ईमानवालो! बेशक मूर्तिपूजक नापाक है,^१ वह इस साल के बाद मस्जिद हराम के करीब भी न आने पायें,^२ अगर तुम्हें मरीबी का डर है, तो अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत से धनवान बना देगा अगर चाहे, बेशक अल्लाह जानने वाला और हिक्मत वाला है।

२९. उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर और आखिरत पर ईमान नहीं रखते, जो अल्लाह और उस के रसूल के जरिये हराम की गई चीज को हराम नहीं समझते, न सच्चे दीन को क़बूल करते हैं उन लोगों में से जिन्हें किताब अता की गयी है, यहाँ तक कि वह जलील होकर अपने हाथों से जिजिया (टैक्स) अदा करें।^३

३०. यहूदी कहते हैं कि उनजर अल्लाह का बेटा है, और इसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह का बेटा है, यह कौल सिर्फ उनके मुंह की बात है, पहले के काफ़िरों के कौल की यह भी बराबरी करने लगे हैं, अल्लाह इनका नाश करे यह कहाँ फिरे जा रहे हैं?

३१. उन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर अपने आलिमों और धर्माचारियों (दरवेशों) को रब बनाया है,^४ और मरियम के बेटे मसीह को, अगरचे कि उन्हें एक अकेले अल्लाह ही की इबादत का हुक्म दिया गया था, जिसके सिवाय

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الشِّرْكُونَ نَجَسٌ
فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَابِهِمْ
هَذَا ۚ وَإِن جُفْتُمْ عَلَيْهِ قِسْوَةٌ يُغْنِيْكُمْ اللهُ
مِنْ فَضْلِهِ إِن شَاءَ ۚ إِنَّ اللهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٨﴾

قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَلَا بِالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللهُ وَرَسُولُهُ
وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا
الْكِتَابَ حَتَّى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَدٍ وَهُمْ
ضَعُفُونَ ﴿٢٩﴾

وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللهِ وَقَالَتِ
النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللهِ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ
بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهَوْنَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا
مِنْ قَبْلِ قَوْلَتِهِمْ اللهُ ۚ إِنَّهُ يُؤْفَكُونَ ﴿٣٠﴾
إِخْتَدَوْا أَحْبَابَهُمْ وَرَهْبَانَهُمْ أَزْوَاجًا مِنْ
دُونِ اللهِ وَالْمَسِيحِ ابْنِ مَرْيَمَ ۚ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا
بِالْعِبَادَةِ إِلَهًا وَاحِدًا ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ سُبْحٰنَهُ
عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣١﴾

^१ मूर्तिपूजकों के नापाक और अशुद्ध (नजिस) होने का मतलब अक़ीदा, ईमान और अमलों की नापाकी है, कुछ के करीब मूर्तिपूजक बाहरी और अन्दरी दोनों तरह से नापाक हैं, क्योंकि वे शौच (सफ़ाई, और पाकीजगी) का इस तरह प्रबन्ध नहीं करते, जिसका हुक्म धार्मिक नियमों ने दिया है।

^२ यह वही हुक्म है जो ९ हिजरी में मुक्ति (बराअत) का एलान के वक़्त किया गया था, जिसकी तफ़सील पहले गुज़र चुकी है।

^३ मुश्रिकों से लड़ने के हुक्म के बाद यहूदियों और इसाईयों से लड़ने का हुक्म दिया जा रहा है, (अगर वे इस्लाम दीन क़बूल न करें) या फिर जिजिया दे कर मुसलमानों की पनाह में रहना क़बूल कर लें। सुरक्षा कर को «जिजिया» कहते हैं, यह उन के लिए है जो ग़ैर मुस्लिम हैं, लेकिन इस्लामी राज्य में रह रहे हों।

^४ इसकी तफ़सीर हज़रत अदी पुत्र हातित के जरिये बयान हदीस से बाज़ेह है।

कोई इबादत के लायक नहीं, वह उन के शिर्क करने से पाक है।

३२. वह अल्लाह के नूर को अपने मुखों से बुझा देना चाहते हैं, और अल्लाह इंकार करता है, लेकिन यह कि अपने नूर को पूरा करे, अगरचे काफिर लोग नाखुश हों।¹

३३. उसी ने अपने रसूल को सच्चा रास्ता और सच्चे दीन के साथ भेजा कि उसे दूसरे सभी दीनों पर गालिब कर दे,² अगरचे मुशिरक बुरा मानें।

३४. हे ईमानवालो! ज्यादातर उलमा और इबादत करने वाले लोगों का माल नाहक खा जाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और जो लोग सोने चांदी का खजाना रखते हैं और अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते उन्हें सख्त अजाब की खबर सुना दो।³

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى
اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُدْعَىٰ نُورُهُ وَكُوفِرَ الْكٰفِرُونَ ﴿٣٢﴾

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ
الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُشْرِكُونَ ﴿٣٣﴾

يَأْتِيهَا الْكٰفِرِينَ أَصْحَابًا كَثِيرًا مِّنَ الْأَحْبَابِ
وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ
وَيُصَدِّقُونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ يَكْفُرُونَ

¹ यानी अल्लाह ने रसूल ﷺ को जो नूर और सच्चा दीन दे कर भेजा है, यहूदी, इसाई और मूर्तिपूजक चाहते हैं कि उसे झगड़े और लांछन से मिटा दें, तो उनकी मिसाल उस जैसी है जो अपनी फूक से सूरज की किरण और चांद की रौशनी को बुझाने की कोशिश करे, तो जिस तरह यह नामुमकिन है उसी तरह जो सच्चा दीन अल्लाह तआला ने अपने रसूल ﷺ को देकर भेजा है उसको मिटाना भी नामुमकिन है, वह सभी दीनों पर गालिब होकर रहेगा। जैसाकि अगली आयत में अल्लाह ने फरमाया : काफिर का लफ्जी माने है छिपाने वाला, इसी वजह से रात को भी काफिर कहते हैं, क्योंकि वह सभी चीजों को अपने अंधेरे में छिपा लेती है, किसान को भी काफिर कहते हैं, क्योंकि वह अनाज के दाने को धरती में छिपा देता है, इसलिए काफिर भी अल्लाह के नूर को छिपाना चाहते हैं या अपने दिलों में कुफ्र, साजिश और मुसलमानों और इस्लाम के खिलाफ हसद और जलन को छिपाये हुए हैं, इसलिए उन्हें काफिर कहा जाता है।

² दलील और निशानी की बुनियाद पर यह गलबा हर वक़्त हासिल है, लेकिन जब मुसलमानों ने दीन के हुकम पर अमल किया तो उन्हें दुनियावी गलबा हासिल हुआ, और अब भी मुसलमान अपने दीन के ऐतबार से काम करने लगे तो उनका असर जरूर मुमकिन है, इसलिए कि अल्लाह का वादा है कि अल्लाह के मानने वाले ही गालिब और कामयाब होंगे, शर्त यह है कि मुसलमान अल्लाह वाले बन जायें।

³ हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर फरमाते हैं कि यह जक़त के हुकम से पहले का हुकम है, जक़त

३५. जिस दिन उस खजाना को जहन्नम की आग में तपाया जायेगा, फिर उस से उन के माथे और पहलू और पीठें दागी जायेगी (उन से कहा जायेगा) यह है जिसे तुम ने अपने लिए खजाना बना कर रखा था, तो अपने खजानों का मजा चखो !

३६. महीनों की गिनती अल्लाह के नजदीक अल्लाह की किताब में बारह की है, उसी दिन से जब से आकाशों और धरती को उस ने पैदा किया है, उन में से चार हुरमत और इज्जत के हैं^१ यही पाक दीन है,^२ तुम इन महीनों में अपनी जानों पर जुल्म न करो, और तुम सभी मुशिरकों से जिहाद करो, जैसेकि वे तुम सभी से लड़ते हैं, और जान रखो कि अल्लाह तआला परहेजगारों के साथ है !

३७. महीनों का आगे पीछे कर देना कुफ्र को ज्यादा करना है,^३ उससे वह गुमराह किये जाते

الَّذِينَ هَبَّ وَالْفِطْرَةَ وَلَا يُنْفِقُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَكَشَرَهُمْ بَعْدَ آيَاتِ الْيَوْمِ ۝ ٣٥

يَوْمَ يُخْلَىٰ عَلَيْهِمْ فِي تَارٍ جَهَنَّمَ فَتَكُونُ بِهِمْ
حِبَابُهُمْ وَجَنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ هَذَا مَا كُنْتُمْ
لَا تُقْسِمُ لَهُمْ فَوَاقُوا مَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ۝ ٣٦

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا
فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَدِيمُ
فَلَا تَطْلُمُوا فِيهِنَّ أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ
كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَآفَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝ ٣٧

إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهَا

के हुक्म के बाद जकात द्वारा लोगों के माल की पकीजगी का जरिया बताया है, इसलिए आलमों का कहना है कि जिस माल से जकात अदा कर दी जाये वह खजाना नहीं है और जिस से जकात न दी जाये वह खजाना है, जिस पर कुरआन की यह तंबीह आयी है ।

^१ से मुराद 'लौहे महफूज' (सुरक्षित पुस्तक) है ।

^२ यानी उन महीनों का उसी नम्बर में होना जो अल्लाह ने रखा है, और जिन में चार हुरमत वाले हैं, यही हिसाब सही और गिनती पूरी है ।

^३ नसि (नसीउन) मतलब 'पीछे करने के' हैं, अरबों में भी हुरमत वाले महीनों में लूटमार, खून-खराबा और लड़ाई को अच्छा नहीं समझा जाता था, परन्तु लगातार महीनों की हुरमत करना खून-खराबा से रुके रहना उनके लिए कठिन था, इसलिए उसका हल उन्होंने यह निकाल रखा था कि जिस हुरमत वाले महीने में वे खून-खराबा करना चाहते वह कर लेते, और यह एलान कर देते कि इस हुरमत वाले महीने के बदले फलां महीना हुरमत वाला होगा, जैसे मोहरम के महीने की हुरमत खत्म करके सफर के महीने का हुरमत वाला एलान कर देते, इस तरह हुरमत वाले महीनों में बदलाव और हेर-फेर का ज्यादा कर लिया करते थे, इसको 'नसी' कहा

हैं जो काफिर हैं, एक साल को हलाल कर लेते हैं, और एक साल को हराम बना लेते हैं कि अल्लाह ने जो हराम रखा है उसकी गिनती में तो बराबरी कर लें, फिर जिसे हराम किया है उसे हलाल बना लें, उन के बुरे काम उन्हें अच्छे दिखा दिये गये हैं और अल्लाह काफिरों को हिदायत नहीं देता है।

३८. हे ईमानवालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम से कहा जाता है कि चलो अल्लाह के रास्ते में हिजरत करो तो तुम धरती पकड़ लेते हो, क्या तुम आखिरत के बदले दुनिया की जिन्दगी पर ही रीझ गये हो, सुनो! दुनिया की जिन्दगी आखिरत के मुकाबले में बहुत छोटी है।

३९. अगर तुम ने हिजरत न की तो अल्लाह (तआला) तुम्हें दुखदायी सजा देगा और तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को बदल लायेगा, तुम अल्लाह (तआला) को कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते, और अल्लाह हर चीज पर कादिर है।

الَّذِينَ كَفَرُوا يُجْلُونَ عَامًا وَيُحْرَمُونَ
عَامًا يَأْتُوا طَوَافًا مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيَحْلُوا
مَا حَرَّمَ اللَّهُ ذُرِّيَّتَهُمْ سَوَاءٌ أَعْبَأَهُمُ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٣٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمْ
انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَثَأَقَلُّكُمْ إِلَى الْأَرْضِ
أَرْضَيْتُمْ بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ
فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا
قَلِيلٌ ﴿٣٨﴾

إِلَّا تَنْفِرُوا يَعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَتَسْتَبِدُّ
قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّهُ شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٩﴾

जाता था, अल्लाह तआला ने उसके बारे में फरमाया कि यह अधर्म (कुफ्र) का ज्यादा करना है, क्योंकि इस अदल-बदल से मकसद लड़ाई-झगड़ा, खून-खराबा और दुनियावी फायदे के अलावा कुछ भी नहीं।

रोम के इसाई राजा हरकूलिस के बारे में यह खबर मिली कि वह मुसलमानों के खिलाफ जंग की तैयारी कर रहा है, इसलिए नबी ﷺ ने भी इसके लिए तैयारी का हुक्म दे दिया, यह इस्लाम ९ हिजरी का वाक़ेआ है, सन्त गमी थी और लम्बा सफर था, कुछ मुसलमानों और मुशरिकों को यह हुक्म भारी लगा जिसका बयान इस आयत में किया गया है, और उन्हें वाख़बर और होशियार किया गया है, यह तबूक की जंग कहलाती है, जो हकीकत में नहीं हुई। २० दिन मुसलमान सीरिया के करीब तबूक के मुक़म पर इंतज़ार करके वापस आ गये, इसको कठिनाईयों की जंग कहा जाता है, क्योंकि इस लम्बे सफर में इस सेना को ज्यादा कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था। يَأْتِيكُمْ يَأْتِيكُمْ यानी सुस्ती करने और पीछे रहना चाहते हो, इसका प्रदर्शन (मुजाहरा) कुछ लोगों की तरफ से हुआ, लेकिन इसको सम्बोधित (मुखातब) सभी से कर दिया गया। (फतहल कदीर)

४०. अगर तुम उस (रसूल मुहम्मद ﷺ) की मदद न करो तो अल्लाह ही ने उसकी मदद की, उस वक़्त जब काफ़िरो ने उसे (देश से) निकाल दिया था, दो में से दूसरा जबकि वह दोनों गुफ़ा में थे, जब यह अपने साथी से कह रहे थे कि फ़िक्र न करो अल्लाह हमारे साथ है,¹ तब अल्लाह ही ने अपनी तरफ़ से सूकून उतारकर उन सेनाओं से उसकी मदद की जिन्हें तुम ने देखा भी नहीं, उस ने काफ़िरो की बात नीची कर दी और बड़ा और बेहतर तो अल्लाह का ही कौल है,² अल्लाह (तआला) मालिब और हिक्मत वाला है।

४१. निकल खड़े हो जाओ हल्के-फुल्के हो तो भी और भारी-भरकम हो तो भी,³ और अल्लाह के रास्ते में अपने तन-मन-धन से ज़िहाद करो, यही तुम्हारे लिए अच्छा है अगर तुम में इल्म हो।

४२. अगर जल्द हासिल होने वाली धन-सामग्री होती⁴ और हल्का-सा सफ़र होता तो ये जरूर आप के पीछे हो लेते, लेकिन उन पर तो दूरी और दूरी की तकलीफ़ पड़ गई। और अब तो ये अल्लाह की क़सम खायेंगे कि अगर हम में

إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِمُؤَيَّدٍ لَهُمُ تَرَوُوهَا رَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ لَوْ كَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلَمَاءُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿40﴾

إِنُورُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿41﴾

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَآتَيْنَكُم وَلَكِنْ بَعَدَتْ عَلَيْهِمُ السُّعْيَةُ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنْفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿42﴾

¹ जिहाद से पीछे रहने वालों या उससे जान छुड़ाने वालों से कहा जा रहा है कि अगर तुम मदद नहीं करते हो तो अल्लाह को तुम्हारी मदद की जरूरत भी नहीं है, अल्लाह तआला ने अपने रसूलों की उस वक़्त भी मदद की जब उस ने गुफ़ा में पनाह ली थी और अपने साथी (हज़रत अबू बक्र सिद्दीक) से कहा था, «फ़िक्र न करो अल्लाह हमारे साथ है।» इसकी मुफ़त्सल हदीस आती है।

² काफ़िरो के कौल से चिक् और अल्लाह के कौल से तौहीद (एकेश्वरवाद) का मतलब है।

³ इस के कई मतलब बयान कये जाते हैं, व्यक्तिगत (आती) तौर से या सामूहिक तौर से, खुशी से या नाखुशी से, गरीब हो या अमीर हो, जवान हो या बुढ़ा हो, पैदल हो या सवार हो, विवाहित हो या अविवाहित हो, वह हिज़रत करने वालों में से हो या रह जाने वालों में।

⁴ यहाँ से उन लोगों का बयान हो रहा है जिन्होंने उन्नत धन कर नबी ﷺ से इजाजत ले लिया था, जब कि हकीकत में उन के पास कोई उन्नत नहीं था, عَرَض से मुराद जो दुनियावादी फ़ायदे सामने आयें, मतलब है जंग में मिली गनीमत।

ताक़त और क़ूबत होती तो हम जरूर आप के साथ निकलते, यह अपनी जानों को ख़ुद ही तबाही की ओर डाल रहे हैं, इन के भूठे होने का सच्चा इल्म अल्लाह को है।

४३. अल्लाह तुझे माफ़ कर दे, तूने उन्हें क्यों इजाजत दे दिया, बिना इस के कि तेरे सामने सच्चे लोग बाज़ेह तौर से जाहिर हो जायें और तू भूठे लोगों को भी जान ले।

४४. अल्लाह पर और क़यामत (प्रलय) के दिन पर ईमान और यक़ीन रखने वाले तो माल से और जान से जिहाद करने से रूके रहने की कभी भी तुझ से इजाजत नहीं मांगेंगे और अल्लाह तआला परहेज़गारों को अच्छी तरह जानता है।

४५. यह इजाजत तो तुझ से वही मांगते हैं, जिन्हें न अल्लाह पर ईमान है न आख़िरत के दिन पर यक़ीन है, जिन के दिल शक़ में पड़े हुए हैं और यह अपने शक़ ही में भटक रहे हैं।

४६. अगर उनका इरादा (जिहाद पर) निकलने का होता, तो वह इस (सफ़र) के लिए संसाधन (वसायेल) की तैयारी करते, लेकिन अल्लाह को उनका उठना प्यारा नहीं था, इसलिए उन्हें कुछ करने से रोक दिया, और कह दिया गया कि तुम बैठने वालों के साथ बैठे ही रहो।

४७. अगर यह तुम में मिल कर निकलते भी तो तुम्हारे लिए फ़ितना के अलावा दूसरी कोई चीज़ न बढ़ाते, बल्कि तुम्हारे बीच खूब घोंड़े दौड़ाते, और तुम में इस्तिस्नाफ़ डालने की खोज

عَفَا اللَّهُ عَنْكَ لِمَ أَذْنَبْتَ لَهُمْ حَتَّى يَتَّبِعَكَ لَكِ
الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ الْكَافِرِينَ ﴿٤٣﴾

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
وَأَلَّهُ عَلَيْهِمُ بِالْمُتَّقِينَ ﴿٤٤﴾

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَرْبَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَمَنْ
فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ ﴿٤٥﴾

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً
وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ
وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ ﴿٤٦﴾

لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُواكُمْ إِلَّا حَبَالًا وَلَا
أَوْضَعُوا خِلْفَكُمْ يَنْبَغُونَكُمْ الْفِتْنَةَ وَفِيكُمْ
سُنُوفٌ لَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ﴿٤٧﴾

१ यह उन मुनफ़िकों (अवसरवादियों) का बयान है, जिन्होंने भूठे बहाने बना कर रसूल करीम ﷺ से जिहाद में हिस्सा न लेने का हुक्म ले लिया था, उन के बारे में कहा गया है कि ये अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते। इसका मतलब यह है कि इस ईमान की कमी ने उनको जिहाद में हिस्सा न लेने पर मजबूर किया है, अगर ईमान इन के दिलों में मजबूत होता तो न तो यह जिहाद से भागते और न इनको शक़ो शुक्हा ने घेरा होता।

में रहते, उन के मानने वाले खुद तुम में मौजूद है,¹ और अल्लाह तआला जालिमों को अच्छी तरह जानता है।

४८. ये तो इस से पहले भी इस्खिलोफ पैदा करने की खोज में रहे हैं, और तेरे लिए कामों को उलट-पुलट करते रहे हैं, यहाँ तक कि हक आ पहुँचा और अल्लाह का हुक्म गालिब हो गया, इस के बावजूद कि वे नाखुशी में ही रहे।

४९. उनमें से कोई तो कहता है कि मुझे हुक्म दे दीजिए मुझे परेशानी में न डालिए, बाखबर रहो कि वह तो फितना में पड़ चुके हैं और बेशक नरक काफिरों को घेर लेने वाली है।²

५०. आप को अगर कोई भलाई हासिल हो जाये तो उन्हें बुरा लगता है और कोई बुराई पहुँच जाये तो कहते हैं, हम ने तो अपनी बात पहले ही से ठीक कर ली थी, फिर तो बड़े इतराते हुए लौटते हैं।³

لَقَدْ ابْتِغَوْا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَكَلَبُوا
لَكَ الْأُمُورَ حَتَّى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ
اللَّهِ وَهُمْ كَرِهُونَ ﴿٤٨﴾

وَمِنْهُمْ مَن يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَفْتِنِي
أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ
بِالْكَافِرِينَ ﴿٤٩﴾

إِنْ تُصِيبَكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِنْ تُصِيبَكَ
مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِنْ
قَبْلُ وَتَوَلَّوْا أَهْمُ فَرِحُونَ ﴿٥٠﴾

¹ इस से मालूम होता है कि मुनाफिकों (अवसरवादियों) के लिए खूफिया काम करने वाले कुछ लोग मुसलमानों के साथ सेना में मौजूद थे, जो मुनाफिकों (अवसरवादियों) को मुसलमानों की खबरें पहुँचाया करते थे।

² «मुझे फितने (भेद) में न डालिए।» इसका एक मतलब तो यह होगा अगर आप मुझे इजाजत नहीं देंगे तो मुझे बिना इजाजत रुकने पर ज्यादा गुनाह होगा, इस बिना पर फितना 'गुनाह' के मतलब में होगा, यानी मुझे गुनाह में न डालिए। दूसरा मतलब फितना का तबाही है, यानी मुझे साथ ले जाकर तबाही में न डालिए। कहा जाता है कि जद् बिन कैस ने निवेदन किया कि मुझे साथ न ले जायें, रोम की औरतों को देख कर मैं सब न रख सकूंगा, इस पर नबी ﷺ ने मुंह फेर लिया और इजाजत दे दिया, उस के बाद आयत उतरी, अल्लाह तआला ने फरमाया: «फितना में तो वह पड़ चुके हैं» यानी जिहाद में पीछे रहना और उससे जान चुराना, खुद एक फितना और बहुत बड़ा गुनाह है, जिसमें ये शामिल हैं और मरने के बाद नरक की आग उनको घेर लेने वाली है, जिससे भागने का कोई रास्ता उनके लिए न होगा।

³ आगे-पीछे के कलाम की बिना पर حسنة से यहाँ कामयाबी और फ्रायेदा और سيئة से नाकामी, हार और इसी तरह का नुकसान जो लड़ाई में होता है, मुराद है इस में उन के अन्दरूनी बुराईयों का प्रदर्शन (इजहार) है जो मुनाफिकों (भ्रष्टाचारियों) के दिलों में था, इसलिए कि दुख पर खुश होना और भलाई हासिल होने पर दुख और तकलीफ का एहसास करना दुश्मनी के सबबों को जाहिर करता है।

५१. (आप) कह दीजिए कि हमें सिवाय अल्लाह के हमारे हक में लिखे हुए के कोई चीज पहुँच ही नहीं सकती, वह हमारा मालिक है, और (आप कह दीजिए) ईमानवालों को अल्लाह ही पर पूरा भरोसा करना चाहिए।

५२. कह दीजिये कि तुम हमारे बारे में जिस के इतेजार में हो, वह दो भलाईयों में से एक है, और हम तुम्हारे हक में इस बात के इतेजार में हैं कि या तो अल्लाह (तआला) तुम्हें अपने पास से कोई सजा दे या हमारे हाथों से, बस एक तरफ तुम इतेजार करो, दूसरी तरफ हम तुम्हारे साथ इतेजार कर रहे हैं।

५३. कह दीजिए कि तुम खुशी या नाखुशी किसी तरह भी खर्च करो, कुबूल तो कभी नहीं किया जायेगा, बेशक तुम फ्रांसिक लोग हो।

५४. कोई सबब उन के खर्च को कुबूल न होने का इस के सिवाय नहीं कि ये अल्लाह और उस के रसूल के नाफरमान हैं और बड़ी सुस्ती से नमाज़ में आते हैं और बुरे दिल से खर्च करते हैं।

قُلْ لَنْ يُؤْمِنُوا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ
مَوْلَانَا وَعَلَى اللَّهِ قَائِمُ كُلِّ الْيُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾

قُلْ هَلْ تَرْتَضُونَ بِنَا إِلَّا أَحَدَى الْحُسَيْنَيْنِ
وَنَحْنُ نَرْتَضِي بِكُمْ أَنْ يُصِيبَكُمُ اللَّهُ بِعَذَابٍ
مِنْ عِنْدِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا فَتَرْتَضُوا إِنَّا
مَعَكُمْ مُتَرْتَضُونَ ﴿٥٢﴾

قُلْ أَنْفَقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَنْ يُتَقَبَلَ
وَمِنْكُمْ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿٥٣﴾

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقَبَلَ مِنْهُمْ لَفَقَتُهُمْ إِلَّا أَنَّهُمْ
كَفَرُوا بِإِلَهِهِ وَرَسُولِهِ وَلَا يَأْتُونَ الصَّلَاةَ إِلَّا
وَهُمْ كَسَالٍ وَلَا يُفْقَهُونَ إِلَّا وَهُمْ كُرْهُونَ ﴿٥٤﴾

हुकूम है, लेकिन यहाँ इस कलिमा का मतलब यह है कि अगर तुम खर्च करोगे तो कुबूल नहीं किया जायेगा, या यह खबर देने वाले कलिमा के मतलब में है, मतलब यह है कि दोनों बातें एक तरह हैं, खर्च करो या न करो, अपनी मर्जी से अल्लाह की राह में खर्च करोगे तो भी नाकुबूल है, क्योंकि कुबूल करने की पहली शर्त ईमान है और वही तुम्हारे अन्दर नहीं है, और नाखुशी से खर्च किया हुआ माल अल्लाह के यहाँ वैसे ही ठुकराया हुआ है, क्योंकि वहाँ जायेज मरसद नहीं मौजूद है जो कुबूल करने के लिए जरूरी है, यह आयत भी इसी तरह है जिस तरह यह है।

(استغفر لهم أولاً نستغفر لهم)

«आप इन के लिए माफ़ी माँगें या न माँगें।» (सूर: अल्तीब:-८०)

यानी दोनों बातें एक तरह हैं।

५५. इसलिए आप को उन के माल और औलाद तअज्जुब में न डाल दें, अल्लाह यही चाहता है कि उन्हें दुनिया की जिन्दगी में ही सजा दे! और उनके कुफ्र की ही हालत में उनकी जान निकल जायें।^१

५६. और ये अल्लाह की कसम खा-खा कर कहते हैं कि ये तुम्हारे गुट के लोग हैं, अगरचे कि वे हकीकत में तुम्हारे नहीं, बात केवल इतनी है कि ये बुजदिल लोग हैं।

५७. अगर ये कोई महफूज मकाम या कोई गुफा या कोई भी सिर छिपाने की जगह पा लें तो अभी उस तरफ लगाम तोड़ कर उल्टे भाग छूटें।

५८. उन में वे भी हैं जो सदका के माल के बंटवारे के बारे में आप पर इल्जाम रखते हैं, अगर उस में से उनको मिल जाये तो खुश है और अगर उस में से न मिला तो फौरन ही बिगड़ खड़े होते हैं।

५९. अगर ये लोग अल्लाह और उस के रसूल के दिये हुए पर खुश रहते और कह देते कि अल्लाह हमें काफ़ी है, अल्लाह हमें अपने फज़ल से देगा और उसका रसूल भी, हम तो अल्लाह ही से उम्मीद रखने वाले हैं।

६०. सदका केवल फकीरों के लिए है और गरीबों के लिए और उन के काम करने वालों

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٥٥﴾

وَيَحْلِفُونَ بِأَلَلِهِمْ لَنْ نَكْفُرَ وَمَا هُمْ بِمُنْكَرِينَ وَلَكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرُقُونَ ﴿٥٦﴾

لَوْ يَرَوْهُمْ مَبْعَدًا أَوْ مَعْرِبًا أَوْ مَذَخَلًا لَوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْحَدُونَ ﴿٥٧﴾

وَمِنْهُمْ مَن يَتُوبُكَ فِي الصَّدَقَاتِ ۚ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِنْ لَمْ يُعْطُوا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ ﴿٥٨﴾

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا أَشْهَمَهُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ دُاعِبُونَ ﴿٥٩﴾

إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالسَّكِينِ وَالْعَلِيلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةُ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ

^१ इमाम इब्ने कसीर और इमाम इब्ने जरीर तवरी ने इस से ज़कात और अल्लाह की राह में सदका करना मुराद निकाला है, यानी इन मुनफिकों (अवसरवादियों) से ज़कात और सदका तो (जो वह मुसलमान जाहिर करने के लिए देते हैं) दुनिया में कुबूल किये जायें ताकि इस तरह से उन्हें दुनिया में धन की मार भी दी जाये।

^२ अखिर में उनकी मौत कुफ्र की हालत में होगी, इसलिए कि वे अल्लाह के पैगम्बर को सच्चे दिल से कुबूल करने को तैयार ही नहीं और अपने कुफ्र और मुनाफकत पर ही अडिग (क़ायम) और मजबूत है।

के लिए, और उनके लिए जिन के दिल परचाये जा रहे हों और मुलाम आजाद करने और कर्जदार लोगों के लिए, और अल्लाह की राह में और मुसाफिरों के लिए। कर्ज है अल्लाह की तरफ से और अल्लाह इल्म वाला हिक्मत वाला है।

وَالْفَرَمِينَ وَرَبِّ سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ
قَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ ذَا اللَّهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ﴿٦٠﴾

६१. और उन में से वे भी हैं जो पैगम्बर (संदेशवाहक) को तकलीफ देते हैं और कहते हैं कि हल्के कान का है, (आप) कह दीजिए कि वह कान तुम्हारी भलाई के लिए है^२ वह

وَمِنْهُمْ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ
هُوَ آذُنٌ قُلٌّ أَذُنٌ خَيْرٌ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ

^१ इन आठ लोगों पर खर्च करने का मुहत्तर बयान इस तरह है। (१,२) भिखारी और गरीब लगभग करीब ही करीब है और एक माने दूसरे से मिलता-जुलता है, यानी गरीब को भिखारी और भिखारी को गरीब कह ही लिया जाता है। (३) काम करने वालों से मुराद सरकारी कर्मचारी हैं जो जकात व सदका की राशि वसूल करते हैं और बांटते हैं, और उसका लेखा-जोखा रखते हैं। (४) आकर्षित हृदय (मुअल्लफा कुलुब) एक तो वह कफिर हैं जो थोड़ा-थोड़ा इस्लाम की तरफ आकर्षित होते हैं और उनकी मदद करने पर यह उम्मीद हो कि वह मुसलमान हो जायेंगे। दूसरे नये मुसलमान हैं जिनको इस्लाम पर मजबूती से क्रायम रहने के लिए मदद की जरूरत हो। तीसरे वे लोग भी हैं जिनकी मदद करने से यह उम्मीद हो कि वह अपने इलाके के लोगों को मुसलमानों पर हमला करने से रोकेंगे और इस तरह वह करीबी कमजोर मुसलमानों की हिफाजत करेंगे, यह और इस तरह की दूसरी हालतें दिल खींचने करने की हैं, जिन पर जकात की राशि खर्च की जा सकती है, चाहे बयान किये लोग धनवान ही हों, कुछ लोगों के अनुसार यह इस्तेमाल खत्म हो गया है, लेकिन यह बात ठीक नहीं है, हालात और वकत के अनुसार हर जमाने में इस मुद्द पर जकात की राशि खर्च करना जायेज है। (५) गर्दने आजाद कराने के लिए। (६) कर्जदार से एक तो वह कर्जदार मुराद हैं जो अपने परिवार को जिन्दगी गुजारने और जिन्दगी की जरूरत को पूरा करते-करते दूसरे लोगों के कर्ज से दब गये हों, और उन के पास नगद राशि भी नहीं है और ऐसा सामान भी नहीं है जिसे बेचकर वे उस कर्ज को चुका सकें। दूसरे वे जिम्मेदार लोग जिन्होंने किसी दूसरों की जमानत दी हो और फिर वह उसकी अदायगी के जिम्मेदार बना दिये गये हों, या इन सभी लोगों को जकात की राशि से मदद करना जायेज है। (७) अल्लाह की राह से मुराद जिहाद है, यानी लड़ाई का सामान और जरूरतों और मुजाहिद चाहे वह मालदार ही हो। पर जकात की राशि खर्च करनी जाएज है। इसी तरह कुछ आलिमों के नजदीक तयलीग (निमन्त्रण) और दावत भी अल्लाह की राह में शामिल हैं, क्योंकि इसका भी मकसद अल्लाह के कौल को हर इंसान तक पहुँचाना है। (८) रास्ते के लोगों से मुराद मुसाफिर हैं, यानी कोई भी इंसान सफर के वकत मदद का पात्र (मुस्ताहिक) हो गया हो तो चाहे वह अपने देश में धनवान ही हो, उसकी मदद जकात की राशि से की जा सकती है।

^२ यहाँ से फिर मुनाफिकों (दुयवादियों) की चर्चा हो रही है। नबी ﷺ के खिलाफ एक इल्जाम यह उन्होंने लगाया कि यह कान का कच्चा (या हल्का) है, मतलब यह है कि यह हर इंसान की बात मुन नेता है (यानी यह आप ﷺ के इल्म, फज्ज और माफ करने के गुणों से उन्हें धोखा

अल्लाह पर ईमान रखता है और मुसलमानों की बातों का यकीन करता है, और तुम में से जो ईमानवाले हैं यह उन के लिए रहमत है, और रसूलुल्लाह (अल्लाह के रसूल) को जो लोग तकलीफ देते हैं उनके लिए दुखदायी अज्ञाव है।

६२. वे सिर्फ तुम्हें खुश करने के लिए तुम्हारे सामने अल्लाह की कसम खा जाते हैं, हालाँकि अगर यह ईमानदार होते तो अल्लाह और उस के रसूल खुश किये जाने के ज्यादा हकदार थे।

६३. क्या ये नहीं जानते कि जो भी अल्लाह का और उस के रसूल की मुखालफत करेगा उस के लिए बेशक नरक की आग है, जिस में वे हमेशा रहने वाले हैं, यह बहुत बड़ा अपमान है।

६४. मुनाफिकों को (हर वक़्त) यह डर लगा रहता है कि कहीं उन (मुसलमानों) पर कोई आयत न उतरे, जो उन के दिलों की बातें उन्हें बता दे। कह दीजिए कि तुम मज़ाक उड़ाते रहो, बेशक अल्लाह तआला उसे जाहिर करने वाला है जिस से तुम डरे हुए हो।

६५. अगर आप उन से पूछें तो साफ़ कह देंगे कि हम तो यूँ ही आपस में हँस-बोल रहे थे। कह दीजिए कि अल्लाह, उसकी आयतें और उसका रसूल ही तुम्हारी हंसी-मज़ाक के लिए वाक़ी रह गये हैं।

وَيُؤْمِنُ بِالْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةً لِّلَّذِينَ
آمَنُوا مِنكُمْ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ
رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦١﴾

يَخْلَعُونَ يَا لَللّٰهِ لَكُمْ لِيَرْضَوْكُمْ وَاللّٰهُ
وَرَسُولُهُ أَحْسَنُ اَنْ يُرْضَوْهُ اِنْ كَانُوْا
مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾

اَلَمْ يَعْلَمُوْا اَنَّهٗ مِنْ يُحَادِدِ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ
فَاَنْ لَّهٗ نَارُ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيْهَا
ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ اَنْ تُكْرَلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ
تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ قُلِ اسْتَهِزَّوْا
اِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحَدَّرُوْنَ ﴿٦٤﴾

وَكَيْفَ سَأَلْتَهُمْ لِيَقُوْلُوْا اِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ
وَنُلْعَبُ قُلْ اِبٰلَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُولِهٖ كُنْتُمْ
تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾

हुआ। अल्लाह ने फ़रमाया कि नहीं, हमारा पैगम्बर फ़ित्ना और फ़साद की कोई बात नहीं सुनता, जो भी सुनता है तुम्हारा उस में हित, नेकी और भलाई है।

मुनाफ़िक (अवसरवादी) अल्लाह की आयतों का मज़ाक उड़ाते थे, ईमानवालों का अपमान करते, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह ﷺ के बारे में बुरी बात का इस्तेमाल करने में परहेज़ न करते, जिसकी ख़बर किसी तरह से ईमानवालों और रसूलुल्लाह ﷺ को हो जाती थी, लेकिन अगर उन से पूछा जाता तो साफ़ मुकर जाते और कहते कि हम तो आपस में इसी तरह हंसी-मज़ाक कर रहे थे। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: हंसी-मज़ाक के लिए तुम्हारे सामने अल्लाह और उसकी आयतें और उसका रसूल ही रह गया है?— मतलब यह कि अगर तुम्हारा मक़सद आपस में हंसी-मज़ाक का होता तो उस में अल्लाह, उसकी आयतें और रसूल बीच में क्यों आते? ये बेशक उस हसद और जलन का इशारा है जो अल्लाह की आयतों और हमारे पैगम्बर के

६६. तुम बहाने न बनाओ, बेशक तुम अपने ईमान लाने के बाद काफिर हो गये, अगर हम तुम में से कुछ लोगों से अनदेखी भी कर लें तो कुछ लोगों को उनके जुल्म की सख्त सजा भी देंगे।

६७. सभी मुनाफिक (अवसरवादी) मर्द और औरत आपस में एक ही हैं, ये बुरी बातों का हुक्म देते हैं और भली बातों से रोकते हैं और अपनी मुझी बन्द रखते हैं। ये अल्लाह को भूल गये, अल्लाह ने भी उन्हें भुला दिया, बेशक मुनाफिक (द्वयवादी) ही फासिक हैं।

६८. अल्लाह तआला इन मुनाफिक मर्दों-औरतों और काफिरों से नरक की आग का वादा कर चुका है, जहाँ ये हमेशा रहेंगे, वही उन के लिए बस है, उन पर अल्लाह की लानत है, और उन के लिए दायमी अजाब है।

६९. तुम से पहले के लोगों की तरह जो तुम से बहादुर और माल-दौलत और औलाद में ज्यादा थे तो वह अपना धार्मिक भाग बरत गये, फिर तुम ने भी अपना भाग बरत लिया^२ जैसे तुम से पहले लोग अपने हिस्से से फ़ायदेमंद हुये थे और तुम ने भी उसी तरह मज़ाक वाला गप किया जैसे उन्होंने किया था, उनके काम दुनिया और आखिरत में बरबाद हो गये और यही लोग घाटे में हैं।

لَا تَعْتَدُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ ۗ
إِنْ نَعُفْ عَنَّا طَائِفَةٌ مِّنْكُمْ نَعْدِبْ
طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٦٦﴾

الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُم مِّنْ بَعْضٍ
يَأْمُرُونَ بِالْبُكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ
وَيَقْسِمُونَ بِأَيْدِيهِمْ سُبْحَانَ اللَّهِ فَسَيَهْمُهُ
إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفٰسِقُونَ ﴿٦٧﴾

وَعَدَّ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكٰفِرَ
نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِينَ فِيهَا هِيَ حَسْبُهُمْ
وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ ۗ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٦٨﴾

كَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ
قُوَّةً وَآكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا فَاسْتَتَعُوا
بِخَلْقِهِمْ فَاسْتَنْعَمُوا بِخَلْقِكُمْ كَمَا
اسْتَنْعَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ بِخَلْقِهِمْ
وَخُضِعْتُمْ كَالَّذِي خَاضُوا ۗ وَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٦٩﴾

खिलाफ तुम्हारे दिलों में मौजूद है।

१ मुनाफिक जो कसम खाकर मुसलमानों को यकीन दिलाया करते थे कि "हम तुम ही में से हैं" अल्लाह तआला ने इसका खण्डन (तरदीद) किया कि ईमानवालों से उनका क्या मतलब? लेकिन यह सभी मुनाफिक चाहे मर्द हों या औरत एक ही हैं, यानी कुफ्र और भ्रष्टाचार में एक-दूसरे से बढ़-चढ़ कर हैं, आगे उनकी बुराईयों को बयान किया जा रहा है जो ईमानवालों के गुणों (सिपतों) के ठीक उल्टा और खिलाफ हैं।

२ خلاق का दूसरा तर्जुमा दुनियावी हिस्सा भी किया गया है, यानी तुम्हारे हिस्सा में दुनिया का जितना हिस्सा लिख दिया गया है उसे बरत लो, जिस तरह से तुम से पहले के लोगों ने अपना हिस्सा बरता और फिर मरने या अजाब से हमकिनार हो गये।

७०. क्या उन्हें अपने से पहले के लोगों की खबर नहीं पहुँची, नूह और आद और समूद के क्रौम और इब्राहीम की क्रौम और मदयन के रहने वाले और उलट-पलट कर दी गयी बस्तियों के लोगों की, उन के पास रसूल (ईशूदत) दलीलें लेकर पहुँचे तो अल्लाह तआला ऐसा न था कि उन पर जुल्म करे, बल्कि उन्होंने खुद ही अपने ऊपर जुल्म किया।

७१. मुसलमान मर्द और औरत एक-दूसरे के (मददगार और) मित्र हैं, वे भलाईयों का हुबम देते हैं और बुराईयों से रोकते हैं, नमाजें पाबंदी से पढ़ते हैं, जकात अदा करते हैं, अल्लाह और उस के रसूल की बात मानते हैं,^१ यही लोग हैं जिन पर अल्लाह (तआला) जल्द ही रहमत करेगा, बेशक अल्लाह गालिब, हिक्मत वाला है।

७२. इन ईमानदार मर्दों और औरतों से अल्लाह (तआला) ने उन जन्नतों का वादा किया है जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वे हमेशा रहने वाले हैं और उन पाकीजा घर का, जो उन खत्म न होने वाले जन्नत में हैं, और अल्लाह की खुशी सब से महान है, यही बहुत बड़ी कामयाबी है।

لَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَتَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۚ كَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْهِرَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٧٠﴾

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ مِمَّا مَرُّوا بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُولَئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسْكِنٍ كَرِيمٍ فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ مَوْسُوَاتٍ مِّنَ اللَّهِ الْكَبِيرِ ذَلِكَ هُوَ الْقَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٧٢﴾

^१ यहाँ उन छः कौमों का जिक्र किया गया है जिनका स्थान सीरिया देश रहा है, यह अरब क्षेत्र के करीब है और उनकी कुछ बातें शायद उन्होंने अपने पूर्वजों से सुनी भी हों। नूह की क्रौम जो सैलाब में डुबो दी गई, आद की क्रौम जो ताकत और क्रूरत में बेहतर होने के बावजूद, तेज हवाओं के झोंकों से बरबाद कर दी गई। समूद की क्रौम, जिसे आकाश की चीख ने बरबाद कर दिया। इब्राहीम की क्रौम जिसके राजा नमरूद बिन कनआन बिन कोश को मच्छर से मरवा दिया गया। मदयन के निवासी (हज़रत शुऐब की क्रौम) जिन्हें चीख, भूकम्प और बादलों की छाया के अज़ाब से तबाह किया गया और उल्टे-पल्टे गये लोग, इससे मुराद नूत की क्रौम है, जिन की बस्ती का नाम 'सदूम' था। **وَالَّذِينَ كَفَرُوا** का मतलब है उलट-पलट देना, उन पर एक तो आकाश से पत्थर बरसाये गये, दूसरे उनकी बस्ती को ऊपर उठा कर नीचे फेंका गया, जिससे पूरी बस्ती ऊपर तले हो गयी, इस बिना पर उन उल्टे-पल्टे लोगों को 'असहाब मुतफिकात' कहा जाता है।

^२ नमाज अल्लाह के हक़ों में बहुत बड़ी इबादत है और जकात दूसरे लोगों के हक़ के बिना पर खास मक़ाम रखती है, इसी वजह से इन दोनों का खास तौर से बयान करके कहा गया है कि वह हर बारे में अल्लाह और उस के रसूल के हुक्मों की पैरवी करते हैं।

७३. हे नबी! काफिरों और मुनाफिकों से जिहाद करते रहो,^१ और उन पर कड़ाई करो, उनका असल जगह नरक है, जो बहुत बुरी जगह है।

७४. ये अल्लाह की कसम खा कर कहते हैं कि उन्होंने नहीं कहा, अगरचे कि बेशक कुफ्र का कलिमा इन के मुंह से निकल चुका है, और ये अपने इस्लाम के बावजूद भी काफिर हो गये हैं, और इन्होंने उस काम का इरादा भी किया है जिसे हासिल न कर सके, ये केवल इसी बात का बदला ले रहे हैं कि उन्हें अल्लाह ने अपने फजल से और इस के रसूल ने धनवान कर दिया, अगर यह अब भी तौबा कर लें तो यह इन के हक में अच्छा है और अगर मुंह मोड़े रहें तो अल्लाह (तआला) उन्हें दुनिया व आखिरत में दुखदायी सजा देगा, और पूरी धरती में उनका कोई वली और मददगार न खड़ा होगा।

७५. इन में वह भी हैं जिन्होंने अल्लाह से वादा किया था कि अगर वह हमें अपने फजल से धन अता करेगा तो हम जरूर सदका करेंगे और पूरी तरह से नेक लोगों में हो जायेंगे।

७६. लेकिन जब अल्लाह ने अपने फजल से उन्हें दिया तो यह उस में कंजूसी करने लगे और टाल-मटोल करके मुंह मोड़ लिया।^२

७७. तो इस की सजा के तौर पर अल्लाह ने उन के दिलों में निफाक डाल दिया, अल्लाह से मिलने के दिनों तक, क्योंकि उन्होंने अल्लाह से किये हुए वादे की मुखालफत की, और भूठ बोलते रहे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا جَاهِدُوا الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ
وَاحْذَرُوا عَلَيْهِمْ دُمُومَهُمْ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ

الْمَصِيرُ ﴿٧٣﴾

يَخْلِفُونَ بِأَلْفِهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ
الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهُمْ يُرِيدُونَ
لَمْرِيئًا لَوْلَا إِذْنُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ لَأَنزَلْنَا
وَرَسُولُهُ مِنْ فَضْلِهِ ؕ فَإِن يَتُوبُوا يَكُ
خَيْرًا لَهُمْ ؕ وَإِن يَتُوبُوا يَعِدْ بِهُمْ اللَّهُ
عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ؕ وَمَا
لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٧٤﴾

وَمِنْهُمْ مَن عَاهَدَ اللَّهُ لَئِن آتَيْنَاهُمْ مِنْ فَضْلِهِ
لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٧٥﴾

فَلَمَّا آتَاهُمُ مِنْ فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَكُونُوا
وَهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٧٦﴾

فَأَخَذْنَا مِنْهُمُ نِفَاقًا لِيَوْمِ يَقُولُونَ
بِمَا أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا
يَكْفُرُونَ ﴿٧٧﴾

^१ इस आयत में नबी करीम ﷺ को काफिरों और मुनाफिकों से जिहाद और उन पर कड़ाई करने का हुक्म दिया जा रहा है, नबी ﷺ के बाद इस से मुताअल्लिक आप ﷺ का पैरोकार है।

^२ इस आयत को कुछ मुफसिर एक सहावी हजरत साअलबा बिन हातिब अन्सारी के बारे में बताते हैं, लेकिन सुबूत की बुनियाद पर यह सही नहीं है, सही बात यह है कि इस में भी मुनाफिकों के एक दूसरे अमल का बयान किया गया है।

७८. क्या वे यह नहीं जानते कि अल्लाह (तआला) को उन के दिल का भेद (राज) और उनकी कानाफूसी सब मालूम है और अल्लाह (तआला) सभी छिपी बातों का जानकार है?¹

७९. जो लोग उन मुसलमानों पर इल्जाम लगाते हैं, जो दिल खोलकर सदका करते हैं और उन लोगों पर जिन को अपनी मेहनत के सिवाय कुछ हासिल ही नहीं, तो ये उनका मजाक करते हैं, अल्लाह भी उन से मजाक करता है, और उन्हीं के लिए बहुत सख्त अजाब है।

८०. आप इन के लिए तौबा करें या न करें, अगर आप सत्तर बार भी इन के लिए तौबा करें तो भी अल्लाह उन्हें कभी भी माफ नहीं करेगा?² ये इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से कुफ्र किया है³ और ऐसे फ्रासिकों को अल्लाह हिदायत नहीं देता।

८१. पीछे रह जाने वाले लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के खिलाफ अपने बैठ रह जाने पर खुश हैं, उन्होंने अल्लाह की राह में अपने माल और अपनी जान से जिहाद करना अप्रिय रखा और उन्होंने कह दिया कि इस गर्मी में न निकलो, कह दीजिए कि नरक की आग बहुत गरम है, काश कि वे समझते होते।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ
وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ ٧٨

الَّذِينَ يَلْمُزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
فِي الضَّدَّاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جَهْدَهُمْ
فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ يَسَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ٧٩

اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ
سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ
كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْفَاسِقِينَ ٨٠

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خَلْفَ رَسُولِ اللَّهِ
وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ
نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ ٨١

¹ इस में उन मुनाफिकों के लिए कड़ी तंबीह है जो अल्लाह तआला से वादा करते हैं फिर उसकी फिक्र नहीं करते, जैसे कि वे यह समझते हैं कि अल्लाह उनकी पोशीदा बातों और राजों को नहीं जानता, अगरचे कि अल्लाह सभी कुछ जानता है, क्योंकि वह तो गैब का जानने वाला है, सभी अप्रत्यक्ष (पोशीदा) बातों को जानता है।

² सत्तर की तादाद मुबालगा और ज्यादाती के लिए है कि चाहे जितना ज्यादा उन की मगफिरत के लिए दुआ करें, अल्लाह तआला उनको कभी भी माफ नहीं करेगा, यह मतलब नहीं कि अगर सत्तर से ज्यादा बार दोष मुक्ति के लिए विनय की गयी तो उनको माफ कर दिया जायेगा।

³ यह भाफी से सहरूम करने का सबब बता दिया गया है, ताकि लोग किसी की सिफारिश की उम्मीद में न रहे बल्कि ईमान और नेक कामों की दौलत लेकर अल्लाह के दरबार में हाजिर हों, अगर क्रयामत सामग्री (तोषा) किसी के पास नहीं होगा तो ऐसे काफिरों और नाफरमानों की कोई सिफारिश भी नहीं करेगा, इसलिए कि अल्लाह तआला ऐसे लोगों के लिए सिफारिश का हुक्म ही अता नहीं करेगा।

८२. अतः उन्हें चाहिए कि बहुत कम हों और ज्यादा रोयें, बदले में उस के जो ये करते थे।

८३. तो अगर अल्लाह तआला आप को उन के किसी गुट की तरफ लौटा कर वापस ले आये फिर ये आप से लड़ाई के मैदान में निकलने की आज्ञा मांगें, तो आप कह दीजिए कि तुम मेरे साथ कभी भी नहीं चल सकते और न मेरे साथ दुश्मन से लड़ाई कर सकते हो, तुम ने पहली बार ही बैठे रहने को अच्छा समझा था, तो तुम पीछे रह जाने वालों में ही बैठे रहो।

८४. और इन में से कोई मर जाये तो उस के जनाजे पर नमाज आप कभी भी न पढ़ें और न उसकी कब्र (समाधि) पर खड़े हों, यह अल्लाह और उस के रसूल के इन्कार करने वाले हैं और मरते दम तक फासिक रहे हैं।

८५. और आप को इन के माल और औलाद कुछ भी भली न लगे, अल्लाह तआला यही चाहता है कि उन्हें इन चीजों से दुनियावी सजा दे और ये अपनी जान निकलने तक काफिर (नाशुक्रा) ही रहें।

८६. और जब कोई सूरत (कुरआन करीम का अध्याय) उतारी जाती है कि अल्लाह पर ईमान लाजो और उस के रसूल के साथ मिलकर जिहाद करो, तो उन में से मालदारों का एक गुट आप के पास आकर यह कह कर इजाजत ले लेता है कि हमें तो बैठे रहने वालों में ही छोड़ दीजिए।^१

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءَ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾

وَإِنْ رَجَعَك اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ مِنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوا لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاسْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ ﴿٨٣﴾

وَلَا تَصِلْ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَأْتُوا وَهُمْ فِي سِقُونَ ﴿٨٤﴾

وَلَا تَحِبَّكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿٨٥﴾

وَإِذَا أَنْزَلَتْ سُورَةٌ أَنْ أَمْسُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُو الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا لَنْ فَتَحَ الْقَوْمَ لَنَا ﴿٨٦﴾

^१ यह आयत अगरचे मुनाफिकों के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबैय के बारे में उतरी है, लेकिन इसका हुकम आम है, हर इंसान जिसकी मौत कुफ्र और निफाक की हालत में हुई हो, वह उस में शामिल है।

^२ यह उन्हीं मुनाफिकों का बयान है जिन्होंने झूठे बहाने बना कर पीछे बैठे रहना ही अच्छा

८७. यह तो घर में रहने वाली औरतों का साथ देने पर रीझ गये और उनके दिलों पर मुहर लगा दी गयी, अब वह कुछ समझ-बूझ नहीं रखते ।¹

८८. लेकिन खुद रसूल (ईशदूत) और उस के साथ के ईमानवाले अपनी मालों और जानों से जिहाद करते हैं, उन्हीं के लिए भलाई है और यही लोग कामयाबी पाने वाले हैं ।

८९. इन्हीं के लिए अल्लाह (तआला) ने वह जन्नत तैयार की है, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिन में बह सदा रहने वाले होंगे, यही बहुत बड़ी कामयाबी है ।²

९०. गंवारों में से बहाना बनाने वाले लोग हाज़िर हुए कि उन्हें इजाज़त दी जाये और वह बैठ रहे जिन्होंने अल्लाह से और उस के रसूल से झूठी बातें बनायी थी, अब तो उन में जितने भी काफिर है उन्हें दुखदायी अजाब पहुँच कर रहेगा ।

رَضُوا بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ (87)

لَكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ لِرَبِّهِمْ وَأُولَئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (88)

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (89)

وَجَاءَ الْمُعَذِّبُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (90)

समझ था *أولئك الذين* से मुराद है धनवान, यानी इन लोगों को पीछे न रहना चाहिए था, क्योंकि उन के पास अल्लाह का अता किया हुआ सभी कुछ था, *فاعدین* से मुराद कुछ मजबूरी के सबब घर में बैठ रहने वाले आदि हैं, जैसाकि अगली आयत में उनको *خوالف* से मुकाबला किया गया है, जो *خالفه* का बहुवचन (जमा) है, यानी "पीछे रहने वाली औरतों" ।

¹ दिलों पर मोहर लग जाना, यह लगातार गुनाह करने के सबब होता है, जिसकी वजाहत पहले की जा चुकी है, इस के साथ इंसान सोचने-समझने की ताकत से महरूम हो जाता है ।

² उन मुनाफिकों के खिलाफ ईमानवालों का अखलाक यह है कि वह अपने तन-मन-धन से अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं, अल्लाह की राह में उन्हें अपनी जानों की फिक्र भी नहीं है और न धन की, उन के करीब अल्लाह का हुक्म सब से बड़ा है उन्हीं के लिए भलाई है, यानी आखिरत (परलोक) की भलाई और जन्नत का सुख, और कुछ के करीब दुनिया और आखिरत दोनों जगहों का फायदा, और यही लोग कामयाब और ऊँचे पदों पर आसीन होने के लायक होंगे ।

९१. कमजोरों और रोगियों पर और उन पर जो खर्च करने को कुछ नहीं पाते कोई दोष नहीं जब तक वह अल्लाह और उस के रसूल (दूत) के खैरख्वाह हों, ऐसे नेक लोगों पर कोई रास्ता नहीं और अल्लाह बख्शने वाला मेहरबान है ।^१

९२. और न उन पर जो आप के पास आते हैं कि आप उन्हें सवारी का इन्तेजाम कर दें तो आप जवाब देते हैं कि मैं तुम्हारे वाहन के लिये कुछ नहीं पाता तो वह दुःख से आसू बहाते लौट जाते हैं कि उन्हें खर्च करने के लिए कुछ भी हासिल नहीं ।^२

९३. बेशक उन पर रास्ता (इल्जाम) है जो धनी रह कर भी आप से इजाजत मांगते हैं, यह नारियों के साथ रह जाने पर खूब है और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी है जिस के सबब वह लाइलम हो गये हैं ।^३

لَيْسَ عَلَى الصَّغَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا
عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنْفِقُونَ خَرْجٌ
إِذَا أَنْصَحُوا لِقَوْلِ رَسُولٍ مَّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ
مِنْ سَبِيلٍ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٩١﴾

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا آتَوْهُ لِتَحِيْلِهِمْ قُلْتُ
لَا أَجِدُ مَّا أُحِبُّكُمْ عَلَيْهِمْ أَنْ تَكُونُوا دَاعِيَهُمْ
قَبِيضٌ مِنَ النَّارِ فَصَحَّ النَّارُ الْيَجِدُوا
مَّا يُنْفِقُونَ ﴿٩٢﴾

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ
وَهُمْ أَغْنِيَاءُ رِضْوَانًا يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِيِّ
وَصَحَّ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٩٣﴾

^१ इस आयत में उन लोगों का बयान है जो हकीकत में मजबूर थे और उनका सबब भी बाज्रह था, जैसाकि १. मजबूर और कमजोर यानी बूढ़े, अंधे और लगाड़े वगैरह मजबूर इसी दायरे में आते हैं, कुछ ने उनको रोगियों में शामिल किया है २. रोगी ३. जिन के पास जिहाद के खर्च उठाने की ताकत नहीं थी और बैतुल माल (धार्मिक कोष) में भी उनके खर्च उठाने की ताकत न थी, अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के हक से मुराद है, जिहाद की उन के दिलों में तड़प, मुजाहिदीन (जिहाद के सिपाहियों) से मुहब्बत रखते हैं और अल्लाह और उस के रसूल ﷺ के हुबमों की पैरवी करते हैं, ऐसे मोहसिनीन (परोपकारी) अगर जिहाद में शामिल होने के लायक न हों तो उन पर कोई गुनाह नहीं ।

^२ यह मुसलमानों के एक गुट का बयान है, जिन के पास अपनी सवारियाँ भी नहीं थी और नबी ﷺ ने भी उन्हें सवारियाँ मुहय्या कराने में लाचारी जाहिर की, जिस पर उन्हें इतना दुख हुआ कि आँखों से आसू निकल पड़े । * यानी बिगैर किसी लालच के मुसलमान जो किसी भी तरह से जायेज सबब रखते थे । अल्लाह तआला ने जो हर जाहिर और छिपी बातों का जानने वाला है, उनको जिहाद में शामिल होने से अलग कर दिया, बल्कि हदीस में आता है कि नबी ﷺ ने उन मजबूर लोगों के बारे में जिहाद में शामिल होने वाले लोगों से फरमाया: "तुम्हारे पीछे मदीने में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि तुम जिस घाटी को तय करते हो, और जिस रास्ते पर चलते हो, तुम्हारे साथ वह बदला पाने में बराबर से शामिल हैं ।" सहाबा केराम ने पूछा, यह किस तरह हो सकता है, जब कि वे मदीने में बैठे हैं? आप ﷺ ने फरमाया: "حَسْبُهُمُ النَّارُ" "सबब ने उन्हें वहाँ रोक दिया है ।" (सहीह बुखारी, किताबुल जिहाद और सहीह मुस्लिम नं० १११८)।

^३ ये पाखण्डी हैं जिनका बयान आयत नं० ८६ और ८७ में गुजर चुका है, यहाँ फिर उनका बयान बगैर किसी लालच के मुसलमानों के मुक्राबिल में हुआ है ।

९४. वे तुम से बहाने बनायेंगे जब तुम उन के पास जाओगे, (हे नबी!) कह दो कि वहाने न बनाओ, हम तुम्हारा यकीन नहीं करेंगे अल्लाह ने हमें तुम्हारे करतूतों से वाखबर कर दिया है, और अल्लाह एवं उस के रसूल (संदेशवाहक) तुम्हारे अमल देख लेगे फिर तुम गैब और हाज़िर के जानकार के पास लौटाये जाओगे फिर वह तुम्हें बता देगा जो तुम कर रहे थे।

९५. हाँ! वह तुम्हारे सामने अल्लाह की कसम खायेंगे जब तुम उन के पास वापस जाओगे ताकि तुम उन को उनकी हालत पर छोड़ दो, इसलिए तुम उन्हें उनकी हालत पर छोड़ दो, यकीनन वह बहुत नापाक है और उन का ठिकाना नरक है, उन के करतूतों के बदले जो किया करते थे।

९६. यह तुम्हारे करीब इसलिये कसम खायेंगे कि तुम उन से खुश हो जाओ तो अगर तुम उन से खुश हो भी जाओ तो अल्लाह ऐसे फासिकों से खुश नहीं होता।

९७. देहाती लोग कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत ही सख़्त हैं, और उनको ऐसा होना ही चाहिए कि उनको इन हुक़मों का इल्म न हो जो अल्लाह ने अपने रसूल पर उतारे हैं, और अल्लाह बहुत इल्म वाला बहुत हिक्मत वाला है।

९८. और उन देहातियों में से कुछ ऐसे हैं कि जो कुछ ख़र्च करते हैं उसको सज़ा समझते हैं, और तुम मुसलमानों के लिये बुरे दिन के इतेज़ार में रहते हैं, बुरा वक़्त उन पर ही पड़ने वाला है, और अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ
قُلْ لَا تَعْتَذِرُوا لَنْ تُؤْمِنَ كَمَا نَبَأَ اللَّهُ
مِنْ آخِرَاتِكُمْ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ
ثُمَّ تَرْدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنزِلُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾

سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ
عَنْهُمْ فَاعْرَضُوا عَنْهُمْ إِنَّهُمْ رَجَسٌ وَمَا
وَهُمْ جَهَنَّمَ بَرَآءًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٩٥﴾

يَحْلِفُونَ لَكُمْ لَيَرْضَوْنَهُمْ إِنْ تَرْضَوْنَهُمْ
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٩٦﴾

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا أَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا
حُدُودَ مَا نَزَّلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٩٧﴾

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا
وَيَتْرِكُ يَدَهُمْ وَالْأَيْدِي عَلَيْهِمْ ذَائِرَةُ السَّوْءِ ۗ
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٩٨﴾

इन तीन आयतों में उन मुनाफिकों का बयान है जो तबूक की लड़ाई के वक़्त मुसलमानों के साथ नहीं गये थे, नबी ﷺ और मुसलमानों के महफूज़ वापस आने पर अपने बहाने पेश करके उनकी नज़रों में बफ़ादार बनना चाहते थे।

९९. और कुछ देहातियों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हैं और जो कुछ खर्च करते हैं उसको अल्लाह की कुर्बत और रसूल की दुआ का जरिया बनाते हैं,^१ याद रखो कि उनका यह खर्च करना बेशक उन के लिए कुर्बत का जरिया है, उनको अल्लाह जरूर अपनी रहमत में दाखिल कर देगा, अल्लाह बहुत बख़्शने वाला रहम करने वाला है।

१००. और जो मोहाजिर (मक्का से मदीना आये हुए लोग) और अंसार (मदीना के मूल निवासी) पहले हैं, और जितने लोग वग़ैर किसी ग़र्ज से उन के पैरोकार हैं,^२ अल्लाह उन सभी से खुश हुआ और वे सब अल्लाह से खुश हुए और (अल्लाह ने) उन के लिए ऐसे बाग का इतेजाम कर रखा है जिन के नीचे नहरें बहती हैं, जिन में वे हमेशा रहेंगे,^३ यह बड़ी कामयाबी है।

१०१. और कुछ तुम्हारे आसपास के देहातियों में से और अहले मदीना में ऐसे मुनाफ़िक हैं जो निफ़ाक़ पर अड़े हुए हैं, आप उन को नहीं

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَيَخُذُ مَا يُنْفِقُ قُرْبَةً عِنْدَ اللَّهِ وَصَلَوَاتِ
الرُّسُولِ إِلَّا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَهُمْ سَيُدْخِلُهُمُ
اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٩٩﴾

وَالشُّقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ
وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُمْ بِإِحْسَانٍ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ﴿١٠٠﴾

وَمِنَ حَوْلِكُمْ مِنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ ذُو
وَمِنَ أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ ذ

^१ ये अरब देहातियों की दूसरी क्रिस्म हैं जिनको अल्लाह ने शहरी इलाके से दूर रहने के बावजूद अल्लाह और अख़िरत के दिन पर ईमान लाने की खुशनसीबी अता किया, और इस ईमान के सबब उन से वह ग़वारपन भी दूर कर दिया जो देहाती जिन्दगी के सबब देहातियों में आम तौर से पाया जाता है, इसलिए वह अल्लाह की राह में खर्च हुए माल को सजा समझने के वजाय अल्लाह की कुर्बत और रसूल ﷺ की दुआयें लेने का जरिया समझते हैं।

^२ इस में तीन गुटों का बयान है, एक मोहाजिरो का, जिन्होंने धर्म के लिये अल्लाह और रसूल ﷺ के हुक्म पर मक्का और दूसरे इलाकों से हिजरत किया और सब कुछ छोड़-छाड़ कर मदीना आ गये, दूसरे अंसार जो मदीना के निवासी थे, उन्होंने हर मौक़ा पर रसूलुल्लाह ﷺ की मदद और हिफ़ाज़त की। तीसरा गुट वह है जो इन मोहाजिरो और अंसार के अच्छे सुलूक और एहसान के साथ पैरोकार हैं, इस गुट से मुराद कुछ के नजदीक तावईन है।

^३ अल्लाह तआला उन से खुश हो गया का मतलब है अल्लाह तआला ने उन के नेक अमल कुबूल कर लिये, उन के इंसान होने के सबब जो ग़लतियाँ हुई माफ़ कर दिया और वह उन पर नाराज़ नहीं।

जानते! उनको हम जानते हैं हम उन को दोहरी सजा देगे, फिर वे बहुत बड़े अजाब की तरफ भेजे जायेंगे।

१०२. और कुछ दूसरे लोग हैं जो अपनी गलतियों को कुबूल करते हैं, जिन्होंने मिले हुए अमल किये थे, कुछ अच्छे और कुछ बुरे। अल्लाह से उम्मीद है कि उन की तौबा कुबूल करे, बेशक अल्लाह बहुत बख्शने वाला और रहम करने वाला है।

१०३. आप उनके मालों में से सदका ले लीजिये, जिसके जरिये आप उनको पाक और साफ कर दें और उन के लिए दुआ कीजिए, बेशक आप की दुआ उन के लिए इत्तिमान का जरिया है और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह सुनता है, अच्छी तरह जानता है।

१०४. क्या उनको यह इल्म नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा कुबूल करता है और वही सदका को कुबूल करता है,^१ और यह कि अल्लाह ही तौबा कुबूल करने में और रहम करने में कामिल है।

१०५. और कह दीजिए कि तुम अमल किये जाओ तुम्हारे अमल अल्लाह खुद देख लेगा और उसका रसूल और ईमानवाले (भी देख लेंगे) और जरूर तुम को ऐसे के पास जाना है जो सभी छिपी और खुली बातों का जानने वाला है, इसलिए वह तुम को तुम्हारे सब किये हुए को बतला देगा।

لَا تَعْلَمُهُمْ وَلَا نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَاعِدًا بِهِمْ
مُرْتَبِينَ ثُمَّ يَرُدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿١٠١﴾

وَآخِرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا
صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَىٰ اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ
عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٠٢﴾

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ
بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَهُمْ
وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿١٠٣﴾

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ
عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ
هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾

وَقُلْ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ
وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَيُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ
وَاللَّهِ شَهِيدٌ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٠٥﴾

^१ कितने साफ लपजों में नबी ﷺ के ग़ैब न जानने का खण्डन (तरदीद) है, काब्र अहले बिदअत (धर्म में नई चीजें करने वाले) को कुरआन समझने की सआदत हासिल हो।

^२ सदका कुबूल करता है का मतलब (अगर वह जायज कमायी से हो) यह है कि उसे बढ़ाता है, जिस तरह हदीस में आया है, नबी ﷺ ने फरमाया : «अल्लाह तआला तुम्हारे सदका की इस तरह पालन-पोषण करता है जिस तरह तुम में से कोई इंसान अपने घोड़े के बच्चे का पालन-पोषण करता है, यहाँ तक कि एक खजूर के बराबर सदका (बढ़-बढ़कर) ओहुद पहाड़ के बराबर हो जाता है।» (सहीह युखारी, किताबुज जकात और मुस्लिम, किताबुज जकात)।

१०६. और कुछ दूसरे लोग हैं जिनका मामला अल्लाह के हुक्म आने तक स्थगित (मुलतबी) है,^१ या तो उन को सजा देगा या उनकी तौबा (पश्चाताप) कुबूल कर लेगा, और अल्लाह बहुत जानने वाला है, बहुत हिक्मत वाला है।

१०७. और कुछ ऐसे हैं जिन्होंने इस मकसद से मस्जिद बनायी है कि नुकसान पहुँचायें और कुफ्र की बातें करें, और ईमानवालों में फूट डालें और उस इंसान के ठहरने का इंतजाम करें जो इस के पहले से अल्लाह और उसके रसूल का मुखालिफ है, और कसम खा जायेंगे कि सिर्फ भलाई के अलावा हमारा कोई मकसद नहीं, और अल्लाह गवाह है कि वे पूरी तरह से झूठे हैं।

१०८. आप उस में कभी खड़े न हों,^२ लेकिन जिस मस्जिद की वनिय्याद पहले दिन से ही तक़वा पर रखी गयी हो, वह इस लायक है कि आप उस में खड़े हों^३ इस में ऐसे लोग हैं कि वे ज्यादा पाक होने को अच्छा समझते हैं^४ और

وَأَخْرَجُوا مُرَجَبًا لِأَمْرِ اللَّهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ (106)

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلُ لَا يَلْعَلْنَ أَنْ يُرَدَّنَا إِلَّا الْإِخْسَافُ وَأَنَّ اللَّهَ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ (107)

لَا تَقُومُوا فِيهِ أَبَدًا لَنَسْجِدَ أُتِيَ عَلَى التَّقْوَى مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَنْ يَتَّخِذُوا دُؤْلَانًا يُحِبُّ الْمُظَاهَرِينَ (108)

^१ तबूक की लड़ाई में पीछे रह जाने वालों में एक तो मुनाफिक लोग थे, दूसरे वे जो बिला किसी वजह के ही पीछे रह गये थे, और उन्होंने अपनी गलती को कुबूल कर लिया था, लेकिन उन्हें माफ नहीं किया गया था। इस आयत में उन्हीं का बयान है जिनका मामला स्थगित (मुलतबी) कर दिया था, यह तीन लोग थे जिनकी चर्चा आगे आयेगी।

^२ यानी आप ﷺ ने वहाँ जाकर जो नमाज़ पढ़ने का वादा किया है उसके अनुसार वहाँ जाकर नमाज़ न पढ़ें, अतः आप ﷺ ने न केवल यह कि न वहाँ नमाज़ पढ़ी, बल्कि अपने कुछ साथियों को भेजकर मस्जिद गिरा दी और उसे खत्म कर डाला, इससे आलिमों ने नतीजा निकाला है कि जो मस्जिद अल्लाह की इबादत के बजाय मुसलमानों के बीच इख्तिलाफ पैदा करने के लिए बनायी जाये वह मस्जिद ज़रार है, उसको गिरा दिया जाये ताकि मुसलमानों में भेद और बिखारव न पैदा हो।

^३ इस से मुराद कौन-सी मस्जिद है? इस में इख्तिलाफ है, कुछ ने मस्जिद "कुबा" और कुछ ने मस्जिद नबवी ﷺ को कहा है, सलफ का एक गुट दोनों के हक में रहा है।

^४ हदीस में आता है कि इस से मुराद अहले कुबा है, नबी ﷺ ने उन से पूछा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारी पाकीजगी की तारीफ की है, तुम क्या करते हो? उन्होंने कहा कि हम ढेले इस्तेमाल करने के साथ-साथ पानी भी इस्तेमाल करते हैं। (इब्ने कसीर) इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि यह आयत इस बात का सुबूत है कि ऐसी पुरानी मस्जिद में नमाज़ पढ़ना बेहतर है, जो सिर्फ अल्लाह की इबादत के गज़ से बनाई गयी हो, इसके सिवाय नेकों के ऐसे गिराह के साथ नमाज़ पढ़ना बेहतर है जो पूरा वजू करने और पाकीजगी और सफाई का ठीक तरह से

अल्लाह तआला ज़्यादा पाक रहने वालों को प्यारा रखता है ।

१०९. फिर क्या ऐसा इंसान बेहतर है जिस ने अपने घर की बुनियाद अल्लाह से डरने पर और अल्लाह की खुशी पर रखी हो या वह इंसान कि जिस ने अपने घर की बुनियाद किसी घाटी के किनारे पर जोकि गिरने ही को हो रखी हो, फिर वह उसे लेकर नरक की आग में गिर पड़े? और अल्लाह तआला ऐसे ज़ालिमों को समझ ही नहीं देता ।

११०. उनका यह घर जिसे उन्होंने बनाया है, सदा उन के दिलों में शक की बिना पर (काँटा बनकर) खटकता रहेगा, लेकिन यह कि उनके दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जायें, और अल्लाह इल्म वाला और हिक्मत वाला है ।

१११. बेशक अल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानों और मालों को जन्नत के बदले ख़रीद लिया है, वह अल्लाह की राह में लड़ते हैं जिस में क़त्ल करते और क़त्ल होते हैं, उस पर सच्चा वादा है तौरात और इंजील और क़ुरआन में। और अल्लाह से ज़्यादा अपने वादे का पालन कौन कर सकता है? इसलिए तुम अपने इस बेचने पर जो कर लिये हो खुश हो जाओ, और यह बड़ी कामयाबी है ।

११२. वे ऐसे हैं जो तौबा करने वाले हैं, इबादत करने वाले हैं, (अल्लाह की) हम्द करने वाले, रोज़ा (व्रत) रखने वाले, (या सच्चे रास्ते पर सफ़र करने वाले) रुकुअ और सज्दा करने वाले अच्छी बातों की नसीहत देने वाले और बुरी बातों से रोकने वाले और अल्लाह के क़ानूनों को ध्यान में रखने वाले हैं, और ऐसे ईमान वालों को खुशख़बरी सुना दीजिए ।¹

أَكْمَسَ بِنْيَانَهُ عَلَى تَقْوَى مِنَ اللَّهِ
وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَنْ أَسَسَ بِنْيَانَهُ عَلَى
شَفَا جُرْفٍ هَائِلٍ فَأَنْهَارٍ بِهِ فِي نَارٍ جَهَنَّمَ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ (109)

لَا يَزَالُ بِنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ
إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ (110)

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ
بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةَ مُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ
وَيُقْتَلُونَ وَعَدَا عَلَيْهِمْ حَقٌّ فِي الشَّوَرَةِ
وَالْإِنْجِيلِ وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَى بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ
فَأَسْتَبْشِرُوا بَبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ
وَذَلِكَ هُوَ الْقَوْلُ الْعَظِيمُ (111)

الْمُتَّحِقُونَ الصَّيْدُ وَالْحِمَى وَالسَّابِقُونَ
الزَّالِمُونَ الشَّجِدُونَ الْأَمْرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْمُحْظَرُونَ لِحُدُودِ
اللَّهِ وَبَشِيرِ الْمُؤْمِنِينَ (112)

एहतेमाम करने वाले हों ।

¹ मतलब यह है कि पूरा ईमानवाला वह है जो कथनी-करनी में इस्लाम की नसीहतों की

११३. पैगम्बर और दूसरे मुसलमानों को इजाजत नहीं कि मूर्तिपूजकों के लिए माफ़ी की दुआ करें, अगरचे वे रिश्तेदार ही हों, इस हुक्म के वाजेह होने के बाद कि ये लोग नरक में जायेंगे ।^१

११४. और इब्राहीम का अपने बाप के लिए माफ़ी की दुआ करना वह सिर्फ़ वादे का सबब था जो उन्होंने उसे दिया था, फिर जब उन पर यह बात वाजेह हो गयी कि वह अल्लाह का दुश्मन है, तो वह उस से बरी (वेजार) हो गये,^२ हकीकत में इब्राहीम बड़े नर्म सहन करने वाले थे ।

११५. और अल्लाह ऐसा नहीं करता कि किसी क्रौम को हिदायत देने के बाद भटका दे जब तक उन बातों को साफ-साफ न बता दे जिन से वे बचें, बेशक अल्लाह हर चीज को अच्छी तरह जानता है ।

११६. बेशक अल्लाह ही का मुल्क है आकाशों और धरती में, वही जिलाता और मारता है, और तुम्हारा अल्लाह के सिवाय न कोई दोस्त है न कोई मदद करने वाला है ।

११७. अल्लाह (तआला) ने पैगम्बर की हालत पर ध्यान दिया और मोहाजिरों व अंसार की

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا
لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿١١٣﴾

وَمَا كَانَ لِسُلَافِ إِبرَاهِيمَ لِإِبْنِهِ إِذْ عَمِيَ
وَعَدَاهُ آيَاتُهُ ۖ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ
تَبَرَّأ مِنْهُ ۖ إِنَّ إِبرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ ﴿١١٤﴾

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ
حَتَّىٰ يَبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَكِيرٌ شَعِيمٌ
عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَيُؤْتِي
وَمَا تَكْتُمُونَ ۚ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا تَصْغِرُ ﴿١١٦﴾

لَقَدْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ
الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادَ

खूबसूरत मिसाल हों और उन चीजों से बचने वाला हो जिन से अल्लाह ने रोक दिया है और अल्लाह के हुक्मों की नाफरमानी करने वाला नहीं बल्कि उनका मुहाफिज हो, ऐसे ही पूरे ईमानवाले खुशखबरी के हकदार हैं ।

^१ इसकी तफसीर सहीह बुखारी में तफसील से मौजूद है । (सहीह बुखारी, किताबुत तफसीर, सूर: तौबा)

^२ हज़रत इब्राहीम पर भी जब यह बात वाजेह हुई कि मेरा बाप अल्लाह का दुश्मन है और नरक में जाने वाला है, तो उन्होंने उससे अलगाव कर लिया और उसके बाद माफ़ी की दुआ नहीं की ।

हालत पर भी, जिन्होंने ऐसी तंगी के वक्त पैगम्बर का साथ दिया, उसके बाद कि उन में से एक गुट के दिल डाँवाडोल होने लगे थे फिर अल्लाह ने उनकी हालत पर रहम किया, बेशक अल्लाह उन सब पर बहुत मेहरवान और रहम करने वाला है।

११८. और तीन इंसानों की हालत पर भी जिनका मामला स्थगित (मुलतवी) कर दिया गया था^१ यहाँ तक कि जब धरती अपने फैलाव के बावजूद भी उन के लिए तंग होने लगी और वे खुद अपने वजूद से तंग आ गये, और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से कही पनाह नहीं मिल सकती सिवाय इस के कि उसकी तरफ पलटा जाये, फिर उनकी हालत पर रहम किया

يَزِيغُ قُلُوبَ قَوْمٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ
إِنَّهُ بِهِمْ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿١١٨﴾

وَعَلَى الشَّائِئَةِ الَّذِينَ خَلِفُوا حَتَّىٰ إِذَا خَافَتْ
عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحَّبَتْ وَضَاغَتْ عَلَيْهِمْ أَنفُسُهُمْ
وَعظَمُوا أَن لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ
عَلَيْهِمْ لِيُتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿١١٨﴾

^१ तबूक की लड़ाई के सफर को कठिनाई (कष्ट) का वक्त कहा गया है, इसलिए कि एक तो कड़ी धूप का वक्त था, दूसरे फसलें तैयार थीं, तीसरे सफर लम्बा था और चौथे साधन (बसायेल) की कमी थी, इसलिये इसे جيش العسرة (कठिनाई का सफर या सेना) कहा जाता है।

^२ خُفْرًا का वही मतलब है जो مَرْجُونَ का है, यानी जिनका मामला मुअख्खर कर दिया गया था और पचास दिन के बाद उनकी तौबा कुबूल हुई। यह तीन सहाबा थे, काअब बिन मालिक, मुरार: बिन रबीअ और हिलाल बिन उमैय्या, यह पक्के मुसलमान थे, इससे पहले हर जिहाद में शामिल होते रहे, इस तबूक के जिहाद में सुस्ती के सबब शामिल नहीं हो सके, बाद में उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ, सोचा एक गलती (पीछे रहने की) तो हो ही गयी है लेकिन मुनाफिकों की तरह अब रसूलुल्लाह ﷺ के सामने झूठी दलील न पेश करेंगे, इसलिए हाज़िर होकर अपनी गलती को वाज़ेह तौर से कुबूल कर लिया और उसकी सजा के लिये अपने आप को पेश कर दिया। नबी ﷺ ने उन के मामले को अल्लाह पर छोड़ दिया कि वह उनके बारे में कोई हुक्म उतारेगा, फिर भी उस अवधि (मुद्दत) में आप ﷺ सहाबा के राम को इन तीनों से नाता रखने यहाँ तक की बातचीत तक करने से रोक दिया और चालीस रातों के बाद उन्हें हुक्म दिया गया कि वह अपनी बीवियों से भी दूर रहें, अतः बीवियों से भी जुदाई हो गई और दस दिन गुजरने के बाद तौबा कुबूल कर ली गयी और बयान की गई आयत उतरी। इस वाक़ेआ की तफ़सीली जानकारी हज़रत काअब बिन मालिक के कौल के ऐतबार से हदीस में मौजूद है। देखिये (सहीह बुखारी, किताबुल मग्नाज़ी, बाब गज़ब: तबूक, मुस्लिम, किताबुत तौब:, बाब हदीस तौबते काअब बिन मालिक)

ताकि वे मुस्ताक़बिल में भी तौबा कर सकें, वेशक अल्लाह तआला बहुत ज़्यादा तौबा कुबूल करने वाला और बहुत रहम करने वाला है।

११९. ऐ ईमानवालो! अल्लाह (तआला) से डरो और सच्चों के साथ रहो।¹

१२०. मदीना और उस के आसपास के गांव वालों के लिए ठीक न था कि रसूलुल्लाह का साथ छोड़कर पीछे रह जायें और न यह कि अपनी जान को उनकी जान से ज़्यादा प्यारा समझें, यह इस सबब से कि उनको अल्लाह की राह में जो प्यास लगी और जो धकान पहुँची और जो भूख लगी और जो चलना चले, जो काफ़िरों के लिए गुस्से का सबब हुआ हो, और दुश्मनों की जो कुछ खबर ली, उन सब पर उन के नाम (एक-एक) नेक काम लिखा गया, वेशक अल्लाह तआला नेकों का बदला बरबाद नहीं करता।

१२१. और जो भी छोटा और बड़ा उन्होंने खर्च किया और जितने मैदान उन को पार करने पड़े, यह सब भी उन के नाम लिखा गया ताकि अल्लाह (तआला) उन के कामों का अच्छे से अच्छा बदला अता करे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَكُونُوا مَعَ
الضّٰلِقِينَ ۝۱۱۹

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ
الْأَعْرَابِ أَنْ يَتَخَفُوا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْجِعُوا
بِأَنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ
ظَمًا وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَلَا يَطْئُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفْرَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ
عَدُوِّهِمْ إِلَّا كَتَبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ
لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۝۱۲۰

وَلَا يَنْفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا
يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كَتَبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ
أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝۱۲۱

¹ सच्चाई के सबब ही अल्लाह तआला ने इन तीन सहाबियों की गलतियों को न केवल माफ ही किया बल्कि उनकी तौबा को क़ुरआन की आयत बनाकर उतारा رضي الله عنهم ورضوا عنه। इसलिये ईमानवालों को हुबम दिया गया कि अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो, इसका मतलब यह है कि जिस के दिल के अन्दर तक्रबा (यानी अल्लाह का डर) होगा वह सच्चा होगा और जो झूठा होगा समझ लो कि उसका दिल तक्रबा से खाली है, इसीलिये हदीस में आता है कि ईमानवालों से कुछ दूसरी गलतियाँ तो हो सकती हैं लेकिन वह झूठा नहीं हो सकता।

१२२. और मुसलमानों को यह न चाहिए कि सब के सब निकल खड़े हों, तो ऐसा क्यों न किया जाये कि उन के हर बड़े गुट से छोटा गुट जाया करे ताकि वे दीन को समझ-बूझकर हासिल करे और ताकि यह लोग अपनी क्रौम को जबकि वह उन के पास आयें, डरायें ताकि वे डर जायें ।

१२३. ऐ ईमानवालो! उन काफ़िरो से लड़ो जो तुम्हारे आसपास हैं, और उनको तुम्हारे अन्दर सद्धती पाना चाहिए और यह यकीन करो कि अल्लाह तआला तकवा (संयम) वालों के साथ है।

१२४. और जब कोई सूरः उतारी जाती है तो कुछ (मुनाफ़िक) कहते हैं कि इस सूरः ने तुम में से किसके ईमान को बढ़ाया है। तो जो लोग ईमानदार हैं इस सूरः ने उन के ईमान में इजाफा किया है और वे खुश हो रहे हैं ।

१२५. और जिनके दिलों में रोग है, इस सूरः ने उन में उनकी गंदगी के साथ और गंदगी बढ़ा दी है और वे कुफ़र की हालत ही में मर गये ।²

१२६. और क्या उनको नहीं दिखायी देता कि यह लोग हर साल एक बार या दो बार किसी न किसी मुसीबत में डाले जाते हैं, फिर भी न तौबा करते हैं न नसीहत हासिल करते हैं ।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنْفِرُوا كَآفَّةً ۚ فَلَوْلَا نَفَرَ
مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ
وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَحْذَرُونَ ﴿١٢٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ
مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلظَةً ۗ وَعَلِمُوا
أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ﴿١٢٣﴾

وَإِذَا مَا أَنْزَلْنَا سُورَةً فَمِنَهُمْ مَّن يَقُولُ
رَأَيْنَاهُ هَذِهِ آيَاتُنَا ۗ فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا
فَوَدَّاهُمْ آيَاتُنَا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿١٢٤﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَوَدَّاهُمْ
رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ ﴿١٢٥﴾

أَوْ لَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً
أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾

¹ इस सूरः में मुनाफ़िकों के जिन अमलों का पर्दा उठाया गया है, ये आयते उनका बाकी और पूरक (तकमिला) है, इस में बताया जा रहा है कि जब उनकी गैर मौजूदगी में कोई सूरः या उसका कोई हिस्सा उतरता और उनके इल्म में बात आती तो वे हँसी और मजाक के रूप में एक-दूसरे से कहते कि इस से तुम में से किस के ईमान में ज्यादाती हुई ।

² रोग से मुराद निफाक और अल्लाह की आयतों के बारे में शको बुन्हा है, फरमाया: «परन्तु यह सूरः मुनाफ़िकों को उन के निफाक और फ़िरक में अधिकता करती है और वह अपने कुफ़र और शिर्क में इस तरह मजबूत हो जाते हैं कि उन्हें तौबा की तौफीक नहीं होती और कुफ़र (अर्धम) पर ही उनका खातिमा होता है।»

१२७. और जब कोई सूर: उतारी जाती है तो एक-दूसरे को देखने लगते हैं कि तुम को कोई देखता तो नहीं फिर चल देते हैं। अल्लाह (तआला) ने उनका दिल मोड़ दिया है, इस सबब से कि वे नासमझ लोग हैं।

१२८. तुम्हारे पास एक ऐसे पैगम्बर (ईशदत) की आमद हुई है जो तुम्हारी ही जाति से है। जिन को तुम्हारे नुकसान की बातें बहुत भारी लगती हैं, जो तुम्हारे फायदे के बड़े इच्छुक (खाहिशमंद) रहते हैं, इमानवालों के लिए बहुत ही शफीक मेहरबान हैं।

१२९. फिर अगर वे मुख मोड़ें तो आप कह दीजिए कि मेरे लिए अल्लाह काफी है, उस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं, मैंने उसी पर भरोसा किया और वह बहुत बड़े अर्थ (सिहासन) का मालिक (स्वामी) है।^१

सूरतु यूनुस-१०

सूर: यूनुस मक्के में उतरी और इसकी एक सौ नौ आयतें हैं और ग्यारह रूकुअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अलिफ. लाम. रा. | यह हिक्मत भरी किताब की आयतें हैं।

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ
هَلْ يَرِيكُمْ مِنْ أَحَدٍ ثُمَّ انصَرَفُوا صَرَفٌ
اللَّهُ قَلْبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٢٧﴾

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ
مَا عَنِتُمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ
رَحِيمٌ ﴿١٢٨﴾

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾

سُورَةُ يُونُسَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ اٰیٰتِ الْکٰثِرِ الْحَکِیْمِ ﴿١﴾

^१ सूर: के आखिर में मुसलमानों पर नबी ﷺ की शकल में जो बड़ा एहसान किया गया है उसका जिक्र किया जा रहा है, आप ﷺ की पहली फजीलत यह वयान की जा रही है कि वह तुम्हारी जाति से है यानी मर्द की शकल में है (वह नूर या दूसरा कुछ नहीं) जैसाकि दुर्आस्था (खाराब अक्रीबा) के शिकार लोग जनता को इस तरह के गौरख धन्धे में फंसाते हैं।

^२ हजरत अबू दरदा फरमाते हैं कि जो इंसान यह आयत **حَسْبِيَ اللَّهُ** सुबह और शाम सात-सात बार पढ़ लेगा, अल्लाह तआला उसकी परेशानियों (परेशानी और कठिनाई) के लिए काफी हो जायेगा। (सुनन अबू दाऊद नं० ५०८१)

२. क्या उन लोगों को इस बात से ताज्जुब हुआ कि हम ने उन में से एक इंसान के पास बहरी (प्रकृशना) भेज दी कि सभी इंसानों को डराइये और जो ईमान ले आये उनको यह खुशखबरी सुना दीजिए कि उनके रब के पास उनको पूरा बदला और इज्जत मिलेगी, काफिरों ने कहा कि यह इंसान बेशक साफ जादूगर (तात्रिक) है।

३. बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने छः दिनों में आकाशों और धरती को पैदा कर दिया फिर अर्श पर कायम हुआ, वह हर काम का इन्तिजाम करता है, उसकी इजाजत के बिना उस के पास कोई सिफारिश करने वाला नहीं, ऐसा अल्लाह तुम्हारा रब है तो तुम उसकी इबादत करो, क्या तुम फिर भी नसीहत हासिल नहीं करते?

४. तुम सब को अल्लाह ही के पास जाना है, अल्लाह ने सच्चा वादा कर रखा है, बेशक वही पहली बार पैदा करता है, फिर वही दोबारा पैदा करेगा ताकि ऐसे लोगों को जो कि ईमान लाये और उन्होंने नेकी के काम किये, इसाफ के साथ बदला दे और जिन लोगों ने कुफ्र किया उन के लिए खौलता हुआ पानी पीने को मिलेगा और दुखदायी अजाब होगा उन के कुफ्र के सबब।^१

५. वह (अल्लाह तआला) ऐसा है जिसने सूरज को चमकता बनाया और चाँद को रौशन बनाया, और उसके लिए स्थान (गंतव्य) मुकर्रर किये ताकि तुम सालों का हिसाब कर सको और हिसाब को जान लो, अल्लाह तआला ने ये सभी चीजें बेकार नहीं पैदा कीं, वह यह सुबूत उन्हें साफ बता रहा है जो अकल रखते हैं।

اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَا اِلَى رَجُلٍ مِّنْهُمْ
اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَيِّنِ لِلَّذِينَ اٰمَنُوْا اَنْ لَهُمْ قَدَرٌ
مِّمَّا عِنْدَ رَبِّهِمْ قَالِ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ هٰذَا
لَسِحْرٌ قَبِيْلٍ ۝۲

اِنَّ رَبَّكُمْ اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِي
سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يَدْبُرُ الْاَمْرَ
مَا مِنْ شَيْءٍ اِلَّا مِنْ عِنْدِنَا ذٰلِكُمْ اَللّٰهُ رَبُّكُمْ
فَاعْبُدُوْهُ اَقْلَامًا تَدْكُرُوْنَ ۝۳

اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعَدَّ اللّٰهُ حَقًّا اٰثْمَةَ يَبَدُوْا
الْخَلْقِ ثُمَّ يُعِيْدُهُ لِيُعْزِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ اَوَالِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرٰبٌ
مِّنْ حَمِيْمٍ وَعَدَّ اَبَ الْاِيْمٰنِ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝۴

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاً وَالْقَمَرَ نُوْرًا
وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِّيْنَ
وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ اِلَّا بِالْحَقِّ
يَخْتَصِلُ الْاَلْيَتِ لِقَوْمٍ يَعْمَلُوْنَ ۝۵

^१ यानी आकाश और धरती को पैदा कर के उस ने उसे यू ही नहीं छोड़ दिया, बल्कि सारी मखलूक का नज्म और तदवीर इस तरह कर रहा है कि कभी किसी का आपस में टकराव नहीं हुआ, हर चीज उस के हुक्म के ऐतबार से अपने-अपने काम में मसरूफ है।

^२ इस आयत में क्रयामत के आने, अल्लाह के सामने सभी के जमा होने, बदले और सजा का बयान है, यह विषय कुरआन करीम में कई अंदाज से कई मकाम पर बयान हुआ है।

११. और अगर अल्लाह लोगों को फौरन नुकसान पहुंचा देता, जैसे लोग फौरन फायेदा चाहते हैं इसलिए उन का वादा कभी का पूरा हो चुका होता तो हम उन लोगों को जिन्हें हमारे पास आने का यकीन नहीं है उन के हाल पर छोड़ देते हैं कि वे अपनी सरकशी में भटकते रहें।

१२. और जब इंसान को कोई तकलीफ पहुंचती है तो हम को पुकारता है लेटे भी, बैठे भी, खड़े भी। फिर जब हम उसकी तकलीफ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है कि जैसे उस ने अपनी तकलीफ के लिए जो उसे पहुंची थी कभी हमें पुकारा ही नहीं था।" इन हूद तोड़ने वालों के अमल को उन के लिए उसी तरह पसन्दीदा होने वाला बना दिया गया है।

१३. और हम ने तुम से पहले बहुत से ऐसे गिरोहों को बरबाद कर दिया जबकि उन्होंने जुल्म किया, अगरचे उन के पास उन के पैगम्बर भी निशानियां लेकर आये और वे कब ऐसे थे कि ईमान ले आते? हम अपराधी लोगों को इसी तरह सजा दिया करते हैं।

१४. फिर उन के बाद हम ने दुनिया में उनकी जगह पर तुम को बसाया, ताकि हम देख लें कि तुम कैसे काम करते हो।

وَلَوْ يَعْلَمُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشُّرَّ اسْتَعَجَلَ بِهِم بِالْخَيْرِ
لَعَضَّ إِلَيْهِمْ آجَاهُهُمْ قَدْ رَأَى الَّذِينَ لَا يُرْجُونَ
إِقَاتَنَا فِي طَعْنَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ⑪

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنبَةِ أَوْ قَاعِدًا
أَوْ قَائِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ صُرَّتَهُ مَرَّكَانَ
لَمْ يَدْعُنَا إِلَى شَيْءٍ قَسَمَ لَكَ كَذِّبُكَ رُتِين
لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَهُونَ ⑫

وَقَدْ أَهَلَكْنَا الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا كَلَمْتُمُوهُ
وَجَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا
كَذِّبَكَ تَجْرِى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ⑬

ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلِيفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ
لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ⑭

1 यह इंसान की उस हालत का बयान है जो उस के बहुमत की करनी है, बल्कि बहुत से अल्लाह के मानने वाले भी इस सुस्ती का काम आम तौर से करते हैं कि दुख के बन्त बहुत अल्लाह-अल्लाह हो रहा है, दुआयें की जा रही हैं, तौबा और इस्तिगफार किया जा रहा है, लेकिन जब अल्लाह तआला दुख का वह कठिन बन्त निकाल देता है तो फिर अल्लाह के दरबार में आजिजी और दुआ से भी अन्जान हो जाते हैं और अल्लाह ने उनकी दुआओं को कुबूल करके जिस कठिनाईयों से आजादी दिलायी उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करने की भी खुशनसीबी उनको नहीं होती।

१५. और जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं जो बिल्कुल साफ हैं, तो यह लोग जिनको हमारे पास आने का यकीन नहीं है, इस तरह कहते हैं कि इस के सिवाय दूसरा कुरआन लाईये, या इस में कुछ तब्दीली कर दीजिए, आप (ﷺ) यह कह दीजिए कि मुझे यह हक नहीं कि अपनी तरफ से उस में तब्दीली कर दूँ, वस मैं तो उसी की इत्तेबा करूँगा जो मेरे पास वहयी के जरिये मेरे पास आयी है, अगर मैं अपने रब की नाफरमानी करूँ तो मैं एक बड़े दिन के अजाब का डर रखता हूँ।

१६. आप कह दीजिए कि अगर अल्लाह ने चाहा होता तो न तो मैं तुम को वह पढ़कर सुनाता और न अल्लाह (तआला) तुम को उसकी खबर देता, क्योंकि इस से पहले तो मैं एक लम्बी उम्र तक तुम में रह चुका हूँ, फिर क्या तुम समझ नहीं रखते ?

१७. तो उस से ज्यादा जालिम कौन होगा जो अल्लाह पर बुहतान बांधे या उसकी आयतों को झूठ कहे, बेशक ऐसे मुजरिम कभी कामयाब नहीं होंगे।

१८. और ये लोग अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीजों की इवादात करते हैं जो न उनको नुकसान पहुंचा सकें और न उनको फ्रायेदा पहुंचा सकें, और कहते हैं कि ये अल्लाह के सामने हमारी सिफारिश करने वाले हैं। आप कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को ऐसे उमूर की खबर देते हो जिसे वह नहीं जानता आकाशों में और न धरती में, वह पाक और बरतर है उन लोगों के शिक से।

१९. और सभी लोग एक ही उम्मत (समुदाय-धर्म) के थे, फिर उन्होंने इस्तिलाफ पैदा किये और

وَإِذَا نُتِلُّ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بِحُجَّتٍ ۖ قَالُوا الرَّسُولُ
لَا يُرْسِلُ إِلَيْنَا نَاقَاتٍ بِرُحْمٍ يُرْسِلْنَ عَلَيْنَا أَوْ يَبْدُلُهُ
قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِنْ تَلْقَائِي بِغَيْبٍ ۗ
إِنْ أُرِيدُ إِلَّا مَا يَرُوحِي إِلَيَّ ۗ إِنَِّّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ
رَبِّيَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿١٥﴾

قُلْ لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُمْ
بِهِ ۗ فَقَدْ كُنْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ ۗ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٦﴾

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ
بِآيَاتِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُطِيعُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٧﴾

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ
وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا
عِنْدَ اللَّهِ ۗ قُلْ أَتَعْلَمُونَ اللَّهُ بِمَا لَا يَعْزُبُ
عَنَّا فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ مَا سُبْحَنَهُ وَعَلَىٰ
عَنَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا ۗ

१ यानी यह शिक (अनेकेश्वरवाद) लोगों की अपनी उपज है, और पहले इसका कोई वजूद नहीं

अगर एक बात न होती जो आप के रब की तरफ से मुकर्रर की जा चुकी है, तो जिस चीज में यह लोग इख्तिलाफ कर रहे हैं उनका पूरी तरह से फ़ैसला हो चुका होता।

२०. और ये लोग यह कहते हैं कि उन पर कोई मौजिजा क्यों नहीं उतरा? (तो आप) कह दीजिए कि ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है, तो तुम भी इंतैजार में रहो मैं भी तुम्हारे साथ इंतैजार में हूँ।

२१. और जब हम लोगों को दुख पहुँचने के बाद सुख का मजा चखाते हैं,^२ तो वह तुरंत हमारी आयतों के बारे में मकर करने लगते हैं। आप कह दीजिए कि अल्लाह तदबीर में तुम से अधिक तेज है, बेशक हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे छलकपट को लिख रहे हैं।

२२. वह (अल्लाह) ऐसा है जो तुम्हें जल और थल में सफ़र कराता है,^३ यहाँ तक कि जब तुम नाव में होते हो, और वे नवकाएँ लोगों को मुवाफ़िक़ हवा के जरिये लेकर चलती हैं और वे लोग उन से खुश होते हैं, उन पर एक

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقَضَىٰ بِهِنَّ ۖ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٩﴾

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ۗ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانظُرُوا ۗ إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنظَرِينَ ﴿٢٠﴾

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ صَرَاةٍ مَشْتَهُومٍ إِذَا لَهُمْ مَكْرُوفٌ أَيَّامًا قَلِيلًا ۗ فَسُرِعَ مَكْرَهُمْ ۗ إِنَّا رُسُلُنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ ﴿٢١﴾

هُوَ الَّذِي يُسَوِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۗ حَتَّىٰ إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ وَجَّهْتُمْ بِهِنَّ يَرْجِعْ طَيْبُهُمْ

था, सभी लोग एक ही दीन और एक ही रास्ते पर थे जो इस्लाम है, जिस में एकेश्वरवाद (तौहीद) को खास मक़ाम हासिल है। हज़रत नूह तक लोग इसी रास्ते तौहीद पर चलते रहे, फिर उन में इख्तिलाफ़ हो गया और कुछ लोगों ने अल्लाह के साथ दूसरे को भी देवता, माबूद और कष्टनिवारक (मुश्किल कुशा) समझना शुरू कर दिया।

^१ इस से मुराद कोई वड़ा और खुला मौजिजा है, जैसे समूद की कौम के लिये ऊँटनी का ज़ाहिर होना, उन के लिये सफ़ा पहाड़ को सोने का या मक्के के पहाड़ों को ख़त्म कर के उनकी जगह पर नहरें और बाग़ बनाने का या दूसरे इस तरह का कोई मौजिजा ज़ाहिर करके दिखाया जाये।

^२ दुख के बाद सुख का मतलब है गरीबी, सूखा और दुख और मुसीबत के बाद सुख का मतलब कीमती ज़िन्दगी के लिए बमायेल की अधिकता आदि।

^३ वह तुम्हें चलाता या चलने-फिरने की क़वत अता करता है। «थल में» यानी उस ने तुम्हें पैर दिया जिन से तुम चलते हो, सवारियाँ मुहय्या कीं, जिन पर सवार होकर दूर जगह का सफ़र करते हो। और «जल में» यानी अल्लाह (तआला) ने तुम्हें नवकाएँ और जहाज़ बनाने का गुण (सिफ़त) और समझ अता किया, तुम ने उन्हें बनाया और उन के जरिये समुन्दर में दूर तक सफ़र करते हो।

तुफानी हवा का झोका आता है और हर तरफ से लहरें उठती हैं और वे समझते हैं कि (बुरे) आ धिरे, (उस वक़्त) सभी बुद्ध विरवास (खालिस ईमान) और अक्रीदा के साथ अल्लाह ही को पुकारते हैं कि अगर तू इस से बचा ले तो हम जरूर (तेरे) शुक्रगुजार बन जायेंगे।

२३. फिर जब अल्लाह (तआला) उनको बचा लेता है, तो तुरंत ही वह धरती में नाहक फसाद करने लगते हैं। हे लोगो! यह तुम्हारी सरकशी तुम्हारे लिए दुखदायी होने वाली है, दुनियावी जिन्दगी के (कुछ) फायदे हैं, फिर तुम को हमारे पास आना है, फिर हम सब तुम्हारा किया हुआ तुम को बता देंगे।

२४. दुनियावी जिन्दगी की हालत ऐसी है, जैसे हम ने आकाश से पानी बरसाया, फिर उस से धरती की वनस्पति जिनको इंसान और जानवर खाते हैं, खूब हरी-भरी होकर निकली, यहाँ तक कि जब वह धरती अपनी जीनत का पूरा हिस्सा ले चुकी और उसका खूब सौन्दर्य ही गया और उसके मालिकों ने समझा कि अब हम इस पर पूरे तौर से हकदार हो चुके तो दिन में या रात में उस पर हमारी तरफ से कोई हुक्म (दुर्घटना) आ गया, तो हम ने उसको ऐसा साफ़ कर दिया कि जैसे कल यहाँ थी ही नहीं, हम इसी तरह निश्चानियों को मुफ़त्सल बयान करते हैं ऐसे लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं।

२५. और अल्लाह (तआला) सलामती के घर की तरफ़ तुम को बुलाता है और जिसको चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है।

२६. जिन लोगों ने नेक काम किया है उनके लिए भलाई है, और कुछ ज्यादा भी और उनके मुँह पर न स्याही छायेगी और न अपमान (जिल्लत), ये लोग जन्नत में रहने वाले हैं, वं उस में हमेशा रहेंगे।

وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ
السُّوجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ
دَعَاؤُا اللَّهِ مُخْلِصِينَ لَهُ الَّذِينَ لَهُ لَئِنِ أَنْجَيْتَنَا
مِنْ هَذِهِ لَنُكْفِرَنَّ مِنَ الشُّكْرِينَ ۚ (22)

فَلَمَّا أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا بَعَثْنَا فِي نَفْسِكُمْ قَمَرًا
مِنَ الْحَيَوةِ الدُّنْيَا لِتَمَازِلُنَا مَا جَعَلْنَا فِتْنَةً لَكُمْ
بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ (23)

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَوةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ
السَّمَاءِ فَالْحَبُّ يَأْكُلُهُ الْبَاطِلُ فِي الْأَرْضِ وَمِمَّا يَأْكُلُ
النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّى إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ
زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ
عَلَيْهَا إِنَّمَا أَمْرُنَا لَيْلٌ أَوْ نَهَارٌ فَجَعَلْنَاهَا
حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْن بِالْأَيْمِينِ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ
الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۚ (24)

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۚ (25)
لَئِن يَن آحْسَبُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ
وُجُوهَهُمْ قَمَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۚ (26)

२७. और जिन लोगों ने बुरे अमल किये उनको बुराई की सजा समान मिलेगी और उन पर अपमान छा जायेगा, उनको अल्लाह (ताआला) से कोई बचा न पायेगा, जैसे कि उन के मुंह पर अंधेरी रात के पर्त लपेट दिये गये हैं, ये लोग नरक में रहने वाले हैं, वे उस में हमेशा रहेंगे ।

२८. और वह दिन भी याद के काबिल है, जिस दिन हम उन सभी को जमा करेंगे, फिर मूर्ति-पूजको से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे सार्वीदार अपनी जगह पर ठहरो, फिर हम उन में आपस में फूट डाल देंगे, और उन के वे सार्वीदार कहेंगे कि तुम हमारी इबादत (पूजा) नहीं करते थे ।

२९. तो हमारे तुम्हारे बीच अल्लाह काफी है गवाह के रूप में कि हम को तुम्हारी इबादत की खबर भी न थी ।

३०. उस जगह पर हर इंसान अपने पहले किये गये कामों की जांच कर लेगा, और ये लोग अल्लाह की तरफ जो उनका हकीकी मालिक है, लौटाये जायेंगे और जो कुछ झूठ (ईश्टदेव) बना रखे थे, सभी उन से खो जायेंगे ।

३१. आप कहिए कि वह कौन है, जो तुम को आकाश और धरती से रिज़क पहुँचाता है या वह कौन है जो कानों और आँखों पर पूरा हक़ रखता है, और वह कौन है जो जानदार को बेजान से निकालता है और बेजान को जानदार से निकालता है, और वह कौन है जो सभी कामों का संचालन (नज़म) करता है? बेशक वह यही कहेंगे कि अल्लाह,¹ तो उन से कहिए कि फिर

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ يَبْتَغِيهَا
وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ مَّا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ غَاصِمٍ
كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطْعًا مِنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا
أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٧﴾
وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جِجِياعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا
مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ فَذَرَيْتَنَا بَيْنَهُمْ وَكَانَ
شُرَكَاءُ هُمْ مَّا كَانْتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ﴿٢٨﴾

فَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ
عِبَادَتِكُمْ لَغُفْلِينَ ﴿٢٩﴾

خَتَايَكَ سَبَّأُوا كُلٌّ مِنْ نَفْسٍ مَّا اسْلَفَتْ وَرُدُّوْا
إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمْ الْحَقُّ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَّا
كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٠﴾

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَنْ
يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ
مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ
يُدَبِّرُ الْأُمُورَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا
تَتَّقُونَ ﴿٣١﴾

¹ पहले की आयत में जन्नत में रहने वाले लोगों का बयान था, उस में बताया गया था कि उन्हें इन नेक कामों का बदला कई-कई गुना मिलेगा और फिर इस से ज्यादा अल्लाह के दीदार से सम्मानित (बाइज़्जत) होंगे । इस आयत में बताया जा रहा है कि बुराई का बदला बुराई के बराबर ही मिलेगा । سَيِّئَاتِ का मतलब कुफ़्र (अधर्म) और शिर्क और दूसरी बुराईयाँ हैं ।

² इस आयत से भी बाजेह होता है कि मूर्तिपूजक अल्लाह को मालिक, खालिक, रब और उसको हर काम का हल करने वाला कुबूल करते थे, लेकिन उनके वाबजूद चूँकि वह उसकी इबादत

डरते क्यों नहीं?

३२. तो यह है अल्लाह (तआला) जो तुम्हारा सच्चा रब है, फिर सच के बाद दूसरा क्या रह गया सिवाय भटकावे के, फिर कहाँ भटके जाते हो?¹

३३. इसी तरह आप के रब की यह बात कि यह ईमान न लायेंगे, सभी फ्रासिक लोगों के बारे में साबित हो चुकी है ²

३४. आप (इस तरह) कहिए कि क्या तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है जो पहली बार भी पैदा करे फिर दोबारा पैदा करे? आप कह दीजिए कि अल्लाह ही पहली बार पैदा करता है फिर वही दोबारा भी पैदा करेगा, फिर तुम कहाँ फिरे जाते हो?

३५. आप कहिए कि तुम्हारे साझीदारों में कोई ऐसा है कि सच का रास्ता बताता हो? आप कह दीजिए कि अल्लाह ही सच का रास्ता बताता है, तो फिर जो ताकत सच बात का रास्ता बतलाती हो, वह ज़्यादा इत्तेबा और पैरवी के लायक है, या वह इसान जिसको बिना बताये खुद ही रास्ता न दिखायी दे तो तुम को क्या हो गया है, तुम कैसे फ़ैसले करते हो?

فَذَرِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعَدَ الْحَقِّ
إِلَّا الضَّلَالُ ۚ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ ﴿٣٢﴾

كَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَاتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا
أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيدُهُ ۚ قُلْ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ۚ فَأَنَّى
تُؤْفَكُونَ ﴿٣٤﴾

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ
قُلْ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ ۚ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى
الْحَقِّ أَحْسَنُ أَنْ يُبَيِّنَ ۚ أَمَّنْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ
يُهْدَىٰ ۚ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ﴿٣٥﴾

में दूसरों को साझीदार ठहराते थे, इसीलिये अल्लाह ने उन्हें नरक का इंधन बताया, आजकल के ईमान के दावेदार भी इसी इबादत-एकेश्वरवाद (तौहीद) के इन्कार करने वाले हैं।

¹ यानी रब और माबूद तो यही है जिसके बारे में तुम्हें खुद कुबूल है कि हर चीज का खालिक, मालिक और संयोजक (निर्भर) वही है, फिर इस इबादत के लायक को छोड़कर जो तुम दूसरों को देवता बनाये फिरते हो वह भटकावे के सिवाय क्या है तुम्हारी समझ में यह बात क्यों नहीं आती? तुम कहाँ फिरे जाते हो?

² यानी जिस तरह मूर्तिपूजक सारी बातों को कुबूल कर लेने के बावजूद अपनी मूर्तिपूजा पर कायम है और उसे छोड़ने के लिये तैयार नहीं, इसी तरह तेरे रब की यह बात साबित हो गयी कि यह ईमान नहीं लाने वाले हैं।

३६. और उन में से ज्यादातर लोग बेबुनियाद (अनुमानित) ख्यालों पर चल रहे हैं, वेशक वे असल (अनुमानित) ख्याल सच (की पहचान) में जरा भी काम नहीं दे सकता ये जो कुछ कर रहे हैं, वेशक अल्लाह सब कुछ जानता है।

३७. और यह कुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह (की वहयी) के सिवाय (खुद ही) गढ़ लिया गया हो, बल्कि यह तो (उन किताबों की) तसदीक करने वाली है, जो इस के पहले (उतर) चुकी है, और किताब (अरूरी अहकाम) का तफसीली बयान है, इस में कोई बात शक की नहीं कि सारे जहाँ के रब की तरफ से है।

३८. क्या यह लोग इस तरह कहते हैं कि आप ने उसको गढ़ लिया है? आप कह दीजिए कि तो फिर तुम इसकी तरह एक ही सूर: लाओ और अल्लाह के सिवाय जिन-जिन को बुला सकी उनको बुला लो अगर तुम सच्चे हो।

३९. बल्कि वे ऐसी चीज को झुठलाने लगे जिसको अपने इल्म के दायरे में नहीं लाये और अभी उनको इसका आखिरी नतीजा नहीं मिला, जो लोग उन से पहले हुए हैं उसी तरह उन्होंने भी झुठलाया था, तो देख लीजिए कि उन जालिमों का अंजाम कैसा हुआ?

४०. और उन में से कुछ ऐसे हैं जो इस पर ईमान ले आयेंगे और कुछ ऐसे हैं कि उस पर ईमान न लायेंगे, और आप का रब फसाद करने वालों को अच्छी तरह जानता है।

وَمَا يَتَّبِعْ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا ظَنَّ لَا يُغْنِي
مِنَ الْحَقِّ عَيْتًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ
وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ
الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٧﴾

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَيْنَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ
وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِطُوا بِهٖ وَكُنَّا بِأَنفُسِهِمْ
تَاوِيلَةً ۗ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٣٩﴾

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَا يُؤْمِنُ
بِهِ ۗ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾

१ ये उन काफिरों और मूर्तिपूजकों को चेतावनी देकर होशियार किया जा रहा है कि तुम से पहले की कौमो ने भी अल्लाह की आयतों को झुठलाया, तो देख लो उनका क्या अंजाम हुआ? अगर तुम इसे झुठलाने से न रुके तो तुम्हारा भी अंजाम इस से अलग न होगा।

४१. और अगर वे आप को झूठलाते रहें तो यह कह दीजिए कि मेरा किया हुआ मुझ को मिलेगा और तुम्हारा किया हुआ तुम को मिलेगा, तुम मेरे किये हुए के जिम्मेदार नहीं हो और मैं तुम्हारे किये हुए का जिम्मेदार नहीं हूँ।

४२. और उन में कुछ ऐसे हैं जो आप की तरफ कान लगा कर सुनते हैं, क्या आप वहरों को सुनाते हैं चाहे उनको अक्ल भी न हो?

४३. और उन में कुछ ऐसे हैं कि आप को देख रहे हैं, फिर क्या आप अंधों को रास्ता दिखाना चाहते हैं चाहे उनकी आँख भी न हो?

४४. यह यकीनी बात है कि अल्लाह लोगों पर जरा भी जुल्म नहीं करता लेकिन लोग खुद ही अपने आप पर जुल्म करते हैं।

४५. और उन को वह दिन याद दिलाइए जिस में अल्लाह उनको (अपनी सेवा में) इस हालत में जमा करेगा (कि उन्हें लगेगा) कि (दुनिया में) सारे दिन का एक आध पल रहे हों 'और आपस में एक-दूसरे को पहचानने को खड़े हों' हकीकत में नुकसान में पड़े वह लोग जिन्होंने अल्लाह के पास जाने को झूठलाया और वे हिदायत पाने वाले नहीं थे।

४६. और हम जिसका उन से वादा कर रहे हैं उस में से कुछ जरा सा आप को दिखला दें या (उनके ज़ाहिर होने से पहले) हम आप को मौत दे दें, तो हमारे पास तो उनको आना ही है, फिर

وَأَنْ كَذَّبُوا بِكَلِمَاتِ عَمَلِكُمْ
وَأَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٤١﴾

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ
أَفَأَنْتُمْ
تَسْمِعُ السَّمْعَ لَوْ كَانُوا
لَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٢﴾

وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ
أَفَأَنْتُمْ
تَهْدِي
الْعُمْىَ لَوْ كَانُوا
لَا يَبْصُرُونَ ﴿٤٣﴾

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ
النَّاسَ شَيْئًا
وَلَكِنَّ
النَّاسَ
أَنْفُسَهُمْ
يَظْلِمُونَ ﴿٤٤﴾

وَيَوْمَ
يَحْشُرُهُمْ
كَأَن لَّمْ
يَلْبَسُوا
إِلَّا سَاعَةً
مِّنَ
النَّهَارِ
يَتَعَارَفُونَ
بَيْنَهُمْ
وَقَدْ
خَسِرَ
الَّذِينَ
كَذَّبُوا
بِإِلْقَاءِ
اللَّهِ
وَمَا
كَانُوا
مُهْتَدِينَ ﴿٤٥﴾

وَأَفَأَنْتُمْ
تُرِيدُونَ
بَعْضَ
الَّذِي
نُودُوا
بِهِمْ
أَوْ
تَتَوَفَّيْتُمْ
فَأَلَيْنَا
مَرْجِعَهُمْ
ثُمَّ
اللَّهُ
سَهِيدٌ
عَلَى
مَا
يَفْعَلُونَ ﴿٤٦﴾

1 यानी क्रयामत की कठिनाईयाँ देखकर दुनिया के सारे मजे भूल जायेंगे और दुनिया की जिन्दगी उन्हें ऐसी महसूस होगी कि जैसे कि वे दुनिया में एक-आध पल ही रहे हैं।

2 क्रयामत में कई हालतें होगी, जिन्हें कुरआन में कई जगहों पर बयान किया गया है, एक वक्त ऐसा होगा कि एक-दूसरे को पहचानेंगे, कुछ मौके ऐसे आयेंगे कि आपस में एक-दूसरे पर भटकावे का इल्जाम देंगे।

अल्लाह उन के सभी अमलों का गवाह है।

४७. और हर उम्मत के लिए एक रसूल (सदेश-वाहक) है, फिर जब उनका रसूल आ चुकता है उनका फैसला इसाफ के साथ किया जाता है, और उस पर जुल्म नहीं किया जाता।

४८. और यह लोग कहते हैं कि यह वादा कब होगा अगर तुम सच्चे हो ?

४९. आप कह दीजिए कि मैं खुद अपने लिए तो किसी फायदे और किसी नुकसान का हक रखता ही नहीं लेकिन जितना अल्लाह की मर्जी हो, हर उम्मत के लिए एक मुकरर वक्त है, जब उनका वह मुकरर वक्त आ पहुँचता है तो एक पल न पीछे हट सकते हैं और न आगे खिसक सकते हैं।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ ۚ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ
قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ ٤٧

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝ ٤٨

قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ
اللَّهُ ۚ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ۚ وَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا
يَسْتَخِرُونَ سَاعَةً ۚ وَلَا يَسْتَعْتِقُونَ ۝ ٤٩

१. इस आयत में अल्लाह तआला फरमा रहा है कि हम उन कारिफों के बारे में जो वादा कर रहे हैं अगर उन्होंने कुफ (अधर्म) और मूर्तिपूजा को जारी रखा तो उन पर भी उसी तरह अल्लाह का अजाब आ सकता है, जिस तरह से पहले की क्रौमों पर आया, इनमें से कुछ अगर आप के जीवन में भेज दे तो यह भी मुमकिन है, जिस से आप की आँखे ठंडी होंगी, लेकिन अगर आप इस से पहले ही दुनिया से उठा लिये गये, तब भी कोई बात नहीं, इन कारिफों को आखिर में हमारे पास ही आना है, इन के सारे अमलों और हाल की हमें खबर है वहाँ ये हमारे अजाबों से किस तरह बच सकेंगे: यानी दुनिया में मुमकिन है कि हमारे खास राज के सबब अजाब से बच जायें, लेकिन आखिरत में तो उनके लिये हमारे अजाबों से बचना मुमकिन नहीं होगा क्योंकि क्रयामत आने का मकसद ही यही है कि वहाँ पैरोकारो को उन के हुक्म की पैरवी का फल और नाफरमानी करने वालों को उनकी नाफरमानी की सजा दी जाये।

२. इसका एक मतलब तो यह है कि हर क्रौम में हम रसूल भेजते रहे, और जब रसूल अपना वाखबर करने और पैगाम पहुँचाने का काम पूरा कर देता तो फिर हम उनके बीच इसाफ के साथ फैसला कर देते, यानी पैगम्बर और उन पर इमान ले आने वालों को बचा लेते और दूसरों को वरवाद कर देते। क्योंकि:

(وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبَيِّنَ رِسُولًا)

«हमारी रीत नहीं कि रसूल भेजने से पहले ही अजाब देने लयें।» (यनु इसाईल : १५)

१ यह मूर्तिपूजको के अल्लाह के अजाब की माँग पर कहा जा रहा है कि मैं तो अपने खुद के फायदे और नुकसान का हक नहीं रखता तो क्योंकर मैं दूसरों को फायदा और नुकसान पहुँचा सकूँ? हाँ, यह सारा हक अल्लाह ही के हाथ में है और वह अपनी मर्जी से ही किसी को फायदा

५०. आप कह दीजिए कि यह तो वताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अजाब रात को आ पड़े या दिन को, तो अजाब में कौन सी ऐसी चीज है कि अपराधी लोग उसको जल्दी मांग रहे हैं।

५१. क्या फिर जब वह आ ही पड़ेगा तब उस पर ईमान लाओगे, हाँ अब मान लिया जब कि तुम उसकी जल्दी मचा रहे थे।

५२. फिर जालिमों से कहा जायेगा कि अब हमें वा के अजाब का मजा चखो, तुम को तो तुम्हारे किये का ही बदला मिला है।

५३. और वे आप से पूछते हैं कि क्या वह (अजाब) वास्तविक बात है? आप कह दीजिए कि हाँ, कसम है मेरे रब की कि वह वास्तविक (हकीकी) बात है और तुम (अल्लाह को) किसी तरह भी मजबूर नहीं कर सकते।

५४. और अगर हर जान जिस ने जुल्म (शिक) किया है, के पास इतना हो कि सारी धरती भर जाये तब भी उसको देकर अपनी जान बचाने लगे, और जब अजाब देख लेंगे तो लज्जा को छिपाये रखेंगे और उनका फ़ैसला इंसान के साथ होगा और उन पर जुल्म न होगा।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا
أَوْ نَهَارًا مَاذَا يَسْتَعِجِلُّ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٠﴾

أَتُمْ إِذَا مَا وَقَعَ أَمْنْتُمْ بِهِ وَاللَّيْلُ وَقَدْ
كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿٥١﴾

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ
هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٥٢﴾

وَيَسْتَفْتِيكَ أَحْسَنُ هُوَ قُلْ إِي وَرَبِّي
إِنَّهُ لَحَقُّ الْهُدَىٰ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٣﴾

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ
بِهِمْ ذُورًا وَأَسْوَدًا لَدَامَةً لَتَنَارُوا الْعَذَابِ
وَقَضَىٰ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٥٤﴾

और नुकसान पहुँचाने का फ़ैसला करता है, इसके सिवाय अल्लाह तआला ने हर उम्मत के लिये एक वक़्त मुकर्रर किया हुआ है, इस मुकर्रर वक़्त तक मौका देता है, लेकिन जब वह वक़्त आ जाता है तो फिर वह एक पल न पीछे हो सकते हैं न आगे खिसक सकते हैं।

टिप्पणी : यहाँ यह बात बहुत ज़रूरी है कि जब सब से अच्छा मर्द रसूलों के सरदार मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ तक किसी को फ़ायदेदार और नुकसान पहुँचाने पर बश नहीं तो आप ﷺ के बाद के लोगों में कौन-सा इंसान ऐसा हो सकता है जो किसी की ज़रूरत को पूरा कर दे और मुसीबत दूर करने पर बश रखता हो? इस तरह खुद अल्लाह के पैग़म्बर से मदद माँगना, उनसे दुआ करना «يا رसूलुल्लाह अलमदद» और «اغثنى يا رسول الله» आदि लफ़्ज़ों से पुकारना या ध्यान लगाना किसी भी तरह जायेज नहीं, क्योंकि यह कुरआन की इस आयत और इसी तरह की दूसरी वाजेह नसीहतों के खिलाफ है बल्कि यह शिक के दायरे में आता है।

५५. याद रखो कि जितनी चीजें आकाशों और जमीन में हैं, सभी अल्लाह की मिल्कियत में हैं, याद रखो कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन बहुत से लोग इल्म ही नहीं रखते ।

५६. वही जान डालता है वही जान निकालता है और तुम सब उसी के पास लाये जाओगे ।

५७. हे लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से एक ऐसी चीज आयी है जो नसीहत है^२ और दिलों में जो (रोग) है उन के लिए शिफा है, और हिदायत करने वाला है और रहमत है ईमान वालों के लिए ।

५८. आप कह दीजिए कि बस लोगों को अल्लाह के फज़ल और रहमत पर खुश होना चाहिए,^३ वह उस से कहीं ज्यादा बेहतर है जिसको वह जमा कर रहे हैं ।

५९. आप कहिए कि ये तो बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रोजी भेजी थी, फिर तुम ने उसका कुछ हिस्सा हराम और कुछ हलाल क लिया^४ आप पूछिए कि क्या तुम को अल्लाह ने हुक्म दिया था या अल्लाह पर झूठ गढ़ते हो?

الْإِنِّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ الْاٰرَٓثُ ۗ وَاللّٰهُ غٰدٍ اَللّٰهُ حَقٌّ وَّلٰكِنْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۵۵

هُوَ يَخْبِيْ وَيُخْفِيْ ۗ وَّيُوْتِيْ وَيُؤْتِيْ ۗ وَّالِيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝۵۶

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَّشِفَاءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ۗ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝۵۷

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَّوَبْرَحْمَتِهِ ۗ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ۗ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝۵۸

قُلْ اَرَدْتُمْ مَّا اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَصَلُّوْا لَهٗ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ۗ قُلْ اَللّٰهُ اٰوَدُّ لَكُمْ اَمْرًا عَلٰى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝۵۹

^१ इन आयतों में आकाश और धरती के बीच हर चीज पर अल्लाह तआला की मिल्कियत, अल्लाह के वादे का सच होना, जीवन-मृत्यु पर उसका हक और उस के दरवार में सब की हाजिरी का बयान है, जिस से मकसद पहले की बातों की तसदीक और ताईद है कि जो ताकत इतने हकों की मालिक है, उसकी पकड़ से बच निकलकर कोई कहा जा सकता है?

^२ यानी जो कुरआन को दिल लगा कर पढ़ें और उसके मतलब और भाव पर ध्यान करें, उसके लिये कुरआन नसीहत है, तालीम व नसीहत का असल मतलब है पहले और बाद के नतीजा को याद दिलाना, चाहे डराने के जरिये हो या लालच के जरिये ।

^३ खुशी उस हालत का नाम है जो किसी प्यारी चीज के मिलने पर इंसान अपने दिल में महसूस करता है, ईमानवालों से कहा जा रहा है कि यह कुरआन अल्लाह की खास रहमत और उसकी मेहरबानी है, इस पर ईमानवालों को खुश होना चाहिए यानी उन के दिलों में खुशी और आनन्द होना चाहिए, उसका मतलब यह नहीं है कि खुशी जाहिर करने के लिये सभा और जुलूसों का, दीप जलाने का और इसी तरह के दूसरे बेकार और फुज़ूल का काम करो, जैसाकि आजकल के बिदअती इस आयत से ज़रने ईद मीलाद और इसकी गलत रस्म का जायेज होना साबित करते हैं ।

^४ इस से मुराद वही कुछ जानबरो का हराम करना है जो मूर्तिपूजक अपनी मूर्तियों के नाम पर छोड़ दिया करते थे, जिसका तफ़सीली बयान सूर अल-अन्आम में गुज़र चुका है ।

६०. और जो लोग अल्लाह पर झूठ गढ़ते हैं उनका क्रयामत (प्रलय) के बारे में क्या ख्याल है? हकीकत में लोगों पर अल्लाह तआला का वडा ही एहसान है, लेकिन ज्यादातर लोग शुक्र अदा नहीं करते।

६१. और आप किसी हालत में हों और इन हालतों में आप कहीं से कुरआन पढ़ते हों और तुम लोग जो काम भी करते हो हम को सभी की खबर रहती है, जब तुम उस काम में मसरूफ रहते हो और आप के रब से कोई चीज तिनका बराबर छिपी नहीं, न धरती में न आकाश में और न कोई चीज उस से छोटी और न कोई वड़ी, लेकिन यह सब खुली किताब में है।

६२. याद रखो कि अल्लाह के मित्रों पर' न कोई डर है न वे दुखी होते हैं।

६३. ये वे लोग हैं जो ईमान लाये और (गुनाह से) तकवा बरतते हैं।

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكِبْرَ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦٠﴾

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ
مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا
كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ
وَمَا يَغْرِبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا
فِي السَّمَاءِ وَلَا فِي الْأَرْضِ مِنْ
ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٦١﴾

إِلَّا إِنْ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦٢﴾

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٦٣﴾

नाफरमानों के वाद अल्लाह तआला अपने फरमावरदारों की चर्चा कर रहा है और वह है औलिया अल्लाह, (अल्लाह के मित्र)। 'औलिया' यह बचन (जमा) है 'वली' कलिमा का जिसका लफ्जी माने 'करीबी' है। इस युनियाद पर "औलिया अल्लाह" का मतलब होगा वे सच्चे और बेगर्ज ईमानवाले जिन्होंने अल्लाह के हुक्म की इताअत कर के और गलत कामों से बचकर अल्लाह की नजदीकी हासिल कर ली, इसीलिये अल्लाह तआला ने खुद अगली आयत में उनकी तारीफ इन लफ्जों में की है, "जो ईमान लाये और जिन्होंने अल्लाह का डर दिल में रखा" ईमान और अल्लाह का डर ही अल्लाह की नजदीकी हासिल करने की युनियाद और अहम जरिया है। इस विना पर हर अल्लाह का डर रखने वाला ईमानदार अल्लाह का वली है, लोग वली होने के लिये करामत दिखाना जरूरी समझते हैं और फिर वे अपने बनाये हुए वलियों के झूठे-सच्चे करामतों का प्रचार (तबलीग) करते हैं, यह ख्याल पूरी तरह गलत है, करामत और वली का न चोली-दामन का साथ है न इस के लिये जरूरी रुकावट। यह अलग बात है कि किसी से करामत जाहिर हो जाये तो अल्लाह की इच्छा है, इस में उस वली की मर्जी शामिल नहीं है, लेकिन किसी अल्लाह से डर करने वाले मौमिन और सुन्नन की पैरवी करने वाले से करामत का इजहार हो या न हो उस के वली होने में कोई शक नहीं।

६४. उनके लिए दुनियावी जिन्दगी में भी' और आखिरत में भी खुशखबरी है, अल्लाह तआला की बातों में कुछ बदलाव नहीं हुआ करता, यह बड़ी कामयाबी है।

६५. और आप को उनकी बातें दुख में न डालें, मुकम्मल गल्वा अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है।

६६. याद रखो कि जितना कुछ आकाशों में है और जितने धरती में है यह सब अल्लाह के ही है, और जो लोग अल्लाह को छोड़ कर दूसरे साझीदारों को पुकारते हैं किस चीज की इत्तेबा कर रहे हैं, सिर्फ ख्याली विचारों की इत्तेबा कर रहे हैं और सिर्फ अटकल वाली बातें कर रहे हैं।

६७. वह ऐसा है जिसने तुम्हारे लिए रात बनायी ताकि तुम उस में आराम करो और दिन भी इस तरह से बनाया कि देखने भालने का जरिया है, वेशक इस में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

६८. वे कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है, वह इस से पाक है, वह तो किसी का मुहताज नहीं, उसी की मिलिकयत है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, तुम्हारे पास इस पर कोई सुबूत नहीं, क्या अल्लाह पर ऐसी बात लगाते हो जिसका तुम इल्म नहीं रखते।

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۗ وَلَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْقُوْرُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٤﴾

وَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ ۗ اِنَّ الْعُوْدَةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٦٥﴾

اَلَا اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ ۗ وَمَا يَشِيْعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَاءَ ۗ اِنْ يَكْفُرُوْنَ اِلَّا الظَّنُّ ۗ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالتَّهَارَ مُبْصِرًا ۗ اِنْ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّبِعُوْنَ ﴿٦٧﴾

قَالُوْا اَتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۗ سُبْحٰنَهُ ۗ هُوَ الْعَزِيْزُ ۗ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ اِنْ عِنْدَكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ۗ اَتَقْوُوْنَ عَلٰى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾

¹ दुनिया में खुशखबरी से मुराद सबाब के काम है या वह खुशखबरी है जो मौत के वक्त फरिश्ते एक इमानवाले को देते हैं, जैसाकि कुरआन और हदीस से साबित है।

² यानी अल्लाह के साथ किसी को साझीदार ठहराना किसी दलील की बुनियाद पर नहीं, बल्कि एक अटकल पच्च, राय और गुमान की देन है। आज अगर इसान अपनी अक्ल और समझ को सही तरीके से इस्तेमाल करे तो वेशक उस पर यह वाज्हे हो सकता है कि अल्लाह का कोई साझीदार नहीं, और जिस तरह वह आकाश और धरती को पैदा करने में अकेला है कोई उसका साझीदार नहीं, तो फिर इबादत में दूसरे उसके साझीदार किस तरह हो सकते हैं?

६९. (आप) कह दीजिए कि जो लोग अल्लाह पर मिथ्यारोपण (झपतरा) करते हैं वे कामयाब न होंगे।

७०. (यह) दुनिया में थोड़ा सा सुख है फिर हमारे पास उनको आना है, फिर हम उनको उन के कुफ़्र (अविश्वास) के बदले सख्त सजा चखायेंगे।

७१. और आप उन को नूह की खबर पढ़कर सुनाईए जबकि उन्होंने अपनी क्रौम से कहा कि हे मेरी क्रौम के लोगो! अगर तुमको मेरा रहना और अल्लाह के हुक्मों की शिक्षा देना भारी लगता है तो मेरा तो अल्लाह (तआला) ही पर भरोसा है, तुम अपनी योजना अपने साथियों के साथ मज़बूत कर लो, फिर तुम्हारी योजना तुम्हारे लिए घुटन का सबब न होनी चाहिए, फिर मेरे साथ कर गुजरो और मुझे मौका न दो।

७२. फिर भी अगर तुम मुंह मोड़ते जाओ तो मैंने तुम से कोई बदला तो नहीं मांगा, मेरा बदला तो केवल अल्लाह (तआला) ही देगा और मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं मुसलमानों में से रहूँ।

قُلْ إِنَّ الْإِنسَانَ لَفَتْرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكذِبِ
لَا يُقْلِحُونَ ﴿٦٩﴾

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ لِنُقْلِبَهُمُ
الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٧٠﴾

وَأَنذَرْتَهُمْ نَبَأَ نوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ
يَقَوْمِ إِن كَانَ كِبَرَ عَلَيْكُمْ فَمَا لِي وَتَدَابِرِي
بِأَيِّ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجِزْهُمَا أَمْرًا
وَشُرْكَاءَهُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرًا عَلَيْكُمْ عَلَيْهِمْ
ثُمَّ انصَبُوا إِلَيَّ وَلَا تَنْظُرُونِ ﴿٧١﴾

وَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاءَ لَكُمْ مِمَّنْ أَجِرْتُمْ إِن آجُرِي
إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَأُورِثُ أَنْ أَكُونَ مِنَ السُّلْطِينِ ﴿٧٢﴾

हजरत नूह के इस क्रौल से भी मालूम हुआ कि सभी नबियों का दीन इस्लाम ही रहा है, अगरचे दीनी नियम अलग-अलग और शरीअतें उनकी अलग रही। जैसाकि आयत सूर: अल-मायेद:, ४८ से वाजेह है (كُلٌّ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَّكُمْ سُرَّةُ وَبِنَهْجَاهَا) लेकिन दीन सभी का इस्लाम था, देखिये सूर: अल-बकर:-१३१, १३२, सूर: यूसुफ:-१०१, सूर: अन-नमल:-९१, सूर: यूनुस:-८४, सूर: अल-आराफ:-१२६, सूर: अन-नमल:-४४, सूर: अल-मायेद:-४४, १११ और सूर: अल-अंआम:-१६२ और १६३।

७३. तो वे लोग उनको झुठलाते रहे, फिर हम ने उनको और जो उन के साथ नाव में सवार थे उनको नजात अता की, और उनको वारिस बनाया^१ और जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो दिया, तो देखना चाहिए क्या नतीजा हुआ उन लोगों का जो डराये जा चुके थे।

७४. फिर उन (नूह) के बाद हम ने दूसरे रसूलों को उनकी कौम की तरफ भेजा, तो वे उन के पास वाजेह सुबूत लेकर आये, पर जिस चीज को उन्होंने पहले वक्त में झूठा कह दिया, यह न हुआ कि फिर उस पर ईमान ले आते^२ हम इसी तरह हद पार करने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।

७५. फिर हम ने उन (पैगम्बरों) के बाद मूसा और हारून को फिरऔन^३ और उस के प्रमुखों (सरदारों) के पास अपने चमत्कार देकर भेजा तो उन्होंने घमंड किया और वे लोग मुजरिम कौम थे।

७६. फिर जब उनको हमारे पास से सच (सुबूत) पहुँचा तो वे लोग कहने लगे कि बेशक यह खुला जादू है।^४

فَكَذَّبُوهُ فَتَبَيَّنْهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلَيْنِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَ وَأَعْرَفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٣﴾

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رَسُولًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَبَيَّنَّا لَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مَا كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ ۚ كَذَلِكَ نَطِيعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٤﴾

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٧٥﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿٧٦﴾

^१ यानी धरती में उन बचने वालों को पहले के लोगों का वारिस बनाया, फिर इसानों का आगामी बच उन्ही लोगों खास तौर से हजरत नूह के तीन बेटों से चला, इसीलिये हजरत नूह को दूसरा आदम (द्वितीय मनु) कहा जाता है।

^२ लेकिन इन कौमों ने रसूलों की बात नहीं मानी, सिर्फ इसलिये कि जब पहले-पहल ये रसूल उनके पास आये तो फौरन बिना किसी विचार-विमर्श के उनको नकार दिया, यह पहली बार का इन्कार उनके लिये स्थाई (मुस्तकिल) पर्दा बन गया, और वे यही सोचते रह गये कि हम तो पहले नकार चुके हैं, अब इसको कुबूल करना क्यों? नतीजतन ईमान से महरूम रहे।

^३ रसूलों का सामान्य (आम) बयान करने के बाद हजरत मूसा और हारून का बयान किया जा रहा है, अगरचे रसूलों के बीच वह भी आ जाते हैं, लेकिन उनकी गिनती अहम रसूलों में होती है, इसलिये खास तौर से उनका अलग बयान किया।

^४ जब कुबूल न करने के लिये ठीक दलील या सुबूत नहीं मिलता तो उससे छुटकारा हासिल

७७. मूसा ने कहा कि क्या तुम इस सच के बारे में जबकि वह तुम्हारे पास आ पहुँचा है, ऐसी बात कहते हो, क्या यह जादू है, जब कि जादूगर कामयाब नहीं होते?

७८. वह लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हम को उस रास्ते से हटा दो जिस पर हम ने अपने बुजुर्गों को पाया है, और तुम दोनों को दुनिया में वड़ापन मिल जाये, और हम तुम दोनों को कभी नहीं मानेंगे।

७९. और फिरऔन ने कहा कि मेरे पास सभी माहिर जादूगरों को लाओ।

८०. फिर जब जादूगर आये तो मूसा ने उन से कहा कि डालो जो कुछ तुम डालने वाले हो।

८१. तो जब उन्होंने डाला तो मूसा ने कहा कि यह जो कुछ तुम लाये हो जादू है, तय बात है कि अल्लाह इस को अभी बरबाद किये देता है, अल्लाह ऐसे फसादियों का काम बनने नहीं देता।

८२. और अल्लाह तआला सच्चे सुवूत को अपने कौल से वाजेह कर देता है, चाहे मुजरिम को कितना ही बुरा लगे।

قَالَ مُوسَى اَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَنَا جَاءَ كَرَمًا
اِسْحَرُ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّحَرُونَ ﴿٧٧﴾

قَالُوا اٰجَعْتَنَا لِتَلْفِتِنَا عَمَّآ وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَاءَنَا
وَكَانُوا لَكُمْ اَكْبَرِيَاءَ فِي الْاَرْضِ وَمَا نَحْنُ
لَكُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٧٨﴾

وَقَالَ فِرْعَوْنُ اَنْتَوْنِيْ بِحُكْمٍ سِحْرٍ عَلَيَّ ﴿٧٩﴾

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوسَى اَلْقُوا
مَا اَنْتُمْ مُّلقُونَ ﴿٨٠﴾

فَلَمَّا اَلْقَوْا قَالَ مُّوسَى مَا جِئْتُمْ بِهٖ السِّحْرًا
اِنَّهٗ سَيَبْطِلُ اِنْ اِنَّهٗ لَا يُضِلُّ عَمَلَ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨١﴾

وَيُحِقُّ اللهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٨٢﴾

करने के लिये कह देते हैं कि यह जादू है।

यह न मानने वालों की दूसरी गलत दलील है, जो सही दलील से आजिज होकर पेश करते हैं। एक यह कि तुम हमें हमारे पूर्वजों (बुजुर्गों) के रास्ते से हटाना चाहते हो, दूसरे यह कि हमें मान-मर्यादा और मुल्क हासिल है, उसे छीनकर खुद कब्जा करना चाहते हो, इसलिये हम तो कभी भी तुम पर ईमान नहीं लायेंगे, यानी पूर्वजों की पैरवी और दुनियावी राज्य और मान-मर्यादा ने उन्हें ईमान लाने से रोके रखा, उस के बाद आगे वही किस्सा है कि फिरऔन ने माहिर जादूगरों को बुलाया और हजरत मूसा और जादूगरों का मुकाबला हुआ, जिस तरह सूरः आराफ में गुजरा और सूरः ताहा में भी इसकी कुछ तफसील आयेगी।

८३. फिर मूसा पर उनकी क्रौम वालों में से केवल कुछ ही ईमान लाये, वह भी फिरऔन और अपने सरदारों से डरते-डरते कि कहीं उनको दुख न पहुँचाये, और हकीकत में फिरऔन उस देश में ऊँचा (ताक़त वाला) था, और यह भी बात थी कि वह हद से बाहर हो गया था।

८४. और मूसा ने कहा, हे मेरी क्रौम के लोगो! अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम मुसलमान (आज्ञा-पालक) हो।

८५. तो उन्होंने कहा कि हम ने अल्लाह ही पर भरोसा किया, हे हमारे रब! हम को इन जालिम क्रौम के लिए फितना न बना।

८६. और हम को अपनी रहमत से इन काफिर लोगों से नजात अता कर।^१

८७. और हम ने मूसा और उन के भाई की तरफ बहयी (प्रकाशना) भेजी कि तुम दोनों अपने इन लोगों के लिए मिस्र में घर कायम रखो, और तुम सब उन्हीं घरों को नमाज़ पढ़ने की जगह मुकर्रर कर लो और पावन्दी के साथ नमाज़ पढ़ो और आप ईमानवालों को खुशखबरी दे दें।

فَمَا أَمَّنَ يُؤْمِسُ إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّن قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِّن فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَن يَفْتِنَهُمْ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالِي فِي الْأَرْضِينَ وَإِنَّهُ لَيَنَّ السُّورِينَ (83)

وَقَالَ مُوسَى يَقَوْمِ إِن كُنْتُمْ مَأْمَنُونَ بِاللهِ فَصَلُّوا لِقَوْمِ الْفَالِسِينَ (84)

فَقَالُوا عَلَى الله تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّقَوْمِ الْفَالِسِينَ (85)

وَجَعَلْنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ (86)

وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى وَأَخِيهِ أَن تَبَوَّأْ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بِيوتًا وَأَجْلُوا أَيْوتَكُم قَبْلَةَ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنِينَ (87)

¹ क़ुरआन करीम की यह तफ़सीर भी इस बात को बताती है कि ईमान लाने वाले थोड़े से लोग फिरऔन की क्रौम में से थे, क्योंकि उन्हीं को फिरऔन और उसके दरबारियों और सरदारों से तकलीफ़ पहुँचाये जाने का डर था, इसाईल की औलाद जैसे फिरऔन की गुलामी और अधीनता (मातहत) का अपमान (ज़िल्लत) एक लम्बे वक़्त से सहन कर रहे थे, लेकिन मूसा पर ईमान लाने से उसका कोई सम्बन्ध (तआल्लुक) नहीं था, न उन्हें इस के सबब से ज़्यादा तकलीफ़ का डर था।

² अल्लाह पर भरोसा करने के साथ-साथ उन्होंने अल्लाह के दरवार में दुआयें भी की, और अवश्य ईमानवालों के लिये यह एक बहुत बड़ा हथियार भी है और सहारा भी।

८८. और मूसा ने दुआ की, हे मेरे रब! तुने फिरऔन और उस के सरदारों को जीनत और हर तरह के धन दुनियावी जिन्दगी में अता किये । हे हमारे रब! (इसलिए अता किये है) कि वे तेरे रास्ते से भटकावे । हे हमारे रब! उन के मालों को ध्वस्त (बरबाद) कर दे और उन के दिलों को सख्त (कठोर) कर दे ताकि यह ईमान न लाने पायें यहाँ तक कि दुखदायी अजाबों को देख लें ।

८९. (अल्लाह तआला ने) कहा कि तुम दोनों की दुआ कबूल कर ली गयी तुम सीधे रास्ते पर रहो, और उन लोगों के रास्ते पर न चलना जो नादान है ।

९०. और हम ने इस्राइल की औलाद को समुद्र से पार कर दिया, फिर उन के पीछे-पीछे फिरऔन अपनी सेना के साथ जुल्म और ज्यादती के मकसद से चला, यहाँ तक कि जब डूबने लगा^१ तो कहने लगा, मैं ईमान लाता हूँ कि जिस पर इस्राइल की औलाद ईमान लायी है, कोई उस के सिवाय इबादत के लायक नहीं और मैं मुसलमानों में से हूँ ।

وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَآئِكَ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَنَّا أَمْوَالِهِمْ وَأَشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتَّىٰ يَرُوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٨٨﴾

قَالَ قَدْ أُجِيبَتْ دَعْوَتُكُمْ فَأَسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعِنَّ سَبِيْلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٨٩﴾

وَجُوْرْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيْلَ الْبَحْرَ فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُوْدُهُ بَغْيًا وَعَدُوًّا حَتَّىٰ إِذَا أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ آمَنْتُ أَكْفَرًا لَّا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ بِنُوَّاسِ إِسْرَائِيْلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٩٠﴾

^१ जब मूसा ने देखा कि फिरऔन और उसकी कौम पर वाज व नसीहत का भी कोई असर नहीं हुआ, और इस तरह के भोजिजे देखकर भी उन के अंदर कोई बदलाव नहीं आया तो फिर उनको शाप (बदुआ) दिया, जिसे अल्लाह तआला ने बयान किया है ।

^२ यानी अल्लाह के हुक्म पर चमत्कारिक रूप (भोजिजाना तौर) से बने हुए पानी वाले रास्ते पर, जिस पर चलकर मूसा और उसकी कौम ने समुद्र पार किया था, फिरऔन और उसकी सेना भी समुद्र पार करने के इरादे से चलना शुरू किया, मकसद यह था कि मूसा इस्राइल की औलाद को जो मेरी गुलामी से आजाद कराने के मकसद से रातों-रात ले आया, तो उसे दुबारा कैदी बना लिया जाये, जब फिरऔन और उसकी सेना उस समन्दी रास्ते में दाखिल हो गई तो अल्लाह ने समुद्र को पहले की तरह बहने का हुक्म दे दिया, नतीजतन फिरऔन सहित सब के सब समुद्र में डूब गये ।

९१. (जवाब दिया गया कि) अब ईमान लाता है? और पहले नाफरमानी करता रहा और फसादियों में शामिल रहा।

९२. तो आज हम तेरी लाश को छोड़ देंगे ताकि तू उन लोगों के लिए निशाने डबरात हो जाये जो तेरे बाद हैं। और बेशक ज्यादातर लोग हमारे निशानियों से गाफिल है।

९३. और हम ने इस्राईल की औलाद को बहुत अच्छा रहने का ठिकाना दिया और हम ने उन्हें मजेदार चीजें खाने के लिए अता की तो उन्होंने इखितेलाफ नहीं किया यहाँ तक कि उन के पास इल्म पहुँच गया, तब बात है कि आप का रब उन के बीच क्रयामत के दिन उन बातों में फैसला कर देगा जिन बातों में वे इखितेलाफ करते थे।

९४. फिर अगर आप उसकी तरफ से शक में हों जिसको हम ने आप की तरफ भेजा है, तो आप उन लोगों से पूछिए जो आप से पहले की किताबों को पढ़ते हैं, बेशक आप के पास आप के रब की तरफ से सच्ची किताब आयी है, आप कभी भी शक करने वालों में से न हों।

९५. और न उन लोगों में से हों, जिन्होंने अल्लाह (तआला) की आयतों को झूठलाया, तो आप घाटे पाने वालों में से हो जायें।

९६. बेशक (निःसंदेह) जिन लोगों के बारे में आप के रब की बातें साबित हो चुकी हैं, वे ईमान न लायेंगे।

الَّذِينَ وَقَدِ عَصَيْتَ قَبْلَ وَكُنْتَ مِنَ
الْمُفْسِدِينَ ﴿٩١﴾

قَالِ يَوْمَ تَتُجَنَّبُكَ بِمَدَنِكَ لَتَكُونَنَّ لِنَ
خَلْقِكَ آيَةً ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِنَ النَّاسِ
عَنِ آيَاتِنَا لَخَفِلُونَ ﴿٩٢﴾

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مُبَوَّأَ صَدِيقٍ
وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الظَّلْمَاتِ ۚ فَمَا اسْتَفْتَوْا أَحَدًا
جَاءَهُمُ الْعِلْمُ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

فَإِنْ كُنْتَ فِي شَكٍّ مِمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْأَلِ
الَّذِينَ يَفْقَهُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَاءَكَ
الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُسْتَكْبِرِينَ ﴿٩٤﴾

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ
اللَّهِ فَتَكُونُونَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٩٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ
رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٩٦﴾

1 जब फिरऔन डूब गया तो उसकी मौत का बहुत से लोगों को यकीन नहीं आता था, अल्लाह तआला ने समुद्र को हुक्म दिया, उसने उसकी लाश किनारे पर फेंक दिया, जिसको फिर सब ने देखा, मशहूर है कि आज भी यह लाश मिस के अजायबघर में महफूज है। والله أعلم بالصواب

९७. चाहे उसके पास सभी दलील पहुँच जायें, जब तक वे दुखदायी अजाब को न देख लें।

९८. इसलिए कोई वस्ती ईमान नहीं लायी कि ईमान लाना उन के लिए फायदेमंद होता, सिवाय यूनुस की कौम के, जब वे ईमान ले आये तो हम ने अपमान (जिल्लत) का अजाब दुनियावी जिन्दगी में उन से हटा दी और उनको एक (निश्चित) वक़्त तक सुख भोगने (का मौक़ा) दिया।

९९. और अगर आप का रब चाहता तो सारी धरती के सभी लोग ईमान ले आते,^१ तो क्या आप लोगों को मजबूर कर सकते हैं यहाँ तक कि वह मोमिन ही हो जायें?

१००. अगरचे किसी का ईमान लाना अल्लाह के हुक़्म के बिना मुमकिन नहीं, और अल्लाह वे अक्ल लोगों पर नापाकी थोप देता है।^२

१०१. आप कह दीजिए कि तुम ख्याल करो कि क्या-क्या चीज़ें आकाशों और धरती में हैं और जो लोग ईमान नहीं लाते उन को दलील और चेतावनी (तंबीह) कोई फ़ायदा नहीं पहुँचाती।

وَلَوْ جَاءَهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ
الْأَكْبَرَ ۗ

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ آمَنَتْ فَنَفَعَهَا إِيمَانُهَا
إِلَّا قَوْمَ يُونُسَ لَنَبَأْنَا آمَنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ
الْغَزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَى
حِينٍ ۙ

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مِنَ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ
جَمِيعًا أَفَأَنْتَ تُكْفِرُ النَّاسَ حَتَّى يَكُونُوا
مُؤْمِنِينَ ۙ

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ
وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۙ

قُلْ أَنْظَرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا
تُعْقِبُ الْآيَاتِ وَالنُّذُرِ عَنِ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۙ

^१ जिन वस्तियों को हम ने तवाह किया, उन में से कोई एक वस्ती ऐसी क्यों न हुई, जो ऐसा ईमान लाती जो उनके लिये फ़ायदेमंद होता। हाँ, केवल यूनुस की कौम ऐसी हुई है कि जब वह ईमान ले आयी तो अल्लाह ने उससे अजाब दूर कर दिया।

^२ लेकिन अल्लाह ने ऐसा नहीं चाहा, क्योंकि यह उसकी योजना और मर्जी के खिलाफ़ है, जिसको पूरी तरह से वही जानता है, यह इसलिये फ़रमाया कि नबी करीम ﷺ की बड़ी ख़्वाहिश होती थी कि सब मुसलमान हो जायें, अल्लाह तआला ने फ़रमाया: यह नहीं हो सकता क्योंकि अल्लाह की मर्जी जो ऊँची हिम्मत और बेहतरीन मसलिहत पर मवनी है, उसकी यह मांग नहीं, इसलिये आगे फ़रमाया कि आप लोगों को ताकत के जोर ईमान लाने पर कैसे मजबूर कर सकते हैं? जबकि आप (ﷺ) के अन्दर न इसकी ताकत है न उस के आप जिम्मेदार हैं।

^३ नापाकी से मुराद अजाब या कुफ़्र (अविश्वास) है, यानी जो लोग अल्लाह की निशानियों पर विचार नहीं करते, वे कुफ़्र (अधर्म) में ही लिप्त (मसरूफ़) रहते हैं और इस तरह अजाब के हक़दार हो जाते हैं।

१०२. तो क्या वे लोग सिर्फ उन लोगों की सी घटनाओं का इंतजार कर रहे हैं, जो उन से पहले गुजर चुकी है, (आप) कह दीजिए कि ठीक है तो तुम इंतजार में रहो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतजार करने वालों में से हूँ।

१०३. फिर हम अपने पैगम्बरों को और इमान-वालों को वचा लेते थे, इसी तरह हमारे हक में है कि हम ईमान वालों को नजात दिया करते हैं।

१०४. (आप) कह दीजिए कि ऐ लोगों! अगर तुम मेरे दीन की तरफ से शक में हो तो मैं उन देवताओं की इबादत नहीं करता, जिनकी तुम अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो, परन्तु हाँ, उस अल्लाह की इबादत करता हूँ, जो तुम्हारी जान निकालता है, और मुझ को हुक्म हुआ है कि मैं ईमानवालों में से हूँ।

१०५. और यह कि यकसू होकर अपना चेहरा इस दीन की तरफ^१ कर लेना और कभी मूर्तिपूजकों में से न बनना।

१०६. और अल्लाह को छोड़कर कभी ऐसी चीज को न पुकारना जो तुझ को न कोई फायदा पहुँचा सके और न कोई नुकसान पहुँचा सके, फिर अगर ऐसा किया तो तुम उस हालत में जालिमों में से हो जाओगे।^२

فَلْيَنْتَظِرُوا إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٠٢﴾

ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نُنَجِّي الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِنْ رَبِّي فَلَا تَعْبُدُوا الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ اعْبُدُوا اللَّهَ الَّذِي يَتَوَقَّعُكُمْ وَأَخْبَرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ﴿١٠٤﴾

وَأَنْ أَقْرَبُ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٠٥﴾

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذَا مِنْ الظَّالِمِينَ ﴿١٠٦﴾

^१ इस आयत में अल्लाह तआला अपने आखिरी पैगम्बर हजरत मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ को हुक्म दे रहा है कि आप ﷺ लोगों पर वाजेह कर दें कि आप ﷺ का रास्ता और मूर्तिपूजकों के रास्ते एक-दूसरे से अलग है।

^२ हनीफ का मतलब है एकसू, यानी हर एक दीन छोड़कर केवल दीन इस्लाम कबूल करना और हर तरफ से मुँह मोड़कर सिर्फ एक अल्लाह की तरफ यकसू होकर आर्कापित (मुतवज्जिह) होना सब से तोड़ना और अल्लाह से सम्बन्ध रखना।

^३ यानी अगर अल्लाह को छोड़कर ऐसे देवताओं को आप पुकारेंगे जो किसी को फायदा और नुकसान पहुँचाने की ताकत नहीं रखते, तो यह जुल्म होगा, जुल्म का मतलब है किसी चीज को उस के असल जगह से हटाकर किसी दूसरी जगह पर रख देना, इबादत चूँकि केवल उस अल्लाह का हक है, जिस ने सारी कायनात को पैदा किया है और जिन्दगी के सभी बसायेल वही मुहैया करता है, तो इस इबादत के हकदार ताकत को छोड़कर किसी दूसरे की पूजा-उपासना करना, गलत इस्तेमाल है, इसलिये शिकं को बहुत बड़ा जुल्म कहा गया है, यहाँ भी अगरचे खिताब नबी ﷺ को है, लेकिन हकीकी खिताब पूरी इंसानियत और मुसलमानों को है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. अलिफ • लाम • रा •, यह एक ऐसी किताब है कि इसकी आयतें मजबूत की गयी हैं फिर मुफ़्स्सल वयान की गयी हैं, एक हिक्मत वाले पूर्णज्ञान (खबीर) वाले की तरफ से।

२. यह कि अल्लाह के सिवाय किसी की इबादत न करो, मैं तुम को अल्लाह की तरफ से डराने वाला और खुशखबरी देने वाला हूँ।

३. और यह कि तुम लोग अपने गुनाह अपने रब से माफी कराओ, फिर उसी की तरफ ध्यानमग्न हो जाओ, वह तुम को मुक़र्रर वक़्त तक बेहतर सामान (जिन्दगी) देगा^१ और हर ज्यादा अच्छे काम करने वाले को ज्यादा फ़ज़ल देगा, और अगर तुम लोग मुख मोड़ते रहे तो मुझ को तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अजाब की फ़िक्र है।

४. तुम को अल्लाह ही के पास जाना है और वह हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखता है।

५. याद रखो वह लोग अपनी छातियों को दोहरा किये देते हैं ताकि अपनी बातें (अल्लाह से) छिपा सकें। याद रखो कि वह लोग जिस वक़्त अपने कपड़े लपेटते हैं वह उस वक़्त भी सब कुछ जानता है, जो कुछ छिपाते (चुपके-चुपके बातें करते) हैं और जो कुछ साफ़ (बातें) करते हैं, बेशक वह दिलों के अन्दर की बातें जानता है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الَّذِينَ كُنْتُمْ تُخْبِتُونَ أَيْتُهُ ثُمَّ فُضِّلَتْ مِنْ لَدُنِّ
حَوْلِكُمْ خَيْرٌ ①

أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ
تَوَّابِينَ ②

وَأَنْ اسْتَغْفِرُوا وَإِرْكَمُ تَوْبُوا إِلَيْهِ يَسْتَجِبْ لَهُمْ
مَتَاعًا حَسَنًا إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَيُؤْتِ كُلَّ ذِي
فَضْلٍ فَضْلَهُ وَإِنْ كُونُوا فِئَاتٍ أَحَادٍ عَلَيْكُمْ
عَذَابٌ يَوْمَ كَيْدِكُمْ ③

إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ④

أَلَا إِنَّهُمْ يَكْتُمُونَ صُدُورَهُمْ لِيَسْتَخْفُوا مِنْهُ ۗ
أَلَا جِنَّةٌ يَسْتَفْتُونَ شَيْئًا بِهِمْ يَعْلَمُ مَا يَكْتُمُونَ
وَمَا يَعْلَمُونَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑤

^१ यहाँ उस दुनियावी जरियों को जिसको कुरआन ने आम तौर से "घमंड का जरिया" धोखे का सामान कहा है, यहाँ इसे "बेहतर सामान जिन्दगी" कहा गया है, इसका मतलब यह हुआ कि जो अखिरत से बेफ़िक्र होकर दुनियावी सुख से फ़ायदा हासिल करेगा उस के लिए यह धोखे का साधन (जरिया) है।

६. और धरती पर चलते-फिरते जितने भी जानदार हैं सभी की रोजी अल्लाह (तआला) पर है वही उन के रहने की जगह भी जानता है और उन को सौंपे जाने की जगह भी, सभी कुछ खुली किताब में मौजूद है।

७. और (अल्लाह ही) वह है जिस ने छः दिन में आकाशों और धरती को पैदा किया, और उसका अर्थ (मिहासन) पानी पर था। ताकि वह तुम्हारा इम्तेहान ले कि तुम में अच्छे अमल वाला कौन है? अगर आप उन से कहें कि तुम लोग मरने के बाद फिर जिन्दा किये जाओगे तो काफिर जवाब देंगे कि ये तो केवल खुला जादू ही है।

८. और अगर हम उन से अजाब को कुछ वक़्त तक के लिये मुअख़्खर कर दें, तो यह जरूर पुक्कर उठेंगे कि अजाब को कौन-सी चीज़ रोके हुई है। सुनो! जिस दिन वह उनके पास आयेगा फिर उन से टलने वाला नहीं, फिर तो जिसका मजाक कर रहे थे, वह उन्हीं पर उलट पड़ेगा।

९. और अगर हम इंसान को किसी सुख का मजा चखा कर फिर उसे उस से ले लें तो वह बहुत मायूस और बहुत नाशुका बन जाता है।

१०. और अगर हम उसे कोई सुख पहुँचायें, उस कठिनाई के वाद जो उसे पहुँच चुकी थी तो वह कहने लगता है कि बस बुराईयाँ मुझ से जाती रही।^१ बेशक वह बड़ा ही ख़ुश होकर घमंड करने लगता है।

وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا
كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ۚ وَلَئِنْ قُلْتُمْ إِنَّكُمْ مَرْبُوعُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا إِسْرَافٌ مُبِينٌ

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَعْدُودَةٍ لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۚ إِلَّا يَوْمَ يَأْتِيهِمُ لَنْسٌ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ

وَلَئِنْ أَدْقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَيَكْفُرُ ۚ

وَلَئِنْ أَدْقْنَاهُ نَعْمَاءً بَعْدَ ضَرَاءٍ مَسَّهُ لَيَقُولُنَّ دَهَبَ النَّيِّاتُ عَنِّي ۚ إِنَّهُ لَفَرِحَ فَخُورٌ ۚ

^१ यही बात सहीह हदीस से भी साबित होती है, इसलिए एक हदीस में आता है -अल्लाह तआला ने आकाश और धरती को पैदा करने से पचास हजार साल पहले मखलूक की तक्रदीर लिखा, उस समय उस का अर्थ पानी पर था। (सहीह मुस्लिम, किताबुल क्रदर, और देखिये सहीह बुखारी, वदउल खल्क)

^२ यानी समझता है कि कठिनाईयों का दौर खत्म हो गया है, अब उसे कोई कठिनाई नहीं आयेगी।

११. उन के सिवाय जो सब्र करते हैं और नेक कामों में लगे रहते हैं, उन्हीं लोगों के लिये माफ़ी भी है और बहुत बड़ा बदला भी।

१२. तो शायद कि आप उस बह्यी (प्रकाशना) के किसी हिस्से को छोड़ देने वाले हैं, जो आप की तरफ उतारी जाती है और उस से आप का सीना तंगी में है, सिर्फ़ उनकी इस बात पर कि इस पर कोई ख़जाना क्यों नहीं उतरा? या इस के साथ कोई फ़रिश्ता ही आता, सुन लीजिये! आप तो केवल डराने वाले ही हैं और हर चीज़ का संरक्षक (निगरी) केवल अल्लाह तआला है।

१३. क्या ये कहते हैं कि इस कुरआन को उसी ने गढ़ा है, जवाब दीजिये कि फिर तुम भी इस की तरह दस सूर: गढ़ी हुई ले आओ और अल्लाह के सिवाय जिसे चाहो अपने साथ शामिल भी कर लो अगर तुम सच्चे हो।

१४. फिर अगर वे तुम्हारी इस बात को कुबूल न करें, तो तुम निश्चित रूप से जान लो कि यह कुरआन अल्लाह के इल्म के साथ उतारा गया है, और यह कि अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं, तो क्या तुम मुसलमान होते हो?

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
أُولَئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝۱۱

فَلَعَنَّاكَ تَارِكٌ بَعْضُ مَا يُوْتَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ
بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْنَا كِتَابٌ
أَوْ جَاءَ مَعَهُ مَلَكَ ۖ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ وَاللَّهُ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝۱۲

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۗ كُلٌّ فَاثُوًّا بِعَشْرِ صُورٍ وَمِثْلِهِ
مُفْتَرِيَاتٍ وَأَدْعُوا مَن اسْتَطَعْتُمْ مَن دُونِ اللَّهِ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝۱۳

فَأَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَأَعْلَمُوا أَنَّهَا أَنْزَالٌ بِعِلْمِ
اللَّهِ وَأَنَّ لِرَّالهِ إِلَّا هُوَ ۗ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝۱۴

¹ मूर्तिपूजक नबी ﷺ के बारे में कहा करते थे कि उस के साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरता, या उस की तरफ कोई ख़जाना क्यों नहीं उतार दिया जाता? (सूर: अल-फुरकान-८) एक दूसरी जगह पर कहा गया है -हमें इल्म है कि यह लोग आप (ﷺ) के बारे में जो बातें कहते हैं, उन से आप (ﷺ) दुखी होते हैं। (सूर: अल-हिज-१८) इस आयत में उन्हीं बातों के बारे में कहा जा रहा है कि शायद आप (ﷺ) दुखी होते हों, मुमकिन है आप (ﷺ) वह उन्हें सुनाना नापसन्द समझें। लेकिन आप (ﷺ) इन बातों से बेफ़िक्र होकर, उन को अल्लाह की बह्यी (प्रकाशना) सुनाये, उन्हें पसन्द हो या नापसन्द, वे कुबूल करें या ना कुबूल। आप (ﷺ) का फ़र्ज सिर्फ़ करना और तंबीह है, वह आप (ﷺ) हर हालत में किये जाये।

² यानी क्या इस के बाद भी कि तुम इस चुनौती का जवाब देने में लाचार हो, यह मानने के लिये कि यह कुरआन अल्लाह ही का उतारा हुआ है, तैयार नहीं हो और न मुसलमान होने के लिये तैयार हो?

१५. जो इंसान दुनियावी जीवन और उसकी जीनत पर रीझा हुआ हो, हम ऐसों को उनके सभी अमल का (बदला) यहीं पूरी तरह से पहुँचा देते हैं और यहाँ उन्हें कोई कमी नहीं की जाती।

१६. हाँ, यही वे लोग हैं जिन के लिये आखिरत में आग के सिवाय दूसरा कुछ नहीं, और जो कुछ उन्होंने यहाँ किया होगा वहाँ सब बेकार है और जो कुछ उन के अमल थे वह सब नाश होने वाले हैं।^१

१७. वह जो अपने रब की तरफ से एक दलील पर हो और उस के साथ अल्लाह की तरफ से गवाह हो, और उस से पहले मूसा की किताब (गवाह हो) जो पथ-प्रदर्शक (रहनुमा) और रहमत है (दूसरों की तरह हो सकता है?) यही लोग हैं जो उस पर ईमान रखते हैं, और सभी गुटों में से जो भी इसका इंकारी हो, उसके आखिरी वादे की जगह नरक है,^२ फिर तू उस में किसी तरह के शक में न हो, बेशक यह तेरे रब की तरफ से पूरा का पूरा हक है, लेकिन ज्यादातर लोग ईमान लाने वाले नहीं होते।

مَنْ كَانَ يَرْيِدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزَيَّنَّا لَهَا تُوبَةً
إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿۱۵﴾

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ
إِلَّا النَّارُ ۖ وَحِطَّ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَ بِطُلَّ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۱۶﴾

أَفَسَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ
مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۗ
أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ مِنَ الْأَحْزَابِ
فَالنَّارُ مَوْعِدُهُ ۗ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ
الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يُؤْمِنُونَ ﴿۱۷﴾

^१ इन दो आयतों के वारे में कुछ का ह्याल है कि इस में मुनाफिक लोगों की चर्चा है, कुछ के नजदीक इस से मुराद यहूदी और इसाई हैं और कुछ के नजदीक इस में दुनिया के हरीस लोगों का बयान है, क्योंकि मुनाफिक भी जो अच्छे अमल करते हैं, अल्लाह तआला उन का बदला उन्हें दुनिया में दे देता है, आखिरत में उनके लिये सजा के सिवाय कुछ न होगा, इस विषय को कुरआन मजीद में सूर: बनी इस्राईल आयत १८, २१ और सूर: बूरा आयत २० में बयान किया गया है।

^२ सभी गुटों से मुराद पूरी धरती पर पाये जाने वाले धर्म हैं, यहूदी, इसाई, आगपूजक, बौद्धधर्म, मूर्तिपूजक, काफिर और दूसरे, जो भी मोहम्मद ﷺ पर और कुरआन पर ईमान नहीं लायेगा, उसका ठिकाना नरक है। यह वही विषय है जिसे इस हदीस में बयान किया गया है - "कसम है उस ताकत की जिसके क्रब्जे में मेरी जान है, इस उम्मत के जिस यहूदी या इसाई ने भी मेरी नुबूत के वारे में सुना और फिर मुझ पर ईमान नहीं लाया, वह नरक में जायेगा।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब वजूबुल ईमान, विरिसालते नबियेना मोहम्मद ﷺ इला जमीइन्नासे) यह विषय इस से पहले सूर: अल-वक्कर: आयत न० ६२ और सूर: निसाअ आयत न० १५० और १५२ में भी गुजर चुका है।

१८. और उससे ज्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाधा, ये लोग अपने रब के सामने पेश किये जायेंगे और सारे गवाह कहेंगे कि ये वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ बाधा, सावधान! अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर।

१९. जो अल्लाह की राह से रोकते हैं और उस में गलती की खोज कर लेते हैं, यही वह लोग हैं जो आखिरत का इन्कार करते हैं।

२०. न ये लोग दुनिया में अल्लाह को हरा सके और न उनका कोई मददगार अल्लाह के सिवाय हुआ, उन के लिये सजा दुगुनी की जायेगी, न ये सुनने की ताकत रखते थे और न ये देखते ही थे।

२१. यही है जिन्होंने अपना नुकसान आप कर लिया और जिन से अपना बाधा हुआ झूठ खो गया।

२२. बेशक यही लोग आखिरत (परलोक) में घाटे में होंगे।

२३. बेशक जो लोग ईमान लाये और उन्होंने काम भी नेकी के किये और अपने रब की तरफ झुकते रहे, वही जन्नत में जाने वाले हैं, जहाँ वे हमेशा रहने वाले हैं।

२४. न दोनों गुटों की मिसाल अंधे-वहरे और देखने-सुनने वाले जैसी है, क्या यह दोनों मिसाल में बराबर हैं? क्या फिर भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते?

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا
أُولَٰئِكَ يَعْرِضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْهَادُ
هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَّبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ إِلَّا لَعْنَةُ
اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ (۱۸)

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا
عِوَجًا وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ (۱۹)

أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا
كَانَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءَ مَرِضَعُفٌ
لَهُمُ الْعَذَابُ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ
وَمَا كَانُوا يَبْصُرُونَ (۲۰)

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَصَلَّ
عَنَّهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ (۲۱)

لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْآخْسَرُونَ (۲۲)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَخْبَتُوا إِلَىٰ
رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا
خَالِدُونَ (۲۳)

مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَصْحَىٰ وَالْبَصِيرَةِ وَالسَّبْعِ
هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا فَلَا تُدْرِكُونَ (۲۴)

हदीस में इस की तफसीर इस तरह आती है कि कयामत (प्रलय) के दिन अल्लाह तआला एक ईमानवाले से उस के गुनाहों को क़ुबूल करायेगा कि तुझे इल्म है कि तूने फ़र्मा गुनाह किया था, फ़र्मा भी किया था, वह ईमानवाला कहेगा हाँ ठीक है। अल्लाह तआला फरमायेगा कि मैंने उन गुनाहों पर दुनिया में भी पर्दा डाल रखा था, जा आज भी उन्हें माफ़ करता हूँ। लेकिन दूसरे लोग या काफ़िरों का मामला ऐसा होगा कि उन्हें गवाहों के सामने पुकारा जायेगा और गवाह यह गवाही देंगे कि यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ बाधा था। (सहीह बुखारी, तफसीर सूः हूद)

२५. और वेशक हम ने नूह (عليه السلام) को उसकी कौम की तरफ रसूल (संदेशवाहक) बना कर भेजा कि मैं तुम्हें वाजेह तौर से वाखबर कर देने वाला हूँ।

२६. कि तुम केवल अल्लाह की इबादत ही किया करो,^१ मुझे तो तुम पर दुखदारी दिन के अजाव का डर है।

२७. तो उसकी कौम के काफ़िरो के मुखियाओं ने जवाब दिया कि हम तो तुम्हें अपनी तरह इंसान ही देखते हैं,^२ और तेरे पैरोकार को भी देखते हैं कि वाजेह तौर से सिवाय नीच लोगों के^३ दूसरा कोई नहीं (जो तुम्हारी इत्तेया कर रहे हैं) हम तो तुम्हारी किसी तरह की फ़ज़ीलत अपने ऊपर नहीं देख रहे, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा समझ रहे हैं।

२८. (नूह ने) कहा, ऐ मेरी कौम वालो! मुझे बताओ तो अगर मैं अपने रव की तरफ से मिली निशानी पर हुआ और मुझे उसने अपने पास की (कोई अच्छी) रहमत अता की हो^४

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِنِّي لَكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٢٥﴾

إِن لَّا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ ۖ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ الْيَوْمِ ﴿٢٦﴾

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ مَا تَرَكُ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا تَرَكُ إِلَّا الَّذِينَ هُمْ أَرَادُوا أَنْ يَبْذُورُوا ۖ وَمَا تَرَىٰ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

قَالَ يَقُولُونَ بَرًّا إِن كُنْتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَأَنْتُمْ رَحِصَةٌ مِّنْ عِنْدِي ۖ فَصَبَّيْتُ عَلَيْكُمْ ۖ وَاللَّيْمُ لَكُمْ وَمَا أَنْتُمْ لَهَا كَاذِبُونَ ﴿٢٨﴾

^१ यह वही तौहीद की दावत है जो हर नबी ने आकर अपनी-अपनी कौम को दिया, जिस तरह कहा :

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رُّسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ﴾

..जो पैगम्बर हम ने आप से पहले भेजे, उनकी तरफ वही (प्रकाशना) की कि मेरे सिवाय कोई मावूद नहीं, वस मेरी ही इबादत करो। (सूर. अल-अम्बिया-२५)

^२ यह वही शक़ है जिसकी तफ़सीर कई जगहों पर की जा चुकी है कि काफ़िरो के नज़दीक इंसानियत के साथ नुबूअत और रिसालत का इकट्ठा होना बड़ा अजीब था, जिस तरह आजकल विदअत करने वालों को भी अजीब लगता है और वे रसूल (ﷺ) के इंसान होने का इंकार करते हैं।

^३ ईमान वाले चूँकि अल्लाह और रसूल के हुक्मों के सामने अपनी अक्ल, इरादे और दलील का इस्तेमाल नहीं करते, इसलिये झूठ के पैरोकार यह समझते हैं कि यह मोटी अक्ल वाले हैं कि अल्लाह का रसूल इन्हें जिस ओर मोड़ देता है ये मुड़ जाते हैं, जिस चीज़ से रोक देता है रुक जाते हैं, यह भी ईमान वालों की बड़ी फ़ज़ीलत है, बल्कि ईमान की ज़रूरी मांग है, मेकिन काफ़िरो और असत्यवादियों (वातिल परस्तों) के नज़दीक यह फ़ज़ीलत भी 'जुर्म' है।

^४ ये सुराद इमान और यकीन है और रहमत से नुबूअत, जिस से अल्लाह तआला ने नूह عليه السلام को विभूषित (सरफ़राज) किया था।

फिर वह तुम्हारी आँखों में न समाई तो क्या जबरदस्ती उसे तुम्हारे गले में डाल दूँ जबकि तुम उसे नहीं चाहते हो।

२९. हे मेरी क़ौम वालो! मैं इसके बदले तुम से कोई धन नहीं माँगता, मेरा बदला तो केवल अल्लाह तआला के पास है, न मैं ईमानवालों को अपने पास से निकाल सकता हूँ। उन्हें अपने रब से मिलना है, लेकिन मैं देखता हूँ कि तुम लोग बेवकूफी कर रहे हो।

३०. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर मैं ईमान वालों को अपने पास से निकाल दूँ, तो अल्लाह के मुकाबले में मेरी मदद कौन कर सकता है, क्या तुम कुछ भी सोच-विचार नहीं करते ?

३१. और मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खजाने हैं, (सुनो) मैं गैब का इल्म भी नहीं रखता, न मैं यह कहता हूँ कि मैं फ़रिस्ता हूँ, न मेरा यह क़ौल है कि जिन पर तुम्हारी निगाह अपमान से पड़ रही है उन्हें अल्लाह (तआला) कोई अच्छी तरह देगा ही नहीं, उन के दिल में जो कुछ है अल्लाह अच्छी तरह जानता है, अगर मैं ऐसा कहूँ तो बेशक मेरी भी गिनती ज़ालिमों में हो जायेगी।

३२. (क़ौम के लोगों ने) कहा : ऐ नूह! तू हम से बहस और बहुत बहस कर चुका, अब तो तू जिस चीज से हमें डरा रहा है, वही हमारे पास ले आ अगर तू सच्चा है।^१

وَيَقُولُوا لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَا لَدَانِ اجْرِي اِلَّا
عَلَى اللّٰهِ وَمَا اَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اِنَّهُمْ
مُّلْكُوْا رَبِّهٖمْ وَلٰكِيْنِ اَرْسَلَكُمْ قَوْمًا يَّجْهَلُوْنَ (۲۹)

وَيَقُوْبُوْا مَنْ يَّضُرُّنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ
اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ (۳۰)

وَلَا اَقُوْلُ لَكُمْ عِشْرِيْنَ خَزَايِنِ اللّٰهِ وَلَا اَعْلَمُ
الْغَيْبِ وَلَا اَقُوْلُ اِنِّيْ مَلَكٌ وَلَا اَقُوْلُ اِنِّيْ نَبِيٌّ
تَزُوْرِيْ اَعْيُنَكُمْ لَنْ يُّوْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا
اِنَّ اللّٰهَ اَعْلَمُ بِمَا فِىْ اَنْفُسِهِمْ اِنِّيْ اِلَّا اِنْسٌ
الطّٰلِيْعِيْنَ (۳۱)

قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جَدَلْتَنَا فَا كَثُرَتْ جِدَالِنَا
فَاِنْتَا يٰسَاقِدٌ اِنْ اَنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (۳۲)

^१ इस से मालूम होता है कि नूह عليه السلام की क़ौम के सरदारों ने भी समाज में कमजोर समझे जाने वाले ईमान वालों को हज़रत नूह से अपनी सभा या अपनी नजदीकी से दूर करने की माँग की होगी, जिस तरह मक्का के सरदारों ने रसूलुल्लाह ﷺ से इस तरह की माँग की थी।

^२ यह वही बेवकूफी है जिस को भटके हुए लोग करते आये हैं कि वे अपने पैगम्बर से कहते रहे अगर तू सच्चा है तो हम पर अज़ाब उतारकर हमें बरबाद करवा दे, अगर उन में अकब्र होती तो वे कहते कि अगर तू सच्चा है और हकीकत में अल्लाह का रसूल है तो हमारे लिये भी दुआ कर कि अल्लाह तआला हमारे दिल भी खोल दे ताकि हम इसे अपना लें।

३३. जवाब दिया कि उसे भी अल्लाह (तआला) ही लायेगा अगर वह चाहे, और हाँ! तुम उसे मजबूर नहीं कर सकते ।

३४. और तुम्हें मेरी नसीहत कुछ भी फायदा नहीं पहुँचा सकती, चाहे मैं जितना ही तुम्हारा खैरख्वाह क्यों न हूँ, अगर अल्लाह की मर्जी तुम्हें भटकाने की हो, वही तुम सब का ख है और उसी की तरफ लौट कर जाओगे ।

३५. क्या ये कहते हैं कि उसे खुद उसी ने गढ़ लिया है? तो जवाब दो कि अगर मैंने उसे गढ़ लिया हो तो मेरा गुनाह मुझ पर है और मैं उन गुनाहों से अलग हूँ जिन को तुम कर रहे हो ।

३६. और नूह की तरफ वहयी (प्रकाशना) भेजी गयी कि तेरी कौम में जो भी ईमान ला चुके उन के सिवाय अब कोई ईमान लायेगा ही नहीं, फिर तो उन के अमलों पर दुखी न हो ।

३७. और एक नाव हमारी आँखों के सामने और हमारी वहयी (प्रकाशना) से तैयार कर, और जालिमों के बारे में हम से कोई बात न कर, वे पानी में डूबो दिये जाने वाले हैं ।^१

قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُمْ بِاللهِ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٣٣﴾

وَلَا يَنْفَعُكُمْ نَصِيحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أُنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٣٤﴾

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَيْ إِجْرَائِي وَأَنَا بِرَبِّي ءِمْتَنٌ تُجْرِمُونَ ﴿٣٥﴾

وَأَوْحِي إِلَى نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

وَأَصْبَحَ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيُنَا وَلَا تُلَاقِيْنَ فِي الْذِّبَيْنِ ظَلْمًا ؕ إِنَّهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٣٧﴾

^१ यानी अजाब का आना पूरी तरह से अल्लाह की मर्जी पर है, यह नहीं कि जब मैं चाहूँ तुम पर अजाब आ जाये, लेकिन जब अल्लाह अजाब का फैसला कर लेगा या भेज देगा तो फिर उस को रोकने वाला कोई नहीं है ।

^२ "हमारी आँखों के सामने" का मतलब है "हमारी देख-भाल में" लेकिन यह आयत अल्लाह तआला के लिये आँख होने के गुण को बताती है जिस पर अदीदा रखना फर्ज है, और "हमारी वहयी (प्रकाशना) से" का मतलब उसकी लम्बाई-चौड़ाई आदि की जो हालत हम ने बतलायी है, उस तरह उसे बना । इस जगह पर कुछ मुफत्सिरो ने नाव की लम्बाई-चौड़ाई, उस के तलों और किस तरह की लकड़ी और दूसरे सामान उस में इस्तेमाल किया गया, उस का तफसीली वयान किया है, जो वाजिह है कि किसी दलील पर आधारित (मवनी) नहीं है । उसका सही तफसीली इल्म सिर्फ अल्लाह ही को है ।

^३ कुछ ने इस से मुराद हजरत नूह के बेटे और वीवी को लिया है, जो ईमान नहीं लाये थे और डूबने वालों में से थे, कुछ ने इस से डूबने वाली पूरी उम्मत लिया है, और मतलब यह है कि इन के लिये मौका देने की मांग न करना क्योंकि अब उन की तवाही का बन्त आ गया है या यह

३८. वह (नूह) नाव बनाने लगे, उसकी क्रौम के जो भी गुट्ट के लोग उस के पास से गुजरते वे उस का मजाक उड़ाते, वह कहते अगर तुम हमारा मजाक उड़ाते हो तो हम भी तुम पर एक दिन हँसेंगे जैसे तुम मजाक कर रहे हो।

३९. तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा कि किस पर अजाब आना है, जो उसे जलील करे और उस पर दायमी अजाब उतर जाये।

४०. यहाँ तक कि जब हमारा हुक्म आ गया और तन्दूर उबलने लगा,^१ हम ने कहा कि इस नाव में हर तरह के जोड़े दोहरे सवार करा ले^२ और अपने घर के लोगों को भी, सिवाय उन के जिन पर पहले से बात पड़ चुकी है, और सभी ईमान वालों को भी, उस के साथ ईमान लाने वाले बहुत ही कम थे।

४१. और नूह ने कहा कि इस नाव में बैठ जाओ अल्लाह ही के नाम से इसका चलना और ठहरना है,^३ बेशक भेरा रब बड़ा बख्शने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।

४२. और वह नाव उन्हें पहाड़ों जैसी लहरों में लेकर जा रही थी,^४ और नूह ने अपने बेटे को

وَيَضَعُ الْمَثَلَاتِ بِحَدِّهَا وَكَلَّمَا مَرْعَاهُ مَلَكًا مِّنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ قَالَ إِنْ تَسْخَرُوا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ﴿٣٨﴾

سَوْفَ نَعْلَمُونَ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٣٩﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنَوُّنُ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ وَمَا آمَنَ مَعَهُ إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٤٠﴾

وَقَالَ ارْكَبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ مَجْرِبَهَا وَمَصْرَبَهَا وَإِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٤١﴾

وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ وَنَادَىٰ

मतलब है कि उन की तवाही के लिये जल्दी न करें, मुकर्रर वक्त में यह सब डूब जायेंगे। (फतहूल क़दीर)

- इस से कुछ ने रोटी पकाने वाला तन्दूर, कुछ ने मुकर्रर मक़ाम जैसे ऐनुलवर्द,^१ और कुछ ने धरती का तल लिया है। हाफिज इब्ने कसीर ने इसी आखिरी मतलब को तरजीह दी है यानी पूरी जमीन चश्मों की तरह उबल पड़ी, ऊपर से आकाश की वर्षा ने बाक़ी बची कमी को पूरा कर दिया।
- इस से मुराद मर्द और औरत यानी नर और मादा है, इस तरह हर जानदार का जोड़ा नाव में रख लिया गया, और कुछ कहते हैं कि पौदे भी रखे गये थे।
- यानी अल्लाह ही के नाम से उस के पानी की सतह पर चलना और उसी के नाम पर रूकना है, इस से एक मक़सद ईमान वालों को तसल्ली देना और हिम्मत देना था कि किसी तरह के डर के बिना नाव में सवार हो जाओ, अल्लाह ही इस नाव का मुहाफिज और रखवाला है, उसी के हुक्म से चलेगी और उसी के हुक्म से ठहरेगी।
- यानी जब धरती पर पानी था, यहाँ तक कि पहाड़ भी डूबे हुए थे, यह नाव हजरत नूह और उन के साथियों को अपने अंदर महफूज लिये अल्लाह के हुक्म से और उस की हिफाजत में पहाड़ की तरह चल रही थी, वरना इतने तूफ़ान वाले पानी में नाव की क्या अहमियत होती है?

जो एक किनारे पर था पुकार कर कहा, ऐ मेरे प्यारे बच्चे! हमारे साथ सवार हो जा और काफिरों में शामिल न रह !

४३. उस ने जवाब दिया कि मैं तो किसी ऊँचे पहाड़ की पनाह में आ जाऊँगा जो मुझे पानी से बचा लेगा, नूह ने कहा आज अल्लाह के हुक्म से बचाने वाला कोई नहीं, वही केवल बचेंगे जिन पर अल्लाह की रहमत हुई, उसी वक्त उन के बीच लहर आ गयी और वह डूबने वालों में हो गया।

४४. और कह दिया गया कि ऐ धरती ! अपने पानी को निगल जा,^१ और ऐ आकाश ! बस कर थम जा, उसी वक्त पानी सूखा दिया गया और काम पूरा कर दिया गया, और नाव जूदी नामक पहाड़^२ पर जा लगी, और कहा गया कि नाइसाफी करने वालों पर धिक्कार (लानत) उतरे।

४५. और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा कि ऐ मेरे रब ! मेरा बेटा तो मेरे घर वालों में से है, बेशक तेरा वादा पूरी तरह से सच्चा है और तू सभी हाकिमों से बेहतर हाकिम है !^३

४६. (अल्लाह तआला ने) फरमाया ऐ नूह! बेशक वह तेरे अहल से नहीं है,^४ उस के काम

نُوحُ ابْنُهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يُبَيِّنُ اذْكَبَ
فَعَمَّا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكٰفِرِيْنَ ④३

قَالَ سَاوِدِيْ اِلَى جَبَلٍ يَّغْشِيْ مِنَ السَّآءِ قَال
لَا عٰصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّجَمَ
وَكَانَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمَرْكُوْبِيْنَ ④४

وَقِيْلَ يَا اَرْضُ اَبْلِيْ مَآءِكَ وَيَسَّآءَ اَقْلِبِيْ
وَعِيْضُ السَّآءِ وَفِيْضِ الْاَمْرِ وَاَسْتَوَتْ عَلَى
الْجُوْدِيْ وَقِيْلَ بَعْدًا لِّلْقَوْمِ الظَّٰلِمِيْنَ ④५

وَنَادٰى نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ مِنْ اَهْلِيْ
وَ اِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ④६

قَالَ يٰ نُوحُ اِنَّ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ اِنَّكَ عَمَلٌ

^१ यह हजरत नूह का चौथा बेटा था, जिस की कुनियत (उपाधि) 'कनुआन' और नाम 'याम' था, उस से हजरत नूह ने इसरार किया कि मुसलमान हो जा और काफिरों के साथ शामिल होकर डूबने वालों में न हो।

^२ निगलने का इस्तेमाल जानवर के लिये होता है कि वह अपने मुँह का कौर निगल जाता है, यहाँ पानी के सूखने को निगल जाने से तुलना करने में इस हिक्मत का इल्म होता है कि पानी धार-धार नहीं सूखा, बल्कि अल्लाह तआला के हुक्म से धरती ने फौरन अपने अंदर सारा पानी इस तरह निगल लिया जिस तरह जानवर कौर निगल जाता है।

^३ जूदी पहाड़ का नाम है, जो कुछ लोगों के कौल के मुताबिक ईराक के नगर मौसिल के करीब है, हजरत नूह की कौम भी इसी के करीब आबाद थी।

^४ हजरत नूह ने शायद अपने बेटे की सुहृद के जन्मे से प्रेरित (बेखुद) होकर अल्लाह के दरबार में दुआ की और कुछ मुफ़सिर कहते हैं कि उन्हें यह उम्मीद थी कि शायद यह मुसलमान हो जायेगा, इसलिये उस के बारे में यह दुआ की।

^५ हजरत नूह ने अपनी खानदानी कुरबत के सबब उसे अपना बेटा कहा था, लेकिन अल्लाह

बिल्कुल नापसंदीदा हैं^१ तुझे कभी भी वह चीज नहीं मांगनी चाहिये जिसका तुझे तनिक भी इल्म न हो,^२ मैं तुझे नसीहत करता हूँ कि तू जाहिलों में से अपनी गिनती कराने से रूक जा।

४७. (नूह ने) कहा ऐ मेरे रब ! मैं तेरी ही पनाह चाहता हूँ, इस बात से कि तुझ से वह माँग जिसका मुझे इल्म ही न हो, अगर तू मुझे माफ़ नहीं करेगा और तू मुझ पर रहम न करेगा तो मैं घाटा उठाने वालों में हो जाऊँगा ।

४८. कहा गया कि हे नूह ! हमारी तरफ से सलामती और उन बरकतों के साथ उतर जो तुझ पर है और तेरे साथ की बहुत सी उम्मतों पर, और बहुत सी वह उम्मत होंगी जिन्हें हम लाभ तो जरूर पहुँचायेंगे, लेकिन फिर उन्हें हमारी तरफ से दुखदायी अज्ञाव भी पहुँचेगा ।

४९. यह खबर गैब की खबरों में से है जिनकी बह्यी (प्रकाशना) हम आप की तरफ करते हैं, इन्हें इस से पहले न आप जानते थे और न आप की क़ौम, इसलिये आप सब्र करें, यकीन कीजिये कि नतीजा परहेजगारों के लिये ही है ।

عَبْرَ صَالِحٍ دَقَلَا تَسْأَلُنَ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ
إِنِّي أَعْطِكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْخٰلِفِينَ ﴿٤٧﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ
لِي بِهِ عِلْمٌ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَرَحْمَتِي أَكُنَّ
مِنَ الْخٰسِرِينَ ﴿٤٨﴾

قِيلَ يَا نُوحُ اهْبِطْ بِسَلَامٍ مِنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ
وَ عَلَىٰ أُمَّةٍ مِّمَّنْ مَعَكَ وَأُمَّةٍ سَنَسْتَبْتَهُمْ ثُمَّ
يَسْتَهْمُونَ مِنَّا عَذَابَ آلِيمٍ ﴿٤٩﴾

بِتِلْكَ مِنَ الْاَنْبِيَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهَا إِلَيْكَ مَا كُنْتَ
تَعْلَمُهَا أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا
فَاصْبِرْ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٥٠﴾

तआला ने ईमान की दुनियाद पर दीन की नजदीकी के क़ानून के मुताबिक इस बात को नकारा कि वह तेरे अहल से है, इसलिए कि एक नबी का असल परिवार तो वही है जो उस पर ईमान लाये, चाहे वह कोई भी हो, और अगर ईमान न लाये, तो चाहे वह नबी का बाप हो, बेटा हो या पत्नी, वह नबी के परिवार का सदस्य नहीं ।

^१ यह अल्लाह तआला ने उसके सबब का वयान किया है, इस से मालूम हुआ कि जिस के पास ईमान और नेक अमल नहीं होगा, उसे अल्लाह के अज्ञाव से अल्लाह का पैग़म्बर भी बचाने की ताकत नहीं रखता ! आजकल लोग पीरों, फ़कीरों और ग़री नशीनों (पुजारियों) से सम्बन्ध (तआल्लुक) होने को ही नज़ात के लिये काफ़ी मानते हैं और नेक काम करने की ज़रूरत नहीं समझते, जबकि नेकी के काम के बिना नबी के साथ खानदानी रिश्ता भी काम नहीं आता तो ये सम्बन्ध क्या काम आयेंगे ?

^२ इस से मालूम हुआ कि नबी को गैब का इल्म नहीं होता, उसको उतना ही इल्म होता है, जितना बह्यी (प्रकाशना) के जरिये अल्लाह तआला उसे अता करता है, अगर हज़रत नूह को पहले इल्म होता कि उनकी दुआ कुबूल न होगी, तो शैक वह उस से बचते ।

५०. और आद क्रौम की तरफ उन के भाई हूद को हम ने भेजा, उस ने कहा मेरी क्रौम के लोगो! अल्लाह ही की इबादत करो, उस के सिवाय कोई भाबूद नहीं, तुम तो सिर्फ बुहतान लगा रहे हो।

५१. मेरी क्रौम के लोगो! मैं तुम से इस की कोई उजरत नहीं मांगता, मेरा बदला उस के ऊपर है जिस ने मुझे पैदा किया है, तो क्या फिर भी तुम अक्ल से काम नहीं लेते।

५२. और हे मेरी क्रौम के लोगो! तुम अपने रब से अपने गुनाहों की माफी मांगो और उस के दरबार में तौबा करो ताकि वह वर्षा वाले बादल तुम पर भेज दे, और तुम्हारी ताकत में और इजाफा करे, और तुम गुनहगार होकर मुंह न मोड़ो।

५३. उन्होंने कहा हे हूद! तू हमारे पास कोई दलील तो लाया नहीं और हम केवल तेरे कहने से अपने देवताओं को छोड़ने वाले नहीं और न हम तुझ पर ईमान लाने वाले हैं।

५४. बल्कि हम तो यही कहते हैं कि तू हमारे किसी देवता के बुरे झपेटे में आ गया है, उस ने जवाब दिया कि मैं अल्लाह को गवाह बनाता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं तो अल्लाह के सिवाय उन सब से अलग हूँ, जिन्हें तुम साझीदार बना रहे हो।

५५. अच्छा तुम सब मिल कर मेरे खिलाफ बुराई कर लो और मुझे कभी भी मौक़ा न दो।

५६. मेरा भरोसा केवल अल्लाह तआला पर ही है, जो मेरा रब और तुम सब का रब है, जितने भी चलने-फिरने वाले हैं सबका मस्तक (पेशानी) वही थामे हुए है, बेशक मेरा रब बिल्कुल सीधे रास्ते पर है।

وَالِي عَادٍ أَخَاهُمْ هُودًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ إِنَّكُمْ لَأَعْمَقُونَ ﴿٥٠﴾

يَقَوْمِ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى الَّذِي فَطَرَنِي أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٥١﴾

وَيَقَوْمِ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيَّ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا وَيَزِدْكُمْ قُوَّةً إِلَى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَكَّلُوا مُجْرِمِينَ ﴿٥٢﴾

قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٥٣﴾

إِنْ نَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ مَا قَانَ إِلَهِي أَشْهَدُ اللَّهُ وَأَشْهَدُ وَأَنِّي بَرِيءٌ مِمَّا تُشْرِكُونَ ﴿٥٤﴾

مِنْ دُونِهِ فَلَئِمْتُمُ جَيْمًا ثُمَّ لَا تُنظِرُونَ ﴿٥٥﴾

إِنِّي تَوَكَّلْتُ عَلَى اللَّهِ رَبِّي وَرَبِّكُمْ مَا مِنْ دَابَّةٍ إِلَّا هُوَ آخِذٌ بِعُنُقِهَا إِنْ رَفَعْتَ يَدَيْكَ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٦﴾

५७. फिर भी तुम मुंह फेरते हो तो फेरो, मैं तो तुम्हें वह पैगाम पहुँचा चुका जो देकर मुझे तुम्हारी तरफ भेजा गया था, मेरा रब तुम्हारी जगह पर दूसरे लोगों को कर देगा और तुम उसका कुछ भी न बिगाड़ सकोगे, बेशक मेरा रब हर चीज का मुहाफिज है।

५८. और जब हमारा हुकम आ पहुँचा तो हम ने हूद को और उसके मुसलमान साथियों को अपनी खास रहमत से नजात अता की, और हम ने उन सब को घोर (सख्त) अजाब से बचा लिया।¹

५९. यह धी आद की क्रौम, जिन्होंने अपने रब की आयतों को नकार दिया और उस के रसूलों की नाफरमानी की² और हर सरकार नाफरमान के हुकमों का पालन किया।

६०. और दुनिया में भी उन के पीछे धिक्कार (लानत) लगा दी गई और क्रयामत (प्रलय) के दिन भी,³ देख लो आद की क्रौम ने अपने रब से कुफ्र (इंकार) किया, हूद की क्रौम आद पर लानत हो।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ
وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ
شَيْئًا ط إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٥٧﴾

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَكَتَبْنَا لَهُمْ مِنْ عَدَابِ غَلِيظٍ ﴿٥٨﴾

وَتِلْكَ عَلَيْنَا مَجْزَأُ الْيَائِسِينَ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَنَا
وَاتَّبَعُوا أَمْرًا كُفْرًا بِنَاءِ عَيْنِينَ ﴿٥٩﴾

وَاتَّبِعُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ
إِلَّا إِنْ عَادُوا لِقَوْمِهِمْ وَالْآبَعْدَ الْعَادِ
قَوْمُهُمْ ﴿٦٠﴾

¹ सख्त अजाब से मुराद वही तेज हवा का अजाब है, जिस के जरिये हजरत हूद की क्रौम 'आद' को तवाह कर दिया गया और जिम से हजरत हूद और उन पर ईमान लाने वालों को बचा लिया गया।

² 'आद' की ओर केवल एक नबी हजरत हूद ही भेजे गये थे, लेकिन यहाँ अल्लाह तआला ने फरमाया कि उन्होंने रसूलों की नाफरमानी की। इस से या तो यह मतलब हो कि एक रसूल को झुठलाना यह हुआ जैसे कि सभी को झुठलाया है, क्योंकि सभी रसूलों पर ईमान लाना फर्ज है या यह मतलब है कि यह समाज अपने कुफ्र और इंकार में इतनी बढ़ गयी थी कि अगर हजरत हूद के बाद कई रसूल भी भेजते तो यह समुदाय (क्रौम) सब को झुठलाता और इस से कभी यह उम्मीद नहीं थी कि वह किसी भी रसूल पर ईमान ले आता, या मुमकिन है कि और भी नबी भेजे गये हों और उस समुदाय ने हर एक को झुठलाया हो।

³ लानत का मतलब है अल्लाह की रहमत से दूरी, नेकी के कामों से महरूम और लोगों की तरफ से लानत और विलगाव (मलामत), दुनिया में यह लानत इस तरह कि ईमानवालों में इन का बयान हमेशा लानत और विलगाव के रूप में होगा और क्रयामत में इस तरह कि वहाँ सभी के सामने जिल्लत और हसबाई का सामना करेंगे और अल्लाह के अजाब में फसंगे।

६१. और समूद की कौम की तरफ उनके भाई सालेह को भेजा, उस ने कहा कि हे मेरी कौम के लोगो! तुम अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, उसी ने तुम्हें धरती से पैदा किया है, और उसी ने तुम्हें इस धरती पर बसाया है, इसलिए तुम उस से माफी मांगो और उस की तरफ तौबा करो, बेशक मेरा रब तौबा को कुबूल करने वाला निकट है।

६२. उन्होंने कहा ऐ सालेह! इस से पहले हम तुम से बहुत-सी उम्मीदें लगाये हुए थे, क्या तू हमें उनकी इबादत से रोकता है, जिनकी पूजा-अर्चना (इबादत) हमारे बाप-दादा करते चले आये, हमें तो इस दीन में शक है, जिस की तरफ तू हमें बुला रहा है।^१

६३. उस ने जवाब दिया कि हे मेरी कौम के लोगो! जरा बताओ तो अगर मैं अपने रब की तरफ से किसी खास दलील पर हुआ और उस ने मुझे अपने पास से रहमत अता की हो, फिर अगर मैंने उस की नाफरमानी की तो कौन है जो उस के सामने मेरी मदद करे? तुम तो मेरे नुकसान ही में इजाफा कर रहे हो।

وَأِلَىٰ نُوْحٍ أَخَاهُمْ ضَلِيْحًا قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا
اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنَ الْاِلٰهِ غَيْرُهُ هُوَ الَّذِيْ
اَنْشَأَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تَوْبُوا
اِلَيْهِ ۗ اِنَّ رَبِّيْ قَوِيْبٌ مُّجِيْبٌ ﴿٦١﴾

قَالُوْا يٰضَلِيْحُ قَدْ كُنْتَ فِتْنًا مَّرْجُوْمًا قَبْلَ هٰذَا
اَتْنَهْنٰ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَاؤُنَا وَاَنْتَا لِنٰفِي
شَيْءٍ وَمَا تَدْعُوْنَا اِلَيْهِ مُّرِيْبٌ ﴿٦٢﴾

قَالَ يٰقَوْمِ اَرءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰٓىٰ بَيِّنَةٍ مِّنْ رَبِّيْ
وَاسْتَفِيْتُ مِنْهُ رَحْمَةً مِّنْ يَّبْسُوْرِيْ مِنَ اللّٰهِ
اِنْ عَصَيْتُمْ اَسْمًا تَزِيْرُ وَاَنْتُمْ غَيْرَ تَخْسِرِيْنَ ﴿٦٣﴾

^१ यानी शुरू में तुम्हें धरती से पैदा किया, वह इस तरह कि तुम्हारे बाप आदम की पैदाईश मिट्टी से हुई और सभी इंसान आदम के वंश में पैदा हुए, इस तरह सभी इंसानों की पैदाईश धरती से हुई, या इस का मतलब है कि तुम जो कुछ खाते-पीते हो सब धरती से पैदा होता है और उसी खुराक से बिर्य (मनी) बनता है, जो माँ के गर्भाशय (रिहम) में जाकर इंसान के वजूद का सबब बनता है।

^२ यानी पैगम्बर अपनी कौम में चूँकि किरदार, अखलाक, इंसान और सच्चाई में बेहतर होता है, इसलिये कौम की उस से अच्छी उम्मीदें बाबस्ता होती हैं, इसी सबब हजरत सालेह की कौम ने भी उन से यह कहा, लेकिन तौहीद की दावत देते ही उन की उम्मीदों का यह केन्द्र (मरकज) उनकी आँखों का काँटा बन गया और उस दीन में शक का इजहार किया जिसकी तरफ हजरत सालेह उन्हें बुला रहे थे, यानी दीन तौहीद का।

६४. और ऐ मेरी कौम वालो! यह अल्लाह की भेजी हुई ऊँटनी है, जो तुम्हारे लिये एक मोजिजा है, अब तुम इसे अल्लाह की धरती पर खाती हुई छोड़ दो और उसे किसी तरह की तकलीफ न पहुँचाओ, वरना जल्द ही तुम्हें अजायब पकड़ लेगा!

६५. फिर भी उन लोगों ने उस ऊँटनी के पैर काट कर (मार डाला), इस पर सालेह ने कहा कि अच्छा तो तुम अपने घरों में तीन दिन तक रह लो, यह वादा झूठा नहीं है।

६६. फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा, हम ने सालेह और उन पर ईमान लाने वालों को अपनी रहमत से उस से भी बचा लिया और उस दिन के अपमान से भी, बेशक तुम्हारा रब ताकत वाला और जबरदस्त है।

६७. और जालिमों को बड़ी तेज कड़क ने आ दबोचा, फिर तो वह अपने घरों में मुँह के बल मरे पड़े हुए रह गये।

६८. इस तरह कि जैसे वे वहाँ कभी आबाद न थे होशियार रहो कि समूद की कौम ने अपने रब से कुफ्र किया, सुन लो! उन समूद वालों पर लानत है।

६९. और हमारे भेजे हुए रसूल इब्राहीम के पास खुशखबरी लेकर पहुँचे और सलाम कहा

وَيَقُولُ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ فَمَذَرُوهَا
تَأْكُلُ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَسْمُوها بِسُوءِ
فِيأَخُذْكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ﴿٦٤﴾

فَعَقَرُوهَا فَقَالَ لَمِئْتُوا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ
أَيَّامٍ فِي ذَلِكَ وَعَدَّ غَيْرُكُمْ ذُؤُوبٍ ﴿٦٥﴾

فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا لَنَجِّنَا طَالِبًا وَالَّذِينَ آمَنُوا
مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِن خِزْيِ يَوْمِئِذٍ
إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿٦٦﴾

وَآخُذَ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ فَأَمْضَوْا
فِي دِيَارِهِمْ جِثِيئِينَ ﴿٦٧﴾

كَانَ لَمِئْتُوا فِيهَا إِلَّا إِنَّ لَمُودًا
كَفَرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا بَعْضًا لِّلْمُودِ ﴿٦٨﴾

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبَشْرَى

¹ यह वही ऊँटनी है जो अल्लाह तआला ने उन की माँग पर उनकी आँखों के सामने एक पहाड़ या चट्टान से निकाली, इसीलिये उसे 'अल्लाह की ऊँटनी' कहा गया है, क्योंकि वह सिर्फ अल्लाह के हुक्म से चमत्कारिक (मोजिजाना) रूप से खिलाफ आदत जाहिर हुई थी, उस के लिये उन्हें कह दिया गया था कि इसे तकलीफ न पहुँचाओ, वरना तुम अल्लाह के अजायब की पकड़ में आ जाओगे।

² यह हकीकत में हजरत लूत और उनकी कौम की घटना का एक हिस्सा है, हजरत लूत, हजरत इब्राहीम के चाचा के बेटे थे, हजरत लूत की बस्ती 'मृत्यु सागर' के दक्षिण-पूर्व में थी, जबकि हजरत इब्राहीम عليه السلام फिलिस्तीन में निवास कर रहे थे, जब हजरत लूत की कौम को खत्म करने का फैसला कर लिया गया तो उनकी तरफ फरिश्ते भेजे गये, ये फरिश्ते लूत की कौम की तरफ जाते वक़्त रास्ते में हजरत इब्राहीम عليه السلام के पास ठहरे और उन्हें पुत्र की खुशखबरी दी।

उन्होंने भी सलाम का जवाब दिया और बिना किसी ताखीर के गाय का भूना हुआ बच्चा ले आये ।¹

७०. अब जो देखा कि उन के तो हाथ भी उसकी तरफ नहीं पहुँच रहे, तो उन्हें अंजान पाकर दिल ही दिल में उन से खौफजदा होने लगे² उन्होंने कहा डरो नहीं, हम तो लूत की कौम की तरफ भेजे हुए आये हैं ।

७१. और उसकी बीबी जो खड़ी हुई थी वह हंस दी³ तो हम ने उसे इसहाक की और उस के वाद याकूब की खुशखबरी दी ।

७२. वह कहने लगी आह वदनतीबी! मेरे यहाँ औलाद हो सकती है, मैं खुद बुढ़िया और मेरे शौहर भी बड़ी उम्र के हैं, यह बेशक बड़ी ताज्जुब की बात है ।⁴

قَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَّمَ ۗ فَمَا كَيْتَ اَنْ
جَاءَ بِمِجَلِّ حَنِينٍ ﴿٦٩﴾

فَلَمَّا رَاَ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِمْ نَكَوْهُمُ وَاَوْجَسَ
مِنْهُمْ خِيفَةً ۗ وَقَالُوا لَا تَخَفْ ۗ اِنَّا اَرْسَلْنَا اِلَى
قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٠﴾

وَاَمْرَاَتُهُ قَائِمَةً فَاصْبَحَتْ فَتَنَ رَهْمَا
بِاسْتِغْنَى وَاَمِنْ وَاَرَاءِ اسْتِغْنَى يَعْقُوبَ ﴿٧١﴾

قَالَتْ يَوَيْلَىٰٓ اٰءَالِى وَاَنَا عَجُوزٌ وَّهٰذَا
بَعْلِ شَيْخًا ۗ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ﴿٧٢﴾

¹ हजरत इब्राहीम मेहमानो का बहुत सत्कार (मेहमानी) करते थे, वह यह नहीं समझ सके कि यह फरिश्ते हैं जो इंसान की शकल में आये हैं और खाते-पीते नहीं हैं बल्कि उन्होंने उन्हें मेहमान समझा और फौरन मेहमानों की सेवा-सत्कार के लिये बछड़े का भुना हुआ गोश्त उन की सेवा में प्रस्तुत (पेश) किया, इस से यह भी पता चलता है कि मेहमानों से पूछने की जरूरत नहीं बल्कि जो मिले खिदमत में पेश कर दिया जाये ।

² हजरत इब्राहीम ने जब देखा कि उन के हाथ खाने की चीजों की तरफ नहीं बढ़ रहे हैं तो उन्हें डर महसूस हुआ, कहते हैं कि उन के यहाँ यह बात भयंकर थी कि आया हुआ मेहमान अगर खाने का फायदा न उठाये तो समझा जाता था कि आने वाला मेहमान अच्छे इरादे से नहीं आया है, इस से यह भी मालूम हुआ कि अल्लाह के पैगम्बरों को गैब का इल्म नहीं होता, अगर इब्राहीम عليه السلام गैब के जानने वाले होते तो बछड़े का भुना हुआ गोश्त भी न लाते और उन से डरते भी नहीं ।

³ हजरत इब्राहीम की बीबी क्यों हंसी ? कुछ लोग कहते हैं कि लूत की कौम के फसाद से वह भी अवगत थी, उन की तवाही की खबर पाकर वह भी खुश हुई । कुछ कहते हैं कि इसलिये हंसी आयी कि देखो आकाश से उन की तवाही का फ़ैसला हो चुका है और यह कौम अब भी बेफिक्र है, और कुछ कहते हैं कि इस हँसने का सम्बन्ध उस खुशखबरी से है जो फरिश्तों ने इस बूढ़े जोड़े को दी ।

⁴ यह बीबी हजरत सारह थी, जो खुद भी बूढ़ी थी और उनके शौहर हजरत इब्राहीम भी बूढ़े थे, इसलिये ताज्जुब एक आम बात थी, जिसे उन्होंने जाहिर किया ।

७३. (फरिश्तों ने) कहा कि क्या तू अल्लाह की क्रुदरत से ताज्जुब कर रही है, तुम पर हे इस घर के लोगो! अल्लाह की रहमत और उस की बरकतें उतरे, 'बेशक अल्लाह ही के लिये सारी हम्द और शान है।

७४. जब इब्राहीम का डर खत्म हो गया और उसे खुशखबरी भी पहुँच चुकी तो हम से लूत की कौम के बारे में कहने सुनने लगे।²

७५. बेशक इब्राहीम बहुत साविर और नरम दिल और अल्लाह की तरफ झुकने वाले थे।

७६. हे इब्राहीम! इस इरादे को छोड़ दो, आप के रब का हुक्म आ पहुँचा है, और उन पर न लौटाये जाने वाले अजाब जरूर आने वाले हैं।

७७. और जब हमारे भेजे हुए फरिश्ते लूत के पास पहुँचे तो वह उन के सबब बहुत दुखी हो गये, और दिल ही दिल में दुखी होने लगे और कहने लगे कि आज का दिन बहुत दुखों का दिन है।

७८. और उसकी कौम उस की तरफ दौड़ती हुई आई, वह तो पहले ही से बुराईयों में लीन थी, (लूत ने) कहा कि ऐ मेरी कौम के लोगो! ये है मेरी बेटियाँ जो तुम्हारे लिये बहुत पाक है, अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के बारे में रुस्वा न करो, क्या तुम में एक भी भला आदमी नहीं है।

قَالُوا اتَّخَذَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ حَسْبًا اللَّهُ وَيُرَكَّبُ عَلَيْكُمْ آفَلِ الْبَيْتِ مِرَاتَةً حَيْدًا حَيْدًا ﴿٧٣﴾

قَلْبًا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ

الْبَشْرَى يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ ﴿٧٤﴾

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ﴿٧٥﴾

يَا إِبْرَاهِيمُ أَعْرِضْ عَنْ هَذَا إِنَّهُ قَدْ جَاءَ أَمْرُ رَبِّكَ وَأَنْتُمْ أَنْتِبَهُمْ عَدَاوَةً غَيْرَ مَرْدُودَةٍ ﴿٧٦﴾

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئًا بِهِمْ وَضَآئٍ

بِهِمْ ذُرْعًا وَقَالَ هَذَا يَوْمٌ عَصِيبٌ ﴿٧٧﴾

وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ وَمِنْ قَبْلِ كَانُوا

يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ ۖ قَالَ يَقَوْمِ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي

هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزَوْنِ فِي

صَفِيِّ الْبَيْتِ وَمَنْكُمْ جُلٌّ رَشِيدٌ ﴿٧٨﴾

¹ हजरत इब्राहीम की बीबी को यहाँ पर फरिश्तों ने اهل بیت (अहले बैत) (घर वाले) कहा है और उन्हें बहुवचन (जमा) عَلَیْكُمْ से मुख़ातब किया है, जिस से एक बात तो यह साबित हो गई कि 'अहले बैत' में किसी भी इंसान की बीबी सब से पहले शामिल होती है, दूसरी यह कि अहले बैत के लिए बहुवचन का इस्तेमाल करना भी जायेज है! जैसाकि सूर: अहजाब आयत नं- ३३ में अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह ﷺ की पाकीजा बीबियों को भी अहले बैत कहा है और उन्हें पुरुषवाचक बहुवचन सर्वनाम (जमा-मुजक्कर) से खिताब भी किया है।

² इस बातचीत से मुराद यह है कि हजरत इब्राहीम ने फरिश्तों से कहा कि जिस बस्ती को तबाह करने तुम जा रहे हो उसी में हजरत लूत भी मौजूद हैं, जिस पर फरिश्तों ने जवाब दिया 'हम जानते हैं कि लूत भी वही रहते हैं, लेकिन हम उन को और उन के परिवार को सिबाय उन की बीबी के बचा लेंगे।' (सूर: अल-अनकबूत, ३२)

७९. उन्होंने जवाब दिया कि तू अच्छी तरह जानता है कि हमें तो तेरी बेटियों पर कोई हक ही नहीं और तू हमारी असल मज्जी से अच्छी तरह वाकिफ है।

८०. (लूत ने) कहा कि काश कि मुझ में तुम से लड़ने की ताकत होती या मैं किसी मजबूत पनाह में होता।

८१. अब (फरिस्तों ने) कहा हे लूत! हम तेरे रब के भेजे हुए हैं, नामुमकिन है ये कि तुझ तक पहुँच जायें, बस तू अपने घरवालों को लेकर कुछ रात रहते निकल खड़ा हो, तुम में से किसी को मुड़ कर भी नहीं देखना चाहिये, सिवाय तेरी बीबी के, इसलिये कि उसे भी वही पहुँचने वाला है जो सब को पहुँचेगा, वेशक उनके वादे का वज़त सुवह का है, क्या सुवह विल्कुल करीब नहीं?

८२. फिर जब हमारा आदेश आ पहुँचा, हम ने उस बस्ती को उलट-पलट कर दिया, ऊपर का हिस्सा नीचे कर दिया और उन पर कंकड़ीले पत्थरों की बारिश की जो तह पर तह थे।

८३. तेरे रब की तरफ से चिन्हित (निशानजदा) थे और वे उन ज़ालिमों से ज़रा भी दूर न थे।

८४. और (हम ने) मदयन वालों की तरफ उन के भाई शुरैब को (भेजा) उस ने कहा हे मेरी क़ौम के लोगों! अल्लाह की इबादत करो उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, और तुम नाप-तौल में भी कमी न करो, मैं तुम्हें खुशहाल देख रहा हूँ, और मुझे तुम पर घेरने वाले दिन के अज़ाब का डर भी है।

قَالُوا لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا لَكُنَّا فِي بَنَاتِكُمْ مِنْ حَيٍّ
وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا تُرِيدُ ﴿٧٩﴾

قَالَ لَوْ أَنَّ فِي يَدِكُمْ قُوَّةٌ أَوْ أَمْرٌ إِلَى
رُبِّكُمْ شَدِيدٌ ﴿٨٠﴾

قَالُوا يَا لَوُطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَصِلُوا
إِلَيْكَ نَأْسِرُ بَأَهْلِكَ يَقْطَعُ مِنَ الْبَيْتِ
وَلَا يَلْتَفِتُ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا أَمْرَاتُكَ
إِنَّهُ مُصِيبُهُمَا مَا أَصَابَهُمْ وَإِنْ مَوْعِدُهُمْ
الصُّبْحُ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ﴿٨١﴾

لَقَدْ جَاءَ أَمْرُنَا جَمَلْنَا عَلَىٰهَا سَائِلَهَا وَأَمْطَرْنَا
عَلَيْهَا حِجَارَةً مِنْ سِجِّيلٍ مَنصُوبٍ ﴿٨٢﴾

فَسَوْمَةٌ عِنْدَ رَبِّكَ ۖ وَمَا هِيَ مِنَ
الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ﴿٨٣﴾

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ قَالَ يَبْعُورُ
اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ ۖ وَلَا
تَتَّبِعُوا السُّبُلَ السُّبُلَ وَالْهَيْزَانَ ۖ إِنِّي أَرَأَيْتُمْ بِخَيْرٍ
وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّوجِبٍ ﴿٨٤﴾

1 तौहीद की दावत देने के बाद उस क़ौम में जो खुली चारित्रिक (अखलाकी) खराबी नाप-तौल में कमी की थी उस से उन्हें रोका। उन का यह अखलाक था कि अगर कोई उन के पास कोई चीज़ बेचने के लिये आता तो उस से ज्यादा चीज़ ले लेते और अगर कोई ग्राहक खरीदने आता तो उस से नाप-तौल में कमी करते।

८५. ऐ मेरी कौम के लोगो! नाप-तौल इंसाफ से पूरा-पूरा करो, लोगों को उनकी चीजें कम न दो, और जमीन में फसाद और खराबी न मचाओ।

८६. अल्लाह तआला का हलाल किया हुआ बाकी फायेदा तुम्हारे लिये बहुत ही अच्छा है अगर तुम ईमानदार हो^१ मैं कोई तुम्हारा निगरा (और हकदार) नहीं हूँ।

८७. उन्होंने जवाब दिया कि हे शूऐब! क्या तेरी सलात^२ तुझे यही हुक्म देती है कि हम अपने युजुर्गों के देवताओं को छोड़ दें और हम अपने माल में जो कुछ करना चाहे उस का करना भी छोड़ दें, तू तो बड़ा समझदार और नेक चलन है।

८८. कहा कि ऐ मेरी कौम! देखो तो अगर मैं अपने रब की तरफ से खुला सुबूत लिए हुए हूँ और उस ने अपने पास से अच्छी रोजी दे रखी है, मेरी कभी यह मर्जी नहीं कि तुम्हारा खिलाफ करके खुद उस चीज की तरफ झुक जाऊँ जिस से तुम्हें रोक रहा हूँ, मेरा इरादा तो अपनी ताकत भर सुधार करने का ही है, और मेरी तौफ़ीक अल्लाह ही की मदद से है, उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की तरफ मैं आकर्षित हूँ।

८९. और ऐ मेरी कौम (के लोगो)! कहीं ऐसा न हो कि तुम मेरे विरोध में आकर उन अजाबों के पात्र (मुस्तहिक) हो जाओ जो नूह की कौम और हूद की कौम और सालेह की कौम को आयी^३ और लूट की कौम तो तुम से जरा भी दूर नहीं।

وَيَقْوِمُوا أَوْقُوا الْهَيْكَالَ وَالْهَيْزَانَ بِالْقِسْطِ
وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْبُوا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٨٥﴾

يَقِيَّتُ اللَّهُ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ۗ
وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ﴿٨٦﴾

قَالُوا لَيْسَ عَلَيْكَ أَسْرَارٌ أَنْ نَبْرَأَ
مَا يَشَاءُ أِبَائِنَا أَوْ أَنْ نَفْعَلَ فِي أَمْوَالِنَا
مَا نَشَاءُ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ﴿٨٧﴾

قَالَ يَقْوِمُوا زَادَ عَلَيْكُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَىٰ يَدَيْهِمْ مِنْ رَدِّي
وَرَزَقْتُمْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۗ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَمْلِكَ لَكُمْ
إِلَّا مَا أَنهَضَكُمْ عَنْهُ ۗ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ
مَا اسْتَطَعْتُ ۗ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ وَاللَّهُ أُنِيبٌ ﴿٨٨﴾

وَيَقْوِمُوا لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِثْلُ
مَا أَصَابَ قَوْمَ نُوحٍ أَوْ قَوْمَ هُودٍ أَوْ قَوْمَ طَلُوتَ ۗ
وَمَا قَوْمٌ لَوْظٌ فَتُنَكَّرُ مِنْكُمْ إِلَّا لَبِئْسَ مَا
كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٨٩﴾

^१ से मुराद वह फायेदा है जो नाप-तौल में किसी तरह की कमी किये बिना ईमानदारी के साथ सौदा देने के बाद हासिल होता है, यह चीक हलाल और पाक है और अजब व सवाब भी इसी में है, इसलिये अल्लाह का वाकी कहा गया है।

^२ से मुराद इबादत, धर्म या कुरआन पढ़ना है।

^३ यानी उन का मकाम तुम से दूर नहीं, या उस सबब मैं तुम से दूर नहीं, जो उन के ऊपर अजाब का सवय बना।

९०. और तुम अपने रब से मगफिरत तलब करो और उसकी तरफ झुक जाओ, यकीन करो कि मेरा रब बहुत रहम और बहुत प्रेम करने वाला है।

९१. उन्होंने कहा हे शूऐब! तेरी ज्यादातर बातें हमारी समझ में नहीं आती, और हम तो तुझे अपने अंदर बहुत कमजोर पाते हैं, अगर तेरे कबीले का आदर न होता तो हम तो तुझे पथराव कर देते, और हम तुझे कोई बाइज्जत इंसान नहीं समझते।

९२. उन्होंने जवाब दिया कि हे मेरी कौम के लोगो! क्या तुम्हारे नजदीक मेरे कबीले के लोग अल्लाह से भी ज्यादा बाइज्जत हैं कि तुम ने उसे पीठ के पीछे डाल दिया है, बेशक मेरा रब जो कुछ तुम कर रहे हो सब को घेरे हुए है।

९३. और ऐ मेरी कौम के लोगो! अब तुम अपनी जगह पर काम किये जाओ, मैं भी काम कर रहा हूँ, तुम्हें अनकरीब मालूम हो जायेगा कि किस के पास वह अजाब आता है जो उसे अपमानित (जलील) कर दे और कौन है जो झूठा है? तुम इंतजार करो और मैं भी तुम्हारे साथ इंतजार कर रहा हूँ।

९४. और जब हमारा हुकम (अजाब) आ पहुँचा, हमने शूऐब को और उनके साथ सभी ईमानवालों को अपनी खास रहमत से नजात अता की और जालिमों को कड़ी चिंघाड़ के अजाब ने आ दबोचा,^१ जिस से वह अपने घरों में औंधे पड़े हुए बाकी रह गये।

وَاسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ
وَدُودٌ ⑨०

قَالُوا يُشْعَبُ مَا نَفَقَهُ كَثِيرًا وَمِمَّا تَقُولُ
وَأِنَّا لَنَرَاكَ فِينَا ضَعِيفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْمُكَ
لَرَجَمْنَاكَ ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ⑨१

قَالَ يَقَوْمِ أَرْهَفِي أَعْرُ عَلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ
وَأَتَّخَذْتُمُوهُ وِرَاءَ كُمُ ظَهْرِي ۚ إِنَّ رَبِّي
بِمَا تَصْمَلُونَ مَحِيطٌ ⑨२

وَيَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ ۖ وَسَوْفَ
تَعْلَمُونَ ۗ مَن يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُعْزِيهِ وَمَن
هُوَ كَاذِبٌ ۚ وَأَرْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ⑨३

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
بِرَحْمَةٍ مِنَّا ۚ وَآخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةَ
فَأَصْبَحُوا فِي وِجَاهِهِمْ خُسُفًا ⑨४

^१ हजरत शूऐब का वंश कहा जाता है कि उनका मददगार नहीं था, लेकिन वह कबीला कुफ्र (अधर्म) और शिर्क में अपनी कौम के साथ था, इसलिये अपना सहधर्मी (हम मजहब) होने के सबब उस जाति का एहतेराम, इसलिए हजरत शूऐब के साथ कड़ा अखलाक और उन्हें नुकसान पहुँचाने में रुकावट था।

^२ इसी चिंघाड़-चिंघाड़ से उन के दिल टुकड़े-टुकड़े हो गये और वे मर गये, उस के बाद भूकम्प (जलजला) भी आया, जैसाकि सूर: आराफ-११ और सूर: अनकवत-३७ में है।

१५. जैसेकि वह उन घरों में कभी बसे ही न थे, होशियार रहो, मदन के लिये भी वैसी ही दूरी हो जैसी दूरी समुद्र की हुई।

१६. और बेशक हम ने ही मूसा को अपनी आयतों और रौबन दलीलों के साथ भेजा था।

१७. फिरऔन और उसके मुखियाओं की तरफ, फिर भी उन लोगों ने फिरऔन के हुक्मों की इत्तेबा की और फिरऔन का कोई हुक्म जायेज और ठीक था ही नहीं।

१८. वह तो क्रयामत (प्रलय) के दिन अपनी जाति का अगुवा बनकर उन सब को नरक में जा खड़ा करेगा! वह बहुत बुरा घाट है,^१ जिस पर ला खड़े किये जायेंगे।

१९. और उन पर इस दुनिया में भी लानत हुई और क्रयामत के दिन भी, कितना बुरा इंसान है जो दिया गया।

१००. बस्तियों की यह कुछ खबर जो हम तेरे सामने बयान कर रहे हैं, उन में से कुछ मौजूद हैं और कुछ कटी फसल की तरह हो गयी हैं।

१०१. और हम ने उन पर कोई जुल्म नहीं किया, बल्कि खुद ही उन्होंने अपने ही ऊपर जुल्म किया, और उन्हें उनके देवताओं ने कोई फायदा नहीं पहुँचाया, जिन्हें वे अल्लाह के सिवाय पुकारते थे, जबकि तेरे रब का हुक्म आ पहुँचा, बल्कि उन्होंने उनका नुकसान ही बढ़ा दिया।

كَانَ كَرِهًا لَّكَ فَيَقْتُلُونَ فِيهَا الْآلَاءَ الَّتِي أُعِدَّتْ لَهُمْ وَبَدَّلُوا صَدْرًا بَدَلًا ۗ
كَلَّا بَدَدَتْ قَوْمًا ۝۹۵

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۝۹۶

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَأَتٰبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۖ
وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ۝۹۷

يَقْدُمُ قَوْمَهُ يَوْمَ الْعِيمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ
وَبِئْسَ الْاُورْدُ الْمُوْرُوْدُ ۝۹۸

وَأَتٰبَعُوا فِي هٰذٰلِكَ لَعْنَةً وَيَوْمَ الْعِيمَةِ ۖ
بِئْسَ الْاِزْدٰثُ الْمُرْكُوْتُوْدُ ۝۹۹

ذٰلِكَ مِنْ اٰثٰرِ الْفُرْقٰنِ نَقَضْنَا عَلَيْهِمْ
مِنْهَا قٰآئِمًا وَحٰصِيْدًا ۝۱۰۰

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ فَمَا اَغْنٰتْ
عَنْهُمْ اٰلِهٰتُهُمْ الَّتِي يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
مِنْ شَيْءٍ لَّيْسَ لَهَا جَآءُ اَمْرٍ رَّبِّكَ ۗ وَمَا رٰدُوْهُمْ
غَيْرَ تَنْبِيْٓٔ ۝۱۰۱

^१ यानी फिरऔन जिस तरह दुनिया में उसका अगुवा और मुखिया था, क्रयामत के दिन भी यह आगे-आगे ही होगा और अपनी क्रीम को अपने नेतृत्व (रहनुमाई) में नरक में लेकर जायेगा।

^२ पानी के घाट को कहते हैं, जहाँ प्यासे जाकर अपनी प्यास बुझाते हैं, लेकिन यहाँ नरक को उरु कहा गया है, मरुतुद वह जगह या घाट यानी नरक जिस में लोग ले जाये जायेंगे यानी जगह भी बुरा और जाने वाले भी बुरे।

१०२. और तेरे रब की पकड़ का यही नियम है, जबकि वह वस्तियों में रहने वाले जालिमों को पकड़ता है, बेशक उस की पकड़ दुखदायी और सख्त कड़ी है !

१०३. बेशक इस में उन लोगों के लिये नसीहत है, जो कयामत (प्रलय) के अजाब से डरते हैं, वह दिन जिस में सब लोग जमा किये जायेंगे और वह, वह दिन है जिस में सब हाज़िर किये जायेंगे ।

१०४. और उसे हम जो देर करते हैं, वह सिर्फ एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिये है ।

१०५. जिस दिन वह आ जायेगी किसी को हिम्मत न होगी कि अल्लाह की इजाज़त के बिना कोई बात भी कर ले, तो उन में से कोई बदनसीब होगा और कोई खुशनसीब ।

१०६. तो जो बदनसीब हुए वे नरक में होंगे, वहाँ उनकी धीमी और ऊँची चीख होगी ।

१०७. वे वहीं हमेशा रहने वाले हैं, जब तक आकाश और धरती बरकरार रहें, सिवाय उस वक़्त के जो तुम्हारे रब की मर्जी हो, बेशक तेरा रब जो कुछ चाहे कर डालता है ।

१०८. और जो खुशनसीब किये गये, वे स्वर्ग में होंगे जहाँ वे हमेशा रहेंगे जब तक आकाश और धरती बाक़ी रहे, लेकिन जो तेरा रब चाहे, यह न ख़तम होने वाली बख़्शिश है ।

وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ
عَالِيَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ﴿١٠٢﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَن خَافَ عَذَابَ
الْآخِرَةِ ۚ ذَلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوعٌ لَهُ النَّاسُ
وَذَلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُودٌ ﴿١٠٣﴾

وَمَا نُؤَخِّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مُّعَدَّدٍ ﴿١٠٤﴾

يَوْمَ يَأْتُ لَأَنكَرُ نَفْسٍ إِلَّا بِإِذْنِهِ
فِيهِمْ شِقَاقٌ وَسَعِيدٌ ﴿١٠٥﴾

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُوا فِى النَّارِ لَهُمْ فِيهَا
زَفِيرٌ وَسَهيقٌ ﴿١٠٦﴾

خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا
شَاءَ رَبُّكَ ۗ إِنَّ رَبَّكَ فَصَالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٠٧﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ سُعِدُوا فِى الْجَنَّةِ خَالِدِينَ
فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ
رَبُّكَ ۗ عَطَاءٌ غَيْرَ مَجْدُودٍ ﴿١٠٨﴾

१ इन लपजों से कुछ लोगों में यह भ्रम हुआ है कि काफ़िरों के लिये नरक का अजाब दायमी नहीं है, बल्कि एक वक़्त तक है यानी जब तक धरती और आकाश का बजूद रहेगा, लेकिन यह बात सही नहीं है क्योंकि यहाँ ما دامت السماوات والارض अरब वासियों की रोज़ाना बोलचाल और मुहाबिरे के अनुसार (मुताबिक) उतरा है ।

१०९. इसलिये आप उन चीजों से शक़ो शुब्हा में न रहे, जिन्हें ये लोग पूज रहे हैं, उनकी इबादत तो इस तरह है जिस तरह इनके बुजुर्गों की इस से पहले थी, हम उन सब को पूरा-पूरा हिस्सा बिना कमी के देने वाले ही हैं।

فَلَا تَكُ فِي مَرْيَةِ وَمَا يَعْبُدُ هَؤُلَاءِ مَا يَعْبُدُونَ
إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ آبَاءَهُمْ مِنْ قَبْلُ وَإِنَّا لَنُوَفُّهُمْ
نُصَيْبَهُمْ غَيْرَ مَمْنُونٍ ﴿١٠٩﴾

११०. बेशक हम ने मूसा को किताब अता की, फिर उस में इखितेलाफ़ किया गया, अगर पहले ही आप के रब की बात लागू न हो गई होती तो निश्चय ही उनका फ़ैसला कर दिया जाता, उन्हें तो इस में शक़ लग रहा है (ये तो दुविधा में हैं)।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَآخْتَلَفَ فِيهِ
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِّى بَيْنَهُمْ
وَإِنَّهُمْ لَنُفَى شَكِّ مِنْهُ مَرِيِبٍ ﴿١١٠﴾

१११. और बेशक उन में से हर एक को (जब उन के सामने जायेगा तो) आप का रब उसे उस के अमलों (कर्मों) का पूरा बदला अता करेगा, बेशक वे जो कुछ कर रहे हैं उन से वह वाख़बर है।

وَإِن كَلَّمْنَا لَنُؤَفِّقَهُمْ رَبَّكَ أَعْمَاهُمْ
إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١١﴾

११२. बस आप अडिग रहिये जैसाकि आप को हुक्म दिया गया है, और वे लोग भी जो आप के साथ तौबा (क्षमा-याचना) कर चुके हैं। होशियार! तुम हद से न बढ़ना, अल्लाह तुम्हारे सारे अमलों को देख रहा है।

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ
وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿١١٢﴾

११३. और देखो जालिमों की तरफ़ कभी न झुकना, वरना तम्हें भी आग की लौ लग जायेगी,^२ और अल्लाह के सिवाय तुम्हारी मदद करने वाला न खड़ा हो सकेगा और न तुम्हें मदद दी जायेगी।

وَلَا تَوَكَّلُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا ذَنَّبْتُمْ التَّارَ
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءٍ ثُمَّ
لَا تُنصَرُونَ ﴿١١٣﴾

^१ इस आयत में नबी ﷺ और ईमानवालों को एक तो मजबूत रहने की नसीहत दी जा रही है, जो दुश्मन का सामना करने के लिये एक बहुत बड़ा हथियार है।

^२ इसका मतलब यह है कि जालिमों के साथ नमी और तारीफ़ करके उन से मदद न लो। इस से उनको यह एहसास होगा कि जैसे तुम उनकी दूसरी बातों को भी प्यारा समझते हो। इस तरह यह तुम्हारा एक बड़ा गुनाह बन जायेगा जो तुम्हें भी उन के साथ नरक की आग का हक़दार बना सकता है।

११४. और दिन के दोनों किनारों में नमाज कायम रख और रात की कई घड़ियों में भी, बेशक नेकियाँ बुराईयों को दूर कर देती है,^१ यह नसीहत है नसीहत हासिल करने वालों के लिये।

११५. और आप सब कीजिये, बेशक अल्लाह (तआला) नेकी करने वालों का फल बरबाद नहीं करता।

११६. तो क्यों न तुम से पहले के युग के लोगों में से ऐसे भलाई करने वाले लोग हुए जो धरती में फ़साद फैलाने से रोकते, सिवाय उन कुछ के जिन्हें हम ने उन में से नजात अता की थी, जालिम लोग तो उस चीज़ के पीछे पड़ गये, जिस में उन्हें सम्पन्नता (आसूदगी) दी गई थी और वे पापी थे।

وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفَيْ الْكَلْبِ وَأَوْزُنًا مِنَ الْبَيْتِ ط
إِنَّ الصَّلَاةَ يُدْعَى بِهَا مِنَ الشَّيْءِ ط ذَلِكَ ذِكْرِي ط
لِلذَّكَرَيْنِ (114)

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضَيِّعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ (115)

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُو بَأْسٍ ط
يَنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ ط
أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ط وَاصْبِرْ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا آتَوْا ط
فِيهِمْ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ (116)

^१ दोनों किनारों से मुराद कुछ ने सुबह और मगरिब (सूर्यास्त), कुछ ने सिर्फ इशा (रात्रि) और कुछ ने मगरिब (सूर्यास्त) और इशा दोनों का वक़्त लिया है। इमाम इब्ने कसीर फरमाते हैं कि मुमकिन है कि यह आयत मेराज से पहले उतरी हो, जिस में पाँच नमाज़ें फ़र्ज की गयीं, क्योंकि इस से पहले केवल दो ही नमाज़ें फ़र्ज थीं, एक सूरज निकलने से पहले और एक सूरज डूबने से पहले और रात के पिछले हिस्से में तहज्जुद की नमाज़, फिर तहज्जुद की नमाज़ आम मुसलमानों से माफ़ कर दी गई, फिर उस तहज्जुद नमाज़ की फ़रजियत कुछ के क़ौल के अनुसार आप से भी ख़त्म कर दी गई। (इब्ने कसीर)

^२ जिस तरह से हदीसों में भी इसको तफ़सील से बयान किया गया है। जैसे «पाँच नमाज़ें, जुमअ: (शुक्रवार) से जुमअ (शुक्रवार) तक और रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक, इन के बीच होने वाले गुनाहों को दूर कर देने वाले हैं, अगर बड़े गुनाह से बचा जायें» (सहीह मुस्लिम किताबुत तहारत.....) एक दूसरी हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया :

«बताओ! अगर तुम में किसी के दरवाज़े के सामने एक बड़ी नहर बहती हो, वह हर दिन उस में पाँच बार गुस्ल करता हो, क्या उस के जिस्म पर उस के बाद मैल-कुचैल बाकी रह जायेगी?» सहाबा (आप के साथियों) ने जवाब दिया, «नहीं» आप ﷺ ने फरमाया :

इसी तरह पाँच नमाज़ें हैं, उन के जरिये अल्लाह तआला गुनाहों और गलतियों को मिटा देता है। (सहीह बुखारी, किताबुल मवाकीत, बाबुस्सलवातिल ख़मसे कफ़ारतुन (और) मुस्लिम, किताबुल मसाजिद, बाबुल मशये इलत्सलाते तुमहा विहिल ख़ताया व तुरफ़आ विहिद दरजात्)

११७. आप का रब ऐसा नहीं कि किसी वस्ती को जुल्म से तबाह कर दे, जबकि वहाँ के लोग परहेजगार हों।

११८. और अगर आप का रब चाहता तो सब लोगों को एक रास्ते पर एक उम्मत कर देता, वे तो हमेशा (सदैव) मुखालफत करने वाले ही रहेंगे।

११९. सिवाय उन के जिन पर आप का रब रहम करे, उन्हें तो इसीलिये पैदा किया है, और आप के रब की यह बात पूरी है कि मैं जहन्नम को जिन्नो और इंसानों सब से भर दूँगा।

१२०. और रसूलों की सब हालतें हम आप के सामने आप के दिल के सुकून के लिए बयान कर रहे हैं, आप के पास इस सूर: (अंश) में भी हक पहुँच चुका, जो नसीहत और उपदेश (बाज) है ईमानवालों के लिए।

१२१. और ईमान न लाने वालों से कह दीजिये कि तुम लोग अपने तौर से अमल किये जाओ, हम भी अमलों में लीन (मशगूल) हैं।

१२२. और तुम भी इंतैजार करो, हम भी इंतैजार कर रहे हैं।

१२३. और आकाशों और धरती का इल्मे गैब अल्लाह (तआला) को ही है, और सारे कामों का लौटाना भी उसी की तरफ है, इसलिए तुझे उसी की इबादत (उपासना) करनी चाहिए और उसी पर भरोसा रखना चाहिये और तुम जो कुछ करते हो उस से अल्लाह (तआला) अन्जान नहीं।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقَرْيَةَ بِظُلْمٍ وَأَهْلِهَا مُصْلِحُونَ ﴿۱۱۷﴾

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَا يُزَالُونَ مُخْتَلِفِينَ ﴿۱۱۸﴾

إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ ذَكَرْتُمْ لَكُمْ رَبُّكَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَكُونَ ﴿۱۱۹﴾

وَكَلَّا تَقْصُصَ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نُنَبِّئُكَ بِهِ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِي هَذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿۱۲۰﴾

وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَاكِفُونَ ﴿۱۲۱﴾

وَأَنْتُمْ طَرَفٌ أَلْفًا مِمَّنْ نَنْزِلُونَ ﴿۱۲۲﴾

وَاللَّهُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأُمُورُ كُلُّهَا فَعَبِيدُهَا وَكُلٌّ عَلَىٰ هَدٍ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿۱۲۳﴾

सूरत यूसुफ-१२

सूर: यूसुफ मक्का में नाजिल हुई और इस की एक सौ ग्यारह आयतें और बारह रकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अलिफ़· लाम· रा·, यह रौशन किताब की आयतें हैं।

२. बेशक हम ने इसे अरबी कुरआन उतारा है कि तुम समझ सको।^१

३. हम आप के सामने सब से अच्छा बयान पेश करते हैं, इस वजह से कि हम ने आप की तरफ यह कुरआन वहयी (प्रकाशना) के जरिये उतारा है और बेशक इससे पहले आप अंजानों में से थे।^२

سُورَةُ يُوسُفَ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ۝ اِنَّ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِیًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝

۝ اِنَّا اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِیًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِیْنَ بِمَا اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْءَانَ ۝ وَاِنَّ لَکُمْ مِنْ

كِتٰبِهٖ لَیْسَ الْغُوْلٰتِیْنَ ۝

^१ आसमानी किताबों को उतारने का मक़सद लोगों को हिदायत और निर्देशन (रहनुमाई) देना है, और यह मक़सद तभी हासिल हो सकता है, जब वह किताब उस भाषा में हो जिस को वे समझ सकें, इसलिये सभी आसमानी किताबें उस क़ौम की अपनी भाषा में उतारी गयी, जिस क़ौम की हिदायत के लिये वह उतारी गई थी। कुरआन करीम के पहले मुखातब लोग अरबवासी थे, इसलिये कुरआन भी अरबी भाषा में उतारा गया, इस के सिवाय अरबी भाषा अपनी तफ़सीर, असर और बयान की बुनियाद पर दुनिया की दूसरी भाषाओं से बेहतर भाषा है, इसीलिये अल्लाह तआला ने इस बेहतर किताब (कुरआन मजीद) को बेहतर भाषा (अरबी) में बेहतर रसूल (हज़रत मोहम्मद ﷺ) पर बेहतर फ़रिश्ते (ज़िब्रिल) के जरिये नाज़िल किया, और मक्का नगर जहाँ इस की शुरुआत हुई, दुनिया के अच्छे नगरों में अच्छा नगर है और जिस महीने में इस का नज़ूल होना शुरू हुआ, वह भी अच्छा महीना रमज़ान का है।

^२ कुरआन करीम के इन लफ़्ज़ों से भी बाज़ेह होता है कि नबी करीम ﷺ को ग़ैब का इल्म नहीं था, वरना अल्लाह तआला आप को अंजान न कहता। दूसरी बात यह मालूम हुई कि आप ﷺ अल्लाह के सच्चे नबी हैं, क्योंकि आप ﷺ पर वहयी (प्रकाशना) के जरिये ही इस सत्यकथा का बयान किया गया है, आप ﷺ न किसी के शार्गिद थे कि किसी गुरु से सीख कर बयान कर देते, और न किसी दूसरे से ही ऐसा रिश्ता था कि जिस से सुनकर तारीख़ का यह वाक़ेआ उस के खास हिस्सों के साथ आप ﷺ प्रसारित कर देते, यह बेशक अल्लाह तआला ही ने वहयी (प्रकाशना) के जरिये आप ﷺ पर उतारा है, जैसाकि इस जगह पर बाज़ेह किया गया है।

५. जबकि यूसुफ ने अपने बाप से बताया कि पिताजी मैंने ग्यारह सितारों को और सूरज-चांद को देखा कि वे सभी मुझे सज्दा कर रहे हैं।

५. (याकूब عليه السلام ने) कहा कि हे मेरे प्यारे बेटे! अपने इस ख्वाब की चर्चा अपने भाईयों से न करना, ऐसा न हो कि वे तेरे साथ कोई छल करें,^१ शैतान तो इंसान का खुला दुश्मन है।

६. और इसी तरह तेरा रब तुझे मुन्तखब करेगा और तुझे मामला (बात) समझने (यानी स्वप्नफल वताने) की भी नसीहत देगा और अपनी नेमत तुझे पूरी तरह से अता करेगा^२ और याकूब के परिवार को भी जैसाकि उस ने इससे पहले तेरे दो बुजुर्गों यानी इब्राहीम और इसहाक को भी भरपूर नेमत अता की, बेशक तेरा रब बड़े इल्म वाला और बहुत हिक्मत वाला है।

७. बेशक यूसुफ और उस के भाईयों में सवाल करने वालों के लिये बड़ी निशानियाँ हैं।

८. जबकि उन्होंने कहा कि यूसुफ और उसका भाई हमारे बाप को हम से ज़्यादा प्यारा है, अगरचे हम लोग ताकतवर जमात हैं, कोई शक नहीं कि हमारे बाप वाजेह ग़लती पर है।

९. यूसुफ को क़त्ल कर दो या उसे (अज्ञात) जगह पर पहुँचा दो, ताकि तुम्हारे बाप का ध्यान तुम्हारी तरफ ही हो जाये, उस के बाद तुम भले हो जाना।

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ﴿٤﴾

قَالَ يَبْنَؤُكَ لَا تَقْصُصْ رُءْيَاكَ عَلَىٰ إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٥﴾

وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَتْهَا عَلَىٰ أَبِيكَ مِن قَبْلُ يُبْرِهِمُ وَأَسْحَىٰ إِذْ رَأَىٰكَ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ﴿٦﴾

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٧﴾

إِذْ قَالُوا لِيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَيْنَا وَمِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّ آبَاءَنَا لَفِي سُلْبٍ مُّبِينٍ ﴿٨﴾

إِقْتُلُوا يُوسُفَ أَوْ اطْرَحُوهُ أَرْضًا يَبْحُلُ لَكُمْ وَجْهٌ أَبِيكُمْ وَتَكُونُوا مِن بَعْدِهِ قَوْمًا صَالِحِينَ ﴿٩﴾

^१ हज़रत याकूब ने ख्वाब से यह अंदाज़ा लगा लिया कि उन का यह बेटा बड़ी शान वाला होगा, इसलिये उन्हें डर हुआ कि उस की इस अज़मत का अंदाज़ा लगाकर उस के दूसरे भाई उसे कोई नुक़सान न पहुँचाये, इस सबब उन्होंने इस ख्वाब की चर्चा करने से रोक दिया।

^२ इस से मुराद नुबूअत है, जो हज़रत यूसुफ عليه السلام को अता की गयी, या वे ईनाम है जिन के मिस में यूसुफ عليه السلام हकदार बने।

१०. उन में से एक ने कहा कि यूसुफ को क्रल तो न करो बल्कि किसी अंधे कुएँ की तली में डाल आओ! कि उसे कोई यात्रियों का गिरोह उठा ले जाये, अगर तुम्हें करना ही है तो इस तरह करो।

११. उन्होंने कहा कि हे पिता! आखिर आप यूसुफ के बारे में हम पर यकीन क्यों नहीं करते, हम तो उस के शुभचिन्तक (खैरुद्वाह) हैं।

१२. कल आप उसे जरूर हम लोगों के साथ भेज दीजिये कि खूब खाये-पिये और खेले? उसकी हिफाजत के हम जिम्मेदार हैं।

१३. (याकूब ने) कहा कि उसे तुम्हारा ले जाना मेरे लिये बहुत दुखद होगा, मुझे यह भी डर लगा रहेगा कि तुम्हारी लापरवाही में उसे भेड़िया खा जाये।

१४. उन्होंने जवाब दिया कि हम जैसे बड़े ताकतवर गिरोह की मौजूदगी में भी अगर उसे भेड़िया खा जाये तो हम बिल्कुल निकम्मे हुए।

१५. फिर जब उसे ले चले और सभी ने मिल कर ठान लिया कि उसे सुनसान गहरे कुएँ की तह में फेंक दें, हम ने यूसुफ की तरफ वही (प्रकाशना) की कि बेशक (वक्त आ रहा है) कि तुम्हें इस बात की खबर उस हालत में देगा कि वे जानते ही न हों।

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَالْقَوْهٗ
فِي غَيْبَتِ الْجَبِّ يَلْتَوِطُّهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ
إِنْ كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ۝۱۰

قَالُوا يَا أَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلَى يُوسُفَ
وَإِنَّا لَهُ لَنَصِحُونَ ۝۱۱

أَوْسَلُهُ مَعَنَا غَدًا يَرْتَع وَيَلْعَبُ وَإِنَّا
لَهُ لَكٰفِظُونَ ۝۱۲

قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَآخَانِي
أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُونَ ۝۱۳

قَالُوا لَيْنَ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَكُنَّا عُصَبَةٌ
إِنَّا إِذَا لَطَمِرُونَ ۝۱۴

قَلْبًا ذَهَبًا بِهِ وَاجْتَعُوا أَنْ يَجْعَلُوهُ فِي غَيْبَتِ
الْجَبِّ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ بِأَمْرِهِمْ هَذَا وَهُمْ
لَا يَشْعُرُونَ ۝۱۵

¹ कुएँ को और ग़ैबत उसकी तली और गहराई को कहते हैं, कुआँ वैसे भी गहरा ही होता है और उस में गिरी हुई चीज किसी को दिखाई नहीं देती, जब उस के साथ कुएँ की गहराई का भी बयान किया तो जैसेकि अतिशयोक्ति (मुवालागा) का प्रदर्शन (इजाहार) किया।

² खेल-कूद की तरफ आकर्षण (मैलान) इंसान की फितरत में शामिल है, इसीलिये जायेज खेल-कूद पर अल्लाह तआला ने किसी दौर में भी रुकावट नहीं लगाया, इस्लाम में भी इन की इजाजत है लेकिन प्रतिबन्धित (मशरूत तौर पर) यानी ऐसे खेल-कूद की आज्ञा है जो जायेज हैं जिन में दीनी नियमों के जरिये हराम न हों या हराम तक पहुँचने का जरिया न बनें। इसलिए हजरत याकूब ने भी खेल-कूद की हद तक मना नहीं किया, लेकिन यह शक किया कि तुम लोग खेल-कूद में मशगूल हो जाओ और उसे भेड़िया खा जाये, क्योंकि खुले मैदान और रेगिस्तानों में वहाँ भेड़िये आम तौर से पाये जाते थे।

१६. और रात (इशा) के वक़्त (वे सब) अपने बाप के पास रोते हुए पहुँचे ।

१७. और कहने लगे कि प्यारे पिताजी! हम आपस में दौड़ में लग गये और यूसुफ को सामान के पास छोड़ दिया तो भेड़िया उसे खा गया, अब तो हमारी बात पर यक़ीन करने वाले नहीं चाहे हम पूरे सच्चे ही हों ।

१८. और यूसुफ के कुर्ते को झूठे खून से भिगा कर लाये थे (पिता ने) कहा, (इस तरह नहीं) बल्कि तुम ने अपने मन से ही एक बात बना ली है, अब सब ही बेहतर है,^१ और तुम्हारी बनायी हुई बातों पर अल्लाह ही से मदद की दुआ है ।

१९. और एक मुसाफ़िर (यात्री) का गिरोह आया और उन्होंने अपने पानी लाने वाले को भेजा, उस ने अपना डोल लटका दिया, कहने लगा बाह-बाह! खुशी की बात है, यह तो एक बालक है,^२ उन्होंने उसे तिजारत का माल समझकर छिपा दिया और अल्लाह (तआला) उस से बाख़बर था जो वे कर रहे थे ।

२०. और उन्होंने उसे बहुत ही कम दाम (यानी) गिनती के कुछ दिरहमों पर बेच डाला, वे तो यूसुफ के बारे में ज़्यादा रूचिहीन (बेरगबत) थे ।

وَجَاءُوا بِأَبَاهُمْ عِشَاءَ يَبْتَلُونَ ﴿١٦﴾

قَالُوا يَا أَبَانَا إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوسُفَ
عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ وَمَا أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ
لَنَا وَلَوْ كُنَّا صَادِقِينَ ﴿١٧﴾

وَجَاءُوا عَلَى قَمِيصِهِ بِدَمٍ كَذِبٍ قَالَ بَلْ
سَأَلْتُمْ لَكُمْ أَنْفُسَكُمْ أَمْرَاءً فَصَبِّرُوا بِحَيْلِهِ
وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَى مَا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْوَةً
كَانَ يُنْشِرِي هَذَا غُلْمًا وَسُرُوءًا بِضَاعَةً
وَاللَّهُ عَلَيْهِمْ بِمَا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

وَسُرُوءًا يُشْتَرِي بِحَيْثُ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةً
وَكَانُوا فِيهِ مِنَ الزَّاهِدِينَ ﴿٢٠﴾

^१ कहते हैं कि एक बकरी का बच्चा काट कर उस के खून से यूसुफ की कमीज भिगा ली और यह भूल गये कि अगर भेड़िया यूसुफ को खाता तो कमीज भी फाड़ता, कमीज फटी ही नहीं थी, जिस को देखकर और साथ ही हज़रत यूसुफ के ख़ाब और नुबूअत की ताक़त से अन्दाज़ा लगा कर हज़रत याक़ूब ने कहा कि यह घटना इस तरह घटित नहीं हुई है, जैसे तुम बयान कर रहे हो बल्कि यह तुम्हारी मनगढ़त है, फिर भी जो होना था हो चुका, हज़रत याक़ूब उस के बिवरण (तफसील) से अंजान थे, इसलिये केवल सब के सिवाय कोई चारा न था और अल्लाह की मदद के अलावा कोई सहाय न था ।

^२ وارد (वारिद) उस इंसान को कहते हैं जो मुसाफ़िरों के गिरोह के लिये पानी आदि का इतेज़ाम करने के मक़सद से आगे-आगे चलता है ताकि ठीक जगह देखकर मुसाफ़िरों को ठहराया जा सके । यह वारिद (मुसाफ़िरों के लिये पानी का इतेज़ाम करने वाला) जब कुएँ पर आया और अपना डोल नीचे लटकाया तो हज़रत यूसुफ ने उस की डोरी पकड़ ली, वारिद (जल-प्रबन्धक) ने एक सुन्दर बच्चे को देखा तो ऊपर खींच लिया और बहुत खुश हुआ ।

२१. और अहले मिस्र में से जिस ने उसे खरीदा था उस ने अपनी वीवी से कहा कि इसे इज्जत और एहतेराम के साथ रखो, बहुत मुमकिन है कि यह हमें फ्रायेदा पहुँचाये या हम इसे अपना बेटा ही बना लें, इस तरह हम ने (मिस्र की) धरती पर यूसुफ के पाँव जमाये कि हम उसे ख्वाव की ताबीर का कुछ इल्म सिखा दें, अल्लाह अपने इरादे की पूर्ति में कुदरत रखता है, लेकिन ज्यादातर लोग अन्जान होते हैं।

२२. और जब (यूसुफ) पूरी जवानी को पहुँच गये, हम ने उसे फ़ैसला की ताकत और इल्म दे दिया, हम भलाई करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

२३. और उस औरत ने जिस के घर यूसुफ थे, यूसुफ को फुसलाना शुरू किया कि वह अपने मन की हिफाजत करना छोड़ दे, और दरवाजा बन्द करके कहने लगी लो आ जाओ! (यूसुफ ने) कहा, अल्लाह बचाये! वह मेरा रब है, मुझे उस ने बहुत अच्छी तरह से रखा है, नाइसाम्फी करने वालों का भला नहीं होता।

२४. और उस औरत ने यूसुफ की इच्छा की और यूसुफ उसकी इच्छा करते, अगर वह अपने रब की दलील देख न लेते, इसी तरह हुआ इसलिये कि हम उस से बुराई और बेहयाई दूर कर दें, बेशक वह हमारे चुने हुए बन्दों में से था।

२५. और दोनों दरवाजे की तरफ दौड़े, उस औरत ने यूसुफ का कपड़ा (कुर्ता) पीछे से खींच कर फाड़ दिया और उस औरत का शौहर दोनों को दरवाजे के करीब ही मिल गया, तो कहने लगी कि जो इंसान तेरी वीवी के साथ बुरी इच्छा रखे, बस उसकी सजा यही है कि उसे

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِامْرَأَتِهِ أَكْرِمِي مَثْوَاهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا
وَكَذَٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ
مِن تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ غَبِيرٌ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢١﴾

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا
وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٢٢﴾

وَرَأَوْنَاهُ الَّذِي هُوَ نَفْسَهُ وَعَلَّقَتْ
الْأَبْوَابُ وَقَالَتْ هَيْبَ لَكَ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ
رَبِّي أَحْسَنُ مِمَّا يَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنَّ رَأبُرَهَانَ
رَأَاهُ لَكُنَّا لِنَصْرِفَ عَنْهُ الشُّؤْمَ وَالْفَحْشَاءَ
إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ﴿٢٤﴾

وَأَسْتَبَقَا الْبَابَ وَكَذَّت فَبِصَّةٍ مِنْ دُونِ الْفَيْمَاءِ
سَيِّدَهَا لَكِ الْبَابُ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ
سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسَجَّنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٥﴾

1 यहाँ से हजरत यूसुफ का एक नया इन्तेहान शुरू हुआ, मिस्री अजीज की वीवी जिस को उस के शौहर ने ख्वास तौर से कहा था कि यूसुफ को आदर-सम्मान के साथ रखे, वह हजरत यूसुफ की खूबसूरती पर मोहित हो गयी, और उन्हें गुनाह की प्रेरणा (तरगीब) देने लगी, जिसे हजरत यूसुफ ने ठुकरा दिया।

बन्दी बना लिया जाये और दूसरा कोई सख्त अजाब दिया जाये।

२६. (यूसुफ ने) कहा, यह औरत ही मुझे बहला फुसला कर (मेरी मनोकामना की हिफाजत से लापरवाह करना) चाहती थी, और औरत की जाति के एक आदमी ने गवाही दी कि अगर उसका कुर्ता आगे से फटा हो तो औरत सच्ची है और यूसुफ झूठ बोलने वालों में से है।

२७. और अगर उसका कुर्ता पीछे से फाड़ा गया है, तो औरत झूठी है और यूसुफ सच्चों में से है।

२८. तो शौहर ने जो देखा कि कुर्ता पीछे से फटा है तो यह साफ कह दिया कि यह तो तुम औरतों की चाल है, बेशक तुम्हारे हथकड़े भारी हैं।

२९. यूसुफ, अब इस बात को आती-जाती करो, और (हे औरत!) अपने गुनाहों से माफ़ी मांग, बेशक तू गुनाहगारों में से है।

३०. और नगर की औरतों में चर्चा होने लगी कि अजीज की बीवी अपने (युवक) गुलाम को अपनी जरूरत पूरी करने के लिये बहलाने-फुसलाने में लगी रहती है, उसके दिल में यूसुफ का प्यार बैठ गया है, हनारी समझ से तो वह बाजेह गलती पर है।

३१. उस ने जब उनकी इस छलपूर्ण गीबत को सुना तो उन्हें आमंत्रित (मदऊ) किया, और उन के लिये एक सभा का एहतेमाम किया, और उन में से हर एक को एक छुरी दे दी, और कहा कि हे यूसुफ! इन के सामने चले आओ, उन औरतों ने जब उसे देखा तो बहुत बड़ा जाना और अपने हाथ काट लिये, और भूँह से निकल गया कि पाकी अल्लाह के लिये है, यह इंसान कभी भी नहीं, यह तो बेशक कोई बहुत बड़ा फरिश्ता है।^१

قَالَ هِيَ رَاوَدْتَنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ أَهْلِهَا ۚ إِنْ كَانَ قَبِيضُهُ قَدْ مِنْ قَبْلِ حَصَدَاتٍ وَهُوَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٦﴾

وَإِنْ كَانَ قَبِيضُهُ قَدْ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَّابَتْ وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٧﴾

فَلَمَّا رَأَى قَبِيضَهُ قَدْ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِنْ كَيْدِكُنَّ ۚ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ﴿٢٨﴾

يُوسُفُ اعْرِضْ عَنْ هَذَا ۖ وَاسْتَغْفِرِي لِذَنْبِكِ ۚ إِنَّكَ كَدَّتْ مِنَ الْخَطِيئِينَ ﴿٢٩﴾

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدْيَنَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۚ إِنَّا لَنَرَاهَا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٣٠﴾

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكًا ۖ وَأَتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا ۖ وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْتَهُ ۖ وَظَعْنَ آيِدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا ۖ إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ﴿٣١﴾

^१ इस का यह मतलब नहीं कि फरिश्ते इंसान से शक्तो सूरत में अच्छे या बेहतर हैं, क्योंकि

३२. (उस वक़्त मिस्र के अजीज की वीवी ने) कहा कि यही है जिन के बारे में तुम मुझे बुरा भला कह रही थी, मैंने हर तरह से इससे अपना मतलब पूरा करना चाहा, लेकिन यह बेदाग बचा रहा, और जो कुछ मैं इस से कह रही हूँ अगर यह न करेगा तो बेशक यह बन्दी बना दिया जायेगा, और निश्चय यह बहुत बेइज़्जत होगा।

३३. (यूसुफ ने) कहा कि ऐ मेरे रब! जिस बात की तरफ़ यह औरतें मुझे बुला रही हैं, उस से तो जेल मुझे ज़्यादा प्यारा है, अगर तूने उन के छल मुझ से दूर न किया तो मैं इन की तरफ़ आकर्षित (मायेल) हो जाऊँगा, और विल्कुल बेवकूफ़ों में शामिल हो जाऊँगा।¹

३४. उस के रब ने उसकी दुआ क़बूल कर ली और उन औरतों के छल से उसे बचा लिया, बेशक वह सुनने वाला और जानने वाला है।

३५. फिर उन सभी निशानियों के देख लेने के बाद उन्हें यही भला लगा कि यूसुफ़ को कुछ वक़्त के लिये जेल में रखें।²

قَالَتْ فَلْيَلِكَنَّ الَّذِي تَمُنُّنَنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ
عَنْ نَفْسِهِ فَاسْتَعْصَمَ ۚ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَا أَمَرْتُهُ
لَيُسْجَنَنَّ وَيَكُونًا مِنَ الصَّغِيرِينَ ﴿٣٢﴾

قَالَ رَبِّ النَّجْوَى احْبَبْ إِلَيَّ مِنِّي يَدَّ عَوْنِي إِلَيْهِ ۖ
وَأَلَّا تَصْرِفَ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبَبُ إِلَيْهِنَّ ۖ وَأَكُنَّ
مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٣٣﴾

فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۖ
إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٤﴾

ثُمَّ بَدَأَ لَهُمْ فِي مَنِّ بَعْدَ مَا رَأَوُا الْآيَاتِ
لِيَسْجُنَنَّهُ فَحَىٰ حِينٍ ﴿٣٥﴾

फरिश्तों को इंसानों ने देखा ही नहीं है, इस के अलावा इंसानों के लिये खुद अल्लाह ने कुरआन में वाजेह किया है कि हम ने उसे सब से अच्छे रूप में पैदा किया है, इन औरतों ने इंसान की शकल को इसलिये नकारा किया कि उन्होंने खूबसूरती का रूप जो इंसान के रूप में देखा उन की आँखों ने कभी नहीं देखा था, और उन्होंने फरिश्तों से मुआजना इसलिये किया कि आम लोग यही समझते हैं कि फरिश्ते गुण और रूप के मुताबिक़ ऐसा रूप रखते हैं जो इंसान के रूप से बेहतर है। इस से यह मालूम होता है कि नबियों के ग़ैर मामूली सिफ़ात और गुणों के सबब उन्हें मानव जाति से निकाल कर नूर वाली मखलूक में रख देना हर युग के ऐसे लोगों का काम रहा है जो नुबूअत और उस के पद से अंजान होते हैं।

¹ हज़रत यूसुफ़ ने यह दुआ अपने दिल में की, क्योंकि एक ईमानवाले के लिये दुआ भी एक हथियार है। हदीस में आता है सात आदमियों को अल्लाह तआला अर्ब की छाया अता करेगा, उन में से एक वह आदमी है जिसे एक ऐसी औरत गुनाह के लिये बुलाये जो खूबसूरत भी हो और ऊँचे पद पर आसीन भी हो, लेकिन वह उस के जवाब में यह कह दे कि मैं तो अल्लाह से डरता हूँ। (सहीह बुखारी, किताबुल आज़ान, बाबु मन जलस फ़िल मस्जिद यन्तज़िरूससला: ब फ़जलुल मस्जिद और सहीह मुस्लिम, किताबुज्जकात बाबु फ़जल एख़फा इस्सदक:)

² सच्चाई और पकीज़गी वाजेह हो जाने के बाद भी यूसुफ़ को जेल में डालने का यही सवब उन के सामने हो सकता था कि मिस्री अजीज हज़रत यूसुफ़ को अपनी पत्नी से दूर रखना

३६. और उस के साथ ही दो दूसरे नौजवान जेल में आये, उन में से एक ने कहा कि मैंने ख्वाब में अपने आप को शराब निचोड़ते हुए देखा है, और दूसरे ने कहा कि मैंने अपने आप को देखा है कि मैं अपने सिर पर रोटी उठाये हुए हूँ जिसे पक्षी खा रहे हैं, हमें आप इसका फल बतायें, हमें तो आप खूबी वाले इंसान मालूम होते हैं।

३७. (यूसुफ ने) कहा तुम्हें जो खाना दिया जाता है उस के तुम्हारे पास पहुँचने से पहले ही मैं तुम्हें उसका फल बता दूँगा, यह सब कुछ उस इल्म का नतीजा है जो मुझे मेरे रब ने सिखाया है, मैंने उन लोगों का दीन छोड़ दिया है, जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और आखिरत को भी कुबूल नहीं करते हैं।

३८. मैं अपने बाप और बुजुर्गों के दीन का पैरोकार हूँ, यानी इब्राहीम, इसहाक और याकूब के दीन का, हमें कभी यह कुबूल नहीं कि हम अल्लाह तआला के साथ किसी को भी साझीदार बनायें,² हम पर और दूसरे सभी लोगों पर अल्लाह (तआला) का यह खास फ़ज़ल है, लेकिन ज्यादातर लोग नाशुक्के होते हैं।

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيْنِ ۖ قَالَ أَحَدُهُمَا إِنِّي
أَرَيْتُ أَحْسَنَ عَصْرٍ خَمْرًا ۖ وَقَالَ الْآخَرُ إِنِّي أَرَيْتُ أَحْسَنَ
فَوْقَ رَأْسِي خُبْرًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ لَمَّا بَدَأْنَا وَحِيدًا
إِنَّا لَنرَاكَ مِنَ الْعَابِدِينَ ﴿٣٦﴾

قَالَ لَا يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقِينَ إِلَّا نَبَأُكُمَا بِمَا وَجِلْتُمْ
بِقَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ۖ ذَلِكُمْ مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي ۖ
إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَهُمْ
بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٧﴾

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي ۖ إِنَّهُمْ سَخِرُوا وَبَغَّبُوا
مَا كَانُوا لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۖ ذَلِكُمْ مِنْ
فَضْلِ اللَّهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُونَ ﴿٣٨﴾

चाहता होगा ताकि फिर वह यूसुफ को अपनी चाल में फंसाने की कोशिश न करे, जैसाकि उस का ऐसा इरादा था।

¹ यह दोनों नौजवान राज दरबार से तआल्लुक रखते थे, एक शराब पिलाने पर तैनात था, दूसरा रोटी बनाता था, किसी वजह से उन्हें जेल में डाल दिया गया था। हज़रत यूसुफ अल्लाह के पैगम्बर थे, दीन की दावतों तबलीग के साथ-साथ इबादत, तपस्या, तक्वा, सच्चाई, किरदार और अमल में दूसरे क़ैदियों से बेहतर थे, इस के अलावा ख्वाबों की ताबीर का इल्म अल्लाह ने अता कर रखा था, इन दोनों ने ख्वाब देखा तो फ़ितरी तौर से वे हज़रत यूसुफ के पास आये और कहा कि आप हमें अच्छे लोगों में से दिखायी दे रहे हैं, हमें हमारे ख्वाबों की ताबीर बताइयें। *عس* का एक मतलब कुछ ने यह भी किया है कि आप ख्वाबों की ताबीर अच्छी बताते हैं।

² यह वही तौहीद की दावत और मूर्तिपूजन का खण्डन (तरदीद) है, जो हर नबी की असल और पहली शिक्षा (नसीहत) और दावत होती थी।

३९. ऐ मेरे जेल के साथियो! क्या कई तरह के कई देवता अच्छे हैं या एक अल्लाह जबरदस्त ताक़तवर?

४०. उस के सिवाय जिनकी इबादत तुम कर रहे हो वे सब नाम ही के हैं जो तुम ने और तुम्हारे बुजुर्गों ने खुद गढ़ लिया है, अल्लाह तआला ने इन का कोई सुबूत नहीं उतारा! फ़ैसला देना अल्लाह (तआला) ही का काम है, उस का हुक्म है कि तुम सभी उसके सिवाय किसी की इबादत (वदना) न करो, यही सच्चा दीन है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

४१. ऐ मेरे जेल के साथियो! तुम दोनों में से एक तो अपने राजा को शराब पिलाने के लिये तैनात हो जायेगा, लेकिन दूसरे को फांसी दी जायेगी और पक्षी उसका सिर नोच-नोच कर खायेंगे, तुम दोनों जिस के बारे में पूछ रहे थे, उसका फ़ैसला हो गया।^{४१}

४२. और जिस के बारे में यूसुफ़ का ह्याल था कि उन दोनों में से यह छूट जायेगा, उस से कहा कि अपने राजा से मेरी चर्चा भी कर देना, फिर उसे ज़ैतान ने राजा से बयान करना भुला दिया और यूसुफ़ ने कई साल जेल में काटे।

४३. और राजा ने कहा कि मैंने ख़्वाब देखा है कि सात मोटी-ताज़ी गायें हैं जिन को सात दुबली-पतली सी गायें खा रही हैं, और सात वालियाँ हैं हरी-भरी, और सात दूसरी बिल्कुल सूखी हुईं। हे दरवारियो! मेरे इस ख़्वाब की ताबीर बताओ अगर तुम ख़्वाब की ताबीर बता सकते हो।

يٰصٰحِبِ السِّجْنِ ؕ اَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ
اَوْ اَللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۙ

مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُوْنِهِ اِلَّا اَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا
اَنْتُمْ وَاٰبَاؤُكُمْ مِمَّا اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ط
اِنْ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ اَمْرٌ اَلَّا تَعْبُدُوْا اِلَّا اِيَّاهُ ذٰلِكَ
الَّذِيْنَ الْقِيَمَةُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ ۴۰

يٰصٰحِبِ السِّجْنِ ؕ اَمَّا اَحَدُكُمَا فَيَسْقٰى رَبِيْةً
حَمْرًا ؕ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصَلَّبُ فَمَا كُلُّ الطَّيْرِ
مِنْ رَاْسِهٖ طٰفِيْ اِلَّا الَّذِيْ فِيْهِ تَسَفُّيٰتٌ ۙ ۴۱

وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنْهٗ تٰجِرٌ مِّمَّهٖمَا اذْكُرْنِيْ عِنْدَ
رَبِّكَ فَاَنْسَاهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَيْتَ فِى
السِّجْنِ بِضَعْفِ سِنِيْنَ ۙ ۴۲

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّىْ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سَيّٰتٍ يَّاكُلُهِنَّ
سَبْعَ عِجَافٍ وَّ اَسْبَغَ سَبْعَ سُنْبُلٰتٍ خَضِرًا وَّاٰخَرًا يَّسِيْئًا
يَّا يٰهَا الْمَلَآءِئِكَةُ فِىْ رُءُوْىَاىِٕ اِنْ كُنْتُمْ لِلرُّءُوْىَا
تَعْبِرُوْنَ ۙ ۴۳

¹ इसका एक मतलब तो यह है कि उसका नाम देवता तुम ने खुद रखा है, जबकि न वे देवता है न उन के बारे में अल्लाह की तरफ से कोई सुबूत ही उतरा है। दूसरा मतलब यह है कि उन देवताओं के जो कई नाम तुम ने रखे हैं, जैसे ख़्वाजा गरीब नवाज, गंज बख़्श, शकरगंज वगैरह, यह सब तेरे अपने बनाये हुए हैं, उन का कोई सुबूत अल्लाह ने नहीं उतारा।

² घानी अल्लाह के ज़रिये लिखी तक्रदीर में पहले ही से लिखा था और जो फल मैंने बताया है यह आखिर पूरा होकर रहेगा।

४४. उन्होंने जवाब दिया कि यह तो उड़ते हुए परीशा (व्यग्र) ख्वाब है, और इस तरह के परीशा ख्वाब की ताबीर जानने वाले हम नहीं।

४५. और उन कैदियों में से छूटे हुए को एक वक़्त के बाद याद आ गया और कहने लगा, मैं तुम्हें इस की ताबीर बतला दूंगा, मुझे जाने की इजाज़त अता कीजिए।

४६. हे यूसुफ़! हे बड़े सच्चे यूसुफ़! आप हमें इस ख्वाब की ताबीर बताईए कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली (अस्वस्थ) गायें खा रही हैं, और सात बिल्कुल हरी बालियाँ हैं और सात ही दूसरी भी बिल्कुल सूखी हैं, ताकि मैं वापस जाकर उन लोगों से कहूँ कि वे सभी जान लें।

४७. (यूसुफ ने) जवाब दिया कि तुम सात साल लगातार आदत के मुताबिक अन्न बोना और उसे काटकर बालियों के साथ ही रहने देना, अपने खाने के लिये थोड़ी-सी तादाद के सिवाय।

४८. उस के बाद सात साल बहुत सूखा के आयेंगे, वे उस अनाज को खा जायेंगे जो तुम ने उन के लिये जमा कर रखा था। सिवाय उस के जो थोड़े से तुम रोक रखते हो।^१

قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ
الْأَحْلَامِ بِعُلَمَاءِنَا ۖ (44)

وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ
أَنَا أَنبَأُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ (45)

يُوسُفُ أَيُّهَا الضَّالِّينَ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ
بَقَرَاتٍ سَبَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعُ عِجَافٍ وَسَبْعِ
سُنْبُلَاتٍ خَضِرٍ وَأَخْرَيْسٍ لَعَلَّكَ أَتَىٰ لِي
النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ (46)

قَالَ تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَائِمًا فَمَا حَصَدْتُمْ
فَذَرُّوهُ فِي سُبُلٍ مُّتَبَعَةٍ ۖ وَمَا تَأْكُلُونَ (47)

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ
مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَحْصِنُونَ (48)

^१ अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ को ख्वाब की ताबीर का इल्म भी अता किया था, इसलिये वह इस ख्वाब की तह तक जल्द पहुँच गये, उन्होंने मोटी और सेहतमंद गायों से मुराद सात साल ऐसे लिये जिन में ज़्यादा पैदावार होगी और सात कमजोर गायों से उस के विपरीत सात साल सूखा अकाल के, इसी तरह सात हरी बालियों से मुराद लिया कि धरती ज़्यादा पैदावार देगी और सात सूखी बालियों से मतलब यह लिया कि इन सात सालों में धरती में पैदावार नहीं होगी, और फिर उसके लिये तरीक़ा भी बताया कि सात साल तुम लगातार खेती करो और जो अनाज हो उसे काटकर बालियों के साथ रखो ताकि उनमें अनाज अधिक महफूज़ रहे, फिर जब सात साल सूखे के आयेंगे तो यह अनाज तुम्हारे काम आयेगा, जिस को इकट्ठा तुम अब करोगे।

^२ مِمَّا تَحْصِنُونَ से मुराद बीज के लिये महफूज़ दाने हैं जो दोबारा बोये जाते हैं।

४९. फिर इस के बाद जो साल आयेगा उस में लोगों पर बहुत बारिश होगी और उसमें (अंगूर का रस भी) बहुत निचोड़ेगे।

५०. और राजा ने कहा कि उसे (यूसुफ) को मेरे पास लाओ, जब सदेशवाहक (क्रासिद) उस (यूसुफ) के पास पहुँचा तो उन्होंने कहा कि अपने राजा के पास वापस जाओ और उन से पूछो कि उन औरतों की सच्ची कहानी क्या है जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे, उन के छल को अच्छी तरह से जानने वाला मेरा रब ही है।

५१. (राजा ने) पूछा, ऐ औरतों! उस वक्त की सच्ची कहानी क्या है? जब तुम छल करके यूसुफ को उस के मन से भटकाना चाहती थी, उन्होंने साफ़ जवाब दिया कि (अल्लाह जानता है) हम ने यूसुफ में कोई बुराई नहीं पायी, फिर तो अजीज की बीवी भी बोल उठी कि अब तो सच्ची बात वाज़ेह हो गई है, मैंने ही उसे बहकाने की कोशिश की थी उस के दिल से, और बेशक वह सच्यों में से है।

५२. यह इस सबब से कि (अजीज) को मालूम हो जाये कि मैंने उसके साथ विश्वासघात (छ्यानत) नहीं किया और यह भी कि अल्लाह छल करने वालों की चाल नहीं चलने देता।

ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ
الْقَاسُ وَفِيهِ يَعْصُرُونَ ﴿٤٩﴾

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أرى فِيهَا مَآءًا جَآءَهُ الرَّسُولُ
قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ رَبِّكَ فَسَأَلَهُ مَا بَأْسَ النَّسْوَةِ الَّتِي
قَطَعْنَ أَيْدِيَهُنَّ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ﴿٥٠﴾

قَالَ مَا خَطْبُكُمْ إِذْ رَأَوْتُنَّ يُوسُفَ عَنْ نَفْسِهِ
قُلْنَ حَآشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوءٍ قَالَتْ
أَمْرَأَتُ الْعَزِيزِ الَّتِي حَصَصَ الْحَقُّ أَنَا رَأَوْتُهُ
عَنِ نَفْسِهِ وَإِنَّ لَوْنِ الضَّرِيقِينَ ﴿٥١﴾

ذَلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ
لَا يَهْدِي كَيْدَ الْخَائِنِينَ ﴿٥٢﴾

१ हज़रत यूसुफ ने देखा कि राजा अब मेहरबानी करना चाहता है तो उन्होंने इस तरह सिर्फ़ शाही मेहरबानी से जेल से निकलना नहीं चाहा, बल्कि अपने किरदार की बुलंदी और पाकीज़गी के साबित करने को प्राथमिकता (तरज़ीह) दी ताकि दुनिया के सामने आप के किरदार का ख़ुबसूरती और बुलंदी वाज़ेह हो जाये, क्योंकि अल्लाह की ओर से दावत देने वाले के लिये ये सच्चाई, पकीज़गी और नेक किरदार बहुत ज़रूरी है।

५३. और मैं अपने मन की पाकीजगी का वयान नहीं करती, बेशक मन तो बुराई की प्रेरणा देने वाला ही है,^१ लेकिन यह कि मेरा रब ही अपना रहम करे,^२ बेशक (निश्चय ही) मेरा रब बख्शने वाला रहम करने वाला है।

५४. और राजा ने कहा उसे मेरे सामने लाओ कि मैं उसे अपने निजी कामों के लिये तैनात कर लूँ, फिर जब उस से बातचीत करने लगा तो कहने लगा कि आप हमारे यहाँ आज से वाइफ़जत और अमानतदार हैं।

५५. (यूसुफ ने) कहा कि आप मुझे देश के खजाने पर तैनात कर दीजिये^३ मैं मुहाफिज़ और जानने वाला हूँ।

५६. और इस तरह हम ने यूसुफ को देश की बागडोर दे दी कि वह जहाँ चाहे रहे-सहे, हम जिसे चाहें अपनी रहमत पहुँचा देते हैं, और हम नेकी करने वालों के अमलों का फल बरबाद नहीं करते।

५७. और बेशक ईमानदारों और परहेजगारों का आखिरत का बदला बहुत अच्छा है।

وَمَا أُبْرِيئُ نَفْسِي ۚ إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ
بِالشُّوْءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿٥٣﴾

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أرى فِيكَ اسْتِخْصَاصُ لِنَفْسِي ۚ
فَلَمَّا كَلَّمْتَهُ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِينٌ
أَمِينٌ ﴿٥٤﴾

قَالَ اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ ۚ
إِنِّي حَفِيظٌ عَلَيْكُمْ ﴿٥٥﴾

وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ ۚ يَتَّبِعُونَ
مِنْهَا صِرَاطَ يَسَاءٍ لَّئِن لَّمْ يَكُنْ لَنَا مَبْرُؤُونَ لَأَأْتَيْنَهُمْ
وَلَا نُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٦﴾

وَلَأَجْرُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا
وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٧﴾

^१ यह उस ने अपनी गलती की वजह बताई है कि इंसान का मन ही ऐसा है कि उसे बुराई के लिये उभारता और उकसाता है।

^२ मन के छल से वही महफूज रहता है जिस पर अल्लाह तआला की रहमत हो, जिस तरह कि हजरत यूसुफ को अल्लाह तआला ने बचा लिया।

^३ خزانة (खजाना) बहुवचन (जमा) है خزانة (खजाना) का। खजाना का मतलब है 'कोष' यानी ऐसी जगह को कहते हैं जहाँ चीजे हिफाजत से रखी जाती हैं, धरती के खजाने से मुराद बे भण्डार हैं जहाँ अनाज जमा किया जाता था, इसकी व्यवस्था (तदवीर) अपने हाथ में लेने की इच्छा इसलिये जाहिर की कि करीब मुस्ताक़बिल में (हवाव की ताबीर को देखते हुए) जो सूखे के साल आने वाले थे, उस से निपटने के लिये खास इन्तेज़ाम किये जा सकें और अनाज की काफी तादाद महफूज रखी जा सके।

५८. और यूसुफ के भाई आये और यूसुफ के पास गये तो उस ने उन्हें पहचान लिया और उन्होंने उसे नहीं पहचाना।

५९. और जब उनका सामान तैयार करा दिया तो कहा कि तुम मेरे पास अपने उस भाई को लाना जो तुम्हारे बाप से है, क्या तुम ने नहीं देखा कि मैं नाप भी पूरा कर देता हूँ और मैं हूँ भी अच्छी तरह से मेहमान की इज्जत करने वालों में।

६०. लेकिन अगर तुम उसे मेरे पास लेकर न आये तो मेरी तरफ से तुम्हें कोई नाप नहीं मिलेगा बल्कि तुम मेरे क़रीब भी न आ सकोगे।

६१. उन्होंने कहा ठीक है हम उसके पिता से इस वारे में फुसलाकर पूरी कोशिश करेंगे।

६२. और अपने नौकरों से कहा कि उनका माल उन्हीं की बोरियों में रख दो कि जब लौट कर अपने परिवार में जायेंगे और माल को पहचान लें, तो बहुत मुमकिन है कि यह फिर आयें।

६३. जब ये लोग लौटकर अपने बाप के पास गये तो कहने लगे हम से तो अनाज का नाप रोक लिया गया, अब आप हमारे साथ भाई को भेजिये कि हम नाप भर कर लायें हम उसकी हिफाजत के जिम्मेदार हैं।

وَجَاءَ إِخْوَتُهُ يُوسُفَ قَدْ خَلَوْا عَلَيْهِ

فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُتْرَبُونَ ﴿٥٨﴾

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِبَاجٍ

لَكُمْ مِنْ أَيْدِيكُمْ أَلَا تَرَوْنَ أَنَّ أَوْفَى الْكَيْلِ

وَأَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٥٩﴾

فَإِنْ لَمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ

عِنْدِي وَلَا تَقْرَبُونِ ﴿٦٠﴾

قَالُوا سَوَّادُ عُنْتِهِ آيَةٌ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ﴿٦١﴾

وَقَالَ لِفِتْيَانِهِ اجْعَلُوا بِضَاعَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ

لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ

لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦٢﴾

فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَىٰ أَيْدِيهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا

الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا آخَانًا نَكْتَلُ وَإِنَّا لَهُ

لَحَظُونَ ﴿٦٣﴾

१ यह उस वक्त का वाक़ेआ है जब ख़ुशहाली के सात साल ख़त्म होकर सूखा शुरू हो गया, जिस ने मिस्र देश के ज्यादातर इलाक़े को पीड़ित कर दिया, यहाँ तक कि कनआन तक भी उसका असर पहुंचा, जहाँ हज़रत याक़ूब और हज़रत यूसुफ़ के भाई निवास करते थे। हज़रत यूसुफ़ ने इस से निपटने के लिये जो तदबीर की थी, वे कामयाब हुईं और हर तरफ़ से लोग हज़रत यूसुफ़ से अनाज लेने के लिये आ रहे थे, हज़रत यूसुफ़ की प्रसिद्धि (शुहरत) कनआन तक भी पहुँची कि मिस्र का राजा इस तरह अनाज विक्री कर रहा है, इसलिए पिता के हुक्म पर यूसुफ़ के भाई भी घर की पूंजी लेकर अनाज हासिल करने के लिये राजदरबार में पहुँचे, जहाँ हज़रत यूसुफ़ बैठे थे, जिन्हें ये भाई तो न पहचान सके, लेकिन यूसुफ़ ने अपने भाईयों को पहचान लिया।

२ بَاجٍ (फ़ित्थान) का मतलब है नौजवान, जिस से मुराद है नौकर, सेवक और दास, जो राजदरबार में तैनात थे।

६४. (याकूब ने) कहा कि क्या मैं इस के बारे में तुम्हारा वैसे ही यकीन कर लूँ जैसे इस से पहले उसके भाई के बारे में यकीन किया? वस अल्लाह तआला ही सब से बेहतर मुहाफिज़ है और वह सभी मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है।

६५. और जब उन्होंने अपना सामान खोला तो अपना माल मौजूद पाया जो उनकी तरफ लौटा दिया गया था, कहने लगे हमारे पिताजी! हमें दूसरा क्या चाहिये? यह हमारा माल हमें लौटा दिया गया है, और हम अपने परिवार के लिये अनाज ला देंगे और अपने भाई की सुरक्षा (हिफाजत) करेंगे और एक ऊँट का नाप ज़्यादा लायेंगे, यह नाप तो ज़्यादा आसान है।¹

६६. (याकूब ने) कहा कि मैं तो उसे कभी तुम्हारे साथ न भेजूंगा जब तक तुम अल्लाह को बीच में रखकर मुझ से वादा करो कि तुम उसे मेरे पास पहुँचा दोगे, सिवाय इसके कि तुम सब क़ैदी बना लिये जाओ, जब उन्होंने पक्का वादा किया तो उन्होंने कहा कि हम जो कुछ कहते हैं अल्लाह उसका संरक्षक (निगहवान) है।

६७. और (याकूब ने) कहा कि ऐ मेरे बच्चो ! तुम सब एक दरवाजे से न जाना, बल्कि कई दरवाजों से अलग-अलग तरह से दाखिल होना,² मैं अल्लाह की तरफ से आयी हुई किसी चीज़ को तुम से टाल नहीं सकता, हुक्म सिर्फ

قَالَ هَلْ آمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا آمَنُكُمْ
عَلَىٰ أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ ۖ قَالَ اللَّهُ خَيْرٌ حِفْظًا
وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٦٤﴾

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ
إِلَيْهِمْ ۖ قَالُوا يَا بَنَاتِ آبَائِنَا مَا تَبِغِينَ ۖ بِيضَاعَتِنَا
رُدَّتْ إِلَيْنَا ۖ وَنَسِيتُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزِدُكَ
كَيْلَ بَعِيرٍ ذَٰلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ ﴿٦٥﴾

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّىٰ تُؤْتُوانِي مَوْثِقَاتِنِ
اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَ بِكُمْ ۖ فَأَلْبَسُوهُ
مَوْبِقَهُمْ ۖ قَالَ اللَّهُ عَلَىٰ مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٦٦﴾

وَقَالَ يَبْنَیُّ لَا تَدْخُلُوا مِن بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا
مِنَ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ۖ وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ

¹ इसका एक मतलब तो यह है कि राजा के लिये एक ऊँट का वजन कोई कठिन काम नहीं है, आसान है। दूसरा मतलब यह है कि اللہ का इशारा उस अनाज की तरफ है जो साथ लाये थे और بَعِير का मतलब थोड़ी तादाद है यानी हम जो अनाज लाये हैं वह थोड़ी तादाद में है, विनयामीन के जाने से हमें ज़्यादा अनाज मिल जायेगा तो अच्छी ही बात है, हमारी जरूरत ज़्यादा अच्छी तरह से पूरी हो जायेगी।

² जब विनयामीन सहित ग्यारह भाई मिस्र जाने लगे तो यह हिदायत की, क्योंकि एक ही बाप के ग्यारह बेटे जो शकल व सूरत में भी बेहतर हों, जब एक साथ एक ही जगह या एक साथ कहीं से गुज़रें तो आम तौर से उन्हें लोग ताज्जुब और हसद से देखते हैं और यही बात नज़र लगने का सबब बनती है, इसलिए उन्हें बुरी नज़र से बचने के लिये तरीका के तौर में यह हिदायत दिया। नज़र लग जाना सच है, जैसाकि नबी करीम ﷺ से भी सहीह हदीस में साबित है।

अल्लाह ही का चलता है, मेरा पूरा यकीन उसी पर है और हर भरोसा करने वाले को उसी पर भरोसा करना चाहिये।

६८. और जब वे उन्हीं रास्तों से जिनका हुक्म उन के बाप ने दिया था गये, कुछ न था कि अल्लाह ने जो बात मुकर्रर कर दी है वह उन्हें उस से ज़रा भी बचा ले, हाँ याकूब के दिल में एक ख्याल (पैदा हुआ) जिस को उस ने पूरा किया। बेशक वह हमारे सिखाये उस इल्म का आलिम था, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

६९. और ये सब जब यूसुफ के पास पहुँच गये तो उस ने अपने भाई को अपने करीब बिठा लिया और कहा कि मैं तेरा भाई (यूसुफ) हूँ, अब तक ये जो कुछ करते रहे उसकी कुछ फिक्र न कर।

७०. फिर जब उनका सामान तैयार कर दिया तो अपने भाई के सामान में अपना पानी पीने का प्याला रख दिया, फिर एक पुकारने वाले ने पुकार कर कहा हे क्राफिला वालों! तुम लोग तो चोर हो।

७१. उन्होंने उन की तरफ मुँह फेर कर कहा कि तुम्हारी क्या चीज खो गयी है?

७२. जवाब दिया कि राजकीय प्याला खो गया है जो उसे ले आये उसे एक ऊँट के बोझ का अनाज मिलेगा, उस वादे का मैं ज़मानतदार हूँ।

७३. उन्होंने कहा, अल्लाह की कसम! तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि हम देश में फ़साद पैदा करने के लिये नहीं आये और न हम चोर हैं।

مِنْ شَيْءٍ إِلَّا إِلَهُ اللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ تَلْتَوَكَّلُ الْمُسَوِّكُونَ ﴿٦٧﴾

وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُم مَّا كَانَ يُغَيِّبُ عَنْهُمْ مِنَ الشَّيْءِ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهَا وَإِنَّهُ لُدَّ وَعْلِيمٌ لِّمَا عَلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٦٨﴾

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ آوَى إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٦٩﴾

فَلَمَّا جَهَّزَهُم بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيُّهَا الْعَجِيزُ إِنَّكُمْ لَسُرُوقُونَ ﴿٧٠﴾

قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا تَفْقَهُونَ ﴿٧١﴾

قَالُوا نَفْقَهُ صَوَاحِ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ وَأَنَا بِهِ زَعِيمٌ ﴿٧٢﴾

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْتَنَا بِتَفْسِيدٍ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سُرُوقِينَ ﴿٧٣﴾

'العجز' हकीकत में उन ऊँटों, गधों और खच्चर को कहा जाता है, जिन पर अनाज लाद कर ले जाया जाता है, यहाँ मुराद اصحاب العير यानी सफर वाले मुसाफिर हैं।

७४. उन्होंने कहा अच्छा चोरी की क्या सजा है अगर तुम झूठे हो।

७५. जवाब दिया कि इसकी सजा यही है कि जिस के सामान में से पाया जाये वही उसका बदला है, हम तो जालिमों को यही सजा दिया करते हैं।

७६. फिर (यूसुफ ने) सामान में खोज शुरू कर दी अपने भाई के सामान की खोज से पहले, फिर उस ने पीने के प्याले को अपने भाई के सामान (थैले) से निकाला, हम ने यूसुफ के लिये इसी तरह यह तदबीर बनाई, उस राजा के कानून के ऐतवार से यह अपने भाई को न ले सकता था, लेकिन यह कि अल्लाह को मंजूर हो, हम जिसका चाहें मर्तबा बुलन्द कर दें, हर आलिम के ऊपर एक बड़ा आलिम मौजूद है।¹

७७. उन्होंने कहा कि अगर इस ने चोरी की तो (ताज्जुब की बात नहीं) इस का भाई भी पहले चोरी कर चुका है, यूसुफ ने यह बात अपने दिल में रख ली और उन के सामने बिल्कुल जाहिर नहीं किया, कहा कि तुम बुरी जगह में हो, और जो तुम बयान कर रहे हो उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है।

७८. उन्होंने कहा कि हे मिस्री अजीज!² इस के पिता बहुत बड़े इंसान हैं, आप इस के बदले हम में से किसी को ले लीजिये, हम देखते हैं कि आप बड़े नेक इंसान हैं।

قَالُوا مَا جَزَاءُ إِنْ كُنْتُمْ كَذِبِينَ ﴿٧٤﴾

قَالُوا جَزَاءُ مَنْ وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ

جَزَاءُ مَا كَفَرْنَا بِهِ نَجِرَى الظَّالِمِينَ ﴿٧٥﴾

فَبَدَأَ بِأَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِعَاءِ أَخِيهِ كَذَلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ مَا كَانَ لِيَأْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَن نَشَاءُ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ﴿٧٦﴾

قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ

فَأَسْرَهَا يُّوسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ

قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ مَشَاقَاتٍ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا

تَصِفُونَ ﴿٧٧﴾

قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ إِنَّ لَهُ أَبًا شَيْخًا كَبِيرًا

فَخُذْ أَحَدًا مِمَّا كَانَتْ أُمَّتًا لَكَ لِنَجِّنَا مِنَ

الْمُحْسِنِينَ ﴿٧٨﴾

¹ यानी हर आलिम से बढ़कर कोई न कोई आलिम होता है, इसलिये कोई आलिम इस घमन्ड में न रहे कि मैं ही अपने वक्त का सबसे बेहतर आलिम हूँ, और कुछ मुफस्सिर कहते हैं कि इसका मतलब है कि हर आलिम के ऊपर सब कुछ जानने वाला अल्लाह तआला है।

² हज़रत यूसुफ को मिस्री अजीज इसलिये कहा गया कि उस वक्त सारे हकीकी अधिकार (हक) हज़रत यूसुफ के पास थे, राजा सिर्फ नाम के लिये ही बादशाह था।

७९. (यूसुफ ने) कहा कि हम ने जिस के पास अपनी चीज पाई है उस के सिवाय दूसरों को बन्दी बनाने से अल्लाह की पनाह चाहते हैं, ऐसा करने से हम बेशक नाइसामी करने वाले हो जायेंगे।

८०. जब यह उससे मायूस हो गये तो एकान्त में बैठकर राय-मशविरा करने लगे, उन में जो सब से बड़ा था उस ने कहा कि तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे पिता ने तुम से अल्लाह को बीच रखकर मजबूत अहद और वादा लिया है और इस से पहले तुम यूसुफ के बारे में गुनाह कर चुके हो, अब तो मैं इस धरती से न हटूंगा जब तक पिता खुद मुझे इजाजत न दें, या अल्लाह तआला मेरे इस मसले का फ़ैसला कर दे, वह सब से अच्छा हाकिम है।¹

८१. तुम सब पिताजी की खिदमत में वापस जाओ और कहो कि हे पिताजी! आप के बेटे ने चोरी की और हम ने वही गवाही दी थी जो हम जानते थे, हम कुछ ग़ैब की हिफाजत करने वाले तो न थे।

८२. और आप उन नगरवासियों से पूछ लें, जहाँ हम थे और उन मुसाफ़िरों से भी पूछ लें जिन के साथ हम आये हैं, और बेशक हम पूरी तरह से सच्चे हैं।²

قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ وَجَدْنَا
مَتَاعَنَا عِنْدَهُ إِذْ نَأْتِيهِمْ إِذَا أَظْلَمُونَ ﴿٧٩﴾

قَلْبًا اسْتَيْسَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا قَالَ كَبِيرُهُمْ
أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ آبَاءَكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوْثِقًا
مِنَ اللَّهِ وَمِنْ قَبْلِ مَا كُذِّبْتُمْ فِي يَوْسُفَ ؕ
كُنَّا نَبْرَحُ الْأَرْضَ حَتَّى يَأْتِيَ بِنَا إِلَى آبَائِنَا
اللَّهُ بِنَا ؕ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ﴿٨٠﴾

ارْجِعُوا إِلَى آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ
سَرَقَ ؕ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا بِمَا عَلَّمْنَا وَمَا كُنَّا
لِلْغَيْبِ حَاطِطِينَ ﴿٨١﴾

وَسَأَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي
أَقْبَلْنَا فِيهَا ؕ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٨٢﴾

¹ अल्लाह मेरे मसले हल कर दे का मतलब है कि किसी तरह (मिस्री अजीज) बिनयामीन को छोड़ दे और मेरे साथ जाने की इजाजत दे दे, या यह मतलब है कि अल्लाह तआला मुझे इतनी ताकत दे कि मैं बिनयामीन को तलवार या ताकत से अज़ाद कराकर अपने साथ ले जाऊँ।

² नगर से मुराद मिस्र है जहाँ वे अनाज लेने गये थे, मतलब अहले मिस्र हैं। इसी तरह الْعِيرُ से मुराद मुसाफ़िरों के साथी हैं, आप मिस्र जाकर अहले मिस्र से और उन मुसाफ़िरों से जिनके साथ सफ़र करके हम आये हैं, पूछ लें कि जो कुछ हम बयान कर रहे हैं वह सच है, इस में झूठ की कोई मिलावट नहीं है।

८३. (याकूब ने) कहा यह तो नहीं बल्कि तुम ने अपनी तरफ से बात बना ली, इसलिए सब ही बेहतर है, हो सकता है कि अल्लाह (तआला) उन सब को मेरे पास ही पहुँचा दे, वह ही आलیم और हिक्मत वाला है।

८४. और फिर उनसे मुँह फेर लिया और कहा हाय यूसुफ! उनकी आँखें दुख-गम की वजह से सफेद हो गयी थी^१ और वह दुख-गम को बरदाश्त किये हुए थे।

८५. (बेटों ने) कहा अल्लाह की कसम! आप हमेशा यूसुफ की याद में ही गुम रहेंगे यहाँ तक कि घुल जायेंगे या मर जायेंगे।

८६. उन्होंने कहा कि मैं तो अपनी मुसीबत और दुख की फरियाद अल्लाह से कर रहा हूँ, मुझे अल्लाह की तरफ से उन बातों का इल्म हासिल है जिन से तुम अंजान हो^२।

८७. मेरे प्यारे बेटे! तुम जाओ और यूसुफ और उस के भाई की भली तरह खोज करो, और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह की रहमत से वही मायूस होते हैं जो काफिर होते हैं।

८८. फिर ये लोग जब यूसुफ के पास पहुँचे तो कहने लगे कि हे अजीज! हम और हमारा परिवार बहुत कठिनाई में है, हम थोड़े से हकीर माल लाये हैं, लेकिन आप हमें पूरे अनाज का नाप दे दीजिये, और हम पर सदका कीजिये, अल्लाह तआला सदका करने वालों को बदला देता है।

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا فَصَبِرْ
جَبِيلٌ وَعَسَى اللَّهُ أَنْ يَأْتِيَنَّكَ بِهِمْ جَمِيعًا
إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ (83)

وَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا سَلْفَى عَلَى يُوسُفَ
وَأَبْيَضَّتْ عَيْنُهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيمٌ (84)

قَالُوا تَاللَّهِ تَفْتُونََا تَذَكُرُ يُوسُفَ حَتَّى تَكُونَ
حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ (85)

قَالَ إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ
وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ (86)

يَبْنَئِي أذْهَبُوا فَتَحَسَّسُوا مِنْ يُوسُفَ وَأَخِيهِ
وَلَا تَأْتِسُوا مِنْ رَوْحِ اللَّهِ إِنَّهُ لَا يَأْتِسُ
مِنْ رَوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ (87)

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا
وَأَهْلَنَا الضَّرُّ وَجُنَّتْ بِرِضَاعِنَا مَرْجُمَةٌ فَأَوْفِ
لَنَا الْكَيْلَ وَكَصِّدْقِي عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي
الْبَتَّانِينَ (88)

^१ यानी इस नये दुख ने यूसुफ की जुदाई के पुराने दुख को भी नया कर दिया।

^२ यानी आँखों की कालिमा (स्याही) दुख के सबब सफेदी में बदल गयी थी।

^३ इस से मुराद तो वह ख़ाब है जिस के बारे में उन्हें पूरा यकीन था कि जरूर साकार होगा और वे यूसुफ के सामने सच्चा रज होंगे या उनका यह यकीन था कि यूसुफ जिन्दा है और उन से जिन्दगी में जरूर मिलन होगा।

८९. (यूसुफ ने) कहा जानते भी हो कि तुम ने यूसुफ और उस के भाई के साथ अपनी जिहालत में क्या-क्या किया ?

९०. उन्होंने कहा क्या (हकीकत में) तू ही यूसुफ है? जवाब दिया हाँ, मैं ही यूसुफ हूँ और यह मेरा भाई है, अल्लाह ने हम पर रहमत और मेहरबानी की। बात यह है कि जो भी परहेजगारी और सब्र से रहे तो अल्लाह (तआला) किसी नेकी करने वाले का बदला बरबाद नहीं करता है।

९१. उन्होंने कहा, अल्लाह की कसम कि अल्लाह ने तुझे हम पर फजीलत अता की है और यह भी सच है कि हम गुनहगार हैं।

९२. जवाब दिया, आज तुम पर कोई इल्जाम नहीं है, अल्लाह तुम्हें माफ करे वह सभी रहम करने वालों में सब से बड़ा रहम करने वाला है।

९३. मेरा यह कुर्ता तुम ले जाओ और मेरे पिता के मुँह पर डाल दो कि वह देखने लगे? और आ जायें, और अपने पूरे परिवार को मेरे पास ले आओ।

९४. और जब ये काफिला विदा हुआ तो उनके पिता ने कहा कि मुझे यूसुफ की खुशबू आ रही है, अगर तुम मुझे नाअक्ल न समझो।^१

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ
وَآخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ﴿٨٩﴾

قَالُوا عَرَفْنَاكَ لَأَنْتَ يُوسُفُ قَالَ أَنَا يُوسُفُ
وَهَذَا إِخْوَتِي قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَن
يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٠﴾

قَالُوا تَاللَّهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللَّهُ عَلَيْنَا
وَلَنْ نُكَأِلَ لُحْيَتِينَ ﴿٩١﴾

قَالَ لَا تَعْرِبْ عَلَيْنَا الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ
لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ ﴿٩٢﴾

إِذْ هَبُوا بِيُقُيُبِي هَذَا فَالْقُوَّةُ عَلَى وَجْهِ ابْنِ
يَاتٍ بَصِيرًا وَأَتَوْتِي بِأَهْلِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩٣﴾

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ إِنِّي لَأَجِدُ
رِيحَ يُوسُفَ لَوْلَا أَنْ تُفْتَدُونَ ﴿٩٤﴾

^१ भाईयों ने जब मिस्री हाकिम के मुँह से उस यूसुफ का बयान सुना, जिसे उन्होंने बचपन में कनआन के एक अधरे कुर्रें में फेंक दिया था तो वे ताज्जुब में पड़ गये और गौर से देखने के लिये मजबूर भी हो गये कि कहीं हम से मुखातिब राजा यूसुफ तो नहीं? बर्ना यूसुफ के हादसे का इल्म उन्हें किस तरह हो सकता है? इसलिए उन्होंने सवाल किया कि क्या तू यूसुफ ही तो नहीं?

^२ कमीज के मुँह पर पड़ने से आँखों की रोशनी का आ जाना एक ताज्जुब और भोजिजा की शकल में था।

^३ उधर वह कमीज लेकर मुसाफिर मिस्र से चले और इधर हजरत याकूब को अल्लाह तआला की तरफ से भोजिजा की तरह हजरत यूसुफ की खुशबू आने लग गयी, यह जैसे इस बात का एलान था कि अल्लाह के पैगम्बर (ईशदूत) को भी, जब तक अल्लाह तआला की तरफ से

१५. वे कहने लगे कि अल्लाह की कसम! आप तो अपनी उसी पुरानी गलती पर कायम हैं।

१६. जब खुशखबरी देने वाले ने पहुँचकर उन के मुँह पर कुर्ता डाला, उसी पल वह दोबारा देखने लगे। कहा कि क्या मैं तुम से न कहा करता था कि मैं अल्लाह की तरफ से वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते

१७. उन्होंने कहा हे पिता! आप हमारे गुनाहों की क्षमा-याचना (मगफिरत की दुआ) कीजिये, बेशक हम गुनहगार हैं।

१८. कहा, अच्छा मैं जल्द ही तुम्हारे लिये अपने रब से माफ़ी की दुआ करूँगा, वह बहुत बड़ा माफ़ करने वाला और बहुत रहम करने वाला है।

१९. जब ये पूरा परिवार यूसुफ़ के पास पहुँच गया तो यूसुफ़ ने अपने माँ-बाप को अपने करीब जगह दी, और कहा कि अल्लाह को मंजूर है तो आप सब सुख-शांति से मिस्र में आ जाओ।

१००. और अपने सिंहासन (तख़्त) पर अपने माँ-बाप को ऊँचे मुकाम पर बिठाया, और सब उस के सामने सज्दा में हो गये^१ और तब कहा

قَالُوا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَبِىْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ ﴿٩٥﴾

فَلَمَّا اَنَّ جَاءَ الْبَشِيْرَ الْاَلْفُ عَلَيْهِ فَارْتَدَّتْ
بَصِيْرًا قَالِ الْمَآءِلُ لَكُمْ اِنِّيْ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ
مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٩٦﴾

قَالُوا يَا اَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا اِنَّا كُنَّا
خٰطِيْنَ ﴿٩٧﴾

قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ اِنَّهُ هُوَ الْعَفُوْرُ
الرَّحِيْمُ ﴿٩٨﴾

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَىٰ يُوْسُفَ اٰذَى الْيَوْمِ اَبُوْهُ وَكَآلٍ
اَدْخَلُوْا مِصْرَانَ شَاءَ اللّٰهُ اٰمِيْنِ ﴿٩٩﴾

وَرَفَعَ اَبُوْهُ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهُ سُجَّدًا
وَقَالَ يَا بَنِيَّ هٰذَا اَنْوِيْلُ رُبِّيَّ مِنْ قَبْلُ ذٰ

जरिया और खबर न पहुँचे तो पैगम्बर अन्जान होता है, चाहे बेटा अपने नगर के किसी कूए में ही क्यों न हो? और जब अल्लाह इतेंजाम कर दे तो मिस्र जैसे दूर-दराज इलाके से भी बेटे की खबर आ जाती है।

^१ फ़ौरन दुआ न करके दुआ का वादा दिया, मक़सद यह था कि रात के आखिरी पहर में जो अल्लाह के खास बन्दों का अल्लाह की इवादात करने का खास बन्त होता है, अल्लाह से उनकी माफ़ी के लिये दुआ करूँगा।

^२ कुछ ने इसका तर्जुमा यह किया है कि इज्जत-एहतेराम के लिये यूसुफ़ के सामने झुक गये, लेकिन وَخَرُّوْا لَهُ سُجَّدًا के लफ्ज बताते हैं कि वे धरती पर यूसुफ़ के सामने माथा रख दिये। यह सज्दा माथा टेकने के मानों में है, फिर भी यह सज्दा एहतेराम के लिये है इबादात के तौर पर नहीं, और लायके एहतेराम सज्दा हज़रत याक़ूब की शरीअत में जायेज था, इस्लाम में शिर्क (मिश्रण) को रोकने के लिये ऐसे एहतेराम के लिए सज्दा करना नाजायेज कर दिया गया, और

कि पिताजी! यह मेरे पहले ख़्वाब की तावीर है, मेरे रब ने उसे पूरा कर दिखाया, उस ने मेरे साथ बड़ा एहसान किया जबकि मुझे जेल से निकाला और आप लोगों को रेगिस्तान से ले आया, उस इख़्तिलाफ़ के बाद जो बैतान ने मुझ में और मेरे भाईयों में डाल दिया था, मेरा रब जो चाहे उस के लिए अच्छी व्यवस्था (तदवीर) करने वाला है और बड़ा जानने वाला हिक्मत वाला है।

१०१. हे मेरे रब ! तूने मुझे मुल्क अता किया और मुझे ख़्वाबों की तावीर का इल्म दिया, हे आकाशों और धरती के पैदा करने वाले ! तू ही दुनिया और आखिरत में मेरा वली और मददगार है, तू मुझे मुसलमान की हालत में मार और नेकी करने वालों में शामिल कर दे।¹⁰¹

१०२. यह शैब की ख़बरो में से है जिसकी हम आप की तरफ़ बहयी कर रहे हैं, और आप उन के पास न थे जबकि उन्होंने अपनी बात ठान ली थी और वे छल और कपट करने लगे थे।

१०३. अगरचे आप लाख चाहें ज्यादातर लोग ईमान वाले न होंगे।

१०४. और आप उन से उस पर कोई मजदूरी नहीं मांग रहे हैं, यह तो सारी दुनिया के लिये नसीहत ही नसीहत है।

قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ (100)

رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَبِي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحَقْنِي بِالصَّالِحِينَ (101)

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ ۗ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ اجْتَمَعُوا لَهُمْ وَهُمْ يُصْرُفُونَ (102)

وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ (103)

وَمَا سَأَلْتَهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنَّهُ هُوَ الْوَكِيلُ (104)

अब एहतेराम के तौर पर भी सज्दा किसी को करना नाजायेज़ है।

¹ अल्लाह तआला ने हज़रत यूसुफ़ पर जो एहसान किये उन्हें याद करके और अल्लाह तआला के दूसरे गुणों (सिफ़ात) का बयान करके दुआ कर रहे हैं कि जब मुझे मौत आये तो इस्लाम की हालत में आये और मुझे सज्जन (पुनीत) पुरुषों के साथ मिला दे। इस से मुराद हज़रत यूसुफ़ के बाप-दादा हज़रत इब्राहीम और इसहाक़ आदि हैं, कुछ लोगों को इस दुआ से यह शक़ पैदा हुआ कि हज़रत यूसुफ़ ने मौत की दुआ की, अगरचे यह मौत की दुआ नहीं है, आखिरी पल तक इस्लाम पर मजबूत रहने की दुआ है।

१०५. और आकाशों और धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं, जिन से ये मुँह फेर कर निकल जाते हैं।

१०६. और उन में से ज्यादातर लोग अल्लाह पर ईमान रखने के बावजूद भी मुशरिक ही हैं।⁽¹⁰⁶⁾

१०७. क्या वे इस बात से बेखौफ हो गये हैं कि उन के पास अल्लाह के अज्ञावों में से कोई आम अज्ञाब आ जाये या उन पर अचानक क़यामत टूट पड़े और वे ग़ाफ़िल हों।⁽¹⁰⁷⁾

१०८. (आप) कह दीजिये मेरा यही रास्ता है, मैं और मेरे पैरोकार अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं, पूरे यक़ीन और ऐतमाद के साथ^३ और अल्लाह पाक है और मैं मूर्तिपूजकों (मिश्रणवादियों) में नहीं।⁽¹⁰⁸⁾

१०९. और आप से पहले हम ने बस्ती वालों में जितने भी रसूल भेजे हैं सब मर्द ही थे, जिन की तरफ़ हम बहयी (प्रकाशना) उतारते गये^३ क्या धरती पर चल-फिर कर उन्होंने नहीं देखा कि उन से पहले के लोग का कैसा नतीजा हुआ? बेशक आख़िरत का घर परहेज़गारों (तक़वा बरतने वालों) के लिये बहुत अच्छा है, क्या तुम फिर भी नहीं समझते?

وَكَآيِنَ مِّنْ آيَاتِ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

يُحٰرَوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ۝۱۰۵

وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ۝۱۰۶

اَفَاْمِنُوْا اِنْ اَتٰتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَدَابِ اللّٰهِ

اَوْ اَتٰتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝۱۰۷

قُلْ هٰذِهِ سَبِيْلِيْ اَدْعُوْا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ

اَنَا وَّمَنْ اٰتٰبَعَنِيْ طَوْسِيْفًا وَّسِيْحًا اللّٰهُ وَمَا اَنَا مِنَ

الْمُشْرِكِيْنَ ۝۱۰۸

وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْ اِلَيْهِمْ قُرْ

اٰهْلَ الْقُرٰى فَاَلَمْ يَسِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا

كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَلَوْ اِنَّا

اِلَّا خِرَةٌ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰتَقَوْا اَفَلَا يَتَعْقِلُوْنَ ۝۱۰۹

¹ यह वह हकीकत है जिसे क़ुरआन ने कई जगहों पर बड़ी वज़ाहत के साथ बयान किया है कि ये मूर्तिपूजक यह क़बूल करते हैं कि आकाश और धरती का ख़ालिक, मालिक, रब और संचालक (मूर्तज़िम) केवल अल्लाह तआला ही है, लेकिन इस के बावजूद इबादत में अल्लाह के साथ दूसरों की भी शामिल कर लेते हैं, और इस तरह ज्यादातर लोग मुशरिक हैं, यानी हर युग के लोग तौहीद इबादत (पूजा) को मानने के लिये तैयार नहीं होते हैं, आज के क़त्ब पूजने वालों का शिर्क भी यही है कि वह क़त्बों में गड़े बुजुर्गों को इबादत का हक़दार समझकर उन्हें मदद के लिये पुकारते भी हैं और इबादत की कई रीतियाँ भी अपनाते हैं।

² यानी यह तौहीद (एकेस्वरवाद) का रास्ता ही मेरा रास्ता है, बल्कि तमाम पैगम्बरों का यही रास्ता रहा है, इसी की तरफ़ मैं और मेरे पैरोकार मजबूत ईमान के साथ और दीनी क़ानूनों के सुबूतों के साथ लोगों को बुलाते हैं।

³ यह आयत इस बात का सुबूत है कि सभी नबी मर्द हुए हैं, औरतों से किसी को भी नबूअत का पद नहीं मिला, इसी तरह उनका सम्बन्ध (तआल्लुक) नगरों से था, उन में से कोई भी ग्रामीण (ग्रामवासियों) में से न था, क्योंकि ग्रामीण और देहाती नगरवासियों के मुक़ाबिल आम तौर से कठोर और अख़लाक में सज़त होते हैं और नगरवासी उनकी मुक़ाबिल नर्म, आसान और सभ्य (मुहज़ज़ब) होते हैं और यह ख़ुबियाँ नबूअत के लिये ज़रूरी हैं।

११०. यहाँ तक कि जब रसूल मायूस होने लगे और उम्मत के लोग यह ख्याल करने लगे कि उन्हें झूठ कहा गया, फौरन हमारी मदद उन्हें आ पहुँची, जिसे हम ने चाहा उसे नजात अता की, बात यह है कि हमारा अजाब गुनहगारों से वापस नहीं किया जाता।

१११. इन की कहानियों में अक्लमंदों के लिये बिला शुब्हा नसीहत और तंबीह है, यह कुरआन झूठ बनायी हुई बातें नहीं, बल्कि यह तसदीक है, उन किताबों के लिये जो इस से पहले की हैं, और हर चीज का तफसीली बयान और हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिये।

सूरतु राअद-१३

सूर: अल-राअद मदीने में उतरी और इस में तैतालीस आयतें और छः रकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अलिफ़ • लाम • मीम • रा • । ये कुरआन की आयतें हैं और जो कुछ आप की तरफ आप के रब की तरफ से उतारा गया है सब सच है, लेकिन ज़्यादातर लोग ईमान नहीं लाते (यकीन नहीं करते)।

२. अल्लाह वह है जिस ने आकाशों को बिना खभों के ऊँचा कर रखा है कि तुम उसे देख रहे हो, फिर वह अर्श पर कायम है^१ उसी ने सूरज

حَتَّىٰ إِذَا اسْتَيْسَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ قَدْ كُنُوا جَاءَهُمْ نَصْرٌ مِّنَّا فَانصَبُوا بِمَن شَاءُوا وَلَا يَرَوْنَ بَأْسَنَا عَنِ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿١١٠﴾

لَقَدْ كَانَ فِي قَصصِهِمْ عِبْرَةٌ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۗ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَىٰ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾

سُورَةُ الرَّعْدِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْقُرْآنُ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَأَنْزَلْنَاهُ فِي أَنْزَالٍ عَلَيْكَ مِن رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلَٰكِن أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١﴾

اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ أَسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

^१ यानी यह कुरआन जिस में यह यूसुफ़ की कहानी और दूसरी कौमों के वाक़ेआत का बयान है, कोई गढ़ा हुआ नहीं है बल्कि यह पहले की किताबों की तसदीक करने वाला और उसमें धर्म के विषयों सभी ज़रूरी बातों का तफसीली बयान है और ईमानवालों के लिये सीधा रास्ता और रहमत है।

^२ «इस्तवा अलल अर्श» का मतलब इस से पहले बयान हो चुका है कि इस से मुराद अल्लाह तआला का अर्श पर स्थिर होना है। मोहदेसीन (हदीसों के आलिमों) का यही रास्ता है, वह इसका तफसीली ख्याल नहीं करते, जैसे कुछ दूसरे गिरोह इस में और रब के दूसरे अवसाफ़ में कपट कल्पना करते हैं।

और चाँद को ताबे बना रखा है, हर एक मुकर्रर वक़्त तक चल रहा है, वही काम की तदबीर करता है, वह अपनी निशानियाँ खोल-खोल कर बयान कर रहा है कि तुम अपने रब से मिलने का यकीन कर लो।

३. और उसी ने धरती को फैला कर बिछा दिया और उस में पहाड़ और नदियाँ पैदा कर दी हैं, और उस में हर तरह के फलों के जोड़े दोहरे-दोहरे पैदा किये हैं। वह रात से दिन को छिपाता है, निश्चय ही गौर व फ़िक्र करने वालों के लिये उस में बहुत-सी निशानियाँ हैं।

४. और धरती में कई तरह के टुकड़े एक-दूसरे से मिले-जुले हैं, और अगूरों के वाग है और खेत है और खजूरों के पेड़ हैं शाखाओं वाले, और कुछ ऐसे हैं जो शाखाओं वाले नहीं, सब एक ही पानी से सींचे जाते हैं, फिर भी हम एक को एक पर फलों में फ़ज़ीलत देते हैं, इस में अक्लमंदों के लिये बहुत सी निशानियाँ हैं।

५. और अगर तुझे ताज्जुब हो तो हकीकत में उनका यह कहना आश्चर्यजनक (ताज्जुबख़ेज) है कि क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम नया जन्म लेंगे, यही वह लोग हैं जिन्होंने अपने रब से कुफ़्र किया, और यही हैं जिनकी गर्दनो में फंदे होंगे, और यही हैं जो नरक में रहने वाले हैं जो उस में हमेशा रहेंगे।

६. और जो तुझ से सज़ा की माँग में जल्दी कर रहे हैं सुख से पहले ही, बेशक उन से पहले (मिसाल के तौर पर) सज़ायें आ चुकी हैं, और बेशक तेरा रब माफ़ करने वाला है, लोगों के बेजा जुल्म पर भी, और यह भी निश्चित बात है कि तेरा रब सख़्त सज़ा देने वाला भी है।

كُلٌّ يَجْرِي لِجَلِّ مَسْمَىٰ طَيِّدٌ بِرُؤُوسِ الْأَمْرِ يُفْضِلُ

الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ﴿٢﴾

وَهُوَ الَّذِي مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ

وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ

وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ

وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ

وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ

وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ

وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ

وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَوَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ

وَإِنْ تَعْجَبَ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ إِذَا كُنَّا تُرَابًا

ءَأَنَا لِكَيْ خَلِقَ حَبِيبًا أَوْ لِيكِ الذُّيُنَ كَفَرُوا

بِرَبِّهِمْ وَأُولَئِكَ الْأَعْمَلُ فِي أَعْمَالِهِمْ وَأُولَئِكَ

أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٥﴾

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ

وَقَدْ خَلَّتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلُ وَإِنَّ رَبَّكَ

لَذُو مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلَىٰ ظُلْمِهِمْ وَإِنَّ رَبَّكَ

لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٦﴾

1 इसका एक मतलब यह है कि नर और मादा दोनों बनाये जाँसाकि मौजूदा तहकीकात ने इसकी तसदीक़ कर दी है, दूसरा मतलब (जोड़े-जोड़े का) यह है कि मीठा-खट्टा, ठंड-गर्म, स्याह-सफेद और मजेदार और बेमजा इसी तरह एक-दूसरे से अलग और विपरीत (मुखतलिफ़) तरह का पैदा किया।

७. और काफिर (कृत्घ्न) कहते हैं कि उस पर उस के रब की तरफ से कोई निशानी (चमत्कार) क्यों नहीं उतारी गयी? बात यह है कि आप तो केवल बाखबर करने वाले हैं और हर कौम के लिये हिदायत करने वाला है।¹

८. मादा अपने पेट में जो कुछ रखती है, उसे अल्लाह तआला अच्छी तरह जानता है,² और पेट (गर्भाशय) का घटना-बढ़ना भी,³ हर चीज़ उसके पास अंदाजे से है।

९. छिपी और खुली बातों का वह इल्म रखने वाला है, सब से बड़ा और सब से ऊँचा और सब से अच्छा है।

१०. तुम में से किसी का अपनी बात छुपा कर कहना और ऊँची आवाज़ में उसे कहना और जो रात को छिपा हो और जो दिन में चल रहा हो, सब अल्लाह पर बराबर है।

११. उस के सुहाफिज इंसान के आगे पीछे तैनात हैं, जो अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफाजत करते हैं, किसी कौम की हालत अल्लाह (तआला) नहीं बदलता जब तक कि वे खुद न बदलें जो उनके दिल में है। अल्लाह (तआला) जब किसी कौम को सज़ा देने का फैसला कर लेता है तो वह बदला नहीं करता, और सिवाय उस के कोई भी उनका संरक्षक (निगाहबान) भी नहीं।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ طَائِفًا مِمَّنْ مُنذِرًا لِّئَلَّا يَقُولُوا مَا هِيَ إِلَّا آيَاتُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٧﴾

اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْوِيلُ كُلُّ أُنْثَىٰ وَمَا تَغِيصُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِإِقْدَارٍ ﴿٨﴾

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ﴿٩﴾

سَوَاءٌ مِنْكُمْ مَن أَسَرَ الْقَوْلَ وَمَن جَهَرَ بِهِ وَمَن هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ﴿١٠﴾

لَهُ مُعَقِّبَاتٌ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنْفُسِهِمْ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ سُوءًا فَلَا مَرَدَ لَهُ ۗ وَمَا لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ ءَالٍ ﴿١١﴾

¹ यानी हर कौम की हिदायत के लिये अल्लाह तआला ने पैगम्बर अवश्य भेजा है, यह अलग बात है कि कौमों ने यह रास्ता अपनाया या नहीं अपनाया, लेकिन सीधा रास्ता दिखाने के लिये सदेशवाहक हर कौम के अंदर अवश्य आया।

² माता के पेट में क्या है? नर है या मादा, खूबसूरत है या बद्सूरत, नेक है या बद, लम्बी उम्र या कम उम्र? सभी बातें केवल अल्लाह तआला ही जानता है।

³ इस से मुराद गर्भ की मुदत है जो आम तौर से नौ माह होती है, लेकिन घटती और बढ़ती भी है, किसी वक्त यह दस माह और किसी वक्त सात-आठ माह हो जाती है, इसका भी इल्म अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं।

१२. वह अल्लाह ही है जो तुम्हें बिजली की चमक डराने और उम्मीद दिलाने के लिये दिखाता है और भारी बादलों को पैदा करता है।¹

१३. और गर्ज उसकी तारीफ और महिमा (तस्बीह) वयान करती है और फरिश्ते भी उस के डर से, वही आकाश से बिजली गिराता है और जिस पर चाहता है उस पर डालता है। काफिर अल्लाह के बारे में लड़-झगड़ रहे हैं और अल्लाह सख्त ताक़त वाला है।

१४. उसी को पुकारना सच है, जो लोग दूसरों को उस के अलावा पुकारते हैं वे उनकी किसी पुकार का जवाब नहीं देते, जैसे कोई इंसान अपने हाथ पानी की तरफ फैलाये हुए हो कि उस के मुँह में पड़ जाये जबकि वह पानी उस के मुँह में पहुँचने वाला नहीं² उन काफिरों की जितनी पुकार है सभी गुमराह है।

१५. और अल्लाह ही के लिये आकाशों और धरती के सभी जीव खुशी और नाखुशी से सज्दा करते हैं और उनकी छाया भी सुबह और शाम।

१६. (आप) पूछिये कि आकाशों और धरती का रब कौन है? कह दीजिये अल्लाह। कह दीजिये क्यों तुम फिर भी इस के सिवाय दूसरों को मददगार बना रहे हो जो खुद अपनी जान के भी

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ حَوَاقٍ وَطَمَعًا
وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ
يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ ۚ وَهُوَ شَدِيدُ الْحِسَابِ ﴿١٣﴾

وَيَسْخِرُ الرِّعْدَ بِحَبِطٍ وَالسَّيْلِكَةَ مِنْ حَقِيقَةٍ ۚ
وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ
يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ ۚ وَهُوَ شَدِيدُ الْحِسَابِ ﴿١٣﴾

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ
لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ بِشَيْءٍ ۗ إِلَّا كَبَاسِطٍ كَفَّيْهِ
إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهِ ۗ وَمَا
دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿١٤﴾

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا
وَكَرْهًا وَظَلَمَهُمُ بِالْغَدُوَّةِ وَالْأَصَالِ ﴿١٥﴾
قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ ۗ
قُلْ إِنَّمَا أَخَذْتُمُ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ

¹ भारी बादलों से मुराद वह वादल जिन में बारिख का पानी होता है।

² यानी जो अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को मदद के लिये पुकारते हैं, उनकी भिसाल ऐसी है जैसे कोई इंसान दूर से पानी की तरफ अपनी हथेलियाँ फैलाकर पानी से कहे कि तू मेरे मुँह तक आ जा, जाहिर है कि पानी न चलने वाला है, उसे पता नहीं कि हथेलियाँ फैलाने वाले की जरूरत क्या है? और न उसे यह पता है कि वह मुझे अपने मुँह तक पहुँचने की माँग कर रहा है। और न उस में यह ताक़त है कि अपनी जगह से चलकर उसके हाथ या मुँह तक पहुँच जाये। इसी तरह ये मूर्तिपूजक अल्लाह के सिवाय जिनको पुकारते हैं, उन्हें न यह पता है कि कोई उन्हें पुकार रहा है और उसकी अमुक (फलाँ) जरूरत है, और न उस जरूरत को पूरा करने की उन में ताक़त ही है।

भले-बुरे का हक नहीं रखते, कह दीजिये क्या अंधा और आँखों वाला बराबर हो सकता है? या क्या अंधेरा और उजाला बराबर हो सकता है? क्या जिन्हें ये अल्लाह का साझीदार बना रहे हैं उन्होंने भी अल्लाह की तरह पैदा की है कि उनके देखने में पैदाईश सिंदिध (मृतशाविह) हो गई? कह दीजिये कि केवल अल्लाह ही सभी चीजों का पैदा करने वाला है वह अकेला है और जबरदस्त मालिक है।

१७. उसी ने आकाश से वर्षा की फिर अपनी अपनी शक्ति अनुसार नाले यह निकले, फिर पानी के धारे नें ऊपर चढ़कर झाग को उठा लिया, और उस चीज में भी जिसको आग में डाल कर तपाते हैं जेवर या सामान के लिये उसी तरह के झाग हैं, इसी तरह अल्लाह तआला सच और झूठ को वाजेह करने की मिसाल देता है। अब झाग बेकार होकर चला जाता है, लेकिन जो लोगों को फायदेदा पहुँचाने वाली चीजें हैं, वह धरती में ठहरी रहती हैं, अल्लाह (तआला) इसी तरह मिसाल दिया करता है।

لَا تَنفِيهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي
الْأَعْمَى وَالْبَصِيرُ أَمْ هَلْ يَسْتَوِي الظُّلُمُتُ
وَالنُّورُ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا
كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ قُلْ اللَّهُ
خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٦﴾

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌ بِقَدَرِهَا
فَأَحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا أَلْبَابًا وَمِمَّا يُوقَدُ مِنْ عِلْيِهِ
فِي النَّارِ أَنْبِغَاءٌ حَلِيمَةٌ أَوْ مَتَاعٌ زَبَدٌ مِثْلُهٗ
كَذَلِكَ يُضْرِبُ اللَّهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۗ فَأَمَّا الزُّبُرُ
فَمِيدَ هَبٍ حِفَاءً ۗ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَمَا مَكَدُ
فِي الْأَرْضِ ۗ كَذَلِكَ يُضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ ﴿١٧﴾

¹ यानी जिस तरह अंधा और आँख वाला बराबर नहीं हो सकते, उसी तरह एकेश्वरवादी (मुवाहिद) और अनेकश्वरवादी (मुशरिक) बराबर नहीं हो सकते, इसलिये एक अल्लाह के पुजारी का दिल तौहीद की रोशनी से कामिल है, जबकि दूसरों के पुजारी उस से महरूम हैं, एकेश्वरवादी की आँखें हैं, वह एकेश्वरवाद का नूर देखता है और दूसरों के पुजारी को यह एकेश्वरवाद का नूर दिखायी नहीं पड़ता, इसलिये वह अंधा है। इसी तरह जिस तरह अंधेरा और उजाला बराबर नहीं हो सकते। एक अल्लाह का पुजारी जिसका दिल नूर से कामिल है, और एक मूर्तिपूजक (अनेकश्वरवादी) जिहालत और गुमराही के अधेरो में भटक रहा है, बराबर नहीं हो सकते।

² यानी जब सच और झूठ का आपस में सामना और टकराव होता है तो झूठ को उसी तरह करार नहीं मिलता जिस तरह से बाढ़ की धारा का झाग पानी के साथ धातों का झाग, जिनको आग में तपाया जाता है, धातों के साथ बाकी नहीं रहता बल्कि खत्म और बरबाद हो जाता है।

१८. जिन लोगों ने अपने रब के हुक्मों का पालन किया उन के लिये भलाई है, और जिन लोगों ने उस के हुक्म की पैरवी न की अगर उन के लिये धरती में जो कुछ है सब कुछ हो, और उस के साथ वैसा ही दूसरा भी हो तो वह सब कुछ अपने बदले में दे दें, यही है जिन के लिये बुरा हिसाब है, और उनका ठिकाना नरक है जो बहुत बुरी जगह है।

لَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ اَلْحُسْنٰى ۗ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوْا لَهُ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِى الْاَرْضِ جَمِیْعًا ۙ وَمِثْلَهُ مَعًا لَا فَنَدَ ۙ وَاٰیٰهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْءُ الْحِسَابِ ۗ وَمَا وَّوَدُّهُمْ جَهَنَّمُ ۙ وَاَنْ يَّسَّ الْوِجَادُ ﴿۱۸﴾

१९. क्या वह इंसान जो यह इल्म रखता हो कि जो आप की तरफ आप के रब की तरफ से उतारा गया है वह हक है, उस इंसान जैसा हो सकता है जो अंधा हो, नसीहत तो वही कुबूल करते हैं जो अकलमद हों।

اَلَمَنْ يَّعْلَمْ اَنَّكَ اَنْزَلْتَ اِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ الْحَقَّ ۙ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ۙ وَاَمَّا يَتَذَكَّرُ اُولُو الْاَلْبَابِ ﴿۱۹﴾

२०. जो अल्लाह को दिये गये वादे को पूरा करते हैं और वादा नहीं तोड़ते।^१

اَلَّذِينَ يُؤْفِقُوْنَ بِهٖدِ اللّٰهِ ۙ وَلَا يَنْقُصُوْنَ اَلْمِيْثَاقَ ﴿۲۰﴾

२१. और अल्लाह (तआला) ने जिन चीजों को जोड़ने का हुक्म दिया है वह उसे जोड़ते हैं, और वे अपने रब से डरते हैं और हिसाब की सख्ती का डर रखते हैं।

وَالَّذِينَ يَصِلُوْنَ مَا اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْءَ الْحِسَابِ ﴿۲۱﴾

२२. और वे अपने रब की खुशी के लिये सब्र करते हैं, और नमाजों को लगातार कायम रखते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें दे रखा है उसे खुले और छुपे तौर से खर्च करते हैं, और मुराई को भी भलाई से टालते हैं, उन्हीं के लिये आखिरत का घर है।

وَالَّذِينَ صَبَرُوْا اَبْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ ۙ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۙ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا ۙ وَاَعْلَانِيَةً ۙ وَيَذَرُوْنَ بِالْحَسَنِ السَّيِّئَةَ ۙ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَقِبٰى الدَّارِ ﴿۲۲﴾

^१ यानी एक वह इंसान जो कुरआन की सच्चाई पर यकीन रखता हो और दूसरा अंधा हो, यानी उसे कुरआन की सच्चाई पर शक हो, क्या ये दोनों बराबर हो सकते हैं? सवाल नकारात्मक (मंफ़ी) है यानी ये दोनों उसी तरह बराबर नहीं हो सकते जिस तरह आग और पानी या सोना और ताँबा और उसकी मैल-कुचैल बराबर नहीं हो सकते।

^२ इस से मुराद वह आपसी सुलह और वादा है जो इंसान आपस में एक-दूसरे से करते हैं या वह जो उन के और उन के रब के बीच है।

२३. और हमेशा रहने के बाग' जहाँ ये खुद जायेंगे और उन के बज्रुगों और बीवियों और औलाद में से भी जो नेक काम करने वाले होंगे, उन के करीब फरिश्ते हर दरवाजे से आयेंगे ।

२४. (कहेगे कि) तुम पर सलामती (शान्ति) हो सब के बदले, क्या ही अच्छा बदला है इस आखिरत के घर का ।

२५. और जो लोग अल्लाह के वादे को उस की मजबूती के बाद तोड़ देते हैं और जिन चीजों के जोड़ने का अल्लाह का हुक्म है उन्हें तोड़ देते हैं, और धरती में फसाद फैलाते हैं, उन के लिए लानत है और उन के लिए बुरा घर है ।^१

२६. अल्लाह (तआला) जिसकी रोजी चाहता है बढ़ाता है और घटाता है, ये तो दुनिया के जीवन में मस्त हो गये,^२ अगरचे कि दुनिया आखिरत के मुकाबले में बहुत हकीर पूजी है ।^३

२७. काफिर कहते हैं कि उस पर उसके रब की तरफ से कोई निशानी (चमत्कार) क्यों उतारी नहीं गयी? जवाब दीजिये कि जिसे अल्लाह भटकाना चाहे भटका देता है और जो उसकी तरफ झुके उसे रास्ता दिखा देता है ।

جَثَّتْ عَدْنٌ يَدٌ خَلُونَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ
أَبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّتِهِمْ وَالْبَرِيكَةِ
يَدٌ خَلُونٌ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ (۲۳)

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ (۲۴)

وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ
وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ
وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ
وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ (۲۵)

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْبَشِيئَةَ الدُّنْيَا وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ (۲۶)

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ
مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ
وَيَهْدِي إِلَىٰ آلِهِ مَنْ آتَابَ (۲۷)

^१ अदन का मतलब है हमेशा-हमेशा रहने वाले बाग ।

^२ यह नेको के साथ बुरों के नतीजे का बयान कर दिया ताकि इंसान इस नतीजा से बचने की कोशिश करे ।

^३ किसी को अगर दुनिया का माल ज्यादा मिल रहा है, जबकि वह अल्लाह का नाफरमान है तो यह खुश और बेफिक्र होने का मुक़ाम नहीं, क्योंकि यह मौका है, पता नहीं कब यह मुद्दत ख़त्म हो जाये और अल्लाह की पकड़ में जकड़ लिया जाये ।

^४ हदीस में आता है कि दुनिया की कीमत आखिरत के मुकाबिल इस तरह है जैसे कोई इंसान अपनी उंगली समुद्र में डिबो कर निकाले तो देखे कि समुद्र के पानी के मुकाबिल उसकी उंगली में कितना पानी आया?

३२. और बेशक आप से पहले के पैगम्बरों के साथ मजाक किया गया था और मैंने भी काफिरों को ढील दी थी, फिर उन्हें पकड़ लिया था तो मेरा अजाब कैसा रहा?

३३. तो क्या वह अल्लाह जो खबर लेने वाला है हर इंसान का उसके किये हुए अमल पर, और उन लोगों ने अल्लाह के साक्षीदार ठहराये हैं, कह दीजिये जरा उनके नाम तो लो, या तुम अल्लाह को वह बातें बताते हो जो वह धरती पर जानता ही नहीं, या केवल ऊपरी-ऊपरी बातें बना रहे हो,¹ बात हकीकत यह है कि कुफ्र करने वालों के लिए उन के छल भले ही सुझाये गये हैं, और वे सच्चे रास्ते से रोक दिये गये हैं, और जिसे अल्लाह भटका दे उसे रास्ता दिखाने वाला कोई नहीं।

३४. उन के लिये दुनियावी जिन्दगी में भी दुख है, और आखिरत (परलोक) का अजाब तो बहुत सख्त है, और उन्हें अल्लाह के गज़ब से बचाने वाला कोई नहीं।

३५. उस जन्नत की मिसाल जिसका वादा परहेजगारों को किया गया है यह है कि उस के नीचे नहरें बह रही हैं, उसके फल हमेशा रहने वाले हैं और उस की छाया भी, यह है बदला परहेजगारों का और काफिरों का अंजाम नरक है।

३६. और जिन्हें हम ने किताब अता की है वे तो जो कुछ आप पर उतारा जाता है उस से खुश होते हैं, और दूसरे सम्प्रदाय (फिरके) उस की कुछ बातों को क़बूल नहीं करते हैं, आप एलान कर दीजिये कि मुझे तो केवल यही हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूँ और

وَلَقَدْ اسْتَهْزَيْتُمْ بِرُسُلِنا مِنْ قَبْلِكَ فَاَمَلَيْتُمْ
لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتَهُمْ بِكَيْفِ كَانَ

عِقَابِ ﴿۳۲﴾

اَفَمَنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَى كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ
وَجَعَلُوا لِلّٰهِ شُرَكَاءَ قُلُوبًا سَوَّاهُمْ وَاَمْرًا تَكْتُمُوْنَ
بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْاَرْضِ اَمْ يَبْظَاهِرُ مِنَ الْقَوْلِ
بَلْ زَيْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرَهُمْ وَصَدُّوا عَنِ
السَّبِيْلِ وَاَمَنْ يُضِلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿۳۳﴾

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَكَعَذَابِ الْاٰخِرَةِ
اَشْقٰءٌ وَاَمَّا لَهُمْ مِنَ اللّٰهِ مِنْ اٰقَابِ ﴿۳۴﴾

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۗ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ كُلَّمَا دَخَلُوهَا وَظَلَمُوْهَا تَبَدَّلَ لَكَ عَفْوَ
الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۗ وَاَعْفٰى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ﴿۳۵﴾

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنَهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَا اُنزِلَ
اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ بَعْضَهُ ۗ قُلْ
اِنَّمَا اُمِرْتُ اَنْ اَعْبَدَ اللّٰهَ وَلَا اُشْرِكَ بِهِ ۗ
اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مٰرِبٌ ﴿۳۶﴾

¹ यहाँ **ظاهراً** (जाहिर) कल्पना के मतलब में है, यानी यह केवल उनकी ख्याली बातें हैं। मतलब यह है कि तुम इन मूर्तियों की पूजा इस ख्याल से करते हो कि ये लाभ-हानि पहुंचा सकती हैं और तुम ने उन के नाम भी देवता रखे हुए हैं। अगरचे ये नाम तुम्हारे और तुम्हारे बुजुर्गों के रखे हुए हैं, जिनका कोई सुबूत अल्लाह ने नाज़िल नहीं किया, ये केवल ख्याल और मनमानी करते हैं। (सूर: अल-नज्म-२३)

उस के साथ साझीदार न बनाऊँ, मैं उसी की तरफ दावत दे रहा हूँ और उसी की तरफ मेरा ठिकाना होना है।

३७. और इसी तरह हम ने इस कुरआन को अरबी भाषा का फरमान उतारा है,^१ और अगर आप ने उनकी इच्छाओं (ख्वाहिशों) की पैरवी की इसके बावजूद कि आप के पास इल्म आ चुका है तो अल्लाह (के अज्ञावों) से आप का न हिमायती मिलेगा और न हिफाजत करने वाला।^२

३८. और हम आप से पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं और हम ने उन सब को बीबी और औलाद वाला बनाया था, किसी रसूल से नहीं हो सकता कि कोई निशानी बिना अल्लाह की मर्जी के ले आये, हर मुकर्रर वादे की एक किताब है।

३९. अल्लाह जो चाहे मिटा दे और जो चाहे महफूज रखे, सुरक्षित किताब (लौहे महफूज) उसी के पास है।^३

४०. और उन से किये हुए वादों में से कोई अगर हम आप को दिखा दे या आप को हम मौत दे दें, तो आप पर केवल पहुँचा देना ही है, हिसाब तो हमें लेना है।

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ حُكْمًا وَعَرَبِيًّا ۗ وَكَانَ اتَّبَعَتْ
أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۗ مَا لَكَ
مِنَ اللَّهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَلَا وَاقٍ ﴿٣٧﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ
أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۗ وَمَا كَانَ لِرُسُلِنَا أَنْ يَأْتِي
بِآيَةٍ إِلَّا بَأْذِنَ اللَّهِ ۗ ذَلِكَ لِجَلِّ كِتَابِ ﴿٣٨﴾

يَسْخَرُوا اللَّهَ مَا يَشَاءُ وَيُفْسِدُ ۗ
وَعِنْدَهُ أُمُّ الْكِتَابِ ﴿٣٩﴾

وَإِنْ مَا تُرِيدُكَ بَعْضَ النَّبِيِّ نَعِدُكُمْ
أَوْ تَوَكَّلِيكُمْ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ وَعَلَيْنَا
الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾

^१ यानी जिस तरह से आप के पहले के रसूलों पर भी स्थानीय भाषा (मकामी जवान) में किताबें नाजिल की गयीं उसी तरह आप पर कुरआन हम ने अरबी भाषा में उतारा है, इसलिए कि आप के पहले सम्बोधित (मुख़ातब) अरबी लोग हैं, जो केवल अरबी भाषा ही जानते हैं, अगर यह कुरआन किसी दूसरी भाषा में नाजिल होता तो यह इनकी समझ से ऊपर होता और हिदायत हासिल करने में इन के लिये बहाना हो जाता, हम ने कुरआन को अरबी भाषा में नाजिल करके यह बहाना भी दूर कर दिया।

^२ यह हकीकत में मुसलमानों के दीनी इल्म रखने वालों को तंबीह है कि वे संसार के वक़्ती लाभ के लिये कुरआन और हदीस के साफ़ फरमान की तुलना में लोगों की ख्वाहिशों के पीछे न लगे, अगर वह ऐसा करेंगे तो उन्हें अल्लाह के अज्ञाव से बचाने वाला कोई नहीं होगा।

^३ इसका एक मतलब तो यह है कि वह जिस आदेश को चाहे मिटा दे और जिसे चाहे बाक़ी रखे। दूसरा मतलब यह कि उस ने जो तक्रदीर में लिख रखा है उस में वह बदलता रहता है, उस के पास लौहे महफूज है जिसकी तसदीक कुछ हदीसों से होती है।

४१. क्या वे नहीं देखते कि हम धरती को उस के किनारों से घटाते चले आ रहे हैं ? अल्लाह हुक्म करता है और कोई उस के हुक्म को पीछे डालने वाला नहीं, वह जल्द हिसाब लेने वाला है।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا تَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۗ وَاللَّهُ يَحْكُمُ لِمَا مَعْقُوبَ يَحْكُمُهُ ۗ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ①

४२. और उन से पहले के लोगों ने भी अपने छल-कपट में कमी न की थी लेकिन सभी व्यवस्था (तदबीर) अल्लाह ही की हैं, जो इंसान कुछ कर रहा है अल्लाह के इल्म में है, काफिरों को अभी मालूम हो जायेगा कि उस लोक (आखिरत) का बदला किस के लिये है।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَبَدَّلَ اللَّهُ أَمْكُرَهُمْ جَبِيحًا ۗ يَعْلَمُ مَا تَكْتُمُ كُلُّ نَفْسٍ ۗ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرِينَ ۗ لِمَنْ عَقَّبَى الْذَارِ ②

४३. और यह काफिर कहते हैं कि आप अल्लाह के रसूल नहीं। (आप) जवाब दीजिये कि मुझ में और तुममें अल्लाह गवाही देने वाला काफी है, और वह जिसके पास किताब का इल्म है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسْتَ مُرْسَلًا ۗ قُلْ كُنِيَ بِإِلَهِهِمْ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ۗ وَمَنْ عِنْدَ اللَّهِ عِلْمُ الْكِتَابِ ③

सूरतु इब्राहीम-१४

سُورَةُ اِبْرَاهِيمَ

सूर: इब्राहीम मक्का में उतरी और इसकी वावन आयतें हैं और सात रकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

१. अलिफ-लाम-र-ा, यह (सब से अच्छी) किताब हम ने आप की तरफ उतारी है कि आप लोगों को अंधेरे से उजाले की तरफ लायें उन के रब के हुक्म से, जबरदस्त तारीफ वाले अल्लाह के रास्ते की तरफ।

الَّذِي كَتَبَ آتْرَافَهُ إِلَيْكَ لِنُجِّجَ النَّاسِ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۗ بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ①

१ किताब से मुराद हकीकी किताब है, और मुराद तौरात और इंजील का इल्म है, यानी अहले किताब में वे लोग जो मुसलमान हो गये हैं, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम, सलमान फारसी और तमीम दारी बगैरह। यानी यह भी जानते हैं कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ, अरब के मूर्तिपूजक खास मसलों में अहले किताब से सवाल करते और उन से पूछते थे, अल्लाह तआला ने उनको हिदायत अता किया कि अहले किताब जानते हैं, उन से तुम पूछ लो। कुछ आलिम कहते हैं कि किताब से मुराद कुरआन है और किताब का इल्म रखने वाले मुसलमान हैं, और कुछ आलिमों ने किताब से मुराद लौहे महफूज (सुरक्षित पुस्तक) लिया है।

२. जिस अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों और धरती में है, और काफ़िरों (नाशुक्रों) के लिये सख्त अजाब की मुसीबत है ।

३. जो आख़िरत (परलोक) के मुक़ाबले में दुनियावी जिन्दगी का मोह करते हैं और अल्लाह की राह से रोकते हैं और उस में टेढ़ापन पैदा करना चाहते हैं, यही लोग परले दर्जे की गुमराही में हैं ।

४. और हम ने हर नबी (सदेशवाहक) को उसकी क़ौमी (राष्ट्रीय) भाषा में ही भेजा है ताकि उन के सामने वाज़ेह तौर से बयान कर दे, अब अल्लाह जिसे चाहे भटका दे, और जिसे चाहे रास्ता दिखा दे, वह ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है ।

५. (याद करो जब कि) हम ने मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा कि तु अपनी क़ौम को अंधेरे से उजाले में निकाल, और उन्हें अल्लाह के उपकार (एहसान) याद दिला, इस में निशानियाँ हैं हर सब करने वाले के लिये ।

६. और जिस वक़्त मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह के वे नेमत याद करो जो उस ने तुम पर की हैं, जबकि उसने तुम्हें फिरऔन के साथियों से आज़ाद किया जो तुम्हें बहुत दुख पहुँचाते थे, तुम्हारे बेटों को क़त्ल करते थे और तुम्हारी बेटियों को जिन्दा छोड़ते थे, इस में तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर बहुत बड़ी आजमाइश थी ।

७. और जब तुम्हारे रब ने तुम्हें आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्रिया अदा करोगे तो बेशक मैं तुम्हें ज़्यादा अता करूँगा, और अगर तुम नाशुक्रे होगे तो निश्चय मेरा सख्त अजाब है ।

اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ
وَوَيْلٌ لِّلْكَٰفِرِيْنَ مِنْ عَذٰبِ شٰرِبِيْنَ ۝۲

الَّذِيْنَ يَسْتَعْجِلُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلٰى الْاٰخِرَةِ
وَيَصُدُّوْنَ عَنِ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عَوَجًا
اَوْ تَكِيْفًا فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ۝۳

وَمَا اَرْسَلْنَا مِنْ رُّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسٰنِ قَوْمِهِ
لِيُبَيِّنَ لَهُمْ فَوَظِلُّ اللّٰهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي
مَن يَشَاءُ ۗ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝۴

وَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِآيٰتِنَا اَنْ اُخْرِجَ قَوْمَكَ
مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَذَكَرَهُمْ بِآيٰتِنَا اللّٰهُ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صٰبِرٍ شٰكِرٍ ۝۵

وَإِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
اِذْ اَنْجَاكُمْ مِّنْ اِلٍ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْكُمْ سُوْءًا
الْعٰدٰبِ وَيَدْبِخُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَرِيْسَتِكُمْ
نِسَاةً كٰفِرٰتٍ فَاذْكُرُوْا ذٰلِكُمْ بَلَاءًا مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمًا ۝۶

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِن شَكَرْتُمْ لَأَزِيْدَنَّكُمْ
وَكَوْنُ كٰفِرًا اِنَّ عَذٰبِيْ لَشَدِيْدٌ ۝۷

¹ ایام اللہ سے مراد اल्लाह के वे उपकार (एहसान) हैं जो इस्राईल की औलाद पर किये गये, जिनका तफ़्सीली बयान पहले कई बार आ चुका है । या ایام وقایع کے मानے میں ہے یانے वे घटनायें उन को याद दिला जिन से ये गुजर चुके हैं, जिन में अल्लाह तआला के ख़ास एहसान हुए जिन में से कुछ का बयान यहाँ पर आ रहा है ।

८. और मूसा ने कहा कि अगर तुम सब और धरती पर रहने वाले सभी लोग अल्लाह की नाशुकी करें तो भी अल्लाह महान (बेनियाज) और तारीफ वाला है।

९. क्या तुम्हारे पास तुम्हारे पहले के लोगों की खबर नहीं आई? यानी नूह की कौम की और आद और समूद की, और उन के वाद वालों की जिन्हें अल्लाह के सिवाय दूसरा कोई नहीं जानता उन के पास उन के रसूल मोजिजे (चमत्कार) लाये, लेकिन वे अपने हाथ अपने मुँह में फेर ले गये। और वाजेह तौर से कह दिया कि जो कुछ तुम्हें देकर भेजा गया है हम उसे नहीं मानते हैं, और जिस चीज की तरफ तुम हमें दावत दे रहे हो हमें तो उस में बहुत बड़ा शक है (हमें यकीन नहीं)।

१०. उन के रसूलों ने उन से कहा कि क्या अल्लाह (जो सच है) उस के बारे में शक है जो आकाशों और धरती का पैदा करने वाला है, वह तो तुम्हें इसलिये बुला रहा है ताकि वह तुम्हारे सारे गुनाह माफ कर दे, और एक मुक़रर वक़्त तक तुम्हें मौक़ा अता करे, उन्होंने कहा कि तुम तो हम जैसे ही इंसान हो, तुम चाहते हो कि हम को उन देवताओं की पूजा से रोक दो जिनकी पूजा हमारे बुजुर्ग करते रहे, अच्छा तो कोई हमारे सामने वाजेह दलील पेश करो।^१

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرًا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا فَإِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ حَمِيدٌ ⑧

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوحٍ
وَإِدْرِيذَ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ
لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ إِذْ جَاءَهُمْ رَسُولُهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ فِي آفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا
إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكِّ
مِمَّا تَدْعُونَنَا إِلَيْهِ مُرِيبٌ ⑨

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَلِي اللَّهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ مَدِينُ عَوْلِهِمْ لِيُغْفِرَ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ
وَيُذَكِّرَ كُفْرًا إِلَىٰ آجَلٍ مُسَمًّى قَالُوا إِنْ أَنْتُمْ
إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا مُرْسِلُونَ أَنْ تَصَدُّوْنَا
عَمَّا كَانُوا يَعْبُدُ آبَاءَنَا فَأَنُوتَنَا بِسُلْطِينِ
مُؤْمِنِينَ ⑩

^१ मुफ़ररों ने इस के कई मानों का जिक्र किया है। १- जैसे उन्होंने अपने हाथ अपने मुँह में रख लिये और कहा कि हमारा तो केवल एक ही जवाब है कि हम तुम्हारी रिवालत को कुबूल नहीं करते हैं। २- उन्होंने अपनी उंगलियों से अपने मुँह की तरफ इशारा कर के कहा कि होशियार रहो और ये जो पैग़ाम लेकर आये हैं उन की तरफ रज़ूअ न करो। ३- उन्होंने अपने हाथ मुँह पर मज़ाक़ और ताज़ुब से रख लिये, जिस तरह से एक इंसान हँसी दबाने के लिये ऐसा करता है। ४- उन्होंने अपने हाथ रसूलों के मुँह पर रख कर कहा चुप रहो। ५- गुस्ता और जलन के सबब अपने हाथ अपने मुँह में ले लिये।

^२ निशानियाँ और मोजिजे हर नबी के साथ होते थे, इस से मुराद ऐसी दलील और मोजिजा है,

११. उन के पैगम्बरों ने उन से कहा कि यह तो सच है कि हम तुम जैसे इंसान हैं, लेकिन अल्लाह (तआला) अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपनी कृपा करता है,^१ अल्लाह के हुक्म के बिना हमारी ताकत नहीं कि हम कोई मोजिजा तुम्हें ला दिखायें, और ईमानवालों को केवल अल्लाह (तआला) पर भरोसा रखना चाहिये।

१२. और आखिरकार क्या सबब है कि हम अल्लाह (तआला) पर भरोसा न रखें, जबकि उसी ने हमें हमारा रास्ता दिखाया है, और जो दुख तुम हमें दोगे हम उन पर यकीनन सब्र ही करेंगे, भरोसा रखने वालों को यही मुनासिब है कि अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये।

१३. और काफिरों ने अपने रसूलों से कहा कि हम तुम्हें देश से निकाल देंगे या तुम फिर से हमारे धर्म में लौट आओ, तो उन के रब ने उनकी ओर वहयी (प्रकाशना) भेजी कि हम उन जालिमों का ही नाश कर देंगे।

१४. और उस के बाद हम खुद तुम्हें धरती पर बसायेंगे, यह है उन के लिये जो मेरे सामने खड़े होने से डर रखें और मेरी चेतावनी (तबीह) से डरते रहें।

१५. और उन्होंने निर्णय (फैसला) मांगा, और सभी सरकार अड़ियल लोग नाकाम हो गये।

१६. उसके सामने नरक है जहाँ उन्हें पीप का पानी पिलाया जायेगा।^२

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ
وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسِّرُ عَلَىٰ مَنِ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
وَمَا كَانَ لَنَا أَنْ نَأْتِيَكُمْ بِسُلْطِينٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ
وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿۱۱﴾

وَمَا لَنَا أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَىٰ اللَّهِ وَقَدْ هَدَانَا سُبُلَنَا
وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَىٰ مَا أَدْبَرْتُمُونَا وَعَلَىٰ اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿۱۲﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ
مِنْ أَرْضِنَا أَوْ لَتَعُوذُنَّ فِي مِلَّتِنَا فَأَذَىٰ إِلَيْهِمْ
رَبُّهُمْ فَهُمْ لَهَا كَافِرُونَ ﴿۱۳﴾

وَلَنُصَلِّنَّكُمْ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ذَٰلِكَ
لِمَنْ خَافَ مَقَامِي وَخَافَ وَعَبِيدِ ﴿۱۴﴾

وَاسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَلٍ عَنِيْدِ ﴿۱۵﴾

مِنْ دَرَاهِمٍ جَهَنَّمَ وَيُسْفَىٰ مِنْ مَّاءٍ صَدِيدِ ﴿۱۶﴾

जिसे देखने की उनकी इच्छा होती थी, जैसे मक्का के मूर्तिपूजकों ने रसूलुल्लाह ﷺ से कई तरह के मोजिजे दिखाने की मांग की थी, जिसका बयान सूर: बनी इस्राईल में आयेगा।

^१ रसूलों ने पहले संदेहों का जवाब दिया कि बेशक हम तुम जैसे इंसान ही हैं, लेकिन तुम्हारा यह समझना गलत है कि इंसान रसूल नहीं हो सकता। अल्लाह तआला इंसानों की हिदायत के लिये इंसानों में से ही कुछ इंसानों को वहयी (प्रकाशना) और रिसालत के लिये चुन लेता है और तुम सभी में से यह उपकार (इन्आम) अल्लाह ने हम पर किया है।

^२ पीप या वह खून है जो नरक में जाने वालों के गोश्त और खालों से बहा होगा। कुछ

१७. जिसे तकलीफ से घूट-घूट पियेगा, फिर भी उसे गले से उतार न सकेगा और उसे हर जगह से मौत आती दिखायी देगी, लेकिन वह मरने वाला नहीं, फिर उस के पीछे सख्त अजाब है।

१८. उन लोगों की मिसाल जिन्होंने अपने रब से कुफ्र किया उन के आमाल (कर्म) उस राख की तरह हैं जिस पर तेज हवा आधी वाले दिन चले, जो भी उन्होंने किया उस में से किसी चीज पर समर्थ (क्रादिर) न होंगे, यही दूर का भटकाव है।

१९. क्या तुने नहीं देखा कि अल्लाह तआला ने आकाशों को और धरती को सर्वश्रेष्ठ प्रबन्ध (तदबीर) से पैदा किया है, अगर वह चाहे तो तुम सब को तबाह कर दे और नई सृष्टि (मखलूक) ले आये।

२०. और अल्लाह पर यह काम कुछ भी कठिन नहीं।

२१. और सब के सब अल्लाह के सामने खड़े होंगे, उस वक्त कमजोर लोग घमन्ड वालों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे ताबेदार थे तो क्या तुम अल्लाह के अजाबों से कुछ अजाब हम से दूर कर सकने वाले हो, वे जवाब देंगे कि अगर अल्लाह हमें हिदायत देता तो हम भी तुम्हें हिदायत देते, अब तो हम पर बेकरारी और

يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسَبِّغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ
مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ مُّوْتٍ
وَرَأَاهُ عَذَابَ عَظِيمٍ ۝۱۷

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ
إِسْتَدْرَكَتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ ۝
لَا يَقْدِرُونَ مَتَا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ذَلِكَ هُوَ
الضَّلَالُ الْعَظِيمُ ۝۱۸

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۝
إِنْ يَشَاءُ يُدْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۝۱۹

وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۝۲۰

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ
اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ
مُعْتَدُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ۝
قَالُوا لَوْ كُنَّا نَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ لَهَادِيكُمْ سَوَاءَ عَلَيْنَا
أَجْرُ عَنَّا أَمْ صَبْرًا مِمَّا كُنَّا مِنْكُمْ جَمِيعِينَ ۝۲۱

हदीसों में इसे «عصارة أهل النار» (सुसनद अहमद हिस्सा ५, पेज १७१) (नरकवासियों के शरीर से निचोड़ा हुआ) और कुछ हदीसों में है कि यह इतना गर्म और उबलता हुआ होगा कि उन के मुंह के निकट पहुंचते ही उन के चेहरे की खाल झुलस कर गिर पड़ेगी और एक घूट पीते ही पेट की आँतें पाखाना के रास्ते से निकल पड़ेंगी। اعدانا الله منه

१ यानी सभी महश्चर के मैदान (फैसले वाले दिन जहाँ सभी जना होंगे) में अल्लाह के सामने होंगे, कोई कहीं छिप नही सकेगा।

सब्र रखना दोनों बराबर है, हमारे लिये कोई छुटकारा नहीं।

२२. और जब काम का फैसला कर दिया जायेगा तो शैतान कहेगा कि अल्लाह ने तो तुम्हें सच वादा दिया था और मैंने तुम को जो वादा दिया उस के खिलाफ किया, मेरा कोई दबाव तुम पर तो था ही नहीं, हाँ मैंने तुम्हें पुकारा और तुम ने मेरी मान ली, अब तुम मुझ पर इल्जाम न लगाओ, बल्कि खुद अपने आप को धिक्कारो, न मैं तुम्हारी मदद कर सकता और न तुम मेरी फरियाद को पहुँचने वाले, मैं तो (शुरू से) मानता ही नहीं कि तुम मुझे इस से पहले अल्लाह (तआला) का साझीदार समझते रहे, बेशक ज़ालिमों के लिये दुखदायी अज़ाब है।

२३. और जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये वे उन स्वर्गों (जन्नतों) में दाखिल किये जायेंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही हैं जहाँ वे हमेशा रहेंगे अपने रब के हुक्म से, जहाँ उनका ख़ैर मक़दम (स्वागत) सलाम ही सलाम से होगा।^१

२४. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) ने पाक वात की मिसाल (उदाहरण) एक पाक (पवित्र) पेड़ जैसा बयान किया जिसकी जड़ मजबूत है और जिसकी शाखायें आकाश में हैं।

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرَانِ اللَّهُ وَعَدَّكُمْ وَعَدَّ الْحَقُّ وَوَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي ۗ فَلَا تَلْمُزُونِي وَلَوْ مَوْءَا أَنفُسِكُمْ وَمَا أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِمُصْرِخِي ۗ إِنِّي كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾

وَأَدْخَلَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ لَا يُغَيَّرُ عَنْهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ﴿٢٣﴾

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَلْحَةَ كَشَجَرَةٍ طَلْحَةَ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَفَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ﴿٢٤﴾

^१ यह बुरे लोगों और काफ़िरों के मुकाबले में परहेजगारों और ईमान वालों का बयान है, इनका बयान उन के साथ इसलिये किया गया है कि ताकि लोगों के अन्दर ईमान के काम अपनाये की रूचि और ह्वाहिश पैदा हो।

^२ यानी आपस में उनका स्वागत एक-दूसरे को सलाम करना होगा, इस के सिवाय फ़रिश्ते भी हर दरवाजे से दाखिल करके उन्हें सलाम करेंगे।

२५. जो अपने रब के हुक्म से हर वक्त अपने फल लाता है। और अल्लाह (तआला) लोगों के सामने मिसालों को बयान करता है ताकि वे नसीहत हासिल करें।

२६. और खबीस बात की तुलना गन्दे पेड़ जैसी है जो धरती के कुछ ही ऊपर से उखाड़ लिया गया, उसे कुछ ठहराव तो है नहीं।^{२५}

२७. ईमानवालों को अल्लाह (तआला) पक्की बात के साथ क्रायम रखता है, दुनियावी जिन्दगी में भी और आखिरत में भी। हाँ ज़ालिम इंसानों को अल्लाह (तआला) भटक देता है, और अल्लाह जो चाहे कर डाले।

२८. क्या आप ने उनकी तरफ नज़र नहीं डाली, जिन्होंने अल्लाह की नेमत के बदले नाशुकी जाहिर की और अपनी क़ौम को तबाही के घर में ला उतारा।^{२६}

२९. यानी नरक में जिस में यह सब जायेंगे जो बुरा ठिकाना है।

تَوَدَّىٰ أَكْلَهَا كُلَّ حِينٍ بِأَذْنِ رَبِّهَا ۗ وَيَصْرُبُ
اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٥﴾

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيثَةٍ اجْتُثِّتَتْ
مِنَ فَوْقِ الْأَرْضِ مَالَهَا ۗ مِنَ قَرَارٍ ﴿٢٦﴾

يُحَدِّثُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ
فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ ۗ وَيُضِلُّ اللَّهُ
الْقَالِمِينَ ۗ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ﴿٢٧﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا
وَآحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ﴿٢٨﴾

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا ۗ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ﴿٢٩﴾

१ इसका मतलब यह है कि ईमानवालों की मिसाल उस पेड़ जैसा है जो गर्मी और सर्दी हर मौसम में फल देता है। इसी तरह ईमानवालों के नेकी के काम रात-दिन के हर पल में आकाश की तरफ ले जाये जाते हैं, "पाक कलिमा" से इस्लाम या لا اله الا الله और पाक पेड़ से खजूर का पेड़ मुराद है जैसाकि हदीस से साबित है। (सहीह बुखारी, किताबुल इल्म, बाबुल फहम फिलइल्म और सहीह मुस्लिम, किताबुल सिफातिल कियाम, बाब मिस्लुल मोमिन मिस्लुल नख़ल:)

२ "बुरे वाक्य" से मुराद कुफ़र और 'बुरे पेड़' से इन्द्रायन का पेड़ मुराद है जिसकी जड़ धरती के ऊपर ही होती है और जरा इशारे से उखाड़ जाती है, यानी काफिर के अमल की कोई कीमत नहीं है, न वे आकाश पर जाते हैं और न अल्लाह के दरबार में कुबूल होते हैं।

३ इसकी तफसीर सहीह बुखारी में है कि इस से मुराद मक्का के काफिर हैं। (सहीह बुखारी, तफसीर सूर: इब्राहीम) जिन्होंने मोहम्मद ﷺ की रिसालत की मुखालफत करके बद्र की जंग में मुसलमानों से लड़ा कर अपने लोगों को क़त्ल करवा डाला था।

३०. और उन्होंने अल्लाह के बराबर बना लिये कि लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटकायें। (आप) कह दीजिये कि ठीक है मजा उड़ा लो तुम्हारा मुकाम तो आखिर में नरक ही है।

३१. मेरे ईमान वाले वन्दों से कह दीजिये कि नमाज को कायम रखें और जो कुछ हम ने उन्हें दे रखा है उस में से कुछ छिपाकर और खुल कर के खर्च करते रहें, इस से पहले कि वह दिन आ जाये जिस में न कोई खरीदो फरोख्त होगी न दोस्ती और प्रेम।¹

३२. अल्लाह वह है जिस ने आकाशों और धरती को पैदा किया है और आकाशों से बारिश कर के उस के जरिये तुम्हारी रोजी के लिये फल निकाले है और नावों को तुम्हारे बस में कर दिया है कि नदियों में उस के हुकम से चले फिरें, उसी ने नदियाँ और नहरें तुम्हारे बस में कर दी है।

३३. उसी ने तुम्हारे लिये सूरज और चाँद को अधीन (मुसख़बर) कर दिया है कि बराबर ही चल रहे हैं, और रात-दिन को भी तुम्हारे काम में लगा रखा है।²

३४. और उसी ने तुम्हें तुम्हारी मुंह मांगी सभी चीजों में से दे रखा है, अगर तुम अल्लाह की नेमतों गिनना चाहो तो उन्हें पूरा गिन भी नहीं सकते, बेशक इंसान बड़ा जालिम और नाशुक्रा है।

وَجَعَلُوا لِيَوْمِهِمْ أَنْدَادًا يُضِلُّونَ عَنْ سَبِيلِهِ ۗ
قُلْ تَتَّبِعُوا فَإِنِ مَوِجِبُكُمْ إِلَى النَّارِ ۖ

قُلْ لِيُحَادِثِي الَّذِينَ آمَنُوا يُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا
مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً مِّن قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ
يَوْمٌ لَا يَبِيعُ فِيهِ وَلَا يَخْتَلَىٰ ۖ

أَلَلَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ
رِزْقًا لَّكُمْ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ
فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ۖ

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَائِبِينَ ۖ
وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۖ

وَأَشْرَكُمْ مِمَّنْ كُنَّ مَسَاسِلُهُمْ ۖ وَإِنْ تَعَدَّوْا
نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَافِرٌ
كَلْبًا ۖ

¹ नमाज कायम करने का मतलब है कि उसे अपने बक्त पर और सुन्नत के मुताबिक और खुशूअ और विनम्र (मुतबज्जेह) होकर अदा किया जाये जिस तरह से नबी ﷺ की "सुन्नत" है। "इफाक" का मतलब है जकात अदा करना, क़रीबी रिश्तेदारों के साथ रहम किया जाये और दूसरे गरीबों पर उपकार किया जाये, यह नहीं कि अपनी जरूरतों और अपने ऊपर खूब खर्च किया जाये और अल्लाह के बतलाये हुए मुकामों पर खर्च करने से बचा जाये। क़यामत का दिन ऐसा होगा जहाँ न खरीद-फरोख्त मुमकिन होगी न कोई दोस्ती ही किसी के काम आयेगी।

² रात-दिन उनका आपसी अन्तर (फर्क) जारी रहता है, कभी रात-दिन का कुछ हिस्सा लेकर लम्बी हो जाती है और कभी दिन-रात का कुछ हिस्सा लेकर लम्बा हो जाता है, और यह सिलसिला दुनिया की इब्तेदा से चल रहा है, इस में बाल बराबर अन्तर नहीं आया।

३५. (इब्राहीम की यह दुआ भी याद करो) जब इब्राहीम ने कहा हे मेरे रब ! इस नगर को सलामती वाला बना दे, और मुझे और मेरी औलाद को मूर्तिपूजा से महफूज रख ।

३६. हे मेरे रब ! उन्होंने बहुत से लोगों को रास्ते से भटका दिया है, अब मेरा पैरोकार मेरा है और जो नाफरमानी करे तो तू बहुत ही माफ़ और रहम करने वाला है ।

३७. हे मेरे रब ! मैंने अपनी कुछ औलाद इस बंजर जंगल में तेरे पाक घर के करीब बसायी है । हे मेरे रब ! यह इसलिये कि वे नमाज कायम करें इसलिए तू कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ मायेल कर दे, और उन्हें फलों का रिज़क अता कर ताकि ये शुक्रिया अदा करें ।

३८. हे हमारे रब ! तू अच्छी तरह जानता है जो हम छिपायें और जो जाहिर करें, धरती और आकाश की कोई चीज़ अल्लाह से छिपी नहीं ।

३९. अल्लाह की तारीफ है, जिस ने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक अता (प्रदान) किये, बेशक मेरा रब (अल्लाह) दुआओं का सुनने वाला है ।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ
أَمِنًا ۖ وَأَجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ ۗ ﴿٣٥﴾

رَبِّ إِنَّهُمْ أَضَلُّنَا كَثِيرًا ۖ مِّنَ النَّاسِ ۗ لَمَن
تَبِعَنِي فَإِنَّهُ مِنِّي ۖ وَمَنْ عَصَانِي فَإِنَّكَ
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٣٦﴾

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بُرُوجَ عَدِيٍّ ذُو
عَدْنٍ بَيْنَكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ
أَفْئِدَةً مِنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِنَ
الشَّرَائِعِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ ﴿٣٧﴾

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ
وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ ﴿٣٨﴾

أَلْحَسَدُ لِلَّهِ الْكِبَرُ وَحَبَّ لِي عَلَى الْكِبَرِ
إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۚ إِنَّ رَبِّي لَسَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٩﴾

1. "इस नगर" से मुराद मक्का है, दूसरी दुआओं (प्रार्थनाओं) से पहले यह दुआ की कि इसे सलामती वाला बना दे, इसलिये कि सलामती होगी तो लोग दूसरे उपकारों से भी सही तरीके से फायदेमंद हो सकेंगे । वरना सलामती के बिना सभी सुख-सुविधाओं (ऐशो-आराम) के बावजूद डर, खौफ की छाया इंसान को बेचैन और परीखान रखती है ।

2. इबादतों (आराधनाओं) में से केवल नमाज की चर्चा किया, जिस से नमाज की अहमियत बाजेह होती है ।

४०. हे मेरे रब! मुझे नमाज़ का पाबन्द रख और मेरी औलाद को भी। हे मेरे रब! मेरी दुआ कुबूल कर।

رَبِّ اجْعَلْ لِي مَعِيشَةً صَالِحَةً وَاجْعَلْ لِي مَعِيشَةً صَالِحَةً
رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءَنَا ④०

४१. हे हमारे रब ! मुझे माफ़ी अता कर और मेरे मा-बाप को भी माफ़ कर दे, और दूसरे ईमानवालों को भी माफ़ कर, जिस दिन हिसाब होने लगे।

رَبَّنَا الْخَطِيئَةَ وَالْأَسْأَلَةَ
يَوْمَ الْحِسَابِ ④१

४२. जालिमों के अमलों से अल्लाह को अन्जान न समझ, वह तो उन्हें उस दिन तक मौका दिये हुए है जिस दिन आँखें फटी रह जायेंगी।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ
إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيهِ الْأَبْصَارُ ④२

४३. वे अपने सिर उठाये दौड़ भाग कर रहे होंगे, खुद अपनी तरफ भी उनकी नज़र न लौटेगी और उन के दिल उड़े और गिरे हुए (शून्य) होंगे।

مُهْطِعِينَ مُقْنِبِينَ رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ
طَرْفُهُمْ وَأَفْئِدَتُهُمْ هَوَاءٌ ④३

४४. और लोगों को उस दिन से होशियार कर दे जब कि उन के करीब अज़ाब आ जायेगा और जालिम कहेंगे कि हे हमारे रब ! हमें बहुत थोड़े करीब के वक़्त तक का ही मौका अता कर दे कि हम तेरा निमन्त्रण (दावत) मान लें और तेरे पैगम्बरों की इत्तेबा में लग जायें, क्या तुम उस से पहले भी क्रसम नहीं खा रहे थे कि तुम्हारे लिये दुनिया से टलना ही नहीं।

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ
الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ
لَّيْسَ لَكَ دَعْوَتُكَ وَتَلْوِيعُ الرَّسُلِ إِلَّا أَلْمَسْتُوا
أَقْسَمْتُمْ لِمَنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِنْ زَوَالٍ ④४

४५. और क्या तुम उन लोगों के घरों में रहते-सहते न थे जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किया, और क्या तुम पर वह मामला खुला नहीं कि हम ने उन के साथ कैसा कुछ किया? हम ने तो

وَسَكَنتُمْ فِي مَسْكِينَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ
وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا
لَكُمْ الْإِمْتَالَ ④५

1 अपने साथ अपनी औलाद के लिये भी दुआ मांगी, जैसे इससे पहले भी अपने साथ अपनी औलाद के लिए भी यह दुआ मांगी कि उन्हें पत्थर की मूर्तियों को पूजने से बचा कर रखना। जिससे मालूम हुआ कि अल्लाह के दीन की तरफ दावत देने वालों को अपने घर वालों की हिदायत और उनकी दीनी तालिम और तरबियत की तरफ से कभी बेफ़िक्र नहीं होना चाहिए।

2 हज़रत इब्राहीम ने यह दुआ उस वक़्त की जब कि अभी उन पर अपने बाप का अल्लाह का दुरमन होना मालूम नहीं हुआ था, जब यह वाज़ेह हो गया कि मेरा बाप अल्लाह का दुरमन है तो उस से अपने को अलग कर लिया, इसलिये कि मूर्तिपूजक के लिये नजात और माफ़ी की दुआ करना जायज़ नहीं, चाहे वह कितना ख़ास और नज़दीकी ही क्यों न हो?

तुम्हारे समझाने को बहुत सी मिसालों को बयान कर दिया।

४६. और यह अपने चाल चल रहे हैं और अल्लाह को उन की सभी चालों का इल्म है, उनकी चालें ऐसी न थी कि उन से पहाड़ अपनी जगह से टल जायें।

४७. आप यह कभी ख्याल न करें कि अल्लाह अपने नबियों से वादा के खिलाफ करेगा, अल्लाह बड़ा जबरदस्त और बदला लेने वाला है।

४८. जिस दिन धरती इस धरती के अलावा दूसरी ही बदल दी जायेगी और आकाशों को भी, और सभी के सभी एक अल्लाह जबरदस्त के सामने होंगे।

४९. और आप उस दिन मुजरिमों को देखेंगे कि जंजीरों में मिले-जुले एक जगह पर जकड़े होंगे।

५०. उन के कपड़े गन्धक के होंगे और आग उन के मुँह पर चढ़ी होगी।

५१. यह इसलिये कि अल्लाह (तआला) हर इंसान को उसके किये हुए अमल का बदला दे, बेशक अल्लाह (तआला) को हिसाब लेते देर नहीं लगेगी।

५२. यह कुरआन² सभी लोगों के लिए सूचना पत्र है कि इस के जरिये वे बाखबर कर दिये जायें और पूरी तरह से मालूम कर लें कि अल्लाह एक ही इबादत के लायक है, और ताकि अबलमंद लोग सोच समझ लें।

وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ
وَإِنْ كَانِ مَكْرُهُمْ لِيَتَزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ (46)

فَلَا تَصْبِرَنَّ اللَّهُ مُخْلِفًا وَعْدًا رُسُلُهُ
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ (47)

يَوْمَ تَبَدَّلَ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمَوَاتُ
وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ (48)

وَتَرَى الْجِبْرِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقْرَّبِينَ فِي
الْأَصْقَادِ (49)

سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطَرِ أَيْنٍ وَتَلْشَى وُجُوهُهُمْ
النَّارُ (50)

لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ
إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ (51)

هَذَا بَلِغٌ لِلنَّاسِ وَلِيُنذِرُوا بِهِ وَيَلْعَلُوا
أَنْتُمْ هُمْ إِلَهُ وَاحِدٌ وَليَكْفُرُوا
الْأَلْبَابِ (52)

¹ यानी अल्लाह ने अपने रसूलों से दुनिया और आखिरत में भदद करने का जो वादा किया है वह बेशक सच है, उस से वादे की मुखालफत मुमकिन नहीं।

² यह इशारा कुरआन की तरफ है या पिछले तफसीलात की तरफ जो «ولا تحسبن الله غافلاً» से बयान किया गया है।

सूरतुल हिज्र-१५

सूर: अल-हिज्र मक्का में उतरी और इसकी निम्नानवे आयतें हैं और छः रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अलिफ़- लाम- रा, यह (अल्लाह की) किताब की आयतें हैं और खुले और वाजेह कुरआन की।

२. वह भी वक़्त होगा जब काफिर अपने मुसलमान होने की कामना करेंगे।

३. आप उन्हें खाता, फायदे उठाने और (झूठी) उम्मीदों में लीन (मशगूल) होता छोड़ दें, वह खुद अभी जान लेंगे।

४. और किसी बस्ती को हम ने हलाक नहीं किया, लेकिन यह कि उस के लिए निर्धारित (मुकर्रर) लेख था।

५. कोई गुट अपनी मौत से न आगे बढ़ता है, न पीछे रहता है।

६. और उन्होंने कहा कि हे वह इंसान! जिस के ऊपर कुरआन उतारा गया है, बेशक तू तो कोई दीवाना है।

७. अगर तू सच्चा ही है तो हमारे पास फरिस्तों को क्यों नहीं लाता?

سُورَةُ الْحَجَرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الرُّبْدُ يَتْلُو آيَاتِ الْكِتَابِ وَقُرَّانٍ
مُّسْتَبِينٍ ①

رُبَّمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ كَانُوا
مُسْلِمِينَ ②

ذُرَّهُمْ يَأْكُلُوا وَيَشْتَبِعُوا وَيَهْتُمُّ الْأَمَلُ
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ③

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ
مَّعْلُومٌ ④

مَا كَتَبْنَا مِنْ أُمَّةٍ أَهْلَكَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ⑤

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ
لَجَاحِلٌ ⑥

لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلْأِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ
الصَّادِقِينَ ⑦

1 जिस बस्ती को भी हम नाफरमानी के सबब हलाक करते हैं तो जल्दी नहीं करते, बल्कि हम ने एक वक़्त मुकर्रर कर रखा है, उस समय तक उस बस्ती वालों को मौका दिया जाता है, लेकिन जब वह मुकर्रर वक़्त आ जाता है तो उन्हें बरबाद कर दिया जाता है फिर वह उस से आगे या पीछे नहीं होते।

८. हम फ़रिश्तों को सच के साथ ही उतारते हैं और उस वक़्त वे अवसर दिये गये नहीं होते ॥

९. बेशक हम ने ही इस कुरआन को उतारा है और हम ही इस के मुहाफिज़ हैं ।

१०. और हम ने आप से पहले की क़ौमों में भी अपने रसूल (लगातार) भेजे ।

११. और (लेकिन) जो भी रसूल (संदेशवाहक) आता, उस का वे मज़ाक उड़ाते ।

१२. पापियों के दिलों में हम इसी तरह यही रचा दिया करते हैं ।

१३. वे इस पर ईमान नहीं लाते और बेशक पहले के लोगों का तरीक़ा (गुज़रा) हुआ है ।

१४. और अगर हम उन पर आकाश में दरवाज़े खोल भी दें और ये वहाँ चढ़ने लग जायें।

१५. जब भी वे यही कहेंगे कि हमें नज़रबंद कर दिया गया है, बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है ।

१६. और बेशक हम ने आकाश में बुर्ज़ें बनाये हैं, और देखने वालों के लिए इसे शोभामान (सुज़य्यन) किया है ।

१७. और उसे हर धिक्कारे शैतान से महफूज़ रखा है ॥^१

مَا نُنزِّلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذًا مُنظَرِينَ ⑧

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَرِئُهُمْ لَخِطُوطٌ ⑨

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شَيْعِ الْأَوَّلِينَ ⑩

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ⑪

كَذَلِكَ نَسُكُّهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ⑫

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ⑬

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ⑭

لَقَالُوا إِنَّمَا سُكَّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَسْحُورُونَ ⑮

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّلْنَاهَا لِلْمُظَلِّمِينَ ⑯

وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيمٍ ⑰

¹ अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि फ़रिश्ते हम हक के साथ ही भेजते हैं, यानी जब हमारी हिम्मत और मर्जी अज़ाब भेजने की होती है तो फिर फ़रिश्ते धरती पर उतारते हैं, और फिर वे अवसर (मुहलत) नहीं दिये जाते तुरन्त नाश कर दिये जाते हैं ।

² مرجوم, رجيم के माना में है पत्थर मारना । शैतान को रज़ीम इसलिए कहा गया है कि यह जब भी आकाश की तरफ जाने की कोशिश करता है तो आकाश से 'शहाब साकिब' (जल्का) उस

१८. हाँ, जो चोरी छुपे सुनने की कोशिश करे उस के पीछे खुला शोला लगता है।¹

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ شِهَابٌ مُّبِينٌ ﴿۱۸﴾

१९. और धरती को हम ने फैला दिया है और उस पर पहाड़ डाल रखे हैं, और उस में हम ने हर चीज निरिचत मात्रा (तादाद) में उगा दी है।

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَوْزُونٍ ﴿۱۹﴾

२०. और उसी में हम ने तुम्हारी रोजियाँ बना दी हैं, और जिन्हें तुम रिज़क देने वाले नहीं हो।

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَسْتُمْ لَهُ بِرِزْقِيْنَ ﴿۲۰﴾

२१. और जितनी भी चीजें हैं, सबका खजाना हमारे पास है,² और हम हर चीज को उस के निर्धारित (मुतअव्यन) मात्रा में उतारते हैं।

وَأِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنزِّلُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَعْلُومٍ ﴿۲۱﴾

२२. और हम बोझल हवायें³ भेजते हैं फिर आकाश से बारिश करके तुम्हें पिलाते हैं, और तुम उसका भण्डार (जखीरा) करने वाले नहीं हो।

وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَاسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ ﴿۲۲﴾

२३. और हम ही जिलाते और मारते हैं और (आखिरकार) हम ही वारिस हैं।

وَأِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِيْهِمْ وَنُمِيتُهُمْ وَإِنَّا لَمَوْلَاهُمْ ﴿۲۳﴾

पर टूट कर गिर पड़ते हैं, फिर रज़ीम धिक्कारे और बुरे के माना में भी इस्तेमाल होता है, क्योंकि जिसे पत्थरों से मारा जाता है, उसे हर तरफ से धिक्कारा और बुरा भी कहा जाता है। यहाँ अल्लाह तआला ने यही फ़रमाया है कि हम ने आकाशों की हिफाज़त की है हर शैतान रज़ीम से, यानी इन सितारों के ज़रिये, क्योंकि ये शैतान को मारते हैं और उसे भागने पर मजबूर कर देते हैं।

¹ इसका मतलब यह है कि शैतान आकाशों पर बातें सुनने के लिए जाते हैं, जिन पर 'बहाव साकिब' (उल्का) टूट कर गिरते हैं, जिन से कुछ तो जल जाते हैं और कुछ बच जाते हैं और कुछ सुन आते हैं।

² कुछ आल्लिमों ने خزائن से मुराद बारिश लिया है, क्योंकि बारिश ही पैदावार का ज़रिया है, लेकिन ज्यादा सही बात यह है कि इस से मुराद सभी मुमकिन खजाना है, जिन्हें अल्लाह तआला अपनी मर्जी और हिक्मत की बिना पर अदम से वजूद में लाता रहता है।

³ हवा को बोझल इसलिए कहा गया है कि यह उन बादलों को उठाती है जिनमें पानी होता है। जिस तरह गर्भवती ऊँटनी को कहा जाता है जो गर्भ में बच्चा उठाये होती है।

२४. और तुम में से आगे बढ़ने वाले और पीछे हटने वाले भी हमारे इल्म में हैं ।

२५. और आप का रव सब लोगों को जमा करेगा, बेशक वह बड़ा हकीम बड़े इल्म वाला है ।

२६. और बेशक हम ने इंसान को खनखनाती (सूखी) मिट्टी से, जो कि सड़े हुए गारे की थी, पैदा किया है ।

२७. और उस से पहले जिन्नात को हम ने लौ (ज्वाला) वाली आग^१ से पैदा किया ।

२८. और जब तेरे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं एक इंसान को काली सड़ी हुई खनखनाती मिट्टी से पैदा करने वाला हूँ ।

२९. तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूँ और उस में अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम सब उस के लिए सज्दा कर देना ।^२

३०. इसलिए सभी फरिश्तों ने सब के सब ने माथा टेक दिया ।

३१. लेकिन इब्लीस, कि उस ने सज्दा करने वालों में शामिल होने से इंकार कर दिया ।

३२. (अल्लाह तआला ने) कहा, हे इब्लीस! तुझे क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ?

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمَسْتَأْذِنِينَ ۝۲۴

وَأَنَّ رَبَّكَ هُوَ حَظِيرُهُمْ وَأِنَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝۲۵

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَبِآءٍ مَسْنُونٍ ۝۲۶

وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السُّمُورِ ۝۲۷

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَبِآءٍ مَّسْنُونٍ ۝۲۸

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَلَقَعْتَ فِيهِ مِنْ رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سٰٓجِدِينَ ۝۲۹

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝۳۰

إِلَّا إِبْلِيسَ ؕ أَبَىٰ أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّٰجِدِينَ ۝۳۱

قَالَ يَا بٰٓلِغُ ءَأْيِٰ أَنْ تَكُونَ مَعَ السَّٰجِدِينَ ۝۳۲

^१ جن को इसलिए कहा जाता है कि वह आँखों से दिखाई नहीं देते ।

^२ सज्दा का यह हुक्म सम्मान स्वरूप (ताज्जीम के लिए) था, इबादत के तौर में नहीं और चूँकि यह अल्लाह का हुक्म था इसलिए इस के मान्य होने में कोई शक नहीं, लेकिन अब इस्लामी धार्मिक नियम में किसी को सम्मान स्वरूप भी सज्दा करना जायज नहीं ।

४४. जिसके सात दरवाजे हैं, हर दरवाजे के लिए उनका एक हिस्सा बाँटा हुआ है ।

४५. बेचक परहेजगार लोग बागों और चरमों में होंगे ।

४६. (उन से कहा जायेगा) सलामती और अमन के साथ उस में दाखिल हो जाओ ।

४७. और उन के दिलों में जो कुछ भी कीना और रंजिश थी हम सब कुछ निकाल देंगे, वे भाई-भाई बने हुए एक-दूसरे के सामने सिंहासन पर बैठें होंगे ।

४८. न तो वहाँ उन्हें कोई दुख छू सकता है और न वह वहाँ से कभी निकाले जायेंगे ।

४९. मेरे बन्दों को खबर कर दो कि मैं बहुत भाफ करने वाला और बहुत रहम करने वाला हूँ ।

५०. और साथ ही मेरे अजाब भी बहुत दुखदायी हैं ।

५१. और उन्हें इब्राहीम के मेहमानों का (भी) हाल सुना दो ।

५२. कि जब उन्होंने उस के पास आकर सलाम किया, तो उस ने कहा कि हम को तो तुम से डर लगता है ।^१

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ
جُزْءٌ مَّقْسُومٌ (44)

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ (45)

أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ أَمِينٍ (46)

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غَيْبٍ إِخْوَانًا عَلَى
سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ (47)

لَا يَسْمَعُ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا
بِمُخْرَجِينَ (48)

يَبْنَئُ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ (49)

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ (50)

وَيُنَبِّئُهُمَّ عَنْ صَيْبِ إِبْرَاهِيمَ (51)

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ إِنَّا أَنْتُمْ
وَجُلُونَ (52)

१ यानी हर दरवाजे खास तरह के लोगों के लिए मुकर्रर होंगे, जैसे एक दरवाजे भूतिपूजकों के लिए, एक नास्तिकों के लिए, एक काफिरों के लिए, एक बदकारों, ब्याज खाने वालों, चोरों और डाकूओं के लिए आदि, या सात दरवाजों से मुराद सात तह और दर्जे हैं ।

२ हजरत इब्राहीम عليه السلام को इन फरिश्तों से डर इसलिए हुआ कि उन्होंने हजरत इब्राहीम का तैयार किया भुना हुआ बछड़े का गोश्त नहीं खाया, जैसाकि सूर: हूद में बयान हो चुका है । इस से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला के अजीम पैगम्बर को भी (छिपी बातों) गैब का इल्म नहीं होता, अगर उन्हें गैब का इल्म होता तो हजरत इब्राहीम समझ जाते कि आने वाले मेहमान

५३. उन्होंने कहा डर न करो, हम तुम्हें एक इल्म वाले लड़के की खुशखबरी देते हैं।

५४. कहा क्या इस बुढ़ापे के छू लेने के बाद तुम मुझे खुशखबरी देते हो ! ये खुशखबरी तुम कैसे दे रहे हो?

५५. उन्होंने कहा, हम आप को बिल्कुल सच्ची खुशखबरी सुनाते हैं, आप मायूस लोगों में शामिल न हों।

५६. कहा अपने रब की रहमत से मायूस तो केवल (भटके और) बहके हुए लोग ही होते हैं।

५७. पूछा कि हे अल्लाह के भेजे हुए (फरिश्तो)! तुम्हारा ऐसा क्या खास काम है?

५८. उन्होंने जवाब दिया कि हम पापी लोगों की ओर भेजे गये हैं।

५९. लेकिन लूत का परिवार कि हम उन सब को जरूर बचा लेंगे।

६०. सिवाय लूत की पत्नी के कि हम ने उसे रुकने और बाकी रह जाने वालों में मुकर्रर कर दिया है।

६१. जब भेजे हुए फरिश्ते लूत परिवार के पास पहुँचे।

६२. तो लूत ने कहा तुम लोग तो कुछ अजान से मालूम होते हो।

قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٥٣﴾

قَالَ أَيْشَرُّ لِمُؤْنِي عَلَىٰ أَنْ مَسَّيَ الْكَبِيرُ قِيمَةً كَيْبَشِرُونَ ﴿٥٤﴾

قَالُوا بَشِّرْنَا بِالْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ الْقَاطِبِينَ ﴿٥٥﴾

قَالَ وَمَنْ يَقْطَعُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّي إِلَّا الضَّالُّونَ ﴿٥٦﴾

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٧﴾

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٥٨﴾

إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا لَمَنجُوهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥٩﴾

إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَا إِنَّهَا لَمِنَ الْغَافِلِينَ ﴿٦٠﴾

فَلَمَّا جَاءَ آلَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ ﴿٦١﴾

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنتَكِرُونَ ﴿٦٢﴾

(अतिथि) फरिश्ते हैं और उन के लिए खाना तैयार करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि फरिश्ते को इंसानों की तरह खाने-पीने की जरूरत नहीं है।

हजरत इब्राहीम ने इन फरिश्तों की बातचीत से यह अंदाजा लगाया कि यह सिर्फ औलाद की खुशखबरी देने ही नहीं आये हैं, बल्कि उन के आने की असल वजह कुछ और है, इसलिए उन्होंने पूछा।

६३. उन्होंने कहा (नहीं) बल्कि हम तेरे पास वह चीज लाये हैं, जिस में ये लोग शक कर रहे थे।

६४. और हम तो तेरे पास (वाजेह) सच लेकर आये हैं और हम हैं भी पूरे सच्चे।

६५. अब तू अपने परिवार के साथ इस रात के किसी हिस्से में चल दे, तू खुद उन के पीछे रहना, (और होशियार)। तुम में से कोई भी मुड़ कर न देखे और जहाँ का हुक्म तुम्हें किया जा रहा है वहाँ चले जाना।

६६. और हम ने उसकी तरफ इस बात का फैसला कर दिया कि सुबह होते-होते उन सबकी जड़ें काट दी जायेंगी।

६७. और शहरी लोग खुशियाँ मनाते हुए आये।

६८. (लूत ने) कहा ये लोग मेरे मेहमान हैं तुम मुझे जलील न करो।

६९. और अल्लाह (तआला) से डरो और मुझे अपमानित न करो।

७०. वे बोले कि क्या हम ने तुम्हें संसार भर (की ठीकेदारी) लेने से मना नहीं कर रखा ?

७१. (लूत ने) कहा अगर तुम्हें करना ही है तो ये मेरी बेटियाँ हाजिर हैं।

७२. तेरी उम्र की कसम! वे तो अपने नशे में फिर रहे थे।

قَالُوا بَلْ جَعَلْنَاكَ مِثْلَ لُوطٍ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٦٣﴾

وَأَتَيْنَكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٦٤﴾

فَأَسِرْ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ
وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَامْضُوا حَيْثُ
تُؤْمَرُونَ ﴿٦٥﴾

وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَٰؤُلَاءِ
مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ ﴿٦٦﴾

وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٧﴾

قَالَ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿٦٨﴾

وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْرَؤُنِ ﴿٦٩﴾

قَالُوا أَوَلَمْ نُنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٧٠﴾

قَالَ هَٰؤُلَاءِ بَنَاتِي إِن كُنتُمْ فَاعِلِينَ ﴿٧١﴾

لَعْنَةُكَ إِنَّهُمْ لَبِقَىٰ سُكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ ﴿٧٢﴾

1 यानी तुम उन से विवाह कर लो या अपने कौम की औरतों को बेटियाँ कहा, यानी तुम औरतों के साथ विवाह करो या जो विवाहित हैं उन्हें ख्वाहिश की तकमील अपनी पत्नियों से करनी चाहिए।

2 अल्लाह तआला नबी ﷺ को मुखातिब कर के उनके जीवन की कसम खा रहा है, जिस से आप ﷺ की फज्जिलत और इज्जत की वजाहत हो रही है, लेकिन दूसरे किसी के लिए अल्लाह के

७३. फिर सूरज निकलते निकलते उन्हें एक कड़ी आवाज ने पकड़ लिया।

७४. आखिर हम ने उस (नगर) को ऊपर नीचे कर दिया और उन लोगों पर कंकड़ वाले पत्थर बरसाये।

७५. बेशक हर एक शिक्षा हासिल करने वालों के लिए इस में बहुत-सी निशानियाँ हैं।

७६. और यह बस्ती ऐसे रास्ते पर है, जिस पर लगातार यातायात होती रहती है।¹

७७. और इस में ईमानवालों के लिए बड़ी निशानी है।

७८. और एक बस्ती के रहने वाले भी वड़े जालिम थे।²

७९. जिन से आखिर में हम ने बदला ले ही लिया, ये दोनों नगर खुले (आम) रास्ते पर हैं।

८०. और हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया।³

فَاخَذَتْهُمْ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿٧٣﴾

فَجَعَلْنَا غَالِيَهَا سَاقِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ
جِجَارَةً مِنْ سِجِّيلٍ ﴿٧٤﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِمَنْتَوَسَّعِينَ ﴿٧٥﴾

وَأَنَّهَا لَبِئْسَ بِلِقَائِهِمْ مُقْبِلُونَ ﴿٧٦﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾

فَاتَّقَمْنَا مِنْهُمُ وَإِنَّهُمَا لَبِئْسَ مَا يَفْعَلُونَ ﴿٧٩﴾

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحَجَرِ الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٠﴾

सिवाय दूसरे किसी की कसम खाना जायेज नहीं है। अल्लाह तआला तो पूरा मालिक है, वह जिसकी चाहे कसम खाये, उस से कौन पूछने वाला है? अल्लाह तआला फरमाता है कि जिस तरह खराब के नष्ट में धुत इंसान की अकल खराब हो जाती है, उसी तरह यह अपनी बुराई और भटकावे में इतने मस्त थे कि हजरत लूत की इतनी ठीक बात भी उनकी समझ में नहीं आ पायी।

¹ मुराद खास रास्ता है, यानी लूत की कौम की बस्तियाँ मदीने से सीरिया जाते वक़्त रास्ते में पड़ती हैं। हर मुसाफिर को उन्हीं रास्ते से होकर गुज़रना पड़ता है, कहते हैं ये पाँच बस्तियाँ थी: समूद, (यह केन्द्रीय बस्ती थी) साअबः, सावः, असरः और दूमा।

² अिके घने पेड़ को कहते हैं, इस बस्ती में घने पेड़ होंगे, इसलिए उन्हें أصحاب الايكة (वन या जंगल वाले) कहा गया है। मुराद उससे बुऐब की उम्मत है और उनका ज़माना हजरत लूत के बाद का है और उनका इलाका मदीना और सीरिया के दरमियान लूत की उम्मत की बस्तियों के करीब था, इसे मदनन कहा जाता है।

³ حجر हजरत सालेह की कौम समूद की बस्तियों का नाम था, उन्हें أصحاب الحجر कहा गया है,

८१. और उन्हें हम ने अपनी निशानियाँ अता की थी, लेकिन फिर भी वे उन से गर्दन मोड़ने वाले ही रहे !

८२. और ये लोग अपने घर पहाड़ों से काट-काट कर बना लिया करते थे बिना डर के ।

८३. आखिर में उन्हें भी सुबह होते-होते कड़ी चीख (आवाज़) ने आ दबोचा ।

८४. इसलिए उन की किसी तरकीब और अमल ने उन्हें कोई फ़ायदा न दिया ।

८५. और हम ने आकाशों और धरती को और उनके बीच की सभी चीजों को हक के साथ ही बनाया है, और क्रयामत ज़रूर-ज़रूर आने वाली है, वस तू खूबी और अच्छाई से सहन कर ले ।

८६. बेशक तेरा रब ही पैदा करने वाला और जानने वाला है ।

८७. और बेशक हम ने आप को सात आयतें दे रखी हैं^१ जो दुहराई जाती हैं, और महान (अजीम) क़ुरआन भी दे रखा है ।

وَأَتَيْنَهُمُ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾

وَكَانُوا يُنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا أُوتُوا مِنْهَا وَكَانَ لَهُمْ مِنْهَا صِغِيرَاتٌ كُنُوزٌ ﴿٨٢﴾

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ ﴿٨٣﴾

فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٤﴾

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا

إِلَّا بِالْحَقِّ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَأْتِيَةٌ فَاصْفَحِ

الطُّغْحَانَ الْجَبِيلِ ﴿٨٥﴾

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿٨٦﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِنَ الْمَثَانِ وَالْقُرْآنَ

الْعَظِيمَ ﴿٨٧﴾

यह बस्ती मदीना और तबूक के दरमियान थी, उन्होंने अपने पैगम्बर हज़रत स्वालेह को झूठलाया, लेकिन यहाँ अल्लाह तआला ने फ़रमाया : «उन्होंने पैगम्बरों को झूठलाया ।» यह इसलिए है कि एक पैगम्बर का झूठलाना वैसे ही है जैसे सारे पैगम्बरों को झूठलाया ।

^१ सच से मुराद वे फ़ायदे और हित हैं जो आकाश और धरती के बनाने का मक़सद है, या सच से मुराद नैक लोगों को उसके नैक अमल का बदला और बुरे लोगों को उनके बुरे अमल की सज़ा देना है । जिस तरह एक दूसरे मुक़ाम पर फ़रमाया : «अल्लाह ही के लिए हैं जो आकाशों में हैं और जो धरती में हैं ताकि वह बुरों को उनकी बुराईयों और नैक लोगों को उन के नैक अमल का बदला दे ।» (सूर: अल-नज़म-३१)

^२ سبع مثاني से मुराद क्या है ? इस में मुफ़त्सिरो में इस्तिलाफ़ है, सही बात तो यह है कि इस से मुराद सूर: फ़ातिहा है, यह सात आयतें हैं और जो हर नमाज़ की हर रकअत में पढ़ी जाती है।

८८. आप कभी अपनी आंख इस बात की आर न दौड़ाये जिसे हम ने उन में से कई तरह के लोगों को अता की है, न उन पर आप गम करें और ईमानवालों के लिए अपनी बाह झुकाये रहें।

لَا تَسُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا
مِنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفُضْ جَنَاحَكَ
لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٨٨﴾

८९. और कह दीजिए कि मैं स्पष्टरूप (वाजेह तौर) से डराने वाला हूँ।

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ﴿٨٩﴾

९०. जैसाकि हम ने उन तकसीम करने वालों पर उतारा।

كَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ﴿٩٠﴾

९१. जिन्होंने इस कुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ﴿٩١﴾

९२. क्रसम है तेरे रव की ! हम उन सब से जरूर पूछ करेंगे।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْبَعِينَ ﴿٩٢﴾

९३. हर उस चीज की जो वह करते थे।

عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

९४. बस आप' इस हुक्म को जो आप को किया जा रहा है खोल कर सुना दीजिए और मुशरिकों से मुँह फेर लीजिए।

فَأَصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ
الْمُشْرِكِينَ ﴿٩٤﴾

९५. आप से जो लोग मजाक करते हैं उनके (सजा) के लिए हम काफ़ी है।

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٥﴾

९६. जो अल्लाह के साथ दूसरे देवता (माबूद) बनाते हैं, उन्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा।

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ
فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾

९७. और हमें अच्छी तरह मालूम है कि उनकी बातों से आप का दिल तंग होता है।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ
بِمَا يَقُولُونَ ﴿٩٧﴾

९८. आप अपने रव की वड़ाई और तारीफ़ का बयान करते रहें, और सिर झुकाने वालों में शामिल हो जायें।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُن مِنَ السَّاجِدِينَ ﴿٩٨﴾

1 'فاصدع' का मतलब वाजेह करके बयान करना, इस आयत के नाज़िल होने से पहले आप * झुपकर दीन की तबलीग करते थे, इस के बाद आप * ने वाजेह तौर से दीन की दावत-तबलीग करना शुरू कर दिया। (फतहुल कदीर)

१९. और अपने रब की इबादत करते रहें यहाँ तक कि आप को मौत आ जाये।

सूरतुन नहल-१६

सूर: नहल मक्का में उतरी और इसकी एक सौ अट्ठाईस आयतें और सोलह रूकअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अल्लाह (तआला) का हुक्म आ पहुँचा, अब इसकी जल्दी न मचाओ, सारी पाकीजगी उस के लिए है वह सब से बड़ा है उन सब से जिन्हें ये अल्लाह के करीब साझा बतलाते हैं।

२. वही फरिश्तों को अपनी वही (प्रकाशना) देकर अपने हुक्म के जरिये अपने बंदों में से जिस पर चाहता है उतारता है, कि तुम लोगों को बाखबर कर दो कि मेरे सिवाय दूसरा कोई इबादत के लायक नहीं, इसलिए तुम मुझ से डरो।

३. उसी ने आकाशों और धरती को सच्चाई के साथ पैदा किया, वह उस से बुलन्द है जो मुशरिक (मिश्रणवादी) करते हैं।

४. उस ने इंसानों को वीर्य (तुतफा) से पैदा किया फिर वह खुला झगड़ालू बन बैठा।

५. उसी ने जानवर पैदा किये, जिन में तुम्हारे लिए गर्मी के कपड़े हैं, और दूसरे भी बहुत-से फायदे हैं, और कुछ तुम्हारे खाने के काम आते हैं।

६. और उन में तुम्हारी शोभा (रौनक) भी है, जब चराकर लाओ तब भी और जब चराने ले जाओ तब भी।

وَأَعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ﴿١٩﴾

سُورَةُ النَّحْلِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

آتَىٰ أَمْرَ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ سُبْحٰنَهُ
وَعَلَىٰ عَنَّا يُشْرِكُونَ ﴿١﴾

يُنزِّلُ الْمَلَائِكَةَ بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ
مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ أَنْ أَنْذِرُوهُ أَنْكٰرَ
لَا إِلٰهَ إِلَّا أَنَا فَاتَّقُونِ ﴿٢﴾

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ وَعَلَىٰ
عَنَّا يُشْرِكُونَ ﴿٣﴾

خَلَقَ الْإِنسَانَ مِنْ نُّطْقَةٍ فَإِذَا هُوَ
خَصِيمٌ مُّبِينٌ ﴿٤﴾

وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ
وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَأْكُمُونَ ﴿٥﴾

وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرْجَوْنَ
وَحِينَ تَسْرَحُونَ ﴿٦﴾

७. और वह तुम्हारे बोझ उन नगरों तक उठाकर ले जाते हैं जहाँ तुम बिना आधी जान किये पहुँच नहीं सकते थे, बेशक तुम्हारा रब बड़ा ही शफीक़ और बहुत रहम करने वाला है।

८. और घोड़ों को, खच्चरों को, गधों को (उस ने पैदा किया) ताकि तुम उनको सवारी के साधन के रूप में इस्तेमाल में ले आओ और वे ज़ीनत का जरिया भी हैं, दूसरे भी वह ऐसी चीज़ें पैदा करता है जिन का तुम्हें इल्म भी नहीं।⁷

९. और अल्लाह पर सीधा रास्ता बता देना है, और कुछ टेढ़े रास्ते हैं, और अगर वह चाहता तो तुम सब को सीधे रास्ते पर लगा देता।

१०. वही तुम्हारे फ़ायदे के लिए आकाश से बारिश करता है, जिसे तुम पीते भी हो और उसी से उगे हुए पेड़ों को तुम अपने जानवरों को चराते हो।

११. इसी से वह तुम्हारे लिए खेती और जैतून और खजूर और अंगूर और हर तरह के फल उगाता है। बेशक फिक़र करने वाले लोगों के लिए तो इस में बड़ी निशानियाँ हैं।

१२. और उसी ने रात-दिन और सूरज और चाँद को तुम्हारी सेवा में लगा रखा है और सितारे भी उसी के हुकम के अधीन (ताबे) हैं। बेशक इस में अक्ल वालों के लिए कई तरह की निशानियाँ मौजूद हैं।

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَاءً لَّيًّا وَيَسْرِى الْأَنْفُسَ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرؤُوفٌ رَّحِيمٌ ﴿٧﴾

وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٨﴾

وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ وَلَوْ شَاءَ لَهَدَىٰكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩﴾

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ﴿١٠﴾

يُثْبِتُ لَكُمْ بِهِ الرِّزْقَ وَالرَّيْحُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الشَّجَرِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١١﴾

وَسَخَّرَ لَكُمْ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٢﴾

⁷ धरती के निचले हिस्से में, इसी तरह समुद्र में, निर्जल मरूस्थल (सहारा) में और जंगलों में अल्लाह तआला जानदार पैदा करता है, जिनका इल्म अल्लाह तआला के सिवाय किसी को नहीं और उसी में इंसान की बनाई चीज़ें भी आ जाती हैं जो अल्लाह तआला की दी हुई अक्ल और इरादा को इस्तेमाल करते हुए उसी की पैदा की हुई कई चीज़ों को कई तरह से जोड़कर बनाता है, जैसे बस, कार, रेलगाड़ी, जहाज़ और वायुयान, और इसी तरह की बेशुमार चीज़ें और जो मुस्तक़बिल में भी आती रहेंगी।

१३. और दूसरे भी (तरह-तरह की) चीजें कई रंग-रूप की उसने तुम्हारे लिए धरती में फैला रखी हैं। बेशक नसीहत हासिल करने वालों के लिए इस में बड़ी भारी निशानियाँ हैं।

१४. और समुद्र भी उसी ने तुम्हारे वश में कर दिये हैं कि तुम इस में से निकला हुआ ताजा गोश्त खाओ और उस में से अपने पहनने के लिए जेवर निकाल सको, और तुम देखोगे कि नवकायें इस में पानी चीरती हुई (चलती) हैं और इसलिए भी कि तुम उस के फ़ल की खोज करो, और हो सकता है कि तुम शुक्रिया भी अदा करो।^१

१५. और उस ने धरती पर पहाड़ गाड़ दिये हैं ताकि तुम्हें लेकर न हिले,^२ और नदियाँ और रास्ते बना दिये ताकि तुम मक़सद तक पहुँचो।

१६. दूसरी भी बहुत-सी निशानियाँ (मुकर्रर की), और सितारों से भी लोग रास्ता हासिल करते हैं।

१७. तो क्या वह जो पैदा करे उस जैसा है जो पैदा नहीं कर सकता? क्या तुम कभी नहीं सोचते?

وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ۖ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَذَكَّرُونَ ﴿١٣﴾

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لَنَا كَمَا بَدَأْنَا مِنْ حَمَلٍ طَرِيًّا
وَأَنْتُمْ حُرُوجًا مِنْهُ حَلِيَّةٌ تَلْبَسُونَهَا ۚ وَتَرَى
الْفُلْكَ مَوَازِعَ فِيهِ ۚ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٤﴾

وَأَلْقَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ
وَأَنْهَارًا وَسَبِيلًا لَعَلَّكُمْ يَهْتَدُونَ ﴿١٥﴾

وَعَلَيْتُمْ ۖ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ﴿١٦﴾

أَفَمَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ ۚ أَفَلَا تُدْعَرُونَ ﴿١٧﴾

^१ इसमें समुद्र की तेज धाराओं को इंसान के अधीन (ताबे) कर देने के बयान के साथ, उसके तीन फ़ायदे भी बयान किये गये हैं। एक यह कि उस से मछली के रूप में ताजा गोश्त खाते हो (और मछली मरी भी हो तब भी हलाल है। यहाँ तक कि एहराम की हालत में भी उसका शिकार हलाल है) दूसरे उस से तुम सोती, सीपियाँ, (जवाहरात) निकालते हो। तीसरे उस में तुम नाव और जहाज़ चलाते हो, जिन के जरिये तुम एक देश से दूसरे देश जाते हो, तिजारीत सामान भी लाते ले जाते हो, जिस से तुम्हें अल्लाह की नेमतें हासिल होती हैं, जिस पर तुम्हें अल्लाह का शुक्रगुज़ार होना चाहिए।

^२ यह पहाड़ों का फ़ायदा बयान किया जा रहा है, और अल्लाह का एक बड़ा एहसान भी, क्योंकि अगर धरती हिलती रहती तो धरती पर रहना ही नामुमकिन होता, इसका अंदाज़ा उन भूकम्पों से लगाया जा सकता है जो पल या कुछ देर के लिए आते हैं, लेकिन किस तरह ऊँचे-ऊँचे घरों को गिरा कर नगरों को खण्डहर में बदल देते हैं।

१८. और अगर तुम अल्लाह की नेमतों का हिसाब करना चाहो तो तुम उसे नहीं कर सकते। बेशक अल्लाह बड़ा माफ करने वाला रहम करने वाला है।

१९. और जो कुछ तुम छिपाओ या जाहिर करो, अल्लाह सब कुछ जानता है।

२०. और जिन-जिन को ये लोग अल्लाह (तआला) के सिवाय पुकारते हैं, वे किसी चीज को पैदा नहीं कर सकते, बल्कि वे खुद पैदा किये हुए हैं।

२१. मूर्त हैं जिन्दा नहीं, उन्हें तो यह भी मालूम नहीं कि कब उठाये जायेंगे।

२२. तुम सभी का माबूद सिर्फ अल्लाह (तआला) अकेला है और आखिरत पर ईमान न रखने वालों के दिल मुन्कर (भ्रष्ट) हैं और वे खुद गर्व (तकबुर) से भरे हुए हैं।

२३. बेशक अल्लाह (तआला) हर उस चीज को जिसको वे छिपाते हैं और जिसे जाहिर करते हैं अच्छी तरह जानता है। वह घमड़ियों को पसन्द नहीं करता।

२४. और उन से जब पूछा जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या उतारा है, तो जबाब देते हैं कि पहलों की कथायें हैं।

२५. (इसी का नतीजा होगा) कि क़्यामत के दिन ये लोग अपने पूरे बोझ के साथ ही उनके बोझ के भी भागीदार होंगे जिन्हें बिना इल्म के भटकाते रहे, देखो तो कैसा बुरा बोझ उठा रहे हैं।

२६. उन से पहले के लोगों ने भी छल किया था, (आखिर में) अल्लाह ने उन के (साजिश के) घरों को जड़ों से उखाड़ दिया और उनके (सिरों पर) छतें ऊपर से गिर पड़ीं और उनके पास अजाब वहाँ से आ गया जहाँ का उन्हें ध्यान और ख्याल भी न था।

وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصَوْنَ
إِنَّ اللَّهَ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ (18)

وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسْرُؤُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ (19)

وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ
لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ (20)

أَمْوَاتٌ غَيْرِ أَحْيَاءٍ وَمَا يَشْعُرُونَ
أَيَّانَ يَبْعَثُونَ (21)

إِلَهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ قَالِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ
قُلُوبُهُمْ مُنْكِرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ (22)

لَا جَرَمَ أَنْ اللَّهُ يَعْلَمُ مَا يُسْرُؤُونَ وَمَا يُعْلِنُونَ
إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ (23)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ مَاذَا أَنْزَلَ رَبُّكُمْ قَالُوا
أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ (24)

لِيَحْمِلُوا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَرِمْنَ
أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ
إِلَّا سَاءَ مَا يَزُرُونَ (25)

قَدْ مَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَإِنَّ اللَّهَ يَبْنِي لَهُمْ
مِنَ الْقَوَاعِدِ فَمَحَّرَ عَلَيْهِمْ السَّقْفَ مِنْ فَوْقِهِمْ
وَأَتَتْهُمْ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ (26)

२७. फिर क्रयामत के दिन भी अल्लाह (तआला) उन्हें हत्वा करेगा और कहेगा कि मेरे वे साझीदार कहां हैं जिन के बारे में तुम लड़ते-झगड़ते थे, जिन्हें इल्म दिया गया था वे जवाब देंगे कि आज तो काफिरों को अपमान और बुराई चिमट गयी।

२८. वह जो अपनी जानों पर जुल्म करते हैं, फरिस्ते जब उनकी जान निकालने लगते हैं तो उस वक़्त वे झुक जाते हैं कि हम बुराई नहीं करते थे, क्यों नहीं? अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानने वाला है जो कुछ तुम करते थे।

२९. तो अब तुम सदा के लिए नरक के दरवाजों (से नरक) में प्रवेश करो, तो क्या ही बुरी जगह है धमड करने वालों की।

३०. और परहेजगारों से सवाल किया जाता है कि तुम्हारे रब ने क्या नाज़िल किया है तो वह जवाब देते हैं कि अच्छे से अच्छा। जिन लोगों ने नेक काम किये उन के लिए इस दुनिया में भलाई है, और वेशक आखिरत का घर तो बहुत अच्छा है, और क्या ही अच्छा परहेजगारों का घर है।

३१. सदा रहने वाले बाग में वे जायेंगे जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जो वह माँग करेंगे वहाँ उन के लिए मौजूद होगी, परहेजगारों को अल्लाह ऐसे ही बदला अता करता है।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُخْزِبُهُمْ وَيَقُولُ أَيُّنَ شُرَكَائِي الَّذِينَ كُنْتُمْ تُشَاقِقُونَ فِيهِمْ دَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٢٧﴾

الَّذِينَ تَتَوَلَّوهُمْ بِالْبَيْتِ ظَالِمِينَ لِنَفْسِهِمْ ۖ فَالْقَوْمَ اسلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوءٍ طَبَقَ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ فَلَئِمْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٩﴾

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا مَاذَا أَنْزَلْ رَبُّكُمْ قَالُوا خَيْرًا لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَلَدَارُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِينَ ﴿٣٠﴾

جَعَلْتُ عَذِينَ يَدْخُلُونَهَا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۗ كَذَلِكَ يَجْزِي اللَّهُ السَّاعِينَ ﴿٣١﴾

1 इमाम इब्ने कसीर कहते हैं कि उनकी मीत के बाद तुरन्त उनकी रूहें नरक में चली जाती हैं, और उन की लाश कब्र (समाधि) में रहती है जहाँ अल्लाह अपनी कुदरत से जिस्म और रूह में दूरी होते हुए भी एक तरह का सगाव पैदा करके अजाब देता है, तथा सुबह-शाम उन पर आग पेश की जाती है, फिर जब क्रयामत आयेगी तो उनकी रूह उनके जिस्मों में फिर आ जायेंगी और वे सदा के लिए नरक में डाल दिये जायेंगे।

३२. वे जिनकी जान फरिश्ते ऐसी हालत में निकालते हैं कि वह पाक-साफ हों, कहते हैं कि तुम्हारे लिये सलामती ही सलामती है अपने उन अमलों के बदले जन्नत में जाओ जो तुम कर रहे थे।

३३. क्या यह इसी बात का इंतजार कर रहे हैं कि उनके पास फरिश्ते आ जायें या तेरे रब का हुक्म आ जाये? ऐसा ही उन लोगों ने भी किया जो इन से पहले थे, उन पर अल्लाह (तआला) ने कोई जुल्म नहीं किया बल्कि वह खुद अपनी जानों पर जुल्म करते रहे।

३४. तो उन के बुरे कामों का बुरा बदला उन्हें मिल गया और जिसका मजाक उड़ाते थे, उस ने उन को घेर लिया।

३५. और मुशरिकों ने कहा कि अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो हम और हमारे बाप-दादा उसके सिवाय दूसरे की इबादत न करते न उसके हुक्म के बिना किसी चीज को हराम करते, यही अमल उन से पहले के लोगों का रहा तो रसूलों पर तो केवल खुला पैगाम पहुँचा देना है।

३६. और हम ने हर उम्मत में रसूल भेजे कि (लोगो)! केवल अल्लाह की इबादत (उपासना) करो, और तागूत (उस के सिवाय सभी झूठे माबूद) से बचो, तो कुछ लोगों को अल्लाह ने हिदायत अता किया और कुछ पर गुमराही सावित हो गई, अब तुम खुद धरती पर सैर करके देख लो कि झूठलाने वालों का फल कैसा हुआ।

الَّذِينَ تَتَوَفَّوهُمْ الْمَلٰٓئِكَةُ طٰٓئِفٰٓتٍ ۙ يَقُوْلُوْنَ
سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ ۙ اَدْخَلُوْا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿۳۲﴾

هَلْ يَنْظُرُوْنَ ۗ اِلَّا اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ يٰٓتٰٓ
اَمْرٌ رَّبِّكَ ۗ كَذٰلِكَ فَعَلَّ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ وَمَا
ظَنَّهُمْ اللّٰهُ ۗ وَلٰكِنْ كَانُوْا اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ ﴿۳۳﴾

فَاَصَابَهُمْ سَيّٰٓتٌ مَّا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ
مَّا كَانُوْا بِهِ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۴﴾

وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰسْرَوْا اِلٰٓهَآءَ اللّٰهِ مَا عَبَدْنَا مِنْ
دُوْنِهِ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَا اٰبَاؤُنَا وَلَا اٰخِرُنَا مِنْ
دُوْنِهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ كَذٰلِكَ فَعَلَّ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَهَلْ عَلٰى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۳۵﴾

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا اِنْ اَعْبُدُوْا
اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوْا الطَّاغُوْتِ ؕ فَمِنْهُمْ مَنْ هَدٰٓى
اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَنْ حَقَّتْ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ؕ قٰٓسِرُوْا
فِي الْاَرْضِ فَانظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عٰقِبَةُ
الْمُكذِّبِيْنَ ﴿۳۶﴾

यानी जब रसूल उनसे कहते कि अगर तुम उन पर ईमान नहीं लाओगे तो अल्लाह का अजाब आ जायेगा, तो ये मजाक के तौर पर कहते कि जा अपने अल्लाह से कह दे कि वह अजाब भेज कर हमें बरबाद कर दे, इसलिए उस अजाब ने उन्हें घेर लिया जिसका वह मजाक करते थे, फिर उस से बचाव का कोई रास्ता उन के पास नहीं रहा।

३७. अगर आप उन के हिदायत के इच्छुक (ख्वाहिश्मद) रहे हैं लेकिन अल्लाह (तआला) उसे हिदायत नहीं देता है जिसे भटका दे, और न कोई उनका मददगार होता है।

३८. और वे लोग बहुत बड़ी-बड़ी कसम खाकर कहते हैं कि मरे हुए लोगों को अल्लाह (तआला) जिन्दा नहीं करेगा, क्यों नहीं, (जरूर जिन्दा करेगा) यह तो उसका सच्चा वादा है, लेकिन ज्यादातर लोग नादानी कर रहे हैं।

३९. इसलिए भी कि ये लोग जिस बात में इख्तिलाफ करते थे, उसे अल्लाह (तआला) साफ बयान कर दे और इसलिए भी कि काफिर खुद अपना झूठा होना जान लें।

४०. हम जब किसी चीज का इरादा करते हैं तो केवल हमारा इतना कह देना होता है कि हो जा वस वह हो जाती है।

४१. और जिन लोगों ने जुल्म सहन करने के बाद अल्लाह के रास्ते में देश छोड़ा है हम उन्हें सब से अच्छी जगह दुनिया में अता करेंगे, और आखिरत का बदला तो बहुत बड़ा है, काश ! लोग इस से वाकिफ होते।

४२. वे जिन्होंने सब किया और अपने रब पर ही भरोसा करते रहे।

४३. और आप से पहले भी हम मर्दों को ही भेजते रहे जिनकी ओर वही (प्रकाशना) उतारा करते थे, अगर तुम नहीं जानते तो विद्वानों (इल्म वालों) से पूछ लो।

إِنْ تَحْرِضْ عَلَىٰ هُدَاهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي
مَنْ يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٣٧﴾

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ
مَنْ يَمُوتُ ۖ بَلَىٰ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٨﴾

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يُخْتَلِفُونَ فِيهِ ۖ وَلِيَعْلَمَ
الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّهُمْ كَانُوا كَذِبِينَ ﴿٣٩﴾

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ
كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٠﴾

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا
لَنَنُوبَهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ وَالْآخِرُ الْأَخْرُوعُ أَكْبَرُ
لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَكُونُونَ ﴿٤٢﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُوحي إِلَيْهِمْ
فَسَعَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٤٣﴾

अल्लाह की रिसालत का इकार कर दो, अगर शक हो तो तुम अहले किताब से पूछ लो कि गुजरे जमाने में सभी नबी इंसान थे या फरिश्ते, अगर वे फरिश्ते थे तो बेश्क इकार कर देना, अगर वे भी सभी इंसान थे तो फिर मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ की रिसालत का सिर्फ इंसान होने के सबब इकार क्यों?

४४. निशानियों और किताबों के साथ, यह जिक्र (किताब) हम ने आप की तरफ उतारी है कि लोगों की तरफ जो उतारा गया है आप उसे वाजेह तौर से बयान कर दें, शायद कि वे सोच विचार करें।

४५. बुरा छल-कपट करने वाले ब्या इस बात से बेखौफ हो गये हैं कि अल्लाह (तआला) उन्हें धरती में धंसा दे या उन के पास ऐसी जगह से अजाब आ जाये, जहाँ का उन्हें शक और ख्याल भी न हो।

४६. या उनको चलते-फिरते पकड़ ले, यह किसी तरह से भी अल्लाह (तआला) को मजबूर नहीं कर सकते।

४७. या उन्हें डरा-धमका कर पकड़ ले, फिर बेशक तुम्हारा ख बड़ा करूणाकारी (अफ्रीक) और बड़ा रहीम है।

४८. क्या उन्होंने अल्लाह की मखलूक में से किसी को भी नहीं देखा कि उसकी छाया दायें-बायें झुक-झुक कर अल्लाह (तआला) के सामने सज्दा करती हैं और मजबूरी का प्रदर्शन (इजहार) करती हैं।

४९. और बेशक आकाशों और धरती के सभी जानदार और सभी फरिश्ते अल्लाह (तआला) के सामने सज्दा करते हैं और ज़रा भी घमंड नहीं करते।

५०. और अपने ख से जो उन के ऊपर है कपकपाते (कम्पित) रहते है और जो हुक्म मिल जाये उस के पालन करने में लगे रहते हैं।

५१. और अल्लाह (तआला) कह चुका है कि दो माबूद न बनाओ, माबूद तो वही सिर्फ अकेला है, वस तुम सब केवल मेरा ही डर रखो।

بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ
لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٤٤﴾

أَفَأَمِنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ
بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَاتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ
لَا يَشْعُرُونَ ﴿٤٥﴾

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقْلِبِهِمْ فَمَا هُمْ
بِسَّجِدِينَ ﴿٤٦﴾

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّهُمْ
لَرؤُوفٌ رَحِيمٌ ﴿٤٧﴾

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يَتَفَتَّحُونَ
ظِلَلُهُ عَنِ الْيَمِينِ وَالشَّمَائِلِ سُجَّدًا لِلَّهِ وَهُمْ
دُخْرُونَ ﴿٤٨﴾

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ
دَابَّةٍ وَالنَّبَاتِ وَالْحَيَّةِ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٤٩﴾

يَخَافُونَ رَبَّهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا
يُؤْمَرُونَ ﴿٥٠﴾

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَهَيْنِ اثْنَيْنِ إِنَّمَا
هُوَ إِلَهٌ وَاحِدٌ فَإِنِّي آتَى فَلَهِبُونَ ﴿٥١﴾

५२. और आकाशों में और धरती में जो कुछ है सब उसी का है और उसी की इवादात हमेशा फर्ज है, क्या फिर भी तुम उस के सिवाय दूसरों से डरते हो?

५३. और तुम्हारे पास जितनी भी नेमतें हैं, सब उसी की दी हुई हैं, अब भी जब तुम्हें कोई कठिनाई आ जाये तो उसी की तरफ दुआ और विनती करते हो।

५४. और जहाँ उसने वह कठिनाई तुम से दूर कर दी, तुम में से कुछ लोग अपने रब के साथ साझीदार बनाने लगते हैं।

५५. कि हमारी दी हुई नेमतों की नाचुकी करें, (ठीक है) कुछ फायदा उठा लो आखिर में तुम्हें मालूम हो ही जायेगा।

५६. और जिसे जानते बूझते भी नहीं उस का हिस्सा हमारी दी हुई चीजों में मुकर्रर करते हैं। अल्लाह की कसम! तुम्हारे इस इल्जाम का सवाल तुम से जरूर ही क्रिया जायेगा।

५७. और वह पाक अल्लाह (तआला) के लिए लइकिया निर्धारित (मुकर्रर) करते हैं और अपने लिए वह जो अपनी ख्वाहिश के मुताबिक हो।

५८. और उन में से जब किसी को लइकी होने की खबर दी जाये तो उसका मुँह काला हो जाता है और दिल ही दिल में घुटने लगता है।

५९. इस बुरी खबर के सबब लोगों से छिपा-छिपा फिरता है, सोचता है क्या इस अपमान (जिल्लत) के लिये ही रहे या इसे मिट्टी में दबा दो आह! क्या ही बुरे फैसले करते हैं?

وَلَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ الْيَتٰمٰنُ وَاصْبٰٓءٌ
اَقْرَبٰۤىٔ اِنَّ اللّٰهَ لَشٰكُوْنٌ ﴿۵۲﴾

وَمَا يَكْمُرُ مِنْ تَعَبٍ فِىۡنَ اللّٰهِ فَاِذَا مَسَّكُمُ الضَّرُّ
قَالُوۡا نَحْنُ مُجْتَرِدُوۡنٌ ﴿۵۳﴾

ثُمَّ اِذَا كَفَّ الضَّرَّ عَنْكُمۡ اِذَا لَبِىۡتُمْ مِّنۡكُمْ
بِرِيۡبِهِمْ يُشْرِكُوۡنَ ﴿۵۴﴾

لِيَكْفُرُوۡا بِمَاۤ اٰتٰنٰهُمۡ فَتَسْتَعْمَلُنَّ فِىۡ سَوَۗفٍ
تَعْلَمُوۡنَ ﴿۵۵﴾

وَيَجْعَلُوۡنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوۡنَ صَوِيۡبًا مِّمَّا
رَزَقْنٰهُمۡ ۗ تَاللّٰهِ لَكُنۡتُمْ عَمَّا كُنۡتُمۡ
تَفۡرُوۡنَ ﴿۵۶﴾

وَيَجْعَلُوۡنَ لِلّٰهِ الْبَيْتِ سُبۡحٰنَهُ ۗ وَلَهُمۡ
مَا يَشۡتَهُوۡنَ ﴿۵۷﴾

وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمۡ بِالْاُنۡثٰى كَلَّ وَجۡهُهُ
مُسۡوَدًا ۗ وَهُوَ كٰظِمٌ ﴿۵۸﴾

يَتَوٰزٰى مِنَ الْقَوٰمِ مِنْ سُوۡءٍ مَا يُبۡشِرُ بِهِ ۗ
اِيۡسِسۡكُهُ عَلٰۤى هُوۡنٍ اَمۡ يَدۡسُهُ فِىۡ التَّرٰبِ ۗ
اِلَّا سَآءَ مَا يَحْكُمُوۡنَ ﴿۵۹﴾

¹ इसका मतलब यह है कि अल्लाह के एक होने का यकीन दिल की गहराईयों में मौजूद है जो उस वक़्त उभर कर सामने आ जाता है, जब हर तरफ से निराशा के बादल गहरे हो जाते हैं।

² यानी लइकी का जन्म मुनकर उनकी यह हालत होती है जो बयान हुई, और अल्लाह के लिए लइकिया चुनते हैं, कैसा गलत फैसला है? यहाँ यह न समझा जाये कि अल्लाह तआला ही

६६. और तुम्हारे लिए तो जानवरों में भी बड़ी शिक्षा है कि हम तुम्हें उस के पेट में जो कुछ है, उसी में से गोबर और खून के बीच से खालिस दूध पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए आसानी से पचता है।

६७. और खजूर और अंगूर के पेड़ों के फलों से तुम मदिरा बना लेते हो और बेहतरीन सामाने रिज़क (उत्तम जीविका) भी, जो लोग अकल रखते हैं उनके लिए तो इस में भी बहुत बड़ी निशानी है।

६८. और आप के रब ने मधुमक्खी को यह समझ दिया कि पहाड़ों में, पेड़ों में और लोगों की बनायी हुई ऊँची-ऊँची टट्टियों में अपने घर (छत्ते) बना।

६९. और हर तरह के फल खा, और अपने (रब) के आसान रास्तों पर चलती फिरती रह, उन के पेट से (पीने वाला पदार्थ) पेयद्रव (मशरूब) निकलता है, जिस के रंग कई हैं और जिस में लोगों के लिए शिफा है, सोच और फिक्र करने वालों के लिए इस में भी बहुत बड़ी निशानी है।

७०. और अल्लाह (तआला) ने ही तुम सब को पैदा किया है, वही फिर तुम्हें मौत देगा, और तुम में ऐसे भी हैं जो बहुत बुरी आयु की तरफ लौटाये जाते हैं कि बहुत कुछ जानने के बाद भी न जानें^१ बेशक अल्लाह (तआला) जानने वाला और कुदरत वाला है।

وَإِن لَّكُم فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةٌ لِّمَن تَسْبِقُهُمْ مِّنَّا فِي يَضْرِبُهُ مِنْ بَيْنِ قَرْنَيْهِ وَدَمِ لَبَنًا خَالِصًا سَائِقًا لِلشَّرِبِ يُؤْتِي ۞٦٦

وَمِن كَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ تَنزِيلًا مِّن مِّنْهُ سَكْرًا وَرِزْقًا حَسَنًا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۞٦٧

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ۞٦٨

ثُمَّ كُلِي مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا يَخْرُجُ مِنْ بَطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۞٦٩

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ وَمِنكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ عَلَيْهِ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۞٧٠

^१ वहयो (प्रकाशना) से मुराद वह एहसास और वह समझ-बूझ है जो अल्लाह तआला ने अपनी ज़रूरियात के पूरा करने के लिए जानदारों को दी है।

^२ जब इंसान फितरी उम्र से बढ़ जाता है तो फिर उसकी अकल भी कमजोर हो जाती है और कई बार अकल खत्म हो जाती है और वह बच्चे की तरह हो जाता है। यही बुढ़ापा है जिस से नबी ﷺ ने पनाह मागी है।

७१. और अल्लाह (तआला) ने ही तुम में से एक को दूसरे पर रिज़क़ में ज़्यादा अता कर रखी है, लेकिन जिन्हें ज़्यादा अता किया गया है, वह अपनी रोज़ी को अपने अधीन दास (मातहत) को नहीं देते कि वह और ये उस में बराबर हो जायें तो क्या ये लोग अल्लाह के एहसानों को इंकार कर रहे हैं?

७२. और अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए तुम में से ही तुम्हारी बीवियाँ पैदा की और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे बेटे और पोते पैदा किये और तुम्हें अच्छी-अच्छी चीज़ें खाने के लिए दी, तो क्या फिर भी लोग वातिल पर ईमान लायेंगे? और अल्लाह तआला की नेमतों की नाशुकी करेंगे?

७३. और वे अल्लाह (तआला) के सिवाय उनकी इबादत करते हैं, जो आकाशों और धरती से उन्हें कुछ भी तो रिज़क़ नहीं दे सकते और न कुछ ताक़त रखते हैं।

७४. तो अल्लाह (तआला) के लिए मिसाल न बनाओ, अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है और तुम नहीं जानते।

७५. अल्लाह (तआला) एक मिसाल के बयान कर रहा है कि एक गुलाम है दूसरे की मिल्कियत का जो किसी बात का हक्क नहीं रखता, और एक दूसरा इंसान है जिसे हम ने अपने पास से बेहतरीन धन दे रखा है, जिस में से वह छुपे और खुले तौर से खर्च करता है, क्या ये सब बराबर हो सकते हैं? अल्लाह (तआला) ही के लिए सारी तारीफ़ें हैं, बल्कि उन में के ज़्यादातर नहीं जानते।

وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ۗ فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا بِرَأْسِي رِزْقِهِمْ عَلَىٰ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ ۗ
أَفَبِعِصْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُونَ ﴿٧١﴾

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُمْ مِنَ الكَلْبِ ۗ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِعِصْمَةِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُونَ ﴿٧٢﴾

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِنَ السَّمٰوٰتِ وَالأَرْضِ شَيْئًا وَلا يَسْتَظِئُونَ ﴿٧٣﴾

فَلَا تَطْرِبُوهَا يَلٰوِ الأَمْثَالَ ۗ إِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧٤﴾

صَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوكًا لَا يَقْدِرُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا هَلْ يَسْتَوُونَ ۗ
الْعَبْدُ يَلٰوِ بِلِ الأَكْثَرُ هُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

¹ कुछ अलिम कहते हैं कि यह गुलाम और आज़ाद की मिसाल है कि पहला गुलाम और दूसरा आज़ाद है, ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। कुछ कहते हैं कि यह ईमानवानों और काफ़िरो का मुआज़ना है, पहला काफ़िर और दूसरा ईमानवाला है, ये बराबर नहीं। कुछ कहते हैं कि यह अल्लाह तआला और झूठे देवताओं का मुआज़ना है, पहले से मुराद झूठे देवता और दूसरे से अल्लाह है, ये दोनों बराबर नहीं हो सकते। मतलब यही है कि एक गुलाम और आज़ाद, इसके बावजूद कि दोनों इंसान हैं, दोनों अल्लाह की मख़नूक हैं और दूसरे भी बहुत-सी बातें दोनों के बीच बराबर हैं, इस के बावजूद मान-सम्मान, इज़्जत और एहतेराम में दोनों को बराबर नहीं समझते, तो अल्लाह तआला और पत्थर की एक मूर्ति या एक क़ब्र की ढेरी ये दोनों किस तरह बराबर हो सकते हैं?

७६. और अल्लाह (तआला) एक दूसरी मिसाल बयान करता है दो इंसानों की जिन में से एक गूंगा है और किसी चीज पर हक़ नहीं रखता, बल्कि वह अपने मालिक पर वोद्व है, कहीं भी उसे भेजे वह कोई भलाई नहीं लाता, क्या यह और वह जो इंसाफ़ का हुक्म देता है और है भी सीधे रास्ते पर, बराबर हो सकते हैं?

७७. और आकाशों और धरती का ग़ैब केवल अल्लाह ही को मालूम है, और क्रयामत की बात तो ऐसी ही है, जैसे आँख का झपकना, बल्कि इस से भी ज़्यादा करीब। बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज पर कुदरत रखने वाला है।

७८. और अल्लाह (तआला) ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेट से निकाला है कि उस वक़्त तुम कुछ भी नहीं जानते थे, उसी ने तुम्हारे कान और आँखें और दिल बनाये कि तुम शुक्रिया अदा कर सको।

७९. क्या उन लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा जो हुक्म के मुताबिक बंधे हुए आकाश में हैं, जिन्हें अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा नहीं धामे हुए है। बेशक इस में ईमान लाने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं।

८०. और अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों में रहने की जगह बना दिया है, और उसी ने तुम्हारे लिये जानवरों की खालों के घर बना दिये हैं, जिन्हें तुम हल्का पाते हो अपने प्रस्थान (कूच करने) के दिन और अपने पड़ाव के दिन भी, और उन के ऊन, रोयें और बालों से भी उस ने बहुत-सी चीज़ें और एक मुकर्रर वक़्त तक के लिए फ़ायदे की चीज़ें बना दीं।

وَصَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا زُجَلَيْنِ أَحَدُهُمَا أَبْكُم لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ كَلٌّ عَلَى مَوْلَاهُ أَيْنَمَا يُوَجِّههُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٧٦﴾

وَلِلَّهِ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٧٧﴾

وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا ۗ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۗ لَكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾

الْم يَرَوْنَ إِلَى الظَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوْءِ السَّمَاءِ ۗ مَا يُنْسِكُنَّ إِلَّا اللَّهُ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٧٩﴾

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۗ وَمِنْ أَصْوَابِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَانًا وَمَتَاعًا إِلَى حِينٍ ﴿٨٠﴾

८१. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीजों में से छाया बनायी है। और उसी ने तुम्हारे लिए पहाड़ों में गुफा बनायी है और उसी ने तुम्हारे लिए कपड़े बनाये हैं जो तुम्हें गर्मी से महफूज रखे और ऐसे कवच भी जो तुम्हें लड़ाई के वक़्त काम आयें, वह इसी तरह अपनी पूरी-पूरी नेमत अता कर रहा है कि तुम फ़रमावदार बन जाओ।

८२. फिर भी अगर ये मुँह मोड़े रहें तो आप पर केवल साफ़ तौर से पहँचा देना है।

८३. ये अल्लाह की नेमत जानते-पहचानते हुए भी उन को नकार रहे हैं, बल्कि उन में से ज़्यादातर नाशुके हैं।

८४. और जिस दिन हम हर उम्मत में से गवाह खड़ा करेंगे फिर काफ़िरों को न तो इजाज़त दी जायेगी और न क्षमा-याचना (तौबा) करने को कहा जायेगा।

८५. और जब ये ज़ालिम लोग अजाब देख लेंगे, फिर न तो उन से हल्की की जायेगी और न वे ढील दिये जायेंगे।

८६. और जब मुशरिक अपने शरीकों को देख लेंगे तो कहेंगे कि हे हमारे रब! यही हमारे साझीदार है, जिन्हें हम तुझे छोड़ कर पुकारा करते थे, फिर वे उनको जवाब देंगे कि तुम पूरे ही झूठे हो।

८७. और उस दिन वे सब (मजबूर होकर) अल्लाह के सामने आज्ञाकारी (फ़रमावदार) होना कुबूल करेंगे और जो बुहतान लगाया करते थे वह सब उन से खो जायेंगे।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِمَّا خَلَقَ ظِلًّا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا وَجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْبَأْسَ وَكَذٰلِكَ يُرِيْمُ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿۸۱﴾

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَّا عَلَيْنَا الْبَلٰغُ الْمُبِينُ ﴿۸۲﴾
يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَاَكْثَرُهُمْ الْكَافِرُوْنَ ﴿۸۳﴾

وَيَوْمَ نَنفَعُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيدًا ثُمَّ لَا يُذَنُّ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۸۴﴾

وَإِذَا رَأٰۤى الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَدَابَ فَلَا يَخْفَفُ عَنْهُمْ وَاَلَا هُمْ يُنظَرُوْنَ ﴿۸۵﴾

وَإِذَا رَأٰۤى الَّذِيْنَ أَشْرَكُوا شُرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ شُرَكَاءُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُونِكَ ۗ قَالِقَوْلِ الْيَوْمِ الْقَوْلِ إِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿۸۶﴾

وَأَلْقُوا إِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ السَّلْمَ وَوَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَعْتَرُونَ ﴿۸۷﴾

हल्का न करने का मतलब बीच में कोई आराम नहीं होगा, अजाब लगातार बिना किसी तरह की देर के होगा, और न ढील ही दी जायेगी यानी उन्हें तुरन्त कसकर पकड़ लिया जायेगा और जंजीरों से जकड़कर नरक में फेंक दिया जायेगा या माफ़ी मागने का मौका भी नहीं दिया जायेगा, क्योंकि आखिरत अमल करने की जगह नहीं बदला हासिल करने की जगह है।

८८. जिन्होंने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका हम उन्हें अजाब पर अजाब बढ़ाते जायेंगे, यह बदला होगा उनके फसाद पैदा करने का।

८९. और जिस दिन हम हर उम्मत में उन्हीं में से उन के ऊपर गवाह खड़ा करेंगे और तुझे उन सब पर गवाह बनाकर लायेंगे, और हम ने तुझे पर यह किताब उतारी है जिस में हर बात का खुला बयान है^२ और हिदायत और रहमत और खुशखबरी है मुसलमानों के लिए।

९०. बेशक अल्लाह (तआला) इंसाफ का, भलाई का और करीबी रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म देता है और बेहयाई के कामों और बुराईयों और जुल्म से रोकता है, वह खुद तुम को नसीहत कर रहा है, ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

९१. और अल्लाह से किये हुए वादे को पूरा करो, जबकि तुम आपस में वादे और अहद करो और कसमों को उनकी मजबूती के बाद मत तोड़ो, जबकि तुम अल्लाह (तआला) को अपना उत्तरदायी ठहरा चुके हो,^३ तुम जो कुछ करते हो अल्लाह

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدَّوْا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زُجُودًا لَهُمْ
عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿۸۸﴾

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ
أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ ۗ
وَنُزِّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ بَيِّنَاتٍ لِّكُلِّ شَيْءٍ
وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ ﴿۸۹﴾

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَاءِ ذِي
الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفُسْخَاءِ وَالْبُذْرِ وَالْبِخْلِ ۗ
يُعْظُمُ عَلَيْكُمْ لَعْنَتُهُ تَذَكَّرُونَ ﴿۹۰﴾

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا
الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ
عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۗ إِنَّ اللَّهَ يُعَلِّمُ مَا تُفْعَلُونَ ﴿۹۱﴾

^१ जिस तरह जन्नत में ईमान वालों के कई पद होंगे, उसी तरह जहन्नम में काफिरों के अजाब में भिन्नता होगी, जो भटके हुए होने के साथ दूसरे लोगों को भटकाने का सबब बने होंगे, उनके अजाब दूसरों के मुकाबिल ज्यादा होंगे।

^२ किताब से मुराद अल्लाह की किताब और नबी ﷺ की तफसीर यानी हदीस है, अपनी हदीसों को भी अल्लाह के रसूल ﷺ ने अल्लाह की किताब कहा है, जैसाकि उसैफ के किस्सा बगीरह में है। (देखिये सहीह बुखारी, किताबुल मुहारेबीन, वाब हल यामुरू इमाम रजुलन फयजरेबुल हद गायबन अन्ह, किताबुल सलात, बाबु जिक्ल बये वल शराअे अलल भिम्बर फिल मस्जिद) और हर चीज का मतलब है माजी और मुस्तकविल की वे खबरें जिनका इल्म जरूरी और फायदेमद है, उसी तरह अम्र और निषेध (ममानिअत) का बयान और वे बातें जिन का दीन, दुनिया, तिजारत और रोजी के बारे में इंसान मजबूर है, कुरआन और हदीस दोनों में यह सब बातें वाजेह कर दी गयी हैं।

^३ कसम एक तो वह है जो किसी सुलह या अहद के वक़्त उसे पक्का करने के लिए खायी जाती है। दूसरी कसम वह है जो इंसान अपने तौर से किसी वक़्त भी खा लेता है कि फलां काम करूँगा या नहीं करूँगा, यहाँ आयत में पहले बयान कसम का मतलब है कि तुम ने कसम खायी

तआला उसे अच्छी तरह जानता है ।

१२. और उस (औरत) की तरह न हो जाना कि जिसने अपना सूत मजबूत कातने के वावजूद टुकड़े-टुकड़े तोड़ दिया कि तुम अपनी कसमों को आपस में छल-कपट का सबब बनाओ, इसलिए कि एक गुट दूसरे गुट से ऊँचा हो जाये, बात केवल यही है कि इस वादे से अल्लाह तुम्हारा इम्तेहान ले रहा है। बेशक अल्लाह तआला तुम्हारे लिए क़ायमत के दिन हर उस चीज को वाजह करके बयान कर देगा, जिस में तुम इख़्तिलाफ़ कर रहे थे ।

१३. और अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो तुम सब को एक मत बना देता, लेकिन वह जिसे चाहे भटका देता है और जिसे चाहे हिदायत देता है। बेशक तुम जो कुछ कर रहे हो उसकी पूछताछ की जाने वाली है ।

१४. और तुम अपनी कसमों को आपस के छल-कपट का जरिया न बनाओ, फिर तो तुम्हारे क़दम अपनी मजबूती के वाद डगमगा जायेंगे और तुम्हें सख्त अज़ाब चखना पड़ जायेगा क्योंकि तुम ने अल्लाह के रास्ते से रोक दिया और तुम्हें ज़्यादा सख्त अज़ाब होगा ।

१५. और तुम अल्लाह के वादे को थोड़े मूल्य के बदले न बेच दिया करो। याद रखो, अल्लाह के पास की चीज ही तुम्हारे लिए अच्छी है, अगर तुम में इल्म हो ।

१६. तुम्हारे पास जो कुछ है सब नाश होने वाला है और अल्लाह के पास जो कुछ है हमेशा रहने वाला है, और सब रखने वालों को हम अच्छे अमल का अच्छा बदला जरूर अता करेंगे ।

وَلَا تَتَّخِذُوا كَالَّذِينَ نَقَضَتْ غَزْلَهُمَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ
اتِّكِنًا وَا تَتَّخِذُونَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ
تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ
اللَّهُ بِهِ ۖ وَلِيُنَبِّئَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَا كُنتُمْ
فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٢﴾

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ
يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۗ
وَلِنَسْتَلْزِمَنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَزُولَ
قَدَمُكُمْ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوءَ بِمَا صَدَدْتُمْ
عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۗ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٩٤﴾

وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۗ إِنَّمَا
عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩٥﴾

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٍ ۗ
وَلَنَجْزِيَنَ الْبَدِئِينَ صَابِرُونَ ۗ أَعْرَهُمْ بِأَحْسَنِ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٦﴾

है, क्योंकि दूसरे बयान क़सम के बारे में हदीस में हुक़्म दिया गया है कि कोई इंसान किसी काम के लिए भी क़सम खा ले फिर देखे कि ज़्यादा नेकी दूसरे अमल में है यानी क़सम के खिलाफ़ करने में है, तो वह नेकी का काम करे और क़सम को तोड़कर उसका क़फ़ारा (प्रायश्चित्त) अदा करे ।

९७. जो इंसान नेकी के काम करे मर्द हो या औरत, और वह ईमानवाला हो तो हम उसे बेशक सब से अच्छी जिन्दगी अता करेंगे, और उन के नेकी के कामों का अच्छा बदला भी उन्हें जरूर देंगे।

९८. कुरआन पढ़ते समय धिक्कारे हुए शैतान से अल्लाह की पनाह मांगा करो।

९९. ईमानवालों और अपने रब पर भरोसा रखने वालों पर उसका कभी जोर नहीं चलता।

१००. हाँ, उसका असर उन पर जरूर है जो उस से दोस्ती करें और उसे अल्लाह का साझीदार बनायें।

१०१. और जब हम किसी आयत की जगह पर दूसरी आयत बदल देते हैं और जो कुछ अल्लाह (तआला) उतारता है, उसे वह अच्छी तरह जानता है, तो यह कहते हैं कि तु तो बुहतान लगाने वाला है, बात यह है कि उन में से ज्यादातर जानते ही नहीं।

१०२. आप कह दीजिए कि उसे आप के रब की तरफ से जिब्रिल हक के साथ लेकर आये हैं, ताकि ईमानवालों को अल्लाह (तआला) स्थिरता (सबात) अता करे और मुसलमानों के लिए हिदायत और खुशखबरी हो जाये।

१०३. और हमें अच्छी तरह मालूम है जो काफिर कहते हैं कि उसे तो एक आदमी सिखाता है उसकी भाषा जिसकी तरफ यह मुखातिब कर रहे हैं अजमी (खालिस अरबी भाषा नहीं) है, और यह कुरआन तो साफ अरबी भाषा में है।

१०४. जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों पर ईमान नहीं रखते, उन्हें अल्लाह की तरफ से भी हिदायत हासिल नहीं होती और उन के लिए दुखदायी अजाब है।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۗ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ
بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿۹۷﴾

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ
الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ﴿۹۸﴾

إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ
رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿۹۹﴾

إِنَّمَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَلَّوْنَهُ وَالَّذِينَ
هُم بِهِ مُشْرِكُونَ ﴿۱۰۰﴾

وَإِذَا بَدَلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ ۖ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا
يَعْمَلُونَ ﴿۱۰۱﴾

قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ
لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَىٰ
لِلْمُسْلِمِينَ ﴿۱۰۲﴾

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَعْمَلُونَ وَإِنَّمَا يُعَلِّمُهُ
بَشَرٌ مِّمَّنْ لِسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ
أَعْجَبُ مِنْ هَذَا لِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِينٍ ﴿۱۰۳﴾

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۖ
لَا يَهْدِيَنَّهُمُ اللَّهُ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۱۰۴﴾

१०५. झूठा इल्जाम तो वही लगाते हैं जिन्हें अल्लाह (तआला) की आयतों पर ईमान नहीं होता, और यही लोग झूठे हैं।

१०६. जो इंसान अपने ईमान के वाद अल्लाह से कुफ्र करे उसके सिवाय जिसे मजबूर किया जाये और उसका दिल ईमान पर कायम हो, लेकिन जो लोग खुले दिल से कुफ्र करे तो उन पर अल्लाह का ग़ज़ब है और उन्हीं के लिए बहुत बड़ा अज़ाब है।

१०७. यह इसलिए कि उन्होंने दुनियावी जिन्दगी को आखिरत की जिन्दगी से बेहतर समझा। बेशक अल्लाह (तआला) काफिर लोगों को हिदायत नहीं करता।

१०८. यह वे लोग हैं जिन के दिलों पर और जिन के कानों और जिनकी आँखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और यही लोग गाफिल हैं।

१०९. कोई शक नहीं कि यही लोग आखिरत में ज्यादा नुकसान उठाने वाले हैं।

११०. फिर जिन लोगों ने इम्तेहान में डाले जाने के बाद (धार्मिक कारणों से) हिजरत किया फिर जिहाद किया और सब का इजहार किया। बेशक तेरा रव इन बातों के बाद उन्हें माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

إِنَّمَا يَغْتَمِرُ الْكُذِّبَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُوتِيكَ هُمُ الْكُذِّبُونَ ﴿١٠٥﴾

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إِيمَانِهِ إِلَّا مَنْ
أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ مَنْ
شَرَّحَ بِالْكَفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ
اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٦﴾

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ
وَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٧﴾

أُوتِيكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ
وَسَمِعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ وَأُوتِيكَ هُمُ
الْغَافِلُونَ ﴿١٠٨﴾

لَا جَرَمَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْخَاسِرُونَ ﴿١٠٩﴾

ثُمَّ إِنْ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا
قَاتَبُوا ثُمَّ جَاهَدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ
بَعْدِ مَا لَقَقُوا رَاحِمٌ ﴿١١٠﴾

1 यह मुर्तद की सजा है कि वह अल्लाह के ग़ज़ब और सबल अज़ाब के हक़दार होंगे और उसकी दुनियावी सजा क़त्ल है।

2 यह मक्के के उन मुसलमानों का बयान है जो कमज़ोर थे और दिने इस्लाम कुबूल करने के सबब काफ़िरो के ज़ुल्म और ज़्यादती का निशाना बने रहे। आख़िर उन्हें हिजरत का हुक्म दिया गया तो वे अपने सगे-सम्बन्धियों, देश, धरती, माल और ज़मीन सब कुछ छोड़कर इथोपिया या मदीना चले गये, फिर जब काफ़िरो के साथ लड़ाई का मौका आया तो पूरी

१११. जिस दिन हर इंसान अपने लिए लड़ता-झगड़ता आयेगा और हर इंसान को उस के किये का पूरा बदला दिया जायेगा और लोगों पर कभी जुल्म न किया जायेगा ।

११२. और अल्लाह (तआला) उस बस्ती की मिसाल पेश करता है, जो पूरे सुख-शान्ति से थी, उसका रिज़क उसके पास खुशहाली के साथ हर रास्ते से चली आ रही थी, फिर उस ने अल्लाह (तआला) की नेमतों का इंकार किया, तो अल्लाह (तआला) ने उसे भूख और डर का मजा चखा दिया, जो बदला था उन के करतूतों का ।

११३. और उन के पास उन्हीं में से रसूल पहुँचा, फिर भी उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें अजाब ने आ पकड़ा और वे थे भी जालिम ।

११४. और जो कुछ हलाल (उचित) और पाक रोजी अल्लाह ने तुम्हें अता कर रखी है, उसे खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्रिया अदा करो, अगर तुम उसी की इबादत करते हो ।

११५. तुम पर केवल मुर्दा और खून और सूअर का गोश्त और जिस चीज़ पर अल्लाह के सिवाय दूसरे का नाम लिया जाये हराम है, फिर भी अगर कोई इंसान मजबूर कर दिया जाये और न वह जालिम हो और न हद से बढ़ने वाला हो, तो बेशक अल्लाह माफ करने वाला और रहम करने वाला है ।

يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَلَّى
كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهِيَ لَا يَظْلُمُونَ ﴿۱۱۱﴾

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً
مُطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ
مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَّاها اللَّهُ
لِبَاسِ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ﴿۱۱۲﴾

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ
الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ﴿۱۱۳﴾

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا
وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ
تَعْبُدُونَ ﴿۱۱۴﴾

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَالْمَرْوَةَ
الْخَائِضَةَ وَمِمَّا أُوْحِلَ لِيَخْبَرِ اللَّهُ بِهِ فَمَنْ
أَضْطَرَّ عَلَيْهِ بِأَخٍ وَلَا عَاجٍ فَإِنَّ اللَّهَ
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿۱۱۵﴾

वहादुरी से लड़ने के लिए जिहाद में पूरी तरह से हिस्सा लिया और फिर उस रास्ते की कठिनाईयों और दुखों को सब्र के साथ सहन किया । इन सभी बातों के बाद बेशक उनके लिए तुम्हारा रब मेहरबानी और रहम करने वाला है, यानी रब की मेहरबानी और रहमत को हासिल करने के लिए ईमान और गुनाह के अमल का होना जरूरी है । जैसाकि बयान किये गये मुहाजिरों ने ईमान और अमल का सब से अच्छा मुजाहिदा किया तो रब की मेहरबानी और रहमत से बे कामयाब हुए ।

११६. और किसी चीज को अपने मुंह से झूठ ही न कह दिया करो कि यह हलाल है और यह हARAM है कि अल्लाह पर झूठा आरोप कर दो, बेशक अल्लाह (तआला) पर झूठा आरोप करने वाले कामयाबी से महरूम ही रहते हैं।

११७. उन्हें बहुत कम फायदेा हासिल होता है और उन के लिए ही दर्दनाक अजाब है।

११८. और यहूदियों पर जो कुछ हम ने हARAM किया था उसे हम पहले ही से आप को सुना चुके हैं, हम ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद अपनी जानों पर जुल्म करते रहे।

११९. कि जो कोई जिहालत से बुरे अमल करे, फिर उस के बाद तौबा (क्षमा-याचना) कर ले और सुधार भी कर ले, तो फिर आप का रव बेशक बड़ा माफ करने वाला और बहुत रहम करने वाला है।

१२०. बेशक इब्राहीम अगुवा^२ और अल्लाह तआला की इताअत करने वाले एकसू बेगर्ज थे, और वह मुरिरकों में से न थे।

१२१. अल्लाह तआला की अता की हुई नेमतों के शुक्रगुजार थे, अल्लाह (तआला) ने उन्हें निर्वाचित (मुन्तखब) कर लिया था और उन्हें सीधे रास्ते की हिदायत दे दिया था।

१२२. और हम ने उन्हें दुनिया में भी अच्छाई दी, और बेशक वह आखिरत में भी नेक लोगों में से हैं।

وَلَا تَقُولُوا إِنَّمَا أَصَبْتُكَ إِنَّمَا كَذَّبْتُ هَذَا
حَلَلٌ وَهَذَا حَرَامٌ تَقْفُرُوا عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ
إِنَّ الَّذِينَ يَفْتُرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ
لَا يُفْلِحُونَ ﴿۱۱۶﴾

مَتَاعٌ قَلِيلٌ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿۱۱۷﴾

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَمًا مَّا قَصَصْنَا
عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۖ وَمَا فَكَّرْنَاهُمْ وَلَكِن كَانُوا
أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿۱۱۸﴾

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا الشُّوْءَ بِجَهَالَةٍ
ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ
مِنْ بَعْدِ هَٰذَا لَعَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۱۹﴾

إِنَّ إِبْرَاهِيْمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا ۖ
وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۲۰﴾

شَاكِرًا لِأَنْعُمِهِ ۖ اجْتَبَاهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ
مُسْتَقِيْمٍ ﴿۱۲۱﴾

وَآتَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ۖ لَمَّا آتَتْهُ فِي الْأُخْرَىٰ
لِيَمُنَّ الضَّالِّجِيْنَ ﴿۱۲۲﴾

^१ यह इशारा है उन जानवरों की तरफ जो वह मूर्तियों के नाम नजर करके उनको अपने लिए हARAM कर लेते थे। जैसे बहिरः, साएबः, बसीलः और हाम बगैरह (आदि)। (देखिये सूरः अल-मायेदः-१०३, सूरः अल-अनाम-१३९ से १४१ तक की तफसीर)

^२ उम्मत का मतलब मुखिया और अगुवा भी है जैसाकि तर्जुमा से वाजेह है, और उम्मत का मतलब पैरोकार भी है। इस बिना पर हजरत इब्राहीम का अस्तित्व (वजूद) एक उम्मत के बराबर था। (उम्मत के मतलब के लिए सूरः हूद-८ की तफसीर देखिये)

१२३. फिर हम ने आप की तरफ बहयी (प्रकाशना) भेजी कि आप इब्राहीम हनीफ के मजहब की इत्तेबा करें, और वह मुशिरकों (अनेकेरवर के पुजारियों) में न थे।

१२४. शनिवार के दिन (की अहमियत) को तो केवल उन लोगों के लिए ही जरूरी किया गया था जिन्होंने उस में इख्तिलाफ किया था, बात यह है कि आप का रब खुद ही उन में उन के इख्तिलाफ का फैसला क्रयामत के दिन करेगा।

१२५. अपने रब की तरफ लोगों को हिक्मत और अच्छी शिक्षा के साथ बुलायें और उन से अच्छी तरह से बात करें, बेशक आप का रब अपने रास्ते से भटकने वालों को भी अच्छी तरह जानता है और वह रास्ते पर चलने वालों से भी पूरी तरह से वाकिफ है।

१२६. और अगर बदला लो भी तो बिल्कुल उतना ही जितना दुख तुम्हें पहुँचाया गया हो, और अगर सब्र करो तो बेशक साबिरो के लिए यही बेहतर है।

१२७. आप सब्र करें बिना अल्लाह की रहमत से आप सब्र कर ही नहीं सकते और उनकी हालत से दुखी न हों और जो छल-कपट यह करते हैं; उन से तंग दिल न हो।

१२८. यकीन करो कि अल्लाह (तआला) परहेजगारों और नेकी करने वालों के साथ है।

لَمْ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنْ تَبْتَغِ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ
حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿١٢٣﴾

إِنَّمَا جَعَلْنَا السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اتَّخَفُوا فِيهِ ۗ
وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٢٤﴾

أَوْعِ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ
الْحَسَنَةِ ۚ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِنَّ رَبَّكَ
هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِينَ ﴿١٢٥﴾

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوا بِمِثْلِ مَا عَاقَبْتُمْ بِهِ ۗ
وَكَيِّنْ صَبْرْتُمْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّلصَّابِرِينَ ﴿١٢٦﴾

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللَّهِ وَلَا تَحْزَنْ
عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُن فِي ضَلُوبٍ مِّمَّن يَبْتَلُونَ ﴿١٢٧﴾

إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ
هُم مُّضِيِّونَ ﴿١٢٨﴾

1 'मिल्लत' का मतलब है ऐसा दीन जिसे अल्लाह तआला ने अपने किसी नबी के जरिये लोगों के लिए जायेज और फर्ज किया है। नबी ﷺ इस के बावजूद कि आप ﷺ सभी नबियों सहित आदम की औलाद के सरदार हैं, आप ﷺ को इब्राहीम के धार्मिक नियमों की इत्तेबा करने के लिए कहा गया है, जिससे हजरत इब्राहीम की अहमियत और फजीलत की तसदीक होती है, वैसे मौलिक रूप (अखलाकी तौर) से सभी नबियों के धार्मिक नियम और मजहब एक ही रहे हैं, जिस में रिसालत के साथ तौहीद और आखिरत को बुनियादी हैसियत हासिल है।

सूरतु इस्रा-१७

سُورَةُ الْإِسْرَاءِ

सूरतु इस्रा* मक्के में उतरी और इस की एक सौ ग्यारह आयतें और बारह रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. पाक है वह (अल्लाह तआला) जो अपने बन्दे को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अकसा तक ले गया, जिस के आसपास हम ने वरकतें (विभूतियाँ) अता कर रखी हैं^३ इसलिए कि हम उसे अपनी कुदरत के कुछ जलवे दिखायें^४ बेशक

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيكَ مِنْ آيَاتِنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ①

* यह सूर: मक्के में नाजिल हुई, इसलिए इसे मक्की कहते हैं। इस सूर: का दूसरा नाम बनी इस्राईल भी है, इसलिए कि इस में बनी इस्राईल के कुछ वाक़ेआत का बयान है। सहीह बुखारी में है कि हज़रत अब्दुल्लाह विन मसऊद खुद सुनकर कहते हैं कि सूर: कहफ, मरियम और बनी इस्राईल यह इबतदाई सूरतों में से है।

① इस्रा का मतलब होता है रात के वक़्त ले जाना। आगे لَيْلًا (रात) इसलिए बयान किया गया ताकि रात की कमी वाजह हो जाये, यानी रात के एक हिस्से या थोड़े से हिस्से में, यानी चालीस रात का यह सफ़र, पूरी रात में भी नहीं बल्कि रात के एक थोड़े से हिस्से में पूरी हुई।

② दूर को कहते हैं। वैतुल मक़दिस जो अल-कुदस या इलिया (पुराना नाम) नगर में है और फिलिस्तीन में मौजूद है, मक्का से अल-कुदस तक का सफ़र ४० दिन का है, इस विना पर मस्जिदे हराम की तुलना में वैतुल मक़दिस को मस्जिदे अकसा (दूर की मस्जिद) कहा गया है।

③ यह इलाक़ा कुदरती नदियों और फलों की अधिकता और नवियों की धरती है जहाँ उनका निवास स्थान और समाधिस्थल (मदफ़न) होने के सबब बेहतर है, इसलिए इसे मुबारक कहा गया है।

④ इस सफ़र का यह मक़सद है ताकि हम अपने इस बन्दे को मुख़तलिफ़ और बड़ी निशानियाँ दिखायें, जिन में से एक निशानी और मौज़िज़ा यह सफ़र भी है कि इतना लम्बा सफ़र रात के एक छोटे से हिस्से में हो गया। नबी करीम ﷺ को जो मेराज हुई यानी आकाशों पर ले जाया गया, वहाँ कई आकाशों पर अबिया से मिलन हुआ, इसकी तारीख़ में इब्नेलाफ़ है, फिर भी इस पर इत्तेफ़ाक़ है कि यह हिज़रत से पहले का वाक़ेआ है। कुछ कहते हैं कि एक साल पहले की और कुछ कहते हैं कि कई साल पहले यह वाक़ेआ हुआ। इसी तरह महीना और तारीख़ में भी इब्नेलाफ़ है, कोई रबीउल अब्वल १७ या २७, कोई रजब की २७ और कुछ कोई दूसरे महीने और इसकी तारीख़ बताते हैं।

अल्लाह (तआला) ही अच्छी तरह सुनने देखने वाला है ।

२. और हम ने मूसा को किताब अता की और उसे इस्राईल की औलाद के लिए हिदायत बना दिया कि तुम मेरे सिवाय किसी दूसरे को कारसाज न बनाना ।

३. हे उन लोगों की औलाद! जिन्हें हम ने नूह के साथ सवार किया था, वह हमारा बहुत शुक्रगुजार वन्दा था ।

४. और हम ने इस्राईल की औलाद के लिए उनकी किताब में वाज़ेह फैसला कर दिया था कि तुम धरती पर दो बार फ़साद पैदा करोगे और तुम बहुत जुल्म करोगे ।

५. इन दोनों वादों में से पहले के आते ही हम ने तुम्हारे सामने अपने बन्दों को उठा खड़ा किया जो बड़े लड़ाकू थे, फिर वह तुम्हारे घरों के अन्दर तक फैल गये और अल्लाह का वादा पूरा होना ही था ।

६. फिर हम ने उन पर तुम्हारा गलबा दे कर (तुम्हारा दिन) फेर दिया और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की और तुम्हें बड़े जत्थे वाला कर दिया ।

وَأَتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ إِلَّا تَتَّخِذُوا مِنْ دُونِي وَكَيْلًا ②

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ③

وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّةً مَّرَّةً وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ④

فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَنَا أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الثِّيَابِ ⑤ وَكَانَ وَعْدًا مَفْعُولًا ⑤

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاكُمْ بِأَمْوَالِكُمْ لَتَفِيضَنَّ وَجَعَلْنَاكُمْ لَشْرًا مُّبِينًا ⑥

1 नूह के बरत के तूफान (जल-प्रलय) के बाद इंसान का बंश नूह के उन बेटों के बंश से है जो नूह की नाव में सवार हुए थे और तूफान से बच गये थे, इसलिए इस्राईल की औलाद को मुखातिब करते हुए कहा गया कि तुम्हारे पिता नूह अल्लाह का बहुत शुक्रगुजार वंदा था, तुम भी अपने पिता की तरह शुक्रिया का रास्ता अपनाओ और हम ने जो मोहम्मद रसूल अल्लाह को रसूल बनाकर भेजा है, उनको इंकार करके नाशुक्री न करो ।

७. अगर तुम ने अच्छे काम किये तो खुद अपने फायदे के लिए, और अगर तुम ने बुराईयाँ की तो भी खुद अपने ही लिए, फिर जब दूसरा वादा आया तो (हम ने दूसरे बन्दों को भेज दिया) ताकि वे तुम्हारा मुँह बिगाड़ दें और पहली बार की तरह फिर उसी मस्जिद में घुस जायें और जिस-जिस चीज़ पर काबू पायें तोड़-फोड़ कर जड़ से उखाड़ दें।

८. उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम पर रहम करेगा, अगर तुम फिर भी वही करने लगे तो हम भी फिर ऐसा ही करेंगे, और हम ने नकारने वालों के लिए कैदखाना नरक को बना रखा है।

९. बेशक यह कुरआन वह रास्ता दिखाता है जो सब से सीधा है और ईमानदार नेकों को जो नेकी के काम करते हैं, इस बात की खुशखबरी देता है कि उनके लिए बहुत अच्छा बदला (प्रतिफल) है।

१०. और वह लोग जो आखिरत पर यकीन नहीं करते, उन के लिए हम ने दुखद अजाब तैयार कर रखा है।

११. और इंसान बुराई की दुआयें करने लगता है, बिल्कुल उसकी अपनी भलाई की दुआओं की तरह, इंसान बड़ा ही उतावला है।²

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا
فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءَ أَوْ يُجْهَلَمْ وَلِيَذُكَّ
الْمَسْجِدَ كَمَا ذُكِّتُمْ أُولَئِكَ مَرَّةً وَرَبِّتُمْ وَمَا عَلَّمُوا
تَنْبِيْهًا ⑦

عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَنْ يَرْحَمَكُمْ وَإِنْ عُدْتُمْ عَدَايَا
وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ⑧

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّذِي هُوَ أَقْوَمٌ وَيُبَشِّرُ
الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ
أَجْرًا كَبِيرًا ⑨

وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ⑩

وَيَدْعُ الْإِنْسَانَ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ
وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ⑪

¹ यह दूसरी बार उन्होंने फसाद पैदा किया कि हजरत जकरिया को कत्ल कर दिया और हजरत ईसा को कत्ल करने की योजना बनाते रहे जिन्हें अल्लाह तआला ने जिन्दा आकाश पर उठा कर उन से बचा लिया।

² इंसान चूँकि उतावला है, इसलिए जब उसे दुख पहुँचता है तो अपनी बरबादी की तमन्ना इस तरह करता है जिस तरह सुख के लिए अपने रब से दुआ करता है। यह तो अल्लाह की रहमत और मेहरबानी है कि उसकी वहुआ को कुबूल नहीं करता, यही विषय सूर: यूनस आयत ११ में आ चुका है।

१२. और हम ने रात और दिन को (अपनी कुदरत की) निशानी बनाये हैं, रात की निशानी को हम ने प्रकाशहीन (बेनूर) कर दिया और दिन की निशानी को रौशन दिखाने वाली बनाया है ताकि तुम अपने रव के फ़ज़ल की खोज कर सको और इसलिए भी कि सालों का गिनती और हिसाब जान सको, और हर विषय का हम ने तफ़सीली बयान कर दिया है।

१३. और हम ने हर इंसान की बुराई-भलाई को उस के गले डाल दिया है और क़यामत के दिन हम उसके नामा आमाल को निकालेंगे, जिसे वह अपने ऊपर खुला हुआ पा लेगा।

१४. लो खुद ही अपना कर्मपत्र (आमालनामा) आप पढ़ लो। आज तो तू आप ही अपना खुद फ़ैसला करने को काफ़ी है।

१५. जो हिदायत हासिल करता है, वह खुद अपने भले के लिए हिदायत हासिल करता है और जो गुमराह हो जाये उसका बोझ उसी के ऊपर है, कोई बोझ वाला किसी दूसरे का बोझ अपने ऊपर न लादेगा और हमारा नियम ही नहीं कि रसूल भेजने से पहले ही अजाब भेजें।

१६. और जब हम किसी के हलाक करने का इरादा कर लेते हैं तो वहाँ के खुशहाल लोगों को कुछ हुकम देते हैं और वे उस बस्ती में बाज़ेह तौर से नाफ़रमानी करने लगते हैं तो उन पर (अजाब का) फ़ैसला लागू हो जाता है और फिर हम उसे उलट-पलट कर देते हैं।

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَاتٍ لِّمَن ذَكَرَ
وَجَعَلْنَا آيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّمَن نَّشَاءُ
فَمَن ذَكَرْهُ لِيَزِدَّ عُدُوَّهُ النَّاسَ
وَكُلَّ شَيْءٍ فَجَعَلْنَاهُ آيَةً لِّمَن يَخْتَرُ ۝۱۲

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْمَمْنَاهُ بِرِئْسِهِ
لَهُ يَوْمَ الْحِسَابِ كِتَابٌ أَتَقَدَّرُ مِنْهُ ۝۱۳

اقْرَأْ كِتَابَكَ ۝ كَفَىٰ بِتَفْسِيكَ
الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝۱۴

مَن أَهْتَدَىٰ فَأَتَنَّا بِهْتَدَىٰ لِنَفْسِهِ ۝
وَمَن ضَلَّ فَاتَنَّا بِضَلَّ عَلَيْهَا ۝ وَلَا نُزِيلُ
وَارِدَةً وَرُزْقًا أُخْرَىٰ ۝ وَمَا
كُنَّا مُعَذِّبِينَ حَتَّىٰ نَبْعَثَ رَسُولًا ۝۱۵

وَإِذَا أَرَدْنَا أَن نُّهْلِكَ قَرْيَةً
أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا
فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ
فدَمَرْنَاهَا تَدْمِيرًا ۝۱۶

१ कुछ मुफ़्तिरों ने इस से केवल दुनियावी अजाब का मतलब लिया है, यानी आखिरत के अजाब से बच न सकेंगे, लेकिन क़ुरआन करीम के दूसरे मुकामों से बाज़ेह है कि अल्लाह तआला लोगों से पूछेगा कि क्या तुम्हारे पास रसूल नहीं आये थे? जिस पर वे सकारात्मक (मुसबत) जवाब देंगे, जिस से यह महसूस होता है कि रसूलों को भेजने और किताब उतारे बिना वह किसी को अजाब नहीं देगा फिर भी इसका फ़ैसला कि किस उम्मत या किस इंसान तक उसका पैग़ाम नहीं पहुँचा, क़यामत के दिन वह खुद ही कर देगा।

१७. और हम ने नूह के बाद भी बहुत से समुदाय नष्ट किये और तेरा रब अपने बंदों के गुनाहों से अच्छी तरह वाकिफ़ और अच्छी तरह देखने वाला है।

१८. जिसकी तमन्ना केवल इस जल्दी वाली दुनिया की ही हो, उसे हम यहाँ जितना जिस के लिए चाहें जल्दी से अता कर देते हैं, आखिर में उस के लिए हम नरक मुकर्रर कर देते हैं जहाँ वह बदहाल धिक्कारा हुआ दाखिल होगा।¹

१९. और जिसकी तमन्ना आखिरत की हो और जैसी कोशिश होनी चाहिए वह करता भी हो और वह ईमान के साथ भी हो, फिर तो यही लोग हैं जिनकी कोशिश को अल्लाह के यहाँ पूरा सम्मान किया जायेगा।

२०. हर एक को हम देते हैं, इन्हें भी और उन्हें भी, तेरे रब के उपकार (इन्आम) में से, और तेरे रब का उपकार रुका हुआ नहीं है।

२१. देख ले, उन में एक को एक पर किस तरह फ़ज़ीलत अता कर रखी है और आखिरत (परलोक) तो दर्जे के ऐतबार से बहुत बेहतर है और फ़ज़ीलत के ऐतबार से भी बहुत बेहतर है।²

२२. अल्लाह के साथ किसी दूसरे को माबूद न बना कि आखिर में तू निन्दित (जलील) बेमददगार होकर बैठ रहेगा।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍ ط وَكَفَى
بِرَبِّكَ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ﴿١٧﴾

مَنْ كَانَ يُرِيدِ الْعَاجِلَةَ جَعَلْنَا لَهُ فِيهَا مَا نَشَاءُ
لِئِنْ يُرِيدُ لَنُغْنِيَنَّهُ عَنْهَا كَثِيرًا زُكْرًا
مَدَّ مُؤْمًا مَدَّ حُورًا ﴿١٨﴾

وَمَنْ أَرَادَ الْآخِرَةَ وَسَعَى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَأُولَئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ تَشْكُورًا ﴿١٩﴾

كُلًّا نُسَبِّحُ هُوَاءً وَهُوَاءً مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ط
وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ﴿٢٠﴾

أَنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ ط
وَلِلْآخِرَةِ الْكِبْرُ دَرَجَاتٌ وَالْأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ﴿٢١﴾

لَا جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَقَدَّرَ مَا مَوْمًا
مَعْدُورًا ﴿٢٢﴾

¹ यानी हर संसार के लालची को दुनिया नहीं मिलती केवल उसको मिलती है जिसको हम चाहें, फिर उसको भी दुनिया उतनी नहीं मिलती जितने की वह तमन्ना करता है, बल्कि उतनी ही मिलती है जितनी हम उस के लिए फ़ैसला कर देते हैं, लेकिन इस दुनिया मांगने का नतीजा नरक का दायमी अज़ाब और उसका अपमान है।

² फिर भी दुनिया की यह चीजें किसी को कम किसी को ज्यादा मिलती हैं, अल्लाह तआला अपनी मर्जी और हिस्मत से यह रोजी बाँटता है, लेकिन आखिरत में दर्जों का यह फ़र्क़ ज्यादा बाज़ेह और जाहिर होगा और वह इस तरह कि ईमान वाले स्वर्ग में और काफ़िर लोग नर्क में जायेंगे।

२३. और तेरा रब खुला हुक्म दे चुका है कि तुम उसके सिवाय किसी दूसरे की इबादत (आराधना) न करना और माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करना, अगर तेरी मौजूदगी में इन में से एक या ये दोनों बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उनको ऊफ़ तक न कहना, उन्हें डांटना नहीं बल्कि उनके साथ इज़्जतो एहतेराम से बातचीत करना ।¹

२४. और नर्मी और मुहब्बत के साथ उन के सामने इन्केसारी के हाथ फैलाये रखना,² और दुआ करते रहना कि हे मेरे रब ! इन पर ऐसे ही रहम करना जैसाकि इन्होंने मेरे बचपन में मेरा पालने पोसने में किया है ।

२५. जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे तुम्हारा रब अच्छी तरह जानता है, अगर तुम नेक हो तो वह तौबा करने वालों को माफ़ करने वाला है ।

२६. और रिश्तेदारों का, और गरीबों का, और मुसाफ़िरो का हक़ अदा करते रहो,³ और फुज़ूल खर्ची से बचो ।

وَكُفَىٰ رَبُّكَ الْأَعْبُدَ إِلَّا إِلَٰهًا وَالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا
إِنَّمَا يَنْبَغُنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرُ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا
فَلَا تَقُلْ لَهُمَا أَبِي وَلَا تَنْهَرُهُمَا وَقُلْ لَهُمَا
قَوْلًا كَرِيمًا ﴿٢٣﴾

وَاحْفَظْ لَهُمَا جَنَاحَ الذِّئْبِ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ
رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيْتَنِي صَغِيرًا ﴿٢٤﴾

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِي قُلُوبِكُمْ إِن تَكُونُوا
صَالِحِينَ فَإِنَّهُ كَانَ لِلأَوَّابِينَ غَفُورًا ﴿٢٥﴾

وَأْتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّبِيلَ
وَأْتِ بِذُلٍّ وَلَا تَكُن مِّنَ الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٢٦﴾

¹ इस आयत में बहुत रहम करने वाला अल्लाह तआला ने अपनी इबादत के दूसरे हिस्से में माता-पिता के साथ अच्छे सुलूक का हुक्म दिया है, जिससे माता-पिता की फ़रमावरदारी, उनकी ख़िदमत और उनकी इज़्जतो एहतेराम की अहमियत बाज़ेह होती है ।

² पक्षी जब अपने बच्चों को अपनी प्रेम छाया में लेता है तो उन के लिए अपने पंख नीचे गिरा देता है, यानी तू भी अपने माता-पिता के साथ इसी तरह अच्छा और मुहब्बत भरा सुलूक कर और उनकी इसी तरह देखभाल कर जिस तरह उन्होंने बचपन में तेरा किया ।

³ क़ुरआन करीम के इन लफज़ों से मालूम हुआ कि गरीब करीबी रिश्तेदारों, गरीबों और किसी तरह की ज़रूरत वाले मुसाफ़िरो की मदद करके उन पर एहसान ज़ताना नहीं चाहिए, क्योंकि यह एहसान नहीं बल्कि माल का वह हिस्सा है जो अल्लाह तआला ने धनवानों के धन में बयान किये इंसानों का रखा है, अगर धनवान यह धन अदा नहीं करेगा तो अल्लाह के सामने गुनहगार होगा, इसके सिवाय करीबी रिश्तेदारों का बयान करने से उन की तरज़ीह और हक़ भी बाज़ेह होता है । करीबी रिश्तेदारों के हक़ों को अदा करना और उनके साथ अच्छा सुलूक करने को रिश्ता जोड़ना कहा जाता है, जिसकी इस्लाम में बड़ी अहमियत है ।

२७. फुजूल खर्ची करने वाले शैतानों के भाई हैं और शैतान अपने रब का बहुत नाशुका है।

إِنَّ الْمُبَدِّرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ طَوَّافًا
الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا ⑲

२८. और अगर तुझे उन से मुंह फेर लेना पड़े अपने रब की इस रहमत की खोज में जिस की तू उम्मीद रखता है, तो भी तुझे चाहिए कि अच्छी तरह और नमी से उन्हें समझा दे।

وَأَمَّا تَعْرِضْ عَنْهُمْ أِبْتِغَاءَ رَحْمَةٍ مِنْ رَبِّكَ
تَرْجُوهَا فَقُلْ لَهُمْ قَوْلًا مَيْسُورًا ⑳

२९. और अपना हाथ अपनी गर्दन से बंधा हुआ न रख और न उसे पूरी तरह से खोल दे कि फिर धिक्कारा हुआ और पछताया हुआ बैठ जाये।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا
كُلَّ الْبَسِطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَدْحُورًا ㉑

३०. बेशक तेरा रब जिसके लिए चाहे रोजी का विस्तार (कुशादा) कर देता है और जिस के लिए चाहे तंग कर देता है। बेशक वह अपने बंदों से बाखबर है और अच्छी तरह से देखने वाला है।

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعْقِدُ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ㉒

३१. और गरीबी के डर से अपनी औलादों को न मार डालो! उन को और तुम को हम ही रिज़क अता करते हैं। बेशक उनका क्रत्ल करना बहुत बड़ा गुनाह है।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ دَنْخُنْ لَهُمْ
وَأَنَا لَهُمُ الْبَارِئُ فَتَاهُمْ كَانَ ذُحًّٰ كَبِيرًا ㉓

३२. और होशियार! व्याभिचार (जिना) के करीब भी न जाना क्योंकि वह बड़ी बेहयाई है और बहुत घुरा रास्ता है।¹

وَلَا تَقْرُبُوا الزُّنَىٰ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ㉔

¹ इस में ईमानवालों के लिये तसल्ली है कि उन के पास वसायल रिज़क की कसरत नहीं तो इसका मतलब यह नहीं है कि अल्लाह के दरबार में उनकी जगह नहीं है, बल्कि यह रोजी की ज्यादाती या कमी का सम्बन्ध (तमाल्लुक) अल्लाह की उस हिक्मत और फ़ैसले से है, जिसे केवल वही जानता है, वह अपने दुश्मनों को धनवान बना दे और अपनों को इतना ही दे कि जिससे वे कठिनाई से अपना गुज़ारा कर सकें। यह उसकी मर्जी है जिसको वह ज़्यादा दे, वह उसका प्रिय नहीं और थोड़े रिज़क का मालिक उसका नापसन्दीदा नहीं।

² इस्लाम में चूँकि जिना बहुत बड़ा गुनाह है, इतना घोर कि अगर कोई विवाहित (शादीयुदा) मर्द और औरत इसे करे तो समाज में जिन्दा रहने का हक्कदार ही नहीं है, फिर उसे तलवार के एक वार से मार डालना ही बस नहीं है बल्कि हुकम है कि पत्थर मार-मार कर उसके जीवन का

३३. और किसी जान को जिसका मारना अल्लाह ने हराम कर दिया है कभी नाजायेज कत्ल न करना, और जो इंसान वेकुसूर मार डाला जाये हम ने उस के वारिस को हक दे रखा है, लेकिन उसे चाहिए कि मार डालने में जल्दी न करे, बेशक उसकी मदद की गयी है।

३४. और यतीम के माल के करीब न जाओ सिवाय उस तरीके के जो ज्यादा बेहतर हो यहाँ तक कि वह अपनी समझदारी की उम्र को पहुँच जाये' और वादा पूरे करो क्योंकि वादा के बारे में पूछ होगी।

३५. और जब नापने लगो तो पूरे नाप से नापो और सीधी तराजू से तौलो, यही अच्छा है और इसका नतीजा भी बहुत अच्छा है।

३६. और जिस बात की तुझे खबर ही न हो, उस के पीछे मत पड़, क्योंकि कान और आँख और दिल इन में से हर एक से पूछताछ की जाने वाली है।

३७. और धरती पर अकड़ कर न चलो, क्योंकि न तू धरती को चीर सकता है और न लम्बाई में पहाड़ों को पहुँच सकता है।¹

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ
وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا لَوْلِيهِ سُلْطٰنًا
فَلَا يَسْرِفْ فِي الْقَتْلِ ۗ إِنَّهُ كَانَ مُنْصَوِّرًا ﴿٣٣﴾

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ اٰحْسَنُ حَتّٰى
يَبْلُغَ اٰسَدَ اٰسٍ ۗ وَاَوْفُوا بِالْعَهْدِ ۗ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ
مَسْئُوْلًا ﴿٣٤﴾

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كَلَّمْتُمْ وَاَوْفُوا بِالْمِيزَانِ
السُّتَيْمِيْرُ ۗ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ﴿٣٥﴾

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۗ اِنَّ السَّمْعَ وَاَبْصَرَ
وَالْفُؤَادَ كُلّٰنْ اُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا ﴿٣٦﴾

وَلَا تَحْسَبْ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۗ اِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ
الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا ﴿٣٧﴾

अन्त (खान्ता) कर दिया जाये ताकि वह समाज के लिए नसीहत की निशानी बन जाये, इसलिए यहाँ कहा गया कि व्याभिचार (जिना) के करीब न जाओ और उस के सबब और जरिया से ही बचकर रहो, जैसे पराई नारियों को देखना, उन से मिलना और बात करने का जरिया बनाना, इसी तरह औरतो का बन संवर कर बिना पर्दा घर से बाहर निकलना आदि, (बगैरह) इन सभी बातों से बचना जरूरी है ताकि इस बेहयाई से बचा जा सके।

¹ किसी की जान नाहक बर्बाद करने से मना करने के बाद धन के फुजूल खर्ची से रोका जा रहा है और इस में यतीम का माल खास अहमियत रखता है, इसलिए कहा कि यतीम के बालिया होने तक उसके धन को इस तरह से इस्तेमाल करो जिस में उसका फायदा हो, यह न हो कि बिना सोचे-विचारे ऐसे काम में लगा दो कि वह बरवादी और नुकसान में जाये या जबानी तक पहुँचने से पहले ही तुम उसे खत्म कर दो।

² इतराकर और अकड़कर चलना अल्लाह तआला को बहुत नापसन्द है। कारून को इसीलिए

३८. यह सब कामों की बुराई तेरे रब के करीब बहुत नापसन्द है ।

३९. यह भी उस वही (प्रकाशना) में से है जिसे तेरे रब ने तेरी तरफ हिक्मत से उतारी है, इसलिए अल्लाह के साथ किसी दूसरे को माबूद न बनाना कि धिक्कार कर और हस्वा (अपमानित) करके नरक में डाल दिया जाये ।

४०. क्या बेटों के लिए अल्लाह ने तुम्हें निर्वाचित (मुतखव) कर लिया है और खुद अपने लिए फरिश्तो को बेटिया बना लिया? बेशक तुम बहुत बड़ी बोल बोल रहे हो ।

४१. और हम ने तो इस कुरआन में हर तरह से बयान कर दिया कि लोग समझ जायें, लेकिन इस पर भी उनकी नफरत ही ज़्यादा होती है ।

४२. कह दीजिए कि अगर अल्लाह के साथ दूसरे माबूद (देवता) भी होते जैसाकि ये लोग कहते हैं तो जरूर वह अब तक अर्श के मालिक की तरफ रास्ता तलाश लेते ।'

४३. जो कुछ ये कहते हैं, उससे वह पाक और महान (अज़ीम), बहुत दूर और बहुत बलन्द है ।

كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُومًا ﴿٣٨﴾

ذَلِكَ وَمِمَّا أَوْحَى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۖ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتُلْقَى فِي جَهَنَّمَ مَلُومًا مَدْحُورًا ﴿٣٩﴾

أَفَأَصْفُكُمْ رَبُّكُمُ بِالْبَنِينَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلَائِكَةِ إِنَاثًا ۖ إِنَّكُمْ تَقْتُلُونَ قَوْلًا عَظِيمًا ﴿٤٠﴾

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ﴿٤١﴾

قُلْ تَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ كَمَا يَتَوَكَّلُونَ إِذَا لَا يَنْبَغُوا إِلَىٰ ذِي الْعَرْشِ سَبِيحًا ﴿٤٢﴾

سُبْحٰنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۗ عَلَمًا كَبِيرًا ﴿٤٣﴾

उस के घर और खजाना सहित धरती में धंसा दिया (सूर: अल-कसस-८१) हदीस में आता है: एक इंसान दो चादरें पहनकर अकड़ कर चल रहा था कि उसको धरती में धंसा दिया गया और वह क़यामत तक धंसता चला जायेगा ।•

इसका एक मतलब तो यह है कि जिस तरह एक राजा दूसरे राजा पर हमला करके जीत हासिल कर लेता है, उसी तरह यह देवता भी अल्लाह पर हक़ हासिल करने का रास्ता खोज निकालते, और अब तक ऐसा नहीं हुआ जब कि उन देवताओं को पूजते ज़माने जीत गये, तो इसका मतलब यह है कि अल्लाह के सिवाय कोई माबूद नहीं, कोई ऐसी ताकत ही नहीं, कोई फ़ायदा और नुक़सान पहुँचाने वाला नहीं । दूसरा मतलब यह है कि वह अब तक अल्लाह की नज़दीकी हासिल कर चुके होते और यह मूर्तिपूजक जो यकीन रखते हैं कि उन के जरिये वह अल्लाह की क़ुरबत हासिल करते हैं, उन्हें भी वह अल्लाह के करीब कर चुके होते ।

४४. सातों आकाश और धरती और जो कुछ उन में है उसी की महिमागान (तस्बीह) करती है, ऐसी कोई चीज नहीं जो पाकीजगी और बड़ाई के साथ उसे याद न करती हो। हां, यह सच है कि तुम उसकी महिमागान समझ नहीं सकते, वह बड़ा सहनशील और माफ करने वाला है।

४५. और तू जब कुरआन पढ़ता है हम तेरे और उन लोगों के बीच जो परलोक के प्रति (आखिरत) पर यकीन नहीं रखते एक गुप्त पर्दा डाल देते हैं।

४६. और उन के दिलों पर हम ने पर्दा डाल दिये हैं कि वह उसे समझें और उन के कानों में बोज़, और जब तू केवल अल्लाह ही का बयान उसकी एकता के साथ इस कुरआन में करता है तो वे मुंह फेर कर पीठ मोड़कर भाग खड़े होते हैं।

४७. जिस मक़सद से वे उसे सुनते हैं उन के इरादों से हम अच्छी तरह से वाकिफ हैं, जब ये आप की तरफ कान लगाये हुए होते हैं तब भी, और जब ये विचार-विमर्श (मशविरा) करते हैं तब भी, जबकि यह ज़ालिम कहते हैं कि तुम उस की इत्तेबा में लगे हुए हो जिस पर जादू कर दिया गया है।²

سَتِيحُ لَهُ السَّمَوَاتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا (44)

وَإِذَا قُرَأَ الْقُرْآنُ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَسْتُورًا (45)

وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ كِتَابًا أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِذَا ذُكِرْتِ رَبِّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَوْ أَنَّ آذَانَ بَرِيهِمْ نَفُورًا (46)

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوَى إِذْ يَقُولُ الظَّالِمُونَ إِنْ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا (47)

¹ यानी सब उसी के फरमाबरदार और अपनी-अपनी बोली में उसकी महिमा (तस्बीह) और गुणों का बयान करते हैं, अगरचे हम उनकी महिमा और गुणों के बयान को न समझ सकें, इसकी तसदीक कुरआन की दूसरी आयतों से भी होती है। जैसे हज़रत दाऊद के बारे में आता है :

﴿إِنَّا سَمِعْنَا الْجِبَالَ مَعًا يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَإِلَىٰ شِرَاقِ﴾

“हम ने पहाड़ों को दाऊद के अधीन (ताबे) कर दिया, बस वे सुबह और शाम उस के साथ अल्लाह की पाकीजगी का बयान करते हैं।” (सूर: स्वाद-५८)

² यानी नबी ﷺ को यह जादू से पीड़ित समझते हैं और यह समझते हुए कुरआन सुनते और आपस में कानाफूसी करते हैं, इसलिए हिदायत से महरूम ही रहते हैं।

५८. देखें तो सही, वे आप के लिए क्या-क्या मिसाल देते हैं इसलिए वे वहक रहे हैं, अब तो रास्ता पाना उनके बश में नहीं रहा।

५९. उन्होंने कहा कि क्या जब हम हडिडयाँ और धूल हो जायेंगे तो क्या हम नये जन्म में दोबारा उठाकर खड़े कर दिये जायेंगे।

५०. जवाब दीजिए कि तुम पत्थर बन जाओ या लोहा।

५१. या कोई ऐसी चीज जो तुम्हारे दिलों में बहुत ही महान प्रतीत होती हो, फिर वह पछे कि कौन है जो दोबारा हमारा जीवन लौटाये? (आप) जवाब दें कि वही (अल्लाह)! जिस ने तुम्हें पहली बार पैदा किया, इस पर वे अपने सिर हिला-हिलाकर आप से पूछेंगे कि अच्छा यह होगा कब? तो (आप) जवाब दें कि क्या ताज्जुब कि वह करीब ही आ लगी हो।

५२. जिस दिन वह तुम्हें बुलायेगा तुम उसकी तारीफ करते हुए इताअत करोगे और अंदाजा करोगे कि तुम्हारा रहना बहुत कम है।

५३. और मेरे बंदों से कह दीजिए कि वह बहुत ही अच्छी बात अपने मुँह से निकाला करें क्योंकि शैतान आपस में फूट डलवाता है, बेशक शैतान इंसान का खुला दुश्मन है।

५४. तुम्हारा रब तुम्हारे मुकाबिले तुम से ज्यादा जानने वाला है, वह अगर चाहे तो तुम पर रहम कर दे, चाहे तुम्हें सजा दे, हम ने आप को उनका उत्तरदायी बनाकर नहीं भेजा।

५५. और आकाशों और धरती में जो कुछ भी है आप का रब सब को अच्छी तरह जानता है, हम ने कुछ पैगम्बरों को कुछ पर श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) अता की है, और दाऊद को जबूर हम ने ही अता की है।

أَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ﴿٤٨﴾

وَقَالُوا إِذَا كُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا إِنْآ

لِنَبْعُوثُنَّ خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٤٩﴾

قُلْ كُونُوا حِجَارَةً أَوْ حَدِيدًا ﴿٥٠﴾

أَوْ خَلْقًا مِمَّا يَكْتُمُونَ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ

مَنْ يُعِيدُنَاهُ قُلِ الْإِنزِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ

فَسَيُبَدِّلُونَ إِلَيْك رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ مَتَى

هُوَ قُلْ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَرِينًا ﴿٥١﴾

يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِمْ وَتَقُولُونَ

إِنْ لَيْسَ لَنَا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٥٢﴾

وَقُلْ لِيُؤدِّيَ يَقُولُوا الْبَنِي هِي أَحْسَنُ مِنْ الشَّيْطَانِ

يَنْزِعُ بَيْنَهُمْ مِنَ الشَّيْطَانِ كَانَ لِلْإِنسَانِ عَدُوًّا

مُبينًا ﴿٥٣﴾

رَبِّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ إِنَّ رَبَّنَا لَرَحِيمٌ أُولَانِ يُشَآ

يَعْلَمُ بِكُمْ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿٥٤﴾

وَرَبِّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَلَقَدَّ

فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّينَ عَلَى بَعْضٍ وَأَتَيْنَا دَاوُدَ

زُجُرًا ﴿٥٥﴾

५६. कह दीजिये कि (अल्लाह के) सिवाय जिन्हें तुम [माबूद (बंदनीय)] समझ रहे हो, उन्हें पुकारो लेकिन न तो वह तुम से किसी दुख को दूर कर सकते हैं न बदल सकते हैं।

५७. जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे खुद अपने रब की नजदीकी की खोज में रहते हैं कि उन में से कौन ज्यादा करीब हो जाये, वे खुद उसकी रहमत की उम्मीद रखते हैं और उसके अजाब से डरते रहते हैं, (वात भी यही है) कि तेरे रब का अजाब डरने की चीज है।

५८. और जितनी भी बस्तियां हैं हम क्रयामत के दिन से पहले या तो उन्हें तहस-नहस कर देने वाले हैं या बहुत सख्त सजा देने वाले हैं, यह तो किताब में लिखा जा चुका है।

५९. और हमें निश्चानियां (चमत्कार) उतारने से रोक केवल इसी की है कि अगले लोग इन्हें झुठला चुके हैं,² हम ने समूद को बसीरत के तौर पर ऊंटनी दी लेकिन उन्होंने उस पर

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا (56)

أُولَئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَى رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهَا أَقْرَبُ وَيُرِيدُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَهُ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا (57)

وَلَنْ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا (58)

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأُولُونَ وَآتَيْنَا ثَمُودَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَحْوِيلًا (59)

¹ इस आयत में من دون से मुराद फरिश्तो और बूजुगों की वे तस्वीरें और मूर्तियां हैं जिन की वे पूजा करते थे या हजरत उजैर और मसीह हैं जिन्हें यहूदी और इसाई अल्लाह का बेटा कहते और उन्हें सिफाते इलाही से युक्त मानते थे या वे जिन्नात हैं जो मुसलमान हो गये थे और मूर्तिपूजक उनकी पूजा करते थे, इसलिए कि इस आयत में बताया जा रहा है कि वे खुद भी अल्लाह की कुरबत हासिल करने की कोशिश करते और उसकी रहमत की तमन्ना करते और उसके अजाब से डरे हुए हैं और यह गुण बेजान (पत्थरों) में नहीं हो सकता, इस आयत से बाजेह हो जाता है कि من دون الله (अल्लाह के सिवाय जिनकी इबादत की जाती रही है) वे केवल पत्थर की मूर्तियां ही नहीं थीं अल्लाह के वे बदे भी थे जिन में से कुछ फरिश्ते, कुछ औलिया, कुछ नबी और कुछ जिन्नात थे। अल्लाह तआला ने सब के बारे में फरमाया कि वह कुछ नहीं कर सकते, न किसी के दुख को दूर कर सकते हैं, न किसी की हालात बदल सकते हैं।

² यह आयत उस समय नाजिल हुई जिस समय मक्का के काफिरों ने यह मांग की कि सफा के पहाड़ को सोना बना दिया जाये या मक्का के पहाड़ अपनी जगह से हटा दिये जायें ताकि वहां खेती की जा सके, जिस पर अल्लाह तआला ने जिब्रिल के जरिये से पैगाम भेजा कि उनकी मांग हम पूरा करने को तैयार हैं, लेकिन अगर उसके बाद भी वह ईमान न लाये तो फिर उनकी तवाही तय है, फिर उन्हें मौका नहीं दिया जायेगा। नबी ﷺ ने भी इसी बात को ठीक समझा कि इनकी मांगें पूरी न की जाये ताकि वह यकीनी तवाही से बच जायें।

जुलम किया, हम तो लोगों को केवल धमकाने के लिए नियानियाँ भेजते हैं।

६०. और याद करो जबकि हम ने आप से कह दिया कि आप के रब ने लोगों को घेर लिया है जो रूयत आप को दिखायी थी, वह लोगों के लिए वाजेह इम्तेहान ही था और उसी तरह वह पेड़ भी जिस से कुरआन में नफरत का इजहार किया गया है, हम उन्हें वाखवर कर रहे हैं लेकिन यह उन्हें और ज़्यादा दुश्मनी में बढ़ा रहा है।

६१. और जब हम ने फ़रिश्तों को हुकम दिया कि आदम को सज्दा करो तो इव्लीस के सिवाय सब ने किया, उस ने कहा कि क्या मैं उसे सज्दा करूँ जिसे तूने मिट्टी से बनाया है।

६२. अच्छा देख ले उसे तूने मुझ पर फ़ज़ीलत तो दी है लेकिन अगर तूने मुझे क़यामत तक मौका दिया तो मैं इसकी औलाद को बहुत कम लोगों के सिवाय अपने वश में कर लूँगा।

६३. हुकम हुआ कि जा, उन में से जो भी तेरा पैरोकार हो जायेगा तो तुम सबकी सज़ा नरक है, जो पूरा बदला है।

६४. उन में से तू जिसे भी अपनी बात से बहका सके बहका ले और उन पर अपने सवार और पैदल चढ़ा ला, और उन के माल और औलाद में से अपना भी साझा लगा और उन्हें (झूठा) वादा दे ले, उन से जितने भी वचन (वादे) शैतान के होते हैं, सब के सब पूरा धोखा है।¹

وَلَاذُ قُلْتُمْ لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا
الرُّؤْيَا الَّتِي آرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً لِلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ
الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ وَنُحُوتَهُمْ فَمَا يُؤَيِّدُهُمْ
إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيرًا ﴿٦٠﴾

وَلَاذُ قُلْتُمْ لِمَسِيكَةِ اسْجُدْ وَالْإِدْمَرَفَسَجْدُ وَالْإِلَ
إِبْلِيسُ قَالَ أَسْجُدْ لِمَنْ خَلَقْتُ طِينًا ﴿٦١﴾

قَالَ أَرَأَيْتَ هَذَا الَّذِي كُؤْمِتَ عَلَى رُؤْيَيْنِ أَخْرَجْتَنِي
إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَأَحْتَكِيَنَّكَ ذُرِّيَّتَهُ الْآقْلِيلًا ﴿٦٢﴾

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ
جَزَاءُكُمْ جَزَاءً تَوْفُورًا ﴿٦٣﴾

وَاسْتَفْرِزْ مَنْ اسْتَطَعَتْ مِنْهُمْ يَبْصُوتِكَ وَأَجْلِبْ
عَلَيْهِمْ بِحِيلِكَ وَرَجْلِكَ وَشَارِبُهُمْ فِي الْأَمْوَالِ
وَالْأَوْلَادِ وَعَدْلُهُمْ وَمَا يُجِدُّهُمْ الشَّيْطَانُ
إِلَّا عُرُورًا ﴿٦٤﴾

¹ सहाबा और तावेईन ने इस रूया (दर्शन) की तफ़सीर जाहिरी रूयत से की है और इस से मुराद मेराज का वाक़ेआ है जो बहुत से कमज़ोर लोगों के लिए भटकाने का सबब बन गया और वे मुर्तद हो गये, और पेड़ से मुराद ज़क़ूम (नरकीय) का पेड़ है, जिसको नबी ﷺ ने मेराज की रात नरक में देखा।

² अभिमान (धोखा) का मतलब होता है ग़लत काम को इस तरह जाहिर किया जाये कि वह अच्छा और ठीक लगे।

६५. मेरे सच्चे बन्दों पर तेरा कोई कावू और वश नहीं, और तेरा ख बड़ा कारसाज काफी है।

६६. तुम्हारा ख वह है जो तुम्हारे लिये नदी में नौकायें चलाता है ताकि तुम उस के फ़ज़ल की खोज करो, वह तुम्हारे ऊपर वड़ा रहम करने वाला है।

६७. और समुद्र में मुसीबत पहुँचते ही जिन्हें तुम पुकारते थे सब भूल जाते हैं, केवल वही (अल्लाह) वाक़ी रह जाता है, फिर जब वह तुम्हें थल (खुरकी) की तरफ़ महफूज़ ले आता है तो तुम मुँह फेर लेते हो, इंसान बहुत ही नाशुक्रा है।

६८. तो क्या तुम इस से बेखौफ़ हो गये कि तुम्हें थल के किसी हिस्से में (ले जाकर धरती में) धँसा दे या तुम पर पथराव की आधी भेज दे, फिर तुम अपने लिए किसी साथी को न पा सको।

६९. क्या तुम इस बात से बेखौफ़ हो गये हो कि (अल्लाह तआला) दोबारा तुम्हें नदी के सफर में ले आये और तुम पर तेज़ हवा के झोंके भेज दे और तुम्हारे कुफ़्र के सबब तुम्हें डुबा दे, फिर तुम अपने लिए हम पर उसका दावा (पीछा) करने वाला किसी को न पाओगे।

७०. और बेशक हम ने आदम की औलाद को बड़ी इज़्ज़त दी, और उन्हें थल और जल की सवारियाँ दी, और उन्हें पाक चीज़ों से रिज़क अता की और अपनी बहुत सी मख़लूक पर उन्हें फ़ज़ीलत अता की।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ وَّكَفٰى بِرَبِّكَ
وَكَيْلًا ٦٥

رَبُّكُمُ الَّذِي يُرِيكُمُ الْفَلَاحَ فِي الْبَحْرِ لِيَتَّخِذُوا
مِنْ فَضْلِهِ طَرِيقًا ۗ كٰنَ بِكُمْ رَحِيْمًا ٦٦

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ
إِلَّا إِلٰهًا ؕ فَلَمَّا نَضَّكُمُ إِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ
وَكَانَ الْإِنْسَانُ كٰفُوْرًا ٦٧

أَفَأَمِنْتُمْ أَن يُخْصِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ اءَوْ يُرْسِلَ
عَلَيْكُمُ حٰصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَّوَيْلًا ٦٨

أَمْ اءَمِنْتُمْ أَن يُعَيِّنَ لَكُمْ فِيْهِ تٰرَةً أُخْرٰى فَيُرْسِلَ
عَلَيْكُمُ قٰصِفًا مِّنَ الرِّيحِ فَيُغْرِقَكُم بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ
لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْهِمْ تَبِيْعًا ٦٩

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَجَعَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ
رَوَاقِدَهُمْ مِّنَ النَّوَابِيْٓتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْكٰثِرِيْنَ مِمَّنْ
خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ٧٠

। यह इज़्ज़त और एहतेराम के तौर पर सभी को हासिल है चाहे ईमान वाला हो या काफ़िर, क्योंकि यह इज़्ज़त दूसरी मख़लूक, जान और जमादात और नबालात बगैरह के नहीं है।

७१. जिस दिन हम हर उम्मत को उस के इमाम के साथ बुलायेंगे' फिर जिनका भी आमाल नामा दाहिने हाथ में दे दिया गया वह तो (खुशी से) अपना आमालनामा पढ़ने लगेंगे, और धागे के बराबर (जर्रा बराबर) भी जुल्म न किये जायेंगे।

७२. और जो कोई इस दुनिया में अंधा रहा, वह परलोक (आखिरत) में भी अंधा और रास्ता से बहुत ही भटका हुआ रहेगा।¹

७३. और ये लोग आप को उस बह्यी (प्रकाशना) से जो हम ने आप पर उतारी है वहका देना चाह रहे थे कि आप इस के सिवाय कुछ दूसरी बातें ही हमारे नाम से बना लें, तब तो आप को ये लोग अपना दोस्त बना लेते।

७४. और अगर हम आप को सावित (अडिग) न रखते तो ज्यादा मुमकिन था कि उनकी तरफ कुछ न कुछ झुक ही जाते।

७५. फिर तो हम भी आप को दुगना अजाब दुनिया का देते और दुगनी ही मौत की, फिर आप तो अपने लिए हमारे आगे किसी को भी मददगार न पाते।

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِمامِهِمْ فَمَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بيمينهٖ فَأُولَئِكَ يَقْرَءُ وَنَ كِتَابَهُمْ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا ﴿٧١﴾

وَمَنْ كَانَ فِي هذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَصْلٌ سَوِيًّا ﴿٧٢﴾

وَإِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَةَ ۖ وَإِذَا لَا تَعْدُونَ خَلِيلًا ﴿٧٣﴾

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبْنَا لَكَ كِتَابًا تَرْكُنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيلًا ﴿٧٤﴾

إِذَا لَا تَجِدُكَ لِصِغْفُورِ الْحَبِيبِ وَصِغْفُورِ الْمَنَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُكَ عَلَيْنَا نَصِيرًا ﴿٧٥﴾

¹ इमाम का मतलब मुखिया, नेता और प्रतिनिधि (क़य्येद) है, यहाँ इस से क्या मुराद है? इस में इख़्तिलाफ़ है। कुछ आलिम कहते हैं कि इस से मुराद पैगम्बर है यानी हर उम्मत को उस के पैगम्बर के नाम से पुकारा जायेगा। कुछ कहते हैं कि इस से मुराद आसमानी किताबें हैं जो नवियों के साथ नाज़िल होती रही यानी हे तौरात बालो, हे इज़ील बालो और हे क़ुरआन बालो आदि कह के पुकारा जायेगा। कुछ कहते हैं कि यहाँ 'इमाम' से मुराद आमालनामा है यानी हर इंसान को जब बुलाया जायेगा तो उसका आमालनामा उस के हाथ में होगा और उस के अनुसार उसका फैसला किया जायेगा, इसी ख़्याल को इमाम शौकानी और इमाम इब्ने कसीर ने बरीयता (तरज़ीह) दिया है।

² اعمى (अंधा) से मुराद मन का अंधा है, यानी जो दुनिया में सच देखने और समझने और उसे कुबूल करने से महरूम रहा, वह आखिरत में अंधा और अल्लाह की खास नेमत और फ़ज़ल से महरूम रहेगा।

७६. और ये तो आप के क्रदम इस धरती से उखाड़ने ही लगे थे कि आप को इससे निकाल दें, फिर ये भी आप के बाद बहुत कम ठहर पाते।^१

७७. ऐसा ही नियम उनका था, जो आप से पहले रसूल (संदेशवाहक) हम ने भेजे, और आप हमारे नियमों में कभी बदलाव न पायेंगे।

७८. नमाज क़ायम करें सूरज ढलने से लेकर रात के अंधेरे तक^३ और प्रातः (फ़ज़्र) का कुरआन पढ़ना भी, बेशक प्रातः (फ़ज़्र) के वक़्त का कुरआन पढ़ना हाज़िर किया गया है।

७९. और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद (की नमाज़ में कुरआन) पढ़ा करें, यह ज़्यादाती आप के लिए है, जल्द ही आप का रब आप को महमूद नाम के मुक़ाम पर खड़ा करेगा।^४

८०. और विनय किया करें कि हे मेरे रब! मुझे जहाँ ले जा अच्छी तरह से ले जा और जहाँ से निकाल अच्छी तरह निकाल और मेरे लिए अपने पास से ग़ल्बा और मदद मुकर्रर कर दे।

وَأَن كَادُوا يَسْتَفِرُّونَكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبَثُونَ خَلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٧٦﴾

سَاءَ مَن قَدِ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ رُسُلِنَا وَلَا يَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيلًا ﴿٧٧﴾

أَقْبِرِ الصَّلَاةَ إِذْ نُكَلِّمُ الشَّمْسَ إِلَى عَسَىٰ الْيَلِيٰ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ﴿٧٨﴾

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ بِحَمْدِكَ يَا عَسَىٰ أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ﴿٧٩﴾

وَقُلْ رَبِّ أَدْخِلْنِي مُدْخَلَ صِدْقٍ وَأَخْرِجْنِي مَخْرَجَ صِدْقٍ وَأَجْعَلْ لِي مِنْ لَدُنْكَ سُلْطَانًا مَّقْبُولًا ﴿٨٠﴾

^१ यह उस साज़िश की तरफ इशारा है, जो नबी ﷺ को मक्का से निकालने के लिए मक्का के कुरैश ने तैयार किया था, जिस से अल्लाह ने आप ﷺ को बचा लिया।

^२ यानी अगर अपनी साज़िश से ये आप ﷺ को मक्का से निकाल देते तो ये भी उस के बाद ज़्यादा देर न रहते यानी अल्लाह के अज़ाब की पकड़ में आ जाते।

^३ दُرُود का मतलब ढलना और عَسَى का मतलब अंधेरा है, सूरज ढलने के बाद जोहर और अस्त्र की नमाज़ और रात के अंधेरा तक से मुराद मगरिब और इशा की नमाज़ें हैं और कुरआन अल-फ़ज़्र से मुराद फ़ज़्र की नमाज़ है, कुरआन नमाज़ के मायने में है, इसको कुरआन की मिसाल इसलिए दी गयी है कि फ़ज़्र में कुरआन की आयतों का पाठ (तिलावत) लम्बा होता है। इस तरह इस आयत में पाँचों फ़ज़्र नमाज़ों का बयान आ जाता है जिसका तफ़सीली बयान हदीसों में मिलता है और जो मुसलमानों के अमल से भी साबित है।

^४ यह वह मक़ाम है जो क़ायमत के दिन अल्लाह तआला नबी ﷺ को अता करेगा और उस मक़ाम पर ही आप ﷺ वह सिफ़ारिश करेंगे जिस के बाद लोगों का हिसाब-किताब होगा।

८१. और एलान कर दो कि हक आ गया और बातिल (असत्य) नाबूद हो गया, बेशक बातिल था भी मिट जाने योग्य ।¹

८२. और यह कुरआन जो हम उतार रहे हैं ईमानवालों के लिए बहुत शिफा और रहमत है। हाँ, जालिमों को नुकसान के सिवा कोई ज्यादाती नहीं होती ।

८३. और इंसान पर जब भी हम अपना इंसाम (पुरस्कार) करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है और करवट बदल लेता है और जब भी उसे दुख होता है तो वह मायूस हो जाता है ।

८४. कह दीजिए कि हर इंसान अपने तरीके के मुताबिक काम करता है जो पूरी तरह हिदायत पर है, उन्हें तुम्हारा रब ही अच्छी तरह जानता है ।

८५. और ये लोग आप से रूह के बारे में सवाल करते हैं, (आप) जवाब दीजिए कि रूह मेरे रब के हुक्म से है और तुम्हें जो इल्म दिया गया है वह बहुत ही कम है ।²

وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ
إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا 81

وَنُزِّلَ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ
لِّلْمُؤْمِنِينَ ۖ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ إِلَّا خَسَارًا 82

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَى بِجَانِبِهِ
وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يُسُوفًا 83

قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَى شَاكِلَتِهِ فَمَنْ زَعَمَ
بِإِسْمِنِ هُوَ أَهْدَى سَبِيلًا 84

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي
وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيلًا 85

¹ हदीस में आता है कि मक्का फतह के बाद जब नबी ﷺ "खानये काबा" में दाखिल हुए तो वहाँ तीन सौ साठ मूर्तियाँ थी, आप ﷺ के हाथ में छड़ी थी, आप ﷺ छड़ी की नोक से उन मूर्तियों को मारते जाते और ﴿جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ﴾ और ﴿جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبِيدُ﴾ पढ़ते जाते (सहीह बुखारी, तफसीर बनी इस्राईल, किताबुल मजालिम और मुस्लिम बाबु इजालतिल असनामे भिन हलिल कअवः)

² रूह (आत्मा) वह छोटी चीज है जो किसी को दिखायी नहीं देती लेकिन हर जानदार की ताकत और क़बत उसी रूह में पोशीदा है, इसकी हकीकत और सच्चाई क्या है ? यह कोई नहीं जानता, यहूदियों ने एक बार नबी ﷺ से इस के बारे में पूछा तो यह आयत नज़िल हुई । (सहीह बुखारी) आयत का मतलब यह है कि तुम्हारा इल्म अल्लाह के इल्म के सामने कुछ नहीं, और यह रूह जिस के बारे में तुम पूछ रहे हो इसका इल्म तो अल्लाह ने नबियों सहित किसी को भी नहीं दिया, बस इतना समझो कि यह मेरे रब का हुक्म है और मेरे रब की बड़ाई में से है जिसकी हकीकत केवल वही जानता है ।

८६. और अगर हम चाहे तो जो वहयी (प्रकाशना) आप की तरफ हम ने उतारी है सब ले लें, फिर आप को उस के लिए हमारे सामने कोई भी हिमायती न मिल सकेगा।

८७. सिवाय आप के रब की रहमत के। बेशक आप पर उसका बड़ा फ़ज़ल है।

८८. कह दीजिए कि अगर सभी इंसान और ज़िन्न मिलकर इस कुरआन के बराबर लाना चाहें तो उन सब से इस की मिसाल लाना नामुमकिन है, अगरचे वे आपस में एक-दूसरे के सहायक (सददगार) भी बन जायें।

८९. और हम ने तो इस कुरआन में लोगों के समझने के लिए हर तरह से सभी मिसाल बयान कर दिये हैं, लेकिन ज़्यादातर लोग नाशुकी से नहीं रूकते।

९०. और उन्होंने कहा कि हम आप पर कभी इमामान लाने के नहीं, जब तक कि आप हमारे लिए धरती से जलस्रोत (चश्मा) न निकाल दें।

९१. या खुद आप के लिए कोई वाग हो खजूरों और अंगूरों का और उस के बीच आप बहुत-सी नहरें बहती हुई निकाल कर दिखायें।

९२. या आप आकाश को हम पर टुकड़े-टुकड़े कर के गिरा दें जैसा कि आप का ह्याल है, या आप खुद अल्लाह (तआला) को और फ़रिश्तों को हमारे सामने ला खड़ा करें।

९३. या आप के अपने लिए कोई सोने का घर हो जायें या आप आकाश पर चढ़ जायें और हम तो आप के चढ़ जाने का भी उस वक़्त तक यकीन नहीं करेंगे जब तक कि आप हम पर कोई किताब न उतार लायें जिसे हम खुद पढ़ लें, आप जवाब दें कि मेरा रब पाक है, मैं तो

وَلَكِنْ شِئْنَا لَنُدْهَبْنَ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ
ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا ﴿٨٦﴾

إِلَّا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ
عَلَيْكَ كَبِيرًا ﴿٨٧﴾

فَلْ لَّيْنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَنْ يَأْتُوا
بِشَيْءٍ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِشَيْءٍ وَلَوْ كَانُوا
بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ﴿٨٨﴾

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ
مَثَلٍ ۚ فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا الْفُتُورًا ﴿٨٩﴾

وَقَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَفْجُرَ لَنَا
مِنَ الْأَرْضِ يَنْبُوعًا ﴿٩٠﴾

أَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِنْ نَعِيمٍ وَعَيْنَبٍ
تَفْجُرُ الْأَنْهَارَ خَلْفَهَا تَفْجِيرًا ﴿٩١﴾

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمَتْ عَلَيْنَا لِسْفًا
أَوْ تَأْتِي بِنَا وَأَنْتَ الْوَالِيَّةُ قَبِيلًا ﴿٩٢﴾

أَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِنْ ذَهَبٍ أَوْ تَرْفَىٰ فِي
السَّمَاءِ ۚ وَلَنْ نُؤْمِنَ بِرُبِّكَ حَتَّىٰ تُنزِلَ
عَلَيْنَا كِتَابًا تَقْرَأُ ۚ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ
كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا ﴿٩٣﴾

एक इंसान हूँ जो रसूल (सदेशवाहक) बनाया गया हूँ।

१४. और लोगों के पास मार्गदर्शन (हिदायत) पहुँच चुकने के बाद ईमान से रोकने वाली केवल यही चीज रही कि उन्होंने कहा, क्या अल्लाह ने एक इंसान को ही रसूल (अवतार) बनाकर भेजा?¹

१५. (आप) कह दें कि अगर धरती पर फरिश्ते चलते-फिरते और रहते होते तो हम भी उनके पास किसी आसमानी फरिश्ते को ही रसूल बनाकर भेजते।²

१६. कह दीजिए कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह का गवाह होना बस है, वह अपने बन्दों से अच्छी तरह वाकिफ़ और अच्छी तरह देखने वाला है।

१७. और अल्लाह जिसकी हिदायत कर दे वह हिदायत याफ़ता है, और जिसे वह रास्ते से भटका दे नामुमकिन है कि तू उसका दोस्त उस के सिवाय दूसरों को पा ले, ऐसे लोगों को हम कयामत वाले दिन औंधे मुँह जमा करेंगे, जबकि वे अंधे, गूंगे और बहरे होंगे, उनका ठिकाना नरक होगा, जब कभी वह हल्की होने लगोगी, हम उन पर उसे और भड़का देंगे।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ
إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا رَسُولًا ۝٩٤

قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يُنَادُونَ مُطْمَئِنِّينَ
لَلَّزْنَا عَلَيْهِمْ مِنَ السَّمَاءِ مَلَكَاتُ رَسُولًا ۝٩٥

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّهُ كَانَ
بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝٩٦

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۖ وَمَنْ يُضِلِّمْ فَلَنْ
تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ طُوًى تُحْشَرُهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمَاءٌ وَكُلْمًا وَصَمَاتًا
مَاؤُهُمْ بِهِمْ طُكْمًا حَبِطَ زَرْعُهُمْ سَعِيرًا ۝٩٧

¹ यानी किसी इंसान का रसूल होना काफ़िरों और मूर्तिपूजकों के लिए बहुत ताज्जुब की बात थी, वह यह बात मान नहीं रहे थे कि हमारे जैसा इंसान जो हमारी तरह चलता-फिरता है, हमारी तरह खाता-पीता है, हमारी तरह इंसानी रिश्तों से सम्बन्धित है, वह रसूल बन जाये, यह ताज्जुब उन के ईमान लाने में रूकावट था।

² अल्लाह तआला ने फरमाया जब धरती पर इंसान बसते हैं, तो उनकी हिदायत के लिए रसूल भी इंसान ही होंगे, और इन्सानी रसूल, इंसान की हिदायत का कर्तव्य (फर्ज) पूरा नहीं कर सकता, हाँ अगर धरती पर फरिश्ते बसते होते तो उन के लिए रसूल भी जरूर फरिश्ते होते।

९८. ये सब हमारी निशानियों से इंकार करने और यह कहने का नतीजा है कि क्या जब हम राख और जर्रा-जर्रा हो जायेंगे फिर हम नई पैदाईश करके उठा खड़े किये जायेंगे।

ذٰلِكَ جَزَاءُ الَّذِي كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا
مَا آدَابُنَا عِندَ مَا وَرُقَاتَا إِنْ آتَانَا كَسْبُونُونَ
خَلْقًا جَدِيدًا ﴿٩٨﴾

९९. क्या उन्होंने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि जिस अल्लाह ने आकाश और धरती को पैदा किया वह उन जैसों को पैदा करने पर पूरी कुदरत रखता है, उसी ने उन के लिए एक ऐसा वक़्त मुकर्रर कर रखा है, जो शक व शुक्हा से ख़ाली है, लेकिन ज़ालिम लोग नाशुक्रे बने बिना रहते नहीं।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا
لَّا رَيْبَ فِيهِ قَالَى الَّذِينَ كَفَرُوا ﴿٩٩﴾

१००. कह दीजिए कि (अगर मान लिया जाये) अगर तुम मेरे रब की रहमतों के खजाने के मालिक बन जाते तो तुम उस वक़्त भी उसके खर्च हो जाने के डर से उस में कंजूसी करते, और इंसान है ही तग दिल।

قُلْ لَوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا
لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَوْرًا ﴿١٠٠﴾

१०१. और हम ने मूसा को नौ मोजिजे। बिल्कुल साफ-साफ अता किये, तू खुद इस्राईल की औलाद से पूछ ले कि जब वे उन के पास पहुंचे तो फिरऔन बोला कि हे मूसा! मेरे

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ تِسْعَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ قَتَلَ بَنِي
إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي
لَأَظُنُّكَ يُمُوسَىٰ مَسْحُورًا ﴿١٠١﴾

१. नौ मोजिजे : १- हाथ का रौशन होना, २- लाठी का कई तरह से इस्तेमाल, ३- सूखा, ४- फलों की कमी, ५- तूफान, ६- टिड्डी दल का हमला, ७- खटमल और जू की ज़्यादाती होना, ८- मेंढक और खून। इमाम हसन बसरी कहते हैं कि सूखा और फलों की कमी एक ही बात है, और नवा मोजिजा लाठी का जादूगरो के जादू को अजगर बनकर निगल जाना है। हजरत मूसा को इन के सिवाय भी मोजिजे अता किये गये थे, जैसे लाठी का पत्थर पर मारना, जिस से बारह पानी के चश्मे निकल गये थे, वादलों की छाया करना, मन्न और सलवा बगैरह, लेकिन यहाँ नौ निशानियों से मुराद वही नौ मोजिजे हैं जिन का मुजाहिहा (प्रदर्शन) फिरऔन और उस के पैरोकारों ने भी किया, इसीलिए हजरत इब्ने अब्बास ने समुद्र फटकर रास्ता बन जाने को भी मोजिजा में शामिल किया है, और सूखा और फलों की कम पैदावार को एक ही मोजिजा माना है। तिमिजी के एक कौल में नौ मोजिजों का तफसीली बयान इस से अलग किया गया है, लेकिन सबूत से वह कौल कमजोर है, इसलिए नौ मोजिजे से मुराद यही बयान खुदा मोजिजे हैं।

ख्याल से तेरे ऊपर जादू कर दिया गया है।

१०२. (मूसा ने) जवाब दिया कि यह तो तुझे मालूम हो चुका है कि आकाशों और धरती के रब ही ने ये मोजिजे दिखाने और समझाने के लिए उतारे हैं, हे फिरऔन ! मैं तो समझ रहा हूँ कि तू यकीनन नास कर दिया गया है।

१०३. आखिर में फिरऔन ने मजबूत इरादा कर लिया कि उन्हें धरती से ही उखाड़ दे तो हम ने खुद उसे और उस के कुल साथियों को डुबो दिया।

१०४. और उस के वाद हम ने इस्राईल के बेटों से कह दिया कि उस धरती ' पर तुम रहो सहो, हाँ जब आखिरत का वादा आयेगा, हम तुम सब को समेट और लपेट कर ले आयेगे।

१०५. और हम ने इस (कुरआन) को सच्चाई के साथ उतारा और यह भी सच के साथ उतरा, और हम ने आप को केवल खुशखबरी देने वाला और बाखबर करने वाला बनाकर भेजा है।

१०६. और कुरआन को हम ने थोड़ा-थोड़ा कर के इसलिए उतारा है कि आप इसे वक्त पाकर लोगों को सुनायें, और हम ने खुद भी इसे थोड़ा-थोड़ा करके उतारा।

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا أَنْزَلَ هَؤُلَاءِ إِلَّا رَبُّ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ بِصَافِرٍ وَرَأْيٍ لِأَعْيُنِكُمْ يُرِيعُونَ
مَذْمُورًا (102)

فَأَرَادَ أَنْ يَنْسِفَهُمْ مِنَ الْأَرْضِ فَأَعْرَفْنَاهُ
وَمَنْ مَعَهُ جَمِيعًا (103)

وَقُلْنَا مَنْ بَعْدَهُ لِبَنِي إِسْرَائِيلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ
فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ جَمَعْنَاكُمْ لِفَيْفَاءٍ (104)

وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَّلْ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ
إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا (105)

وَقَرَأْنَا لَهُ آيَاتِنَا فَتَوَلَّى عَلَى النَّاسِ عَلَى مُكْتَبٍ
وَنَزَّلْنَاهُ تَنْزِيلًا (106)

जैसाकि मालूम होता है उस धरती से मुराद मिस्र है, जिस से फिरऔन ने मूसा और उन के पैरोकारों को निकालने का इरादा किया था, लेकिन इस्राईल की औलाद का इतिहास (तारीख) गवाह है कि वह मिस्र से निकलने के बाद पुनः मिस्र नहीं गये, बल्कि चालीस साल "तीह" के मैदान में गुजार कर फिलिस्तीन में दाखिल हुए। इसका सबूत सूर: अल-आराफ वगैरह में कुरआन के बयान से भी मिलता है, इसलिए ठीक यही है कि उस से मुराद फिलिस्तीन की धरती है।

१०७. कह दीजिए तुम इस पर ईमान लाओ या न लाओ, जिन्हें इस से पहले इल्म दिया गया है उन के पास तो जव भी इस को पढ़ा जाता है तो वे ठुड्डियों के बल सज्दा करने लगते हैं।

१०८. और कहते हैं कि हमारा रब पाक है, हमारे रब का वादा वेशक पूरा होकर रहने वाला ही है।

१०९. और वे ठुड्डियों के बल रोते हुए सज्दा की हालत में गिर पड़ते हैं, और यह कुरआन उनकी नर्मी और खुशूअ और बढ़ा देता है।

११०. कह दीजिए कि अल्लाह को अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान (कृपालु) कह कर। जिस नाम से भी पुकारो सभी अच्छे नाम उसी के हैं। न तो तू अपनी नमाज बहुत ऊंची आवाज से पढ़ और न विल्कुल छिपाकर, बल्कि उस के बीच का रास्ता तलाश ले।

१११. और कह दीजिए कि सभी तारीफें अल्लाह के लिए ही हैं जो न औलाद रखता है और न अपने मुल्क में किसी को भागीदार रखता है, न वह ऐसा कमजोर है कि उसका कोई मददगार हो और तू उसकी पूरी-पूरी वड़ाई का बयान करता रह।

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا اِنَّ الَّذِيْنَ اٰتُوْا
الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖ اِذَا يُتْلٰهُ عَلَيْهِمْ
يَخْرُوْنَ لِلاَّذْقَانِ سَجْدًا ﴿١٠٧﴾

وَيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَا اِنْ كٰنَ وَعْدَ رَبِّنَا
لَمَفْعُوْلًا ﴿١٠٨﴾

وَيَخْرُوْنَ لِلاَّذْقَانِ يَسْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ
خُشُوْعًا ﴿١٠٩﴾

قُلْ اَدْعُوا اللّٰهَ اَوْ اَدْعُوا الرَّحْمٰنَ ۗ اَيًّا قٰتَدْعُوْا
فَلَهٗ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى ۗ وَلَا تَجْهَرُ بِصَلٰتِكَ
وَلَا تَخَافَتْ بِهَا ۗ وَاَنْتَ بَيْنَ ذٰلِكَ سَمِيْلًا ﴿١١٠﴾

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا ۗ وَلَمْ
يَكُنْ لَهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمَلٰٓئِكِۗتِ ۗ وَلَمْ يَكُنْ لَهٗ وَلِيٌّ
مِّنَ الدُّنْيَا ۗ وَكَبِّرَتْ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾

1 जिस तरह पहले गुजर चुका है कि सबका के मूर्तिपूजकों के लिये अल्लाह के सिफाती नाम 'रहमान (दयालु), या 'रहीम (कृपालु) अपरिचित (नामानूस) थे, और कुछ हदीसों में आता है कि कुछ मूर्तिपूजकों ने नबी ﷺ के पाक मुँह से या 'रहमान व रहीम' (हे दयालु और कृपालु) के कलिमा सुने तो कहा कि हमें तो यह कहता है कि केवल एक अल्लाह को पुकारो और खुद दो देवताओं को पुकार रहा है, जिस पर यह आयत नाज़िल हुई। (इब्ने कसीर)

सूरतुल कहफ-१८

सूर: कहफ* मक्के में उतरी और इस में एक सौ दस आयतें और बारह रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. सभी तारीफें उसी अल्लाह के लिए ही लायक हैं, जिस ने अपने बन्दे पर यह कुरआन उतारा और उस में कोई कमी बाक़ी नहीं छोड़ी।

२. बल्कि सभी कुछ ठीक-ठाक रखा ताकि अपने पास की सख्त सजा से वाख़वर कर दे और ईमान लाने वाले और नेक काम करने वालों को खुश-ख़वरी सुना दे कि उन के लिए अच्छे बदले हैं।

३. जिस में वे मुस्तक़िल तौर से हमेशा रहा करेंगे।

४. और उन लोगों को भी डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह (तआला) औलाद रखता है।

५. हकीकत में न तो खुद उन्हें इसका इल्म है न उन के बुजुर्गों को, यह वृहत्तान बड़ा घुरा है जो उन के मुँह से निकल रहा है, वह केवल झूठ बक रहे हैं।

سُورَةُ الْكَافِرَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَنْزَلَ عَلَى عَبْدِهِ الْكِتَابَ
وَلَمْ يَجْعَلْ لَهُ عِوَجًا ①

قِيمًا لِنُنذِرَ بَأْسًا شَدِيدًا مِمَّنْ لَدُنْهُ وَيُبَشِّرَ
الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْمَلُونَ الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ
أَجْرًا حَسَنًا ②

مَا كُفِّرِينَ فِيهِ أَبَدًا ③

وَيُنذِرَ الَّذِينَ قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا ④

مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ وَلَا لِابَائِهِمْ كَبُرَتْ كَلِمَةً
تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَإِنْ يَقُولُونَ إِلَّا كَذِبًا ⑤

* कहफ का मतलब है गुफा। इस में गुफा वालों का बयान है, इसलिए इसे सूर: कहफ कहा जाता है। इस की शुरूआती दस आयतों और आखिरी दस आयतों की अहमियत का हदीस में बयान है जो इन को याद करे और पढ़ेगा वह दज्जाल के फसाद से महफूज रहेगा। (सहीह मुस्लिम, फजल सूर: अल-कहफ) जो इसका पाठ (तिलावत) जुमा के दिन करेगा अगले जुमा तक उस के लिए एक ख़ास तरह की रौशनी का नूर रहेगा। (मुस्तद्रक हाकिम २:३६८ और अलबानी ने इसे सहीह जामे सगीर नं- ६४७० में सहीह कहा है) इस के पढ़ने से घर में सलामती और तरक्की होती है, एक बार एक सहाबी ने सूर: कहफ पढ़ी, घर में एक जानवर भी था वह विदकना शुरू हो गया, उन्होंने ध्यान से देखा कि क्या बात है? तो उन्हें एक बादल दिखायी दिया, जिस ने उन्हें ढाँप रखा था, सहाबी ने इस बाक़ेआ का बयान नबी ﷺ से किया, आप ﷺ ने फ़रमाया इसे पढ़ा करो, कुरआन पढ़ते समय सलामती उतरती है। (सहीह बुखारी, नं- ४७२४, मुस्लिम नं- ७९५)

६. फिर अगर ये लोग इस बात पर^१ ईमान न लाये तो क्या आप उन के पीछे इसी दुख में अपनी जान को हलाक कर डालेंगे।

७. धरती पर जो कुछ है हम ने उसे धरती की जीनत के लिए बनाया है कि हम उनका इम्तेहान ले लें कि उन में से कौन नेकी के काम को करने वाला है।

८. और इस पर जो कुछ है, हम उसे एक बराबर मैदान कर डालने वाले हैं।

९. क्या तू अपने ख्याल में गुफा और शिलालेख वालों को हमारी निशानियों में से कोई बड़ी अजीब निशानी समझ रहा है?

१०. उन नौजवानों ने जब गुफा में पनाह ली तो दुआ की कि हे हमारे रब ! हमें अपने पास से रहमत अता कर और हमारे काम में हमारे लिए रास्ते को आसान कर दे।^२

११. फिर हम ने उनके कानों पर गिन्ती के कई सालों तक उसी गुफा में पर्दे डाल दिये।

१२. फिर हम ने उन्हें उठा खड़ा कर दिया कि हम यह जान लें कि दोनों गुटों में से इस बड़ी मुद्दत को जो उन्होंने गुजारे, किस ने अधिक

فَلَعَلَّكَ بَاطِحٌ نَّفْسِكَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ إِنَّهُمْ يَوْمُنَا يَفْتَحُونَ ۖ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ تُكَفِّرُونَ ﴿٦﴾

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِينَةً لِّهَا لِيَبْلُوَهُمْ إِنَّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ﴿٧﴾

وَإِنَّا لَجَافِلُونَ مَا عَلَيْهَا صَعِيدًا جُرُزًا ﴿٨﴾

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ كَانُوا مِن آيَاتِنَا عَجَبًا ﴿٩﴾

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ﴿١٠﴾

فَضَرَبْنَا عَلَىٰ أذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ﴿١١﴾

ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْجَزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِنَا لِكَيْفَاتِهِمْ ۗ إِنَّهُمْ لَمِنَ الْأَعْيُنِ أَعْيُنًا مِّن لَّدُنَّا يَظُنُّونَ أَنَّهُمْ مُخَيَّرُونَ ﴿١٢﴾

^१ بهذا الحديث (इस बात) से मुसुराद कुरआन करीम है। काफिरों के ईमान लाने की जितनी श्दीद इच्छा आप ﷺ को थी और उन के मुंह मोड़ने और इंकार से आप ﷺ को जो बहुत ज़्यादा दुख होता था, इस में आप ﷺ की इसी हालत का बयान है।

^२ ये वही नौजवान हैं जिन्हें कहफ वाले कहा गया है। (तफसीली घयान आगे आयेगा) उन्होंने जब अपने दीन की हिफाजत के लिए गुफा में पनाह ली तो यह दुआ की, कहफ वालों की इस कहानी में नौजवानों के लिए बड़ी नसीहत है, आजकल के नौजवानों का ज़्यादातर बक़्त बेकार में बरबाद होता है और अल्लाह की तरफ़ ज़रा भी ध्यान नहीं। काश् ! आज का मुसलमान नौजवान अपनी जवानी के बक़्त में माफी माँग कर पैगम्बरों की पैरवी करता और अपनी पूरी ताकत और क़वत को अल्लाह की इबादत में लगा देता।

याद रखा है?'

१३. हम उनकी सच्ची कहानी तेरे सामने बयान कर रहे हैं। ये कुछ नौजवान? अपने रब पर ईमान लाये थे और हम ने उन की हिदायत (मार्गदर्शन) में तरक्की अता की थी।

१४. और हम ने उन के दिल मजबूत कर दिये थे, जबकि ये उठ खड़े हुए और कहने लगे कि हमारा रब तो वही है जो आकाशों और धरती का रब है, नामुमकिन है कि हम उस के सिवाय किसी दूसरे माबूद को पुकारें, अगर ऐसा किया तो हम ने बहुत नामुनासिब बात कही।

१५. यह है हमारी कौम जिस ने उसके सिवाय दूसरे माबूद बना रखे हैं, उन के प्रभुत्व (गल्बे) का कोई वाजेह सुबूत क्यों नहीं पेश करते? अल्लाह पर झूठ बात बाधने वाले से ज्यादा जालिम कौन है?

تَنْصُرُنْفُسَ عَلَيْكَ يَبَاهِمُ بِالْحَقِّ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آتَمُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ﴿١٣﴾

وَوَرَّطْنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ إِذْ قَامُوا فَقَالُوا رَبُّنَا رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَنْ نَدْعُوَ مِنْ دُونِهِ إِنَّهَا أَلَدُّ قَلْبِنَا إِذَا شَطَطًا ﴿١٤﴾

هَؤُلَاءِ قَوْمًا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ الرَّبِّهِمْ آلِهَةً لَوْلَا يَأْتُونَ عَلَيْهِمُ بِسُلْطِينَ بَيِّنَاتٍ لِّمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾

- उन दो गुटों का मतलब इख्तिलाफ करने वाले लोग हैं, यह या तो उसी वक्त के लोग थे जिन के बीच उन के वारे में इख्तिलाफ हुआ, या रिसालत के वक्त के काफिर और ईमान वाले मुराद हैं, और कुछ कहते हैं कि ये कहफ वाले ही हैं उनके दो गुट बन गये थे, एक कहता था कि हम इतने बक्त तक सोये रहे, दूसरा उसको नकारता और पहले गुट से कम व ज्यादा बक्त बताता।
- ये नौजवान, कुछ आलिम कहते हैं कि इसाई धर्म के मानने वाले थे, और कुछ कहते हैं कि उनका जमाना हजरत ईसा से पहले का है। हाफिज इब्ने कसीर ने इसी कौल को प्राथमिकता (तरजीह) दी है, कहते हैं कि एक राजा था दकियानूस, जो लोगों को मूर्तिपूजा करने और उन के नाम पर भोग-प्रसाद चढ़ाने की शिक्षा देता था। अल्लाह तआला ने इन कुछ नौजवानों के दिल में यह बात डाल दी कि इबादत के लायक तो सिर्फ एक अल्लाह ही है जो आकाश और धरती का खालिक है और सारी दुनिया का रब है। ^{١٣} अल्पवाचक बहुवचन (जमा किल्लत) है, जिस से मालूम होता है कि इनकी तादाद नौ या उस से भी कम थी, यह अलग होकर एक जगह पर अल्लाह अकेले की इबादत करते थे, धीरे-धीरे लोगों में उनके तौहीद के यकीन का चर्चा होने लगा तो राजा तक बात पहुँची और उसने उन लोगों को अपने दरबार में बुलाकर उन से पूछा, तो वहाँ उन्होंने खैफ अल्लाह के एकरब्रवाद (तौहीद) का बयान किया। आखिर में राजा और अपनी कौम के मूर्तिपूजकों के डर से अपने धर्म की हिफाजत के लिए आबादी से दर एक पहाड़ की गुफा में छिप गये, जहाँ अल्लाह तआला ने उन्हें गहरी नीद में सुला दिया और वे तीन सौ नौ साल वहाँ सोते रहे।

१६. और जबकि तुम उन से और अल्लाह के सिवाय उन के दूसरे माबूदों से अलग हो गये हो तो अब किसी गुफा में जा बैठो, तुम्हारा रब तुम पर अपनी रहमत करेगा और तुम्हारे काम में आसानी पैदा कर देगा।

१७. और आप देखेंगे कि सूरज निकलने के वक्त उनकी गुफा के दायी तरफ झुक जाता है और डूबने के वक्त उनकी बायी तरफ कतरा जाता है और वे उस गुफा के कुशादा मुकाम में हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है, अल्लाह (तआला) जिसकी हिदायत करे वे सच्चे रास्ते पर है और जिसे वह भटका दे नामुमकिन है कि आप उसका कोई वली और रहनुमा पा सकें।

१८. और आप विचार करेंगे कि वे जाग रहे हैं अगरचे वे सो रहे थे, और खुद हम उनको दाहिने-बायें करबटें दिलाया करते थे, उनका कुत्ता भी चौखट पर अपने हाथ फैलाये हुए था, अगर आप झाँक कर देखना चाहते तो जरूर उल्टे पाँव भाग खड़े होते और उन के डर और रस से आप भर दिये जाते।^१

१९. और उसी तरह हम ने उन्हें जगाकर उठाया^२ कि आपस में पृच्छताछ कर लें, उन में से एक कहने वाले ने पूछा कि तुम कितनी देर ठहरे रहे? उन्होंने जवाब दिया एक दिन या एक दिन से भी कम,^३ कहने लगे कि तुम्हारे ठहरे रहने

وَإِذِ اعْتَكَزْتُمُوهُمْ وَمَا يُعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ
فَأَوَّا إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ
رَحْمَتِهِ وَيَهَيِّئْ لَكُمْ مِنْ أَمْرِكُمْ خُرُوجًا ﴿١٦﴾

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَزْوُرُ عَنْ كَهْفِهِمْ
ذَاتَ الْيَمِينِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَقْرِضُهُمْ ذَاتَ
الشَّمَالِ وَهُمْ فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ لَيَالٍ مِّنْ آيَاتِ
اللَّهِ لَعَلَّ مَنْ يَهْدِي اللَّهُ فَعِلَى الْهَيْدِ وَمَنْ يَضِلَّ
فَلَنْ يَجِدَ لَهُ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾

وَتَحْسَبُهُمْ آيَاتًا وَهُمْ رُكُودٌ وَنُقُلْنَاهُمْ
ذَاتَ الْيَمِينِ وَذَاتَ الشَّمَالِ كُلُّهُمْ
بِأَيْسَرِ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَيْبِ لَوِ اتَّخَلَّتْ عَلَيْهِمْ
لَوْلِيَّتْ مِنْهُمْ فَوَارَا وَكَلَيْتَتْ مِنْهُمْ رُغْمًا ﴿١٨﴾

وَكَذَلِكَ بَعَثْنَاهُمْ لِيَتَسَاءَلُوا بَيْنَهُمْ
مِنْهُمْ كَمْ لَيْسْتُمْ قَالُوا لَيْسْنَا بِيَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ
قَالُوا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَيْسْتُمْ قَالُوا بَعْضًا أَحَدُكُمْ

^१ यानी सूरज निकलने के वक्त दायी तरफ को और डूबने के वक्त बायी तरफ को कतराकर निकल जाता और इस तरह दोनों वक्त में उन पर धूप न पड़ती, अगरचे वह गुफा में कुशादा मुकाम पर अराम कर रहे थे। نحوه का मतलब है कुशादा मुकाम।

^२ यह उनकी हिफाजत के लिए अल्लाह तआला की तरफ से इतेजाम था ताकि कोई उन के करीब न जा सके।

^३ यानी जिस तरह हम ने उनको अपनी ताकत से सुना दिया था, उसी तरह तीन सौ नौ साल बाद उनको हम ने उठा दिया और इस तरह उठाया कि उनके जिस्म उसी तरह महफूज थे जिस तरह तीन सौ नौ साल पहले सोते वक्त थे, इसीलिए आपस में एक-दूसरे से उन्होंने सवाल किये।

^४ यानी जिस वक्त वे गुफा में गये, सुबह का पहला हिस्सा था, और जिस वक्त जगे उस वक्त दिन का आखिरी पहर था, इस बिना पर वे समझे कि शायद एक दिन या उस से भी कम दिन

का पूरा इल्म अल्लाह (तआला) को ही है, अब तो तुम अपने में से किसी को अपनी ये चांदी देकर नगर भेजो वह ठीक तरह से देखभाल ले कि नगर का कौन-सा खाना पाक है, फिर उसी में से तुम्हारे खाने के लिए ले आये, और वह बहुत एहतेयात और नमी का बर्ताव करे और किसी को तुम्हारी खबर न होने दे !

२०. अगर ये (काफिर) तुम पर अधिकार (गल्बा) पालेंगे तो तुम्हें पत्थरों से मार डालेंगे या दोबारा तुम्हें अपने धर्म में लौटा लेंगे तो फिर तुम कभी कामयाबी नहीं पा सकोगे ।

२१. और हम ने इस तरह लोगों को उनकी हालत से आगाह कर दिया^१ कि वे जान लें कि अल्लाह का वादा पूरा सच्चा है और क्रयामत में कोई शक व शुब्हा नहीं, जबकि वे अपनी बात में आपस में इस्त्रिलाफ कर रहे थे, कहने लगे इन की गुफा पर एक घर बना लो,^२ उनका रब ही उन की हालत का ज्यादा जानने वाला है, जिन लोगों ने उन के बारे में प्रभाव (गल्बा)

يُورِقُكُمْ هَذِهِ إِلَى الْمَدِينَةِ فَلْيَنْظُرُوا يَتِيَابًا آذَى
كَلَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ
وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا ۝ ٢٠

إِنَّهُمْ إِنْ يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوكُمْ أَوْ يُعَذِّبُوكُمْ
فِي مَلِيئِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوا إِذَا أَبَدْنَا ۝ ٢٠

وَكَذَلِكَ أَعْتَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوا أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ
حَقٌّ وَأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيهَا إِذْ يَتَنَزَّلُونَ
بَيْنَهُمْ أَمْرُهُمْ فَقَالُوا أَيْنَ آبَاؤُهُمْ بَنِيَانًا
رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَىٰ أَمْرِهِمْ
لَتَنْزِلَنَّا عَلَيْهِمْ مَسْجِدًا ۝ ٢١

के कुछ हिस्से में सोते रहे ।

^१ एहतेयात और नमी पर जोर इस उम्मीद से दिया, जिस के सबव वे नगर से निकलकर निर्जन (वीरान) जगह पर आये थे ।

^२ यानी जिस तरह हम ने उन्हें सुलाया और जगाया, उसी तरह हम ने लोगों को उन के बारे में वाकिफ कर दिया, यह परिचय इस तरह हुआ कि जिस वक्त कहफ वालों का एक साथी चांदी का वह सिक्का लेकर नगर में गया जो तीन सौ नौ साल के राजा दकियानुस के जमाने का था, और वह सिक्का एक दुकानदार को दिया तो वह हैरान रह गया, उस ने पास के दुकान वाले को दिखाया, वह भी देखकर हैरान रह गया, जबकि कहफ वालों का साथी कहता रहा कि मैं इसी नगर का वासी हूँ और कल ही यहाँ से गया हूँ, लेकिन इस 'कल' को तीन सदियाँ गुजर चुकी थी, लोग किस तरह उसकी बात को मान लेते ? लोगों को यह शक हुआ कि कहीं इस इंसान को गड़वा हुआ धन तो नहीं मिल गया । धीरे-धीरे यह बात राजा या उस के अधिकारी तक पहुँची और उस साथी की मदद से वह गुफा तक पहुँचा और कहफ वालों से मिला, उस के बाद अल्लाह तआला ने उन्हें फिर मौत दे दी । (इब्ने कसीर)

^३ ये कहने वाले कौन थे? कुछ आलिम कहते हैं कि उस वक्त के ईमान वाले थे, कुछ कहते हैं कि राजा और उस के साथी थे, जब आकर उन्होंने मुलाकात की और उसके बाद अल्लाह ने उन्हें फिर सुला दिया, तो राजा और उस के साथियों ने कहा कि इनकी हिफाजत के लिए एक घर बना दिया जाये ।

हासिल किया, वे कहने लगे कि हम तो उन के आसपास मस्जिद बना लेंगे !

२२. कुछ लोग कहेंगे कि गुफा के लोग तीन थे और चौथा उन का कुत्ता था, कुछ कहेंगे कि पाँच थे छठा उन का कुत्ता था, तैव के बारे में (निश्चाना देखे बिना) अंदाज़ से पत्थर चला देना, कुछ कहेंगे कि वे सात हैं और आठवाँ उनका कुत्ता है। (आप) कह दीजिए कि मेरा रब उनकी तादाद अच्छी तरह जानने वाला है, उन्हें बहुत कम लोग जानते हैं, फिर आप भी उन लोगों के बारे में केवल मुह्तसर बातचीत ही करें, और उन में से किसी से उन के बारे में पूछताछ भी न करें।

२३. और कभी किसी काम पर इस तरह न कहें कि मैं इसे कल करूँगा।

२४. लेकिन साथ ही इश्वा अल्लाह (अल्लाह ने चाहा तो) कह लें^२ और जब भी भूलें अपने रब को

سَيَقُولُونَ ثَلَاثَةً رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ وَيَقُولُونَ خَمْسَةً سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجَبًا بِالْغَيْبِ وَيَقُولُونَ سَبْعَةً وَتَأْمُرُهُمْ كَلْبُهُمْ بِقُلِّبِ زَيْنٍ أَعْلَمُ بِعِبَادَتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ فَلَا تُمَارِ فِيهِمْ إِلَّا مِرَاءً ظَاهِرًا وَلَا تَسْتَفْتِ فِيهِمْ مِنْهُمْ أَحَدًا (22)

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَلِكَ غَدًا (23)

إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ وَادْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ

^१ यह गल्ट्वा हासिल करने वाले इमान वाले थे या काफ़िर और मर्तिपूजक ? शौकानी ने पहले क़ौल को मान्यता दी है और इब्ने कसीर ने दूसरे क़ौल को। क्योंकि नेक लोगों की क़ब्रों पर मस्जिदों की तामीर अल्लाह को पसंद नहीं। नबी ﷺ ने फ़रमाया :

«لَعَنَ اللَّهُ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى اتَّخَذُوا قُبُورَ أَنْبِيَائِهِمْ وَمَسَاجِدَهُمْ»

•अल्लाह तआला यहूदियों और इसाईयों पर लानत करे जिन्होंने अपने पैगम्बरों और बुजुर्गों की क़ब्रों को मस्जिद बना लिया। (सहीह बुखारी, किताबुल जनायज़, बाब मायकरह मिन इत्तेखाज़िल मस्जिद अलल क़बूरे और सहीह मुस्लिम, किताबुल मसाजिद वत्तेखाज़ि ससोबरे फ़ीहा।)

हज़रत उमर (رضي الله عنه) की ख़िलाफ़त (शासनकाल) में ईराक में हज़रत दानियाल की क़ब्र मालूम हुई तो आप ने हुक्म दिया कि इसे छिपाकर आम क़ब्रों जैसी कर दिया जाये ताकि लोगों के इल्म में न आये कि पला क़ब्र पला पैगम्बर की है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

^२ मुफ़त्सिरीन कहते हैं कि यहूदियों ने नबी ﷺ से तीन बातें पूछी थीं, रूह की हकीकत क्या है और कहफ़ वाले और जुल्करनैन कौन थे? कहते हैं कि यही सवाल इस सूरे के नाज़िल होने के सबब बने। नबी ﷺ ने फ़रमाया मैं तुम्हें कल जवाब दूँगा, लेकिन उसके बाद पन्द्रह दिन तक ज़िब्रिल बह्यी (प्रकाशना) लेकर नहीं आये, फिर जब आये तो अल्लाह तआला ने إِنْ شَاءَ اللَّهُ कहने का हुक्म दिया। आयत में عَدَّ (कल) से मुराद आने वाला दिन है यानी जब भी मुस्तक़बिल करीब या देर से कोई काम करने का इरादा करो तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ अरूर कहा करो, क्योंकि इंसान को तो पता नहीं कि वह जिस इरादे को जाहिर कर रहा है, उसको पूरा करने

याद कर लिया करें! और कहते रहें कि मुझे पूरी उम्मीद है कि मेरा रब इस से भी ज्यादा हिदायत के करीब की बात की हिदायत करेगा।

२५. और वे लोग अपनी गुफा में तीन सौ साल तक रहे और नौ साल और ज्यादा गुजारे ।^१

२६. आप कह दीजिए कि अल्लाह ही को उनके ठहरे रहने के वक्त का अच्छी तरह इल्म है, आकाशों और धरती का अर्न्तज्ञान (गैब) सिर्फ उसी को है, वह क्या ही अच्छा देखने सुनने वाला है । सिवाय अल्लाह के उनकी कोई मदद करने वाला नहीं, और अल्लाह तआला अपने हुक्म में किसी को शामिल नहीं करता ।

२७. और आप की तरफ जो आप के रब की किताब बहयी (प्रकाशना) की गयी है उसे पढ़ते रहें, उसकी बातों को कोई बदलने वाला नहीं, आप उस के सिवाय हरगिज-हरगिज कोई पनाह न पायेंगे ।

२८. और अपने आप को उन्हीं के साथ रखा करें, जो अपने रब को सुबह और शाम पुकारते हैं और उसी के मुँह (अनुग्रह) की चाहना करते हैं । सावधान ! तेरी आँखें उन से न हटने पायें कि दुनियावी झिन्दगी की जीनत की कौशिश में लग जाओ, (देखो) उसका कहना न मानना जिस के दिल को हम ने अपनी याद से विचलित (गाफिल) कर दिया है, और जो अपनी मनोकामना

وَقُلْ عَلَىٰ أَنْ يَهْدِيَنِي رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشْدًا ﴿٢٤﴾

وَكَيْتَابًا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ﴿٢٥﴾

قُلْ اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَيْتَابُ الْعَلِيِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ مَا يُبْصِرُ بِهِ وَأَسْمِعُ مَا لَمْ لَهُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا يُشْرِكُ فِي حُكْمِهِ أَحَدًا ﴿٢٦﴾

وَاقْرَأْ مَا أَوْحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ لَا تُمَدِّدْ بِكَلِمَاتِهِ ۖ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ﴿٢٧﴾

وَأَصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ بِالْقُدُورَةِ وَالْعَشيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ تُرِيدُ زِينَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَا تُطْعَمَنْ مِنْ أَعْفَلْنَا قَلْبَهُ عَنْ دِكْرِنَا وَاتَّبِعْ هَوَاهُ وَكَانَ أَمْرُهُ قُرْطًا ﴿٢٨﴾

की खुशनीसीबी भी उसे अल्लाह की तरफ से मिलनी है या नहीं?

¹ यानी अगर बातचीत और वादा करते वक्त بِإِشَارَةِ رَبِّكَ कहना भूल जाओ, तो जिस वक्त याद आ जाये بِإِشَارَةِ رَبِّكَ कह लो, या फिर रब को याद करने का मतलब उसकी तारीफ और बड़ाई और उस से माफी की दुआ है ।

² ज्यादातर मुफस्सिरो ने इसको अल्लाह का क्रौल कहा है, सूरज के हिसाब से ३०० और चाँद के हिसाब से ३०९ साल होते हैं ।

(ख्वाहिश्वात) के पीछे पड़ा हुआ है और जिसका अमल हृद से गुजर चुका है

२९. और एलान कर दे कि यह सरासर हक (कुरआन) तुम्हारे रव की तरफ से है, अब जो चाहे ईमान लाये, और जो चाहे कुफ्र करे, ज़ालिमों के लिए हम ने वह आग तैयार कर रखी है जिसकी परिधि (क्रान्तें) उन्हें घेर लेंगी, अगर वे फरियाद करेंगे तो उनकी मदद उस पानी से की जायेगी जो तेलछट जैसा होगा जो चेहरे भून देगा, बड़ा ही बुरा पानी है और बड़ा बुरा आरामगाह (नरक) है।

३०. बेशक जो लोग ईमान लायें और नेकी का काम करें तो हम किसी नेकी करने वाले के बदला को वरबाद नहीं करते।

३१. उन के लिए हमेशा वाली जन्नत है, उनके नीचे नदियाँ बह रही होंगी, वहाँ ये सोने के कड़े पहनाये जायेंगे^२ और हरे रंग के मुलायम और मोटे रेशम के कपड़े पहनेंगे,^३ वहाँ सिंहासन पर तकिये लगाये होंगे, क्या ही अच्छा बदला है और कितना अच्छा आरामघर है।

وَكُلِّمُوا الصَّادِقِينَ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ
وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ ۗ إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ
نَارًا ۗ أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ۗ وَإِنْ يَسْتَعِذُّوا
بِعُاقِبَتِهَا كَالهَيْلِ بِشَوَى الْجُودَى ۗ يَشْسُ
الشَّرَابِ ۗ وَسَاءَتْ مُرْتَفَقًا ۝ ٢٩

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ إِنَّا لَا نُضِيعُ
أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ۝ ٣٠

أُولَئِكَ لَهُمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ
وَيَلْبَسُونَ ثِيَابًا خُضْرًا مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ
مُتَّكِفِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ يُعْمَرُ الثَّوَابُ ۗ وَحَسُنَتْ
مُرْتَفَقًا ۝ ٣١

^१ कुरआन के अंदाजे बयान के मुताबिक नरकवासियों के बयान के बाद जन्नत में जाने वालों का बयान है ताकि लोगों के अन्दर जन्नत हासिल करने की तमन्ना और शौक पैदा हो।

^२ कुरआन के नाज़िल होने के वक़्त और उस से पहले रिवाज़ था कि राजा, धनवान और कबीलों के मुखिया अपने हाथों में सोने के कड़े पहनते थे जिससे उनकी इज़्ज़त जाहिर होती थी, स्वर्ग में जाने वालों को भी स्वर्ग में यह कड़े पहनाये जायेंगे।

^३ सुन्दस बारीक रेशम इस्तब्रक मोटा रेशम। दुनिया में मर्दों के लिए सोने और रेशमी कपड़े हाराम है, जो लोग इस हुकम के ऐतबार से अमल करेंगे, दुनिया में इन हाराम चीज़ों के इस्तेमाल से बचेंगे, उन्हें जन्नत में यह सारी चीज़ें हासिल होंगी, वहाँ कोई चीज़ हाराम नहीं होगी बल्कि जन्नत वाले जिस चीज़ की इच्छा करेंगे वह मौजूद होगी।

३२. और उन्हें उन दो इंसानों की मिसाल भी सुना दे जिन में से एक को हम ने दो बाग अंगूरों के दे रखे थे, जिन्हें खजूरों के पेड़ों से हम ने घेर रखा था, और दोनों के बीच खेती पैदा कर दी थी।

३३. दोनों बाग अपने फल बहुत लाये, और उस में कोई कमी न की, और हम ने उन बागों के बीच नहर जारी कर रखी थी।

३४. और (इस तरह) उसके पास फल थे, एक दिन उसने बातों ही बातों में अपने साथी से कहा कि मैं तुझ से ज्यादा धनवान हूँ और जल्थे में भी ज्यादा इज्जत वाला हूँ।

३५. और यह अपने बाग में गया और था अपनी जान पर जुल्म करने वाला, कहने लगा कि मैं विचार नहीं कर सकता कि किसी वक्त भी यह बरबाद हो जाये।

३६. और न मैं क्रयामत के क्रायम होने को मानता हूँ और अगर मान भी लूँ कि मैं अपने रब की तरफ लौटाया भी गया तो बेशक मैं (उस लौटने की जगह को) इस से भी ज्यादा अच्छा पाऊँगा।

३७. उस के साथी ने उस से बातें करते हुए कहा कि क्या तू उस (माबूद) को नहीं मानता है जिस ने तुझे मिट्टी से पैदा किया, फिर मनी से फिर तुझे पूरा इंसान (पुरूष) बना दिया।

३८. लेकिन मैं (तो अक़ीदा रखता हूँ कि) वही अल्लाह मेरा रब है, मैं अपने रब के साथ किसी को भी साझीदार न बनाऊँगा।

وَاطْرَبَ لَهُم مَثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَحَفَفْنَاهُمَا بِنَخْلٍ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زُرْعًا ﴿٣٢﴾

كُنَّا الْجَنَّتَيْنِ أَنْتَ أَكْبَاهَا وَلَمْ تَطْلِمْ مِنْهُ شَيْئًا لَوْ فَجَرْنَا خِلْفَهُمَا نَهْرًا ﴿٣٣﴾

وَكَانَ لَهُ كُفْرًا ۖ فَكَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَأَعَزُّ نَفَرًا ﴿٣٤﴾

وَدَخَلَ جَنَّتَهُ وَهُوَ ظَالِمٌ لِنَفْسِهِ ۗ قَالَ مَا أَظُنُّ أَنْ تَبِيْعَ هَذِهِ أَبَدًا ﴿٣٥﴾

وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِنْ رُودْتُ إِلَىٰ رَبِّي لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِنْهَا مُنْقَلَبًا ﴿٣٦﴾

قَالَ لَهُ صَاحِبُهُ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَكَفَرْتَ بِالَّذِي خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ سَوَّكَ رَجُلًا ﴿٣٧﴾

لَكِنَّا هُوَ اللَّهُ رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٣٨﴾

1 जिस तरह चारदीवारी से हिफाजत की जाती है, उसी तरह इन बागों के चारों तरफ खजूर के पेड़ थे जो वाड़े और चारदीवारी का काम देते थे।

३९. और तूने अपने बाग में जाते वक़्त क्यों नहीं कहा कि अल्लाह का चाहा होने वाला है, कोई ताक़त नहीं किन्तु अल्लाह की मदद से, अगरचे तू मुझे माल और औलाद में कम देख रहा है।

४०. लेकिन बहुत मुमकिन है कि मेरा रब मुझे तेरे इस बाग से भी अच्छा अता कर दे और इस पर आकाशीय मुसीबत भेज दे तो यह चटियल और फिसलने वाला मैदान बन जाये।

४१. या इसका पानी नीचे उतर जाये और तेरे वश में न रहे कि तू उसे दूढ़ लाये।²

४२. और इसके (सारे) फल घेर लिये गये फिर वह अपने इस खर्च पर जो उसने उस पर किया था अपने हाथ मलने लगा और वह बाग छप्पर सहित औंधा पड़ा था, और (वह इंसान) कह रहा था कि हाय ! मैं अपने रब के साथ किसी को भी साझी न बनाता।

४३. उस के हक़ में कोई भी जमाअत न उठी कि अल्लाह से कोई उसका वचाव करती और न वह खुद ही बदला लेने वाला बन सका।

وَلَوْلَا إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ ثَلُتَ مَا شَاءَ اللَّهُ لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ إِنَّ تَرَبَّنَا أَقَلَّ مِنْكَ مَالًا
وَوَلَدًا ﴿٣٩﴾

كَلَسَى رَبِّي أَنْ يُؤْتِيَنِي خَيْرًا مِنْ جَنَّتِكَ
وَيُرْسِلْ عَلَيْهَا حِجَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَتُصْبِحُ
صَوْبًا زَلْقًا ﴿٤٠﴾

أَوْ يُصْبِحَ مَا وَهَّ عُرْوَاتِنَا فَتَطْوِي لَه طَلَبًا ﴿٤١﴾

وَأَحْطَ بِشَرِّهِ فَأَصْبَحَ يَقْتَبُ كَهَيِّو عَلَى
مَا أَنْفَقَ فِيهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا
وَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا ﴿٤٢﴾

وَلَمْ تَكُنْ لَهُ فِئَةٌ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ
اللَّهِ وَمَا كَانَ مُنتَصِرًا ﴿٤٣﴾

¹ अल्लाह के एहसानों का शुक्रिया अदा करने का तरीका बताते हुए कहा कि बाग में दाखिल होते वक़्त गर्व और घमण्ड को जाहिर करने के बजाय यह कहा जाता है: لا قوة الا بالله यानी जो कुछ होता है अल्लाह की मर्ज़ी से होता है, वह चाहे तो उसे बाकी रखे और चाहे तो नाश कर दे। इसीलिए हदीस में आता है कि जिस को किसी का भाल, औलाद या हालत अच्छी लगे तो उसे पढ़ना चाहिए। (तफ़सीर इब्ने कसीर, माख़ूज़ मुसनद अबु याला)

² या दरमियान में जो नहर है, जो बाग की हरियाली और पैदावार का सबब है इसके पानी को इतनी गहराई में कर दे कि इस से पानी निकालना ही नामुमकिन हो जाये, और जहाँ पानी ज़्यादा गहराई में चला जाये तो फिर वहाँ बड़ी-बड़ी ताक़तवर मोटरें और मशीनें भी पानी ऊपर खींच लाने में नाकाम रहती हैं।

४४. यही से (साबित है) कि अधिकार (इस्तिथारत) उसी अल्लाह (तआला) हक के लिए है, वह बदला अता करने और नतीजा के ऐतबार से बहुत ही बेहतर है।

४५. और उन के लिए दुनियावी जिन्दगी की मिसाल भी बयान कर, जैसे पानी। जिसे हम आकाश से उतारते हैं, उस से धरती की पैदावार मिली-जुली होती है, फिर आखिर में वह चूर हो जाती है जिसे हवायें उड़ाये लिए फिरती हैं, और अल्लाह (तआला) हर चीज पर कुदरत रखता है।¹

४६. माल और औलाद तो दुनियावी जिन्दगी की जीनत है,² लेकिन बाकी रहने वाली नेकी तेरे रब के नजदीक बदला के लिए तथा (मुस्तकबिल की) अच्छी उम्मीद के लिए बहुत बेहतर है।

४७. और जिस दिन हम पहाड़ों को चलायेंगे और धरती को तू साफ खुली हुई देखेगा और

هَذَا لِكَ الْوَالِيَةِ لِلَّهِ الْحَقُّ هُوَ خَيْرٌ
تَوَابًا وَخَيْرٌ عَقْبًا ﴿٤٤﴾

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَا أَنْزَلْنَاهُ
مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ
هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيحُ وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
مُقْتَدِرًا ﴿٤٥﴾

الْمَالُ وَالْمَنُونُ وَيُنَبِّئُ الْعَبِيدَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ
الظَّالِمَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ تَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ﴿٤٦﴾

وَيَوْمَ نُسِفُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً
وَحَشَرْنَاهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ﴿٤٧﴾

¹ इस आयत में दुनिया की हमेशा तब्दीली और अस्थिरता को खेती की एक मिसाल के जरिये वाजेह किया गया है कि खेती में लगे हुए पौधों और पेड़ पर जब आकाश से बारिश होती है तो पानी पाकर खेती लहलहा जाती है और पौधे और पेड़ नई जिन्दगी से प्रफुल्लित (खुश) हो जाते हैं, लेकिन फिर एक वक़्त आता है कि खेती सूख जाती है पानी न मिलने के सबब या फसल पक जाने के सबब, तो फिर हवायें उसके उड़ाये फिरती हैं। हवा का एक झोंका कभी दायीं तरफ कभी बायीं तरफ झुका देता है। दुनिया की जिन्दगी भी हवा के एक झोंके या पानी के बुलबुले या खेती की तरह है जो अपनी कुछ दिन की बहार दिखाकर तवाही के घाट उतर जाती है, और यह सारे काम उसी के हाथों से होता है जो एक है और हर चीज उसके अधीन है। अल्लाह तआला ने दुनिया की यह मिसाल कुरआन मजीद में कई जगहों पर बयान किया है, जैसे सूर: यूनस-२५, सूर: जुमर-२१ और सूर: हदीद-५० और दूसरी आयतें।

² इस में दुनिया के उन लालचियों का खण्डन (तरदीद) है जो दुनिया के माल, सामान, कबीला, परिवार और औलाद पर घमंड करते हैं, अल्लाह तआला ने फरमाया की फ़ानी संसार की ये चीजें बक्ती जीनत हैं, आखिरत में यह चीजें कुछ काम नहीं आयेंगी, इसीलिए इस से आगे फरमाया कि आखिरत में काम आने वाले अमल तो वह हैं जो वाकी रहने वाले हैं।

सभी लोगों को हम जमा करेंगे, उन में से किसी को वाक़ी न छोड़ेंगे।

५८. और सब के सब तेरे रब के सामने कितारों में हाज़िर किये जायेंगे। वेशक़ तुम हमारे सामने उसी तरह आये जिस तरह हम ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था लेकिन तुम तो इसी भ्रम में रहे कि हम कभी तुम्हारे लिए कोई वादे का दिन मुकर्रर नहीं करेंगे।

५९. और आमालनामा आगे में रख दिये जायेंगे, फिर तू देखेगा कि गुनहगार उस के लेख से डर रहे होंगे और कह रहे होंगे कि हाय हमारा नाच! यह कैसा लेख है जिसने कोई छोटा-बड़ा बिना घेरे नहीं छोड़ा, और जो कुछ उन्होंने किया था सब कुछ मौजूद पायेंगे और तेरा रब किसी पर जुल्म और नाइसाफी न करेगा।

५०. और जब हम ने फ़रिस्तों को हुक्म दिया कि आदम के आगे सज्दा करो तो इब्लीस के सिवाय सब ने सज्दा किया, यह जिन्नों में से था।

وَعِضُوا عَلَىٰ رَبِّكَ صَفَا لَقَدْ جِئْتُمُونَا كَمَا
خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ذَلِيلًا رَّعِمْتُمْ أَنَّن
نَجْعَل لَّكُمْ مَوْعِدًا ﴿٤٨﴾

وَوَضِعَ الْكِتَابَ فَكَّرَىٰ الْمُجْرِمِينَ مُشْفِقِينَ
مِنَافِيهِ وَيَقُولُونَ بَوَيْلَتْنَا مَا لَ هَذَا الْكِتَابِ
لَا يَغَاوِرُ صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً إِلَّا أَحْصَاهَا
وَوَجَدُوا مَا عَمِلُوا حَاضِرًا وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ
أَحَدًا ﴿٤٩﴾

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ
فَسَجَدُوا إِلَّا الْإِبْلِيسَ كَانَ مِنَ الْجِنِّ

क़ुरआन का यह साफ़ बयान है कि शैतान फ़रिस्ता नहीं था, फ़रिस्ता होता तो अल्लाह तआला के हुक्म की नाफ़रमानी करने की हिम्मत ही न होती, क्योंकि फ़रिस्तों के औसाफ़ अल्लाह तआला ने बयान किया है :

(لَا يَنْصُرُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ)

“वह अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी नहीं करते और बही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म दिया जाता है।” (सूर: अल-तहरीम-६)

इस हालत में यह शक़ रहता है, अगर वह फ़रिस्ता नहीं था तो फिर वह अल्लाह के हुक्म से मुखातिब ही नहीं था क्योंकि इस के मुखातिब तो फ़रिस्ते थे, उन्ही को सज्दा करने का हुक्म दिया गया था। ‘रुहुल मआनी’ के लेखक ने कहा है कि वह फ़रिस्ता यक़ीनन नहीं था, लेकिन वह फ़रिस्तों के साथ रहता था और उन्ही में शुमार होता था, इसलिए वह भी اسجدوا لام के हुक्म से मुखातिब था और आदम के सामने सज्दा करने के हुक्म के साथ उसको मुखातिब किया जाना तय है। अल्लाह का आदेब है : “जब मैंने तुझे हुक्म दिया तो फिर तूने सज्दा क्यों न किया।” (सूर: अल-अर्राफ़-१२)

उस ने अपने रब के हुक्म की नाफरमानी की। क्या फिर भी तुम उसे और उसकी औलाद को मुझे छोड़ कर अपना दोस्त बना रहे हो? अगरचे वह तुम सबका दुश्मन है, ऐसे जालिमों का कितना बुरा बदला है।

५१. मैंने उन्हें आकाशों और धरती की पैदाईश के वक़्त मौजूद नहीं रखा था और न खुद उन की अपनी पैदाईश में, और मैं भटकाने वालों को अपना मददगार बनाने वाला भी नहीं।

५२. और जिस दिन वह कहेगा कि तुम्हारे ह्याल से जो मेरे साझीदार थे उन्हें पुकारो, ये पुकारेंगे लेकिन उन में से कोई जवाब न देगा, और हम उनके बीच बरवादी का जरिया बना देंगे।

५३. और मुजरिम नरक को देखकर समझ लेंगे कि वे इसी में जाने वाले हैं, लेकिन उससे बचने की जगह न पायेंगे।

५४. और हम ने इस कुरआन में हर-हर तरह से सभी भिसाले लोगों के लिए बयान कर दिये हैं, लेकिन सभी चीजों से ज्यादा झगड़ालू इसान हैं।

५५. और लोगों के पास हिदायत आ जाने के बाद उन्हें ईमान लाने और अपने रब से तौबा करने से केवल इसी बात ने रोका कि बुजुर्गों का सा मुआमला उन के साथ भी हो या उनके सामने खुला अजाब आ जाये।

فَكَسَىٰ عَنْ أَمْرِ رَبِّهِ أَكْتَفَدُ وَنَهُ
وَدُرَيْتَةَ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِي وَهُمْ لَكُمْ
عَدُوٌّ مُّبِينٌ لِلظَّالِمِينَ بَدَلًا ﴿50﴾

مَا أَشْهَدَهُمْ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ وَمَا كُنْتُمْ مَسْجُودًا
لِلْمُضِلِّينَ عَضُدًا ﴿51﴾

وَيَوْمَ يُعْرَوْنَ نَادُوا سُورَكَاءَ يَوْمَ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ
قَدْ عَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ
مُؤْتَفِقًا ﴿52﴾

وَرَأَى الْمُجْرِمُونَ النَّارَ فَظَنُّوا أَنَّهُمْ مُوَاعِقُوهَا
وَلَمْ يَجِدُوا عَنْهَا مَصْرِفًا ﴿53﴾

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِلنَّاسِ
مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ
شَيْئًا وَجَدَلًا ﴿54﴾

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَىٰ
وَيَسْتَغْفِرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةٌ
الْأُولَىٰ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ قُبُلًا ﴿55﴾

1 'بق' का मतलब होता है निकलना, चूहा जब अपने बिल से निकलता है तो उसे अरबी भाषा में कहते हैं «فَسَفَتَ الْفَأْرَةَ مِنْ جُحْرِهَا»। बैतान भी इज्जत और एहतेराम वाला सज्दा के हुक्म की नाफरमानी करके रब की इताजत से निकल गया।

५६. और हम तो अपने रसूलों को केवल इसलिए भेजते हैं कि वे खुशखबरी सुना दें और बाखबर कर दें, काफिर लोग वातिल को सुबूत बनाकर झगड़े चाहते हैं कि इस से सच को लड़खड़ा दें, वह मेरी आयतों (मंत्रों) और जिस चीज से डराया जाये उसे मजाक में उड़ाते हैं।

५७. और उस से बढ़कर जालिम कौन है जिसे उस के रब की आयतों के जरिये नसीहत दी जाये वह फिर भी मुख मोड़े रहे, और जो कुछ उस के हाथों ने आगे भेज रखा है उसे भूल जाये? बेशक हम ने उन के दिलों पर उसकी समझ से पर्दे डाल रखे हैं और उन के कानों में बोझ है, अगरचे तू उन्हें हिदायत की तरफ बुलाता रहे, लेकिन यह कभी भी हिदायत नहीं पायेंगे।

५८. तेरा रब बड़ा बख्शने वाला और रहम करने वाला है, वह अगर उन के अमलों की सजा में पकड़े तो बेशक उन्हें जल्द ही अजाब करे, लेकिन उन के लिए एक वादे का वक़्त मुकर्रर है जिस से वह भागने की कभी जगह नहीं पायेंगे।¹

५९. और ये हैं वह बास्तियाँ जिन्हें हम ने उन के जुल्म के सबब बरबाद कर दिया और उनकी तबाही का एक वक़्त हम ने मुकर्रर कर रखा था।²

وَمَا تُرْسِلُ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ
وَيُجَادِلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِطُوا
بِهِ الْحَقُّ وَيَتَّخِذُوا الْآيَاتِ وَمَا نُذِرُوا هُزُوًا ﴿٥٦﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ فَأَعْرَضَ
عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدْ مَتَّ يَدُهُ إِذَا جَاءَنَا عَلَيَّ
قُلُوبُهُمْ أَكْفَةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَيُؤْتُوا لَهُمْ وَقُرْآنًا
وَإِنْ تَذَعُوهُمْ إِلَى الْهُدَى فَلَنْ يَهْتَدُوا
إِذَا بَدَأْنَا ﴿٥٧﴾

وَرَبُّكَ الْغَفُورُ ذُو الرَّحْمَةِ لَوْ يُؤَاخِذُهم بِمَا
كَسَبُوا الْعَجَل لَهُمُ الْعَذَابُ طَبْلٌ لَهُم مَّقُوعًا
لَنْ يَجِدُوا مِنْ دُونِهِ مَوْجِدًا ﴿٥٨﴾

وَتِلْكَ الْقُرَى أَهْلَكْنَاهُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَعَلْنَا
لِيَهْلِكُهُمْ قُوعًا ﴿٥٩﴾

¹ यानी यह तो बख्शने वाले रब की रहमत है कि वह गुनाह पर तुरन्त पकड़ नहीं करता बल्कि मौका अता करता है, अगर ऐसा न होता तो अपने अमलों के सबब हर इंसान ही अल्लाह के अजाबों के पंजों में जकड़ा रहता, लेकिन यह जरूर है कि जब यह मौका की मुदत खत्म हो जाती है और बरबादी का वह वक़्त आ जाता है जो अल्लाह ने मुकर्रर किया होता है तो भागने का कोई रास्ता और बचाव का कोई तरीका उनके लिए बाकी नहीं रहता। 'मौल' का मतलब है पनाह की जगह, भागने का रास्ता।

² इस से मुराद आद, समूद, हज़रत शुएब और हज़रत लूत बगैरह की क़ौम है जो हिजाज के

६०. और जब मूसा ने अपने नौजवान से कहा कि मैं तो चलता ही रहूँगा यहाँ तक कि दो नदियों के संगम^२ के मुकाम पर पहुँचूँगा चाहे मुझे सालों चलना पड़े।

६१. जब वे दोनों वहाँ पहुँचे जहाँ दोनों नदियों के संगम की जगह थी, वहाँ अपनी मछली भूल गये जिस ने नदी में सुरंग जैसा अपना रास्ता बना लिया।

६२. जब दोनों वहाँ से आगे बढ़े तो मूसा ने अपने नौजवान से कहा कि हमारा नाश्ता दे, हमें तो अपने इस सफ़र से बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ी।

६३. (उस ने) जवाब दिया कि क्या आप ने देखा भी? जब हम पत्थर से टेक लगाकर आराम कर रहे थे वही मैं मछली भूल गया था, हकीकत में शैतान ने मुझे भुला दिया कि मैं आप से इसकी चर्चा करूँ, उस मछली ने एक अजीब तरह से नदी^३ में अपना रास्ता बना लिया।

وَاذْ قَالِ مُوسَى لِقَشِيهِ لَا آتِبُكَ حَتَّىٰ آتِنَا
مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا ﴿٦٠﴾

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنَهُمَا نَسِيَا حُوتَهُمَا
فَاتَّخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا ﴿٦١﴾

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِقَتْلِهِ أُتِيََا عِدَاءَهُمَا
لَقَدْ لَقِينَا مِنْ سَفَرِنَا هَذَا نَصَبًا ﴿٦٢﴾

قَالَ أَرَمِيتَ إِذْ أَوْيَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ
الْحُوتَ نَوْمًا أَنَسِينِيهِ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَن أذْكَرَهُ
وَآتَخَذَ سَبِيلَهُ فِي الْبَحْرِ عَجَبًا ﴿٦٣﴾

इलाक़े के करीब और उन के रास्तों में आवाद थे।

- नौजवान से मुराद हज़रत यूसूअ बिन नून है जो मूसा की मौत के बाद उनके वारिस बने।
- इस जगह का निर्धारण (तअय्युन) किसी सहीह हदीस से नहीं हो सका है फिर भी नजदीक़ी के विना पर इस से मुराद सीनाई के सहरा का दक्षिणी किनारा है जहाँ अक़बा की खाड़ी और स्वेस की खाड़ी दोनों आकर मिलती और लाल सागर में जाकर मिल जाती हैं, दूसरी जगह जिनका बयान मुफ़सिरो ने किया है उन पर किसी तरह से दो सागरों के संगम का क़ौल साबित ही नहीं होता।
- यानी मछली ज़िन्दा होकर समुद्र में चली गयी और उस के लिए अल्लाह तआला ने समुद्र में सुरंग की तरह रास्ता बना दिया। हज़रत यूसूअ ने मछली को समुद्र में जाते और रास्ता बनते हुए देखा, लेकिन हज़रत मूसा को बताना भूल गये, यहाँ तक कि आराम करके वहाँ से फिर सफ़र शुरू किया, उस दिन और उस के बाद रात का सफ़र करके, जब दूसरे दिन हज़रत मूसा को थकान और भूख का एहसास हुआ और अपने नौजवान साथी से कहा कि लाओ नाश्ता कर लें, उसने जवाब दिया, मछली तो जहाँ हम ने पत्थर से टेक लगाकर आराम किया था, वहाँ ज़िन्दा होकर समुद्र में चली गयी थी और वहाँ अजीब तरह से उस ने अपना रास्ता बना

६४. (मूसा ने) कहा यही था जिसकी खोज में हम थे, तो वे वही से अपने कदमों के निशान को ढूँढते हुए वापस लौटे।

६५. फिर हमारे बन्दों में से एक बन्दा¹ को पाया, जिसे हमने अपने पास से खास रहमत² अता कर रखी थी और उसे अपने पास से खास³ इल्म सिखा रखा था।

६६. उससे मूसा ने कहा कि मैं आप का हुकम मानूँ कि आप मुझे उस सच्चे इल्म को सिखा दें जो आप को सिखाया गया है?

६७. उस ने कहा आप हमारे साथ कभी सब्र नहीं कर सकते।

६८. और जिस चीज को आप ने अपने इल्म में न लिया हो उस पर सब्र कर भी कैसे सकते हैं?

قَالَ ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبِغُ ۗ فَارْتَدَّا عَلَىٰ
أَثَرِهِمَا قَصَصًا ﴿٦٤﴾

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَا آتَيْنَاهُ رَحْمَةً
مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنَاهُ مِمَّا كُنَّا عَلِّمًا ﴿٦٥﴾

قَالَ لَهُ مُوسَىٰ هَلْ آتَيْتَكَ عَلَىٰ أَنْ تَعْلَمَ مِنِّي
وَمَا عَلَّمْتَ رُشْدًا ﴿٦٦﴾

قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٦٧﴾

وَكَيفَ تَصْبِرُ عَلَىٰ مَا لَمْ تُحِطْ بِهِ خُبْرًا ﴿٦٨﴾

लिया था, जिसकी मैं आप से चर्चा करना भूल गया और शैतान ने मुझे भुला दिया।

¹ उस बन्दे से मुराद हजरत खिज़्र हैं जैसाकि सहीह हदीसों में वजाहत है। खिज़्र का मतलब हरियाली है, यह एक वार धरती पर बैठे तो वह धरती का टुकड़ा नीचे से हरियाली बनकर लहलहाने लगा, इसी सबब उनका नाम खिज़्र पड़ गया। (सहीह बुखारी, तफसीर सूर: अल-कहफ)

² रहमत से कुछ मुफ़रिसरों ने वे खास उपहार मुराद लिये हैं जो अल्लाह ने अपने उस खास बन्दे को अता किये और ज़्यादातर मुफ़रिसरों ने इस से मुराद नबूअत लिया है।

³ उस से नबूअत के इल्म के सिवाय जिस से हजरत मूसा भी वाकिफ थे, कुछ कायनात से सम्बन्धित (मुताल्लिक) बातों का इल्म है जिसे अल्लाह तआला ने केवल हजरत खिज़्र को अता किया था, हजरत मूसा के पास वह इल्म नहीं था। इस से मतलब निकालते हुए कुछ सूफ़ी (योगी) दावा करते हैं कि अल्लाह तआला कुछ लोगों को जो नबी नहीं होते علم लदी से नवाजता है जो बिना उस्ताद के सिर्फ अल्लाह की रहमत से हासिल होता है और यह पोसीदा इल्म धार्मिक नियमों के उल्टा और खिलाफ होता है, लेकिन यह मतलब इसलिए ठीक नहीं कि हजरत खिज़्र के बारे में तो अल्लाह तआला ने खुद उन को खास इल्म अता करने की वजाहत कर दी है, जबकि किसी दूसरे के लिए ऐसी वजाहत कही नहीं, अगर इसको आम कर दिया जाये तो फिर हर जादूगर इस तरह का दावा कर सकता है, इस सम्प्रदाय (फिर्क) में यह दावे आम हैं, इसलिए ऐसे दावों की कोई हैसियत नहीं।

६९. मूसा ने जवाब दिया कि अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वालों में पायेंगे और किसी बात में आप की नाफरमानी नहीं करूँगा।

७०. (उस ने) कहा कि अगर आप मेरे साथ ही चलने का इस्तेमाल करते हैं तो ध्यान रहे कि किसी चीज के बारे में मुझ से कुछ न पूछना जब तक मैं खुद उस के बारे में न बताऊँ।

७१. फिर वे दोनों चले यहाँ तक कि एक नाव में सवार हुए, (खिज़्र ने) उस के पटरे तोड़ दिये, (मूसा ने) कहा क्या आप उसे तोड़ रहे हैं कि नाव वालों को डूबा दें, आप ने तो बड़ा अनुचित (नामुनासिब) काम किया।

७२. (खिज़्र ने) जवाब दिया कि मैंने तो पहले ही तुझ से कह दिया था कि तू मेरे साथ कभी सब्र न कर सकेगा।

७३. (मूसा ने) जवाब दिया कि मेरी भूल पर मुझे न पकड़िये और मुझे मेरे बारे में परेशानी में न डालिये।^१

७४. फिर दोनों चले यहाँ तक कि एक बालक को पाया, (खिज़्र ने) उसे मार डाला, (मूसा ने) कहा कि क्या आप ने एक पाक रूह को बिना किसी जान के बदले मार डाला? बेशक आप ने तो बड़ी बुरी बात की।

قَالَ سَجِدُنِي إِن شَاءَ اللَّهُ صَابِرًا وَلَا أَعْصِي لَكَ أَمْرًا ﴿٦٩﴾

قَالَ فَإِنِ ابْتَعْتَنِي فَلَا تَسْأَلْنِي عَنْ شَيْءٍ حَتَّىٰ أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ﴿٧٠﴾

فَانطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِينَةِ خَرَقَهَا ۖ قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا ۚ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا ﴿٧١﴾

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا ﴿٧٢﴾

قَالَ لَا تُؤْخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ وَلَا تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عَسْرًا ﴿٧٣﴾

فَانطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا لَقِيَا غُلَامًا فَقَتَلَهُ ۖ قَالَ أَتَتَلَّتْ نَفْسًا رَّكِيَةً ۗ بَعِيرٍ نَّفْسٍ ۗ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُكْرًا ﴿٧٤﴾

^१ हजरत मूसा को चूँकि इस खास इल्म की खबर नहीं थी जिसके बिना पर खिज़्र ने नाव के पटरे तोड़ दिये थे, इसलिए सब्र न कर सके और अपने इल्म और अकल की बिना पर इसे बहुत भयानक काम बताया, इमरा का मायेना (अर्थ) है "बहुत भयानक काम"۔ الداعية العظيمة

^२ यानी मेरे साथ नमी का सुलूक करें, सख्ती का नहीं।

^३ गुलाम से मुराद बालिग नौजवान भी हो सकता है और नाबालिग बच्चा भी।

७५. वह कहने लगे क्या मैंने तुम से नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ रह कर कभी सब्र नहीं कर सकते।

७६. (मूसा ने) जवाब दिया अगर अब इस के बाद मैं आप से किसी चीज के बारे में सवाल करूँ तो बेशक आप मुझे अपने साथ न रखना, बेशक मेरी तरफ से' आप (सीमा) उज्र को पहुँच चुके।

७७. फिर दोनों चले, एक गाँववासियों के पास आकर उन से खाना माँगा, उन्होंने उनकी मेहमान नवाजी से इंकार कर दिया, दोनों ने वहाँ एक दीवार पायी जो गिरना चाहती थी उस ने उसे सीधी कर दिया,^१ (मूसा) कहने लगे अगर आप चाहते तो इस पर मजदूरी ले लेते।

७८. उस ने कहा बस यह जुदाई है मेरे और तेरे बीच, अब मैं तुझे इन बातों की हकीकत भी बताऊँगा जिस पर तुम सब्र न कर सके।^२

७९. नाव तो कुछ गरीबों की थी जो नदी में काम करते थे, मैंने उस में कुछ तोड़-फोड़ करने का इरादा कर लिया, क्योंकि उन के आगे एक राजा था जो हर अच्छी नाव को जबरदस्ती ले लेता था।

قَالَ اَلَمْ اَكُنْ لَكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيعَ
صَبْرًا 75

قَالَ اِنْ سَأَلْتَكَ عَنْ شَيْءٍ مِّنْ بَعْدِهَا فَلَا
تُصِيبْنِي ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي عُذْرًا 76

فَانطَلَقَا حَتَّىٰ اِذَا اَتَيَا اَهْلًا قَرْيَةً اِسْتَطَعَمَا
اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُصَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا
جِدَارًا يُرِيدُ اَنْ يَنْقُضَ فَاَقَامَهُمَا قَال
لَوْ شِئْتَ لَتَمَدَدْت عَلَيْهِمْ جِجْرًا 77

قَالَ هٰذَا فِرَاقِي بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۚ سَأَتَّبِعُكَ
بِئَاوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِيعْ عَلَيْهِمْ صَبْرًا 78

اَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسْكِينٍ يَعْمَلُونَ فِي
الْبَحْرِ فَاَرَدْتُ اَنْ اَعْيِبَهَا وَاكَانَ وِرَاءَهُمْ
صَلْبُكَ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا 79

^१ यानी अगर अब सवाल करूँ तो अपने साथ रखने की खुशनसीबी से मुझे महरूम कर दें, मुझे कोई शिकायत नहीं होगी, इसलिए कि आप के पास उचित कारण (सबब) होगा।

^२ हजरत खिज़्र ने उस दीवार को हाथ लगाया और चमत्कारिक रूप (मोजिज़ाना तौर) से वह सीधी हो गयी, जैसाकि सहीह बुखारी के क़ौल से बाज़ेह है।

^३ लेकिन बिछड़ने से पहले हजरत खिज़्र ने तीनों वाक़ेआत की हकीकत से उन्हें आगाह और बाख़बर करना जरूरी समझा ताकि मूसा किसी शक के शिकार न हो जायें, और वह यह समझ ले कि नबूअत का इल्म और है जिससे उन्हें सुशोभित (मुजय्यन) किया गया है, और कुछ उत्पत्ति के विषय का इल्म और है जो अल्लाह की मर्जी और इल्म के ताबे है, जिसका इल्म हजरत खिज़्र को दिया गया है, और उसी के ऐतबार से उन्होंने ऐसे काम किये जो दीनी ऐतबार से अच्छे नहीं थे, इसीलिए हजरत मूसा उचित रूप (बजा तौर) से उन पर मौन नहीं रह सके थे।

८०. और उस नौजवान के माता-पिता ईमान वाले थे, हमें यह डर हुआ कि कहीं यह उन्हें अपनी सरकशी और वेदीनी से मजबूर और व्याकुल (परेशान) न कर दे।

८१. इसलिए हम ने चाहा कि उन्हें उनका रव उस के बदले इस से बेहतर पाक और उस से ज्यादा प्यारा और महबूब बच्चा अता कर दे।

८२. और दीवार का क्रिसा यह है कि उस नगर में दो यतीम लड़के हैं जिनका खजाना उनकी इस दीवार के नीचे गड़ा है, उन के बाप बहुत ही नेक इंसान थे, तो तेरा रव चाहता था कि ये दोनों यतीम अपनी जवानी की उम्र में जाकर अपना यह खजाना तेरे रव की रहमत और मेहरबानी से निकाल लें, मैंने अपने इरादे (और ख्वाहिश) से कोई काम नहीं किया, यह हकीकत थी उन वाक़ेआत की जिन पर आप सब न कर सके।

८३. और आप से जुल्करनैन के वाक़ेआ के बारे में यह लोग पूछ रहे हैं,¹ (आप) कह दीजिए कि मैं उन का थोड़ा-सा हाल तुम्हें पढ़ कर सुनाता हूँ।

८४. हम ने धरती पर उसे ताक़त दी थी और उसे हर चीज़² के साधन भी अता कर दिये थे।

८५. वह एक रास्ता के पीछे लगा।

وَأَمَّا الْعُلَمَاءُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنِينَ
فَخَشِينَا أَنْ يُرْجِعَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ﴿٨٠﴾

فَارَدْنَا أَنْ نُبَدِّلَهُمَا رَبِّهُمَا خَيْرًا مِنْهُ ذَكَوَةً
وَأَقْرَبَ رَحْمًا ﴿٨١﴾

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي الْمَدِينَةِ
وَكَانَ بَيْنَهُمَا كَنْزُ خَيْرٍ وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا فَأَرَادَ
رَبُّكَ أَنْ نَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيُخْرِجَا كَنْزَهُمَا
رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ذَٰلِكَ
تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْقَرْنَيْنِ ۗ قُلْ سَأَتْلُوا
عَلَيْكُمْ قِصَّةً ذَكَرْنَا ﴿٨٣﴾

إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ
كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾

فَاتَّبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾

¹ यह मूर्तिपूजकों के तीसरे सवाल का जवाब है जो यहूदियों के कहने पर उन्होंने नबी ﷺ से किये थे।

² ۞ का असली मतलब रस्सी है, इसका इस्तेमाल ऐसे साधन (वसायेल) और माध्यम (ज़रिया) के लिये होता है जो मक़सद हासिल के लिये इस्तेमाल किया जाता है, इस आधार पर ۞ का मतलब है कि हम ने उसे ऐसे साधन और माध्यम मुहय्या किये, जिन से काम लेकर उस ने जीत हासिल की, दुरमनों का घमंड मिट्टी में मिलाया, जालिम हाकिमों का नाश किया।

८६. यहाँ तक कि सूरज डूबने के मुकाम तक पहुँच गया और उसे एक दलदल के स्रोत (चश्मे) में डूबते हुए पाया और उस स्रोत की जगह पर एक कौम को भी पाया, हम ने कह दिया है जुल्करनैन! तू उन्हें सजा दे या उन के बारे में तू कोई अच्छा तरीका निकाले।

८७. उसने कहा कि जो जुल्म करेगा उसे तो हम भी अब सजा देंगे, फिर वह अपने रव की तरफ लौटाया जायेगा और वह उसे सख्त अजाब देगा।

८८. लेकिन जो ईमान लाये और नेक अमल करे उस के लिए बदले में भलाई है, और हम उसे अपने काम में भी आसानी का हुक्म देंगे।

८९. फिर वह दूसरे रास्ते की तरफ लगा।

९०. यहाँ तक कि जब वह सूरज निकलने की जगह पर पहुँचा तो उसे एक ऐसी कौम पर निकलते पाया कि उन के लिए हम ने उस से कोई पर्दा और आड़ नहीं बनायी।

९१. वाक्रेआ ऐसा ही है, हम ने उसके आस-पास के कुल समाचारों को घेर रखा है।

९२. वह फिर एक दूसरे रास्ते की तरफ लगा।

९३. यहाँ तक कि जब दो दीवारों के बीच पहुँचा उन दोनों के उस तरफ एक ऐसी कौम को पाया जो बात समझने के करीब भी न थी।

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَرْغُبُ
فِي عَيْنٍ حَيِثُهَا وَوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا قُلْنَا
يَا الْقُرْنَيْنِ إِنَّمَا أَنْتَ تُعَذِّبُ وَإِنَّمَا تَتَّخِذُ
فِيهِمْ حُسْنًا ۝۸۶

قَالَ إِنَّمَا مِنْ قَلَمٍ مَسُوفٍ تُعَذِّبُهُ ثُمَّ يُرَدُّ
إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نَكِرًا ۝۸۷

وَإِنَّمَا مِنْ أَمْنٍ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءٌ
إِلْحُسُقٍ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ۝۸۸

ثُمَّ اتَّخَذَ سَبِيلًا ۝۸۹

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْرِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ
عَلَىٰ قَوْمٍ لَمْ نَجْعَلْ لَهُمْ مِنْ دُونِهَا سِتْرًا ۝۹۰

كَذَلِكَ وَوَقَدْ أَحْطَيْنَا بِمَا لَكَ يُؤْخَبُ ۝۹۱

ثُمَّ اتَّخَذَ سَبِيلًا ۝۹۲

حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِنْ دُونِهِمَا
قَوْمًا آتْرَافًا يَتَّقُونَ قَوْلًا ۝۹۳

1 यानी ऐसी जगह पर पहुँच गया जो पूरब दिशा की आखिरी आवादी थी, जहाँ उसने ऐसी कौम देखा जो मकानों में निवास करने के बजाय मैदानों और सहाराओं में निवास किये हुए, निर्बस्त्र थी, यह मतलब है उन के और सूर्य के बीच पर्दा नहीं था, सूर्य उन के नंगे जिस्मों पर निकलता था।

2 यानी जुल्करनैन के बारे में हम ने जो बयान किया है वह इसी तरह है कि पहले वह पश्चिम की आखिरी सीमा तक फिर पूरब की आखिरी सीमा तक पहुँचा और हमें उसकी सब सलाहियतों, संसाधनों (अस्बाब) और दूसरी बातों का पूरा इन्म है।

१४. (उन्होंने) कहा हे जुल्करनैन ! याजूज और माजूज इस देश में बड़े फसाद फैलाते हैं! तो क्या हम आप के लिए कुछ माल जमा कर दें? (इस शर्त पर कि) आप हमारे और उन के बीच कोई दीवार बना दें।

१५. उस ने जवाब दिया कि मेरे बस में मेरे रब ने जो अता कर रखा है वही बेहतर है, तुम केवल अपनी ताकत और कूबत से मेरी मदद करो, तुम्हारे और उन के बीच मैं मजबूत दीवार बना देता हूँ।

१६. मुझे लोहे की चादरें ला दो, यहाँ तक कि जब उन दो पहाड़ों के बीच दीवार तैयार कर दी तो हुक्म दिया कि फूँको (यानी तेज आग जलाओ) उस वक़्त तक कि लोहे की इन चादरों को बिल्कुल आग कर दिया, तो कहा मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ तँधा डाल दूँ।

१७. फिर न तो उन में उस दीवार पर चढ़ने की ताकत थी और न उस में कोई छेद कर सकते थे।

१८. कहा कि यह केवल मेरे रब की रहमत है, लेकिन जब मेरे रब का वादा आयेगा तो उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा। बेशक मेरे रब का वादा सच्चा है।

१९. और उस दिन हम उन्हें आपस में एक-दूसरे में गुडमुड होते हुए छोड़ देंगे और नर्सिधा (सुर) फूँक दिया जायेगा, फिर सब को एक साथ हम जमा कर लेंगे।

قَالُوا يَا الْقَارِئِينَ إِنَّا بَأْسُنَا وَنَحْنُ نَقُصُّهُمْ
فِي الْأَرْضِ قَهْلًا نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَنْ تَجْعَلَ
بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سِدًّا ﴿٩٤﴾

قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ
أَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ﴿٩٥﴾

أَتُونِي زُبَرَ الْحَبِيدِ حَتَّىٰ إِذَا سَاوَىٰ بَيْنَ
الصَّدَقَيْنِ قَالَ انْفُخُوا حَتَّىٰ إِذَا جَعَلَهُ
نَارًا قَالَ أْتُونِي أُفْرِغْ عَلَيْهِ قَطْرًا ﴿٩٦﴾

فَمَا اسْطَاعُوا أَنْ يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا
لَهُ نَقَبًا ﴿٩٧﴾

قَالَ هَذَا رَحْمَةٌ مِنِّي ۖ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ رَبِّي
جَعَلَهُ دَكَّاءَ ۖ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ﴿٩٨﴾

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَمُوجُ فِي بَعْضٍ
وَلَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَجَمَعْنَاهُمْ جَمْعًا ﴿٩٩﴾

1 याजूज और माजूज दो सम्प्रदाय (क्रौम) हैं और सहीह हदीस के बिना पर इंसानों में से ही है, और उन की तादाद दूसरे मानव जाति के मुकाबले में अधिक होगी और उन्ही से नरक ज्यादा भरेगा। (सहीह बुखारी)

१००. और उस दिन हम नरक को (भी) काफिरों के सामने ला खड़ा कर देंगे।

وَعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِلْكَافِرِينَ عَرْضًا (100)

१०१. जिन की आंखें मेरी याद से पर्दे में थीं और (सच बात) सुन भी नहीं सकते थे।

الَّذِينَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِي غِطَاءٍ عَنْ ذِكْرِي
وَكَانُوا لَا يَسْمَعُونَ سَمْعًا (101)

१०२. क्या काफिर यह सोचें बैठे हैं कि मेरे सिवाय वे मेरे बन्दों को अपना हिनायती घना लेंगे? (सुनो) हम ने तो उन काफिरों की मेहमानी के लिए नरक को तैयार कर रखा है।

أَفَحَسِبَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ يَتَّخِذُوا عِبَادِي مِنْ
دُونِ أَوْلِيَاءِنَا إِذَا تَعَدَّيْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ
ثُبْرًا (102)

१०३. कह दीजिए कि अगर (तुम कहो तो) मैं तुम्हें बता दूँ कि अपने अमल के सबसे सबसे ज्यादा नुकसान में कौन है?

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا (103)

१०४. वे हैं कि जिनकी दुनियावी जिन्दगी की सभी कोशिश बेकार हो गई और वे इसी भ्रम में रहे कि वे बहुत अच्छे काम कर रहे हैं।

الَّذِينَ ضَلَّ سَعِيَّهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ
يَحْسِبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا (104)

१०५. यही वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों से और उस से मिलने से इंकार किया, इसलिए उन के सारे अमल बेकार हो गये, फिर क्रयामत के दिन हम उनका कोई भार मुक़र्रर न करेंगे।

أُولَئِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ وَلِقَائِهِ
فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا تُقِيمُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
وَرُؤَا (105)

१०६. हकीकत यह है कि उनका बदला नरक है, क्योंकि उन्होंने कुफ़्र किया और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया।

ذَلِكَ جَزَاءُ الَّذِينَ جَاءَهُمْ بِمَا كَفَرُوا وَاتَّخَذُوا آيَاتِي
وَرُسُلِي هُزُؤًا (106)

१०७. जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम भी किये, बेशक उन के लिए फिरदौस (जन्नत का सब से ऊँचा मुक़ाम) के वागों में स्वागत है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَانَتْ لَهُمْ
جَنَّاتُ الْبُورْدِ دَرْسٍ نَزْلًا (107)

1 जन्नत का सब से बड़ा दर्जा है। इसलिए नबी ﷺ ने फ़रमाया कि जब भी तुम अल्साह से जन्नत का सवाल करो तो अल-फ़िरदौस (सर्वोच्च) का सवाल करो, इसलिए कि वह जन्नत का सब से बड़ा दर्जा है और वही से जन्नत की नदियों का उदगम (शुरूआ) है। (सहीह बुख़ारी, किताबुत तौहीद, बाबु व कान अबुह अलल माए)

१०८. जहाँ वे हमेशा रहेंगे, जिस मकाम को बदलने का कभी भी उनका इरादा ही न होगा।

خَلِدِينَ فِيهَا لَا يَبْغُونَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾

१०९. कह दीजिए कि अगर मेरे रब की बातों को लिखने के लिए समुद्र स्याही बन जाये तो वह भी मेरे रब की बातों के खत्म होने से पहले ही खत्म हो जायेगा, चाहे हम उसी जैसा दूसरा भी उसकी मदद के लिए ले आयें।

قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَكُنْتُ رَبِّي لَنَفَذَ الْبَحْرَ قَبْلَ أَنْ تَنْفَذَ كَلِمَتُ رَبِّي وَلَوْ جُنُتًا بِمِثْلِهِ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾

११०. आप कह दीजिए कि मैं तो तुम जैसा ही एक इंसान हूँ, (हाँ) मेरी तरफ वही (प्रकाशना) की जाती है कि सब का मावूद सिर्फ एक ही मावूद है, तो जिसे भी अपने रब से मिलने की उम्मीद हो उसे चाहिए कि नेकी के काम करे और अपने रब की इबादत में किसी को भी शरीक न करे।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ رَبِّهِ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهِ أَحَدًا ﴿١١٠﴾

सूरतु मरियम-१९

سُورَةُ الْمَرْيَمِ

सूर: मरियम* मक्के में उतरी और इस में अट्ठानवे आयतें हैं और छः रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

१. नेक काम वह है जो सुन्नत के ऐतबार से हो, यानी जो अपने रब से मुलाकात का यकीन रखता हो उसे चाहिए कि हर अमल नबी ﷺ की सुन्नत के मुताबिक करे, और दूसरे यह कि अल्लाह की इबादत में किसी दूसरे को साझीदार न ठहराये, इसलिए कि धर्म में नई बातें मिलाना और मूर्तिपूजा दोनों ही अमलों के बेकार होने का सबब हैं, अल्लाह तआला इन दोनों से हर मुसलमान को महफूज रखे।

* हब्शा की हिजरत के किस्से में बताया गया है कि इथोपिया (हब्शा) के राजा नजाशी और उस के दरबारी और मंत्रियों (बजीरों) के सामने जब सूर: मरियम के शुरूआती हिस्से को हजरत जाफर बिन अबी तालिब ने सुनाया तो उसे सुनकर उन सभी की दाढ़ियाँ आसूओं से भीग गयीं, और नजाशी ने कहा कि यह कुरआन और हजरत ईसा जो आये थे, सब एक ही रौबनी की किरणें हैं। (फतहल कदीर)

१. काफ-हा-या-ऐन-स्वाद-

२. यह है तेरे रब की उस रहमत का बयान, जो उसने अपने बन्दे ज़करिया' पर की थी।

३. जब कि उस ने अपने रब से चुपके-चुपके दुआ की थी।^१

४. कहा कि हे मेरे रब! मेरी हड्डियाँ कमजोर हो गयी हैं और सिर बुढ़ापे के सबब भड़क उठा है, लेकिन मैं कभी भी तुझ से दुआ करके महरूम नहीं रहा।

५. और मुझे अपने (मरने के) वाद अपने करीबी रिस्तेदारों का डर है, मेरी बीबी भी वाझ है, लेकिन तू मुझे अपनी तरफ से वारिस अता कर।

६. जो मेरा भी वारिस हो और याकूब के वंश का भी वारिस, और हे मेरे रब! तू उसे मकबूल बन्दा बना ले।

७. हे ज़करिया! हम तुझे एक लड़के की खुशखबरी देते हैं जिसका नाम यहया है, हम ने उससे पहले इसका हमनाम भी किसी को नहीं किया।

८. (ज़करिया) कहने लगे मेरे रब! मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा, मेरी पत्नी वाझ और मैं खुद बुढ़ापे की बहुत कमजोर हालत को पहुँच चुका हूँ।^२

كَهَيْعَصَ ①

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدُكَ ذَكَرْتَهَا ②

إِذْ نَادَى رَبَّهُ نِدَاءً خَفِيًّا ③

قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّي وَاسْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَمْ أَكُنْ بِدُعَائِكَ رَبِّ شَقِيًّا ④

وَإِنِّي خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَرَائِي وَكَانَتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا فَهَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا ⑤

يَرْتَضِي وَيَرِثُ مِنْ آلِ يَعْقُوبَ وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ⑥

يُذَكِّرُنَا إِنَّا لِلَّهِ أَشْكُرٌ لَمْ نَجْعَلْ لَهُ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا ⑦

قَالَ رَبِّ إِنِّي يَكُونُ فِي عَلْمِي ذَكَرْتِ امْرَأَتِي عَاقِرًا وَقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا ⑧

^१ हज़रत ज़करिया इसाईल के वंश में से नबी है, यह बड़ई थे और यही काम उन की आमदनी का ज़रिया था। (सहीह मुस्लिम, वावु मिन फ़ज़ाएले ज़करिया)

^२ चुपके-चुपके दुआयें इसलिए की कि एक तो यह अल्लाह को ज़्यादा प्यारा है, क्योंकि इस में गिड़गिड़ाना, ध्यान, विनय (आजिजी) और नमी ज़्यादा होती है, दूसरे इसलिए कि कमजोर अकल वाले न कहे कि यह बुढ़ा अव बुढ़ापे में औलाद मांग रहा है, जबकि औलाद के सभी जाहिरी उम्मीदें ख़तम हो चुकी हैं।

^३ عاتر उस औरत को भी कहते हैं, जो अपने बुढ़ापे के सबब जनने की सलाहियत से महरूम हो चुकी हो और शुरू से ही वाझ को भी कहते हैं, यहाँ यह दूसरे ही मतलब में है।

९. हुक्म हुआ कि (वादा) इसी तरह हो चुका, तेरे रब ने कह दिया है कि मुझ पर तो यह बिल्कुल आसान है और तू खुद जबकि कुछ न था मैं तुझे पैदा कर चुका हूँ।

१०. कहने लगे हे मेरे रब ! मेरे लिए कोई निशानी बना दे, हुक्म हुआ कि तेरे लिए निशानी यह है कि सेहतमंद होने के वावजूद भी तू तीन रातों तक किसी इंसान से बोल न सकेगा।

११. अब ज़करिया अपने कमरे (हुजरे) से निकल कर अपनी क़ौम के पास आकर उन्हें इशारा करते हैं कि तुम सुबह और शाम अल्लाह की पाकीज़गी बयान करो।

१२ हे यहया! (मेरी) किताब को मज़वूती से धाम ले, और हम ने उसें बचपन ही से इल्म अता किया।

१३. और अपने पास से दया (रहम) और पाकीज़ी भी वह परहेज़गार (संत) इंसान था।

१४ और अपने माता-पिता के साथ नेक था, वह सख्त और गुनहगार न था।

१५. उस पर सलामती है जिस दिन उस ने जन्म लिया और जिस दिन वह मरे, और जिस दिन वह जिन्दा करके उठाया जायेगा।¹

१६. इस किताब में मरियम के किस्से भी बयान कर, जबकि वह अपने परिवार के लोगों से अलग होकर पूरब की तरफ आयी।

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىٰ هَيْئَةٍ

وَقَدْ خَلَقْتَنكَ مِن قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا ۙ

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِي آيَةً ۗ قَالَ آيَاتُكَ أَلَّا

تُكَلِّمَ النَّاسَ لَكَ لِيَالٍ سَيِّئًا ۙ

فَخَرَجَ عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنَ الْحَوَابِ فَأَوْحَىٰ إِلَيْهِمْ

أَن سَبِّحُوا بُكْرَةً وَعَشِيًّا ۙ

يُخَيِّرُ حُدُودَ الْكِتَابِ بِعُذْرَةٍ أَوْ نَذِيرَةٍ

الْحُكْمَ صَبِيًّا ۙ

وَحَسَنًا مِّن لَّدُنَّا وَذَكْرًا ۗ وَكَانَ تَوَّابًا ۙ

وَابْرَأُوا إِلَٰهِيكُمْ وَلَمْ يَكُن جَنَابًا عَظِيمًا ۙ

وَسَلَّمَ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوتُ وَيَوْمَ يُرْجَىٰ

يُجْعَثُ حَيًّا ۙ

وَإِذْ كَرَفِي الْكِتَابِ مَرْيَمَ إِذِ اتَّخَذَتْ

مِن أَوْلِيَٰهَا مَكَانًا شَرْوِيًّا ۙ

¹ तीन मौके इंसान के लिए बहुत डरावने होते हैं १- जब इंसान माँ के गर्भ से बाहर आता है, २- जब मौत का पत्र उसे अपनी पकड़ में लेता है, ३- जब उसे कब्र से जिन्दा करके उठाया जायेगा तो वह अपने को मैदान हथ्र की भयानकता में घिरा हुआ पायेगा। अल्लाह तआला ने फरमाया इन तीनों जगहों पर उस के लिये हमारी तरफ से हिफाज़त और सुकून है।

१७. और उन लोगों की तरफ से पर्दा कर लिया, फिर हम ने उस के पास अपनी रूह (जिब्रील عليه السلام) को भेजा तो वह उस के सामने पूरा इंसान बनकर जाहिर हुआ।

१८. यह कहने लगी मैं तुझ से रहमान (दयालु) की पनाह माँगती हूँ, अगर तू कुछ भी अल्लाह से डरने वाला है।

१९. (उसने) कहा कि मैं अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूँ, तुझे एक पाक लड़का देने आया हूँ।

२०. कहने लगी कि भला मेरे यहाँ लड़का कैसे हो सकता है? मुझे तो किसी मर्द का हाथ तक मस नहीं हुआ और न मैं वदकार हूँ।

२१. उस ने कहा बात तो यही है, (लेकिन) तेरे रब का हुक्म है कि वह मुझ पर बहुत आसान है, हम तो उसे लोगों के लिए एक निशानी बना देंगे^१ और अपनी खास रहमत,^२ यह तो एक निर्धारित (मुकरर) बात है।

२२. फिर वह गर्भवती (हामिला) हो गयी और इसी वजह से वह एकदूस होकर एक दूर जगह पर चली गयी।

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُونِهِمْ حِجَابًا فَأَرْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا ﴿١٧﴾

قَالَتْ إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ
إِنْ كُنْتَ نَجِيًّا ﴿١٨﴾

قَالَ إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ لِأَهَبَ لَكِ غُلَامًا
زَكِيًّا ﴿١٩﴾

قَالَتْ أَنَّى يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ
وَلَمْ أَكُ بَغِيًّا ﴿٢٠﴾

قَالَ كَذَلِكَ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلِيمٌ هَدِيدٌ ۖ
أَيُّةٌ لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةٌ مِنَّا ۚ وَكَانَ أَمْرًا
مَّقْضِيًّا ﴿٢١﴾

فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهِ مَكَانًا قَصِيًّا ﴿٢٢﴾

^१ यानी मैं आम साधनों (वसायलों) के लिए मजबूर नहीं हूँ, मेरे लिए यह बिल्कुल आसान है और हम उसे अपने कुदरत की एक निशानी बनाना चाहते हैं, इस से पहले हम ने तुम्हारे बाप आदम को बिना औरत और मर्द के पैदा किया और तुम्हारी माँ हव्वा को बिना औरत के केवल मर्द से, और सभी मखलूक के जानदारों को औरत और मर्द के मिलाप से जन्म दिया, और अब ईसा को जन्म देकर चौथी हालत में भी पैदा करके अपनी कुदरत का प्रदर्शन (मुजाहिहा) करना चाहते हैं और वह है केवल औरत के गर्भ से बिना मर्द के पैदा कर देना, हम खिलकत के चारों रूपों पर कुदरत रखते हैं।

^२ इस से मुराद नुबूत है, जो अल्लाह की खास रहमत है और उन के लिए भी जो इस नुबूत पर ईमान लायेंगे।

२३. फिर उसे प्रसव पीड़ा (दर्द जिह) एक खजूर के पेड़ के तने के नीचे ले आयी, और मुंह से निकल गया कि हाय! मैं इस से पहले मर गयी होती और लोगों की याद से भूली बिस्ती हो जाती।

२४. इतने में उसे नीचे से ही आवाज दी कि मायूस न हो, तेरे रब ने तेरे पांव के नीचे एक चरमा जारी कर दिया है।

२५. और उस खजूर के तने को अपनी तरफ हिला, यह तेरे सामने ताजा पकी खजूरें गिरा देगा।

२६. अब बेखौफ होकर खा पी और आंखें ठंडी रख, अगर तुझे कोई इंसान दिखायी दे तो कह देना कि मैंने अल्लाह रहमान के नाम का रोजा रखा है, मैं आज किसी इंसान से बात न करूंगी।

२७. अब (हजरत ईसा) को लिए हुए वह अपने कौम में आयी, सब ने कहा कि मरियम तूने बहुत कुकर्म (बुरा काम) किया।

२८. हे हारून की वहन! न तो तेरा वाप बुरा आदमी था न तेरी मां वदकार थी।

२९. (मरियम ने) अपने बच्चे की तरफ इशारा किया, सब कहने लगे कि लो भला हम गोद के बच्चे से बातें कैसे करें?

३०. (बच्चा) बोल उठा कि मैं अल्लाह तआला का वंदा हूँ, उस ने मुझे किताब अता की है और मुझे अपना दूत (पैगम्बर) बनाया है।

فَأَجَاءَهَا الْمَخَاضُ إِلَى جِوَارِحِ النَّخْلَةِ قَالَتْ
يَا لَيْتَنِي مِتُّ قَبْلَ هَذَا وَكُنْتُ نَسِيًا مَنْسِيًا ۝٢٣

فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا أَرَكَ تَعْرَضِي قَدْ جَعَلَ رَبِّي
تَحْتِكَ سَرِيًّا ۝٢٤

وَهَزَى إِلَيْكَ بِجِدْعِ النَّخْلَةِ نُتُوطًا
عَلَيْكَ رُطْبًا جَنِيًّا ۝٢٥

لُكْلُكٌ وَالسَّرِي وَالسَّرِي وَوَقَى عَيْنًا وَأَمَّا كَرِيمٌ مِنَ الْبَشَرِ
أَحَدًا فَقَوْلِي إِنِّي نَذَرْتُ لِلرَّحْمَنِ صَوْمًا فَلَنْ
أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ۝٢٦

فَاتَتْ بِهِ قَوْمَهَا تَحْمِيلًا قَالُوا يَا مَرْيَمُ
لَقَدْ جِئْتِ كَيْفًا قَوْمًا ۝٢٧

يَا لَيْتَ هَرُونَ مَا كَانَ أَبُوكَ أَمْرًا سَوْءًا
وَمَا كَانَتْ أُمَّكَ يَغِيًّا ۝٢٨

فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ
فِي الْبَيْتِ صَبِيًّا ۝٢٩

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ آتَانِيَ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي
نَبِيًّا ۝٣٠

¹ हारून से मुराद मुमकिन है उनका कोई भाई हो, यह भी मुमकिन है कि हारून से मुराद हारून रसूल (मूसा के भाई) ही हों, और अरबों की तरह उनका रिश्ता हारून की तरफ कर दिया।

३१. और उस ने मुझे सुबारक बनाया है जहाँ भी मैं रहूँ, और उसने मुझे नमाज़ और जकात का हुक्म दिया है, जब तक भी मैं ज़िन्दा रहूँ।

وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصِيَنِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۝٣١

३२. और उस ने मुझे अपनी माँ का सेवक बनाया है, और मुझे सख्त और बदबख्त नहीं किया।

وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ۝٣٢

३३. और मुझ पर मेरे जन्म के दिन और मेरी मौत के दिन, और जिस दिन कि मैं दोबारा ज़िन्दा खड़ा किया जाऊँगा, सलाम ही सलाम है।

وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ۝٣٣

३४. यह है सच्ची कहानी ईसा इब्ने मरियम की, यही है वह सच बात जिस में लोग शक और शुब्हा में लिप्त (मुब्तिला) हैं।

ذَٰلِكَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِي فِيهِ يَمْتَرُونَ ۝٣٤

३५. अल्लाह के लिए औलाद का होना जायेज नहीं वह तो बहुत पाक है, वह तो किसी काम के करने का इरादा करता है तो उसे कहता है कि हो जा, वह उसी वक्त हो जाता है।

مَا كَانَ يَلْمُؤَنَ أَنْ يَتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ مَّسْخُتَةً ۖ إِذَا قُضِيَ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝٣٥

३६. और मेरा और तुम सब का रब अल्लाह तआला ही है, तुम सब उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है।

وَلَنُؤَيِّنَنَّكُمْ قَاعِبُدُوهُ ۗ هٰذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۝٣٦

३७. फिर (ये) गुट आपस में इख्तिलाफ करने लगे, लेकिन काफिरों के लिए (बैल) दुख है एक बड़े दिन के आ जाने से।

فَلتَخَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝٣٧

१ यहाँ الاحزاب से मुराद अहले किताब के गुट और ख़ुद इसाईयों के गुट हैं जिन्होंने हज़रत ईसा के बारे में आपस में इख्तिलाफ किया। यहूदियों ने कहा कि वह जादूगर और बदकारी से जन्मा लड़का है यानी यूसुफ बढई के बेटे हैं, इसाईयों के प्रोटेस्टेन्ट गुट ने कहा कि वह अल्लाह के बेटे हैं, कैथोलिक गुट ने कहा वह तीन मावूदों में से तीसरे हैं, और तीसरे आर्थोडक्स गुट ने कहा वह भावूद है। इस तरहन यहूदियों ने निन्दा (हकीर) और जलील किया और इसाईयों ने बहुत गुलू से काम लिया। (ऐसरूतफ़ासीर और फ़तहुल क़दीर)

३८. क्या खूब देखने सुनने वाले होंगे उस दिन जबकि हमारे सामने हाज़िर होंगे, लेकिन आज तो ये ज़ालिम लोग खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

३९. और तू उन्हें इस दुख और मायूसी के दिन का डर सुना दे जबकि काम अंजाम को पहुँचा दिया जायेगा, और ये लोग गफलत और बेईमानी में ही रह जायेंगे।

४०. बेशक धरती के और धरती के रहने वालों के बारिस हम ही होंगे, और सब लोग हमारी तरफ लौटाकर लाये जायेंगे।

४१. इस किताब में इब्राहीम (की कहानी) का बयान कर, बेशक वह बहुत सच्चे पैगम्बर (ईशदूत) थे।

४२. जबकि उस ने अपने पिता से कहा के हे पिता! आप उनकी इबादत क्यों कर रहे हैं जो न सुन सकें न देखें न आप को कुछ फ़ायदेवा पहुँचा सकें?

४३. हे (मेरे प्यारे) पिता! (आप देखिए) मेरे पास वह इल्म आया है, जो आप के पास आया ही नहीं, तो आप मेरी ही मान लीजिए मैं बिल्कुल सीधे रास्ते की तरफ आप का पथ-प्रदर्शन (रहनुमाई) करूँगा।

४४. मेरे पिता! आप शैतान की इबादत करने से रुक जायें, शैतान तो रहम और करम करने वाले अल्लाह की बहुत नाफरमानी करने वाला है।

४५. हे पिता! मुझे डर लग रहा है कि कहीं आप पर अल्लाह का कोई अज़ाब न आ पड़े कि आप शैतान के दोस्त बन जायें।

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ يَوْمَ يَأْتُوتُنَّا لَكِنِ الظَّالِمُونَ
الْيَوْمَ فِي صَلْبٍ مَّعِينٍ ③⑧

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَصْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ وَهُمْ
فِي غَفْلَةٍ وَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ③⑨

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَحْنُ عَلَيْهَا
وَالْيَوْمَ نَبْشُرُكُمْ ④①

وَأَذِّنْ فِي الْكُتُبِ رُوحِيكُمْ
إِنَّكَ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ④②

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ
وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِي عَنْكَ شَيْئًا ④③

يَا أَبَتِ إِنِّي قَدْ جَاءَنِي مِنَ الْعُلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ
فَاتَّبِعْنِي أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ④④

يَا أَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطَانَ إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ
لِلرَّحْمَنِ عَصِيًّا ④⑤

يَا أَبَتِ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يَمَسَّكَ عَذَابٌ مِنَ الرَّحْمَنِ
فَتَكُونَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا ④⑥

४६. (उस ने) जवाब दिया कि हे इब्राहीम! क्या तू हमारे माबूदों से मुंह फेर रहा है, (सुन) अगर तू न रूका तो मैं तुझे पत्थरों से मार डालूंगा, जा एक लम्बी मुद्दत तक मुझ से अलग रह।

४७. कहा अच्छा तूम पर सलाम हो, मैं तो अपने रब से तुम्हारे लिए भात्री की दुआ करता रहूंगा^२ वह मुझ पर बहुत मेहरबानी कर रहा है।

४८. और मैं तो तुम्हें भी और जिन-जिन को तुम अल्लाह के सिवाय पुकारते हो उन्हें भी (सब को) छोड़ रहा हूँ, केवल अपने रब को पुकारता रहूंगा, मुझे यकीन है कि मैं अपने रब से दुआ करने में नाकाम नहीं हूँगा।

४९. जब (इब्राहीम) उन सब को और अल्लाह के सिवाय उन के सब माबूदों को छोड़ चुके तो हम ने उन्हें इसहाक और याकूब अता किये और हर एक को नबी बना दिया।

५०. और उन सब को हम ने अपनी बहुत-ती रहमत अता की, और हम ने उन के सच्चे वादे को बलन्द दर्जा कर दिया।^३

قَالَ أَرَأَيْبُ أَنْتَ عَنِ الْعَبِيدِ يَا إِبْرَاهِيمُ ۝

كَلِمًا لَمْ تَكُنْ لَكَ جَمَلًا وَأَهْجُرُنِي مَرِيًّا ۝ (46)

قَالَ سَلَامٌ عَلَيْكَ ۝ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّي ۝

إِنَّهُ كَانَ بِي حَفِيًّا ۝ (47)

وَأَعِزَّنَا لَهُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَأَدْعُوا

رَبِّي لَعَلِّي إِلَّا الْكُفْرَ بِدُعَاءِ رَبِّي سَجِيًّا ۝ (48)

قَلِيلًا مَّا نَعْتَزِلُ لَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۝

وَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۝ كُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا ۝ (49)

وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِنْ رَحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ

صِدْقٍ عَلَيَّا ۝ (50)

^१ यह सलाम एहतेराम के रूप में नहीं है जो एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को करता है, बल्कि यह बात खत्म करने का इजहार है। जैसे :

﴿وَإِنَّا خَاطَبْنَهُمُ الْجَاهِلُونَ قَالُوا سَلَامًا﴾

..जब बेवकूफ लोग उन से बातें करते हैं तो वह कह देते हैं कि सलाम है। (सूर: अल-फुरकान-६३)

में ईमानवालों और अल्लाह के बन्दों का तरीका बताया गया है।

^२ यह उस वक़्त कहा था जब हजरत इब्राहीम को मूर्तिपूजक के लिए मोक्ष (मगाफिरत) की दुआ करने के मना होने का इल्म नहीं था, जब यह मालूम हुआ तो आप ने यह दुआ करने का क्रम खत्म कर दिया। (सूर: अल-तौबा-११४)

^३ सच्चे वादे से मुराद बड़ी बड़ाई और अच्छी बातें हैं।

५१. इस किताब में मूसा का भी बयान कर, जो चुना हुआ और रसूल और नबी था।

५२. हम ने उसे तूर पहाड़ के दायें किनारे से पुकारा और सरगोशी करते हुए उसे करीब कर लिया।

५३. और अपनी रहमत खास से उस के भाई हारून को नबी बना कर अता किया।

५४. और इस किताब में इस्माईल (की कहानी) भी बयान कर, वह बड़ा ही वादे का पक्का था, और था भी रसूल और नबी।

५५. और वह अपने परिवार वालों को लगातार नमाज और ज़कात (धर्मदान) का हुक्म देता था, और था भी अपने रब के दरवार में प्यारा और मक़बूल।

५६. और इस किताब में इदरीस को भी बयान कर, वह भी सच्चा पैगम्बर (ईशदूत) था।

५७. हम ने उसे ऊँचे मुकाम पर उठा लिया।

५८. यही वे नबी हैं जिन पर अल्लाह तआला ने दया और कृपा की, जो आदम की औलाद में से हैं और उन लोगों के वंश से हैं, जिन्हें हम ने नूह के साथ नाव पर चढ़ा लिया था और इब्राहीम और याक़ूब की औलाद से और हमारी तरफ से हिदायत याफ़ता और हमारे प्यारे लोगों में से। इन के सामने जब अल्लाह रहमान की आयतें पढ़ी जाती थीं, ये सज्दा करते और रोते गिड़गिड़ाते गिर पड़ते थे।

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ مُوسَى إِذْ كَانَ مُخْلَصًا
وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا 51

وَنَادَيْنَاهُ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ الْأَيْمَنِ
وَقَرَّبْنَاهُ نَجِيًّا 52

وَوَهَبْنَا لَهُ مِنْ رَحْمَتِنَا أَخَاهُ هَارُونَ نَبِيًّا 53

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِبْرَاهِيمَ إِذْ كَانَ صَادِقَ
الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَبِيًّا 54

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُ بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ -
وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهِ مَرْضِيًّا 55

وَأَذْكُرُ فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ إِذْ كَانَ صَادِقًا
نَبِيًّا 56

وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا 57

أُولَئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ
ذُرِّيَّةِ آدَمَ وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ وَمِنْ
ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْرَائِيلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا
وَأُجْتَبَيْنَا إِذَا تُتْلَى عَلَيْهِمْ آيَاتُ الرَّحْمَنِ
خَرُّوْا سُجَّدًا وَبُكِيًّا 58

1 हज़रत इदरीस कहते हैं कि हज़रत आदम के बाब पहले नबी थे, और हज़रत नूह के या उन के बाप के दादा थे, उन्होंने सब से पहले कपड़ा सीना शुरू किया।

५९. फिर उन के बाद ऐसे कपूत पैदा हुए कि उन्होंने नभाज बर्बाद कर दी और मनोकांक्षा (स्वाहिशात) के पीछे पड़ गये, इसलिए उनका नुकसान उन के सामने आयेगा।

६०. सिवाय उन के जो माफ़ी मांग लें और ईमान ले आयें और नेकी के काम करें, ऐसे लोग जन्नत में जायेंगे और उन के हकों का ज़रा भी नुकसान न किया जायेगा।

६१. हमेशा रहने वाले स्वर्गों (जन्नतों) में जिन का गैबी वादा अल्लाह रहमान ने अपने बंदों को दिया है। बेशक उसका वादा पूरा होने वाला ही है।

६२. वे लोग वहाँ कोई बेकार बात न सुनेंगे केवल सलाम ही सलाम सुनेंगे, उन के लिए वहाँ सुबह और शाम उनकी रोजी होगी।¹

६३. यह है वह जन्नत जिसका वारिस हम अपने बंदों में से उन्हें बनाते हैं जो अल्लाह से उरते हों।

६४. हम तेरे खब के हुकम के बिना उत्तर ही नहीं सकते, हमारे आगे-पीछे और उनके बीच की सभी चीजें उसी की कुदरत में हैं, और तेरा खब भूलने वाला नहीं।

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلَاةَ
وَاتَّبَعُوا الشَّهْوَةَ فَسَوْفَ يُلْقَوْنَ عُقَابًا ﴿٥٩﴾

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ
يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُونَ شَيْئًا ﴿٦٠﴾

جَنَّتِ عَدْنِ الْإِنِّي وَعَدَا الرَّحْمَنُ عِبَادَةً
بِالْغَيْبِ إِنَّهُ كَانَ وَعْدُهُ مَأْتِيًا ﴿٦١﴾

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا إِلَّا سَلَامًا وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ
فِيهَا بَكْرَةً وَعَشِيًّا ﴿٦٢﴾

وَلَهُ الْجَنَّةُ الَّتِي نُرِيدُكَ مِنْ عِبَادِنَا
مَنْ كَانَ تَوَّابًا ﴿٦٣﴾

وَمَا نَسْتَأْذِنُكَ إِلَّا بِأَمْرٍ رَبِّكَ لَكُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا
وَمَا خَلْفُنَا وَمَا بَيْنَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ
نَسِيًّا ﴿٦٤﴾

¹ इमाम अहमद ने इसकी तफ़सीर में कहा है कि जन्नतों में रात और दिन नहीं होंगे, केवल रौशनी और रौशनी होगी। हदीस में है जन्नत में जाने वालों के पहले गुट के मुंह चौदहवीं के चांद की तरह रौशन होंगे, वहाँ उन्हें थूक आयेगा न नाक बहेगी और न पेशाव होगा और न पाखाना ही होगा, उन के बर्तन और कपियाँ सोने की होंगी, उनका शरीर खुशबूदार और उनका पसीना कस्तूरी (की तरह) खुशबूदार होगा। हर जन्नत में जाने वाले की दो वीवियाँ होंगी, उनकी पिंडलियों का गूदा उन के गोस्त के पीछे से दिखायी देगा, उनकी खूबसूरती और सुन्दरता के सबब। उन में आपस में हसद और जलन नहीं होगी, सुबह और शाम अल्लाह की तारीफ़ करेंगे। (सहीह बुखारी, बदऊल खलक वाब माजाअ फी सिफ़ातिल जन्न: व इन्नहा मखलूकतुन और सहीह मुस्लिम, किताबुल जन्न: बाब फी सिफ़ातिल जन्न: व अहलेहा)

६५. आकाशों का और धरती का और जो कुछ उन के बीच है सब का रब वही है, तू उसी की इबादत कर और उसकी इबादत पर मजबूत हो जा, क्या तेरे इल्म में उसका हमनाम (और बराबर) कोई दूसरा भी है।

६६. और इंसान कहता है कि जब मैं मर जाऊँगा तो क्या फिर जिन्दा करके निकाला जाऊँगा?

६७. क्या यह इंसान इतना भी याद नहीं रखता कि हमने उसे इससे पहले पैदा किया, हालांकि वह कुछ भी न था।

६८. तेरे रब की कसम! हम उन्हें और शैतानों को जमा करके जरूर ही नरक के चारों तरफ घुटनों के बल गिरे हुए हाजिर कर देंगे।

६९. हम फिर हर गिरोह से उन्हें अलग निकाल खड़ा करेंगे, जो अल्लाह रहमान से बहुत अकड़े-अकड़े से फिरते थे।

७०. फिर हम उन्हें भी अच्छी तरह जानते हैं, जो नरक में दाखिल होने के ज्यादा लायक हैं।

७१. और तुम में से हर एक वहाँ जरूर हाजिर होने वाला है, यह तेरे रब के जिम्मे कतई फ़ैसला है।

७२. फिर हम परहेजगारों को बचा लेंगे और जुल्म करने वालों को उसी में घुटनों के बल गिरा हुआ छोड़ देंगे।

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ
وَاصْطَلِبْ لِعِبَادَتِهِ هَلْ تَلْمِزُهُ لَكُمْ سِيئَاتُ ۙ

وَيَقُولُ الْإِنْسَانُ إِذَا مَا مَرَّ لَسُونَ أَخْرَجْنَا حَيَاتًا ۙ

أَوْلَادِكُمُ الْإِنْسَانُ إِنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ
وَكُنَّا بِكُمْ شَهِيدًا ۙ

فَوَرَبِّكَ لَنَحْضُرَنَّهُمْ وَالشَّيَاطِينُ لَنُحْضِرُنَّهُمْ
حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۙ

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ
عَلَى الرَّحْمَنِ عِيبًا ۙ

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ أَعْلَمُ بِالَّذِينَ هُمْ أَوْلَىٰ بِهَا صِلِيًّا ۙ

وَإِنْ يَنْظُرُوا لِإِثْمِهَا ۙ كَانَ عَلَىٰ رَبِّكَ
حَتْمًا مَقْضِيًّا ۙ

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَكُلُّ الْظَالِمِينَ
فِيهَا جِثِيًّا ۙ

' इसकी तफ़सीर सहीह हदीसों में इस तरह बयान है कि नरक के ऊपर एक पुल बनाया जायेगा, जिस पर से हर ईमानवाले और काफ़िर को गुज़रना होगा, ईमान वाले अपने-अपने अमल के ऐतबार से जल्दी और देर से गुज़र जायेंगे, लेकिन काफ़िर उस पुल को पार करने में कामयाब नहीं होंगे और नरक में गिर जायेंगे।

७३. और जब उनके सामने हमारी रीश्न आयतें पढ़ी जाती हैं तो काफिर मुसलमानों से कहते हैं (बताओ) हम तुम दोनों फ़रीक़ों में किसका मान (मर्तबा) ज्यादा है और किस की बैठक (सभा) शानदार है?

७४. और हम तो उनसे पहले बहुत सी उम्मतों को हलाक़ कर चुके हैं, जो साज व सामान और नाम नमूद में इन से कही ज्यादा थे।

७५. कह दीजिए कि जो भटकावे में होता है अल्लाह रहमान उस को बहुत सभ्वा मौक़ा देता है, यहाँ तक कि वे उन चीज़ों को देख लें जिन के बादे किये जाते हैं, यानी अज़ाब या क़यामत को, उस वक़्त उन्हें ठीक तरह से मालूम हो जायेगा कि कौन बुरे पद वाला है और किसका ज़त्था कमज़ोर है।

७६. और हिदायत पाये हुए लोगों को हिदायत में अल्लाह और बढ़ाता है, और वाक़ी रहने वाली नेकी तेरे रब के करीब बदला के अनुरूप (लिहज़ब से) और नतीज़ा के अनुरूप बहुत अच्छी है।

७७. क्या तूने उसे भी देखा जिस ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया और कहा कि मुझे तो माल और औलाद तो ज़रूर दी जायेगी।

७८. क्या वह ग़ैब का इल्म रखता है या अल्लाह से कोई वादा ले चुका है?

७९. कभी नहीं, यह जो कुछ कह रहा है हम उसे ज़रूर लिख लेंगे, और उस के लिए अज़ाब बढ़ाते चले जायेंगे।

८०. और यह जिन चीज़ों के बारे में कह रहा है, उसे हम उस के बाद ले लेंगे, और यह अकेला ही हमारे सामने हाज़िर होगा।

وَأَن تَأْتِلَ عَلَيْهِمُ الْبُيُوتُ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَيُّ الْفَرِيقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَأَحْسَنُ نَدْبًا ﴿٧٣﴾

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَرِعْيًا ﴿٧٤﴾

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلَالَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمَنُ مَدَدًا حَتَّى إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ فَسَيَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَكَانًا وَأَضْعَفُ جُنْدًا ﴿٧٥﴾

وَيَزِيدُ اللَّهُ الَّذِينَ اهْتَدَوْا هُدًى وَالْبَرِيَّةَ الضَّالِّينَ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ مَقْرَدًا ﴿٧٦﴾

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي كَفَرَ بِآيَاتِنَا وَقَالَ لَأُوتِيَنَّ مَالًا وَوَلَدًا ﴿٧٧﴾

أَكَلَعَ الْغَيْبَ أَمْ أَخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا ﴿٧٨﴾

كَلَّا سَتَلْبَثُ مَا يَقُولُ وَنَسُدُّ لَهُ مِنَ الْعَذَابِ مَدَدًا ﴿٧٩﴾

وَوَكُنَّا لَهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾

८१. उन्होंने अल्लाह के सिवाय दूसरे देवता बना रखे हैं कि वे उन के लिए इज़्जत (सम्मान) का सबब हों।

८२. लेकिन ऐसा कभी होगा नहीं, वे तो इनकी इबादत से मुकर जायेंगे, और उल्टे इन के दुश्मन बन जायेंगे।

८३. क्या तुने नहीं देखा कि हम काफ़िरों के पास बैतानों को भेजते हैं, जो उन्हें खूब उकसाते हैं।

८४. तू उन के बारे में जल्दी न कर, हम तो खुद ही इन के वक्त का शुमार कर रहे हैं।

८५. जिस दिन हम परहेजगारों को अल्लाह रहमान का मेहमान बनाकर जमा करेंगे।

८६. और मुजरिमों को (बहुत प्यास की हालत में) नरक की तरफ हाँक ले जायेंगे।

८७. किसी को सिफारिश का हक न होगा सिवाय उन के जिन्होंने अल्लाह तआला की तरफ से कोई वादा ले लिया है।

८८. और उनका क़ौल तो यह है कि अल्लाह रहमान ने भी औलाद बना रखी है।

८९. बेशक तुम बहुत (बुरी और) भारी चीज लाये हो।

९०. क्रूर है कि इस क़ौल के सबब आकाश फट जायें और धरती में दरार हो जाये और पहाड़ कण-कण हो जायें।

९१. कि वे रहमान की औलाद साबित करने बैठे हैं।

९२. और रहमान के यह लायक नहीं कि वह औलाद रखे।

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لِيَكُونُوا لَهُمْ عِزًّا (81)

كَلَّا لَسَيَأْخُذُونَ بِعِبَادِهِمْ وَيَكُونُونَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا (82)

أَلَمْ تَرَ أَنَا أَرْسَلْنَا الشَّاطِطِينَ عَلَى الْكَافِرِينَ تَوَخَّاهُمْ وَأَأْتَانَا فَتُلَاهُمُ (83)

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا (84)

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمَنِ وَفْدًا (85)

وَأَسْوَاقِ الْمُبْرَمِينَ إِلَى جَهَنَّمَ رِدًّا (86)

لَا يَنْبَلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمَنِ عَهْدًا (87)

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا (88)

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِذَا (89)

تَكَادُ السَّمَوَاتُ يَتَطَفَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا (90)

أَنْ دَعَا لِلرَّحْمَنِ وَلَدًا (91)

وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمَنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا (92)

९३. आकाशों और धरती में जो भी है सब अल्लाह के गुलाम बनकर ही आने वाले हैं।

९४. उन सब को उस ने घेर रखा है और सब की पूरी तरह गिन्ती भी कर रखा है।

९५. ये सारे के सारे क्रयामत के दिन अकेले उस के सामने हाजिर होने वाले हैं।

९६. बेशक जो ईमान लाये हैं और जिन्होंने नेक अमल किये हैं, उन के लिए अल्लाह रहमान मुहब्बत पैदा कर देगा।

९७. हम ने (कुरआन को) तेरी जुबान में बहुत आसान कर दिया है^१ कि तू उस के जरिये परहेजगारों (सदाचारियों) को खुशखबरी दे और झगड़ालू लोगों को वाखबर कर दे।

९८. और हम ने इस से पहले बहुत सी जमाअतें हलाक कर दी हैं, क्या उन में से एक की भी आहट तू पाता है या उनकी आवाज़ की भनक भी तेरे कान में पड़ती है।

सूरतु ताहा-२०

सूर: ताहा* मक्के में उतरी और इसकी एक सौ पैंतीस आयतें हैं और आठ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो वड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِنَّ كُلَّ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِلَّا
إِنِّي الرَّحْمَنُ عَبْدًا ۙ (93)

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ۙ (94)

وَكُلُّهُمْ أِنْتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ قَدًّا ۙ (95)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَيَجْعَلُ
لَهُمُ الرَّحْمَنُ وُدًّا ۙ (96)

فَأَنَّمَا يُرِيتُهُ بِلسَانِكَ لِأَنْ يُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِينَ
وَتُنذِرَ بِهِ قَوْمًا لَدًّا ۙ (97)

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَوْمٍ لَهُمْ كُفٌ مِنْهُمْ
فَمِنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْوًا ۙ (98)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

^१ कुरआन को आसान करने का मतलब उस जुबान में उतारना है जिसको पैगम्बर जानता था यानी अरबी जुबान में, फिर इस के मजामीन का खुला हुआ बाज्रेह और साफ होना है।

^{*} हज्रत उमर के दिने इस्लाम कुबूल करने के कई सबसे बयान किये गये हैं, कुछ तारीखी कौल में अपनी बहन और बहनोई के घर में सूर: ताहा का सुनना और उस से प्रभावित (मुतास्सिर) होना भी बयान है। (फतहल कदीर)

१. ता० हा०

२. हम ने यह कुरआन तुझ पर इसलिए नहीं उतारा कि तू कठिनाई में पड़ जाये।

३. बल्कि उसकी नसीहत के लिए जो अल्लाह से डरता है।

४. इसका उतारना उसकी तरफ से है जिस ने धरती को और ऊँचे आकाशों को पैदा किया है।

५. जो रहमान है, अर्थात् पर कायम है।

६. जिसकी मिल्कियत आकाशों और धरती और इन के बीच और धरती की सतह से नीचे हर चीज पर है।

७. अगर तू ऊँची बात कहे तो वह हर छिपी, और छिपी से छिपी चीज को अच्छी तरह जानता है।

८. वही अल्लाह है, जिस के सिवाय कोई सच्चा मावूद नहीं, अच्छे नाम उसी के हैं।

९. तुझे मूसा का वाक़ेआ भी मालूम है?

१०. जबकि उस ने आग देखकर अपने परिवार से कहा कि थोड़ी देर ठहर जाओ मुझे आग दिखाई दे रही है, ज़्यादा मुमकिन है कि मैं उसका अंगारा तुम्हारे पास लाऊँ या आग के पास से रास्ते की ख़बर पाऊँ।^१

طه ١

مَا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لِتَشْقَى ٢

إِلَّا تَذَكَّرُ ٣ لِمَنْ يَخْشَى ٣

تَنْزِيلًا لِمَنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمَوَاتِ الْعُلَى ٤

الرَّحْمَنِ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوَى ٥

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا

وَمَا تَحْتُ الْعَرْشِ ٥

وَإِنْ تَجْهَرُ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهُ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفَى ٦

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى ٨

وَهَلْ أَنْتَ حَدِيثُ مُوسَى ٩

إِذْ نَأَى نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا

لَعَلِّي آتِيكُمْ مِنْهَا بِبَقِيصٍ أَوْ أُجِدُّ عَلَى النَّارِ هُدًى ١٠

^१ यह उस समय का वाक़ेआ है जब मूसा عليه السلام मदीन से अपनी बीबी को लेकर (जो एक कौल के ऐतवार से हज़रत शुरैफ की बेटी थी) अपनी माँ की तरफ वापस जा रहे थे, अंधेरी रात थी और रास्ता भी अज्ञान था, और कुछ मुफ़स्सिरो के अनुसार उनकी बीबी के वच्चा जन्म देने का वक़्त करीब था और उन्हें गर्मी की ज़रूरत थी या ठंड के सबब गर्मी की ज़रूरत पड़ी हो, इतने में उन्हें दूर से आग के शोले उठते हुए दिखायी दिये, घरवालों से यानी बीबी से (या कुछ

११. जब वह वही पहुँचे तो आकाशवाणी (निदा) हुई कि हे मूसा!

فَلَمَّا أَنهَا نُودِيَ يَتُوسَى (11)

१२. बेशक मैं ही तेरा रब हूँ, तू अपने जूते उतार दे! क्योंकि तू पाक मैदान 'तोवा' में है।

إِنِّي أَنَا رَبُّكَ فَاصْنَعْ لَعَلَّكَ

إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى (12)

१३. और मैंने तुझे चुन लिया है, अब जो वहयी (प्रकाशना) की जायेगी उसे ध्यानपूर्वक (तबज्जह से) सुन।

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحَى (13)

१४. बेशक मैं ही अल्लाह हूँ मेरे सिवाय इबादत (पूजा) के लायक दूसरा कोई नहीं, इसलिए तू मेरी ही इबादत कर और मेरी याद के लिए नमाज़ कायम कर।^१

أَلَيْسَ أَنَا اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدْنِي

وَأَقِمْ الصَّلَاةَ لِذِكْرِي (14)

१५. क्रयामत जरूर आने वाली है, जिसे मैं पोशीदा रखना चाहता हूँ ताकि हर इंसान को वह बदला दिया जाये जो उस ने कोशिश किया हो।

إِنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزَىٰ كُلُّ

نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ (15)

१६. तो अब इस के ईमान से तुझे ऐसा इंसान रोक न दे, जो इस पर ईमान (विश्वास) न रखता हो और अपनी आरजू के पीछे पड़ा हो, वना तू नाश हो जायेगा।

فَلَا يَصُدُّكَ عَنْهَا مَنْ لَا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ

هُوَ فَتَرَدَّى (16)

१७. और हे मूसा! तेरे दाहिने हाथ में क्या है।

وَمَا تِلْكَ يَمِينُكَ يَتُوسَى (17)

मुफस्सिर कहते हैं कि नौकर और बच्चा भी था इसलिए वहबचन (जमा) शब्द का इस्तेमाल किया। कहा तुम यहीं ठहरो! शायद मैं आग का कोई शोला वहाँ से साथ ले आऊँ या कम से कम वहाँ से रास्ते का इशारा मिल जाये।

^१ जूते उतारने का हुक्म इसलिए दिया कि इस में विनम्रता (आजिजी) का इजहार और इज्जत और एहतेराम का हक ज्यादा है।

^२ इबादत के बाद नमाज़ का खास तौर से हुक्म दिया, अगरचे इबादत में नमाज़ भी शामिल थी, ताकि उसकी वह अहमियत बाज़ेह हो जाये जैसाकि उसकी है।

१८. जवाब दिया कि यह मेरी लाठी है, जिस पर मैं टेक लगाता हूँ और जिस से मैं अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ लिया करता हूँ, और दूसरे भी इस में मुझे बहुत फायदे हैं।

قَالَ فِي عَصَايَ اتَّوَلَّوْا عَلَيْهَا وَأَفْسَسْ بِهَا عَلَى
عَنِي وَبِي فِيهَا مَا رَبِّ آخَرَى ﴿١٨﴾

१९. कहा कि हे मूसा! उसे (हाथ से) नीचे डाल दे।

قَالَ لَقَوْمًا يُؤْمِنُ ﴿١٩﴾

२०. तो डालते ही साँप बन कर दौड़ने लगी।

قَالَتْهَا وَقَادَا فِي حَيْثُ تَسْعَى ﴿٢٠﴾

२१. कहा कि बैखौफ होकर उसे पकड़ ले, हम उसे उसी पहले की शकल में फिर ला देंगे।

قَالَ خذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُؤَيِّدُهَا سِوَيْ رَبِّهَا الْأُولَى ﴿٢١﴾

२२. और अपना हाथ अपनी बगल (कोख) में डाल ले, तो वह सफेद रौशन होता हुआ निकलेगा, लेकिन बिना किसी दोष (ऐब) और रोग के यह दूसरा मोजिजा है।

وَأَضْمِرْ يَدَكَ إِلَى جَنَاحِكَ تَخْرُجُ بَيْضَاءَ مِنْ
عَوْرٍ سَوْدٍ آيَةً آخَرَى ﴿٢٢﴾

२३. यह इसलिए कि हम तुझे अपनी बड़ी-बड़ी निशानियाँ दिखाना चाहते हैं।

لِيُرِيكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَى ﴿٢٣﴾

२४. अब तू फिरऔन की तरफ जा, उस ने बड़ा फसाद मचा रखा है।

إِذْ هَبَّ إِلَى فِرْعَوْنَ إِذْهُ طَغَى ﴿٢٤﴾

२५. (मूसा ने) कहा कि हे मेरे रब ! मेरा सीना मेरे लिए खोल दे।

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِي صَدْرِي ﴿٢٥﴾

२६. और मेरे काम को मुझ पर आसान कर दे।

وَيَسِّرْ لِي أَمْرِي ﴿٢٦﴾

२७. और मेरी जुवान की गाँठ खोल दे।

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِنْ لِسَانِي ﴿٢٧﴾

२८. ताकि लोग मेरी बात अच्छी तरह समझ सकें।

يَفْقَهُوا قَوْلِي ﴿٢٨﴾

२९. और मेरा वजीर मेरे अहल में से बना दे।

وَاجْعَلْ لِي وَرَثَةً مِنَ الْأَهْلِ ﴿٢٩﴾

३०. (यानी) मेरे भाई हारून को।

هُرُونَ أَخِي ﴿٣٠﴾

३१. तू उस से मेरी कमर कस दे।

اشْدُدْ يَدِي أَدْرِي ﴿٣١﴾

३२. और उस को मेरे काम में सहायक (मददगार) कर दे।

وَأَشْرِكُهُ فِي أَمْرِي ﴿٣٢﴾

३३. ताकि हम दोनों बहुत तेरी तारीफ बयान करें।

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيرًا ﴿٣٣﴾

३४. और बहुत तेरी याद करें।

وَنَذْكُرَكَ كَثِيرًا ﴿٣٤﴾

३५. बेशक तू हमें अच्छी तरह से देखने-भालने वाला है।

إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيرًا ﴿٣٥﴾

३६. (अल्लाह तआला ने) कहा है मूसा! तेरे सभी सवाल पूरे कर दिये गये।

قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يُمُوسَى ﴿٣٦﴾

३७. और हम ने तो तुझ पर एक बार और भी इस से भी बड़ा एहसान किया है।

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَى ﴿٣٧﴾

३८. जबकि हम ने तेरी माँ के दिल में वह उतारा, जिस का बयान अब किया जा रहा है।

إِذْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰ ﴿٣٨﴾

३९. कि तू इसे मद्रूक में बंद करके नदी में छोड़ दे, फिर नदी इस को किनारे पर ले जायेगी और मेरा और खुद उसका दुश्मन उसे ले लेगा,^१ और मैंने अपनी तरफ की खास मुहब्बत और मक्बूलियत तुझ पर डाल दिया, ताकि तेरा पालन-पोषण मेरी आँखों के सामने किया जाये।^२

أَنْ أَقْبَلِيهِ فِي النَّبُوتِ فَكَذَّبْتَنِي فِي الْيَمِّ فَلْيَلْقِيهِ
الْيَمُّ بِالنَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوِّي وَعَدُوُّ لَهٗ
وَالْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِنِّي ۖ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى
عَيْنِي ﴿٣٩﴾

^१ मुराद फिरऔन है जो अल्लाह का भी दुश्मन और हजरत मूसा का भी दुश्मन था, यानी लकड़ी का वह संदूक तैरता हुआ जब राजभवन (शाही महल) के किनारे पहुँचा तो उसे बाहर निकाल कर देखा गया तो उस में एक मासूम बच्चा था, जिसे फिरऔन ने अपनी वीवी की तमन्ना पर पालन-पोषण के लिए राजभवन में रख लिया।

^२ इसलिए अल्लाह की कुदरत और उसकी हिफाजत और संरक्षण (निगरानी) का कमाल और मोजिजा देखिये कि जिस बच्चे के सवव फिरऔन अनगिनत बच्चों का कत्ल करवा चुका है, ताकि वह बच्चा जिन्दा न रहे उसी बच्चे को अल्लाह तआला उसकी गोद में पालन करवा रहा है, और माँ अपने बच्चे को दूध पिला रही है, नकिन उसकी मजदूरी भी उसी मूसा के दुश्मन से हासिल कर रही है।

४०. (याद कर) जबकि तेरी बहन चल रही थी और कह रही थी कि अगर तुम कहो तो मैं उसे बचा दूँ जो उसका निगहवान बन सके, इस तरह से हम ने तुझे पुनः तेरी माँ के पास पहुँचाया कि उसकी आँखें ठंडी रहे और वह दुखी न हो, और तूने एक इंसान का कत्ल कर दिया था, उस पर भी हम ने तुझे गम से बचा लिया, यानी हम ने तेरी अच्छी तरह आजमाईश कर ली, फिर तू कई साल तक मदयन के लोगों में ठहरा रहा, फिर अल्लाह के लिखे हुए नसीब के अनुसार हे मूसा! तू आया।

४१. और मैंने तुझे खास तौर से अपने लिए पसन्द कर लिया।

४२. अब तू अपने भाई सहित मेरी निशानियाँ साथ ले जा, खबरदार! तुम दोनों मेरी याद में सुस्ती न करना।

४३. तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ, उस ने बड़ी सरकशी की है।

४४. उसे नमी से' समझाओ, शायद वह समझ ले या डर जाये।

४५. दोनों ने कहा, हे हमारे रब! हमें डर है कि कहीं फिरऔन हम पर कोई जुल्म न करे या अपनी सरकशी में बढ न जाये।

४६. जवाब मिला कि तुम दोनों कभी डर न करो मैं तुम्हारे साथ हूँ और सुनता-देखता रहूँगा।

إِذْ تَسْتَشِيحُ امْرَأَتُكَ فُتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى مَن يَكْفُلُهُ ۖ فَرَجِعْنَاكَ إِلَىٰ أُولِيكِ كَيْ تَعَرَّعَيْنَهَا وَلَا تَحْزَنَ ۗ وَكَتَلْتِ نَفْسًا فَانْحَثْنَاكَ مِنَ الْغَيْرِ وَفَتْنَاكَ فَمَوْتًا ۗ فَلْيَمِتَّ سَيُومِنَ فِي أَهْلِ مَدْيَنَ ۗ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ فَيُوَمِّنُ ﴿٤٠﴾

وَاصْطَنَعْنَاكَ لِأَنْفُسِنَا ﴿٤١﴾

إِذْ هَبَّ آتُكَ وَأَخَوَكَ بِآيَتِنَا وَلَا تَنِيَا فِي دِكْرِنَا ﴿٤٢﴾

إِذْ هَبَّا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ﴿٤٣﴾

فَقُولَا لَهُ قَوْلًا نَّيْمًا لَّعَلَّهُ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشَىٰ ﴿٤٤﴾

فَالَا رَبَّنَا إِنَّا نَخَافُ أَنْ يُفْرَطَ عَلَيْنَا أَوْ أَنْ يَطْفَىٰ ﴿٤٥﴾

قَالَ لَا تَخَافَا إِنِّي مَعَكُمَا أَسْبَغُ وَأَرَىٰ ﴿٤٦﴾

। यह योग्यता (सलाहियत) भी अल्लाह की तरफ तब्लीग करने वालों के लिए बहुत जरूरी है। क्योंकि सच्ची से लोग भागते हैं, आसानी और नमी से करीब आते और प्रभावित (मुतास्सिर) होते हैं, और वे हिदायत हासिल करने वाले होते हैं।

४७. तुम उस के पास जाकर कहो कि हम तेरे रब के पैगम्बर (ईशदूत) हैं, तू हमारे साथ इस्राईल की औलाद को भेज दे, उन के अजाब खत्म कर, हम तो तेरे पास तेरे रब की तरफ से निशानियाँ लेकर आये हैं, सलामती उसी के लिए है जो हिदायत को मजबूती से अपनाये।

४८. हमारी तरफ बह्यी (प्रकाशना) की गयी है कि जो झुठलाये और मुँह फेरे उस के लिए अजाब है।

४९. (फिरऔन ने) पूछा कि हे मूसा! तुम दोनों का रब कौन है।

५०. जवाब दिया कि हमारा रब वह है जिस ने हर एक को उसका खास रूप अता किया, फिर हिदायत भी दिया।

५१. उस ने कहा (अच्छा यह तो बताओ) पहले के लोगों की क्या हालत होनी है?

५२. जवाब दिया कि उनका इल्म मेरे रब के पास किताब में (मौजूद) है, न तो मेरा रब गलती करता है न भूलता है।

५३. उसी ने तुम्हारे लिए धरती को बिस्तर बनाया है और उस में तुम्हारे चलने के लिए रास्ते बनाये हैं, और आकाश से वर्षा (बारिश) भी वही करता है, फिर उस वर्षा के सबब कई तरह की पैदावार भी हम ही पैदा करते हैं।

فَأْتِيهِمْ فِقُولًا إِنْكَارُ سُلُوكِكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ وَلَا تَعْلِبْ لَهُمْ قَدْ جِئْنَاكَ بِآيَاتٍ مِنْ رَبِّكَ وَالسَّلَامُ عَلَى مَنْ اتَّبَعَ الْهُدَى (47)

إِنَّا قَدْ أُوحِيَ إِلَيْنَا أَنَّ الْعَذَابَ عَلَى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّى (48)

قَالَ فَمَنْ رَبُّكُمَا يُوسُفَى (49)

قَالَ رَبُّنَا الَّذِي أَعْطَى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهُ ثُمَّ هَدَى (50)

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُونِ الْأُولَى (51)

قَالَ عَلِمَهَا عِنْدَ رَبِّي فِي كِتَابٍ لَا يَخْفَى رَبِّي وَلَا يُسَى (52)

الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ مَهْدًا وَسَوَّكَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِنْ نَحَابِ شَيْءٍ (53)

जैसे जो शक्तो सूरत इंसान के लिए मुनासिब थी वह उसे, जो जानवरों के लायक थी वह जानवरों को अता किया, रास्ता दिखाया का मतलब हर जानदार को उसकी प्राकृतिक (फिर्तरी) जरूरतों के ऐतबार से रहन-सहन, खाने-पीने और चलने-फिरने का तरीका समझा दिया, उसी के ऐतबार से हर जानदार अपनी जीवन सामग्री (सामान) जमा करता है और जिन्दगी के वे दिन गुजारता है।

५४. तुम खुद खाओ और अपने पशुओं को भी चराओ, बेशक इस में अकलमंदों के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

५५. उसी धरती में से हम ने तुम्हें पैदा किया और उसी में फिर वापस लौटायेंगे, और उसी से दोबारा तुम सबको निकाल खड़ा करेंगे।

५६. और हम ने उसे अपनी सभी निशानियाँ दिखा दी, लेकिन उस ने फिर भी झुठलाया और इन्कार कर दिया।

५७. कहने लगा हे मूसा! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हमें अपने जादू की ताकत से हमारे देश से निकाल दे।

५८. ठीक है, हम भी तेरा सामना करने के लिए इसी जैसा जादू जरूर लायेंगे, बस तू हमारे और अपने बीच वादा का वक़्त मुक़र्रर कर ले कि न हम उस के खिलाफ़ करें और न तू, खुले मैदान में मुकाबिला (प्रतियोगिता) हो।

५९. (मूसा ने) जवाब दिया कि जीनत और समारोह (जश्न) के दिन का वादा है, और यह कि लोग दिन चढ़े ही जमा हो जायें।

६०. फिर फिरऔन लौट गया और उसने अपने हथकंडे जमा किये, फिर आ गया।

كُلُوا وَارْعَوْا أَنْفُسَكُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِّأُولِي النَّهْيِ ﴿٥٤﴾

وَمِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا
نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَى ﴿٥٥﴾

وَلَقَدْ آرَيْنَاهُ آيَاتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبَى ﴿٥٦﴾

قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ
يُؤْمِسِي ﴿٥٧﴾

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَأَجْعَلْ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا
أَنْتَ مَكَانًا سُوًى ﴿٥٨﴾

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمَ الرِّيبَةِ وَأَنْ يُحْشَرَ
النَّاسُ ضِعْفَيْنِ ﴿٥٩﴾

فَقَوْلِي فِرْعَوْنَ فَجَبَحَ كَيْدَهُ ثُمَّ آتَى ﴿٦٠﴾

१ कुछ कौल के ऐतबार से मय्यत को गाड़ने के बाद तीन लप मिट्टी डालते वक़्त इस आयत को पढ़ना नबी ﷺ से साबित है, लेकिन सुबूतों के ऐतबार से यह कौल जर्इफ़ है, लेकिन आयत बिना तीन लप डालने वाला कौल जो इब्ने भाज़ा में है सही है, इसलिए गाड़ने के बाद दोनों हाथों की लप से तीन-तीन बार मिट्टी डालने को उलमा ने सहीह कहा है। देखिये किताबुल जनायैज, पेज़ १५२ और इरबाउल गलील नं० २५१, भाग ३, पेज़ २००।

६१. मूसा ने उन से कहा कि तुम्हारी शामत हो, अल्लाह (तआला) पर झूठ और इल्जाम न लगाओ कि वह तुम्हें अजाब से नाश कर दे, याद रखो! वह कभी कामयाब न होगा जिस ने झूठी बात गढ़ी।

६२. फिर ये लोग आपस में विचार-विमर्श (मशिवरो) में मुहल्लिफ राय हो गये और छुपकर सरगोशी करने लगे।

६३. कहने लगे ये दोनों सिर्फ जादूगर है और इनका मजबूत इरादा है कि अपने जादू की ताकत से तुम्हें तुम्हारे देश से निकाल दें और तुम्हारे वेहतरीन धर्म को नाश कर दें।

६४. तो तुम भी अपना कोई दाव उठा न रखो, फिर पकितवद्ध (सफबंद) होकर आ जाओ, जो आज गालिब हो गया वही कामयाबी ले गया।

६५. वे कहने लगे कि हे मूसा! या तो तू पहले डाल या हम पहले डालने वाले बन जायें।

६६. जवाब दिया नहीं तुम ही पहले डालो! अब तो मूसा को यह ख्याल होने लगा कि उन की रास्सियाँ और लकड़ियाँ उन के जादू की ताकत से दौड़ भाग रही हैं।^१

قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوا عَلَى اللَّهِ
كَيْدًا فَيُضِلَّكُمْ بَعْدَ آيَاتِهِ ۚ وَقَدْ خَابَ
مَنْ أَفْتَرَىٰ ۖ ﴿٦١﴾

فَتَنَازَعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَأَسْرَأُوا النَّجْوَىٰ ﴿٦٢﴾

قَالُوا إِنَّ هَذَيْنِ لَسَاحِرُونَ يُرِيدَانِ
يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا
وَيَذَٰهَبَا بِطَبِيعَتِكُمُ الْمُثُلَىٰ ﴿٦٣﴾

فَاجْعُوا لِكَيْدِكُمْ ثُمَّ اتَّوَا صَفَاءَ
وَقَدْ أَلْبَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلَىٰ ﴿٦٤﴾

قَالُوا يَا مُوسَىٰ إِنَّا أَنْ نُلْقِيَ وَإِنَّا أَنْ نَكُونَ أَوْلَىٰ
مَنْ أَلَىٰ ۖ ﴿٦٥﴾

قَالَ بَلْ أَلِ الْعَوَاءُ ۖ فَإِذَا جَاءَ لَهُمُ وَعِصْبُهُمْ
يُخَيَّلُ إِلَيْهِمْ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعَىٰ ﴿٦٦﴾

^१ हजरत मूसा ने पहले उनको अपना खेल दिखाने को कहा ताकि उन पर यह बाजेह हो जायें कि वह जादूगरों की इतनी बड़ी तादाद से जो फिरऔन जमा करके लाया है, और उसी तरह उन के जादू के खेल से कभी डरे नहीं हैं। दूसरे उन के जादू के खेल-तमाशे जब अल्लाह के चमत्कार (मोजिजे) से पलक झपकते खतम और बर्बाद हो जायेंगे तो इसका बहुत अच्छा अमर पड़गा और जादूगर यह सोचने पर मजबूर हो जायेंगे कि यह जादू नहीं है, हकीकत में इसको अल्लाह की मदद हासिल है कि एक पल में इसकी एक लाठी हमारे सारे खेल तमाशे निगल गयी।

^२ कुरआन के इन लफजों से मालूम होता है कि रास्सियाँ और लाठियाँ हकीकत में माप नहीं बनी थी, बल्कि जादू की ताकत से ऐसा महनूम हो रहा था जैसे नजरबन्द कर दी जाती है, इसका असर यह होता है कि आरजी और बन्नी तीर से देखने वालों पर डर तारी हो जाता है, अगवचे

६७. इस से मूसा अपने मन ही मन में डरने लगे ।

६८. हम ने कहा कि कुछ डर न कर, बेशक तू ही गालिव और ऊँचा होगा ।

६९. और तेरे दाहिने हाथ में जो है उसे डाल दे कि उन की सारी कारीगरी को यह निगल जाये, उन्होंने जो कुछ बनाया है यह केवल जादूगरों के करतब है, और जादूगर कहीं से भी आये कामयाब नहीं होता ।

७०. अब तो सारे जादूगर सज्दा में हो गये और पुकार उठे कि हम तो हारून और मूसा के रब पर ईमान लाये ।

७१. (फिरऔन) कहने लगा कि क्या मेरे हुक्म के पहले ही तुम उस पर ईमान ले आये? बेशक यही तुम्हारा वह बड़ा (गुरु) है जिस ने तुम सब को जादू सिखाया है, (सुन लो) मैं तुम्हारे हाथ-पाँव उल्टे कटवाकर तुम सब को खजूर के तनों में फाँसी पर लटकवा दूँगा और तुम्हें पूरी तरह से मालूम हो जायेगा कि हम में से किस की मार ज्यादा सख्त और स्थाई (देर पा) है ।

७२. (उन्होंने) जवाब दिया कि नासुमकिन है कि हम तुम्हें प्रधानता (तरजीह) दें उन दलीलों पर जो हमारे सामने आ चुकी और उस अल्लाह पर जिस ने हमें पैदा किया, अब तो तू जो कुछ करना चाहे कर ले, तू जो कुछ हुक्म चला सकता है वह इसी दुनियावी जिन्दगी में ही है ।

فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُّوسَى ﴿٦٧﴾

قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلَى ﴿٦٨﴾

وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفَ مَا صَنَعُوا وَإِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدٌ سَاجِدٌ وَلَا يُلْبِحُ السَّاجِدَ حَيْثُ أَتَى ﴿٦٩﴾

فَأَلْقَى السَّعْرَةَ سَاجِدًا قَالُوا أَمَّا بِرَبِّ هَرُونَ وَمُوسَى ﴿٧٠﴾

قَالَ أَمْثَلُكُمْ قَبْلَ أَنْ أَدْنَى لَكُمْ وَإِنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْآزِمِ عَلَيْكُمْ السَّعْرَةَ فَلَا تَقْطَعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ جِلْدَابٍ وَلَا تَصَلِّبْتُمْ فِي جُدُوعِ الشَّجَرِ وَتَعْلَمُونَ إِنَّمَا أَشْكُو بَدَأًا وَآبَى ﴿٧١﴾

قَالُوا لَنْ نُؤْتِيَكَ عَلَى مَا جَاءَنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالَّذِي ظَلَمْنَا فَأَفْضَ مَا أَنْتَ قَاطِعٌ إِنَّمَا نَطْمِئِنُّ بِهَذِهِ الْعَيْوَةَ الدُّنْيَا ﴿٧٢﴾

बीज की हकीकत समझी न हो । दूसरी बात यह मालूम हुई कि जादू चाहे कितना बड़ा हो, वह बीज की वास्तविकता (हकीकत) नहीं बदल सकता ।

७३. हम (इस उम्मीद से) अपने रब पर ईमान लाये कि वह हमारी गलतियाँ माफ़ कर दे और खास कर) जादूगरी (का पाप) जो कुछ तूने हम से मजबूर करके कराया है, अल्लाह ही सब से बेहतर और हमेशा रहने वाला है।

७४. बात यही है कि जो भी मुजरिम बनकर अल्लाह (तआला) के यहाँ जायेगा, उस के लिए नरक है, जहाँ न मौत होगी और न जिन्दगी।

७५. और जो भी उस के पास ईमान वाला होकर आयेगा और उस ने नेक काम भी किये होंगे उस के लिए ऊँचे और अच्छे मरतबे (दर्जे) हैं।

७६. दायमी जन्नत जिन के नीचे नदियाँ बह रही होंगी जहाँ वे हमेशा रहेंगे, यही बदला है हर उस इंसान का जो पाक है।

७७. और हम ने मूसा की तरफ़ वही (प्रकाशना) उतारी कि तू रातों-रात मेरे बंदों को ले चल, और उनके लिए समुद्र में सूखा रास्ता बना ले, फिर न तुझे किसी के आ पकड़ने का खौफ़ होगा न डर।

७८. फिरऔन ने अपनी सेना सहित उनका पीछा किया, फिर तो समुद्र उन सब पर छा गया जैसा कुछ छा जाने वाला था।

७९. और फिरऔन ने अपनी क्रौम (समुदाय) को भटकाने में डाल दिया और सीधा रास्ता न दिखाया।

८०. हे इस्राईल के पुत्रो ! (देखो) हम ने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से आजाद कर दिया और तुम को तूर पहाड़ के दाहिनी तरफ़ का वादा दिया और तुम पर 'मन्न' और 'सलवा' उतारा !

إِنَّا أَنمَأْ بِرَبِّنَا لِنُغْفِرَ لَنَا خَطِيئَاتِنَا وَمَا نَكْرَهْتَنَّا عَلَيْهِ مِنَ الْبِخْرَاءِ وَاللَّهُ خَيْرٌ وَأَبْشَرُ ﴿٧٣﴾

إِنَّكَ مِنْ يَأْتِ رَبَّهُ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهُ جَهَنَّمَ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَىٰ ﴿٧٤﴾

وَمَنْ يَأْتِهِ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصَّالِحَاتِ فَأُولَئِكَ لَهُمُ الدَّرَجَاتُ الْعُلَىٰ ﴿٧٥﴾

جَنَّاتٍ عَذْنٍ تَجْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَٰلِكَ جَزَاؤُا مَنْ تَزَكَّىٰ ﴿٧٦﴾

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنِ اسْرِبْ بِعِبَادِي فَأَضْرِبْ لَهُمُ طَرِيقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لَا تَخَفُ دَرَكًا وَلَا تُخْشَىٰ ﴿٧٧﴾

فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُودِهِ فَغَشِيَهُمْ مِنَ الْيَمِّ مَاءٌ غَاشِيَهُمْ ﴿٧٨﴾

وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهُ وَمَا هَدَىٰ ﴿٧٩﴾

يَبْنَؤُا إِسْرَآءِيلَ قَدْ أَنْجَيْنَاكَ مِنْ عَدُوِّكَمْ وَوَعَدْنَاكُمْ جَانِبَ الطُّورِ الْأَيْمَنِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمْ الْمَنَّٰ وَ السَّلْوَٰى ﴿٨٠﴾

1 'मन्न' और 'सलवा' के उतरने का वयान सूर: अल-बकर: के शुरू में गुजर चुका है, 'मन्न' कोई मजेदार मीठी चीज थी जो आकाश से उतरती थी और 'सलवा' से मुराद बटेर पक्षी है जो

८१. तुम हमारी अत्ता की हुई पाक रोजी खाओ, और उस में हृद से तजावुज (उल्लंघन) न करो, वरना तुम पर मेरा अजाब उतरेगा, और जिस पर मेरा अजाब उतर जायेगा, वह बेशक नाश हुआ।

८२. और बेशक मैं उन्हें माफ कर देने वाला हूँ, जो माफी मागें, ईमान लायें, नेकी के काम करें और सीधे रास्ते पर भी रहें।

८३. और हे मूसा! तुझे अपनी क्रौम से (गाफिल कर के) कौन सी बात जल्दी ले आयी?

८४. कहा वह लोग भी मेरे पीछे ही पीछे है, और मैंने हे रब तेरी तरफ जल्दी इसलिए की कि तू खुश हो जाये।

८५. कहा हम ने तेरी क्रौम को तेरे पीछे आजमाईश में डाल दिया और उन्हें 'सामरी' ने भटका (कुमार्ग कर) दिया।

كُلُوا مِنْ طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَلَا تَطْغَوْا
فِيهِ فَيَحْبَلَ عَلَيْكُمْ غَضَبِي ۗ وَمَنْ يَحْبُلْ عَلَيْهِ
غَضَبِي فَقَدْ هَوَىٰ ۝٨١

وَأِنِّي لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدَىٰ ۝٨٢

وَمَا أَعْرَجَكَ عَنْ قَوْمِكَ مُوسَىٰ ۝٨٣

قَالَ هُمْ أَوْلَاءُ عَلَىٰ أَثَرِي وَعَجِلْتُ إِلَيْكَ
رَبِّ لِتَرْضَىٰ ۝٨٤

قَالَ وَإِنَّا لَمَدَدٌ قَدَّمَ قَوْمَكَ مِنْ بَعْدِكَ
وَأَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ ۝٨٥

ज्यादा तादाद में उन के पास आते थे और वे जरूरत के ऐतबार से उन्हें पकड़ कर पकते और खा लेते।

1 यानी अल्लाह की माफी का हक्कदार होने के लिए चार बातें जरूरी हैं, कुफ्र और विमुखता (शिरक) से पश्चाताप (तौबा), ईमान, नेकी का काम और सच्चे रास्ते पर चलते रहना यानी सीधे रास्ते पर चलते हुए उसे मौत आये, नहीं तो बाजेह बात है कि माफी मागने और ईमान के बाद अगर उस ने फिर शिरक और कुफ्र का रास्ता अपनाया, यहाँ तक कि उसकी मौत हो गयी और वह कुफ्र और शिरक ही पर रहा तो अल्लाह की माफी के बजाय अजाब का हक्कदार होगा।

2 हजरत मूसा के बाद 'सामरी' नाम के इंसान ने इस्राईल की औलाद को बछड़ा पूजने पर लगा दिया, जिसकी खबर अल्लाह तआला ने तूर पर ही मूसा को दी कि 'सामरी' ने तेरे पैरोकारों को भटका दिया। परीक्षा (इम्तेहान) में डालने को अल्लाह ने अपने से सम्बन्धित (मंसूब) किया है इसलिए की खालिक वही है नहीं तो भटकाने का सबब तो 'सामरी' ही था जैसाकि اضلهم السامري से बाजेह है।

८६. तो मूसा बहुत गुस्सा और गम्भीर होकर वापस लौटे, और कहने लगे कि हे मेरी क्रौम के लोगो! क्या तुम से तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं किया था? क्या उसकी मुद्दत तुम्हें लम्बी मालूम हुई? या तुम्हारा इरादा ही यह है कि तुम पर तुम्हारे रब का अजाब उतरे, इसलिए तुम ने मेरे वादे को तोड़ दिया।

८७. (उन्होंने) जवाब दिया कि हम ने अपने अधिकार (इस्तिथार) से आप के साथ वादे को नहीं तोड़ा, बल्कि हम पर जो जेवर क्रौम के लाद दिये गये थे उन्हें हम ने डाल दिया, और उसी तरह 'सामरी' ने भी डाल दिये।

८८. फिर उस ने लोगों के लिए एक बछड़ा निकाला, यानी बछड़े की मूर्ति जिसकी गाय जैसी आवाज थी, फिर कहने लगे कि यही तुम्हारा भी मावूद है और मूसा का भी, लेकिन मूसा भूल गया है।

८९. क्या ये भटके हुए लोग यह भी नहीं देखते कि वह तो उनकी बात का जवाब भी नहीं दे सकता और न उन के किसी बुरे-भले का हक (इस्तिथार) रखता है?।

९०. और हारून ने इस से पहले ही उन से कह दिया था कि हे मेरी क्रौम के लोगो! इस बछड़े से तो तुम्हारा इन्तेहान किया गया है, तुम्हारा सच्चा रब तो अल्लाह रहमान ही है तो तुम सब मेरा अनुकरण (पैरवी) करो और मेरी बात मानते चले जाओ।

كُرِّجَ مُوسَىٰ إِلَىٰ قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَيْقَانًا ۗ
قَالَ يَا قَوْمِ أَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعَدًّا
حَسَنًا ۗ أَكْفَالًا عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ أَمْ أَرَدْتُمْ
أَنْ يَحُولَ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَبِّكُمْ فَأَخْلَفْتُمُ
عَهْدِي ۖ ﴿٨٦﴾

قَالُوا مَا أَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلِكِنَا وَلَوْ
حُتِلْنَا أَوْزَارًا مِّنْ ذُنُوبِنَا قَدْ نَحْنُ فِيهَا
فَكَذَّبْتَ بِالنَّاسِ الْمَيِّتِ ﴿٨٧﴾

فَأَخْرَجَ لَهُمْ جَدلاً جَسَداً لَهُ خَوَادُّ فَقَالُوا هَذَا
إِلَهُكُمْ وَإِلَهُ مُوسَىٰ ۖ لَأَقْبَسِي ۖ ﴿٨٨﴾

أَفَلَا يَرَوْنَ إِلَّا يَمِجُّ إِلَيْهِمْ قَوْلًا وَلَا يَمِيلُ
لَهُمْ حَسْرًا وَلَا نَفْعًا ۖ ﴿٨٩﴾

وَقَدْ قَالَ لَهُمْ هَارُونُ مِنْ قَبْلُ يَا قَوْمِ إِنَّمَا
فُتِنْتُمْ بِهِ ۗ وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمَنُ فَاتَّبِعُونِي
وَاطِيعُوا أَمْرِي ۖ ﴿٩٠﴾

1 अल्लाह तजाला ने उनकी बेबकूफी और कुबुद्धि (कमअकली) का बयान करते हुए फरमाया कि इन अज्ञ के अंधों को इतना भी पता नहीं चला कि यह बछड़ा कोई जवाब दे सकता है, न फायेदा-नुकसान पहुँचाने का सामर्थ्य (कुदरत) रखता है, जबकि देवता तो वही हो सकता है जो हर इंसान की बिनती सुनने, फायेदा-नुकसान पहुँचाने और जरूरत को पूरा करने का सामर्थ्य (कुदरत) रखता हो।

९१. (उन्होंने) जवाब दिया कि मूसा के आने तक हम तो इसी के पुजारी रहेंगे।

९२. (मूसा) कहने लगे हे हारून! इन्हें भटकता देखते हुए तुम्हें किस बात ने रोक रखा था?

९३. कि तू मेरे पीछे न आया, क्या तू भी मेरी इताअत का नाफरमान बन बैठा।

९४. (हारून ने) कहा हे मेरे माँ जाये भाई! मेरी दाढ़ी न पकड़ और सिर के बाल न खींच, मुझे तो केवल यह ख्याल आया कि कहीं आप यह न कहें कि तूने इस्राईल की औलाद में इस्तिलाफ (मतभेद) पैदा कर दिया और मेरी बात की प्रतीक्षा (इतेजार) न की।

९५. (मूसा ने) पूछा, 'सामरी' तेरा क्या मुआमला है?

९६. (उस ने) जवाब दिया कि मुझे वह चीज दिखायी दी जो उन्हें न दिखायी दी, तो मैंने अल्लाह के भेजे हुए के पदीचिन्हों (नक्शे कदम) से एक मुट्ठी भर ली, उसे उस में डाल दिया।^१ इसी तरह मेरे दिल ने मेरे लिए यह बात बना दी।

९७. कहा ठीक है जा दुनियावी जिन्दगी में तेरी सजा यही है कि तू कहता रहे "मुझे न छूना" और एक दूसरा भी वादा तेरे साथ है जो तुझ से कभी न टलेगा, और अब तू अपने इस देवता को भी देख लेना, जिस पर पुजारी बना हुआ था, हम इसे जला देने फिर उसे नदी में कण-

قَالُوا لَنْ نَبْرَحَ عَلَيْهِ عٰبِدِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلَيْنَا
مُوسٰى ﴿٩١﴾

قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ ضَلُّوْا ﴿٩٢﴾

اَلَا تَتَّبِعُنَّ اَمْرِيْٓ ﴿٩٣﴾

قَالَ يَبْنَؤُورَ لَا تَأْخُذْ بِعِيْنِيْ وَلَا بِرَأْسِيْ اِنِّيْ
خَشِيْتُ اَنْ يَقُوْلَ قَوْمٌ بَيْنَ بَيْنِيْ وَاِسْرَائِيْلَ
وَلَمْ تَرْكُبْ قَوْلِيْ ﴿٩٤﴾

قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ ﴿٩٥﴾

قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَخَفَضْتُ قُبْحَهٗ
فَمِنْ اَسْفَلِ الرَّسُوْلِ فَدَبَّتْهَا وَكَدَّ لِيْكَ سَوْتٌ لِيْ
نَفْسِيْ ﴿٩٦﴾

قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ اَنْ تَقُوْلَ
لَا مَسَاسَ مَوْآءٍ لَكَ مَوْعِدًا لَنْ تُخْلَفَهُۥ وَاَنْظُرْ
اِلَى الْهٰكِ الَّذِي ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا لَنْتَحَوَّقَهُ
ثُمَّ لَنُنَافِقْهُ فِي الْحَيٰوةِ نَسْفًا ﴿٩٧﴾

^१ ज्यादा व्याख्याकारों (मुफसिस्सों) ने الرسول से मुराद जिब्रिल लिए हैं और मतलब यह वयान किया है कि जिब्रिल के छोड़े को गुजरते हुए सामरी ने देखा और उस के पद चिन्हों के नीचे की मिट्टी उस ने सम्भाल कर रख ली जिस में खिलाफे फितरत असर थे, इस मिट्टी को उसने पिघले हुए जेबरो और वछड़े में डाला तो उस में से एक तरह की आवाज निकलनी शुरू हो गई जो उनको भटकाने का सबब बनी।

कण (जर्रा-जर्रा) उड़ा देंगे !

१८. वेशक तुम सब का सच्चा मावूद केवल अल्लाह ही है, उस के सिवाय कोई मावूद नहीं उसका इल्म (ज्ञान) सभी चीजों पर हावी है ।

१९. इसी तरह हम तेरे सामने पहले के गुजरे वाक्रेआत को वयान करते हैं और वेशक हम तुझे अपने पास से नसीहत अता कर चुके हैं ।

१००. इस से जो मूंह फेरेगा वह वेशक क्रयामत (प्रलय) के दिन अपना भारी बोझ लादे हुए होगा ।

१०१. जिस में हमेशा ही रहेगा, और उन के लिए क्रयामत के दिन (वड़ा) बुरा भार है ।

१०२. जिस दिन सुर (नरसिंघा) फूका जायेगा और मुजरिमों को हम उस दिन (डर की वजह) नीली-पीली आँखों के साथ घेर लायेंगे ।

१०३. वे आपस में चुपके-चुपके कह रहे होंगे कि हम तो (संसार में) केवल दस दिन ही रहे ।

१०४. जो कुछ वे कह रहे हैं उसकी हकीकत की खबर हमें है, उन में सब से बेहतर रास्ते वाला कह रहा होगा कि तुम केवल एक ही दिन रहे ।

१०५. वे आप से पहाड़ों के बारे में सवाल करते हैं तो (आप) कह दें कि उन्हें मेरा रब कण-कण कर के उड़ा देगा ।

إِنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَسِعَ
كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٨﴾

كَذَلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ مَا قَدْ سَبَقَ
وَ قَدْ آتَيْنَاكَ مِنْ دُونِهَا ذِكْرًا ﴿١٩﴾

مَنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهُ يَحْمِلُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ وِزْرًا ﴿١٠٠﴾

خَلِيدِينَ فِيهِ وَسَاءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا ﴿١٠١﴾

يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّورِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ
زُرْقًا ﴿١٠٢﴾

يَخْتَفَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَيْسَ لَكُمْ إِلَّا عَشْرًا ﴿١٠٣﴾

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْشَاهُمْ
طَرِيقَةً إِنْ لَيْسَ لَكُمْ إِلَّا يَوْمًا ﴿١٠٤﴾

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّي
نَسْفًا ﴿١٠٥﴾

1 इस से मालूम हुआ कि मूर्तिपूजा के चिन्ह खत्म करना बल्कि उन के अस्तित्व (वजूद) के चिन्ह मिटा डालना, चाहे उनका सम्बन्ध कितने ही पाक इंसान से हो अपमान नहीं, जैसाकि अहले विद्वान्त, कब्र पूजक और ताजिया पूजक बताते हैं, बल्कि यह तो तीहीद का उद्देश्य (मकसद) और धार्मिक सम्मान (औरत) की बात है । जैसे इस घटना में उस अल-रसूल को नहीं देखा गया जिस से जाहिरी तौर पर रूहानी बरकत का मुशाहदा भी किया गया, उस के वावजूद भी उसकी चिन्ता नहीं की गयी इसलिए कि वह मूर्तिपूजन का जरिया बन गया था ।

१०६. और (धरती) को समतल चटियल मैदान करके छोड़ेगा ।

فَيَكْذِبُهَا قَاعًا صَفْصَفًا ﴿١٠٦﴾

१०७. जिस में न तो कहीं मोड़ देखेगा, न उच-नीच ।

لَا تَرَى فِيهَا عِوَجًا وَلَا أَمْتًا ﴿١٠٧﴾

१०८. जिस दिन लोग पुकारने वाले के पीछे चलेंगे जिस में कोई कमी न होगी, और अल्लाह रहमान के सामने सभी आवाजें धीमी हो जायेंगी, सिवाय खुसर-फुसर के तुझे कुछ भी न सुनाई देगा ।

يَوْمَئِذٍ يَشْمُونَ الَّذِينَ لَا يَخُوعُونَ لَهُ :
وَحَسَبَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمَنِ فَلَا تَسْمَعُ
إِلَّا هَمْسًا ﴿١٠٨﴾

१०९. उस दिन सिफारिश कुछ काम न आयेगी, लेकिन जिसे रहमान (दयालु) हुक्म दे और उसकी बात को पसन्द करे ।

يَوْمَئِذٍ لَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ
لَهُ الرَّحْمَنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا ﴿١٠٩﴾

११०. जो कुछ उन के आगे और पीछे है, उसे (अल्लाह ही) जानता है, मखलूक का इल्म (ज्ञान) उसे घेर नहीं सकता ।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يُحِيطُونَ بِهِ عِلْمًا ﴿١١٠﴾

१११. और सभी मुंह उस जिन्दा (हमेशा जिन्दा) और कायम-दायम अल्लाह के सामने अजिजी से (विनम्रतापूर्वक) झुके होंगे, बेशक वह नाकाम हो गया जिस ने जुल्म लाद लिया ।

وَعَنَتِ الْوُجُوهُ لِلْبَاقِي الْقَيُْورِ وَقَدْ حَآبَ مَنْ
حَمَلَ ظُلْمًا ﴿١١١﴾

११२. और जो नेकी का काम करे, और ईमानदार भी हो तो न उसे जुल्म का डर होगा न हकतल्फी का ।

وَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الظَّالِمَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا
يَخُفُّ ظُلْمًا وَلَا هَضْمًا ﴿١١٢﴾

११३. और इसी तरह हम ने तुझ पर अरबी (भाषा में) कुरआन उतारा है, और कई तरह से उस में डर का बयान किया है ताकि लोग परहेजगार बन जायें या उन के दिलों में सोच-विचार पैदा करे ।

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا وَوَصَرَفْنَا فِيهِ
مِنَ الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحَدِّثُ
لَهُمْ ذِكْرًا ﴿١١٣﴾

१ जुल्म यह है कि उम पर दूसरे के पापों का बोझ भी डाल दिया जाये, और हकतल्फी यह है कि नेकी का बदला कम दिया जाये, यह दोनों बातें बर्हा नहीं होंगी ।

११४. इस तरह अल्लाह (तआला) सब से बड़ा सच्चा और हकीकती मालिक है, तू कुरआन पढ़ने में जल्दी न कर इस से पहले कि तेरी तरफ जो बह्यी (प्रकाशना) की जाती है वह पूरी की जाये, और यह कह कि रब ! मेरा इल्म बढ़ा ।^१

११५. और हम ने आदम को पहले ही ताकीदी हुक्म दे दिया था, लेकिन वह भूल गया और हम ने उस में कोई निश्चय (अज़म) नहीं पाया ।

११६. और जब हम ने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस के सिवाय सब ने किया, उस ने साफ़ इन्कार कर दिया ।

११७. तो हम ने कहा कि हे आदम ! यह तेरा और तेरी बीवी का दुश्मन है, (ध्यान रहे) ऐसा न हो कि वह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा दे कि तू मुसीबत में पड़ जाये ।

११८. यहाँ तो तुझे यह सहूलत है कि न तू भूखा होता है न नंगा ।

११९. और न तू यहाँ प्यासा होता है न धूप से कष्ट उठाता है ।

فَقَتَلَىٰ اللهُ إِلَيْكَ الْحَيَىٰ ۗ وَلَا تَجْعَلْ بِالْقُرْآنِ
مِنْ قَبْلِ أَنْ يُفْطَىٰ إِلَيْكَ وَحْيُهُ وَقُلْ رَبِّ
زِدْنِي عِلْمًا ﴿١١٤﴾

وَلَقَدْ عَهِدْنَا إِلَىٰ آدَمَ مِنْ قَبْلِ فَتَيٰ
وَلَمْ نَجِدْ لَهُ عَزْمًا ﴿١١٥﴾

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ
فَسَجَدُوا ۖ إِلَّا إِبْرٰٓءِيْمَ طٰٓئِي ﴿١١٦﴾

فَقُلْنَا يَا آدَمُ إِنَّ هٰذَا عَدُوُّكَ وَ لِزَوْجِكَ فَلَا
يُخْرِجُكَمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْفَىٰ ﴿١١٧﴾

إِنَّ لَكَ الْآلَا تَجُوعُ فِيهَا وَلَا تَعْرٰٓى ﴿١١٨﴾

وَأَنَّكَ لَا تَظْمَأُ فِيهَا وَلَا تَضْحٰٓى ﴿١١٩﴾

१ जिद्दील जब बह्यी लेकर आते और सुनाते तो नबी ﷺ भी जल्दी-जल्दी साथ ही साथ पढ़ते जाते कि कही कुछ हिस्सा भूल न जायें, अल्लाह तआला ने उस से मना किया और कहा कि ध्यान से पहले बह्यी को सुने, उस के बाद याद कराना और दिल में बिठाना हमारा काम है, जैसाकि सूर: कयाम: में आयेगा ।

२ यानी अल्लाह तआला से इल्म के ज्यादा होने के लिए दुआ करते रहिये, इस में धर्मगुरुओं (आलिमों) के लिए भी नसीहत है कि धार्मिक फ़ैसले में तहकीक और गौर से काम करें, जल्दी से बचें और ज्ञान के बढ़ाने के जरियों को अपनाने में कमी न करें, इसके सिवाय इल्म से मुराद कुरआन और हदीस का इल्म है । कुरआन में इसी को इल्म कहा गया है और उन के जानकार को विद्वान (आलिम) । दूसरी चीजों का इल्म जो इंसान जिन्दगी गुज़ारने के लिए हासिल करता है, वह सभी कला हैं, शिल्प (हनुर) है और उद्योग है ।

१२०. लेकिन शैतान ने उसे वसवसे में डाला, कहने लगा कि हे आदम! क्या मैं तुझे स्थाई (दायमी) जीवन का पेड़ और वह राजपाट बतलाऊँ जो कभी पुराना न हो।

१२१. इसलिए उन दोनों ने उस पेड़ से कुछ खा लिया फिर उन के गुप्तांग (शर्मगाह) खुल गये और जन्नत के पत्ते अपने ऊपर चिपकाने लगे, आदम ने अपने रब की नाफरमानी की और बहक गया।

१२२. फिर उस के रब ने उसे नवाजा, उसकी तौबा को क़ुबूल किया और उसका मार्गदर्शन (रहनुमाई) किया।¹

१२३. कहा तुम दोनों यहाँ से उतर जाओ, तुम आपस में एक-दूसरे के दुश्मन हो, अब तुम्हारे पास जब कभी भी मेरी ओर से हिदायत पहुँचे, तो जो मेरी हिदायत का पालन करेगा, न वह बहकेगा न कठिनाई में पड़ेगा।

१२४. और जो मेरी याद से मुँह फेरेगा उसका जीवन तंग रहेगा और हम क़यामत के दिन उसे अंधा करके उठावेंगे।

تَوَسَّسَ إِلَيْهِ الشَّيْطَانُ قَالَ يَا أدمُ هَلْ
أَدْرَاكَ عَلَى شَجَرَةِ الْغُلْبِ وَمُلَيْكَ الرَّبُّ الْبَاقِي (120)

فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَّتْ لهُمَا سَوائُهُمَا وَطَافَا
يَخِصِفُن عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرْقِ الْجَنَّةِ وَوَعَّضَى
أدمُ رَبَّهُ فَعَوَّى (121)

ثُمَّ اجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدَى (122)

قَالَ اهبطَا مِنْهُمَا جَمِيعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ
وَإِنَّمَا يَأْتِيَنَّكُمْ مِنِّي هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ الَّذِينَ هَدَى
فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقَى (123)

وَمَنْ أَعْرَضَ عَن ذِكْرِي فَإِنَّ لَهُ مَعِيشَةً
ضَنْكًا وَنَحْشُرُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمَى (124)

¹ इस से कुछ लोग मतलब निकालते हुए कहते हैं कि हजरत आदम से मजकूरा (उबत) भूल नबूअत से पहले हुई, और नबूअत से आप को उसके बाद मुजव्वन किया गया, लेकिन हम ने पिछले पृष्ठ पर इस 'भूल' की जो हकीकत बयान की है, वह ग़लती से महाफ़ज़ होने के खिलाफ़ नहीं, क्योंकि ऐसी भूल और ग़लती जिसका तआल्लुक दावत और अल्लाह का पैगाम पहुँचाने और शरीअत से नहीं, बल्कि व्यक्तिगत (शख़्सी) कर्म से हो और उस में भी उसका कमज़ोर इरादा हो, तो यह हकीकत में वह पाप ही नहीं है जिस के सबब इंसान अल्लाह के ग़ज़ब का मजस्तहक़ बने। इस पर जो पाप शब्द बोला गया है वह सिर्फ़ उसकी बड़ाई और उंचे पद के सबब कि बड़ों की छोटी-सी ग़लती भी बड़ी समझ ली जाती है, इसलिए आयत का यह मतलब नहीं कि हम ने उसके बाद उसे नबूअत के लिए चुन लिया, बल्कि मतलब यह है कि शर्म और तौबा के बाद हम ने फिर उसे उंचे पद पर फ़ायज़ कर दिया जो पहले उन्हें हासिल था, उनको धरती पर उतारने का फ़ैसला, हमारी इच्छा, इल्म व हिक़मत पर (मबनी) आधारित था, इस से यह न समझ लिया जाये कि यह हमारा ग़ज़ब है जो आदम पर उतरा।

१२५. (वह) कहेगा रब ! मुझे तूने अंधा बना-
कर क्यों उठाया? हालांकि मैं देखता भूलता था।

१२६. जवाब मिलेगा कि इसी तरह होना चाहिए
था, तूने मेरी आयी हुई आयतों को भुला दिया,
इसी तरह आज तू भी भुला दिया जाता है।

१२७. और हम ऐसा ही बदला हर इंसान को
दिया करते हैं जो हृद से तजाबुज करे और
अपने रब की आयतों पर ईमान न लाये, और
बेशक आखिरत (परलोक) का अज्ञाव बहुत
कड़ा और स्थाई (दायमी) है।

१२८. क्या उनका मार्गदर्शन (हिदायत) इस
बात ने भी न किया कि हम ने उन से पहले
बहुत-सी बस्तियां हलाक कर दी हैं, जिन के
रहने वालों की जगह पर ये चल फिर रहे हैं।
बेशक इस में अक्लमंदों के लिए बहुत सी
निश्चानियां हैं।

१२९. और अगर तेरे रब की बात पहले से
सुकरर और समय निर्धारण (मूअय्यन) न
होता तो इसी वक़्त कजा आ चिमटती।

१३०. तो उनकी बातों पर सब कर और अपने
रब की पाकी और बड़ाई को बयान करता रह,
सूरज निकलने से पहले और उस के डूबने से
पहले और रात के मुखतलिफ हिस्सों में भी और
दिन के हिस्सों में भी तस्वीह करता रह।

قَالَ رَبِّ لِمَ حَضَرْتَنِي أَنعَمِي وَقَد كُنْتُ بِعَصِيًّا (125)

قَالَ كَذَلِكَ أَتَتْكَ آيَاتُنَا فَنَسِيَهَا

وَكَذَلِكَ الْيَوْمَ تُنسى (126)

وَكَذَلِكَ نُجزي مَنْ أَسرفَ وَكَمْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِ

رَبِّهِ لَوْ كَذَّبَ الْأَوْثارَ أَشَدَّ وَابْقَى (127)

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ

يَعشُونَ فِي مَسْجِدِهِمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لآيَاتٍ لِّأُولِي

النُّهى (128)

وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَكَانَ

بِرْزَامًا دَاجِلًا فَسْتَى (129)

فَأَصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ

قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوبِهَا وَمِنْ

أَنَاءِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ

تَرْضَى (130)

1 कुछ व्याख्याकारों (मुफत्सिरों) के के नजदीक तस्वीह से मुराद नमाज है और वह इस से पांच नमाजें समझते हैं। सूरज के निकलने से पहले फज्र, सूरज के डूबने से पहले अस्, रात के वक़्त मगरिब और ईश्रा और दिन के किनारों से ज़ोहर की नमाज मुराद है, क्योंकि ज़ोहर का वक़्त यह दिन के पहले हिस्से का आखिरी और दिन के आखिरी हिस्से का पहला हिस्सा है, और कुछ के नजदीक इन वक़्तों में बैसे ही अल्लाह की बड़ाई और तारीफ की जाती है जिस में नमाज, कुरआन का पढ़ना, जिक्र, दुआ और ऐच्छक (नफली) इबादत सब शामिल हैं। मतलब यह है कि आप (ﷺ) इन मूर्तिपूजकों के झुठलाने से मायूस न हों, अल्लाह की बड़ाई और तारीफ करते रहें, अल्लाह तआला जब चाहेगा उनको दबोच लेगा।

बहुत सुमकिन है कि तू खुश हो जाये ।

१३१. और अपनी निगाह कभी उन चीजों की तरफ न दौड़ाना, जो हम ने उन में से कई लोगों को दुनियावी शोभा (जीनत) के लिये दे रखी है ताकि इस में उनकी आजमाईश कर लें, तेरे रब का दिया हुआ ही (बहुत अच्छा और बाकी रहने वाला है ।

१३२. और अपने परिवार के लोगों पर नमाज के लिए हुक्म दे और खुद भी उस पर मजबूत रह, हम तुझे से रोजी नहीं मांगते बल्कि हम खुद तुझे रोजी देते हैं, आखिर में अच्छा नतीजा परहेजगारों का ही होता है ।

१३३. और (उन्होंने) कहा कि यह (नबी) हमारे लिए अपने रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं लाया? क्या उन के पास पहले की किताबों की वाजिह निशानियाँ नहीं पहुँची?

१३४. और अगर हम इस से पहले ही उन्हें अजाब से हलाक कर देते तो जरूर यह कह उठते कि हे हमारे रब ! तूने हमारे पास अपना रसूल (ईशदूत) क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का पालन करते, इस से पहले कि हम अपमानित (जलील) होते और धिक्कारे जाते ।

१३५. कह दीजिए कि हर एक नतीजे के इंतजार में है तां तुम भी इंतजार में रहो, अभी-अभी पूरे तौर से जान लो कि सीधे रास्ते वाले कौन हैं और कौन मार्ग (रास्ता) प्राप्त किये हुए हैं?

وَلَا تَمُدَّنْ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا
مِنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِنَلْبِسَهُمْ فِيهَا
وَرِزْقًا رَّبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْغَىٰ (131)

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَاةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا
لَا تَسْأَلْكَ رِزْقًا نَحْنُ نَرْزُقُكَ وَالْعَاكِفَةُ
يَلْتَقُوا (132)

وَقَالُوا لَوْلَا يَأْتِينَا بِآيَةٍ مِنْ رَبِّهِ ؕ أَوَلَمْ
تَأْتِهِمْ بَيِّنَةٌ مَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَىٰ (133)

وَلَوْ أَنَّا أَهْلَكْنَاهُمْ بِعَذَابٍ مِنْ قَبْلِهِ لَلَّاعُوا رَبَّنَا
لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَتُنْفِخُ إِلَيْكَ مِنْ
قَبْلِ أَنْ نَقُولَ وَنَخْرُجُ (134)

قُلْ كُلٌّ مُتَرَبِّصٌ فَتَرَاصُوا ۖ فَسَتَكُونُ مِنَ
أَصْحَابِ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدَىٰ (135)

इस खिताब में पूरी मुस्लिम क्रीम नबी ﷺ के मानने वाले हैं, यानी हर मुसलमान के लिए फर्ज है कि वह खुद भी नमाज पाबंदी से पढ़े और अपने परिवार वालों को भी नमाज पढ़ने पर जोर दे ।

सूरतुल अम्बिया-२१

سُورَةُ الْأَنْبِيَاءِ

सूर: अल-अम्बिया मक्का में उतरी और इस में एक सौ बारह आयतें और सात रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. लोगों के हिसाब का वक़्त करीब आ गया है, फिर भी वे गफलत (की हालत) में मुंह फेरे हुए हैं।

२. उन के पास उन के रब की तरफ से जो भी नई-नई शिक्षायें (तालिमात) आती हैं, उसे वे खेलकूद में ही सुनते हैं।

३. उन के दिल पूरी तरह माफिल हैं और उन जालिमों ने चुपके-चुपके काना-फूसीयां की कि वह तुम ही जैसा इंसान है, फिर क्या बजह है जो तुम आँखों देखे जादू में फँस जाते हो।

४. (पैगम्बर ने) कहा, मेरा रब हर बात को जो आकाश और धरती में है अच्छी तरह से जानता है, वह बहुत सुनने वाला और जानने वाला है।

५. (इतना ही नहीं) बल्कि यह तो कहते हैं कि यह कुरआन परागन्दा ख्वाबों का संग्रह (मजमूआ) है, बल्कि उस ने खुद इसे गढ़ लिया है, बल्कि यह शायर है, वरना हमारे सामने यह कोई ऐसी निशानी लाते जैसे कि पहले जमाने के पैगम्बर भेजे गये थे।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِن تَرَبُّوا لِلنَّاسِ جَسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُونَ ①

مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنْ رَبِّهِمْ مُحَدَّثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوهُ وَهُمْ يَلْعَبُونَ ②

لَاهِيَةً قُلُوبُهُمْ وَأَسْرَأَ النَّجْوَى الَّذِينَ ظَلَمُوا هَلْ هَذَا إِلَّا بَشْرٌ نَبِئْتُكُمْ أَتَأْتُونَ السَّحَرَاءَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ③

قُلْ رَبِّي يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ④

بَلْ قَالُوا أَشْءَاتٌ أَحْلَامُهُمْ بَلْ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ فَلْيَأْتِنَا بِآيَةٍ كَمَا أُرْسِلَ الْأَوْلُونَ ⑤

① हिसाब के वक़्त का मतलब क़्यामत है जो हर पल करीब हो रहा है, और हर वह चीज़ जो आने वाली है करीब है, हर इंसान की मौत खुद उस के लिए क़्यामत है, इस के सिवाय गुज़रे हुए वक़्त के मुकाबले क़्यामत करीब है क्योंकि जितना वक़्त गुज़र चुका, बाकी रहने वाला वक़्त उस से कम है।

६. इन से पहले जितनी वस्तियाँ हम ने हलाक की ईमान से खाली थी, तो क्या अब यह ईमान लायेंगे?

७. तुम से पहले भी जितने पैगम्बर हम ने भेजे सभी इंसान थे, जिन की तरफ हम वही (प्रकाशना) नाजिल करते थे, तो तुम इल्म^२ वालों से पूछ लो अगर खुद तुम्हें इल्म न हो।

८. और हम ने उन्हें ऐसे शरीर न बनाये कि वे भोजन न करें और न वह सदा जिन्दा रहने वाले थे।

مَا آمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِنْ قَوْمٍ أَهْلَكْنَاهَا

أَفَهُمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٦﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ

فَسَلُّوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٧﴾

وَمَا جَعَلْنَاهُمْ جَسَدًا ۖ لَا يَأْكُلُونَ الطَّعَامَ

وَمَا كَانُوا خَالِدِينَ ﴿٨﴾

^१ यानी सभी नबी मर्द थे, न कोई मानव जाति के सिवाय कोई नबी आया, और न कोई मर्द के सिवाय, यानी नबूअत इंसानों के साथ और इंसानों में मर्दों के साथ खास तौर से रही है। इस से मालूम हुआ कि कोई औरत नबी नहीं हुई, इसलिए कि नबूअत भी उन कर्तव्यों (फरायज) में से है, जो औरत के फितरी और तबई अमलों के दायरे से बाहर है।

^२ अहले जिक्र (जानी लोग) से मुराद किताब वाले लोग हैं, जो पहले की आसमानी किताबों का इल्म रखते थे, उन से पूछ लो कि पहले नबियों में जो गुजर चुके हैं वह इंसान थे या दूसरे? वे तुम्हें बतायेंगे कि सभी इंसान थे। इस से कुछ लोग «अनुकरण (तकलीद)» का सुबूत पेश करते हैं जो जायज नहीं। «तकलीद» में क्या होता है? केवल एक खास इंसान और उस से सम्बन्धित (मुताल्लिक) एक निर्धारित (मुतअध्यन) फिक्र को बुनियाद बनाया जाये और उसी के अनुसार काम किया जाये। दूसरा यह कि बिना किसी सुबूत के उसकी बात को कबूल कर लिया जाये। जबकि आयत में «अहले जिक्र» से मतलब कोई खास इंसान नहीं है बल्कि हर आलिम है जो तौरात और इजील (बाईबिल) का इल्म रखता था। इस से व्यक्तिगत (शख्सी) अनुकरण का खन्डन (तरदीद) होता है? इस में तो आलिमों से पूछने को कहा गया है जो आम लोगों के लिए जरूरी है, जिस से किसी को इंकार नहीं हो सकता न किसी एक इंसान के दामन को पकड़ लेने का हुक्म। इस के सिवाय तौरात और इजील आसमानी किताबें थी या किसी इंसान के अपने ह्याल? अगर तौरात और इजील आसमानी किताबें थी तो मतलब यह हुआ कि आलिमों के जरिये आसमानी किताबों के नियम मालूम करें जो आयत का उचित (मुनासिब) मायेना है, और अगर वह किसी एक खास इंसान, गुरु, और उस के शिष्यों के उपदेश (अकवाल) की संग्रह (मजमूआ) थी तो फिर जरूर फिक्रही (वैचारिक) तकलीद (अनुकरणवाद) का मतलब इस आयत से निकल आता है, लेकिन क्या आसमानी किताबें और इंसानों के जरिये लिखी गई फिक्रही किताबें दोनों एक ही जगह रखे जाने के लायक है?

९. फिर हम ने उन से किये हुए सभी वादे सच कर दिखाये, उन्हें और जिन-जिन को हम ने चाहा नजात दी और हद से बढ़ने वालों को हलाक कर दिया ।

१०. बेशक हम ने तुम्हारी तरफ किताब उतारी है, जिस में तुम्हारे लिए शिक्षा (नसीहत) है। क्या फिर भी तुम अकल का इस्तेमाल नहीं करते?

११. और बहुत सी बस्तियाँ हम ने हलाक कर दी जो जालिम थीं, और उन के बाद हम ने दूसरी क्रौम पैदा किया ।

१२. जब उन लोगों ने हमारे अजाब का एहसास कर लिया तो उस से (प्रकोप से) भागने लगे ।

१३. भाग-दौड़ न करो और जहाँ तुम्हें सुख अता किया गया था, वही वापस लौटो और अपने घरों की ओर जाओ ताकि तुम से सवाल तो कर लिया जाये ।

१४. वे कहने लगे हमारा बुरा हो बेशक हम जालिम थे ।

१५. फिर तो उनका यही कौल रहा, यहाँ तक कि हम ने उन्हें जड़ से कटी हुई खेती और बुझी पड़ी आग (की तरह) कर दिया ।

१६. हम ने आकाश और धरती और उन के बीच की चीजों को खेल के लिए नहीं बनाया ।

ثُمَّ صَدَقْنَاهُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجَيْنَاهُمْ وَمَنْ نَشَاءُ
وَأَهْلَكْنَا السُّرُوفِينَ ﴿٩﴾

لَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ كِتَابًا فِيهِ ذِكْرُكُمْ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿١٠﴾

وَكَمْ قَصَبْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً
وَأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿١١﴾

فَلَمَّا أَحْسَبُوا أَنَّكُمْ آذَانُهُمْ وَهِيَ
يُرِيقُونَ ﴿١٢﴾

لَا تَرْجِعُوا وَارْجِعُوا إِلَى مَا أُتْرِفْتُمْ فِيهِ
وَسَكَنتُمْ لَعَلَّكُمْ تَنْتَهُنَّ ﴿١٣﴾

قَالُوا يَا وَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿١٤﴾

فَمَا زَالَت تِلْكَ دَعْوَاهُمْ حَتَّى جَعَلْنَاهُمْ
حَصِيدًا خَالِدِينَ ﴿١٥﴾

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
لَهْوٍ ﴿١٦﴾

१ 'कटी हुई खेती और खुद आग के बुझ जाने को कहते हैं, अग्निर के कटी हुई खेती की तरह हो गये और बुझी हुई आग की तरह राख का ढेर हो गये, कोई ताकत, जोर और संवेदन उन के अन्दर न रही ।

१७. अगर हम इसी तरह तमाशा खेल चाहते तो उसे अपने पास से ही बना लेते, अगर हम ऐसा करने वाले ही होते।

१८. बल्कि हम सच को झूठ पर फेंक मारते हैं, तो सच, झूठ का सिर तोड़ देता है और वह उसी समय नाबूद हो जाता है, तुम जो बातें बनाते हो वे तुम्हारे लिए खराबी का सबब है।

१९. और आकाशों और धरती में जो कुछ है, उसी (अल्लाह) का है, और जो उसके पास है वे उसकी इबादत से न सरकशी करते और न थकते हैं।

२०. वे दिन-रात उसकी पाकीजगी का बयान करते हैं, और जरा भी सुस्ती नहीं करते।

२१. उन लोगों ने धरती (की तखलीक में) से जिन्हें माबूद बना रखा है, क्या वह जिन्दा कर देते हैं?

२२. अगर आकाश और धरती में अल्लाह के सिवाय दूसरे भी माबूद होते तो यह दोनों उलट-पलट हो जाते।^१ बस अल्लाह अर्श का रब हर उस गुण (सिपत) से पाक है, जो ये मूर्तिपूजक बयान करते हैं।

كُوْرِدْنَا اَنْ نَّتَّخِذَ لَهُمْ اَزْوَاجًا مِمَّنْ دُونَنَا اِنْ كُنَّا فَعَالِينَ ﴿١٧﴾

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَاِذَا هُوَ زَاقِقٌ وَاَنْتُمْ اَوَّلَ الْيَوْمِ مَسْأَلُونَ ﴿١٨﴾

وَكُلٌّ مِنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط وَاَمِّنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَلَا يَسْتَخْسِرُوْنَ ﴿١٩﴾

يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ﴿٢٠﴾

اَوَلَمْ نَخْلُقْهَا اِلَهًا مِّنْ اَرْضٍ مَّهِمَّةٌ يُّسَبِّحُوْنَ ﴿٢١﴾

لَوْ كَانَ فِيْهَا اِلَهٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يُصِفُوْنَ ﴿٢٢﴾

^१ इस से मुराद फरिश्ते हैं, वे भी अल्लाह के दास और बंदे हैं। इन शब्दों से उनकी इज्जत और एहतेराम जाहिर होती है कि वे अल्लाह के करीब हैं। उसकी (अल्लाह की) पुत्रियां नहीं हैं, जैसा कि मुशरिक लोगों का अक्कीदा (विश्वास) था।

^२ यानी अगर हकीकत में आकाश और धरती के दो ईश्वर होते तो इस दुनिया की हकदार दो ताकतें होती। दो का इरादा, अकल और मर्जी काम करती और जब दो की मर्जी और फैसला दुनिया में चलता तो यह दुनिया की व्यवस्था (तदबीर) रह ही नहीं सकती थी जो शुरू से बिना रुकावट के चली आ रही है। क्योंकि दोनों की मर्जी में आपसी टकराव होता और दोनों की चाहत एक-दूसरे के विपरीत (मुखालिफ) दिशा में इस्तेमाल होती, जिसका नतीजा बिखराव और बरबादी के रूप में पैदा होता, और अब तक ऐसा नहीं हुआ तो इसका साफ मतलब यह है कि दुनिया में केवल एक ही ताकत है, जिसकी मर्जी और हुक्म चलता है, जो कुछ भी होता है सिर्फ उसी के हुक्म पर होता है। उस के दिये हुए को कोई रोक नहीं सकता और जिस से वह अपनी दया रोक ले उसको देने वाला कोई नहीं।

२३. वह अपने कामों के लिए (किसी के सामने) उत्तरदायी (जवाबदेह) नहीं और सभी (उस के सामने) उत्तरदायी हैं।

२४. क्या उन लोगों ने अल्लाह के सिवाय दूसरे माबूद बना रखे हैं, उन से कह दो लाओ अपना सुवूत पेश करो, यह है मेरे साथ वालों की किताब और मुझ से पहले वालों का सुवूत। वात यह है कि उन में ज़्यादातर हक से अज्ञान हैं, इसी वजह से मूह मोड़ें हैं।

२५. और हम ने तुम से पहले जो रसूल (सदेशवाहक) भी भेजा, उसकी तरफ यही वही (ईशवाणी) नाज़िल (अवतरित) की कि मेरे सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं, तो तुम सब मेरी ही इबादत (उपासना) करो।

२६. और (मुरिरक) कहते हैं रहमान (कृपालु) की औलादें हैं (गलत है) वह पाक है। वरना वे (जिन्हें ये पुत्र समझ रहे हैं) उसके वाइज़्जत बदे हैं।

२७. उस के (अल्लाह के) सामने बढ़कर नहीं बोलते, और उस के हुक्म पर अमल करते हैं।

२८. वह उन के पहले और बाद की सभी हालतों से अवगत (वाकिफ़) है, और वे किसी की भी सिफ़ारिश नहीं करते सिवाय उस के जिस से वह (अल्लाह) खुश हो। वे तो खुद कांपते और डरते रहते हैं।

لَا يُسْئَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْئَلُونَ ﴿٢٣﴾

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ ذُلًّا مَّا تَوَّابًا
بُرْهَانَكُمْ هَذَا ذِكْرٌ مِنْ رَبِّي وَذِكْرٌ مَنْ
قَبْلِي ذُلًّا بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿الْحَقُّ فِيهِمْ
مُعْرَضُونَ﴾ ﴿٢٤﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي
إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمَنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ ذُلًّا بَلْ عِبَادٌ
مُكْرَمُونَ ﴿٢٦﴾

لَا يَسْتَفْتُونَكَ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهِ يُعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يُشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنْ أَرَادَ مِنْهُمْ مِنْ
خَشِيئَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾

1 इस से मालूम हुआ कि नबियों और स्वालेह लोगों (पुनीत लोग) के सिवाय फरिश्ते भी सिफ़ारिश करेंगे, सही हदीस से भी इसका समर्थन (ताईद) मिलता है, लेकिन यह सिफ़ारिशें उन्हीं के लिए होंगी जिन के लिए अल्लाह तआला चाहेगा। और जाहिर बात है कि अल्लाह तआला यह सिफ़ारिश अपने नाफ़रमान बंदों के लिए नहीं बल्कि केवल पापी, लेकिन फ़रमावहारदार लोगों यानी ईमान वालों व एकेश्वरवादियों के लिए पसन्द फ़रमायेगा।

२९. और उन में से कोई कह दे कि अल्लाह के सिवाय मैं इलाह (पूजनीय) हूँ, तो हम उसे नरक की सजा दें, हम जालिमों को इसी तरह सजा देते हैं।

३०. क्या काफिरों ने यह नहीं देखा कि (ये) आकाश और धरती (सब के सब) आपस में मिले हुए थे, फिर हम ने उन्हें अलग-अलग किया, और हर जानदार को हम ने पानी से पैदा किया।^१ क्या यह लोग फिर भी यकीन नहीं करते ?

३१. और हम ने धरती पर पहाड़ बना दिये, ताकि वह मखलूक को हिला न सके, और हम ने इस में उन के बीच चौड़े रास्ते बना दिये ताकि वह रास्ता हासिल कर सकें।

३२. और आकाश को हम ने एक महफूज (सुरक्षित) छत बनाया है, लेकिन वह लोग उसकी निशानियों पर ध्यान नहीं देते।

३३. और वही (अल्लाह) है जिस ने रात-दिन और सूरज-चाँद को बनाया।^२ उन में से सभी अपने-अपने मदार (कक्ष) में तैर रहे हैं।^३

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ رَبِّيَ إِلَهُ مُنْ دُونِهِ قَدْ لِك
نَجْزِيَهُ جَهَنَّمَ كَذَلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ
كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ
كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِي أَنْ يَقْبَلَ بِهِمْ
وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سَبِيلًا لَعَلَّهُمْ
يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾

وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَحْفُوظًا وَهُمْ عَنْ
آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾

^१ इसका मतलब आँख से देखना नहीं बल्कि दिल की आँखों से देखना है, यानी क्या उन्होंने सोच-विचार नहीं किया या उन्होंने जाना नहीं?

^२ इसका मतलब वर्षा और चरमों (स्रोतों) के पानी है, तब भी बाजेह रहे कि इससे तरावट होती है और हर जानदार को नई जिन्दगी देता है और अगर इसका मतलब मनी है तो इस में भी कोई कर्ठनाई नहीं, क्योंकि हर जानदार के अस्तित्व (वजूद) का सबब वह पानी की वृद्धि है, जो मर्द की पीठ से निकलता है और स्त्री के गर्भाशय (रिहम) में जाकर एक नये प्राणी (मखलूक) को जन्म देने का सबब बनता है।

^३ यानी रात को आराम और दिन को काम के लिए बनाया, सूरज को दिन की निशानी और चाँद को रात की निशानी बनाया, ताकि महीनों और सालों का हिसाब लगाया जा सके, जो इंसान के लिए खास जरूरत है।

^४ जिस तरह से तैरने वाला पानी के ऊपर तैरता है, उसी तरह से चाँद और सूरज अपने मदार (कक्ष) में अपनी मुकर्रर रफतार से चलते हैं।

३४. और आप से पहले हम ने किसी भी व्यक्ति को हमेशगी नहीं दी, फिर क्या अगर आप मर गये तो यह सदा के लिए रह जायेंगे?'

३५. हर नपस (जीव) को मौत का भजा चखना है, और हम इम्तेहान के लिए तुम्हें बुराई-भलाई में डालते हैं^{३५} और तुम सब हमारी तरफ पलटकर आओगे।

३६. और जिन लोगों ने कुफ्र (अविश्वास) किया वे जब तुम को देखते हैं तो बस तुम्हारी हीसी उड़ाते हैं, (कहते हैं) कि क्या यही वह है जो तुम्हारे देवताओं (पूज्यों) की चर्चा बुराई से करता है? और वह खुद ही रहमान (कृपालु) का जिक्र (महिमा) करने से इंकार करते हैं।

३७. इंसान पैदाईशी उतावला है, मैं तुम्हें अपनी निशानियाँ (लक्षण) जल्द ही दिखाऊँगा, तुम मुझ से जल्दी न करो।

३८. और कहते हैं कि अगर सच्चे हो तो बताओ कि वह वादा (यातना) कब पूरा होगा।

وَمَا جَعَلْنَا لِيَشْرَبَ مِنْ قَبْلِكَ الْخَلْدَ
أَقَابِينَ وَمَتَّ فَهُمُ الْغَالِيُونَ ﴿٣٥﴾

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَمَنْ يُؤْتِكُمْ بِالشَّرِّ
وَ الْخَيْرِ فِتْنَةٌ وَأَنْتُمْ تُرْجَعُونَ ﴿٣٦﴾

وَإِذَا رَأَى الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ يَخْتَضِعُونَ لَكِ إِلَّا
هُزُوءًا أَمْ حَدَاءَ الَّذِينَ يَذْكُرُونَ آيَاتِنَا وَهُمْ
يَذْكُرُونَ الرَّحْمَنِ هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٦﴾

خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ عَلَجٍ لَسَأُولِيكُمْ آيَاتِي
فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٣٨﴾

^१ यह काफ़िरो के जवाब में है जो आप (ﷺ) के वारे में कहते थे कि एक दिन आप को मर ही जाना है। अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि मौत तो हर इंसान को आनी ही है और इस के ऐतबार से बेशक मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ भी इस नियम से अलग नहीं, क्योंकि वह भी इंसान ही है, और हम ने किसी इंसान को हमेशा के लिए इस धरती पर ज़िन्दा रहने के लिए नहीं छोड़ दिया है। इसका मतलब यह तो नहीं कि क्या यह बात कहने वाले इस धरती पर ज़िन्दा रहेंगे? इस से मूर्तिपूजकों और क़ब्र पूजने वालों का भी खण्डन (तरदीद) हो गया, जो देवताओं, नबियों, बुज़ुर्गों के हमेशा ज़िन्दा रहने का भ्रम रखते हैं, इसी बिना पर उनको अपना दुखहारी, मुश्किल कुशा समझते हैं, इस गलत क़याल से हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं।

^२ यानी कभी दुख-दर्द में घेरकर, कभी दुनियावी आसानी से, कभी सेहत और खुबहाली से, कभी तंगी और बीमारी से, कभी धन-दौलत देकर और कभी भूख-प्यास देकर हम इम्तेहान (परीक्षा) लेते हैं कि हम देखें कि कौन फिर भी शुक्रगुजार है और कौन नाशुकरा (कृतघ्न)? कौन सब करता है और कौन सहन नहीं करता? शुक्र व सब (शुक्र और धैर्य) अल्लाह को खुश करने वाले हैं और नाशुकी और नासब्री उस सब के अज़ाब की बजह है।

३९. अगर ये काफिर जानते कि उस समय न तो ये आग को अपने चेहरों से हटा सकेंगे और न अपनी पीठों से, और न इन की मदद की जायेगी।

४०. हाँ, हाँ! वादा की घड़ी (क़्यामत का दिन) उन के पास अचानक आ जायेगी और उन्हें वह हबका बबका कर देगी, फिर न तो यह लोग उसे टाल सकेगे और न ही उन्हें तनिक भी समय दिया जायेगा।

४१. और तुम से पहले रसूलों का भी मजाक किया गया तो जिन्होंने मजाक किया, उन्हें ही उस चीज ने आ घेरा जिसका वे मजाक करते थे।

४२. उनसे पूछिये कि रहमान (क़पालू) से रात और दिन तुम्हारी रक्षा (हिफाजत) कौन कर सकता है? बल्कि यह अपने रव के जिक्र (महिमा) करने से फिरे हुए है।

४३. क्या हमारे सिवाय उनके कोई और इलाह (पूजनीय) है जो उन्हें मुसीबत से बचाते हों? कोई भी खुद अपनी मदद करने की ताकत नहीं रखता, और न कोई हमारी तरफ से साथ दिया जाता है।

४४. बल्कि हम ने इन्हें और इनके बुजुर्गों को जिन्दगी की सामग्री (आसाइड) दी, यहाँ तक कि उनकी उम्र की सीमा खत्म हो गयी, क्या वह नहीं देखते कि हम जमीन को उस के किनारों से घटाते चले आ रहे हैं? तो अब क्या वही गालिब है?

४५. कह दो कि मैं तो केवल तुम्हें अल्साह की बह्यी के ज़रिये बाखबर करता हूँ, लेकिन वहरे इंसान पुकार को नहीं सुनते, जबकि उन्हे सचेत

لَو يَعْلَمُونَ الَّذِينَ كَفَرُوا حِينَ لَا يَكْفُونَ
عَنْ دُجُوبِهِمْ النَّارَ وَلَا عَنْ طُهُورِهِمْ
وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٣٩﴾

بَلْ تَأْتِيهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ
رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٤٠﴾

وَلَقَدْ اسْتَهْزَأُ بِرُسُلٍ مِنْ قَبْلِكَ قَمَاقٍ بِالَّذِينَ
سَخَّرُوا مِنْهُمْ مَا كَانُوا بِهِمْ يُسْتَهْزِءُونَ ﴿٤١﴾

قُلْ مَنْ يَكْفُرْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمَنِ
بَلْ نَحْمُهُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُعْرِضُونَ ﴿٤٢﴾

أَمْ لَهُمْ آلِهَةٌ تَسْتَعْتَمُونَ مِنْ دُونِنَا لَا يَسْتَطِيعُونَ
نَصْرَ أَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ يَنْصَرُونَ ﴿٤٣﴾

بَلْ مَتَّعْنَا هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى طَالَ عَلَيْهِمُ
الْعُمُرُ أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا
مِنْ أَطْرَافِهَا أَمْ لَهُمُ الْغُلْبُونَ ﴿٤٤﴾

قُلْ إِنَّمَا أُنذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ وَلَا يَسْمَعُ
الصَّمْعُ الدُّعَاءَ إِذَا مَا يُنذَرُونَ ﴿٤٥﴾

किया जा रहा हो।

४६. और अगर उन्हें तेरे रब के अजाब की भाप भी लग जाये तो पुकार उठें कि हाय हमारी बरबादी! बेशक हम ज़ालिम थे।

४७. और हम क़यामत के दिन उन के बीच ठीक-ठीक तौल की तराजू ला रखेंगे, फिर किसी पर किसी तरह का जुल्म न किया जायेगा, और अगर एक सरसों के दाने के बराबर भी (अमल) होगा उसे हम सामने लायेंगे, और हम हिसाब करने के लिए काफी हैं।^{४६}

४८. और यह पूरी तरह से सच है कि हम ने मूसा और हारून को फ़ैसला करने वाली रौशन और नेक लोगों के लिए नसीहत वाली किताब अता की है।

४९. वह लोग जो बिन देखे अपने रब से डरते हैं और जो क़यामत के (विचार) से काँपते रहते हैं।

५०. और यह नसीहत व बरकत वाला क़ुरआन हम ने ही उतारा है, फिर भी तुम क्या इस से इंकार करते हो?

وَلَيْنَ مَسَّتْهُمُ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ
يَوْمَئِذٍ إِنَّا لَنَّا ظَالِمِينَ ﴿٤٦﴾

وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلَا تُظْلَمُ
نَفْسٌ شَيْئًا ؕ وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ
خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ؕ وَكُلُّ شَيْءٍ حَاسِبِينَ ﴿٤٧﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ وَهَارُونَ الْفُرْقَانَ
وَضِيَاءً ؕ وَذِكْرًا لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٤٨﴾

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَهُمْ
مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُونَ ﴿٤٩﴾

وَهَذَا ذِكْرٌ مُّبِينٌ أَنزَلْنَاهُ ؕ أَفَأَنْتُمْ لَكَ
مُكْرِمُونَ ﴿٥٠﴾

^{४६} मीज़ान - तराजू) का बहुवचन (जमा) है। अमलों को तौलने के लिए क़यामत के दिन या तो कई तराजू होंगी या तराजू एक ही होगी, लेकिन उसकी खास अज़मत के लिए या अमल की तादाद के हिसाब से इसे बहुवचन के तौर पर इस्तेमाल किया गया है। इंसान के अमल तो भौतिक (ज़िस्मानी) नहीं यानी इनकी खुले तौर से कोई शकल तो नहीं है, फिर उसको तौला किस तरह से जायेगा? यह सवाल आज से पहले तक तो शायद कोई अहमियत (विशेषता) रखता था, लेकिन आज के साइंसी अविष्कार (इंजाद) ने इसे मुमकिन बना दिया है। अब इन अविष्कारों के ज़रिये बिना शकल और बिना वज़न की चीज़ों को भी नापा तौला जाने लगा है। जब इंसान यह कुदरत रखता है तो अल्लाह तआला के लिए उन अमलों को जो बिना शकल है, तौलना कौन सा कठिन काम है, उसकी तो शान ही निराली है।

५१. और बेशक हम ने इस से पहले इब्राहीम को समझ बूझ अता किया था, और उसकी हालत से अच्छी तरह परिचित (वाकिफ) थे।

५२. जब उस ने अपने पिता और अपनी जाति वालों से कहा कि यह मूर्तियाँ, जिन के तुम पुजारी बने बैठ हो, ये क्या हैं ?

५३. उन्होंने कहा, हम ने अपने बाप-दादा को इनकी इबादत (पूजा) करते पाया है।^१

५४. आप ने कहा फिर तो तुम और तुम्हारे बाप-दादा खुली गुमराही में थे।

५५. उन्होंने कहा कि क्या आप हकीकत में हक लाये हैं या यूँ ही मजाक कर रहे हैं।

५६. आप ने कहा (नहीं) बल्कि हकीकत में तुम्हारा खब आकाशों और धरती का खब है, जिस ने उन्हें पैदा किया है और मैं तो इसी बात का गवाह (और मानता) हूँ।

५७. और अल्लाह की क्रसम मैं तुम्हारी मूर्तियों का इलाज जरूर करूँगा जब तुम पीठ फेर कर चल दोगे।

وَلَقَدْ آتَيْنَا إِبْرَاهِيمَ رُشْدَهُ مِن قَبْلُ وَكُنَّا بِهِ
عَالِمِينَ ﴿٥١﴾

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا هَذِهِ الْقَوْمِ
الَّتِي اتَّخَذْتُمُوهَا عِبَادَةً ﴿٥٢﴾

قَالُوا وَبِحَدِيثِ آبَاءِنا كُنَّا عَلَيْمِينَ ﴿٥٣﴾

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنتُمْ وَآبَاؤُكُمْ فِي ضَلَالٍ
عُتُوبٍ ﴿٥٤﴾

قَالُوا أَجَعَلْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنْتَ مِنَ اللَّاعِبِينَ ﴿٥٥﴾

قَالَ بَلْ زُيِّنَ لَكُمْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
الَّتِي تَدْعُونَ بِذُكْرِكُمْ مِنَ الشُّهُودِ ﴿٥٦﴾

وَتَأْتِيهِمْ لَآئِكِنْدَانِ أَصْحَابُكُمْ بَعْدَ أَنْ
قُولُوا صَدَقَ الرَّبُّ ﴿٥٧﴾

¹ من قبل का मतलब या तो यह है कि हजरत इब्राहीम को इल्म (नसीहत और अक्ल) देने का किस्सा हजरत मूसा को तौरात देने से पहले का है, या यह मतलब है कि हजरत इब्राहीम की नबी होने से पहले ही इल्म अता कर दिया गया था।

² जिस तरह आज भी जिहालत और गलत अक्रीदे में फंसे हुए मुसलमानों को बिदअत (इस्लाम धर्म में नई बात पैदा करना, जिसका इस्लाम धर्म (दीन) के नियमों से कोई मतलब या सबूत न मिलता हो) और बेकार की रस्मों से रोका जाता है तो जवाब देते हैं कि हम इन्हें किस तरह छोड़ दें, जबकि हमारे पूर्वजों (बुजुर्गों) को भी यही करते देखा है, और यही जवाब वह लोग भी देते हैं जो किताब व सुन्नत के हुबम को छोड़कर आलिमों और उनकी तरफ सम्बन्धित फिकह (धर्मबोध) से सम्बन्धित (मन्सूब) रहने को ही जरूरी समझते हैं।

५८. तो उस ने उन सब के टुकड़े-टुकड़े कर दिये, बस केवल बड़ी मूर्ति को छोड़ दिया, यह भी इसलिए कि वह लोग उसकी तरफ पलटें।

فَجَعَلَهُمْ جُودًا إِلَّا كَيْدَ الْهَمْلِكُمْ لَعْنَهُمْ لِيَكْفُرُوا بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٥٨﴾

५९. वे कहने लगे कि हमारे देवताओं की यह दुर्गत किस ने की, ऐसा इंसान जरूर जालिम होगा।

قَالُوا مَنْ مَكَلَ هَذَا بِالْهَيْتِنَا إِنَّهُ لَكَيْدٌ الظَّالِمِينَ ﴿٥٩﴾

६०. बोले कि हम ने एक नौजवान को इन के घारे में बात करते हुए सुना था, जिसे इब्राहीम कहा जाता है।

قَالُوا سَمِعْنَا فَتًى يَذُكُرُهُمْ يُقَالُ لَهُ الْبَرِّهِيمُ ﴿٦٠﴾

६१. उन्होंने कहा, तो उसे सब की आँखों के सामने ले आओ ताकि सब देखें।

قَالُوا أَفَأَتُوبُهُ عَلَىٰ آيَاتِنَا النَّاسِ لَعْنَهُمْ يَشْهَدُونَ ﴿٦١﴾

६२. कहने लगे हे इब्राहीम! क्या तूने ही हमारे देवताओं की यह दुर्गत बनाई है?

قَالُوا أَأَنْتَ مَكَلْتَ هَذَا يَا هَيْتِنَا يَا الْبَرِّهِيمُ ﴿٦٢﴾

६३. आप ने जवाब दिया, बल्कि यह काम तो उन के बड़े देवता ने किया है, तुम अपने देवताओं से पूछ लो अगर वह बोलते हों।

قَالَ بَلْ كَعَلَهُ كَيْدُهُمْ هَذَا فَاصْبِرْ لَهُمْ رَانَ كَالَّذِينَ يُظِلُّونَ ﴿٦٣﴾

६४. अतः उन्होंने अपने मन में मान लिया और (मन ही में) कहने लगे कि हकीकत में तुम खुद जालिम हो।

فَرَجِعُوا إِلَىٰ أَنفُسِهِمْ فَقَالُوا إِنَّكُمْ أَنْتُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٦٤﴾

६५. फिर औंधे सिर डालकर (कुछ सोच-समझ कर, अगरचे वे कुबूल कर चुके थे फिर भी वे बोले) कि यह तुम जानते हो कि यह नहीं बोलते।

ثُمَّ لِيَسْأَلُوا عَلَىٰ رُءُوسِهِمْ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَا هَؤُلَاءِ يَظُنُّونَ ﴿٦٥﴾

1 तो जिस दिन अपनी ईद या कोई त्योहार मनाने के लिए सारी जाति के लोग बाहर चले गये तो हजरत इब्राहीम ने अच्छा समय जानकर मूर्तियों को तोड़-फोड़ डाला, केवल एक बड़ी मूर्ति रहने दी, कुछ आलिम कहते हैं कि उन्होंने कुल्हाड़ी उस बड़ी मूर्ति के हाथ में फंसा दी, ताकि उस मूर्ति से पूछें।

६६. (इब्राहीम ने) उसी समय कहा, हाय! क्या तुम उनकी इबादत करते हो जो न तुम्हें कुछ भी फायदा पहुंचा सकते हैं और न नुकसान।

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ ﴿٦٦﴾

६७. धू है तुम पर और उन पर जिनकी तुम अल्लाह के सिवाय इबादत करते हो, क्या तुम्हें इतनी भी अक्ल नहीं ?

أَيُّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

६८. उन्होंने कहा कि इसे जला दो और अपने देवताओं की मदद करो, अगर तुम्हें कुछ करना है तो !¹

قَالُوا حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ فاعِلِينَ ﴿٦٨﴾

६९. हम ने कहा, हे आग ! तू ठडी हो जा और इब्राहीम के लिए सलामती [(शान्ति) और सुखदायी] बन जा।

قُلْنَا يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾

७०. अगरचे उन्होंने उस (इब्राहीम) का बुरा चाहा, लेकिन हम ने उन्हें ही नाकाम (असफल) कर दिया।

وَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْخٰسِرِينَ ﴿٧٠﴾

७१. और हम (इब्राहीम) और लूत को बचाकर उस ज़मीन की तरफ ले गये, जिस में हम ने सारी दुनिया के लिये बरकतें रखी थी।²

وَنَجَّيْنَاهُ وَلُوطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا لِلْعَالَمِينَ ﴿٧١﴾

७२. और हम ने उसे इसहाक अता किया, और उस पर ज़्यादा याकूब, और हर एक को नेक बनाया।³

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ نَافِلَةً ۚ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِينَ ﴿٧٢﴾

¹ हजरत इब्राहीम ने जब अपनी दलील पेश कर दिया और उनकी गुमराही (बिपथा) और बेबकूफी को इस तरह से जाहिर किया कि उन के पास कोई जवाब न रहा, तो चूँकि वे गुमराह थे और कुफ़र और शिर्क ने उन के दिल में अधेरा कर दिया था, इसलिए बजाय शिर्क छोड़ने के उलटे हजरत इब्राहीम की मुखालफत में और कड़े हो गये और अपने देवताओं की दुहाई देकर उनको आग में डालने की तैयारी करने लगे।

² इस से मुराद बहुत से मुफ़स्सिरो ने सीरिया देश लिया है, जिसको हरियाली, फलों और नहरों की ज़्यादती और नवियों की रिहाईश होने के सबब बरकत (मंगलमय) कहा गया है।

³ نافلة ज़्यादा को कहते हैं। हजरत इब्राहीम ने तो केवल बेटे की तमन्ना की थी, उनकी तमन्ना के अलावा पौता भी प्रदान (अता) किया।

७३. और हम ने उन्हें इमाम बना दिया कि हमारे हुक्म से लोगों की रहनुमाई करें और हम ने उनकी तरफ नेक अमल करने और नमाज कायम करने और जकात देने की वहयी (प्रकाशना) की और वे सब के सब हमारे पुजारी थे।

७४. और हम ने लूत को भी हिक्मत और इल्म अता किया, और उसे उस बस्ती से नजात दिया जहाँ के लोग गन्दे कामों में लिप्त (मुत्तिला) थे और हकीकत में वे बुरे गुनहगार लोग थे।

७५. और हम ने उसको (लूत को) अपनी रहमत (कृपा) में शामिल कर लिया, वेशक वह नेक लोगों में से था।

७६. और नूह के उस समय को (याद करो) जब उस ने इस से पहले दुआ (विनया) की हम ने उस की दुआ (विनय) कुबूल की, और हम ने उस को और उस के परिवार को बड़े दुख से आजाद कर दिया।

७७. और उस क्रौम के मुकाबले में उसकी मदद की जिस ने हमारी आयतों को झुठलाया था, हकीकत में वे बुरे लोग थे तो हम ने उन सब को डुबो दिया।

وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُهَدُونَ بِأَمْثَلِنَا وَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَإِقَامَ الصَّلَاةِ وَإِيتَاءَ الزَّكَاةِ وَكَانُوا لَنَا عَابِدِينَ ﴿٧٣﴾

وَلُوطًا إِتَيْنَهُ حُكْمًا وَعِلْمًا وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَ تَعْمَلُ الْخَبِيثَاتُ فِيهَا وَكَانُوا قَوْمًا سَوِيًّا ﴿٧٤﴾

وَأَدْخَلْنَاهُ فِي رَحْمَتِنَا إِنَّهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٧٥﴾

وَلُوحًا إِذْ نَادَى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ﴿٧٦﴾

وَنَصْرْنَاهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا سَوِيًّا فَاعْرِضْ لَهُمْ أَمْثَلِنَا ﴿٧٧﴾

हजरत लूत हजरत इब्राहीम के भाई के पुत्र (भतीजे) थे, और हजरत इब्राहीम पर ईमान लाये थे और उन के साथ ईराक से यात्रा करके सीरिया जाने वालों में से थे, अल्लाह ने उनको भी इल्म व हिक्मत यानी नव्वअत अता की थी, वह जिस इलाके के लिए नबी बनाकर भेजे गये थे, उसे अमूर: और सदूम कहा जाता है। यह फिलिस्तीन के मुदा सागर से लगा हुआ जार्डन की ओर उपजाऊ इलाका था, जिसका बड़ा हिस्सा अब मृत सागर का एक हिस्सा है, उनकी जाति वाले गुदा मैथुन (लिवातत) जैसे बुरे कामों, रास्तों पर बैठकर राहियों पर आवाजें कसने और उन्हें तंग करने, कंकरिया मारने में मशहूर थे, जिसे अल्लाह तआला ने खवाएस (कुकर्म) कहा है। आखिर में हजरत लूत और उसके पैरोकारों को अपनी रहमत में दाखिल करके यानी उन को बचाकर क्रौम का सत्यानाश कर दिया।

७८. और दाऊद और सुलैमान को (याद कीजिए) जबकि वे खेत के बारे में फैसला (निर्णय) कर रहे थे कि कुछ लोगों की बकरियाँ रात को उस में चर गयी थीं और उन के फैसले में हम मौजूद थे।

७९. तो हम ने उसका सहीह फैसला सुलैमान को समझा दिया,¹ बेशक हम ने हर एक को हिक्मत और इल्म दे रखा था, और दाऊद के अधीन (तावे) हम ने पहाड़ कर दिये थे जो तस्वीह (महिमा) करते थे² और पक्षियों को भी,³ ऐसा हम करने वाले ही थे।

८०. और हम ने उसे तुम्हारे लिये कपड़ा (कबच) बनाना सिखाया, ताकि लड़ाई (के नुकसान) से तुम्हारा बचाव कर सके,⁴ फिर क्या तुम अब

وَدَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ إِذْ يَحْكُمُونَ فِي الْحَرْثِ
إِذْ نَفَسْتُمْ فِيهِ غَمَامُ الْقَوْمِ ۗ وَتُتَابِعُكُمْ
شُهَدَاؤُكُمْ ۗ

فَقَهَّمْنَاهَا سُلَيْمَانَ ۗ وَكُلًّا آتَيْنَاهُمْ حُكْمًا وَعِلْمًا
وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحُونَ وَالطَّيْرَ
وَكُنَّا مُؤْتَبِرِينَ ۗ

وَعَلَّمْنَاهُ صَنْعَةَ لَبُوسٍ لَّكُمْ لِيُحِصَنَكُمْ مِنْ
بَأْسِكُمْ ۗ فَهَلْ أَنْتُمْ شَاكِرُونَ ۗ

¹ टीकाकारों (मुफस्सिरो) ने यह कहानी इस तरह बयान किया है कि एक आदमी की बकरियाँ रात को दूसरे आदमी के खेत में चली गयीं और खेत को चर गयीं। हजरत दाऊद जो पैगम्बर (ईश्वरूत) के साथ-साथ हाकिम भी थे, उन्होंने फैसला दिया कि बकरियाँ खेत वाला ले ले ताकि उसका नुकसान पूरा हो सके। हजरत सुलैमान ने इस इंसान का विरोध किया और फैसला किया कि कुछ समय के लिए बकरियाँ खेत के मालिक को दे दी जायें ताकि वह इनका फायदा उठाए, और खेती बकरी वाले को दे दी जाये ताकि वह खेतों की सिचाई और देखभाल करके उसे सुधारे, जब वह खेत उस हालत में आ जाये जैसा बकरियों के चरने से पहले था, तो खेत, खेत के मालिक को और बकरियाँ, बकरियों के मालिक को वापस कर दी जायें। पहले इंसान के मुकामिले में दूसरा फैसला इस ऐतबार से उचित (मुनासिब) था कि किसी को अपनी चीज से हाथ नहीं धोना पड़ा, जबकि पहले फैसले में बकरी वाले को बकरियों से हाथ धोना पड़ा था, फिर भी अल्लाह ने हजरत दाऊद की तारीफ की कि हम ने हर एक को (यानी दाऊद और सुलैमान को) इल्म और हिक्मत अता किया था।

² इसका मतलब यह कभी नहीं कि पहाड़ उनकी तस्वीह (प्रशंसागान) की आवाज से गूँज उठते थे (क्योंकि इस में कोई चमत्कार की बात ही वाकी नहीं होती) हर एक छोटी-बड़ी रूह की ऊँची आवाज से गूँज पैदा हो सकती है (आवाज लौटने की शकल में)। बल्कि मतलब हजरत दाऊद के साथ पहाड़ों का भी तस्वीह पढ़ना है, यह कहने की बात नहीं थी हकीकत में थी।

³ पक्षी भी दाऊद की दर्द भरी आवाज को सुनकर अल्लाह की पाकी का बयान करते थे या पक्षी भी उन के अधीन (तावे) कर दिये गये थे।

⁴ यानी हम ने दाऊद के लिए लोहे को नरम बना दिया था जिस से वह लड़ाई के लिये कपड़ा

शुकगुजारी करोगे?

८१. और हम ने सुलैमान के अधीन (तावे) तेज तन्द हवा कर दी जो उस के हुक्म पर उस धरती की तरफ चलती थी, जिस में हम ने बरकतें रखी थी, और हम हर चीज को जानते हैं।

८२. और (इसी तरह) बहुत से चैतानों को भी (उसका अधीनस्थ बनाया था) जो उस के हुक्म पर डुबकी लगाते थे और इस के सिवाय बहुत से काम करते थे, और उनकी हिफाजत करने वाले हम ही थे।

८३. और अय्यब (की उस हालत को याद करो) जबकि उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे यह रोग लग गया है, और तू सव रहम करने वालों से ज्यादा रहम करने वाला है।

८४. तो हम ने उस की (गुहार) सुन ली और जो दुख उन्हें था उसे दूर कर दिया और उसे उस का परिवार अता किया, बल्कि उसे अपनी खास रहमत से उन के साथ वैसे ही और दिये ताकि इबादत करने वालों के लिए नसीहत का सबब (स्मरणीय) हो।

وَالسُّيْمِينَ الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي بِأَمْرِ
إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا وَكُنَّا بِحُلِيِّ
شَيْءٍ عَلَيْهِمْ ۝ (81)

وَمِنَ الشَّجَرِينَ مَن يَخُوضُونَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ
عَمَلًا دُونَ ذَلِكَ ۝ وَكُنَّا لَهُمْ حَافِظِينَ ۝ (82)

وَإِيَّابَ إِذْ نَادَى رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ الضُّرُّ
وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ۝ (83)

فَأَسْتَجَبْنَا لَهُ فَكَشَفْنَا مَا بِهِ مِنْ ضُرِّهِ
وَآتَيْنَاهُ أَهْلَهُ وَمَوْلَاهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً
مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرَىٰ لِلْعَالَمِينَ ۝ (84)

और कवचें बनाते थे जो लड़ाई के मैदान में तुम्हारी सुरक्षा (हिफाजत) का सामान है। नबी के साथी कतादह का कहना है कि नबी दाऊद से पहले भी कवचें बनती थी मगर वह सादी थी उन में कड़ियां नहीं होती थी, नबी दाऊद पहले इंसान हैं जिन्होंने कड़ियों और कुन्डे वाली कवचें तैयार कीं। (इब्ने कसीर)

कुरआन मजीद में हजरत अय्यब को साबिर (धैर्यवान) कहा गया है। (सूर: साद) इसका मतलब यह है कि उनका इम्तेहान लिया गया, जिस में उन्होंने कृतज्ञता और धैर्य (सब्र और शुक्र) का दामन हाथ से नहीं छोड़ा। वे इम्तेहान और कष्ट क्या थे, इसका कोई सहीह बयान नहीं मिलता। फिर भी कुरआन के बयान के ऐतबार से मालूम होता है कि अल्लाह तआला ने उन्हें धन-धान्य और पुत्र दे रखे थे, इम्तेहान के लिए अल्लाह तआला ने यह सभी छीन लिये थे, यहाँ तक कि जिस्मानी ताकत भी कमजोर कर दी थी, इसलिए लोगों से पीड़ित थे। आखिर में कहा जाता है कि १८ साल के इम्तेहान के बाद अल्लाह के सामने दुआ की, अल्लाह ने दुआ कुबूल की और सेहत (स्वास्थ्य) के साथ-साथ धन-धान्य और पुत्र पहले से दोगुने दिये। इसका कुछ बयान सहीह इब्ने हिब्बान के एक बयान में मिलता है।

८५. और इस्माईल और इदरीस, और जुलक़िफ़ल! ये सब सब करने वाले थे।

८६. हम ने उन्हें अपनी रहमत (दया) में दाखिल कर दिया, ये सब नेक लोग थे।

८७. और मछली वाले^२ (यूनुस عليه السلام) को (याद करो)! जबकि वह नाराज (क्रोधित) होकर चल दिया और समझता था कि हम उसे न पकड़ेंगे। आखिर में उस ने अंधेरो^३ में से पुकारा कि इलाही (पूजनीय) तेरे सिवाय कोई माबूद (पूज्य) नहीं है, तू पाक है। वेशक मैं ही जालिमों में से हूँ।

८८. तो हम ने उस की पुकार सुन ली और उसे दुखों से आजाद किया, और हम इसी तरह ईमान वालों को बचा लिया करते हैं।

८९. और ज़करिया को (याद करो) जब उस ने अपने रब से दुआ की कि हे मेरे रब! मुझे अकेला न छोड़, तू सब से अच्छा वारिस है।

وَاسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ
كُلٌّ مِّنَ الضَّالِّينَ ﴿٨٥﴾

وَاَدْخَلْنَاهُمْ فِي رَحْمَتِنَا اِلٰهُهُمْ مِّنَ الضَّالِّينَ ﴿٨٦﴾

وَذَا النُّونِ اِذْ ذُكِّرَ مُغَاضِبًا فَعَقَّنَ اَنْ يُّنْفَخَ
عَلَيْهِ فَغَادَىٰ فِي الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّا اِلٰهَ
اِلَّا اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

فَاَسْتَجَبْنَا لَهٗ وَنَجَّيْنَاهُ مِنَ الْعَمْرِ ؕ
وَكَذٰلِكَ نُنشِئُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٨٨﴾

وَزَكَرِيَّا اِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ
فَرْدًا وَاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ﴿٨٩﴾

^१ जुलक़िफ़ल के बारे में इख़ितेलाफ़ (मतभेद) है कि वह नबी थे या नहीं? कुछ उनकी नबूअत और कुछ विलायत के हक में हैं। इमाम इब्ने जरीर इन के बारे में ख़ामोश है, इमाम इब्ने कसीर फ़रमाते हैं: «क़ुरआन में नबियों के साथ उनका भी बयान उन के नबी होने को ज़ाहिर करता है।» अल्लाह अच्छी तरह जानता है।

^२ मछली वाले से मुराद हज़रत यूनुस है जो अपनी क़ौम से नाराज होकर अल्लाह के अज़ाब की धमकी देकर, अल्लाह के हुक्म के बिना ही वहाँ से चल दिये थे, जिस पर अल्लाह तआला ने पकड़ा और उन्हें मछली का भोजन (कौर) बना दिया, इसका कुछ बयान सूर: यूनुस में हो चुका है और कुछ सूर: साफ़फ़ात में आयेगा।

^३ ظُلُمٰت का बहुवचन (जमा) है, जिसका मतलब अंधेरा होता है। हज़रत यूनुस अंधेरो में घिरे हुए थे, रात का अंधेरा, समुद्र का अंधेरा और मछली के पेट का अंधेरा।

१०. तो हम ने उसकी दुआ कुबूल कर ली और उसे यहया अता किया, और उनकी पत्नी को उनके लिए सुधार दिया ! यह नेक लोग नेक अमल की तरफ जल्दी दौड़ते थे, और हमें रगवत और डर के साथ पुकारते थे, और हमारे सामने विनम्र (आजिजी से) रहते थे ।

११. और वह (पाकवाज औरत) जिस ने अपनी इस्मत (सतीत्व) की हिफाजत की, हम ने उस के अन्दर अपनी रूह (आत्मा) फूँकी और खुद उसको और उस के पुत्र को सारी दुनिया के लिए निशानी (लक्षण) बना दिया ।

१२. यह तुम्हारा गिरोह है जो हकीकत में एक ही गिरोह है, और मैं तुम सब का रब हूँ ! इसलिए तुम सब मेरी ही इबादत (उपासना) करो !

१३. लेकिन लोगों ने आपस में अपने दीन में गुट बना लिये, सब को हमारी तरफ पलटकर आना है !

فَأَسْتَجَبْنَا لَهُ وَوَهَبْنَا لَهُ الْيُسْرَى وَأَصْلَحْنَا لَهُ زَوْجَهُ إِنَّهُمْ كَانُوا يُسْرِعُونَ فِي الْغَيْرَاتِ وَيَذْعَرُونَ غَبَابًا وَرَهْبًا لَوْ كَانُوا لَنَا خُشُوعِينَ 90

وَالَّتِي أَحْصَنَتْ لِرَبِّهَا فَنَفَعْنَا فِيهَا مِنْ زُرُوعِنَا وَجَعَلْنَاهَا وَابْنَهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ 91

إِنَّ هَذِهِ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُونِ 92

وَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ كُلًّا مِنِّي زُجُوعًا 93

1 यानी वह दौन्न और किसी वच्चे के जन्म देने लायक नही थी, हम ने उसके इस कमी को दूर करके उसे एक नेक बेटा अता किया ।

2 उम्म: (गिरोह) का मतलब यहाँ धर्म या मजहबी जमाअत है, यानी तुम्हारा धर्म और गिरोह एक ही है और वह धर्म तौहीद का धर्म है, जिसकी दावत सभी नबियों ने दिया, और गिरोह इस्लाम का गिरोह है जो सभी नबियों का गिरोह रहा है । जिस तरह नबी * ने फरमाया : "हम नबियों की जमाअत अल्लाती औलाद (जिन का पिता एक और मातायें कई हों) हैं, हमारा धर्म एक ही है ।" (इब्ने कसीर)

3 यानी तौहीद (अद्वैत) और अल्लाह की इबादत (उपासना) छोड़कर कई जमाअतों और गिरोहों में बंट गये । एक गिरोह मुशरिकों (मूर्तिपूजक वगैरह) और काफिरों का हो गया, और नबियों और रसूलों को मानने वाले भी पीढ़ियाँ बन गये, कोई यहूदी हो गया, कोई इसाई, और कोई कुछ ! घदनसीबी से मुसलमानों में खुद भी गिरोह बन्दी पैदा हो गयी, और यह भी विसियों गिरोह में बंट गये । इन मय का इसाफ जब ये अल्लाह के सामने पेश होंगे तब दही होगा ।

१४. फिर जो भी नेक काम करे, और वह मॉमिन (एकेस्वरवादी) भी हो, तो उसकी कोशिश की कोई बेकदरी (उपेक्षा) नहीं होगी। हम तो उस के लिखने वाले हैं।

فَمَنْ يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَحْسَبُ أَنَّ يَسْعِيَهُ ۚ وَإِنَّا لَهُ كَاتِبُونَ ﴿٩٥﴾

१५. और जिस बस्ती को हम ने हलाक कर दिया, उस के लिए फर्ज है कि वहाँ के लोग पलटकर नहीं आयेंगे।

وَحَرَّمَ عَلَىٰ قَرْيَةٍ أَهْلَئِنَّهَا أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُونَ ﴿٩٥﴾

१६. यहाँ तक कि याजूज और माजूज खोल दिये जायेंगे और वे हर एक ढलवान से दौड़ते आयेंगे।

حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ﴿٩٦﴾

१७. और सच्चा वादा करीब आ लगेगा उस समय काफ़िरो की आंखें फटी की फटी रह जायेंगी कि हाय अफसोस! हम इस हाल से गाफ़िल थे, वल्कि हकीकत (वास्तव) में हम जालिम थे।

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدَ الْحَقِّ إِذَا هُمْ شَاخِصَةٌ أَبْصَارُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يَوِيلًا كَذَّبْنَا بِعُقُوبِهِمْ مِنْ هَذَا الْبَلِّ كَذَّبْنَا ظَالِمِينَ ﴿٩٧﴾

१८. तुम और अल्लाह के सिवाय जिन-जिन की तुम इबादत (उपासना) करते हो, सब नरक के ईंधन बनोगे, तुम सब उस (नरक) में जाने वाले हो।

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ۚ أَأَنْتُمْ كُنَّهَا وُودُونَ ﴿٩٨﴾

१९. अगर वे (सच्चे) माबूद होते तो नरक में दाखिल नहीं होते, और सब के सब उसी में हमेशा रहने वाले हैं।

لَوْ كَانَ هَؤُلَاءِ إِلَهًا مَّا وَرَدُوهُمْ ۖ وَكُلٌّ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٩٩﴾

याजूज और माजूज का जरूरी बयान सूर: कहफ के आखिर में गुजर चुका है, हजरत ईसा की मौजूदगी में कयामत के करीब वे जाहिर होंगे और इतनी तेजी से यह हर ओर फैल जायेंगे कि हर ऊँची जगह से ये दौड़ते हुए भालूम होंगे, उन के फसाद और बुरे कामों से ईमान वाले तंग आ जायेंगे। फिर हजरत ईसा के शप से यह बरवाद हो जायेंगे, उनकी लाशों की बदबू हर तरफ फैलेगी, यहाँ तक कि अल्लाह तआला पक्षियों को भेजेगा जो उनकी लाशों को उठाकर समुद्र में फेकेंगे, फिर एक बहुत तेज वर्षा (बारिश) करेगा, जिस से सारी धरती साफ हो जायेगी। (यह पूरा वाकआ सहीह हदीम में बयान है, तफसीर के लिए तफसीर इब्ने कसीर देखें।)

१००. वे वही चिल्ला रहे होंगे और वहाँ कुछ भी न सुन सकेंगे ।

१०१. लेकिन जिन के लिए हमारी तरफ से पहले से ही नेकी मुकर्रर है, वे सब नरक से दूर ही रखे जायेंगे !

१०२. वे तो नरक की आहत तक न सुन सकेंगे और अपनी मनचाही चीजों के साथ हमेशा रहने वाले होंगे ।

१०३. वह बड़ी घबराहट भी उन्हें उदासीन न कर सकेगी और फरिश्ते उन्हें हाथों-हाथ ले लेंगे कि यही तुम्हारा वह दिन है जिसका तुम को वादा दिया जाता रहा ।

१०४. जिस दिन हम आकाश को इस तरह लपेट देंगे जिस तरह रोल के कागज (पंजिका) लपेट दिये जाते हैं, जैसे हम ने पहली बार पैदा किया था उसी तरह दोबारा करेंगे, यह हमारा मजबूत वादा है और यह हम जरूर करके ही रहेंगे ।

१०५. और हम जबूर में आगाही और नसीहत के बाद यह लिख चुके हैं कि धरती के वारिस मेरे नेक बंदे ही होंगे ।

१०६. इबादत करने वाले बंदों के लिए तो इस में एक बड़ी खबर है ।

لَهُمْ فِيهَا زُلْفَىٰ وَهُمْ فِيهَا لَا يَسْمَعُونَ ﴿١٠٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِنَّا الْحُسْنَىٰ أُولَٰئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُونَ ﴿١٠١﴾

لَا يَسْمَعُونَ حَسِيسَهَا وَهُمْ فِي مَا اشْتَهَتْ أَنفُسُهُمْ خَالِدُونَ ﴿١٠٢﴾

لَا يَخْرُجُ لَهُمُ الْفَرَخُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقَّهُمُ الْمَلَائِكَةُ هَذَا يَوْمُ الْمَآلِ الَّذِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٠٣﴾

يَوْمَ تَطْوِي السَّمَاءَ كَطَيِّ السِّجِّيلِ لِلْكَتِّبِ ۗ كَسَابِدٍ أَنَا أَوَّلُ خَلْقٍ يُعِيدُهُ ۗ وَعَدُّا عَلَيْنَا ۗ إِنَّا كُنَّا فَعْلِينَ ﴿١٠٤﴾

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزُّبُورِ مِن بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصَّالِحُونَ ﴿١٠٥﴾

إِنَّ فِي هَذَا لَبَلَاغًا لِّقَوْمٍ غَيْبِينَ ﴿١٠٦﴾

कुछ लोगों के मन में यह शक पैदा हो सकता था या मूर्तिपूजकों की तरफ से पैदा कराया जा सकता था, जैसाकि हकीकत में हो रहा है कि इबादत (उपासना) तो हजरत ईसा, उजैर, फरिश्तों और बहुत से बुजुर्गों की की जाती है। तो क्या यह भी अपने पुजारियों के साथ नरक (जहन्नम) में डाले जायेंगे? इस आयत में उसका भी बयान कर दिया गया है कि यह लोग तो अल्लाह के नेक बन्दे थे जिनकी नेकी की वजह से अल्लाह की तरफ से नेकी यानी हमेशा मुख या जन्नत की खुशखबरी तय कर दी गयी है, यह नरक से दूर ही रखे जायेंगे ।

१०७. और हम ने आप को पूरी दुनिया के लिए रहमत बनाकर ही भेजा है।¹

१०८. कह दीजिए कि मेरी तरफ तो बस वही की जाती है कि तुम सब का अल्लाह एक ही है, तो क्या तुम भी उसको मानने वाले हो?

१०९. फिर अगर वह मुंह मोड़ ले तो कह दीजिए कि मैंने तुम्हें समान रूप से आगाह कर दिया है, मुझे इल्म (ज्ञान) नहीं है कि जिसका वादा तुम से किया जा रहा है वह करीब है या दूर है।

११०. बेशक (अल्लाह तआला) तो तुम्हारी खुली बातों को जानता है तथा जिसे तुम छुपाते हो उसे भी जानता है।

१११. और मुझे इसका भी इल्म नहीं, मुमकिन है कि यह तुम्हारा इम्तेहान (परीक्षा) हो और एक मुकर्रर बकत (निर्धारित समय) तक का लाभ हो।

११२. (नबी ने) खुद कहा हे पालनहार! इसाफ के साथ फ़ैसला कर दे, और हमारा रव बहुत रहम करने वाला है, जिस से मदद मांगी जाती है उन बातों पर जो तुम बयान कर रहे हो।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٠٧﴾

قُلْ إِنَّمَا يُدْعَىٰ بِإِنِّي أَسْمَاءُ ۖ إِلَهُكُمْ إِلَهُ وَاحِدٌ ۗ
فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٨﴾

فَإِن تَوَلَّوْا فَعَلْنَا أَدْنٰكُمْ عَلَىٰ سَوَآءٍ ۚ وَإِن
أَدْرٰى أَكْرِبُ أَمْ يَبْعِدُ ۚ مَا تُوعَدُونَ ﴿١٠٩﴾

إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ
مَا تَكْتُمُونَ ﴿١١٠﴾

وَإِن أَدْرٰى لَعَلَّآ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ ۖ
حٰثِرِينَ ﴿١١١﴾

قُلْ رَبِّ اجْعَلْ لِّي حٰكِمًا بِٱلْحَقِّ ۖ وَرَبِّنَا ٱلرَّحْمٰنُ
ٱلسُّعْيٰنَ عَلَىٰ مَا يَصِفُونَ ﴿١١٢﴾

¹ इसका मतलब यह है कि जो आप ﷺ की रिसालत पर ईमान ले आयेगा, उस ने मानों इस रहमत को कुबूल कर लिया और अल्लाह के इन एहसानों पर शुक्र अदा किया, वह नतीजतन दुनिया-आखिरत के सुखों को हासिल करेगा, और चूँकि आप की रिसालत पूरी दुनिया के लिए है, इसलिए आप पूरी दुनिया के लिए रहमत बनकर यानी अपनी नसीहतों (शिक्षाओं) के जरिये दुनिया और आखिरत के सुखों का भागी बनाने के लिए आये है।

सूरतुल हज्ज-२२

सूरतुल हज्ज* मदीने में उतरी और इसकी अठहत्तर आयतें और दस श्लोक हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. ऐ लोगों ! अपने रव से डरो, बेशक क़यामत का जलजला बहुत बड़ी चीज है।

२. जिस दिन तुम उसे देख लोगे, हर दूध पिलाने वाली माँ अपने दूध पीते बच्चे को भूल जायेगी और सभी गर्भवतियों (हमल वालियों) के गर्भ (हमल) गिर जायेंगे, और तू देखेगा कि लोग मतवाले दिखायी देंगे, अगरचे वे हकीकत में मतवाले नहीं होंगे, लेकिन अल्लाह का अजाब बड़ा सख्त (कठोर) है।

३. और कुछ लोग अल्लाह के बारे में बातें बनाते हैं वह भी जहालत के साथ, और हर सरकार बयान की पैरवी करते हैं।

४. जिस पर अल्लाह का फैसला लिख दिया गया है कि जो कोई भी उस की दोस्ती करेगा वह उसे भटका देगा और उसे आग के अजाब (यातना) की तरफ ले जायेगा।

سُورَةُ الْحَجِّ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَأْتِيهَا النَّاسُ آفْقًا رَبُّكُمْ إِنْ زُلْزَلَةٌ

السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ ①

يَوْمَ تَرُؤْنَهَا تَذَلُّ كُلُّ مُرْتَبِعَةٍ عَمَّا أَرْضَعَتْ

وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ

سَكَرَى وَمَا هُمْ بِسَكَرَىٰ وَلَكِنَّ عَذَابَ اللَّهِ

شَدِيدٌ ②

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ

وَيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَانٍ مَّرِيدٍ ③

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهُ مَن تَوَلَّاهُ فَاتَّكُفُ بِوَجْهِكَ

وَيَهْدِيهِ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ④

* इस के मक्का और मदीना में उतरने में इस्तिस्नाफ है, सही बात यही है इसका कुछ हिस्सा मक्का में और कुछ हिस्सा मदीने में उतरा। यह कुर्तबी का कौल है। (फतहूल कदीर) यह कुरआन करीम की एक ही सूरः है जिस में दो सज्दे हैं।

१ ऊपर आयत में जिस जलजला (भूकम्प) का बयान है, उस के नतीजे दूसरी आयतों में बयान किये गये हैं, जिस का मतलब लोगों पर बहुत भय, डर और घबराहट का होना है, यह क़यामत से पहले होगा और उस के साथ ही दुनिया की तवाही हो जायेगी, या यह क़यामत के बाद उस समय होगा, जब लोग कब्रों से उठकर हथ के मैदान में जमा होंगे। ज्यादातर मुफ़त्सिर (व्याख्याकार) पहले विचार से सहमत हैं जबकि कुछ मुफ़त्सिर दूसरे विचार के हक (पक्ष) में हैं।

५. हे लोगो! अगर तुम्हें मरने के बाद जिन्दा होने में शक है, तो सोचो हम ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य (मनी) से, फिर खून के थक्के से, फिर गोश्त के लोथड़े से जो रूप दिया गया था और बिना रूप था। यह हम तुम पर वाजेह कर देते हैं और हम जिसे चाहें एक मुकरर वकत (निर्धारित समय) तक माँ के रिहम में रखते हैं फिर तुम्हें बच्चे के रूप में दुनिया में लाते हैं, फिर ताकि तुम अपनी पूरी जवानी को पहुँचो, तुम में से कुछ वे हैं जो मर जाते हैं और कुछ खूसट उम्र (जीर्ण आयु) की तरफ फिर से लौटा दिये जाते हैं कि वह एक चीज से परिचित होने के बाद दोबारा अंजान हो जाये। तू देखता है कि धरती वंजर और सूखी है, फिर जब हम उस पर वर्षा करते हैं तो वह उभरती है और फूलती है और हर तरह की सुन्दर वनस्पति उगाती है।

६. यह इसलिए कि अल्लाह ही हक है और वही मुदों को जिन्दा करता है और वह हर एक चीज पर कुदरत रखने वाला है।

७. और यह कि क्रयामत जरूर ही आने वाली है जिस में कोई शक और शुब्हा नहीं, और बेशक अल्लाह (तबाला) क्रम वालों को दोबारा जिन्दा करेगा।

८. और कुछ लोग अल्लाह के बारे में बिना इल्म के और बिना हिदायत के और बिना किसी तौशन किताब के झगड़ते हैं।

९. अपनी पहलू मोड़ने वाला बनकर इसलिए कि अल्लाह के रास्ते से भटका (गुमराह कर) दो वह दुनिया में भी अपमानित (जलील) होगा और क्रयामत (प्रलय) के दिन भी हम उसे नरक में जलने का अजाब चखायेंगे।

يَأْتِيهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ
فَأَنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِّن نُّوَابٍ ثُمَّ مِنْ طُفَلَةٍ ثُمَّ
مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَعَجِيْنٍ
مُّخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ء وَنُقَرُّ فِي الْأَرْحَامِ
مَا نَشَاءُ إِلَىٰ آجَالٍ مُّسْتَمْسِقَةٍ ثُمَّ نُعْزِجُكُمْ طِفْلًا
ثُمَّ نَسْتَبْلِغُهُمْ وَأَشَدَّ كُومًا وَمِنْكُمْ مَّن يَبُوءُ
وَمِنْكُمْ مَّن يَرُدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُصْرِ يَكْتُمُونَ
يَعْلَمُ مَن بَعْدَ عِلْمِهِ شَيْئًا ء وَتَوْرَى الْأَرْضَ
هَامِدًا ء فَوَآءًا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَرَّتْ
وَرَبَّتْ وَأَنْبَتَتْ مِّن كُلِّ ذَرْعٍ يَخْتِجُ ⑤

ذُلِّعَالِيَانِ اللَّهُ فَوَالْحَقِّ وَأَنَّهُ يُحْيِي الْمَوْتَى
وَأَنَّهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑥
وَأَنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا ء وَأَنَّ اللَّهَ
يَبْعَثُ مَن فِي الْقُبُورِ ⑦

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنبِئِينَ ⑧

ثَانِي عَطْفِهِ لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ اللَّهِ ء
لَهُ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ء وَنُذِيقُهُ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ عَذَابَ الْحَرِيقِ ⑨

१०. यह उन अमलों की वजह से जो तेरे हाथों ने आगे भेज रखे थे, यकीन (विश्वास) करो कि अल्लाह (तआला) अपने बंदों पर जुल्म करने वाला नहीं।

११. और कुछ लोग ऐसे भी हैं कि एक किनारे पर होकर अल्लाह की इबादत (उपासना) करते हैं, अगर कोई फायदा मिल जाये तो मुत्मईन होते हैं और अगर कोई दुख आ गया तो उसी समय विमुख हो जाते हैं।^१ उन्होंने दोनों लोक का नुकसान उठा लिया, हकीकत में यह साफ नुकसान है।

१२. वह अल्लाह के सिवाय उन्हें पुकारते हैं जो न नुकसान पहुँचा सके न फायदा, यही तो दूर का भटकाव है।

१३. उसे पुकारते हैं जिसका नुकसान उस के फायदे से करीब है, बेशक बुरे संरक्षक (निगरी) हैं और बुरे दोस्त।

१४. बेशक ईमान और नेक काम करने वालों को अल्लाह (तआला) लहरें लेती हुई नहरों वाले जन्नत में ले जायेगा। अल्लाह जो इरादा करे उसे कर के रहता है।

ذَلِكَ بِمَا كَفَرْتُمْ يَدَّكَ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ
بِظَلَّامٍ لِّلْعَالَمِينَ ۙ

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَعْبُدُ اللَّهَ عَلَىٰ حَرْفٍ ۚ فَإِن
أَصَابَهُ خَيْرٌ لِّطَمَانٍ بِهِ ۖ وَإِن أَصَابَتْهُ فَتْنَةٌ
إِنقَلَبَ عَلَىٰ وَجْهِهِ ۗ خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةَ ۗ
ذَلِكَ هُوَ الْخَسِرَانُ الْبَاسِينَ ۙ

يَدْعُوا مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُ وَمَا
لَا نَفْعَ لَهُ ۗ ذَلِكَ هُوَ الضَّلَالُ الْبَعِيدُ ۙ

يَدْعُوا لَمَن ضَرُّهُ أَقْرَبُ مِّن نَّفْعِهِ ۗ لَيْسَ
الْمَوْلَىٰ وَلَيْسَ الْعَشِيرُ ۙ

إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۗ إِنَّ اللَّهَ
يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ۙ

^१ 'حرف' का मतलब है किनारा। इन किनारों पर खड़ा होने वाला स्थिर (मुस्तकिल) नहीं होता यानी उसे सुकून और जमाव नहीं होता, उसी तरह जो इंसान दीन के वारे में चक और चुक्का का शिकार रहता है, उसकी भी हालत इसी तरह होती है, उसे धर्म पर स्थिरता नहीं मिलती, उसका मकसद केवल दुनियावी फायदा होता है, अगर मिलते रहें तो ठीक है, नहीं तो वह दोबारा अपने पुराने धर्म यानी कुफ्र और शिर्क की तरफ लौट जाता है, इस के खिलाफ जो सच्चे मुसलमान होते हैं और ईमान और यकीन से भरपूर होते हैं, वे तंगी और देखे बिना दीन पर मजबूत रहते हैं, अगर नेमतें हासिल हों तो शुक्रिया अदा करते हैं और अगर कष्टों से पीड़ित होते हैं तो सब्र और सहन करते हैं।

१५. जिसका यह ख्याल हो कि अल्लाह (तआला) अपने रसूल की मदद दोनों जहाँ में न करेगा, वह ऊँचाई पर एक रस्सा बाँधकर (अपने गले में फँदा फाँस ले) और गला घूट ले फिर देख ले कि उसकी चालाकी से वह बात हट जाती है, जो उसे तड़पा रही है।

१६. और हम ने इसी तरह इस कुरआन को खुली आयतों में उतारा है, और जिसे अल्लाह चाहे हिदायत अता करता है।

१७. ईमानवाले और यहूदी और विधर्मी (वहीन) और इसाई और आग के पुजारी^१ और मूर्तिपूजक उन सब के बीच क्रयामत के दिन अल्लाह (तआला) झूठ फ़ैसला कर देगा, अल्लाह (तआला) हर चीज का गवाह है।

१८. क्या तू नहीं देख रहा है कि अल्लाह के सामने सज्दे में है सभी आकाशों वाले और धरती वाले और सूरज और चाँद और सितारे और पहाड़ और पेड़ और जानदार^२ और बहुत से इंसान भी। हाँ बहुत से वे भी हैं जिन पर अज्ञाव साबित हो चुका है, और जिसे रव वेइज्जत कर दे उसे कोई इज्जत देने वाला नहीं, अल्लाह जो चाहता है करता है।

مَنْ كَانَ يَتَّقِنُ أَنْ لَنْ يَنْصُرَهُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَاءِ ثُمَّ لِيَقْطَعْ
فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبْنَ كَيْدَهُ مَا يَغِيظُ ﴿١٥﴾

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَاهُ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ يَهْدِي
مَنْ يُرِيدُ ﴿١٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالضَّالِّينَ
وَالظَّالِمِينَ وَالْمَجُوسَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا كُلًّا إِنَّ اللَّهَ
يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿١٧﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْجُدُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ
فِي الْأَرْضِ وَالشَّجَرُ وَالْحَاكِمُونَ وَالْحُجُوجُ وَالْجِبَالُ
وَالشَّجَرُ وَالذَّوَابُّ وَكَثِيرٌ مِّنَ النَّاسِ ۖ وَكَثِيرٌ
حَقٌّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۖ وَمَنْ يُؤْمِنِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِن مَّكْرَمٍ ۖ إِنَّ اللَّهَ يُفَعِّلُ مَا يَشَاءُ ۖ ﴿١٨﴾

^१ मजूस से मुराद ईरान के अग्निपूजक हैं जो दो देवताओं में यकीन रखते हैं। एक अंधेरा पैदा करने वाला है दूसरा उजाले का, जिसे वे अहरमन और यजदा कहते हैं।

^२ कुछ मुफ़िस्सरो ने इस सज्दे से उन सभी चीजों को अल्लाह के हुक्म के अधीन (ताबे) होने मतलब लिया है, किसी में ताकत नहीं कि वह अल्लाह के हुक्म की नाफरमानी कर सके, उन के करीब सज्दा और उपासना और इबादत (बंदना) के मतलब में नहीं जो केवल अक्ल वाले ज़िंदों के लिए खास है, जबकि कुछ मुफ़िस्सरो ने इसे ह्याल के बजाये वास्तविक (हकीकी) मायना में लिया है कि हर सृष्टि (मखलूक) अपने-अपने रूप से अल्लाह के सामने सज्दा कर रही है।

१९. ये दोनों अपने रब के बारे में इस्तेलाफ रखने वाले हैं, तो काफिरों के लिए आग के कपड़े नाप कर काटे जायेंगे और उन के सिरों के ऊपर से गर्म पानी की धारा बहानी जायेगी।

२०. जिस से उन के पेट की सब चीजें और खालें गला दी जायेंगी।

२१. और उन की सजा के लिए लोहे के हथौड़े हैं।

२२. यह जब भी वहाँ के दुख से निकल भागने का इरादा करेंगे, वही लौटा दिये जायेंगे और (कहा जायेगा) जलने के अजाब का मजा चखो।

२३. वेशक ईमानवालों और नेक काम करने वालों को अल्लाह (तआला) उन जन्नत में ले जायेगा जिन के नीचे से नहरें लहरे ले रही हैं, जहाँ उन्हें सोने के कगन पहनाये जायेंगे और सच्चे मोती भी, वहाँ उनका कपड़ा शुद्ध (खालिस) रेशम का होगा।

२४. और उन्हें पाक कलाम का रास्ता दिखा दिया गया और तारीफ वाले (अल्लाह के) मार्गदर्शन दिया गया।

२५. जिन लोगों ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोकने लगे और वह इफ़्तत वाली मस्जिद से भी जिसे हम ने सभी लोगों के लिए बराबर कर दिया है, वही के वासी हों या बाहर के हों जो भी जुल्म के साथ वहाँ गुमराह होने का विचार करेगा^१ हम उसे दुख वाले अजाब का

هَذَيْنِ خَصْمَيْنِ اِخْتَصَمُوْا فِي رُؤُوسِهِمْ فَاَلَّذِيْنَ
نَكَرُوا قُلِعَتْ لَهُمْ رِئَابٌ مِّنْ نَّارٍ يَّصْبُ
مِنْ فَوْقِ رُءُوسِهِمْ اَلْحَيْمِيُّ (١٩)

يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُونِهِمْ وَالجُلُوْدُ (٢٠)

وَ لَهُمْ مَّقَابِعُ مِّنْ حَدِيْدٍ (٢١)

كَلِمًا اَرَادُوْا اَنْ يَخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَيْرِ اَعِيْنٍ وَّ
فِيْهَا دُوْدُوْقًا وَّعَذَابُ الْحَرِيْقِ (٢٢)

اِنَّ اللّٰهَ يَدْخُلُ النَّارِيْنَ اَمْوَالًا وَّعِيَالًا الطَّيْلِطِ
جَنَّتِ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا اَنْهَارٌ يَّجْرُونَ فِيْهَا
مِنْ اَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا وَّلِيَابِسُهُمْ
فِيْهَا حَرِيْرٌ (٢٣)

وَهَدُوْا اِلَى الْكَلِيْبِ مِنَ الْقَوْلِ وَّوَهَّدُوْا اِلَى
صِرَاطِ الْحَيْمِيِّ (٢٤)

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيُصَلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ
اٰتِمِّ وَّالسُّجُوْدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ
سَوَاءً اِلْعَاقِبُ فِيْهِ وَّالْبِلَادُ وَاَمَّنْ يُّرِيْدُ فِيْهِ
بِالْحَاغِ يَظْلِمُ نَفْسَهُ مِنْ عَذَابِ الْيَوْمِ (٢٥)

^१ रोकने वालों से भुराद नक्का के काफिर हैं, जिन्होंने ६ हिजरी में मुसलमानों को मक्का जाकर "उमराह" करने से रोक दिया था, मुसलमानों को हुदैविया नाम की जगह से वापस आना पड़ा था।

^२ الْحَزْ का शाब्दिक (लफ्जी) मायेन तो गुमराह होना है। यहाँ यह आम है कुफ्र और शिक के लेकर हर तरह के पाप के लिए। यहाँ तक कि कुछ उलेमा कुरआनी लफ्जों की बुनियाद पर

मजा चखायेंगे !

२६. और जब कि हम ने इब्राहीम के लिए कआवा घर की जगह मुकरर कर दिया। (इस शर्त के साथ) कि मेरे साथ किसी को शामिल न करना^१ और मेरे घर को तवाफ करने, खड़े होने, झुकने (रुकूअ) और सज्दा करने वालों के लिए शुद्ध (खालिस) और पाक रखना।

२७. और लोगों में हज का एलान कर दे, लोग तेरे पास पैदल भी आयेंगे और दुवले-पतले ऊंटों पर भी दूर दराज के सभी रास्तों से आयेंगे।

२८. अपना फायदा हासिल करने के लिए आ जायें और उन मुकरर दिनों में अल्लाह के नाम को याद करें उन चौपायों पर जो पालतू हैं, तो तुम आप भी खाओ और भूखे फकीरों को भी खिलाओ।

وَاذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ
أَنْ لَا تُشْرِكَ بِي شَيْئًا وَطَهَّرَ بَيْتِي لِلطَّائِفِينَ
وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ 26

وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ رِجَالًا وَعَلَى
كُلِّ صَامِرٍ ثَلَاثِينَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ 27

لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ فِي
آيَاتِهِ مَعْلُومَاتٍ عَلَى مَا رَزَقَهُمْ مِنْ بَيْمَاتِهِ
فَلْيَحْمُوا مِنْهَا وَآطَمُوا الْبَابَ
الْفَقِيرَ 28

इस बात का धकीन करते हैं कि हरम में अगर किसी तरह के गुनाह का इरादा बना लेगा (चाहे उसे अमली तौर पर करे या न करे) तो वह भी इस चेतावनी (तबीह) में शामिल है। कुछ कहते हैं कि सिर्फ इरादे की वजह से पकड़ नहीं होगी, जैसाकि दूसरे कुरआन के लपजों से मालूम होता है, लेकिन अगर पक्का इरादा कर लिया हो तो पकड़ हो सकती है। (फतहुल कदीर)

¹ यानी वैतुल्लाह (अल्लाह के घर) का मुकाम बता दिया और वहाँ इब्राहीम की औलाद को बसा दिया। इस से मालूम होता है कि तुफाने नूह की तबाही के बाद खानये कावा की तामीर सब से पहले हजरत इब्राहीम के हाथों हुई। जैसाकि सहीह हदीस से यह बात साबित है, जैसाकि नबी ﷺ ने फरमाया: «सब से पहले जो मस्जिद धरती पर बनायी गयी, मस्जिदे हाराम है और उस के चालीस साल बाद मस्जिदे अक्सा बनाई गई।» (मुसनद अहमद)

² यह खानये कावा बनाने का मकसद बयान किया गया है कि इस में केवल मेरी इबादत की जाये, इस से यह बताने का मकसद है कि मूर्तिपूजकों ने इस में जो मूर्तियाँ सजा रखी हैं, जिनकी वह यहाँ आकर पूजा करते हैं, यह खुला जुल्म है कि जहाँ केवल अल्लाह की इबादत की जानी चाहिए थी, वहाँ मूर्तियों की पूजा की जाती है।

२९. फिर वे अपना मैल-कुचैल दूर करें^१ और अपनी मन्नत पूरी करें और अल्लाह के पुराने घर का तवाफ करें।

३०. यह है, और जो कोई अल्लाह की हुरमतों (निषेधाज्ञा) का एहतेराम करे, उसके अपने लिए उस के रब के पास अच्छाई है, और तुम्हारे लिए चौपाये जानवर हलाल (मान्य) कर दिये गये सिवाय उन के जो तुम्हारे सामने बयान किये गये हैं, तो तुम्हें मूर्तियों की गन्दगी से बचते रहना चाहिए^२ और झूठी बातों से भी परहेज करना चाहिये।

३१. अल्लाह की तौहीद (एकेश्वरवाद) को कुबूल करते हुए^३ उस के साथ किसी को न साझी बनाते हुए। (सुनो!) अल्लाह का साझी बनाने वाला जैसे आकाश से गिर पड़ा, अब या तो उसे पक्षी उचक ले जायेंगे या हवा किसी दूर दराज जगह पर फेंक देगी।^४

ثُمَّ لِيَقْضُوا تَفْتَهُهُمْ وَلْيُؤَدُّوا أُذُنَهُمْ
وَلْيَطَّوُّوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ (29)

ذَلِكَ، وَمَنْ يُعْظِمِ حُرْمَتِ اللَّهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ
عِنْدَ رَبِّهِ ۖ وَأَجَلْتُ لَكُمْ الْأَنْعَامَ إِلَّا
مَا يَنْبَغُ عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ
وَأَجْتَنِبُوا قَوْلَ الزُّورِ (30)

حُنَفَاءَ لِلَّهِ غَيْرَ مُشْرِكِينَ بِهِ ۚ وَمَنْ يُشْرِكْ
بِاللَّهِ فَكَانَ نَسَبًا حَرًّا مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ
أَوْ تَهْوِي بِهِ الرِّيحُ فِي مَكَانٍ سَحِينٍ (31)

^१ यानी १० ज़िलहिज्जा को बड़े जमर को कंकरीया मारने के बाद पूरे बाल कटवा कर या छोटे करा कर एहराम खोल दिया जाता है और पत्नी से सहवास (जिमाअ) करने के सिवाय वे सभी काम उस के लिए जायज हो जाते हैं जो एहराम की हालत में हराम थे। मैल-कुचैल दूर करने का मतलब यही है कि वह जालों और नाखूनों वगैरह को साफ कर लें, तेल खुरबू इस्तेमाल कर लें और मिले हुए कपड़े पहन लें आदि। (वगैरह)।

^२ रजस का मतलब नापाकी और गन्दगी है, यहाँ इस से मुराद लकड़ी, लोहा या दूसरी किसी चीज की बनी हुई मूर्तियाँ हैं। मतलब यह है कि अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे की पूजा करना अपवित्रता (नापाकी) है और अल्लाह के ग़जब और नाराजगी की वजह है, इसने ब्रचे।

^३ हिफा वहवचन (जमा) है हिनफ का। जिसका शाब्दिक अर्थ (लफ्जी मायने) है आकर्षित (मुतविज्जह) होना, एक तरफ होना, एक पक्षीय (जानिव) होना, यानी शिक (मूर्तिपूजा) से तौहीद (एकेश्वरवाद) की तरफ और कुफ्र और झूठ से इस्लाम और सच्चे दीन की तरफ आकर्षित होते हुए या एक पक्षीय होकर शुद्ध रूप से अल्लाह की इबादत (उपासना) करते हुए।

^४ यानी जिस तरह बड़े पक्षी, छोटे जीव को बहुत तेजी से झपटकर नोच खाते हैं, या हवायें किसी को दूर दराज जगहों पर ले जाकर फेंक दें और कभी को उसकी खबर न मिले, दोनों हालतों में बरवादी उम की तकदीर में है। उसी तरह वह इंसान जो एक अल्लाह की इबादत करता है,

३२. यह सुन लिया, (और सुनो) अल्लाह की निशानियों (प्रतीकों) का जो इज्जत और एहतेराम (सम्मान और आदर) करे तो उस के दिल की परहेजगारी की वजह यह है।'

३३. उन में तुम्हारे लिए एक मुकर्रर वक़्त तक के लिए फ़ायदा है, फिर उन के कुर्वानी करने (बलि चढ़ाने) की जगह ख़ानये कावा है।'

३४. और हर उम्मत के लिए हम ने कुर्वानी का तरीक़ा मुकर्रर किया है ताकि वे उन चौपाये जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो अल्लाह ने उन्हें दे रखा है। (समझ लो) तुम सब का सच्चा भावूद सिर्फ़ एक ही है, तुम उसी के तावे और फ़रमाबदार बन जाओ, आजिज़ी करने वालों को खुशख़बरी दे दीजिए।

ذٰلِكَ ۙ وَ مَن يُعَظِّمْ شَعَائِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا مِنۡ تَتَقٰى الْقُلُوْبِ ﴿٣٢﴾

لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعٌ اِىۡ اَجَلٍ مُّسۡئِيۡ ثُمَّ
مَحَلُّهَا اِلَى الْبَيْتِ الْعَرَبِيِّ ﴿٣٣﴾

وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنۡسَكًا لِّيَذۡكُرُوۡا اِسۡمَ
اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقْنٰهُمۡ مِّنۡ بَهِيمَةِ الْاَنْعَامِ
فَاَلۡهٰكُمۡ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۗ فَلَا اَسۡلُوۡا وَّ يَبۡشِرِ
الْمُخۡبِرِيۡنَ ﴿٣٤﴾

वह सही बरताव और रूहानी पाकी के मुताबिक और इल्लास पाकीजगी के सिरे पर पहुँचा होता है और जैसे ही वह शिक का काम करता है तो जैसे कि अपने आप को ऊँची जगह से नीचे और सफ़ाई से गन्दगी और कीचड़ में गिरा लेता है।

१. शमर बहुवचन (जमा) है शमरे का, जिसका मतलब इशारा और निशानी है, जैसे लड़ाई में एक इशारा (मख़सूस लपज निशानी और सकेत के रूप में) इस्तेमाल कर लिया जाता है, जिस से वे आपस में एक-दूसरे को पहचान लेते हैं। इस आधार पर अल्लाह की निशानियाँ वे हैं जो दीन के निशान यानी इस्लाम के वाजेह अहक़ाम हैं, जिस से एक मुसलमान का मुक़ाम और मर्तबा सावित होता है और दूसरे दीन के मानने वालों से अलग पहचान लिया जाता है। सफ़ा और भरबह पहाड़ों की भी इसीलिए अल्लाह की निशानियाँ कहा गया है कि मुसलमान हज और उमरह में इनके बीच सई करते (दौड़ते) हैं। यहाँ हज की दूसरी रीतियों (मनासिक) खास तौर से कुर्वानी (बलि) के जानवरों को अल्लाह की निशानी कहा गया है, उन के एहतेराम का मतलब उनका अच्छा और मोटा करना है यानी सेहतमद और मोटे जानवर की कुर्वानी देना। इस एहतेराम को अल्लाह का दिली ख़ौफ़ कहा गया है यानी थह दिल के उन अमलों में से है जिन की बुनियाद (सयम) अल्लाह का डर है।

२. हलाल (उचित) होने से मुराद जहाँ इनकी कुर्वानी करना (उचित) है, यानी यह जानवर हज के काम पूरे करने के बाद वैतुल्लाह और मक्का की हरम की सीमा में पहुँचते हैं और वहाँ अल्लाह के नाम पर कुर्वानी दे दिये जाते हैं, तो उपरोक्त (मजक़ूर) फ़ायदा भी ख़त्म हो जाता है, और अगर वे वैसे ही हरम के लिए कुर्वान होते हैं तो हरम पहुँचते ही कुर्वानी कर दिये जाते हैं और मक्का के गरीबों में उनका गोशत बाट दिया जाता है।

३५. उन्हें कि जब अल्लाह का जिक्र किया जाये उन के दिल कंप जाते हैं, उन्हें जो मुसीबत पहुँचे उस पर सब्र करते हैं, नमाज़ क़ायम करने वाले हैं और जो कुछ हम ने उन्हें दे रखा है वे उस में से भी देते रहते हैं।

३६. कुर्बानी के ऊँट को^१ हम ने तुम्हारे लिए अल्लाह (तआला) के निशान मुक़र्रर कर दिये हैं उन में तुम्हें फ़ायेदा है, तो उन्हें खड़ा कर के उन पर अल्लाह का नाम पढ़ो।^२ फिर जब उन के पहलु (पार्श्व) धरती से लग जायें तो उसे ख़ुद भी खाओ^३ और गरीब भिखारी और जो भिखारी न हों उसे भी खिलाओ, इसी तरह हम ने चौपाये को तुम्हारे ताबेदार (अधीन) कर दिया है कि तुम शुक्रिया अदा करो।

३७. अल्लाह (तआला) को कुर्बानी के गोस्त नहीं पहुँचते न उन के खून, बल्कि उसे तो तुम्हारी दिली परहेज़गारी पहुँचती है। उसी तरह अल्लाह ने उन जानवरों को तुम्हारा आज्ञाकारी (ताबे) कर दिया है कि तुम उस की हिदायत (के शुक्रिया) में उस की बड़ाई का बयान करो और नेक काम करने वालों को खुशख़बरी सुना दीजिए।

الذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِدَتْ قُلُوبُهُمْ
وَالصَّابِرِينَ عَلَىٰ مَا آصَابَهُمْ وَالْمُقِيمِينَ
الصَّلَاةَ ۗ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٥﴾

وَالْبُدْنَ جَعَلْنَاهَا لَكُمْ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ لَكُمْ
فِيهَا حَرِيمٌ ۖ فَلَا تَكُونُوا لِلدَّعْوَةِ عَلَيْهِ سُوءَآفَآءَ
فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوبُهَا فَكُلُوا مِنْهَا وَأَطِيعُوا
الْقَائِلَ وَالْمِعْرَةَ كَذَلِكَ سَخَّرْنَاهَا لَكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٣٦﴾

كُنَّ يَتَأَلَّ اللَّهُ لِحُومِهَا وَلَدُهُمَا وَإِنَّمَا وَكُنَّ
يَتَأَلَّهُ الشَّفَاوَىٰ مِنْكُمْ ۗ كَذَلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ
لِيَتَكَبَّرُوا اللَّهُ عَلَىٰ مَا هَدَيْكُمْ ۗ وَيَسِّرِ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٧﴾

१ बुद्धबचन (जमा) है बन्दे का। यह जानवर आम तौर से मोटा-ताजा होता है, इसलिए बन्दे कहा जाता है मोटा-ताजा जानवर, भाषाविदों (लुगत वालों) ने इसे केवल ऊँटों के साथ खास तौर से इस्तेमाल किया है, लेकिन हदीस के अनुसार गाय के लिए भी बन्दे लफ्ज का इस्तेमाल ठीक है, मतलब यह है कि ऊँट और गाय जो कुर्बानी करने के लिये ले जायें, वह भी अल्लाह की निशानी है, यानी अल्लाह के उन हुक्मों में से है जो मुसलमानों के लिए खास और उनकी निशानी है।

२ मसफ़ूद (सफ़रबंद यानी खड़े हुए) के मतलब में है, ऊँट को इसी तरह खड़े-खड़े जिन्ह किया जाता है कि बायाँ हाथ पैर उसका बंधा हुआ हो और तीन पैर पर वह खड़ा होता है।

३ कुछ आलिमों के क़रीब यह हुक्म फ़र्ज़ है यानी कुर्बानी का गोस्त खाना, कुर्बानी करने वाले के लिए वाजिब (आवश्यक) है और ज़्यादातर आलिमों के क़रीब यह हुक्म अच्छाई के लिए है।

३८. (सुन रखो!) बेशक सच्चे ईमानवालों के दुश्मनों को अल्लाह (तआला) खुद हटा देता है, कोई छ्यानत करने वाला (विश्वासघाती) नाशुक्रा अल्लाह (तआला) को प्यारा नहीं।

३९. जिन (मुसलमानों) से (काफिर) लड़ाई कर रहे हैं उन्हें भी लड़ने की इजाजत दी जाती है क्योंकि वे मजलूम हैं, बेशक उनकी मदद के लिए अल्लाह पूरी क़ुदरत रखता है।

४०. ये वे हैं जिन्हें विला वजह अपने घरों से निकाला गया, केवल उन के इस कहने पर कि हमारा रब केवल अल्लाह है। अगर अल्लाह (तआला) लोगों को आपस में एक-दूसरे से न हटाता रहता तो इबादत की जगह और गिरजाघर, और मस्जिदें, और यहूदियों की इबादत और वे मस्जिदें भी ढा दी जाती, जहाँ अल्लाह का नाम बहुत ज़्यादा लिया जाता है, जो अल्लाह की मदद करेगा अल्लाह भी उस की जरूर मदद करेगा, बेशक अल्लाह (तआला) बहुत ताकतवर और प्रभावशाली (गालिब) है।

४१. ये वे लोग हैं कि अगर हम इन के पैर धरती पर मजबूत कर दें तो यह पाबन्दी से नमाज़ अदा करेंगे और ज़कात देंगे और अच्छे कामों का हुकम देंगे और बुरे कामों से मना करेंगे। और सभी कामों का नतीजा अल्लाह के अधिकार (इस्तिथार) में है।

४२. और अगर ये लोग आप को झूठायें (तो ताज्जुब की बात नहीं) तो इन से पहले नूह की क़ैम और आद और समूद।

إِنَّ اللَّهَ يُدْفِعُ عَنِ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُورٍ ﴿٣٨﴾

إِذِ الَّذِينَ يَلْتَمُونَ يَفْتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلُمَاءٌ
وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ لَّكَفِيرٌ ﴿٣٩﴾

إِلَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا
أَن يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ط وَكُلًّا دَفَعْنَا اللَّهُ مِنَ النَّاسِ
بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَهْدٍ مِّنْ صَوَابٍ وَبِخٍ
وَصَلَوَاتٍ وَمَسْجِدٍ يُدْعَىٰ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ
كَثِيرًا ط وَلَيَنْصُرَنَّ اللَّهُ مَن يَنْصُرُهُ ط
إِنَّ اللَّهَ لَكَفِيرٌ عَزِيزٌ ﴿٤٠﴾

الَّذِينَ إِنْ مَكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ وَآمَرُوا بِالمَعْرُوفِ وَنَهَوْا
عَنِ المُنْكَرِ ط وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ﴿٤١﴾

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ
قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَثَمُودٌ ﴿٤٢﴾

1 इस आयत में इस्लामी मुल्क के बुन्यादी मक़ासिद बयान किये गये हैं, जिन्हें खिलाफ़ते राशिदा और पहली सदी के दूसरे इस्लामी राज्यों में लागू किया गया और उन्होंने अपने दस्तूर में इन को प्राथमिकता (तरजीह) दी, जिस के सबब उन के राज्यों में शान्ति (अमन) थी, प्रेम भावना (खैरखाही) और खुशहाली भी रही और मुसलमानों के सिर ऊंचे और इज़्जत वाले भी थे।

४३. और इब्राहीम की कौम और लूत की कौम।

४४. और मदयन वाले भी अपने-अपने नरियों को झुठला चुके हैं। मूसा भी झुठलाया जा चुके हैं, तो मैंने काफ़िरों को धोड़ा सा मौका दिया फिर धर पकड़ा, फिर मेरा अजाब कैसा हुआ?

४५. बहुत सी वस्तियाँ हैं जिन्हें हम ने हलाक कर दिया इसलिए कि वे ज़ालिम की तो वे अपनी छतों के बल अंधी पड़ी हैं, और बहुत में आवाद कुएँ बेकार पड़े हैं और बहुत में पक्के और ऊँचे किले सुनसान पड़े हैं।

४६. क्या उन्होंने धरती में सैर करके नहीं देखा, जो उन के दिल इन बातों को समझते या कानों से ही इन 'घटनाओं' को सुन लेते, बात यह है कि केवल आँखें ही अंधी नहीं होनी वल्कि वे दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में है।

४७. और वे अजाब की आप से जल्दी माँग कर रहे हैं, अल्लाह (तआला) कभी अपना वादा नहीं टालेगा, हाँ बेशक आप के रय के करीब एक दिन आप की गिनती के अनुसार (मुताबिक) एक हजार साल का है।

४८. और बहुत सी जुल्म करने वाली वस्तियों को हम ने ढील दी, फिर आखिर में उन्हें पकड़ लिया और मेरी ही तरफ लौटकर आना है।

४९. एलान कर दो कि हे लोगो ! मैं तुम्हें खुल्लम-खुल्ला सचेत (आगाह) करने वाला हूँ।

وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَقَوْمِ لُوطٍ ۚ

وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالَّذِينَ كَفَرُوا

فَأَمَلَيْتُ لِلْكَافِرِينَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ

كَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ۙ

فَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا وَهِيَ

ظَالِمَةٌ فِيهَا خَاوِيَةٌ عَنْ عُرُوشِهَا

وَأَنْبِيَاءٌ مُعْتَلِّقُونَ نَفْسِهِمْ

أَقْلَمَ يَسْمُرُونَ فِي الْأَرْضِ فَتَكُونُ لَهُمْ قُلُوبٌ

يَعْلَمُونَ بِهَا أَوْ أَدَانُ يُسْمَعُونَ بِهَا فَإِنَّهَا

لَا تَعْنَى الْأَبْصَارَ وَلَكِنْ تَعْنَى الْقُلُوبِ الَّتِي

فِي الصُّدُورِ ۙ

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ

وَعْدَهُ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ

سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ۗ

وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ أَمَلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ

ثُمَّ أَخَذْنَاهَا وَاللَّيْلِ الْمَسِيرِ ۙ

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِثْلُكُمْ

فَأَنِتَّبِعُونِ ۙ

1 इस में नबी ﷺ को सात्वता (तसल्ली) दी जा रही है कि यह मक्का के काफ़िर अगर आप को झुठला रहे हैं तो यह कोई नई बात नहीं है। पहले की कौमों भी अपने पैगम्बरों के साथ ऐसा ही मुआमला (व्यवहार) करती रही है और मैं भी उन्हें मौका देता रहा और जब उन के मौका का समय खत्म हो गया तो उन्हें तबाह कर दिया गया।

५०. तो जो ईमान लाये है और उन्होंने नेक काम किये है उन्ही के लिए मोक्ष (मर्गाफरत) है और सम्मानित जीविका (रोजी)।

५१. और जो लोग हमारी आयतों को नीचा देखाने में लगे हैं, वही नरकवासी हैं।

५२. और हम ने आप ने पहले जिस रसूल और नबी को भेजा, (उस के साथ यह हुआ कि) जब वह अपने दिल में कोई ख्वाहिश करने लगा, शैतान ने उसकी कामना में कुछ मिला दिया तो शैतान की मिलावट को अल्लाह (तआला) दर कर देता है, फिर अपनी बातें मजबूत कर देता है, अल्लाह (तआला) जानने वाला और हिक्मत वाला है।

५३. यह इसलिए कि शैतानी मिलावट को अल्लाह (तआला) उन लोगों की परीक्षा (इस्तेहान) का सामान बना दे, जिन के दिलों में रोग है और जिन के दिल सख्त है। वेशक जालिम लोग घोर बिरोध (इह्लितेलाफ) में है।

५४. और इसलिए भी कि जिन्हें इल्म अता किया गया है, वे विश्वास कर लें कि यह आप के रब ही की तरफ से पूरा सच है, फिर वे उस पर ईमान लायें और उन के दिल उस की तरफ झुक जायें। वेशक अल्लाह (तआला) ईमानवालों को सच्चे रास्ते की तरफ हिदायत करने वाला ही है।

५५. और काफिर उस अल्लाह की वहीमी में हमेशा शक और शुक्या ही करते रहेंगे यहाँ तक कि अचानक उन के सिर पर क्रयामत (प्रलय) आ जाये, या उन के करीब उस दिन का अजाब आ जाये जो भलाई से खाली है।¹

فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿٥٠﴾

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ﴿٥١﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّى أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ فَيَنسَخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللَّهُ آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٥٢﴾

لِيَجْزَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ فَتَنَةً لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ ﴿٥٣﴾

وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ آمَنُوا أَوْ نَالُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَيُؤْمِنُوا بِهِ فَتُخْبِتَ لَهُ قُلُوبُهُمْ وَإِنَّ اللَّهَ لَهَادِ الَّذِينَ آمَنُوا إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٥٤﴾

وَلَا يَرَأِي الَّذِينَ كَفَرُوا فِي مَوَدَّةٍ وَنَحْوِ حَتَّى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ يُؤْتِيهِمْ عَذَابُهُمْ ﴿٥٥﴾

¹ يوم عظيم (बड़ा दिन) से मुराद क्रयामत का दिन है, इसे बाइन इसलिए कहा गया है कि इस दिन के बाद कोई दिन नहीं होगा जिस तरह बाइन उम्को कहा जाता जिस के कोई औलाद न हो।

५६. उस दिन केवल अल्लाह ही का राज होगा, वही उन के बीच फ़ैसला करेगा, ईमान वाले और नेक लोग तो सुखों से भरपूर जन्नत में होंगे ।

५७. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झूठलाया, उन के लिए सत्वा करने वाले अजाब हैं ।

५८. और जिन्होंने अल्लाह के रास्ते में देश छोड़ा फिर वे शहीद कर दिये गये या अपनी मौत से मर गये, अल्लाह (तआला) उन्हें बेहतर रोजी अता करेगा, और बेशक अल्लाह (तआला) सब से अच्छा रिज़क अता करने वाला है ।

५९. उन्हें अल्लाह (तआला) ऐसी जगह पर पहुँचायेगा कि वे उस से खुश हो जायेंगे । बेशक अल्लाह (तआला) जानने वाला और बरदास्त करने वाला है ।

६०. बात यही है, और जिस ने बदला लिया उसी की तरह जो उस के साथ किया गया था, फिर अगर उस के साथ ज़्यादती की जाये तो बेशक अल्लाह (तआला) खुद उसकी मदद करेगा । बेशक अल्लाह (तआला) छोड़ देने

أَلَمْ لِكُ يَوْمَئِذٍ اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فَأَلْبَسِينَ

أَمْتًا وَعَسَاوَأَطْرِبَاتٍ فِي جَنَّتِ النَّعِيمِ ﴿٥٦﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأُولَئِكَ لَهُمْ

عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ

قَاتَلُوا أَوْ مَاتُوا لَبِزْرًا قَتَلَهُمُ اللَّهُ رِزْقًا

حَسَنًا وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ خَيْرُ الرَّزُقِينَ ﴿٥٨﴾

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا رِزْوَانًا وَإِنَّ اللَّهَ

لَعَلِيمٌ حَلِيمٌ ﴿٥٩﴾

ذَلِكَ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوِّبَ بِهِ ثُمَّ

بُعِيَ عَلَيْهِ لَيْتَصْرَنَّهُ اللَّهُ وَإِنَّ اللَّهَ لَكَفُورٌ

غَفُورٌ ﴿٦٠﴾

या इसलिए कि काफ़िरों के लिए उस दिन कोई दया नहीं होगी, यानी उन के लिए भलाई से खाली होगा, जिस तरह तेज़ चाल की हवाओं को जो अजाब के तौर पर आती रही हैं 'बाज़' हवा कहा गया है ।

उस सज़ा या बदले को कहते हैं जो किसी अमल का बदला हो । मतलब यह है कि किसी ने किसी के साथ ज़्यादती की हो तो जिस से ज़्यादती की गयी है, उसे ज़्यादती के समान बदला लेने का हक़ है, लेकिन बदला लेने के बाद जबकि ज़ालिम और मज़लूम (नज़सित) दोनों समान हो चुके हों, ज़ालिम मज़लूम पर दोबारा ज़ुल्म करे तो अल्लाह तआला उस मज़लूम की ज़रूर मदद करेगा । यानी यह शक़ न हो कि मज़लूम ने माफ़ करने के बजाय बदला लेकर ग़लत काम किया है, नहीं, बल्कि उसकी भी इजाज़त अल्लाह ने दिया है, इसलिए भविष्य (आइन्दा) में भी वह अल्लाह की मदद का हक़दार रहेगा ।

वाला और माफ करने वाला है।^१

६१. यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में प्रवेश (दाखिल) कराता है और दिन को रात में ले जाता है, और बेशक अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है।

६२. यह सब इसलिए कि अल्लाह ही सच है, और उस के सिवाय जिसे भी यह पुकारते हैं वे झूठे (बातिल) हैं, और बेशक अल्लाह (तआला) बुलन्द बड़ाई वाला है।

६३. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) आकाश से पानी बरसाता है तो धरती हरी-भरी हो जाती है। बेशक अल्लाह (तआला) मेहरबान और जानने वाला है।

६४. आकाशों और धरती में जो कुछ है उसी का है, और बेशक अल्लाह वही है बेनियाज तरीफों वाला।

६५. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह ही ने धरती की सभी चीजें तुम्हारे वश में कर दी है, और उस के हुक्म से समुद्र में चलती हुई नावें भी। वही आकाश को थामे हुए है कि धरती पर उस के हुक्म के बिना गिर न पड़े। बेशक अल्लाह (तआला) लोगों पर शफ़क़त करने वाला रहम करने वाला है।

६६. और उसी ने तुम्हें जिन्दा किया है फिर वही तुम्हें मारेगा, फिर वही तुम्हें जिन्दा करेगा, बेशक इंसान बड़ा नाशुक्रा है।

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُرِيۡجُ اَيُّۡمَ الْيَوْمِ فِي السَّمٰوٰتِ وَيُۡرِيۡجُ
السَّمٰوٰتِ فِي الْيَوْمِ وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيۡعٌۢ بَصِيۡرٌ ﴿٦١﴾

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدَّعُوۡنَ مِنْ
دُوۡنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيۡمُ
الْكَبِيۡرُ ﴿٦٢﴾

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَتُصۡرِعُ
اَلْاَرْضَ مُخۡضَرَّةً ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيفٌ خَبِيۡرٌ ﴿٦٣﴾

لَهُۥ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْعَفِيۡفُ الْحَمِيۡدُ ﴿٦٤﴾

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُم مَّا فِي الْاَرْضِ
وَالفَلَکَ یَجۡرِیۡ فِی الْبَحۡرِ بِاَمۡرِهٖؕ وَیُسَبِّحُ
السَّمٰوٰتِ اَنْ تَقَعَّ عَلَی الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذۡنِهٖؕ
اِنَّ اللّٰهَ بِالۡثَّآبِیۡنَ لَرَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ ﴿٦٥﴾

وَ هُوَ الَّذِیۡ اَحۡیَاۡکُمۡ ؕ ثُمَّ یَمِیۡتُکُمۡ ثُمَّ
یُحۡیِیۡکُمۡ ؕ اِنَّ الْاِنۡسَانَ لَکَفُوۡرٌ ﴿٦٦﴾

^१ इस में माफ़ कर देने की फिर शिक्षा (तालीम) दी गयी है कि अल्लाह माफ़ करने वाला है, तुम भी माफ़ी से काम लो। एक दूसरा मतलब यह भी हो सकता है कि बदला लेने में जितना ज़ालिम का ज़ुल्म होगा उतना ज़ुल्म किया जायेगा, इसकी इजाजत चूँकि अल्लाह की तरफ़ से है, इसलिए इस पर पकड़ नहीं होगी बल्कि वह माफ़ी के क़ाबिल है, इसे ज़ुल्म और बुराई उस के समरूप (मुशाबिह) होने की वजह से कहा जाता है, वरन् इन्तिक़ाम या बदला असल में ज़ुल्म और ग़लती है ही नहीं।

६७. हर एक उम्मत के लिए हम ने इवादात का एक तरीका मुकरर कर दिया है, जिस का वह पालन करने वाले हैं, तो उन्हें आप से इस सम्बन्ध (मुआमले) में झगड़ा नहीं करना चाहिए। आप अपने रव की तरफ लोगों को बुलायें, वेशक आप सीधे सच्चे रास्ते पर ही हैं।

६८. और फिर भी अगर ये लोग आप से उलझने लगे तो आप कह दें कि तुम्हारे अमलों से अल्लाह अच्छी तरह वाकिफ है।

६९. तुम्हारे सभी के इखितेलाफ का फैसला कयामत के दिन अल्लाह (तआला) खुद करेगा।

७०. क्या आप ने नहीं जाना कि आकाश और धरती की हर चीज़ अल्लाह के इल्म में है, यह सब लिखी हुई किताब में महफूज है, अल्लाह (तआला) के लिए यह काम बड़ा आसान है।

७१. और ये अल्लाह (तआला) के सिवाय उन्हें पूज रहे हैं जिसका कोई आसमानी सुबूत नहीं, और न वे खुद ही इसका कोई इल्म (ज्ञान) रखते हैं, जालिमों का कोई भददगार नहीं।

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوهُ
فَلَا يَتَّزِعُكَ فِي الْأَمْرِ وَأُدْعُ إِلَى رَبِّكَ
إِنَّكَ لَعَلَّ صُدَىٰ مُسْتَقِيمٍ ﴿٦٧﴾

وَأَنَّ جَدُّوكَ قَدْلُ اللَّهِ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٦٨﴾

اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا
كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٦٩﴾

أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٧٠﴾

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَمْ يُخْلُقْ بِهِ
سُلْطَانًا وَمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ وَمَا
لِظَّالِمِينَ مِنْ قُيُوسٍ ﴿٧١﴾

इस में अल्लाह तआला ने अपने सारे इल्म और मखलूक को घेर रखने का बयान किया है, यानी उसकी सृष्टि (मखलूक) को जो कुछ करना था उसको इसका इल्म पहले से ही था, वह उनको जानता था। इसलिए उस ने अपने इल्म से यह बातें पहले ही से लिख दी और लोगों को यह बात चाहे कितनी ही कठिन लगे, अल्लाह के लिए यह बहुत आसान है, यह वही तक्रदीर की समस्या (मसअला) है जिस पर ईमान रखना जरूरी है, जिसे हदीस में इस तरह बयान किया गया है: «अल्लाह तआला ने आकाश और धरती की पैदाईश से पचास हजार साल पहले जबकि उसका अर्थ पानी पर था, सृष्टि की तक्रदीर लिख दिये थे।» (सहीह मुस्लिम, किताबुल कद्र, बाब हिजाज आदम व मूसा) और सुन्न के क़ौल में है, रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया: «अल्लाह तआला ने सब से पहले क़लम पैदा किया, और उस से कहा लिख, उस ने कहा क्या लिखू? अल्लाह तआला ने कहा जो कुछ होने वाला है सब लिख दे, इसलिए उस ने अल्लाह के हुकम से कयामत तक जो कुछ होने वाला था सब लिख दिया।» (अबू दाऊद, किताबुस सुन्न: बाबुन फ़िल क़द्र, तिर्मिजी अबुवाबुल क़द्र तफ़सीर सू: नून. मुसनद अहमद, भाग ५, ३१७)

७२. और जय उन के सामने हमारे कलाम की खुली आयतों को तिलावत (पाठ) किया जाता है, तो आप काफिरों के मूँह पर नाखुशी के आसार साफ़ तौर पर पहचान लेते हैं, वे तो क्रूरिव हांते हैं कि हमारी आयतों के सुनाने वाले पर हमला कर बैठें। कह दीजिए क्या मैं तुम्हें इस से भी ज्यादा बुरी खबर दूँ, वह आग है जिस का वादा अल्लाह ने काफिरों से कर रखा है, और वह बहुत बुरी जगह है।

७३. हे लोगों! एक मिसाल दी जा रही है, जरा ध्यान से सुनो, अल्लाह के सिवाय तुम जिन-जिन को पुकारते रहे हो वे एक मक्खी तो पैदा नहीं कर सकते अगर सारे के सारे जमा हो जायें, वल्कि अगर मक्खी उन से कोई चीज ले भागे तो यह तो उसे भी उस से छीन नहीं सकते। वड़ा कमजोर है माँगने वाला और बहुत कमजोर है जिस से माँगा जा रहा है।

७४. उन्होंने अल्लाह की वड़ाई के अनुसार (मुताबिक) उसका महत्व (अहमियत) जाना ही नहीं, बेशक अल्लाह (तआला) वड़ा अबरदस्त और प्रभावशाली (गालिय) है।

७५. फरिश्तों में से और इसानों में से रसूल को अल्लाह ही चुन लेता है, बेशक अल्लाह (तआला) सुनने वाला देखने वाला है।

وَإِذَا نُفِثَ عَلَيْهِمْ أَيُّتُنَا بِآيَاتِنَا تَعْرِفُ فِي
وُجُوهِ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّخْرَىٰ يَكَادُونَ يَسْطُونَ
بِالَّذِينَ يَسْتَلُونَ عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا قُلْ أَفَأَنْتُمْ كُمُ
بَشَرٌ مِّنْ ذِكْرِهِمَ الْفُلَاهُ وَعَدَا اللَّهُ الَّذِينَ
كَفَرُوا وَيُبْسِ الْأَصْبِرُ (٧٢)

يَأْتِيهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاَسْمِعُوا لَهُ خَرَاتِنَ
الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَنْ يَخْلُقُوا
دُبَابًا وَلَا يُوجِنَعُوا لَهُمْ وَإِنْ يَسْلُبْهُمُ
الَّذِي يَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنْقِذُوهُ مِنْهُ
صَحَفَ الظَّالِمُ وَالظَّالِمُ (٧٣)

مَا قَدَرُوا اللَّهَ حَتَّىٰ قَدَرُوا اللَّهَ
لِقَوْمِي عَزِيزٌ (٧٤)

أَلَمْ يَخْلُقْ مِنَ الْمَتَلَكَةِ رُسُلًا وَمِنَ النَّاسِ
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ (٧٥)

१ रसूल (उतारा, भेजा हुआ संदेशवाहक) का बहुवचन (जमा) है। अल्लाह तआला ने फरिश्तों से भी रिसालत का यानी संदेशवाहन का काम लिया है, जैसे हजरत जिब्रील को अपनी बह्यी के लिए चुना कि वे रसूलों के पास बह्यी पहुँचायें, या अजाब लेकर कौमो के पास जायें और इसानों में से जिन्हें चाहा रिसालत के लिए चुन लिया और उन्हे लोगों की हिदायत और नमीहत देने के लिए नियुक्त (मुंतखब) किया। सभी अल्लाह के बंदे थे, अगरचे चुने हुए थे, लेकिन किस लिए? अल्लाह के अधिकार (इख्तियार) में साझीदार बनाने के लिए? जिस तरह कुछ लोगो ने उनको अल्लाह का साझी बना लिया है। नहीं, वल्कि केवल अल्लाह का पैगाम पहुँचाने के लिए।

७६. वह अच्छी तरह जानता है जो कुछ उन के आगे है और जो कुछ उन के पीछे है, और अल्लाह ही की तरफ सब काम लौटाये जाते हैं।

७७. हे ईमानवालो! रूकूअ, सज्दा करते रहो, और अपने रव की इबादत में लगे रहो और नेकी के काम करते रहो, ताकि तुम सफल हो जाओ।

७८. और अल्लाह की राह में वैसे ही जिहाद करो जैसा जिहाद (धर्मयुद्ध) का हक है,^१ उसी ने तुम्हें निर्वाचित (मुतखव) किया है और तुम पर दीन के बारे में कोई कमी नहीं की, दीन अपने पिता^२ इब्राहीम का (कायम रखो), उसी (अल्लाह) ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है। इस (कुरआन) से पहले और इसमें भी ताकि पैगम्बर तुम पर गवाह हो जाये और तुम सभी लोगों के गवाह बन जाओ,^३ तो तुम्हें चाहिए कि नमाजें कायम करो और जकात (धर्मदान) अदा करते रहो और अल्लाह को मजबूती से पकड़ लो, वही तुम्हारा संरक्षक (निगरा) और मालिक है, और कितना अच्छा मालिक और कितना अच्छा मदद करने वाला है।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَأَلَى اللَّهِ تَرْجِعُ الْأُمُورُ ﴿٧٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ارْكَعُوا وَاسْجُدُوا وَعْبُدُوا
رَبَّكُمْ وَأَقْلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿٧٧﴾

وَجَاهِدُوا فِي اللَّهِ حَقَّ جِهَادِهِ هُوَ اجْتَبَاكُمْ
وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّينِ مِنْ حَرَجٍ ۗ
مِلَّةَ أَبِيكُمْ إِبْرَاهِيمَ هُوَ سَمَّاكُمُ الْمُسْلِمِينَ
مِنْ قَبْلُ وَفِي هَذَا لِيَكُونَ الرَّسُولُ شَهِيدًا
عَلَيْكُمْ وَتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ فَأَقِيمُوا
الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاعْتَصِمُوا بِاللَّهِ هُوَ
مَوْلَاكُمْ فَنِعْمَ الْمَوْلَى وَنِعْمَ النَّصِيرُ ﴿٧٨﴾

^१ इस जिहाद से मुराद कुछ ने वह जिहाद लिया है जो अल्लाह के नाम के फैलाने के लिए काफिरों और मूर्तिपूजकों से किया जाता है और कुछ ने अल्लाह के हुक्मों के पालन को कहा है, क्योंकि इस में इवाहिशों और शैतान का सामना करना पड़ता है, और कुछ ने हर वह कोशिश लिया है जो सच और सच्चाई को गालिब बनाने और झूठ को खत्म करने के लिए करना पड़ता है।

^२ अरब इस्माइल की औलाद में से थे, इस बिना पर हजरत इब्राहीम अरबों के पिता थे और गैर अरब भी हजरत इब्राहीम की एक महान व्यक्ति (अजीम इंसान) के रूप में इज्जत करते थे, जिस तरह बेटा बाप का करते हैं, इसलिए वह सभी लोगों के पिता थे, इस के सिवाय मुसलमानों के पैगम्बर के (अरब होने के नाते) हजरत इब्राहीम पिता थे, इसलिए मुसलमानों के भी पिता हुए। (इसलिए कहा गया कि यह दीन इस्लाम जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए चुन लिया है, तुम्हारे पिता इब्राहीम का दीन है, उसी की इत्तेवा (अनुसरण) करो।

^३ यह गवाही क्रयामत के दिन होगी जैसाकि हदीस में है। (देखिये सूर: वक्रर: आयत १४३ की तफसीर।)

सूरतुल मोमीनून-२३

सूर: मोमीनून मक्का में नाज़िल हुई और इस में एक सौ अट्ठारह आयते और छ: रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो वड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. वेशक ईमानवालों ने कामयाबी हासिल कर ली।^१

२. जो अपनी नमाज में खुशूअ (विनम्रता) करते हैं।

३. जो बेकार बातों से मुंह मोड़ लेते हैं।^२

४. जो जकात (धर्मदान) अदा करने वाले हैं।

५. जो अपने गुप्तागों (शर्मगाहों) की हिफाजत (रक्षा) करने वाले हैं।

६. सिवाय अपनी वीवियों और मिल्कियत (स्वामित्व) की दासियों (लौडियों) के, वेशक यह निन्दा किये जाने वालों में से नहीं हैं।

७. इस के सिवाय जो दूसरे ढूँढ़ें वही सीमा उल्लंघन (हद से तजावुज) कर जाने वाले हैं।^३

سُورَةُ الْمُؤْمِنُونَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُونَ ۱

الَّذِينَ هُمْ فِي صَلَاتِهِمْ خِشْعُونَ ۲

وَالَّذِينَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُونَ ۳

وَالَّذِينَ هُمْ لِلزَّكَاةِ فَاعِلُونَ ۴

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِضُونَ ۵

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ۶

فَمَنْ ابْتَدَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ۷

^१ مَلْحٌ का शाब्दिक अर्थ (लफ़्जी मायने) है चीरना, काटना, किसान को भी मَلْحٌ कहा जाता है कि वह धरती को चीर-फाड़कर उस में बीज बोता है। مَلْحٌ (कामयाब) भी वह होता है जो दुखों को काटता हुआ निशाने तक पहुँच जाता है।

^२ لغو हर वह काम और हर वह बात है जिसका कोई फ़ायेदा न हो या उस में दुनियावी या धार्मिक नुकसान हो। इन से बचने का मतलब है कि उनकी तरफ़ ध्यान भी न दिया जाये न कि उन्हें अपनाये या उनको किया जाये।

^३ इस से मालूम हुआ कि مَحْ (मुतआ) की इस्लाम में कभी इजाज़त नहीं है, और कामवासना (जिन्सी जरूरत) की पूर्ति के लिए केवल दो ही उचित (मुनासिब) तरीका हैं। बीबी से सहवास (जिमा) कर के या दासियों से कामवासना की तृप्ति (तकमील) कर के, वल्कि अब केवल बीबी इस काम के लिए रह गयी है क्योंकि लौडियों का रिवाज अभी खत्म है।

८. जो अपनी अमानत और वादे की रक्षा (हिफाजत) करने वाले हैं।⁸

९. जो अपनी नमाजों की हिफाजत करते हैं।⁹

१०. यही वारिस (उत्तराधिकारी) हैं।

११. जो फिरदौस (जन्नत का सब से ऊँचा दर्जा) के वारिस होंगे, जहाँ वे हमेशा रहेंगे।

१२. और वेशक हम ने इंसान को खनखनाती मिट्टी के सार (खुलासा) से पैदा किया।¹⁰

१३. फिर उसे वीर्य (मनी) बनाकर सुरक्षित (महफूज) जगह में रख दिया।¹¹

१४. फिर वीर्य को हम ने जमा हुआ खून बना दिया, फिर उस खून के लोथड़े को गोشت का टुकड़ा बना दिया, फिर गोشت के टुकड़े में हड्डियाँ बनायीं, फिर हड्डियों को गोشت पहना दिया, फिर एक दूसरी शकल में उसे पैदा कर दिया। वाबरकत है वह अल्लाह जो सब से अच्छी पैदाईश करने वाला है।

१५. इस के बाद फिर तुम सब जरूर मर जाने वाले हो।¹²

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْلِهِمْ رِعُونَ ﴿۸﴾

وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ يَحْفَظُونَ ﴿۹﴾

أُولَئِكَ هُمُ الْوَارِثُونَ ﴿۱۰﴾

الَّذِينَ يَرِثُونَ الْفُرُوسَ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿۱۱﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سَلْسَلَةٍ مِنْ طِينٍ ﴿۱۲﴾

ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي كَرَارٍ مَكِينٍ ﴿۱۳﴾

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ

مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظْمًا فَلَكَوْنَا

الْعِظْمَ لَحْمًا ثُمَّ أَنْشَأْنَاهُ خَلْقًا آخَرَ ﴿۱۴﴾

فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ﴿۱۴﴾

ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُونَ ﴿۱۵﴾

¹ وَالَّذِينَ से मुराद मुकररर डियुटी को पूरा करना, छिपी बातों और माल की हिफाजत है और बचनों के पालन में अल्लाह से किये हुए वादे और इंसानों से किये वादे और सन्धि (मुआहदे) दोनों शामिल हैं।

² आखिर में फिर नमाजों की हिफाजत को सफलता के लिए जरूरी कहा है, जिस से नमाज की विशेषता (अहमियत) और महत्व (खुसूसियत) वाजेह होती है, लेकिन आज मुसलमान के करीब दूसरे नेक कामों की तरह इसकी कोई खास अहमियत (महत्व) नहीं रह गया है।

³ मिट्टी से पैदा करने का मतलब पहले आदमी आदम की मिट्टी ने पैदाईश है या इंसान जो भोजन भी खाता है वह सब मिट्टी ही से पैदा होता है, इस बिना पर उस वीर्य की असल जो इंसान की उत्पत्ति (पैदाईश) की बजह बनती है, मिट्टी ही है।

⁴ सुरक्षित (महफूज) स्थान से मुराद माँ का गर्भाशय (रिहम) है, जहाँ नौ महीने बच्चा बड़ा महफूज रहता और पलता है।

१६. फिर क़यामत के दिन बेशक तुम सब उठाये जाओगे ।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تُبْعَثُونَ ﴿١٦﴾

१७. और हम ने तुम्हारे ऊपर सात आकाश बना दिये हैं, और हम सृष्टि (मखलूक) से गार्हिल नहीं हैं ।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَمَا لَكُنَا عَنِ الْخَالِقِ غَافِلِينَ ﴿١٧﴾

१८. और हम एक उचित मात्रा (तादाद) में आकाश में पानी बरसाते हैं, फिर उसे धरती के ऊपर रोक देते हैं,^१ और हम उस के ले जाने पर यकीनन कादिर हैं ।

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنْزَلْنَاهُ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَادِرُونَ ﴿١٨﴾

१९. इसी पानी के जरिये हम तुम्हारे लिए खजूरों और अमूरों के वाग उपजा देते हैं कि तुम्हारे लिए उन में बहुत से मेवे (फल) होते हैं, उन्ही में से तुम खाते भी हो ।

فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهِ جَنَّتٍ وَمِنَ الْأَخْطَابِ لَكُمْ فِيهَا فَوَاكِهُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿١٩﴾

२०. और वह पेड़ जो सैना नाम के पहाड़ पर उगता है, जो तेल निकालता है और खाने वाले के लिए सालन है ।^२

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالذَّهْنِ وَصَيْغٍ لِالْأَكْمِينِ ﴿٢٠﴾

२१. तुम्हारे लिए चौपाये जानवरों में भी बहुत बड़ी शिक्षा (नसीहत) है, उन के पंठों से हम तुम्हें (दूध) पिलाते हैं और दूसरे भी बहुत से फायदे तुम्हारे लिए उन में हैं, उन में से कुछ को तुम खाते भी हो ।

وَلَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةٌ لِّسَعْيِكُمْ فِيهَا يَظُنُّهَا وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ كَثِيرَةٌ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٢١﴾

२२. और उन पर और नावों पर तुम सवार कराये जाते हो ।

وَعَلَيْهَا وَعَلَىٰ الْفُلَاكِ تُحْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

^१ यानी यह प्रबन्ध भी किया कि सारा पानी बरस कर वह न जाये बल्कि हम ने चट्टानों (घोतों), नहरों, नदियों, तालाबों और कुओं के रूप में उसे महफूज भी किया है, (क्योंकि उन सब की असल भी आसमानी बारिश ही है) ताकि उन दिनों में जब बारिश न हो या ऐसे इलाकों में जहाँ वर्षा कम होती हो और पानी की ज़्यादा जरूरत हो, उन से पानी ले लिया जाये ।

^२ इस से जैतून का पेड़ मुराद है, जिसका रस तेल के रूप में, फल सालन के रूप में इस्तेमाल होता है । (सालन) سمن (रंग) कहा है क्योंकि रोटी रस में डूबी कर रंगी जाती है, तूर सीना (पहाड़) और उसका करीबी इलाका खास तौर से इसकी अच्छी पैदावार का इलाका है ।

२३. बेशक हम ने नूह को उसकी कौम की ओर (रसूल बनाकर) भेजा, उस ने कहा हे मेरी जाति के लोगो! अल्लाह की इबादत करो और उस के सिवाय तुम्हारा कोई मायूद नहीं, क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते?

२४. उस के समाज के काफिर सरदारों ने साफ कह दिया कि यह तो तुम जैसा ही इंसान है, यह तुम पर फजीलत (और गलिया) हासिल करना चाहता है ॥ अगर अल्लाह ही को कुबूल होता तो किसी फरिश्ते को उतारता, हम ने तो इसे अपने वजुर्गों के समय में सुना ही नहीं।

२५. बेशक इस इंसान को जुनून है तो तुम उसे एक सुकरर बकत तक ढील दो।

२६. नूह ने दुआ की हे मेरे रब! इन के झुठलाने पर तू मेरी मदद कर १

२७. तो हम ने उनकी तरफ वहयी भेजी कि तू हमारी आँखों के सामने हमारी वहयी के अनुसार एक नाव बना, जब हमारा हुक्म आ जाये और तन्दूर उबल पड़े तो तू हर तरह के एक-एक जोड़े उस में रख ले, और अपने परिवार को भी, सिवाय उन के जिन के बारे में हमारी बात पहले गुजर चुकी है। खबरदार! जिन लोगों ने

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٢٣﴾

فَقَالَ الْمَلِكُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَوْمِهِ مَا هَذَا إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُرِيدُ أَنْ يَتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَنزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً سَابِغًا بِمِثْلِ آبِ آدَمَ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٤﴾

إِنَّ هُوَ إِلَّا رَجُلٌ بِهِ جِنَّةٌ فَاقرَّبُوا بِهِ كَقَوْلِ جِنِّي ﴿٢٥﴾

قَالَ رَبِّ اصْرِفْ بِنَا كَذَّبُونَ ﴿٢٦﴾

فَأَوْحَيْنَا إِلَيْهِ أَنْ اصْنَعْ الْفُلَ فَأَعْيِنَنَا وَوَحَيْنَا لَهَا إِذْ جَاءَ أَمْرُنَا وَقَالَ السُّورَةُ فَأَسْلُكُ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ مِثْلَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ وَلَا تَحْطَبُنِي فِي الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُغْرَقُونَ ﴿٢٧﴾

१ यानी यह तो तुम्हारे जैसा ही इंसान है, यह किस तरह नबी और रसूल हो सकता है? और अगर यह नबूअत और रिसालत का दावा कर रहा है तो इसका असल मकसद इस से तुम पर फजीलत और उच्चता (धरतरी) हासिल करना है।

२ साढ़े नौ सौ साल तक तबदील करने और दावत देने के बाद आखिर में रब से दुआ की।

३ तन्दूर पर व्याख्या (तफसीर) सूर: हूद में गुजर चुकी है कि मुनासिब बात यह है कि इस से मुराद हमारे समाज का मद्यहूर तन्दूर नहीं जिस में रोटी पकाई जाती है, बल्कि धरती मुराद है कि सारी धरती ही चर्मों (घोंटों) में तबदील हो गयी, नीचे धरती से पानी चर्मों की तरह उबल पड़ा, नूह को हुक्म दिया जा रहा है कि जब पानी धरती से उबल पड़े ---

४ यानी जानदार, नवातात और फल सब में से एक-एक जोड़ा (नर और मादा) नाव में रख ले ताकि सभी का बश वाकी रहे।

जुल्म किया है उनके बारे में मुझ से कोई बात न करना, वे तो सब डुबोये जायेंगे।

२८. जब तू और तेरे साथी नाव में अच्छी तरह बैठ जाना तो कहना कि सभी तारीफें अल्लाह के लिए ही है जिस ने हम लोगों को ज़ालिमों से छुटकारा दिलाया।

२९. और कहना हे मेरे रब! मुझे सुरक्षित (महफूज) उतारना और तू ही बेहतर तरीके से उतारने वाला है।

३०. बेशक इस में बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं, और हम बेशक इम्तेहान लेने वाले हैं।

३१. फिर उन के बाद हम ने दूसरे समुदाय भी पैदा किये।

३२. फिर उन में खुद उन में से ही रसूल भी भेजा कि तुम सब अल्लाह की इबादत करो, उस के सिवाय तुम्हारा कोई माबूद नहीं, तुम क्यों नहीं डरते?

३३. और क़ौम के सरदारों ने जवाब दिया जो कुफ़र करते थे और आखिरत की मुलाकात को झुठलाते थे, और हम ने उन्हें दुनियावी जिन्दगी में सुखी रखा था कि यह तो तुम जैसा इंसान है, तुम्हारे खानों में से खाता है और तुम्हारे पीने का पानी ही यह भी पीता है।

३४. और अगर तुम ने अपने जैसे ही इंसान की इताअत कुबूल कर ली तो बेशक तुम नुक़सान (ख़सारे) में हो।

فَلَمَّا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَعَكَ عَلَى الْفُلِكِ فَقُلَّ
الْمَعْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَحْنُ مِنْ اَعْوَابِ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۲۸﴾

وَقُلْ رَبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزِلًا مُّبْرَكًا وَاَنْتَ خَيْرُ
الْمُنْزِلِيْنَ ﴿۲۹﴾

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّرٰنٍ لِّمَنْ كُنَّا كٰلِبِيْنَ ﴿۳۰﴾

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَوْمًا اٰخَرِيْنَ ﴿۳۱﴾

فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِنْهُمْ اَنْ اَعْبُدُوْا اللّٰهَ مَا لَكُمْ
مِنْ اِلٰهِ غَيْرِهٖ ؕ اَقْلٰمٌ تَتَكَلَّمُ ﴿۳۲﴾

وَقَالَ السَّلٰمُ مِنَ قَوْمِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا
بِلِقَاءِ الْاٰجِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
مَا هٰذَا اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ؕ يٰۤاَكْفُوكُمْ مَّا تَكْفُوْنَ
مِنْهُ وَيَشْرَبُ وَمَا تَشْرَبُوْنَ ﴿۳۳﴾

وَلٰكِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ اِذَا الظّٰمِرُوْنَ ﴿۳۴﴾

१ ज़्यादातर मुफ़सिरो के नज़दीक नूह की क़ौम के बाद अल्लाह तआला ने जिस क़ौम को पैदा किया और उन में रसूल भेजा वह 'आद' की क़ौम है, क्योंकि ज़्यादातर जगह पर नूह की क़ौम के वारिस के रूप में 'आद' की क़ौम का ही बयान आया है।

३५. क्या यह तुम्हें इस बात का वादा देता है कि जब तुम मर कर केवल मिट्टी और हड्डी रह जाओगे, तो तुम फिर जिन्दा किये जाओगे?

أَيَعِدُّكُمْ أَكْمَرُكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَعِظَامًا
أَلَكُم مَّخْرُجُونَ ﴿٣٥﴾

३६. नहीं नहीं, दूर और बहुत दूर है वह जिस का तुम वादा दिये जाते हो।

هَذِهِات هَيْهَات لِمَا تُوعَدُونَ ﴿٣٦﴾

३७. जिन्दगी तो केवल दुनियावी जिन्दगी है जिस में हम मरते-जीते रहते हैं, यह नहीं कि हम फिर उठाये जायेंगे।

إِن هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا نَعْنُ
بِمَبْعُوثِينَ ﴿٣٧﴾

३८. यह तो बस वह इंसान है जिस ने अल्लाह पर झूठ गढ़ लिया है, हम तो इस पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

إِن هُوَ إِلَّا رَجُلٌ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا وَمَا نَعْنُ
لَهُ بِمُؤْمِنِينَ ﴿٣٨﴾

३९. नबी ने दुआ की कि ख इन के झूठलाने पर तू मेरी मदद कर।

قَالَ رَبِّ ائْصُرْنِي بِمَا كَذَّبُونَ ﴿٣٩﴾

४०. जवाब मिला कि यह बहुत ही जल्द अपने किये पर पछताने लगेंगे।

قَالَ عَمَّا قَلِيلٍ لَيُصْبِحُنَّ نَادِمِينَ ﴿٤٠﴾

४१. आखिर में इसाफ के मुताबिक (नियमानुसार) चीख^१ ने उन्हें पकड़ लिया और हमने उन्हें कूड़ा करकट कर डाला^२ तो जालिमों के लिए दूरी हो।

فَأَخَذَهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنَاهُمْ خِثَاءً
فَبَعْدَ الْقَوِيمِ الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

४२. फिर उन के बाद हम ने दूसरी भी क्रौम पैदा किये।

ثُمَّ أَنشَأْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُونًا آخَرِينَ ﴿٤٢﴾

४३. न तो कोई क्रौम अपने वक्त से आगे बढ़ी और न पीछे रही।

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجْلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ﴿٤٣﴾

^१ यह "चीख" कहते हैं कि हजरत जिब्रील की थी, कुछ जालिम कहते हैं कि वैसे ही कड़ी चीख थी जिस के साथ तेज आधियां थीं, दोनों ने मिलकर उन को पल भर में तबाही के घात उतार दिया।

^२ उस कूड़े करकट को कहते हैं जो बाढ़ के पानी के साथ होता है।

४४. फिर हम ने लगातार रसूल भेजे, जिस उम्मत के पास जब-जब उसका रसूल आया उस ने झुठलाया, तो हम ने एक को दूसरे के पीछे लगा दिया, और उन्हें कहानी बना दिया, उन लोगों के लिए दूरी हो जो ईमान कुबूल नहीं करते।

४५. फिर हम ने मूसा को और उस के भाई हारून को अपनी निशानियाँ और वाज़ेह दलील के साथ भेजा।

४६. फिर औन और उस की सेना की तरफ, लेकिन उन्होंने तकब्बुर किया और थे ही वे घमण्ड करने वाले लोग।

४७. कहने लगे, क्या हम अपने जैसे दो इंसानों पर ईमान लायें? जबकि खुद उनकी क़ौम हमारे गुलाम है।

४८. तो उन्होंने उन दोनों को झुठलाया, आखिर में वे लोग भी हलाक़ शुदा लोगों में शामिल हो गये।

४९. और हम ने तो मूसा को किताब भी दी कि लोग सच्चे रास्ते पर आ जायें।¹

५०. और हम ने मरियम के बेटे और उसकी माता को एक निशानी बनाया,² और उन दोनों को ऊँचे, करार वाले और बहते पानी वाली जगह में पनाह दी।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرًا كُلَّمَا جَاءَ أُمَّةٌ رُسُلَهُمْ
كَذَّبُوهُ فَاتَّبَعْنَا لِبَعْضِهِمْ بَعْضًا وَجَعَلْنَاهُمْ
أَحَادِيثًا فَبُعَدَ يَقُولُوا لَا يَأْتِينَنَا (44)

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ وَأَخَاهُ هَارُونَ
بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ (45)

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا
عَالِينَ (46)

فَقَالُوا إِنَّا لَأَنبِيَاءُ لِبَشَرِيْنَ وَإِنَّا لَقَوْمُهُمْ
لَنَا عِبْدُونَ (47)

فَكَذَّبُوهُمَا فَكَانُوا مِنَ الْمُهْلَكِينَ (48)

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَىٰ الْكِتَابَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ (49)

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّةً آيَةً وَآتَيْنَاهُمَا إِلَىٰ
رَبِّهِنَّ ذَاتِ قُرْبَىٰ وَوَعْدِينَ (50)

¹ इमाम इब्ने कसीर फरमाते हैं कि हजरत मूसा को तौरात फिरऔन और उस के मानने वालों को डुबाने के बाद अता की गयी और तौरात के उतरने के बाद अल्लाह तआला ने किसी क़ौम को सामूहिक रूप (मजमूई तौर) से अजाब के जरिये नाश नहीं किया बल्कि मुसलमानों को यह हुक्म दिया जाता रहा कि वह क़ाफ़िरों से जिहाद (धर्मयुद्ध) करें।

² क्योंकि हजरत ईसा का जन्म बिना पिता के हुआ जो रव की ताक़त का मजहर (प्रतीक) है, जिस तरह आदम को बिना माता-पिता और हव्वा को बिना माता के हजरत आदम से और दूसरे सभी इंसानों को माता-पिता के मिलन से पैदा करना उसकी निशानियों में से है।

५१. हे पैगम्बरो! हलाल चीजें खाओ और नेकी के काम करो। तुम जो कुछ कर रहे हो उस को मैं अच्छी तरह जानता हूँ।

५२. और बेशक तुम्हारा यह दीन एक ही दीन है। और मैं ही तुम सब का रब हूँ, तो तुम मुझ से डरते रहो।

५३. फिर उन्होंने खुद (ही) अपनी बात (धर्म) के आपस में टुकड़े-टुकड़े कर लिए, हर सम्प्रदाय (फिरका) उस के पास जो कुछ है उसी पर घमंड कर रहा है।

५४. तो आप भी उन्हें उनकी गफलत की हालत में कुछ बकत पड़ा रहने दें।

५५. क्या ये (इस तरह) समझ बैठे हैं कि हम जो कुछ भी उनका माल और औलाद बढ़ा रहे हैं।

५६. वे उनके लिए भलाईयों में जल्दी कर रहे हैं? नहीं, नहीं बल्कि ये समझते ही नहीं।

५७. बेशक जो लोग अपने रब के डर से डरते हैं।

५८. और जो अपने रब की आयतों पर ईमान रखते हैं।

५९. और जो अपने रब के साथ किसी को साझी नहीं बनाते।

بِأَيُّهَا الرَّسُلُ كُتِبَ عَلَيْكَ مِنَ الظَّالِمَاتِ وَأَعْمَلُوا
صَالِحًا إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٥١﴾

وَإِنَّ هُدَىٰ آئِمَّتِكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَأَنَا رَبُّكُمْ
فَاتَّقُونِ ﴿٥٢﴾

فَتَقَطَّعُوا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا كُلُّ حِزْبٍ بِمَا
لَدَيْهِمْ فَرِحُونَ ﴿٥٣﴾

فَدَرَبُهُمْ فِي عَمَرَئِهِمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿٥٤﴾

يَتَّبِعُونَ أَنبَاءًا يُدْعِيهِمْ بِهَا مِنَ الْمَالِ وَالْبَنِينَ ﴿٥٥﴾

سَأَلُوا لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ دَاهِلًا لِأَشْرُونَ ﴿٥٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ هُمُ مِنْ خَشِيَةِ رَبِّهِمْ فُشِّقُوا ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٨﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

से मुराद दीन है, और एक होने का मतलब यह है कि सभी नबियों ने एक अल्लाह की इबादत की दावत दी है, लेकिन लोग तौहीद को छोड़कर अलग-अलग गुटों और सम्प्रदायों (फिरकों) में बंट गये हैं, और हर गुट अपने ईमान और अमल पर खुश है चाहे वह सच से कितना ही दूर हो।

६०. और जो लोग देते हैं जो कुछ देते हैं और उन के दिल कापते हैं कि वे अपने रव की तरफ लौटने वाले हैं।

६१. यही है जो जल्दी-जल्दी नेकी हासिल कर रहे हैं, और यही है जो उनकी तरफ दौड़ जाने वाले हैं।

६२. हम किसी जान को उसकी ताकत से ज्यादा भार नहीं देते, हमारे पास एक किताब है जो सच ही बोलती है, उन के ऊपर तनिक भी झुलम न होगा।

६३. बल्कि उन के दिल उस तरफ से माफ़िल हैं और उन के लिए इस के सिवाय भी बहुत से कर्म हैं जिन्हें वे करने वाले हैं।

६४. यहाँ तक कि जब हम ने उन के खुशहाल लोगों को अजाब में जकड़ लिया तो वे बिलबिलाने लगे।

६५. आज मत बिलबिलाओ, बेशक तुम हमारे सामने मदद न किये जाओगे।

६६. मेरी आयतें तो तुम्हारे सामने पढ़ी जाती थीं, फिर भी तुम अपनी एडियों के बल उल्टे भागते थे।

६७. अकड़ते ऐंठते, कहानी बनाते उसे छोड़ देते थे।

६८. क्या उन्होंने इस बात पर गौर और फिक्र नहीं किया? बल्कि इन के पास वह आया जो इन के पहलों के पास नहीं आया था?

६९. या इन्होंने अपने पैगम्बर को पहचाना नहीं कि उस के इंकार करने वाले हो रहे हैं।

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجَالَةٌ
أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ ﴿٦٠﴾

أُولَٰئِكَ يُسْرِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سِيمُونَ ﴿٦١﴾

وَلَا تُكَلِّفُ نَفْسًا وِجْرًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا مَكْتُوبٌ يَّتَّبِعُونَ
بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يَظْلَمُونَ ﴿٦٢﴾

بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي غَمْرَةٍ مِن هَٰذَا وَهُمْ أَصْحَابُ قُرُونٍ
دُونَ ذَٰلِكَ هُمْ لَهَا عَامِلُونَ ﴿٦٣﴾

حَتَّىٰ إِذَا أَخَذْنَا مُتْرَفِيهِم بِالْعَذَابِ إِذَا هُمْ
يَجْعَرُونَ ﴿٦٤﴾

لَا تَجْعَرُوا الْيَوْمَ إِنَّكُمْ فَتَنًا لَا تَنْصُرُونَ ﴿٦٥﴾

قَدْ كَانَتْ آيَاتِي تُنزل عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلَىٰ آعْقَابِكُمْ
تَنْكِبُونَ ﴿٦٦﴾

مُسْتَكْبِرِينَ ۗ هَٰ بِمَ سُبُورًا تَهْجُرُونَ ﴿٦٧﴾

أَقْلَمُ يَدًا يُرَوِّا الْقَوْلَ أَمْ جَاءَهُمْ مَا لَهُمْ يَأْتِ
آيَاتُهُمْ الْأَوَّلِينَ ﴿٦٨﴾

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوا رَسُولَهُمْ فَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٦٩﴾

७०. या यह कहते हैं कि इसका माथा फिर गया है? बल्कि वह तो उन के पास सच लेकर आया है। हाँ, इन में से ज्यादातर सच से पिड़ने वाले हैं।

७१. अगर हक ही उनकी इच्छाओं का अनुयायी (पैरोकार) हो जाये, तो धरती और आकाश और उन के बीच जितनी चीजें हैं सब तहस-नहस हो जायें। सच तो यह है कि हम ने उन्हें उन की नसीहत पहुँचा दी है, लेकिन वे अपनी शिक्षा (नसीहत) से मुँह मोड़ने वाले हैं।

७२. क्या आप उन से कोई उजरत (पारिश्रमिक) चाहते हैं? याद रखिये, आप के रब की उजरत बहुत बेहतर है, और वह सब से अच्छी रोजी पहुँचाने वाला है।

७३. बेशक आप तो उन्हें सीधे रास्ते की तरफ बुला रहे हैं।

७४. और बेशक जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते वे सीधे रास्ते से मुड़ जाने वाले हैं।

७५. और अगर हम उन पर रहमत (कृपा) करें और उनकी कठिनाई दूर कर दें तो यह तो अपनी-अपनी सरकशी पर ज्यादा मजबूत रहकर ज्यादा भटकने लगेंगे।

७६. और हम ने उन्हें अजाब में भी जकड़ा, फिर भी ये लोग न तो अपने रब के सामने झुके और न बिनती (आजिजी) का रास्ता अपनाया।^१

أَمْ يَقُولُونَ بِهِ حِقْدٌ مَّ بَلْ جَاءَهُمُ بِالْحَقِّ
وَأَكْثَرُهُمُ لِلْحَقِّ لِكُفْرِهِمْ ۝ ۷۰

وَكُلَّ النَّبِيِّ الْحَقُّ أَهْوَاءَهُمْ لَقَدْ سَدَّتِ السَّمَوَاتُ
وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ مَبْلُوكًا بِذُنُوبِهِمْ
فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُعْرِضُونَ ۝ ۷۱

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَجَ لَكَ خَيْرٌ مَّا
وَهُوَ خَيْرٌ لِّلرَّزِيقِينَ ۝ ۷۲

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوهُمْ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ ۷۳

وَإِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ
لَنُكِبُونَ ۝ ۷۴

وَكُلَّ رِجْسِهِمْ وَاكْتَفَيْنَا مَا بِهِمْ مِنْ مُرٍ لِّلْجَوَا
فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۝ ۷۵

وَلَقَدْ أَخَذْنَا لَهُمُ الْبَاطِلَ الَّذِي هُمْ يَنْتَظِرُونَ
وَمَا يَنْظُرُونَ ۝ ۷۶

^१ हक से मुराद दीन और दीनी कानून है, यानी अगर दीन उनकी इच्छानुसार नाजिल हो तो बाजेह बात है कि धरती और आकाश का सारा प्रबन्ध (निजाम) ही छिन्न-भिन्न हो जाये, जैसे वह चाहते हैं कि एक देवता के बजाय बहुत से देवता हों, अगर ऐसा हकीकत में हो तो क्या मखलूक की तदबीर ठीक रह सकती है? और इसी तरह की दूसरी उनकी तमन्नायें हैं।

^२ अजाब से मुराद यहाँ वह हार है जो बद की लड़ाई में मक्का के काफिरों की हुई, जिस में उन

७७. यहाँ तक कि जब हम ने उन पर कड़े अजाब के दरवाजे खोल दिया तो उसी वक्त तुरन्त मायूस हो गये ।

७८. वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हारे लिए कान, आंखें और दिल बनाया, लेकिन तुम बहुत कम शुक्रिया अदा करते हो ।

७९. और वही है जिस ने तुम्हें (पैदा कर के) धरती पर फैला दिया और उसी की तरफ तुम जमा किये जाओगे ।

८०. और यह वही है जो जिलाता और मारता है और रात-दिन के फेरबदल करने का मालिक भी वही है, क्या तुम को समझ बूझ नहीं?

८१. बल्कि उन लोगों ने भी वही बात कही जो पहले के लोग कहते चले आये हैं ।

८२. कहा कि जब हम मर कर मिट्टी और हड्डी हो जायेंगे, क्या फिर भी हम जरूर खड़े किये जायेंगे?

८३. हम से और हमारे पूर्वजों (बुजुर्गों) से पहले ही से यह वादा होता चला आया है, कुछ नहीं, यह तो केवल अगले लोगों के दकोसले हैं ।

८४. पृच्छिये तो कि धरती और उस की कुल चीजें किस की हैं? बताओ अगर जानते हो ।

حَقَّىٰ إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيدٍ إِذَا هُمْ فِيهِ مُبْسُوتُونَ ﴿٧٧﴾

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٧٨﴾

وَهُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٧٩﴾

وَهُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٨٠﴾

بَلْ قَالُوا وَمِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُونَ ﴿٨١﴾

قَالُوا ۗ إِذَا هُمْ تَرَابًا وَمِمَّا نُرَاثِهَا وَنُعِظُّهَا مَا نَافَعُنَا لَمَسْعُونًا ﴿٨٢﴾

لَقَدْ وَعَدْنَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا هَذَا مِن قَبْلُ إِن هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨٣﴾

قُلْ لِمَنِ الْأَرْضُ وَمَن فِيهَا إِن لَّكُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٤﴾

के सत्तर आदमी मारे गये थे या वह सूखे का अजाब है जो नबी ﷺ के शाप (बहुआ) के नतीजे में आया था ।

1 इस में अल्लाह की बड़ाई का बयान है कि जिस तरह तुम्हें पैदा करके कई इलाकों में फैला दिया है, तुम्हारे रंग भी एक-दूसरे से अलग है, जबानें (भाषायें) भी अलग और मूयाभला और संस्कृति (तहजीब) भी अलग । फिर एक वक्त आयेगा कि तुम सब को जिंदा करके वह अपने दरबार में जमा करेगा ।

८४. वे तुरन्त जवाब देंगे कि अल्लाह की, कह दीजिए तो फिर तुम नसीहत हासिल क्यों नहीं करते।

८६. पूछिये, सातों आकाशों का और बहुत सम्मानित (इज्जत वाले) अर्ब का रब कौन है?

८७. वे लोग जवाब देंगे कि अल्लाह ही है। कह दीजिए कि फिर तुम क्यों नहीं डरते?¹

८८. पूछिये कि सभी चीजों का अधिकार (हक) किस के हाथ में है जो पनाह देता है, और जिस की तुलना में कोई पनाह नहीं दिया जाता, अगर तुम जानते हो तो बता दो?

८९. यही जवाब देंगे कि अल्लाह ही है, कह दीजिए फिर तुम पर किधर से जादू हो जाता है?

९०. सच यह है कि हम ने उन्हें सच पहुँचा दिया है, और ये बेशक झूठे हैं।

९१. न तो अल्लाह ने किसी को बेटा बनाया और न उसके साथ दूसरा कोई मावूद है, वरना हर देवता अपनी मखलूक को लिए-लिए फिरता और हर एक-दूसरे पर ऊँचा होने की कोशिश करता, जो गुण यह बताते हैं अल्लाह उन से पाक है।

९२. वह छिपी-जाहिर का जानने वाला है और जो शिक यह करते हैं उस से बहुत ऊँचा है।

९३. (आप) दुआ (प्रार्थना) करें कि हे मेरे रब! अगर तू मुझे वह दिखाये जिस का वादा इन्हें दिया जा रहा है।

سَيَقُولُونَ لَوْلَا أَمَّا تَذَكَّرُونَ ﴿٨٥﴾

قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٨٦﴾

سَيَقُولُونَ لَوْلَا أَمَّا تَشْفَعُونَ ﴿٨٧﴾

قُلْ مَنْ يَمْلِكُ بِرَبِّهِ مَلَكُوتَ عِلْمِي وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٨٨﴾

سَيَقُولُونَ لَوْلَا أَمَّا تَسْحَرُونَ ﴿٨٩﴾

بَلْ آتَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٩٠﴾

مَا آخَذَ اللَّهُ مِنْ وَلَدٍ وَمَا كَانَ مَعَهُ مِنْ إِلَهٍ إِذًا لَذَهَبَ كُلُّ إِلَهٍ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَّ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُصِفُونَ ﴿٩١﴾

عَلِيمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَاعْلَمَ عَمَّا يُشِيرُونَ ﴿٩٢﴾

قُلْ رَبِّيَ إِمَّا تُرِيحِي مَا يُوعَدُونَ ﴿٩٣﴾

¹ यानी जब तुम्हें कुबूल है कि धरती का और उस में मौजूद हर चीज का पैदा करने वाला सिर्फ एक अल्लाह ही है। आकाश और महान (अजीम) अर्ब का मालिक भी वही है तो भी तुम्हें यह कुबूल करने में क्यों शक है कि इबादत के लायक भी वही एक अल्लाह है, फिर तुम उस के एक होने को कुबूल करके उस के अजाब से बचने की कोशिश क्यों नहीं करते?

९४. तो हे मेरे रब ! तू मुझे इन जालिमों के गुट में न करना ।

९५. और हम जो कुछ वादे उन्हें दे रहे हैं सब आप को दिखा देने की क़ुदरत रखते हैं ।

९६. बुराई को इस तरह से दूर करें जो पूरी तरह भलाई वाला हो, जो कुछ ये बयान करते हैं, उसे हम अच्छी तरह जानते हैं ।

९७. और दुआ करें कि हे मेरे रब ! मैं शैतानों की शंकाओं (बसबसों) से तेरी पनाह चाहता हूँ ।

९८. और हे मेरे रब ! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ कि वे मेरे पास आ जायें ।

९९. यहाँ तक कि जब उन में से किसी की मौत आने लगती है तो कहता है कि हे मेरे रब ! मुझे वापस लौटा दे ।

१००. कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर नेकी का काम करूँ, कभी ऐसा नहीं होने का, यह केवल एक क़ौल है जिस का यह कहने वाला है । उन के पीठ के पीछे तो एक पट है, उन के दोबारा ज़िन्दा होने वाले दिन तक ।^१

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِي فِي الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٩٤﴾

وَأَنَا عَلَىٰ أَنْ تُؤَيِّدَ مَا وَعَدْتُهُمْ لَقَدْ رَوْنٰ ﴿٩٥﴾

إِذْ دَعَا النَّبِيَّ هِيَ أَحْسَنُ النَّبِيَّةِ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُونَ ﴿٩٦﴾

وَقُلْ رَبِّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ هَمَزَاتِ الشَّيْطَانِ ﴿٩٧﴾

وَأَعُوذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَحْضُرُونِ ﴿٩٨﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُونِ ﴿٩٩﴾

لَعَلَّ نَعْمَلُ صَالِحًا وَإِنَّا تَرَكْنَا كَلِمَةً كَذِبَةً ﴿١٠٠﴾

هُوَ قَوْلُهَا وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمْ يَرْجِعُ إِلَىٰ يَوْمِ

يُبْعَثُونَ ﴿١٠٠﴾

^१ यह तमन्ना (कामना) हर काफिर मौत के वक़्त फिर उठाये जाने के वक़्त, अल्लाह के दरबार में खड़े होते वक़्त और नरक में ढकेले जाने के वक़्त करता है और करेगा, लेकिन इसका कोई फ़ायदेदा नहीं होगा, क़ुरआन करीम में इस विषय को कई जगहों पर बयान किया गया है ।

^२ दो चीज़ों के बीच पर्दा और आड़ को *برزخ* कहा जाता है । दुनिया की ज़िन्दगी और आखिरत की ज़िन्दगी के बीच की जो मुद्दत है, उसे यहाँ *برزخ* कहा गया है । क्योंकि मरने के बाद इंसान का नाता दुनिया से ख़त्म हो जाता है और आखिरत की ज़िन्दगी की शुरुआत उस वक़्त होगी जब सभी लोगों को दोबारा ज़िन्दा किया जायेगा, यह बीच की ज़िन्दगी जो क़न्न में या पक्षी के पेट में या जला देने की हालत में भिष्टी के कणों में गुज़रती है, बज़्रख़ की ज़िन्दगी है । इंसान का यह बज़्रूद जहाँ भी और जिस रूप में भी होगा स्पष्टरूप (वाज़ेह तौर) से वह भिष्टी बन चुका होगा, या राख बनाकर हवाओं में उड़ा दिया गया या नदियों में बहा दिया गया होगा या किसी जानवर का भोजन बन गया होगा, लेकिन अल्लाह तआला सभी को एक नया रूप अता कर हश्र के मैदान में जमा करेगा ।

१०१. तो जब नरसिंघा में फूँक मार दी जायेगी, उस दिन न तो आपस के सम्बन्ध ही रहेंगे, न आपस की पूछताछ।

१०२. तो जिनकी तराजू का पलड़ा भारी हो गया वे तो कामयाबी हासिल करने वाले हो गये।

१०३. और जिनकी तराजू का पलड़ा हल्का रह गया ये हैं वे जिन्होंने अपना नुकसान खुद कर लिया, जो हमेशा के लिए नरक में चले गये।

१०४. उन के मुँह को आग झुलसाती रहेगी, वे वहाँ बद बने हुए होंगे।¹

१०५. क्या मेरी आयतों का पाठ तुम्हारे सामने नहीं होता था? फिर भी तुम उन को झुठलाते थे।

१०६. वे कहेंगे कि हे मेरे रब! हमारी बदनसीबी हम पर प्रभावशाली (गालिब) हो गयी, हकीकत में हम भटके हुए थे।

१०७. हे मेरे रब ! हम को यहाँ से निकाल दे, अगर अब हम ऐसा करें तो बेशक हम ज़ालिम हैं।

१०८. (अल्लाह तआला) फरमायेगा फटकार है तुम पर यही पड़े रहो और मुझ से बात न करो।

१०९. मेरे बन्दों का एक गुट था जो लगातार यही कहता रहा कि हे मेरे रब! हम ईमान ला चुके हैं, तू हमें माफ़ कर दे और हम पर रहम कर तू सभी रहम करने वालों से ज्यादा रहम करने वाला है।

قَادًا تُفِخُ فِي الصُّورِ فَلَا أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ
يَوْمَئِذٍ وَلَا يَكْتَسِبُونَ⁽¹⁰¹⁾

فَمَنْ تَقَلَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ⁽¹⁰²⁾

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ فَأُولَئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا
أَنْفُسَهُمْ فِي جَهَنَّمَ خَالِدُونَ⁽¹⁰³⁾

تَلْفَحُ وُجُوهُهُمُ النَّارَ وَهُمْ فِيهَا كَالِحُونَ⁽¹⁰⁴⁾

أَلَمْ تَكُنْ أَيْتِي تَسْتَلِمُ عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ
بِهَا كَذِبُونَ⁽¹⁰⁵⁾

قَالُوا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا
وَكُنَّا قَدَمًا خَالِينَ⁽¹⁰⁶⁾

رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِن عُدْنَا فَإِنَّا ظَالِمُونَ⁽¹⁰⁷⁾

قَالَ اخْسَئُوا فِيهَا وَلَا تُكَلِّمُونِ⁽¹⁰⁸⁾

إِنَّهُ كَانَ قَرِينًا مِنَ عِبَادِي يَغُفُّ لَكُمْ رَبَّنَا
أَمَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ
الْرَاحِمِينَ⁽¹⁰⁹⁾

¹ 'خُلج' का मतलब है होठ सिकुड़ कर दाँत निकल आये, होठ दाँतों के बस्त्र (लिबास) के रूप में है, जब यह नरक की आग से सिकुड़ और सिमट जायेंगे तो दाँत दिखायी देने लगेंगे, जिस से इंसान का रूप बद्सूरत और डरावना हो जायेगा।

११०. (लेकिन) तुम उनका मजाक ही उड़ाते रहे यहाँ तक कि (उन के पीछे) तुम मेरी याद भुला बैठे और तुम उन की हँसी ही उड़ाते रहे।

१११. मैंने आज उन के सब (और तक्वा) का बदला दे दिया है, कि वे अपनी मुराद को पहुँच चुके हैं।

११२. (अल्लाह तआला) पूछेगा कि तुम धरती पर वर्षों की गिनती से कितने दिन रहे?

११३. (वे) कहेंगे एक दिन या एक दिन से भी कम, गिनती करने वालों से भी पूछ लीजिए।

११४. (अल्लाह तआला) फरमायेगा हकीकत यह है कि तुम वहाँ बहुत कम रहे हो, काश! इस को तुम पहले ही से जान लेते।

११५. क्या तुम यह समझ बैठे हो कि हम ने तुम्हें बेकार ही पैदा किया है, और यह कि तुम हमारी ओर लौटाये ही नहीं जाओगे?

११६. अल्लाह तआला सच्चा बादशाह है, वह चुलन्द है, उस के सिवाय कोई माबूद नहीं, वही बाइज़्जत अर्थ का रब है।

११७. और जो इंसान अल्लाह के साथ किसी दूसरे देवता को पुकारे जिस का उस के पास कोई सबूत नहीं तो उस का हिसाब उस के रब के ऊपर ही है। बेश्क काफिर लोग कामयाबी से महरूम (बंचित) हैं।

فَاتَّخَذُوا لَهُمْ سَخِرَاتٍ حَتَّىٰ أَنْسَوْهُمْ ذِكْرِي
وَلَكُمْ فِيهِمْ فَصْحَانٌ ﴿١١٠﴾

إِنِّي جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوا ۗ إِنَّهُمْ
سُومُ الْقَارُونَ ﴿١١١﴾

قُلْ كَمْ لَكُمْ لِهَيْبَتِي فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِينَ ﴿١١٢﴾

قَالُوا لَيْسَ لَنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسَلِ الْعَاوِينَ ﴿١١٣﴾

قُلْ إِنْ لَكُمْ لِهَيْبَتِي إِلَّا قَلِيلٌ لَّوْ أَنَا لَأَكْرَهُ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١٤﴾

أَفَصَبَّيْتُمْ ۗ إِنَّمَا عَقَّبْنَاهُمْ بَعَثًا ۗ وَآتَيْنَاهُمُ الْبِنَاءَ
لَا تَجْعَلُونَ ﴿١١٥﴾

فَعَلَى اللَّهِ الْبَيْكُ الْحَقُّ ۗ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ﴿١١٦﴾

وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ
فَالنَّارُ حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ
الْكَاذِبُونَ ﴿١١٧﴾

1 इस से मुराद फरिश्ते हैं, जो इंसान के अमल और उम्र लिखने पर तैनात हैं, या वह इंसान मुराद है जो हिसाब-किताब में म्हातर रखते हैं। क़यामत की भयानकता उन के दिमाग से दुनिया की सुख-सुविधा को मिटा देगी और दुनिया की ज़िन्दगी उन्हें ऐसी लगेगी जैसे दिन या आधा दिन, इसलिए वह कहेंगे कि हम तो एक दिन या उस से भी कम वक़्त दुनिया में रहे। बेश्क तू फरिश्तों से या गिनती करने वालों से पूछ ले।

2 इस से मालूम हुआ कि भलाई और कामयाबी अख़िरत में अल्लाह के अज़ाब से बच जाना है, सिर्फ दुनिया के माल और आराम की ज़्यादती कामयाबी नहीं, यह तो दुनिया में काफ़िरों को भी मिली है, लेकिन अल्लाह तआला उन से भलाई को नकार रहा है, जिसका साफ़ मतलब है

११८. और कहो कि हे मेरे रब ! तू माफ़ कर और रहम (कृपा) कर और तू सभी रहम करने वालों से अच्छा रहम करने वाला है।

وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ﴿۱۱۸﴾

सूरतुन नूर-२४

سُورَةُ النُّورِ

सूर: नूर* मदीने में उतरी और इसकी चौसठ आयतें और नौ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. यह है वह सूर: जो हम ने उतारी है। और मुकर्रर कर दी है और जिस में हम ने खुले हुक्म उतारे हैं ताकि तुम याद रखो।

२. जिना करने वाली औरत-मर्द में से हर एक को सौ कोड़े लगाओ।^१ उन पर अल्लाह के नियमों के मुताबिक सजा देते हुए तुम्हें कभी तरस नहीं खानी चाहिए अगर तुम्हें अल्लाह पर और क्रयामत के दिन पर ईमान हो। उन की

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

سُورَةٌ أَنْزَلْنَاهَا وَكَرَّمْنَاهَا وَانزَلْنَا فِيهَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّأَهْلِ الْكِتَابِ تَذَكُّرُونَ ﴿۱﴾

الزَّانِيَةِ وَالزَّانِيَ فَاجْلِدُوهُمَا وَأَكْلًا وَسِوَاهُمَا مِائَةً جَلْدَةٍ وَلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللّٰهِ إِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَوَاسِعُونَ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَشْهَدُوا عَدَاءَهُمَا طَافِقَةً مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿۲﴾

कि असल तौर से भलाई आखिरत की भलाई है, जो ईमानवालों के हिस्से में आयेगी न दुनियावी धन और साधन (वसायल) का ज्यादा होना, जो कि बिना भेद के ईमानवालों और काफिर सब को ही मिलती है।

* सूर: नूर, सूर: अहज़ाब और सूर: निसा यह तीनों सूर: ऐसी हैं जिन में औरतों की खास परेशानियाँ समाजिक जीवन के बारे में अहम तफसीली जानकारियों का बयान है।

^१ कुरआन करीम की सभी सूरतें अल्लाह की उतारी हुई हैं, लेकिन इस सूर: के बारे में जो यह कहा तो इस से इस सूर: में बयान किये गये हुक्मों की अहमियत को उजागर करना है।

^२ व्याभिचार (जिना) की शुरूआती सजा जो इस्लाम में बढ़ती तौर से बतायी गयी थी, वह सूर: निसा की आयत नं० १५ में गुज़र चुकी है, उस में कहा गया था कि जब तक इस के लिए कोई स्थाई दण्ड निर्धारित (मुस्तकिल सजा मुकर्रर) न कर लिया जाये, उन बदकार औरतों को घरों में बन्द रखो। फिर जब सूर: नूर की यह आयत उतरी तो नबी ﷺ ने फरमाया कि अल्लाह ने जो बादा किया था, उस के ऐतबार से बदकार मर्द-औरत का स्थाई दण्ड निर्धारित कर दिया गया है वह तुम मुझ से सीख लो, और वह है कि अविवाहित मर्द-औरत के लिए हर एक को सौ-सौ कोड़े और विवाहित (शादी बुदा) मर्द-औरत को सौ-सौ कोड़े और पत्थरों से मार कर मार डालना। (सहीह मुस्लिम, किताबुल हुदूद)

सज्जा के वक्त मुसलमानों का एक गुंठ मौजूद होना चाहिए।

३. व्याभिचारी (जिना) मर्द सिवाय बदकार औरत या मूर्तिपूजक औरत के दूसरे से विवाह नहीं करता और व्याभिचारिणी औरत भी सिवाय व्याभिचारी मर्द या मूर्तिपूजक मर्द के सिवाय दूसरे से विवाह नहीं करती। और ईमानवालों को यह हराम (निषेध) कर दिया गया।^१

४. और जो लोग पवित्र स्त्री पर जिना का इल्जाम लगायें, फिर चार गवाह पेश न कर सकें तो उन्हें अस्सी कोड़े लगाओ और कभी भी उनकी गवाही कुबूल न करो, ये दुराचारी लोग हैं।^२

५. हाँ, जो लोग इस के बाद माफ़ी मांग कर सुधार कर लें तो अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।

६. और जो लोग अपनी बीवियों पर व्याभिचार (बदकारी) का इल्जाम लगायें और उन का गवाह सिवाय उन के दूसरे कोई न हो तो ऐसे लोगों में से हर एक का सबूत यह है कि चार बार अल्लाह की कसम खा कर कहे कि वह सच्चा में से है।

الرَّانِي لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ
لَا يَنْكِحُهَا إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَحُرْمٌ ذَلِكَ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ ③

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ
شُهَدَاءَ فَلْيُكْفَرُوهُنَّ لَنْزِيلِ اللَّهِ وَلَا تَقْبَلُوا
لَهُنَّ شَهَادَةً أَبَدًا وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ④

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا
وَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ⑤

وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُن لَّهُمْ شُهَدَاءُ
إِلَّا أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحْسَنِهِمْ أَنْ يَشْفَعُوا بِاللَّهِ
رَبِّهِمْ لَوْنِ الشَّاهِدِينَ ⑥

^१ इस के मतलब में मुफ़रिसों में इस्तिस्लाफ़ (मतभेद) है। कुछ कहते हैं कि यहाँ विवाह से मुराद मशहूर विवाह नहीं है बल्कि जिना के अर्थ (मायेना) में है और मक़सद व्याभिचार (जिना) के बुरे नतीजे और बुरा काम को बयान करना है।

^२ इस में تَنْبِ (इल्जाम लगाने) की सज्जा बयान की गई है कि जो इंसान किसी पाक दामन औरत या मर्द पर व्याभिचार (जिना) का इल्जाम लगाये (उसी तरह जो औरत किसी पवित्र पुरुष या औरत पर व्याभिचार का इल्जाम लगाये) और सबूत में चार गवाह पेश न कर सके, तो उन के लिए तीन हुक्म बयान किये गये हैं (१) उन्हें अस्सी कोड़े लगाये जायें, (२) उनकी गवाही कभी कुबूल न की जायें और (३) वह अल्लाह के सामने और लोगों के सामने दुराचारी (फ़ासिक) हैं।

७. और पाँचवी बार यह कि उस पर अल्लाह की लानत हो अगर वह झूठों में से हो।^१

८. और उस (औरत) से सजा इस तरह खत्म की जा सकती है कि वह चार बार अल्लाह की कसम खा कर कहे कि बेश्क उसका पति झूठ बोलने वालों में से है।

९. और पाँचवी बार कहे कि उस पर अल्लाह का मज्रव (क्रोध) हो अगर उस का पति सच्चों में से हो।

१०. और अगर अल्लाह (तआला) का फज़ल और रहमत (दया) तुम पर न होती (तो तुम पर दुख उतरते) और अल्लाह (तआला) माफी को कुबूल करने वाला हिक्मत वाला है।

११. जो लोग यह बहुत बड़ा बुहतान (आक्षेप) खड़ा कर लाये हैं^२ यह भी तुम में से एक गुट है^३ तुम उसे अपने लिए बुरा न समझो, बल्कि यह तो तुम्हारे हक़ में बेहतर है। हाँ, उन में से हर एक पर उतना गुनाह है जितना उस ने

وَالْخَامِسَةَ أَنَّ لَعَنَتُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ

مِنَ الْكَاذِبِينَ ⑦

وَيَذَرُوهَا عَنهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهَدَاتٍ

بِاللَّهِ إِنَّهُ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ⑧

وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللَّهِ عَلَيْهَ إِنْ كَانَ

مِنَ الصَّادِقِينَ ⑨

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ

تَوَّابٌ حَكِيمٌ ⑩

إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِآلِافِكُمْ عِصْيَةً وَّنِفْكَوَةً لَا تَسْبِيحَةٌ

سُورَةُ الْكُرْهُ دَابِلٌ هُوَ خَيْرٌ لِّكُمْ دَابِلٌ لِحَيْبِ سُوْيٍ وَتَنْهَمُ

^१ इस में لَان (लिआन) के मसअले का वयान है जिस का मतलब यह है कि किसी पति ने अपनी पत्नी को अपनी आँखों से किसी दूसरे के साथ बुरा काम करते हुए देखा, जिसका वह तो गवाह है, लेकिन चूँकि जिना के कानून को साबित करने के लिए चार गवाहों की अज़रूरत है, इसलिए जब तक वह अपने साथ दूसरे तीन गवाह न पेश करे, उसकी पत्नी पर जिना का कानून लागू नहीं हो सकता, लेकिन अपनी आँखों से देख लेने के बाद ऐसी गलत पत्नी को सहन करना भी नामुमकिन है। दीनी कानून ने इसका यह हल पेश किया है कि यह इंसान अदालत में या अदालत के हाकिम के सामने चार बार अल्लाह की कसम खाकर यह कहेगा कि वह अपनी पत्नी पर जिना का इल्ज़ाम लगाने में सच्चा है या यह बच्चा या गर्भ (हमल) उसका नहीं है, और पाँचवी बार कहेगा कि अगर वह झूठा है तो उस पर अल्लाह की लानत।

^२ مِنْهُمْ से मुराद वह इल्ज़ाम का वाक़ेआ है जिस में मुनाफ़िकों ने हज़रत आयेशा (رضي الله عنها) की इज़्ज़त और एहतेराम को कलकित (दागदार) करना चाहा था, लेकिन अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में हज़रत आयेशा (رضي الله عنها) के ऊपर लगे इल्ज़ाम का खण्डन (तरदीद) करने के लिए आयत उतार के उन के पाक सतीत्व (इस्मत) और इज़्ज़त को और बहुत साफ़ कर दिया।

^३ एक गुट या समूह को عَصْبَةٌ कहा जाता है क्योंकि वे एक-दूसरे की ताकत और मदद की वजह से होते हैं।

कमाया है, और उन में से जिस ने उस के बहुत बड़े हिस्से को अंजाम दिया है, उस के लिए सजा भी बहुत बड़ी है।¹

१२. उसे सुनते ही मुसलमान मर्दों और औरतों ने अपने हक में अच्छा ह्याल क्यों नहीं किया और क्यों न कह दिया यह तो खुला इल्जाम (आरोप) है।²

१३. वह इस पर चार गवाह क्यों नहीं लाये? और जब गवाह नहीं लाये तो यह बुहतान लगाने वाले लोग बेशक अल्लाह के करीब केवल झूठे हैं।

१४. और अगर तुम पर अल्लाह (तआला) का फजल और रहमत दुनिया और आखिरत में न होता तो बेशक तुम ने जिस बात के चर्चे शुरू कर रखे थे उस बारे में तुम्हें बहुत बड़ा अजाब पहुंचता।

१५. जबकि तुम अपने मुंह से इस की चर्चा लगातार करने लगे और अपने मुंह से वह बात निकालने लगे जिस की तुम को कभी खबर नहीं थी, अगरचे तुम उसे आसान बात समझते रहे, लेकिन अल्लाह के करीब वह बहुत बड़ी बात थी।

१६. और तुम ने बात सुनते ही क्यों न कह दिया कि हमें ऐसी बात मुंह से निकालनी भी अच्छी नहीं? हे अल्लाह! तू पाक है, यह तो बहुत बड़ा बुहतान है।

مَا كَسَبَ مِنَ الْإِثْمِ وَالَّذِي تَوَلَّى كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝۱۱

لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا وَقَالُوا هَذَا إِفْكٌ مُّبِينٌ ۝۱۲

لَوْلَا جَاءَ وَعَلَيْهِمْ بِأَيِّمَةٍ شَهَادَةٍ قَدْ لَمَّ يَتَوَاتَرًا بِالشَّهَادَةِ فَأُولَئِكَ عِنْدَ اللَّهِ هُمُ الْكَاذِبُونَ ۝۱۳

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ لَسْتُمْ فِي مَا كَفَرْتُمْ فِيهِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝۱۴

إِذْ تَلَقَوْنَهُ بِالنِّسْوَةِ الَّتِي تَقُولُونَ بِالْوَالِدِ الَّتِي كُنْتُمْ نَكُرُّهَا عَلَيْهِ عِلْمًا وَتَحْسَبُونَهَا لَهْوَ عَابَثًا وَهُوَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمٌ ۝۱۵

وَلَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ قُلْتُمْ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَكْتُمَ بِهِدًا إِذْ سَمِعْتُمْ هَذَا بِهِتَانٌ عَظِيمٌ ۝۱۶

¹ इस से मुराद अब्दुल्लाह विन उवैय मुनाफिकों का सरदार है जो इस साबिश (पड़यन्त्र) का मुखिया था।

² यहाँ से प्रशिक्षण (तरबियत) का वह पहलू जाहिर हो रहा है जो इस वाक्या में लूपा है। इन में सब से पहली बात यह है कि ईमानवाले एक जान की तरह हैं, जब हजरत आयेशा पर इल्जाम लगाया गया तो तुम ने अपने ऊपर समझकर इसका खण्डन (तरदीद) क्यों नहीं किया और उसे खुला बुहतान (आक्षेप) क्यों नहीं कह दिया?

१७. अल्लाह (तआला) तुम्हें नसीहत करना है कि फिर कभी ऐसा काम न करना, अगर तुम सच्चे ईमानवाले हो।

يَعِظُكُمْ اللَّهُ أَنْ تَعُودُوا إِلَى الْبَدَا إِنْ لَنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٧﴾

१८. और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सामने अपनी आयतें बयान कर रहा है, और अल्लाह (तआला) जानने वाला हिक्मत वाला है।

وَيُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿١٨﴾

१९. जो लोग मुसलमानों में बुराई फैलाने की आरजू रखते हैं, उन के लिए दुनिया और आखिरत में दुखदायी अजाब है, और अल्लाह (तआला) सब कुछ जानता है और तुम कुछ नहीं जानते।

إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ أَنْ تَشِيعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ
آمَنُوا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿١٩﴾

२०. और अगर तुम पर अल्लाह (तआला) का फज़ल और रहमत न होती, और यह भी कि अल्लाह (तआला) बहुत प्रेम करने वाला रहम करने वाला है (तो तुम पर अजाब आ जाता)।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللَّهَ
رَوْفٌ رَحِيمٌ ﴿٢٠﴾

२१. हे ईमानवालो! शैतान के पदचिन्हों (निशाने कदम) पर न चलो, जो इंसान शैतान के पदचिन्हों पर चले, तो वह बेहयाई और बुरे कामों का ही हुक्म देगा, और अगर अल्लाह (तआला) का फज़ल और रहमत तुम पर न होती तो तुम में से कोई भी कभी पाक और साफ़ न होता। लेकिन अल्लाह (तआला) जिसे पाक करना चाहे कर देता है, और अल्लाह (तआला) सब सुनने वाला और सब जानने वाला है।

يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ
وَمَنْ يَتَّبِعْ خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهُ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ
وَالْمُنْكَرِ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ
مَا ذُكِرْتُمْ مِنْ أَحَدٍ أَبَدًا وَلَكِنَّ اللَّهَ يُزَكِّي
مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢١﴾

१ फ़ाहिशे का मतलब है निर्लज्जा (बेहयाई) और कुरआन ने जिना को बेहयाई कहा है (यनी इस्राईल) और यहाँ जिना के एक झूठी खबर के प्रचार को भी अल्लाह तआला ने बेहयाई कहा है और इसे दुनिया और आखिरत के दुखदायी अजाबों का कारण (सबब) बताया है, जिस से असभ्यता (बेहयाई) के बारे में इस्लाम की प्रकृति (भिजाज) और अल्लाह तआला की मर्जी का अंदाजा होता है कि सिर्फ़ असभ्यता (बेहयाई) की झूठी खबर का फैलाना अल्लाह के सामने कितना बड़ा गुनाह है, तो जो लोग रात-दिन एक इस्लामी समाज में अखबारों, रेडियो, टी-वी और फ़िल्मों डामों के जरिये बेहयाई का प्रचार कर रहे हैं और घर-घर उसे पहुंचा रहे हैं अल्लाह के यहाँ ये लोग कितने बड़े गुनहगार होंगे?

२२. और तुम में से जो भी बड़े और कुशादगी वाले हैं, उन्हें अपने करीबी रिश्तेदारों और गरीबों और मुहाजिरों को अल्लाह के रास्ते में देने से क्रसम न खा लेनी चाहिए, बल्कि माफ़ कर देना चाहिए और जाने देना चाहिए, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह (तआला) तुम्हारी गलतियों को माफ़ कर दे? अल्लाह (तआला) गलतियों को माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

२३. जो लोग पाक दामन भोली-भाली ईमान-वाली औरतों पर इल्जाम लगाते हैं वे दुनिया और आखिरत में धिक्कारे जाने वाले लोग हैं और उन के लिए बहुत सख्त अजाब है।

२४. जब कि उनके सामने उन की ज़वान और उनके हाथ-पैर उन के अमलों की गवाही देंगे।

२५. उस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें पूरा-पूरा बदला हक और इंसफ़ के साथ अता करेगा और वे जान लेंगे कि अल्लाह (तआला) ही सच है, वही जाहिर करने वाला है।

२६. खबीस औरतें खबीस मर्दों के लायक हैं और खबीस मर्द खबीस औरतों के लायक हैं और पाक औरतें पाक मर्दों के लायक हैं और पाक मर्द पाक औरतों के लायक हैं। ऐसे पाक लोगों के बारे में जो कुछ बकवास ये (आक्षेप धरने वाले) कर रहे हैं वह उन से निर्दोष है, उन के लिए बहिश्त है और इज्जत वाला रिज़क है।

२७. हे ईमानवालो! अपने घरों के सिवाय दूसरे घरों में न जाओ जब तक कि इजाजत न ले लो, और वहाँ के निवासियों को सलाम न कर लो! यही तुम्हारे लिए बेहतर है ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

وَلَا يَأْتَلِي أَوْلِيَا الْقُرْبَىٰ وَوَالِدًا وَأَهْلًا إِلَّا يُؤْتُوا
أُولِي الْقُرْبَىٰ وَالسُّكْرَانَ وَالْمُهَاجِرِينَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَلِيُعْطُوا وَيَصْفَحُوا إِلَّا تَجِدُونَ أَنَّ يُعْفِرَ اللَّهُ لَكُمْ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٢٢﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْفَاطِيَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ
لَعْنَةُ اللَّهِ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٢٣﴾

يَوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَيْدِيهِمْ وَأَيْدِيهِمْ وَارْجُلُهُمْ
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٤﴾

يَوْمَئِذٍ يُوقِفُهُمُ اللَّهُ وَبِشْرِهِمُ الْحَقِّ وَيَعْلَمُونَ
أَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ ﴿٢٥﴾

الْحَيِّثُ لِلْحَيِّثِينَ وَالْحَيِّثُونَ لِلْحَيِّثَاتِ
وَالظَّالِمَاتُ لِلظَّالِمِينَ وَالظَّالِمُونَ لِلظَّالِمَاتِ
أُولَئِكَ مَبْرُؤُونَ وَمَا يَقُولُونَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ
وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ بُيُوتِكُمْ
حَتَّى تَسْتَأْذِنُوا وَتَسْمِعُوا عَلَىٰ أَهْلِهَا ذَلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

पहले की आयतों में व्याभिचार (जिना) और उस की सजा का बयान हुआ, अब अल्लाह तआला घर में दाखिल होने के कानूनों का बयान कर रहा है ताकि मर्द-औरत मिश्रण (इस्तेलात) न हो जो हमेशा व्याभिचार (बेहयाई) और इल्जाम का सबब बनता है।

२८. अगर वहाँ तुम्हें कोई न मिल सके तो फिर इजाजत मिले बिना अन्दर न जाओ, और अगर तुम से लौट जाने को कहा जाये तो तुम लौट ही जाओ, यही तुम्हारे लिए सुथराई है, जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है।

२९. हाँ, जिन में लोग न रहते हों ऐसे घरों में जहाँ तुम्हारा कोई फायदा या सामान हो, जाने में कोई गुनाह नहीं, तुम जो कुछ भी जाहिर करते हो और जो छुपाते हो अल्लाह (तआला) सब कुछ जानता है।¹²

३०. मुसलमान मर्दों से कहो कि अपनी निगाह नीची रखें, और अपनी शर्मगाह (गुप्तांग) की हिफाजत करें, यही उन के लिए पाकीजगी है, लोग जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह (तआला) सब जानता है।

३१. और मुसलमान औरतों से कहो कि वे भी अपनी निगाह नीची रखें और अपने सतीत्व (इस्मत) की हिफाजत करें, और अपनी जीनत का इजहार न करें¹³ सिवाय उस के जो जाहिर

وَأَنْ لَّمْ تَجِدُوا فِيهَا أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوا حَتَّىٰ يُؤْذَنَ لَكُمْ ۚ وَإِنْ قِيلَ لَكُمْ ارجِعُوا فَارجِعُوا ۗ هُوَ أَزكىٰ لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۖ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾

قُلْ لِلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۗ ذٰلِكَ أَزْكَىٰ لَهُمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾

وَقُلْ لِلْمُؤْمِنَاتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا ۚ وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلَىٰ جُجُوبِهِنَّ

¹ इस से मुराद कौन से घर हैं, जिन में बिना इजाजत लिये दाखिल होने की इजाजत दी जा रही है। कुछ आलिम कहते हैं कि इस से मुराद वे घर हैं जो खास तौर से मेहमानों के लिए अलग तैयार किये गये हों, उन में घर के मालिक से पहली बार इजाजत लेना ही काफी है। कुछ कहते हैं कि इस से मुराद सराय (धर्मशाला) है, जो यात्रियों (मुसाफिरों) के लिए होता है या व्यापारिक घर है। متاع का मतलब है फायदेमंद, यानी जिन में तुम्हारा फायदा हो।

² इस में उन लोगों के लिए चेतावनी (तंबीह) है जो दूसरे लोगों के घरों में दाखिल होते वक्त बयान किये गये कानूनों की पैरवी करने पर ध्यान नहीं देते।

³ जीनत (झोभा) से मुराद कपड़ा और जेवर है जो औरतें अपनी खूबसूरती और सुन्दरता में निखार लाने के लिए पहनती हैं, जिसको अपने पति के लिए करने पर ज़ोर दिया गया है, जब कपड़ा और जेवर का इजहार दूसरे मर्दों के सामने औरतों के लिए हराम है तो शरीर नग्न (नंगा) और जाहिर करने की इजाजत इस्लाम में कब हो सकती है? यह तो बहुत हराम और नाजायज होगा।

है^१ और अपने गरेबान पर अपनी ओढ़नियों को पूरी तरह से फैलाये रहें^२ और अपनी जीनत का इजहार किसी के सामने न करें सिवाय अपने शौहर के या अपने पिता के या अपने ससुर के या अपने बेटों के या अपने शौहर के बेटों के या अपने भाईयों के या भतीजों के या अपने भौजों के^३ या अपनी सखियों के^४ या गुलामों के या नौकरों में ऐसे मर्दों के जिन को कामुकता (शहवत) न हो या ऐसे बच्चों के जो औरतों के पर्दे की बातों के बारे में न जानते हों^५ और इस तरह से जोर-जोर से पैर मार कर न चलें कि उन के छुपे सिंगार का पता लग जाये। और हे मुसलमानो! तुम सब के सब अल्लाह के दरबार में माफ़ी माँगो ताकि तुम कामयाबी पाओ।

وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ أَوْ آبَائِهِنَّ
 أَوْ آبَاءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِهِنَّ أَوْ أَبْنَاءِ بُعُولَتِهِنَّ
 أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِي أَخَوَاتِهِنَّ
 أَوْ نِسَاءَهُنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ وَالَّذِينَ فِي غَيْرِ
 أُولَئِكَ مِنَ الرِّجَالِ أَوْ الْوَالِدَ الَّذِينَ لَهُمْ يَطْهَرُونَ
 عَلَى عَوْرَتِ النِّسَاءِ وَلَا يَضُرُّهُنَّ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ
 مَا يُخْفِينَ مِنْ زِينَتِهِنَّ ۗ وَتُؤْبَأُ إِلَى اللَّهِ بِحَيْثُ
 آيَةُ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تَقْلِحُونَ (31)

^१ इस से मुराद वह जीनत और जिस्म का अंग है जिसका छिपाना और पर्दा करना नामुमकिन हो, जैसे किसी को कोई चीज पकड़ाते या उस से लेते वक़्त हथेलियों का या देखते वक़्त आँखों का जाहिर हो जाना। इस बारे में हाथ में जो अंगूठी पहने हुए या मेंहदी लगी हुई, आँखों में सुर्मा या काजल हो या कपड़ा और जीनत को छिपाने के लिए जो नक्राब या चादर ली जाती है वह भी एक जीनत ही है, फिर भी यह जीनतें ऐसी हैं जिनका इजहार जरूरत के वक़्त या जरूरत के सबब ठीक है।

^२ ताकि सिर, गर्दन और छाती का पर्दा हो जाये क्योंकि उन्हें भी नग्न करने की इजाजत नहीं है।

^३ पिता में दादा, दादा के पिता, नाना और नाना के पिता और उस से ऊपर सभी शामिल हैं। इसी तरह ससुर में ससुर का पिता, दादा, दादा के पिता ऊपर तक। पुत्रों में पोता, परपोता, नाती, परनाती नीचे तक। पति के पुत्रों में पोतों और परपोतों नीचे तक, भाईयों में तीनों तरह के भाई (सगे पिता की तरफ से, माता की ओर से) और उनके पुत्र, पोते, परपोते, नाती, नीचे तक, भतीजों में उन के बेटे नीचे तक और भौजों में तीनों तरह की बहनो की औलाद शामिल हैं।

^४ इन से मुराद मुसलमान औरतें हैं जिन को इस बात से रोक दिया गया है कि वह किसी औरत की जीनत, खूबसूरती, और सौन्दर्य और जिस्म की बनावट का अपने शौहर के सामने वधान करें। कुछ ने इस से वे खास औरतें मुराद ली हैं जो खिदमत वगैरह के लिए हर वक़्त साथ रहती हैं जिन में दासियाँ भी शामिल हैं।

^५ उन से ऐसे लड़के अलग होंगे जो बालिम हों या बालिम होने के करीब हों, क्योंकि वे औरतों की शर्मगाह (गुप्तांग) को जानते हैं।

३२. और तुम में से जो मर्द-औरत जवानी को पहुँच गये हों उन का विवाह कर दो और अपने नेक दास-दासियों का भी, अगर वे गरीब भी होंगे तो अल्लाह (तआला) अपनी रहमत से धनवान बना देगा, अल्लाह (तआला) कुशादगी वाला और इल्म (ज्ञान) वाला है।

३३. और उन लोगों को पाक रहना चाहिए जो अपना विवाह करने का सामर्थ्य (कुदरत) नहीं रखते, यहाँ तक कि अल्लाह (तआला) अपने फ़ज़ल से उन्हें धनवान बना दे, तुम्हारे दासों में से जो कोई तुम्हें कुछ देकर आज्ञादी का लेख कराना चाहे तो तुम उन्हें ऐसा लेख दे दिया करो, अगर तुम को उन में कोई भलाई दिखती हो^१ और अल्लाह ने जो माल तुम्हें दे रखा है, उस में से उन्हें भी दो, तुम्हारी दासियाँ जो पाक रहना चाहती हैं, उन्हें दुनियावी जिन्दगी के फ़ायदे के सबब बुरे काम पर मजबूर न करो।^२ और जो उन्हें मजबूर कर दे तो अल्लाह (तआला) उन के मजबूर किये जाने के बाद माफ़ कर देने वाला और रहम करने वाला है।^३

وَالرَّكُوعِ الْاِيَّامِي وَمَنْكُمْ وَالضَّالِّجِينَ مِنْ عِبَادِكُمْ
وَإِمَائِكُمْ طَرَان يَكُونُوا فُقَرَاءَ يُغْنِيَهُمُ اللَّهُ
مِنْ قَضِيهِ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝۳۲

وَالسَّعْفِيفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتَّى يُغْنِيَهُمُ
اللَّهُ مِنْ قَضِيهِ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ الْكِتَابَ
مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَمَا بَيَّوهُمُ إِنْ عَلِمْتُمْ فِيهِمْ
خَيْرًا وَالْأَوْفَىٰ مِنْ مَالِ اللَّهِ الَّذِي آتَاكُمْ
وَلَا تَكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا
لِيَبْتِغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَنْ يُكْرِهُنَّ فَإِنَّ
اللَّهَ مِنْ بَعْدِ إِزْهَامِنَ عُقُوبٌ رَجِيمٌ ۝۳۳

- ^१ यानी सिर्फ़ गरीबी और धन की कमी विवाह में रूकावट नहीं होनी चाहिए, मुमकिन है कि विवाह के बाद अल्लाह उन की गरीबी को अपने फ़ज़ल और रहमत से ख़ुबहाली में बदल दे।
- ^२ उस गुलाम को कहा जाता है जो अपने मालिक से सुलह कर लेता है कि मैं इतनी राशि जमा करके भुगतान कर दूँगा तो आज्ञादी का हक्कदार दूँगा।
- ^३ अज्ञानकाल (जाहीलियत) में लोग सिर्फ़ दुनियावी माल जमा करने के लिए अपनी दासियों को व्याभिचार (ज़िना) पर मजबूर करते थे, चाहे न चाहे उसे यह अपमान का कलंक बरदास्त करना पड़ता था, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को ऐसा करने से रोका है।
- ^४ यानी जिन दासियों से ज़बरदस्ती व्याभिचार (ज़िना) करवाया जायेगा तो ज़ालिम मालिक होगा, यानी मजबूर करने वाला, न कि दासी जो अबला है। हदीस में आता है, मेरे सम्प्रदाय (उम्मत) से मलती, भूल और ऐसे काम जो ज़बरदस्ती कराये गये हों, माफ़ हैं। (इब्ने माजा, किताबुत तलाक़, वाव तलाक़िल मुकरहे वन्नासी)

३४. और हम ने तुम्हारी तरफ खली और रोशन आयतें उतारी हैं और उन लोगों की कहावतें जो तुम लोगों से पहले गुजर चुके हैं और परहेजगारों के लिए नसीहत ।

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَا إِلَيْكُمْ آيَاتٍ مُّبَيِّنَاتٍ وَمَثَلًا مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ﴿٣٤﴾

३५. अल्लाह नूर है आकाशों का और धरती का उस के नूर की मिसाल एक ताक की है जिस पर दीप (चिराम) है और दीप शीशे की झाड़ में हो और शीशे चमकते हुए रोशन सितारे की तरह हो और वह दीप पाक पेड़ जैतून के तेल से जलाया जाता हो, जो पेड़ न पूर्वी है न पश्चिमी और वह तेल ही करीब (मुमकिन) है कि रौशनी देने लगे, अगरचे उसको कभी आग न छुई हो, नूर पर नूर है, अल्लाह (तआला) अपने नूर की तरफ हिदायत करता है जिसे चाहे । लोगों को समझाने के लिए ये मिसाल अल्लाह (तआला) दे रहा है, और अल्लाह (तआला) हर चीज की हालत अच्छी तरह जानता है ।

اللَّهُ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ مَثَلُ نُورِهِ كَمِثْلِ نُورِ كَبَشْكُوۥٓةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۖ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ۖ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِن شَجَرَةٍ مُّبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ ۖ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ ۖ وَلَوْ لَمْ تَنسَسْهُ لَأَنَارَ لَلنُّورِ عَلَى نُورٍ ۗ يَهْدِي اللَّهُ لَلنُّورِ ۗ مَن يَضَلۥ فَيُضِلۥ اللَّهُ ۖ فَسَاءَ مَثَلُ الْإِنسَانِ ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣٥﴾

३६. उन घरों में जिन के ऊँचा करने का और वहाँ अपना नाम लिये जाने का अल्लाह ने हुक्म दिया है, वहाँ सुबह और शाम अल्लाह (तआला) की तस्बीह बयान करते हैं ।

فِي بُيُوتِ الَّذِينَ أَنشَأَ اللَّهُ لِنُورِهِ ۖ لِيُذَكِّرَ الَّذِينَ لَمْ يَرْكَبُوا السُّبْحَ ۖ وَسُبْحَانَ اللَّهِ عِندَ الْمَدِينَةِ ۖ وَبِالنُّورِ وَالْأَصْحَابِ ﴿٣٦﴾

३७. ऐसे लोग जिन्हें तिजारत और खरीदो फरोख्त अल्लाह के जिक्र से और नमाज कायम करने और जकात अदा करने से गाफिल नहीं करती, उस दिन से डरते हैं जिस दिन बहुत से दिल और बहुत सी आँखें उलट-पलट हो जायेंगी ।

يَوْمَ لَا تُغْنِيهِمْ تِجَارَتُهُمْ وَلَا يَشْعُرُونَ ۗ ذِكْرُ اللَّهِ وَأَقَامِ الصَّلَاةَ وَآتِ الزَّكَاةَ ۗ يَخَافُونَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيهِ الْقُلُوبُ وَالْأَبْصَارُ ﴿٣٧﴾

1 'तस्बीह' से मुराद नमाज है । اصْلٌ बहुवचन (जमा) है اصْلٌ का मतलब है शाम । यानी ईमानवाले, जिन के दिल ईमान और हिदायत से रोशन होते हैं, सुबह और शाम तस्बीहों में अल्लाह की खुशी के लिए नमाज पढ़ते और उस की इयादत (उपासना) करते हैं ।

३८. इस मक़सद से कि अल्लाह तआला उन्हें उन के अमल का अच्छा बदला दे और अपने फज़ल से कुछ ज़्यादा ही अता करे, और अल्लाह (तआला) जिसे चाहे बेहिसाब रिज़क (जीविका) देता है।

३९. और काफ़िरों के अमल उस चमकती रेत की तरह है जो खुले मैदान में हो जिसे प्यासा इंसान दूर से पानी समझता है, लेकिन जब उस के करीब पहुँचता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता। हाँ, अल्लाह को अपने करीब पाता है जो उस का हिसाब पूरा-पूरा चुका देता है। और अल्लाह (तआला) जल्द ही हिसाब कर देने वाला है।

४०. या उन अंधेरो की तरह है जो बहुत गहरे समुद्र में हों जिसे ऊपर-नीचे की धाराओं ने ढक लिया हो, फिर ऊपर से बादल छाये हों, यानी अंधेरे हैं जो ऊपर-नीचे एक के ऊपर एक हों। जब अपना हाथ निकाले तो उसे भी मुमकिन है न देख सके, और (बात यह है कि) जिसे अल्लाह (तआला) ही नूर न दे, उस के पास कोई नूर नहीं होता।

४१. क्या आप ने नहीं देखा कि आकाश और धरती की सभी मखलूक और पंख फैलाये उड़ने वाले सभी पक्षी अल्लाह की तस्वीह में लीन हैं, हर एक की नमाज़ और तस्वीह उसे मालूम है, और लोग जो कुछ करे उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है।^१

لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا وَيَزِيدَهُم مِّنْ فَضْلِهِ ۗ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٨﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمَانُ مَاءً ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا ۖ وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ قُوْفَهُ ۖ حِسَابُهُ ۖ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿٣٩﴾

أَوْ كَلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ ۖ سَحَابٌ ۖ طَلَبْتُمْ بَعْضَهَا فَوْقَ بَعْضٍ ۖ وَإِذَا خَرَجَ يَدُهُ لَمْ يَكَدْ يَرِبْهَا ۗ وَمَن لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ ۚ ﴿٤٠﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَسْتَجِيبُ لَهُ مَن فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَالظُّلُمُتِ طَمَعَتْ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهُ وَتَسْبِيحَهُ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٤١﴾

^१ यानी धरती वाले और आकाश वाले जिस तरह अल्लाह के हक़मों का पालन और उसकी तारीफ़ करते हैं सब उस के इल्म में है, यह जैसाकि इंसानों और जिननों को चेतावनी है कि तुम्हें अल्लाह ने अक़ल और शज़र की आज़ादी दी है तो तुम्हें दूसरे मखलूक के मुक़ाबिले ज़्यादा तस्वीह और तारीफ़ का बयान और उसकी पैरवी करना चाहिए, लेकिन हकीकत इस के खिलाफ़ है। दूसरे मखलूक तो अल्लाह की तस्वीह में लगे हैं, लेकिन अक़ल और समझ से सुबोधित सृष्टि (मुज़य्यन मखलूक) इस में सुस्ती कर रही है, जिस पर बेशक़ वे अल्लाह की पकड़ के

४२. धरती और आकाश का मुल्क अल्लाह ही का है और अल्लाह (तआला) ही की तरफ लौट कर जाना है।

४३. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) बादलों को चलाता है, फिर उन्हें मिलाता है, फिर उन्हें तह पर तह कर देता है। फिर आप देखते हैं कि उन के बीच से वर्षा होती है, वही आकाश की तरफ से ओलों के पहाड़ से ओले बरसाता है, फिर जिन्हें चाहे उन्हें उन के पास बरसाये और जिन से चाहे उन से उन्हें हटा दे। बादलों से ही निकलने वाली विजली की चमक ऐसी होती है कि जैसे अब आँखों की नजर ले चली।

४४. अल्लाह तआला ही दिन-रात का उलट-फेर करता रहता है,^१ आँखों वालों के लिए वेशक इस में बड़ी-बड़ी शिक्षायें (नसीहतें) है।

४५. सभी के सभी चलने-फिरने वाले जानदार को अल्लाह (तआला) ने पानी से पैदा किया है, उन में से कुछ अपने पेट के बल चलते हैं,^२ कुछ दो पैर के बल चलते हैं^३ कुछ चार पैरों पर चलते हैं,^४ अल्लाह (तआला) जो चाहता है पैदा करता है।^५ वेशक अल्लाह (तआला) हर चीज पर कुदरत रखता है।

وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ﴿٤٢﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُزَيِّجُ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ رُكَامًا فَتَكْرِى الْوُدُقُ يُخْرُجُ مِنْ خِلَابِهِ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ جِبَالٍ فِيهَا مِنْ بَرَدٍ فَيُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَصْرِفُهُ عَنِ مَنْ يَشَاءُ ۗ يَكَادُ سَنَاقِبُوهُ يَذُوبُ بِالْأَبْصَارِ ﴿٤٣﴾

يَقَلِّبُ اللَّهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ ﴿٤٤﴾

وَاللَّهُ خَلَقَ كُلَّ دَابَّةٍ مِنْ مَّاءٍ فَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَىٰ بَطْنِهِ ۗ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَىٰ رِجْلَيْنِ ۗ وَمِنْهُمْ مَنْ يَمْشِي عَلَىٰ أَرْبَعٍ ۗ يَخْلُقُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٤٥﴾

हमदार होंगे।

- ^१ यानो कभी दिन बड़े, रातें छोटी और कभी इस के खिलाफ या कभी दिन की रोशनी को बादलों के अंधेरे से और रात के अंधेरों को चाँद की रोशनी से बदल देता है।
- ^२ जिन तरह साँप, मछली और दूसरे धरती पर चलने वाले कीड़े मकोड़े हैं।
- ^३ जैसे इंसान और पक्षी हैं।
- ^४ जैसे सभी चौपाये और दूसरे जानदार हैं।
- ^५ यह इशारा इस बात की तरफ है कि कुछ जानदार ऐसे भी हैं जो चार से भी ज्यादा पैर रखते हैं, जैसे केकड़े, मकड़ी, खंखजूरा और बहुत से धरती के कीड़े।

४६. बेचक्र हम ने रौशन और खुली आयते नाजिल की है ! अल्लाह (तआला) जिसे चाहे सीधा रास्ता दिखा देता है !

४७. और कहते हैं कि हम अल्लाह (तआला) और रसूल पर ईमान लाये और फरमाबर्दार हुए, फिर उन में से एक गुट उस के बाद भी मुंह मोड़ लेता है, ये ईमानवाले हैं ही नहीं !²

४८. और जब ये इस बात की तरफ बुलाये जाते हैं कि अल्लाह और उस का रसूल (उन के झगड़ों) का फ़ैसला कर दे, तो भी उन का एक गुट मुंह मोड़ने वाला बन जाता है ।

४९. और अगर उन्हीं को हक़ पहुँचता हो तो फरमाबर्दार होकर उस की तरफ चले आते हैं ।

५०. क्या उन के दिलों में रोग है? या ये शक और झुन्हा में पड़े हुए हैं? या उन्हें इस बात का डर है कि अल्लाह (तआला) और उस का रसूल उन के हक़ का खात्मा न कर दें? बात यह है कि ये लोग खुद ही बड़े जालिम हैं ।

५१. ईमानवालों का कहना तो यह है कि जब उन्हें इसलिये बुलाया जाता है कि अल्लाह और उस का रसूल उन में फ़ैसला कर दे तो वह कहते हैं कि हम ने सुना और मान लिया, यही लोग कामयाब होने वाले हैं ।

لَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ مُّبِينَاتٍ وَأَلَّهُ يَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٤٦﴾

وَيَقُولُونَ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالرَّسُولِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ
يَتَوَلَّى فِرْقًا مِنْهُمْ فَمِنْ أُولَئِكَ وَمَا أُولَئِكَ
بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

وَإِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ
إِذَا فِرْقًا مِنْهُمْ مُعْرِضُونَ ﴿٤٨﴾

وَإِنْ يَكُنْ لَهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوا إِلَيْهِ مُذْعَبِينَ ﴿٤٩﴾

أَفِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَمْ رَأَتْ أَعْيُنُهُمْ آفَاتٌ
يَظُنُّونَ أَنَّ اللَّهَ عَلَيْهِمْ رَسُولًا ۗ بَلْ أُولَئِكَ
هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٥٠﴾

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِينَ إِذَا دُعُوا إِلَى اللَّهِ
وَرَسُولِهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَقُولُوا سَمِعْنَا
وَأَطَعْنَا ۗ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٥١﴾

¹ آيات مبينات से मुराद क़ुरआन करीम है, जिस में हर उस चीज का बयान है जिसका सम्बन्ध (तआल्लुक) इसान के धर्म (दीन) और अखलाक से है, जिस पर उसकी भलाई और कामयाबी की बुनियाद है ।

² यह मुनाफ़िकों (द्वयवादियों) का बयान है, जो मुंह से इस्लाम ज़ाहिर करते थे, लेकिन दिल में कुफ़्र और हसद रखते थे, यानी 'सच्चे ईमान' से महरूम (बचि़त) थे, इसलिये मुंह से ईमान ज़ाहिर करने के बावजूद उन के ईमान का इन्कार किया गया है ।

५२. और जो भी अल्लाह (तआला) और उस के रसूल के हुक्म की पैरवी करें, अल्लाह का डर रखें और (उस के अज्ञाब से) डरते रहें, वही लोग कामयाबी हासिल करने वाले हैं।

५३. और वे बहुत मजबूती के साथ अल्लाह (तआला) की कसम खा-खाकर कहते हैं कि आप का हुक्म होते ही निकल खड़े होंगे, कह दीजिए कि बस कसम न खाओ, तुम्हारी इताअत (की हकीकत) मालूम है, जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) उसे जानता है।

५४. कह दीजिए कि अल्लाह (तआला) के हुक्म की पैरवी करो, रसूल की पैरवी करो, फिर भी अगर तुम ने मुंह मोड़ा तो रसूल का कर्तव्य (फर्ज) तो केवल वही है, जो उस पर वाजिब कर दिया गया है, और तुम पर उस की ज़िम्मेदारी है जो तुम पर रखी गयी है, हिदायत तो तुम्हें उसी वक्त मिलेगी जब रसूल की इताअत कुबूल करोगे, (सुनो) रसूल का कर्तव्य केवल साफ-साफ पहुँचा देना है।

५५. तुम में से जो ईमान लाये हैं और नेकी का काम किया है अल्लाह (तआला) वादा कर चुका है कि उन्हें मुल्क (धरती) का अधिकारी बनायेगा, जैसाकि उन लोगों को अधिकारी बनाया था जो उन से पहले थे और बेशक उन के लिए उन के इस धर्म को मजबूती के साथ कायम कर देगा जिसे उन के लिए वह पसन्द कर चुका है, और उन के इस डर और खौफ को शान्ति व अमन में बदल देगा, वे मेरी इबादत करेंगे, मेरे साथ

وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَخْشِ اللَّهَ الَّذِي يَخْتَفِيهِ
فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿۵۲﴾

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ
لَيَخْرُجُنَّ قُلُوبُهُمْ لَوْ لَمْ نَمْسُكْهُمْ كَاعَةَ مَعْرُوفَةٍ
إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿۵۳﴾

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِن تَوَلَّوْا
فَأِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَا حُمِّلْتُمْ
وَإِن طِيعْتُم تَهْتَدُوا ۗ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا
الْبَلْغُ الْمُبِينُ ﴿۵۴﴾

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِينَ
مِن قَبْلِهِمْ ۚ وَلَيَسْلَبَنَّ اللَّهُ مِن يَدَيْهِمُ الْبَقِيَّةَ
الَّتِي آتَى الْبَاقِيَةَ ۗ وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ
يَعْبُدُونَ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿۵۵﴾

' कुछ ने इस अल्लाह के वादे को सहाबा के राम के साथ या खुलफाये राबदीन के साथ खास तौर से सम्बन्धित किया है, लेकिन इसकी इस फजीलत का कोई सबूत नहीं है। कुरआन के लफ्ज आम हैं और ईमान और नेकी के काम के साथ प्रतिबन्धित (मशरूत) हैं। लेकिन यह बात जरूर है कि खिलाफते राशिदा के जमाने में और नेकी के जमाने में, यह अल्लाह का वादा जाहिर हुआ, अल्लाह तआला ने मुसलमानों को जमीन पर गालिब बनाया, अपने प्यारे दीन

किसी को शरीक नहीं करेंगे। उस के बाद भी जो लोग नाशुक्री करें और कुफ़्र करें तो वे बेशक नाफरमान हैं।

५६. और नमाज़ कायम करो, जकात अदा करो और अल्लाह (तआला) के रसूल की पैरवी में लगे रहो ताकि तुम पर दया की जाये।

५७. यह ख़याल आप कभी न करना कि काफ़िर लोग धरती पर (इधर-उधर फैल कर) हमें पराजित कर देने वाले हैं, उनका मूल ठिकाना तो नरक है, जो बेशक बहुत बुरा ठिकाना है।

५८. हे ईमान वालों! तुम से तुम्हारी मिल्कियत के दासों को और उन्हें भी जो तुम में से बलुग़त (वयस्क) उम्र को न पहुँचें हों (अपने आने के) तीन समयों में आज्ञा प्राप्त करना ज़रूरी है। फ़ज़्र की नमाज़ से पहले और जोहर (मध्याह्न) के वक़्त जब तुम अपने कपड़े उतारे रखते हो और ईशा (रात) की नमाज़ के बाद^१ ये तीनों वक़्त तुम्हारे (अकेले) और पर्दे के हैं^२ इन वक़्तों के सिवाय न तो तुम पर कोई गुनाह है न उन पर। तुम सब आपस में ज़्यादातर एक-दूसरे के पास आने-जाने वाले हो (ही) अल्लाह इस तरह

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا الرِّسُولَ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿۵۶﴾

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ
وَمَا لَهُمُ بِالنَّارِ وَالْكَافِرِينَ ﴿۵۷﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِيَسْتَأْذِنَكُمْ الَّذِينَ مَلَكَتْ
أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِينَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنكُمْ ثَلَاثَ
مَرَّاتٍ مِّن قَبْلِ صَلَاةِ الْفَجْرِ وَحِينَ تَضَعُونَ
ثِيَابَكُمْ مِنَ الظُّهْرِ وَمِن بَعْدِ صَلَاةِ الْعِشَاءِ
ثَلَاثَ عَوْرَاتٍ لَّكُمْ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌ
بَعْدَهُنَّ طَوَّافُونَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ
كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ﴿۵۸﴾

इस्लाम को तरक्की अता की और मुसलमानों के डर के शान्ति में बदल दिया।

^१ दासों से मुराद दास-दासियाँ दोनों हैं। ثلاث مرات का मतलब तीन वक़्त हैं, यह तीन वक़्त ऐसे हैं कि इंसान अपनी बीवी के साथ घर में ख़ास तौर से रहता या ऐसे कपड़े में हो सकता है कि जिस में किसी दूसरे का देखना जायेज नही, इसलिए इन तीन वक़्तों में घर के सेवकों को इस बात की इजाज़त नहीं है कि वह बिना इजाज़त लिये घर में दाख़िल हों।

^२ बहुबचन है عورة का, जिसका असली मायना कमी और दोष के हैं, फिर इसका इस्तेमाल ऐसी चीज़ पर किया जाने लगा जिसका ज़ाहिर करना तथा देखना प्रिय न हो। स्त्री को भी इसी लिए औरत कहा जाता है कि उसका इज़हार और नग्न होना और देखना धार्मिक रूप से नापसन्द है। यहाँ बयान तीन वक़्तों को औरत कहा गया है यानी ये तुम्हारे पर्दे और तहाई के वक़्त हैं, जिन में तुम अपने ख़ास कपड़ों और हालत के ज़ाहिर करने को प्रिय नहीं समझते हो।

खोल-खोल कर अपने हुक्म तुम से बयान कर रहा है, और अल्लाह (तआला) जानने वाला और हिक्मत वाला है।

५९. और तुम में से जो बच्चे बुलूगत (वयस्क) को पहुँच जायें तो जिस तरह उन से पहले के (बड़े) लोग इजाजत मांगते हैं, उन्हें भी इजाजत मांग कर आना चाहिए। अल्लाह (तआला) तुम से इसी तरह अपनी आयतों का बयान करता है। अल्लाह (तआला) ही जानने वाला और हिक्मत वाला है।

६०. और बड़ी बूढ़ी औरतें जिन्हें विवाह की उम्मीद (और मर्जी) ही न रही हो वह अगर अपने कपड़े (पर्दे के लिए इस्तेमाल किये गये) उतार रखें तो उन पर कोई बुराई नहीं, अगर वह अपनी जीनत दिखाने वाली न हों।¹ लेकिन उनसे भी बची रहें तो उन के लिए बहुत बेहतर है, और अल्लाह (तआला) सुनता और जानता है।

६१. अंधे पर, लंगड़े पर, रोगी पर और खुद तुम पर कभी कोई हरज नहीं कि तुम अपने घरों से, खालों या अपने पिताओं के घरों से, या अपनी माताओं के घरों से, या अपने भाईयों के घरों से, या अपनी बहनों के घरों से, या अपने चाचाओं के घरों से, या अपनी बुआओं के घरों से, या अपने मामाओं के घरों से, या अपनी मौसियों के घरों से, या उन घरों से जिन की चाभियों के मालिक तुम हो या अपने दोस्तों के

وَأَذِيبْخِ الْأَطْفَالَ مِنكُمُ الْحُلْمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوا كَمَا
اسْتَأْذَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ
لَكُم آيَاتِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿59﴾

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَاءِ الَّتِي لَا يَرْجُونَ نِكَاحًا
فَلْيَسَّ عَلَيهِنَّ جُنَاحٌ أَن يُضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ
غَيْرَ مُتَبَرِّجَتٍ بِزِينَةٍ وَأَن يَسْتَعْفِفْنَ
خَيْرٌ لَّهُنَّ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿60﴾

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ
وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَنْفُسِكُمْ أَن
تَأْكُلُوا مِن بِيوتِكُمْ أَوْ بِيوتِ آبَائِكُمْ أَوْ بِيوتِ
أُمَّهَاتِكُمْ أَوْ بِيوتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بِيوتِ أَخَوَاتِكُمْ
أَوْ بِيوتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بِيوتِ عَمَّاتِكُمْ أَوْ بِيوتِ

¹ इन से मुराद बूढ़ी औरतें और बाँझ औरतें हैं जिनका मासिक धर्म (हैज) आना बन्द हो गया हो और विलादत के लायक न रह गयी हों। इस उम्र में आम तौर से औरत के अन्दर मर्द की तरफ ख्वाहिश की प्राकृतिक (फितरी) इच्छा खत्म हो चुकी होती है, न वह किसी मर्द से विवाह की इच्छा रखती है और न ही कोई मर्द इस भावना से उनकी तरफ आकर्षित (मायल) होता है, ऐसी औरतों को पर्दे में कमी के लिए इजाजत दे दी गयी है।

घरों से। तुम पर इस में भी कोई गुनाह नहीं कि तुम सब साथ बैठकर खाना खाओ या अलग-अलग,¹ पर जब तुम घरों में जाने लगे तो अपने घर वालों को सलाम कर लिया करो,² शुभकामना है जो मुबारक और पाक अल्लाह की तरफ से नाज़िल है। इसी तरह अल्लाह (तआला) खोल-खोल कर अपने हुक्मों को बयान कर रहा है ताकि तुम समझ लो।

६२. ईमानवाले लोग तो वही हैं जो अल्लाह (तआला) पर और उस के रसूल पर ईमान रखते हैं, और जब ऐसे मसले में जिस में लोगों के जमा होने की ज़रूरत होती है नबी के साथ होते हैं, तो जब तक आप से इजाज़त न ले लें कहीं नहीं जाते, जो लोग (ऐसे मौक़ा पर) आप से इजाज़त ले लेते हैं, हकीकत में वह यही हैं जो अल्लाह (तआला) पर और उस के रसूल पर ईमान ला चुके हैं, तो ऐसे लोग जब आप से अपने किसी काम के लिए इजाज़त माँगें तो आप उन में से जिसे चाहें इजाज़त दें और उन के लिए अल्लाह से मगफ़िरत की दुआ करें, बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला रहम

أَخْوَالِكُمْ وَأُيُوتٍ خَلِيَّتُمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ يَمَانُكُم مَّفَاحِشَةً أَوْ صَدِيقِكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوا جَمِيعًا أَوْ أَشْتَاتًا ط فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوتًا فَسَلِّمُوا عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللَّهِ مُبَرَكَةً ط طَيِّبَةً ط كَذَلِكَ يَبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ط

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ عَلَىٰ أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوا حَتَّىٰ يَسْتَأْذِنُوا ط إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ط فَإِذَا اسْتَأْذَنُوكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأَذَنْ لِمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللَّهُ ط إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَّحِيمٌ (62)

¹ इस में एक परेशानी को हल किया गया है। कुछ लोग अकेले खाना खाना अच्छा नहीं समझते थे और किसी को साथ बिठाकर खाना खाना ज़रूरी समझते थे। अल्लाह तआला ने फरमाया, जमा होकर खा लो या अलग-अलग, दोनों तरह से मान्य (जायेज) है गुनाह किसी में नहीं, लेकिन जमा होकर खाना अधिक बुभ (ज्यादा बरकत) का कारण है, जैसाकि कुछ हदीसों से मालूम होता है। (इब्ने कसीर)

² इस में अपने घरों में दाखिल होने के आदाब का बयान है, और वह यह है कि दाखिल होते बरत घर वालों को सलाम (अभिवादन) करो, इंसान के लिए अपनी वीवी और औलाद को सलाम करने में आम तौर से तकलीफ महसूस होती है, लेकिन इंसान वालों के लिए ज़रूरी है कि वे अल्लाह के हुक्म के अनुसार ऐसा करें, अपनी वीवी और औलाद को सलामती की दुआ से क्यों महरूम रखा जाये।

करने वाला है।

६३. तुम (अल्लाह के) नबी के बुलावे को ऐसा आम बुलावा न समझो जैसा आपस में एक का दूसरे को होता है, तुम में से उन्हें अल्लाह अच्छी तरह जानता है जो आँख बचा कर चुपके से निकल जाते हैं ! (सुनो) जो लोग रसूल के हुक्म की मुखालफत करते हैं उन्हें डरते रहना चाहिए कि कहीं उन पर कोई बहुत सख्त फित्ना न आ पड़े। या उन्हें कोई दुख की मार न पड़े।

६४. बाखबर हो जाओ कि आकाश और धरती पर जो कुछ है सब अल्लाह (तआला) का ही है, जिस रास्ते पर तुम लोग हो वह उसे अच्छी तरह जानता है और जिस दिन यह सब उसी की तरफ लौटाये जायेंगे, उस दिन उन को उन के किये हुए से वह अवगत (आगाह) करा देगा, और अल्लाह (तआला) सब कुछ जानने वाला है।

لَا تَجْعَلُوا دُعَاءَ الرَّسُولِ بَيْنَكُمْ كَدُعَاءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ۗ قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الَّذِينَ يَسْتَلُونَ مِنْكُمْ ۚ لَوْ آذَاءَ فَلْيَحْذَرِ الَّذِينَ يُخَالِفُونَ عَنْ أَمْرِهِ أَنْ تُصِيبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ قَدْ يَعْلَمُ مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِ ۗ وَيَوْمَ يَرْجِعُونَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۗ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٤﴾

। इस मुसीबत से मुराद दिलों का वह टेढ़ापन है जो इंसान को ईमान से महरूम करती है। यह नबी ﷺ के हुक्मों की नाफरमानी और उन की मुखालफत का नतीजा है, और ईमान से महरूम होकर कुफ्र पर ख़ात्मा, नरक की स्याई यातना (दायमी सजा) की वजह बनती है, जैसाकि आयत के अगले वाक्य (जुम्ले) में फरमाया, अतः नबी ﷺ के अखलाक और सुन्नत (चरित्र) को हर वक्त सामने रखना चाहिए, इसलिए जो कथनी और करनी उसके ऐतवार से होगी वही अल्लाह के दरवार में कुबूल और बाकी सभी नाक़ुबूल होगी। आप ﷺ का क़ौल है:

«مَنْ عَمِلَ عَمَلًا لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا، فَهُوَ رَدٌّ»

..जिस ने ऐसा काम किया जो हमारे आदेश अनुरूप (मुताबिक) नहीं है, वह बेकार है।।» (अल-बुखारी, किताबुस्सुलह वाव इजा स्तलह अला सुलह जौरिन और मुस्लिम, किताबुल अक़्बिया वाव नक़्ज़िल अहकामिल बातिल: व रद्द मुहदसातिल उमूर वस्सुनन)

सूरतुल फुरकान-२५

सूर: फुरकान मक्का में नाज़िल हुई और इस में सतहत्तर आयतें और छः रूकूब हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. बड़ी बरकत वाला है वह (अल्लाह तआला) जिस ने अपने बंदे पर फुरकान' नाज़िल किया ताकि वह सभी लोगों के लिए^१ सतर्क (आगाह) करने वाला बन जाये।

२. उसी अल्लाह की मिल्कियत है आकाशों और धरती पर, और वह कोई औलाद नहीं रखता, न उस के मुल्क में उसका कोई साझीदार है, और हर चीज़ को उस ने पैदा कर के एक निर्धारित (मुनासिब) रूप दे दिया है।

३. और उन लोगों ने अल्लाह के सिवाय जिन्हें अपने देवता (इलाह) बना रखे हैं, वे किसी चीज़ को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वे खुद (किसी के जरिये) पैदा किये जाते हैं, यह खुद अपने फायदे-नुक़सान का इख़्तियार नहीं रखते और न जिन्दगी-मौत का, और न दोबारा जी उठने के वे मालिक हैं।

४. और काफ़िरों ने कहा यह तो बस उसका खुद बनाया झूठ है, जिस पर दूसरे लोगों ने भी उस की मदद की है^३ हकीकत में यह काफ़िर

سُورَةُ الْفُرْقَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَارَكَ الَّذِي نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلَى عَبْدِهِ

لِيُنذِرَ لِّلْعَالَمِينَ نَذِيرًا ۝١

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ

وَلَدًا ۚ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ شَرِيكٌ فِي الْمَلِكِ وَخَلَقَ

كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَرَهُ مَقْدَرًا ۝٢

وَإِذَا خَدَّوْا مِنْ دُوْبَةِ الْإِهَةِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا

وَهُمْ يَخْلُقُونَ ۚ وَلَا يَسْلُبُونَ لِأَنفُسِهِمْ ضَرًّا

وَلَا نَفْعًا ۚ وَلَا يَسْلُبُونَ مَوْتًا وَلَا حَيَوَةً

وَلَا نُشُورًا ۝٣

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِن هَٰذَا إِلَّا آثَٰقٌ

إِفْتَرَاهُ وَأَعَانَةٌ عَلَيْهِمْ قَوْمٍ آخَرُونَ ۝٤

^१ फुरकान का मतलब है सच और झूठ, तौहीद व शिक्र और इसाफ-नाइसाफी के बीच फर्क करने वाला, इस कुरआन ने खोलकर इन बातों को बाज़ेह कर दिया है, इसलिए इसे फुरकान कहा गया है।

^२ इस से भी मालूम हुआ कि नबी ﷺ की नबूअत सारी दुनिया के लिए है और आप ﷺ सभी इंसान और जिन के लिए पथप्रदर्शक (रहनुमा) और पैगम्बर बनाकर भेजे गये।

^३ मूर्तिपूजक कहते थे कि मोहम्मद (ﷺ) ने यह किताब गढ़ने में यहूदियों या उन के कुछ आजाद किये हुए गुलाम (जैसे अबू फकिहा यसार, अदांस और जबर वगैरह) से मदद ली है, जैसाकि सूर: अन-नहल-१०३ में इस का ज़रूरी बयान गुजर चुका है। यहाँ कुरआन ने इस इल्ज़ाम को ज़ालिम और झूठ बताया है, भला एक अनपढ़ इंसान दूसरों की मदद से ऐसी किताब पेश कर

बड़े ही जालिम और निरे झूठ के लाने वाले हुए हैं।

५. और यह भी कहा कि यह तो पहलों की झूठी कहानियाँ हैं जो उस ने लिख रखी हैं, बस वही सुबह-शाम उस के सामने पढ़ी जाती हैं।

६. कह दीजिए कि इसे तो उस अल्लाह ने नाजिल किया है जो आकाश और धरती की सभी छिपी बातों को जानता है। बेशक वह बड़ा बढ़ाने वाला और रहम करने वाला है।

७. और उन्होंने कहा कि यह कैसा रसूल है कि भोजन करता है और बाजारों में चलता फिरता है, उस के पास कोई फरिस्ता क्यों नहीं भेजा जाता कि वह भी उस के साथ होकर डराने वाला बन जाता?

८. या उस के पास कोई खजाना ही डाल दिया जाता, या उस का कोई बाग ही होता जिस में से यह खाता, और उन जालिमों ने कहा कि तुम तो ऐसे इंसान के पीछे हो लिये जिस पर जादू कर दिया गया है।

९. ज़रा सोचिए तो! ये लोग आप के बारे में कैसी-कैसी बातें करते हैं कि जिस से खुद ही बहक रहे हैं, और किसी तरह से भी रास्ते पर नहीं आ सकते।

१०. अल्लाह (तआला) तो ऐसा बाबरकत है कि चाहे तो आप को बहुत से ऐसे बाग अता कर दे जो उनके कहे हुए बागों से बहुत अच्छे हों, जिनके नीचे नदियाँ लहरें मार रही हों और आप को बहुत से पक्के महल भी अता कर दे।

فَقَدْ جَاءَ وَظَلَمْنَا وَرُودًا ④

وَقَالُوا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ اَلَمْ تَكْتَبَهَا فِيهِ
شُمُلٌ عَلَيْهِ بُلُوكًا وَ اَصْيَلًا ⑤

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِي يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمَوَاتِ
وَ اَلْاَرْضِ اِنَّكَ كَانَ عَقُورًا رَّجِيئًا ⑥

وَقَالُوا مَا لِي هَذَا الرَّسُولِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ
وَيَمْشِي فِي الْاَسْوَاقِ لَوْ اَنْزَلَ اِلَيْهِ
مَلَكٌ فَيَكُونُ مَعَهُ كَذِبًا ⑦

اَوْ يُنْفِقُ اِلَيْهِ كَثْرًا اَوْ تَكُونُ لَهُ جَنَّةٌ يَأْكُلُ
مِنْهَا وَقَالَ الظَّالِمُونَ اِنْ تَتَّبِعُونَ اِلَّا رَجُلًا
فَسُحُورًا ⑧

اَنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوا فَلَا
يَسْتَعِيضُونَ سَيِّئًا ⑨

تَنْزِيلِكَ الَّذِي اِنْ شَاءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِنْ
ذَلِكَ جَنَّتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهَارُ
وَيَجْعَلُ لَكَ فُصُورًا ⑩

सकता है जो सफाई और भाषा शैली और फसाहत में बेमिसाल हो। हकीकत और मारफत के बयान में भी अकेला, इंसान की जिन्दगी के लिए आवश्यक हुक्म और नियम के तफसीली बयान में भी लाजबाब हो और भूत की खबरें और भविष्य (मुस्तकबिल) में होने वाली घटनाओं (वाक़ेआत) का पता देने और बयान करने में भी उस की सच्चाई साबित हो।

११. बात यह है कि लोग क्रयामत को झूठ समझते हैं, और क्रयामत को झूठलाने वालों के लिए हम ने भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है।

१२. जब वह इन्हें दूर से देखेगी तो यह उसका गुस्से से विफरना और चिंघाड़ना सुनेगी।

१३. और जब यह नरक के किसी तंग जगह में बांध कर फेंक दिये जायेंगे, तो वहाँ अपने लिए मौत ही मौत पुकारेंगे।

१४. (उन से कहा जायेगा) आज एक ही मौत को न पुकारो बल्कि बहुत-सी मौतों को पुकारो।^१

१५. आप कह दीजिए क्या यह अच्छा है^२ या वह दायमी जन्नत जिसका वादा परहेजगारों (सदाचारियों) को दिया गया है, जो उन का बदला है और उनके लौटने का मूल स्थान है।

१६. वे जो चाहेंगे उन के लिए वहाँ मौजूद होगा हमेशा रहने वाले। यह तो आप के रब का वादा है जिस की माँग की जानी चाहिए।

१७. और जिस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें और अल्लाह के सिवाय जिन्हें ये पूजते रहे उन्हें जमा करके पूछेगा, क्या मेरे इन बंदों को तुम ने

بَلْ كَذَّبُوا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ
كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيرًا ۝۱۱

إِذَا رَأَوْهُمْ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ سَبِعُوا لَهَا
تَعْرِيظًا وَزَيْجَرًا ۝۱۲

وَلِذَا أَلْقَاوْنَهَا مِنْ مَكَانٍ صَدِيقًا مُقْرَبِينَ
دَعَاؤُهُنَّ أَكْثَرُ نُبُورًا ۝۱۳

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ نُبُورًا وَاحِدًا وَادْعُوا
نُبُورًا كَثِيرًا ۝۱۴

قُلْ أَذَلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِي وُعِدَ
الْمُتَّقُونَ ۚ كَانَتْ لَهُمْ جَزَاءً وَمُصِيبًا ۝۱۵

لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ خَالِدِينَ ۚ كَانَ
عَلَى رَبِّكَ وَعْدًا مَسْئُورًا ۝۱۶

وَيَوْمَ يُخْطَرُ مِنْهُمْ وَمَا يُعْبَدُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ قِيْلُوا ۚ أَنْتُمْ أَطَّلَعْتُمْ عِبَادِي هَؤُلَاءِ
أَمْ لَهُمْ ضَلُوكُمُ الْغَيْبِ ۝۱۷

१ यानी जहन्नमी जब जहन्नम के अजाब से घबरा कर तमन्ना करेंगे कि उन्हें मौत आ जाये, वे तवाही के घाट उतर जायें, तो उन से कहा जायेगा कि अब एक मौत को नहीं कई मौतों को पुकारो। मतलब यह है कि अब तुम्हारी तकदीर में कई तरह के अजाब हैं, यानी मौत ही मौत है, तुम कहाँ तक मौत की माँग करोगे।

२ "यह" इशारा है नरक के वयान अजाबों की तरफ, जिन में नरकवासी जकड़े हुए होंगे कि यह अच्छा है जो कुफ्र और मूर्तिपूजा का बदला है, या वह स्वर्ग जिसका वादा अल्लाह से डरने वालों को उन के अल्लाह से डर और अल्लाह के हुक्म की पैरवी करने पर दिया गया है, यह सवाल जहन्नम में किया जायेगा, लेकिन उसे यहाँ इसलिए वयान किया गया है कि शायद नरकवासियों के इस नतीजे से नसीहत हासिल कर के लोग अल्लाह का डर और उस के हुक्म की पैरवी का रास्ता अपना लें और इस दुरे अंजाम से बच जायें जिस का जिक्र यहाँ किया गया है।

भटकाया या यह खुद भटक गये ।'

१८. वे जवाब देंगे तू पाक है, खुद हमें यह मुनासिब नहीं था कि तेरे सिवाय दूसरों को अपना बली बनाते, हकीकत यह है कि तूने इन्हें और इन के बुजुर्गों को खुशहाली अता की, यहाँ तक कि यह नसीहतें भुला बैठे, यह लोग थे ही हलाकत के लायक ।

१९. तो उन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी सारी बातों में झूठलाया, अब न तो तुम में अपनी सजा फेरने की ताकत है न मदद करने की,^२ तुम में से जिस-जिस ने जुल्म किया है^३ हम उसे सख्त अजाब का मजा चखायेंगे ।

२०. और हम ने आप से पहले जितने भी रसूल भेजे सब के सब खाना भी खाते थे और बाजारों में भी चलते-फिरते थे, और हम ने तुम में से हर एक को दूसरे के इम्तेहान का जरिया बना दिया^४ क्या तुम सब करोगे? और तेरा रब सब कुछ देखने वाला है ।

قَالُوا سُبْحَانَكَ مَا كَانَ يَنْبَغِي لَنَا أَنْ نَتَّخِذَ مِنْ دُونِكَ مِنْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنْ مَتَّعْتَهُمْ وَأَبَاءَهُمْ حَتَّىٰ نَسْأَلَكَ بِهِمْ وَعَاوَنُوا قَوْمًا بُورًا (۱۸)

فَقَدْ كَذَّبُوا كَمَا كَذَّبُوا لَنَا مَا كَانَتْ تَطِيعُونَ صِرَافًا وَلَا تَصْرَاءَ وَمَنْ يَطْلُبْكُمْ مِّنْ دُونِنَا فُهٗ عَذَابًا كَبِيرًا (۱۹)

وَمَا أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ إِلَّا إِنَّهُمْ لَكَآئِلُونَ الظَّعَامَ وَيَتَشَوُّونَ فِي الْأَسْوَاقِ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً أَتَصْبِرُونَ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيرًا (۲۰)

^१ दुनिया में अल्लाह के सिवाय जिनकी इबादत की जाती रही है और की जाती रहेगी, उन में खनिज पदार्थ (पत्थर, लकड़ी और दूसरे धातुओं की मूर्तियाँ) भी हैं, जो बेजान हैं और अल्लाह के नेक बन्दे भी हैं जो जानदार हैं, जैसे हजरत उजैर और हजरत मसीह और दूसरे नेक लोग। इसी तरह फ़रिश्तों और जिन्नातों के पुजारी भी होंगे। अल्लाह तआला बेजान चीजों को भी अक़ल और समझ और बोलने की ताकत अता करेगा, और उन सभी देवताओं से पूछेगा कि बताओ मेरे बंदों को तुम ने अपनी इबादत का हुकम दिया था या वे अपनी मर्जी से तुम्हारी इबादत करके भटके थे?

^२ यह अल्लाह तआला का कौल है जो मूर्तिपूजकों को मुखातिब करके अल्लाह तआला कहेगा कि तुम जिन को अपना देवता समझते थे उन्होंने तो तुम्हें तुम्हारी बातों में झूठा कह दिया है, और तुम ने देख लिया कि उन्होंने तुम से अलग होने का एलान कर दिया है, यानी जिन को तुम अपना समझते थे वे मददगार साबित नहीं हुए, अब क्या तुम्हारे अन्दर यह ताकत है कि तुम मेरे अजाब को अपने ऊपर से टाल सको और अपनी मदद कर सको?

^३ जुल्म से मुराद वही शिर्क (मिश्रणवाद) है, जैसाकि पहले कौल से बाज़ेह है, और कुरआन में दूसरी जगह पर शिर्क (अल्लाह से अलावा की इबादत को) बहुत बड़ा जुल्म कहा गया है ।

^४ यानी हम ने उन नबियों की और उन के जरिये उन पर ईमान लाने वालों का इम्तेहान लिया, ताकि खरे-खोटे में भेद स्पष्ट (बाज़ेह) हो जाये, जिन्होंने इम्तेहान में सन्न किया वे कामयाब और दूसरे नाकाम रहे । इसीलिए आगे फरमाया : "क्या तुम सब करोगे?"

२१. और जिन्हें हम से मिलने की उम्मीद नहीं उन्होंने कहा कि हम पर फरिश्ते क्यों नहीं उतारे जाते? या हम (अपनी आँखों से) अपने रब को देख लेते? उन लोगों ने खुद अपने को ही बहुत बड़ा समझ रखा है और बहुत नाफरमानी कर ली है।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْغَمَامُ إِنَّا لَأَنبِيَاءُ كَذِبًا أَوْ أَنفُسِهِمْ وَعَتَوْا عُتُوًّا كَبِيرًا ﴿۲۱﴾

२२. जिस दिन ये फरिश्तों को देख लेंगे उस दिन इन पापियों को कोई खुशी नहीं होगी और कहेंगे कि ये वंचित (महरूम) ही वंचित किये गये।

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلَائِكَةَ لَا بُشْرَىٰ يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِينَ وَيَقُولُونَ حَجْرًا مَّحْجُورًا ﴿۲۲﴾

२३. और उन्होंने जो-जो अमल किये थे हम ने उन की तरफ बढ़ कर उन्हें कणों (जरी) की तरह तहस-नहस कर दिया।

وَقَدِمْنَا إِلَىٰ مَا عَمِلُوا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنَاهُ نَبْأًا مَّنتُورًا ﴿۲۳﴾

२४. (लेकिन) उस दिन जन्नत में रहने वालों की जगह बहुत अच्छी होगी और हवावगाह भी सुखद होगा।^१

أَصْحَابُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَأَحْسَنُ مَقِيلًا ﴿۲۴﴾

२५. और जिस दिन आकाश बादल सांहत फट जायेगा और फरिश्ते लगातार उतारे जायेंगे।

وَيَوْمَ تَشْقَى السَّمَاءُ بِالسَّامِرِ وَيُرْوَى السَّمَاءُ نَزِيرًا ﴿۲۵﴾

२६. उस दिन उचित (सहीह) रूप से मुल्क केवल रहमान का ही होगा और यह दिन काफिरों पर बड़ा भारी होगा।

إِنَّ الْمُلْكَ يَوْمَئِذٍ لِلْعَالَمِ وَالْكَافِرُونَ لَأَسْفَرُونَ ﴿۲۶﴾

२७. और उस दिन जालिम अपने हाथों को चबा-चबा कर कहेगा कि हाय! अच्छा होता अगर मैंने रसूल का रास्ता अपनाया होता।

وَيَوْمَ يَعْصُ الظَّالِمُ عَلَىٰ يَدَيْهِ يَقُولُ يَا لَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ﴿۲۷﴾

^१ उस दिन से मुराद मौत का दिन है, यानी यह काफिर फरिश्तों को देखने की तमन्ना करते हैं, लेकिन मौत के वक़्त फरिश्तों को देखेंगे तो उन के लिए कोई खुशी और शुभ नहीं होगा।

^२ कुछ ने इस से यह मतलब निकाला है कि ईमानवालों के लिए क्रयामत का यह भयानक दिन इतना कम और उनका हिसाब इतना आसान होगा कि दोपहर तक यह आजाद हो जायेंगे और जन्नत में यह अपने परिवार वालों और हूराँ के साथ दोपहर में आराम कर रहे होंगे, जिस तरह हदीस में है कि ईमानवालों के लिए वह दिन इतना आसान होगा कि जितने में दुनिया में एक फ़र्ज नमाज़ अदा कर लेना। (मुसन्द बहमद, हिस्सा ४, पेज ७५)

२८. हाय अफसोस! काश मैंने पला को दोस्त न बनाया होता ।¹

२९. उस ने तो मुझे उस के वाद भटका दिया कि नसीहत मेरे पास आ पहुँची थी और शैतान तो इंसान को (वक्त पर) धोखा देने वाला है ।

३०. और रसूल कहेगा कि हे मेरे रब! बेशक मेरी क़ौम ने इस कुरआन को छोड़ रखा था ।

३१. और इस तरह हम ने हर नबी के दुरमन कुछ मुजरिमों को बना दिया है, और तेरा रब ही हिदायत देने वाला और मदद करने वाला काफी है ।

३२. और काफिरों ने कहा कि उस पर पूरा कुरआन एक साथ ही क्यों न उतारा गया? इसी तरह (हम ने थोड़ा-थोड़ा करके उतारा) ताकि इस से हम आप के दिल को मजबूती अता करें, और हम ने उसे ठहर-ठहर कर ही पढ़ सुनाया है ।

३३. और ये आप के पास जो कोई भी मिसाल लेकर आयेगे हम उस का सच जवाब और ठीक तफसीर बता देंगे ।²

३४. जो लोग अपने मुँह के बल जहन्नम की तरफ जमा किये जायेंगे, वही बुरी जगह वाले और भटके हुए रास्ते वाले हैं ।

يَوْمَئِذٍ لَيَبْغِيَنَّ لَكَ أَعْيُنُ الْمُؤْمِنِينَ فَلَا تَخْضِبَنَّ عَيْنَاكَ

لَقَدْ أَضَلَّيْنَا عَنْ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَاءُنِي وَكُنَّا

السَّيْطَانُ لِلْإِنْسَانِ خَدًّا وَلَا

وَقَالَ الرَّسُولُ يَا رَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا

هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا

وَكَذَلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ عَدُوٍّ مِنَ الْمُجْرِمِينَ

وَكُلْفًا يَرْبِكُهُمْ وَأَوْحَيْنَا إِلَيْكَ

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْآنُ جُمْلَةً

وَاحِدَةً كَذَلِكَ لِنُثَبِّتَ بِهِ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنَاهُ

تَرْتِيلًا

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ

تَفْسِيرًا

الَّذِينَ يَخْشَوْنَ عَلَىٰ ذُرِّيَّتِهِم مِّنَ الْجَهَنَّمَ

أُولَئِكَ سُرُّ مَكَانًا وَأَضَلُّ سَبِيلًا

¹ इस से मालूम हुआ कि अल्लाह के नाफरमानों से रिश्ता और दोस्ती नहीं रखनी चाहिए, इसलिए कि सज्जन इंसान की संगत से इंसान सज्जन और बुरे इंसान की संगत इंसान को बुरा बनाती है ।

² यह कुरआन को ठहर-ठहर कर उतारे जाने की नीति (हिक्मत) और वजह को बयान किया जा रहा है कि ये मूर्तिपूजक जब भी कोई मिसाल या मुश्किल और शक पेश करेंगे तो कुरआन के जरिये हम उस को जवाब या वजाहत पेश करेंगे और इस तरह उन्हें लोगों को भटकाने का मौका नहीं मिलेगा ।

३५. और वेशक हम ने मूसा को किताब दी और उन के साथ उन के भाई हारून को उनका सहायक (वजीर) बनाया।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَا مَعَهُ
أَخَاهُ هَارُونَ وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾

३६. और कह दिया कि तुम दोनों उन लोगों की तरफ जाओ जो हमारी निशानियों को झुठला रहे हैं, फिर हम ने उन्हें बिल्कुल ही हलाक (ध्वस्त) कर दिया।

فَقُلْنَا أَهْبَا إِلَى الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
فَدَمَّرْنَاهُمْ تَدْمِيرًا ﴿٣٦﴾

३७. और नूह की क्रौम ने भी जब रसूलों को झूठा कहा तो हम ने उन्हें डुबो दिया और लोगों के लिए उन्हें शिक्षा (इब्रत) हासिल करने का प्रतीक (मजहर) बना दिया और हम ने जालिमों के लिए सख्त अजाब तैयार कर रखा है।

وَقَوْمِ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِلرُّسُلِ أَخْرِبْنَاهُمْ وَجَعَلْنَاهُمْ
لِلنَّاسِ آيَةً وَأَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ﴿٣٧﴾

३८. और 'आद' जाति और 'समूद' जाति और कुये वालों को' और उन के बीच के बहुत से सम्प्रदाय (फिकों) को (नाश कर दिया)।

وَعَادًا وَثَمُودًا وَأَصْحَابَ الرَّيْسِ وَقُرُونًا بَيْنَ
ذَلِكَ كَثِيرًا ﴿٣٨﴾

३९. और हम ने हर एक के सामने मिसालों को बयान किया, फिर हर एक को पूरी तरह से नाश कर दिया।

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْأَمْثَالَ وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيرًا ﴿٣٩﴾

४०. और ये लोग उस बस्ती के पास से भी आते-जाते हैं जिन पर बुरी तरह की बारिश की गयी,^२ क्या यह फिर भी उसे देखते नहीं? हकीकत यह है कि उन्हें मरकर दोबारा जिन्दा होकर खंडे होने पर यकीन ही नहीं।

وَلَقَدْ آتَيْنَا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِي أَمْطَرْنَا مَطَرًا سَوْءًا أَقْلَمَ
يَكُونُوا يَرُودُهَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ لَشْرًا ﴿٤٠﴾

^१ का मतलब है कुआँ, أصحاب الریس का मतलब हुआ कुएं वाले। इस के निर्धारण (ताईन) में मुफसिसेरों में इखितेलाफ है, इमाम इब्ने जरीर तबरी ने कहा है, इस से मुराद खाई वाले हैं, जिनका बयान सूर: अल-बुरूज में है। (इब्ने कसीर)

^२ बस्ती से लूत की क्रौम की बस्तियाँ सदूम और अमूर वगैरह मुराद हैं और बुरी बारिश से पत्थरों की बारिश मुराद है, इन बस्तियों को उलट दिया गया था, उस के बाद उन के ऊपर कंकड़-पत्थर की बारिश की गई थी, जैसाकि सूर: हूद-८२ में बयान किया गया है, ये बस्तियाँ सीरिया और फिलिस्तीन के रास्ते में पड़ती हैं, जिन से गुजर कर मक्कावासी आते-जाते थे।

४१. और तुम्हें जब कभी देखते हैं तो तुम से मजाक करने लगते हैं, कि क्या यही वह इंसान है जिन्हें अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है।

४२. (वह तो कहिए) कि हम डटे रहे नहीं तो इन्होंने तो हमें हमारे देवताओं (माबदों) से भटका देने में कोई कमी नहीं छोड़ी थी, और जब ये अजाबों को देखेंगे तो उन्हें वाजेह तौर से मालूम हो जायेगा कि पूरी तरह से रास्ते से भटका हुआ कौन था?

४३. क्या आप ने उसे भी देखा जो अपनी ख्वाहिशत को अपना देवता बनाये हुए है, क्या आप उस के जिम्मेदार हो सकते हैं।

४४. क्या आप इसी सोच में हैं कि उन में से ज्यादातर सुनते या समझते हैं, वह तो निरे जानवर की तरह हैं, बल्कि उन से भी ज्यादा भटके हुए।^१

४५. क्या आप ने नहीं देखा कि आप के रब ने छाया को किस प्रकार वसीअ (विस्तृत) कर दिया है?^२ अगर चाहता तो उसे ठहरा हुआ कर देता, फिर हम ने सूरज को उस पर दलील बनाया।

४६. फिर हम ने उसे धीरे-धीरे अपनी तरफ खींच लिया।

وَإِذَا رَأَوْكَ إِذْ يَنْجُودُ وَكَانَ إِذَا هُمْ رَأَوْا أَخَذُوا الْكَذِبَ
بَعَثَ اللَّهُ رَسُولًا مِّنْهُ

إِنْ كَادَ لَيُضِلَّنَا عَنْ إِلَهِنَا لَوْلَا أَنْ صَبَرْنَا
عَلَيْهَا وَسَوْفَ يَعْلَمُونَ حِينَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ
مَنْ أَضَلَّ سَبِيلًا

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ أَفَأَنْتَ تَكُونُ
عَلَيْهِ وَكَيْلًا

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ الْكَلْبَ إِذَا سَمِعَ صَوْتًا مِنْ رَبِّهِ
إِلَّا كَالْأَعْمَىٰ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيلًا

أَلَمْ تَرَ إِلَىٰ رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَكَوْشَأَ لَجَعَلَنَّهُ
سَائِلًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسُ عَلَيْهِ دَلِيلًا

ثُمَّ قَبَضْنَاهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَسِيرًا

^१ यानी ये चौपाये जिस मकसद के लिए पैदा किये गये हैं, उसे वे समझते हैं। लेकिन इंसान जिसे एक अल्लाह की इबादत के लिए पैदा किया गया था, वह रसूलों के बाखबर कर देने के बावजूद अल्लाह के साथ धिक्क करता है और दर-दर पर अपना माथा टेकता फिरता है, इस बिना पर ये बेचक चौपाये से भी ज्यादा बुरे और भटके हुए हैं।

^२ यहाँ से दोबारा तीहीद के दलायल शुरू होते हैं। देखो, अल्लाह तआला ने दुनिया में किस तरह छाया फैलायी है जो सुबह के बाद से सूरज के निकलने तक रहती है, यानी उस वक़्त धूप नहीं होती धूप के साथ यह सिमटना और सिकुड़ना शुरू हो जाता है।

४७. और वही है जिस ने रात को तुम्हारे लिए लिबास बनाया और नींद सुखमय बनायी, और दिन को उठ खड़े होने का वक़्त ।

४८. और वही है जो रहमत (कृपा) की बारिश से पहले झुशखबरी देने वाली हवा को भेजता है और हम आकाश से पाक पानी बरसाते हैं ।

४९. ताकि उस के जरिये मरे हुए नगर को जिन्दा कर दें और उसे हम अपनी मख़लूक में से बहुत से जानवरों और इंसानों को फिलाते हैं ।

५०. और बेशक हम ने इसे उन के बीच कई तरह से बयान किया ताकि वह नसीहत हासिल करें, लेकिन फिर भी ज्यादातर लोगों ने नाशुक्री के सिवाय माना नहीं ।

५१. और अगर हम चाहते तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते ।

५२. तो आप काफ़िरों का कहना न करें और कुरआन के जरिये उन से पूरी ताक़त से महा धर्मयुद्ध (जिहाद) करें ।

५३. और वही है जिस ने दो समुद्रों को आपस में मिला रखा है, यह है मीठा मजदार और यह है खारी कडुवा, और इन दोनों के बीच एक पर्दा और मजबूत ओट कर दी ।

५४. और वह है वही जिस ने पानी से इंसान को पैदा किया, फिर उसे वंश वाला और ससुराली रिश्तों वाला कर दिया ।^१ बेशक आप

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ لَيْلًا بِيَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ۝۴۷

وَهُوَ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً طَهُورًا ۝۴۸

لِنُحْيِيَ بِهِ بَلْدَةً مَيِّتًا وَنُسْقِيَهُ مِمَّا خَلَقْنَا أَنْعَامًا وَأَنبِيَاءَ كَثِيرًا ۝۴۹

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيهِم مِّنْ قَبْلِهِ لِيُبَيِّنَ لَكُمُ الْآيَاتِ الْكُفْرَىٰ ۝۵۰

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ ثَمْرًا ۝۵۱

فَلَا تُطِيعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَادِدْهُمْ بِهِ جِهَادًا كَثِيرًا ۝۵۲

وَهُوَ الَّذِي مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُورًا وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَجُجْرًا مَّصْجُورًا ۝۵۳

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ مِنَ الْمَاءِ بَشَرًا فَجَعَلَهُ نَسَبًا وَصِهْرًا ۚ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيرًا ۝۵۴

^१ मीठ पानी को कहते हैं, فُورَات का मतलब है काट देना, तोड़ देना, मीठा पानी प्यास को काटता है यानी खत्म कर देता है, أُجَاج बहुत खारी या कडुवा पानी ।

^२ वंश (नसब) से मुराद वह रिश्ता है, जो माता-पिता की तरफ से हो, और सहर से मुराद वह करीबी रिश्ता है जो विवाह के बाद धीवी की तरफ से हो, जिस को हमारे समाज में ससुराली रिश्ता कहा जाता है । इन दोनों रिश्तों का बयान सूर: अन-निसा-२३ और सूर: अन-निसा-२२

कब रब हर चीज पर कादिर है।

५५. और यह अल्लाह को छोड़ कर उन की इबादत करते हैं, जो न तो उन्हें कोई फायदा पहुंचा सकें न कोई नुकसान पहुंचा सकें, काफिर तो है ही अपने रब के खिलाफ (बैतान) की मदद करने वाला।

५६. और हम ने तो आप को खुशखबरी और डर (त्रासिक) सुनाने वाला (नबी) बना कर भेजा है।

५७. कह दीजिए कि मैं (कुरआन के पहुंचाने पर) तुम से कोई उजरत नहीं चाहता लेकिन जो इसान अपने रब की तरफ रास्ता पकड़ना चाहे।

५८. और उस हमेशा रहने वाले अल्लाह (तआला) पर पूरा यक्रीन करें जिसे कभी मौत नहीं, और उसकी तारीफ के साथ पवित्रता (तस्बीह) का बयान करते रहें, वह अपने बंदों के गुनाहों को अच्छी तरह जानता है।

५९. वही है जिस ने आकाशों और धरती और उनके बीच की चीजों को छः दिन में पैदा कर दिया, फिर अर्ध पर बुलन्द हुआ, वह रहमान है, आप उस के बारे में किसी जानकार से पूछ लें।

६०. और उन से जब भी कहा जाता है कि दयालु (रहमान) को सज्दा करो, तो वे कहते हैं कि रहमान है क्या? क्या हम उस को सज्दा करें जिस का तू हमें हुक्म दे रहा है और (इस दावत से) उन की नफरत ही बढ़ती है।

وَيَصُدُّونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ
وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِمْ كَلِمًا ۝٥٥

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝٥٦

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَاءَ
أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝٥٧

وَتَوَكَّلْ عَلَىٰ الْعَلِيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ ۚ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ
وَكَفَىٰ بِهِ يَذُنُوبَ عِبَادِهِ ۖ خَيْرًا ۝٥٨

الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ
الرَّحْمَنُ فُسِّقَ لَهُ خَيْرًا ۝٥٩

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَنِ قَالُوا وَمَا
الرَّحْمَنُ أَنْسَجِدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ۝٦٠

में बयान किया गया है, और एक ही औरत से दो के दूध पीने से जो रिश्ता होता है, हदीस के ऐतबार से वह वंशीय सम्बन्धों (नसबी रिस्तों) में शामिल है।

६१. बहुत बाबरकत (शुभ) है वह जिस ने आसमान में वुर्ज बनाये और उस में सूरज बनाया, और रौबन चाँद भी ।

६२. और उसी ने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आने जाने वाला बनाया, उस इंसान की नसीहत के लिए जो नसीहत हासिल करने या शुकिया अदा करने का इरादा रखता हो ।

६३. और रहमान (दयालु) के सच्चे बंदे वह हैं जो धरती पर नरमी से चलते हैं और जब जाहिल लोग उन से बातें करने लगते हैं तो वह कह देते हैं कि सलाम है ।^१

६४. और जो अपने रब के सामने सज्दा करते और खड़े होकर रात गुजारते हैं ।

६५. और जो ये दुआयें (विनय) करते हैं कि हे हमारे रब! हम से नरक (जहन्नम) का अजाब दूर ही रख क्योंकि उसका अजाब चिमट जाने वाला है ।^२

६६. वह स्थाई (मुस्तकिल) जगह और रहने के ऐतबार से बुरी जगह है ।

६७. और जो खर्च करते वक़्त भी न तो इसराफ़ करते हैं, न कंजूसी, बल्कि इन दोनों के बीच का दरमियानी रास्ता होता है ।

تَبْرَكَ الَّذِي جَعَلَ فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَجَعَلَ فِيهَا سِرَاجًا وَقَمَرًا مُنِيرًا ﴿٦١﴾

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خُلْفَةً لِّعَنِّ أَنْ يُدَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُورًا ﴿٦٢﴾

وَعِبَادُ الرَّحْمَنِ الَّذِينَ يَتَّقُونَ عِلَّ الْأَرْضِ مَوْتًا وَإِذَا كَانُوا مَعَهُ لَعَابُورًا قَالُوا سَلَامًا ﴿٦٣﴾

وَالَّذِينَ يَبِيتُونَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَقِيَامًا ﴿٦٤﴾

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾

إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَمُقَامًا ﴿٦٦﴾

وَالَّذِينَ إِذَا أَنفَقُوا لَمْ يُسْرِفُوا وَلَمْ يَقْتُرُوا وَكَانَ بَيْنَ ذَلِكَ قَوَامًا ﴿٦٧﴾

^१ सलाम से मुराद यहाँ गुँह भोड़ना और बिबाद को छोड़ देना है, यानी ईमानवाले जाहिल लोगों और कटबहस करने वालों से उलझते नहीं, बल्कि ऐसे मौके पर टाल जाते हैं और उन से बचने की कोशिश करते हैं और बिना फायदे के बहस नहीं करते ।

^२ इस से मालूम हुआ कि दयालु (रहमान) अल्लाह के बंदे वह हैं जो एक तरफ़ रातों को जागकर अल्लाह की इबादत करते हैं और दूसरी तरफ़ डरते भी हैं कि कहीं किसी गलती या सुस्ती की वजह से अल्लाह की पकड़ में न आ जायें इसीलिए वे नरक के अजाब से सुटकारा माँगते हैं । यानी अल्लाह की इबादत और आज्ञाकारिता (इताअत) पर किसी तरह का गर्व और घमण्ड नहीं होना चाहिए ।

६८. और जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे देवता (मावूद) को नहीं पुकारते और किसी ऐसे इंसान को जिस का कत्ल करना अल्लाह तआला ने हARAM किया हो, सिवाय हक के वह कत्ल नहीं करते न वह बदकार होते हैं! और जो कोई यह अमल करे वह अपने ऊपर कड़ी यातना (वबाल) लेगा।

६९. उसे क्रयामत के दिन दुगुना अजाब दिया जायेगा और वह अपमान और अनादर (रुसवाई) के साथ हमेशा वही रहेगा।

७०. उन लोगों के सिवाय जो माफी मांग लें और ईमान लायें और नेक काम करें? ऐसे लोगों के गुनाहों को अल्लाह (तआला) नेकी में बदल देता है, अल्लाह तआला बड़ा बख्शने वाला और रहम करने वाला है।

७१. और जो इंसान माफी मांग ले और नेकी के काम करे तो वह हकीकत में अल्लाह (तआला) की तरफ भय प्रवृत्ति (झुकाव) रखता है।

وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُونَ
النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُونَ ۗ وَمَنْ
يَفْعَلْ ذَلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ۖ

يُضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيهِ
مُهَاتًا ۖ

إِلَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ
يَبْدِلُ اللَّهُ سَوَاتِيرَهُمْ حَسَنَاتٍ ۗ وَكَانَ اللَّهُ
عَفُورًا رَحِيمًا ۖ

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهُ يَتُوبُ إِلَى
اللَّهِ مَتَابًا ۖ

1 हदीस में रसूलुल्लाह ﷺ से सवाल किया गया, कौन सा गुनाह सब से बड़ा है? आप ﷺ ने फरमाया: यह कि तू अल्लाह के साथ किसी को शामिल करे, जबकि हकीकत में उस ने तुझे पैदा किया, उस ने पूछा कि उस के बाद कौन सा बड़ा गुनाह है? फरमाया अपनी औलाद को इस डर से कत्ल करना कि वह तेरे साथ खायेगी। उस ने पूछा फिर कौन सा? आप ﷺ ने फरमाया यह कि तू अपने पड़ोसी की बीवी से व्याभिचार (जिना) करे। फिर आप ﷺ ने फरमाया कि इन बातों की तसदीक इस आयत से होती है। फिर आप ﷺ ने इसी आयत को पढ़ा। (अल-बुखारी, तफसीर सूर: अल-बकर:, मुस्लिम किताबुल ईमान, बाबु कौनिश्-श्िके अकबहुज जुनूब)

2 इस से मालूम हुआ कि दुनिया में साफ मन से माफी मांगने से हर गुनाह से माफी मिल सकती है, चाहे वह कितना बड़ा हो।

७२. और जो लोग झूठी गवाही नहीं देते,¹ और जब वे किसी व्यर्थ (लगव) के करीब से गुजरते हैं तो इज्जत से गुजर जाते हैं।²

وَالَّذِينَ لَا يَشْهَدُونَ الزُّورَ وَإِذَا مَرُّوا بِاللَّغْوِ مَرُّوا كِرَامًا ﴿٧٢﴾

७३. और जब उन्हें उन के रब (के क्रील और वादे) की आयतें सुनाई जाती हैं तो वे अंधे-बहरे होकर उन पर नहीं गिरते।

وَالَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخْفَوْا عَلَيْهَا صُمْغًا وَعُسِيَانًا ﴿٧٣﴾

७४. और वह यह दुआ (विनय) करते हैं कि हे हमारे रब! तू हमें हमारी पत्नियों और सन्तानों से आँखों को ठंडक अता कर और हमें परहेजगारों का अगुवा बना दे।

وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا ﴿٧٤﴾

७५. यही वे लोग हैं जिन्हें उन के सब (सहन) के बदले (जन्नत की ऊँची) अटारियाँ अता की जायेंगी, जहाँ उन्हें आशीवाद और सलाम पहुँचाया जायेगा।

أُولَئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوا وَيُلَقَّوْنَ فِيهَا الَّتِي لَهُمْ وَبِهَا كَلِيمُهُمْ ﴿٧٥﴾

७६. इस में वे हमेशा रहेंगे, वह बहुत ही अच्छी जगह और आराम की जगह है।

خَالِدِينَ فِيهَا أَحْسَنَتْ مَسَافِرًا وَمَقَامًا ﴿٧٦﴾

७७. कह दीजिए! अगर तुम्हारी नर्म दुआ (प्रार्थना) न होती तो मेरा रब तुम्हारी कभी फिक्र न करता, तुम तो झूठला चुके अब जल्द ही उसकी सजा तुम्हें चिमट जाने वाली होगी।

فَلَمْ يَأْتِ بَعْضُكُمْ مِنْ رَبِّكَ لَوْلَا ذِكْرُ اللَّهِ لَفَدْتُمْ ﴿٧٧﴾

¹ झूर (ज़ूर) का मतलब है झूठ। हर झूठी चीज़ भी झूठ है, इसीलिए झूठी गवाही से लेकर कुफ्र, शिर्क और हर तरह की गलत बातों जैसे खेल-कूद, गाना और दूसरे बेकार रीति-रिवाज इसी में शामिल है और अल्लाह की इबादत करने वालों की यह भी विशेषता (खुसूसियत) है कि वे किसी भी झूठ में और झूठी सभा में उपस्थिति (हाज़िर) नहीं होते।

² बेकार (व्यर्थ) हर वह बात और काम है जिस में धर्मानुसार कोई फ़ायदा न हो, यानी ऐसे कामों और बातों में भी वह हिस्सा नहीं लेते बल्कि शान्ति (खामोशी) के साथ और इज्जत के साथ निकल जाते हैं।

सूरतुश्शुअरा-२६

सूर: शुअरा मक्का में नाजिल हुई और इस में दो सौ सत्ताईस आयतें और ग्यारह रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. ता•सीन•मीम•

२. ये आयतें रौशन किताब की हैं।

३. उन के ईमान न लाने पर शायद आप तो अपना प्राण (जान) त्याग देंगे।

४. अगर हम चाहते तो उन पर आकाश से कोई ऐसी निशानी उतारते कि जिस के सामने उन की गर्दनें झुक जाती।

५. और उन के पास रहमान की तरफ से जो भी नई शिक्षायें (नसीहतें) आयीं यह उस से मुंह फेरने वाले बन गये।

६. उन लोगों ने झुठलाया है अब उन के पास जल्द ही उसकी खबरें आ जायेंगी, जिस के साथ वे मजाक कर रहे हैं।

७. क्या उन्होंने धरती की तरफ नहीं देखा? कि हम ने उसमें हर तरह के खूबसूरत जोड़े कितने उगाये हैं।

८. बेशक उस में बड़ी निशानी है, और उन में के ज्यादातर लोग ईमान (विश्वास) वाले नहीं हैं।

९. और तेरा रब बेशक वही प्रभावशाली (मालिक) और रहम करने वाला है।

سُورَةُ الشُّعَرَاءِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

طسّم

تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ

لَعَلَّكَ بٰخِعٌ لِّفَسٰكٍ اَلَّا یَكُوْنُوْا مُؤْمِنِیْنَ

اِنْ لَّمْۤا نُنزِلْ عَلَیْهِمْ مِنَ السَّمٰوٰتِ اٰیَةً فَظَلَّتْ

اَعْنَآءُهُمْ لَهَا خٰوِیِیْنَ

وَمَا یَاْتِیْهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنَ الرَّحْمٰنِ مُحَدِّثٍ

اِلَّا كَالوِاْعٰنَةِ مَعْرُضِیْنَ

فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَبٰۤاۤتِهِمْ اَنْۢكٰرًا مَا كَانُوْا

بِهِ یَسْتَهْزِءُوْنَ

اَوَلَمْ یَعْرِوْا اِلَى الْاَرْضِ كَمَا اَنْۢكَبْنَا فِیْهَا مِنْۢ كُلِّ

ذَوْجٍ كَرِیْمٍ

اِنْ فِیْ ذٰلِكَ لَآیٰةٌ لِّاُولِیْۤاَلۡبَیْنِ

مُؤْمِنِیْنَ

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ

१०. और जब आप के रब ने मूसा को पुकारा कि तू जालिम लोगों के पास जा ।¹⁰

११. फिरऔन की क्रौम के पास, क्या वह सदाचार (तक़वा) न करेंगे ।

१२. मूसा ने कहा मेरे रब ! मुझे तो डर है कि कहीं वह मुझे झुठला (न) दें ।

१३. और मेरा सीना (हृदय) तंग हो रहा है, मेरी ज़बान चल नहीं रही, इसलिए तू हारून की तरफ भी वही (प्रकाशना) भेज ।

१४. और उन का मुझ पर मेरी एक गलती का (दावा) भी है, मुझे डर है कि कहीं वह मुझे मार न डालें ।

१५. (बारी तआला ने) कहा कि कभी ऐसा न होगा, तुम दोनों हमारी निशानियाँ लेकर जाओ, हम खुद सुनने वाले तुम्हारे साथ हैं ।

१६. तुम दोनों फिरऔन के पास जाकर कहो कि बेशक हम सारी दुनिया के रब के भेजे हुए हैं ।

१७. कि तू हमारे साथ इस्राईल की औलाद को भेज दे ।

१८. (फिरऔन ने) कहा कि क्या हम ने तुझे तेरे बचपन में अपने यहाँ पोषण (परवरिश) नहीं किया था? और तूने अपनी उम्र के बहुत से

وَأَذِّنَاذِي رَبِّكَ مُوسَىٰ أَنْ آتَيْتَ الْقَوْمَ
الْقَالِبِينَ ﴿١٠﴾

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ط إِلَّا يَتَّقُونَ ﴿١١﴾

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ﴿١٢﴾

وَيُضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ
إِلَىٰ هَارُونَ ﴿١٣﴾

وَأَلِّمَهُمْ عَلَىٰ ذَنْبٍ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ﴿١٤﴾

قَالَ كَلَّا ؕ قَدْ هَمَبْنَا بِاللِّسَانِ أَنَّ نَعْلَمَ
مُسْتَمِيعُونَ ﴿١٥﴾

فَاتَّبِعْنَا فِرْعَوْنَ فَقَوْلَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

إِنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿١٧﴾

قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِينَا وَلِهَذَا وَ لَيْسَتْ
فِينَا مِنْ عَمَلِكَ شَيْئًا ﴿١٨﴾

¹ यह रब की उस वक्त की पुकार है जब हजरत मूसा मदन से अपनी बीवी के साथ वापस आ रहे थे, रास्ते में उन्हें तापने के लिए आग की जरूरत महसूस हुई तो आग की खोज में तुर पहाड़ तक पहुँच गये, जहाँ से आकाशवाणी (आसमानी आवाज़) ने उनका स्वागत किया और उन्हें नबूअत के पद से सुशोभित (सरफराज) किया गया और जालिमों तक अल्लाह का पैगाम पहुँचाने का कर्तव्य (फर्ज) उनको सौंपा गया ।

साल हम में नहीं गुजारे?'

१९. और फिर तू अपना वह काम कर गया जो कर गया और तू नाशुक्रों में से है।

२०. (हजरत मूसा ने) जवाब दिया कि मैंने इस काम को उस वक्त किया था, जबकि मैं रास्ता भूले हुए लोगों में से था।'

२१. फिर तुम से डर खाकर मैं तुम से भाग गया, फिर मुझे मेरे रब ने हुक्म और इल्म अता किया और मुझे अपने पैगम्बरों में से कर दिया।

२२. और मुझे पर क्या तेरा यही वह एहसान है? जिसे तू जाहिर कर रहा है कि तूने इस्राईल की औलाद को मुलाम (दास) बना रखा है।

२३. फिरऔन ने कहा कि सारी दुनिया का रब क्या है?

२४. (हजरत मूसा ने) कहा वह आकाशों और धरती और उन के बीच की सभी चीजों का रब है, अगर तुम ईमान रखने वाले हो।

२५. (फिरऔन ने) अपने निकटवर्तियों (करीबी लोगों) से कहा कि क्या तुम सुन नहीं रहे?

२६. (हजरत मूसा ने) कहा वह तुम्हारा और तुम्हारे पूर्वजों (पहलों) का रब है।

وَكَلِمَاتٍ فَعَلْتَهُ الْكُفْرَيْنِ وَأَنْتَ

مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿١٩﴾

قَالَ قَعْلُهُمْ إِذَا وَأَنَا مِنَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٠﴾

فَقَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خَفَّيْتُمْ فَوْهَبُ بِي رَبِّي

حُكْمًا وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٢١﴾

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدتَّ

بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٢﴾

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٣﴾

قَالَ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا

إِنْ كُنْتُمْ مُوقِنِينَ ﴿٢٤﴾

قَالَ لَيْسَ حَوْلَهُ إِلَّا نَسِيحُونَ ﴿٢٥﴾

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٦﴾

1 कुछ कहते हैं कि १८ साल फिरऔन के महल में गुजारे, कुछ के करीब ३० और कुछ के करीब ४० वर्ष ! यानी इतनी उम्र गुजारने के बाद कुछ साल इधर-उधर रहकर अब तू नबूअत का दावा करने लगा है?

2 यानी यह कत्ल की कोशिश नहीं थी बल्कि एक घूसा ही था जो उसे मारा था, जिस से उस की मौत हो गई। इसके सिवाय यह बाकेआ (घटना) भी नबूअत से पहले की है, जबकि मुझे इल्म का यह जूर नहीं दिया गया था।

२७. (फिरऔन ने) कहा (लोगो)! तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ भेजा गया है, यह तो बिल्कुल ही दीवाना है।

२८. (हजरत मूसा ने) कहा वही पूरब और पश्चिम का और उन के बीच की सभी चीजों का रब है, अगर तुम अकल रखते हो।

२९. (फिरऔन) कहने लगा (सुन ले) अगर तूने मेरे सिवाय किसी को देवता (माबूद) बनाया तो मैं तुझे बन्दियों में डाल दूंगा।¹

३०. (मूसा ने) कहा चाहे मैं तेरे पास कोई खुली चीज ले आऊँ?

३१. (फिरऔन ने) कहा अगर तू सच्चों में से है तो उसे पेश कर।

३२. आप ने (उसी वक़्त) अपनी छड़ी डाल दी जो अचानक खुल्लम-खुल्ला (बहुत बड़ा) अजगर बन गई।²

३३. और अपना हाथ खींच निकाला तो वह भी उसी वक़्त हर देखने वाले को सफेद रोशनी वाला दिखायी देने लगा।

३४. (फिरऔन) अपने निकटवर्ती (क़रीबी) सरदारों से कहने लगा कि यह तो कोई बहुत बड़ा माहिर जादूगर है।

قَالَ إِنَّ رَسُولَكُمْ الَّذِي أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿٢٧﴾

قَالَ رَبُّ الشُّرُقِ وَالْبُغُوبِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّ لَكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٢٨﴾

قَالَ لَوْ بِنْتُ الْهَاءِ غَيْرِي لَكَجَعَلْتَكِ مِنَ السُّجُونِ ﴿٢٩﴾

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِينٍ ﴿٣٠﴾

قَالَ فَأْتِ بِهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾

فَأَلْفَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ ﴿٣٢﴾

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾

قَالَ لِلْمَلَآئِكَةِ إِنِّي لَمِنَ السّٰجِدِ عَلَيْهِمْ ﴿٣٤﴾

¹ फिरऔन ने जब देखा कि मूसा عليه السلام कई तरह से सारी दुनिया और आखिरत के रब के पूरे मालिक की वज्राहत (स्पष्टीकरण) कर रहे हैं जिस का कोई ठीक जवाब उस से नहीं बन पा रहा है तो उस ने दस्तीलों को छोड़ कर धमकी देना शुरू कर दिया और मूसा को जेल में डालने के लिए डराया।

² कई जगह पर ثُعْبَان (साँप) को حَيَّة (नाग) और कई जगह पर جَان कहा गया है। वह साँप होता है जो बड़ा हो और حَيَّة छोटे साँप को कहते हैं और حَيَّة छोटे-बड़े दोनों तरह के साँप को बोला जाता है। (फ़तुहुल क़दीर) यानी यह भोजिजा देते वक़्त लाठी ने पहले छोटे साँप की शकल धारण (अक़्तियार) किया फिर देखते ही देखते अजगर बन गया। والله اعلم।

३५. यह तो चाहता है कि अपने जादू के बल से तुम्हें तुम्हारी धरती से निकाल दे, बताओ अब तुम क्या राय देते हो?

३६. उन सब ने कहा आप इसे और इस के भाई को स्थगित (मुहलत) दीजिए और सभी नगरों में जमा करने वालों को भेज दीजिए।

३७. जो आप के पास माहिर जादूगरों को ले आयें।

३८. फिर एक मुकर्रर दिन के बक्त पर सभी जादूगर जमा किये गये।

३९. और आम लोगों से भी कह दिया गया कि तुम भी जमा हो जाओगे।

४०. ताकि अगर जादूगर गालिब हो जायें तो हम उन्हीं की पैरवी करेंगे।

४१. जादूगर आकर फिरऔन से कहने लगे कि अगर हम जीत गये तो हमें कुछ उपहार (इन्आम) भी मिलेगा।

४२. (फिरऔन ने) कहा हाँ! (बड़ी खुशी से) बल्कि ऐसी हालत में तुम मेरे खास दरवारी बन जाओगे।

४३. (हजरत) मूसा ने जादूगरों से कहा जो कुछ तुम्हें डालना है डाल दो।

४४. उन्होंने अपनी रसिसयाँ और डन्डे डाल दिये और कहने लगे फिरऔन की इज्जत की कसम! हम जरूर विजयी (गालिब) होंगे।

४५. अब (हजरत) मूसा ने भी अपनी छड़ी डाल दी, जिस ने उसी पल उन के झूठ के बनाये खेल को निगलना शुरू कर दिया।

४६. यह देखते ही जादूगर सज्दे में गिर गये।

يُرِيدُ أَنْ يُخْرِجَهُمْ مِنْ أَرْضِهِمْ بِسِحْرِهِمْ
فَمَاذَا تَأْمُرُونَ ﴿35﴾

قَالُوا أَرْجَاهُ وَالنَّهْأُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَائِنِ
خُيْرِينَ ﴿36﴾

يَأْتُونَ بِكُلِّ سِحْرٍ عَلَيْهِمْ ﴿37﴾

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِيَلْقَىٰ يَوْمَ تَمُوتُونَ ﴿38﴾

وَقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُّجْتَمِعُونَ ﴿39﴾

لَعَلَّآ تَلْبِغُ السَّحَرَةُ إِن كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿40﴾

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ إِنَّ كُنَّا لَآجِرًا
إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿41﴾

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَإِنِ الْفَارِقِينَ ﴿42﴾

قَالَ لَهُمْ مُوسَىٰ أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُّلقُونَ ﴿43﴾

فَأَلْقَوْا حِبًا لَهُمْ وَرِجْسَهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّتِ رَبِّنَا
إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿44﴾

فَألقى موسى عصاهُ فإِذَا هِيَ تَلْقَفُ
مَا يَأْفِكُونَ ﴿45﴾

فَألقى السَّحَرَةُ سُجُودًا ﴿46﴾

४७. और उन्होंने साफ तौर से कह दिया कि हम तो सारे लोक के रब पर ईमान ले आये।

قَالُوا أَمَّا إِبْرَاهِيمَ وَالطَّالِثِينَ ﴿٤٧﴾

४८. यानी मूसा और हारून के रब पर।

رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ ﴿٤٨﴾

४९. (फिरऔन ने) कहा कि मेरी इजाजत से पहले तुम उस पर ईमान ले आये। बेशक यही तुम्हारा सरदार (बड़ा गुरु) है जिस ने तुम सब को जादू सिखाया है। तो तुम्हें अभी-अभी मालूम हो जायेगा। क्रसम है, मैं भी तुम्हारे हाथ-पैर उल्टे तौर से काट दूंगा और तुम सब को फासी पर लटका दूंगा।

قَالَ امْنُكُمْ لَهُ قَبْلَ أَنْ أَذِنَ لَكُمْ ۚ إِنَّهُ
لَكَبِيرٌ لَّهُمُ الَّذِي عَلَّمَكُمُ التِّحْرَةَ ۚ فَلَسَوْفَ
تَعْلَمُونَ ۚ لَا تَقْعَبْنَ أَيِّدِيكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِنْ
خِلَافٍ وَلَا وَصَلِيَّتِكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٩﴾

५०. उन्होंने कहा कि कोई फिक्र नहीं हम तो अपने रब की तरफ लौटकर जाने वाले ही हैं।

قَالُوا لَا صَیْرَ لَنَا إِلَىٰ رَبِّنَا مُنْقَلِبُونَ ﴿٥٠﴾

५१. इस बिना पर कि हम सब से पहले ईमान वाले बने हैं, हमें आशा है कि हमारा रब हमारी सभी गलतियाँ माफ कर देगा।

إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطِيئَاتِنَا ۚ إِنَّ رَبَّنَا
أَوْلَىٰ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥١﴾

५२. और हम ने मूसा को वहयी (प्रकाशना) की कि रातों-रात मेरे बंदों को निकाल ले जा, तुम सब पीछा किये जाओगे।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِي
إِنَّمَا مُتَّبِعُونَ ﴿٥٢﴾

१ फिरऔन के लिए यह बाकेआ अजीब और बहुत आश्चर्यजनक (ताज्जुब वाला) था कि जिन जादूगरों के जरिये वह जीत और कामयाबी की उम्मीद लगाये बैठा था, वही न केवल हार गये बल्कि उसी समय वे उस रब पर ईमान ले आये जिस ने हजरत मूसा और हारून को निशानी और मोजिजा देकर भेजा था, लेकिन बजाय इस के कि फिरऔन भी गौर ब फिक्र करके ईमान ले आता, उस ने तकब्बुर घमण्ड का रास्ता अपनाया और जादूगरों को डराना धमकाना शुरू कर दिया और कहा कि तुम सब के सब इस के शिष्य (चेले) हो।

२ जब मिस्र देश में हजरत मूसा का निवास ज्यादा वक्त तक हो गया और हर तरह से उन्होंने फिरऔन और उस के दरबारियों पर साबित कर दिया, लेकिन उस के बावजूद वे ईमान लाने के लिए तैयार नहीं हुए तो अब इसके सिवाय कोई रास्ता बाकी नहीं रह गया था कि उन्हें सजा और अजाब से पीड़ित (दोचार) किया जाये। इसलिए अल्लाह तआला ने मूसा को हुक्म दिया कि रातों-रात इस्राईल की औलाद को लेकर यहाँ से निकल जायें, और कहा कि फिरऔन तुम्हारे पीछे आयेगा, घबराना नहीं।

५३. फिरऔन ने नगरों में जमा करने वालों को भेज दिया ।

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَائِنِ خَيْرِينَ ﴿٥٣﴾

५४. कि बेशक यह गुट बहुत ही कम तादाद में है ।^१

إِنَّ هَذِهِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيلُونَ ﴿٥٤﴾

५५. और उस पर ये हमें बहुत क्रोधित (गजबनाक) कर रहे हैं ।

وَأَلَّهُمْ لَنَا لَعْنًا ظَنُّونَ ﴿٥٥﴾

५६. और बेशक हम बड़ी तादाद में हैं, उन से सावधान (चौकन्ना) रहने वाले ।

وَأِنَّا لَنَجِيعٌ خَذِرُونَ ﴿٥٦﴾

५७. आखिरकार हम ने उन्हें बागों और चश्मों से निकाल बाहर किया ।

فَأَخْرَجْنَاهُمْ مِنْ جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ﴿٥٧﴾

५८. और खजानों से और अच्छे-अच्छे जगहों से ।

وَأَنْزَلْنَا وَمَقَاهِرَ كَرِيمٍ ﴿٥٨﴾

५९. इसी तरह हुआ, और हम ने उन (सभी चीजों) का वारिस इस्राईल की औलाद को बना दिया ।

كَذَلِكَ وَأَوْرَثْنَاهَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾

६०. इसलिए फिरऔन के पैरोकार सूरज निकलते ही उन का पीछा करने निकल पड़े ।

فَاتَّبَعُوهُمْ فُشْرِقِينَ ﴿٦٠﴾

६१. इसलिए जब दोनों ने एक-दूसरे को देख लिया तो मूसा के साथियों ने कहा, हम तो बेशक पकड़ लिये गये ।

فَلَمَّا تَرَاءَ الْجَمْعَيْنِ قَالَ اضْحَبْ مَوْسَى

إِنَّا لَمَدْرُكُونَ ﴿٦١﴾

६२. (मूसा ने) कहा कभी नहीं । यकीन करो, मेरा रब मेरे साथ है जो ब्ररूर मुझे रास्ता दिखायेगा ।

قَالَ كَلَّا إِنَّ رَبِّي سَوَّيْتُنِي ﴿٦٢﴾

६३. हम ने मूसा की तरफ बहयी (प्रकाशना) भेजी कि समुद्र के पानी पर अपनी छड़ी मार, तो उसी वक्त समुद्र फट गया और हर एक हिस्सा पानी के बड़े पहाड़ के बराबर हो गया ।^२

فَوَحَيْنَا إِلَىٰ مَوْسَىٰ أَنْ اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْبَحْرَ

فَانفَلَقَ لِكُلِّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ﴿٦٣﴾

^१ यह बेइज्जत करने के लिए कहा, वना उनकी तादाद छः लाख बतायी जाती है ।

^२ فرق का मतलब है समुद्र का हिस्सा, طود का मतलब है पहाड़ । यानी पानी का हर एक हिस्सा

६४. और हम ने उसी जगह पर दूसरों को करीब ला खड़ा कर दिया।

وَأَرْفَعْنَا قَوْمَ الْأَخْيَرِينَ ﴿۶۴﴾

६५. और मूसा को और उसके सभी साथियों को मुक्ति प्रदान (नजात अता) कर दी।

وَأَنْجَيْنَا مُوسَىٰ وَمَنْ مَعَهُ أَجْمَعِينَ ﴿۶۵﴾

६६. फिर दूसरे सभी को डुबो दिया।

فَكَرِهْنَا الْأَخْيَرِينَ ﴿۶۶﴾

६७. बेशक इसमें बड़ी शिक्षा (नसीहत) है, और उन में के ज्यादातर लोग ईमान वाले नहीं।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ كَانَ الْقَلْبُ فَهْمًا ﴿۶۷﴾

६८. और बेशक आप का रब बड़ा प्रभावशाली (गालिब) और रहम करने वाला है।

وَأَنَّ رَبَّكَ لَهوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿۶۸﴾

६९. और उन्हें इब्राहीम का वाक़ेआ भी सुना दो।

وَأَنْتَ عَلَيْهِمْ نَبَأٌ إِبْرَاهِيمَ ﴿۶۹﴾

७०. जबकि उन्होंने अपने बाप और अपनी कौम से फ़रमाया कि तुम किस की इबादत करते हो।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَا تَعْبُدُونَ ﴿۷۰﴾

७१. उन्होंने जवाब दिया कि हम मूर्तियों की इबादत करते हैं, हम तो बराबर उन के पुजारी बने बैठे हैं।

قَالُوا تَعْبُدُونَ أَصْنَامًا تَقُولُ لَهَا عَاقِبَاتٌ ﴿۷۱﴾

७२. आप (ﷺ) ने फ़रमाया कि जब तुम उन्हें पुकारते हो तो क्या वह सुनते भी हैं?

قَالَ هَلْ يَسْمَعُونَكُم إِذْ تَدْعُونَ ﴿۷۲﴾

७३. या तुम्हें फ़ायेदा-नुक़सान भी पहुंचा सकते हैं।

أَوْ يَنْفَعُونَكُم أَوْ يَضُرُّونَ ﴿۷۳﴾

७४. उन्होंने कहा यह (हम कुछ नहीं जानते) हम ने तो अपने पूर्वजों (बुजुर्गों) को इस तरह करते पाया।

قَالُوا بَلْ وَجَدْنَا آبَاءَنَا كَذَلِكَ يَفْعَلُونَ ﴿۷۴﴾

बड़े पहाड़ के रूप में खड़ा हो गया। यह अल्लाह तआला की तरफ से मोजिजा का इजहार था ताकि मूसा और उनकी कौम फिरऔन से छूटकारा पा ले, अल्लाह के इस समर्थन (ताइद) के बिना फिरऔन से छूटकारा मुमकिन नहीं था।

७५. (आप ने) कहा कुछ जानते भी हो, जिन्हें तुम पूज रहे हो।

७६. तुम और तुम्हारे अगले बाप-दादा,

७७. वे सभी मेरे दुश्मन हैं सिवाय सच्चे अल्लाह (तआला) के जो सारे जहाँ का पालनहार है।

७८. जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मेरी हिदायत करता है।

७९. वही है जो मुझे खिलाता-पिलाता है।

८०. तथा जब मैं रोगी हो जाऊँ तो मुझे निरोग (शिफा अता) करता है।

८१. और वही मुझे मार डालेगा, फिर जिन्दा कर देगा।

८२. और जिस से उम्मीद बन्धी हुई है कि वह बदला देने वाले दिन मेरे गुनाह को माफ कर देगा।

८३. हे मेरे रब ! मुझे समझ अता कर^१ और मुझे पाक लोगों में मिला दे।

८४. और मेरी पाक याद आने वाले लोगों में भी बाक्री रख।

८५. और मुझे सुखों वाली जन्नत के वारिसों में से बना दे।

८६. और मेरे पिता को माफ कर दे, वेशक वह भटकने वालों में से था।^२

قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿٧٥﴾

أَنْتُمْ وَأَبَاؤُكُمْ الْأَقْدَامُونَ ﴿٧٦﴾

فَأَلْهَمَهُمُ عَدُوِّيَ الْإِلَهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٧﴾

الَّذِي خَلَقَنِي فَهُوَ يَهْدِينِي ﴿٧٨﴾

وَالَّذِي هُوَ يُطْعِمُنِي وَيَسْقِينِي ﴿٧٩﴾

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِينِي ﴿٨٠﴾

وَالَّذِي يُمِيتُنِي ثُمَّ يُحْيِينِي ﴿٨١﴾

وَإِلَىٰ أَطْرَافِ أَنْ تَغْفِرَ لِي خَطِيئَتِي يَوْمَ الدِّينِ ﴿٨٢﴾

رَبِّ هَبْ لِي حُكْمًا وَالْحَقِّقْ بِالضَّالِّينَ ﴿٨٣﴾

وَاجْعَلْ لِي لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْآخِرِينَ ﴿٨٤﴾

وَاجْعَلْ لِي مِنْ رَحْمَتِكَ أَكْوَابًا ﴿٨٥﴾

وَاطْفِرْ لِأَبِي إِنَّهُ كَانَ مِنَ الضَّالِّينَ ﴿٨٦﴾

^१ हुक्म और हिक्मत से मुराद इल्म और समझ या नबूअत और रिसालत या अल्लाह के हुक्म और विधान (शरीअत) की जानकारी है।

^२ यह हुआ उस समय की थी, जब उनको मालूम नहीं था कि मुशरिक (अल्लाह का दुश्मन) के लिए मगफिरत की दुआ करना हराम है, जब अल्लाह तआला ने यह साफ कर दिया तो उन्होंने अपने पिता से भी अलगाव का इजहार कर दिया। (सूर: अल-तौबा-११५)

८७. और जिस दिन कि लोग दोबारा जिन्दा किये जायें मुझे अपमानित (जलील) न कर ।

وَلَا تُعْرَبُنِي يَوْمَ يُبْعَثُونَ ﴿۸۷﴾

८८. जिस दिन कि माल और औलाद कुछ काम न आयेगा ।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَلَا بَنُونَ ﴿۸۸﴾

८९. लेकिन (फायदेमंद वही होगा) जो अल्लाह तआला के सामने निर्दोष (बेऐब) दिल लेकर जाये।

إِلَّا مَنْ آتَى اللَّهَ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ﴿۸۹﴾

९०. और परहेजगारों (सदाचारियों) के लिए जन्नत बहुत करीब ला दी जायेगी ।

وَأَزَلَّتِ الْجَنَّةُ لِلتَّوَّابِينَ ﴿۹۰﴾

९१. और भटके हुए लोगों के लिए नरक (जहन्नम) जाहिर कर दिया जायेगा ।

وَبُورَّتِ الْجَهَنَّمُ لِلْفَاجِرِينَ ﴿۹۱﴾

९२. और उन से पूछा जायेगा कि तुम जिन की इबादत करते रहे वह कहाँ है ।

وَقِيلَ لَهُمْ إِنَّمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ ﴿۹۲﴾

९३. जो अल्लाह (तआला) के सिवाय थे, क्या वह तुम्हारी मदद करते हैं? या कोई बदला ले सकते हैं ।

مِنْ دُونِ اللَّهِ هَلْ يَنْصُرُونَكُمْ أَوْ يَنْصُرُونَ ﴿۹۳﴾

९४. इसलिए वह सभी और कुल भटके हुए लोग नरक में ऊपर-नीचे डाल दिये जायेंगे ।

فَلْيَكْفُرُوا فِيهَا هُمْ وَالْكَافِرُونَ ﴿۹۴﴾

९५. और इब्लीस की सभी की सभी सेना भी ।

وَجُودُودٌ إِبْلِيسَ اجْمَعُونَ ﴿۹۵﴾

९६. वहाँ वे आपस में लड़ते-झगड़ते हुए कहेंगे।

قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ﴿۹۶﴾

९७. अल्लाह की कसम! बेशक हम तो खुली गलती पर थे ।

تَأْتُونَ كُنَّا لِنُبَيِّنَ لَكُمْ قُرْبَانَ ﴿۹۷﴾

९८. जबकि तुम्हें सारी दुनिया के रब के बराबर समझ बैठे थे ।

إِذْ نَسَوْنَكُمْ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿۹۸﴾

' साफ दिल या निर्दोष (बेऐब) दिल से मुराद वह दिल जो शिक से पाक हो, यानी ईमानवाला दिल, इसलिए कि काफिर और मुशरिक का दिल रोगी होता है। कुछ कहते हैं : बिदअत से खाली और सुन्नत से मुतमईन दिल, कुछ के करीब खवाहिशात से पाक दिल और कुछ के करीब बेवकूफी के अधरे और नैतिक पतन (अखलाकी गिरावट) से साफ दिल, यह सभी मतलब ठीक हो सकते हैं, क्योंकि ईमानवाले का दिल ऊपर वयान किए सभी बुराईयों से पाक होता है।

१९. और हमें तो सिबाय मुजरिमों के किसी दूसरे ने गुमराह नहीं किया था।

وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ﴿٩٩﴾

१००. अब तो हमारी कोई सिफारिश करने वाला भी नहीं।

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ﴿١००﴾

१०१. और न कोई (सच्चा) खैरखाह दोस्त।

وَلَا صِدِّيقٍ حَسْبِهِ ﴿١०१﴾

१०२. अगर हमें एक बार दोबारा जाने को मिलता तो हम पक्के सच्चे ईमान वाले बन जाते।

فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةٌ فَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١०२﴾

१०३. यह बात बेशक एक बहुत बड़ी निशानी है, उन में के ज्यादातर लोग ईमान लाने वाले नहीं।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿١०३﴾

१०४. और बेशक आप का रब ही प्रभावशाली (गालिव) रहम करने वाला है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١०४﴾

१०५. नूह की क्रीम ने भी नवियों को झुठलाया^१

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١०५﴾

१०६. जबकि उन के भाई नूह ने कहा कि क्या तुम्हें अल्लाह का डर नहीं?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١०६﴾

१०७. (सुनो) मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का अमानतदार रसूल हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١०७﴾

१०८. इसलिए तुम्हें अल्लाह से डरना चाहिए और मेरी बात माननी चाहिए।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿١०८﴾

^१ गुनाहगार मुसलमानों की सिफारिश तो अल्लाह की इजाजत के बाद अबिया, नेक लोग खास तौर से नबी करीम ﷺ करेंगे, लेकिन काफिर और मुशरिक की सिफारिश करने की इजाजत किसी को भी न होगी और न वहाँ दोस्ती ही काम आवेगी।

^२ नूह की क्रीम ने अगरबने केवल अपने पैगम्बर हजरत नूह को झुठलाया था, लेकिन चूँकि एक नबी को झुठलाना सभी नवियों को झुठलाने के बराबर है, इसलिए फरमाया कि नूह की क्रीम ने पैगम्बरों को झुठलाया।

१०९. और मैं तुम से उस पर कोई बदला नहीं चाहता, मेरा बदला तो केवल सारी दुनिया के रब के पास है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجِرْتُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾

११०. इसलिए तुम अल्लाह का डर रखो और मेरी इताअत करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿١١٠﴾

१११. (कौम ने) जवाब दिया कि क्या हम तुम पर ईमान लायें? तेरी इताअत करने वाले तो नीच लोग हैं।

قَالُوا أَنْتُمْ مِنْ لَكُمْ وَاشْبَعَكَ الْأَرْضُونَ ﴿١١١﴾

११२. आप ने फरमाया, मुझे क्या पता कि वह पहले क्या करते रहे?

قَالَ وَمَا عَلِمْتُ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾

११३. उन का हिसाब तो मेरे रब के ऊपर है अगर तुम्हें समझ हो तो।

إِنْ حَسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾

११४. और मैं ईमानदारों को धक्के देने वाला नहीं।

وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾

११५. मैं तो बाजेह तौर से डरा देने वाला हूँ।

إِن أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿١١٥﴾

११६. उन्होंने कहा कि हे नूह! अगर तू न रूका तो जरूर तुझे पत्थरों से मारकर मार दिया जायेगा।

قَالُوا لَيْنَ لَمْ تَنْتَهَ يَنُوحَ لَتَكُونَنَّ مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾

११७. (आप ने) कहा हे मेरे रब! मेरी कौम ने मुझे झुठला दिया।

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ﴿١١٧﴾

११८. इसलिए तू मुझ में और उन में कोई निश्चित (कतई) फैसला कर दे और मुझे और मेरे ईमानवाले साथियों को नजात अता कर दे।

فَأَفْحَمْ يَتِي وَبَيْنَهُمْ فِتْنًا وَنَجِيًّا وَمَنْ مَعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٨﴾

११९. इसलिए हम ने उसे और उस के साथियों को भरी हुई नाव में (सवार कर के) नजात अता की।

فَأَنْجَيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلِّ السَّعْيُونَ ﴿١١٩﴾

१२०. फिर उस के बाद बाकी सभी लोगों को हम ने डुवो दिया।

ثُمَّ أَخْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ﴿١٢٠﴾

१२१. वेशक इस में बहुत बड़ी नसीहत (शिक्षा) है, और उन में के ज्यादातर लोग ईमान लाने वाले थे भी नहीं।

१२२. और वेशक आप का रब वही है बहुत रहम करने वाला।

१२३. 'आद' (क्रौम) ने भी रसूलों को झुठलाया।

१२४. जब कि उन से उन के भाई हूद^२ ने कहा कि क्या तुम डरते नहीं?

१२५. मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर (सदेश-वाहक) हूँ।

१२६. इसलिए अल्लाह से डरो और मेरा कहना मानो।

१२७. और मैं उस पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता, मेरी मजदूरी सारी दुनिया के रब के पास ही है।

१२८. क्या तुम एक-एक टीले पर खेल (क्रीडा) के रूप तमाचे का निशान (चिन्ह) बना रहे हो।

१२९. और बड़े उद्योग (सन्धत) वाले (मजबूत महल निर्माण) कर रहे हो, जैसाकि तुम हमेशा यही रहोगे।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿١٢١﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٢٢﴾

كَذَّبَتْ عَادُ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٢٣﴾

إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٢٤﴾

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٢٥﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿١٢٦﴾

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِن أَجْرِي إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٢٧﴾

أَتَمْنُونَ بِكُلِّ رِيحٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ﴿١٢٨﴾

وَتَصْعَدُونَ مِصَابِعَكُمْ تَحْلِدُونَ ﴿١٢٩﴾

१ 'आद' उन के पर दादा का नाम था, जिन के नाम पर उन की क्रौम का नाम पड़ा, यहाँ आद को कबीला मानकर कَذَّبَتْ (स्त्रीलिंग रूप) लाया गया है।

२ हूद को भी आद का भाई इसलिए कहा गया है कि हर नबी उस क्रौम का इंसान होता था और उसी बिना पर उन्हें उस क्रौम का भाई कहा गया है, जैसाकि आगे भी आयेगा और नवियों और रसूलों का यह इंसानी शकल भी उन के ईमान लाने में रुकावट रही है। उनका ख्याल था कि नबी इंसान नहीं, इंसान से ऊँचा होना चाहिए। आज भी इस पूरे सच से अज्ञान लोग इस्लाम के पैगम्बर नबी करीम ﷺ को इंसान से ऊँचा साबित करने पर तुले हैं, अगरचे वह भी कुरैश कबीले के एक इंसान थे, जिनकी तरफ पहली बार उनको पैगम्बर बनाकर भेजा गया था।

१३०. और जब किसी पर हाथ डालते हो तो कड़ाई और सख्ती से पकड़ते हों।

وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ﴿۱۳۰﴾

१३१. तो अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا عَمْرًا ﴿۱۳۱﴾

१३२. और उस से डरो जिस ने उन चीजों से तुम्हारी मदद की जिन्हें तुम जानते हो।

وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُونَ ﴿۱۳۲﴾

१३३. उस ने तुम्हारी मदद की माल और औलाद (सन्तान) से।

أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامِهِ وَبَنِينَ ﴿۱۳۳﴾

१३४. और बागों से और चरमों से।

وَجَنَّتِ وَعَيْبُونَ ﴿۱۳۴﴾

१३५. मुझे तो तुम्हारे ऊपर बड़े दिन के अजायब का डर है।

إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿۱۳۵﴾

१३६. (उन्होंने) कहा कि आप नसीहत करें या नसीहत करने वालों में न हों हम पर वराबर है।

قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِنَ الْوَاعِظِينَ ﴿۱۳۶﴾

१३७. यह तो पुराने जमाने के लोगों का दीन है।

إِنَّ هَذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ﴿۱۳۷﴾

१३८. और हम कभी अजाब पाने वाले न होंगे।

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ﴿۱۳۸﴾

१३९. चूँकि 'आद' की कौम ने (हजरत) हूद को झुठलाया, इसलिए हम ने उन्हें हलाक कर दिया, बेशक उस में निशानी है, और उन में के ज्यादातर ईमान वाले न थे।

فَلَمَّا كَذَّبُوهُ فَاهْتَدَى لَهُمْ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ﴿۱۳۹﴾

१४०. और बेशक आप का रब वही गालिब रहम करने वाला है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿۱۴۰﴾

१४१. 'समूद' के समुदाय वालों ने भी पैगम्बर को झुठलाया।

كَذَّبَتْ سَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ﴿۱۴۱﴾

१ समूद का निवास स्थान 'हिजर' का इलाका था जो हिजाज की उत्तर दिशा में है, आजकल उसे 'अदायन स्वालेह' कहते हैं। (ऐसरूत्तफासीर) यह अरब थे। नबी ﷺ तयूक जाते वक़्त उन वस्तियों के बीच से गये थे, जैसाकि पहले वयान हो चुका है।

१४२. जब उन के भाई 'स्वालेह' ने उन से कहा कि क्या तुम अल्लाह से नहीं डरते?

إِذْ قَالَ لَهُمُ أَخُوهُمْ ضَلِجٌ أَلَا تَتَّقُونَ (142)

१४३. मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का अमानतदार पैगम्बर हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ (143)

१४४. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ (144)

१४५. और मैं उस पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता, मेरी उजरत तो सारी दुनिया के रव के ऊपर ही है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنِ اجْتَرَىٰ وَإِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ (145)

१४६. क्या उन चीजों में जो यहाँ है तुम शान्ति के साथ छोड़ दिये जाओगे?

أَتَذَرُونَ فِي مَا هُمْنَا أُمِينِينَ (146)

१४७. (यानी) उन बागों और उन चरमों में।

فِي جَنَّتٍ وَعَيْوِينَ (147)

१४८. और उन खेतों और उन खजूरों के बागों में जिन के गुच्छे (बोझ की बजह) टूटे पड़ते हैं।

وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلَعًا هَٰضِمِينَ (148)

१४९. और तुम पहाड़ों को काट-काट कर आकर्षक (सुन्दर) भवनों का निर्माण (तामीर) कर रहे हो।

وَتَنْجُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَرِهِينَ (149)

१५०. इसलिए अल्लाह से डरो और मेरी इत्तेबा करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونَ (150)

१५१. और सीमा उल्लंघन (तजाकुज) करने वालों के अनुकरण (पैरवी) से रूक जाओ।

وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ السُّرُوفِينَ (151)

१५२. जो धरती में फसाद फैला रहे हैं और सुधार नहीं करते।

الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ (152)

१५३. (वे) बोले कि तू तो बस उन में से है जिन पर जादू कर दिया गया है।

قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمَسْحُورِينَ (153)

१५४. तू तो हम जैसा ही इंसान है, अगर तू सच्चों में से है तो कोई मोजिजा ले आ।

१५५. (आप ने) कहा यह है ऊँटनी, पानी पीने की एक बारी इसकी और एक मुकर्रर दिन को पानी पीने की बारी तुम्हारी।

१५६. (और खबरदार!) इसे बुराई से हाथ न लगाना, वरन् एक बड़े दिन का अजाब तुम्हें पकड़ लेगा।

१५७. फिर भी उन्होंने उस के हाथ-पैर काट डाले, फिर वह पछताने वाले हो गये।

१५८. तो अजाब ने उन्हें आदवोचा^१ वेशक इस में शिक्षा (नसीहत) है, और उनमें से ज्यादातर लोग ईमानवाले न थे।

१५९. और वेशक आप का रब बहुत गालिब (शक्तिशाली) और रहम करने वाला है।

१६०. लूत की क्रौम^२ ने भी नवियों को झुठलाया।

१६१. जब उन से उन के भाई लूत ने कहा कि तुम अल्लाह से डर नहीं रखते?

مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ

إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾

قَالَ هٰذِهِ نَاقَةٌ لِّهَا شَرْبٌ وَّلَكُمْ

شَرْبٌ يَوْمَ مَقْتُلِهَا ﴿١٥٥﴾

وَلَا تَسْهَوْهَا يَسْؤُا فَيَأْخُذْكُمْ عَذَابٌ

يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾

فَعَقَرُوْهَا فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَآيَةً لِّمَنْ

عَلَّمَهُمْ الْعَذَابَ ۗ إِن فِيْ ذٰلِكَ لَآيَةٌ لِّمَنْ

وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٥٩﴾

كَذٰبَتْ قَوْمٌ لُّوطٌ بِالرُّسُلِيْنَ ﴿١٦٠﴾

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطُ أَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٦١﴾

^१ यह वही ऊँटनी थी, जो उनकी भांग पर पत्थर की घट्टान से मोजिजे की शकल में निकली थी, एक दिन ऊँटनी के लिए और एक दिन उन के लिए पानी मुकर्रर कर दिया गया था, और उन से कह दिया गया था कि जो दिन तुम्हारा पानी लेने का होगा उस दिन ऊँटनी घाट पर नहीं आयेगी और जो दिन ऊँटनी के पानी पीने का होगा, तुम्हें घाट पर आने की इजाजत नहीं है।

^२ यह अजाब धरती से भूकम्प (जलजला) और ऊपर से बहुत तेज चिघाड़ के रूप में आया, जिस से सब मर गये।

^३ हजरत लूत, हजरत इब्राहीम के भाई हारान बिन आजर के पुत्र थे, उनको हजरत इब्राहीम की जिन्दगी में ही नष्ट बना कर भेजा गया था, उनकी क्रौम 'सदूम' और 'अमूरा' में निवास करती थी, यह बस्तियाँ सीरिया के इलाके में थी।

१६२. मैं तुम्हारी तरफ अमानतदार रसूल हूँ।

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٦٢﴾

१६३. इसलिए तुम अल्लाह (तआला) से डरो और मेरी इत्तेबा करो।

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا عَمْرًا ﴿١٦٣﴾

१६४. और मैं तुम से उस का कोई बदला नहीं मांगता, मेरा बदला तो केवल सारी दुनिया के रब पर है।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجِرْتَنِي إِلَّا عَلَ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٤﴾

१६५. क्या तुम दुनिया वालों में से मर्दों के पास जाया करते हो।

أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿١٦٥﴾

१६६. और तुम्हारी जिन औरतों को अल्लाह (तआला) ने तुम्हारी बीबी बनाया है, उन को छोड़ देते हो, बात यह है कि तुम हो ही सीमा लाघने वाले।

وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ﴿١٦٦﴾

१६७. (उन्होंने) जवाब दिया कि हे लूत! अगर तू न रुका तो अवश्य निकाल दिया जायेगा।

قَالُوا لَيْنَ لَمْ تَنْتَهَ يَلُوطُ لَكَوْنَنَّ مِنَ الْمُرْجِيئِينَ ﴿١٦٧﴾

१६८. (आप ने) कहा कि मैं तुम्हारे अमल से बहुत नाखुब हूँ।

قَالَ إِنِّي لِعِبَائِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ﴿١٦٨﴾

१६९. मेरे रब! मुझे और मेरे परिवार को इस (दुष्कर्म) से बचा ले, जो यह करते हैं।

رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٦٩﴾

१७०. इसलिए हम ने उसे और उस के सम्बन्धियों को सभी को बचा लिया।

فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿١٧٠﴾

१७१. सिवाय एक बुढ़िया के कि वह पीछे रह जाने वालों में हो गयी।

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿١٧١﴾

१७२. फिर हम ने (बाकी) दूसरे सभी को नाश कर दिया।

كُلًّا دَمَرْنَا الْأُخْرِينَ ﴿١٧٢﴾

१ यानी हजरत लूत की दावत और नसीहत के जवाब में उन्होंने कहा तू बड़ा पाक बना फिरता है, याद रख! अगर तू अपने इस काम से नहीं रुका तो हम तुझे बस्ती में नहीं रहने देंगे, आज भी कुकर्मियों का इतना असर है कि नेक लोग मुंह छिपाये फिरते हैं और नेक लोगों के लिए जिन्दगी गुजारना मुश्किल बना दिया गया है।

१७३. और हम ने उन के ऊपर एक खास तरह की वारिश की, वह बड़ी बुरी वारिश थी जो डराये गये लोगों पर बरसी।

१७४. बेशक इस में भी बड़ी निशानी है, उन में से भी ज्यादातर मुसलमान नहीं थे।

१७५. बेशक तेरा रब वही है गालिव रहम करने वाला।

१७६. एयका वालों ने भी रसूलों को झुठलाया।

१७७. जबकि उन से श्ऐब ने कहा कि क्या तुम्हें (अल्लाह का) डर और भय नहीं?

१७८. मैं तुम्हारी तरफ अमानतदार रसूल हूँ।

१७९. तो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो।

१८०. और मैं उस पर तुम से कोई उजरत नहीं मांगता, मेरा बदला सारी दुनिया के रब पर है।

१८१. नाप-तौल पूरा करो और कम देने वालों में शामिल न हो।

१८२. और सीधे (सही) तराजू से तौला करो।

१८३. और लोगों को उनकी चीजें कमी से न दो, और (निर्भय होकर) धरती पर फसाद मचाते न फिरो।

१८४. और उस (अल्लाह) का डर रखो जिस ने खुद तुम्हें और पहले की मख्लूक को पैदा किया।

१८५. (उन्होंने) कहा तू तो उन में से है जिन पर जादू कर दिया जाता है।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا نَسَاءً مَطَرًا لِّلنَّكَارِيْنَ ۝۱۷۳

إِن فِي ذَٰلِكَ لَآيَةٌ لِّمَن كَانَ أَكْثَرُهُمْ

مُؤْمِنِينَ ۝۱۷۴

وَإِن رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝۱۷۵

كَذَّبَ أَصْحَابُ آلِكَوْتَةَ الْمُرْسَلِينَ ۝۱۷۶

إِذْ قَالُوا لَهُمْ شُعَيْبٌ لَا تَقْتُلُونَ ۝۱۷۷

إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝۱۷۸

فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا عَمْرَانَ ۝۱۷۹

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِي

إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝۱۸۰

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝۱۸۱

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ السُّبْقِيِّ ۝۱۸۲

وَلَا تَتَّبِعُوا النَّاسَ أَنفِيَاءَ فَهُمْ لَا يَتَّقُوا فِي الْأَرْضِ

مُقْسِيُونَ ۝۱۸۳

وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبَالَ الْأُولَىٰ ۝۱۸۴

قَالُوا إِنَّمَا آتَتْ مِنَ السَّحَابِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ

وَأَنزَلْنَا سَحَابًا مِّنَ السَّمَاءِ ۝۱۸۵

१८६. और तू तो हम ही जैसा एक इंसान है और हम तो तुझे झूठ बोलने वालों में से ही समझते हैं।

وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِنْ نَطَّقَكَ لَيَسَّ
الْمُكذِبِينَ ﴿۱۸۶﴾

१८७. अगर तुम सचचे लोगों में से हो तो हम पर आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दो।

فَأَسْوَطَ عَلَيْنَا كَيْفًا مِنْ السَّمَاءِ وَإِنْ كُنْتَ
مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿۱۸۷﴾

१८८. (उन्होंने) कहा कि मेरा रब अच्छी तरह से जानने वाला है जो कुछ तुम कर रहे हो।

قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿۱۸۸﴾

१८९. इसलिए उन्होंने उसे झुठलाया तो उन्हें छाया वाले दिन के अजाब ने पकड़ लिया, वह बड़े भारी दिन का अजाब था।

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلُمَةِ
إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ﴿۱۸۹﴾

१९०. बेशक उस में बड़ी निशानी है और उन में के ज्यादातर मुसलमान नहीं थे।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّأُولِي الْأَلْبَابِ
مُؤْمِنِينَ ﴿۱۹۰﴾

१९१. और बेशक तेरा रब वही गालिब दया वाला है।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿۱۹۱﴾

१९२. और बेशक यह (कुरआन) पूरी दुनिया के रब का नाजिल किया हुआ है।

وَالَّذِي نُنزِّلُ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿۱۹۲﴾

१९३. इसे अमानतदार फरिश्ता लेकर आया है।

نَزَّلَ بِهِ الرُّوحَ الْأَمِينُ ﴿۱۹۳﴾

१९४. आप के दिल पर (नाजिल हुआ है) कि आप सतर्क (आगाह) कर देने वालों में से हो जायें।

عَلَى قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنذِرِينَ ﴿۱۹۴﴾

१९५. साफ अरबी भाषा में है।

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُبِينٍ ﴿۱۹۵﴾

१९६. और अगले नबियों की किताबों में भी इस (कुरआन) की चर्चा है।

وَالَّذِي كَفَى زُجُرَ الْأَوَّلِينَ ﴿۱۹۶﴾

यानी जिस तरह दुनिया के आखिरी पैगम्बर (रसूलुल्लाह ﷺ) के आने और आप ﷺ की सिफात का बयान दूसरी किताबों में है, उसी तरह इस कुरआन के नाजिल होने की खुशखबरी उन किताबों में दी गयी थी। एक दूसरा मायेना यह लिया गया है कि यह कुरआन मजीद उन हब्सों के अनुसार जिन पर सभी शरीअतों में एकता रही है, पिछली किताबों में भी मौजूद रहा है।

१९७. क्या उन्हें यह निश्चानी काफी नहीं कि (कुरआन की सच्चाई को) तो इस्राईल की औलाद के विद्वान (आलिम) भी जानते हैं।

१९८. और अगर हम इसे किसी (अरबी भाषी के सिवाय) किसी अजमी पर नाज़िल करते।

१९९. तो वह उन के सामने उस का पाठ करता तो यह उसे नहीं मानते।

२००. इसी तरह हम ने पापियों के दिलों में (इंकार) को दाखिल कर दिया है।

२०१. वे जब तक दुखदायी अजाब को देख न लेंगे ईमान न लायेंगे।

२०२. इसलिए वह (अजाब) अचानक आ जायेगा और उन्हें उसका अंदाज़ा भी न होगा।

२०३. उस समय कहेंगे कि क्या हमें कुछ मौका दिया जायेगा?

२०४. तो क्या ये हमारे अजाब की जल्दी मचा रहे हैं?

२०५. अच्छा यह भी बताओ, कि अगर हम ने उन्हें सालों फायदा उठाने दिया।

२०६. फिर उन्हें वह (अजाब) आ लगा जिस से उन्हें डराया जाता था।

२०७. तो जो कुछ भी यह फायदे दिये जाते रहे उस में से कुछ भी उन्हें काम न दे सकेगा।

२०८. और हम ने किसी बस्ती को हलाक नहीं किया है, लेकिन उसी हालत में कि उस के लिए डराने वाले थे।

أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةٌ أَنْ يَأْتِيَهِمُ عَلَيْهَا
بِقَوْلِ إِسْرَائِيلَ ﴿١٩٧﴾

وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ﴿١٩٨﴾

فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ﴿١٩٩﴾

كَذَلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٠٠﴾

لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ
الْأَلِيمَ ﴿٢٠١﴾

فَيَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٠٢﴾

فَيَقُولُوا هَلْ نَحْنُ مُنظَرُونَ ﴿٢٠٣﴾

أَفَيْهِدَا إِنَّا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٢٠٤﴾

أَكْرَهَيْتَ أَنْ مَتَّعْنَاهُمْ سِنِينَ ﴿٢٠٥﴾

ثُمَّ جَاءَهُمْ مَا كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿٢٠٦﴾

مَا أَطْفَأُوا عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَسْعَوْنَ ﴿٢٠٧﴾

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُونَ ﴿٢٠٨﴾

२०९. शिक्षा (नसीहत) के रूप में, और हम जुल्म करने वाले नहीं हैं।

وَذَكَّرَىٰ شَوْمًا كُنَّا ظَالِمِينَ ﴿۲۰۹﴾

२१०. और इस (कुरआन) को शैतान नहीं लाये।

وَمَا تَزَكَّىٰ بِهِ الشَّيْطَانُ ﴿۲۱۰﴾

२११. और न वह इस लायक है, न उन्हें इस की ताकत है।

وَمَا يَنْبَغِي لَهُمْ وَمَا يَسْطِيعُونَ ﴿۲۱۱﴾

२१२. बल्कि वे तो सुनने से भी महरूम (बंचित) कर दिये गये हैं।

إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْرُوُونَ ﴿۲۱۲﴾

२१३. इसलिए तू अल्लाह के साथ किसी दूसरे देवता को न पुकार कि तू भी सजा पाने वालों में से हो जाये।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَتَكُونَ مِنَ الْمُعَذَّبِينَ ﴿۲۱۳﴾

२१४. और अपने करीबी रिश्तेदारों को डरा दे।

وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ ﴿۲۱۴﴾

२१५. और उस के साथ नरमी से पेश आ, जो भी ईमान लाने वाला होकर तेरे आधीन (ताबे) जो जाये।

وَاحْفَظْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿۲۱۵﴾

२१६. अगर ये लोग तेरी नाफरमानी करें तो तू एलान कर दे कि मैं इन कामों से अलग हूँ जो तुम कर रहे हो।

فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّي بَرَاءٌ مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿۲۱۶﴾

२१७. और अपना पूरा भरोसा मालिब रहीम अल्लाह पर रख।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿۲۱۷﴾

२१८. जो तुझे देखता रहता है, जबकि तू छड़ा होता है।

إِنَّهُ يَرَىٰ رَبَّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿۲۱۸﴾

२१९. और सज्दा (नमन) करने वालों के बीच तेरा धूमना-फिरना भी।

وَتَعَلَّكَ فِي الشَّجَرِ ﴿۲۱۹﴾

यानी रसूल के भेजे और सावधान (खबरदार) किये बिना अगर हम किसी बस्ती को हलाक करते तो यह जुल्म होता, हम ने ऐसा जुल्म नहीं किया, बल्कि इसाफ के नियमानुसार (मुताबिक) पहले उन्हें डराया और उस के बाद जब उन्होंने पैगम्बर की बात नहीं मानी, तो हम ने उन्हें नाश कर दिया। यही विषय सूर: बनी इघाईल-१८ और सूर: अल-कसस-५९ बगैरह में भी बयान किया गया है।

२२०. बेशक वह बड़ा सुनने वाला और बड़ा जानने वाला है।

إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (220)

२२१. क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं।

هَلْ أَنْتُمْ عَلَىٰ مَنْ تَنْزَلُ الشَّيْطَانُ (221)

२२२. वह हर झूठे पापी पर उतरते हैं।

تَنْزَلُ عَلَىٰ كُلِّ آثِمٍ آثِمٍ (222)

२२३. वे (उचटती हुई) सुनी सुनाई पहुँचा देते हैं और उन में के ज्यादातर झूठे हैं।

يُلْقُونَ السَّمْعَ وَأَكْتَرَهُمْ كَذِبُونَ (223)

२२४. और कवियों (शायरों) की पैरवी वही करते हैं जो बहके हुए हों।

وَالشُّعْرَاءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُونَ (224)

२२५. क्या आप ने नहीं देखा कि कवि (शायर) एक-एक वादी में सिर टकराते फिरते हैं।

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِي كُلِّ وَادٍ يَهِيمُونَ (225)

२२६. और वह कहते हैं जो करते नहीं।

وَأَنَّهُمْ يَقُولُونَ مَا لَا يَفْعَلُونَ (226)

२२७. सिवाय उन के जो ईमान लाये और नेकी के काम किये और ज्यादा तादाद में अल्लाह तआला की प्रशंसा (तारीफ) का बयान किया और अपनी मजलूमी के बाद इन्तिक्राम लिया, और जिन्होंने जुल्म किया है वह भी अभी जान लेंगे कि किस करवट उलटते हैं।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَذَكَرُوا اللَّهَ كَثِيرًا وَانْتَصَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا أَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ لَكُمْ آيَاتٌ أَنْ يَقُولُوا إِنَّا لَا نَحْمِلُ فِيهَا مَقْرَبَةً (227)

१ यानी इस कुरआन के नाज़िल होने में शैतान का कोई हाथ नहीं है, क्योंकि शैतान तो झूठे और पापियों (यानी काहिनों और नजूमियों वगैरह) पर उतरते हैं न कि नबियों और नेक काम करने वालों पर।

२ ज्यादातर कवि (शायर) ऐसे होते हैं जो प्रशंसा (तारीफ) और भत्सना (मुजम्मत) में नियम का पालन करने के बजाये मनमाने ख्यालों का प्रदर्शन (इजहार) करते हैं, इस के सिवाय उस में मुबालगा का इस्तेमाल करते हैं और कविता की कल्पना (तसव्वुर) में इधर-उधर भटकते हैं, इसलिए फरमाया कि इन के पीछे लगने वाले भी भटके हुए हैं।

३ इस से उन कवियों (शायरों) को असग कर दिया गया है, जिनकी कविता सच और सच्चाई पर आधारित (मबनी) है, और ऐसे लफ्जों से अलगाव किया है जिन से यह बाजेह हो जाता है कि ईमानदार, नेक और अल्लाह को ज्यादातर याद करने वाला कवि बेकार कविता (शायरी) जिस में झूठ और मुबालगा की मिलावट हो, कर ही नहीं सकता, यह उन ही लोगों का काम है जो ईमान की सिपत से खाली हो।

सूरतुन नमल-२७

सूर: नमल* मक्का में उतरी और इसकी तिरानवे आयतें और सात रूकुऊ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. ता० सीन०, ये आयतें हैं कुरआन की (यानी वाजेह) और रौशन किताब की।

२. हिदायत (मार्गदर्शक) और खुशखबरी ईमान वालों के लिए।

३. जो नमाज कायम (स्थापित) करते हैं, और जकात अदा करते हैं और आखिरत पर ईमान रखते हैं।

४. जो लोग कयामत पर ईमान नहीं लाते हमने उन के लिए उन के आमाल को मुजय्यन कर दिखाया है, इसलिए वे भटकते-फिरते हैं।

५. यही वह लोग हैं जिन के लिए बुरा अजाब है और आखिरत में भी वह बहुत नुकसान वाले हैं।

६. और वेशक आप को कुरआन सिखाया जा रहा है अल्लाह हिबमत वाले और जानने वाले की तरफ से।

७. (याद होगा) जबकि मूसा ने अपने परिवार वालों से कहा कि मैंने आग देखी है, मैं वहां से या तो कोई खबर लेकर या आग का कोई जलता हुआ अंगारा लेकर अभी तुम्हारे पास आ

سُورَةُ النَّامِلِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طس- تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَكِتَابٍ مُّبِينٍ ①

هُدًى وَبُشْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ②

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ③

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُونَ ④

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَهُمْ سُوءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمْ الْآخَسَرُونَ ⑤

وَإِنَّكَ لَتَلْقَى الْقُرْآنَ مِنْ لَدُنِّ حَكِيمٍ عَلَيْهِمْ سَلَامٌ ⑥

إِذْ قَالَ مُوسَى لِأَهْلِهِ إِنِّي آنَسْتُ نَارًا تَسِيرُ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهَا بِخَبَرٍ أَوْ بَأْسٍ لَكُمْ بَشَاهِبٍ فَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّكُمْ وَاصْبِرُوا ⑦

* नमल अरबी भाषा (जवान) में चीटी को कहते हैं। इस सूर: में चींटियों के बाक़ेआ का बयान है, जिस की वजह से इस को सूर: नमल कहते हैं।

जाऊंगा, ताकि तुम सेंक-ताप कर लो ।^१

८. जब वहाँ पहुँचे तो आवाज दी गयी कि मुबारक है वह जो उस आग में है और मुबारक है वह जो उस के आस-पास है, और पाक है अल्लाह जो सारी दुनिया का रब है ।^२

९. मूसा! (सुन) बात यह है कि मैं ही अल्लाह हूँ जबरदस्त और हिकमत वाला ।

१०. और तू अपनी छड़ी डाल दे, (मूसा ने) जब उसे हिलता-डुलता देखा, इस तरह कि जैसे साँप है, तो मुँह मोड़ कर पीठ फेरकर भागे और पलट कर भी न देखा, हे मूसा! डरो नहीं,^३ मेरे सामने पैगम्बर डरा नहीं करते ।

११. लेकिन जो लोग जुलम करें, फिर उस के बदले नेकी करें उस बुराई के पीछे, तो मैं भी माफ करने वाला रहम करने वाला हूँ ।

१२. और अपना हाथ अपनी जेब (गरिबान) में डाल वह सफेद (और रौशनी वाला) होकर निकलेगा बिना किसी रोग के । (तू) नौ निशानियाँ लेकर फिरौन और उस के पैरोकारों के पास (जा) वेशक वह फासिकों का गुट है ।

فَلَمَّا جَاءَهَا نُودِيَ أَنْ بُورِكَ مَنْ فِي النَّارِ
وَمَنْ حَوْلَهَا وَسُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨﴾

يُوسَى إِنَّهُ أَنَا اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾

وَأَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَأْ كَانَهَا جَاءًا
وَأَلَى مُدْبِرًا وَلَمْ يُعَقِّبْ يَئُوسَى لَا تَخَفْ
إِنِّي لَا يَخَافُ كَذِبِي الرَّسُلُونَ ﴿١٠﴾

إِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلْ حِسَابًا بَعْدَ سُوءٍ
فَأَنَّى عُفُوْرٌ رَّحِيمٌ ﴿١١﴾

وَأَدْخُلْ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضًا مِمَّنْ غَيْرِ
سُوءٍ سِوَى تِلْكَ آيَاتٍ إِلَى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهِ إِنَّهُمْ
كَانُوا قَوْمًا فَسُوقِينَ ﴿١٢﴾

^१ यह उस समय की घटना (वाक़ेआ) है जब आदरणीय (हज़रत) मूसा मदयन से अपनी पत्नी को साथ लेकर वापस लौट रहे थे, रात के अंधेरे में रास्ते का ज्ञान (इल्म) नहीं था और सर्दी से बचाव के लिए आग की ज़रूरत थी ।

^२ यहाँ अल्लाह की बड़ाई और पकीजगी का मतलब यह है कि इस आसमानी पुकार से यह न समझ लिया जाये कि इस आग या पेड़ों में अल्लाह ने प्रवेश किया हुआ है, जिस तरह बहुत से मूर्तिपूजक समझते हैं, यह सत्य प्रदर्शन (मुशाहिदा) की एक क्रिस्म है जिससे नबूत के शुरू में नवियों को आम तौर पर सुशोभित (सर्फराज़) किया जाता है, कभी फ़रिश्ते के ज़रिये और कभी खुद अल्लाह तआला अपनी तज़ल्ली और खुद बात से, जैसाकि मूसा के साथ घटित हुआ ।

^३ इस से मालूम हुआ कि पैगम्बर को छिपी बातों का इल्म नहीं होता, वरना मूसा अपने हाथ की लाठी से न डरते दूसरी बात यह कि पैगम्बर को भी प्राकृतिक (फ़ितरी) डर हो सकता है क्योंकि वह भी तो एक इंसान ही होते हैं ।

१३. इसलिए जब उन के पास आंखें खोल देने वाले हमारे मोजिजे पहुँचे तो वह कहने लगे कि यह तो साफ (निरा) जादू है।

१४. और उन्होंने इंकार कर दिया, अगरचे उन के दिल यकीन कर चुके थे केवल जुल्म और घमण्ड के कारण। अतः देख लीजिए उन फसादियों का अंजाम क्या कुछ हुआ।

१५. और हम ने बेशक दाऊद और सुलेमान को इल्म दे रखा था, और दोनों ने कहा, सब तारीफ उस अल्लाह के लिए है, जिस ने हमें अपने बहुत से ईमानवाले बंदों पर फजीलत अता की है।

१६. और दाऊद के वारिस सुलेमान हुए,^१ और कहने लगे हे लोगो! हमें पक्षियों की बोली सिखायी गयी है और हम सब कुछ में से दिये गये हैं। बेशक यह बड़ा खुला हुआ (अल्लाह का) उपकार (फज़ल) है।

१७. और सुलेमान के सामने उनकी सभी सेना जिन्नात और इंसान और पक्षी जमा किये गये? (हर एक किस्म को) अलग-अलग खड़ा कर दिया गया।

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ آيَاتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوا هَذَا
سِحْرٌ مُّبِينٌ ﴿١٣﴾

وَجَحَدُوا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَا أَنفُسُهُمْ ظُلْمًا
وَعُلُوًّا فَاظُنُّوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُفْسِدِينَ ﴿١٤﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ عِلْمًا ۖ وَقَالَ
الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي فَضَّلَنَا عَلَى كَثِيرٍ مِّنْ
عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٥﴾

وَوَرِثَ سُلَيْمَانُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ
عَلَّمْنَا مَنَاطِقَ الطَّيْرِ وَأَوْعَيْنَا مِمَّنْ كُلِّ شَيْءٍ
إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ﴿١٦﴾

وَحَشَرْنَاهُمْ جُنُودَهُ مِنَ الْجِنَّةِ وَالْإِنْسِ
وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ ﴿١٧﴾

^१ इस से मुराद नबूअत और मुल्क की विरासत है, जिस के वारिस केवल सुलेमान ही हुए, वरना हज़रत दाऊद के दूसरे पुत्र भी थे, जो इस विरासत से वंचित (महरूम) रहे, वैसे भी नबियों की विरासत इल्म में ही होती है, जो धन-सम्पत्ति वे छोड़ जाते हैं वह दान होता है, जैसाकि नबी ﷺ ने फ़रमाया। (अल-बुख़ारी, किताबुल फ़रायेज़ और मुस्लिम किताबुल जिहाद)

^२ इस में हज़रत सुलेमान की व्यक्तिगत विशेषता (जाती ख़ुसुसियत) और अहमियत का बयान है, जिस में वह पूरे मानव इतिहास में सब से बेहतर हैं, कि उनका राज्य (मुल्क) केवल इंसानों पर ही नहीं था, बल्कि जिन्नातों, जानवरों और पक्षियों यहाँ तक कि हवा को भी उन के तावे कर दिया गया था, इस में कहा गया है कि सुलेमान की पूरी सेना यानी जिन्नों, इंसानों और पक्षियों को जमा किया गया, यानी कही जाने के लिए यह सेना जमा की गयी।

१८. जब वे चींटियों के मैदान में पहुँचे तो एक चींटी ने कहा, हे चींटियो! अपने-अपने घरों में घुस जाओ, (ऐसा न हो कि) बेखबरी (असावधानी) की वजह से सुलेमान और उन की सेना तुम्हें रौद डाले।

حَتَّىٰ إِذَا آتَوُا عَلَىٰ وَادِ النَّبْلِ قَالَتْ نَسْلَةٌ
يَأْتِيهَا النَّبْلُ ادْخُلُوا مَسْكِنَكُمۡ لَا يَحْطَبُكُمْ
سُلَيْمَنُ وَجُنُودُهُ ۗ وَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿۱۸﴾

१९. उस की इस बात पर (हजरत सुलेमान) मुस्करा कर हँस दिये और दुआ करने लगे कि हे रब! तू मुझे तौफीक अता कर कि मैं तेरे इन नेमतों (उपकारों) का शुक्रिया अदा करूँ जो तूने मुझ पर नेमत की है, और मेरे माता-पिता पर और मैं ऐसे नेकी के काम करता रहूँ जिस से तू खुश रहे, और मुझे अपनी रहमत (कृपा) से अपने नेक बन्दों में शामिल कर ले।

فَتَسَمَّرَ صَاحِبًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِي
أَنْ أَشْكُرَ بِنِعْمَتِكَ الَّتِي أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ
وَالِدَيَّْ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأُدْخِلْنِي
بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّالِحِينَ ﴿۱۹﴾

२०. और आप ने पक्षियों का निरीक्षण (मुआयना) किया और कहने लगे यह क्या बात है कि मैं हुद हुद को नहीं देख रहा हूँ? क्या हकीकत में वह मौजूद नहीं है?

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَا أَرَى الْهُدُودَ
أَمْ كَانِ مِنَ الْغَائِبِينَ ﴿۲۰﴾

२१. बेशक मैं उसे कड़ी सजा दूँगा, या उसे जिन्ह कर डालूँगा या मेरे सामने कोई उचित (मुनासिब) वजह बतावे।

لَأَعَذِّبَنَّكَ عَذَابًا شَدِيدًا ۚ أَوْ لَا اذْبَحْتَهُ
أَوْ لِيَأْتِنَنِي بِسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ﴿۲۱﴾

२२. कुछ ज्यादा वक़्त नहीं बीता था कि (आकर) उस ने कहा मैं ऐसी चीज़ की खबर लाया हूँ कि तुझे उसकी खबर ही नहीं, मैं 'सवा' की एक सच्ची खबर तेरे पास लाया हूँ।

فَكَذَّبْتَ غَيْرَ بَعِيدٍ فَقَالَ أَحَطُّ بِمَا لَمْ تَحِطُ بِهِ
وَجِئْتُكَ مِنْ سَبِيلٍ مِّنْ بَيْنِ يَدَيْكَ ﴿۲۲﴾

२३. मैंने देखा कि उन की बादशाहत एक औरत कर रही है, जिसे हर तरह की चीज़ से कुछ न कुछ अता किया गया है और उसका सिंहासन

إِنِّي وَجَدْتُ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوتِيَتْ مِنْ
كُلِّ شَيْءٍ وَلَهَا عَرْشٌ عَظِيمٌ ﴿۲۳﴾

। सबा एक इंसान के नाम पर एक कौम का नाम भी था और एक नगर का भी, यहाँ नगर मुराद है। यह सनआ (यमन) से तीन दिन की यात्रा (सफर) की दूरी पर है और मआरिब यमन के नाम से मशहूर है। (फतहुल कदीर)

भी बड़ा अजीम (भव्य) है।

२४. मैंने उसे और उसकी कौम को अल्लाह को छोड़ कर सूरज को सज्दा करते हुए पाया, शैतान ने उनके काम उन्हें भले करके दिखाकर सच्चे रास्ते से रोक दिया है, इसलिए वे हिदायत पर नहीं आते।

२५. कि सिर्फ उसी अल्लाह को सज्दा करें जो आकाशों और धरती की छिपी चीजों को बाहर निकालता है, और जो कुछ तुम छिपा रखते हो और जाहिर करते हो वह सभी कुछ जानता है।

२६. (यानी) अल्लाह! उस के सिवाय कोई इबादत के लायक नहीं, वही विशाल (अजीम) अर्श कर रच है।

२७. (सुलेमान ने) कहा कि अब हम देखेंगे कि तूने सच कहा या तू झूठा है।

२८. मेरे इस खत को ले जाकर उन्हें दे दे, फिर उन के पास से हट आ और देख कि वे क्या जवाब देते हैं।

२९. वह कहने लगी हे प्रमुखो (सरदारो)! मेरी तरफ एक अहम खत डाला गया है।

३०. जो सुलेमान की तरफ से है, और जो रहम (दया) करने वाले बड़े मेहरवान अल्लाह के नाम से शुरू है।

३१. यह कि तुम मेरे सामने सरकशी मत करो और मुसलमान बनकर मेरे पास आ जाओ।

३२. उस ने कहा हे मेरे दरबारियो! तुम मेरी इस समस्या में मुझे भस्विरा दो, मैं किसी बात का आखिरी फैसला जब तक तुम्हारी मौजूदगी और राय न हो नहीं किया करती।

وَجَدُهَا وَكُوعًا يَسْجُدُونَ لِلشَّمْسِ مِن دُونِ اللَّهِ
وَرَبِّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَغْمَا لَهُمْ فُصَدَّ لَهُمْ
السَّبِيلُ فَهُمْ لَا يَهْتَدُونَ ﴿٢٤﴾

أَلَا يَسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي يُخْرِجُ الْغَبَّ فِي السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ﴿٢٥﴾

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿٢٦﴾

قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٢٧﴾

إِذْ هَبُّ بِكَلْبِيٍّ هَذَا فَاَلْقَاهُ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّى
عَنْهُمْ فَأَنْظَرُ مَا ذَا يَرْجِعُونَ ﴿٢٨﴾

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَى الْأُنْفُ إِلَى كِتَابِ كَرِيمٍ ﴿٢٩﴾

إِنَّهُ مِن سُلَيْمٍ وَإِنَّهُ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ
الرَّحِيمِ ﴿٣٠﴾

أَلَا تَعْلَمُونَ عَلَى وَأَتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣١﴾

قَالَتْ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُونِي فِي أَمْرِي مَا كُنْتُ
قَاطِعَةً أَمْرًا حَتَّى تَشْهَدُونِ ﴿٣٢﴾

३३. उन सभी ने जवाब दिया कि हम मजबूत और ताकत वाले बहुत लड़ने-भिड़ने वाले हैं, आगे आप को हक है आप खुद ही विचार कीजिए कि आप हमें क्या हुक्म देती हैं।

३४. उसने कहा कि वादशाह जब किसी बस्ती में दाखिल होते हैं तो उसे उजाड़ देते हैं, और वहाँ के बाइज्जत लोगों को बेइज्जत करते हैं, और ये लोग भी ऐसा ही करेंगे।

३५. और मैं उन्हें एक तोहफा भेजने वाली हूँ, फिर देख लूँगी कि सफ़ीर (राजदूत) क्या जवाब लेकर लौटते हैं।¹

३६. इसलिए (राजदूत) जब (हजरत) सुलेमान के पास पहुँचा तो आप ने कहा, क्या तुम माल से मुझे मदद देना चाहते हो? मुझे तो मेरे रथ ने इस से ज़्यादा दे रखा है जो उस ने तुम्हें दिया है, इसलिए तुम ही अपने तोहफे से खुश रहो।

३७. जा उनकी तरफ लौट जा हम उन के पास ऐसी सेना लायेंगे जिस के सामने आने की उन में ताकत नहीं और हम उन्हें जलील और पराजित करके वहाँ से निकाल बाहर करेंगे।²

قَالُوا نَحْنُ أَوْلُوا قُوَّةً وَأَوْلُوا بِأَيِّ شَيْءٍ يُدْعَى
وَالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانظُرِي مَاذَا تَأْمُرِينَ ﴿۳۳﴾

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوكَ إِذَا دَخَلُوا قَرْيَةً أَفْسَدُوهَا
وَجَعَلُوا عِزَّةَ أَهْلِهَا أَذِلَّةً ۚ وَكَذَلِكَ
يَفْعَلُونَ ﴿۳۴﴾

وَإِنِّي مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنْظُرَ مَا سَمَّرُجِعُ
الْمُرْسَلُونَ ﴿۳۵﴾

فَلَمَّا جَاءَ سُلَيْمَانَ قَالَ أَتَيْتُكُمْ بِمِثْلِ
مَا آتَيْتُكُمْ بِهِمْ ۚ وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ مِنْكُمْ
رَحْمَةٌ مِّنَ اللَّهِ فَاسْتَفْتَوْا رَسُولَ اللَّهِ
فَلَمَّا سَأَلْتَهُمْ لَمْ يَنْصُرُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَأَسْرَبُوا ۚ وَكُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُ
سَبَّوهُ ۚ فَجَاءَهُم بِرَحْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَأَمْرٍ
كَبِيرٍ ﴿۳۶﴾

إِزْجِجَ إِلَيْهِمْ فَلَمَّا تَبَيَّنَتْ لَهُمْ يَجُودٌ لَّا قِبَلَ
لَهُمْ بِهَا وَتَغَيَّرَتْهُمْ مِنْهَا إِذِلَّةٌ وَهُمْ
ضَعُفُونَ ﴿۳۷﴾

¹ इस से अंदाजा हो जायेगा कि सुलेमान कोई दुनियावी राजा है या अल्लाह के भेजे हुए नबी है, जिसका मकसद अल्लाह के दीन का प्रभुत्व स्थापित (गलवा साबित) करना है, अगर तोहफा कुबूल नहीं किया तो बेशक उसका दीन का प्रचार-प्रसार (दावत-तबलीग) है, फिर हमें भी पैरवी किये बिना कोई उपाय नहीं होगा।

² हजरत सुलेमान केवल मुल्क से सम्बन्धित नहीं थे, अल्लाह के पैगम्बर भी थे। इसलिए उन की तरफ से लोगों को अपमानित करना मुमकिन नहीं था, लेकिन लड़ाई का नतीजा यही होता है क्योंकि लड़ाई नाम ही खून-खराबा और बन्दी बनने बनाने का है, और अपमान और अनादर से मुराद यही है, वना अल्लाह के पैगम्बर लोगों को अचानक लज्जित और जलील नहीं करते। जिस प्रकार नबी ﷺ का मुआमला और अच्छा अखलाक लड़ाई के मौके पर रहा।

३८. (आप ने) कहा हे सरदारो! तुम में से कोई है जो उन के मुसलमान होकर पहुँचने से पहले ही उसका सिंहासन मुझे लाकर दे।

३९. एक शक्तिशाली जिन्न कहने लगा, आप के अपने इस जगह से उठने से पहले ही मैं उसे आप के पास ला देता हूँ, यकीन कीजिए मैं इसकी ताकत रखता हूँ और हूँ भी अमानतदार।

४०. जिस के पास किताब का इल्म था वह बोल उठा कि आप पलक झपकायें उस से भी पहले मैं उसे आप के पास पहुँचा सकता हूँ। जब आप ने उसे अपने पास मौजूद पाया तो कहने लगे यह मेरे रब का उपकार (फ़ज़ल) है, ताकि वह मुझे परखे कि मैं शुक्रिया अदा करता हूँ या नाशुक्रि। शुक्रिया अदा करने वाला अपने फ़ायदे के लिए ही शुक्रिया अदा करता है, और जो नाशुक्रि करे तो मेरा रब बेनियाज और महान (मेहरबान) है।

४१. हुक्म दिया कि उस के सिंहासन में कुछ बदलाव कर दो, हम देखेंगे कि यह रास्ता पा लेती है या उन में से होती है जो रास्ता नहीं पाते।

४२. फिर जब वह आ गयी तो उस से पूछा गया कि ऐसा ही तेरा सिंहासन है? उस ने जवाब दिया कि यह जैसाकि वही है। हमें इस से पहले ही इल्म दिया गया था और हम मुसलमान थे।

قَالَ يَا أَيُّهَا الْمَلَأَىٰ الْأَعْنَكَم يَا مُؤْمِنِينَ ۖ كَيْفَ
أَنْ تَأْتُونِي مُسْلِمِينَ ﴿٣٨﴾

قَالَ عِفْرِيُّ قَوْمِ الْجِنِّ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ
أَنْ تَقُومَ مِنْ مَقَامِكَ ۖ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ
أَمِينٌ ﴿٣٩﴾

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ
قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۚ فَلَمَّا رَأَاهُ مُسْتَقِرًّا
عِنْدَهُ قَالَ هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي لِيَبْلُوَنِي
ۖ أَشْكُرَ أَمْ أَكْفُرُ ۚ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ۖ
وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّي غَنِيٌّ كَرِيمٌ ﴿٤٠﴾

قَالَ تَزَكُّوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرَنَّهُ تَهْتَدِي آمْرًا نَكُوْنُ
مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٤١﴾

فَلَمَّا جَاءَتْ قِيلَ أَهَكَذَا عَرْشِيْ
قَالَتْ كَأَنَّهُ هُوَ ۖ وَأُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ
قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ﴿٤٢﴾

1 यह कौन इंसान था जिस ने यह कहा, यह किताब कौन सी थी, और यह इल्म क्या था जिसकी ताकत पर यह दावा किया गया? इस में मुफ़सि़सों के कई क़ौल हैं, इन तीनों की पूरी हकीकत तो अल्लाह तआला ही जानता है। यहाँ कुरआन करीम के लफ़्ज़ों से जो मालूम होता है, वह इतना ही है कि वह कोई इंसान ही था, जिसके पास अल्लाह की किताब का इल्म था, अल्लाह तआला ने मौजिजा और अप्राकृतिक रूप (जैरफितरी) से उसे यह ताकत अता की कि पलक झपकते ही वह सिंहासन ले आया।

४३. और उसे उन्होंने रोक रखा था जिन की वह अल्लाह के सिवाय पूजा करती रही थी। बेशक वह काफिर लोगों में से थी।

४४. उससे कहा गया कि महल में चली चलो जिसे देखकर यह समझकर कि जलाशय (हौज) है उस ने अपनी पिंडलियाँ खोल दी, फरमाया यह तो शीशे से बना हुआ है, कहने लगी मेरे रब! मैंने अपनी जान पर जुल्म किया। अब मैं सुलेमान के साथ अल्लाह सारे जहाँ के रब की फरमावर्दार बनती हूँ।

४५. और बेशक हम ने 'समूद' की तरफ उन के भाई 'स्वालेह' को भेजा कि तुम सब अल्लाह की इबादत करो, फिर भी वे दो गुट बनकर आपस में लड़ने लग गये।

४६. (आप ने) कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! तुम भलाई से पहले चुराई की जल्दी क्यों मचा रहे हो? तुम अल्लाह (तआला) से माफ़ी क्यों नहीं माँगते? ताकि तुम पर रहम किया जाये।

४७. (वे) कहने लगे कि हम तो तुझ से और तेरे साथियों से अपशुन (वदशगूनी) ले रहे हैं, (आप ने) जवाब दिया कि तुम्हारा अपशुन अल्लाह के पास है, बल्कि तुम तो इस्तेहान में पड़े हुए लोग हो।

४८. इस नगर में नौ (मुखिया) इंसान थे जो धरती में फ़साद फैला रहे थे और सुधार नहीं करते थे।

وَصَدَقَ مَا كَانَتْ تُعْبُدُ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كَافِرِينَ ﴿٤٣﴾

قِيلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۖ فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً ۖ وَكَشَفَتْ عَنْ سَائِرِهَا ۖ قَالَ إِنَّكَ صَرْحٌ مُمَرَّدٌ مِنْ قَوَارِيرَ ۗ قَالَتْ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ۖ وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ إِلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٤﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا أَنْ عِبُدُوا اللَّهَ ۖ فَآذَاهُمْ قُرَيْبِينَ يَخْتَفُونَ ﴿٤٥﴾

قَالَ يَقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُونَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۗ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُونَ اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٦﴾

قَالُوا ظَلَمْنَا نَافِكَ وَبَيْنَ فَعَاك ۖ قَالَ ظَلِمْنَا لَعِنْدَ اللَّهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُونَ ﴿٤٧﴾

وَكَانَ فِي الْمَدِينَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ﴿٤٨﴾

१ महारानी सवा (थिलकीस) के मुसलमान होने के वाद क्या हुआ? कुरआन में या किसी सहीह हदीस में इसकी तफ़सीली जानकारी नहीं मिलती, तफ़सीली रिवायत में ज़रूर मिलता है कि उन का आपस में विवाह हो गया था, लेकिन जब कुरआन और हदीस इस विषय में ख़ामोश हैं तो इस बारे में ख़ामोश रहना ही बेहतर है।

५९. उन्होंने आपस में अल्लाह की कसम खाकर अहद (प्रतिज्ञा) किया कि रात ही को 'स्वालेह' और उस के परिवार वालों पर हम छापा मारेंगे, और उस के उत्तराधिकारी (बली) से कह देंगे कि हम उस के परिवार के कत्ल के वक़्त मौजूद न थे, और हम सच बोल रहे हैं।

६०. और उन्होंने चाल चली और हम ने भी और वह उसे समझते ही न थे।

५९. अब देख लो कि उनकी साजिश (पड़यन्त्र) का नतीजा (परिणाम) क्या हुआ? हम ने उन को और उन की क्रौम को सभी को हलाक कर दिया।

५९. यह है उन के घर जो उन के ज़ुल्म की वजह से उजड़े पड़े हैं, जो लोग इल्म रखते हैं उन के लिए उस में बड़ी निशानी है।

५९. और हम ने उन को जो ईमान लाये थे, और नेक काम करते थे बाल-बाल वचा लिया।

५५. और लूत की (चर्चा कर) जबकि उस ने अपनी क्रौम से कहा कि देखने-भालने के वावजूद भी तुम कुकर्म (बदकारी) कर रहे हो?

५५. यह क्या बात है? कि तुम औरतों को छोड़कर मर्दों के पास काम वासना (शहवत) से आते हो? सच यह है कि तुम बड़ी जिहालत कर रहे हो।

قَالُوا تَقَاسَمُوا بِاللَّهِ لَنُبَيِّتَنَّهُ وَأَهْلَهُ ثُمَّ
لَنَنقُوَنَّ لَيْلِيهِ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهِ
وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿٤٩﴾

وَمَكْرُوا مَكْرًا وَمَكْرَنَا مَكْرًا أَهْمَ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٠﴾

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ نَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ إِنَّآ دَمَرْنَهُمْ
وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٥١﴾

فِيكَ بَيْتُهُمْ حَاوِيَةً يَسَا ظَلَمُوا إِذْ فِي ذَٰلِكَ
لَايَةٌ لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٥٢﴾

وَأَنْجَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٣﴾

وَلَوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنِّي أَنَا نَذِيرٌ
وَأَنْتُمْ تُبْصِرُونَ ﴿٥٤﴾

أَيُّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ
النِّسَاءِ ۗ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ ﴿٥٥﴾

५६. उन की क्रीम का जवाब इस कहने के अलावा दूसरा कुछ न था कि लूत के परिवार वालों को अपने नगर से निकाल दो, यह लोग तो बड़ी पाकी दिखा रहे हैं।

५७. और हम ने उसे और उसके परिवार को, उसकी पत्नी के सिवाय सब को बचा लिया, इसका अंदाजा तो बाकी रह जाने वालों में हम लगा चुके थे।

५८. और उन के ऊपर एक (खास तरह की) बारिश कर दी,^१ इसलिए उन डराये गये लोगों पर बुरी बारिश हुई।

५९. तो आप कह दें कि सारी तारीफ अल्लाह ही के लिए है और उस के चुने हुए बन्दों पर सलाम है, क्या अल्लाह (तआला) बेहतर है या वह जिन्हें ये लोग साझीदार बना रहे हैं।

६०. (भला बताओ तो) आकाशों को और धरती को किसने पैदा किया? किसने आकाश से बारिश की, फिर उस से हरे-भरे बारौनक वाग उगाये? इन वागों के पेड़ों को तुम कभी नहीं उगा सकते, क्या अल्लाह के सिवाय दूसरा कोई इवादात के लायक भी है? बल्कि ये लोग हट जाते हैं (सीधे रास्ते से)।

६१. क्या वह जिस ने धरती को निवासस्थल (क्रारगाह) बनाया, उस के बीच नदियां जारी कर दीं, उस के लिये पहाड़ बनाये और दो समुद्रों के बीच रोक बना दी, क्या अल्लाह के साथ कोई दूसरा इवादात के लायक भी है? बल्कि उन में से ज्यादातर कुछ जानते ही नहीं।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا أَخْرِجُوْنَا
أَل لُّوْطٍ مِّن قَوْمِيكُمْ إِنَّهُمْ أَنَاسٌ
يَّتَطَهَّرُونَ ﴿٥٦﴾

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ
فَدَرَبْنَا مِنَ الْغَيْرِينَ ﴿٥٧﴾

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ
السُّدْرِيِّينَ ﴿٥٨﴾

قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ وَسَلَامٌ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِينَ
اصْطَفَى ۗ إِنَّ اللَّهَ خَيْرٌ مَّا يُشْرِكُونَ ﴿٥٩﴾

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا بِهِ حَدَائِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ
مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْبِتُوا شَجَرَهَا ۗ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الظَّالِمِينَ
بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَعْبُونَ ﴿٦٠﴾

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَجَعَلَ خَلْقَهَا أَنْهَارًا
وَجَعَلَ لَهَا رَوَاسِي وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ
حَاجِزًا ۗ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الظَّالِمِينَ ۗ لَئِنَّمْ لَآ يَلْمُونَ ﴿٦١﴾

^१ उन पर जो अजाब आया, उसकी तफसील पहले गुजर चुकी है कि उन बस्तियों को उन पर पलट दिया गया और उस के बाद उन पर तह पर तह ककड़-पत्थरों की बारिश हुई।

६२. बेबस की पुकार को जबकि वह पुकारे कौन कुबूल करके तकलीफ को दूर कर देता है, और तुम्हें धरती का खलीफा बनाता है? क्या अल्लाह (तआला) के साथ दूसरा कोई इबादत के लायक है? तुम बहुत कम बिधा ग्रहण (हासिल) करते हो।

६३. कौन है वह जो तुम को थल और जल के अंधेरी में रास्ता दिखाता है और जो अपनी रहमत से पहले ही खुशखबरी देने वाली हवा चलाता है? क्या अल्लाह के साथ कोई दूसरा देवता भी है? जिन्हें ये साझी बनाते हैं, उन सब से अल्लाह (तआला) बुलन्द है।

६४. कौन है वह जो मखलूक की पहली वार पैदाईश करता है फिर उसे लौटायेगा और जो तुम्हें आकाश और धरती से रिक्त अता कर रहा है, क्या अल्लाह के साथ दूसरा कोई देवता भी है? कह दीजिए कि अगर सच्चे हो तो अपना सुबूत लाओ।

६५. कह दीजिए कि आकाश वालों में से और धरती वालों में से अल्लाह के सिवाय कोई भी गैब (की बातें) नहीं जानता? उन्हें तो यह भी

أَمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوءَ
وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاءَ الْأَرْضِ طَعَّ اللَّهُ مَعَ اللَّهِ ط
قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ 62

أَمَّن يَهْدِيكُمْ فِي ظُلُمَاتِ اللَّيْلِ وَالنَّجْوَى وَمَنْ يُرْسِلُ
الرياح بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ طَعَّ اللَّهُ مَعَ اللَّهِ ط
تَعْلَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ 63

أَمَّن يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَمَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنْ
السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ طَعَّ اللَّهُ مَعَ اللَّهِ ط قُلْ هَاتُوا
بُرْهَانَكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ 64

قُلْ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ
إِلَّا اللَّهُ ط وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ 65

1 यानी एक सम्प्रदाय के बाद दूसरा सम्प्रदाय, एक कौम के बाद दूसरी कौम और एक जाति के बाद दूसरी जाति पैदा करता है, वर्ना अगर वह सबको एक ही वक्त में पैदा करता तो धरती भी तंगी की शिकायत करती, तज्जार्त में भी कठिनाई होती और ये सब एक-दूसरे की टांग खींचने में ही व्यस्त (मशगूल) रहते। यानी एक के बाद दूसरे इंसानों को पैदा करना और एक को दूसरे का वारिस बनाना, यह भी उसकी अति कृपा (बड़ी रहमत) है।

2 यानी जिस तरह ऊपरी विषयों में अल्लाह तआला अकेला (अद्वितीय) है, उसका कोई साझी नहीं उसी प्रकार गैब के इल्म में भी वह अकेला है, उस के सिवाय किसी को भी गैब का इल्म नहीं। नबियों और रसूलों को भी उतना ही इल्म (ज्ञान) होता है जितना अल्लाह तआला वह्यी और ईश्वरीय प्रेरणा (इल्हाम) के जरिये उनको बता देता है और जो इल्म किसी के वताने से हासिल हो उस के जानने वाला को गैब का इल्म जानने वाला नहीं कहा जाता। गैब का इल्म तो वह है जो बिना किसी माध्यम के खुद हर एक चीज का इल्म रखे, हर हकीकत को जानता हो और छिपी से छिपी चीज भी उस के इल्म के दायरे से बाहर न हो। यह विशेषता

मालूम नहीं कि वे कब दोबारा ज़िन्दा किये जायेंगे ।

६६. बल्कि आखिरत के वारे में उनका इल्म खत्म हो चुका है, बल्कि यह उस की तरफ से शक में है बल्कि यह उस से अंधे हैं ।

६७. काफ़िरों ने कहा कि क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे और हमारे बाप-दादा भी क्या हम फिर निकाले जायेंगे ।

६८. हमें और हमारे पूर्वजों (बुजुर्गों) को बहुत पहले से ये वादे दिये जाते रहे हैं । कुछ नहीं, यह तो सिर्फ पूर्वजों की काल्पनिक कथायें (ख़्याली अफसाने) हैं ।

६९. कह दीजिए कि धरती में तनिक चल-फिर कर देखा तो सही कि मुजरिमों का कैसा अंजाम हुआ?

७०. और आप उन के बारे में फ़िक्रमंद न हों और उनकी साज़िशों से तग़ दिल न हों ।

७१. और कहते हैं कि यह बादा कब है, अगर सच्चे हो तो बतला दो ।

७२. जवाब दीजिए कि शायद कुछ वे चीज़ें जिन की तुम जल्दी मचा रहे हो, तुम से बहुत करीब हो गई हों ।

بَلْ اَذْرَكَ عَلَيْهِمْ فِي الْاٰخِرَةِ دَبْلَ هُمْ فِي شَايَ
فِيهَا دَبْلَ هُمْ فَرْنَهَا عَمَّوَن (66)

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ءَاِذَا كُنَّا تُرَابًا وَّ اٰبَاؤُنَا
اٰسِنَا لَمُخْرَجُوْنَ (67)

لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَاؤُنَا مِنْ قَبْلُ
اِنْ هٰذَا اِلَّا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ (68)

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَاَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُجْرِمِيْنَ (69)

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ هَيْبَةٍ
مِّنْهُمْ يَسْكُرُوْنَ (70)

وَيَقُوْلُوْنَ مَتَىٰ هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (71)

قُلْ عَسَىٰ اَنْ يَّكُوْنَ رَدْفٌ لَّكُمْ يَعْصُ الَّذِي
سَمِعْتُمْ (72)

(ख़ुसूसियत) सिर्फ और सिर्फ अल्लाह ही की है, इसलिए केवल वही छिपी बातों (ग़ैब) का जानने वाला है, उस के सिवाय पूरी दुनिया में कोई भी छिपी बातों (ग़ैब) का जानने वाला नहीं है । हज़रत आयेशा (رضي الله عنها) फ़रमाती हैं कि जो इंसान यह ख़्याल रखता है कि नबी ﷺ भविष्य (मुस्तक़बल) में होने वाले वाक़ेआ (घटनाओं) का इल्म रखते हैं, उस ने अल्लाह पर बहुत बड़ा बुरहानन लगाया, इसलिए कि वह फ़रमा रहा है कि "आकाश और धरती में ग़ैब (छिपी बातों) का इल्म केवल अल्लाह को है ।" (सहीह बुख़ारी, नं॰ ४८५५, सहीह मुस्लिम नं॰ २८७, और अल-तिर्मिज़ी नं॰ ३०६८)

। इस से मुराद बद्र की लड़ाई का वह अज़ाब है, जो क़त्ल और कैद किये जाने के रूप में

७३. और वेशक आप का रब सभी लोगों पर बड़ा फज़ल (कृपा) वाला है, लेकिन ज़्यादातर लोग शुक्रिया अदा नहीं करते हैं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٧٣﴾

७४. और वेशक आप का रब उन बातों को भी जानता है जिन्हें वे अपने दिल में छिपा रहे हैं और जिन्हें जाहिर कर रहे हैं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٧٤﴾

७५. आकाश और धरती की कोई छिपी चीज़ भी ऐसी नहीं है जो रौशन खुली किताब में न हो।

وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ﴿٧٥﴾

७६. वेशक यह कुरआन इस्राईल की औलाद के सामने ज़्यादातर उन बातों का वयान कर रहा है जिन में ये इख्तिलाफ (मतभेद) करते हैं।^१

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَفُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكُتُبَ الَّتِي هُمْ فِيهَا يَخْتَلِفُونَ ﴿٧٦﴾

७७. और यह (कुरआन) ईमानवालों के लिए वेशक हिदायत और रहमत है।

وَإِنَّهُ لَهْدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

७८. आप का रब उन के बीच अपने हुकम से (सभी) फैसला कर देगा, वह बड़ा प्रभावशाली (गालिब) और जानने वाला है।

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ﴿٧٨﴾

काफिरों को पहुँचा और क्रब का अजाब है।

^१ इस से मुराद 'लौहे महफूज़' (सुरक्षित पुस्तक) है। उन ही छिपी चीज़ों में उस अजाब का इल्म भी है जिस के लिए यह काफिर लोग जल्दी मचाते हैं, लेकिन उसका समय भी अल्लाह ने 'लौहे महफूज़' में लिख रखा है, जिस केवल वही जानता है और जब वह वक़्त आ जाता है जो उस ने किसी क्रौम की तबाही के लिए लिख रखा है तो फिर उसे नाश कर दिया जाता है, यह मुकर्रर वक़्त के आने से पहले जल्दी क्यों करते हैं?

^२ अहले किताब यानी यहूदी और इसाई कई सम्प्रदायों और गुटों में बट गये थे, उन के विश्वास (ख़्याल) भी एक-दूसरे से अलग थे। यहूदी हजरत ईसा का निरादर (जलील) और अपमान (बेइज़्ज़त) करते थे और इसाई उन के एहतेराम में गुलू (अतिशयोक्ति), यहाँ तक कि उन्हें अल्लाह या अल्लाह का बेटा बना दिया। कुरआन करीम ने उन्हीं के बारे में ऐसी बातें वयान की हैं, जिन से सच वाज़ह हो जाता है और अगर वे कुरआन की वयान की हुई सच्चाई को क़बूल कर लें तो उनका अक़ीदा से सम्बन्धित विरोध का ख़ात्मा और उन के इख्तिलाफ और फूट में कमी हो जाये।

७९. इसलिए आप अल्लाह पर ही भरोसा रखें, बेशक आप सच और खुले दीन पर हैं।

८०. बेशक आप न मुर्दों को सुना सकते हैं और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हैं। जब कि वे पीठ फेर कर मुँह मोड़े जा रहे हों।

८१. और न आप अंधों को उन की गुमराही से हटाकर हिदायत दे सकते हैं, आप तो सिर्फ उन्हें सुना सकते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान लाये हैं फिर वे फरमाबदार हो जाते हैं।

८२. और जब उन के उपर अजाब का वादा साबित हो जायेगा, हम धरती से उन के लिए एक जानवर निकालेंगे जो उन से बातें करता होगा? कि लोग हमारी आयतों पर यकीन नहीं करते थे।^१

८३. और जिस दिन हम हर उम्मत में से उन लोगों के गुटों को जो हमारी आयतों को झुठलाते थे घेर-घार कर लायेंगे, फिर वे सब

فَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّكَ عَلَى السَّعْيِ الْمُبِينِ ﴿٧٩﴾

إِنَّكَ لَا تَسْمَعُ الْمَوْتَى وَلَا تَسْمَعُ الْعُمْمَةَ الدَّاعَاةَ إِذَا أُولُوا مَدْبِرِينَ ﴿٨٠﴾

وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعَمَى عَنْ ضَلَالَتِهِمْ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا لَهُمْ قُسُوفٌ ﴿٨١﴾

وَلِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَابَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ أَنَّ النَّاسَ كَانُوا بِآيَاتِنَا لَا يُوقِنُونَ ﴿٨٢﴾

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُكَلِّبُ بِآيَاتِنَا لَهُمْ يُورَثُونَ ﴿٨٣﴾

^१ यह उन काफिरों की फिक्र न करने और सिर्फ अल्लाह पर भरोसा न रखने की दूसरी वजह है, कि ये लोग मुर्दें हैं जो किसी की बात को सुन कर फ्रायेदा नहीं उठा सकते या बहरे हैं, जो न सुनते हैं न समझते हैं और न रास्ता पाने वाले हैं, यानी काफिरों की भिसाल मरे हुए इंसान से दी जिन में संवेदन (शऊर) नहीं होता है न अकल और बहरों से, जो बात और नसीहत सुनते हैं न अल्लाह की तरफ दावत को कुबूल करते हैं।

^२ यह दाब्व: (अजीब जानवर) वही है जो क़यामत के करीब होने की निशानी में से है, जैसाकि हदीस में है। तबी ने फरमाया: «क़यामत उस वक़्त तक नहीं आयेगी जब तक तुम दस निशानियाँ न देख लो उन में एक जानवर का निकलना है।» (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़ैतन, बाबु फ़ी आयातिल-लती तकूनु क़ब्नस्साअह) दूसरा क़ौल है, «सब से पहले जो निशानी जाहिर होगी वह है सूरज का पूरब के बजाय पश्चिम से निकलना और दोपहर से पहले जानवर का निकलना।» इन दोनों में से जो पहले जाहिर होगा दूसरा उस के फ़ौरन बाद ही जाहिर हो जायेगा। (सहीह मुस्लिम)

^३ यह जानवर के निकलने की वजह है, यानी अल्लाह तआला अपनी यह निशानी इसलिए दिखायेगा कि लोग अल्लाह की निशानियों या आयतों (आदेशों) पर यकीन नहीं करते। कुछ कहते हैं कि यह वाक्य (कलाम) वह जानवर अपने मुँह से कहेगा, फिर भी उस जानवर के इंसानों से बात करने में कोई शक नहीं क्योंकि क़ुरआन ने इसको साफ़ तौर से कहा है!

के सब अलग कर दिये जायेंगे ।

८४. जब सब के सब आ पहुँचेंगे तो अल्लाह (तआला) फरमायेगा कि तुम ने मेरी आयतों को इस के बावजूद कि तुम्हें उन का पूरा इल्म न था, क्यों झुठलाया? और यह भी बताओ कि तुम क्या कुछ करते रहे?

८५. और इसकी वजह कि उन्होंने ज़ुल्म किया था, उन पर बात साबित हो जायेगी और वे कुछ न बोल सकेंगे ।

८६. क्या वे देख नहीं रहे हैं कि हम ने रात को इसलिए बनाया है कि वे इस में आराम कर सकें और दिन को हम ने दिखलाने वाला बनाया है, बेशक इस में उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ईमान (और विश्वास) रखते हैं ।

८७. और जिस दिन नरसिंघा (सूर) फूँका जायेगा तो सब के सब आकाशों वाले और धरती वाले घबरा उठेंगे। लेकिन जिसे अल्लाह चाहे ।^१ और सारे के सारे आजिज (और मजबूर) होकर उस के सामने हाजिर होंगे ।

عَلَىٰ إِذَا جَاءَ وَقَالَ كَذَّبْتُمْ بِآيَاتِي وَلَمْ تُحِطُوا بِهَا
عِلْمًا أَمَا ذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوا لَهُمْ
لَا يُنظِقُونَ ﴿٨٥﴾

الْمُرِيدُوا أَنَا صَلْنَا الْبَيْتَ لِيَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ
مُبِينًا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٨٦﴾

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي السُّورِ فَفَرَجَ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ
فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ وَلَكُلَّ آتٍ ذُخْرَيْنِ ﴿٨٧﴾

^१ सूर से मुराद वही नरसिंघा है जिस में इस्राफ़ील عليه السلام अल्लाह के हुक्म से फूँक मारेगा, यह फूँक दो या दो से ज्यादा होगी। पहली फूँक में सारी दुनिया घबराकर बेहोश हो जायेगी, दूसरी फूँक में भर जायेगी और तीसरी फूँक में सभी लोग क़ब्रों से जिन्दा होकर खड़े हो जायेंगे और कुछ के करीब चौथी फूँक होगी जिस से सभी लोग हथ के मैदान में जमा हो जायेंगे। यहाँ कौन सी फूँक मुराद है? इमाम इब्ने कसीर के करीब यह पहली फूँक और इमाम शौकानी के करीब तीसरी फूँक है जब लोग क़ब्रों से उठेंगे।

^२ यह छूट हासिल करने वाले लोग कौन होंगे? कुछ के करीब नबी और शहीद, कुछ के करीब फ़रिश्ते और कुछ के करीब सभी ईमानवाले हैं। इमाम शौकानी फरमाते हैं कि शायद सभी वयान किये गये लोग इस में शामिल हों, क्योंकि ईमानवाले वास्तविक (हकीकी) घबराहट से महफूज होंगे। (जैसाकि आ रहा है)

८८. और आप पहाड़ों को अपनी जगह पर जमा हुआ समझते हैं लेकिन वे भी बादल (मेघ) की तरह उड़ते फिरंगे। यह है पैदाईश अल्लाह की जिस ने हर चीज को मजबूत बनाया है, जो कुछ तुम करते हो उस से वह अच्छी तरह जानता है।

८९. जो इंसान नेकी के काम लायेगा उसे उस से भी अच्छा बदला मिलेगा, और वह उस दिन की घबराहट से बेखीफ होंगे।

९०. और जो बुराई लेकर आयेंगे वे औंधे मुंह आग में झोंक दिये जायेंगे, केवल वहीं बदला दिये जाओगे जो तुम करते रहे।

९१. मुझे तो केवल यही हुकम दिया गया है कि मैं इस नगर के रब की इबादत करता रहूँ जिसने इसे हरमत (पवित्रता) वाला बनाया है। जिसकी मिल्कियत हर चीज है और मुझे यह भी हुकम दिया गया है कि मैं आज्ञाकारियों (फरमाबरदारों) में हो जाऊँ।

९२. और मैं कुरआन की तिलावत करता रहूँ, तो जो हिदायत पर आ जाये वह अपने फायदे के लिए हिदायत पर आयेगा, और जो भटक जाये तो कह दीजिए कि मैं तो केवल सतर्क (आगाह) करने वालों में से हूँ।

९३. और कह दीजिए कि सारी तारीफें अल्लाह ही के लिए है, वह तुम्हें करीब में ही अपनी निशानियाँ दिखायेगा जिन्हें तुम खुद पहचान लोगे, और जो कुछ तुम कर रहे हो उस से आप का रब गाफिल नहीं।

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسِبُهَا جَمَادًا وَرَوَى نَزْمًا مَّوَّ
التَّحَابِ مَصْنَعُ اللَّهِ الَّذِي أَنْتَ كُلُّ شَيْءٍ
إِنَّهُ خَيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿٨٨﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا وَهُم مِّنْ
قَوْلِ رَبِّهِمْ لَأَمِينُونَ ﴿٨٩﴾

وَمَنْ جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكَلَبَتْ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ
هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٠﴾

إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هَذِهِ الْبَلَدِ الَّذِي
حَرَّمَهَا وَلَهُ كُلُّ شَيْءٍ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ
مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٩١﴾

وَأَنْ أَتْلُو الْقُرْآنَ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي
لِنَفْسِهِ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَا أَنَا مِنَ
النَّذِيرِينَ ﴿٩٢﴾

وَقُلِ الصِّدْقُ إِلَهُ سِرِّكُمْ إِلَيْهِ فَتَعْرِفُونَهَا
وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

१ इस से मुराद मक्का नगर है, इसका खास तौर से नयान इसलिए किया गया है कि इस में खानये कअबा है और यही रसूलुल्लाह ﷺ को भी बहुत प्यारा था। "हरमत वाला" का मतलब है कि इस में खून-खराबा करना, ज़ुल्म करना, धिकार करना, पेड़ काटना, यहाँ तक कि काँटा तोड़ना भी हाराम है। (बुखारी, किताबुल जनायेज, मुस्लिम किताबुल हज बाबु तहरीमे मक्का व सैदाहा, व अलसुनन)

सूरतुल-कसस-२८

सूर: कसस* मक्का में नाज़िल हुई और इस में अट्ठासी आयतें और नौ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. ता. सीम. मीम.

२. ये आयतें हैं रौशन वाली किताब की।

३. हम आप के सामने मूसा और फिरऔन का सच्चा वाक़ेआ बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ईमान रखते हैं।

४. बेशक फिरऔन ने धरती पर फसाद मचा रखा था, और वहाँ के लोगों का गुट बना रखा था, उन के एक गुट को कमजोर (दुर्बल) बना रखा था,^१ उन के बालकों को तो मार डालता था और लड़कियों को ज़िन्दा छोड़ देता था। बेशक वह था ही फसादियों में से।

५. और फिर हम ने चाहा कि उन पर दया करें जिन्हें धरती पर बेहद कमजोर (दुर्बल) कर दिया गया था और हम उन्हें ही प्रमुख और (धरती) का वारिस बनायें।

سُورَةُ الْقَصَصِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

طسّم ①

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْمُبِينِ ②

تَتْلُوَا عَلَيْكَ مِنْ نَحْمِا مُوسَىٰ وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ

لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ③

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا

شِيْعًا سَائِغِوْفَ طَائِفَةٍ مِنْهُمْ يَرْجِعُ آبْنَاءَهُمْ

وَيَسْتَجْبِي نِسَاءَهُمْ إِنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ④

وَنُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ عَلَى الَّذِينَ اسْتُضِعُوا فِي الْأَرْضِ

وَنَجْعَلَهُمْ آيَةً وَنَجْعَلَهُمُ الْوَارِثِينَ ⑤

* सूर: अल-कसस की तफ़सीर :यह वाक़ेआ इस बात का सुबूत है कि आप अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हैं, क्योंकि अल्लाह की वही के बिना सदियों पहले के वाक़ेओं को ठीक उसी तरह से बयान कर देना जिस तरह हुआ नामुमकिन है। फिर भी उस के वावजूद इस से फ़ायदा केवल ईमानवालों ही को होगा, क्योंकि वही आप की बातों को मानेंगे।

^१ इस से मुराद इस्राईल की औलाद है जो उस वक़्त की सय से अच्छी उम्मत थी, लेकिन इमतेहान के रूप में फिरऔन की गुलामी और उस के ज़ुल्म और सख़्ती का निशान बनी हुई थी।

६. और यह भी कि उन्हें धरती पर ताकत और इच्छेदार अता करें' और फिरऔन और हामान और उन की सेनाओं को वह दिखायें जिस से वे डर रहे हैं ।

७. और हम ने मूसा की माँ को बहूयी (प्रकाशना) की^२ कि उसे दूध पिलाती रह और जब तुझे उस के बारे में कोई डर महसूस हो तो उसे नदी में बहा देना, और कोई डर, गम और दुख न करना । हम बेशक उसे तेरी तरफ लौटाने वाले हैं और उसे अपने पैगम्बरों में से बनाने वाले हैं ।

८. आखिर में फिरऔन के लोगों ने उस बालक को उठा लिया^३ कि आखिरकार यही बालक उन का दुश्मन हुआ और उन के दुखों का सबब बना, कोई शक नहीं कि फिरऔन और हामान और उन की सेना थे ही अपराधी ।

९ और फिरऔन की बीबी (पत्नी) ने कहा कि यह तो मेरी और तेरी आँखों की ठंडक है, इस को कत्ल न करो^४ ज्यादा मुमकिन है कि यह हमें कोई फायदा पहुँचाये या हम इसे अपना ही

وَسُكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَبُرِّيَ فِرْعَوْنُ وَهَامَانَ
وَجُنُودَهُمَا مِنْهُمْ مَا كَانُوا يَحْذَرُونَ ⑥

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ أُمِّ مُوسَىٰ أَنْ أَرْضِعِيهِ ۖ إِذْ كَاذِبَتْ عَلَيْهِ
فَالْيُوسُفُ فِي الْبَيْتِ وَلَا تَخَافِي وَلَا تَحْزَنِي ۗ إِنَّا رَاذُونَ
إِلَيْكَ وَجَاءَ عِلْمُهُ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ⑦

فَالْتَقَطَهُ آلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُونَ لَهُمْ عَدُوًّا وَحَزَنًا ۖ
إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَجُنُودَهُمَا كَانُوا خَاطِبِينَ ⑧

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قَدَرْتُ عَيْنِي لَوْلَاكَ
لَا تَقْتُلُونَهَا ۗ عَلَىٰ أَنْ يَضَعَهَا أُوتُنُودَةً وَكَلَّا
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ⑨

^१ यहाँ धरती से मुराद सीरिया की धरती है, जहाँ वे कनआनियों की धरती के वारिस बने, क्योंकि भिस से निकलने के बाद इस्राईल की औलाद भिस वापस नहीं गयी । والله اعلم

^२ बहूयी से मुराद यहाँ दिल में बात डालना है, वह बहूयी नहीं है जो नबियों पर फरिश्ते के जरिये नाज़िल की जाती थी, और अगर फरिश्ते के जरिये भी आयी हो तब भी मूसा की माँ का नबी होना साबित नहीं होता, क्योंकि फरिश्ते कई बार आम लोगों के पास भी आते हैं । जैसे हदीस में गंजे, कोढ़ी और अंधे के पास फरिश्तों का आना साबित है । (सहीह बुखारी, किताबु अहादीसिल अबिया)

^३ यह सन्दूक बहता-बहता फिरऔन के राजमहल तक पहुँच गया जो नदी के तट ही पर था और वहाँ फिरऔन के कर्मचारियों ने पकड़ कर बाहर निकाला ।

^४ यह उस वक्त कहा जब उन्होंने सन्दूक में एक खूबसूरत बच्चा देखा । कुछ कहते हैं कि यह उस वक्त का कौल है जब मूसा ने फिरऔन की दाढ़ी के बाल नोच लिये थे तो फिरऔन ने उन को कत्ल करने का हुक्म दे दिया था । (ऐसरूत्तफासीर) बहुवचन (जमा) का शब्द (लफज) या तो अकेले फिरऔन के लिए ऐहतुराम के तौर पर कहा गया है या मुमकिन है कि वहाँ उस के कुछ दरबारी मौजूद रहे हों ।

बेटा बना लें और यह लोग अबल ही नहीं रखते थे।

१०. और मूसा (عليه السلام) की माँ का दिल बेचैन हो गया, करीब था कि इस (हकीकत) को बिल्कुल साफ (स्पष्ट) कर देती अगर हम उन के दिल को ढारस न देते, यह इस लिए कि वह यकीन करने वालों में रहे।^१

११. मूसा (عليه السلام) की माँ ने उस की बहन^२ से कहा कि तू इसके पीछे-पीछे जा, तो वह उसे दूर ही दूर से देखती रही^३ और फिरऔनियों को इसका एहसास भी न हुआ।

१२. और उस के पहुँचने से पहले हम ने मूसा पर दाईयों का दूध हाराम (निषेध) कर दिया था,^४ यह कहने लगी कि क्या मैं तुम्हें^५ ऐसा परिवार बताऊँ जो इस बच्चे का पालन-पोषण (परवरिश) तुम्हारे लिए करें और हों भी इस बच्चे के शुभचिन्तक (खैरख्वाह)।

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوسَىٰ فُجُوعًا ۖ إِن كَادَتْ لَتَكْفُرُ
بِهِ لَوْلَا أَن رَّبَطْنَا عَلَىٰ قَلْبِهَا لِئَلَّا يَكُونَ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠﴾

وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ ۖ فَبَصَّرَتْ بِهِ عَنْ جُنُبٍ
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿١١﴾

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِن قَبْلٍ فَقَالَتْ هَلْ
أَدْرَأَكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتِكُمْ ۖ لَكُمُ وَهْمٌ لَّهَا
نُصُوعُونَ ﴿١٢﴾

^१ यानी बहुत दुख की वजह से यह जाहिर कर देती कि यह उनका पुत्र है, लेकिन अल्लाह (तआला) ने उन के दिल को मजबूत कर दिया, जिस पर उन्होंने सब्र किया और यकीन कर लिया कि अल्लाह ने इस मूसा को सक्षम (खैरियत से) वापस लौटाने का जो वादा दिया है वह पूरा होगा।

^२ मूसा की बहन का नाम मरियम बिनते इमरान था, जिस तरह हजरत ईसा की माँ का नाम मरियम बिनते इमरान था, नाम और पिता के नाम दोनों में बराबर थी।

^३ इसलिए वह नदी के किनारे-किनारे देखती रही यहाँ तक कि उसने देख लिया कि उसका भाई फिरऔन के महल में चला गया है।

^४ यानी हम ने अपनी ताक़त और क़ुदरत के जरिये मूसा को अपनी माँ के सिवाय किसी दूसरी दाया का दूध पीने से रोक दिया, इसलिए बहुत कोशिश के बावजूद कोई दाया उन्हें दूध पिलाने और ख़ामोश करने में कामयाब नहीं हो सकी।

^५ यह सारा नज़ारा उनकी बहन ख़ामोशी से देख रही थी, आखिर में बोल पड़ी कि मैं तुम्हें ऐसा परिवार बताऊँ जो इस बच्चे का तुम्हारे लिए पालन-पोषण (परवरिश) करे।

१३. तो हम ने उसे उस की माँ की तरफ वापस पहुँचा दिया,^१ ताकि उस की आँखें ठंडी रहें और दुखी न हो और जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है,^२ लेकिन ज्यादातर लोग नहीं जानते।

فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ
وَلْيَعْلَمَنَّ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٣﴾

१४. और जब मूसा (عليه السلام) अपनी जवानी को पहुँच गये और पूरे ताकतवर हो गये, हम ने उन्हें हिक्मत (बुद्धि) और इल्म अता किया, नेकी करने वालों को हम इसी तरह का बदला दिया करते हैं।

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَاسْتَوَىٰ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا
وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿١٤﴾

१५. और (मूसा) एक ऐसे वक़्त में नगर में आये जबकि नगर के लोग सोये हुए थे। यहाँ दो इंसानों को लड़ते हुए पाया, यह एक तो उस के गुटों में से था और यह दूसरा उस के दुश्मनों में से, उस की जमाअत वाले ने उस के खिलाफ जो उस के दुश्मनों में से था उस से मदद मांगी, जिस पर मूसा ने उसे घूसा मारा जिस से वह मर गया, मूसा कहने लगे कि यह तो शैतानी काम है।^३ बेशक शैतान दुश्मन और खुले तौर से वहकाने वाला है।

وَدَخَلَ الْمَدِينَةَ عَلَىٰ حِينٍ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ
فِيهَا رَجُلَيْنِ يَمْتَلِحَانِ هَذَا مِنْ شِيعَتِهِ وَهَذَا
مِنْ عَدُوِّهِ فَاسْتَفَاهُ الَّذِي مِنْ شِيعَتِهِ عَلَى
الَّذِي مِنْ عَدُوِّهِ فَوَكَرَهُ مُوسَىٰ نَقْضَ عَلَيْهِ
قَالَ هَذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ
مُّبِينٌ ﴿١٥﴾

^१ इसलिए उन्होंने मूसा की बहन से कहा कि जा उस औरत को ले आ, वह दौड़ी-दौड़ी गयी और अपनी माँ को, जो मूसा की भी माँ थी साथ ले आयी।

^२ जब हजरत मूसा ने अपनी माँ का दूध पी लिया तो फिरऔन ने मूसा की माँ से महल में रहने की गुजारिश की ताकि बच्चे का अच्छी तरह से परवरिश हो सके, लेकिन उन्होंने कहा कि मैं अपने पति और बच्चों को छोड़कर यहाँ नहीं रह सकती, आखिर में यह तय हुआ कि वह अपने साथ बच्चे को अपने घर ले जाये और वहीं इसका परवरिश करें और इसकी उजरत (पारिश्रामिक) उन्हें राज्य खजाने से दी जायेगी। अल्लाह की ही सारी तारीफें हैं, अल्लाह की कुदरत का क्या कहना, दूध अपने पुत्र को पिलाये और वेतन फिरऔन से हासिल करें, अल्लाह ने मूसा को वापस लौटाने का वादा किस अच्छे तरीके से पूरा कर दिखाया।

^३ इसे शैतानी (दानव का) काम इसलिए कहा गया है कि क़त्ल एक बहुत बड़ा गुनाह है, और हजरत मूसा का मक़सद कभी क़त्ल करने का नहीं था।

१६. फिर वह दुआ करने लगे कि हे रब ! मैंने तो खुद अपने ऊपर जुल्म किया, तू मुझे माफ कर दे। अल्लाह (तआला) ने उसे माफ कर दिया, क्योंकि वह माफ करने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।

१७. कहने लगे हे मेरे रब ! जैसे तूने मुझ पर यह नेमत की, मैं भी अब किसी मुजरिम का मददगार न बनूंगा।

१८. फिर सुबह ही सुबह डरते हुए खबर लेने को नगर में गये कि अचानक वही इंसान जिस ने कल उन से मदद मांगी थी उन से विनती कर रहा है। मूसा ने उस से कहा कि इस में शक नहीं कि तू तो खुले तौर से गुमराह है।

१९. फिर जब अपने और उस के दुश्मन को पकड़ना चाहा, वह फर्यादी कहने लगा कि हे मूसा! क्या जिस तरह तूने कल एक इंसान को कत्ल कर दिया है मुझे भी मार डालना चाहता है, तू तो देश में जालिम और फसादी बनना ही चाहता है और तेरा यह इरादा ही नहीं कि सुलह करने वालों में से हो।

२०. और नगर के दूर के किनारे से दौड़ता हुआ एक इंसान आया^१ और कहने लगा कि हे मूसा! यहाँ के मुखिया तेरे कत्ल का परामर्श (मशिवरा) कर रहे हैं, इसलिए तू (बहुत जल्द)

قَالَ رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي فَغَفَرَ لَهُ
إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿١٦﴾

قَالَ رَبِّ بِمَا أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُونَ ظَهِيرًا
لِلْمُجْرِمِينَ ﴿١٧﴾

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِينَةِ خَائِفًا يَتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي
اسْتَصْرَعَهُ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِحُهُ قَالَ لَهُ مُوسَى
إِنَّكَ لَعَوَى مُبِينٌ ﴿١٨﴾

فَلَمَّا أَنْ آدَادَ أَنْ يَبْطِشَ بِالَّذِي هُوَ عَدُوٌّ لَهُمَا
قَالَ يَهُوسَى أَتُرِيدُ أَنْ نَمُنَّ بِكَ مَا كُنَّا نَمُنَّا
بِالْأَمْسِ ۚ إِنْ تُرِيدُ إِلَّا أَنْ تَكُونَ جَبَّارًا فِي
الْأَرْضِ وَمَا تُرِيدُ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْمَصْلُحِينَ ﴿١٩﴾

وَجَاءَ جَبَلٌ مِّنْ أَهْصَا الْمَدِينَةِ يَسْعَى قَالَ
يَهُوسَى إِنَّ الْمَلَآئِكَةَ يُاتُونُوكَ بِكَ لِيَقْتُلُوكَ فَاخْرُجْ
إِنِّي لَكَ مِنَ النَّاصِحِينَ ﴿٢٠﴾

^१ यह अचानक कत्ल अग़रचे बहुत बड़ा गुनाह नहीं था, क्योंकि बहुत बड़े गुनाह से अल्लाह तआला अपने पैगम्बर को महफूज रखता है। फिर भी यह ऐसा गुनाह हर तरह से था जिस के लिये बहुत माफ़ी मांगना उन्होंने ज़रूरी समझा। दूसरे उन्हें डर था कि अग़र फिरऔन को इसकी खबर मिली तो इस के बदले उन का कत्ल न कर दे।

^२ यह आदमी कौन था? कुछ के करीब यह फिरऔन के बंश से था जो छिपे तौर से हज़रत मूसा का शुभचिन्तक (खैरख्वाह) था, और साफ़ बात है कि सरदारों के ख्यालों की खबर ऐसे ही आदमी से आना ज़्यादा अनुमानित (मुनासिब) बात है, कुछ के करीब यह हज़रत मूसा का रिश्तेदार और इस्राईली था। दूर के किनारे से मुराद मुन्फ़ है जहाँ फिरऔन का महल और राजधानी थी और यह नगर के आखिरी सिरे पर था।

चला जा, मुझे अपना शुभचिन्तक (खैरख्वाह) मान।

२१. इसलिए मूसा वहाँ से डर कर बचते-बचते निकल भागे, कहने लगे हे रब! मुझे जालिमों के गुट से बचा ले।

२२. और जब 'मदयन' की तरफ जाने लगे तो कहने लगे कि मुझे यकीन है कि मेरा रब मुझे सीधा रास्ता ले चलेगा।

२३. और 'मदयन' के पानी पर जब आप पहुँचे तो देखा कि लोगों का एक समूह वहाँ पानी पिला रहा है^१ और दो महिलायें (औरतें) अलग खड़ी (अपने जानवरों को) रोकती हुई दिखाई दी, पूछा कि तुम्हारा क्या मसला है, वे बोली कि जब तक ये चरवाहे वापस न लौट जायें हम पानी नहीं पिलाते और हमारे पिता बहुत बूढ़े हैं।

२४. इसलिए आप ने खुद उन (जानवरों) को पानी पिला दिया फिर छाया की तरफ हट आये और कहने लगे हे रब ! तू जो कुछ भलाई मेरी तरफ उतारे मैं उस का मुहताज हूँ^२

فَخَرَجَ مِنْهَا خَائِفًا يَتَرَقَّبُ ۚ قَالَ رَبِّ نَجِّنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿٢١﴾

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ ۖ قَالَ عَلَىٰ رَبِّيَ إِنِّي مُهَيَّبٌ سِوَاءَ السَّبِيلِ ﴿٢٢﴾

وَلَمَّا وَرَدَ مَاءَ مَدْيَنَ ۖ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةٌ مِنَ النَّاسِ يَسْقُونَ ۖ وَوَجَدَ مِنْ دُونِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُودَانِ ۗ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ۗ قَالَتَا لَا نَسْقِي حَتَّىٰ يُصَدِرَ الرِّعَاءَ ۖ وَأَبُونَا شَيْخٌ كَبِيرٌ ﴿٢٣﴾

فَسَقَى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلَّىٰ إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ ﴿٢٤﴾

^१ यानी जब मदयन पहुँचे तो देखा कि उस के घाट (कुएँ) पर लोगों की भीड़ है, जो अपने जानवरों को पानी पिला रहे हैं। मदयन यह कबीले (प्रजाति) का नाम था और हज्रत इब्राहीम की औलाद में से था, जब कि हज्रत मूसा याकूब के खानदान से थे जो हज्रत इब्राहीम के पोते (हज्रत इसहाक के बेटे) थे। इस तरह मदयनवासियों और मूसा के बीच खानदानी सम्बन्ध भी था। (ऐसरूतफासीर) और यही हज्रत सुऐब का निवास स्थान (मकाम) और नवअत (दूतत्व) का इलाका भी था।

^२ हज्रत मूसा इतनी लम्बी यात्रा (सफर) करके मिस्र से मदयन पहुँचे थे, खाने के लिए कुछ नहीं था जबकि यात्रा की थकान और भूख से निदान था। अतः जानवरों को पानी पिलाकर एक पेड़ की छाया में आकर दुआ करने लगे। खैर कई बातों के लिए इस्तेमाल किया जाता है, खाने के लिये, अच्छे कर्मों के लिये, इबादत के लिये, राकत, बल और माल के लिये। (ऐसरूतफासीर) यहाँ इसका इस्तेमाल खाने के लिये हुआ है, यानी मुझे इस बस्त खाने की जरूरत है।

२५. इतने में उन दोनों औरतों में से एक उन की तरफ शर्म के साथ चलती हुई आयी और कहने लगी कि मेरे पिता आप को बुला रहे हैं ताकि आप ने जो हमारे (जानवरों) को पानी पिलाया है उस की उजरत दें, जब (हज़रत मूसा) उन के पास पहुँचे और उन से अपनी सारी कहानी सुनाई तो वह कहने लगे कि अब न डर, तूने ज़ालिम (अत्याचारी) कौम से छूटकारा पा लिया।

२६. उन दोनों में से एक ने कहा कि हे पिताजी! आप इन्हें मजदूरी पर रख लीजिए क्योंकि जिन्हें आप मजदूरी पर रखें उन में से सब से अच्छा वह है जो बलवान (ताक़तवर) और ईमानदार हो।

२७. उस (बूढ़े) ने कहा कि मैं अपनी इन दो बेटियों में से एक को आप के विवाह में देना चाहता हूँ, इस [महर (स्त्रीधन)] पर कि आप आठ साल तक मेरा काम-काज करें। हाँ अगर आप दस साल तक करें तो यह आप की तरफ से एहसान के तौर पर है, मैं कभी यह नहीं चाहता कि आप पर किसी तरह का कष्ट डालूँ। अल्लाह को कुबूल हुआ तो आगे चलकर आप मुझे भला इंसान पायेंगे।

२८. (मूसा عليه السلام ने) कहा कि ठीक है यह बात तो मेरे और आप के बीच मुकरर (निर्धारित) हो गयी, मैं इन दोनों मुद्दतों में से जिसे पूरा कर लूँ मुझ पर जुल्म न हो। हम यह जो कुछ कह रहे हैं उस पर अल्लाह (गवाह और) निगारा है।

فَصَبَّأَتْهُ إِصْدَاهُمَا تَشْفِي عَلَى اسْتِحْيَاءٍ قَالَتْ إِنَّ
أَبِي يُدْعُوكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا سَقَيْتَ لَنَا فَلَمَّا
جَاءَهُ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ قَالَ لَا تَخَفْ نَجَوْتَ
مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ (25)

قَالَتْ إِحْدَاهُمَا يَا أَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ إِنَّ خَيْرَ
مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِينُ (26)

قَالَ إِنِّي أُرِيدُ أَنْ أَكْفِكَ إِحْدَى ابْنَتِي هَاتَيْنِ
عَلَى أَنْ تَأْجُرَنِي ثَمَنِي حَسْبِيَ ۖ وَإِنْ أَتَيْتَ عَشْرًا
ثَمَنِي مِنْ عِنْدِكَ ۖ وَمَا أُرِيدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۗ
سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللَّهُ مِنَ الطَّيِّبِينَ (27)

قَالَ ذَلِكَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ ۖ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتَ
فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ وَاللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ (28)

२९. जब (हजरत) मूसा (عليه السلام) ने मुद्दत पूरी कर ली और अपने परिवार वालों को लेकर चले तो तूर नाम के पहाड़ की तरफ आग देखी, अपनी पत्नी से कहने लगे, ठहरो ! मैंने आग देखी है, ज्यादा मुमकिन है कि मैं वहाँ से कोई खबर लाऊँ या आग का कोई अंगारा लाऊँ ताकि तुम ताप लो ।

३०. इसलिए जब वहाँ पहुँचे तो उस मुबारक धरती के मैदान के दायें किनारे के पेड़ में से आवाज दी गयी कि हे मूसा! बेशक मैं ही अल्लाह हूँ सारी दुनिया का रब ।

३१. और यह (भी आवाज आयी) कि अपनी छड़ी डाल दे, फिर जब उसे देखा कि वह साँप की तरह फनफना रही है, तो पीठ फेर कर वापस हो लिये और मुड़कर मुँह भी नहीं किया, हम ने कहा कि हे मूसा ! आगे आ भयभीत (खौफज़दा) न हो, बेशक तू हर तरह से शान्ति वाला (सुरक्षित) है ।'

३२. अपने हाथ को अपनी जेब में डाल वह बिना किसी प्रकार के दाग के पूरा सफेद चमकता हुआ निकलेगा, और डर से वचने के लिए अपनी वाँह अपनी तरफ मिला ले । बस ये दोनों भोजिजे तेरे रव की तरफ से है फिरऔन

فَلَمَّا قَضَىٰ مُوسَىٰ الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهِ آنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّورِ نَارًا ۖ قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوا إِنِّي آنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّي آتِيكُمْ مِنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ مِنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُونَ ﴿٢٩﴾

فَلَمَّا أَنهَا لُؤدَىٰ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبْرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَن يَمُوسَىٰ إِنِّي أَنَا اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٠﴾

وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَلَمَّا رَآهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَانٌّ وَلَّىٰ مُدَبِّرًا ۖ وَلَمْ يَعْقِبْ طِيَمُوسَىٰ أَقْبَلْ وَلَا تَخَفْ عَدَاتِكَ مِنَ الْأُمِّيِّينَ ﴿٣١﴾

أَسْلُكُ يَدَكَ فِي جَيْبِكَ تَخْرُجُ بَيْضًا مِنْ غَيْرِ سُوءٍ ۖ وَأَضْمُ لِيكَ يَدَكَ مِنَ النَّارِ فَنُذِرُكَ بِرُهَانِنِ مِنْ رَبِّكَ إِلَىٰ فُؤُوعُونَ ۖ وَمَلَأْنَاهُ بِرُهَانِهِمْ كَأَنَّهُمْ قَوْمًا أَلْفِينِ ﴿٣٢﴾

' यह मूसा (عليه السلام) का वह भोजिजा है जो तूर पहाड़ पर नबूअत से सुशोभित (सरफराज) किये जाने के बाद उन्हें मिला, चूँकि भोजिजा आदत (व्यवहार) के खिलाफ मामले को कहा जाता है यानी जो सामान्य (आम) आदत और जाहिरी असवाव (साधनों) के खिलाफ हो, ऐसी बात चूँकि अल्लाह के हुक्म और मर्जी से जाहिर होती है किसी इंसान की ताकत से नहीं चाहे वह बुजुर्ग पैगम्बर और निकटवर्ती (मुकर्रब) नवी ही क्यों न हो । इसलिए जब मूसा के अपने हाथ की लाठी धरती पर फेंकने से चलती, दौड़ती और फूँकारती साँप बन गई तो हजरत मूसा भी डर गये, जब अल्लाह ने बताया और तमल्ली दी तो हजरत मूसा का डर खत्म हुआ और यह वाजेह हुआ कि अल्लाह तआला ने सच्चाई के सचूत के तौर पर यह भोजिजा उन्हें अता किया है ।

और उस के गुट की तरफ, बेशक वे सब के सब नाफरमानी करने वाले नाफरमान लोग हैं।

३३. (मूसा عليه السلام ने) कहा कि हे ख ! मैंने उनका एक आदमी मार दिया था, अब मुझे डर है कि वे मुझे भी मार डालेंगे।

३४. और मेरा भाई हारून मुझे से ज्यादा साफ जवान वाला है, तू उसे भी मेरा सहायक (मददगार) बनाकर मेरे साथ भेज कि वह मुझे सच्चा माने, मुझे तो डर है कि वे सब मुझे झूठला देंगे।

३५. (अल्लाह तआला ने) कहा कि हम तेरे भाई के जरिये तुझे मजबूत बानू अता करेंगे और तुम दोनों को प्रभावशाली (गालिब) करेंगे तो फिर औनी तुम तक पहुँच ही न सकेगा। हमारी निशानियों के सबब तुम दोनों और तुम्हारे पैरोकार ही कामयाब रहेंगे।

३६. इसलिए जब उन के पास मूसा عليه السلام हमारे दिये हुए खुले मोजिजे लेकर पहुँचे तो वे कहने लगे कि यह तो केवल गढ़ा-गढ़ाया जादू है, हम ने अपने पहलों के जमाने में कभी यह नहीं सुना।

३७. और (हजरत) मूसा कहने लगे मेरा ख उसे अच्छी तरह जानता है जो उस के पास की हिदायत लेकर आता है, और जिस के लिए आखिरत का अच्छा अंजाम (परिणाम) होता है। बेशक जालिमों का भला न होगा।

قَالَ رَبِّ إِنِّي قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ
أَنْ يُقْتُلُونِ (33)

وَإِنِّي خَشِيتُ هُوَ أَفْضَحُ مِنِّي لِسَانًا فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ
رِدْءًا يُصَدِّقُنِي إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ (34)

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا
سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُونَ إِلَيْكُمَا بِأَيِّتِنَا إِنَّنَا وَوَعْدُ
الَّذِينَ الْغٰلِبُونَ (35)

فَلَمَّا جَاءَهُمْ مُوسَى بِأَيَّتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا
مَا هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَمَا سَعَيْنَا بِهِ
عِنَّا إِنَّا إِنَّا الْأَوَّلِينَ (36)

وَقَالَ مُوسَى رَبِّي أَعْلَمُ بِمَنْ جَاءَ بِالْهُدَى
مِنْ عِنْدِهِ وَمَنْ تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ
إِنَّهُ لَا يُغْلِبُ الظَّالِمُونَ (37)

1 अच्छे अंजाम (परिणाम) से मुराद आखिरत में अल्लाह की खुशी और उस की माफी और रहमत के मुस्तहिक हो जाना है, और यह सौभाग्य (खुशनसीबी) केवल एकेस्वरवादियों (तौहीद वालों) के हिस्से में आयेगा।

३८. और फिरऔन कहने लगा कि हे दरबारियो! मैं तो अपने सिवाय किसी को तुम्हारा माबूद नहीं जानता। सुन, हे हामान ! तू मेरे लिए मिट्टी को आग में पकवा, फिर मेरे लिए एक महल तैयार कर तो मैं मूसा के इलाह (देवता) को झाँक लूँ, उसे मैं तो झूठों में से ही समझ रहा हूँ।

३९. उस ने और उस की सेना ने नाहक देश में घमण्ड किया,^१ और समझ लिया कि हमारी तरफ लौटाये ही नहीं जायेंगे।

४०. आखिर में हम ने उसे और उस की सेना को पकड़ लिया और समुद्र में डूबो दिया, अब देख ले कि उन जालिमों का अंजाम कैसा कुछ हुआ?

४१. और हम ने उन्हें ऐसे अगुवा बना दिये कि लोगों को नरक की ओर बुलायें और क्र्यामत के दिन भी मदद न किये जायें।

४२. और हम ने इस दुनिया में भी उन के पीछे अपनी लानत लगा दिया, और क्र्यामत के दिन भी वह बुरी हालत वाले लोगों में से होंगे।

४३. और उन अगले जमाने के लोगों को हलाक करने के बाद हम ने मूसा को ऐसी किताब अता की जो लोगों के लिए दलील और हिदायत और रहमत (कृपा) होकर आयी थी ताकि वे नसीहत हासिल कर लें।

४४. और तूर की पश्चिमी दिशा की तरफ जब कि हम ने मूसा को हुकम की बह्यी (प्रकाशना) पहुँचायी थी, न तो तू मौजूद था न तू देखने वालों में से था।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا أَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِنْ إِلَهِ غَيْرِي فَأَوْقِدْ لِي يَا مَلِكُ مِنْ عَلَى الطِّينِ فَاجْعَلْ لِي صَرْحًا نَعْلِمُ أَطَّلِعُ إِلَى إِلَهِ مُوسَى وَإِنِّي لأظنُّهُ مِنَ الْكَاذِبِينَ ﴿٣٨﴾

وَأَسْتَكْبِرُ هُوَ وَجُودُهُ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوا أَنَّهُم إِلَهَانَا لَا يُرْجَعُونَ ﴿٣٩﴾

فَأَخَذْنَاهُ وَجُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ فَأَنْظَرَ كَيْفَ كَانُ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾

وَجَعَلْنَاهُمْ آيَةً يُدْعُونَ إِلَى الْتَارِكِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يَنْصُرُونَ ﴿٤١﴾

وَاتَّبَعْنَاهُمْ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ هُمْ مِنَ الْمَقْبُوحِينَ ﴿٤٢﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِ مَا أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ الْأُولَى بَصَائِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٣﴾

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْعُرْبِ إِذْ فَضَيْنَا إِلَى مُوسَى الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٤٤﴾

^१ धरती से-सुराद मिस्र की धरती है जहाँ फिरऔन राज्य करता था और घमण्ड का मतलब बिना हक के अपने को ऊँचा समझना है, यानी उन के पास कोई सबूत ऐसा न था जो मूसा की दलीलों और मौजिजो का खण्डन (तरदीद) कर सकता, लेकिन घमण्ड बल्कि दुश्मनी का प्रदर्शन (इज़हार) करते हुए उन्होंने हठधर्मी और इक्बर का रास्ता अपनाया।

४५. लेकिन हम ने बहुत सी नसलों को पैदा किया' जिन पर लम्बी मुदत गुजर गयी, और न तू मदयन का रहने वाला था कि उन के सामने हमारी आयतों का पाठ करता, बल्कि हम ही रसूलों को भेजने वाले रहे।

४६. और न तू तूर की तरफ था जबकि हम ने आबाज दी बल्कि यह तेरे रब की तरफ से एक रहमत है, इसलिए कि तू उन लोगों को सतर्क (आगाह) कर दे जिन के पास तुझ से पहले कोई डराने वाला नहीं पहुँचा,^१ क्या ताज्जुब कि वह नसीहत हासिल कर लें।

४७. और अगर ये बात न होती कि उन्हें उन के अपने हाथों आगे भेजे हुए कर्मों (आमाल) के सबब कोई तकलीफ पहुँचती तो यह कह उठते कि हे हमारे रब! तुने हमारी तरफ कोई रसूल क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का पालन करते और ईमान वालों में हो जाते।

४८. फिर जब उन के पास हमारी तरफ से सच आ पहुँचा, तो कहते हैं कि यह वह क्यों नहीं दिया गया जैसे दिये गये थे मूसा। अच्छा, तो क्या मूसा को इस से पहले जो कुछ दिया गया था उस के साथ लोगों ने कुफ्र (इंकार) नहीं किया था? (खुलकर) कहा था कि ये दोनों जादूगर हैं, जो एक-दूसरे के मददगार हैं और हम तो उन सब को इंकार करने वाले हैं।

وَلِكَيْ نَشَاءَ نُفُورًا فَمَا عَلِيمُ الْعُمَمِ
وَمَا كُنْتَ تَأْوِي إِلَىٰ أَهْلِ مَدْيَنَ تَتَكَلَّمُ عَلَيْهِمْ
إِنِّيْنَا وَلِكَيْ نَكْفُرًا مَّرِيئِينَ ﴿٤٥﴾

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّورِ إِذْ نَادَيْنَا وَلَكِنْ رَحْمَةً
مِّن رَّبِّكَ لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَنهَمُ مِنْ لَّدُنِّي مَن
قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٦﴾

وَلَوْلَا أَن تُصِيبَهُمُ مُصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمْتِ لِأَنفُسِهِمْ
لَيَقُولُوا رَبَّنَا لَوْلَا أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُولًا فَنُذِّقَنَّ
إِنِّيْنَا وَنَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٧﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا لَوْلَا أُوتِيَ
مُوسَىٰ مَا أُوتِيَ مُوسَىٰ ۗ أَوْ لَوْلَا يَكْفُرُوا بِمَا أُوتِيَ
مُوسَىٰ مِنْ قَبْلُ ۗ قَالُوا سِحْرَانِ تَظَاهَرَا ۗ وَقَالُوا
إِنَّا بِحُجَّتِكُمْ كَافِرُونَ ﴿٤٨﴾

^१ فُرُونَ (कुरून) बहुवचन (जमा) है। فُرُونَ (कर्न) का, जिसका मतलब है युग (जमाना)। लेकिन यहाँ नसलों, जमाजतों के मतलब में है, यानी हे मोहम्मद (ﷺ) आप के और मूसा के बीच जो जमाना है उस में हम ने कई सम्प्रदाय पैदा किये।

^२ इस से मुराद मक्कावासी और अरब है जिनकी तरफ नबी ﷺ से पहले कोई नबी नहीं आया, क्योंकि हजरत इब्राहीम के बाद नबूवत का सिलसिला इब्राहीम के परिवार ही में रहा और उनका नुजूल इस्राईल की औलाद की तरफ ही होता रहा। इस्राईल की औलाद यानी अरबों में नबी ﷺ पहले नबी थे और नबूवत के सिलसिले को पूरा करने वाले थे।

५९. कह दीजिए कि अगर सच्चे हो तो तुम भी अल्लाह के पास से कोई ऐसी किताब ले आओ जो इन दोनों से ज्यादा हिदायत वाली हो, मैं उसी की इत्तेबा करूँगा।

५०. फिर अगर ये तेरी न मानें तो तू यकीन कर ले कि यह केवल अपनी इच्छाओं (ख्वाहिशों) की पैरवी कर रहे हैं और उस से ज्यादा भटका हुआ कौन है जो अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ा हुआ हो बिना अल्लाह की हिदायत के? बेशक अल्लाह तआला जालिम लोगों को हिदायत नहीं देता।

५१. और हम मुसलसल लोगों के लिए अपना कलाम (वाणी) भेजते रहे ताकि वे शिक्षा ग्रहण (नसीहत हासिल) कर लें।

५२. जिस को हम ने इस से पहले किताब अता की वह तो इस पर ईमान रखते हैं।

५३. और जब (उसकी आयतें) उन के सामने पढ़ी जाती हैं तो वे यह कह देते हैं कि इस के हमारे रब की तरफ से सच होने पर हमारा ईमान (विश्वास) है, हम तो इस से पहले ही मुसलमान हैं।^१

قُلْ فَأَنذِرُوا بِكِتَابِ اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ وَإِنَّهَا أَكْبَرُ
أَن تَجْعَلُوهَا مِن دُونِ اللَّهِ حُجُجًا ۝٤٩

فَإِن لَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكَ فَاعْلَمْ أَنكَ أَكْبَرُ الْأَسْبَاطِ
أَهْوَاءَهُمْ وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن اتَّبَعَ هَوَاهُ بِغَيْرِ
هُدَىٰ مِنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الظَّالِمِينَ ۝٥٠

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُونَ ۝٥١

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ
يُؤْمِنُونَ ۝٥٢

وَإِذَا نُنزلُ عَلَيْهِمْ قَالُوا آمَنَّا بِهِ إِنَّهُ الْحَقُّ
مِن رَّبِّنَا إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهِ مُسْلِمِينَ ۝٥٣

^१ इस से मुराद वे यहूदी हैं जो मुसलमान हो गये थे, जैसे अब्दुल्लाह बिन सलाम बगैरह, या वे इसाई हैं जो इथोपिया से नबी ﷺ की सेवा में आये थे और आप के पाक मुंह से कुरआन करीम सुन कर मुसलमान हो गये थे। (इब्ने कसीर)

^२ यह उसी हकीकत की तरफ इशारा है जिसे कुरआन करीम में कई जगहों पर बयान किया गया है कि हर जमाने में अल्लाह के पैगम्बरों ने जिस धर्म का प्रचार (तब्लीग) किया है, वह इस्लाम ही था और उन नबियों की दावत पर ईमान लाने वाले मुसलमान ही कहलाते थे। यहूदी या इसाई बगैरह के कलिमात लोगों के अपने गढ़े हुए हैं जिन की खोज बाद में हुई। इसी बुनियाद पर नबी करीम ﷺ पर ईमान लाने वाले अहले किताब (यहूद या इसाईयो) ने कहा कि हम तो पहले से ही मुसलमान चले आ रहे हैं यानी पहले के नबियों के मानने वाले और उन पर ईमान रखने वाले हैं।

५४. यह अपने किये हुए सब के बदले में दो गुने बदले अता किये जायेंगे, यह नेकी से गुनाह को दूर कर देते हैं और हम ने जो इन्हें दे रखा है उस में से देते रहते हैं।

५५. और जब बेकार बात कान में पड़ती है तो उस से अलग हो लेते हैं और कहते हैं कि हमारे अमल हमारे लिए और तुम्हारे अमल तुम्हारे लिए, तुम पर सलाम हो, हम जाहिलों से (उलझना) नहीं चाहते।

५६. आप जिसे चाहें हिदायत नहीं दे सकते, बल्कि अल्लाह तआला ही जिसे चाहे हिदायत देता है। हिदायत पाये लोगों को वही अच्छी तरह जानता है।

५७. और कहने लगे कि अगर हम आप के साथ होकर हिदायत के पैरोकार बन जायें तो हम अपने देश से उचक लिये जायें, क्या हम ने उन्हें शान्त और महफूज और शान्ति-सम्मान (हरमत) वाले 'हरम' में जगह नहीं दिया, जहाँ हर तरह के फल खिंचे चले आते हैं जो हमारे पास से रिज़क के रूप में हैं? लेकिन उन में से ज्यादातर कुछ नहीं जानते।

५८. और हम ने बहुत सी बे वस्तियाँ हलाक कर दी जो अपनी सुख-सुविधा में इतराने लगी थी। यह है उन के निवास स्थान जो उन के बाद बहुत ही कम आबाद किये गये, और हम ही हैं अन्ततः (आखिरकार) सब कुछ के वारिस।

أُولَئِكَ يُؤْتُونَ أَعْرَهُمْ مَرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوا
وَيَذَرُونَ بِالْحَصَنَةِ السَّهْمَةَ وَمِمَّا
رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ ﴿٥٤﴾

وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوا عَنْهُ وَقَالُوا لَنَا
أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ
لَا نَبْتَغِي الْجَاهِلِينَ ﴿٥٥﴾

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ﴿٥٦﴾

وَقَالُوا إِن نُّبْعِ الْهُدَى مَعَكَ نَتَّخِظُ مِنْ
أَرْضِنَا أَوْ لَمْ نُكُنْ لَهُمْ حَرَمًا أَمَا يُبْصِرُ
إِلَيْهِ كُفْرَتُ كُلِّ قَوْمٍ وَرُؤُفَا مِنْ لَدُنَّا
وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَوْمٍ يَبْتَغُونَ مَعِيشَتَهُمْ مِنْ
مَالِكِهِمْ لَوْ نَسَبْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيلًا
وَلَكِنَّا نَحْنُ الْوَارِثِينَ ﴿٥٨﴾

1 यह सलाम एहतेराम वाला सलाम नहीं है बल्कि पीछा छुड़ाने वाला सलाम है, यानी हम तुम जैसे जाहिल नासमझ इंसानों से वातचीत करने को तैयार ही नहीं, जैसे हिन्दी में कहते हैं, "जाहिलों को दूर से सलाम", वाजेह है सलाम से मुराद बातचीत को टालना ही है।

2 यह मक्का नगर की वह फजीलत है जिसका हर साल लाखों हाजी और उमरा करने वाले प्रत्यक्ष दर्शन (मुशाहिदा) करते हैं कि मक्का नगर में पैदावार न होने के बावजूद ज्यादा तादाद में हर तरह के फल बल्कि दुनिया भर के सामान सुलभ (मुहय्या) होते हैं।

५९. और तेरा रब किसी एक बस्ती को भी उस वक़्त तक हलाक नहीं करता, जब तक कि उन की किसी बड़ी बस्ती में अपना कोई पैगम्बर न भेज दे जो उन्हें हमारी आयतें पढ़कर सुना दे, और हम बस्तियों को उस वक़्त हलाक करते हैं जब कि वहाँ के रहने वाले ज़ालिम हो जायें।

६०. और तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह केवल दुनियावी ज़िन्दगी का सामान है और उसकी जीनत (शोभा) है, हाँ, अल्लाह के पास जो है वह सब से अच्छा और बाकी रहने वाला है, क्या तुम नहीं समझते?

६१. क्या वह इंसान जिसे हम ने अच्छा वादा दिया है जिस को वह निश्चित (यकीनी) रूप से पाने वाला है, उस इंसान के बराबर हो सकता है जिसे हम ने दुनियावी ज़िन्दगी के कुछ सुख यूँ ही अता कर दिये, दोबारा आखिर में वह क़यामत के दिन (पकड़ा बाँधा) हाज़िर किया जायेगा?

६२. और जिस दिन अल्लाह (तआला) उन्हें पुकार कर कहेगा कि तुम जिन्हें अपनी समझ से मेरा साझीदार ठहरा रहे थे कहाँ है?

६३. जिन पर बात आ चुकी वे जवाब देंगे कि हे हमारे रब! यही वे हैं जिन्हें हम ने बहका रखा था, हम ने उन्हें इसी तरह भटकाया जिस तरह हम भटके थे, हम तेरी सेवा में अपने आप को इन से अलग करते हैं, यह हमारी इबादत नहीं करते थे।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ حَتَّىٰ يَبْعَثَ
فِي أُولَٰئِكَ رَسُولًا يَتْلُو عَلَيْهِم آيَاتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا
مُهْلِكِي الْقُرَىٰ إِلَّا وَأَهْلُهَا ظَالِمُونَ ﴿٥٩﴾

وَمَا أَوْتَيْنَاكُمْ قُرْآنًا شَيْءًا فَسْتَأْجِلُوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
وَزَيَّنَّهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ أَفْكَارًا
تَعْمَلُونَ ﴿٦٠﴾

أَفَمَنْ وَعَدْنَاهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيهِ كَمَنْ
مَتَّعْنَاهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
مِنَ الْمُحْضَرِينَ ﴿٦١﴾

وَيَوْمَ يَنَادِيهِمْ فَيَقُولُ لِمَنْ شُرَكَاءِي الَّذِينَ
كُنْتُمْ تَزْعُمُونَ ﴿٦٢﴾

قَالَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هَٰؤُلَاءِ
الَّذِينَ آغْوَيْنَا ۖ آغْوَيْنَاهُمْ كَمَا آغْوَيْنَا ۖ فَزَيَّنَّا
لَهُم مَّا كَانُوا إِتَابًا يَعْبُدُونَ ﴿٦٣﴾

1 यह उन जाहिल लोगों की तरफ़ इशारा है जिन को कुफ़्र और गुमराही के प्रचारकों और शैतानों ने भटका दिया था।

६४. और कहा जायेगा कि अपने साझीदारों को बुलाओ तो वे बुलायेंगे, लेकिन वे उन्हें जवाब तक नहीं देंगे और सब अजाब देख लेंगे, काश् ये लोग हिदायत पा लेंगे !

६५. और उस दिन उन्हें बुलाकर पूछेगा कि तुम ने नदियों को क्या जवाब दिया था?!

६६. फिर तो उस दिन उन के सारे समाचार (अखबार) अंधे हो जायेंगे और एक-दूसरे से सवाल तक न करेंगे ।

६७. हाँ, जो इसान माफ़ी माँग कर ईमान ले आये और नेकी के काम करे, यकीन है कि वह कामयाबी हासिल करने वालों में से हो जायेगा ।

६८. और आप का रव जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है उन में से चुन लेता है, किसी को कोई हक़ नहीं, अल्लाह के लिए ही पाकी है, वह ऊँचा है हर उस चीज़ से जिसे लोग साझा करते हैं ।

६९. और आप का रव सब कुछ जानता है जो कुछ वे अपने सीने में छिपाते हैं और जो कुछ जाहिर करते हैं ।

وَقِيلَ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوا يَهْتَدُونَ ﴿٦٤﴾

وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ فَيَقُولُ مَاذَا أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِينَ ﴿٦٥﴾

فَعَصَيْتُمْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَاءَ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَاءَلُونَ ﴿٦٦﴾

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَآمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَغُفِرَ إِنَّ يُكَفِّرُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٧﴾

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَيَخْتَارُ مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ سُبْحَانَ اللَّهِ وَعَلَى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ وَمَا يُعْلِنُونَ ﴿٦٩﴾

' इस से पहले की आयतों (मंत्रों) में तौहीद से सम्बन्धित (मुतअल्लिक) सवाल था । यह दूसरा एलान रिस्सालत के बारे में है यानी तुम्हारी तरफ हम ने रसूल भेजे थे, तुम ने उन के साथ क्या सुलूक किया, उन की दावत क़बूल किया था? जिस तरह क़ब्र में सवाल होता है कि तेरा पैगम्बर कौन है और तेरा दीन कौन सा है? ईमान वाले तो ठीक जवाब दे देते हैं लेकिन काफ़िर कहता है *عَادَاءٌ لِّأَدْرِي* (हाय! भुझे तो कुछ मालूम नहीं) । उसी तरह क़यामत के दिन भी उन्हें इस सवाल का जवाब समझ में न आयेगा । इसीलिए आगे फ़रमाया उन पर सभी ख़बरें अंधी हो जायेंगी यानी कोई दलील उनकी समझ में न आयेगी जिसे वे पेश कर सकें, यहाँ दलीलों को ख़बरों से मुकाबला कर के इस तरफ़ इशारा किया गया है कि उनके झूठे ईमान के लिए हकीकत में उन के पास कोई दलील है ही नहीं सिर्फ़ कहानियाँ और कहावतें हैं, जैसे आज भी क़ब्र पूजकों के पास मनगढ़न्त मोज़िज़ों की कहानियों के सिवाय कुछ भी नहीं ।

७०. और वही अल्लाह है उस के सिवाय इबादत के लायक कोई दूसरा नहीं, दुनिया और आखिरत में उसी की तारीफ है, उसी के लिए हुक्म है और उसी की तरफ तुम सब लौटाये जाओगे।

७१. कह दीजिए कि देखो तो सही, अगर अल्लाह तआला रात ही रात क़यामत तक मुसल्लसल कर दे तो सिवाय अल्लाह के कौन माबूद है जो तुम्हारे पास दिन का प्रकाश (रौशनी) लाये? क्या तुम सुनते नहीं हो?

७२. पूछिये कि यह भी बता दो कि अगर अल्लाह (तआला) तुम पर लगातार क़यामत तक दिन ही दिन रखे तो भी सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई माबूद है जो तुम्हारे पास रात लाये, जिस में तुम आराम कर सको, क्या तुम देख नहीं रहे हो?

७३. और उसी ने तो तुम्हारे लिए अपनी रहमत और मेहरबानी (दया) से दिन-रात मुक़रर कर दिये हैं कि रात को तुम आराम कर सको और दिन में उस की (भेजी हुई) रोज़ी की खोज करो! यह इसलिए कि तुम शुक्रिया अदा करो।

७४. और जिस दिन उन्हें पुकार कर अल्लाह (तआला) कहेगा कि जिन्हें तुम मेरा साझीदार समझते थे वे कहाँ हैं?

وَهُوَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ط لَهُ الْعَصْدُ فِي الْأُولَى
وَالْآخِرَةِ ط وَ لَهُ الْحُكْمُ وَالْيَوْمُ يُرْجَعُونَ ⑦①

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا
إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ
بِضِيَاءٍ ط أَفَلَا تَسْمَعُونَ ⑦②

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا
إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ
بِلَيْلٍ ط تَسْكُنُونَ فِيهِ ط أَفَلَا تُبْصِرُونَ ⑦③

وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا
فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ط وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑦④

وَيَوْمَ يناديهم فيقول أَيْنَ شركاءى الذين
كنتم تزعمون ⑦⑤

1 दिन और रात, यह दोनों अल्लाह के बहुत बड़े वरदान (इंआम) से हैं, रात को अंधेरी बनाकर लोगों के लिए आराम का वक़्त अता किया, इस अंधेरे की वजह सारी सृष्टि (मख़लूक) सोने और आराम करने के लिए मजबूर है, वरना अगर आराम करने और सोने के अपने-अपने वक़्त होते तो कोई भी पूरी तरह से सोने का भीक़न न पाता, जबकि कारोबार और व्यवहार (तिज़ारत) को अच्छे ढंग से चलाने के लिए नींद का पूरा होना बहुत ज़रूरी है, इस के बिना चुस्ती हासिल नहीं होती।

७५. और हम हर उम्मत से एक गवाह अलग कर लेंगे। और कह देंगे कि अपनी दलील पेश करो, तो उस वक़्त जान लेंगे कि सच अल्लाह की तरफ है और जो कुछ झूठ वे गढ़ रहे थे सब उन के पास से खो जायेंगे।

७६. क़ारून था तो मूसा की क्रौम से, लेकिन उन पर ज़ुल्म करने लगा था, हम ने उसे इतना ज़्यादा खज़ाना दे रखा था कि कई-कई शक्तिशाली लोग कठिनाई से उसकी चाभियाँ उठा सकते थे। एक बार उस की क्रौम ने उस से कहा कि इतरा मत, अल्लाह (तआला) इतराने वालों से मुहब्बत नहीं करता।

७७. और जो कुछ अल्लाह (तआला) ने तुझे अता कर रखा है उस में से आखिरत के घर की खोज भी रख और अपने दुनियावी हिस्से को भी न भूल, और जैसाकि अल्लाह ने तेरे ऊपर एहसान किया है तू भी अच्छा सुलूक कर और देश में फ़साद की इच्छा न कर, यकीन कर कि अल्लाह तआला फ़सादियों से मुहब्बत नहीं रखता है।

७८. क़ारून ने कहा कि यह सब कुछ मुझे मेरे अपने इल्म के सबब दिया गया है, क्या अब तक उसे यह नहीं मालूम हुआ कि अल्लाह (तआला) ने उस से पहले बहुत सी बस्ती वालों को हलाक कर दिया, जो उस से ज़्यादा शक्तिशाली और ज़्यादा धनवान थे,^१ और

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا فَقُلْنَا هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوا أَنَّ الْحَقَّ لِلَّهِ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٧٥﴾

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مَوْسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَأَتَيْنَاهُ مِنَ الْكُنُوزِ مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوءُ بِالْعُصْبَةِ أُولَى الْقُوَّةِ إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ﴿٧٦﴾

وَابْتَغِ فِيمَا آتَاكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ ۖ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ ﴿٧٧﴾

قَالَ إِنَّمَا أُوتِيْتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ عِنْدِي ۗ وَأَوَّلَمَ يَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهِ مِنَ الْقُرُونِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَأَكْثَرُ جَعْلًا ۗ وَلَا يَسْتَلْ عَنْ دُورِهِمْ الْمُجْرِمُونَ ﴿٧٨﴾

^१ इस गवाह से मुराद पैगम्बर हैं, यानी हर उम्मत के पैगम्बर को उस उम्मत से अलग खड़ा कर देंगे।

^२ यानी क़ूवत और माल की ज़्यादाती यह फ़ज़ीलत का सबब नहीं, अगर ऐसा होता तो पहले के लोग हलाक (नष्ट) न होते। इसलिए क़ारून का अपने धन पर घमण्ड करने और उसे अपनी फ़ज़ीलत का सबब बताने का कोई औचित्य (जवाज़) नहीं।

मुजरिमों से उन के गुनाहों की पूछताछ ऐसे वक़्त नहीं की जाती ।¹

७९. इसलिए (क्रारून) पूरी ज़ीनत के साथ अपनी कौम के जमघट में निकला,² तो दुनियावादी जिन्दगी के मतवालों ने कहा कि काश हमें किसी तरह वह मिल जाता जो क्रारून को दिया गया है, यह तो बड़ा ही नसीब वाला है ।

८०. और आलिम लोग उन्हें समझाने लगे कि अफसोस की बात है, अच्छी चीज़ तो वह है जो नेकी के रूप में उन्हें मिलेगी जो अल्लाह पर ईमान लाये और नेकी के काम करें ।³ यह बात उन्हीं के दिल में डाली जाती है जो धैर्यवान (सब्र करने वाले) और सहनशील (वर्दास्त करने वाले) हों ।

८१. (आखिरकार) हम ने उसे उस के महल के साथ धरती से धंसा दिया, और अल्लाह के सिवाय कोई गिरोह उसकी मदद के लिए तैयार नहीं हुआ न वह खुद अपने को बचाने वालों में से हो सका ।

فَخَرَجَ عَلَى قَوْمِهِ فِي زِينَتِهِ ۖ قَالَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا لَبِيتَ لَنَا وَمِثْلَ مَا أُوتِيَ قَارُونُ إِنَّهُ لَذُو حَظٍّ عَظِيمٍ ﴿٧٩﴾

وَقَالَ الَّذِينَ أُولُوا الْعِلْمَ وَيُؤْتُونَ قُرْآنَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّمَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا وَلَا يُلْقَاهَا إِلَّا الضَّالِّينَ ﴿٨٠﴾

فَحَسَفْنَا بِهِ وَبَدَارِهِ الْأَرْضَ ۖ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُونَهُ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنتَصِرِينَ ﴿٨١﴾

¹ यानी जब गुनाह इतनी ज़्यादा तादाद में हो कि उन के सबब वह अजाब का मुस्तहिक्क हो जाये तो उन से पूछताछ नहीं की जाती बस अचानक उनको पकड़ लिया जाता है ।

² ये कहने वाले कौन थे? कुछ के निकट ईमानवाले ही थे जो उस के धन और शान-शौकत के प्रदर्शन (इजहार) से प्रभावित हो गये थे और कुछ के क्ररीब काफिर थे ।

³ यानी जिन के पास दीन का इल्म था और दुनिया और उस के प्रदर्शन (इजहार) की असल हक़ीक़त जानते थे, उन्होंने कहा कि यह क्या है, कुछ भी नहीं । अल्लाह ने ईमानवालों और परहेजगारों के लिए जो बदला और नेकी रखी है, वह इस से कहीं ज़्यादा अच्छा है । जैसे हदीस कुदसी में है, अल्लाह तआला फरमाता है : "मैंने अपने परहेजगार बन्दों के लिए ऐसी-ऐसी चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिन्हें किसी आँख ने नहीं देखा, किसी कान ने नहीं सुना और न किसी के ख्याल में आया ।" (अल-बुखारी, किताबुत तौहीद, मुस्लिम, किताबुल इमान, बाव अदना अहलिल जन्न: मंजिलतन)

८२. और जो लोग कल तक उस के पद तक पहुँचने की उम्मीद कर रहे थे, वे आज कहने लगे कि क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) ही अपने वदों में से जिस के लिए चाहे रोजी ज्यादा कर देता है और कम भी, अगर अल्लाह (तआला) हम पर एहसान न करता तो हमें भी धंसा देता, क्या देखते नहीं हो कि नाशुक्रों को कभी कामयाबी नहीं हासिल होती।

८३. आखिरत का यह (भला) घर हम उन्हीं के लिए मुकर्रर कर देते हैं जो धरती पर घमन्ड और गरूर नहीं करते, न फसाद की तमन्ना रखते हैं, और परहेजगारों (संयमितियों) के लिए बहुत अच्छा बदला है।

८४. जो इंसान नेकी लायेगा उसे उस से बेहतर मिलेगा और जो बुराई लेकर आयेगा तो ऐसे पाप करने वालों को उन के उसी अमल का बदला अता किया जायेगा जो वे करते थे।

८५. जिस (अल्लाह) ने आप पर कुरआन नाज़िल किया है वह आप को दोबारा पहली जगह पर लाने वाला है। कह दीजिए कि मेरा रब उसे भी अच्छी तरह जानता है जो हिदायत पाये हैं और उसे भी जो खुले भटकावे में है।

८६. और आप ने तो कभी यह सोचा भी न था कि आप की तरफ किताब नाज़िल की जायेगी, लेकिन यह आप के रब की रहमत से (नाज़िल हुआ)। अब आप को कभी काफ़िरों का सहायक (मददगार) न होना चाहिए।

وَأَصْحَابِ الَّذِينَ تَنَادُوا بِمَكَانِهِ بِالْأَمْسِ يَقُولُونَ
وَيَكُنَّ اللَّهُ يَخْطُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَوْلَا أَنْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ
بِنَاءُ وَيَكُنَّ لَ لَا يُغْلِبُ الْكَافِرُونَ ﴿٨٢﴾

بَلِّغْ النَّارَ الْآخِرَةَ نَجْعَلَهَا لِلَّذِينَ
لَا يُرِيدُونَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فُسَادًا
وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ ﴿٨٣﴾

مَنْ جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ خَيْرٌ مِنْهَا - وَمَنْ
جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِينَ عَمِلُوا
السَّيِّئَاتِ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨٤﴾

إِنَّ الَّذِي قَوَّضَ عَلَيْكَ الْقُرْآنَ لَرَادُّكَ إِلَى
مَعَادٍ قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ مَنْ جَاءَ بِالْهُدَى
وَمَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٨٥﴾

وَمَا كُنْتَ تَرْجُو أَنْ يُنْفِقَ إِلَيْكَ الْكِتَابُ
إِلَّا رَحْمَةً مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ ظَهِيرًا
لِلْكَافِرِينَ ﴿٨٦﴾

1 यानी भलाई का बदला तो बढ़ा-चढ़ाकर दिया जायेगा लेकिन बुराई का बदला बुराई के बराबर ही मिलेगा, यानी भलाई के बदले में अल्लाह की रहमत और नेमत का और बुराई के बदले में उस के इंसान का प्रदर्शन (इजहार) होगा।

८७. (ध्यान रहे कि) ये काफिर आप को अल्लाह तआला की आयतों के प्रचार (तबलीग) करने से रोक न दें, उस के बाद कि यह आप की तरफ नाज़िल की गयी, तो अपने रब की तरफ बुलाते रहें और शिर्क करने वालों (मुश्रिकों) में से न हों।

८८. और अल्लाह (तआला) के साथ किसी दूसरे माबूद को न पुकारना, 'सिवाय अल्लाह (तआला) के कोई दूसरा इबादत के लायक नहीं, हर चीज़ फना होने वाली है, लेकिन उसी का मुह' उसी का शासन है और तुम उसी की तरफ लौटाये जाओगे।

सूरतुल अनकबूत-२९

सूर: अनकबूत मक्का में नाज़िल हुई और इस की उनहत्तर आयतें और सात रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अलिफ़- लाम- मीम-

وَلَا يَصُدُّكَ عَنْ آيَاتِ اللَّهِ بَعْدَ إِذْ أَنْزَلْتُ
إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَىٰ رَبِّكَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ
الشُّرَكِيِّينَ ﴿٨٧﴾

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ مَلَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ كُلُّ شَيْءٍ عَالِيكَ إِلَّا وَجْهَهُ لَهُ الْحُكْمُ
وَأَلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٨﴾

سُورَةُ الْعَنْكَبُوتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْق ١

¹ यानी किसी दूसरे की इबादत न करना, न दुआ के जरिये, न भोग-प्रसाद (नज़र) से, न कुर्बानी के जरिये, कि ये सभी इबादतें हैं, जो केवल एक अल्लाह के लिए खास है। कुरआन करीम में कई जगहों पर अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे की इबादत को पुकारना कहा गया है, जिसका मकसद इसी बिन्दु को बाजेह करना है कि अल्लाह के सिवाय किसी दूसरे को माध्यमों (असबाब) से परे मानकर पुकारना, उन से मदद मांगना, विनय (फरियाद) और दुआयें करना यह उनकी इबादत ही है जिस से इंसान मुश्रिक (अनेकेश्वरवादी) बन जाता है।

² وَجْهَهُ (उसका मुह) से मुराद अल्लाह की ज़ात है, अंश बोल कर कुल मुराद है यानी अल्लाह के सिवाय हर चीज़ खत्म हो जाने वाली है।

﴿كُلٌّ مِّنْ عِلْمِهَا فَانِ ۝ وَيَتَّبِعُ وَجْهَ رَبِّكَ ذُو الْعِلْمِ وَالْإِكْرَامِ﴾

«धरती पर जो है सब खत्म होने वाले है, सिर्फ तेरे रब का मुह जो महानता (अज़मत) और सम्मान (इकराम) वाला है, बाकी रह जायेगा।» (सूर: अरहमान-२६, २७)

२. क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि उन के केवल इस क़ौल पर कि हम ईमान लाये हैं वे बिना इम्तेहान लिये हुए ही छोड़ दिये जायेंगे?¹

३. उन से पहले के लोगों को भी हम ने अच्छी तरह जाँचा, बेशक अल्लाह (तआला) उन्हें भी जान लेगा जो सच कहते हैं और उन्हें भी जान लेगा जो झूठे हैं।

४. क्या जो लोग बुरे काम कर रहे हैं, उन्होंने यह समझ रखा है कि वे हमारे कावू से बाहर हो जायेंगे? यह लोग कैसा बुरा ख्याल कर रहे हैं।

५. जिसे अल्लाह से मिलने की उम्मीद हो तो अल्लाह का मुकर्रर किया हुआ वक़्त जरूर आने वाला है,² वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है।

६. और हर कोशिश करने वाला अपने ही भले के लिए कोशिश करता है। बेशक अल्लाह (तआला) सभी दुनिया वालों से बेनियाज है।³

أَحْسِبَ النَّاسَ أَنْ يُتْرَكُوا أَنْ يَقُولُوا آمَنَّا
وَهُمْ لَا يُفْتَنُونَ ②

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِينَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَلِحَمَنْ اللَّهُ
الَّذِينَ صَدَقُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكَذِبِينَ ③

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ يَمْلِكُونَ السَّيِّئَاتِ أَنْ لَسِبْقُونَآءَ
سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ④

مَنْ كَانَ يَرْجُوا لِقَاءَ اللَّهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللَّهِ لَآتٍ
وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑤

وَمَنْ جَاهَدْ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللَّهَ
لَغَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ ⑥

¹ सूर: बल-अनकवूत की तफ़सीर : यानी यह ख्याल कि सिर्फ़ मुँह से ईमान ले आने के बाद बिना इम्तेहान लिए उन्हें छोड़ दिया जायेगा सही नहीं, बल्कि उन्हें ज़न और माल के दुख और दूसरी परीक्षाओं के जरिये जाँचा परखा जायेगा ताकि खरे खोटे का, झूठ-सच का, ईमानवाले और मुनाफ़िक का पता चल जाये।

² यानी जिसे आख़िरत पर यक़ीन है और वह बदले और नेकी की उम्मीद से नेक काम करता है अल्लाह तआला उसकी उम्मीदें पूरी करेगा और उसे उस के अमल का पूरा बदला अता करेगा, क्योंकि क़्यामत यक़ीनी तौर से होकर रहेगी और अल्लाह की अदालत का क़्याम (स्थापना) जरूर होगा।

³ इसका मतलब वही है जो ﴿مَنْ عَدَلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ﴾ (सूर: जासिया: १५) का है, यानी 'जो नेक काम करेगा उसका फ़ायदा उसी को होगा, वरन् अल्लाह तआला को तो बंदों के अमल की कोई जरूरत नहीं है। अगर सारी धरती के लोग अल्लाह से डर खाने वाले (परहेजगार) हो जायें तो उस के राज्य में शक्ति (ज्यादती) और विस्तार (इजाफ़ा) न होगा और सभी नाफ़रमानी करने वाले हो जायें तो उस के राज्य में तनिक भी कमी नहीं आयेगी। लफ़्ज़ों के बिना पर इन में

७. और जिन लोगों ने यकीन किया और (सुन्नत के ऐतवार से) अच्छे अमल किये, हम उन के सभी गुनाहों को उन से दूर कर देंगे और उन की नेकी का अच्छा बदला देंगे।

८. हम ने हर इंसान को अपने माता-पिता से अच्छा सुलूक करने की शिक्षा (तालीम) दी है^१ लेकिन अगर वे यह कोशिश करें कि तुम मेरे साथ उसे शामिल कर लो जिस का तुम को इल्म नहीं तो उनका कहना न मानो^२ तुम सब को लौटकर मेरी ही ओर आना है, फिर मैं हर उस बात से जो तुम करते थे, तुम्हें आगाह (अबगत) कराऊंगा।

९. और जिन लोगों ने ईमान कबूल किया और नेकी के काम किये, उन्हें हम अपने नेक बंदों में शामिल कर लेंगे।

१०. और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो (मुंह से) कहते हैं कि हम ईमान लाये हैं लेकिन जब अल्लाह के रास्ते में कोई दुख आ पड़ता है तो लोगों के कष्ट देने को अल्लाह तआला के अजाब के समान बना लेते हैं, लेकिन अगर अल्लाह की मदद आ जाये तो पुकार उठते हैं कि हम तो तुम्हारे साथी ही हैं, क्या सभी संसार (इंसानों) के दिलों में जो कुछ है उसे अल्लाह तआला जानता नहीं है?

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٧﴾

وَوَضَّيْنَا لِلإِنْسَانِ يُولَدَيْهِ حُسْنًا وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ﴿٩﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ لِبُيُوتِهِ النَّاسِ كَعْدَابِ اللَّهِ وَلَوْ لَكِن جَاءَ نَصْرٌ مِن رَّبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ أَوْ لَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ﴿١٠﴾

काफिरों से जिहाद करने का भी हुक्म शामिल है कि वह भी एक तरह का नेक काम ही है।

^१ कुरआन करीम के कई जगहों पर अल्लाह तआला ने अपनी एकता और इबादत का हुक्म देने के साथ ही साथ माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने पर जोर दिया है, जिस से इस बात की वजाहत होती है कि एकेस्वरवाद (तौहीद) की मांगों को सही तरीके से वही समझ सकता और उन्हें निभा सकता है जो माता-पिता के हुक्म की पैरवी और सेवा (खिदमत) की मांगों को समझता है और निभाता है।

^२ यानी माता-पिता अगर शिर्क का हुक्म दें (और उसी में दूसरे गुनाहों का हुक्म भी शामिल है) और उस के लिए खास कोशिश भी करें तो उनकी इताअत नहीं करनी चाहिए।

११. और जो लोग ईमान लाये अल्लाह उन्हें भी जानकर (जाहिर कर के) रहेगा और मुनाफिकों को भी जानकर (जाहिर कर के) रहेगा !

१२. और काफिरों ने ईमानवालों से कहा कि तुम हमारे रास्ते की इत्तेबा करो तुम्हारे गुनाह हम उठा लेंगे, जबकि वह उन के गुनाहों में से कुछ भी नहीं उठाने वाले, यह तो केवल झूठे हैं।

१३. हाँ, ये अपने बोझ ढो लेंगे और अपने बोझों के साथ दूसरे बोझ भी^१ और जो कुछ झूठ गढ़ रहे हैं उन सब के लिए उन से पूछताछ होगी।

१४. और हम ने नूह (ﷺ) को उनकी क्रौम की तरफ भेजा, वे उन के बीच साढ़े नौ सौ साल तक रहे, फिर तो उन्हें तूफान ने धर पकड़ा और वे थे भी जालिम।

१५. फिर हम ने उन्हें और नाव वालों को मुबित (नजात) दी और हम ने इस वाक्रेआ को पूरी दुनिया के लिये शिक्षा की निशानी बना दिया।

१६. और इब्राहीम (ﷺ) ने भी अपनी क्रौम से कहा कि अल्लाह (तआला) की इबादत करो और उस से डरते रहो, अगर तुम में अक्ल है तो यही तुम्हारे लिए बेहतर है।

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ
الْمُنَافِقِينَ ﴿١١﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا
سَبِيلَنَا ولنَحْمِلْ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا هُمْ بِحَامِلِينَ
مِنْ خَطِيئَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٢﴾

وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَعَ أَثْقَالِهِمْ
وَلَيَسْئَلُنَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿١٣﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ
سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ
ظَالِمُونَ ﴿١٤﴾

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً
لِّلْعَالَمِينَ ﴿١٥﴾

وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ
ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾

^१ इसका मतलब है कि अल्लाह तआला सुख और दुख देकर इन्तेहान लेगा ताकि मुनाफिकों और ईमानवालों में फर्क बाजेह हो जाये, जो दोनों हालतों में अल्लाह के हुक्म की पैरवी करेगा वह ईमान वाला है और जो केवल खुशी और सुख में आज्ञापालन करेगा तो इसका मतलब यह है कि वह केवल अपने मतलब को पूरा करने का ताबे है, अल्लाह का नहीं।

^२ यानी यह कुफ्र के अगुवा और बेदीन के प्रचारक अपना ही बोझ नहीं उठायेगे, बल्कि उन लोगों के गुनाहों का बोझ भी उन पर होगा जो उनकी कोशिशों की वजह से गुमराह हुए थे। यह विषय सूर: अन-नहल : २५ में भी गुजर चुका है।

१७. तुम तो अल्लाह तआला के सिवाय मूर्तियों की पूजा कर रहे हो और झूठी बातें मन से गढ़ लेते हो। (सुनो!) जिन-जिन की तुम अल्लाह (तआला) के सिवाय पूजा-पाठ कर रहे हो, वे तो तुम्हारे रिज़क के मालिक नहीं, इसलिए तुम्हें चाहिए कि अल्लाह तआला से ही रोज़ी माँगो और उसी की इवाज़त करो और उसी का शुक्रिया अदा करो, और उसी की तरफ़ तुम लौटाये जाओगे।

१८. और अगर तुम झुठलाओ तो तुम से पहले के लोगों ने भी झुठलाया है, और रसूल का कर्तव्य (फ़र्ज़) तो सिर्फ़ साफ़-साफ़ प्रकार से पहुँचा देना ही है।

१९. क्या उन्होंने नहीं देखा कि मखलूक की पैदाईश किस तरह अल्लाह ने की फिर अल्लाह उस को लौटायेगा, यह तो अल्लाह के लिए बहुत आसान है।

२०. कह दीजिए कि धरती पर चल-फिर कर देखो तो? कि किस तरह से अल्लाह (तआला) ने सब से पहले मखलूक की पैदाईश की फिर अल्लाह तआला ही दूसरी नई पैदाईश करेगा। अल्लाह तआला हर चीज़ पर सामर्थ्य (कुदरत) रखने वाला है।

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ
إِفْكًَا إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ
لَا يَسْمَعُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ
وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٧﴾

وَأَن تَكْفُرُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّن قَبْلِكُمْ
وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٨﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ
إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿١٩﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ بَدَأَ الْخَلْقَ
ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٠﴾

१ यह हज़रत इब्राहीम عليه السلام का भी कौल हो सकता है, जो उन्होंने अपने समुदाय (कौम) से कहा था या अल्लाह तआला का कौल है, जिस में मक्कावासियों को सम्बोधन (खिताब) है और इस में नबी ﷺ को तसल्ली दी जा रही है कि अगर मक्का के काफ़िर आप ﷺ को झुठला रहे हैं तो इससे घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है, पैगम्बरों के साथ यही होता चला आया है। पहले की उम्मतें भी रसूल को झुठलाते और उसका नतीजा भी हलाकत और वर्वादी के रूप में भुगतते रहे हैं।

२ यानी दुनिया में फैली हुई अल्लाह की निशानियाँ देखो धरती पर ध्यान दो, किस तरह उसे विछाया, उस में पर्वत, घाटियाँ, नदियाँ और समुद्र बनाये। उसी से कई तरह की रोज़ी व फल पैदा किये, क्या यह सब चीज़ें इस बात का सुबूत नहीं है कि उन्हें पैदा किया गया है और उन का कोई बनाने वाला है?

२१. जिसे चाहे अजाब दे, और जिस पर चाहे रहम करे, सब उसी की तरफ लौटाये जाओगे ।

२२. तुम न तो धरती पर अल्लाह (तआला) को मजबूर कर सकते हो न आकाश में, अल्लाह (तआला) के सिवाय तुम्हारा कोई संरक्षक (बली) है न सहयोगी (मददगार) ।

२३. और जो लोग अल्लाह (तआला) की आयतों और उसकी मुलाकात को झुठलाते हैं, वे मेरी रहमत से निराश हो जायें और उन के लिए दुखदायी अजाब है ।

२४. उन की क्रौम का जवाब इस के सिवाय कुछ न था कि कहने लगे कि इसे मार डालो या इसे जला दो । आखिरकार अल्लाह (तआला) ने उन्हें आग से बचा लिया, इस में ईमानवालों के लिए तो बहुत-सी निशानियाँ हैं ।

२५. (हजरत इब्राहीम عليه السلام ने) कहा कि तुम ने जिन मूर्तियों (देवताओं) की पूजा अल्लाह के सिवाय की है, उन्हें तुम ने अपनी दुनियावी दोस्ती का सबब बना लिया है, तुम सब क्रयामत के दिन एक-दूसरे से इंकार करने लगोगे और एक-दूसरे को धिक्कारने लगोगे, और तुम सबका ठिकाना नरक में होगा और तुम्हारी कोई मदद करने वाला न होगा ।

يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَشَاءُ ۗ

وَالِيهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢١﴾

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ ۗ
وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٢﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ أُولَٰئِكَ يَئِسُوا
مِنْ رَحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٣﴾

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوهُ
أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنْجَاهُ اللَّهُ مِنَ النَّارِ إِنَّ فِي
ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٢٤﴾

وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا
مُؤَدَّةً بَيْنَكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ بَعْضُكُم بَعْضًا
وَمَا أَوْلَاكُمْ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ نُصِيرِينَ ﴿٢٥﴾

1 अल्लाह तआला की रहमत (दया) दुनिया में आम लोगों के लिए है, जिस से काफिर और ईमानवाले, छली और भक्कार, अच्छे और बुरे सभी आम तौर से फायदा उठा रहे हैं । अल्लाह तआला सभी को दुनिया के सुख और धन-धान्य अता कर रहा है, यह अल्लाह तआला की रहमत की वह तफसील है जिससे अल्लाह तआला ने दूसरी जगह पर फरमाया :

﴿وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ﴾

“मेरी रहमत ने हर चीज को घेर लिया है ।” (सूर: अल-आराफ-१५६)

लेकिन आखिरत चूँकि बदला देने की जगह है, इसलिए वहाँ मुआमला दूसरा होगा ।

२६. तो उस (हजरत इब्राहीम عليه السلام पर) (हजरत) लूत (عليه السلام) ईमान लाये^१ और कहने लगे कि मैं अपने रब की तरफ हिजरत करने वाला हूँ, वह बड़ा गालिब (प्रभावशाली) और हिक्मत वाला है।

२७. और हम ने उसे (इब्राहीम को) इसहाक और याकूब अता किये और हम ने नबूअत और किताब उनकी औलाद में ही कर दी^२ और हम ने दुनिया में भी उसे अच्छा बदला दिया, और आखिरत में तो वह परहेजगारों में से है।

२८. और (हजरत) लूत (عليه السلام) की भी (चर्चा करो) जब कि उन्होंने अपनी क्रौम से कहा कि तुम तो उस बेहयाई पर उतर आये हो^३ जिसे तुम से पहले पूरी दुनिया में से किसी ने भी नहीं किया।

२९. क्या तुम मर्दों के पास (कुकर्म के लिए) आते हो और रास्ता बन्द करते हो और अपनी आम सभाओं (मजलिसों) में बेशर्मी का काम करते हो? तो उस के जवाब में उस की क्रौम ने इस के सिवाय कुछ नहीं कहा कि बस जा, अगर सच्चा है तो हमारे पास अल्लाह का अज़ाब ले आ।

३०. (हजरत) लूत (عليه السلام) ने दुआ की कि रब!

فَأَمَّن لَّهُ لُوطٌ ۖ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ إِلَىٰ رَبِّي ۖ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٦﴾

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ
الْكِتَابَ وَالْكَتَابَ ۚ وَأَتَيْنَاهُ أَجْرَهُ فِي الدُّنْيَا
وَأَنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٧﴾

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَأنتُونَ الْفَاحِشَةُ
مَا سَبَقْتُكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ﴿٢٨﴾

إِنكُمْ لَأنتُونَ الرِّجَالُ وَلَتَقَطَعُونَ السَّبِيلَ ۚ
وَأنتُونَ فِي تَادِيَةِكُمْ الْمُنكَرَ ۚ فَمَا كَانَ جَوَابَ
قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللَّهِ إِن
كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٢٩﴾

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ﴿٣٠﴾

^१ हजरत लूत, हजरत इब्राहीम عليه السلام के भाई के बेटे थे, यह हजरत इब्राहीम पर ईमान लाये, उस के बाद उन को भी 'सदूस' के इलाके में नबी बनाकर भेजा गया।

^२ यानी हजरत इसहाक से याकूब हुए, जिन से इस्राईल की औलाद का वंश चला और उन्हीं में सारे नबी हुए और किताबें आयीं। आखिर में हजरत नबी करीम ﷺ हजरत इब्राहीम के दूसरे (बड़े) पुत्र हजरत इस्राईल के वंश में नबी हुए और आप ﷺ पर कुरआन नाज़िल हुआ।

^३ उस कुकर्म (बेहयाई) से मुराद वही मर्द से निवात (सम्भन) है जिसको लूत की क्रौम वालों ने सब से पहले किया, जैसाकि कुरआन ने वाज़ह किया है।

इस फसादी कौम पर मेरी मदद कर ।

३१. और जब हमारे भेजे हुए फरिश्ते (हजरत) इब्राहीम (عليه السلام) के पास खुशखबरी लेकर पहुँचे, कहने लगे कि हम इस बस्ती वालों को नाश करने वाले हैं ।^१ बेशक यहाँ के निवासी जालिम हैं ।

३२. (हजरत इब्राहीम ने) कहा कि उस में तो लूत (عليه السلام) है, फरिश्तों ने कहा कि यहाँ जो है हम उन्हें अच्छी तरह जानते हैं, लूत और उस के परिवार को सिवाय उसकी बीबी के हम बचा लेगे, बेशक वह औरत पीछे रह जाने वालों में से है ।

३३. और फिर जब हमारे भेजे हुए लूत (عليه السلام) के पास पहुँचे तो वह उन के सवव दुखी हुए और दिल में गम करने लगे । सदेशवाहको ने कहा कि आप डरे नहीं न दुखी हों, हम आप को आप के परिवार सहित महफूज कर लेगे, सिवाय आप की बीबी कि वह अजाब के लिए बाक़ी रह जाने वालों में से होगी ।

३४. हम इस बस्ती वालों पर आसमानी अजाब ढाने वाले हैं^२ इस वजह से कि ये फासिक हो रहे हैं ।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَىٰ
قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ ۖ إِنَّ
أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ۝

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ۖ قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ
فِيهَا وَلَنُنَجِّيكَ وَآهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ ۖ كَانَتْ
مِنَ الْغَابِرِينَ ۝

وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِئَاءَ بِهِمْ
وَضَلُّوا بِهِمْ ذُرْعًا وَقَالُوا لَا تَنْفَ وَلَا تَحْزَنْ
إِنَّا مُنَجِّوكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ ۖ كَانَتْ مِنَ
الْغَابِرِينَ ۝

إِنَّا مُنذِرُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رَجْرًا
مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝

^१ यानी हजरत लूत की दुआ कुबूल हुई और अल्लाह ने फरिश्तों को हलाक करने के लिए भेज दिया, वे फरिश्ते पहले हजरत इब्राहीम (عليه السلام) के पास गये और उन्हें इसहाक (عليه السلام) और याकूब (عليه السلام) की खुशखबरी दी और साथ ही बताया कि हम लूत (عليه السلام) की बस्ती को नाश करने आये हैं।

^२ इस आसमानी अजाब से मुराद वही अजाब है जिस के जरिये लूत की कौम को धसा दिया गया। कहा जाता है कि जिब्रिल (عليه السلام) उन की बस्तियों को धरती से उखाड़कर आकाश की ऊँचाई तक ले गये फिर उनको उन ही पर उलटा दिया गया, उस के बाद कंकड़-पत्थर की वर्षा की गयी और उस जगह को बहुत बदबूदार झील में बदल दिया गया । (इब्ने कसीर)

३५. और हम ने इस बस्ती को खुली शिक्षा ग्रहण (हासिल) करने के लिए निशानी (लक्षण) बना दिया, उन लोगों के लिए जो अकल रखते हैं।

३६. और मदयन की तरफ (हम ने) उन के भाई शुऐब (شُعَيْب) को (भेजा) उन्होंने कहा कि हे मेरी क्रौम के लोगो! अल्लाह की इबादत (वंदना) करो, क़यामत के दिन की उम्मीद रखो और धरती में फ़साद न फैलाते फिरो।

३७. फिर भी उन्होंने उन्हें झुठलाया, आखिर में उन्हें जलजला ने पकड़ लिया और वे अपने घरों में बैठे के बैठे मुर्दा होकर रह गये।

३८. और हम ने 'आद वालों' और 'समूद वालों' को भी (हलाक किया) जिन के कुछ खण्डहर तुम्हारे सामने मौजूद हैं^२ और शैतान ने उन के बुरे काम को सुसज्जित (मुजय्यन) करके दिखाया था और उन्हें रास्ते से रोक दिया था, इस के बावजूद कि यह अखिों वाले और चालाक थे।

३९. और कारून, फिरऔन और हामान को भी, उन के पास (हज़रत) मूसा खुले-खुले मोजिजे लेकर आये थे, फिर भी उन्होंने धरती पर घमण्ड किया, लेकिन हम से आगे बढ़ने वाले न हो सके।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا مِنْهَا آيَةً لِّبَنِي لَقَوْمٍ
يَعْقِلُونَ ﴿٣٥﴾

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۖ فَقَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللَّهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْتَدُوا فِي
الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ﴿٣٦﴾

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي
دَارِهِمْ جِثِيًّا ﴿٣٧﴾

وَعَادًا وَثَمُودًا وَقَدْ ذُكِّرْنَا لَكُمْ مِنْ قَبْلِهِمْ
مَنْ سَلِكُوا السَّبِيلَ ۚ إِنَّهُمْ أَصَابَهُمُ صَدْرُهُمْ
عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ﴿٣٨﴾

وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامَانَ ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ
مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا
كَانُوا سَابِقِينَ ﴿٣٩﴾

^१ मदयन हज़रत इब्राहीम عليه السلام के बेटे का नाम था, कुछ के करीब यह उन के पोते का नाम है, बेटे का नाम मदयान था, उन ही के नाम पर उस कबीले (गोत्र) का नाम पड़ गया, जो उन ही के वंश पर शामिल था। इसी मदयन कबीले की तरफ हज़रत शुऐब को नबी बनाकर भेजा गया। कुछ कहते हैं कि मदयन नगर का नाम था यह कबीला या नगर लूत की बस्ती के करीब ही था।

^२ आद की क्रौम की बस्ती अहकाफ़, हद्रमूत (यमन के लाल सागर का तटीय भाग) के करीब और समूद की बस्ती हिज़्र जिसे आजकल मदायन स्वालेह कहते हैं, हिजाज़ के उत्तर में है। इन इलाकों से अरबों की व्यवहारिक यात्रायें (तिजारती सफ़र) हुआ करती थी, इसलिए ये बस्तियाँ उन के लिए अज्ञान नहीं बल्कि जानती थीं।

४०. फिर तो हम ने हर एक को उस के पाप की सजा में धर लिया, उन में से कुछ पर हम ने पत्थरों की बारिश की। उन में से कुछ को तेज चीख ने दबोच लिया,^२ उन में से कुछ को हम ने धरती में धंसा दिया^३ और उन में से कुछ को हम ने पानी में डुबो दिया^४ अल्लाह तआला ऐसा नहीं कि उन पर जुल्म करे बल्कि वही लोग अपनी जानों पर जुल्म करते थे।

४१. जिन लोगों ने अल्लाह (तआला) के सिवाय दूसरे को बली (देवता) मुकर्रर कर रखा है, उन की मिसाल (उदाहरण) मकड़ी की तरह है कि वह भी एक घर बनाती है, अगरचे (यद्यपि) सभी घरों से ज्यादा कमजोर घर मकड़ी का घर ही है,^५ कब्र, कि वे जान लेते।

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذُنُوبِهِمْ فَمِنْهُمْ مَن أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَامِصًا ۖ وَمِنْهُمْ مَن أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۖ وَمِنْهُمْ مَن خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ۖ وَمِنْهُمْ مَن أَغْرَقْنَا ۖ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيظْلِمَهُمْ وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٤٠﴾

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتِ ۖ اتَّخَذَتْ بَيْتًا وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوتِ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤١﴾

- ^१ यह आद की क्रौम थी, जिस पर तेज चीख और हवाओं का अजाब आया, ये हवायें धरती से कंकरियां उड़ाकर उन पर बरसाती, आखिर में उन की तेजी इतनी बढ़ी कि उन्हें उड़ाकर आकाश तक ले जाती और उन्हें सिर के बल दे मारती, जिस से उन के सिर अलग और धड़ अलग हो जाते जैसेकि वे खजूर के खोखले तने हैं। (इन्ने कसीर)
- ^२ यह हजरत स्वालेह की क्रौम समुद है, जिन्हें उन के कहने पर पत्थर की एक घट्टान से ऊँटनी निकाल कर दिखायी गयी, लेकिन उन जालिमों ने ईमान लाने के बजाये उस ऊँटनी को ही मार डाला, जिस के तीन दिन के बाद उन पर तेज चीख का अजाब आया, जिस ने उन की आबाज और चाल को शान्त (खामोश) कर दिया।
- ^३ यह कारून है, जिसे दौलत के खजाने अता किये गये थे, लेकिन यह इस घमंड में मगन हो गया कि वह धन-धान्य इस बात का सुबूत है कि मैं अल्लाह के यहाँ सम्मानित (बाइज़्जत) और आदरणीय (मुजज़िज़्ज) हूँ, मुझे मूसा की बात को कुबूल करने की क्या जरूरत है? इसलिए उसे उस के खजानों और महलों सहित धरती में धंसा दिया गया।
- ^४ यह फिरऔन है जो मिस्र देश का राजा था, लेकिन हद से तजावुज करके अपने आप को भगवान (उपास्य) एलान कर दिया, हजरत मूसा पर ईमान लाने से और उन की क्रौम इब्राहिल की औलाद को, जिसको उसने गुलाम बना रखा था, आजाद करने से इंकार कर दिया, आखिर में एक सुबह उस को उस की पूरी सेना सहित लाल सागर (कुलजुम) में डुबो दिया गया।
- ^५ यानी जिस तरह मकड़ी का जाला (घर) बहुत कमजोर और अस्थायी (आरजी) होता है, हाथ के जरा से इशारे से वह नष्ट हो जाता है, अल्लाह के सिवाय दूसरों को अपना बली और मददगार समझना भी बिल्कुल उसी की तरह है, यानी कमजोर और बेकार है, क्योंकि वे भी किसी के काम नहीं आ सकते, इसलिए अल्लाह के सिवाय दूसरों के सहारे भी मकड़ी के जाले के समान कमजोर और बेकार हैं, अगर यह मजबूत और फायदेमंद होते तो यह देवता पहले की उम्मतों

४२. अल्लाह (तआला) उन सभी चीजों को जानता है जिन्हें वह उस के सिवाय पुकार रहे हैं, और वह बड़ा जबरदस्त और हकीम है।

४३. और हम इन मिसालों को लोगों के लिए बयान कर रहे हैं, और इन्हें केवल इल्म वाले ही समझते हैं।

४४. अल्लाह तआला ने आकाशों और धरती को हक और सच के साथ पैदा किया है, ईमान वालों के लिए तो इसमें बड़ी भारी निशानी है।

४५. जो किताब आप की तरफ बहयी की गयी है उसे पढ़िये^२ और नमाज कायम कीजिए (पाबन्दी से पढ़िये)^३ बेशक नमाज बेहयाई और बुराई से रोकती है^४ और बेशक अल्लाह का जिक्र बहुत बड़ी बात है। तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह (तआला) जानता है।

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ ۗ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٤٢﴾

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۖ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعَالِمُونَ ﴿٤٣﴾

خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمُؤْمِنِينَ ﴿٤٤﴾

أَتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۗ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۗ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْعُونَ ﴿٤٥﴾

को बचा लेते लेकिन दुनिया ने देख लिया कि वे उन्हें नहीं बचा सके।

^१ इस इल्म से मुराद अल्लाह का, उस के धार्मिक विधानों (शरीअतों) का और उन आयतों और दलीलों का इल्म है जिन पर ख्याल और सोच-फिक्र करने से इंसान को अल्लाह का इल्म हासिल होता है और हिदायत का रास्ता प्रचस्त (वाजेह) होता है।

^२ कुरआन करीम की तिलावत के कई मकसद हैं, सिर्फ बदला और नेकी के लिए, उस के माने और मतलब पर ख्याल और फिक्र के लिए, शिक्षा-दीक्षा (तालीम) के लिए और तफसीर के लिए, तिलावत के हुकम में ये सभी किस्में शामिल हैं।

^३ क्योंकि नमाज से (अगर नमाज हो) इंसान का ख़ास तौर से सम्बन्ध अल्लाह से हो जाता है, जिस से इंसान को अल्लाह तआला की मदद हासिल होती है, जो जिन्दगी के हर मोड़ पर उसकी मजबूती और स्थिरता (पायेदारी) का सबब और हिदायत का जरिया साधित होती है।

^४ यानी बेहयाई और बुराई को रोकने का जरिया बनती है, जिस तरह दवाओं के कई असर हैं, और कहा जाता है कि फ्लू रोग को रोकती है और हकीकत में ऐसा होता है, लेकिन कब? जब दो बातों को ध्यान में रखा जाये, एक तो दवाई को तरीके से उस नियम और शर्त के साथ इस्तेमाल किया जाये, जो वैद्य, हकीम या डॉक्टर ने बताया है। दूसरा परहेज यानी ऐसी चीजों का इस्तेमाल न किया जाये जो उस दवा के असर को कम करे या खत्म कर दे। इसी तरह नमाज में भी अल्लाह तआला ने ऐसा असर रखा है कि यह इंसान को बेहयाई और बुराई से रोकती है, लेकिन उसी समय जब नमाज सुन्नते नववी ﷺ के अनुसार उन तरीकों और शर्तों के साथ पढ़ी जाये जो उसकी कुबूलियत और मान्यता (सिहत) के लिए फ़र्ज हैं।

४६. और अहले किताब के साथ बहुत अच्छे तरीके से वाद-विवाद करो, सिवाय उन के साथ जो उन में जालिम हैं। और साफ़ एलान कर दो कि हमारा तो उस किताब पर भी ईमान है, जो हम पर नाज़िल की गयी है और उस पर भी जो तुम पर नाज़िल की गयी। हमारा-तुम्हारा ख़ब एक ही है, हम सब उसी के फ़रमाबिरदार हैं।

४७. और हम ने उसी तरह आप की तरफ़ अपनी किताब नाज़िल की है, इसलिए जिन्हें हम ने किताब अता की है, वे उस पर ईमान लाते हैं^१ और उन में से कुछ उस पर ईमान रखते हैं, और हमारी आयतों का इंकार केवल काफ़िर ही करते हैं।

४८. और इस से पहले तो आप कोई किताब पढ़ते न थे, और न किसी किताब को अपने हाथ से लिखते थे कि यह असत्य (बातिल) के पुजारी लोग शक और शुब्हे में पढ़ते।

४९. वरन् यह (कुरआन) तो रौशन आयतें (सूत्र) हैं जो आलिमों (ज्ञानियों) के दिल में महफूज़ हैं।^२ हमारी आयतों को इंकार करने वाला सिवाय जालिमों के कोई दूसरा नहीं।

५०. और उन्होंने कहा कि इस पर कुछ निशानियाँ इसके ख़ब की तरफ़ से क्यों नहीं उतारी गयी। (आप) कह दीजिए निशानियाँ तो सभी अल्लाह के पास हैं मेरी हैसियत तो केवल वाजेह तौर से सचेत (आयाह) कर देने वाले की है।

وَلَا تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ
إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقُولُوا آمَنَّا بِالَّذِي
أُنزِلَ إِلَيْنَا وَأَنْزَلَ إِلَيْنَا وَاللَّهُمَّ وَاحِدٌ
وَتَعْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٤٦﴾

وَكَذَلِكَ أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ فَالَّذِينَ آتَيْنَهُمُ
الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ
وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الْكَافِرُونَ ﴿٤٧﴾

وَمَا كُنْتُمْ تَتْلُوا مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخْطَوْنَ
بِيَمِينِكُمْ إِذَا لَأْتَابَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٤٨﴾

بَلْ هُوَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ فِي صُدُورِ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ
وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا الظَّالِمُونَ ﴿٤٩﴾

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ طَلْفًا لَرَأَيْنَا
الْآيَاتِ عِنْدَ اللَّهِ ط وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿٥٠﴾

^१ इसलिए कि वे आलिम और अक्लमंद हैं, बात को समझने की योग्यता और क्षमता (सलाहियत) रखते हैं, इस वजह से उन से बहस और बातचीत में सब्ती और तेज़ी मुनासिब (उचित) नहीं।

^२ इस से मुराद अब्दुल्लाह बिन सलाम आदि (वग़ैरह) है। किताब देने से मुराद है उस के अनुसार अमल करना, जैसाकि उसके अनुसार जो अमल नहीं करते, उन्हें यह किताब दी ही नहीं गयी।

^३ यानी कुरआन मजीद के हाफ़िजों (ग़ैब याद करने वालों) के दिल में, यह कुरआन का मोजिजा है कि कुरआन मजीद हर्फ-हर्फ दिल में महफूज़ (सुरक्षित) हो जाता है।

५१. क्या उन्हें यह काफी नहीं कि हम ने आप पर अपनी किताब नाज़िल कर दी जो उन पर पढ़ी जा रही है। इस में रहमत (भी) है और नसीहत (भी) है, उन लोगों के लिए जो ईमान वाले हैं।

५२. कह दीजिए कि मुझ में और तुम में अल्लाह तआला का गवाह होना काफी है, वह आकाश और धरती की हर चीजों का जानने वाला है, जो लोग असत्य (बातिल) को मानने वाले हैं और अल्लाह (तआला) से कुफ़्र करने वाले हैं, वे बहुत ज्यादा नुक़सान में हैं।

५३. और ये लोग आप से अजाब की जल्दी मचा रहे हैं, अगर मेरी तरफ से मुक़रर बस्त न होता, तो अभी तक उन के पास अजाब आ चुका होता, यह तय बात है कि अचानक उनके अनजाने में उन के पास अजाब आ पहुँचेंगा।

५४. ये अजाब की जल्दी मचा रहे हैं और (इत्मिनान रखें) नरक काफ़िरो को घेर लेने वाला है।

५५. उस दिन उनके ऊपर-नीचे से उन्हें अजाब ढाक रहा होगा और अल्लाह महान कहेगा कि अब अपने बुरे कामों का मजा चखो।

५६. हे मेरे ईमानवाले बन्दो! मेरी धरती बहुत कुशादा है, तो तुम मेरी ही इबादत करो।

५७. हर जान को मौत का मजा चखना है और तुम सब हमारी ही तरफ लौटाये जाओगे।

५८. और जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम भी किये उन्हें हम यकीनी तौर से जन्नत के उन ऊँचे मकानों में जगह देने जिनके नीचे से नदियाँ बह रही हैं, जहाँ वे हमेशा रहेंगे। (अच्छे) काम करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है।

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ يُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ط إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَىٰ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾

قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا ۖ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ وَالَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ ۗ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٥٢﴾

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَكَوْلَا أَجَلٍ مُّسْتَسَىٰ لِحَآءِهِمُ الْعَذَابُ ۗ وَلَٰيَأْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٥٣﴾

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۗ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ﴿٥٤﴾

يَوْمَ يُغْشَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ قَوْفِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾
يُحِبُّوٓا۟ ذِىَ الْاٰمَنٰٓٔ اِنَّ اَرْضِىْ وَاِسْعٰٓءِىْ فَاَعْبُدُوٓنِ ﴿٥٦﴾

كُلُّ نَفْسٍ ذٰٓئِقَةُ الْمَوْتِ ۗ ثُمَّ اِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٥٧﴾
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا يُجْرٰٓى مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ﴿٥٨﴾

५९. वे जिन्होंने सब्र किया और अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

६०. और बहुत से जानवर हैं जो अपना रिज़क लादे नहीं फिरते, उन सब को और तुम्हें भी अल्लाह तआला ही रिज़क अता करता है। वह बड़ा सुनने जानने वाला है।

६१. और अगर आप उनसे पूछें कि धरती और आकाश का ख़ालिक और सूरज और चांद को काम में लगाने वाला कौन है तो उन का जवाब यही होगा कि अल्लाह तआला, तो फिर किधर उल्टे जा रहे हैं।

६२. अल्लाह तआला अपने बंदों में से जिसे चाहे ज़्यादा रिज़क (जीविका) अता करता है और जिसे चाहे कम, बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ का जानने वाला है।

६३. और अगर आप उन से सवाल करें कि आकाश से पानी बरसा कर धरती को उसकी मौत के बाद जिन्दा करने वाला कौन है, तो बेशक उनका जवाब यही होगा कि अल्लाह तआला। आप कह दें कि सारी तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं, बल्कि उन में ज़्यादा लोग नाअक्ल (निर्बोध) हैं।^१

६४. और दुनिया की यह जिन्दगी तो सिर्फ़ मनोरंजन और खेल-कूद है, हाँ सच्ची जिन्दगी तो आख़िरत का घर है, अगर ये जानते होते।

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٥٩﴾

وَكَأَيِّن مِّن ذَابَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۗ اللَّهُ يَرْزُقُهَا وَإِنَّا كَافِرُونَ ﴿٦٠﴾ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

وَلَيْن سَأَلْتَهُم مِّن مَّخْلَقِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَسَعَةِ السَّمْسِ وَالْقَمَرِ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۗ قَالِي يُرْزُقُونَ ﴿٦١﴾

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٢﴾

وَلَيْن سَأَلْتَهُم مَّن نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِن بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۗ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۗ بَلْ أَنتُمْ لَأَعْوَابُونَ ﴿٦٣﴾

وَمَا هِيَ إِلَّا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۗ إِنَّا لَهُم مُّوَدِّعُونَ ﴿٦٤﴾

^१ यानी ये मूर्तिपूजक मूसलमानों को सिर्फ़ एकेश्वरवाद (तौहीद) में यकीन करने के सबब तकलीफें पहुँचा रहे हैं, उन से अगर पूछा जाये कि आकाश और धरती को नास्ति (अदम) से पैदा करने वाला और सूरज-चाँद को अपनी परिधि (दायरे) में चक्कर कराने वाला कौन है, तो वहाँ यह कुबूल करने के लिए मजबूर है कि ये सब कुछ करने वाला अल्लाह है।

^२ क्योंकि अक्ल होती तो अपने रब के साथ पत्थरों को, मुर्दों को रब न बनाते, न उन के अन्दर यह सलाहियत होती कि अल्लाह तआला को ख़ालिक (स्रष्टा) और पैदा करने वाला और रब मानते हुए भी बुतों (मूर्तियों) को संकटहारी (मुश्किल कुश) और पूज्य समझ रहे हैं।

६५. जब यह लोग नाब में सवार होते हैं तो अल्लाह (तआला) को ही पुकारते हैं उस के लिए इबादत को खास कर के, फिर जब वह उन्हें थल (खुरकी) की तरफ महफूज ले आता है तो उसी वक्त शिर्क करने लगते हैं।

६६. ताकि हमारे अता किये हुए उपकारों (एहसानों) से मुकरते रहें और फायेदामंद होते रहें। अभी-अभी उन्हें पता चल जायेगा।

६७. क्या ये नहीं देखते कि हम ने हरम को अमन की जगह बना दिया, जब कि उन के करीबी इलाके से लोग अपहृत (उचक) कर लिये जाते हैं। क्या ये असत्य (बातिल) पर तो यकीन रखते हैं और अल्लाह (तआला) की नेमतों पर नाशुकी करते हैं।

६८. और उस से बड़ा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह (तआला) पर झूठा बुहतान लगाये या जब हक उसके पास आ जाये, वह उसे झूठ बताये, क्या ऐसे काफिरों का ठिकाना नरक में न होगा?

६९. और जो लोग हमारे रास्ते में दुख सहन करते हैं, हम उन्हें अपना रास्ता जरूर दिखा देंगे। वेशक अल्लाह (तआला) नेकी करने वालों का साथी है।^१

وَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلِكِ دَعَاوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ﴿٦٥﴾

لِيُكْفِّرُوا بِمَا كَانُوا يُكْفِرُونَ ۗ وَلِيَمَّا عَصَاكَ فَنُصِيفُ يَعْصُونَ ﴿٦٦﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا مَّأْمُورًا لِيُحَافَظُوا فِيهِ أَنْفُسَهُمْ وَاللَّهُ يُكَفِّرُونَ ﴿٦٧﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۗ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَطْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿٦٨﴾

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهَبْنَا عَنْهُمْ سُبُلَنَا ۗ وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٦٩﴾

^१ अल्लाह तआला उस नेमत का बयान कर रहा है जो मक्कावासियों पर उसने किया है कि हम ने उन के हरम को शान्ति वाला बनाया है, जिस के रहने वाले कत्ल और अपहरण, लूटमार वगैरह से महफूज हैं, जबकि अरब के दूसरे इलाके इस तरह की शान्ति-सुरक्षा (अमन व अमान) से महरूम हैं। लूट और कत्ल उन के यहाँ आम और हर दिन का काम है।

^२ एहसान से मुराद अल्लाह को शहिद मानकर हर नेकी के काम साफ दिल के साथ करना, नबी की सुन्नत के अनुसार करना, बुराई के बदले एहसान करना, अपना हक छोड़ कर दूसरों को उन के हक से ज़्यादा देना, यह सब एहसान के परिधि (दायरे) में शामिल हैं।

सूरतुरूम-३०

سُورَةُ الرَّحْمٰنِ

सूर: रूम मक्का में नाजिल हुई, इस में साठ आयतें और ६ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अलिफ़ • लाम • मीम •

२. रोमन पराजित (मगलूब) हो गये।

३. करीबी धरती पर और वह पराजित होने के बाद करीब मुस्तक़बिल में गालिब हो जायेंगे।

४. कुछ सालों में ही, इस से पहले और इस के बाद भी हक़ अल्लाह (तआला) ही का है, और उस दिन मुसलमान ख़ुश होंगे।

५. अल्लाह (तआला) की मदद से, वह जिसकी चाहता है मदद करता है, और असल फ़ातेह और प्रभावशाली (गालिब) और रहीम वही है।

६. अल्लाह का वादा है, अल्लाह (तआला) अपने वादे तोड़ा नहीं करता, लेकिन बहुत लोग नहीं जानते।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الْم ۝۱

عَلِمَتِ الرُّومُ ۝۲

فِيْ اَدْنٰی الْاَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ عَلَیْهِمْ

سِیِّغِیُّوْنَ ۝۳

فِيْ یَضِیْعَ سِنِیْنٍ ؕ لَیْلَةُ الْاَمْرِ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ

بَعْدُ ط وَیَوْمَئِذٍ یَفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝۴

یَنْصُرُ اللّٰهُ ط ۙ یَنْصُرُ مَنْ یَّشَآءُ ۙ

وَهُوَ الْعَزِیْزُ الرَّحِیْمُ ۝۵

وَعَدَ اللّٰهُ ط لَا یُخْلِیْفُ اللّٰهُ وَعَدَ ؕ وَلٰكِنْ

اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝۶

१ रिसालत के जमाने में दो बड़ी ताकतें थीं, एक फारस (ईरान) की और दूसरी रोम की। पहला बयान किया गया मुल्क अग्निपूजक और दूसरा ईसाई यानी अहले किताब था। मक्का के मूर्तिपूजकों की हमदर्दी ईरान के साथ थी, क्योंकि दोनों अल्लाह के सिवाय दूसरों के पुजारी थे, जबकि मुसलमानों की हमदर्दी रोम के इसाई राज्य के साथ थी, इसलिए कि इसाई भी मुसलमानों की तरह अहले किताब थे। वही और रसूलों पर ईमान रखते थे, उनकी आपस में ठनी रहती थी। नबी ﷺ की नबूअत के एलान के कुछ समय बाद ऐसा हुआ कि ईरान का राज्य (मुल्क) रोम के इसाई राज्य के ऊपर विजयी (फातेह) हो गया, जिस पर मूर्तिपूजकों को ख़ुशी हुई और मुसलमानों को दुख हुआ, उस मौका पर कुरआन की ये आयतें नाजिल हुईं, जिन में ये भविष्यवाणी (पेचीनगोई) की गयी कि कुछ साल के अन्दर रूमी दोबारा विजयी हो जायेंगे और विजयी पराजित और पराजित विजयी हो जायेंगे।

७. वह तो (केवल) दुनियावी जिन्दगी के जाहिर को (ही) जानते हैं, और आखरित से तो विल्कुल ही बेखबर हैं।

८. क्या उन लोगों ने अपने दिल में यह गौर नहीं किया कि अल्लाह (तआला) ने आकाशों को और धरती और उनके बीच जो कुछ है सबको बेहतर अंदाज़ा से^१ मुकर्रर वक़्त तक के लिए (ही) पैदा किया है, हाँ ज्यादातर लोग बेशक अपने रब की मुलाकात का इंकार करते हैं।

९. क्या उन्होंने धरती पर सैर करके नहीं देखा कि उनसे पहले के लोगों का परिणाम (अंजाम) कैसा (बुरा) हुआ? वे उन से ज्यादा ताक़तवर (और बलवान) थे, और उन्होंने भी धरती जोती-बोयी थी और उन से ज्यादा आबादी बनाई थी और उन के पास उन के रसूल मोज़िजे लेकर आये थे, यह तो नामुमकिन था कि अल्लाह (तआला) उन पर जुल्म करता, लेकिन (हकीकत में) वे खुद अपनी जानों पर जुल्म करते थे।

१०. फिर आखिर में बुरों का बुरा अंजाम हुआ, इसलिए कि वे अल्लाह की आयतों को झुठलाते थे और उनका मज़ाक उड़ाते थे।

يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَفْلُونَ ﴿٧﴾

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ مَّا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَدَّدًا
وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُونَ ﴿٨﴾

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ
قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا
وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلٰكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٩﴾

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ آسَأُوا الشُّرَآءَ أَن كَذَّبُوا
بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١٠﴾

^१ या एक मक़सद और सच के साथ पैदा किया है बेकार नहीं, और वह मक़सद यह है कि नेक लोगों को नेकियों का बदला और बुरे लोगों को उनकी बुराई की सज़ा दी जाये, यानी क्या वे अपने बजूद पर ह्याल नहीं करते कि किस तरह उसे हकीर से बुलन्द किया और पानी की एक हकीर वूद से उनकी तखलीक (सृष्टि) की। फिर आकाश और धरती को एक खास मक़सद के लिए लम्बा-चौड़ा किया, इसके अलावा उन सब के लिए एक वक़्त मुकर्रर किया, यानी क़यामत का दिन जिस दिन ये सब कुछ ख़त्म हो जायेगा। मतलब यह है कि अगर वे इन सब बातों पर ह्याल करते तो निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से अल्लाह के बजूद, उस के रब और लायके इबादत होने और उसकी कुदरत का उन्हें सवेदन (एहसास) और इन्म हो जाता और उस पर इमान ले आते।

११. अल्लाह (तआला) ही मखलूक को पैदा करता है, फिर वही उन्हें दोबारा पैदा करेगा, फिर तुम सब उसी की तरफ लौटाये जाओगे ।

१२. और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी तो मुजरिम हैरान रह जायेंगे ।^१

१३. और उन के सभी साझीदारों में से एक भी उन की सिफ़ारिश नहीं करेगा^२ और खुद ये भी अपने देवताओं (शरीकों) का इंकार करेंगे ।

१४. और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी, उस दिन (सभी गुट) बंट जायेंगे ।^३

१५. फिर जो ईमान लाकर नेक काम करते रहे, वे तो जन्नत में खुश कर दिये जायेंगे ।

१६. और जिन्होंने कुफ़्र किया था और हमारी आयतों को और आखिरत के मिलन को झूठा ठहराया था, वे सब अजाब में पकड़ कर हाज़िर किये जायेंगे ।

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ﴿١١﴾

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُونَ ﴿١٢﴾

وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ وَكَانُوا
بِشُرَكَائِهِمْ كَافِرِينَ ﴿١٣﴾

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُنْفِقُونَ بِلِقَائِهِمْ
يَوْمَئِذٍ يَنْتَفِرُونَ ﴿١٤﴾

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ
فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ﴿١٥﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
وَلِقَائِ الْأُخْرَىٰ فَأُولَٰئِكَ فِي الْعَذَابِ مُخَضَّرُونَ ﴿١٦﴾

^१ जिस तरह अल्लाह तआला पहली बार पैदा करने की कुदरत रखता है, उसी तरह मरने के बाद दोबारा जिन्दा करने की कुदरत रखता है, इसलिए कि दोबारा जिन्दा करना पहली बार पैदा करने से ज़्यादा कठिन नहीं ।

^२ *يُشْفِئُونَ* का मतलब है अपने हक की तसदीक के लिए कोई दलील पेश न कर सकना और हैरान होकर चुप खड़े रहना, और *يُبْلِسُ* वह होगा जो मायूस होकर चुप खड़ा हो और उसे कोई दलील समझ में न आ रही हो ।

^३ साझीदारों से मुराद वे झूठे देवता हैं, जिन्हें मूर्तिपूजक यह समझकर पूजते थे कि यह अल्लाह के यहाँ उनकी सिफ़ारिश करेंगे और उन्हें अल्लाह के अजाब से बचा लेंगे, लेकिन यहाँ अल्लाह ने बाज़ेह कर दिया कि अल्लाह के साथ साझीदार बनाने वालों के लिए अल्लाह के यहाँ कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं होगा ।

^४ इस से मुराद हर एक इंसान का हर एक इंसान से अलग होना नहीं है बल्कि मतलब इंसानवालों का काफ़िरों से अलग होना है । इंसानवाले जन्नत में और काफ़िर और मूर्तिपूजक नरक में चले जायेंगे और उन के बीच स्याई (मुस्तकिल) अलगाव हो जायेगी और ये दोनों फिर कभी भी जमा न होंगे, यह हिस्सा के बाद होगा, इस अलगाव की बजाहत (स्पष्टीकरण) अगली आयत में आ रहा है ।

१७. तो अल्लाह (तआला) की तारीफ किया करो, जबकि तुम शाम करो और जब सुबह करो ।

فَسُبْحَانَ اللَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ تُصْبِحُونَ ﴿١٧﴾

१८. और सभी तारीफों के लायक आकाश और धरती में वही है, तीसरे पहर और दोपहर के समय भी उसकी पकीजगी को बयान करो ।

وَلَهُ الْحُكْمُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَحِينَ تُظْهِرُونَ ﴿١٨﴾

१९. वही जिन्दा को मुर्दा से निकालता है, ^१ और मुर्दा को जिन्दा से निकालता है, और वही धरती को उस की मौत के बाद जिन्दा करता है, इसी तरह तुम (भी) निकाले जाओगे ।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُخْرِجُ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿١٩﴾

२०. और अल्लाह की निशानियों में से है कि तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर अब इंसान बनकर (चलते-फिरते) फैल रहे हो ।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ اَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ اِذَا اَسْتَأْتَمُّوْنَ بِشَرِّكُمْ تَشْعُرُونَ ﴿٢٠﴾

२१. और उसकी निशानियों में से है कि तुम्हारी ही जाति से पत्नियाँ पैदा की ^२ ताकि तुम उन से सुख पाओ, ^३ उस ने तुम्हारे बीच प्रेम और दया भाव पैदा कर दिये, ^४ बेशक और व फिक्र करने वालों के लिए इस में बहुत-सी निशानियाँ (लक्षण) हैं ।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِيَتَسَكَّنُوْا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَآيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

^१ जैसे मुर्गी को अंडे से, अंडे को मुर्गी से, इंसान को वीर्य (मनी) से, वीर्य को इंसान से और इंसान वाले को काफिर से, काफिर को इंसानवालों से पैदा करता है ।

^२ यानी तुम्हारे ही लिंग (जाति) से औरते पैदा की ताकि वे तुम्हारी वीरियाँ हों और तुम जोड़ा-जोड़ा हो जाओ, ^{زوج} अरबी भाषा में जोड़ा को कहते हैं । इस बिना पर मर्द, औरत के लिए और औरत, मर्द के लिए जोड़ा है, औरतों के मानव (इंसानी) लिंग होने का मतलब है कि दुनिया की पहली औरत हजरत हव्वा को हजरत आदम की वायें पहलू से पैदा किया गया, फिर उन दोनों से इंसानों का खानदान चला ।

^३ मतलब यह है कि अगर मर्द और औरत की जाति एक-दूसरे से अलग होती, मिसाल के तौर पर औरते जिन्नात या जानवरों में से होती तो उन से बह सूकन कभी हासिल न होता जो इस समय दोनों के एक ही जाति होने की बजह से होता है बल्कि एक-दूसरे से नफरत और डर होता, यह अल्लाह तआला की रहमत ही है कि इंसान की वीरियाँ इंसानों में से ही बनायी ।

^४ ^{مودة} यह है कि पति, पत्नी से बहुत मुहब्बत करता है और ऐसे ही पत्नी, पति से । जैसाकि आम तौर से देखने में आया है, ऐसी मुहब्बत जो पति-पत्नी में होती है, दुनिया में किसी दो इंसानों के बीच नहीं होती ।

२२. और उस की (कुदरत) की निशानियों में से आकाशों और धरती की पैदाईश और तुम्हारी जुवानों और रंगों का इख्तिलाफ (भी) है। अक्लमंदों के लिए अवश्य (यकीनन) उस में बड़ी निशानियां हैं।

२३. और (दूसरे भी) उसकी (कुदरत) की निशानियां तुम्हारे रात और दिन की नीद में है और उसका फ़ज़ल (यानी रोज़ी) को तुम्हारा खोजना (भी) है, जो लोग कान लगाकर सुनने वाले हैं उन के लिए इसमें बड़ी निशानियां हैं।

२४. और उसकी निशानियों में से एक निशानी यह भी है कि वह तुम्हें डराने और उम्मीद वाला बनाने के लिए तड़ित (विजलियां) दिखाता है, और आकाश से बारिश करता है, और उस से मुर्दा धरती जिंदा करता है, इस में (भी) अक्लमंदों के लिए बड़ी निशानियां हैं।

२५. और उसकी एक निशानी यह भी है कि आकाश और धरती उस के हुक्म से कायेम है, फिर वह जब तुम्हें आवाज़ देगा, केवल एक बार की आवाज़ से ही तुम सब धरती से निकल आओगे।

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَخِلْقَانَ
الْبَشَرِ وَالْوَالِدَاتِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ
لِّعَالَمِينَ ﴿٢٢﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْبَحْرُ
مِنْ فَضْلِهِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ﴿٢٣﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمْ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنزِلُ
مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُخْرِجُ بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٢٤﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ
ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ
تَخْرُجُونَ ﴿٢٥﴾

दुनिया में इतनी जुवानो का पाया जाना भी अल्लाह तआला की कुदरत की एक बहुत बड़ी निशानी है: अरबी है, तुर्की है, अंग्रेजी है, उर्दू है, हिन्दी है, पश्तो, फारसी, सिन्धी, बलूची, तमिल, तेलगू और बंगला वगैरह है। फिर एक-एक जुवान की आवाज़ और बोलियां हैं। एक इंसान अपनी जुवान और उच्चारण (लहजे) के सबब लाखों की भीड़ में पहचान लिया जाता है कि फ़र्ला देश के फ़र्ला इलाके का रहने वाला है, सिर्फ़ जुवान ही उसकी पूरी तारीफ़ करा देती है। इसी तरह एक ही माता-पिता (आदम और हव्वा) से होने के बावजूद भी रंग एक-दूसरे से अलग हैं, कोई काला है, कोई गोरा है तो कोई मेहुआ रंग का, फिर काले और गोरे रंग में भी इतने दर्जे हैं कि ज़्यादातर आबादी दो रंगों में बटने के बावजूद भी उन की कई किसमें हैं, और एक-दूसरे से पूरी तरह से अलग-अलग। फिर उन के मुँह की बनावट, शारीरिक रचना (जिस्मानी रूप) और ढाँचे में ऐसा फ़र्क रख दिया गया है कि एक-एक देश का इंसान अलग से पहचान लिया जाता है।

२६. और आकाश और धरती की सारी चीजों का वही मालिक है और हर एक उस के हुक्म के ताबेह (अधीन) है।

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
كُلُّ لَهٗ قَدِيرٌ ۝

२७. और वही है जो पहली बार सृष्टि (मखलूक) को पैदा करता है, वही फिर से दोबारा पैदा करेगा और यह तो उस पर बहुत आसान है, उसी की अच्छी और उच्च विशेषता (सिफत) है। आकाशों में और धरती में भी, वही जबरदस्त हिक्मत वाला है।

وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ
عَلَيْهِ ۝ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۝
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

२८. अल्लाह तआला ने एक मिसाल खुद तुम्हारी ही बयान की, जो कुछ हम ने तुम्हें अता कर रखा है क्या उस में तुम्हारे दासों (गुलामों) में से कोई तुम्हारा साझीदार है कि तुम और वह इस में बराबर पद के हो ?^१ और तुम उनका डर इस तरह रखते हो जैसे कि खुद अपनों का, हम अक्लमंदों के लिए इसी तरह वाजेह तौर (स्पष्ट रूप) से आयतें बयान करते हैं।

صَبَّ لَكُمْ مَثَلًا مِّنْ أَنفُسِكُمْ ۖ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَا
مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاءَ فِي مَا رَزَقْنَاكُمْ فَأَنْتُمْ
فِيهِ سَوَاءٌ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ
أَنفُسَكُمْ ۚ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

^१ यानी इतने गुणों (सिफत) और महान सामर्थ्य (अजीम कुदरत) का मालिक, तमाम तुलनाओं (तश्बीहों) से महान (बेनियाज) और ऊंचा है।

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ

“उसकी कोई तुलना नहीं।” (सूर: बूरा-११)

^२ यानी जब तुम को यह प्यारा नहीं कि तुम्हारे दास और काम करने वाले जो तुम्हारे ही तरह इंसान हैं, वे तुम्हारे धन-दौलत के साझीदार और तुम्हारे बराबर हो जायें, तो फिर यह किस तरह हो सकता है कि अल्लाह के दाम (भक्त), चाहे वे फरिश्ते हो, रसूल हों, बली, हों या पेड़ और पत्थर के बनाये हुए देवता, वे अल्लाह के साझीदार हो जायें, जबकि वे भी अल्लाह के दास हैं और उसकी मखलूक हैं, यानी जिस तरह पहली बात नहीं हो सकती दूसरी भी नहीं हो सकती, इसलिए अल्लाह के साथ दूसरों की भी इबादत करना और उन्हें भी कष्टनिवारक (मुश्किलकुश) और संकट-मोचन (फरियाद सुनने वाला) समझना हमेशा गलत है।

२९. सहीह वात यह है कि ये जालिम बिना इल्म के इवाहिशात के पुजारी हैं उसे कौन रास्ता दिखाये जिसे अल्लाह रास्ते से हटा दे? उनकी एक भी मदद करने वाला नहीं।

३०. तो आप एकाग्र (एकसू) होकर अपना मुंह दीन की तरफ केन्द्रित (भरकूज) कर दें, अल्लाह (तआला) की वह फितरत जिस पर उस ने लोगों को पैदा किया है। अल्लाह तआला के बनाये को बदलना नहीं, यही सच्चा दीन है, लेकिन ज्यादातर लोग नहीं समझते।

३१. (लोगो!) अल्लाह (तआला) की तरफ आकर्षित होकर उससे डरते रहो और नमाज को कायम रखो और मूर्तिपूजकों में से न हो जाओ।

३२. उन लोगों में से जिन्होंने अपने दीन को छिन्न-भिन्न कर दिया और खुद भी गुटों में बंट गये, हर गुट उस चीज पर जो उसके पास है मगन है।^१

३३. और लोगों को जब कोई दुख पहुँचता है तो अपने रब की तरफ यकसू होकर दुआये करते हैं और जब वह अपनी तरफ से रहमत का मजा चखा देता है, तो उन में का एक गुट अपने रब के साथ शिर्क करने लगता है।

بَلِ السَّيِّغِ الَّذِينَ كَلَّمُوا هُوَاءَهُمْ بِخَيْرٍ عَلَيْهِمْ
فَمَنْ يَهْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَا لَهُمْ
مِنْ نُصِيرِينَ (29)

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَةَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ
النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ لِخَلْقِ اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ
الْقَائِمُ وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (30)

مُذَبِّحِينَ إِلَهُ وَالْقُوَّةَ وَالْقِيَامَ الصَّلَاةَ وَلَا تَكُونُوا
مِنَ الْمُشْرِكِينَ (31)

مِنَ الَّذِينَ فَزَعُوا دِيْنَهُمْ وَكَانُوا شِيْعَاءَ كُلِّ
حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فُرْحُونَ (32)

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُنِيبِينَ
إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا آذَاهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً إِذَا قَرَّبُوا
مِنْهُمْ رَبَّهُمْ يَشْرِكُونَ (33)

^१ क्योंकि अल्लाह की तरफ से हिदायत उसे ही मिलती है, जिसके अन्दर हिदायत हासिल करने की इच्छा और कामना (इवाहिश) होती है, जो इस इच्छा से महसूस होते हैं उन्हें गुमराही में भटकते छोड़ दिया जाता है।

^२ यानी हर गुट और गिरोह यह समझता है कि वह सच पर है और दूसरे झूठे, और जो सहारे उन्होंने खोज रखे हैं, जिन को वे दलील और सुबूत कहते हैं उन पर ख़ुश और मगन है। बद्दुनीवी से इस्लामी उम्मत का भी यही हान हुआ कि वह भी कई गुटों में बंट गई और उनका भी हर गुट इसी झूठे ईमान पर मजबूत है कि वह सच पर है, जबकि सच पर केवल एक ही गुट है, जिसकी पहचान नबी ﷺ ने बतायी है कि मेरे और मेरे सहाबा के रास्ता पर चलने वाला होगा।

३४. ताकि वे उस चीज की नाशुकी जाहिर करें जो हम ने उन्हें अता की है, अच्छा, तुम फ्रायेदा उठा लो, बहुत जल्दी तुम्हें मालूम हो जायेगा।

३५. क्या हम ने उन पर कोई प्रमाण (सवत) नाज़िल किया है, जो उसे बयान करता है जिसे ये अल्लाह के साथ साझीदार बना रहे हैं।

३६. और जब हम लोगों को रहमत का मजा चखाते हैं तो वे बहुत खुश हो जाते हैं, और अगर उन्हें अपने हाथों के करतूत के सबब कोई दुख पहुँचे तो अचानक वे मायूस हो जाते हैं।

३७. क्या उन्होंने यह नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) जिसे चाहे बहुत रिज़क देता है और जिसे चाहे कम, इस में भी उन लोगों के लिए जो ईमान लाते हैं, निशानियाँ हैं।

३८. तो करीबी रिश्तेदार को, गरीब को, मुसाफिर को, हर एक को उसका हक दो, यह उन के लिए बेहतर है, जो अल्लाह (तआला) के मुँह की जियारत (दर्शन) करना चाहते हों, ऐसे ही लोग नजात हासिल करने वाले हैं।

३९. और तुम जो ब्याज पर देते हो कि लोगों के माल में बढ़ता रहे, वह अल्लाह (तआला) के यहाँ नहीं बढ़ता और जो कुछ (सदका और) जकात तुम अल्लाह (तआला) के मुँह देखने

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَهُمْ فَتَعْتَبُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٣٤﴾

أَمْ أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا فَهِيَ كَتِمٌ ﴿٣٥﴾
بِمَا كَانُوا بِهِ يُشْرِكُونَ ﴿٣٥﴾

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوا بِهَا وَإِن تُصِيبَهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيَهُمْ إِذَا هُمْ يَقْتَبُونَ ﴿٣٦﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٣٧﴾

فَأْتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقَّهُ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّبِيلَ ۗ وَذَلِكَ خَيْرٌ لِّذِينَ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ ۗ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿٣٨﴾

وَمَا آتَيْنَهُمْ مِنْ رَّبٍّ لَّيْرُبُوا فِي أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرُبُّوا عِنْدَ اللَّهِ ۗ وَمَا آتَيْنَهُمْ مِنْ زَكَاةٍ يُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُضْطَّعُونَ ﴿٣٩﴾

। यानी ब्याज से खुले तौर से बढ़ोत्तरी तो दिखायी देती है लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं होता, बल्कि उसकी बदनसीबी आखिर में इस दुनिया और आखिरत में तवाही का सबब है। हजरत इब्ने अब्बास और कई सहाबा और ताबईन ने इस आयत में ۞ से मुराद ब्याज नहीं बल्कि वह उपहार (तोहफा) लिया है जो कोई गरीब किसी धनवान को या जनता का कोई इंसान राजा या राजा के अधिकारी (मुलाजिम) को या एक सेवक अपने मालिक को इस इरादे से देता है कि वह उस के बदले में उस से ज्यादा देगा, उसे ۞ इसलिए कहा गया है कि देते समय ज्यादाती का ध्यान होता है। यह अगरचे ठीक है फिर भी अल्लाह के यहाँ इसका बदला नहीं मिलेगा, ۞ से उसी आखिरत के बदले का खण्डन (तरदीद) होता है। इस बिना पर तर्जुमा होगा "जो तुम तोहफा दो इस इरादे से कि बापसी की हालत में ज्यादा मिले तो अल्लाह के यहाँ उसका अज़ नहीं।" (इब्ने कसीर, ऐसरूतफासीर)

(रिज़ा) के लिए दो, तो ऐसे ही लोग हैं अपना बढ़ाने वाले।

४०. अल्लाह (तआला) वह है जिस ने तुम्हें पैदा किया, फिर रिज़क दिया, फिर मार डालेगा, दोबारा जिन्दा कर देगा, बताओ! तुम्हारे साज़ीदारों में से कोई भी ऐसा है जो इन में से कुछ भी कर सकता हो। अल्लाह (तआला) के लिए पाकीजगी और फज़ीलत (विशेषता) है हर उस साज़ीदार से जो यह लोग गढ़ते हैं।

४१. जल-थल में लोगों के कुकर्मों (बुरे कामों) के सबब फ़साद फैल गया, इसलिए कि उन्हें उन के कुछ करतूतों का फल अल्लाह (तआला) चखा दे, (बहुत) मुमकिन है कि वह रूक जायें।

४२. आप कह दीजिए, धरती में चल-फिर कर देखो तो सही कि पहले के लोगों का अंजाम क्या हुआ जिन में ज़्यादातर लोग मूर्तिपूजक थे।

४३. तो आप अपना मुंह उस सीधे और सच्चे दीन की तरफ ही रखें, पहले इस के कि वह दिन आ जाये जिसकी वापसी अल्लाह (तआला) की तरफ से है ही नहीं, उस दिन सब अलग-अलग हो जायेंगे।

४४. कुफ़्र करने वालों पर उनका कुफ़्र होगा और नेक काम करने वाले अपने ही विश्रामगृह (आरामगृह) को सुन्दर (खूबसूरत) बना रहे हैं।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُعِيْبَتُّكُمْ ثُمَّ يُعِيْبَتُّكُمْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَفْعَلُ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا سُبْحٰنَهُ وَعَلَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٠﴾

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ آيَاتِي الثَّٰلِثِينَ لِيُنذِرَهُمْ بَعْضَ الَّذِي عَمِلُوا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤١﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ مَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُشْرِكِينَ ﴿٤٢﴾

فَاقِمِ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَدِيمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمَ لَا مَرَدَ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ يُصْعَقُونَ ﴿٤٣﴾

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلَا نُغْنِي عَنْهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٤٤﴾

1 धल से मुराद इंसानी आबादियाँ और पानी से मुराद समुद्र और समुद्री रास्ते और समुद्र के किनारों की आबादियाँ हैं। फ़साद से मुराद हर वह फ़साद है जिस से इंसान के समाज और बस्तियों में अमनो अमान बरवाद और उन के सुख-चैन में रूकावट पैदा हो।

2 शिर्क का ख़ास तौर से बयान किया गया है कि यह सब से बड़ा गुनाह है। इस के सिवाय इस में दूसरे गुनाह और गलतियाँ भी आ जाती हैं क्योंकि इनका इस्तेमाल भी इंसान अपनी ख़्वाहिशों की गुलामी को कुबूल करके ही करता है, इसीलिए कुछ लोग इसे अमली शिर्क कहते हैं।

४५. ताकि अल्लाह (तआला) अपने फज्ज (कृपा) से उन्हें फल दे, जो ईमान लाये और नेक काम किये, वह काफिरों को दोस्त नहीं रखता है।

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ
إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ (45)

४६. और उसकी निशानियों में खुशखबरी देने वाली हवाओं को चलाना भी है, इसलिए कि तुम्हें अपनी रहमत का मजा चखाये, और इसलिए कि उस के हुक्म से नावें चले और इसलिए कि उस के फज्ज को तुम खोजो और इसलिए कि तुम शुक्रिया अदा करो।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيحَ مُبَشِّرَاتٍ
وَلِيُنْفِثَ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِيَجْزِيَ الْفُلُكَ بِأَمْرِهِ
وَلِيُنَبِّئَهُمْ مِنْ فَضْلِهِ وَتَعْلَمُكُمْ تَشْكُرُونَ (46)

४७. और हम ने आप से पहले भी (अपने) रसूलों को उनकी क्रौम की तरफ भेजा वे उन के पास प्रमाण (दलायेल) लाये, फिर हम ने पापियों से बदला लिया। हम पर ईमानवालों की मदद फर्ज है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ
فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَاتَّقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ
أَجْرَمُوا وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ الْمُؤْمِنِينَ (47)

४८. वह अल्लाह (तआला) है जो हवायें चलाता है, वे बादलों को उठाती हैं फिर अल्लाह (तआला) अपनी मर्जी से उसे आसमान में फैला देता है, और उस के टुकड़े-टुकड़े कर देता है, फिर आप देखते हैं कि उस के अंदर से बूंदें निकलती हैं, और जिन्हें अल्लाह चाहता है उन बंदों पर वह वारिश करता है तो वे खुश हो जाते हैं।

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيحَ فَتُفْثِرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهُ
فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسْفًا فَتَرَى
الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۚ وَإِذَا أَصَابَ بِهِ مِنْ
يَشَاءُ مِنْ عِبَادَةٍ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ (48)

४९. और यकीन (विश्वास) करना कि वारिश (वर्षा) उन पर बरसने से पहले तो वे मायूस हो रहे थे।

وَلَنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلِهِ
كَلْبًا (49)

1. وَدْقٍ का मतलब वारिश है, यानी उन बादलों से अल्लाह अगर चाहता है तो वारिश हो जाती है, जिस से वारिश के चाहने वाले खुश हो जाते हैं।

५०. तो आप अल्लाह की रहमत के निशान देखें कि धरती की मौत के बाद किस तरह अल्लाह तआला उसे जिन्दा कर देता है। वेशक वही मुर्दों को जिन्दा करने वाला है, और वह हर चीज पर कादिर है।

فَانظُرْ اِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ يُحْيِي الْاَرْضَ
بَعْدَ مَوْتِهَا ط اِنَّ ذٰلِكَ لَكُنْىَ الْمَوْتِ وَهُوَ عَلٰى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۵۰﴾

५१. और अगर हम तेज हवा चला दें और ये लोग उन्हीं खेतियों को (मुरझायी हुई) पीली पड़ी देख लें, तो फिर उस के बाद कृतघ्नता (नाशुकी) जाहिर करने लगे।

وَلَيَنْ اُرْسَلْنَا رِيْحًا قَرًاوَةٌ مُّصَفَّرًا لَّاظْلُوًا
مِّنْ بَعْدِ ۙ يَكْفُرُوْنَ ﴿۵۱﴾

५२. वेशक आप मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को (अपनी) आवाज सुना सकते हैं, जबकि वे पीठ फेरकर मुड़ गये हों।

وَاِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تَسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاةَ
اِذَا وَلَوْ اٰمُدْبِرِيْنَ ﴿۵۲﴾

५३. और न आप अंधों को उनकी गुमराही से मार्गदर्शन (हिदायत) देने वाले हैं। आप तो केवल उन्हीं लोगों को सुनाते हैं जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं और हैं भी वे फरमाविरदार।

وَمَا اَنْتَ بِهٰٓيَ الْاَعْمٰى عَنِ صَلٰبِهِمْ اِنَّ تَسْمِعُ
اِلَّا مَن يُّؤْمِنُ بِآيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿۵۳﴾

५४. अल्लाह (तआला) वह है, जिस ने तुम्हें कमजोर हालत में पैदा किया,^२ फिर उस कमजोरी के बाद ताकत अता (प्रदान) किया, फिर उस ताकत के बाद कमजोरी और बुढ़ापा कर दिया,^३ जो चाहता है पैदा करता है, वह

اِنَّهُ الَّذِى خَلَقَكُمْ مِّنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ
ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا
وَّشَيْبَةً ط يَخْتٰلُفُ مَا يَشَاءُ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ﴿۵۴﴾

^१ اٰمُرررررر से मुराद वे अनाज, पैदावार और भेवे हैं जो वारिख से पैदा होते हैं और सुख-सुविधा और खुशहाली के सबब होते हैं। देखने से मुराद नसीहत हासिल करने की नजर से देखना है ताकि इंसान अल्लाह की ताकत और कुदरत और इस बात को कुबूल कर ले कि वह कयामत के दिन उसी तरह मुर्दों को जिन्दा करेगा।

^२ यहाँ से अल्लाह (तआला) अपनी कुदरत का एक दूसरा भोजिजा वयान कर रहा है, और वह है कई तरीकों से इंसान की पैदाईश। निर्बल (कमजोरी की हालत) से मुराद वीर्य (मनी) यानी पानी की बूद है या वचपन।

^३ कमजोरी से मुराद उम्र की वह हालत है जब दिमागी और जिस्मानी कमजोरी की शुरूआत होती है और बुढ़ापे से मुराद उम्र की वह मुहत है जिस में कमजोरी बढ़ जाती है।

सभी को अच्छी तरह जानता और सभी पर पूरी कुदरत रखता है।

५५. और जिस दिन क़यामत आ जायेगी' पापी लोग कसम खायेंगे कि (दुनिया में) एक पल के सिवाय नहीं ठहरे, इसी तरह ये वहके हुए ही रहे।

५६. और जिन लोगों को इल्म और ईमान अता किया गया, वे जवाब देंगे कि तुम तो जैसाकि अल्लाह की किताब में है क़यामत (प्रलय) के दिन तक ठहरे रहे। आज का यह दिन क़यामत का ही दिन है, लेकिन तुम तो यकीन ही नहीं करते थे।

५७. तो उस दिन जालिमों को उनकी दलील कुछ काम न आयेगी और न उन से माफ़ी मंगवायी जायेगी न अमल मांगा जायेगा।

५८. और बेशक हम ने इस क़ुरआन में लोगों के सामने सब मिसालें बयान की है। आप उन के पास कोई भी निशानी लायें, ये काफ़िर तो यही कहेंगे कि तुम (बकवासी) झूठे हो।

५९. अल्लाह (तआला) उन के दिलों पर जो समझ नहीं रखते, इसी तरह मोहर लगा देता है।

६०. तो आप सन्न करें, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, आप को वे लोग हल्का (अधीर) न करें जो यकीन नहीं करते।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ
مَا لَمْ يَكُنُوا أَغْيَارًا سَاعَةَ مَا كُنْ لَكَ كَانُوا يُوَفُّونَ ۝

(55)

وَقَالَ الَّذِينَ أُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِئْتُمْ
فِي كَيْفِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ
وَلَكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ۝

(56)

فَيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعْنَدَ رَبِّهِمْ
وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝

(57)

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ
مَثَلٍ مَوْجِبِينَ جُنْهُهُمْ بِأَيِّ لِقَاؤِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ۝

(58)

كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

(59)

فَأَصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ
الَّذِينَ لَا يُؤْقِنُونَ ۝

(60)

साजत का मतलब है घड़ी, पल (क्षण), मुराद क़यामत है, उसको पल इसलिए कहा गया है कि उसका घटित (वाक़ेअ) होना जब अल्लाह चाहेगा एक पल में हो जायेगा, या इसलिए कि यह उस पल में होगी जो दुनिया का आखिरी पल होगा।

सूरतु लुकमान-३१

सर: लुकमान मक्का में नाजिल हुई, इस में चौतीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अलिफ़- लाम- मीम-

२. यह हिक्मत (दिव्यज्ञान) वाली किताब की आयतें हैं।

३. जो परहेजगारों के लिए हिदायत और (सर्वथा) रहमत है।

४. जो लोग पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते हैं और ज़क़ात (धर्मदान) देते हैं और आखिरत पर (पूरा) यकीन करते हैं।^१

५. यही लोग हैं जो अपने रब की तरफ से हिदायत पर हैं और यही लोग नजात हासिल करने वाले हैं।

६. और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अनायास (लगब) बातों को मोल लेते हैं कि अज्ञानता (जिहालत) के साथ लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटक़ायें और उसे मज़ाक बनायें,^२ यही वे लोग हैं जिनके लिए अपमानित (जलील) करने वाला अज़ाब है।

سُورَةُ الْقُلُوبَانِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْقَمْرُ ١

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ٢

هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِينَ ٣

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ
وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُؤْتُونَ ٤

أُولَئِكَ عَلَى هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ ٥

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ
عَن سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا
أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ٦

^१ नमाज़, ज़क़ात और परलोक (आखिरत) पर ईमान, ये तीनों बहुत अहम हैं, इसलिए इनका खास तौर से बयान किया, बर्ना नेक, सदाचारी और अल्लाह से डरने वाले सभी अनिवार्य आदेश (वाजिबात) और सुन्नत वलिक नेक काम तक लगातार मज़बूती से पूरा करते हैं।

^२ इन सभी चीज़ों से निश्चित रूप (यकीनी तौर) से इंसान अल्लाह के रास्ते से भटक़ जाते हैं और दीन को मज़ाक और हँसी का निशाना भी बनाते हैं।

७. और जब उस के सामने हमारी आयतों का पाठ (तिलावत) किया जाता है तो घमंड के साथ इस तरह मुंह फेर लेता है कि जैसे उस ने सुना ही नहीं, जैसे कि उस के दोनों कानों में डाट हैं।^१ आप उसे कठिन अजाब की खबर दीजिए।

८. बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल कर लिया और काम भी नेक (सुन्नत के अनुसार) किया उन के लिए सुखों वाली जन्नत है।

९. जहाँ वे हमेशा रहेंगे, अल्लाह का सच्चा वादा है, वह बड़ा महिमा (गल्बा) वाला और पूरा हिक्मत वाला है।

१०. उसी ने आकाशों को बिना खंभे (स्तम्भ) के बनाया है, तुम उन्हें देख रहे हो, और उस ने धरती पर पहाड़ों को डाल दिया ताकि वे तुम्हें कंपित (जुम्बिश) न कर सकें, और हर तरह के जानदार धरती में फैला दिये, और उस ने आकाश से बारिश करके धरती से हर तरह के सुन्दर जोड़े उपजा दिये।^२

११. यह है अल्लाह की सृष्टि (मखलूक) अब तुम मुझे इस के सिवाय दूसरे किसी की कोई सृष्टि तो दिखाओ (कुछ नहीं), यह जालिम खुली गुमराही में है।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلَّىٰ مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا كَأَن فِي أُذُنَيْهِ وَقْرًا ۖ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٧﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ النَّعِيمِ ﴿٨﴾

خَالِدِينَ فِيهَا وَعَدَّ اللَّهُ حَقًّا ۖ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٩﴾

خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ۚ وَالْأَرْضَ فِي رَوَابِئِهَا ۚ إِنَّ تَبْيِيدَ بَلَدٍ وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ۖ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ﴿١٠﴾

هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۗ مَا بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿١١﴾

^१ यह उस इंसान की हालत है जो ऊपर बयान किये गये खेलकूद के साधनों (वसायलों) में मग्न रहता है, वह कुरआन की आयतों (सूत्रों) और अल्लाह के रसूल की बातों को सुनकर बहरा बन जाता है, जबकि वह बहरा नहीं होता और इस तरह मुंह फेर लेता है जैसे उस ने सुना ही नहीं, क्योंकि उस के सुनने से वह तकलीफ महसूस करता है, इसलिए उसे इस से कोई फायदा नहीं होता।

^२ ^٢ जहाँ किस्म के मतलब में है, यानी हर तरह के अनाज और मेवे (फल) पैदा किये, इनका अच्छी सिपत, इन के रंग की खूबसूरती और ज्यादा फायदे की तरफ इशारा करता है।

१२. और हम ने बेशक लुकमान को हिक्मत दिया^१ कि तू अल्लाह (तआला) का शुक्रिया अदा कर, हर शुक्र करने वाला अपने ही फायदे के लिए शुक्रिया अदा करता है, जो भी नाशुकी करे वह जान ले कि अल्लाह (तआला) बेनियाज तारीफ वाला है।

१३. और जब लुकमान ने नसीहत करते हुए अपने पुत्र से कहा कि हे मेरे प्रिय पुत्र! अल्लाह (तआला) के साथ साझीदार न बनाना, बेशक अल्लाह का साझीदार बनाना बहुत बड़ा जुल्म है।

१४. हम ने इंसान को उस के माता-पिता के बारे में शिक्षा (तालीम) दी है^२ उसकी माता ने तकलीफों पर तकलीफ उठाकर^३ उसे गर्भ में रखा और उसकी दूध छुड़ायी दो साल में है कि तू मेरी और अपने माता-पिता का शुक्रिया अदा कर, मेरी ही तरफ लौटकर आना है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ ۖ وَمَنْ اشْكُرْ فَإِنَّا لَنُضْفِرُنَّهُ غَنًّا وَكَفْرًا ۗ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿١٢﴾

وَإِذْ قَالَ لُقْمَانُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَحْيِيهُ يَبْنِيُّ لَا اشْكُرْ لِلَّهِ ۖ إِنَّ الشُّكْرَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ ﴿١٣﴾

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَسَنَةً ۖ إِنَّهُ وَهْنًا عَلَى وَهْنٍ وَفِضْلُهُ فِي غَمْرَيْنِ ۖ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ ۖ وَاللَّهُ عَلِيمٌ غَنِيمٌ ﴿١٤﴾

^१ हजरत लुकमान अल्लाह के परहेजगार बंदे थे, जिन्हें अल्लाह तआला ने अक्ल और हिक्मत और धार्मिक मुआमले में ऊँचा मुकाम अता किया था, उन से किसी ने पूछा कि तुम्हें यह इल्म और अक्ल किस तरह हासिल हुआ, उन्होंने फरमाया: सीधे रास्ते पर रहने, ईमानदारी को अपनाने और बेकार बातों से बचने से और खामोश रहने के सबब। यह गुलाम थे, उन के मालिक ने कहा कि बकरी काट कर के उस के सब से अच्छे दो हिस्से लाओ, आखिर में वह जुबान और दिल निकालकर ले गये। एक दूसरे मौक़ा पर मालिक ने उन से कहा कि बकरी काट कर के उस के सब से बुरे दो हिस्से लाओ, वह फिर वही जुबान और दिल लेकर चले गये, पूछने पर उन्होंने बताया कि जुबान और दिल अगर ठीक हों तो यह सब से बेहतर हैं, और अगर बिगड़ जायें तो उन से बुरी कोई चीज़ नहीं। (इब्ने कसीर)

^२ तौहीद और अल्लाह की इबादत के साथ ही माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने पर जोर दिया गया है, इस से इस शिक्षा (तालीम) की अहमियत मालूम होती है।

^३ इसका मतलब यह है कि माता के गर्भ में वच्चा जिस तरह बढ़ता है, माँ पर बोझ बढ़ता जाता है, जिस से माँ कमजोर होती चली जाती है, माँ की इन तकलीफों के बयान से उस तरफ भी इशारा मिलता है कि माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करते वक़्त माँ को प्राथमिकता (तरजीह) दी जाये जैसाकि हदीस में भी है।

१५. और अगर वे दोनों तुझ पर इस बात का दबाव डालें कि तू मेरे साथ साझीदार बना जिसका तुझे इल्म न हो तो तू उनका कहना न मानना, लेकिन दुनिया में उन के साथ भलाई से निर्वाह (वसर) करना और उस के रास्ते पर चलना जो मेरी तरफ झुका हुआ हो। तुम्हारा सब का लौटना मेरी ही तरफ है, तुम जो कुछ करते हो उस से फिर मैं तुम्हें बाख़बर कर दूँगा।

१६. प्यारे बेटे! अगर कोई चीज़ राई के दाने के बराबर हो, फिर वह भी अगर किसी पत्थर के नीचे हो या आकाशों में हो या धरती में हो, उसे अल्लाह (तआला) जरूर लायेगा, अल्लाह (तआला) बड़ा बारीक देखने वाला और जानने वाला है।

१७. हे मेरे प्यारे बेटे! तू नमाज़ कायम रखना, अच्छे कामों के लिए हुक्म देना और बुरे कामों से रोकना, अगर तुम पर मुसीबत आये तो सब्र करना, (यक़ीन करो) कि यह बड़े ताकीदी कामों में से है।

१८. और लोगों के सामने अपने गाल न फुला, और धरती पर अकड़ कर घमंड से न चल, किसी अहंकारी (तकब्वुर) घमंडी इंसान को अल्लाह (तआला) पसन्द नहीं करता।

وَأِنْ جَاهَدَكَ عَلَىٰ أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبُهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۚ وَاتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ أَنَابَ ۚ إِنَّ إِلَهًا لَعِنَّا إِنَّ مَرْجِعَكُمْ فَأَتَيْنَكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾

يَبْنِي أَيْمَانًا إِنْ تَكَرَّرْتَ بِهَا مِنْ حَوَادِلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمَاوَاتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ﴿١٦﴾

يَبْنِي أَيُّومِ الصَّلَاةِ وَأَمْرًا بِالْمَعْرُوفِ وَإِنِّ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصِيدُ عَلَىٰ مَا أَصَابَكَ طَرَفًا مِنْ ذَلِكَ مِنْ حَزْمِ الْأُمُورِ ﴿١٧﴾

وَلَا تَصْغُرْ حَنَدَكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْبُرْ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿١٨﴾

१ यानी घमंड न करो कि लोगों को तुच्छ (हक़ीर) समझो, और जब वे तुझ से बात करना चाहें तो तुम उन से मुंह फेर लो या वातचीत करते वक़्त उन से मुंह फेरे रखो। صر एक रोग है, जो ऊँट के सिर या गर्दन में होता है, जिस से उसकी गर्दन मुड़ जाती है, यहाँ घमंड के रूप में मुंह फेर लेने के अर्थ (मायेना) में इस्तेमाल हुआ है।

१९. और अपनी चाल में दरिमयानापन रख,^१ और अपनी आवाज धीमी रख,^२ बेशक बहुत बुरी आवाज गधे की आवाज है।

२०. क्या तू नहीं देखता कि अल्लाह (तआला) ने धरती और आकाश की हर चीज को हमारी सेवा में लगा रखा है और तुम्हें अपनी खुले और छिपे एहसान पूरे तौर पर कर रखी है, और कुछ लोग अल्लाह के बारे में बिना इल्म, बिना हिदायत और बिना रौशन किताब के झगड़ा करते हैं।

२१. और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) की नाजिल की हुई वही (प्रकाशना) की पैरवी करो, तो कहते हैं कि हम ने तो जिस रास्ते पर अपने बुजुर्गों को पाया है उसी की इत्तेबा करेंगे, चाहे शैतान उन के बुजुर्गों को नरक के अजाब की तरफ बुलाता हो।

२२. और जो इंसान अपने चेहरे को (खुद को) अल्लाह के ताबे कर दे और वह है भी परहेजगार, तो बेशक उस ने मजबूत कड़ा थाम लिया, सभी अमल का नतीजा अल्लाह की तरफ है।

२३. और काफिरों के कुफ्र से आप दुखी न हों, आखिर में उन सभी का लौटना हमारी तरफ ही है, उस समय उन के किये को हम उन्हें बता देंगे, बेशक अल्लाह दिलों कि भेदों (राज) तक जानता है।

وَأَوْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاعْظُضْ مِنْ صَوْتِكَ
إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ لَصَوْتُ الْحَمِيرِ (19)

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مِمَّا فِي السَّمَوَاتِ
وَمِمَّا فِي الْأَرْضِ وَأَسْمِعَ عَلَيْكُمْ نِعْمَةً ظَاهِرَةً
وَبَاطِنَةً ۗ وَمِنَ النَّاسِ مَن يُجَادِلُ فِي اللَّهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى وَلَا كِتَابٍ مُّنِيرٍ (20)

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلَى
نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَكُنَّا كَانِ
الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَى عَذَابِ السَّعِيرِ (21)

وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ
 فَقَدْ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ وَإِلَى اللَّهِ
عَاقِبَةُ الْأُمُورِ (22)

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ ۗ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ
فَتُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ (23)

^१ यानी चाल इतनी धीमी न हो कि जैसे कोई रोगी हो और न इतनी तेज चाल से हो कि मान-सम्मान के खिलाफ हो।

^२ यानी चीख-चिल्लाकर बात न कर, इसलिए कि अगर ऊँची आवाज में बात करना प्यारा होता तो गधे की आवाज सब से अच्छी समझी जाती, लेकिन ऐसा नहीं है, बल्कि गधे की आवाज सब से बुरी और घृणित (नापसंदीदा) है। इसलिए हदीस में आता है कि गधे की आवाज सुनो तो शैतान से पनाह माँगो (बुखारी, किताब वदयिल खलकि और मुस्लिम वगैरह)

२४. हम उन्हें कुछ यूँ ही फायेदा पहुँचा देते हैं, लेकिन आखिर हम उन्हें बहुत मजबूरी की हालत में सख्त अजाब की तरफ हक़ि ले जायेंगे।

وَنَسِئُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ لِنُظَمَّرَهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿٢٤﴾

२५. और अगर आप उन से पूछें कि आकाश और धरती का पैदा करने वाला कौन है? तो ये जरूर जवाब देंगे अल्लाह, तो कह दीजिए कि सारी तारीफ़ों के लायक अल्लाह ही है, लेकिन उन में से ज्यादातर लोग अंजान हैं।

وَلَكِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ
اللَّهُ كُلُّ الْقَدْحِ بِلَهُ بَلَّ الْأَثَرُ هُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٥﴾

२६. आकाशों में और धरती में जो कुछ है वह सब अल्लाह ही का है, बेशक अल्लाह (तआला) बड़ा बेनियाज और महिमा (हम्द) और तारीफ़ के लायक है।

لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَزِيزُ
الْحَمِيدُ ﴿٢٦﴾

२७. और सारी धरती के पेड़ों की अगर क्रलमें हो जायें और सारे समुद्रों की स्याही हो, और उन के बाद सात समुद्र दूसरे हों फिर भी अल्लाह की तारीफ़ खत्म नहीं हो सकती। बेशक अल्लाह (तआला) प्रभावशाली और हिक्मत वाला है।

وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَالْبَحْرُ
يَسَدٌ مِنْ بَعْدِهِ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ
كَلِمَاتُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٧﴾

२८. तुम सब की पैदाईश और मरने के बाद जिन्दा करना ऐसा ही है, जैसे एक जान का, बेशक अल्लाह (तआला) सुनने देखने वाला है।

مَا خَلَقَكُمْ وَلَا يَحْكُمُكُمْ إِلَّا كَتَفْسٍ وَاحِدَةً يَا
إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ﴿٢٨﴾

। इस में अल्लाह तआला की तारीफ़, बड़ाई, जलाल, उस के सब से अच्छे नामों, सब से अच्छे गुणों (अवसाफ़) और उस के वे कलिमा जो उसकी तारीफ़ से आगाह कराते हैं उनका बयान है, वे इतने हैं कि किसी के लिए उनका घेरना या उनकी जानकारी या उन के असल और हकीकत तक पहुँच पाना मुमकिन नहीं है। अगर कोई इसकी गिनती करना और लिखित तौर में लाना चाहे तो दुनिया के सभी पेड़ के कलम बना लिये जायें और सारे समुद्र के पानी की स्याही बनाकर लिखना चाहें और वे खत्म हो जायें, लेकिन अल्लाह के इल्म, उसकी तखलीक और सिफ़त की ज़्यादाती और उसकी अजमत और जलाल के प्रतीकों (मजाहिर) की गिनती नहीं की जा सकती। सात समुद्र अतिशयोक्ति (गुलू) के रूप में है, दायरे में लेने का भकसद नहीं है, इसीलिए कि अल्लाह की आयतों और कलिमा को सीमित (महदूद) कर लेना मुमकिन ही नहीं है। (इब्ने कसीर) इस मायना की आयत सूर: कहफ़ के आखिर में गुजर चुकी है।

२९. या आप नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) रात को दिन में और दिन को रात में खपा देता है ।^१ सूरज और चाँद को उसी ने फरमावर्दार बना रखा है कि हर एक मुकर्रर वक़्त (निर्धारित समय) तक चलता रहे, अल्लाह (तआला) हर उस अमल को जो तुम करते हो जानता है ।

३०. यह सब (इन्तिजाम) इस सबब है कि अल्लाह (तआला) सच है और उस के सिवाय जिन-जिन को लोग पुकारते हैं सब झूठे (वातिल) हैं, और बेशक अल्लाह (तआला) बहुत आला (ऊँचा) और वहुत बड़ा है ।

३१. क्या तुम इस पर ख्याल नहीं करते कि पानी में नावें अल्लाह की नेमत से चल रही हैं, इसलिए कि वह तुम्हें अपने निशान देखा दे, बेशक इस में हर सब्र करने वाले और शुक्रगुजार के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं ।

३२. और जब उन पर धारायें उन छत्रों (साइवानों) की तरह छा जाती हैं, तो वे (बहुत) यकीन कर के अल्लाह (तआला) ही को पुकारते हैं और जब अल्लाह (तआला) उन्हें छूटकारा दिलाकर थल (खुशकी) की तरफ पहुँचाता है, तो कुछ उन में से संतुलित (ऐतदाल पर) रहते हैं, और हमारी आयतों का इंकार वही करते हैं, जो वादा तोड़ने वाले और नाशुके हों ।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُؤَيِّجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَيِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلًّا يَجْرِى إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿٢٩﴾

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِن دُونِهِ الْبَاطِلُ ۗ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيمُ الْكَبِيرُ ﴿٣٠﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرَىٰ فِي الْبَحْرِ بِعِصْمِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿٣١﴾

وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوَاجٌ كَالظُّلُمِ اللَّيْلِ دَعَاؤُهُمْ مَّخْلُصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كَأَنَّهُمْ يَحْفَاؤُا كَلْبًا ﴿٣٢﴾

^१ यानी रात का कुछ भाग लेकर दिन में शामिल करता है, जिस से दिन बड़ा और रात छोटी हो जाती है, जैसे गर्मी के मौसम में होता है, फिर दिन का कुछ भाग लेकर रात में शामिल कर देता है जिस से दिन छोटे और रात बड़ी हो जाती है, जैसे सर्दी के मौसम में होता है ।

३३. लोगो! अपने रब का भय (डर) रखो और उस दिन का भय करो, जिस दिन पिता अपने पुत्र को कोई लाभ (फायदा) न पहुँचा सकेगा और न पुत्र अपने पिता को तनिक भी लाभ पहुँचाने वाला होगा, याद रखो! अल्लाह का वादा सच्चा है, देखो! तुम्हें सांसारिक जीवन धोखे में न डाले और न धोखेबाज (शैतान) तुम्हें धोखे में डाल दे।

३४. बेशक अल्लाह (तआला) ही के पास कयामत का इल्म है, वही बारिश करता है और माँ के गर्भ में जो है उसे जानता है। कोई (भी) नहीं जानता कि कल क्या कुछ कमायेगा? न किसी को यह मालूम है कि किस धरती पर मरेगा! याद रखो! अल्लाह (तआला) ही पूरे ज्ञान (इल्म) वाला और सच्चाई जानने वाला है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَأَحْسِنُوا يَوْمًا
لَّا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَائِدٌ
عَنْ وَالِدِهِ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرُّوكُمُ
الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرُّكُم بِاللَّهِ الْغُرُورُ ﴿٣٣﴾

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ
الْفَيْضَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ طَوْمَا تَدْرِي
نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ عَنَّا طَوْمَا تَدْرِي نَفْسٌ
بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ ط إِنَّ اللَّهَ عَلَيْهِمْ حَكِيمٌ ﴿٣٤﴾

हदीस में आता है कि पाँच चीजें अप्रत्यक्ष (गैब) की कुंजियाँ हैं, जिन्हें अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता। (सहीह बुखारी, तफसीर सूर: लुकमान और किताबुल इस्तिस्का) (१) कयामत के करीब होने की निशानी तो नबी ﷺ ने बयान किये हैं, लेकिन कयामत के आने का निश्चित ज्ञान (यक़ीनी इल्म) अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं, किसी फ़रिश्ते को नहीं और किसी भेजे गये रसूल को नहीं। (२) बारिश का मसअला ऐसा ही है, निशानी और इशारे से अंदाजा तो लगाया जा सकता है लेकिन यह बात हर इंसान के अनुभव (तर्जुबा) और दर्शन में है कि यह अंदाजे कभी सही होते हैं कभी गलत। यहाँ तक मौसम विभाग का एलान भी ठीक नहीं होता, जिस से मालूम होता है कि बारिश का भी निश्चित ज्ञान (इल्म) अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं। (३) माँ के गर्भ में मशीन के जरिये लिंग (जिन्स) का अंधूरा अंदाजा तो शायद मुमकिन है कि लड़का है या लड़की? लेकिन माँ के गर्भ में पलने वाला यह बच्चा नसीब वाला है या बदनसीब और पूरा है या अंधूरा, खूबसूरत होगा या बद्सूरत, काला होगा या गोरा बगैरह बातों का इल्म अल्लाह के सिवाय किसी को नहीं। (४) इंसान कल क्या करेगा? वे दीनी काम होगा या दुनियावी? किसी को आने वाले कल के बारे में इल्म नहीं है कि वह उस की जिन्दगी में आयेगा भी या नहीं? और अगर आया भी तो वह उस में क्या कुछ करेगा? (५) मौत कहाँ आयेगी? घर में या घर से बाहर, अपने देश में या परदेश में, जवानी में आयेगी या बुढ़ापे में, अपने दिल की तमन्ना (इच्छा) पूरी होने के बाद या पहले? किसी को इल्म नहीं।

सूरतुस्सज्दा-३२

सूर: सज्दा* मक्का में नाज़िल हुई और इस में तीस आयतें और तीन रूक़ुऊ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अलिफ़ • लाम • मीम •

२. बेशक इस किताब का नाज़िल करना सारी दुनिया के रब की तरफ से है।

३. क्या यह कहते हैं कि इस ने उसे गढ़ लिया है? नहीं-नहीं, बल्कि यह तेरे रब की तरफ से सच है, ताकि आप उन्हें डरायें जिन के पास आप से पहले कोई डराने वाला नहीं^१ आया, मुमकिन (संभव) है कि वे सच्चे रास्ते पर आ जायें।

سُورَةُ السَّجْدَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ ①

تَكْوِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ رَبِّ

الْعَالَمِينَ ②

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ۗ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ
لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أَتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِّن قَبْلِكَ

لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ③

* सूर: अलिफ़ • लाम • मीम • बस्सज्दा : हदीस में आता है कि नबी ﷺ जुमे (शुक्रवार) के दिन फ़ज्र (भोर) की नमाज़ में अलिफ़ • लाम • मीम • अस्सज्दा (और दूसरी रकअत में) सूर: दहर पढ़ा करते थे। (सहीह बुखारी और मुस्लिम किताबुल जुमा) उसी तरह यह भी सहीह सनद से साबित है कि नबी ﷺ रात को सोने से पहले सूर: अलिफ़ • लाम • मीम • अस्सज्दा और सूर: मुल्क पढ़ा करते थे। (तिभिज़ी नं० ८९२ और मुसनद अहमद ३४०/३)

^१ यह फटकार के तौर पर है कि क्या सारी दुनिया के रब की उतारी हुई इस अहम किताब (ग्रन्थ) के बारे में कहते हैं कि इसे खुद (मोहम्मद ﷺ) ने गढ़ लिया है।

^२ यह कुरआन के नाज़िल होने का सबब है, उस से भी मालूम हुआ (जैसाकि पहले भी बयान गुजर चुका है) कि अरबों में नबी ﷺ पहले नबी थे। कुछ लोगों ने हज़रत शूऐब को भी अरबों में भेजा हुआ माना है, इस बिना पर उम्मत से मुराद फिर ख़ास तौर से कु़ैश होंगे जिनकी तरफ कोई नबी आप ﷺ से पहले नहीं आया।

४. अल्लाह (तआला) वह है जिस ने आकाशों और धरती को और जो कुछ उन के बीच है सब कुछ छः दिन में पैदा किया, फिर अर्ध पर बुलन्द हुआ, तुम्हारे लिए उस के सिवाय कोई मदद करने वाला सिफारिशि नहीं! क्या फिर भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते?

५. वह आकाश से धरती तक कामों का इतेजाम करता है, फिर (वह काम) एक ऐसे दिन में उसकी तरफ चढ़ जाता है जिसका अंदाजा तुम्हारे हिसाब के एक हजार साल के बराबर है।

६. यही है हाज़िर और ग़ैब का जानने वाला जबरदस्त गालिब, बड़ा मेहरवान।

७. जिस ने बड़ी खूबसूरत बनाई जो चीज भी बनायी और इंसान की पैदाईश मिट्टी से शुरू की।^१

८. फिर उसका वंश एक तुच्छ (हकीर) पानी के निचोड़ से बनाया।^२

९. जिसे ठीक-ठाक कर के उस में अपना प्राण (रूह) फूँका, और उसी ने तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाये, (उस पर भी) तुम बहुत ही थोड़ा शुक्रिया करते हो।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ط
مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ط
أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٤﴾

يَذَرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَرْجِعُ
إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ وَمِمَّا
تَعُدُّونَ ﴿٥﴾

ذَٰلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ﴿٦﴾

الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ
الْإِنسَانِ مِنْ طِينٍ ﴿٧﴾

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ
مَّهِينٍ ﴿٨﴾

ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُّوحِهِ وَجَعَلَ
لَكُمْ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ط قَلِيلًا
مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٩﴾

^१ यानी वहाँ कोई ऐसा दोस्त नहीं होगा जो तुम्हारी मदद कर सके और तुम उस के जरिये अल्लाह के अज्ञाब को टाल सको, न वहाँ कोई सिफारिश करने वाला ही ऐसा होगा जो तुम्हारी सिफारिश कर सके।

^२ यानी पहले इंसान आदम को मिट्टी से बनाया, जिन से इंसानों का आगाज़ हुआ और उनकी बीबी हज़रत हौवा को आदम की वायीं पसली से पैदा किया, जैसाकि हदीस से मालूम होता है।

^३ यानी धीर्य (मनी) की बूंद से। मतलब यह है कि एक इंसान का जोड़ा बनाने के बाद, उस के खानदान के लिए यह तरीका मुकरर किया कि औरत-मर्द आपस में विवाह (शादी) करें, उन के मिलन से जो पानी की बूंद, स्त्री के गर्भाशय (रिहम) में जायगी, उस से हम एक इंसान का जिस्म बनाकर बाहर भेजते रहेंगे।

१०. और उन्होंने कहा कि क्या हम जब धरती में खो जायेंगे क्या फिर नये जीवन में आ जायेंगे? बल्कि (बात यह है) कि उन लोगों को अपने रव के मिलन का यक्रीन ही नहीं।

११. कह दीजिए ! कि तुम्हें मौत का फरिस्ता (यमदूत) मारेगा जो तुम पर तैनात किया गया है, फिर तुम सब अपने रव की तरफ लौटायें जाओगे।

१२. और काश कि आप देखते जब कि पापी लोग अपने रव के सामने सिर झुकाये हुए होंगे, कहेंगे कि हे हमारे रव! हम ने देख लिया और सुन लिया, अब तू हमें वापस लौटा दे तो नेकी के काम करेंगे, हम ईमान वाले हैं।

१३. और अगर हम चाहते तो हर इंसान को हिदायत दे देते, लेकिन मेरी यह बात पूरी तरह सच हो चुकी है कि मैं जरूर जहन्नम को इंसानों और जिन्नो से भर दूँगा।

१४. अब तुम अपने उस दिन के मिलन को भूल जाने का मजा चखो, हम ने भी तुम्हें भुला दिया, अपने किये हुए अमल के (बुरे नतीजे) से स्थाई यातना (मुस्ताक़िल अजाब) का मजा लो।

१५. हमारी आयतों पर वही ईमान लाते हैं, जिन्हें जब कभी शिक्षा (नसीहत) दी जाती है तो सज्दे में गिर पड़ते हैं, और अपने रव की तारीफ के साथ उसकी महिमागान (तस्बीह) करते हैं और तकब्बुर से अलग रहते हैं।

१६. उनकी करवटें अपने बिस्तरों से अलग रहती हैं, अपने रव को डर और उम्मीद के साथ पुकारते हैं,^१ और जो कुछ हम ने उन्हें दे

وَقَالُوا إِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ

جَدِيدٍ ۗ بَلْ هُمْ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ لَكُفْرُونَ ﴿۱۰﴾

قُلْ يَتَوَكَّلْكُمْ مَلَائِكَةُ السَّمَوَاتِ وَيَكِلُ بِكُمْ

شُمُورًا إِلَىٰ رَبِّكُمْ ۗ تَوَجَّهُونَ ﴿۱۱﴾

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُسْحَرُونَ تَاكُسُوا رُءُوسِهِمْ

عِندَ رَبِّهِمْ ۗ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا وَسَبَّحْنَا فَارْجِعْنَا

نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوقِنُونَ ﴿۱۲﴾

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًىٰ وَلَكِنْ

حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ

وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿۱۳﴾

فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا إِنَّا نَسِينَاكُمْ

وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿۱۴﴾

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِرُوا بِهَا

خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ

لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿۱۵﴾

تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ رَبَّهُمْ

خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿۱۶﴾

^१ यानी उसकी रहमत और नेमत के साथ उसके एहसान और इआम की उम्मीद भी रखते हैं और

रखा है, वह खर्च करते हैं।¹

१७. कोई प्राणी (नफस) नहीं जानता जो कुछ हम ने उनकी आँखों की ठंडक उन के लिए छिपा रखी है,² जो कुछ करते थे यह उसका बदला है।

१८. क्या वह जो ईमानवाला हो उसके बराबर है जो भ्रष्टाचारी (फासिक) हो?³ ये बराबर नहीं हो सकते।

१९. जिन लोगों ने ईमान कबूल किया और नेकी के काम किये, उन के लिए दायमी जन्नत है, मेहमानी है, उन के अमल के बदले जो वह करते थे।

२०. और लेकिन जिन्होंने हुकम की नाफरमानी की उनका ठिकाना नरक है, जब कभी भी उस से निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिये जायेंगे, और कह दिया जायेगा कि अपने झुठलाने के बदले आग का मज्जा चखो।

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٧﴾

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا لَّا يَسْتَوُونَ ﴿١٨﴾

أَفَأَنزَلْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٍ سَاءَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٩﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ كُلَّمَا أَرَادُوا أَن يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٠﴾

उस के गजब और अजाब और पकड़ और सजा से डरते भी हैं, सिर्फ उम्मीद ही उम्मीद नहीं रखते हैं, कि अमल से बेफिक्र हो जायें (जैसाकि वे अमल और बेअमलों का काम है) और न अजाब का इतना डर ही रखते हैं कि उसकी रहमत और नेमत से मायूस हो जायें क्योंकि यह मायूसी भी कुफ्र और गुमराही की सूचक (निशानी) है।

¹ खर्च में जकात (आवश्यक दान) आम सदका (सत्कार) नेकी दोनों शामिल हैं, ईमानवाले दोनों का अपनी ताकत भर प्रयोजन (इस्तेमाल) करते हैं।

² यानी उस को अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता, उन उपहारों (इआमों) को जो उक्त ईमान वाले के लिए छिपा रखी है, जिन से उनकी आँखें ठंडी हो जायेगी। इसकी तफसीर में नबी ﷺ ने यह हदीस कुदसी बयान की है कि अल्लाह तआला फरमाता है कि मैंने अपने नेक बंदों के लिए वे चीजें तैयार कर रखी हैं जो किसी आँख ने देखी और न किसी कान ने सुनी, न किसी इंसान के ध्यान में आयी। (सहीह बुखारी, तफसीर सूर: सज्दा)

³ यह प्रश्न नकारात्मक (मन्फ्री) है, यानी अल्लाह के सामने ईमान वाले और काफिर बराबर नहीं हो सकते हैं, बल्कि उन के बीच बहुत फासला और दूरी होगी, ईमान वाले अल्लाह के मेहमान होंगे और मान-सम्मान (इज्जत-एहतेराम) के हकदार होंगे।

२१. और बेशक हम उन्हें करीब के छोटे से कुछ अजाबों को^१ उस बड़े अजाब के अलावा चखायेंगे ताकि वह लौट आयें ।

२२. और उस से बढ़कर जालिम कौन है जिसे अल्लाह की आयतों से भाषण (वाज्र) दिया गया, फिर भी उस ने उन से मुख फेर लिया, निश्चय हम भी पापियों से बदला लेने वाले हैं।

२३. और हकीकत में हम ने मूसा को किताब (ग्रन्थ) अता की, तो आप को कभी उस के मिलन में शक नहीं करनी चाहिए, और हम ने उसे इस्राईल की औलाद की हिदायत का जरिया बनाया ।

२४. और हम ने उन में से, चूँकि उन लोगों ने सब किया, ऐसे अगुवा बनाये जो हमारे हुक्म से लोगों की हिदायत करते थे और हमारी आयतों पर यक्रीन रखते थे ।^२

२५. बेशक आप का रव उन सब के बीच इन सारी बातों का फैसला कयामत के दिन करेगा, जिन में वे इख्तिलाफ कर रहे हैं ।

وَلَنْدُبِقَّعَهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأُولَىٰ ذَوْنُ الْعَذَابِ
الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢١﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ
عَنْهَا وَإِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ ﴿٢٢﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُن فِي مِرْيَةٍ
مِّن لِّقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ ﴿٢٣﴾

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ إِمَّةً يَهْتَدُونَ بِأَمْرِنَا إِنَّا
صَبْرًا وَكُنَّا بِآيَاتِنَا يُوقِنُونَ ﴿٢٤﴾

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٥﴾

^१ करीबी अजाब (निकट की कुछ यातनाओं) से दुनियावी अजाब या दुनियावी दुख और रोग वगैरह मुराद है, कुछ के करीब वे कत्ल इस से मुराद है, जिस से बद्र के युद्ध में काफिर पीड़ित हुए, या वह सूखा है जो मक्कावासियों पर पड़ा था । इमाम शौकानी फरमाते हैं ये सारी हालतें और परिस्थितियाँ (कवाएफ) इस में शामिल हो सकती हैं ।

^२ इस आयत से सब की अहमियत जाहिर होती है, सब और तक्रबा का मतलब है कि अल्लाह के हुक्म का पालन करने और पाप को छोड़ने में और अल्लाह के रसूलों की तसदीक और उन की पैरवी में जो कष्ट सहन करने पड़ें, उन्हें खुशी से सहन करना । अल्लाह ने फरमाया: उन के सब करने और अल्लाह की आयतों पर यक्रीन करने के सबब हम ने उन्हें इमामत और प्रतिनिधित्व (पेशवाई) की जगह पर नियुक्त (मूतअय्यन) कर दिया, लेकिन जब उन्होंने उस के खिलाफ परिवर्तन (तहरीफ) और संबोधन (तावील) का काम शुरू कर दिया तो उन से यह पद छीन लिये गये । इसलिए उस के बाद उन के दिल कड़े हो गये, फिर न उनका अमल सदाचारी (तक्रबा वाला) रहा न उनका ईमान ठीक ।

२६. क्या इस बात ने भी उन्हें मार्गदर्शन प्रदान (हिदायत) न किया कि हम ने उन से पहले के बहुत सी जमाअतों को हलाक कर दिया, जिन के आवासों में ये चल फिर रहे हैं। उस में तो बड़ी-बड़ी नसीहतें हैं, क्या फिर भी यह नहीं सुनते।

२७. क्या यह नहीं देखते कि हम पानी को उसर (निर्जन) धरती की तरफ बहाकर ले जाते हैं, फिर उस से हम खेतियाँ उपजाते हैं जिसे उन के जानवर और वे खुद खाते हैं, क्या फिर भी यह नहीं देखते?

२८. और कहते हैं कि यह फ़ैसला कब होगा? अगर तुम सच्चे हो तो वतलाओ?^१

२९. जवाब दे दो कि फ़ैसले के दिन ईमान लाना बेईमानों को कुछ काम न आयेगा और न उन्हें ढील दी जायेगी।^२

३०. अब आप इनका ख्याल भी छोड़ दीजिए और इंतज़ार में रहें यह भी इंतज़ार कर रहे हैं।

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِمَّنْ
الْقُرُونِ يَسْتُونَ فِي مَسْكِتِهِمْ طَرَانٌ فِي ذَلِكَ
لَا يَتَّبِعُونَ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٦﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ السَّاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرَّةِ
فَتَخْرُجُ بِهِ زُرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ
أَفَلَا يَبْصُرُونَ ﴿٢٧﴾

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْفَتْحُ إِن كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ﴿٢٨﴾

فَلْيَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيْمَانُهُمْ
وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ ﴿٢٩﴾

فَاعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ إِنَّهُمْ مُنْتَضِرُونَ ﴿٣٠﴾

^१ पानी से मुराद आकाशीय वारिष और श्रोतों (चश्मों), नालों और घाटियों का पानी है, जिसे अल्लाह तआला बंजर और बेजान जगह की तरफ बहाकर ले जाता है और उस से पैदावार होती है जो इंसान खाता है, और जो भूसा और चारा होता है वह जानवर खा लेते हैं। इस से मुराद कोई खास इलाका और जमीन नहीं है, बल्कि आम है जो हर बेजान, बंजर समतल जमीन को शामिल करता है।

^२ इस फ़ैसले (बिजय) से मुराद अल्लाह तआला का वह अजाब है जो मक्का के काफ़िर नबी ﷺ से मांगा करते थे और कहा करते थे कि ऐ मोहम्मद (ﷺ) तेरे अल्लाह की मदद तेरे लिए कब आयेगी, जिस से तू हमें डराता रहता है? अभी तो हम यही देख रहे हैं कि तुझ पर ईमान लाने वाले छुपे फिरते हैं।

^३ इस फ़ैसले के दिन से मुराद आखिरत के फ़ैसले का दिन है, जहाँ ईमान कुबूल किया जायेगा और न मीका दिया जायेगा, मक्का फलह का दिन नहीं है, क्योंकि उस दिन ٱلْفَتْحِ का इस्लाम कुबूल कर लिया गया था जिनकी तादाद लगभग दो हजार थी। (इब्ने कसीर)

सुरतुल अहज़ाब-३३

सूर: अहज़ाब मदीने में नाज़िल हुई और इस में तिहत्तर आयतें और नौ रूक़ुज़ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. हे नबी! अल्लाह तआला से डरते रहना और काफ़िर और मुनाफ़िकों की बातों में न आ जाना, अल्लाह तआला बहुत इल्म वाला बहुत हिक्मत वाला है।

२. और जो कुछ आप की तरफ़ आप के रब की तरफ़ से वहयी (प्रकाशना) की जाती है उसकी इत्तेबा करें (यक़ीन करो) कि अल्लाह तुम्हारे हर अमल से वाकिफ़ है।

३. और आप अल्लाह ही पर भरोसा रखें अल्लाह काम बनाने के लिए काफ़ी है।

४. किसी इंसान के सीने में अल्लाह ने दो दिल नहीं रखे, और अपनी जिन बीबियों को तुम माता कह बैठते हो उन्हें अल्लाह ने तुम्हारी (सचमुच) मातायें नहीं बनाया और न तुम्हारे गोद लिये हुए बालकों को (हक़ीक़त में) तुम्हारे पुत्र बनाये हैं। यह तो तुम्हारे अपने मुँह की बातें हैं,^१ अल्लाह (तआला) सच बात कहता है^२

سُورَةُ الْاِحْتِزَابِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اَتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِيعِ الْكٰفِرِيْنَ
وَالْمُنٰفِقِيْنَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ①

وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ حٰصِرًا ②

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِیْلًا ③

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِیْ جَوْفِهِ ؕ وَمَا
جَعَلَ اٰزْوَاجَكُمُ الَّتِیْ تَنْظُرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهَاتِكُمْ ؕ
وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَاءَكُمْ اِبْنَاءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ
بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِی

التَّسْوِیْلِ ④

^१ यानी क़ुरआन की और हदीसों की भी, इसलिए कि हदीसों के शब्द यद्यपि (अगरचे) नबी ﷺ के पाक मुँह से निकले हुए हैं, लेकिन उसका मतलब और तफ़सीर अल्लाह की तरफ़ से ही है, इसीलिए उनको गुप्त प्रकाशना (वहयी ग़ैर मतलू) या पाठ न की जाने वाली (अपाठय) वहयी कहा जाता है।

^२ यानी किसी को माँ कह देने से वह माँ नहीं बन जायेगी, न पुत्र कहने से पुत्र बन जायेगा, यानी उन पर माँ और बेटे का धार्मिक विधान (शरई कानून) लागू नहीं होंगे।

^३ इसलिए उसकी पैरवी करो और मुँह वांती औरत को माँ और गोद लिए बच्चे को पुत्र न कहो, ध्यान रहे कि किसी को प्यार-मोहब्बत में पुत्र कहना अलग बाल है और गोद लिये बच्चे को हक़ीक़ी बेटा मान कर बेटा कहना दूसरी बात है, पहली बात मान्य है, यहाँ मक़सद दूसरी बात का हराम करना है।

और वही (सीधी) राह सुझाता है ।

५. गोद लिए बच्चों को उन के (हकीकी) पिताओं की तरफ मसूब करके बुलाओ, अल्लाह के करीब पूरा इंसान यही है, फिर अगर तुम्हें उन के (हकीकी) पिता का इल्म ही न हो तो वे तुम्हारे दीनी भाई और दोस्त हैं। तुम से भूल चूक से जो कुछ हो जाये उस में तुम पर कोई गुनाह नहीं, लेकिन गुनाह वह है जिसका तुम इरादा करो और इरादा दिल से करो। अल्लाह (तआला) बड़ा माफ करने वाला रहम करने वाला है ।

६. पैगम्बर ईमानवालों पर खुद उन से भी ज्यादा हक रखने वाले हैं,^१ और पैगम्बर की बीवियाँ ईमानवालों की मातायें हैं^२ और रिश्तेदार अल्लाह की किताब के आधार पर दूसरे ईमानवालों और मुहाजिरो के मुकाबले ज्यादा हकदार हैं । (हाँ) तुम्हें अपने दोस्तों के साथ अच्छा सुलूक करने की इजाजत है । यह हुक्म 'सुरक्षित पुस्तक' (लौहे महफूज) में लिखा हुआ है ।

أَدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ فَإِنْ لَمْ تَلْمِزُوا آبَاءَهُمْ فَمَا حَزَنًا لَكُمْ فِي الدِّينِ وَمَا عَلَيْكُمْ وَلَا نَسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ وَلَا لَكِن مَّا تَعَدَّتْ قُلُوبُكُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ⑤

الَّذِينَ آوَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ نَفْسِهِمْ وَأَزْوَاجَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ هُوَ أَوْلُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا إِلَىٰ أَوْلِيَائِكُمْ مَعْرُوفًا كَانَ ذَلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ⑥

^१ इस हुक्म से उस रीति को हराब कर दिया गया जो जाहिलियत से चली आ रही थी और इस्लाम के शुरूआती दौर में मौजूद थी कि गोद लिये हुए बच्चे को हकीकी बेटा समझा जाता था । सहाबा केराम का कौल है कि हम जैद बिन हारिसा को जिन्हें रसूल अल्लाह ﷺ ने आजाद करके पुत्र बना लिया था । जैद बिन मोहम्मद कहकर पुकारा करते थे, यहाँ तक कि कुरआन की आयत أُدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ नाज़िल हो गयी ।

^२ नबी ﷺ अपनी उम्मत के जितने खैरख्वाह और भलाई चाहने वाले थे, स्पष्टीकरण (वज़ाहत) की जरूरत नहीं । अल्लाह तआला ने आप ﷺ की इस मुहब्बत और खैरख्वाही को देखकर इस आयत में आप (ﷺ) को ईमानवालों को अपनी जानों से भी ज्यादा मुहब्बत करने लायक और आप ﷺ की मुहब्बत दूसरी सभी मुहब्बत से बड़ी और आप का हुक्म अपनी सभी इच्छाओं से बेहतर बताया है, इसलिए मुसलमानों के लिए जरूरी है कि आप ﷺ जिस माल की मांग अल्लाह के लिए करें, वह आप ﷺ पर निछावर कर दें, चाहे उन्हें खुद कितनी ही जरूरत हो, आप ﷺ को अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करें । (जैसे हज़रत उमर का वाक़ेआ है)।

^३ यानी इज़जतों एहतेराम के करने में और उन से विवाह (खादी) न करने में मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतों की मातायें भी हैं ।

७. और जबकि हम ने सभी नवियों से अहद लिया (खास तौर से) आप से और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और मरियम के बेटे ईसा से और हम ने उन से वादा भी पक्का और मजबूत लिया ।^१

८. ताकि अल्लाह तआला सच्चों से उनकी सच्चाई के बारे में पूछे, और न मानने वालों के लिए हम ने दुखद सजायें तैयार कर रखी हैं ।

९. हे ईमानवालो! अल्लाह तआला ने जो उपकार तुम पर किया, उसे याद करो जबकि तुम्हारा सामना करने के लिए सेनाओं पर सेनायें आयीं फिर हम ने उन पर तेज गति वाली आधी और ऐसी सेना भेजी जिन्हें तुम ने देखा ही नहीं,^२ और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह (तआला) सबको देखता है ।

१०. जबकि (दुश्मन) तुम्हारे ऊपर से और नीचे से आ गये^३ और जबकि आँखें पथरा गयीं और कलेजा मुँह को आने लगा, और तुम अल्लाह के धारे में मुह्तलिफ विचार करने लगे ।^४

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ
وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى ابْنِ
مَرْيَمَ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِيثَاقًا غَلِيظًا ۝٧

لِيَسْئَلَ الضَّالِّينَ عَنْ صِدْقِهِمْ وَأَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝٨

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ
إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ رِيحًا وَجُنُودًا
لَمْ تَرَوْهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝٩

إِذْ جَاءَكُمْ مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ
وَإِذْ رَأَيْتُمُ الْأَيْدِيَ الْأَيْصَادَ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ
وَكُفَّوْنَ بِاللَّهِ الظُّنُونًا ۝١٠

^१ इस वादे से क्या मुराद है? कुछ के करीब यह वह वादे है जो एक-दूसरे की मदद और तसदीक का रसूलों से लिया गया था, जैसाकि सूर: आले इमरान की आयत नं० ८१ में है। कुछ के नजदीक यह वह वादा है जिसका बयान सूर: बूरा की आयत नं० १३ में है कि दीन को कायम करना और उस में भेद (इख्लिलाफ) न डालना, यह वादा अगरेचे सभी नवियों से लिया गया था, लेकिन यहाँ पर खास तौर से पाँच रसूलों का नाम है, जिन से उन की अहमियत और फजीलत का अंदाजा होता है और उन में भी नबी ﷺ का बयान सब से पहले है, जबकि रसूलों के बिना पर आप ﷺ आखिरी है, इस से आप ﷺ की इज्जत और एहतेराम की जिस तरह बजाहत हो रही है, उसकी व्याख्या (तफसील) करने की जरूरत नहीं है।

^२ इस आयत में अहजाब की लड़ाई की मुह्तसर जानकारी है जो ५ हिजरी में वाकेअ हुई, इसे अहजाब इसलिए कहते हैं कि इस मौका पर सभी इस्लाम के दुश्मन इकट्ठा होकर मुसलमानों के केन्द्र मदीने पर हमला करने के लिए आये। अहजाब अरबी जुबान में हिजब (गिरोह) का बहुबचन है, इसे खन्दक की जग भी कहते हैं, इसलिए कि मुसलमानों ने मदीने के बचाओ के लिए मदीने की तरफ खन्दक (खाई) खोद दी थी, ताकि दुश्मन मदीने के अन्दर न आ सकें।

^३ इस से मुराद यह है कि हर तरफ से दुश्मन आ गये या ऊपर से मुराद गत्फान हवाजिन और दूसरे नज्द के मूर्तिपूजक हैं और नीचे के तरफ से कुरैश और उन के साथी और सहयोगी।

^४ यह मुसलमानों की उस हालत का बयान है जिस से वे उस वक़्त परेशान थे।

११. यही ईमानवालों का इम्तेहान लिया गया और पूरी तरह से वे झिझोड़ दिये गये ।

१२. और उस वक़्त द्वयवादी (मुनाफ़ि़क़) और रोगी दिल वाले कहने लगे कि अल्लाह (तआला) और उस के रसूल ने हम से सिर्फ़, छल और कपट के ही वादे किये थे ।

१३. और उन ही के एक गुट ने आवाज़ लगायी कि हे यथरिब वालो ! तुम्हारे ठहरने का (यह) मुक़ाम नहीं चलो लौट चलो, और उनका एक दूसरा गुट यह इज़ाज़त नदी से मांगने लगा कि हमारे घर ख़ाली और असुरक्षित (ग़ैर महफूज़) हैं । हकीकत में वे (सुले हुए) असुरक्षित न थे, (लेकिन) उनका मज़बूत इरादा भाग खड़े होने का हो चुका था।

१४. और अगर मदीने के चारों तरफ़ से उन पर (सेनायें) दाख़िल करायी जातीं, फिर उन से फ़साद की मांग की जाती तो ये ज़रूर फ़साद मचा देते और कुछ लड़ते भी तो थोड़ी सी ।

१५. और इस से पहले तो उन्होंने अल्लाह से वादा किया था कि पीठ न फेरेंगे और अल्लाह (तआला) से किये गये वादे की पूछताछ ज़रूर है ।

१६. कह दीजिए कि अगर तुम मौत या कत्ल के डर से भागो तो यह भागना तुम्हें कुछ काम न आयेगा, और उस वक़्त तुम बहुत कम लाभान्वित (फ़ायदेमंद) किये जाओगे ।

هَذَا لِكِ الْبَيْتِ الْمُؤْمِنُونَ وَزُلُوتُوا لَوْلَا
شِدَّةَ يَدَا (11)

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ
مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا (12)

وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ
لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِنْهُمْ
النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ
إِنَّ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرًا (13)

وَلَوْ دَخَلَتْ عَلَيْهِمْ مِنْ آفَاطِهَا ثُمَّ سَبَّوْا
الْوَيْتَةَ لَآتَوْهَا وَمَا تَلَبَّوْا بِهَا إِلَّا بَيْتًا (14)

وَلَقَدْ هَمَّتْ أَنْ تَكْفُرُوا بِاللَّهِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُرْسِلَ
الْأَدْبَارَ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ مَسْئُولًا (15)

قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ مِنَ الْمَوْتِ
أَوِ الْقَتْلِ وَإِذْ لَا تَسْمَعُونَ إِلَّا كَلِمًا (16)

1 यथरिब उस पूरे इलाक़े का नाम था, मदीना उसी का एक हिस्सा था, जिसे यहाँ यथरिब का नाम दिया गया है । कहा जाता है कि इसका नाम यथरिब इसलिए पड़ा कि किसी वक़्त अमालिका में से किसी ने यहाँ पड़ाव डाला था जिसका नाम यथरिब विन अमील था । (फ़तहूल क़दीर)

१७. पूछिये तो कि अगर अल्लाह (तआला) तुम्हें कोई बुराई पहुँचाना चाहे या तुम पर कोई रहमत (कृपा) करना चाहे तो कौन है जो तुम्हें बचा सके (या तुम से रोक सके)? अपने लिए अल्लाह (तआला) के सिवाय न कोई वली पायेगा न मदद करने वाला ।

१८. अल्लाह (तआला) तुम में से (अच्छी तरह) जानता है जो दूसरों को रोकते हैं और अपने भाई-बन्धुओं से कहते हैं कि हमारे पास चले आओ और कभी-कभी ही लड़ाई में आ जाते हैं।

१९. तुम्हारी मदद में (पूरे) कंजूस हैं, फिर जब डर, भय का मौका आ जाये तो आप उन्हें देखेंगे कि वह आप की तरफ नजर जमा देते हैं और उन की आँखें इस तरह घूमती हैं, जैसे उस इंसान की जिस पर मौत की बेहोशी हो । फिर जब डर जाता रहता है तो तुम पर अपनी तेज जवान से बड़ी बातें बनाते हैं । माल के बड़े लालची है, यह लोग ईमान लाये ही नहीं हैं । अल्लाह (तआला) ने उन के सारे अमल बेकार कर दिये हैं,^१ और अल्लाह (तआला) पर यह बड़ा आसान है ।

२०. समझने हैं कि अब तक सेनायें चली नहीं गयीं और अगर सेनायें आ जायें तो ये तमन्ना करते हैं कि काश कि वह वनवासियों में बंजारों के साथ होते कि तुम्हारी खबर लेते रहते,^२ अगर वे तुम में मौजूद होते (तब भी क्या)? यूँ ही बात

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللَّهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۗ وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ﴿١٧﴾

قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلْهُمْ إِلَىٰ النَّجَاةِ وَلَا يَأْتُونَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿١٨﴾

أَشْحَاةٌ عَلَيْهِمْ ۖ وَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ تُنْظَرُونَ إِلَيْكَ تَتَوَدَّأَعْيُنُهُمْ كَالَّذِي يُغْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْبُوتِ ۖ إِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُمْ بِالنِّسَاءِ جَدَائِدٍ أَرْضًا عَلَى الْخَيْبِطِ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا فَأَحْبَبَ اللَّهُ أَعْيَابَهُمْ ۗ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ﴿١٩﴾

يَسْتَبِشُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَدْهَبُوا ۗ وَإِنْ يَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوْنَ لَوْ أَنَّهُمْ بَادُونَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَاءِكُمْ ۖ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قُتِلُوا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٢٠﴾

^१ यानी दिल से बल्कि ये फ्रसादी हैं, क्योंकि उनके दिल कुफ्र और बैर से भरे हुए हैं ।

^२ इसलिए कि वे मूर्तिपूजक और नास्तिक (बेदीन) ही हैं, और नास्तिक और मूर्तिपूजक के अमल बेकार हैं, जिन पर कोई बदला या नेकी नहीं ।

^३ यानी अगर मान भी लिया कि अगर वे काफ़िरो के गिरोह दोबारा लड़ाई के इरादे से वापस आ जायें तो फ्रसादियों की इच्छा यही होगी कि वे मदीना नगर में आने के बजाय, बाहर रेगिस्तान में बड़ों के साथ हों और वहाँ लोगों से तुम्हारे बारे में पूछते रहें कि मोहम्मद (ﷺ) और उसके साथी नाश हुए या नहीं? या काफ़िरो की सेना कामयाब रही या नाकाम ।

रखने के लिए तनिक लड़ लेते ॥

२१. यकीनन तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह में अच्छा नमूना है १२ हर उस इंसान के लिए जो अल्लाह (तआला) की और क़यामत के दिन की उम्मीद रखता है और बहुत ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र करता है १३

२२. और जब ईमानवालों ने (काफ़िरों की) सेनाओं को देखा तो (अचानक) कह उठे कि इन्हीं का वादा हमें अल्लाह ने और उस के रसूल ने दिया था और अल्लाह (तआला) और उस के रसूल सच्चे हैं, और उस (चीज़) ने उन के ईमान में और इताअत में और भी बढ़ोत्तरी कर दी ।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ۝ ٢١

وَلَقَدْ رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ كَآلُوا هَذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۝ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ۝ ٢٢

१ सिर्फ़ अपमान के डर से या स्वदेशी (हमवतनी) के हक़ की वजह से, इस में उन लोगों के लिए घोर (सख़्त) चेतावनी है जो जिहाद से पीठ मोड़ते हैं या उस से पीछे हटते रहते हैं ।

२ यानी हे मुसलमानों और मुनाफ़िकों! तुम सब के लिए रसूल अल्लाह ﷺ में नमूना है तो तुम जिहाद में और सब और तक्रवा में उसकी पैरवी करो । हमारा रसूल जिहाद के वक्त भूखा रहा यहाँ तक कि पेट पर पत्थर बाँधने पड़े, उसका मुँह ज़ख्मी हो गया उसका दाँत टूट गया, खंदक अपने हाथों से छोदी और लगभग एक महीने दुश्मन के सामने डटा रहा । यह आयत अगरचे अहज़ाब की लड़ाई के बारे में नाज़िल हुई है, विस में लड़ाई के मौक़े पर ख़ास तौर से रसूलुल्लाह ﷺ की सीरत को सामने रखने और पैरवी करने का हुक्म दिया गया है । लेकिन यह हुक्म आम है यानी आप ﷺ की सारी कथनी, करनी हर हालत में मुसलमानों के लिए पैरवी फ़र्ज़ है चाहे उसका सम्बन्ध इबादत से हो या सामाजिक, अर्थव्यवस्था (मआशियत) से या राजनीति (सियासी) से, जिन्दगी के हर मोड़ में आप ﷺ की हिदायत की पैरवी फ़र्ज़ है ।

३ इस से यह बाजेह हो गया कि रसूल के इख़लाक़ की पैरवी वही करेगा जो आख़िरत में अल्लाह के मिलन पर ईमान रखता और बहुत ज़्यादा अल्लाह का बयान और ज़िक्र करता है । आज मुसलमान भी आम तौर से इन दोनों गुणों (अवसाफ़) से वंचित (महरूम) हैं, इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ के अख़लाक़ की भी कोई अहमियत उनके दिलों में नहीं है, उन में जो धार्मिक (दीनी) लोग हैं उन के नेता, मुखिया, गुरु और आलिम हैं और जो दुनियावी लोग और राजनैतिक (सियासी) लोग हैं उन के गुरु और नेता पश्चिमी देश के स्वामी हैं । रसूल अल्लाह ﷺ से मुहब्बत के मौखिक (जुबानी) दावे बड़े हैं, लेकिन आप ﷺ को मुखिया और गुरु मानने के लिए उन में से कोई तैयार नहीं है ।

२३. ईमानवालों में (ऐसे) लोग भी हैं जिन्होंने जो अहद अल्लाह (तआला) से की थी, उन्हें सच्चा कर दिखाया,^१ कुछ ने तो अपना वादा पूरा कर दिया^२ और कुछ (मौका की) इतेज़ार में हैं और उन्होंने कोई बदलाव नहीं किया।

२४. ताकि अल्लाह (तआला) सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे दे और अगर चाहे तो मुनाफ़िकों को सजा दे या उन की भी तौबा कुबूल करे, अल्लाह (तआला) बड़ा क्षमाशील (बहुशने वाला) और बड़ा रहम करने वाला है।

२५. और अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों को गुस्से में भरे हुए ही (नाकाम) लौटा दिया कि उनकी कोई कामना (तमन्ना) पूरी न हुई।^३ और उस लड़ाई में अल्लाह (तआला) खुद ही ईमानवालों को काफ़ी हो गया। अल्लाह (तआला) बड़ा ताक़तवर और ग़ालिब है।

२६. और जिन अहले किताब ने उन के साथ साँठ-गाँठ कर ली थी उन्हें (भी) अल्लाह तआला ने किलों से निकाल दिया और उन के दिलों में (भी) डर डाल दिया कि तुम उन के एक गुट को क़त्ल कर रहे हो और एक गुट को बंदी बना रहे हो।

وَمِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا اللَّهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَن قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَن يَنْتَظِرُ ۚ وَمَا بَدَّلُوا تَبْدِيلًا ﴿٢٣﴾

لِيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنَافِقِينَ إِن شَاءَ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۗ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿٢٤﴾

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوا خَيْرًا ۚ وَكَفَىٰ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ﴿٢٥﴾

وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ صَاحِبَيْهِمْ وَقَدَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرَّعْبَ ۗ قَوْمًا ثَقَلُونُ وَتَأْسَرُونَ قَوْمًا ﴿٢٦﴾

^१ यह आयत उन कुछ सहाबा के बारे में नाज़िल हुई है, जिन्होंने इस मौके पर अपनी जानों की कुर्बानी देने के अजीब और आश्चर्यजनक (ताज़ुब ख़ेब) करतब दिखाये थे और उन्हीं में वे सहाबा भी शामिल थे जो बद्र की लड़ाई में शामिल न हो सके थे, लेकिन उन्होंने यह प्रतिज्ञा (अहद) कर रखी थी कि अगर अब दोबारा कोई मौका आया तो जिहाद में भरपूर हिस्सा लेंगे, जैसे नज़र बिन अनस वगैरह जो आख़िर में लड़ते हुए ओहद की लड़ाई में शहीद हुए, उन के शरीर पर तलवार, भाले और तीरों के ८० से ऊपर घाव थे, शहादत के बाद उनकी बहन ने उन्हें उनकी ऊँगली के पोर से पहचाना (मुसनद अहमद, हिस्सा ४, पेज नं० १९३)

^२ ग़ब का मतलब वादा, मन्तीती (मन्नत) और मौत किये गये हैं। मतलब यह है कि उन नेक लोगों में से कुछ अपना वादा या मन्नत पूरी करते हुए शहीद हो गये।

^३ यानी मूर्तिपूजक जो कई इलाक़े से जमा होकर आये थे ताकि मुसलमानों का बजूद ही ख़त्म कर दें। अल्लाह ने उन्हें अपने ग़ज़ब और बुरे इरादे के साथ बापस लौटा दिया न तो दुनियावी धन दौलत उन के हाथ लगी और न आख़िरत में बदला या नेकी हासिल करने के हक्कदार होंगे, किसी भी तरह की नेकी उन्हें हासिल न होगी।

२७. और उस' ने तुम्हें उनकी भूमि का और उन के घरों का और धन-सम्पत्ति का मालिक बना दिया' और उस भूमि का भी जिस पर तुम्हारे पग ही नहीं गये,^२ अल्लाह तआला सब कुछ कर सकने की क़ुदरत रखता है।

२८. हे नबी! अपनी बीवियों से कह दो कि अगर तुम्हारी इच्छा दुनियावी ज़िन्दगी और दुनियावी ज़ीनत की है, तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दिला दूँ और तुम्हें अच्छाई के साथ छोड़ दूँ।

२९. और अगर तुम्हारी इच्छा अल्लाह और उसका रसूल और आखिरत का घर है तो (यकीन करो कि) तुम में से नैकी का काम करने वालियों के लिए अल्लाह (तआला) ने बड़ा अच्छा बदला रख छोड़ा है।^३

३०. हे नबी की बीवियों! तुम में से जो भी खुली बेहयाई करेगी उसे दुगुना अज़ाब दिया जायेगा,^४ अल्लाह तआला के करीब यह बड़ी आसान बात है।

وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَوِيَارَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَّهُمْ
تَطْوَعُونَ وَأَمَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا فَسَاءَ لَهُمْ جَزَاءُ الَّذِي ظَلَمُوا
﴿٢٧﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِمَ أَرْوَاهُ لَكُمْ إِن كُنْتُمْ تُحِبُّونَ الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا وَرَبِّئْتُمْهَا فَتَمَّالِينَ أَمَّتَعَكُمُ اللَّهُ وَأَسْرَحَكُم
سَوَاحًا جَمِيلًا ﴿٢٨﴾

وَإِن كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالذَّارَ الْآخِرَةَ
فَإِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنِينَ وَاسْتَكْرَامًا عَظِيمًا ﴿٢٩﴾

يَا نِسَاءَ النَّبِيِّ مَن يَأْتِ مِنْكُم بِغَاسِقَةٍ مُّصَيَّبَةٍ
يُضَعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى
اللَّهِ يَسِيرًا ﴿٣٠﴾

^१ इस में बनी कुरैजा की लड़ाई का बयान है।

^२ कुछ ने इस से खैबर की जमीन मुराद लिया है, क्योंकि उसके बाद ही हुदैविया सुलह के बाद मुसलमानों ने खैबर पर फ़तह हासिल की है, कुछ ने कहा कि मक्का की जमीन है और कुछ ने फारस और रोम की जमीन को इसका मतलब बताया है और कुछ ने उन सारी धरती को बताया जो मुसलमान क़ायमत तक फ़तह के जरिये हासिल करेंगे। (फ़तहल क़दीर)

^३ फ़तह हासिल होने के नतीजे में जब मुसलमानों की हालत पहले के मुकाबिले कुछ सुधर गयी थी तो अंसार और मुहाजिरों की महिलाओं को देखकर पाक पत्नियों ने भी अपने घरलू खर्च को बढ़ाने की माँग की। चूँकि नबी ﷺ सादगी वाले थे, इसीलिए पाक पत्नियों की इस माँग पर बहुत दुखी हुए और पत्नियों से अलग रहने लगे, जो एक महीने तक लगातार रहा आखिर में अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल की। इसके बाद आप ने सब से पहले हज़रत आयेशा को यह आयत सुनाकर उन्हें हक़ दिया फिर भी उन्हें कहा कि खुद फ़ैसले करने के बजाय अपने माता-पिता से राय के बाद ही कोई फ़ैसला लेना। हज़रत आयेशा ने कहा कि यह कैसे हो सकता है कि मैं आप के बारे में मदिबरा करूँ, बल्कि मैंने अल्लाह और रसूल ﷺ को छोड़ कर दुनियावी सुख-सुविधा को तरजीह नहीं दिया। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूर: अहजाब)

^४ क़ुरआन में النّافسة को व्याभिचार (बदकारी) के अर्थ (मायना) में इस्तेमाल किया गया है लेकिन منافسة को बुराई के लिए, यहाँ इसका मतलब बुराई और बुरा सुलूक के हैं।

३१. और तुम में से जो कोई भी अल्लाह और उस के रसूल की फरमावरदारी करेगी और नेक काम करेगी हम उसे दोगुना बदला देंगे, और उस के लिए हम ने बेहतरीन रोजी (जीविका) तैयार कर रखी है।

وَمَنْ يَفْعَلْ مِنْكُمْ خَيْرًا فَلْيَأْتِرْ بِهِ وَأَلْبَسْهُ لَكُمْ فِيهِ ثَلَاثُونَ مَرَّةً أَجْرًا وَمَنْ يَفْعَلْ مِنْكُمْ شُرَّكًا فَلْيَأْتِرْ بِهِ وَأَلْبَسْهُ لَكُمْ فِيهِ ثَلَاثُونَ مَرَّةً عَذَابًا
رِزْقًا كَرِيمًا ﴿٣١﴾

३२. हे नबी की बीवियों! तुम आम औरतों की तरह नहीं हो,^१ अगर तुम परहेजगारी वरतो तो नर्म लहजे से बात न करो कि जिस के दिल में रोग हो वह कोई बुरा इरादा करे, लेकिन कायदे के मुताबिक बात करो।

يَا أَيُّهَا النِّسَاءُ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِنَ النِّسَاءِ وَإِنَّ اتَّقِيَنَّ فَلَائِيكُمْ بِالْقَوْلِ كَيْفَ لَمْ يَكُنْ فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَكُنَّ قَوْلًا مَعْرُوفًا ﴿٣٢﴾

३३. और अपने घरों में क्रार से रहो,^२ और पहले की जाहीलियत के जमाने की तरह अपने श्रृंगार (सौंदर्य) का इजहार न करो, और नमाज कायम करती रहो और जकात देती रहो और अल्लाह और उस के रसूल के हुकम की पैरवी करो, अल्लाह (तआला) यही चाहता है कि हे नबी की घरवालियों^३ तुम से वह हर

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ الزَّكَاةَ وَأَطِعْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ حُرُوبًا لَّئِن لَّا يَرُدُّ اللَّهُ إِلَيْهِنَّ حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ﴿٣٣﴾

^१ यानी तुम्हारी हालत और मुकाम आम औरतों की तरह नहीं है बल्कि अल्लाह ने तुम्हें रसूल ﷺ की पत्नी होने की जो खुशनसीबी अता की है, उस के सबब तुम्हें खास मुकाम हासिल है और रसूलुल्लाह ﷺ की तरह तुम्हें भी मुसलमानों के लिए नमूना बनना है, इसलिए उन्हें उन के मुकाम और पद से याखबर करके उन्हें कुछ अहकाम (निर्देश) दिये जा रहे हैं, इस से सम्बोधित (मुखोक्ति) अगरचे पाक बीवियाँ हैं, जिन्हें ईमानवानों की माताएँ कहा गया है लेकिन शैली (जुमले) के अनुसार साफ जाहिर है कि मकसद सभी मुसलमानों की औरतों को समझाना और चेतावनी (आगाही) देना है, इसलिए यह निर्देश सभी मुसलमान औरतों के लिए है।

^२ यानी टिक कर रहो और बिना सबब घर से बाहर न निकलो, इस में वाजेह कर दिया कि औरत के काम का दायरा सियासत और हुकूमत नहीं, आर्थिक (मआशी) झमेले भी नहीं बल्कि घर के अन्दर रहकर गृहस्थी के काम पूरा करना है।

^३ अहले बैत से मुराद कौन हैं? इस बारे में कुछ इखितलाफ है, कुछ ने पाक बीवियाँ मुराद लिया है, जैसाकि यहाँ कुरआन करीम के लफ्जों से वाजेह हो रहा है, कुरआन ने यहाँ पाक बीवियों को ही अहले बैत कहा है। कुरआन के दूसरे मुकाम पर भी बीवी को अहले बैत कहा है, जैसे सूर: हूद आयत नं० ७३ में, इसलिए पाक बीवियों का अहले बैत होना कुरआन के लफ्जों से वाजेह है। कुछ लोग, कुछ कौल के बिना पर अहले बैत का सम्बन्ध (ताअल्लुक) केवल हजरत

वालियाँ, इन सब के लिए अल्लाह (तआला) ने बड़ी मग़फ़िरत और बड़ा अज़ (पुण्य) तैयार कर रखा है।

३६. और (देखो) किसी मुसलमान मर्द और औरत को अल्लाह और उस के रसूल के फैसले के बाद अपनी किसी बात का कोई हक़ बाक़ी नहीं रह जाता। (याद रखो!) अल्लाह (तआला) और उस के रसूल की जो भी नाफ़रमानी करेगा वह खुली गुमराही में पड़ेगा।

३७. और (याद करो) जबकि तू उस इंसान से कह रहा था जिस पर अल्लाह ने भी नेमत किया और तुने भी कि तू अपनी पत्नी को अपने पास रख और अल्लाह से डर, और तू अपने दिल में वह बात छिपाये हुए था जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला था और तू लोगों से डर खाता था, हालांकि अल्लाह (तआला) इस का ज़्यादा हक़दार था कि तू उस से डरे, तो जबकि ज़ैद ने उस औरत से अपनी ज़रूरत पूरी कर ली, हम ने उसे तेरे विवाह में दे दिया ताकि मुसलमानों पर अपने लेपालकों की वीवियों के बारे में किसी

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا لِمُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُّبِينًا ﴿٣٦﴾

وَأَذِ تَقُولُ لِلَّذِي أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَأَنْصَبْتَ عَلَيْهِ أَمْرًا عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللَّهَ وَتُخْفَى فِي نَفْسِكَ مَا اللَّهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللَّهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَاهُ فَلَمَّا قَضَى زَيْدٌ مِنْهَا وَطْرًا ذَوِّجْنَا لَهَا لِيَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ حَرَجٌ فِي أَدْوَارِ أَدْعِيَاهُمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطْرًا وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ﴿٣٧﴾

¹ यह आयत हज़रत ज़ैनब के विवाह के बारे में नाज़िल हुई थी। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा असल में अरब थे, लेकिन किसी ने उन्हें बचपन में ही पकड़ कर गुलाम (दास) बनाकर बेच दिया था। नबी ﷺ से हज़रत ख़दीजा के विवाह (शादी) के बाद हज़रत ख़दीजा ने उन्हें ख़रीद कर रसूलुल्लाह ﷺ को तोहफ़ा के तौर पर दिया था, आप ﷺ ने उन्हें आज़ाद करके अपना पुत्र बना लिया था। नबी ﷺ ने उनके विवाह का मुआमला अपनी फूफी की पुत्री हज़रत ज़ैनब के साथ रखा था, जिस पर उन्हें और उन के भाई को अपने ख़ानदानी इज़्ज़त के बिना पर संकोच (तरहुद) हुआ कि ज़ैद एक आज़ाद किये हुए गुलाम हैं और उनका रिश्ता एक उँचे इज़्ज़तदार घराने से है। इस पर यह आयत नाज़िल हुई, जिसका मतलब यह है कि अल्लाह और रसूल ﷺ के फैसले के बाद किसी ईमानवाले मर्द और औरत को यह हक़ नहीं कि वह अपने हक़ का इस्तेमाल करे बल्कि उस के लिये यह है कि वह अपनी स्वीकृति (रज़ामंदी) दे दे, इसलिए इस आयत को सुनने के बाद हज़रत ज़ैनब बग़ैरह ने अपने इरादों पर हठ (ज़िद) नहीं किया और उनका विवाह हो गया।

तरह का संकोच (तरहूद) न रहे, जबकि वह अपनी जरूरत उन से पूरी कर लें, ' अल्लाह का (यह) आदेश होकर ही रहने वाला था ।

३८. जो चीजें अल्लाह (तआला) ने अपने नबी के लिए जायेज (मान्य) की हैं, उन में नबी पर कोई हर्ज नहीं । (यही) अल्लाह का कानून उन में भी रहा जो पहले हुए और अल्लाह (तआला) के काम अंदाजे से निर्धारित (मुकरर) किये हुए हैं ।

३९. ये सब ऐसे थे कि अल्लाह (तआला) के आदेश (अहकाम) पहुँचाया करते थे और अल्लाह ही से डरते थे और अल्लाह के सिवाय किसी से भी नहीं डरते थे, और अल्लाह (तआला) हिसाब लेने के लिए काफी है ।

४०. (लोगो), तुम्हारे मर्दों में से किसी के पिता मोहम्मद (ﷺ) नहीं,² लेकिन आप अल्लाह (तआला) के रसूल हैं और सारे नबियों में आखिरी हैं,³ और अल्लाह (तआला) हर चीज को

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللَّهُ لَهُ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۗ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَقْدُورًا ﴿٣٨﴾

الَّذِينَ يَبْلُغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۗ وَكَفَى بِاللَّهِ حَسِيبًا ﴿٣٩﴾

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٤٠﴾

¹ यह हजरत जैनव से नबी ﷺ के विवाह की वजह है कि भविष्य (मुस्तकबिल) में कोई मुसलमान इस बारे में संकोच का एहसास न करे और जरूरत पड़ने पर गोद लिये पुत्र की तलाक दी हुई वीवी से विवाह किया जा सके ।

² इसलिए वह जैद बिन हारिसा के भी पिता नहीं हैं, जिस पर उन्हें निन्दा (मजम्मत) का निशाना बनाया जा सके कि उन्होंने अपनी बहू से विवाह क्यों कर लिया ? धल्कि एक जैद ही क्या वह किसी भी मर्द के पिता नहीं हैं, क्योंकि जैद तो हारिसा के पुत्र थे, आप ﷺ ने तो उन्हें मुंह बोला पुत्र बना रखा था और जाहिलियत के रिवाज के अनुसार उन्हें जैद बिन मोहम्मद कहा जाता था । हकीकत में वह आप ﷺ के सगे पुत्र नहीं थे । इसीलिए (أَدْعُوهُمْ لِأَسْمَائِهِمْ) के नाजिल होने के बाद उन्हें जैद पुत्र हारिसा ही कहा जाता था, इसके सिवाय हजरत खदीजा رضي الله عنها से आप ﷺ के दो पुत्र कासिम और अब्दुल्लाह हुए और एक इब्राहीम मारिया क्वितिया के पेट से हुए । लेकिन ये सभी बचपन में ही मर गये, उन में से कोई भी पूरी जवानी को नहीं पहुँचा, इस विना पर आप ﷺ की अपनी औलाद में कोई भी मर्द नहीं रहा जिस के आप ﷺ पिता हों । (इन्ने कसीर)

³ अरबी जुबान में मोहर (मुद्रा) को कहते हैं और मोहर आखिरी काम को कहा जाता है आप ﷺ पर नबूअत और रिंसालत का ख़ात्मा हो गया, आप ﷺ के बाद जो भी नबूअत या रिंसालत का दावा करेगा वह झूठा और दज्जाल होगा । हदीसों में इस बारे में तफसील से बयान किया गया है और इस पर सारी उम्मत राजी है । कयामत के करीब हजरत ईसा धरती पर आयेंगे

अच्छी तरह जानने वाला है ।

४१. हे मुसलमानो! अल्लाह तआला का जिक्र बहुत ज़्यादा करो ।

४२. और सुबह-शाम उसकी पकीजगी का बयान करो ।

४३. वही है जो तुम पर अपनी रहमत भेजता है और उस के फ़रिश्ते (तुम्हारे लिए दया की दुआ करते हैं) ताकि वह तुम्हें अंधेरे से नूर की तरफ ले जाये, और अल्लाह (तआला) मुसलमानों पर वड़ा रहम करने वाला है ।

४४. जिस दिन ये अल्लाह (तआला) से मिलेंगे उनका स्वागत (इस्तेक्रवाल) सलाम से होगा, ' उन के लिए अल्लाह (तआला) ने वाइज़्जत बदला तैयार कर रखा है ।

४५. हे नबी ! हकीकत में हम ने ही आप को (रसूल) गवाह, खुशखबरी देने वाला और वाखबर करने वाला बनाकर भेजा है ।²

४६. और अल्लाह के हुक्म से उसकी तरफ बुलाने वाला और रोशन चिराग ।³

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا كَثِيرًا ﴿٤١﴾

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٤٢﴾

هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ لِيُخْرِجَكُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّوْرِ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ﴿٤٣﴾

تَجِيئُهُمْ يَوْمَ يَقْبَلُونَكَ سَلَامٌ وَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ﴿٤٤﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٤٥﴾

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِإِذْنِهِ وَسَيْرًا مُّبِينًا ﴿٤٦﴾

जो सही और निरन्तर (मुसलसल) हदीस से साबित है, वह नबी के रूप में नहीं आयेंगे बल्कि नबी ﷺ के पैरोकार बनकर आयेंगे, इसलिए उनका धरती पर आना नबूअत के ख़ात्मा के खिलाफ़ नहीं है ।

¹ यानी जन्नत में फ़रिश्ते ईमानवालों को या ईमानवाले एक-दूसरे को सलाम करेंगे ।

² कुछ लोग شاهد (साहिद) का मतलब मौजूद करते हैं जो कुरआन के मायना में तयदीली है । नबी ﷺ अपनी उम्मत की गवाही देंगे, उनकी भी जो आप पर ईमान लाये और उनकी भी जो आप को झुठलाते रहे । आप ﷺ ईमानवालों को उन के बजू के अंगों से पहचान लेंगे जो चमकते होंगे, इसी तरह आप ﷺ अन्य नबियों (सन्देष्टाओं) की गवाही देंगे कि उन्होंने अपनी-अपनी उम्मत को अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था और यह गवाही अल्लाह के दिये हुए यकीनी इल्म की बिना पर होगी, इसलिए नहीं कि आप ﷺ सभी रसूलों को अपनी नज़र से देखते रहे हैं, यह ईमान तो कुरआन के सूत्रों (आयतों) के खिलाफ़ है ।

³ जिस तरह चिराग से अंधेरा दूर हो जाता है, उसी तरह आप ﷺ के जरिये कुफ़्र और शिर्क (मूर्तिपूजा) के अंधेरे दूर हुए, इस के सिवाय इस चिराग से रोशनी ले कर जो इज़्जत व

४७. और आप ईमानवालों को खुशखबरी सुना दीजिए कि उन के लिए अल्लाह (तआला) की तरफ से बहुत बड़ा फ़ज़ल (अनुग्रह) है।

४८. और काफ़िरों व मुनाफ़िकों का कहना न मानिए, और जो दुख (उन की तरफ से) पहुँचे उसकी फ़िक्र न कीजिए, अल्लाह पर भरोसा रखिये, अल्लाह काम बनाने के लिए काफ़ी है।

४९. हे मुसलमानो! जब तुम मुसलमान औरतों से शादी करो, फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो तो उन पर तुम्हारा कोई (हक़) इद्दत (तलाक़ के बाद मुक़रर वक़्त तक की मना की हुई मुद्दत) का नहीं जिसकी तुम गिन्ती करो! तो तुम उन्हें कुछ न कुछ दे दो और अच्छी तरह उन्हें विदा कर दो।

५०. हे नबी! हम ने तेरे लिए तेरी बे वीवियाँ हलाल (बैध) कर दी हैं, जिन्हें तू उनकी महर (स्त्री-दान) दे चुका है, और बे दासियाँ भी जो अल्लाह (तआला) ने लड़ाई में तुझे दी हैं और तेरे चाचा की पुत्रियाँ, फूफी की पुत्रियाँ, तेरे मामा की पुत्रियाँ और तेरे मौसी की पुत्रियाँ भी जिन्होंने तेरे साथ हिज़रत की हैं, और वह ईमानवाली औरत जो खुद को नबी को दान कर दे, यह उस हालत में कि खुद अगर नबी भी उस से विवाह करना चाहे,^२ यह ख़ास तौर से

وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ فَضْلًا
كَبِيرًا ﴿٤٧﴾

وَلَا تُطِيعِ الْكُفْرَانَ وَالْمُنَافِقِينَ وَعَنْ أَوْلِيئِهِمْ
وَكُلِّمْ عَلَى اللَّهِ وَكُلِّمْ بِاللَّهِ وَكَيْلًا ﴿٤٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا كُنْتُمْ الْمُؤْمِنَاتِ ثُمَّ
طَلَقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ
عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا فَمَعْرِفَةٌ
وَسَرَحُهُنَّ سَرًا حَاجِبِيًّا ﴿٤٩﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أُولَآئِكَ الْوَدَّاتِ
أُخْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَمِمَّا آتَاكَ اللَّهُ عَلَيْهِ
وَبَدَّ عِنْدَكَ وَبَدَّ عِنْدِكَ وَبَدَّ خَالِكَ وَبَدَّ

एहतेराम हासिल करना चाहे कर सकता है, इसलिए कि यह चिराग़ क़यामत तक रौशन है।

^१ शादी के बाद जिन औरतों से सहवास (जिमाअ) किया जा चुका हो और वह अभी जवान हो, ऐसी औरतों को अगर तलाक़ मिल जाये तो उनकी "इद्दत" तीन माहवारी है। (अल-बकर:- २२८) यहाँ उन औरतों का क़ानून बताया जा रहा है जिनका विवाह हुआ हो लेकिन पति-पत्नी के बीच जिमाअ नहीं हुआ, उनको अगर तलाक़ मिल जाये तो कोई इद्दत नहीं है। यानी ऐसी बिना जिमाअ तलाक़ बुदा औरत बिना इद्दत गुज़ारे, तुरन्त कहीं विवाह करना चाहे तो कर सकती है। हाँ, अगर सहवास से पहले पति की मौत हो जाये तो फिर उसे चार महीने दस दिन इद्दत गुज़ारनी पड़ेगी।

^२ यानी अपने आप को दान करने वाली औरत, अगर आप ﷺ उस से विवाह करना चाहें तो बिना महर के आप ﷺ के लिए उसे अपने निकाह में लेना जायज़ है।

तेरे लिए ही है और दूसरे मुसलमानों के लिए नहीं !¹ हम उसे अच्छी तरह जानते हैं जो हम ने उन पर उनकी वीवियों और दासियों के बारे में (आदेश) मुकर्रर कर रखे हैं,² यह इसलिए कि तुझ पर कोई मुसीबत पैदा न हो। अल्लाह (तआला) बड़ा माफ करने वाला और बड़ा रहम करने वाला है।

خَلِيكَ ابْنِي حَاجِرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةَ مُؤْمِنَةً إِنَّ
وَهَبْتَ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا
خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ قَدْ عَلِمْنَا
مَا قَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ
إَيْمَانُهُمْ لِيَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ وَكَانَ اللَّهُ
عَفُورًا رَحِيمًا ﴿٥٠﴾

५१. उन में से जिसे तू चाहे दूर रख दे और जिसे चाहे पास रख ले, और अगर तू उन में से भी किसी को अपने पास बुला ले जिन्हें तूने अलग कर रखा था तो तुझ पर कोई हर्ज नहीं, इस में इस बात की अधिक उम्मीद है कि इन (औरतों) की आंखें ठंडी रहें और वे दुखी न हों और जो कुछ भी तू उन्हें दे दे उस से वे सब खुश रहें, तुम्हारे दिलों में जो कुछ है उसे अल्लाह (अच्छी तरह) जानता है !³ अल्लाह (तआला) ज्यादा इल्म वाला सहनशील (हलीम) है।

تُرِي مَنْ تَشَاءُ وَمَنْ يُرِيكَ مِنْ تَشَاءُ
وَمَنْ ابْتَغَيْتَ مِنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ذَلِكَ
أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَ وَيَرْضَيْنَ
بِمَا آتَيْتَهُنَّ كَأَنَّهُنَّ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ
وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ﴿٥١﴾

¹ यह इजाजत केवल आप ﷺ के लिए है, दूसरे मुसलमानों को लाजिम है कि वे महर के हक अदा करें तब विवाह (शायद) जायज होगा।

² यानी विवाह के जो हकूक और शर्तें हैं जो हम ने फर्ज किये हैं, जैसे चार से ज्यादा वीवियाँ एक ही समय में कोई इंसान नहीं रख सकता, विवाह के लिए बली, गवाह और महर जरूरी है, लेकिन दासियाँ जितनी भी कोई चाहे रख सकता है, किन्तु दासियों का प्रचलन (रिवाज) अब खत्म हो गया।

³ यानी तुम्हारे दिल में जो कुछ है उन में यह बात भी निरिचत रूप से है कि सब पत्नियों का प्रेम दिल में बराबर नहीं है, क्योंकि दिल पर किसी का बस नहीं है, इसलिए पत्नियों के बीच बारी में, पालन-पोषण और दूसरे जीवन हेतु (उमूर जिन्दगी) और सुविधाओं में बराबरी जरूरी है, जिसका एहतेमाम इंसान कर सकता है। दिलों के झुकाव में बराबरी चूँकि बस ही में नहीं है, इसलिए अल्लाह तआला उस पर पकड़ भी नहीं करेगा अगर दिली मुहब्बत किसी एक बीबी से उसके साथ ख़ास सलूक की वजह न हो। इसीलिए नबी ﷺ फरमाया करते थे «हे अल्लाह! यह जो मेरा बटवारा है जो मेरे बस में है, लेकिन जिस पर तेरा बस है मैं उस पर बस नहीं रखता, उस में मुझे लज्जत (शर्मिन्दा) न करना।» (अबू दाऊद, तिर्मिजी, नसाई, इब्ने माजा और मुसनद अहमद ६/१४४)

५२. इसके बाद दूसरी औरतें आप के लिए हलाल नहीं और न यह (जायज है) कि उन्हें छोड़कर दूसरी औरतों से (विवाह करें) अगरचे उन का रूप अच्छा भी लगता हो^१ लेकिन जो तेरी दासियाँ हो, अल्लाह हर चीज का (पूरा) निगरा है।

५३. हे मुसलमानो ! जब तक तुम्हें इजाजत न दी जाये तुम नबी के घरों में न जाया करो, खाने के लिए ऐसे समय में कि खाना पकने का इंतजार करते रहे, बल्कि जब बुलाया जाये तो जाओ और जब खा चुको तो निकल खड़े हो, वही बातों में मशगूल न हो जाओ। नबी को तुम्हारे इस काम से कष्ट होता है, लेकिन वह तुम्हारा आदर (एहतेराम) कर जाते हैं और अल्लाह (तआला) सच का बयान करने में किसी की फिक्र नहीं करता,^२ और जब तुम नबी की बीवियों से कोई चीज माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगो।^३ तुम्हारे और उन के दिलों के लिए पूरी

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدِ وَلَا أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَصَبَكِ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ شَيْءٍ قَدِيرًا ﴿٥٢﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ غَيْرِ نَظِيرِهَا إِنَّهُ وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَبِرُوا وَلَا مُسْتَأْنِسِينَ لِحَدِيثٍ إِنَّ ذَلِكُمْ كَانَ يُؤْذَى النَّبِيَّ فَيَسْتَعِزُّ بِكُمْ وَاللَّهُ لَا يَسْتَعِزُّ بِالْعُتَىٰ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَسَأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَائِهِنَّ حِجَابٍ ذَلِكُمْ أَطْهَرُ لِقَوْلِهِمْ فَلْيُؤْذِنُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْذِنُونَ رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَسْأَلُواهُنَّ أَزْوَاجَهُنَّ مِنْ بَعْدِ مَا أَبَدَ اللَّهُ لَهُنَّ ذَلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ﴿٥٣﴾

^१ इख्तियार की आयत के नाजिल होने के बाद पाक बीवियों ने दुनियावी सुख-सुविधा (ऐश-आराम) के साधनों (जरिया) को छोड़कर कठिनाई से नबी ﷺ के साथ रहना पसन्द किया था। इसका बदला अल्लाह ने यह दिया कि उन पाक बीवियों के अलावा (जिनकी तादाद उस समय नौ थी) दूसरी औरतों के साथ विवाह करने या उन में से किसी को तलाक दे कर उस की जगह पर किसी दूसरे से विवाह करने से रोक दिया। कुछ कहते हैं कि बाद में आप ﷺ को यह हक दे दिया गया था, लेकिन आप ﷺ ने कोई विवाह नहीं किया। (इन्हे कसरी)

^२ इस आयत के नाजिल होने की वजह यह है कि नबी ﷺ की दावत पर सहावा केराम हाजिर हुए, जिन में से कुछ खाने के बाद भी बैठे हुए बातें करते रहे जिस से आप ﷺ को ख़ास तकलीफ हुई, लेकिन आप ﷺ ने आदाब और अखलाक के सबब उन्हें जाने के लिए नहीं कहा। (सहीह बुखारी, तफ़सीर सूरतुल अहजाब) इसलिए इस आयत में खाने के आदाब सिखाये गये कि पहले तो तब जाओ जब खाना तैयार हो जाये, पहले ही से धरना देकर न बैठे रहो। दूसरे खाना खत्म करने के तुरन्त बाद घरों को चले जाओ, वहाँ बैठे हुए बातें न करो, खाने का बयान तो नाजिल होने के सबब किया गया है, नहीं तो मतलब यह है कि जब भी तुम्हें बुलाया जाये चाहे खाने के लिए या किसी दूसरे काम के लिये इजाजत के बिना घर में दाखिल न हो।

^३ यह हुक्म हजरत उमर की मर्जी के मुताबिक नाजिल हुआ। हजरत उमर ने रसूलुल्लाह ﷺ से दरखास्त किया कि हे रसूलुल्लाह (ﷺ)! आप ﷺ के पास अच्छे बुरे बहुत से लोग आते हैं, काश आप ﷺ पाक बीवियों को पर्दे का हुक्म दें तो क्या अच्छा हो। इस तरह यह हुक्म अल्लाह ने

पाकीजगी यही है, न तुम्हें मुनासिब है कि तुम अल्लाह के रसूल के तकलीफ दो और न तुम्हें यह वैध (उचित) है कि आप के बाद किसी वक्त भी आप की पत्नियों से विवाह करो। (याद रखो) अल्लाह के नजदीक यह बहुत बड़ा (पाप) है।

५४. अगर तुम किसी चीज को जाहिर करो या छिपाये रखो तो अल्लाह हर चीज का अच्छी तरह इल्म रखने वाला है।

५५. उन औरतों पर कोई गुनाह नहीं कि वह अपने पिताओं, अपने पुत्रों और भाइयों, अपने भतीजों, भाजों और अपनी (मेलजोल की) औरतों और जिन के वे मालिक हैं (दासी, दास) के सामने हों^१ (औरतो!) अल्लाह से डरती रहो, अल्लाह तआला बेशक हर चीज पर गवाह है।

५६. अल्लाह (तआला) और उस के फरिश्ते इस नबी पर दरूद भेजते हैं। हे ईमानवालो! तुम (भी) इन पर दरूद भेजो और ज्यादा सलाम (भी) भेजते रहा करो।^२

إِنَّ بُدُوًا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ﴿٥٤﴾

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا بَنَاتِهِنَّ وَلَا إِخْوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ وَاتَّقِينَ اللَّهَ ط إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ﴿٥٥﴾

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ﴿٥٦﴾

नाजिल किया (सहीह बुखारी, किताबुस्सलात व तफसीर सूर: अल-बकर: मुस्लिम वाबु फजाईले उमर बिन खत्ताब)

- १ यह पर्दे का राज और सबब है कि इस से औरत-मर्द दोनों के दिल बक्र और शुक्हा से और लगातार फसाद में पड़ने से महफूज रहेंगे।
- २ जब औरतों के लिए पर्दे का हुकम नाजिल हुआ, तो फिर घर में मौजूद करीबी या हर समय आने-जाने वाले रिश्तेदारों के बारे में सवाल हुआ कि उन से पर्दा किया जाये या नहीं? इस आयत में उन रिश्तेदारों का बयान है जिन से पर्दे की जरूरत नहीं है। इसका तफसीली बयान सूर: नूर की आयत ३१ (وَالَّذِينَ فِي ذُرِّيَّتِهِمْ نِسَاءٌ) में भी गुजर चुका है, उसे देख लीजिए।
- ३ इस आयत में नबी ﷺ के उस मर्तबा का बयान है, जो आकाशों में आप ﷺ को हासिल है, और वह यह है कि अल्लाह (तआला) फरिश्तों में आप ﷺ की तारीफ और बड़ाई करता और शांति (रहमत) भेजता है और फरिश्ते भी आप ﷺ के लिए ऊँचे मुकाम की दुआ करते हैं, साथ ही साथ अल्लाह तआला ने धरती वालों को हुकम दिया कि वह भी आप ﷺ पर सलात व सलाम भेजें ताकि आप ﷺ की तारीफ में धरती और आकाश दोनों शामिल हो जायें।

५७. जो लोग अल्लाह और उस के रसूल को तकलीफ देते हैं उन पर दुनिया और आखिरत में अल्लाह की लानत है और उन के लिए बड़ा अपमानित (जलील) करने वाला अजाब है।¹

५८. और जो लोग ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों को तकलीफ दें बिना किसी अपराध (जुर्म) के जो उन से हुआ हो, वह (बड़ा) आक्षेप (बुहतान) और खुले गुनाह का बोझ उठाते हैं।²

५९. हे नबी! अपनी बीवियों से और अपनी बेटियों से और मुसलमानों की औरतों से कह दो कि वह अपने ऊपर अपनी चादरें लटका लिया करें,³ इस से तुरन्त उनकी पहचान हो जाया करेगी फिर न कष्ट पहुँचायी जायेगी,⁴

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِمًّا ﴿٥٧﴾

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدِ احْتَبَلُوا بِهِنَّ آثًا وَإِلْمًا مُّهِمًّا ﴿٥٨﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لَأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءَ الْمُؤْمِنِينَ يُدْرِنُنَّ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ۗ ذَٰلِكَ لَدَىٰ أَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذِرْنَ ۗ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٥٩﴾

¹ अल्लाह को तकलीफ देने का मतलब उन सभी कामों का करना है जिसको उसने नापसन्दीदा कहा है, वरना अल्लाह को तकलीफ देने की कौन कुदरत रखता है? जैसे मूर्तिपूजक, यहूदी और इसाई बगैरह अल्लाह के लिए औलाद साबित करते हैं या जिस तरह हदीस कुदसी में है कि अल्लाह तआला फरमाता है: "आदम की औलाद मुझे तकलीफ देती है, जमाना को गाली देती है जबकि मैं ही जमाना हूँ, उस के दिन और रात का चक्र मेरे ही हुकम से चलता है।" (सहीह बुखारी, तफसीर सूर: अल-जासिया)

² यानी उन को बदनाम करने के लिए उन पर बुहतान लगाना, उन की इज्जत घटाना और अपमान (जलील) करना, जैसे कुछ गुमराह लोग सुबह-शाम सहाबा के राम को गालियाँ देते हैं और उन से ऐसी बातें सम्बन्धित करते हैं जिन को उन्होंने किया ही नहीं।

³ ज़लायिब बहुवचन (जमा) है ज़लायिब का जो ऐसी बड़ी चादर को कहते हैं जिससे पूरा शरीर (जिस्म) छिप जाये। अपने ऊपर चादर लटकाने से मुराद यह है कि अपने मुँह पर इस प्रकार घूँघट निकाला जाये कि जिस से मुँह का ज़्यादातर हिस्सा छिप जाये और आँखें झुकाकर चलने पर उसे रास्ता भी दिखायी दे।

⁴ यह पर्दे के राज और उस के फ़ायदे का बयान है कि इस से एक सम्मानित (बाइज्जत) और सम्भ्य (बावक्रर) औरत और बेहया औरत के बीच पहचान होगी। पर्दे से मालूम होगा कि यह सम्मानित परिवार की औरत है जिस से छेड़छाड़ की किसी को हिम्मत नहीं होगी, इस के विपरीत, बेपर्दा औरतें ग़लत लोगों की निगाह का केन्द्र (मरकज़) और उनकी कामवासना (ख़वाहिशत) का निशाना बनेंगी।

और अल्लाह (तआला) बड़ा माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है ।

६०. अगर (अब भी) ये मुनाफिक (मिथ्याचारी) और वे जिन के दिलों में रोग है और मदीना के वे वासी जो गलत अफवाहें उड़ाने वाले हैं, रूक न जायें तो हम आप की उन के (हलाक करने) पर लगा देंगे फिर तो वे कुछ ही दिन आप के साथ इस (नगर) में रह सकेंगे ।

६१. उन पर धिक्कार (लानत) बरसायी गयी, जहाँ भी मिल जायें पकड़े जायें और खूब टुकड़े-टुकड़े कर दिये जायें ।

६२. उन से पहले के लोगों में भी अल्लाह का यही क़ानून लागू रहा, और तू अल्लाह के क़ानून में कभी भी बदलाव नहीं पायेगा ।

६३. लोग आप से क़्यामत के बारे में सवाल करते हैं, (आप) कह दीजिए कि इसका इल्म तो अल्लाह ही को है आप को क्या पता, बहुत मुमकिन है कि क़्यामत बहुत करीब हो ।

६४. अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों पर लानत (धिक्कार) भेजी है, और उन के लिए भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है ।

६५. जिस में वे हमेशा रहेंगे, वह कोई पक्षधर (बली) और मदद करने वाला न पायेंगे ।

لَيْنَ لَمْ يَتَّوْمُوا الْمُنَافِقِينَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ
وَالرَّحِيفُونَ فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِبَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ
لَا يُجَاوِزُونَكَ فِيهَا إِلَّا قَلِيلًا ﴿٦٠﴾

مَنْعُومِينَ إِنَّمَا تُقَدِّمُوا آخِذُوا وَقُتِلُوا
تَقْتِيلًا ﴿٦١﴾

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلَ وَكَانَ تَجَدُّدًا
لِلَّهِ تَبْدِيلًا ﴿٦٢﴾

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ قُلْ إِنَّمَا عِنْدَ
اللَّهِ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ﴿٦٣﴾

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكُفْرِينَ وَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا ﴿٦٤﴾

خُلْدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَا يُجَاوِزُونَ رَبُّنَا وَلَا نُصِيرًا ﴿٦٥﴾

1 यह हुक्म नहीं है कि उनको पकड़-पकड़ कर मार डाला जाये बल्कि यह शाप (बहुआ) है कि वे अपने गुमराह ख्यालात और इन गतिविधियों (हरकात) से न रूके तो उनका बड़ा नसीहत वाला अंजाम होगा । कुछ कहते हैं कि यह हुक्म है, लेकिन ये मुनाफिक आयत के नाजिल होने के बाद रूक गये थे, इसलिए उन के खिलाफ यह कार्यवाही नहीं की गयी जिसका हुक्म इस आयत में दिया गया था । (फतहूल क़दीर)

६६. उस दिन उन के मुंह आग में उलटे-पलटे जायेंगे। (पछतावा और अफसोस से) कहेंगे कि काश! हम अल्लाह (तआला) और रसूल के हुक्म की इताअत करते।

६७. और वे कहेंगे, हे हमारे रब! हम ने अपने सरदारों और बड़ों की मानी जिन्होंने हमें सीधे रास्ते से भटका दिया।^१

६८. हे हमारे रब! तू उन्हें दोगुना अजाब दे और उन पर बहुत बड़ी लानत भेज।

६९. हे ईमानवालो! उन लोगों जैसे न बन जाओ जिन्होंने मूसा को तकलीफ दी, तो जो बात उन्होंने कही थी अल्लाह ने उन्हें उस से आजाद कर दिया,^२ और वह अल्लाह के पास बाइज्जत थे।

يَوْمَ تَقَامِبُ وَيُؤْهِمُهُمُ فِي النَّارِ يُقُولُونَ يَا لَيْتَنَا
أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ﴿٦٦﴾

وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكِبْرَاءَنَا
فَأَصَابْنَا السَّبِيلَ ﴿٦٧﴾

رَبَّنَا إِنَّهُمْ ضَعُفَاءُ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنَهُمُ لَعْنًا
كَبِيرًا ﴿٦٨﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ آذَوْا
مُوسَى فَبَرَّأَهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا وَكَانَ
عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهًا ﴿٦٩﴾

^१ यानी हम ने तेरे सदेष्टाओं (रसूलों) और उलमा के बजाय अपने उन वड़ों और बुजुर्गों की पैरवी किया, लेकिन आज हमें मालूम हुआ कि उन्होंने हमें तेरे सदेष्टाओं से दूर रखकर सीधे रास्ते से भटकाये रखा। बुजुर्गों का अनुसरण और बाप-दादा के अनुकरण (पैरवी) आज भी लोगों में भटकावे की वजह है। काश! मुसलमान अल्लाह की आयतों पर गौर करके इन पगडंडियों से निकलें और कुरआन व हदीस के सीधे रास्ते को अपना लें कि नजात केवल अल्लाह और अल्लाह के रसूलुल्लाह ﷺ के अनुसरण में ही है न कि धर्मगुरुओं (मजहबी पेशवाओं) और बड़ों के अनुसरण में या बुजुर्गों की पुराने रीति-रिवाजों को अपनाने में।

^२ इसकी तफसीर हदीस में इस तरह आई है कि हजरत मूसा عليه السلام बहुत शर्मिले थे, अतः अपना शरीर कभी उन्होंने किसी के सामने नंगा नहीं किया। इस्राईली वंश के लोग कहने लगे कि शायद मूसा के शरीर पर सफेद दाग या दूसरा इसी तरह का रोग है, इसलिए हर समय कपड़े पहनकर ढका-छिपा रहता है। एक बार अकेले में हजरत मूसा गुस्ल करने लगे, कपड़े उतार कर एक पत्थर पर रख दिये, पत्थर (अल्लाह के हुक्म से) कपड़े लेकर भाग खड़ा हुआ, हजरत मूसा उस के पीछे-पीछे दौड़े यहाँ तक कि इस्राईलियों की एक मजलिस में पहुँच गये, उन्होंने हजरत मूसा को नग्नवस्था में देखा तो उन के सारे शक दूर हो गये, मूसा बहुत खूबसूरत, जवान और हर तरह के दाग से پاک थे। इस तरह अल्लाह तआला ने मौजिजाती तौर से पत्थर के जरिये उन के इस इल्जाम और शक को दूर कर दिया जो इस्राईल की औलाद की तरफ से उन पर लगाया जाता था। (सहीह बुखारी, किताबुल अम्बिया)

७०. हे ईमानवालो! अल्लाह (तआला) से डरो और सीधी-सीधी (सच) बातें किया करो।

७१. ताकि अल्लाह (तआला) तुम्हारे काम सुधार दे और तुम्हारे गुनाह माफ कर दे, और जो भी अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म की इत्तेबा करेगा उस ने बड़ी कामयाबी हासिल कर ली।

७२. हम ने अपनी अमानत को आकाशों पर और धरती पर और पहाड़ों पर पेश किया (लेकिन) सभी ने उस के उठाने से इंकार कर दिया और उस से डर गये, (लेकिन) इंसान ने उसे उठा लिया, वह बड़ा जालिम और जाहिल है।

७३. (यह इसीलिए) कि अल्लाह (तआला) मुनाफिक मर्दों और मुनाफिक औरतों और मूर्तिपूजक मर्दों और मूर्तिपूजक औरतों को सजा दे और ईमानवाले मर्द और ईमानवाली औरतों की तौबा कुबूल कर ले, और अल्लाह तआला बड़ा माफ करने वाला और रहम करने वाला है।

सूरतु सबा-३४

सूर: सबा मक्का में नाजिल हुई इस में चौवन आयतें और छ: रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. सारी तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसकी (मिल्कियत में) वह सब कुछ है जो आकाशों और धरती में है और आखिरत में भी तारीफ उसी के लिये है, वह (बड़ा) हिकमत वाला और (पूरी) खबर रखने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا ﴿٧٠﴾

يُضَيِّحْ لَكُمْ آيَاتِنَا وَلِيُبَدِّلْ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ﴿٧١﴾

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٧٢﴾

لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٧٣﴾

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْغَنِيُّ ﴿١﴾

२. जो धरती में जाये और जो उस से निकले, जो आकाश से उतरे और जो चढ़ कर उस में जाये वह सब से बाखबर है, और वह बड़ा रहम करने वाला बड़ा माफ करने वाला है।

३. और काफिर कहते हैं कि हम पर क़ायमत कायम नहीं होगी। आप कह दीजिए कि मुझे मेरे रब की क़सम! जो ग़ैब का जानने वाला है कि वह बेशक़ तुम पर कायम होगी, अल्लाह (तआला) से एक कण (ज़र्रा) की तरह की चीज़ भी छिपी नहीं, न आकाशों में और न धरती में, बल्कि उस से भी छोटी और बड़ी सभी चीज़ खुली किताब में मौजूद है।

४. ताकि वह ईमानवालों और नेक लोगों को अच्छा बदला अता करे, यही लोग हैं जिन के लिए बख़्शिश और बाइज़्जत रिज़क है।

५. और हमारी आयतों को नीचा दिखाने में जिन्होंने कोशिश किया है ये वे लोग हैं जिन के लिए बड़ी बुरी तरह का सज़ा अज़ाब है।

६. और जिन्हें इल्म है वे देख लेंगे कि जो कुछ आप की तरफ़ आप के रब की तरफ़ से नाज़िल हुआ है वह (सरासर) सच है, और अल्लाह प्रभावशाली तारीफ़ वाले के रास्ते की हिदायत करता है।

يَعْلَمُ مَا يَلِيحُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يُعْرِجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يُعْرِجُ فِيهَا
وَهُوَ الرَّحِيمُ الْعَفُورُ ②

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ عَلِيمُ الْغَيْبِ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْفَرُ مِنْ ذَلِكَ وَالْأَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّؤْتَىٰ ③

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَرِيمٌ ④

وَالَّذِينَ سَعَوْا عَلَيْنَا أَلْتَمِعْنَاهُمْ أَوَّلَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑤

دَيَّرَ الَّذِينَ آمَنُوا أَوْلَٰئِكَ أَلْمَعُوا الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ⑥

१ यह क़ायमत होने का सबब है, यानी क़ायमत इसलिए कायम होगी और सभी इन्सानों को अल्लाह इसलिये दोबारा जिन्दा करेगा कि उन की नेकी का बदला अता करे, क्योंकि बदला ही के लिए उसने यह दिन रखा है अगर यह बदले का दिन न हो तो फिर इसका मतलब यह होगा कि नेक लोग और पापी बराबर हैं, और यह बात इंसान के बहुत खिलाफ़ है और बन्दों खास तौर से परहेज़गारों पर जुल्म होगा। (وما ربك بظلام للعبيد)

२ यहाँ देखने से मुराद दिल से देखना यानी यक़ीनी इल्म है, सिर्फ़ आँख से देखना नहीं आलियों से मुराद सहाबा (नबी के सहाबा) या सभी मुसलमान हैं, यानी ईमानवाले इस बात को जानते और इस पर यक़ीन करते हैं।

७. और काफिरों ने कहा, आओ हम तुम्हें एक ऐसा इंसान बतायें जो तुम्हें यह खबरें पहुँचा रहा है कि जब तुम पूरी तरह से कण-कण (जर्रा-जर्रा) हो जाओगे तो तुम फिर से एक नई जिन्दगी में आओगे।

८. (हम नहीं कहते) कि खुद उसने ही अल्लाह पर झूठ गढ़ लिया है या उसे जुनून हो गया है, बल्कि (हकीकत यह है) कि आखिरत पर ईमान न रखने वाले ही अजाब में और दूर के भटकावे में हैं।

९. तो क्या वे अपने आगे-पीछे आकाश और धरती को देख नहीं रहे हैं? अगर हम चाहें तो उन्हें धरती में धँसा दें या उन पर आकाश के टुकड़े गिरा दें। बेशक इस में पूरा सबूत है हर उस बंदे के लिए जो (दिल से) ध्यानमग्न (मुतविज्जह) हो।

१०. और हम ने दाऊद पर अपना फ़ज़ल किया,^१ हे पहाड़ो! उस के साथ मेरी तस्वीह किया करो और पक्षियों को भी (यही हुक्म है) और हम ने उस के लिए लोहे को मुलायम कर दिया।

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ
يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُرِّقْتُمْ كُلَّ مَمْرَقٍ إِنَّا لَنَنبِّئُكُمْ
خَبْرًا جَدِيدًا ﴿٧﴾

أَفَتَدْرِي عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ حِقَّةٌ وَإِلَىٰ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالصَّلٰىٰلِ الْمَعِيَدِ ﴿٨﴾

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِنَ السَّمَاءِ
وَالْأَرْضِ إِن نَّشَاءُ نَحْنَفُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسَوِّطُ
عَلَيْهِمْ كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ طَرَفًا فِي ذٰلِكَ لَآيَةٌ لِّكُلِّ
عَبْدٍ مُّتَّبِعٍ ﴿٩﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا فَضْلًا لِيَجِبَالَ أُورُبَّىٰ مَعَهُ
وَالطَّيْرَ ۚ وَآتَيْنَاهُ الْحَدِيدَ ﴿١٠﴾

^१ यानी यह आयत दो बातों पर आधारित (मबनी) है, एक अल्लाह की पूरी कुदरत की चर्चा पर जिसका अभी बयान हुआ। दूसरी, कुपफार के लिए चेतावनी (तंबीह) और धमकी पर कि जो अल्लाह आकाश और धरती की रचना पर इस तरह कुदरत वाला है कि उन पर और उन के बीच हर चीज पर उस का हुक और कुदरत है, वह जब चाहे उन पर अपना अजाब भेजकर उन को बरबाद कर सकता है, धरती में धँसाकर भी, जैसे कारून को धँसाया या आकाश के टुकड़े गिरा कर, जैसे ऐका वालों को तबाह कर दिया गया।

^२ यानी नबूअत के साथ मुल्क और दूसरे कई खास सिफ़तों से सम्मानित (वाइज्जत) किया।

११. कि तू पूरी-पूरी कबचें बना और जोड़ों में अंदाजा रख, और तुम सब नेकी के काम करो, (यक्रीन करो) मैं तुम्हारे अमल देख रहा हूँ।

أَنْ أَعْمَلَ سِعْيَتِمْ وَقَدَّرَ فِي السَّرْوِ وَأَعْمَلُوا
صَالِحَاتٍ لِّي بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ⑪

१२. और हम ने सुलैमान के लिए हवा को (वश में कर दिया) कि सुबह की मंजिल उसकी एक महीने की होती थी और शाम की मंजिल भी! और हम ने उन के लिए ताबे का चरमा जारी कर दिया,^२ और उस के रब के हुक्म से कुछ जिन्नात भी जो उस के अधीन (ताबे) उस के पास काम करते थे, और उन में से जो भी हमारे हुक्म (आदेश) की नाफरमानी करे हम उसे भड़कती हुई आग के अजाब का सजा चखायेंगे।^३

وَلَيْسِنَّ الزَّيْبِ عُدُّهَا شَهْرٌ وَرَوَّاحُهَا شَهْرٌ
وَأَسَلْنَا لَهُ عَيْنَ الْقَاطِرِ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَعْمَلُ
بِئْسَ بَدَأْتُمْ بِأَذْنِ رَبِّهِمْ وَمَنْ يَتَّبِعْهُمْ عَنْ
أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ⑫

१३. जो कुछ सुलैमान चाहते वह (जिन्नात) तैयार कर देते, जैसे किला, चित्र (स्मारक), तालाब के समान लगन (तगाड़) और चूल्हों पर कायम मजबूत देंगे (बड़े पतीले) हे दाऊद की औलाद! उसका शुक्रिया अदा करने के लिए नेकी के काम करो, मेरे बन्दों में से शुक्रगुजार बन्दे कम ही होते हैं।

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحْرُوبٍ وَمَنْ أُتِيَ
كُلُّ جَوَابٍ وَقَدُورٌ يُسَبِّحُ بِحَمْدِ اللَّهِ أَكْبَرُ
وَقَلِيلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّاكِرِينَ ⑬

^१ यानी हजरत सुलैमान मुल्क के सरदारों और फौज के साथ सिंहासन पर आसीन हो जाते और जिधर आप का हुक्म होता हवा उसे इतनी तेज चाल से ले जाती कि एक महीने की दूरी सुबह से दोपहर तक और इसी तरह एक महीने की दूरी दोपहर से रात तक पूरी कर ली जाती, इस तरह एक दिन में दो महीनों की यात्रा (सफर) पूरी हो जाती।

^२ यानी हम ने जैसे दाऊद के लिए लोहा नर्म कर दिया था, हजरत सुलैमान के लिए ताबे का चरमा जारी कर दिया ताकि ताबे की धात से जो चाहें बनायें।

^३ ज्यादातर भाष्यकारों (मुफिस्सरो) के ख्याल से यह सजा कयामत के दिन दी जायेगी, लेकिन कुछ के करीब यह दुनियावी सजा है। वह कहते हैं कि अल्लाह ने एक फरिस्ता तैनात कर दिया था जिस के हाथ में आग का कोड़ा होता था, जो जिन्न हजरत सुलैमान की हुक्म से देखी करता फरिस्ता वह सोटा उसे मारता जिस से वह जलकर भस्म हो जाता।

१४. फिर जब हम ने उन पर मौत का हुक्म भेज दिया तो उनकी खबर (जिन्नात को) किसी ने न दी सिवाय घुन के कीड़े के जो उनकी लकड़ी को खा रहा था, तो जब (सुलैमान) गिर पड़े उस समय जिन्नों ने जान लिया कि अगर वे गैब का इल्म रखते तो इस अपमान (जिल्लत) के अजाब में न फंसे रहते ।

१५. सबा की कौम के लिए अपनी वस्तियों में (अल्लाह के कुदरत की) निशानी थी,^२ उन के दायें-बायें दो बाग थे। (हम ने उन को हुक्म दिया था कि) अपने रब की अता की हुई रिजक को खाओ और उसका शुक्रिया अदा करो, यह साफ नगर है और रब माफ करने वाला है।

१६. लेकिन उन्होंने सुख फेरा तो हम ने उन पर तेज बाढ़ का (पानी) भेज दिया और उन के (हरे-भरे) बागों के बदले दो (ऐसे) बाग दिये जो मजे में कड़वे-कसेले और ज्यादातर झाऊ और कुछ वेरी के पेड़ों वाले थे।

१७. हम ने उनकी नाशुक्री का यह बदला उन्हें दिया, हम (ऐसे सख्त) सजा बड़े-बड़े नाशुकों को ही देते हैं।

فَلَمَّا فَصَمْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَأَتِهِ ۖ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنَّ أَنْ تَوَكَّلُوا بِعَلَمِ الْغَيْبِ مَا كُنُوفِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿١٤﴾

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْئَلِهِمْ آيَةً ۖ فَتَنَّا عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ ؕ كُلُّوا مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۖ دَابَّةٌ أَلْهَمْنَاهُ لِقَابَهُ رَبُّكَ عَفْوٌ ﴿١٥﴾

فَاعْرَضُوا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعُورِ وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِ الْأَكْلِ حَظِيٍّ وَأَثَلٍ وَمَنْعَىٰ ۖ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيلٍ ﴿١٦﴾

ذَلِكَ جَزَاءُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ وَهُمْ يُجْزَوْنَ إِلَّا الْكُفُورَ ﴿١٧﴾

^१ हजरत सुलैमान के जमाने में जिन्नात के बारे में यह मशहूर हो गया था कि यह गैब की बातें जानते हैं, अल्लाह ने हजरत सुलैमान की मौत के जरिये इस भ्रम की गलती को जाहिर कर दिया।

^२ सबा वही समुदाय (कौम) है जिस सबा की रानी मशहूर है, जो हजरत सुलैमान के जमाने में मुसलमान हो गई थी। समुदाय ही के नाम पर देश का नाम भी सबा था, इस समय यह इलाका यमन के नाम से मशहूर है, यह बड़ा सम्पन्न (खुशहाल) देश था, यह देश जमीनी और समुद्री तिजारत में भी खास था और खेती और उपज में मशहूर। यह दोनों ही चीजें किसी देश और समुदाय की खुशहाली की वजह होती हैं, इसी धन-दौलत की ज्यादाती को यहाँ अल्लाह की कुदरत का लक्षण (निशानी) कहा गया है।

१८. और हम ने उन के और उन बस्तियों के बीच जिन में हम ने बरकत (सुख-सुविधा) अता कर रखी थी, कुछ बस्तियाँ दूसरी रखी थी जो रास्ते पर दिखायी देती थीं^१ और उन में चलने के मुकाम मुकर्रर कर दिये थे, उन में रातों और दिनों में अमन व अमान से चलते-फिरते रहो।

१९. लेकिन उन्होंने दोबारा दुआ की कि हे हमारे रब! हमारी यात्रायें दूर तक कर दे, और चूँकि खुद उन्होंने अपने हाथों अपना बुरा किया इसलिए हम ने उन्हें (पुरानी) कहानी के रूप में कर दिया^२ और उन के टुकड़े-टुकड़े कर दिये,^३ बेशक हर सब और शुक्रिया अदा करने वाले के लिए इस (घटना) में बहुत सी नसीहतें हैं।

२०. और शैतान ने उन के वारे में अपना इरादा (अनुमान) सच कर दिखाया, ये लोग (सब के सब) उस के पैरोकार बन गये सिवाय ईमानवालों के एक गुट के।

२१. और शैतान का उन पर कोई दबाव (और बल) न था, लेकिन इसलिए कि हम उन लोगों को जो आखिरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों में (अच्छी तरह से) जाहिर कर दें जो उस से शक में हैं, और आप का रब हर चीज का रक्षक (मुहाफिज) है।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقَرْيَةِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا قَرْيَٰ طَاهِرَةً ۖ وَكَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ ۖ وَسَيَّرُوا فِيهَا لَيَالِيًا وَآيَامًا مُّبِينِينَ ﴿١٨﴾

فَعَالُوا رَبَّنَا بَعْدَ بَيِّنَاتِنَا ۖ وَظَلَمُوا أَنْفُسَهُمْ ۖ فَجَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ كُلَّ مُمَرِّقٍ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ﴿١٩﴾

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا قَوْمًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٢٠﴾

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِنْ سُلْطٰنٍ إِلَّا لِيَعْلَمَ مَن يُّؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ ۚ مَن هُوَ مِنهَا فِي شَاكٍ ۚ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ﴿٢١﴾

^१ बरकतों वाली बस्तियों से मुराद शाम (सीरिया) की बस्तियाँ हैं, यानी हम ने सबा देश (यमन) और शाम के बीच सड़क के किनारे बस्तियाँ आबाद की थीं।

^२ यानी इन को इस तरह नापैद किया कि इन की बरबादी की कहानी हर जुबान पर हो गयी और बैठकों और मजलिसों में चर्चा का विषय बन गया।

^३ यानी उन्हें विभाजित (तक़सीम) और छिन्न-भिन्न कर दिया, जैसाकि सबा की मशहूर जातियाँ कई जगहों पर जा आबाद हुईं, कोई यसरिब और मक्का आ गया कोई सीरिया के इलाकों में चला गया, कोई कहीं, कोई कहीं।

२२. कह दीजिए कि अल्लाह के सिवाय जिन-जिन का तुम्हें भ्रम है (सब को) पुकार लो, न उन में से किसी को आकाशों और धरती में से एक कण (जर्रा) का हक है, न उन का उन में कोई हिस्सा है और न उन में से कोई अल्लाह का शरीक है।

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ دَعَّمْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ
مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ
فِيهَا مِنْ شَرْكٍ وَمَا لَكُمْ مِنْهُمْ مِنْ ظَهِيرٍ ﴿٢٢﴾

२३. और सिफारिश (की दुआ) भी उसके सामने कोई फ़ायदा नहीं देती सिवाय उन के जिन के लिए इजाजत हो जाये, यहाँ तक कि जब उन के दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो पूछते हैं तुम्हारे रब ने क्या कहा? जवाब देते हैं कि सच कहा और वह बड़ा ऊँचा और बहुत बड़ा है।

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّىٰ
إِذَا فُزِعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا
الْحَقُّ ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٣﴾

२४. पूछिये कि तुम्हें आकाशों और धरती से रिज़क कौन पहुँचाता है? (खुद) जवाब दीजिए कि अल्लाह (महान)। (सुनो), हम या तुम या तो बेश्क हिदायत पर हैं या खुली गुमराही में हैं।^१

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ ۗ
وَإِنَّا أَوْلِيَٰكُمْ لَعَلَّ هُنْدَىٰ أَوْفَىٰ صَلِيلٍ مُّبِينٍ ﴿٢٤﴾

२५. कह दीजिए कि हमारे किये हुए गुनाहों के बारे में तुम से कुछ न पूछा जायेगा और न तुम्हारे कर्मों की पूछताछ हम से होगी।

قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَمَّا أَجْرُمْنَا وَلَا لَمَسْنَا عَمَّا تَعْبَسُونَ ﴿٢٥﴾

२६. (उन्हें) खबरदार कर दीजिए कि हम सब को हमारा रब जमा करके फिर हम में सच्चा फ़ैसला कर देगा,^२ और वह फ़ैसला करने वाला सब कुछ जानने वाला है।

قُلْ يَجْعَلُ بَيْنَنَا وَبَيْنَا رِيبًا ثُمَّ يُطْمِئِئِنَّا بِالْحَقِّ ۗ
وَهُوَ الْفَاتِحُ الْعَلِيمُ ﴿٢٦﴾

^१ साफ़ बात है कि गुमराह बही होगा जो ऐसी चीजों को माबूद समझता है जिनका आकाश और धरती से जीविका (रिज़क) पहुँचाने में कोई हिस्सा नहीं, न वह बारिश कर सकते हैं न कुछ उगा सकते हैं, इसलिए सच पर हकीकत में तौहीद वाले ही हैं, न कि दोनों।

^२ यानी उस के हिसाब से फल देगा, अच्छों को स्वर्ग (जन्नत) में और बुरों को नरक (जहन्नम) में दाखिल करेगा।

२७. कह दीजिए कि अच्छा मुझे भी उन्हें दिखा दो जिन्हें तुम अल्लाह का साझीदार बनाकर उस के साथ शामिल कर रहे हो, ऐसा कभी नहीं, बल्कि वही अल्लाह है जबरदस्त और हिक्मत वाला।

२८. और हम ने आप को सभी लोगों के लिए खुशखबरी सुनाने वाला और होशियार करने वाला बनाकर भेजा है, लेकिन (यह सच है कि) लोगों में ज्यादातर नावाकिफ है।^१

२९. और पूछते हैं कि वह वादा है कब? अगर सच हो तो बता दो।

३०. जवाब दीजिए कि वादे का दिन ठीक मुकर्रर है जिस से एक क्षण न तुम पीछे हट सकते हो न आगे बढ़ सकते हो।

३१. और काफिरों ने कहा कि हम न तो इस कुरआन को मानें न इस से पहले की किताबों को, और हे देखने वाले, काय कि तू इन जालिमों को उस समय देखता जबकि ये अपने रव के सामने खड़े हुए एक-दूसरे पर इल्जाम दे रहे होंगे,^२ नीचे दर्जे के लोग ऊँचे दर्जे के लोगों से कहेंगे^३ कि अगर तुम न होते तो हम ईमान वाले होते।

قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ اتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَكِلَاءَ وَلَا يَأْتِيهِمْ الْغَيْبُ ۚ وَلَكِنَّ ٱلْعَزِيزَ ٱلْحَكِيمَ ﴿٢٧﴾

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٨﴾

وَيَقُولُونَ مَتَى هَٰذَا ٱلْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾

قُلْ لَكُمْ ميعَادُ يَوْمٍ لَا تَسْتَأْخِرُونَ عَنْهُ سَاعَةً ۖ وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ﴿٣٠﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ وَلَا بِٱلَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ ۖ وَكَوَتَرْنَا إِذَ ٱلظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۖ يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ ٱلْقَوْلَ ؕ يَقُولُ ٱلَّذِينَ اسْتَضَعُوا ٱلَّذِينَ اسْتَدْبَرُوا لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ﴿٣١﴾

^१ इस आयत में अल्लाह ने एक तो नवी (मोहम्मद ﷺ) की उम्मी रिसालत का वयान किया है कि आप को पूरी इसानियत का रहनुमा और हादी बनाकर भेजा गया है, दूसरा यह वयान किया गया कि आप की मजी और कोशिश के बावजूद भी ज्यादातर लोग ईमान (आस्था) से वंचित (महरूम) रहेंगे।

^२ यानी दुनिया में यह कुफ्र और शिर्क में आपसी साथी और इस नाते एक-दूसरे के खैरखवाह थे, लेकिन आखिरत में आपसी दुश्मन और एक-दूसरे को इल्जाम देंगे।

^३ यानी दुनिया में यह लोग जो बिना सोचे समझे रस्मो रिवाज पर चलते हैं अपने उन नेताओं से कहेंगे जिन के वे दुनिया में पैरोकार बने रहे।

३२. ये ऊँचे लोग उन कमजोर लोगों को जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास हिदायत आ चुकने के बाद हम ने तुम्हें उस से रोका था। (नहीं) बल्कि तुम (खुद) मुजरिम थे।

३३. (और इस के जवाब में) यह दुर्बल (कमजोर) लोग उन घमण्डियों से कहेंगे, (नहीं, नहीं) बल्कि दिन-रात छल-कपट से हमें अल्लाह के साथ कुफ्र करने और उस के साथ साझीदार मुकर्रर करने का तुम्हारा हुकम देना हमारी बेईमानी का सबब हुआ, और अजाब को देखते ही सब के सब दिल ही दिल में शर्मिदा हो रहे होंगे, और काफिरों की गर्दनो में हम तौक डाल देंगे, उन्हें केवल उन के किये हुए अमल का बदला दिया जायेगा।^१

३४. और हम ने तो जिस बस्ती में जो भी आगाह करने वाला भेजा, वहाँ के खुशहाल लोगों ने यही कहा कि जिस चीज के साथ तुम भेजे गये हो हम उस के साथ कुफ्र करने वाले हैं।^२

३५. और कहा कि हम माल और औलाद में ज्यादा हैं, यह नहीं हो सकता कि हमें यातना (अजाब) दिया जाये।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِلَّذِينَ اسْتَضِجُوا اَنْتُمْ صَدَدْتُمْ عَنِ الْهُدَىٰ بَعْدَ اِذْ جَاؤَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ لَكُمْ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضِجُوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلْ مَكَرَ الْبَلِ وَالْتِهَارِ اِذْ تَاْمُرُوْنَ نَاْنَاَنْ نَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهُ اَنْدَادًا وَاَسْرُوْا الدّٰمَةَ لَبٰٓرًا وَاُوْلَ الْعٰدَابِ وَاَجْعَلْنَا الْاَعْمٰلَ فِيْ اَعْيَابِ الَّذِينَ كَفَرُوْا وَاَهْلٌ يَّجْرُوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾

وَمَا اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالُ مَتْرُوْمًا اِنَّا بِمَا اَرْسَلْتُمْ بِهِ لَكٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾

وَقَالُوْا اَنْتُمْ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَاَوْلَادًا وَاِنَّا لَنْتَحْنُ بِسَعْدٍ بَيْنَٰٓتٍ ﴿٣٥﴾

^१ यानी हम मुजरिम तो उस वक़्त होते जब अपने मन से पैगम्बरों का इंकार करते, जबकि हकीकत यह है कि तुम रात-दिन हमें गुमराह करने और अल्लाह का इंकार करने और उसका साझी बनाने पर तैयार करते रहे, जिस से अन्ततः (आखिरकार) हम तुम्हारे पैरोकार बनकर ईमान (आस्था) से महरूम रहे।

^२ यानी दोनों को उन के अमलों की सजा मिलेगी, सरदारों को उन के अनुसार और उन के पैरोकारों को उन के अनुसार।

^३ यह नबी ﷺ को सांतवना (तसल्ली) दी जा रही है कि मक्का के धनवान और सरदार आप ﷺ पर यक़ीन नहीं कर रहे हैं और आप ﷺ को दुख पहुँचा रहे हैं तो यह कोई नई बात नहीं है, हर ज़माने के खुशहाल लोगों ने पैगम्बरों को नकारा ही है और हर पैगम्बर पर ईमान लाने वाले सब से पहले समाज के दरिद्र और गरीब तबक़े के लोग ही होते थे।

३६. कह दीजिए कि मेरा रब जिस के लिए चाहता है रिज़क को कुशादा कर देता है और तंग भी कर देता है,^१ लेकिन ज्यादातर लोग नहीं जानते।

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٦﴾

३७. और तुम्हारे माल और औलाद ऐसे नहीं कि तुम्हें हमारे पास (पदों से) करीब कर दें, लेकिन जो ईमान लायें और नेकी के काम करें^२ तो उन के लिए उन के नेकी का दुगुना बदला है, और वे बेखौफ और मुतमइन होकर ऊँचे भवनों में रहेंगे।

وَمَا أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ بِالْبِئْتِ تُقَوِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفَىٰ
إِذْ مَنَ أَمِنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعِيفِ
بِسَاعِدِهِمْ فِي الْأَعْرَابِ أَمْثُونَ ﴿٣٧﴾

३८. और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने की दौड़-धूप में लगे रहते हैं, यही हैं जो अजाब में (पकड़कर) हाज़िर किये जायेंगे।

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ
فِي الْعَذَابِ مُحَضَّرُونَ ﴿٣٨﴾

३९. कह दीजिए कि मेरा रब अपने बन्दों में जिस के लिए चाहे रिज़क कुशादा करता है और जिस के लिए चाहे नाप (तंग) कर देता है,^३ और तुम जो कुछ भी अल्लाह के रास्ते में खर्च करोगे अल्लाह उसका (पूरा-पूरा) बदला देगा

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
وَيَقْدِرُ لَهُ وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهُ
وَهُوَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿٣٩﴾

^१ इस में काफ़िरो के भ्रम और शंका (शक) का वयान किया जा रहा है कि रिज़क की कुशादगी और तंगी अल्लाह की खुशी और नाखुशी का घोटक (मजहर) नहीं, बल्कि इस का सम्बन्ध (तआल्लुक) अल्लाह की हिबमत और मर्जी से है, इसलिए वह धन उसे भी देता है जिसे पसन्द करता है और उसे भी जिसे नापसन्द करता है और जिसे चाहता है धनी करता है और जिसे चाहता है फ़कीर रखता है।

^२ यानी हमारी मुहब्बत और क़ुरबत हासिल करने का ज़ारिया तो सिर्फ़ ईमान और नेक अमल है, जैसे हदीस में फ़रमाया गया : «अल्लाह तुम्हारी शकल ब सूरत और तुम्हारे धन-दौलत नहीं देखता वह तो तुम्हारे दिलों और अमलों को देखता है।» (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्र, बाब तहरीमे जुल्मिल मुस्लिम)

^३ अतः वह काफ़िर को भी खूब धन देता है, लेकिन किसलिये? ढील देने के लिए और कभी ईमानदार को गरीब रखता है, किसलिये? उसकी नेकी और बदला को बढ़ाने के लिए। इसलिए केवल माल की ज़्यादाती उसकी खुशी का, और कभी उसकी नाखुशी का सवूत नहीं है, यह बार-बार कहना सिर्फ़ बल (ज़ोर) देने के लिये है।

और वह सब से बेहतर रिजक अता करने वाला है।

४०. और उन सब को अल्लाह उस दिन जमा करके फरिश्तों से पूछेगा कि क्या ये लोग तुम्हारी इबादत करते थे !¹

४१. वे कहेंगे कि तू पाक है और हमारा संरक्षक (निगरा) तो तू है न कि ये, ये लोग जिन्नों की इबादत करते थे, इनमें से ज्यादातर को उन्हीं पर ईमान था।

४२. तो आज तुम में से कोई (भी) किसी के लिए (भी किसी तरह के) फायदे-नुकसान का मालिक न होगा, और हम जालिमों² से कह देंगे कि उस आग का अजाब चखो जिसे तुम झुठलाते रहे।

४३. और जब उन के सामने हमारी साफ-साफ आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि यह ऐसा इंसान है जो तुम्हें तुम्हारे पूर्वजों (बुजुर्गों) के देवताओं से रोक देना चाहता है (इस के सिवाय कोई बात नहीं) और कहते हैं कि यह तो गढ़ा हुआ बुहतान है, और सच उन के पास आ चुका फिर भी काफिर यही कहते रहे कि

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَبِيحًا ثُمَّ يَقُولُ لِلْمَلَائِكَةِ أَهؤلاء
إِيَّاكُمْ كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٤٠﴾

قَالُوا سُبْحٰنَكَ أَنْتَ وَلِيْنَا مِنْ دُونِهِمْ بَلْ كَانُوا
يَعْبُدُونَ الْجِنَّ أَكْثَرَهُمْ بِهِمْ مَقُومُونَ ﴿٤١﴾

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا
وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي
كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ﴿٤٢﴾

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذِهِ إِلَّا
يُرِيدُ أَنْ يُبَدِّلَ كَلِمَاتِنَا كَمَا كَانَ يُبَدِّلُ آبَاءَ كُفْرًا وَقَالُوا
مَا هَذِهِ إِلَّا آفَاتُكَ مَفْتَرِي ۗ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّهِ
لَمَّا جَاءَهُمْ بَرٌّ هَذَا إِلَّا بَشْرٌ مِثْبُتٌ ﴿٤٣﴾

¹ यह मुशरिकों को जलील करने के लिए अल्लाह फरिश्तों से सवाल करेगा, जैसे रसूल ईसा के बारे में आता है कि अल्लाह उन से भी सवाल करेगा, "क्या तूने लोगों से कहा था कि मुझे और मेरी माँ (मरियम) को अल्लाह के सिवाय माबूद बना लेना?" (अल-मायेद:-११६) हजरत ईसा जवाब देंगे, हे अल्लाह तू पाक है, जिसका मुझे हक नहीं था वह बात मैं क्यों कर कह सकता था? जैसे कि सूर: अल-फुरकान-१७ में भी बयान हुआ, कि क्या यह तुम्हारे कहने पर तुम्हारी इबादत करते थे ?

² जालिमों से मुराद अल्लाह के सिवाय दूसरे के पुजारी हैं, क्योंकि शिर्क (द्वैत) बड़ा जुल्म है और मुशरिक (मिश्रणवादी) सब से बड़े जालिम।

यह तो खुला हुआ जादू है।

४४. और इन (मक्कावासियों को) न तो हम ने किताबें अता कर रखी हैं जिन्हें ये पढ़ते हों और न उन के पास आप से पहले कोई सतर्क (आगाह) करने वाला आया।

४५. और इन से पहले के लोगों ने भी हमारी बातों को झुठलाया था और उन्हें हम ने जो दे रखा था ये तो उस के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचे, तो उन्होंने मेरे रसूलों को झुठलाया, (फिर देख) कि मेरे अजाब की क्या (कठोर) हालत हुई।¹

४६. कह दीजिए कि मैं तुम्हें केवल एक ही बात की नसीहत करता हूँ कि तुम अल्लाह के लिए (खालिस तौर से ज़िद को छोड़कर) दो-दो मिल कर या अकेले-अकेले खड़े होकर ख्याल तो करो, तुम्हारे इस साथी को कोई जुनून नहीं। वह तो तुम्हें एक बड़े (कड़े) अजाब के आने से पहले आगाह करने वाला है।

४७. कह दीजिए कि जो बदला मैं तुम से माँगू वह तुम्हारे लिये है,² मेरा बदला तो अल्लाह पर है, वह हर चीज़ को अच्छी तरह जानता है।

४८. कह दीजिए कि मेरा रब हक (सच्ची बह्यी) नाज़िल करता है, वह हर छिपी बात (गैब) का जानने वाला है।

وَمَا آتَيْنَهُمْ مِنْ لَيْتٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ﴿٤٤﴾

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا بَلَّغُوا وَعْثًا مِمَّا آتَيْنَهُمْ فَكَذَّبُوا بِرُسُلِنَا كَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٤٥﴾

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مَشْفِقٍ وَفَرَادَىٰ ثُمَّ تَتَفَكَّرُونَ مَا بِصَاحِبِكُمْ مِنْ جِنَّةٍ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ لَكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ﴿٤٦﴾

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ﴿٤٧﴾

قُلْ إِنْ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَٰمُ الْعُيُوبِ ﴿٤٨﴾

¹ यह मक्का के मूर्तिपूजकों को बाखबर किया जा रहा है कि तुम ने झुठलाने और इंकार का जो रास्ता अपनाया है वह बहुत नुकसानदह है, तुम से पहले की उम्मत भी इसी रास्ते पर चलकर तबाह और बरबाद हुए हैं, जबकि यह उम्मत माल-दौलत, ताकत-क़बलत और उम्र में तुम से बढ़कर थे, तुम तो उन के दसवें हिस्से को भी नहीं पहुँचते। इस के बावजूद वह अल्लाह के अजाब से नहीं बच सके, इस बारे में सूर: अहकाफ़ की आयत २६ में बयान किया गया है।

² इस में अपनी बेगरजी और दुनियावी धन-साधन से अरूचि (बेरगवती) को जाहिर किया है ताकि उन के दिलों में अगर यह शक पैदा हो कि इस नबूत के दावे से इसका मतलब कहीं मायामोह (दुनिया की तमन्ना) तो नहीं, तो वह दूर हो जाये।

४९. कह दीजिए, सच आ चुका, झूठ न तो पहली बार उभरा न दोबारा उभर सकेगा ।'

५०. कह दीजिए कि अगर मैं भटक जाऊँ तो मेरे भटकने (का भार) मुझ पर ही है और अगर मैं सच्चे रास्ते पर हूँ तो उस बह्यी के सबब जो मेरा रब मुझ पर करता है, वह बड़ा सुनने वाला बड़ा करीब है ।

५१. और अगर आप (वह समय) देखें जबकि ये काफिर घबराये फिरेंगे, फिर निकल भागने की कोई हालत न होगी, और करीब की जगह से पकड़ लिये जायेंगे ।

५२. और उस वक़्त कहेंगे कि हम इस (कुरआन) पर ईमान लाये, लेकिन इतनी दूर जगह से (मतलूब चीज़) कैसे हाथ आ सकती है P

५३. और इस से पहले तो उन्होंने इस से कुफ़्र किया था और दूर-दूर से बिना देखे ही फेंकते रहे ।

५४. और उनकी इच्छाओं और उन के बीच पर्दा डाल दिया गया जैसेकि इस से पहले भी इन जैसे के साथ किया गया, वे भी (इन्ही की तरह) शक और झुब्हा में (पड़े हुए) थे ।

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبَدِّلُ الْبَاطِلَ وَمَا يُعِيدُ ۙ (49)

قُلْ إِنْ صَلَّيْتُ فَإِنَّكَ أَضِلُّ عَلَى نَفْسِي وَإِنْ اهْتَدَيْتُ فِيمَا يُؤْتِي لِي رَبِّي أِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ۙ (50)

وَلَوْ تَرَى إِذُ فُوعُوا فَلَا قُوَّةَ وَأُخِذُوا مِنْ مَكَانٍ قَرِيبٍ ۙ (51)

وَقَالُوا أَمَّا بِرَبِّهِمْ فَهُمْ الشَّاكِرُونَ ۙ وَمَا يُعِيدُ ۙ (52)

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَيَقْدُونَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ۙ (53)

وَجِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا فُوعِلَ بِأَشْيَاءِ عَلَيْهِمْ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا فِي شَاكٍ قَرِيبٍ ۙ (54)

1 हक से मुराद कुरआन और वातिल (अनूत) से मुराद कुफ़्र (अविश्वास) और शिर्क (अनेकेइवरवाद है) । मतलब है अल्लाह की तरफ से अल्लाह का दीन और उसकी किताब कुरआन आ गयी है, जिससे वातिल (असत्य) तंग और खत्म हो गया है, अब वह सर उठाने लायक नहीं रहा ।

2 شَاكٍ का मतलब पकड़ना है, अब आखिरत में उन्हें ईमान किस तरह मिल सकता है जबकि दुनिया में उस से भागते रहे, मानो आखिरत ईमान के लिए दुनिया के मुकाबले दूर की जगह है, जैसे दूर की चीज़ को पकड़ना मुमकिन नहीं, आखिरत में ईमान लाने का मौक़ा नहीं ।

3 यानी पिछले समुदायों (उम्मतों) का ईमान भी उस वक़्त कुबूल नहीं किया गया जब वह अज्ञाब को देखने के बाद ईमान लाये ।

सूरतु फ़ातिर-३५

سُورَةُ الْفَاتِرِ

सूर: फ़ातिर मक्का में नाज़िल हुई, इस में पैतालीस आयतें और पांच रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. उस अल्लाह के लिए सारी तारीफें हैं जो (सब से पहले) आकाशों और धरती का पैदा करने वाला^१ और दो-दो, तीन-तीन और चार-चार परों वाले फ़रिश्तों को अपना रसूल बनाने वाला है,^२ सृष्टि (मख़लूक) में जो चाहे ज़्यादा करता है^३ अल्लाह (तआला) बेशक हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है।

२. अल्लाह (तआला) जो दया (रहमत) लोगों के लिए खोल दे तो उस का कोई बन्द करने वाला नहीं, और जिस को बन्द कर दे उस के बाद उस को कोई शुरू करने वाला नहीं, और वही ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَكُوتِ
رُسُلًا أَوْبَىٰ أَحْيَاةٍ مَشَىٰ وَثَلُثَ وَرُبِعَ لَا يَزِيدُ
فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا
وَمَا يُمْسِكُ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ مِنْ بَعْدِهِ ②
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

^१ फ़ातिर (फ़ातिर) का मतलब है खोज करने वाला, शुरू में पैदा करने वाला, यह अल्लाह की कुदरत की तरफ इशारा है कि उस ने आकाश और धरती सब से पहले बिना नमूने के बनाये तो उस के लिये दोबारा इन्सानों को पैदा करना कौन सा कठिन है?

^२ मुराद जिब्रील, मीकाईल, इसाफील और इज़्राईल फ़रिश्ते हैं जिनको अल्लाह रसूलों (अम्बिया) की तरफ या कई बहुत अहम कामों के लिए रसूल बनाकर भेजता है, इन में से किसी के दो, किसी के तीन और किसी के चार पंख हैं जिन के जरिये वह धरती पर आते और धरती से आकाश पर जाते हैं।

^३ यानी कुछ फ़रिश्तों के इस से भी ज़्यादा पंख हैं। जैसे कि हदीस में नबी ﷺ ने फ़रमाया मैंने मेराज की रात जिब्रील को उन की हक़ीकी शकल में देखा, उन के छः सौ पर थे। (सहीह बुखारी, तफसीर सूर: नजम, बाबु फकान काब कौसैने औ अदना) कुछ ने इसे आम रखा है, जिस में अखि, मुंह, नाक और रूप सब की खूबसूरती शामिल है।

३. हे लोगो! तुम पर जो उपहार (नेमत) अल्लाह (तआला) ने किये हैं उन्हें याद करो। क्या अल्लाह के सिवाय कोई दूसरा भी खालिक है जो तुम्हें आकाश और धरती से रिजक पहुँचाये? उस के सिवाय कोई माबूद (पूज्य) नहीं तो तुम कहाँ उल्टे जाते हो?

४. और अगर वे आप को झूठलायें तो आप से पहले के (सभी) रसूल भी झूठलाये जा चुके हैं, और सभी काम अल्लाह ही की तरफ लौटाये जाते हैं।

५. हे लोगो! अल्लाह (तआला) का वादा सच्चा है, तुम्हें दुनियावी जिन्दगी धोखे में न डाले, और न धोखेबाज (छली शैतान) तुम्हें गफलत (निरिचन्तता) में मशगूल (लिप्त) करे।^१

६. (याद रखो!) शैतान तुम्हारा दुश्मन है तुम उसे दुश्मन जानो, वह तो अपने गिरोह को केवल इसलिए बुलाता है कि वे सब जहन्नम में जाने वाले हो जायें।

७. जो लोग काफिर हुए उन के लिए सख्त सजा है, और जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये उन के लिए माफ़ी और (अति) अच्छा बदला है।^२

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرِ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ قَاتِلُوا كُفْرَكُمْ ③

وَإِنْ يَكْفُرْ بُوكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ رَسُولٌ مِنْ قَبْلِكَ ذَلِكِ اللَّهُ يَرْجِعُ الْأُمُورَ ④

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّكُمْ الْهَيْوَةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ⑤

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا وَإِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ⑥

الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ هُوَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ⑦

^१ उस के दाव और छल से बचकर रहो, इसलिए कि वह बड़ा धोखेबाज है, और उसका मकसद ही तुम्हें धोखे में रखकर जन्नत से महरूम (बचित) करना है, यही लफ्ज सूर: लुकमान ३३ में भी गुजर चुके हैं।

^२ अल्लाह तआला ने दूसरी जगहों की तरह यहाँ भी ईमान के साथ नेकी के काम की चर्चा करके उस की अहमियत जाहिर किया है ताकि ईमानवाले नेकी के काम से किसी पल बेफिक्र न रहें, क्योंकि बड़े बदले का वादा उस ईमान पर ही है जिस के साथ नेक काम होगा।

८. क्या वह इंसान जिस के लिए उस के बुरे काम सुचोभित (मुजय्यन) कर दिये गये हैं तो वह उन्हें अच्छा समझता है, (क्या वह हिदायत पाने वाले इंसान जैसा है?) (यकीन करो) अल्लाह जिसे चाहे भटका देता है और जिसे चाहे हिदायत देता है, तो आप को उन पर दुखी होकर अपनी जान को तकलीफ में न डालना चाहिये, ये जो कुछ कर रहे हैं उसे बेशक अल्लाह अच्छी तरह जानता है।

९. और अल्लाह ही हवाये चलाता है जो बादलों को उठाती हैं, फिर हम बादलों को सूखी धरती की तरफ ले जाते हैं और उस से उस धरती को उसकी मौत के बाद जिन्दा कर देते हैं। इसी तरह दोबारा जिन्दा होकर उठना (भी) है।^१

१०. जो इंसान इज्जत हासिल करना चाहता हो तो अल्लाह (तआला) के लिये ही सारी इज्जत है। तमाम पाक कलिमे उसी की तरफ चढ़ते हैं, और नेक अमल उन को ऊँचा करता है, और जो लोग बुराई के दाँव-घात में लगे रहते हैं^२ उन के लिए बड़ा सख्त अजाब है और उन का यह पाखण्ड (मकर) नाश हो जायेगा।

أَلَمْ يَرَوْا لَكُمْ لَكُمْ سُوءَ عَمَلِهِمْ قَرَأَهُ حَسَنًا
فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ
فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ
بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٨﴾

وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُبْرِئُ سَحَابًا مَّقْتُلُهُ
إِلَى بَلَدٍ مَيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
كَذَلِكَ النُّشُورُ ﴿٩﴾

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ جَمِيعًا
إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ
يَرْفَعُهُ وَالَّذِينَ يَسْكُرُونَ السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيدٌ ط وَمَكْرُؤُ الْإِنْسَانِ لُمُرٌ ﴿١٠﴾

^१ यानी जिस तरह बारिश करके हम सूखी धरती को हरी कर देते हैं, इसी तरह कयामत के दिन तमाम मुदा इन्सानों को भी हम जिन्दा कर देंगे। हदीस में आता है कि इंसान का पूरा शरीर (जिस्म) गल जाता है सिर्फ रीढ़ की हड्डी का एक छोटा हिस्सा महफूज रहता है, इसी से उसकी दोबारा पैदाईश और तखलीक (रचना) होगी। (सहीह बुखारी)

^२ छिपे तौर से किसी को नुकसान पहुँचाने के तरीके को मक्र कहते हैं, कुफ और शिर्क करना भी मक्र है कि इस तरह से अल्लाह के रास्ते को नुकसान पहुँचाया जाता है, नबी ﷺ के कत्ल की जो योजना (प्लान) मक्का के काफिर करते रहे वह भी मक्र है, पाखंड (दिखावा) भी मक्र है यह लपज आम है, मक्र के सभी रूपों को शामिल है।

११. (लोगो!) अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से फिर वीर्य (मनी) से पैदा किया,^१ फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े (नर-नारी) बना दिया है, नारियों का गर्भ धारण (हामिला) करना और बच्चे का जन्म लेना सभी उस के इल्म में है, और जो लम्बी उम्र वाली उम्र दी जाये और जिस किसी की उम्र घटे वह सब किताब में मौजूद है। अल्लाह (महान) पर यह बात बड़ी आसान है।

१२. और बराबर नहीं दो समुद्र। यह मीठा है प्यास बुझाता है पीने में अच्छा, और वह दूसरा खारी है कडुवा, तुम इन दोनों से ताजा गोश्त खाते हो और वह गहने निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो, और तुम देखते हो कि बड़ी-बड़ी नवकायें जल को चीरने-फाड़ने वाली^२ उन समुद्रों में हैं ताकि तुम उसकी कृपा (फ़ज़ल) की खोज करो और ताकि तुम उसका शुक्रिया अदा करो।

१३. वह रात को दिन में और दिन को रात में दाखिल कराता है, और सूरज और चांद को उसी ने काम में लगा दिया है, हर एक मुकर्रर मुद्दत तक चल रहे हैं। यही है अल्लाह तुम सबका रब, इसी का मुल्क है और जिन्हें तुम उस के सिवाय पुकार रहे हो वह तो खजूर की गुठली के छिलके के भी मालिक नहीं।^३

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ
أَزْوَاجًا وَمَا تَحِبُّونَ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ الرَّأْسُ
بِعِلْبِهِ وَمَا يَعْتَرُونَ مِنْ غَضَبٍ وَلَا يُنْقَضُ مِنْ
عُمْرِهِ إِلَّا فِي كِتَابٍ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝۱۱

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَيْنِ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَائِغٌ
شْرَابُهُ وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ وَمَنْ كُلٌّ تَأْكُلُونَ
لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُونَ حِلْيَةً تَلْبَسُونَهَا وَتَرَى
الْفُكَّ فِيهِ مَوَازِيرَ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَالصَّلَاةُ
تُكْفَرُونَ ۝۱۲

يُؤْتِيكَ الْبَيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤْتِيكَ الْبَيْتَ فِي اللَّيْلِ وَ
سَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُسَمًّى
ذَلِكُمْ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ
مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ۝۱۳

^१ यानी तुम्हारे पिता आदम को मिट्टी से फिर इस के बाद तुम्हारी जाति (वंशधारा) को बाकी रखने के लिए इन्सान की पैदाईश को वीर्य से सम्बन्धित (मुतअल्लिक) कर दिया, जो मर्द की पीठ से निकल कर औरत के गर्भाशय (रिहम) में जाता है।

^२ مواخر (मवाखिर) वह नवकायें जो आते-जाते पानी को चीरते गुजरती हैं। आयत में वयान दूसरे विषयों का बयान सूर: अल-फुरकान में गुजर चुका है।

^३ यानी इतनी हकीर चीज के भी मालिक नहीं, न उसे पैदा करने पर कुदरत रखते हैं। بطूर (क्रितमीर) उस झिल्ली को कहते हैं जो खजूर और उस के बीज के बीच होती है, यह पतला सा छिलका गुठली पर लिफाफा (बेष्टन) की तरह चढ़ा रहता है।

१४. अगर तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनते ही नहीं और अगर (मान लिया कि) सुन भी लें तो कुबूल नहीं करेंगे, बल्कि क्रयामत के दिन तुम्हारे शिर्क का साफ नकार देंगे ।^१ और आप को कोई भी (अल्लाह तआला) जैसा जानकार खबरें न देगा ।

१५. हे लोगो! तुम अल्लाह के भिखारी हो और अल्लाह ही बेनियाज्र तारीफ वाला है ।

१६. अगर वह चाहे तो तुम को वरवाद कर दे और एक नयी मखलूक पैदा कर दे ।

१७. और यह बात अल्लाह (तआला) के लिए कुछ कठिन नहीं ।

१८. और कोई भी बोझ उठाने वाला दूसरों का बोझ नहीं उठायेगा, और अगर कोई भारी बोझ वाला अपना भार उठाने के लिए किसी दूसरे को बुलायेगा तो वह उसमें से कुछ भी न उठा सकेगा चाहे करीबी रिश्तेदार ही हो, तू सिर्फ उन्हीं को आगाह कर सकता है जो विन देखे ही अपने खब से डरते हैं और नमाज्र नियमित रूप से पढ़ते हैं, और जो पाक हो जाये वह अपने ही फायदे के लिए पाक होगा, और लौटना अल्लाह ही की तरफ है ।

१९. और अंधा और आंखों वाला बराबर नहीं ।

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دَعَاءَكُمْ وَلَا يَسْمَعُوا
مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ
بِشْرِكِكُمْ وَلَا يَخِشُوكَ وَمَثَلُ خَيْرٍ ⑭

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ
هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ⑮

إِنْ يَشَأْ يُدْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ⑯
وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ⑰

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ
إِلَىٰ جَمِيلًا لَا يُحْمَلُ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ
إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ
وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ⑱

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ⑲

^१ यानी अगर तुम उन्हें कठिनाईयों में पुकारो तो वह तुम्हारी गुहार सुनते ही नहीं है, क्योंकि वह जड़ है या मनो मिट्टी के नीचे गड़े हुए ।

^२ इस आयत से यह भी मालूम होता है कि अल्लाह के सिवाय जिन की इबादत की जाती है वह सब पत्थर की मूर्तियाँ ही नहीं होंगी बल्कि उन में समझ वाले (फरिश्ते, जिन, शैतान और नेक लोग) भी होंगे, तब ही तो वे इकार करेंगे, और यह भी मालूम हुआ कि उन्हें जरूरत के पुरा करने के लिए पुकारना शिर्क है ।

२०. और न अंधेरे और न रौशनी ।

२१. और न छाया और न धूप ।

२२. और ज़िन्दा व मुर्दा बराबर नहीं हो सकते, और अल्लाह (तआला) जिस को चाहता है सुनवा देता है, और आप उन लोगों को नहीं सुना सकते जो क़ब्रों में हैं ।

२३. आप तो केवल डराने वाले है ।

२४. हम ने ही आप को हक़ देकर खुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है, और कोई उम्मत ऐसी नहीं हुई जिस में कोई डराने वाला न गुजरा हो ।

२५. और अगर ये लोग आप को झूठला दें तो जो लोग इनसे पहले गुजरे हैं उन्होंने भी झूठलाया था, उन के पास भी उन के पैगम्बर मौजिजे, सहीफ़े और वाजेह किताबें लेकर आये थे ।

२६. फिर मैंने उन काफ़िरों को पकड़ लिया तो मेरा अज़ाब कैसा हुआ ।

२७. क्या आप ने इस बात की तरफ़ ध्यान नहीं दिया कि अल्लाह (तआला) ने आकाश से पानी उतारा फिर हम ने उस के जरिये कई रंगों के फल निकाले,^१ और पहाड़ों के कई हिस्से हैं,

وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ﴿٢٠﴾

وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ﴿٢١﴾

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَالْأَمْوَاتُ إِنَّ اللَّهَ يُسْمِعُ
مَنْ يَشَاءُ وَمَا أَنْتَ بِسَمِيعٍ مَّنْ فِي الْقُبُورِ ﴿٢٢﴾

إِنَّ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ ﴿٢٣﴾

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَإِن مِّنْ أُمَّةٍ
إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ﴿٢٤﴾

وَأَن يُكذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ
جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتَابِ
الْمُنِيرِ ﴿٢٥﴾

ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ﴿٢٦﴾

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا
بِهِ ثَمَرَاتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ
بَيْضٌ وَحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَعَرَاءٌ يَبَسٌ سَودٌ ﴿٢٧﴾

^१ यानी जिस तरह समाधियों (कब्रों) में मुर्दा लोगों को कोई बात सुनाई नहीं जा सकती, इसी तरह जिन के दिलों को कुफ़्र ने मुर्दा कर दिया है, हे रसूल! तू उन्हें हक़ की बात नहीं सुना सकता । मतलब यह हुआ कि जिस तरह मरने और गड़ने के बाद मुर्दा कोई फ़ायेदा नहीं उठा सकता, इसी तरह काफ़िर और मुशरिक जिन के नसीब में वदनसीबी लिखी है, दावत और सच बात से उन्हें फ़ायेदा नहीं होता ।

^२ यानी जिस तरह ईमानदार और काफ़िर, नेक लोग और बुरे लोग दोनों तरह के लोग हैं, इसी तरह दूसरे मख़लूक में भी क्रिस्म और नौईयत है । मिसाल के तौर पर फलों के रंग भी कई हैं, मज़ा और खुश्बू में भी आपस में मुख़तलिफ़, यहाँ तक कि एक ही फल के भी कई-कई रंग और मजे हैं, जैसे खज़ूर है, अंगूर है, सेब है और दूसरे कुछ फल हैं ।

सफेद और लाल कि उन के भी रंग कई हैं और बहुत गहरे काले।

२८. और इसी तरह इंसानों और जानवरों और चौपायों में भी कुछ ऐसे हैं कि उन के रंग अलग-अलग हैं, अल्लाह से उस के वही बंदे डरते हैं जो इल्म रखते हैं। हकीकत (वास्तव) में अल्लाह (तआला) बहुत बड़ा माफ करने वाला है।

२९. जो लोग अल्लाह की किताब का पाठ (तिलावत) करते हैं और नमाज नियमित रूप (पाबन्दी) से पढ़ते हैं, और जो कुछ हम ने उन्हें अता (प्रदान) किया है उस में से छिपे और खुले तौर से खर्च करते हैं, वे ऐसे कारोबार के उम्मीदवार हैं जो कभी भी नुकसान (हानि) में न होगा।

३०. ताकि उन के बदले पूरी तरह से उन को दे और उन को अपनी कृपा (फज़ल) से और ज़्यादा अता करे। बेशक वह बड़ा माफ करने वाला क़द्रदान है।

३१. और यह किताब जो हम ने आप के पास वहयी (प्रकाशना) के द्वारा (जरिये) भेजी है यह पूरी तरह से सच है जो अपने से पहले की किताबों की भी पुष्टि (तसदीक) करती है। बेशक अल्लाह (तआला) अपने बंदों की पूरी जानकारी रखने वाला अच्छी तरह देखने वाला है।

وَمِنَ النَّاسِ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ
كَذَلِكَ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ
إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ ﴿٢٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ
وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ
تِجَارَةً كُن تَبُورٌ ﴿٢٩﴾

لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُم مِّن فَضْلِهِ إِنَّهُ
غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٠﴾

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ
مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَإِن تِلْكَ إِلَّا
لِتُحْيِيَ بَعْضُهُمْ ﴿٣١﴾

१ नमाज के क़ायम करने से मुराद होता है नमाज उस ढंग से पढ़ना जो मतलूब (उसका मक़सद) है, यानी मुकर्रर (निर्धारित) वक़्त और उसके वाजिबात, अरकान, ख़ुशूअ-ख़ुशूअ के साथ पढ़ना।

३२. फिर (इस) किताब ' का वारिस हम ने उन लोगों को बनाया जिन को हम ने अपने बन्दों में से चुन लिया। फिर कुछ तो आ'नी जानों पर ज़ुल्म करने वाले हैं^२ और कुछ ग़ैसत दर्जे के हैं और कुछ उन में से अल्लाह ने तौफ़ीक से नेकी में तरक्की करते चले जाते हैं, यह बड़ी कृपा (फ़ज़ल) है।

३३. हमेशा रहने के वे बाग हैं जिन में वे लोग प्रवेश (दाखिल) करेंगे, उस में वे सोने के कंगन और मोती पहनाये जायेंगे और कपड़े वहाँ उन के रेशम के होंगे।^३

३४. और कहेंगे कि अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है जिस ने हम से ग्राम दूर किया। बेशक हमारा रब बड़ा माफ करने वाला और क्रदर करने वाला है।

३५. जिसने हमें अपनी कृपा (फ़ज़ल) से हमेशा रहने वाली जगह में ला उतारा, जहाँ न हम को कोई कठिनाई पहुँचेगी और न हम को कोई धकान पहुँचेगी।

३६. और जो लोग काफिर हैं उन के लिए नरक की आग है, न तो उनकी मौत ही आयेगी कि मर ही जायें और न नरक की सजा ही उन से कम की जायेगी। हम हर काफिर को ऐसी ही

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا
فِيهِمْ كَلِمَةٌ نَظِيهَةٌ ۖ وَفِيهِمْ مَقْصُودٌ ۖ وَفِيهِمْ
سَلَامٌ بِالْحَيَرَاتِ بِإِذْنِ اللَّهِ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ
الْكَبِيرُ ﴿٣٢﴾

جَعَلْتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلُونَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ
مِنْ ذَهَبٍ وَأُكُلُوا ۖ وَيَسَاهَمُونَ فِيهَا حَرِيرًا ﴿٣٣﴾

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ ۗ
إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ﴿٣٤﴾

الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمَقَامَةِ مِنْ كَرْهٍ ۖ لَا تَسْتَأْذِنُ
فِيهَا نَسَبٌ وَلَا تَسْتَأْذِنُ فِيهَا النَّوْبُ ﴿٣٥﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۖ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ
فِيهَا نَوَاتُورٌ وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا ۗ كَذَٰلِكَ
نَجْزِي كُلَّ الْفَٰعِلِ ﴿٣٦﴾

^१ किताब से मुराद पाक कुरआन और चुने हुए बन्दों से मोहम्मद ﷺ की उम्मत है, यानी हम ने इस कुरआन का वारिस मोहम्मद ﷺ के पैरोकारों को बनाया है।

^२ मोहम्मद ﷺ के पैरोकारों के तीन किस्में बताई गई हैं, यह पहली किस्म है, जिस से मुराद ऐसे लोग हैं जो कुछ फ़राईज में सुस्ती और कुछ हराम काम कर लेते हैं, या कुछ के यहाँ मुराद वे हैं जो छोटी-छोटी गलतियाँ कर जाते हैं, उन्हें अपने ऊपर ज़ुल्म करने वाला इसलिए कहा कि वह अपने कुछ सुस्ती के सबब खुद को उस ऊँचे पद से महरूम कर लेंगे जो बाकी दो किस्मों को हासिल होंगे।

^३ हदीस में आता है कि रेशम और दीवाज दुनिया में न पहनो, इसलिए कि जो इसे दुनिया में पहनेगा वह उसे आखिरत (परलोक) में नहीं पहनेगा। सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम, किताबुल लियास।

यातना देते हैं।

३७. और वे लोग उस में चिल्लायेंगे कि हमारे रब! हम को निकाल ले हम अच्छे अमल करेंगे उन आमाल के अलावा जो किया करते थे। (अल्लाह तआला कहेगा) कि क्या हम ने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी थी कि जिस को समझना होता! वह समझ सकता और तुम्हारे पास डराने वाला भी पहुँचा था? तो मजा चखो कि (ऐसे) जालिमों का कोई मदद करने वाला नहीं है।

३८. बेशक अल्लाह (तआला) जानने वाला है आकाशों और धरती की छिपी चीजों का, बेशक वही जानने वाला है सीनों की बातों का।

३९. वही ऐसा है जिस ने तुम्हें धरती पर बसाया, तो जो इंसान कुफ्र (इंकार) करेगा उस के कुफ्र का बोझ उसी पर पड़ेगा, और काफिरों के लिए उन का कुफ्र उन के रब के करीब क्रोध ही बढ़ने की वजह बनता है, और काफिरों के लिए उनका कुफ्र नुकसान ही को बढ़ाने का सबब होता है।

وَهُمْ يَصْطَرِحُونَ فِيهَا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۖ أَوْ كُمْ لَتَعْتَذِرُنَّ مَا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَاءَ كُرْ التَّيْدِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ نَصِيرٍ ﴿٣٧﴾

إِنَّ اللَّهَ عَلِيمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٣٨﴾

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ ۖ فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ۖ وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا ﴿٣٩﴾

1 इस से मुराद कितनी उम्र है? भाष्यका ! (मुफस्सिरों) ने अलग-अलग उम्र का वयान किया है। कुछ ने कुछ हदीसों से दलील देते हुए कहा है कि ६० साल की उम्र मुराद है। (इब्ने कसीर) लेकिन हमारे ख्याल से उम्र का तयान सही नहीं है, इसलिए कि उम्र कई होती है, कोई जवानी में, कोई अधेड़ उम्र में और को: बुढ़ापे में मरता है, फिर यह समय भी गुजरे पल की तरह कम नहीं होते बल्कि हर मुद्दत ख। तौर से लम्बी होती है। मिसाल के तौर पर जवानी का जमाना व्यस्क (बालिग) होने से अधेड़ जाने तक और अधेड़ होने का समय बुढ़ापे तक और बुढ़ापे का मौत तक रहता है। कि... सोच-विचार, नसीहत हासिल करने और प्रभावित (मुतास्सिर) होने के लिए कुछ साल, किसी को उस से ज्यादा और किसी को इस से भी ज्यादा वक़्त मिलता है, और सब से यह स... करना सही होगा कि हम ने तुझे इतनी उम्र दी फिर तूने सच (हक) को समझने और उसे... करने की कोशिश क्यों नहीं की?

2 इस से मुराद आखिरी रसूल मोहम्मद

५०. (आप) कहिए कि तुम अपने (मुकर्रर किये हुए) साझीदारों का हाल तो बताओ जिन को तुम अल्लाह के सिवाय पुकारा करते हो, यानी मुझ को यह बताओ कि उन्होंने धरती का कौन-सा (हिस्सा) बनाया है या उनका आकाश में कुछ साझा है, या हम ने उन को कोई किताब दी है कि यह उस के सबूत पर मजबूत हों, बल्कि यह ज़ालिम एक-दूसरे से केवल धोखे की बातों का वादा करते आते हैं।

५१. यकीनी बात है कि अल्लाह (तआला) आकाशों और धरती को धामे हुए है कि वह टल न जायें और अगर वह टल जायें तो फिर अल्लाह के अलावा कोई उनको धाम भी नहीं सकता। वह बड़ा सहनशील माफ़ करने वाला है।

५२. और इन काफ़िरों ने बड़ी पक्की कसम खायी थी कि अगर उन के पास कोई डराने वाला आया तो वह हर उम्मत से ज्यादा हिदायत हासिल करने वाले बनेंगे। फिर जब उन के पास एक पैगम्बर आ पहुँचा तो उनकी नफरत में ही प्रगति (तरक्की) हुई।

५३. दुनिया में अपने को बड़ा समझने के कारण और उन के बुरे प्रयत्नों (तदवीरों) के कारण, और बुरी तदवीर करने वालों की सज़ा उन तदवीर करने वालों को ही भुगतना पर ना है, तो क्या ये उसी सुन्नत के इंतज़ार में हैं तो पहले के लोगों के साथ होती रही है, तो ५ प

قُلْ اَرَايَكُمْ شُرَكَاءَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اُرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ
فِي السَّمٰوٰتِ ؕ اَمْ اَنْزَلْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلَىٰ بَيِّنٰتٍ
ۙ بَلْ اِنْ يُّعِدُّ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا
اِلَّا غُرُوْرًا ﴿٤٠﴾

اِنَّ اللّٰهَ يَسِيْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنْ تَرُوْا ؕ
وَكَيْفَ تَاْتٰنِ اِنْ اَسْأَلْتَهُمَا مِنْ شَيْءٍ قَبْلَ
اِذْ كَانَ حٰلِيْمًا غَفُوْرًا ﴿٤١﴾

وَاسْأَلُوْا بِاللّٰهِ جِهَدًا اِيْمَانِهِمْ لِيْنِ جَاءَهُمْ
نَذِيْرٌ لِّيَكُوْنُوْنَ اِهْدٰى مِنْ اِضْطِرّٰى الْاُمَمِ ؕ فَلَمَّا
جَاءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نِفُوْرًا ﴿٤٢﴾

اِسْتِكْبَارًا فِى الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّئِْ ۙ وَلَا يَجِيْبُ
السَّكْرَ السَّئِْ ۙ اِلَّا بِاَهْلِيْهِ فَمَهْلٌ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سَبْتًا
الْاَكْثَرِيْنَ ۙ فَلَنْ تَجِدَ لِسَبْتِ اللّٰهِ تَبْيِيْلًا ؕ وَلَنْ تَجِدَ
لِسَبْتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ﴿٤٣﴾

1 इस में अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि मोह-द के नबी बनाकर भेजे जाने से पहले यह मूर्तियों के पुजारी कसमें खा खाकर कह रहे थे : अगर हमारी तरफ कोई नबी आया तो हम उसका स्वागत (इस्तक़बाल) करेंगे और उस पर मान लाने में एक नमूना (आदर्श) पेश करेंगे। यह विषय दूसरी जगहों पर भी बयान है, जैसे सूर अंआम-१५६, १५७ और सूर: अस्ताफ़ात-१६७-१७०।

अल्लाह की रीति में कभी बदलाव नहीं पायेंगे, और आप अल्लाह की रीति को कभी तवदील होती हुई न पायेंगे।

४४. क्या ये लोग धरती में चले-फिरे नहीं जिस में वह देखते-भालते कि जो लोग उन से पहले गुजरे हैं उनका नतीजा क्या हुआ, यद्यपि (अगरचे) ताकत में वे लोग इन से ज्यादा थे, और अल्लाह ऐसा नहीं है कि कोई चीज उसे हरा दे न आकाशों में और न धरती में, वह बड़ा इल्म (ज्ञान) वाला कुदरत वाला है।

४५. और अगर अल्लाह (तआला) लोगों को उन के अमल की वजह से तुरन्त पकड़ने लगता तो सारी धरती पर एक जान भी न छोड़ता,^१ लेकिन अल्लाह (तआला) उनको एक नियमित (महदद) समय तक मौका दे रहा है, तो जब उनका समय आ पहुँचेगा तो अल्लाह (तआला) अपने बन्दों को खुद देख लेगा।

सुरत यासीन-३६

सूर: यासीन* मक्का में ताजिल हुई, इस में तिरासी आयतें और पाँच रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

أَوَلَمْ نَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكُنَّا لَهُمْ مُنْجِبِينَ ۗ وَمَا
كَانَ اللَّهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي
الْأَرْضِ ۗ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ﴿٤٤﴾

وَلَوْ يَرَىٰ إِذْ أَخَذَ اللَّهُ النَّاسَ بِأَسْبِرُوا مَا تَرَىٰ عَلَىٰ
ظُهُرِهِمْ دَابِئَةً وَلَئِنْ يَرَوْهُمْ إِلَىٰ آجَلٍ
مُسْتَقِيمٍ ۖ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ
بَصِيرًا ﴿٤٥﴾

سُورَةُ الْيَسِينِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

^१ इन्सानों को तो उन के पापों के बदले और जानवरों को इन्सानों के साथ रहने के सबब, या मतलब यह है कि सारी दुनिया वालों को नाश कर देता, इन्सानों को भी और जिन जानवरों और रोजी के वे मालिक हैं, उनको भी, या मतलब यह है कि आकाश से वर्षा का क्रम (सिलसिला) बन्द कर देता जिससे धरती पर चलने वाले सभी जानदार मर जाते।

* सूर: यासीन की विशेषता (फजीलत) में बहुत सी रवायतें प्रसिद्ध (मशहूर) हैं। इन्हीं में जैसे, यह कुरआन का दिल है, इसे उस पर पढ़ो जो मौत के करीब हो, इत्यादि (वगैरह)। लेकिन बयान क्रम (सनद) के आधार पर कोई सही नहीं, कुछ पूरी तरह वनावटी है या कुछ कमजोर है। "कुरआन के दिल" वाली रिवायत (बयान) को हदीस के आलिम अलबानी ने बनावटी (गढ़ी हुई) कहा है। (अद-दईफा हदीस नम्बर १६९)

१. यासीन ।^१

يَس ①

२. कसम है हिक्मत वाले (और मजबूत) कुरआन की ।

وَالْقُرْآنِ الْعَکْبِیْرِ ②

३. कि यकीनन आप पैगम्बरों में से हैं ।^२

إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِیْنَ ③

४. सीधे रास्ते पर हैं ।

عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِیْمٍ ④

५. (यह कुरआन अल्लाह) जबरदस्त बड़े रहम करने वाले की तरफ से नाज़िल किया गया है ।

تَنْزِیْلَ الْغَزِیْرِ الرَّحِیْمِ ⑤

६. ताकि आप ऐसे लोगों को आगाह करें जिन के बाप-दादा नहीं डराये गये थे, तो (उसी सबब से) ये लोग गाफिल हैं ।

لِيُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ⑥

७. उन में से ज्यादातर लोगों पर (यह) बात साबित हो चुकी है, अतः ये लोग ईमान नहीं लायेंगे ।^३

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَىٰ أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑦

^१ कुछ ने इसका मतलब हे इंसान या हे मानव किया है, कुछ ने इसे नबी ﷺ का अच्छे नाम और कुछ ने उसे अल्लाह के अच्छे नामों में से बताया है, लेकिन यह सभी क़ौल बिना दलील के (अप्रमाणित) हैं । यह भी उन हरूफे मुकत्ताआत (विभिन्न अक्षरों) में ही से है जिसका मतलब और माने अल्लाह के सिवाय कोई नहीं जानता ।

^२ मुश्रेकीन (मूर्तिपूजक) नबी ﷺ की रिसालत (आप के रसूल होने) का इंकार करते थे और कहते थे कि ﴿لَنْتُرْسَلُ﴾ (अर्रअद-४३) «तू तो अल्लाह की तरफ से रसूल ही नहीं है» अल्लाह ने उन के जवाब में पाक कुरआन की कसम लेकर फरमाया : «आप वेशक उस के पैगम्बरों में से हैं ।» इस में आप ﷺ की इज्जत और अजमत का इजहार है, यह भी आप के सिपतों और फज़ीलतों में से है कि अल्लाह ने आप ﷺ की रिसालत को साबित करने के लिए कसम खाई ﷻ।

^३ जैसे अबू जेहल, अबू लहब, उतबा और शैबा बगैरह । वात साबित होने का मतलब अल्लाह तआला का यह वादा है कि «मैं नरक को जिन्नों और इत्तानों से भर दूंगा ।» (अलिफ़ • लाम • मीम • अस्सज्दा-१३) शैतान को भी सम्बोधित (मुख़ातिब) करते हुए अल्लाह ने फरमाया था : «मैं नरक को तुझ से और तेरे अनुगामियों (भानने वालों) से भर दूंगा ।» (साद-८४) यानी इन लोगों ने शैतान के पीछे लगकर खुद को नरक का पात्र बना लिया, अल्लाह ने तो उन्हें इच्छा का अधिकार (हक्क) और आज़ादी दी थी, उन्होंने इस का ग़लत इस्तेमाल किया और यूँ नरक का ईंधन बन गये यह नहीं कि अल्लाह ने बलपूर्वक उन को ईमान से वंचित (महरूम) रखा क्योंकि मजबूर करने की हालत में तो वह सज़ा के हक्कदार ही न हो पाते ।

८. हम ने उनकी गर्दनो में तौक डाल दिये हैं फिर वह ठुड्डियों तक हैं, जिससे उन के सिर ऊपर की तरफ उलट गये हैं।

९. और हम ने एक आड़ उन के सामने कर दी और एक आड़ उन के पीछे कर दी, जिस से हमने उनको ढाँक दिया तो वे नहीं देख सकते।

१०. और उन के बारे में आप का डराना या न डराना दोनों बराबर हैं, ये ईमान नहीं लायेंगे।

११. बस आप तो केवल ऐसे इंसान को डरा सकते हैं जो नसीहत पर चले और रहमान (अल्लाह) से विन देखे डरे, तो आप उसको माफ और अच्छे प्रतिदान (अज़्र) की खुशखबरी सुना दीजिए।

१२. बेशक हम मूर्खों को जिन्दा करेंगे,^१ और हम लिखते जाते हैं वे अमल भी जिनको लोग आगे भेजते हैं^२ और उन के वह अमल भी जिन को पीछे छोड़ जाते हैं, और हर बात को हमने एक खुली किताब में संकलन (जव्त) कर रखा है।^३

१३. और आप उन के सामने एक मिसाल (यानी एक) बस्ती वालों की कहानी (उस समय की) बयान कीजिए, जबकि उस बस्ती में कई रसूल आये।

إِنَّا جَعَلْنَا فِي أَعْنَاقِهِمْ أَغْلًا لَّهُمْ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُقْمِقُونَ ﴿٨﴾

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿٩﴾

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنََ الْغَيْبِ، فَبَشْرَةٌ لَّهُمْ بَغْفِرٌ وَأَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١١﴾

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَرَهُمْ وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿١٢﴾

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ الَّتِي رَأَوْا جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿١٣﴾

^१ जो अपने करतूतों की बजह से गुमराही के उस जगह पर पहुँच जायें, उनको हाशियार करना देकार होता है।

^२ यानी क़यामत के दिन। यहाँ मूर्खों को जिन्दा करने की चर्चा से यह इशारा करना मक़सद है कि अल्लाह तआला: काफ़िरों में जिस का दिल चाहता है जिन्दा कर देता है जो कफ़्र और गुमराह होने के सबब मूर्दा हो चुके होते हैं, फिर वह हिदायत और ईमान को अपना लेते हैं।

^३ مَفْتُورًا से वह अमल मुराद है जो इंसान अपने जीवन में करता है और जَمْع से वह अमल जिन के अमली नमूने (अच्छे व बुरे) वह दुनिया में छोड़ जाता है और उस की मौत के बाद उस की पैरवी में लोग वे अमल करते हैं।

^४ इस से मुराद लौहे महफूज़ (सुरक्षित पुस्तक) है और कुछ ने आमालनामा मुराद लिया है।

१४. जबकि हम ने उन के पास दो को भेजा, तो उन लोगों ने (पहले) उन दोनों को झूठलाया फिर हम ने तीसरे से समर्थन (ताईद) दिया तो उन तीनों ने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गये हैं।¹

१५. उन लोगों ने कहा कि तुम तो हमारी तरह साधारण (आम) इंसान हो, और रहमान (दयालु) ने कोई चीज नाज़िल नहीं की, तुम तो केवल झूठ बोलते हो।

१६. उन रसूलों ने कहा कि हमारा रब जानता है कि बेशक हम तुम्हारी तरफ भेजे गये हैं।

१७. और हमारा फ़र्ज तो केवल वाजेह तौर से पहुँचा देना है।

१८. उन्होंने कहा कि हम तो तुम्हें अशुभ समझते हैं, अगर तुम न रूके तो हम तुम्हें पत्थरों से मार कर तुम्हारा काम ख़त्म कर देंगे और तुम को हमारी तरफ से कड़ा अजाब पहुँचेगा।

१९. उन (रसूलों) ने कहा कि तुम्हारी नहूसत तो तुम्हारे साथ ही लगी हुई है, क्या उसको (अशुभ समझते हो) कि तुम को शिक्षा दी जाये, बल्कि तुम तो हद से तजावुज़ करने वाले हो।

२०. और एक इंसान उस नगर के आखिरी छोर से दौड़ता हुआ आया, कहने लगा कि हे मेरी कौम (समुदाय) के लोगो! इन रसूलों (संदिष्टाओं) के रास्ते पर चलो।²

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُمْ مُّرْسَلُونَ ﴿١٤﴾

قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا كَذِبُونَ ﴿١٥﴾

قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ﴿١٦﴾

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلِّغُ الْمُبِينُ ﴿١٧﴾

قَالُوا إِنَّا تَطَّيَّرْنَا بِكُمْ لَئِن لَّمْ تَنْتَهُوا لَنَرْجِمَنَّكُمْ وَلِنَنْسِتْكُمْ وَمِنَّا عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٨﴾

قَالُوا طَائِفُكُمْ مَعَكُمْ وَإِن يُدْرِكْتُمْ لَبَلَّ أَنْتُمْ لَكُمْ مُسْرِفُونَ ﴿١٩﴾

وَجَاءَ مِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَعْجُلُ يَأْتِيهِمْ قَالِ يَعْزُورِ الَّذِينَ أُرْسِلُوا إِلَيْهِمْ ﴿٢٠﴾

¹ यह तीन रसूल कौन थे? भाष्यकारों (मुफ़सिरो) ने उन के कई नाम बयान किये हैं, लेकिन नाम सहीह सनद से साबित नहीं है। कुछ मुफ़सिरो का ख़याल है कि यह पैगम्बर इंसान के भेजे हुए दूत थे जो उन्होंने अल्लाह के हुक्म से एक वस्ती में दीन की दावत-तबलीग के लिए भेजे थे, वस्ती का नाम अताकिया था।

² यह इंसान मुसलमान था, जब उसे पता चला कि जाति पैगम्बरों की दावत को नहीं अपना रही है तो उस ने आकर रसूलों का पक्ष लिया और उन की इत्तेबा पर प्रोत्साहित (आमादा) किया।

२१. ऐसे लोगों के रास्ते पर चलो जो तुम से कोई बदला नहीं मांगते और वे सच्चे रास्ते पर हैं।

أَتَّبِعُوا مَن لَّا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٢١﴾

२२. और मुझे क्या हो गया है कि मैं उसकी इबादत न करूँ, जिस ने मुझे पैदा किया और तुम सब उसी की तरफ लौटाये जाओगे।

وَمَا لِي لَّا أَعْبُدَ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ
أَرْجِعُونَ ﴿٢٢﴾

२३. क्या मैं उसे छोड़ ऐसों को मावूद बना लूँ कि अगर (अल्लाह) दयालु (रहमान) मुझे कोई नुकसान पहुँचाना चाहे, तो उनकी सिफारिश मुझे कुछ भी फायदेदा न पहुँचा सके और न वह मुझे बचा सके।

أَأَتَّخِذُ مِنْ دُونِهِ آلِهَةً إِن يُرِيدِ الْرَّحْمَنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِي عَنْهُمْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يَقْتُلُونَ ﴿٢٣﴾

२४. फिर तो मैं निश्चय (यकीनी) खुली गुमराही में हूँ।

رَبِّي إِذْ أَتَيْتُ صَلْبًا مَّيْمِينًا ﴿٢٤﴾

२५. मेरी सुनो! मैं तो (साफ दिल से) तुम सब के रब पर ईमान ला चुका।

إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمِعُونِي ﴿٢٥﴾

२६. (उससे) कहा गया कि जन्नत में चला जा, कहने लगा, काश कि मेरी जाति को भी ज्ञान (इल्म) हो जाता।

فَإِنِ ادْخُلِ الْجَنَّةَ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مِنَ الْمَكْرُمِينَ ﴿٢٦﴾

२७. कि मुझे मेरे रब ने माफ कर दिया और मुझे इज्जतदार इंसानों में से कर दिया।

بِمَا عَفَرْتُ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٧﴾

1 यह उन झूठे मावूदों की मजबूरी का स्पष्टीकरण (वजाहत) है, जिनकी पूजा उसकी जाति करती थी और शिर्क की इस गुमराही से निकालने के लिए रसूल उनकी तरफ भेजे गये थे। "न बचा सके" का मतलब है कि अगर अल्लाह मुझे नुकसान वाला करना चाहे तो यह बचा नहीं सकते।

2 यानी जिस ईमान और तौहीद की वजह से मुझे रब ने माफ कर दिया, काश मेरी जाति इस बात को जान ले ताकि वे भी ईमान और तौहीद (अद्वैतवाद) को अपनाकर अल्लाह की क्षमा और उसकी नेमतों के पात्र (मुसतहिक) हो जाये। इस तरह वह मरने के बाद भी अपनी जाति का खैरख्वाह रहा। एक सच्चे मोमिन को ऐसा ही होना चाहिए कि वह हर पल लोगों का भला करे, उनको सही हिदायत दे गुमराह न करे, लोग उसे जो चाहें कहें और जैसा व्यवहार (सुलूक) चाहें करें यहाँ तक कि उसे मार डालें।

२८. और उस के बाद हम ने उसकी जाति पर आकाश से कोई सेना नहीं नाज़िल की, और न इस तरह हम नाज़िल करते हैं।

२९. वह तो केवल एक जोरदार चीख थी कि अचानक वह सब के सब बुझ-बुझा गये।

३०. (ऐसे) बन्दों पर अफ़सोस! कभी भी कोई रसूल उन के पास नहीं आया जिसका मजाक उन्होंने न उड़ाया हो।

३१. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उन से पहले बहुत से समुदायों को हम ने हलाक कर दिया कि वे उनकी तरफ^१ नहीं लौटेंगे।

३२. और नहीं है कोई समूह लेकिन यह कि वह जमा होकर हमारे सामने पेश किया जायेगा।

३३. और उन के लिए एक निशानी मुदा (सूखी) धरती है जिसको हम ने ज़िन्दा कर दिया और उस से अन्न (दाना) निकाल दिया जिस में से वे खाते हैं।

३४. और हम ने उस में खजूरों के और अंगूरों के वागात पैदा कर दिये,^२ और जिन में हम ने चरमे भी जारी कर दिये हैं।

وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَىٰ قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ
مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ﴿۲۸﴾

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ
خُمُودٌ ﴿۲۹﴾

يَعْسُرَ عَلَى الْعِبَادِ مَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَسُولٍ
إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿۳۰﴾

الَّذِينَ بَرَأنا لَهُم مِّنَّا قَبْلَهُمْ مِنَ الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَهُمْ
لَا يَرْجِعُونَ ﴿۳۱﴾

وَلَنْ كُلُّ قَوْمٍ لِّمَنَّا جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿۳۲﴾

وَالَّذِي لَهُمُ الْأَرْضُ الْيَتِيمَةَ ۖ أَحْيَيْناها وَأَخْرَجنا
مِنها حَبًّا قَمِيحًا فَمِنْهُ يَأْكُفُونَ ﴿۳۳﴾

وَجَعَلنا فِيها جَبَّيْنًا مِّن لَّجَلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجْرَنا
فِيها مِنَ الْعَيْوُنِ ﴿۳۴﴾

^१ इस में मक्का के रहने वालों के लिये चेतावनी (तवीह) है कि रिसालत को झुठलाने की बजह से पिछली जातियों की तबाही हुई, यह भी तबाह हो सकते हैं।

^२ यानी बेजान धरती को ज़िन्दा करके हम ने खाने के लिये केवल अन्न ही नहीं उगाये बल्कि मजा के लिए कई तरह के फल भी ज़्यादा तादाद से पैदा करते हैं, यहाँ सिर्फ दो फलों की चर्चा इसलिए की गई कि यह बहुत फ़ायदेमंद हैं और अरबों को रूचिकर (मरऊब) भी, और इनकी उपज (पैदाईश) भी अरब में ज़्यादा है, फिर अन्न की चर्चा पहले की, क्योंकि उसकी उपज भी ज़्यादा है और खाद्यान्न (गिजा) होने की बजह से उसका फ़ायदा भी मुत्तफ़क़। जब तक इन्सान रोटी, चावल वगैरा खाद्यान्न से अपना पेट नहीं भरता सिर्फ फल से उसकी खाने की ज़रूरत पूरी नहीं होती।

३५. ताकि (लोग) इस के फल खायें,^१ और उन के हाथों ने उसको नहीं बनाया। फिर क्यों शुक्रिया अदा नहीं करते।

لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ
أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿۳۵﴾

३६. वह पाक जात है जिस ने हर चीज के जोड़े पैदा किये, चाहे वह धरती से उगायी हुई चीजें हों, चाहे खुद उनकी अपनी जाति (वज्रद) हो, चाहे वे (चीजें) हों जिन्हें ये जानते भी नहीं।^२

سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَمَا تَشَاءُ الْأَرْضُ
وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمَا لَا يَعْلَمُونَ ﴿۳۶﴾

३७. और उन के लिए एक निशानी रात है, जिस से हम दिन को खींच देते हैं तो अचानक वे अंधेरे में रह जाते हैं।

وَأَيَّةٌ لَهُمْ اللَّيْلُ لَا تَسْلُخُ مِنْهُ النَّهَارُ فَإِذَا
هُمْ قَظْمِيُونَ ﴿۳۷﴾

३८. और सूरज के लिए जो मुकर्रर (निर्धारित) रास्ते है वह उसी पर चलता रहता है।^३ यह है मुकर्रर किया हुआ जबरदस्त आलिम (जानी) (अल्लाह तआला) का।

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا ذَلِكَ تَقْدِيرُ
الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿۳۸﴾

३९. और चांद की हम ने मंजिलें मुकर्रर कर रखी है,^४ यहाँ तक कि वह घूम फिर कर पुरानी डाली की तरह हो जाती है।

وَالْقَمَرَ قَدَرْنَا مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ كَالْعُرْجُونِ
الْقَدِيمِ ﴿۳۹﴾

^१ यानी कुछ जगह पर चश्मा (स्रोत) भी जारी करते हैं जिस के पानी से पैदा होने वाले फल लोग खायें।

^२ यानी इन्सानों के बराबर धरती की हर पैदावार में हम ने नर-मादा दोनों बनाया है, इन के सिवाय आकाशों में और धरती की गहराईयों में भी जो चीजें तुम से छिपी हैं, जिनका इल्म तुम नहीं रखते, उन में भी जोड़ा (नर-मादा) की यह व्यवस्था (एहतेमाम) हम ने रखी है। इसलिए सभी मखलूक जोड़ा-जोड़ा है, वनस्पति (नवातात) में भी नर-मादे की व्यवस्था है यहाँ तक कि दुनियावी जीवन परलोक (आखिरत) के जीवन के लिये जोड़ा की तरह है और यह आखिरत के जीवन के लिए एक अकली दलील भी है, केवल एक अल्लाह है जो मखलूक की इस विवेचता (खुसूसियत) और दूसरी सभी कभियों से पाक है, वह अकेला है जोड़ा नहीं।

^३ यानी अपनी धुरी (मदार) पर चलता रहता है जो अल्लाह ने उसके लिए निर्धारित (मुकर्रर) किया है, इसी से अपनी यात्रा शुरू करता और वहीं खत्म करता है, इससे इधर-उधर नहीं होता कि किसी ग्रह से टकरा जाये।

^४ चांद की २८ मंजिलें हैं, नित्य दिन एक मंजिल पार करता है, फिर दो रात गायब रहकर तीसरी रात निकलता है।

४०. न सूरज के वश में है कि चांद को पकड़े और न रात दिन से आगे बढ़ जाने वाली है, और सब के सब आकाश में तैरते फिरते हैं।

४१. और उन के लिए एक निशानी (यह भी) है कि हम ने उनकी औलाद को भरी हुई नाव में सवार किया।

४२. और इन के लिए उसी जैसी दूसरी चीजें पैदा की जिन पर ये सवार होते हैं।

४३. और अगर हम चाहते तो उन्हें डुबा देते फिर न कोई उनका मदद करने वाला होता और न बचाये जाते।

४४. लेकिन हम अपनी तरफ से दया (रहमत) करते हैं और एक मुद्दत तक के लिए उन्हें फ्रायेदा दे रहे हैं।

४५. और उन से जब (कभी) कहा जाता है कि अगले-पिछले (पापों) से बचो ताकि तुम पर दया (रहम) की जाये।

४६. और उन के पास उन के रब की तरफ से कोई निशानी ऐसी नहीं आती जिस से ये मुंह न फेरते हों।

४७. और उनसे जब कहा जाता है कि अल्लाह (तआला) के दिये हुए में से कुछ खर्च करो तो ये काफिर ईमानवालों को जवाब देते हैं कि हम उन्हें क्यों खिलायें जिन्हें अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो खुद खिला-पिला देता? तुम तो हो ही खुली गुमराही में।

لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ
سَابِقُ النَّهَارِ وَكُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٤٠﴾

وَأَيُّ لَّهُمْ أُنَّا حَلْنَا دُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفَلَكِ
الْبَسْحُونَ ﴿٤١﴾

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ﴿٤٢﴾

وَإِنْ نَشَاءُ نُفِثْهُمْ فَلَا صَرِيحَ لَهُمْ وَلَا هُمْ
يُقَدَّرُونَ ﴿٤٣﴾

إِلَّا رَحْمَةً مِنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ﴿٤٤﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٥﴾

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا
عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤٦﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ أَنْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا
الَّذِينَ كَفَرُوا الَّذِينَ آمَنُوا أَظْهَرُ مِنْ نَوَاسِئِهِمْ
أَطْغَبَ أَلَّا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٤٧﴾

1 इस से मुराद ऐसी सवारियाँ हैं जो नाव की तरह इंसान और तिजारती सामान को एक जगह से दूसरी जगह ले जाती हैं, इस में क्रयामत (प्रलय) तक पैदा होने वाली चीजें आ गईं, जैसे हवाई जहाज, पानी का जहाज, रेलें, बसें, कारें और दूसरे सवारी के साधन (जरिया)।

४८. और वह कहते हैं कि यह वादा (क्रयामत की धमकी) कब आयेगा, सच्चे हो तो बताओ।

४९. उन्हें केवल एक जोरदार चीख का इंतजार है जो उन्हें आ पकड़ेगी, और ये आपसी लड़ाई-झगड़े में ही होंगे।¹

५०. उस समय ये न तो बसीयत कर सकेंगे और न अपने परिवार की तरफ लौट सकेंगे।

५१. और नरसिंघा (सूर) के फूँके जाते ही सब के सब अपनी कब्रों से अपने रब की तरफ (तेज चाल) से चलने लगेंगे।

५२. कहेंगे कि हाय-हाय हमें हमारी आरामगाहों से किस ने उठा दिया,² यही है जिसका वादा दयालु (रहमान) ने किया था और रसूलों ने सच-सच कह दिया था।

५३. यह नहीं है लेकिन एक तेज आवाज़ कि अचानक सारे के सारे जमा होकर हमारे सामने हाज़िर कर दिये जायेंगे।

५४. तो आज किसी इंसान पर ज़रा भी जुल्म न किया जायेगा, और तुम्हें नहीं बदला दिया जायेगा लेकिन उन्हीं कामों का जो तुम किया करते थे।

५५. बेश्क जन्नत वाले लोग आज के दिन अपने (मनोरंजन) कामों में व्यस्त (मशगूल)

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۙ (48)

مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاٰحٰدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّصُوْنَ (49)

فَلَا يَسْتَغِيْثُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَا اِلٰى اٰهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ (50)

وَتُفِيْعٌ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يٰئِسُوْنَ (51)

تَاٰلُوْا يَوْمَئِذٍ مِّنْ بَعَثْنَا مِنْ مُّرْسَلِنَا ۙ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ (52)

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاٰحٰدَةً فَاِذَا هُمْ جٰمِعِيْنَ لَدَيْنَا مُخْضَرُوْنَ (53)

فَالْيَوْمِ لَا تَنْكَلُمُ لٰسَةً شَيْئًا وَّلَا تَنْجُرُوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (54)

اِنَّ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمِ فِى شُغْلٍ مُّكْرَهٍ ۙ (55)

¹ यानी लोग बाजारों में क्रय-विक्रय (खरीद-फरोख्त) और वाद-विवाद में व्यस्त (मशगूल) होंगे कि अचानक नरसिंघा (सूर) फूँक दिया जायेगा और क्रयामत हो जायेगी, यह पहली फूँक होगी, इस को نغمة نوح (घवराहट की फूँक) भी कहते हैं।

² कब्र को आरामगाह कहने से भ्रम यह नहीं कि कब्र में उनको सजा नहीं होगी, बल्कि उस के बाद जो भयानक दृश्य (मंजर) और अज्ञात की कठोरता को देखेंगे उसकी तुलना (मुकाबिल) में उन्हें कब्र का जीवन एक ह्वाब ही प्रतीत (महसूस) होगा।

खुश और आनन्दित (मसरूर) हैं।

५६. वह और उनकी पत्नियाँ छाओं में मसहरियों पर तकिया लगाये बैठ होंगे।

५७. उन के लिए जन्नत में हर तरह के मेवे होंगे और दूसरे भी जो कुछ वे मांगेंगे।

५८. रहम करने वाले रब की तरफ से उनको 'सलाम' कहा जायेगा।

५९. और हे पापियों (मुजरिमो)! आज तुम अलग हो जाओ।

६०. हे आदम की औलाद! क्या मैंने तुम से वादा नहीं लिया था कि तुम शैतान की इबादत न करना, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

६१. और मेरी ही इबादत (उपासना) करना, सीधा रास्ता यही है।

६२. और शैतान ने तो तुम में से ज्यादातर गिरोहों को बहका दिया, क्या तुम अक़ल नहीं रखते।^१

६३. यही वह नरक है जिसका तुम्हें वादा किया जाता था।

६४. अपने कुफ़्र का बदला हासिल करने के लिए आज उस में दाखिल हो जाओ।

﴿۵۶﴾ هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَشْجَارِ مَتَكُونُونَ

﴿۵۷﴾ لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالَهُمْ مَا يَدْعُونَ

﴿۵۸﴾ سَلَامٌ تَقُولًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ

﴿۵۹﴾ وَأَمَّا زُورًا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ

﴿۶۰﴾ أَلَمْ أَعْهَدُ إِلَيْكُمْ يَا آدَمُ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ

﴿۶۱﴾ وَإِنْ اعْبُدُونِي هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ

﴿۶۲﴾ وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ

﴿۶۳﴾ هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ

﴿۶۴﴾ إِصْنَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ

^१ अल्लाह का यह सलाम फ़रिश्ते जन्नत वालों को पहुँचायेंगे, कुछ कहते हैं कि अल्लाह तआला (परमेश्वर) खुद सलाम कहेगा।

^२ यानी इतनी भी अक़ल तुम में नहीं कि शैतान तुम्हारा दुश्मन है, उसकी बात नहीं माननी चाहिए, और मैं तुम्हारा रब हूँ, मैं ही तुम्हें रोज़ी देता हूँ और मैं ही तुम्हारी रात-दिन रक्षा (हिफ़ाज़त) करता हूँ, इसलिए तुम्हें मेरा हुक्म मानना चाहिए, तुम शैतान की दुश्मनी और मेरी इबादत के हक़ को न समझ कर बेअक़ली और बेवकूफी का इज़हार कर रहे हो।

६५. हम आज के दिन उन के मुंह पर मुद्रायें (मोहरें) लगा देंगे और उन के हाथ हम से बात करेंगे और उन के पैर गवाही देंगे, उन के कामों की जो वे करते थे।¹

الْيَوْمَ نَخْتُمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ
وَكشَهُدًا رِجَالَهُمْ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾

६६. और अगर हम चाहते तो उन की आंखें अंधी कर देते, फिर ये रास्ते की तरफ दौड़ते भागते लेकिन उन्हें कैसे दिखाई देता?

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَكْسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا
الضُرَاطَ فَأَلَىٰ يَجْبُرُونَ ﴿٦٦﴾

६७. और अगर हम चाहते तो उन की जगह ही पर उन के मुंह विकृत (मसख) कर देते, फिर न वे चल-फिर सकते और न लौट सकते।

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَاتِبِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا
مُؤْتِيًا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾

६८. और जिसे हम बूढ़ा करते हैं उसे जन्म के समय की हालत की तरफ दोबारा लौटा देते हैं, क्या फिर भी वह नहीं समझते?

وَمَنْ لَعْنَةُ رَبِّكَ لِمَا أَفْلَحَ يَعْزِلُونَ ﴿٦٨﴾

६९. और न तो हम ने इस पैगम्बर को शायरी सिखाया और न यह इस के लायक है, यह तो केवल शिक्षा और वाग्देह कुरआन है।²

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ إِنْ هُوَ إِلَّا
ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ﴿٦٩﴾

¹ यह मुद्रा (मोहर) लगाने की जरूरत इसलिए होगी कि शुरू में मुश्रिकीन (द्वैतवादी) कयामत के दिन भी झूठ बोलेंगे और कहेंगे।

(وَاللَّهُ رَبُّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ)

“अल्लाह की कसम! जो हमारा रब है, हम मिश्रणवादी (मुश्रिक) नहीं थे।” (अल-अन्आम-२३)

तो अल्लाह उन के मुंह पर मोहर लगा देगा, जिस से वह तो खुद बोलने की ताकत से वंचित (महरूम) हो जायेंगे। हाँ, अल्लाह तआला (परमेश्वर) इंसानी अंगों को बोलने की ताकत देगा, हाथ बोलेंगे कि हम से इस ने फला-फला काम लिया था और पाँव गवाही देंगे, यूँ मानो इकरार और गवाही दोनों समस्याओं (मसलौ) का हल हो जायेगा। इस के सिवाय बोलने वाले के विपरीत न बोलने वाली चीजों का गवाही देना दलील में ज्यादा असरअंदाज है कि इस में एक चमत्कारी (मोजिजाता) हालत पायी जाती है (फतहुल कदीर)। इस विषय को अहादीस में भी बयान किया गया है। (देखिये सहीह मुस्लिम, किताबुज्जुहद)

² मक्का के मूर्तिपूजक नबी ﷺ के बारे में अलग-अलग बातें कहते रहते थे, उन में एक बात यह भी थी कि आप कवि (शायर) हैं और यह पाक कुरआन आप की कविता की तुकबन्दी है। अल्लाह ने उसका खण्डन (तरदीद) किया कि आप कवि (शायर) हैं न पाक कुरआन कविता का

७०. ताकि वह हर उस इंसान को सावधान (आगाह) कर दे जो जिन्दा है और काफिरों पर सच (तर्क) साबित हो जाये ।

لِيُنذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقُّ الْقَوْلَ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿۷۰﴾

७१. क्या वह नहीं देखते कि हम ने अपने हाथों बनायी हुई चीजों में से उन के लिए चौपाये (पशु भी) पैदा कर दिये, जिन के ये मालिक हो गये हैं ।^१

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِنَّا صِلَاتٍ أَيْرِيًّا أَنعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ﴿۷۱﴾

७२. और उन (जानवरों) को हम ने उन के वश में कर दिया है^२ जिन में से कुछ तो उन की सवारियाँ हैं और कुछ (का गोश्त) खाते हैं।

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ﴿۷۲﴾

७३. और उन्हें उन से दूसरे भी बहुत से फ्रायदे हैं^३ और पीने की चीजें । क्या फिर (भी) ये शुक्रिया अदा नहीं करते?

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ﴿۷۳﴾

७४. और वह अल्लाह के सिवाय दूसरों को माबूद बनाते हैं कि उनकी मदद की जाये ।

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّهُمْ يُبْصِرُونَ ﴿۷۴﴾

७५. (यद्यपि) उन में उनकी मदद की ताकत नहीं फिर भी (मूर्तिपूजक) उनकी मौजूद सेना हैं ।

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُونَ ﴿۷۵﴾

संग्रह (मजमुआ) है, बल्कि यह सिर्फ नसीहत और शिक्षा है । शायरी में आम तौर से मुबालगा और सिर्फ कल्पनाओं (ख्यालात) की विचित्रता होती है, यू मानो वह झूठ पर आधारित (मबनी) होती है, इस के सिवा शायर सिर्फ बात के बहादुर होते हैं काम के नहीं । इसलिए अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने फरमाया कि हम ने अपने पैगम्बर को शायरी नहीं सिखाई न कविता की उसकी तरफ प्रकाशना (वहयी) की ।

- १ यानी जैसे चाहते हैं उन से काम लेते हैं । हम अगर उन में जंगलीपन रख देते (जैसाकि कुछ जानवरों में है) वह उन से दूर भागते और उन की मिलिकयत और बस में न आते ।
- २ यानी इन जानवरों से वह जैसा चाहते हैं फ्रायेदा हासिल करते हैं वे इंकार नहीं करते, यहाँ तक की उन्हें कत्ल कर देते हैं और छोटे बच्चे भी उन्हें खींचते फिरते हैं ।
- ३ यानी सवारी और खाने के सिवाय भी बहुत से फ्रायदे हासिल किये जाते हैं, जैसे उन के ऊन और बालों से कई चीजें बनती हैं । उनकी चर्बी (वसा) से तेल मिलता है और यह भारवाहन और खेती-बाड़ी के भी काम आते हैं ।

७६. इसलिए आप को उनकी बात गमगीन न करे, हम उन की छिपी और जाहिर सभी बातों को (अच्छी तरह) जानते हैं।

७७. क्या इन्सान को इतना भी इल्म नहीं कि हम ने उसे वीर्य (नुतफा) से पैदा किया है? फिर भी यह खुला झगड़ालू बन बैठा।

७८. और उस ने हमारे लिये मिसाल बयान की और अपनी (मूल) पैदाईश को भूल गया, कहने लगा कि इन सड़ी-गली हड्डियों को कौन जिन्दा कर सकता है।

७९. कह दीजिए कि उन्हें वह जिन्दा करेगा जिस ने उन्हें पहली बार पैदा किया,¹ जो सब प्रकार (तरह) की पैदाईश को अच्छी तरह जानने वाला है।

८०. वही है जिस ने तुम्हारे लिए हरे पेड़ से आग पैदा कर दी जिस से तुम आग सुलगाते हो।

८१. जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया है, क्या वह इन जैसों के पैदा करने पर कादिर नहीं? यकीनन कादिर है और वही तो पैदा करने वाला जानने वाला है।

८२. जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है उसे इतना कह देना (बस) है कि हो जा, वह फ़ौरन हो जाती है।

فَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُبْشِرُونَ وَمَا يُهْلِكُونَ ﴿٧٦﴾

أَوَلَمْ يَرِ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ﴿٧٧﴾

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ قَالَ مَنْ يُؤْتِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ﴿٧٨﴾

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ﴿٧٩﴾

إِلَّا الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ مِنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِنْهُ تُوقِدُونَ ﴿٨٠﴾

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ﴿٨١﴾

إِنَّا أَمْرًا إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٨٢﴾

¹ यानी जो अल्लाह एक हकीर वीर्य (नुतफा) से इन्सान को पैदा करता है, वह उसे दोबारा जिन्दा करने पर कादिर नहीं है? उस के मुर्दों को जिन्दा करने की एक कहानी हदीस में बयान है कि एक इंसान ने मौत के बन्त यह बसीयत की कि मरने के बाद उसे जलाकर आधी राख समुद्र में और आधी राख तेज हवा के दिन ज़मीन में उड़ा दी जाये। अल्लाह ने सभी राख जमा करके उसे जिन्दागी अता किया और उस से पूछा कि तूने ऐसा क्यों किया? उस ने कहा तेरे डर से, अल्लाह ने उसे माफ कर दिया। (सहीह बुखारी, किताबुल अम्बिया)

८३. तो पाक है वह अल्लाह जिस के हाथ में हर चीज का मुल्क है और जिसकी तरफ तुम सब लौटाये जाओगे ।^१

सूरतुस्साफफात-३७

सूर: साफफात मक्का में नाज़िल हुई, इस में एक सौ बयासी आयतें और पाँच रूकूअ हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

१. कसम है पंक्तिवद्ध (सफबस्ता) होने वाले (फरिश्तों) की ।

२. फिर पूरी तरह से डाँटने वालों की ।

३. फिर अल्लाह का पाठ करने वालों की ।

४. वेशक तुम सब का पूज्य (माबूद) एक ही है।

५. आकाशों और धरती और उन के बीच की सभी चीजों और सारी पूर्वी दिशाओं का वही रब है ।

६. हमने संसार के (निकट) आकाश को सितारों से सुशोभित (सजाया) और मुजय्यन किया है ।

७. और (हम ने ही उसकी) सुरक्षा (हिफाजत) की है हर सरकश शैतान से !^२

فَسَبْحَنَ الرَّبُّهُنَّ بِبَيْنِهِمْ مَلَكُوتٌ كُلُّ شَيْءٍ وَرَأَيْهِ
تَرْجِعُونَ ﴿۸۳﴾

سُورَةُ الصَّافَّاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالصَّفَّاتِ صَفًّا ﴿۱﴾

فَالرَّحِيزِ رِيزًا ﴿۲﴾

فَالشَّالِيَةِ ذِكْرًا ﴿۳﴾

إِنَّ إِلَهُكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿۴﴾

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ﴿۵﴾

إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةِ الْكَوَكِبِ ﴿۶﴾

وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَارِدٍ ﴿۷﴾

^१ यानी यह नहीं होगा कि मिट्टी में घुल-मिलकर तुम्हारा वजूद सदा के लिये खत्म हो जाये । नहीं, बल्कि फिर जिन्दगी अता की जायेगी, यह भी नहीं होगा कि तुम भाग कर किसी दूसरे के पास पनाह लो, तुम्हें हर हालत में अल्लाह ही के दरबार में हाज़िर होना होगा, जहाँ वह अमल के ऐतबार से अच्छा-बुरा बदला देगा ।

^२ यानी दुनिया के आकाश पर, जीनस के अलावा तारों का दूसरा मकसद यह है कि सरकश शैतानों से सुरक्षा (हिफाजत) हो, तो जब शैतान आकाश पर कोई बात सुनने के लिए जाते हैं, तो तारे उन पर टूट कर गिरते हैं, जिस से आम तौर से शैतान जल जाते हैं, जैसाकि आगे की

१८. (आप) जवाब दीजिए कि हाँ, और तुम जलील (भी) होंगे।

قُلْ نَعْمَ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ﴿۱۸﴾

१९. वह तो केवल एक जोरदार डाँट होगी कि अचानक ये देखने लगेंगे।

فَأَنصَبْ فِي زَجْرِكَ وَاجِدَةً فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُونَ ﴿۱۹﴾

२०. और कहेंगे कि हाय रे हमारा विनाश, (हलाकत) यही बदले का दिन है।

وَقَالُوا يَوْمَئِذٍ هَذَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿۲۰﴾

२१. यही फैसले का दिन है जिसे तुम झुठलाते रहे।

هَذَا يَوْمَ الْقِسْطِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَكْذِبُونَ ﴿۲۱﴾

२२. जालिमों को और उन के साथियों को और जिन-जिन की वे (अल्लाह के सिवाय इबादत करते थे।

أَحْشَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿۲۲﴾

२३. (उन सब को) जमा करके उन्हें नरक का रास्ता दिखा दो।

مِنْ دُونِ اللَّهِ فَأَهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ الْجَحِيمِ ﴿۲۳﴾

२४. और उन्हें ठहरा लो^२ (इसलिए) कि उन से जरूरी सवाल किये जाने वाले हैं।

وَقَفُّوهُمْ أَنَّهُمْ مَسْئُولُونَ ﴿۲۴﴾

२५. नया वजह है कि (इस समय) तुम एक-दूसरे की मदद नहीं करते।

مَا لَكُمْ لَا تَنْصَرُونَ ﴿۲۵﴾

२६. बल्कि वे (सब के सब) आज आज्ञाकारी (फरमावरदार) बन गये।

بَلْ هُمْ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ﴿۲۶﴾

२७. और वे एक-दूसरे को सम्बोधित (मुखातिब) करके सवाल-जवाब करने लगेंगे।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿۲۷﴾

२८. कहेंगे कि तुम तो हमारे पास हमारी दायीं

قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿۲۸﴾

^१ رَجُل (वैल) लफ्ज बरबादी के मौका पर बोला जाता है, यानी अजाब को देखने के बाद उन्हें अपनी तबाही खुले तौर से दिख रही होगी, और इस से भूराद चर्म का प्रदर्शन (इजहार) और अपने गुनाहों का इकारार (स्वीकार) है, लेकिन इस समय नदामत और कुबूल का कोई फायदा न होगा, इसलिए इस के जवाब में फरिश्ते और ईमानवाले कहेंगे कि यह वही फैसले का दिन है जिसे तुम मानते नहीं थे, यह भी मुमकिन है कि आपस में एक-दूसरे से कहेंगे।

^२ यह हुकम नरक में ले जाने से पहले होगा, क्योंकि वह हिसाब के बाद ही नरक में जायेंगे।

तरफ से आते थे ।

३९. वह जवाब देंगे कि नहीं, बल्कि तुम ही ईमान वाले न थे ।¹

३०. और कुछ हमारा जोर तुम पर था (ही) नहीं, बल्कि तुम लोग (खुद) सरकार लोग थे ।²

३१. अब तो हम (सब) पर हमारे रब की यह बात साबित हो चुकी कि हम (अज्ञाब का) मजा चखने वाले हैं ।

३२. तो हम ने तुम्हें गुमराह किया, हम तो खुद भी गुमराही में थे ।

३३. तो अब आज के दिन (सब के सब) अज्ञाब में हिस्सेदार हैं ।

३४. हम पापियों के साथ इसी तरह किया करते हैं ।

३५. ये वे (लोग) हैं कि जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह के सिवाय कोई पूज्य (माबूद) नहीं, तो यह घमंड करते थे ।

३६. और कहते थे कि क्या हम अपने देवताओं को एक दीवाने चायर की बात पर छोड़ दें ।

३७. (नहीं, नहीं) बल्कि नबी तो हक (सच्चा दीन) लाये हैं और सभी रसूलों को सच्चा जानते हैं ।

३८. बेशक तुम कष्टदायी अज्ञाबों (के मजे) चखने वाले हो ।

قَالُوا بَلْ لَمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝۲۹

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيّٰنَ ۝۳۰

فَحَقّٰ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۙ اِذَا لَدَاۤ اِيقُوْنَ ۝۳۱

فَاَعْوَبْتُمْۙ اِنَّا كُنَّا غٰوِبِيْنَ ۝۳۲

فَاَنهَمُ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ۝۳۳

اِنَّا كُنَّا لَنَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝۳۴

اِنَّهُمْ كَانُوْۤا اِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝۳۵

وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّا لَتَارِكُوْا آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ۝۳۶

بَلْ جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَقَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝۳۷

اِنَّكُمْ لَنَدٰۤاۤيِقُوْۤا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝۳۸

¹ अगुवा कहेंगे कि ईमान तुम अपनी मर्जी से नहीं लाये और आज इल्जाम हमें दे रहे हो?

² अगुवा और पैरोकारों का यह आपसी झगड़ा पाक कुरआन के कई जगहों में चर्चित है। उन की यह निन्दा (मलामत) महशर के मैदान में होगी और नरक में जाने के बाद नरक में भी, देखो अल-मोमिन-४७, ४८, सूर: सबा-३१, ३२, अल-आराफ-३८, ३९ आदि आयतें ।

३९. और तुम्हें उसी का बदला दिया जायेगा जो तुम करते थे ।¹

४०. लेकिन अल्लाह (तआला) के मुख़्लिस बन्दे

४१. उन्हीं के लिए मुकर्रर रोज़ी है ।

४२. (हर तरह के) मेवे और वह बाइज्जत और आदरणीय (मोहतरम) होंगे ।

४३. सुखों वाली जन्नतों में ।

४४. आसनों पर एक-दूसरे के सामने बैठें होंगे।

४५. जारी शराब के प्यालों का उन पर दौर चल रहा होगा ।²

४६. जो साफ सफेद और पीने में मजेदार होंगी।

४७. न उस से सिर दर्द होगा और न उस के पीने से बहकें ।

४८. और उन के करीब नीची और बड़ी-बड़ी आँखों वाली (हूरें) होंगी ।

४९. ऐसी जैसे छिपाये हुए अण्डे ।³

وَمَا تُجْرَوْنَ إِلَّا مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿۳۹﴾

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿۴۰﴾

أُولَئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُومٌ ﴿۴۱﴾

فَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ﴿۴۲﴾

فِي جَنَّاتٍ النَّعِيمِ ﴿۴۳﴾

عَلَى سُرُرٍ مَّقْشُورِينَ ﴿۴۴﴾

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِينٍ ﴿۴۵﴾

بَيضَاءَ لَدَىٰ تَلْحِيْمٍ بَيْنَ ﴿۴۶﴾

لَا فِيهَا عَاوِلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ﴿۴۷﴾

وَعِنْدَهُمْ قُفُوسٌ الطَّرْفِ عَيْنٍ ﴿۴۸﴾

كَأَنَّهَا بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ﴿۴۹﴾

¹ यह नरकवासियों से उस समय कहा जायेगा जब वह खड़े आपस में सवाल कर रहे होंगे, और साथ ही स्पष्ट (वाजेह) कर दिया जायेगा कि यह जुल्म नहीं हमेशा इंसाफ है, क्योंकि सब तुम्हारे अपने करतूतों का बदला है ।

² كأس (कास) शराब भरे प्याले को और قدح (कदह) खाली प्याले को कहते हैं, معین का मतलब है बहते चश्मे, मतलब यह है कि बहते चश्मे की तरह जन्नत में शराब हर समय मिलेगी ।

³ यानी चतुरमुर्ग के पंखों के नीचे छुपाये हुए हों, जिसकी वजह से वह हवा व गर्द व मुबार से सुरक्षित (महफूज) हों, कहते हैं कि चतुरमुर्ग के अंडे बड़े खूबसूरत रंग के होते हैं, जो पीले सफेद होते हैं, और ऐसी रंग खूबसूरती की दुनिया में सबसे अच्छा माना जाता है, इस बिना पर यह मिसाल केवल सफेदी में नहीं है बल्कि सुन्दर रंग और रूप और दृश्य (मंजर) में है ।

५०. (जन्नत वाले) एक-दूसरे की तरफ मुंह करके पृछेंगे ।¹

فَأَنبَلَّ بِعَضْمِهِمْ عَلَى بَعْضِ أَسْأَلُونَ ﴿۵۰﴾

५१. उन में से एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक निकट (साथी) था ।

قَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿۵۱﴾

५२. जो (मुझ से) कहा करता था कि क्या तू (क्रयामत के आने का) यकीन करने वालों में से है ।

يَقُولُ أَإِنَّكَ لَبِئْسَ الْيَقِينُ ﴿۵۲﴾

५३. क्या जब कि हम मरकर मिट्टी और हड्डी हो जायेंगे क्या उस समय हम बदला दिये जाने वाले हैं?

أَلَا وَءَاتَيْنَاكُمْ آيَاتِنَا وَقَالُوا لَوْلَا نُنزِّلُ الْغَيَاثَ لَنُنزِّلْنَ حَبِطَاتٍ لَّهُمْ نَارًا ﴿۵۳﴾

५४. कहेगा, तुम चाहते हो कि झाँककर देख लो?

قَالَ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ فُطْرًا مِمَّا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿۵۴﴾

५५. झाँकते ही उसे बीचों-बीच नरक में (जलता हुआ) देखेगा ।

فَأَنظَرْنَا لَهُ فِي سَوَاءٍ الْمَجِيدِ ﴿۵۵﴾

५६. कहेगा: अल्लाह की कसम! करीब था कि तू मुझे भी बरवाद कर दे ।

قَالَ تَاللَّهِ إِنْ كُنْتُ لَأَكْرَهُنَّ ﴿۵۶﴾

५७. और अगर मेरे रब की नेमत न होती तो मैं भी नरक में हाज़िर किये जाने वालों में होता।

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُهْتَرِينَ ﴿۵۷﴾

५८. क्या (यह सही है कि) हम मरने वाले ही हैं?

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ﴿۵۸﴾

५९. सिवाय पहले एक मौत के, और न हमें न्याय दिये जाने वाले हैं ।

إِلَّا مَوْتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَدِّيْنَ ﴿۵۹﴾

६०. फिर तो (वाज़ेह बात है कि) यह बड़ी कामयाबी है ।

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿۶۰﴾

६१. ऐसी (कामयाबी) के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए ।

لِيُحِلَّ لَكُمْ هَذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ﴿۶۱﴾

¹ जन्नत वाले जन्नत में एक-दूसरे के साथ बैठे हुए दुनिया के वाक़ेआत याद करेंगे और आपस में सुन लेंगे ।

६२. क्या यह मेहमानी अच्छी है या जबकूम (सेंढे) का पेड़?¹

६३. जिसे हम ने जालिमों के लिए कठिन परीक्षा बना रखी है।

६४. बेशक वह पेड़ की जड़ से निकलता है।

६५. जिस के गुच्छे शैतानों के सिरों जैसे होते हैं।²

६६. नरकवासी इसी पेड़ को खायेंगे और इसी से पेट भरेंगे।

६७. फिर उस पर खौलता पानी पीना पड़ेगा।

६८. फिर उन सबका लौटना नरक की (आग के ढेर की) तरफ होगा।

६९. यकीन करो कि उन्हीं ने अपने बुजुर्गों को बहका हुआ पाया।

७०. और यह उन्हीं के पद-चिन्हों (निशाने कदम) पर दौड़ते चलते रहे।

७१. और उन से पहले भी बहुत से अगले लोग बहक चुके हैं।

७२. और जिन में हम ने सावधान करने वाले (रसूल) भेजे थे।

أَذَلِكْ خَيْرٌ لِّزُلَا أَمَّ شَجَرَةَ الرَّقُومِ ۝۶۲

إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ ۝۶۳

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ۝۶۴

طَلْحَمَهَا كَأَنَّهُ رُومُوسُ السَّيْطَانِ ۝۶۵

فَالَهُمْ لِالِأَكُونِ وَمِنْهَا قَمَائِطُونَ وَمِنْهَا الْبَطُونُ ۝۶۶

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوَابِثَ مِّنْ حَومٍ ۝۶۷

ثُمَّ إِنَّ مَرَجَهُمْ لِأَلِ الْجَحِيمِ ۝۶۸

إِنَّهُمْ أَقْبَأُ الْآبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ۝۶۹

فَهُمْ عَلَى الْآرِهِمْ يُرَعُونَ ۝۷۰

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ۝۷۱

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُّنذِرِينَ ۝۷۲

¹ यह रूम से बना है, जिसका मतलब बदबूदार और घृणित (मकरूह) चीज निगलने के हैं। इस पेड़ का फल खाना भी नरकवासियों के लिए बड़ा नापसन्द होगा, क्योंकि यह बहुत बदबूदार, कड़ुवा और बड़ा घृणित होगा। कुछ कहते हैं कि यह दुनियावी पेड़ों में से है, कुछ कहते हैं कि यह दुनियावी पेड़ नहीं और दुनियावालों के लिए नामालूम है (फतहल कदीर)। लेकिन पहला कौल ज्यादा सही है, और यह वही पेड़ है जिसे उर्दू जुबान में संघ या धोहर कहते हैं।

² उसे बुराई और अशुभ (कबाहत) में शैतान के सिरों से तशबीह दी, जैसे अच्छी चीज के बारे में कहते हैं कि मानो वह फरिस्ता है।

७३. अब तू देख ले कि जिन्हें धमकाया गया था उनका नतीजा कैसा हुआ।

७४. सिवाय अल्लाह के मुखलिस बंदों के।

७५. हमें नूह ने पुकारा तो देख लो कि हम कैसे अच्छे दुआ क़बूल करने वाले हैं।^१

७६. और हम ने उसे और उस के घर वालों को^२ उस सख़्त मुसीबत से बचा लिया।

७७. और उसकी औलाद को हम ने बाक़ी रहने वाली बना दिया।^३

७८. और हम ने उसकी (अपनी चर्चा) पिछलों में बाक़ी रखा।

७९. नूह (عليه السلام) पर सारे जहाँ में सलाम (सुरक्षा) हो!

८०. हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

كَانَتْزَكِيَّاتٍ كَانَ عَابِقَةَ النَّوْدَرِيْنَ ۝۷۳

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝۷۴

وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوْحًا فَلْيَعْمَلِ الْمُجِيْبُوْنَ ۝۷۵

وَنَجِيْنَهُ وَآهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۝۷۶

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِيْنَ ۝۷۷

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِيْنَ ۝۷۸

سَلَامٌ عَلَى نُوْحٍ فِي الْعَالَمِيْنَ ۝۷۹

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝۸۰

^१ साढ़े नौ सौ साल दीन की तबलीग (प्रचार) के बावजूद भी जब समुदाय के ज्यादातर लोगों ने उन्हें झुठलाया ही और उन्होंने अंदाजा कर लिया कि ईमान लाने की कोई आशा नहीं है तो अपने रब को पुकारा : (فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوْبٌ فَانصُرْ) (अल-कमर-१०) «अल्लाह मैं परास्त (मगलूब) हूँ मेरी मदद कर» तो हम ने नूह की दुआ क़बूल की और उनकी जाति को तुफ़ान भेजकर नाश कर दिया।

^२ (अहल) से मुराद नूह पर ईमान लाने वाले हैं, जिन में उन के परिवार के मोमिन (ईमानदार) सदस्य (अफ़राद) भी थे। कुछ मुफ़त्सिरो के क़रीब उनकी तादाद ८० थी जिन में उनकी पत्नी और एक पुत्र शामिल नहीं, जो ईमानवाले नहीं थे। वह भी तुफ़ान में डूब गये, क़रब एظیم सख़्त मुसीबत से मुराद वही भारी बाढ़ है जिस में यह जाति डूब गई।

^३ ज्यादातर मुफ़त्सिरो के क़ौल के ऐतबार से हज़रत नूह के तीन पुत्र थे। हाम, साम और याफ़िस, इन्हीं से बाद का इंसानी वंश चला, इसी वंश से नूह को दूसरा आदम भी कहा जाता है, यानी आदम की तरह उन के बाद यह मानव जाति के दूसरे परम पिता हैं। हाम के वंश से सूडान (पूरब से पश्चिम तक) यानी सिन्ध, भारत, नौव, अज़, हबशा, किब्त और बर्बर वगैरह हैं और याफ़िस के वंश से सकालिबा, तुर्क, खज़र, याज़ूज़ और माज़ूज़ वगैरह हैं। साम के वंश से अरब, फ़ारस, रूम, यहूद और इसाई हैं (फ़तहल क़दीर) | وَآلِ اعْلَمُ |

८१. वह हमारे ईमानदार बन्दों में से था ।
८२. फिर हम ने दूसरे लोगों को डुबो दिया ।
८३. और उस (नूह) के पीछे आने वालों में से ही इब्राहीम भी थे ।^१
८४. जब कि अपने रब के पास साफ (निर्दोष) दिल लाये ।
८५. उन्होंने अपने पिता और अपनी कौम से कहा कि तुम क्या पूज रहे हो ।
८६. क्या तुम अल्लाह के सिवाय गढ़े हुए माबूद चाहते हो?
८७. तो यह (बताओ कि) तुम ने सारी दुनिया के रब को क्या समझ रखा है?
८८. अब (इब्राहीम ने) एक नजर तारों की तरफ उठाई ।
८९. और कहा कि मैं तो रोगी हूँ ?^२
९०. इस पर सब उस से मुँह मोड़े हुए वापस चले गये ।
९१. आप (चुपके) उन के माबूदों के करीब गये और कहने लगे तुम खाते क्यों नहीं?
९२. तुम्हें क्या हो गया कि बात तक नहीं करते हो?

إِنَّكَ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ⑧۱

ثُمَّ أَعْرَفْنَا الْأُخْرَيْنَ ⑧۲

وَلَانَ مِنْ شَيْعَتِهِ لِابْرَاهِيمَ ⑧۳

إِذْ جَاءَهُ رَبُّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ⑧۴

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ⑧۵

أَبْفِكَ اللَّهُمَّ دُونَ اللَّهِ تُوَيْدُونَ ⑧۶

فَمَا ظَنَنْتُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ⑧۷

فَنظَرْنَا نَظْرًا فِي النُّجُومِ ⑧۸

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ⑧۹

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ⑨۰

فَرَأَى إِلَى آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ⑨۱

مَا لَكُمْ لَا تَحْقُقُونَ ⑨۲

^१ شَيْعَةٌ (श्रीअः) का मतलब गरुह और पैरोकार है, यानी इब्राहीम भी नेकों और तौहीद वालों के इसी गरुह से हैं, जिनको हजरत नूह ही की तरह अल्लाह ने अपनी तरफ मुतवज्जिह होने का खास नसीब अता किया ।

^२ आकाश की तरफ गौर-फिक्र के लिए देखा जैसाकि कुछ लोग ऐसा करते हैं, या अपनी जाति के लोगों को भ्रम में डालने के लिए ऐसा किया जो ग्रहों की चाल को दुनिया की घटनाओं (वाक़ेआत) में असरअंदाज मानते थे । यह वाक़ेआ उस समय का है जब उनकी जाति का वह दिन आया जिसे वह बाहर जाकर ईद और मेले के रूप में मनाया करती थी ।

९३. फिर तो (पूरी ताकत के साथ) दायें हाथ से उन्हें मारने पर पिल पड़े।

قَالَ عَلَيْهِمْ صُرَّتْ بِأَيْدِيهِمْ 93

९४. वे (मूर्तिपूजक) दौड़े-भाग्ये आप की तरफ आये।

فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزُفُونَ 94

९५. तो आप ने कहा कि तुम उन्हें पूजते हो जिन्हें तुम खुद बनाते हो।

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مَا تَشْكُرُونَ 95

९६. हालांकि तुम्हें और तुम्हारी बनाई हुई चीजों को अल्लाह ही ने पैदा किया है।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْبُدُونَ 96

९७. वे कहने लगे कि इस के लिए एक मकान (आग की जगह) बनाओ और उस (दहकती) आग में इसे डाल दो।

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُنْيَانًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ 97

९८. उन्होंने तो (इब्राहीम) के साथ चाल चलना चाहा, लेकिन हम ने उन्हीं को नीचा कर दिया।

فَارَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ 98

९९. और (इब्राहीम ने) कहा कि मैं तो (हिजरत करके) अपने रब की तरफ जाने वाला हूँ^२ वह जरूर मेरा मार्गदर्शन (रहनुमाई) करेगा।

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ 99

१००. हे मेरे रब! मुझे नेक पुत्र अता कर।

رَبِّ رَبِّي مِنَ الصَّالِحِينَ 100

१०१. तो हम ने उसके एक सहनशील (बुर्दवार) पुत्र की खूबखबरी दी।^३

فَبَشِّرْنَاهُ بِظُلْمٍ حَلِيمٍ 101

^१ यानी वह मूर्तियाँ और चित्र भी जिन्हें तुम अपने हाथों से बनाते हो और उन्हें माबूद समझते हो या तुम्हारा आम अमल जो भी तुम करते हो, उन का पैदा करने वाला भी अल्लाह है जिसका अहले सुन्नत की आस्था (अक्कीदा) है।

^२ पैगम्बर इब्राहीम का यह वाक्या बाबिल (इराक) में पेश आया, आखिर में यहाँ से हिजरत (स्थानान्तरण) की और शाम (सीरिया) चले गये और वहाँ जाकर पुत्र के लिए दुआ की। (फतहुल कदीर)

^३ حلیم (धैर्यवान) कहकर इशारा कर दिया कि बच्चा बड़ा होकर सहनशील (बुर्दवार) होगा।

१०२. फिर जब (बालक) इस उम्र को पहुँचा कि उस के साथ चले-फिरे' तो उस (इब्राहीम) ने कहा मेरे प्यारे बेटे! मैं ख़्वाब में अपने आप को तेरी कुर्बानी करते हुए देख रहा हूँ, अब तू बता कि तेरा क्या ख़्याल है? बेटे ने जबाब दिया कि पिताजी! जो हुकम दिया जा रहा है उसकी पैरवी कीजिए, अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे सब्र करने वालों में पायेंगे।

१०३. यानी जब दोनों ने कुबूल (स्वीकार) कर लिया और उस (पिता) ने उस (पुत्र) को माथे के बल गिरा दिया।

१०४. तो हम ने आवाज़ दी कि हे इब्राहीम!

१०५. बेशक तूने ख़्वाब को सच्चा कर दिखाया, बेशक हम भलाई करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।

१०६. हकीकत में यह खुली आजमाईश थी।^१

१०७. और हम ने एक बड़ा ज़बीहा उस के फ़िदिया के रूप में दे दिया।^२

१०८. और हम ने उनकी शुभ चर्चा पिछलों में बाकी रखा।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّنَىٰ قَالَ يَبْنَؤُا اِنِّى اَرَىٰ
فِى الْمَنَامِ اِنِّى اَذْبَحُكَ فَانظُرْ مَاذَا تَرَىٰ قَالَ
يَا بَتِ اَفْعَلْ مَا تُؤْمُرُ سَتَجِدُنِيْ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ
مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٠٢﴾

فَلَمَّا اَسْلَمَا وَتَلَّهٖ لِلْجَبِيْنَ ﴿١٠٣﴾

وَكَادَيْتُمْ اَنْ يَّكْفُرُوْهُمُ ﴿١٠٤﴾

قَدْ صَدَقْتَ الرَّؤْيَا اِنَّا كَذٰلِكَ
نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٠٥﴾

اِنَّ هٰذَا لَهٗوَ الْبَلَاؤُا الْبُيْنِ ﴿١٠٦﴾

وَكَادَيْتُمْ يَذْبَحُوْهُ عَظِيْمٌ ﴿١٠٧﴾

وَكَرَّمْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٠٨﴾

^१ यानी दौड़घूप के लायक हो गया या जवानी के करीब हो गया। कुछ कहते हैं कि उस समय यह लड़का १३ साल का था।

^२ पैगम्बर (ईशदूत) का ख़्वाब, अल्लाह की वही और हुकम से होता है, जिस के ऐतबार से अमल करना ज़रूरी होता है, बेटे से विचार-विमर्श (राय-मशविरा) का मकसद यह जानना था कि बेटा भी अल्लाह का हुकम पूरा करने के लिए कितना तैयार है।

^३ यानी लाडले बेटे को कुर्बानी देने का हुकम, यह एक बड़ा इम्तेहान था जिस में तू कामयाब रहा।

^४ यह बड़ी कुरबानी एक मेढा था जो अल्लाह ने जन्नत से हजरत जिब्रील के द्वारा भेजा, (इब्ने कसीर) जो इस्माईल की जगह पर जिक्ह किया गया, और फिर इस इब्राहीमी सुन्नत (यादगार) को क़यामत तक अल्लाह की समीपता (क़ुरबत) का एक साधन और ईद अज़हा का सब से अच्छा असल बना दिया गया।

१०९. इब्राहीम पर सलाम हो ।

سَلَّمَ عَلٰى اِبْرٰهِيْمَ ﴿١٠٩﴾

११०. हम नेक काम करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं ।

كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١١٠﴾

१११. निश्चय (यक्रीनन) ही वह हमारे ईमानदार बन्दों में से था ।

اِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١١﴾

११२. और हम ने उसे इसहाक़ नबी की खुशखबरी दी जो नेक लोगों में से होगा ।^१

وَبَشَّرْنَاهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١١٢﴾

११३. और हम ने इब्राहीम और इसहाक़ पर बरकतें (विभूतियाँ) नाज़िल किया, और इन दोनों की औलाद में कुछ तो खुशकिस्मत हैं और कुछ अपनी जानों पर खुला जुल्म करते हैं ।

وَبَرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰى اِسْحٰقَ ط وَ مَن ذُرِّيَّتِهْمَا فَحَسْبُنَّ وَكٰلِمًا لَّنْفِوْهُ مُبِيْنًا ﴿١١٣﴾

११४. और यक्रीनन हम ने मूसा और हारून पर बड़ा एहसान किया ।

وَلَقَدْ مَدَدْنَا عَلٰى مُوسٰى وَهٰرُونَ ﴿١١٤﴾

११५. और उन्हें और उन की कौम को बहुत बड़े दुख-दर्द से मुक्ति (नजात) दे दी ।

وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِّنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ﴿١١٥﴾

११६. और उनकी मदद की तो वही शालिब (विजयी) रहे ।

وَلَنَصَرْنَهُمْ فَاكٰوٰنُهُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾

११७. और हम ने उन्हें (साफ़ और) रौशन किताब अता की ।

وَآتَيْنَاهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٧﴾

११८. और उन दोनों को सीधे रास्ते पर स्थिर (बाक़ी) रखा ।

وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾

११९. और हम ने उन दोनों के लिए पीछे आने वालों में यह बात बाक़ी रखी ।

وَتَوَكَّلْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾

^१ हज़रत इब्राहीम की ऊपर वाली कहानी के बाद अब एक पुत्र इसहाक़ की और उस के नबी होने की खुशखबरी देने से मालूम होता है कि इस से पहले जिस पुत्र को कुर्बानी देने का हुक्म किया गया था वह इस्माईल थे जो उस समय इब्राहीम (عليه السلام) के इकलौते पुत्र थे । इसहाक़ की पैदाईश उस के बाद हुई ।

१२०. कि मूसा और हारून पर सलाम हो ।
१२१. बेशक हम नेक काम करने वालों को इसी तरह बदला दिया करते हैं ।
१२२. बेशक ये दोनों हमारे मोमिन बन्दों में से थे ।
१२३. और बेशक इलियास भी पैगम्बरों में से थे ।
१२४. जबकि उन्होंने अपनी क्रीम से कहा कि तुम अल्लाह से डरते नहीं हो ।
१२५. क्या तुम 'बअल' नाम की मूर्ति को पुकारते हो और सब से अच्छे खालिक को छोड़ देते हो?
१२६. अल्लाह जो तुम्हारा और तुम्हारे पहले के सभी बाप-दादों का रब है ।
१२७. लेकिन समुदाय ने उन्हें झूठलाया, तो वे जरूर (अजाबों में) हाजिर रखे जायेंगे ।
१२८. सिवाय अल्लाह (तआला) के मुखलिस बंदों के ।
१२९. और हम ने (इलियास की) शुभ चर्चा पिछले लोगों में बाकी रखा ।
१३०. कि इलियास पर सलाम हो ।^१

سَلَّمَ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ①②①

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ①②②

إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُحْسِنِينَ ①②③

وَلَئِن لَّا هَاسِرِينَ الْمُرْسَلِينَ ①②④

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ الْآسِفُونَ ①②⑤

أندھون بعلًا وتذرون أحسن الخالقين ①②⑥

الله ذكركم وذبّ أباکم الاکلین ①②⑦

فکذبوه وانهم لحنظرون ①②⑧

الا عباد الله المخلصون ①②⑨

ومرکنا علیہ فی الاخرین ①③①

سَلَّمَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ①③②

^१ यह हजरत हारून की औलाद में से इस्राईल। नबां थे, यह जिस इलाके में भेजे गये उसका नाम बअलबक था। कुछ कहते हैं कि उस जगह का नाम सामरह है जो फिलस्तीन का पश्चिम का दरम्यानी इलाका है, यहाँ के लोग बअल नामी मूर्ति (देवता) के पुजारी थे, कुछ कहते हैं कि यह देवी का नाम था।

^२ इलियासीन, इलियास ही का एक उच्चारण (तलपफुज) है, जैसे तूरे सीना को तूरे सीनीन भी कहते हैं। हजरत इलियास को दूसरी दीनी (धर्मग्रन्थों) किताबों में इलिया भी कहा गया है।

१३१. हम नेक काम करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं ।

إِنَّا كَذَّبْنَاكَ بِكَ تَعِزِّي الْمُحْسِنِينَ ﴿۱۳۱﴾

१३२. बेशक वह हमारे ईमानदार बन्दों में से थे।

إِنَّكَ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿۱۳۲﴾

१३३. बेशक लूत (عليه السلام) भी पैगम्बरों में से थे ।

وَإِنَّ لُوطًا لِّأَيِّ الْمُرْسَلِينَ ﴿۱۳۳﴾

१३४. हम ने उनको और उन के घर वालों को सब को मुक्ति प्रदान (नजात अता) की ।

إِنَّا نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ﴿۱۳۴﴾

१३५. सिवाय उस बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में रह गयी^१

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ﴿۱۳۵﴾

१३६. फिर हम ने दूसरों को तहस-नहस कर दिया ।

ثُمَّ دَمَرْنَا الْأُخْرَى ﴿۱۳۶﴾

१३७. और तुम तो सुबह होने पर उनकी बस्तियों से गुजरते हो ।

وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْبِحِينَ ﴿۱۳۷﴾

१३८. और रात को भी, क्या फिर भी नहीं समझते?^२

وَبِالْأَيْلِ أَفْلا تَعْقِلُونَ ﴿۱۳۸﴾

^१ आखिरी आसमानी किताब कुरआन ने नबियों और रसूलों की चर्चा कर के उन के लिए ज्यादातर जगह पर यह लफ्ज इस्तेमाल किये हैं कि वह हमारे मोमिन (ईमानवाले) बन्दों में से थे, जिसके दो मतलब हैं, एक उनके चरित्र (किरदार) और अमल की फजीलत का प्रदर्शन (इजहार) जो ईमान का जरूरी हिस्सा है, ताकि उन लोगों का खण्डन (तरदीद) हो जाये जो बहुत से पैगम्बरों के बारे में अखलाकी कमजोरियों को साबित करते हैं, जैसे तौरात और इजील के मौजूद नुसखों में कई पैगम्बरों के बारे में ऐसी मन गदन्त कहानियां दर्ज हैं । दूसरा भकसद उन लोगों का खण्डन (तरदीद) है जो कुछ अम्बिया के बारे में अति (गुलू) करके उन में खुदाई गुण (सिपत) और इख्तियार साबित करते हैं, यानी वह ईबदूत (पैगम्बर) जरूर थे लेकिन थे फिर भी अल्लाह के बन्दे न कि खुद अल्लाह या उस का हिस्सा या सच्ची ।

^२ इस से मुराद हजरत लूत की पत्नी है जो काफिर थी, यह ईमानवालों के संग उस नगरी से बाहर नहीं गई थी क्योंकि उसे अपनी जाति के साथ हलाक होना था, इसलिए वह भी नाश हो गई ।

^३ यह मक्कावासियों से संबोधन (खिताब) है जो व्यापारिक यात्रा में इन हलाक हुए इलाकों से गुजरते थे, इन से कहा जा रहा है कि तुम सुबह और शाम के समय भी इन बस्तियों से गुजरते हो जहाँ अब मृत सागर है, जो देखने में बड़ा मकूरूह (घृणित) है और बड़ा दुर्गन्धित और बदबूदार । क्या तुम उन्हें देखकर यह बात नहीं समझते कि रसूलों को झूठलाने की वजह से उनका यह बुरा अजाम हुआ तो तुम्हारे काम का नतीजा इससे अलग क्यों होगा? जब तुम भी

१३९. और यकीनन ही यूनुस नबियों में से थे ।

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿۱۳۹﴾

१४०. जब वह भागकर पहुँचे भरी नवका पर ।

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلِّكَ السَّاحِرِينَ ﴿۱۴۰﴾

१४१. फिर नाम निकाला गया तो यह पराजित (ममलूब) हो गये ।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ﴿۱۴۱﴾

१४२. तो फिर उन्हें मछली ने निगल लिया और वह खुद अपने आप को धिक्कारने लग गये ।

فَالْتَمَتَهُ الْحُوتُ وَهُوَ مُدْمِرٌ ﴿۱۴۲﴾

१४३. तो अगर वह तस्वीह करने वालों में से न होते ।

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ﴿۱۴۳﴾

१४४. तो लोगों के उठाये जाने के दिन तक मछली के पेट में रहते ।

لَلَيْتَ فِي بَطْنِهَا إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿۱۴۴﴾

१४५. तो हम ने उसे समतल मैदान में डाल दिया तथा वह उस समय रोगी था ।

فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ﴿۱۴۵﴾

१४६. और उसके ऊपर छाया करने वाला एक लता वाला पेड़ हम ने उगा दिया ।

وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَقْطِينٍ ﴿۱۴۶﴾

१४७. और हम ने उन्हें एक लाख बल्कि उस से भी ज्यादा आदमियों की तरफ भेजा ।

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ زَيْدُونَ ﴿۱۴۷﴾

१४८. तो वे ईमान लाये और हमने एक मुहत् तक उन्हें सुख-सुविधा (ऐशो-आराम) अता की ।

فَأَمَّنُوا فَسَخَّطْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ﴿۱۴۸﴾

१४९. उन से पूछिये कि क्या आप के रब की तो पुत्रियाँ हैं और उन के पुत्र हैं?

فَأَسْأَلْتَهُمُ الْبَنَاتُ وَاللَّهُمُّ الْبَنُونَ ﴿۱۴۹﴾

१५०. या ये उस समय मौजूद थे जब हम ने फरिश्तों को नारियाँ पैदा किया ।

أَمْ حَقَّاقًا الصَّيْئَةَ إِنَّا نَاكٍ وَأَهمُّ شُهَدَاؤُونَ ﴿۱۵۰﴾

वही काम कर रहे हो जो उन्होंने किया तो फिर तुम अल्लाह के अजाब से क्योंकर महफूज रहोगे?

† يَقْطِينٍ (यकतीन) हर उस लता को कहते हैं जो अपने तने पर खड़ी नहीं होती, जैसे लौकी, कहु की लता, यानी उस चटियल भूमि में जहाँ पेड़ था न घर, एक छायादार लता उगाकर उनकी रक्षा की ।

१५१. खबरदार रहो कि ये लोग अपनी मनगढ़न्त से कह रहे हैं।

إِنَّا أَنهَمُ قَمِنْ إِلَهُمَّ لَيَقُولُونَ ﴿۱۵۱﴾

१५२. कि अल्लाह की औलाद हैं, बेशक ये केवल झूठे हैं।

وَكذَّ اللهُ وَأَنهَمُ لَكَذِبُونَ ﴿۱۵۲﴾

१५३. क्या अल्लाह (तआला) ने अपने लिए पुत्रियों को पुत्र पर तरजीह (प्राथमिकता) दी?

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ﴿۱۵۳﴾

१५४. तुम्हें क्या हो गया है, कैसे हुक्म लगाते फिरते हो?

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَعْلَمُونَ ﴿۱۵۴﴾

१५५. क्या तुम इतना भी नहीं समझते?

فَلَا تَذَكَّرُونَ ﴿۱۵۵﴾

१५६. या तुम्हारे पास (उसका) कोई वाजेह सुबूत है?

أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُّبِينٌ ﴿۱۵६﴾

१५७. तो जाओ अगर सच्चे हो तो अपनी ही किताब ले आओ।

فَأْتُوا بِكِتَابِكُمْ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿۱۵७﴾

१५८. और उन लोगों ने तो अल्लाह के और जिन्नात के बीच भी नाता क्रायम किया है, और जबकि जिन्नात खुद इल्म रखते हैं कि वे (इस अक्रीदा के लोग अजाब के सामने) पेश किये जायेंगे।

وَجَعَلُوا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْعِصَةِ سَبْطًا وَقَدْ عَلِمَتْ الْعِصَةُ أَنَّهُمْ لَحَاضِرُونَ ﴿۱۵८﴾

१५९. जो कुछ ये (अल्लाह के बारे में) बयान कर रहे हैं उस से अल्लाह (तआला) पाक है।

سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿۱۵९﴾

१६०. सिवाय अल्लाह (तआला) के पाक बन्दों के।

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلِصِينَ ﴿۱६०﴾

१६१. यक्रीन करो कि तुम सब और तुम्हारे (झूठे) देवता।

وَأَنهَمُ وَمَا تَعْبُدُونَ ﴿۱६१﴾

१६२. किसी एक को भी बहका नहीं सकते।

مَا أَنْتُمْ عَلَيْهِمْ بِفِتْرَيْنَ ﴿۱६२﴾

१६३. सिवाय उन के जो नरक में जाने वाले ही हैं।

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِي الْجَحِيمِ ﴿۱६३﴾

१६४. (फरिश्तों का कौल है) कि हम में से हर एक का मुकाम मुकरर है।

وَمَا وَكَّلْنَا لَهُمْ مَقَامًا مُّمْلَأًا ﴿۱۶۴﴾

१६५. और हम (अल्लाह की इताअत में) पकितबद्ध (सफ़वस्ता) खड़े हुए हैं।

وَرِثًا لَّنَحْنُ الصَّافُونَ ﴿۱۶۵﴾

१६६. और उसकी तस्बीह (पवित्रता का गान) कर रहे हैं।^१

وَرِثًا لَّنَحْنُ الْمُسَبِّحُونَ ﴿۱۶۶﴾

१६७. और काफिर तो कहा करते थे।

وَأَن كَانُوا يَقُولُونَ ﴿۱۶۷﴾

१६८. कि अगर हमारे पास अगले लोगों का जिक्र (स्मृति) होता।

لَوْ أَن عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْأَوَّلِينَ ﴿۱۶۸﴾

१६९. तो हम भी अल्लाह के चुने हुए बन्दे हो जाते।^२

لَكِنَّا عِبَادُ اللَّهِ الْمُخْلَصُونَ ﴿۱۶۹﴾

१७०. लेकिन फिर इस (कुरआन) से कुफ्र (इंकार) कर गये तो जल्द ही जान लेंगे।^३

فَكُفِّرُوا بِهِ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿۱۷۰﴾

१७१. और बेशक हमारा वादा पहले ही अपने रसूलों के लिए लागू हो चुका है।

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِأُولَئِنَّا السُّرُولِينَ ﴿۱۷۱﴾

१७२. कि बेशक वे लोग ही मदद किये जायेंगे।

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ﴿۱۷۲﴾

१७३. और हमारी सेना गालिब (और श्रेष्ठतम) रहेगी।

وَأَن جُنْدَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿۱۷۳﴾

१७४. अब आप कुछ दिनों तक इन से मुंह फेर लीजिए।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿۱۷۴﴾

^१ मुराद यह है कि फरिश्ते भी अल्लाह की मखलूक और उस के खास गुलाम हैं जो हर समय उसकी इबादत और उसकी तस्बीह और तक्रदीस (पवित्रतागान) में लीन रहते हैं, न कि वह अल्लाह की पुत्रियां हैं जैसा कि मिश्रणवादी (मुचरेकीन) कहते हैं।

^२ ذِكر (स्मृति) से मुराद कोई अल्लाह की किताब या पैगम्बर है, यानी मूर्तिपूजक पाक कुरआन के नाजिल होने से पहले कहा करते थे कि हमारे पास भी कोई आसमानी किताब होती जिस तरह पहले लोगों पर धार्मिक किताब तौरात वगैरह नाजिल हुई, या कोई पैगम्बर या सचेत (आगाह) करने वाला हमें शिक्षा देने वाला होता तो हम भी अल्लाह के खालिस बंदे बन जाते।

^३ यह चेतावनी और धमकी है कि इस झुठलाने का बुरा अंजाम जल्द उनको मालूम हो जायेगा।

१७५. और उन्हें देखते रहिए, और ये भी आगे चलकर देख लेंगे।

وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿۱۷۵﴾

१७६. क्या ये हमारी यातनाओं की जल्दी मचा रहे हैं?

أَفِعْدَا إِنَّا سَتَجِدُونَ ﴿۱۷۶﴾

१७७. (सुनो!) जब हमारा अजाब उनके मैदानों में आयेगा उस समय उनकी जिन को सावधान (आगाह) कर दिया गया था ' बड़ी बुरी सुबह होगी।

وَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ ﴿۱۷۷﴾

१७८. और आप कुछ समय तक उनका ध्यान छोड़ दीजिए।

وَلَوْ أَنَّ عَنْهُمْ مَتَىٰ حِينٌ ﴿۱۷۸﴾

१७९. और देखते रहिए यह भी अभी-अभी देख लेंगे।

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُونَ ﴿۱۷۹﴾

१८०. पाक है आप का रव जो बड़ी इज्जत वाला है, हर उस बात से जो (मूर्तिपूजक) कहा करते हैं।^१

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿۱۸۰﴾

१८१. और पैगम्बरों पर सलाम है।

وَسَلِّمْ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿۱۸۱﴾

१८२. और सभी तारीफें अल्लाह सारी दुनिया के रब के लिए हैं।^२

وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿۱۸۲﴾

^१ जब मुसलमान खैबर फतह (विजय) करने गये तो यहूदी उन्हें देखकर घबरा गये, जिस पर नबी ﷺ ने भी अल्लाह अकबर, (अल्लाह बड़ा है) कह कर फरमाया :

(غَرِبْنَا خَيْرًا، إِنَّا إِذَا نَزَلْنَا بِسَاحَةِ قَوْمٍ لَسَاءَ صَبَاحُ الْمُنْذَرِينَ) (सहीह बुखारी, किताबुस्सलात, बाब सा युजकरू फिल फखिजे, किताबुल जिहाद बाब गजबति खैबर)

^२ इस में उन कमियों और ऐव से अल्लाह के पाक होने की चर्चा है जो मुश्रिक अल्लाह के लिए बयान करते हैं, जैसे उसकी औलाद या उसका कोई साझी है, यह बुराई बन्दों में है और औलाद व साझीदारों की जरूरत भी उन्हीं को है, अल्लाह इन सब बातों से बहुत बड़ा और ऊँचा है, क्योंकि वह बेनियाज है, उसे किसी औलाद व साझी की जरूरत नहीं।

^३ यह बन्दों को समझाया जा रहा है कि अल्लाह ने तुम पर एहसान किया है, रसूल भेजे, शरीअत नाजिल की और पैगम्बरों ने तुम्हें अल्लाह का पैगाम सुनाया, इसलिए तुम अल्लाह का शुक्रिया अदा करो। कुछ कहते हैं कि काफिरों का सत्यानाश करके ईमानवालों और रसूलों को बचाया, उस पर अल्लाह के आभारी (शुक्रिया) बनो। حمد (हम्द) का मतलब है बड़ाई के इरादे से तारीफ, गुणगान (तौसीफ) और महानता (अजमत) का बयान करना।

सूरतु साद-३८

सूर: साद मक्का में नाजिल हुई, इसमें अट्ठासी आयतें और पांच रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. साद, इस नसीहत वाले कुरआन की क्रमः!

२. बल्कि काफिर घमंड और विरोध (मुखालफत) में पड़े हुए है।^१

३. हम ने इन से पहले भी बहुत सी कौमों को नाश कर डाला, उन्होंने हर तरह की चीख-पुकार की लेकिन वह समय छूटकारे का न था।

४. और काफिरों को इस बात पर ताज्जुब हुआ कि उन्हीं में से एक डराने वाला आ गया, और कहने लगे कि यह जादूगर और झूठा है।

५. क्या इस ने इतने सारे देवताओं (मावूदों) को एक ही देवता कर दिया, हकीकत में यह बड़ी अजीब बात है।

६. उन के सरदार यह कहते हुए चले कि जाओ अपने देवताओं (मावूदों) पर मजबूत रहो, बेशक इस बात में कोई मकसद (स्वार्थ) है।

७. हम ने तो यह बात पुराने धर्मों में भी नहीं सुनी,^२ कुछ नहीं, यह तो केवल मनगढ़न्त है।

سُورَةُ الصَّادَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

ص وَالْقُرْآنِ ذِي الْبَيِّنَاتِ ①

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ②

كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ فَنَادَوا وَكَلَّتِ
جَيْنَ مَوَاقِبٍ ③

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكَافِرُونَ
هَذَا سِحْرٌ كَذَّابٌ ④

أَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ أُلُوهًا وَاجِدًا إِنَّا هَذَا نَحْنُ عُجَابٌ ⑤

وَأَنْطَلَقَ الْبَلَاءُ مِنْهُمْ أَنْ أَمْشُوا وَأَصْبُرُوا عَلَىٰ آلِهَتِكُمْ
إِنَّ هَذَا لَنَقْوٌ يُرَادُ ⑥

مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْأُمَمِ الْأُولَىٰ إِنَّ هَذَا
لِلْأَخْيَارِ ⑦

^१ यानी यह कुरआन तो निश्चय (यकीनन) ही शक से पाक और उन के लिए नसीहत है जो नसीहत हासिल करें, हाँ काफिरों को इस से फायदा इसलिए नहीं पहुँच सकता कि उन के दिमाग में अहंकार (तकबुर) और घमंड भरा हुआ है और दिलों में मुखालफत और दुश्मनी। عزत (इज़्जत) का मतलब होता है सच की मुखालफत में अकड़ना।

^२ पिछले धर्म से मुराद या तो कुरैब ही का अपना धर्म है या फिर इसाई धर्म, यानी यह जिस तीहीद (एकेश्वरवाद) की दावत दे रहा है उसके धारों में तो हम ने किसी धर्म में नहीं सुना।

८. क्या हम सभी में से उसी पर (अल्लाह की) बह्यी नाज़िल की गई है? हकीकत में यह लोग मेरी प्रकाशना (बह्यी) की तरफ से शक में हैं; बल्कि (ठीक यह है कि) उन्होंने मेरे अजाब का मजा अभी चखा ही नहीं।

९. क्या उन के पास तेरे मालिब देने वाला रब की रहमत के खजाने हैं।

१०. या आकाश और धरती और उन के बीच की हर चीज़ का राज्य (मुल्क) उन्हीं का है, तो फिर ये रस्सियाँ तानकर चढ़ जायें।

११. यह भी (विशाल) सेनाओं में से पराजित (छोटी सी) सेना है।

१२. उन से पहले नूह की क्रौम और आद और कीलों वाले फिरऔन^१ ने झुठलाया था।

१३. और समूदियों और लूत की क्रौम ने और जंगल के रहने वालों ने भी, यही (विशाल) सेनायें थी।

१४. इन में से एक भी ऐसा न था जिस ने रसूलों को झुठलाया न हो, तो मेरा अजाब उन पर साबित हो गया।

أَنْزِلَ عَلَيْهِ الْإِسْرَارُ مِنْ بَيْنَ يَدَيْ بَلِّغْهُمْ فِي شَأْنِهِمْ
مَنْ ذَكَرْنِي ۚ بَلِّغْ لِقَائِي ذِكْرًا وَعَذَابًا ۝ ۸

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۝ ۹

أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
فَلْيَرْفَعُوا فِي الْأَسْبَابِ ۝ ۱۰

جُنْدًا مِمَّا هُنَّائِكَ مَهْرُومِينَ الْأَحْزَابِ ۝ ۱۱

كَلِمَاتٍ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَرُؤُوسُ
دُونِ الْأَوْتَادِ ۝ ۱۲

وَأَسْمَاءُ قَوْمِ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لَيْكَةِ
أُولَئِكَ الْأَحْزَابُ ۝ ۱۳

إِنْ كُنَّ إِلَّا كَذِبَ الرُّسُلِ فَحَقَّ عِقَابٌ ۝ ۱۴

१ यानी उनका इंकार इस वजह से नहीं है कि उन्हें मोल्द की सच्चाई का इल्म नहीं, या आप के अच्छे शकर (सुबोध) से उन्हें इंकार है बल्कि यह उस प्रकाशना (बह्यी) के बारे में ही शक और झुठला में ग्रस्त (मुबतेला) है जो आप पर नाज़िल हुई, जिस में सब से खुली तौहीद (अद्वैत) की दावत है।

२ फिरऔन को खूंटों वाला इसलिए कहा कि वह मालिब जब किसी पर क्रोधित (मजबनाक) होता तो उस के हाथों, पैरों और सर में कीलें गाड़ देता, यानी कीलों से जिस तरह किसी चीज़ को मजबूत कर दिया जाता है उसी तरह उसकी भारी सेना और उस के पैरोकार भी, उस के मुल्क की ताकत और मजबूती का सबब थे।

१५. और उन्हें केवल एक तेज चीख का इतेजार है, जिस में कोई रुकावट (और ढील) नहीं है।^१

१६. और (उन्होंने) कहा कि हे हमारे रब! हमारा लेखा-जोखा तू हमें हिसाब के दिन से पहले ही अता कर दे।^२

१७. आप उनकी बातों पर सब्र करें और हमारे बंदे दाऊद को याद करें जो बड़ा शक्तिशाली था, बेशक वह बहुत नौटने वाला था।

१८. हम ने पहाड़ों को उस के अधीन (ताबे) कर दिया था कि उस के साथ सुबह और शाम को तस्वीह करें।

१९. और (उड़ते) पक्षियों को भी जमा होकर, सब के सब उस के अधीन होते।^३

२०. और हम ने उस के मुल्क को मजबूत कर दिया था, और उसे हिक्मत अता किया था और बात का फ़ैसला (सुझा दिया था)।

२१. और क्या तुझे झगड़ा करने वालों की खबर मिली जबकि वे दीवार फाँदकर मेहराब

وَمَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مِّنْ أَمْرِهَا
مِنْ قَوَائِمٍ ۝۱۵

وَكَاذِبًا رَبَّنَا حَقَّبْنَا بِكُنُوزِنَا أَعْيُنَنَا
يَوْمَ الْحِسَابِ ۝۱۶

إِصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَلَا تُؤَدَّبُنَا دَاوُدَ
ذَ الْأَيْدِي ۝ إِنَّهُ آتَابٌ ۝۱۷

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحُنَّ بِالصُّبْحِ
وَالْإِشْرَاقِ ۝۱۸

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلٌّ لَّهٗ آتَابٌ ۝۱۹

وَكُنُوزِنَا مُنْكَدًا وَأَنزَلْنَا الْحِكْمَةَ وَفَصَّلَ الْخِطَابِ ۝۲۰

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْغَضَبِيَّةِ إِذْ أَتَوْهُا بِالنَّجْوَى
وَالْحَرَابِ ۝۲۱

^१ दूध दुहने वाला एक बार कुछ दूध दुहकर बच्चे को ऊँटनी या गाय, भैस के पास छोड़ देता है ताकि उस के दूध पीने से धनों में दूध उतर आये, फिर थोड़े समय बाद बच्चे को ताकत के जोर पर पीछे हटाकर खुद दूध दुहना शुरू कर देता है, यह दो बार दूध दुहने के बीच जो फर्क है यह فراق (फवाक) कहलाता है, यानी सूर फूँकने के बाद इतना भी मौका नहीं मिलेगा बल्कि सूर (नरसिंघा) फूँकने की देर होगी कि क्रयामत का भूकम्प (जलजला) शुरू हो जायेगा।

^२ كُنُوز (कित्त) का मतलब है, हिस्सा, मतलब यहाँ आमालनामा या लेखा-जोखा है, यानी हमारे आमालनामा के ऐतवार से हमारे हिस्सा में अच्छी व बुरी सजा जो भी हो हिसाब का दिन आने से पहले हमें दुनिया ही में दे दो।

^३ यानी पौ फटने के समय और आखिर दिन को पहाड़ भी दाऊद के संग तस्वीह में लीन होते और उड़ते पक्षी भी जबूर का पाठ सुनकर हवा में ही जमा हो जाते और उन के साथ तस्वीह (पवित्रतागान) करते।

में (इबादत की जगह पर) आ गये?¹

२२. जब ये दाऊद के पास पहुँचे तो ये उन से डर गये, (उन्होंने) कहा डरिये नहीं, हमारा आपसी झगड़ा है, हम में से एक ने दूसरे पर जुल्म किया है, तो आप हमारे बीच इसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दीजिए और नाइसाफी न कीजिए और हमें सीधा रास्ता बता दीजिए।

२३. (सुनिये!) यह मेरा भाई है² इस के पास निन्तानव भेड़ें हैं और मेरे पास एक ही है, लेकिन यह मुझ से कह रहा है कि अपनी यह एक भी मुझे दे दे और मुझ पर बात में बड़ा सख़्त मुआमला करता है।

२४. (आप ने) कहा, उस का अपनी भेड़ों के साथ तेरी एक भेड़ शामिल करने का सवाल जरूर तेरे ऊपर एक जुल्म है, और ज़्यादातर भागीदार और साझीदार (ऐसे ही होते हैं कि) एक-दूसरे पर जुल्म और नाइसाफी करते हैं, सिवाय उन के जो ईमान लाये और जिन्होंने नेकी के काम किये और ऐसे लोग बहुत ही कम हैं³ और दाऊद (عليه السلام) जान गये कि हम ने उनकी परीक्षा ली है फिर तो अपने रब से तौबा करने लगे और आजिजी के साथ गिर पड़े,⁴ और

إِذْ دَخَلُوا عَلَىٰ دَاوُدَ فَفَتَحَ لَهُمْ دَاوُدُ الْأَمْرَ فَأَلَا تَعْظُمُ عَلَيْهِمْ
بَقِي بَعْضًا عَلَىٰ بَعْضٍ فَكَلَّمَهُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ
وَلَا تَكْطُطُ وَاهِدًا إِلَىٰ سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۝۲۲

إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ نَعْجَةً
وَاحِدَةً فَقَالَ الْفُلَيْزِيُّهَا وَعَزَّيْنِي فِي الْخِطَابِ ۝۲۳

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَىٰ نِعَاجِهِ
وَلَئِنْ كَشَرْنَا بِكَ مِنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِيَنَّ بِعَصْمِهِ عَلَىٰ بَعْضٍ
إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَلِمَاتُ الصَّالِحِينَ وَكَلِيمٌ تَأْمُرُكَ أَنْ
دَاوُدُ إِنَّمَا فُتِنْتَهُ فَاسْتَغْفِرْ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ۝۲۴

¹ ^{مِعْرَابٌ} (मेहराब) से मुराद वह कमरा है जिस में सब से अलग होकर एकाग्रता (एकसूई) के साथ अल्लाह की इबादत करते थे, दरवाजे पर दरवान होते ताकि कोई भीतर जाकर इबादत में रुकावट न हो, झगड़ा करने वाले पीछे से दीवार फ़ँद कर भीतर आ गये।

² भाई से मुराद यहाँ दीनी भाई या व्यवसाय (तिजारत) का साझी है या दोस्त है, सब को भाई कहना सही है।

³ हाँ, इस अख़लाक़ी (नैतिक) ऐब से ईमानवाले महफूज रहते हैं, क्योंकि उन के दिलों में अल्लाह का डर होता है और वह नेकी पर जमे होते हैं, इसलिए वह दूसरों पर जुल्म और दूसरों के माल को हड़पने की कोशिश नहीं करते, लेकिन इस स्वभाव (अख़लाक) के लोग कम ही होते हैं।

⁴ ^{وَخَرَّ رَاكِعًا} का मुराद यहाँ सज्दे में गिर पड़ना है।

(पूरी तरह से) मुतबज्जिह हो गये।

२५. तो हम ने भी उनकी यह (बुराई) माफ कर दिया, बेशक वह हमारे करीब बड़े ऊँचे मुकाम और सब से अच्छे ठिकाने वाले हैं।

२६. हे दाऊद! हम ने तुम्हें धरती में खलीफा बना दिया तो तुम लोगों के बीच इंसाफ के साथ फैसला करो और अपने मन की इच्छाओं की अनुसरण (पैरवी) न करो, बल्कि वह तुम्हें अल्लाह के रास्ते से हटा देगी। बेशक जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटक जाते हैं उन के लिए सख्त अजाब हैं, इसलिए कि उन्होंने हिसाब के दिन को भुला दिया है।

२७. और हम ने आकाश और धरती और उन के बीच की चीजों को बेकार (और विला वजह) पैदा नहीं किया।^१ यह शक तो काफिरों का है, तो काफिरों के लिए आग की खराबी है।

२८. क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाये और नेकी के काम किये, उन के बराबर कर देंगे जो (रोज) धरती पर फसाद मचाते रहे, या परहेजगारों को बदकारों जैसा कर देंगे?

२९. यह मुबारक किताब है जिसे हम ने आप की तरफ इसलिए नाज़िल किया है कि लोग इसकी आयतों पर ध्यान दें और ख्याल करें और अक्लमंद इस से नसीहत हासिल करें।

३०. और हम ने दाऊद को सुलैमान (नाम का बेटा) अता किया जो बड़ा अच्छा बन्दा था और बड़ा ध्यान लगाने वाला था।

فَقَرَرْنَا لَهُ ذَلِكَ وَإِن لَّهُ عِندَنَا لَوْطِي
وَحُسْن مَّآبٍ ۝۲۵

يٰۤاٰدۤا۟ وَاٰدۤا۟ اِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِى الْاَرْضِ فَاَحْكُم بَيْنَ
النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ يَظُنُّونَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ يَّمَّا تَسُوۡا يَوْمَ الْحِسَابِ ۝۲۶

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰۤاءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَاۤ اِلَّا لَعَلَّ
ذٰلِكَ يَتَّقُوا ۝۲۷
وَمِنَ النَّارِ ۝۲۷

اَمْزَجَعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ
فِى الْاَرْضِ اَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْمُفْسِدِيْنَ ۝۲۸

كِتٰبٍ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوۡا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ
اُولُوۡا الْاَلْبَابِ ۝۲۹

وَوَهَبْنَا لِدٰۤا۟دَ سُلَيْمٰنَ ذِيۡنِعْمَ الْعَبْدِ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝۳۰

^१ बल्कि एक खास मकसद के लिए पैदा किया है और वह यह कि मेरे बन्दे मेरी इबादत करें। जो ऐसा करेगा उसे अच्छा बदला अता करूंगा और जो मेरी इबादत और फरमावरी से मुंह फेरेगा, उस के लिये नरक का अजाब है।

३१. जब उन के सामने शाम के समय तेज चलने वाले खास घोड़े पेश किये गये ।

إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِمُ بِالْحَمِيقِ الْخُفَاتُ الْجِيَادُ ۝ (31)

३२. तो कहने लगे कि मैंने अपने रब की याद पर इन घोड़ों के प्रेम को प्राथमिकता (तरजीह) दी यहाँ तक कि सूरज डूब गया ।

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي حَتَّى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝ (32)

३३. इन घोड़ों को दोबारा मेरे सामने लाओ, फिर पिंडलियों और गरदनो पर हाथ ढेरने लगे ।

رُدُّوهُمْ عَلَيَّ طَفِيفٍ مَسْطًا بِالسُّيُوفِ وَالرِّعَابِ ۝ (33)

३४. और हम ने सुलैमान की परीक्षा ली और उन के सिंहासन पर एक धड़ डाल दिया, फिर वह ध्यानमग्न (मुतवज्जिह) हो गये ।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ۝ (34)

३५. कहा कि हे मेरे रब मुझे माफ़ कर और मुझे ऐसा मुल्क अता कर जो मेरे सिवाय किसी (ईसान) के लायक न हो, तू बड़ा ही दाता है ।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا يَنْكِبُنِي لِأَحَدٍ مِنْ غَيْرِي إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝ (35)

३६. तो हम ने हवा को उन के वश में कर दिया, वह आप के हुक्म से जहाँ आप चाहते नहीं से पहुँचा दिया करती थी ।^१

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ وَأَنْعَمْنَا بِهِ عَلَيْهِ كَيْفَ أَسَابَ ۝ (36)

^१ यह परीक्षा (इम्तेहान) क्या थी, कुर्सी पर डाला गया धड़ किस चीज का था और इस का मतलब क्या है? इसकी भी कोई तफ़सील क़ुरआन व हदीस में नहीं मिलती। हाँ, कुछ भाष्यकारों (मुफ़सि़रों) ने सहीह हदीस से साबित एक कहानी से इस को सम्बन्धित किया है, जो यह है कि हज़रत सुलैमान ने एक बार कहा कि मैं आज रात अपनी सभी बीबियों से (जिन की तादाद ७० या ९० थी) संभोग करूँगा ताकि उन से बहादुर घुड़सवार पैदा हों जो अल्लाह के रास्ते में धर्मयुद्ध (जिहाद) करें और इस पर إِنْ شَاءَ اللَّهُ (अगर अल्लाह ने चाहा) नहीं कहा (यानी केवल अपनी युक्ति (सलाहियत) पर पूरा भरोसा कर लिया)। नतीजा यह हुआ कि सिवाय एक के कोई पत्नी गर्भवती (हामला) नहीं हुई और गर्भवती बीबी ने भी जो बच्चा जना वह भी अपूर्ण यानी आधा था। नबी ﷺ ने कहा, अगर सुलैमान إِنْ شَاءَ اللَّهُ कह लेते तो सब बहादुर पैदा होते (सहीह बुखारी, किताबुल अम्बिया, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबुल इस्तिस्ना)। इन व्याख्याकारों (मुफ़सि़रों) के ख़्याल में إِنْ شَاءَ اللَّهُ न कहना या केवल अपने तरीके पर मुत्मईन होना, यही परीक्षा हो जिस में हज़रत सुलैमान रास्त (मुक्तेला) हुए और कुर्सी पर डाला जाने वाला बच्चा यही नाक़िस बच्चा हो وَاللَّهُ أَعْلَمُ।

^२ यानी हम ने सुलैमान की यह दुआ सुन ली और ऐसा मुल्क अता किया कि हवा भी उन के अधीन (मातहत) थी। यहाँ हवा को कोमलता (धीमीगति) से चलती बताया, जबकि सूर:

३७. और (शक्तिशाली) जिन्नात को भी (उन के अधीन कर दिया) और हर घर बनाने वाले को और डुबकी लगाने वाले को ।

وَالطَّيِّبِينَ كُلَّ بَنَّاءٍ وَغَوَّاصٍ ﴿۳۷﴾

३८. और दूसरे (जिन्नात) को भी जो जंजीरों में जकड़े रहते ।

وَالْحَبْرِينَ مَقْرُونِينَ فِي الْأَسْجَادِ ﴿۳۸﴾

३९. यह है हमारा वरदान (अतिया) अब तू एहसान कर या रोक रख कुछ हिसाब नहीं ।

هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۳۹﴾

४०. और उन के लिए हमारे पास बड़ी कुर्वत (निकटता) है और बहुत अच्छा ठिकाना है ।

وَلَكُمْ لَنَا عِنْدَنَا الزُّنُوفُ وَحَسَنَ مَا يَبْئُرُ ﴿۴۰﴾

४१. और हमारे बन्दे अय्यूब की (भी) चर्चा कर जबकि उस ने अपने रब को पुकारा कि मुझे शैतान ने तकलीफ और दुख पहुँचाया है ।

وَالذِّكْرُ عِنْدَنَا الْأُتُوبُ إِذْ نَادَى رَبَّهُ أَنِّي مَسْقِي
الشَّيْطَانُ يَصْهَبُ وَعَدَابٍ ﴿۴۱﴾

४२. अपना पैर मारो, यह गुस्ले का ठंडा और पीने का पानी है ।

أَرْضُ يَرْجُلِكَ هَذَا مُخْتَلِسٌ يُارِدُكَ وَشَرَابٍ ﴿۴۲﴾

४३. और हम ने उसे उसका पूरा परिवार अता किया, बल्कि उतना ही और भी उसी के साथ अपनी खास रहमत से, और अक्लमंदों की शिक्षा के लिए ।

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُمْ مَعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا
وَوَكْرُؤًى لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿۴۳﴾

४४. और अपने हाथ में तीलियों की एक झाड़ लेकर मार दे और कसम न तोड़, सच तो यह

وَكُحْلٍ بَيْنَكَ وَبَيْنَنَا فَكُحِّبْ بِهِ وَلَا تُحَنِّتْ لِنَا
وَجِدْنَاهُ صَابِرًا إِذْ يَبُورُ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ﴿۴۴﴾

अम्बिया आयत नं० ८१ में उसे तीव्र और तेज कहा । इसका मतलब यह है कि हवा की स्वाभाविक (आम) गति तेज है किन्तु सुलैमान के लिए उसे धीमी कर दिया गया या ज़रूरत के ऐतबार से वह कभी तेज होती कभी धीमी जैसे सुलैमान चाहते । (फतहल कदीर)

१ हज़रत अय्यूब (عزير) का रोग और उस में उनका सब मशहूर है, जिस के अनुसार अल्लाह तआला ने परिवार और माल को तबाह किया और रोग के जरिये उनका इम्तेहान लिया, जिस में वह कई साल ग्रस्त (मुन्तेला) रहे ।

२ रोग के दिनों में सेविका पत्नी से किसी बात पर नाराज़ होकर हज़रत अय्यूब ने उसे सौ कोड़े मारने की कसम खाली थी, स्वस्थ (सेहतयाब) होने के बाद अल्लाह तआला (परमेश्वर) ने कहा कि सौ तिकों के झाड़ु से एक बार उसे मार दे, तेरी कसम पूरी हो जायेगी ।

है कि हम ने उसे बड़ा सब वाला बन्दा पाया, वह बड़ा नेक बन्दा था, और बड़ा ही ध्यान करने वाला ।

४५. और हमारे बंदों इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब का भी (लोगों से) बयान करो जो हाथों और अख़ों वाले थे ।

४६. हम ने उन्हें एक खास बात यानी आखिरत की याद के साथ खास तौर से सम्बन्धित कर दिया था ।

४७. और यह सभी हमारे करीब चुने हुए और सब से अच्छे लोगों में थे ।

४८. और इस्माईल, यसअ और जुलक़िफ़ल का भी बयान कीजिए, यह सब से अच्छे लोग थे ।

४९. यह नसीहत है, और यकीन करो कि नेक लोगों के लिए सब से अच्छी जगह है ।

५०. यानी हमेशा रहने वाली जन्नत जिन के दरवाज़े उन के लिए खुले हुए हैं ।

५१. जिन में (चैन से) तकिया लगाये बैठे हुए तरह-तरह के मेवे (फल) और कई तरह की पीने वाली चीज़ों की मांग कर रहे हैं ।

५२. और उन के पास नीची निगाहों वाली बराबर उम्र वाली हूरें होंगी ।

५३. यह है जिसका वादा तुम से हिसाब के दिन के लिए किया जाता था ।

وَلَا تُرْجَىٰ نَارًا يُرْوَاهُمْ وَأَسْحَىٰ وَيَعْقُوبُ أُولَى الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ﴿٤٥﴾

إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ذُكِّرَىٰ الدَّارِ ﴿٤٦﴾

وَأَنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ﴿٤٧﴾

وَأُولُو الْأَرْسَابِ وَالْيَسَعَ وَذَا الْقُلْفِ وَالْكَافِرِ ﴿٤٨﴾

هَذَا ذُكِّرُوا وَلَئِن يَسْتَفْتِينَ بِسُنَنِ مَا يُبِ

جَنَّتْ عَدْنٍ مُّفْتَحَةٌ لَهُمُ الْأَبْوَابُ ﴿٥٠﴾

مُتَكِبِينَ فِيهَا يُدْعَوْنَ فِيهَا بِفَاكِهَةِ كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ﴿٥١﴾

وَعِنْدَهُمْ حُصْرُ الْظُرْفِ الْأَوَّابُ ﴿٥٢﴾

هَذَا مَا وَعَدُونَا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٥٣﴾

1 यानी जिनकी निगाहें अपने पति से आगे नहीं जायेंगी । यह अَرْب का बहुवचन (जमा) है, बराबर उम्र या लगातार जीनत और हुस्न से सुशोभित मुजव्वन । (फतहल कदीर)

५४. निश्चय ही यह रिजक हमारा (खास) उपहार (इंआम) है जिनका कभी अन्त ही नहीं।¹

५५. यह तो हुआ बदला, (याद रखो कि) सरकशों के लिए बड़ी बुरी जगह है।

५६. नरक है जिस में वे जायेंगे, (आह!) कैसा बुरा बिस्तर है।

५७. यह है, तो उसे चखें, गर्म पानी और पीप।

५८. और कुछ दूसरी तरह की कई सजायें।

५९. यह एक समुदाय (मजमूआ) है जो तुम्हारे संग (आग में) जाने वाला है, उन के लिए कोई स्वागत नहीं, यही तो नरक में जाने वाले हैं।

६०. (वे) कहेंगे कि बल्कि तुम ही हो जिन के लिए कोई स्वागत नहीं, तुम ही ने तो इसे पहले ही से हमारे सामने ला रखा था, तो रहने की बड़ी बुरी जगह है।

६१. (वे) कहेंगे कि हे हमारे रब ! जिस ने उसे (कुफ्र की रीति) हमारे लिए सब से पहले निकाली हो, उस के हक में नरक की दोगुनी सजा कर दे।

६२. और (नरकवासी) कहेंगे कि क्या बात है कि वह लोग हमें दिखाई नहीं देते, जिनकी गिन्ती हम बुरे लोगों में करते थे।²

إِنَّ هَذَا لِرِزْقِنَا مَا لَهُ مِنْ نَفَاذٍ (54)

هَذَا لَطَوَائِفٌ لِلظَّالِمِينَ لَشَرِّ مَا يَبْ (55)

جَهَنَّمَ يَصَلُّونَهَا فَمَنْ الْيَهُادُ (56)

هَذَا لَقَلِيلٌ وَقُوَّةٌ حَيِيمٌ وَعَسَائِقُ (57)

وَأَحْرَمِينَ شَكْلِهِ أَرْوَاحُ (58)

هَذَا قَوْمٌ مَقْتَحِمٌ قَعْلُهُمْ لَا مَرْحَبًا بِهِمْ ط

إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ (59)

قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لَا مَرْحَبًا بِكُمْ ط أَنْتُمْ قَدْ مَسَّوْهُ لَنَا

فَيْسُ الْقَرَارِ (60)

قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا فَرِزْدَةً عَدَا بَابًا ضَعُفًا

فِي النَّارِ (61)

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ

مِنَ الْأَشْرَارِ (62)

¹ رِزْق (जीविका) का मतलब वरदान (अतिथ्या) है, और هذا (यह) से हर तरह की ऊपर बयान की गईं नेमतें और वह इज्जत-एहतेराम मुराद है जिन के जन्मत वाले मजे ले रहे होंगे। نَفَاذ का मतलब आखिर और बिना रुकावट है, यह नेमतें भी कभी न खत्म होने वाली और इज्जत-एहतेराम भी स्थाई (मुस्तकिल)।

² أَشْرَار (दुष्टों) से मतलब गरीब मुसलमान हैं, जैसे अम्मार, खब्बाव, सुहैब, बिलाल, सलमान (رضي الله عنهم) वगैरह। उन्हें मक्का के सरदार दुश्मनी से 'बुरे लोग' कहते थे, अब भी दुराचारी सच्चे लोगों और नेक लोगों को कट्टरपंथी, आतंक्रवादी और उग्रवादी जैसे उप नाम देते हैं।

६३. क्या हम ने ही उनका मजाक बना रखा था या हमारी आंखे उन से बहक गई हैं।

६४. यक्रीन करो कि नरकवासियों का यह झगड़ा जरूर ही होगा।

६५. कह दीजिए कि मैं तो केवल होशियार कर देने वाला हूँ और सिवाय एक अल्लाह जबरदस्त के दूसरा कोई इबादत (उपासना) के लायक नहीं।

६६. जो रब है आकाशों का और धरती का और जो कुछ उन के बीच है, वह जबरदस्त (महान) और बढ़ा माफ करने वाला है।

६७. (आप) कह दीजिए कि यह बहुत बड़ी खबर है।

६८. जिस से तुम मुंह फेर रहे हो।

६९. मुझे उन उच्च पद वाले फरिश्तों (की बातचीत) का तनिक भी इल्म ही नहीं जबकि वे तकरार कर रहे थे।

७०. मेरी तरफ सिर्फ यही बह्यी की जाती है कि मैं तो साफ तौर से सावधान (आगाह) कर देवे वाला हूँ।

७१. जब कि आप के रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से इंसान को बनाने वाला हूँ।

أَلَعَدَلْتُمْ سَخِرْنَا مِنْكُمْ إِنَّمَا أَنْتُمْ مُقْتُلُونَ 63

إِنَّ ذَلِكَ لَكُنَّ عِبْرَةً لِّأَهْلِ النَّارِ 64

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَأَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَأَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَأَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ 65

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ 66

قُلْ هُوَ رَبُّكُمْ عَظِيمٌ 67

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ لَمُحْضُونَ 68

مَا كَانُوا مِنِّي مِن قَبْلُ بِأَلَّاغِي 69

إِنِّي رَسُولٌ مِّنِّي وَإِنِّي أَنبَأُكُمْ أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ 70

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَأِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِيهِ نَفْسًا 71

1. ملائكة से मुराद फरिश्ते हैं, यानी वे किस बात पर बाद-विवाद (तकरार) कर रहे हैं मैं नहीं जानता? मुमकिन है इस तकरार से मुराद वह बातचीत है जो आदम की पैदाईश के समय हुई जैसा कि आगे इसकी चर्चा आ रही है।

2. यह कहानी इस से पहले सूर: बकरः, सूर: आराफ, सूर: हिज, सूर: बनी इस्राईल और सूर: कहफ में बयान हो चुकी है, अब यहाँ भी संक्षेप (मुक़्तसर) में बयान किया जा रहा है।

७२. तो जब मैं उसे ठीक-ठाक कर लूँ और उस में अपनी रूह फूँक दूँ तो तुम सब उस के सामने सज्दे में गिर जाना।^१

७३. तो सभी फरिश्तों ने सज्दा किया।

७४. लेकिन इब्लीस ने (नहीं किया) उस ने घमंड किया और वह था काफिरों में से।

७५. (अल्लाह तआला ने) कहा कि हे इब्लीस तुझे उसको सज्दा करने से किस चीज ने रोका जिसे मैंने अपने हाथों से बनाया।^२ क्या तू कुछ तकब्बुर में आ गया है या तू ऊँचे दर्जे वालों में से है?

७६. (उस ने) जवाब दिया कि मैं इस से बेहतर हूँ, तूने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से बनाया है।^३

وَإِذَا سَأَوْنَهُمْ وَأَنذَرْتَهُمْ فَرِحُوا وَيَتُوبُوا
لَهُمْ سُجُودٌ ۝ ۷۲

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝ ۷۳

إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ ۷۴

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ
بِيَدَيَّ اسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِينَ ۝ ۷۵

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَارٍ وَخَلَقْتَهُ
مِنْ طِينٍ ۝ ۷۶

१ यानी वह आत्मा (रूह) जिसका मैं मालिक हूँ, मेरे सिवाय इसका कोई हक नहीं रखता, और जिसके फूँकते ही यह मिट्टी का पुतला जिन्दगी और ताकत से युक्त (बहराबर) हो जायेगा मानव जाति की श्रेष्ठता (फज़ीलत) और प्रतिष्ठा (इज़्जत) के लिए यही बहुत है कि उस में वह रूह फूँकी गई है जिसे अल्लाह ने अपनी रूह कहा है।

२ यह सज्दा (नतमस्तक होना) बुक्रिया या एहतेराम का सज्दा है इबादत का सज्दा नहीं। यह सम्मान का सज्दा पहले जायेज था, इसीलिए अल्लाह ने आदम के लिए फरिश्तों को इसका हुक्म दिया, अब इस्लाम में सम्मान का सज्दा भी किसी के लिए जायेज नहीं। हदीस में आता है, नबी ﷺ ने फरमाया : «अगर यह जायेज होता तो मैं पत्नी को हुक्म देता कि अपने पति को सज्दा करे।» (मिशकात, किताबुन्निकाह, बाबु इश्तिन्निसाए ससदर्थ (माखूज) तिर्मिजी, अलबानी ने कहा कि अपने गवाहों के सबब यह हदीस सही है)।

३ यह भी इंसान की इज़्जत और घड़ाई को जाहिर करने ही के लिए फरमाया नहीं तो हर चीज का विघाता अल्लाह ही है।

४ यानी शैतान ने अपने भ्रम में यह समझा कि आग मिट्टी से बेहतर है, हालाँकि यह सभी एक जैसे है, इन में से किसी को दूसरे पर प्रधानता (फज़ीलत) किसी सबब से ही हासिल होती है और यह सबब आग के सामने मिट्टी के हिस्से में आई है कि अल्लाह ने उसी से आदम को अपने हाथों से बनाया, फिर उस में अपनी रूह फूँकी, इस वजह से मिट्टी ही को आग के मुकाबिल इज़्जत और फज़ीलत हासिल है, इस के सिवाय आग का काम जलाकर राख बना देना है जबकि मिट्टी उस के खिलाफ कई तरह की पैदावार का जरिया है।

७७. कहा कि तू यहाँ से निकल जा, तू तिरस्कृत (मरदूद) हुआ।

७८. और तुझ पर क्रयामत के दिन तक मेरी लानत और धित्कार है।

७९. कहने लगा कि हे मेरे रवा! मुझे लोगों के उठ खड़े होने के दिन तक मुहलत अता कर।

८०. (अल्साह तआला ने) कहा कि तू मुहलत दिये जाने वालों में से है।

८१. मुकररर वक्त के दिन तक।

८२. कहने लगा, फिर तो तेरी इज्जत की कसम! मैं इन सब को जरूर भटकाऊंगा।

८३. सिवाय तेरे उन बन्दों के जो चुने हुए [और प्यारे (पाक)] हों।

८४. कहा कि सच तो यह है, और मैं सच ही कहा करता हूँ।

८५. कि तुझ से और तेरे सभी पैरोकारों से मैं (भी) नरक को भर दूंगा।

८६. कह दीजिए कि मैं इस पर तुम से कोई बदला नहीं मांगता और न मैं बनावट करने वालों में से हूँ।

८७. यह तो सभी दुनिया वालों के लिए सरासर नसीहत और जिक्र है।

८८. बेशक तुम इसकी हकीकत (बास्तविकता) को कुछ ही समय के बाद (सही ढंग से) जान लोगे।

قَالَ فَاصْرُخْ مِنْهَا وَأَنَّكَ نَجِيمٌ ﴿٧٧﴾

وَأَنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٧٨﴾

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٧٩﴾

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٨٠﴾

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٨١﴾

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لأَعْوِبَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٢﴾

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخَصَّصِينَ ﴿٨٣﴾

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقُولُ ﴿٨٤﴾

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّن تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٥﴾

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٨٦﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٨٧﴾

وَلَعَلَّكُمْ تَتَّعِبُونَ ﴿٨٨﴾

सूरतुज्जुमर-३९

सूर: जुमर* मक्का में नाजिल हुई और इस में पचहत्तर आयतें और आठ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. इस किताब का नाजिल करना अल्लाह (तआला) गालिब (प्रभावशाली) और हिक्मत वाले की तरफ से है।

२. बेशक हम ने इस किताब को हक के साथ आप की तरफ नाजिल किया है तो आप केवल अल्लाह ही की इबादत करें उसी के लिए दीन को खुद (खालिस) करते हुए।^१

३. सुनो! अल्लाह (तआला) ही के लिए खालिस इबादत करना है^२ और जिन लोगों ने उस के सिवाय औलिया बना रखे हैं (और कहते हैं) कि हम इनकी इबादत केवल इसलिए करते हैं कि यह (बुजुर्ग) अल्लाह के करीब हम को पहुंचा

سُورَةُ الزُّمَرِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

۱ سَمِیْرٌ اَلْکِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِیْزِ الْحَکِیْمِ ۱

۲ اِنَّا اَنْزَلْنٰ اَیْکَ الْکِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاَعْبُدِ اللّٰهَ

مُخْلِصِیْنَ لَهٗ الدِّیْنَ ۲

۳ اَللّٰهُ الَّذِیْنَ الْعٰلَمِیْنَ وَالَّذِیْنَ اٰتٰهُنَّ مِنْ دُوْنِہِ

اَوْلِیَاءَ مَا یَعْبُدُوْنَہُمْ اِلَّا لِقُرْبٰنِنَا اِلَى اللّٰهِ وَنُفِیْ

۴ اِنَّا اللّٰهُ یَحْکُمُ بَیْنَهُمْ فِیْ مَا هُمْ فِیْہِ یَخْتَلِفُوْنَ ۴

۵ اِنَّا اللّٰهُ لَا یَهْدِیْ مَنْ هُوَ کٰفِرٌ ۵

* तफ़सीर सूर: ज़ुमर: हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह ﷺ हर रात सूर: वनी इसाईल और सूर: जुमर का पाठ (तिलावत) करते थे (सहीह तिर्मिजी में इसको अलबानी ने सहीह कहा है)।

१ यानी इस में तौहीद (अद्वैत) और रिसालत (दूतत्व), मआद (पुनर्जीवन) और हुक्म और अनिवार्य कर्तव्यों (फ़राइज़) को जो साधित किया गया है, वह सब सच है और इन्हीं के मानने और पैरवी करने में इंसान की मजात है।

२ दीन دین का मतलब यहाँ इबादत (आराधना) और इताअत है और इख़लास का मतलब सिर्फ अल्लाह की खुशी के लिए नेकी का काम करना है।

३ यह उसी इबादत को खालिस करने पर जोर दिया गया है, जिसका हुक्म इस के पहले की आयत में है कि इबादत और इताअत एक सिर्फ अल्लाह ही का हक है, न उसकी इबादत में किसी को साझी बनाना वैध (जायज़) है, न इताअत ही का उसके सिवा कोई हकदार है। हाँ, रसूल ﷺ की इताअत को खुद अल्लाह ही ने अपनी इताअत कहा है, अतः रसूल ﷺ का फ़रमावर्दार अल्लाह ही का फ़रमावर्दार है किसी दूसरे का नहीं, फिर इबादत में यह बात भी नहीं, इसलिए कि इबादत अल्लाह के सिवाय किसी बड़े से बड़े रसूल की भी जायज़ नहीं तो कहाँ आम इंसानों की, जिनको लोगों ने मनमानी अल्लाह के हुक्म का मालिक बना रखा है।
«اَللّٰهُ لَا یَهْدِیْ مَنْ هُوَ کٰفِرٌ ۵» «अल्लाह की तरफ से इस पर कोई दलील नहीं।»

दें, ये लोग जिस बारे में झिंतेलाफ कर रहे हैं उसका (इंसाफ वाला) फ़ैसला अल्लाह (तआला) खुद कर देगा, झूठे और नाशुके (लोगों) को अल्लाह (तआला) रास्ता नहीं दिखाता ।

४. अगर अल्लाह (तआला) का इरादा औलाद ही का होता तो अपनी मख्लूक (सृष्टि) में से जिसे चाहता चुन लेता (लेकिन) वह तो पाक है, वह वही अल्लाह (तआला) है एक और ताक़्तवाला

५. बड़े अच्छे तरीके से उस ने आकाशों और धरती को बनाया, वह रात को दिन पर और दिन को रात पर लपेट देता है,^१ और उस ने सूरज और चाँद को काम पर लगा रखा है । हर एक मुक़रर मुहत तक चल रहा है, यकीन करो कि वही ग़ालिब और गुनाहों का माफ़ करने वाला है ।

६. उस ने तुम सब को एक ही जान से पैदा किया, फिर उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और तुम्हारे लिए जानवरों में से आठ जोड़े (नर-मादा) उतारे, वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भों में एक रूप के बाद दूसरे रूप में बनाता है ।^२ तीन-तीन अंधेरों में,^३ यही अल्लाह (तआला)

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَأَصْطَفَىٰ مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۗ لَسُبْحٰنَهُ ۗ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٤﴾

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۗ يَوْمَ يُبۡرِزُ الْاٰیِلَ عَلٰی الْقَهَّارِ وَيُؤۡزِرُ النَّهَارَ عَلٰی الْاٰیِلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۗ كُلٌّ لِّعۡجۡزِیۡ لِكۡرِمٰتِیۡ ۗ اِنَّ اِلٰهَ الْعَزِیۡزِ الْخَبِیۡرُ ﴿٥﴾

خَلَقَكُم مِّنۡ نَّفۡسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلۡ مِنْهَا زُجۡجَهَا وَاَنۡزَلَ لَكُم مِّنۡ الۡاَشۡجَارِ قُبۡبٰیۡةً اَزۡوَاجًا ۗ یَخۡلُقُكُمۡ فِیۡ بُطۡنِ اُمَّهَاتِكُمۡ خَلَقًا مِّنۡ بَعۡدِ خَلۡقِیۡ فِیۡ اٰلِهٰتِیۡ ثَلٰثَ اَیَّٰتٍ ۗ لِّذٰلِكُمۡ اَللّٰهُ رَكِّبَ لَهٗ الْاٰنۡاٰمَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ فَاِنَّ نَصۡرَکُمۡ ۗ ﴿٦﴾

^१ इस से बाज़ेह है कि मक्के के मूर्तिपूजक अल्लाह ही को विधाता, रोजी देने वाला और दुनिया का चलाने वाला मानते थे, फिर दूसरों की इबादत न्यो करते थे ? इसका जवाब वह यह देते थे जो कुरआन ने यहाँ नक़ल किया है कि शायद उन के जरिया हमें अल्लाह की नजदीकी मिल जाये या अल्लाह के करीब हमारी सिफ़ारिश कर दें, जैसे दूसरे मुकाम पर फेरमाया :

﴿مَوٰلَا ۗ شَفَعٰمَنَا عِنۡدَ اللّٰهِ﴾

•यानी ये अल्लाह के करीब हमारे सिफ़ारिशी हैं !• (यूनस-१८)

^२ कुबुर (तकवीर) का मतलब है, एक चीज़ को दूसरी चीज़ पर लपेटना, रात को दिन पर लपेटने का मतलब है, रात को दिन को ढाँपना, यहाँ तक की उसका नूर ख़त्म हो जाये और दिन को रात पर लपेटने का मतलब दिन को रात को ढाँपना है, यहाँ तक कि उसका अंधेरा ख़त्म हो जाये । यह वही मतलब है जो يُنۡشِئُ اٰیِلَ النَّهَارِ (अल-आराफ़-४४) का है ।

^३ यानी ना के गर्भाशय (रिहम) में कई रूपों से गुजरता है । पहले भनी, फिर जमा खून, फिर गोशत का टुकड़ा, फिर हड्डियों का ढाँचा, जिस के ऊपर गोशत का कपड़ा इन सभी रूपों से गुजरने के बाद पूरा इंसान तैयार होता है ।

^४ एक माँ के पेट का अंधेरा, दूसरे गर्भाशय (रिहम) का अंधेरा और तीसरा उस झिल्ली या पर्दे का अंधेरा जिस में बच्चा लिपटा हुआ होता है ।

तुम्हारा रब है, उसी के लिए मुल्क है, उस के सिवाय कोई भावूद नहीं, फिर तुम कहीं भटक रहे हो?

७. अगर तुम नाशुकी करो तो (याद रखो कि) अल्लाह (तआला) तुम (सब से) बेनियाज है, और वह अपने बन्दों की नाशुकी से खुश नहीं और अगर तुम शुक्रिया अदा करो तो वह उसे तुम्हारे लिए पसन्द करेगा' और कोई किसी का बोझ नहीं उठाता, फिर तुम सबका लौटना तुम्हारे रब ही की तरफ है, तुम्हें वह बतला देगा जो तुम करते थे, बेशक वह दिलों तक की बातों को जानता है।

८. और इंसान को जब कभी दुख पहुँचता है तो वह खूब मुतवज्जिह होकर अपने रब को पुकारता है, फिर जब अल्लाह (तआला) अपने पास से सुख दे देता है तो वह उस से पहले जो दुआ करता था उसे (पूरी तरह) भूल जाता है, और अल्लाह (तआला) के साझीदार मुकर्रर करने लगता है, जिस से (दूसरों को भी) उस के रास्ते से भटकाये। (आप) कह दीजिए कि अपने कुफ्र का फायदा कुछ दिन और उठा लो, (आखिर में) तू नरकवासियों में होने वाला है।

९. भला वह इंसान जो रातों के समय सज्द और खड़े होने की हालत में इबादत (उपासना) में गुजारता हो, आखिरत से डरता हो और अपने रब की रहमत की उम्मीद रखता हो, (और जो उसके खिलाफ हो, बराबर हो सकते हैं), बताओ तो आलिम और जाहिल क्या

إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ عَنَىٰ عَنكُمۥ وَلَا يَرْضَىٰ
لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ وَإِنْ تَشْكُرُوا يَرْضَهُ لَكُمْ وَلَا تَزِرُ
وَأَزِيدُهُ وِزْرًا أُخْرَىٰ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۗ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ
الصُّدُورِ ﴿٧﴾

وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا
إِلَىٰ رَبِّهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ
يَدْعُوهُ إِلَٰهًا مِن قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا لِّيُضِلَّ
عَن سَبِيلِهِ ۗ قُلْ تَتَّبِعُونَ كُفْرًا قَلِيلًا ۗ مَا إِنَّك
مِنَ الصَّٰحِبِ الْتَابِ ﴿٨﴾

أَفَنُحْنُ هُوَ قَائِمٌ إِنَّكَ إِلَٰهٌ سَٰجِدٌ ۗ وَقَآئِبًا
يَعْتَدِرُ الْاِخْرَجَةَ وَيَدْعُو رَحْمَةً رَبِّهِ ۗ قُلْ هَلْ
يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۗ
إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰئِكَ الْاَلْبَابِ ﴿٩﴾

१ यानी कुफ्र अगरचे इन्सान अल्लाह की चाहत ही से करता है, क्योंकि उसके चाहे बिना कुछ नहीं होता न हो ही सकता है फिर भी अल्लाह तआला कुफ्र को पसंद नहीं करता, उसकी खुशी हासिल करने का रास्ता तो शुक्रिया ही है न कि नाशुकी, यानी उसकी चाहत और चीज है और उसकी खुशी दूसरी चीज है, जैसा कि पहले भी इस नुकते की तफसीर कुछ जगहों पर की जा चुकी है। देखिए सूर: बक्रर: की आयत न० २५३ की तफसीर।

वराबर है? बेचक नसीहत वही हासिल करते हैं जो अक्लमद हों।¹

१०. कह दो कि हे मेरे ईमानवाले बंदो! अपने रब से डरते रहो जो इस दुनिया में नेकी करते हैं उन के लिए बेहतर बदला है, और अल्लाह (तआला) की धरती बड़ी कुयादा है,² सब करने वालों को ही उनका पूरा-पूरा अनगिनत बदला दिया जाता है।

११. (आप) कह दीजिए कि मुझे हुक्म दिया गया है कि अल्लाह (तआला) की इस तरह इबादत करूँ कि उसी के लिए इबादत को खालिस कर लूँ।

१२. और मुझे हुक्म हुआ है कि मैं पहले आज्ञाकारी (फरमावरदार) बन जाऊँ।

१३. कह दीजिए कि मुझे तो अपने रब की नाफरमानी करते हुए बड़े दिन के अजाब का डर लगता है।

१४. कह दीजिए कि मैं तो खालिस तौर से सिर्फ अल्लाह ही की इबादत करता हूँ।

१५. तुम उस के सिवाय जिसकी चाहो इबादत करते रहो, कह दीजिए कि हकीकत में घाटे में बही है जो खुद अपने आप को और अपने परिवार को क़यामत के दिन नुक़सान में डाल देगे, याद रखो कि खुला घाटा यही है।

كُلُّ يَوْمًا لِلَّذِينَ آمَنُوا أَثَرًا رَبُّكُمْ ذُو الْعَرْشِ
أَحْسَبُ فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَأَرْضَ اللَّهِ
وَاسِعَةً إِنَّ سَائِرَ الْغَيْرِ لَأَجْرُهُمْ
بِعَيْرِ حِسَابٍ ⑩

كُلُّ رِبِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا
لَهُ الدِّينَ ⑪

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ مِنَ السُّلِّمِينَ ⑫

كُلُّ رِبِّي أَخَافُ أَنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ⑬

كُلُّ اللَّهِ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ⑭

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ كُلُّ لِرَبِّ الْخَيْرِينَ
الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
إِلَّا ذَلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْبُيِّنُ ⑮

¹ और यह ईमान वाले ही हैं न कि काफ़िर। अगरचे वह खुद को अक्लमद और आलिम ही समझते हों, लेकिन जब वह अपनी नीति और अक्ल का इस्तेमाल करके गौर-फिक्र ही नहीं करते और शिक्षा-दिक्षा (इब्रत) नहीं हासिल करते तो वह जानवर की तरह अक्ल और इल्म से महरूम हैं।

² यह इशारा है उस बात की तरफ कि अगर अपने देश में ईमान और तक्वा पर अमल करना कठिन हो तो वहाँ रहना अच्छा नहीं, बल्कि वहाँ से हिजरत (स्थानान्तरण) करके ऐसे इलाके में चले जाना चाहिए, जहाँ इन्सान अल्लाह के हुक्म के ऐतबार से जिन्दगी गुजार सके और जहाँ ईमान और तक्वा के रास्ते में रूकावट न हो।

१६. उन्हें नीचे-ऊपर से आग की लपटें छत की तरह ढाँक रही होगी, यही अज्ञाब है जिन से अल्लाह (तआला) अपने बंदों को डरा रहा है। हे मेरे बन्दो! मुझ से डरते रहो।

१७. और जो लोग अल्लाह के सिवाय तागूत (दूसरों) की इबादत से बचते रहे और तन-मन से अल्लाह (तआला) की तरफ आकर्षित (मायल) रहे, वे खुशखबरी के हक़दार हैं, तो मेरे बन्दों को खुशखबरी सुना दीजिए।

१८. जो बात को कान लगा कर सुनते हैं फिर जो बड़ी अच्छी बात हो। उस के अनुसार काम करते हैं, यही है जिनको अल्लाह (तआला) ने हिदायत दिया है और यही अक्लमंद भी है।^१

१९. भला जिस इंसान पर अज्ञाब की बात साबित हो चुकी है^२ तो क्या आप उसे जो नरक में है छुड़ा सकते हैं।

२०. हाँ, वे लोग जो अपने रब का डर रखते रहे उन के लिए ऊँचे घर हैं, जिन के ऊपर भी बनी अटारियाँ हैं^३ और उन के नीचे पानी के चश्में बह रहे हैं। अल्लाह का वादा है और वह वादा नहीं तोड़ता।

لَهُمْ مِنْ قُودِهِمْ طُلُكٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ
طُلُكٌ ذَٰلِكَ يُعَذِّبُ اللَّهُ بِهِ عِبَادَ ٱلْغَٰفِلِينَ
﴿۱۶﴾

وَٱلَّذِينَ إِجْتَنَبُوا ٱلظَّٰلِمَٰتَ ٱن يَجْعُدُوہَا وَٱنَابُوا
إِلَى ٱللَّهِ لَهُمُ ٱلْبُشْرَىٰ فَبَشِّرْ عِبَادِ ﴿۱۷﴾

ٱلَّذِينَ يَسْتَمِعُونَ ٱلْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ أَحْسَنَهُ ۗ
أُو۟لَٰئِكَ ٱلَّذِينَ هَدَى ٱللَّهُ وَأُو۟لَٰئِكَ هُمُ
أُو۟لُوا ٱلْأَلْبَٰبِ ﴿۱۸﴾

أَمَنَ حَتَّىٰ عَلَيْهِ كَلِمَةُ ٱلْعَذَابِ ۗ أَفَأنتَ تُنقِذُ
مَن فِى ٱلنَّارِ ﴿۱۹﴾

لَٰكِن ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْا لَهُمُ ٱلْعَرْشُ مِن قُودِہَا
عُرُفٌ مُّبِينَةٌ تَجْرِي مِن تَحْتِہَا ٱلْأَنْهَارُ ۗ
وَعَدَ ٱللَّهُ لَٰلِ يُخْلِفُ ٱللَّهُ ٱلْبَیْعَٰةَ ﴿۲۰﴾

^१ अच्छा (सब से अच्छा) से मज़बूत और पक्की बात मुराद है, या अहकाम बातों में सब से अच्छा या अजीमत और हुक़म में से निश्चय, या सज़ा के मुकाबिल माफ़ी को पसंद करते हैं।

^२ क्योंकि उन्होंने अपनी अक्ल से फ़ायेदा उठाया है, जबकि दूसरों ने अपनी अक्लों से फ़ायेदा नहीं उठाया।

^३ यानी तक्रदीर और क्रिस्मत के बिना पर उस के अज्ञाब का हक़ साबित हो चुका है। इस तरह के जुल्म, कुफ़्र, गुनाह में अपनी आखिरी हद को पहुँच गया जहाँ से उसकी वापसी मुमकिन नहीं, जैसे अबूजहल और आस पुत्र वाएल वगैरह, और गुनाहों ने उसको पूरी तरह घेर लिया और वह नरकवासी हो गया।

^४ इसका मतलब यह है कि जन्नत में दर्जे होंगे एक के ऊपर एक। जैसे यहाँ कई मंजिला इमारत (भवन) हैं जन्नत में भी दर्जों के हिसाब से एक-दूसरे के ऊपर अटारियाँ होंगी, जिन के बीच जन्नतियों की मर्जी से दूध, शहद, शराब और पानी की नहरें जारी रहेंगी।

२१. क्या आप ने नहीं देखा कि अल्लाह (तआला) आकाश से पानी उतारता है और उसे धरती के चरमों में पहुँचाता है, फिर उसी के जरिये कई तरह की खेतियाँ उगाता है फिर वे सूख जाती हैं और आप उन्हें पीले रंग में देखते हैं फिर उन्हें चूरा-चूरा कर देता है। इस में अक्लमंदों के लिए बड़ी नसीहत है।

२२. क्या वह इंसान जिसका सीना अल्लाह (तआला) ने इस्लाम के लिए खोल दिया है तो वह अपने रब की तरफ से एक नूर पर है, और हलाकत है उन के लिए जिन के दिल अल्लाह की याद से (असर नहीं लेते बल्कि) कठोर हो गये हैं, यह लोग पूरी तरह से भटकावे में पड़े हुए हैं।

२३. अल्लाह (तआला) ने सब से बेहतर बात नाजिल की है, जो ऐसी किताब है कि आपस में मिलती-जुलती और बार-बार दोहराई हुई आयतों की है,^१ जिस से उन लोगों के शरीर काँप उठते हैं जो अपने रब का डर रखते हैं, आखिर में उन के जिस्म और दिल अल्लाह (तआला) के जिक्र की तरफ (नरम होकर) झुक जाते हैं।^२ यह है अल्लाह (तआला) की हिदायत,

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَلَكَ
بِنَائِجٍ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا
أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهْبِطُ فَتَذَرُوهُ كَصَفْرَاءَ ۗ ثُمَّ يَجْعَلُهُ
حُطًا مَّادَانٍ فِي ذَلِكَ لِيَذْكُرُوا الْأَنْبِيَاءَ ۗ (21)

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِإِسْلَامٍ فَهُوَ عَلَىٰ نُورٍ مِّنْ
رَّبِّهِ ۗ هُوَ يُلْقِي السَّيْفَ قُلُوبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ
أُولَٰئِكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ (22)

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِي
تَقْوِيَةً وَمِنَهُ جُلُودٌ لِّدِينٍ يَخْتَشُونَ رَبَّهُمْ ۗ ثُمَّ
تَلَيْنَ جُلُودَهُمْ وَقُلُوبُهُمْ لِي ذِكْرِ اللَّهِ ۗ فِي ذَلِكَ
هُدًى لِّلَّذِينَ هُمْ بِهِ مِنَ يَشَاءُ طَوْعًا وَمِنْ يَطَّلِيلٍ
اللَّهُ فَسَّالُهُ مِنْ هَادٍ (23)

^१ यानी जिसको सच को मानने और भलाई का रास्ता अपनाने की खुशनसीबी अल्लाह की तरफ से मिल जाये तो वह इस सीना खोल दिये जाने के सबब अल्लाह के प्रकाश (नूर) पर हो, क्या वह उस के बराबर हो सकता है जिसका दिल इस्लाम के लिए कठोर और उस का सीना तंग हो और वह गुमराही के अंधकारों में भटक रहा हो।

^२ अहसनुलहिथ (बेहतरीन बात) से मुराद वही पाक कुरआन है। मिलती-जुलती का मतलब अच्छी भाषा, मौजिजे और असर और अच्छे मायने में उस के सारे हिस्से एक-दूसरे से मिलते हैं, यानी यह भी आसमानी किताबों से मिलता है यानी उन के सदृश (तरह) है।

^३ यानी जब अल्लाह की दया और रहमत और मेहरबानी की उम्मीद उन के दिलों में जायती है तो उन में तपन और नमी पैदा हो जाती है और वह अल्लाह के जिक्र में लीन हो जाते हैं। हजरत कतादह رضي الله عنه कहते हैं कि इस में अल्लाह के दोस्तों के गुणों (सिफत) का वयान किया गया है कि अल्लाह के डर से उन के दिल काँप जाते हैं, उनकी आँखों से आंसू बहने लगते हैं और उन के दिलों को अल्लाह की याद से इत्मिनान होता है।

जिस के जरिये जिसे चाहे सच्चे रास्ते पर लगा देता है, और जिसे अल्लाह (तआला) ही रास्ता भुला दे उसका मार्गदर्शक (रहनुमा) कोई नहीं।

२४. भला जो इंसान क़्यामत के दिन की बहुत ज्यादा बुरे अज़ाबों की ढाल अपने मुंह को बनायेगा (ऐसे) ज़ालिमों से कहा जायेगा कि अपने किये हुए अमलों का (मज़ा) चखो !

२५. उन से पहले वालों ने भी झूठलाया फिर उन पर वहाँ से अज़ाब आ पड़ा जहाँ से उनको अंदाज़ा भी न था।

२६. और अल्लाह (तआला) ने उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी में अपमान का मज़ा चखाया^२ और अभी आख़िरत का तो बहुत सख्त अज़ाब है। काश्! ये लोग समझ लें।

२७. निश्चय ही हम ने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर तरह की मिसाल बयान कर दी है, हो सकता है कि वे नसीहत (शिक्षा) हासिल कर लें।

२८. अरबी भाषा में क़ुरआन है जिस में कोई टेढ़ापन नहीं, हो सकता है कि वह संयम (तक्रबा) इख़्तियार कर लें।^३

أَقْنَنَ يَتَّقِي بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ ﴿٢٤﴾

كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَآتَاهُمُ الْعَذَابَ مِن
حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٥﴾

فَإِذَا أَنَّهُمُ اللَّهُ أَخَذَ فِي الْعِيَةِ الدُّنْيَا
وَالْعَذَابِ الْآخِرَةِ الْكَبِيرِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِن كُلِّ
مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾

قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾

^१ यानी क्या यह इंसान उस इंसान के बराबर हो सकता है जो क़्यामत के दिन बेखौफ और चांत (मुतमईन) होगा?

^२ यह भस्का के काफ़िरों को चेतावनी (तंबीह) है कि पहले की कौमों ने पैगम्बरों को झूठलाया तो उनकी यह बुरी हालत हुई और तुम सब से अच्छे रसूल तथा सब से अच्छे इंसान को झूठला रहे हो तो तुम्हें भी इस झूठलाने के बुरे नतीजे से डरना चाहिए।

^३ यानी पाक क़ुरआन साफ अरबी भाषा में है, जिस में कोई टेढ़ापन, विमुखता (इश्काल) और भ्रम नहीं ताकि लोग उस में बयान की गई चेतावनियों (वईदों) से डरें और उस में बयान किये बादों के पात्र (मुस्तहक़) बनने के लिए अमल करें।

२९. अल्लाह (तआला) मिसाल वयान कर रहा है कि एक वह इंसान जिस में बहुत से आपस में भिन्नता (इखितेलाफ) रखने वाले साझीदार हैं और दूसरा वह इंसान जो सिर्फ एक ही का (दास) है, क्या ये दोनों सिपत (गुणों) में एक बराबर हैं! सारी तारीफें अल्लाह (तआला) के लिए हैं। बात यह है कि उन में से ज्यादातर लोग जाहिल हैं।

३०. बेशक खुद आप को भी मौत आयेगी और ये सब भी मरने वाले हैं।

३१. फिर तुम सब के सब क़यामत के दिन अपने रब के सामने झगड़ोगे।^२

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّجَلَا فِيهِ شُرَكَاءَ مُتَشَكِّسُونَ
وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا
الْحَسَنُ بِذُو بَيْتِ الْكِرْبَةِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ ﴿٣٠﴾

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ
تَخْتَصِمُونَ ﴿٣١﴾

^१ इस में मुशरिक (अल्लाह का साझी बनाने वाले) और मुखलिस (सिर्फ अल्लाह के लिए इबादत करने वाले) की मिसाल दी गई है, यानी एक गुलाम है जो कई इंसानों के साझे का है जो आपस में झगड़ते रहते हैं और एक दूसरा गुलाम है जिसका मालिक केवल एक ही इंसान है और उसकी मिलिक्यत में उसका कोई साझी नहीं, क्या यह दोनों गुलाम बराबर हो सकते हैं? नहीं, बेशक नहीं। इसी तरह वह मुशरिक जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूदों की भी इबादत करता है और वह खालिस ईमान वाला जो केवल एक अल्लाह की इबादत करता है और उस के साथ किसी को साझी नहीं बनाता, बराबर नहीं हो सकते।

^२ यानी हे पैगम्बर, आप भी और आप के विरोधी (मुखालिफ) भी मरकर इस दुनिया से हमारे पास आखिरत (परलोक) में आयेंगे। दुनिया में तो एकेश्वरवाद (तौहीद) और मिश्रणवाद (शिक) का फ़ैसला तुम्हारे बीच नहीं हो सका और तुम इसके बारे में झगड़ते ही रहे, लेकिन यहाँ मैं इसका फ़ैसला कर दूँगा और खालिस तौहीद वालों को जन्नत में और नकारने वाले झूठे मुशरिकों को नरक में दाखिल कराऊँगा, इस आयत से भी नबी ﷺ की मौत का सुवृत्त मिलता है, जिस तरह सूर: आले-इमरान की आयत १४४ से भी मिलता है और इन्हीं आयतों से मतलब निकालकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक ने आप (ﷺ) की मौत को साबित किया था। इसलिए नबी ﷺ के बारे में यह अक़ीदा रखना कि आप को वरज़ख (मौत के बाद से क़यामत तक के बीच की मूर्त) में उसी तरह जिन्दगी मिली है जिस तरह दुनिया में मिली थी, पाक क़ुरआन के विपरीत (मुखालिफ) है। आप को भी दूसरे इंसानों जैसे मौत हुई, इसलिए आप को गाड़ दिया गया, क़ब्र में आप को बज़ख़ी (मध्य) की जिन्दगी तो जरूर मिली है जिसकी हासत का हमें ज्ञान (इल्म) नहीं, लेकिन क़ब्र में आप को दोबारा दुनियावी जिन्दगी नहीं दी गई।

३२. उस से ज़्यादा जालिम कौन है जो अल्लाह (तआला) पर झूठ बोले और सच (दीन) उस के पास आये तो उसे झूठा बताये? क्या ऐसे काफिरों का ठिकाना नरक (जहन्नम) नहीं है?

३३. और जो लोग सच (धर्म) लाये^१ और जो उसे सच जाने^२ यही लोग परहेजगार हैं।

३४. उन के लिए उन के रब के पास (हर) वह चीज है जो ये चाहें, परहेजगारों का यही बदला है।

३५. ताकि अल्लाह (तआला) उन से उन के बुरे कर्मों को मिटा दे और जो नेक काम उन्होंने किये हैं उन का अच्छा बदला अता करे।

३६. क्या अल्लाह (तआला) अपने बन्दों के लिए काफी नहीं?^३ ये लोग आप को अल्लाह के सिवाय दूसरों से डरा रहे हैं, और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसकी हिदायत करने वाला कोई नहीं।

३७. और जिसे अल्लाह हिदायत अता कर दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या अल्लाह (तआला) प्रभावशाली (मालिब) और बदला लेने वाला नहीं है?

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالْحَقِّ
إِذْ جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ فِيهِمْ مَتَوَى الْكَافِرِينَ ﴿٣٢﴾

وَالَّذِي جَاءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ بِهِ أُولَئِكَ
هُمُ الْمَتَّقُونَ ﴿٣٣﴾

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ جَزَاءُ
الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٤﴾

يُكَفِّرُ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ
بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٣٥﴾

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ وَيُخَوِّنُكَ بِالَّذِينَ مِنْ
دُونِهِ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٦﴾

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُضِلٍّ أَلَيْسَ اللَّهُ
بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿٣٧﴾

^१ इस से मुराद इस्लाम के रसूल हजरत मोहम्मद ﷺ हैं जो सच्चा दीन लेकर आये, कुछ के करीब यह आम है, और इस से हर वह इंसान मुराद है जो तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत देता और अल्लाह के धर्म-विधान (शरीअत) की ओर लोगों की हिदायत करता है।

^२ कुछ ने इस से मुराद हजरत अबू बक्र सिदीक رضي الله عنه लिया है जिन्होंने सब से पहले रसूलुल्लाह ﷺ की तसदीक की और उन पर ईमान लाये, कुछ ने इसे भी आम रखा है जिस में सभी ईमानवाले शामिल हैं जो रसूलुल्लाह ﷺ की रिसालत (ईशूद होने पर) विश्वास (ईमान) रखते हैं और आप ﷺ को सच्चा मानते हैं।

^३ इस से मुराद हजरत नबी ﷺ हैं, कुछ के इयाल में यह आम है, सभी अम्बिया (ईशूद) और ईमान वाले इस में शामिल हैं, मतलब यह है कि आप को अल्लाह के सिवाय दूसरे से डराते हैं लेकिन जब अल्लाह आप का मददगार और पक्षधर (वली) है तो आप का कोई कुछ विगाड़ नहीं सकता, वह उन सब के मुकाबले में आप को काफी है।

३८. अगर आप इन से पूछें कि आकाश और धरती को किस ने पैदा किया है तो बेशक ये यही जवाब देंगे कि अल्लाह ने। आप उन से कहिए कि भला यह तो बताओ कि जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाय पुकारते हो अगर अल्लाह तआला मुझे नुकसान पहुँचाना चाहे तो क्या ये उस के नुकसान को हटा सकते हैं या अल्लाह तआला मुझ पर कृपा (रहमत) करना चाहता हो तो क्या ये उसकी रहमत को रोक सकते हैं, (आप) कह दें कि अल्लाह (महान) मुझे क़ाफी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।

३९. कह दीजिए कि हे मेरी उम्मत के लोगो! तुम अपनी जगह पर अमल किये जाओ मैं भी अमल कर रहा हूँ। जल्द ही तुम जान लोगे।

४०. कि किस पर अपमानित (रूखा) करने वाला अज़ाब आता है और किस पर (स्थाई मार और) स्थाई (मुस्तकिल) अज़ाब होता है?

४१. बेशक आप पर हम ने हक के साथ यह किताब लोगों के लिए नाज़िल की है, तो जो इंसान सीधे रास्ते पर आ जाये उसके अपने लिए (फ़ायदा) है और जो भटक जाये उसके भटकने का (भार) उसी पर है, आप उन के जिम्मेदार नहीं।

४२. अल्लाह ही जानों को उन की मौत के समय और जिन की मौत नहीं आयी उन्हें उनकी नींद के समय कब्ज़ा कर लेता है, फिर जिन पर मौत का हुक्म हो चुका है उन्हें तो रोक लेता है और दूसरे (आत्माओं) को एक मुक़र्रर बक़्त तक के लिए छोड़ देता है,^१ फिर

وَلَيْنَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ
اللَّهُ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ
أَرَادَنِيَ اللَّهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّيهِ أَوْ أَرَادَنِي
بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَتُ رَحْمَتِهِ قُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ
عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ﴿٣٨﴾

قُلْ يَقَوْمِ اعْبُدُوا عَلَى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ فَسَوْفَ
تَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ
عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٤٠﴾

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ فَتَمِنِ اهْتَدَى
فَلْيَنْفِسْ^{٤١} وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنْتَ
عَلَيْهِمْ بِكَايِلٌ ﴿٤١﴾

اللَّهُ يَتَوَكَّلُ الْأَنْفُسَ جِئِن مَوْتُهَا وَالَّذِي نَفْسٌ تَمُتُ فِي
مَتَابِعِهَا^{٤٢} فَسَيَكُنُ الْآلِيُّ قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَالْمُؤَسَّلُ
الْأَعْرَابِ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى طَرَفًا فِي ذَلِكَ لَآئِبَاتٌ لِّقَوْمٍ
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٢﴾

^१ यानी अगर तुम मेरी तौहीद (अद्वैत) की दावत (आमन्त्रण) को कुबूल नहीं करते जिस के साथ अल्लाह ने मुझे भेजा है तो ठीक है, तुम्हारी इच्छा, तुम अपनी हालत पर रहो जिस पर तुम हो, मैं उस हालत पर रहता हूँ जिस पर मुझे अल्लाह ने रखा है।

^२ यानी जब तक उन का मुक़र्रर बक़्त नहीं आता उस बक़्त तक के लिए उनकी रूहें वापस होती

करने वालों के लिए इस में यक़ीनी तौर से बहुत-सी निशानियाँ हैं।

४३. क्या उन लोगों ने अल्लाह तआला के सिवाय (दूसरों को) सिफारिशी मुकर्रर कर रखा है? (आप) कह दीजिए कि चाहे वे कुछ भी हक न रखते हों और न अक़ल रखते हों।

४४. कह दीजिए कि सभी सिफारिशों का मालिक अल्लाह ही है। सारे आकाशों और धरती का मुल्क उसी के लिए है, फिर तुम सब उसी की तरफ लौटाये जाओगे।

४५. और जब अल्लाह अकेले का बयान किया जाये तो उन लोगों के दिल नफरत करने लगते हैं जो आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, और जब उस के सिवाय (दूसरों) का बयान किया जाये तो उन के दिल वाज़ेह तौर से खुश हो जाते हैं।

४६. (आप) कह दीजिए कि हे अल्लाह आकाशों और धरती के पैदा करने वाले, छिपी और जाहिर के जानने वाले, तू ही अपने बंदों में उन बातों का फैसला करेगा जिन में वे उलझ रहे थे।

أَوِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۗ قُلْ أَوْلُوا كَانُوا
لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٣﴾

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۗ لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۗ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٤٤﴾

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۗ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِنْ
دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبِيرُونَ ﴿٤٥﴾

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ عَلِمْتَ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا
فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٤٦﴾

रहती हैं, यह छोटी मौत है। यही विषय सूर: अन्आम ६० और ६९ में बयान किया गया है, फिर भी वहाँ छोटी मौत की चर्चा पहले और बड़ी मौत की बाद में है जबकि यहाँ उस के उल्टा है।

हाँ, जब यह कहा जाता कि फ़र्ला-फ़र्ला भी माबूद हैं या वह भी तो अल्लाह के नेक बन्दे हैं, वह भी तो कुछ हक रखते हैं, वह भी मुश्किलकुश हैं और जरूरत पूरी करते हैं तो यह मुश्किलकुश खुश हो जाते हैं। गुमराहों की आज यही हालत है, जब उन से कहा जाता है कि केवल "हे अल्लाह मदद" कहो, क्योंकि अल्लाह के सिवाय कोई मदद करने वाला नहीं तो गुस्सा हो जाते हैं, यह बात उन्हें बहुत बुरी लगती है, लेकिन जब "या अली: मदद" या "या रसूल मदद" कहा जाये, इसी तरह दूसरे मूर्दों से मदद मांगी और गुहार की जाये, जैसे "या शेख अब्दुल कादिर शैअन लिल्लाह" बगैरह तो फिर उन के दिल की कसियाँ खिल जाती हैं।

४७. और अगर जालिमों के पास वह सब कुछ हो जो धरती पर है और उस के साथ उतना ही और हो, तो भी वुरे दण्ड (सजा) के बदले में क्रयामत के दिन ये सब कुछ दे दें, और उन के सामने अल्लाह की तरफ से वह जाहिर होगा जिसका अंदाजा भी उन्हें न था ।

४८. और जो कुछ उन्होंने किया था उस की बुराईयाँ उन पर खुल जायेंगी और जिसके साथ वे मजाक करते थे वह उन्हें आ घेरेंगा ।

४९. इंसान को जब कोई तकलीफ पहुँचती है तो हमें पुकारता है फिर जब हम उसे अपनी तरफ से कोई सुख दे दें तो कहने लगता है कि यह तो मैं सिर्फ अपनी अक्ल की वजह से अता किया गया हूँ वल्कि यह परीक्षा (इम्तेहान) है, लेकिन उन में से ज्यादातर लोग अन्जान हैं ।

५०. इन से पहले के लोग भी यही बात कह चुके हैं तो उनकी कार्यवाही उन के कुछ काम न आयी ।

५१. फिर उन की सभी बुराईयाँ उन पर आ पड़ी, और इन में से भी जो पापी हैं उन की की हुई बुराई भी अब उन पर आ पड़ेगी, ये (हमें) पराजित (आजिज) कर देने वाले नहीं ।

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
وَبَدَأَ لَهُمْ فِيهَا اللَّهُ مَا لَهُمْ لِيَلْمُوا بِهَا يَكْسِبُونَ ﴿٤٧﴾

وَبَدَأَ لَهُمْ فِيهَا مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٤٨﴾

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا نَادِيَهُ إِذَا حُوِّلَهُ
رَيْبَةً وَمِتَادًا قَالَ إِنَّمَا أَوتيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ مِّمَّنْ هُوَ
فِتْنَةٌ وَلَكِنَّ الْكُفْرَ لَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٩﴾

فَدَّعَا نَادِيَهُمْ مِمَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٥٠﴾

فَأَصَابَهُمْ فِيهَا مَا كَسَبُوا وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَؤُلَاءِ
سَوْفَ يُعَذِّبُهُمْ فِيهَا مَا كَسَبُوا وَمَا لَهُمْ بِمُحْسِنِينَ ﴿٥١﴾

1 यानी अजाब की सख्ती और उसका डर और उस की किस्में और रूप ऐसे होंगे कि कभी उन के ध्यान में न आये होंगे ।

2 यह जाति के भूताविक इंसान की चर्चा है, यानी इन्सानों की बहुसंख्यक (अकसरियत) की हालत यह है कि जब उनको रोग, भूक या कोई दूसरा दुख पहुँचता है तो उस से मुक्ति (नजात) पाने के लिए अल्लाह से दुआयें करता है और उस के आगे गिड़गिड़ाता है ।

3 यानी सुख मिलते ही सरकड़ी और ज्यादाती का रास्ता अपना लेता है और कहता है कि इस में अल्लाह का क्या एहसान, यह तो मेरी चतुराई का नतीजा है या जो इल्म और सिपत मेरे पास है उस की वजह से यह सुख-सुविधायें (ऐचो-आराम) मिली हैं या मुझे यह जानकारी थी कि यह चीजें मुझे मिलेंगी क्योंकि अल्लाह के करीब मेरा बहुत स्थान (मुकाम) है ।

५२. क्या उन्हें यह ज्ञान (इल्म) नहीं कि अल्लाह (तआला) जिस के लिए चाहे जीविका (रिज़क) बढ़ा देता है और तंग (भी), ईमानवालों के लिए इस में बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं।

५३. (मेरी तरफ से) कह दो कि हे मेरे बन्दो! जिन्होंने अपनी जानों पर जुल्म किये हैं तुम अल्लाह की कृपा (रहमत) से निराश न हो जाओ, बेशक अल्लाह (तआला) सभी पापों को माफ कर देता है। हकीकत में वह बड़ा माफ करने वाला बड़ा रहम करने वाला है।¹

५४. और तुम सब अपने रब की तरफ झुक पड़ो और उसका आज्ञापालन (पैरवी) किये जाओ, इस से पहले कि तुम्हारे पास अज्ञाब आ जाये और फिर तुम्हारी मदद न की जाये।

५५. और पैरवी करो उस सब से बेहतर की जो तुम्हारी तरफ तुम्हारे रब की तरफ से नाज़िल की गयी है, इस से पहले कि तुम पर अचानक अज्ञाब आ जाये और तुम्हें ख़बर भी न हो।

५६. (ऐसा न हो कि) कोई इंसान कहे कि हाय अफसोस इस बात पर कि मैंने अल्लाह (तआला) के बारे में सुस्ती की, बल्कि मैं मज़ाक उड़ाने वालों में ही रहा।

५७. या कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं भी परहेज़गार लोगों में होता।

لَوْ يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٢﴾

ثُمَّ لِيُبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا
مِن رَّحْمَةِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا
إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٣﴾

وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسئِلُواهُ مِن قَبْلِ أَن يَأْتِيَكُمُ
الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصَرُونَ ﴿٥٤﴾

وَأَتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ مِن قَبْلِ
أَن يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿٥٥﴾

أَن تَقُولَ نَفْسٌ بُعِثْتُ فِي عَلَمٍ مَّا قَوَّضْتُ فِي
جَنبِ اللَّهِ وَإِن كُنْتُ لَمِنَ السَّخِرِينَ ﴿٥٦﴾

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ السَّالِقِينَ ﴿٥٧﴾

¹ इस आयत में अल्लाह की माफ़ी के विस्तार (कुशादगी) का बयान है। इंसरफ (इसराफ) का मतलब है पापों की अधिकता और उस में ज़्यादती। «अल्लाह की दया (रहमत) से निराश न हो» का मतलब है कि ईमान लाने या तौबा (अमा-याचना) से पहले जितने भी पाप किये हों इन्सान यह न समझे कि मैं तो बड़ा पापी हूँ, मुझे अल्लाह कैसे माफ करेगा? बल्कि सच्चे दिल से अगर ईमान को कुबूल करेगा या ख़ालिस तौबा करेगा तो अल्लाह तआला (परमेश्वर) सब पापों को माफ कर देगा।

५८. या अजाबों को देखकर कहे, काश! किसी तरह मेरा लौट जाना हो जाता तो मैं भी नेक लोगों में हो जाता।

५९. हाँ (हाँ) बेशक तुम्हारे पास मेरी आयतें पहुँच चुकी थीं जिन्हें तूने झुठलाया और घमंड (और गर्व) किया, और तू था ही काफिरों में।

६०. और जिन लोगों ने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है तो आप देखेंगे कि क़यामत के दिन उन के मुँह काले हो गये होंगे। क्या घमंड करने वालों का ठिकाना नरक में नहीं?¹

६१. और जिन लोगों ने संयम (तक्रबा) किया उन्हे अल्लाह (तआला) उनकी कामयाबी के साथ बचा लेगा, उन्हे कोई दुख छू भी न सकेगा और वे न किसी तरह दुखी होंगे।

६२. अल्लाह सभी चीजों का जन्मदाता है, और वही हर चीज का संरक्षक (निगार) है।

६३. आकाशों और धरती की कुँजियों का मालिक वही है।² जिन-जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इंकार किया है वही नुकसान उठाने वाले है।

६४. (आप) कह दीजिए कि हे मूर्खों! क्या तुम मुझ से अल्लाह के सिवाय दूसरों की इबादत के लिए कहते हो।

أَوْ تَقُولُونَ حِينِ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرْهًا
فَأَكُونُ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٨﴾

بَلَىٰ قَدْ جَاءَكَ الْبَيِّنَاتُ الْبَيِّنَاتُ بِمَا وَاسْتَكْبَرْتَ
وَكَنتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ﴿٥٩﴾

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَوَىٰ الذُّلَيْنِ كَذَّبُوا عَلَىٰ اللَّهِ وَجُوهُهُمْ
مُسْوَدَّةٌ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٦٠﴾

وَيُخَيِّرُ اللَّهُ الذُّلَيْنِ الْفُقَرَاءَ بَعَارَتِهِمْ وَلَا يَشَاءُ لَهُمُ الشُّرُوكَ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٦١﴾

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٦٢﴾

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا
بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ﴿٦٣﴾

قُلْ أَغْفِرُ اللَّهُ مَا مَرَّ فِي أَعْيُنِنَا جَهْلُونا ﴿٦٤﴾

¹ हदीस में है «لَا تُكْرَهُ بَطْرُ الطُّغْيَانِ وَغَضَبُ النَّاسِ» «सच का इंकार और लोगों को हीन (हकीर) समझना घमंड है।» यह सवाल सकारात्मक (मुस्वत) है यानी अल्लाह की इताअत से इन्कार करने वालों की जगह नरक है।

² फतहल कदीर (मिक्लाद) का बहुवचन (जमा) है। (फतहल कदीर) जिसका मतलब कुँजियाँ है। कुछ ने खजाना किया है, मतलब दोनों तरह एक ही है कि सभी विषय की वागडोर उसी के हाथ में है।

६५. और बेशक तेरी तरफ भी और तुझ से पहले (के सभी नबियों) की तरफ भी वहयी की गयी है कि अगर तूने शिर्क किया तो बेशक तेरा अमल बरबाद हो जायेगा और निश्चित (यक्कीनी) रूप से तू नुकसान उठाने वालों में से हो जायेगा ।^१

६६. वल्कि तू अल्लाह ही की इबादत कर और शुक्रिया अदा करने वालों में से हो जा ।

६७. और उन लोगों ने जैसा सम्मान अल्लाह का करना चाहिए था नहीं किया, सारी धरती क़यामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और सारा आकाश उस के दायें हाथ में लपेटे हुए होंगे । वह पाक और बुलन्द है हर उस चीज से जिसे लोग उसका साझीदार बनायें ।

६८. और सूर (नरसिंघा) फूंक दिया जायेगा तो आकाशों और धरती वाले सभी वेहोश होकर गिर पड़ेंगे लेकिन जिसे अल्लाह चाहे,^२ फिर दोबारा सूर फूँका जायेगा तो वे अचानक खड़े होकर देखने लग जायेंगे ।^३

وَلَقَدْ أَوْحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبِسَنَّ عَمَلَكَ وَالْأَعْمَالُ مِنَ الْخَيْرِينَ ﴿٦٥﴾

بَلَىٰ إِنَّ اللَّهَ فَأَعْبُدْ وَكُن مِنَ الشَّاكِرِينَ ﴿٦٦﴾

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ ۗ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٍ

بِيَمِينِهِ ۗ وَسُبْحٰنَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٦٧﴾

وَتَفْجَعُ فِي الصُّورِ صَعِقَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ ۗ أَلَمْ أَهْمِكُمْ أَيَّ يَنْظُرُونَ ﴿٦٨﴾

^१ "अगर तूने शिर्क किया" का मतलब यह है कि अगर मौत शिर्क पर आई और उस से तौबा (क्षमा-याचना) न की। संवोधन (खिताब) अगरचे मोहम्मद ﷺ से है जो शिर्क से पाक (पवित्र) भी थे और भविष्य (मुस्तक़बिल) के लिए महफूज भी, क्योंकि पैगम्बर अल्लाह की हिफाजत और संरक्षण (पनाह) में होता है, उनसे शिर्क होने की कोई उम्मीद न थी लेकिन यह हकीकत में पैरोकारों की तरफ इशारा और उनको समझाना मकसद था ।

^२ यानी जिन को अल्लाह चाहेगा उन्हें मौत नहीं आयेगी, जैसे ज़िब्रिल, मीकाईल और इस्राफ़ील फरिश्ते । कुछ कहते हैं कि रिजवान फरिश्ता यानी अर्श को उठाने वाले फरिश्ते और स्वर्ग और नरक पर तैनात अधिकारी ।

^३ चार नफ़खों (फूँकों) के मानने वालों के करीब यह चौथा, तीन मानने वालों के करीब तीसरा और दो मानने वालों के करीब यह दूसरा नफ़खा है । जो भी हो, इस फूँक से सब जिन्दा होकर मैदाने महशर में सारी दुनिया के रव के दरवार में हाज़िर हो जायेंगे जहाँ हिाबा-किताब होगा ।

६९. और धरती अपने रब की दिव्य ज्योति (नूर) से जगमगा उठेगी,¹ आमालनामा (कर्मपत्र) पेश किये जायेंगे, नबियों और गवाहों को लाया जायेगा और लोगों के बीच इसाफ के साथ फैसले कर दिये जायेंगे और उन पर जुल्म न किया जायेगा।

७०. और जिस इंसान ने जो कुछ किया है पूरी तरह से दे दिया जायेगा, और जो कुछ भी लोग कर रहे हैं, वह अच्छी तरह जानने वाला है।

७१. और काफिरों के झुंड के झुंड नरक की तरफ हॉके जायेंगे,² जब वे उस के करीब पहुँच जायेंगे उस के दरवाजे उन के लिए खोल दिये जायेंगे और वहाँ के रक्षक (निगरी) उन से पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल (संदेशवाहक) नहीं आये थे? जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें इस दिन की भेंट से सावधान (आगाह) करते थे, ये जवाब देंगे कि हाँ, क्यों नहीं! लेकिन अज्ञाब का हुक्म काफिरों पर साबित हो गया।

७२. कहा जायेगा कि अब नरक के दरवाजों में दाखिल हो जाओ जहाँ वे हमेशा रहेंगे, बस नाफरमानों का ठिकाना बड़ा बुरा है।

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَابُ وَجُمِلَ
بِالنَّبِيِّينَ وَالشُّهَدَاءِ وَوُضِعَ بَيْنَهُمُ بِالْحَقِّ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ﴿٦٩﴾

وَوُضِعَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا
يَفْعَلُونَ ﴿٧٠﴾

وَسَيُجِئُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۚ فِإِذَا
جَاءُوهَا قُفِرَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ
يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يُتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ
وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنْ
حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَىٰ الْكَافِرِينَ ﴿٧١﴾

فَيُلَىٰ أُخُذُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ قَبَسٌ
مِّنْهُوَ الْبُكَارِيُّ ﴿٧٢﴾

¹ इस नूर (प्रकाश) से कुछ ने इसाफ और कुछ ने हुक्म मुराद लिया है, लेकिन इसे वास्तविक अर्थ (हकीकी भाषने) में लेने में कोई चीज रूकावट नहीं है, क्योंकि अल्लाह आकाशों और धरती का नूर है। (फतहल कदीर)

² (जुमर) ۚ وَهُوَ يَوْمَ يَوْمٍ يَوْمٍ यह (जम्र) से बना है जिसका मतलब स्वर है। हर गिरोह या समूह में शोर और आवाजें जरूर होती हैं, इसलिए यह गिरोह और समूह के लिए भी इस्तेमाल होता है। मतलब यह है कि काफिरों को नरक की ओर समूहों में ले जाया जायेगा, एक के पीछे एक गिरोह।

७३. और जो लोग अपने रब से डरते थे उन के गुट के गुट जन्नत की तरफ भेज दिये जायेंगे, यहाँ तक कि जब उस के करीब आ जायेंगे और दरवाजे खोल दिये जायेंगे। और वहाँ के रक्षक (निगरी) उन से कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम खुश रहो! वस तुम इन में हमेशा के लिए चले जाओ।

७४. और यह कहेंगे कि अल्लाह का शुक है जिस ने अपना वादा पूरा किया और हमें इस धरती का वारिस बना दिया कि स्वर्ग में जहाँ चाहें निवास करें, तो नैकी करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है।

७५. और तू फरिश्तों को अल्लाह के अर्श के चारों तरफ घेरा बनाये हुए अपने रब की तारीफ और तस्बीह करते हुए देखेगा^२ और उन में इंसाफ वाला फैसला किया जायेगा और कह दिया जायेगा कि सभी तारीफें (प्रशंसायें) अल्लाह ही के लिए हैं जो सारी दुनिया का रब है।

وَسَيَقُولُ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا حَتَّىٰ
إِذَا جَاءُوهَا وَفُجِّعَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا
سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿٧٣﴾

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقْنَا وَعَدَاةَ وَأَوْثَقَنَا
الْأَرْضَ نَكْبَتًا مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ فَنِعْمَ
أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٧٤﴾

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِظِينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ
يَسْبِحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَفَضَىٰ بَيْنَهُمْ بِالنَّحْوِ
وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٧٥﴾

^१ हदीस में आता है कि जन्नत के आठ दरवाजे हैं। उन में एक का नाम 'रघ्यान' है जिस से केवल व्रत रखने वाले (रोजेदार) दाखिल होंगे। (सहीह बुखारी न० २२५७, मुस्लिम न० ६०८) इसी तरह दूसरे दरवाजों के भी नाम होंगे, जैसे नमाज का दरवाजा, जकात का दरवाजा, जिहाद (धर्मयुद्ध) का दरवाजा बगैरह। (सहीह बुखारी, किताबुस सेयाम, मुस्लिम-किताबुज्ज जकात)। दरवाजे की चौड़ाई चालीस साल की दूरी के बराबर होगी, फिर भी वे भरे हुए होंगे। (सहीह मुस्लिम, किताबुज्ज जोहद) सब से पहले जन्नत का दरवाजा खटखटाने वाले नबी ﷺ होंगे। (मुस्लिम, किताबुल ईमान)

^२ अल्लाह के फैसले के बाद जब ईमानवाले जन्नत में और काफिर व मुशरिक नरक में चले जायेंगे। आयत में उस के वाद का वयान किया गया है कि फरिश्ते अल्लाह के अर्श (आसन) को घेरे हुए अल्लाह की तारीफ और तस्बीह में लीन होंगे।

सूरतुल-मोमिन-४०

सूर: मोमिन मक्का में नाज़िल हुई और इस में पच्चासी आयतें और नौ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. हा० मीम० ।

२. इस किताब का नाज़िल करना उस अल्लाह की तरफ से है जो गालिब और जानने वाला है।

३. गुनाहों को माफ करने वाला और तौबा को कुबूल करने वाला, सख्त अजाब वाला, एहसान और कुदरत वाला, जिस के सिवाय कोई भावूद नहीं, उसी की तरफ वापस लौटना है।

४. अल्लाह (तआला) की आयतों में वही लोग झगड़ते हैं जो काफिर हैं, तो उन लोगों का नगरो में चलना-फिरना आप को धोखे में न डाल दे।

५. उन से पहले नूह की कौम ने और उन के बाद की दूसरी कौमों ने भी झूठलाया था, और हर उम्मत ने अपने रसूल को कैदी बनाने का इरादा किया, और झूठ के जरिये हठधर्मी की ताकि उन से सच को नाश कर दें, बस मैंने उनके पन् लिया, तो मेरी तरफ से कैसा दण्ड हुआ।

६. और इसी तरह आप के रब का हुक्म काफिरों पर साबित हो गया कि वे नरकवासी हैं।

سُورَةُ الْمُؤْمِنِينَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَمْدًا ①

تَنْزِيلَ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ②

عَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ

ذِي الْقَوْلِ الْأَعْلَى إِلَّا هُوَ إِلَهُ الْوَاحِدِ ③

مَا يُجَادِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَا

يَعْرَضُكَ تَقْلِبُهُمْ فِي الْأَلْبَابِ ④

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ

وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ وَجَدَلُوا

بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتَهُمْ فَكَيْفَ

كَانَ عِقَابِي ⑤

وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَاتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّهُمْ

أَصْحَابُ النَّارِ ⑥

1 यानी यह काफिर और मुशरिक जो तिजारत करते हैं और उस के लिए कई नगरों में आते जाते और भारी फ्रायेदा हासिल करते हैं, यह अपने कुफ्र के सबब जल्द ही अल्लाह की पकड़ में आ जायेंगे, यह मौका जरूर दिये जा रहे हैं लेकिन उन्हें बेकार नहीं छोड़ा जायेगा।

2 इस से मकरसद इस बात का स्पष्टीकरण (बजाहत) करना है कि जैसे पिछली उम्मतों पर तेरे रब का अजाब साबित हुआ और बरवाद कर दिये गये, अगर यह मक्का के नागरिक भी तुझे झूठलाने और विरोध (मुखालफत) करने से न रूके और झूठ झगड़े को न छोड़ा तो यह भी इसी तरह अल्लाह के अजाब में पकड़ लिये जायेंगे, फिर कोई उन्हें बचाने वाला न होगा।

७. अर्श के उठाने वाले और उस के आस-पास के फरिश्ते अपने रब की तस्वीह तारीफ के साथ-साथ करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं, और ईमानवालों के लिए इस्तिगफार करते हैं; (कहते हैं) कि हे हमारे रब तूने हर चीज को अपनी दया (रहमत) और ज्ञान (इल्म) से घेर रखा है, तो तू उन्हें माफ कर दे जो माफी मांगें और तेरे रास्ते की पैरवी करें और तू उन्हें नरक के अजाब से भी सुरक्षित (महफूज) रख ।

८. हे हमारे रब! तू उन्हें हमेशा रहने वाले स्वर्ग में ले जा, जिनका तूने उनकी वादा दिया है, और उन के वजुर्गों और पत्नियों और सन्तानों में से (भी) उन सबको जो नेक है । बेशक तू जबरदस्त और हिबमत वाला है ।

९. और उन्हें कुकर्मों से भी महफूज रख, (सच तो यह है कि) उस दिन तूने जिसे बुरे कामों (अशुभ) से बचा लिया उस पर तूने रहमत कर दी, और सब से बड़ी कामयाबी तो यही है ।^१

१०. बेशक जिन्होंने कुफ्र किया उन्हें यह आवाज दी जायेगी कि निदचय अल्लाह का तुम पर नाराज होना उस से बहुत ज्यादा है, जो तुम नाराज होते थे अपने मन से जब तुम ईमान की तरफ बुलाये जाते थे, फिर कुफ्र करने लगते थे।^२

الَّذِينَ يَخِشُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ
بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ
آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ
لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ
الْجَحِيمِ ۝۷

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ
صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ
أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝۸

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ
رَحِمْتَهُ ۚ وَذَلِكَ هُوَ الْقَوْلُ الْعَظِيمُ ۝۹

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ينادون لَكُنْتَ اللَّهُ أَلْبَرُ
مِنْ مَقْتَلِكُمْ أُنْفُسُكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيمَانِ
فَتُكْفَرُونَ ۝۱۰

^१ इस में निकटता प्राप्त (मुकर्रब) फरिश्तों के एक खास गिरोह की चर्चा है और वे जो कुछ करते हैं, उसका स्पष्टीकरण (वजाहत) है । यह वह फरिश्ते हैं जो अर्श उठाने वाले हैं और वह फरिश्ते हैं जो अर्श के चारों तरफ हैं ।

^२ यानी आखिरत के अजाब से बच जाना और जन्नत में दाखिला हो जाना यही सब से बड़ी कामयाबी है, क्योंकि इस जैसी कामयाबी कोई नहीं और इसके बराबर कोई कामयाबी नहीं ।

^३ (मक्त) सख्त गुस्सा को कहते हैं, नरकवासी खुद को नरक में झुलसते देखकर बहुत नाराज होंगे, उस समय उन से कहा जायेगा कि दुनिया में जब तुम्हें ईमान का आमन्त्रण (दावत) दिया जाता था और तुम इंकार करते थे तो अल्लाह तआला इस से कहीं ज्यादा तुम पर नाराज होता था जितने आज तुम खुद अपने ऊपर नाराज हो रहे हो, यह अल्लाह के उस गुस्सा का ही नतीजा है कि आज तुम नरक में हो ।

११. (वे) कहेंगे कि हे हमारे रब! तूने हमें दोबारा मारा और दोबारा ही जिन्दा किया, अब हम अपने पापों को कुबूल करते हैं तो क्या अब कोई रास्ता निकलने का भी है?

१२. यह (अजाब) तुम्हें इसलिए है कि जब केवल अकेले अल्लाह की तरफ बुलाया जाता तो तुम इंकार कर देते थे; और अगर उस के साथ किसी को शामिल कर लिया जाता था तो तुम कुबूल कर लेते थे। तो अब फैसला अल्लाह सब से बुलन्द और बड़े का ही है।

१३. वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ (चिन्ह) दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से जीविका (रिज़क) उतारता है। नसीहत तो वही हासिल करते हैं जो (अल्लाह की तरफ) झुकते हैं।

१४. तुम अल्लाह को पुकारते रहो उस के लिए दीन (धर्म) को खालिस करके, यद्यपि (अगरचे) काफिर बुरा माने।^१

१५. बुलन्द दर्जों वाला अर्श का मालिक। वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है वहयी (प्रकाशना) नाज़िल करता है^२ ताकि वह भेंट (मुलाकात) के दिन से डराये।

قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا اِنتَئِنَّا اِشْكَنَّا
فَاَحْسَبُكَ اِيْدُوْنَا قَهْلًا اِلَىٰ حُرُوْبٍ مِّنْ
سَبِيْلٍ ۝۱۱

ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمْ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ اَنْ تَقُوْلُوْا اِنْ شِئْنَا
بِهٖ نُوْمِنُوْا قَالِ لَكُمْ رَبُّمُ الْعَلِيْمُ ۝۱۲

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِنَ السَّمَآءِ
رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّؤْتِي ۝۱۳

فَاَدْعُوْا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ
الْكٰفِرُوْنَ ۝۱۴

رَفِيْعِ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ
عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْزِلَ رِزْقًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝۱۵

^१ यह उन के नरक से न निकाले जाने का सबब बताया है कि तुम दुनिया में अल्लाह की तौहीद (एकता) का इंकार करते थे और शिर्क तुम्हें पसन्द था, इसलिए अब नरक के स्थायी (मुस्तकिल) अजाब के सिवाय तुम्हारे लिये कुछ नहीं।

^२ यानी जब सब कुछ अल्लाह अकेला ही करने वाला है तो काफिरों को कितना ही थुरा लगे, केवल उसी एक अल्लाह को पुकारो उसके लिए इबादत और इताअत को खालिस करते हुए।

^३ (रूह) आत्मा से मुराद वहयी (प्रकाशना) है जो बन्दों ही में से किसी को रिसालत (इश्दूतत्व) के लिए चुन कर नाज़िल करता है। वहयी (प्रकाशना) को रूह (आत्मा) इसलिए कहा गया है कि जिस तरह रूह में इंसानी जिन्दीगी के बजूद और हिफाजत का भेद (राज) छिपा है, उसी तरह वहयी से भी उन इन्सानी दिलों में जीवन की लहर दौड़ जाती है जो पहले कुफ्र और शिर्क के सबब मुर्दा होते हैं।

१६. जिस दिन (सब) लोग जाहिर हो जायेंगे, उन की कोई चीज अल्लाह से छिपी न रहेगी। आज किस का राज्य (मुल्क) है?² सिर्फ अल्लाह एक और जबरदस्त का।

१७. आज हर जान को उसकी करनी का फल दिया जायेगा, आज (किसी तरह का) जुल्म नहीं, बेशक अल्लाह (तआला) जल्द ही हिसाब करने वाला है।

१८. और उन्हें बहुत करीब आने वाली³ (क़यामत) से आगाह कर दें जबकि दिल गले तक पहुँच जायेंगे और सब शान्त (चुप) होंगे। जालिमों का कोई बली (मित्र) होगा न सिफ़ारिश करने वाला कि जिसकी बात मानी जायेगी।

१९. वह आँखों की वेईमानी को और सीने की छिपी बातों को (अच्छी तरह) जानता है।⁴

२०. और अल्लाह (तआला) ठीक-ठीक फैसला कर देगा, और उस के सिवाय जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे किसी बात का भी फैसला नहीं कर सकते, बेशक अल्लाह तआला अच्छी तरह

يَوْمَ هُمْ بَارِزُونَ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۗ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿١٦﴾

الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۗ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿١٧﴾

وَإِنَّهُمْ يَوْمَ الْأَوَّلَةِ إِذْ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاقِ ۖ كَظْمِينَ ۖ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَاسِبٍ وَلَا لَشَفِيعٍ ۗ يُطَاعُ ﴿١٨﴾

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ﴿١٩﴾

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ شَيْءًا ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٢٠﴾

¹ यानी जिन्दा होकर क़ब्रों से बाहर निकल खड़े होंगे।

² यह क़यामत के दिन अल्लाह तआला (परमेश्वर) पूछेगा जब सभी इन्सान उसके आगे महश्वर के मैदान (जमा होने की जगह) में खड़े होंगे। अल्लाह तआला धरती को अपनी मुट्ठी और आकाश को अपने दायें हाथ में लपेट लेगा और कहेगा, "राजा मैं हूँ, धरती के राजा कहाँ है?" (सहीह बुखारी, सूर: जुभर)

³ अَرَبٌ (आज़िफ़:) का मतलब है करीब आने वाली, यह क़यामत (प्रलय) का नाम है, इसलिए की वहाँ भी करीब आने वाली है।

⁴ इस में अल्लाह तआला के पूरे इल्म का बयान है कि उसे सभी चीज़ों का इल्म है, छोटी हो या बड़ी, बारीक हो या मोटी, ऊँचे दर्जे की हो या नीचे दर्जे की। इसलिए इन्सान को चाहिए कि उस के इल्म और इहता की यह हालत है तो उसकी नाफरमानी से बचे और सही मानों में उसका डर अपने भीतर पैदा करे, आँखों की वेईमानी चोरी से देखना है, जैसे रास्ता चलते किसी सुंदरी को कंधियों से देखना, सीनों की बातों में वे शक भी आ जाते हैं जो इन्सान के मन में पैदा होती रहती हैं, वह जब तक शक ही रहते हैं यानी एक पल के लिये आते-जाते रहते हैं तब तक तो वह पकड़ के लायक नहीं होंगे किन्तु वह जब इरादा का रूप धारण कर लें तो फिर उन पर पकड़ हो सकती है, चाहे उन्हें करने का मौका इन्सान को मिले या न मिले।

सुनने वाला और अच्छी तरह देखने वाला है ।

२१. क्या यह लोग धरती पर चले-फिरे नहीं कि देखते कि जो लोग इन से पहले थे उनका नतीजा कैसा कुछ हुआ? वे ताकत और क़वत और धरती पर अपनी यादगारों की बुनियाद पर इन की अपेक्षा (मुक़ाबिल) ज्यादा थे, फिर भी अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया, और कोई न हुआ जो उन्हें अल्लाह के अजाबों से बचा लेता ।

२२. यह इस वजह से कि उन के पास उन के पैगम्बर चमत्कार (मोज़िजे) ले-ले कर आते थे तो वे इंकार कर देते थे, तो अल्लाह उन्हें पकड़ लेता था । बेशक वह बड़ा ताकतवर और सख़्त सजाओं वाला है ।

२३. और हम ने मूसा (عليه السلام) को अपनी आयतों (चिन्हों) और वाजेह दलीलों के साथ भेजा ।

२४. फिरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़ तो उन्होंने कहा कि (यह तो) जादूगर और झूठा है ।^१

२५. तो जब उन के पास मूसा (عليه السلام) हमारी तरफ़ से सच्चा (धर्म) लेकर आये तो उन्होंने कहा कि इस के साथ जो ईमानवाले हैं उन के पुत्रों को तो मार डालो और पुत्रियों को जिन्दा रखो,^२ और काफ़िरों का जो बहाना है वह

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ
قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَاَلْحَدَّ هُمْ بِذُنُوبِهِمْ
وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَاوٍ (۲۱)

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَزَيُّرُهُمْ رُسُلَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَاسْتَكْبَرُوا
فَاَلْحَدَّ هُمْ اللَّهُ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ (۲۲)

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّؤَيَّدٍ (۲۳)

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَكَارُونَ فَكَانُوا أَكْثَرَ كَذٰبًا (۲۴)

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ
الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ وَمَا
كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلٰلٍ (۲۵)

^१ आयात से मुराद वह नौ निशानिया हैं जिनका बयान पहले किया जा चुका है, या लाठी और रौशन हाथ वाले दो बड़े खुले मोज़िजे हैं । سُلْطٰنٍ مِنْ से मुराद वाजेह सबूत और खुली दलीलें (तर्क) हैं जिनका कोई जबाब मुमकिन नहीं था सिवाय ढीटाई और बेचसी के ।

^२ फिरऔन मिश्र (इजिप्ट) के निवासी किव्त नाम के जाति का राजा था, बड़ा सख़्त और बेरहम और परमेश्वर होने का दावेदार । उस ने हज़रत मूसा की जाति को दास (ग़ुलाम) बना रखा था और उन पर कई तरह के ज़ुल्म करता था, जैसा कि कुरआन की कई जगहों पर उसका बयान है । हामान, फिरऔन का मंत्री और ख़ास परामर्श (मदिवरा) देने वाला था और क़ारून वक्त का बड़ा धनी पुरुष था, उन सभी ने पहले लोगों की तरह अल्लाह के रसूल मूसा को झूठलाया और उन्हें जादूगर और झूठा कहा ।

^३ फिरऔन यह काम पहले ही कर रहा था ताकि वह बच्चा पैदा ही न हो जो ज्योतिषियों

गुमराही पर ही है।

२६. और फिरऔन ने कहा कि मुझे छोड़ो कि मैं मूसा को मार डालूँ और इस चाहिए कि अपने रब को पुकारे,^१ मुझे तो डर है कि यह कही तुम्हारा दीन न बदल डाले या देश में कोई बहुत बड़ा फसाद न पैदा कर दे।

२७. और मूसा (عليه السلام) ने कहा कि मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह में आता हूँ, हर उस घमंडी इंसान (की बुराई) से जो हिसाब (लेखा-जोखा) के दिन पर ईमान नहीं रखता।^२

२८. और एक ईमानवाले इंसान ने जो फिरऔन के परिवार में से था और अपना ईमान छिपाये हुए था, कहा कि क्या तुम एक इंसान को सिर्फ इस बात पर क़त्ल करते हो कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और तुम्हारे रब की तरफ से वाजिह सुबूत लेकर आया है, अगर वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर है और अगर सच्चा है तो वह जिन (अजाबों) का तुम को वादा दे रहा है उस में से कोई न कोई तुम पर आ पड़ेगा। अल्लाह (तआला) उन को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं करता जो हद से

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَى وَلْيَدْعُ رَبَّهُ
إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ
فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ (26)

وَقَالَ مُوسَى إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ مِنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ
لَا يُؤْمِنُ بَيُّوتِ الْحِسَابِ (27)

وَقَالَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ مِنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ
إِسْمَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ
جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ؕ وَإِنْ يَكُ كَاذِبًا
فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ؕ وَإِنْ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ بَعْضُ
الَّذِي يَعِدُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ
كَذَّابٌ (28)

(नज़ूमियों) की भविष्यवाणी (पेशीनगोई) के ऐतबार से उस के मुल्क के लिए खतरा हो सकता था, यह दोबारा हुकम उस ने हज़रत मूसा के अपमान और बेइज्जती के लिए दिया।

^१ यह फिरऔन की अकड़ का प्रदर्शन (इज़हार) है कि मैं देखूँगा उस का रब उसे कैसे बचाता है, उसे पुकार कर देख ले या रब ही का इंकार है कि उसका वही सा रब है जो बचा लेगा, क्योंकि वह रब तो खुद ही को कहता था।

^२ ईशूदत मूसा (عليه السلام) को जब यह पता लगा कि फिरऔन मुझे क़त्ल कर देना चाहता है तो उन्होंने उसकी बुराई से बचने के लिए अल्लाह से दुआ की। नबी (ﷺ) को जब दुश्मन से डर होता तो यह दुआ (प्रार्थना) करते।

«اللَّهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ وَنُقَوِّدُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ»

•हे अल्लाह! हम तुझ को उन के मुकाबिले में करते हैं और उनकी सरकशी से तेरी पनाह चाहते हैं। (मुसनाद अहमद : ४\४१५)

तजावुज करने वाले और झूठे हों।¹

२९. हे मेरी कौम के लोगो! आज तो राज तुम्हारा है कि इस धरती पर तुम गालिब हो, लेकिन अगर अल्लाह (तआला) का अजाब हम पर आ गया, तो कौन हमारी मदद करेगा? फिरऔन बोला कि मैं तो तुम्हें वही सलाह दे रहा हूँ जो खुद देख रहा हूँ और मैं तो तुम्हें भलाई का रास्ता ही बता रहा हूँ।

३०. और उस ईमानवाले ने कहा कि हे मेरी कौम के लोगो! मुझे तो डर है कि तुम पर भी वैसा ही दिन (अजाब) न आये जो दूसरे समुदायों (कौमों) पर आया।

३१. जैसे नूह की कौम और आद और समूद और उन के बाद वालों का (हाल हुआ),² और अल्लाह अपने बंदों पर किसी तरह का जुल्म करना नहीं चाहता।³

३२. और हे मेरी कौम के लोगो! मुझे तो तुम पर हाँक पुकार के दिन का भी डर है।

३३. जिस दिन तुम पीठ फेर कर लौटोगे, तुम्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा; और जिसे अल्लाह भटका दे उसका रहनुमा कोई नहीं।

يَقُومُ لَكُمْ الْمَلَكُ الْيَوْمَ ظَاهِرِينَ فِي الْأَرْضِ
فَمَنْ يَضُرُّكَ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنْ جَاءَهُ قَالَ
فِي عَوْنِ مَا لَكُمْ إِلَّا مَا أَرَى وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا
سَبِيلَ الرَّشَادِ ﴿٢٩﴾

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَوْمَئِذٍ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ وَشَلَّ
يَوْمَ الْأَحْزَابِ ﴿٣٠﴾

مِثْلَ نَاقِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَالَّذِينَ مِنْ
بَعْدِهِمْ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظَلْمًا لِلْعِبَادِ ﴿٣١﴾

وَيَقُومُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿٣٢﴾

يَوْمَ تَوَلَّوْنَ مُدْبِرِينَ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ
وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿٣٣﴾

¹ इसका मतलब यह है कि अगर वह झूठा होता (जैसाकि तुम यकीन दिलाते हो) तो अल्लाह उसे दलीलों और चमत्कारों (मोजिजे) से सरफराज न करता, जबकि उस के पास यह चीजें मौजूद हैं। दूसरा मतलब है कि अगर वह झूठा है तो अल्लाह तआला खुद ही उसे जलील और उसको हलाक कर देगा, तुम्हें उस के विरोध (खिलाफ) में कुछ करने की जरूरत नहीं।

² यह बात उस ईमानवाले इंसान ने समझाई और अपनी कौम को दोबारा डराया कि अगर अल्लाह के रसूल को झुठलाने पर हम अड़े रहे तो खतरा है कि पिछली उम्मतों की तरह अल्लाह के अजाब की पकड़ में आ जायेंगे।

³ यानी अल्लाह ने जिन्हें भी बरबाद किया उन के गुनाहों के बदले में और रसूलों को झुठलाने और उन के विरोध (मुखालफत) के सबब ही किया, नहीं तो वह मेहरबान और रहीम रब अपने बंदों पर जुल्म का इरादा ही नहीं करता। कौमों की हलाकत (विनाश) बदला के नियम का जरूरी नतीजा है जिस से कोई उम्मत या इंसान अलग नहीं है।

३४. और उस से पहले तुम्हारे पास यूसुफ़ निशानियाँ ले कर आये' फिर भी तुम उनकी लायी हुई निशानियों में शक व शुब्हा ही करते रहे, यहाँ तक कि जब उन की मौत हो गयी तो तुम कहने लगे कि उन के बाद तो अल्लाह किसी रसूल को भेजेगा ही नहीं, इसी तरह अल्लाह भटकाता है हर उस इंसान को जो हद से तजावुज करने वाला और शक व शुब्हा करने वाला हो।

३५. जो बिना किसी सुबूत के जो उन के पास आया हो अल्लाह की आयतों के बारे में झगड़ते हैं, ² अल्लाह के करीब और इमानवालों के करीब यह तो बहुत नाराजगी की चीज है। अल्लाह (तआला) इसी तरह हर घमंडी, नाफरमानी करने वाले इंसान के दिल पर मोहर लगा देता है।

३६. और फिरऔन ने कहा कि हे हामान, मेरे लिए एक ऊँची अटारी बना, शायद मैं उन दरवाजों तक पहुँच जाऊँ।

३७. जो आकाश के दरवाजे हैं और मूसा के इलाह (ईश्वर) को झाँक लूँ और मुझ को तो पूरा यकीन है कि वह झूठा है, और इसी तरह फिरऔन के बुरा काम उसे भले दिखाये गये और रास्ते से रोक दिया गया, और फिरऔन का (हर) षड़यन्त्र (साजिश) तबाही में ही रहा।

३८. और उस इमान वाले इंसान ने कहा कि हे मेरी कौम (के लोगो)! तुम (सब) मेरी पैरवी

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلِ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِمَّا جَاءَكُمْ بِهِ طَحَنَىٰ وَإِذَا هَلَكَ فُلْتُمُوهَا رَبَّعَتْ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِمْ رَسُولًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ ۗ إِنَّهُ هُوَ مُصَوِّبُ قُرُونٍ ۗ (34)

الَّذِينَ يَجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَنهَمْ طَكِرُوا مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبٍ مُّسْتَكْبِرٍ ۖ جَاءَكَ (35)

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَا هَامَانَ ابْنِي صَرِّحْ لِي بِالْبَيْعِ الْأَسْبَابِ (36)

أَسْبَابِ السَّمَوَاتِ فَاتَّخَذَ إِلَىٰ إِلَهِ مُوسَىٰ وَإِنِّي لَأَكْفُهُ كَذِبًا ط وَكَذَلِكَ دُئِنَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عَمَلِهِ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيلِ ط وَمَا كُنَّا لِنُرِيَهُ مِنَ الْإِنْفِ إِلَّا نَدَبًا (37)

وَقَالَ الْيَتِيمُ آمَنَ لِقَوْمِ أَهْدَىٰ لَهُمْ سَبِيلَ الرَّشَادِ (38)

¹ यानी हे मिश्र के निवासियों ईशदूत (पैगम्बर) मूसा से पहले इसी इलाके में जिस में तुम बस रहे हो, ईशदूत यूसुफ़ भी सुबूतों और दलीलों के साथ आये थे जिस में तुम्हारे बुजुर्गों को ईमान की दाबत दी गई थी। यानी ज.म. (तुम्हारे पास आये) से मुराद ज.म. (तुम्हारे बुजुर्गों के पास आये) है।

² अल्लाह की तरफ से नाजिल कोई सुबूत उस के पास नहीं है, इस के बावजूद भी अल्लाह की तौहीद और उस के हुकूमों में झगड़ते हैं, जैसाकि हर जमाने में अंधे पैरोकारों का तरीका रहा है।

करो, मैं नेकी के रास्ते की तरफ तुम्हारी हिदायत करूंगा।

३९. हे मेरे गिरोह के लोगो! यह दुनियावी जिन्दगी फना होने वाले सामान है (यकीन करो कि शान्ति) और मुस्तकिल घर तो आखिरत ही है।

४०. जिस ने गुनाह किया है, उस को तो बराबर का बदला ही है; और जिस ने नेकी की है चाहे वह मर्द हो या औरत और वह ईमानदार हो, तो ये लोग जन्नत में जायेंगे और वहाँ वे हिसाब रोजी (जीविका) पायेंगे।

४१. और हे मेरी जाति के लोगो! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात की तरफ बुला रहा हूँ, और तुम मुझे नरक की तरफ बुला रहे हो।

४२. तुम मुझे यह दावत दे रहे हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ्र करूँ और उस के साथ शिर्क करूँ जिसका कोई इल्म मुझे नहीं; और मैं तुम्हें प्रभावशाली (गालिब), माफ्र करने वाले (उपास्य) की तरफ दावत दे रहा हूँ।

४३. यह निश्चित (यकीनी) बात है कि तुम मुझे जिसकी तरफ दावत दे रहे हो वह न तो दुनिया में पुकारने के लायक है और न आखिरत में, और यह (भी निश्चित बात है) कि हम सबका लौटना अल्लाह ही की तरफ है और हद से गुजर जाने वाले वेशक नरक वाले है।

يَقَوْمِ إِنَّا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ
وَإِنَّ الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿٣٩﴾

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا ۖ وَمَنْ
عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا
بَعْدَ حِسَابٍ ﴿٤٠﴾

وَيَقَوْمَ مَا بِيْ اَدْعَاؤِكُمْ اِلَى النَّجْوٰى وَتَدْعُوْنِيْ
اِلَى النَّارِ ﴿٤١﴾

تَدْعُوْنِيْ لِاَكْفُرْ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكْ بِهٖ مَا لَيْسَ بِيْ
بِهٖ عِلْمٌ ۗ وَاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْعَقَّارِ ﴿٤٢﴾

لَا جَرَمَ اَلَيْسَا تَدْعُوْنِيْ اِلَيْهِ لَيْسَ لَكَ دَعْوَةٌ
فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنْ مَّرَدُّنَا اِلَى اللّٰهِ
وَاَنْ اَنْتُمْ فِئْتِنٌ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿٤٣﴾

¹ फिरऔन की जाति में से इंसान लाने वाला फिर बोला और कहा कि दावा तो फिरऔन भी करता है कि मैं तुम्हें सीधे रास्ते पर चला रहा हूँ, लेकिन हकीकत यह है कि फिरऔन रास्ते से गुमराह है। मैं जिस रास्ते का निशान बता रहा हूँ वह सीधा रास्ता है, जिसकी तरफ तुम्हें ईश्वर मूसा बुला रहे हैं।

² यानी वह जो ईमानदार भी होंगे और अच्छे आमाल (कर्मों) के पालन करने वाले भी, उसका खुला मतलब यह है कि नेकी के बिना ईमान या ईमान के बिना नेकी का अल्लाह के करीब कोई मूल्य (कीमत) नहीं होगा। अल्लाह के पास कामयाबी के लिए ईमान के साथ नेकी और नेकी के साथ ईमान जरूरी है।

४४. तो आगे चलकर तुम मेरी बातों को याद करोगे, मैं अपना मामला अल्लाह के हवाले करता हूँ। बेशक अल्लाह (तआला) बन्दों को देखने वाला है।

४५. तो उसे अल्लाह (तआला) ने सभी बुराईयों से महफूज रख लिया जो उन लोगों ने सोच रखा था, और फिरऔन के पैरोकारों पर बुरी तरह का अजाब टूट पड़ा।

४६. आग है जिस के सामने ये हर सुबह और शाम को लाये जाते हैं! और जिस दिन कयामत कायम होगी (हुकम होगा कि) फिरऔन के पैरोकारों को बहुत सख्त अजाब में डालो।

فَسَدِّ كُرُونِ مَا أَقُولُ نَكْمَةً وَأَفْوَضُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ (44)

قَوْلَهُ اللَّهُ سَيِّئَاتٍ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ بِآلِ فِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ (45)

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ (46)

1 इस आग पर "बर्जख" में यानी कब्रों में वे लोग हमेशा सुबह और शाम पेश किये जाते हैं, जिस से कब्र का अजाब सावित होता है, जिसका कुछ लोग इंकार करते हैं। हदीसों में तो बड़ी तफसील से कब्र के अजाब पर रीजनी डाली गई है। जैसे हजरत आयेबा (رضى الله عنها) के सवाल के जवाब में नबी ﷺ ने फरमाया :

(نعم، عذاب القبر حق)

•हाँ, कब्र का अजाब सच है। (सहीह बुखारी, किताबुल जनायज, बाबु माजाअ फी अजाबिल कब्रे)

इसी तरह एक दूसरी हदीस में फरमाया गया :

•जब तुम में से कोई मरता है तो (कब्र में) सुबह-शाम उसका स्थान पेश किया जाता है। यानी अगर वह जन्नत का हकदार है तो जन्नत और जहन्नम का हकदार हो तो जहन्नम उस के सामने पेश की जाती है और कहा जाता है कि यह तेरा मुस्तकिल मकान है, जहाँ कयामत के दिन अल्लाह तआला तुझे भेजेगा। (सहीह बुखारी, बाबुल मय्यते युअरजु अलैहि मकअदोह बिल गवाते बल अशीये, मुस्लिम किताबुल जन्नते, बाबु अर्जे मकअदिल मय्यते)

इसका मतलब यह है कि जो कब्र के अजाब का इंकार करते हैं, वह कुरआन और हदीस दोनों की ब्याख्या (तफसीर) को नहीं मानते।

2 इससे पहले साफ है कि आग पर पेश किये जाने का मामला जो सुबह-शाम होता है, कयामत के पहले बर्जख व कब्र ही की जिन्दगी है, कयामत के दिन उनको कब्र से निकालकर कड़े अजाब यानी नरक में डाल दिया जायेगा। आले फिरऔन से मुराद खुद फिरऔन, उसकी कौम और उस के सभी पैरोकार हैं। यह कहना कि हमें तो कब्र में मुर्दा आराम से पड़ा दिखाई देता है, उसे अगर अजाब हो तो इस हालत में दिखाई न दे, बकवास है क्योंकि अजाब के लिए यह जरूरी नहीं कि हमें दिखाई भी पड़े, अल्लाह हर तरह से अजाब देने पर काबिल है। क्या हम देखते नहीं कि एक इंसान सपने में बहुत दुखद दृश्य (मंजर) देख कर बड़ी बेचैनी और दुख का एहसास करता है, लेकिन देखने वाले को जरा एहसास नहीं होता कि यह सोया इंसान सख्त दुख में है।

४७. और जबकि नरक में एक-दूसरे से झगड़ेंगे तो कमजोर लोग बड़े लोगों से (जिन के ये ताबे थे) कहेंगे कि हम तो तुम्हारे पैरोकार थे तो क्या अब तुम हम से इस आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो?

४८. वे बड़े लोग जवाब देंगे कि हम तो सभी इसी आग में हैं, अल्लाह (तआला) अपने बंदों के बीच फ़ैसला कर चुका है।

४९. और सभी नरकवासी (जमा होकर) नरक के रक्षकों (मुहाफिज़ों) से कहेंगे कि तुम ही अपने रब से दुआ करो कि वह किसी दिन भी हमारे अजाब में कमी कर दे।

५०. वे जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल चमत्कार (मोजिज़े) लेकर नहीं आये थे, वे कहेंगे कि क्यों नहीं। वे कहेंगे कि फिर तुम ही दुआ करो और काफ़िरो की दुआ सिर्फ़ (बैअसर और) बेकार है।

५१. यकीनन हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की दुनियावी जिन्दगी में भी मदद करेंगे और उस दिन भी जब गवाही देने वाले खड़े होंगे।

५२. जिस दिन ज़ालिमों की विवशता (बहाना) कुछ फ़ायदा न देगी और उन के लिए धिक्कार (लानत) ही होगी और उन के लिए बुरा घर होगा।

५३. और हम ने मुसा को हिदायत अता की और इस्राईल की औलाद को इस किताब का उत्तराधिकारी (वारिस) बनाया।

५४. कि वह हिदायत और नसीहत थी बुद्धिमानों (अक्लमंदों) के लिए।

وَإِذْ يَتَحَفَّضُونَ فِي النَّارِ قَيْمُولُ الضُّعْفَى
لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا قَهْلَ أَنْتُمْ
تُغْفُونَ عَنَّا نُصِيبًا مِنَ النَّارِ ﴿٤٧﴾

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ
قَدَّحَكَم بَيْنَ الْعِلْمِ ﴿٤٨﴾

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَتِهِمْ لَدُعُوا رَبَّكُمْ
يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِنَ الْعَذَابِ ﴿٤٩﴾

قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ
قَالُوا بَلَىٰ قَالُوا فَاذْعُوا وَمَا دُعَاؤُ الْكَافِرِينَ
إِلَّا فِي ضَلَالٍ ﴿٥٠﴾

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا
وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ﴿٥١﴾

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعِينٌ وَهُمْ وَلَهُمُ الْعَذَابُ
وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ﴿٥٢﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَىٰ وَأَوْرَثْنَا بَنِي
إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ ﴿٥٣﴾

هُدَىٰ وَذِكْرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ﴿٥٤﴾

इस के बावजूद भी क़ब्र के अजाब का इंकार सिर्फ़ हठधर्मी है, बल्कि बेदारी की हालत में भी इंसान को जो तकलीफ़ें होती हैं वह खुद जाहिर नहीं होती बल्कि केवल इंसान का तड़पना और तिलमिलाना जाहिर होता है, और यह भी उस हालत में जब वह तड़पे और तिलमिलाये।

५५. तो (हे नबी!) तू सब कर। अल्लाह का वादा (बेशक) सच्चा ही है, तू अपने गुनाहों की माफी माँगता रह^१ और सुबह-शाम^२ अपने रव की तस्वीह और महिमागान करता रह।

५६. बेशक जो लोग अपने पास किसी सुबूत के न होने के बावजूद अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं; उन के दिलों में बड़ाई के सिवाय दूसरे कुछ नहीं जो इस बड़ाई तक पहुँचने वाले नहीं, तो तू अल्लाह की पनाह माँगता रह, बेशक वह पूरी तरह से सुनने वाला और सब से ज्यादा देखने वाला है।

५७. आकाशों और धरती की पैदाईश बेशक इंसानों की पैदाईश से बहुत बड़ा काम है, लेकिन (यह दूसरी बात है कि) ज्यादातर लोग जानते नहीं हैं।

५८. और अंधा और देखने वाला बराबर नहीं; न वे लोग जो ईमान लाये और भले काम किये कुकर्मियों के (समान हैं)^३ तुम (बहुत) कम नसीहत हासिल कर रहे हो।

५९. क़यामत निश्चय (यकीनन) और बेशक आने वाली है, लेकिन (यह दूसरी बात है कि) ज्यादातर लोग ईमान नहीं लाते।

قَاصِرٍۭٔ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّۭ وَأَسْتَفِرُّ لِنَفْسِيۥ
وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالطُّبْحِ وَاللَّيْلِ وَالْإِبْكَارِ ﴿٥٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ
أَنَّهُمْ لَآئِن فِي صُدُورِهِمْ لَآكِبْرٌ مَّا هُمْ بِالْعٰوِدِۙ
فَاسْتَوِدْ بِاللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿٥٦﴾

لَخَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرَ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِن لَّا
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٧﴾

وَمَا يَسْتَوِى الْأَعْمٰى وَالْبَصِيرَةَ وَالَّذِينَ
أٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّٰلِحٰتِ وَلَا الْمَسِيۙ
قَلِيْلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا، وَلٰكِن لَّا كَثُرَ
النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٥٩﴾

^१ गुनाह से मुराद वह तनिक-तनिक सी भूल-चूक है जो इंसानी फ़ितरत (प्रकृति) के सबब हो जाती है, जिसका सुधार भी अल्लाह की तरफ से कर दिया जाता है या इस्तिगफार (क्षमा माँगना) भी एक इबादत ही है। नेकी और बदला में अधिकता के लिए (क्षमा माँगने) का हुक्म दिया गया है, या मुराद पैरोकारों को हिदायत देना है कि वह तौबा से बेपरवाह न हों।

^२ غَسْرٌ (अधी) से दिन का आखिर और रात का शुरूआती हिस्सा और اِبْكَار (इबकार) से रात का आखिरी और दिन का शुरूआती हिस्सा मुराद है।

^३ भतलब यह है कि जिस तरह अंधा और आँख वाला बराबर नहीं, उसी तरह ईमानदार और काफ़िर, नेक लोग और बुरे लोग बराबर नहीं, बल्कि क़यामत के दिन उन के बीच जो बड़ा फ़र्क होगा वह बिल्कुल ख़ुल कर सामने आ जायेगा।

६०. और तुम्हारे रब का हुक्म (लाग हो चुका) है कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआओं को कुबूल करूँगा। यकीन करो कि जो लोग मेरी इबादत से तकच्चुर करते हैं वे जल्द ही हस्वा (अपमानित) होकर नरक में पहुँच जायेंगे।^१

६१. अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए रात बना दी है कि तुम उस में आराम कर सको और दिन को दिखलाने वाला बना दिया। बेशक अल्लाह (तआला) लोगों पर उपकार (फज़ल) और रहम करने वाला है, लेकिन ज़्यादातर लोग शुक़िया अदा नहीं करते।

६२. यही अल्लाह है तुम सबका पालन-पोषण करने वाला, हर चीज़ का खालिक (सृष्टा), उस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं; फिर किस तरफ़ तुम फिरे जाते हो?

६३. उसी तरह वे लोग भी फेरे जाते रहे जो अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे।

६४. अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए धरती को रहने की जगह और आकाश को छत बना दिया, और तुम्हारा रूप दिया और बहुत अच्छा बनाया^२ और तुम्हें बहुत अच्छी चीज़ें खाने के लिए दीं^३ वही अल्लाह तुम्हारा रब है; तो बहुत शुभ (बाबरकत) अल्लाह है सारी दुनिया का रब।

६५. वह जिन्दा है जिस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं तो तुम इख़लास से उसी की इबादत करते हुए उसे पुकारो, सभी तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जो सारी दुनिया का रब है।

وَقَالَ رَبِّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ
إِنَّ الَّذِينَ يَشْكُرُونَ عَنِّي
سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ ذَرِيرِينَ ﴿٦٠﴾

أَلَلَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ آيَاتٍ تَشْكُرُونَ وَاللَّيْلُ
مُبِينًا إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿٦١﴾

ذِكْرُ اللَّهِ رَبِّكُمْ أَخْلَقَ كُلَّ شَيْءٍ مَّا لَآ إِلَهَ إِلَّا
هُوَ فَآئِنِّي تُؤَكَّدُونَ ﴿٦٢﴾

كَذَلِكَ يُؤْفِكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ
يَجْحَدُونَ ﴿٦٣﴾

أَلَلَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ
بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ
الطَّيِّبَاتِ ذِكْرُ اللَّهِ رَبِّكُمْ فَلْيُذَكِّرْكَ اللَّهُ
رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٤﴾

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٥﴾

^१ यह अल्लाह की इबादत से इंकार और मुंह मोड़ने और उस में दूसरों को भी साझी बनाने वालों का बुरा नतीजा है।

^२ जितने भी ज़मीन पर प्राणी (जानदार) हैं उन सब में तुम इन्सानों को सब से सुन्दर और संतुलित अंगों (मुनासिब जिस्म) का बनाया।

^३ कई तरह के खाने तुम्हारे लिए सुलभ (मुहय्या) कराये जो मजेदार भी हैं और ताकत वाले भी।

६६. (आप) कह दीजिए कि मुझे उनकी इबादत करने से रोक दिया गया है जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाय पुकार रहे हो,^१ इस बिना पर कि मेरे पास मेरे रब के सबूत पहुँच चुके हैं, मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं सारी दुनिया के रब के हुक्म के अधीन (मातहत) हो जाऊँ।

६७. वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से, फिर वीर्य (नुतफा) से, फिर खून के लोथड़े से पैदा किया, फिर तुम्हें बचचा बनाकर निकालता है, फिर (तुम्हें बढाता है कि) तुम अपनी पूरी ताकत को पहुँच जाओ फिर बूढ़े बन जाओ,^२ और तुम में से कुछ की इस से पहले ही मौत हो जाती है,^३ (और वह तुम्हें छोड़ देता है) ताकि तुम मुकर्रर उम्र तक पहुँच जाओ^४ और ताकि तुम सोच समझ लो।

६८. वही है जो जिन्दगी और मौत देता है,^५ फिर जब वह किसी काम के करने का फ़ैसला करता है तो उसे केवल यह कहता है कि 'हो जा' वस वह हो जाता है।

قُلْ إِنِّي نُهَيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِي الْبَيِّنَاتُ مِنْ رَبِّي وَأُورِثُ أَنْ أَسْلُمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٦٦﴾

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تَرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا ۚ وَوَمِنْكُمْ مَنْ يَتُوفَىٰ مِنْ قَبْلِ ۖ وَيَلْبَسُوا أَجْلًا مُسَيًّا ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿٦٧﴾

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٦٨﴾

१ चाहे वह पत्थर की मूर्तियाँ हो, अम्बिया और औलिया हों और समाधियों (कब्रों) में गड़े इंसान हों, मदद के लिए किसी को न पुकारो, उन के नामों के चढ़ावे न चढ़ाओ, उन का बजीफा न पढ़ो, उन का डर न खाओ और न उन से उम्मीदें बाँधो, क्योंकि यह इबादत के भेद (किस्म) हैं जो सिर्फ एक अल्लाह का हक है।

२ यानी इन सभी हालतों और अवस्थाओं (मरहलों) से गुजारने वाला वही है जिसका कोई साझी नहीं।

३ यानी माँ के गर्भाशय (रिहम) में कई अवस्थाओं से गुजर कर बाहर आने से पहले ही माँ के पेट में कुछ बचपन में, कुछ जवानी में और कुछ बुढ़ापे से पहले अर्धे उम्र में मर जाते हैं।

४ यानी अल्लाह तआला (परमेश्वर) यह इसलिए करता है ताकि जिसकी जितनी उम्र अल्लाह ने लिख दी है, वह उसको पहुँच जाये और दुनिया में उतनी जिन्दगी गुजारे।

५ जिन्दगी देना और मारना उसी के हाथ में है, वह एक निर्जीव वीर्य (बेजान नुतफा) को कई हालतों से गुजार कर एक जिन्दा इंसान के रूप में ढाल देता है और फिर एक मुकर्रर वक़्त के बाद इंसान को मारकर मौत की वारिषों में सुला देता है।

६९. क्या तूने उन्हें नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं, कि वे कहीं फेर दिये जाते हैं।

७०. जिन लोगों ने किताब को झुठलाया और उसे भी जो हम ने अपने रसूलों के साथ भेजा, उन्हें बहुत जल्द हकीकत का इल्म (ज्ञान) हो जायेगा।

७१. जबकि उनकी गर्दनो में तौक होंगे और जंजीरें होंगी, घसीटे जायेंगे।

७२. खौलते हुए पानी में, और फिर नरक की आग में जलाये जायेंगे।

७३. फिर उन से पूछा जायेगा कि जिन्हें तुम साझीदार ठहराते थे वे कहीं है?

७४. जो अल्लाह (तआला) के सिवाय थे, वे कहेंगे कि वे हम से खो गये वल्कि हम तो इस से पहले किसी को भी पुकारते ही न थे। अल्लाह (तआला) काफिरों को इसी तरह भटकाता है।

७५. यह (बदला) है उस चीज का जो तुम धरती पर नाहक (अनुचित) फूले न समाते थे और (बेकार) इतराते फिरते थे।

७६. (अब आओ) नरक में हमेशा रहने के लिए (उस के) दरवाजों में चले जाओ; क्या ही बुरी जगह है अहंकार (तकबुर) करने वालों के लिए।

७७. तो आप सन्न करें, अल्लाह का वादा पूरी तरह से सच्चा है, उन्हें हम ने जो वादा दे रखे हैं उन में से कुछ हम आप को दिखायें, या उस से पहले आप को मौत देंगे, उनका लौटाया जाना तो हमारी ही तरफ है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَجَادُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ مَا إِلَى
يُصْرَفُونَ ﴿٦٩﴾

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَمَا أَرْسَلْنَا بِهِ
رُسُلَنَا فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٧٠﴾

يَوْمَ الْأَعْقَابِ فِي آعْنَاقِهِمْ وَالسَّلْسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿٧١﴾

فِي الْحَبِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿٧٢﴾

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ إِنَّ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿٧٣﴾

مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ
كَاذِبِينَ وَمِنْ قَبْلُ شَيْءًا كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ
الْكَافِرِينَ ﴿٧٤﴾

ذَلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٥﴾

أَدْخَلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَلِيدِينَ فِيهَا فَمَيْسَسَ
مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٦﴾

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَإِنَّمَا تُلِيحُّكَ
بَعْضَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ أَوْ تَتَوَكَّلُ عَلَيْنَا ۖ فَاإِنَّمَا
يُوجَعُونَ ﴿٧٧﴾

७८. बेशक हम आप से पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं, जिन में से कुछ के (वाक़ेआत) हम आप को सुना चुके हैं और उन में से कुछ की कथायें तो हम ने आप को सुनायी ही नहीं, और किसी रसूल के (वश में यह) न था कि कोई मोजिजा अल्लाह की इजाज़त के बिना ला सके, फिर जिस समय अल्लाह का हुक्म आयेगा सच्चाई के साथ फैसला कर दिया जायेगा और उस जगह पर असत्यवादी (झूठे) लोग नुकसान में रह जायेंगे।

७९. अल्लाह वह है जिस ने तुम्हारे लिए पशु (चौपाये) पैदा किये? जिन में से कुछ पर तुम सवार होते हो और कुछ को तुम खाते हो।

८०. और दूसरे भी तुम्हारे लिए उस में बहुत से फ़ायदे हैं ताकि अपने दिल में छिपी हुई ज़रूरतों को उन्हीं पर सवारी कर के तुम हासिल कर लो, और इन जानवरों पर और नावों पर तुम सवार कराये जाते हो।

८१. और (अल्लाह) तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता जा रहा है, तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों को इन्कार करते रहोगे।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَنْ
فَضَّلْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ لَمْ نُمِضْ
عَلَيْكَ وَمَا كَانَ لِرُسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا
بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ فَمَنْ يُلَاقِ
وَحْشِرَ هُنَالِكَ الْبَاطِلُونَ ﴿٧٨﴾

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا مِنْهَا
وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٧٩﴾

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْتَغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي
صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفَالِكِ تَصَلُّونَ ﴿٨٠﴾

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَآفَاكِي آيَاتِ اللَّهِ تُنْكِرُونَ ﴿٨١﴾

1 आयात (आयत) से मुराद यहाँ मोजिजा और ख़िलाफ़ आदत वाक़िआ है जो पैगम्बर की सच्चाई को साधित करे। काफ़िर रसूलों से माँग करते रहे कि हमें पर्ला-पर्ला चीज़ दिखाओ, जैसे ख़ुद आख़िरी रसूल (ﷺ) से मक्का के काफ़िरों ने कई चीज़ों की माँग की, जिसका बयान सूर: बनी इस्राईल ९० से ९३ तक में मौजूद है। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि किसी पैगम्बर के बस में यह नहीं था कि वह अपनी जातियों की माँग पर ख़ुद कोई मोजिजा बनाकर दिखा सके, यह सिर्फ़ हमारे अधिकार (वस) में था।

2 अल्लाह अपने अनगिनत नेमतों में से कुछ की चर्चा कर रहा है। चौपाये (पशु) से मुराद ऊँट, गाय, बकरी और भेड़ हैं। यह नर-मादा मिलकर आठ हैं, जैसा कि सूर: अल-अन्आम -१४३ और १४४ में है।

८२. या उन्होंने धरती पर सैर करके अपने से पहले के लोगों का नतीजा नहीं देखा जो इन से तादाद में ज्यादा थे, ताकत में सख्त और धरती में बहुत सारी यादगारें छोड़ी थीं। (लेकिन) उन के किये कामों ने उन्हें जरा भी फ्रायेदा नहीं पहुँचाया।

८३. तो जब कभी उन के पास उन के रसूल वाजेह निश्चानियाँ लेकर आये तो यह अपने पास के ज्ञान (इल्म) पर इतराने लगे, आखिर में जिस चीज को मजाक में उड़ा रहे थे वही उन पर उलट पड़ी।

८४. फिर हमारी यातना (अजाब) देखते ही कहने लगे कि अल्लाह एक पर हम ईमान लाये और जिन-जिन को हम उसका साझीदार बना रहे थे, हम ने उन सब से इंकार किया।

८५. लेकिन हमारी यातना (अजाब) को देख लेने के बाद उन के ईमान ने उन्हें फ्रायेदा न दिया। अल्लाह ने अपना यही कानून मुक़र्रर कर रखा है जो उस के बन्दों में लगातार चला आ रहा है, और उस जगह पर काफिर खराब (और कमजोर) हुए।

सूरतु हा• मीम• अस्सज्द:-४१

सूर: हा•मीम•अस्सज्द: * मक्का में नाज़िल हुई और इन में चौवन आयतें और छः रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. हा•मीम•,

أَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ
وَآشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَخْنَى عَنْهُمْ
مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٢﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْهُمْ بِآيَاتٍ مِنْ حَتَمِ
عِنْدِهِمْ قَالُوا هَذَا هُوَ الَّذِي كُنَّا نَسْتَكْبِرُ
عَنْهُ وَنَحْنُ بِهِ كَاثِرُونَ ﴿٨٣﴾

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحَدُّهُ
وَكُفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ﴿٨٤﴾

فَلَمْ يَكْ يَنْفَعَهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا
سُئِنَّا اللَّهُ الَّذِي قَدْ خَلَقَ فِي عِبَادِهِ وَحَمْرٍ
هَذَا لِكُلِّ قَوْمٍ ﴿٨٥﴾

سُورَةُ الْحَجِّ بِالسَّبْحِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَمْدٌ ١

1 यानी यह अल्लाह का कानून चला आ रहा है कि अजाब देखने के बाद तौबा (परचाताप) और ईमान कुबूल नहीं। यह विषय कुरआन के कई मुकामों में वयात हुआ है।

* इस सूर: का दूसरा नाम "फुस्लेत" है, इस के नाज़िल होने के बारे में मक्का के सरदार उल्बा बिन रबीआ के साथ आप (ﷺ) की मशहूर घटना (बाक़ेआ) है। (इब्ने कसीर)

२. उतरी है बड़े कृपालु (रहमान) बड़े दयालु (रहीम) की तरफ से।

३. (ऐसी) किताब है जिसकी आयतों (सूत्रों) की वाज़ेह तफ़सील की गयी है, (इस हालत में कि) कुरआन अरबी भाषा (जवान) में है उस क्रौम के लिए जो जानती है।

४. खुशखबरी सुनाने वाला और डराने वाला है, फिर भी उन के ज़्यादातर ने मुंह मोड़ लिया और वे सुनते ही नहीं।

५. और उन्होंने कहा कि तू जिसकी तरफ हमें बुला रहा है हमारे दिल तो उस से पर्दे में है, हमारे कानों में बोज़ है (या कुछ सुनायी नहीं देता)^१ और हम में और तुझ में एक पर्दा (आड़) है। अच्छा, तू अब अपना काम किये जा हम भी बेशक काम करने वाले हैं।

६. (आप) कह दीज़िए कि मैं तो तुम ही जैसा इंसान हूँ, मुझ पर बहयी की जाती है कि तुम सबका माबूद सिर्फ़ एक अल्लाह ही है, तो तुम उस की तरफ़ ध्यान केन्द्रित (मरकज़) कर लो और उस से गुनाहों की माफ़ी चाहो, और उन मूर्तिपूजकों के लिए (बड़ी ही) खराबी है।

७. जो ज़कात नहीं देते^२ और आख़िरत का भी इंकार करने वाले ही रहते हैं।

تَنْزِيلٌ مِنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ②

كُتِبَ عَلَيْكُمُ اتِّعَافُ أَنْفُسِكُمْ إِذْ قُرَأَ عَلَيْكُمُ الْقُرْآنُ وَقَدْ عَرَيْتُمْ أَفْئُسَكُمْ فَتَرْكَبُوهُنَّ لِتَذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَلَنْ تَكُونُوا مُّسْرِفِينَ ③

بَشِيرًا وَنَذِيرًا ④ فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ عَنْهُمْ وَلَا يَسْمَعُونَ ④

وَقَالُوا كَلُوبِنَا فِي أَنْتِهٖ مِمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ وَفِي آدَانِنَا وَقْرٌ وَمِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ ⑤ فَاعْمَلْ إِنَّا نَحْنُ غَافِلُونَ ⑤

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَىٰ إِلَيَّ أَنَا إِلَهُكُمْ إِلَهًا وَاحِدًا فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوا ⑥ وَأُولَئِكَ لِلشُّرَكِيَّةِ

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ⑦

^१ كَلُوبِنَا (अकिन्नह) क्लान (किनान) का बहुवचन (जमा) है पर्दा, यानी हमारे दिल इस बात से पर्दों में है कि हम तेरी तौहीद (अद्वैत) और इमाम की दावत को समझ सकें।

^२ وَزَكَاةً (वक्र) का लफ़्ज़ी मायेना बोज़ है, यहाँ मुराद बहरापन है जो सच सुनने में रूकावट था।

^३ यह सूर: मक्का में नाज़िल हुई। ज़कात (धर्मदान) हिज़रत के दूसरे साल फ़र्ज़ हुई, इसलिए इस से मुराद या तो दान है जिसका हुक्म मुसलमानों को मक्के में भी दिया जाता रहा, जिस तरह पहले सिर्फ़ सुबह और शाम की नमाज़ों का हुक्म था, दोबारा हिज़रत से डेढ़ साल पहले मेराज की रात को पाँच फ़र्ज़ नमाज़ों का हुक्म हुआ, या ज़कात से यहाँ मुराद कलमाए बहादत है जिस से इंसानी मन धिर्क की गन्धगियों से पाक हो जाता है। (इब्ने कसीर)

८. बेशक जो लोग ईमान लाये और अच्छे अमल करें उन के लिए बेइन्तेहा बदला है।

९. (आप) कह दीजिए कि क्या तुम उस (अल्लाह) का इंकार करते हो और तुम उस के साझीदार मुकर्रर करते हो जिस ने दो दिन में धरती को पैदा किया, सारे जहाँ का रव वही है।

१०. और उस ने धरती में उस के ऊपर से ही पहाड़ गाड़ दिये, उस में बरकत अता कर दी और उस में रहने वालों के आहार (रिज़क) का भी अंदाजा उसी में कर दिया^१ केवल चार दिन में ही, सवाल करने वालों के लिये बराबर तरीके से।^२

११. फिर आकाश की तरफ बुलन्द हुआ और वह धुँआ (सा) था, तो उसे और धरती को हुकम दिया कि तुम दोनों आओ, चाहो यह न चाहो^३ दोनों ने निवेदन (अर्ज) किया कि हम खुशी-खुशी हाजिर हैं।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ
عَظِيمٌ ﴿٨﴾

قُلْ أَهْلِكُمْ لِتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي
يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَسْدَادًا ذَٰلِكَ رَبُّ
الْعَالَمِينَ ﴿٩﴾

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيًّ مِنْ فَوْقِهَا وَيَبْرُكُ فِيهَا
وَقَدَّرَ فِيهَا أَمْوَاطَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ
سَوَاءً لِّلسَّاعِدِينَ ﴿١٠﴾

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا
وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا
طَائِعِينَ ﴿١١﴾

^१ أنوات (अक्वात) نوات कूत (रोजी, खाद्य) का बहुवचन (जमा) है, यानी धरती पर सभी बसने वाली मखलूक की रोजी उस में रख दिया या उसकी व्यवस्था (एहतेमाम) कर दी। अल्लाह की इस योजना और व्यवस्था का काम इतना बड़ा है कि कोई ज़ुबान उसका बयान नहीं कर सकती, कोई कलम उसे लिख नहीं सकता कोई कलकूलेटर उसे गिन नहीं सकता। कुछ ने इसका मतलब यह लिया है कि हर इलाके में ऐसी चीजें पैदा कर दी जो दूसरे इलाके में नहीं पैदा हो सकती ताकि हर इलाके की यह ख़ास पैदावार उन इलाकों का व्यवहार और रिज़क का जरिया बन जायें, यह मतलब भी अपनी जगह पर सही और बिल्कुल हकीकत है।

^२ سوا (सवाअ) का मतलब है पूरे चार दिन में, यानी सवाल करने वालों को बता दो कि पैदाईश और फैलाव का काम चार दिन में हुआ या पूरा या बराबर. यह जवाब है सवालियों के लिए।

^३ यह आना किस तरह था इसकी हालत नहीं बताई जा सकती? यह दोनों अल्लाह के पास आये जैसे उस ने चाहा, कुछ ने इसका मतलब लिया है कि मेरे हुकम का पालन करो, उन्होंने कहा ठीक है हम हाजिर हैं। अल्लाह ने आसमान को हुकम किया कि सूरज, चाँद और सितारे निकाल दे और धरती से कहा कि चश्मा जारी कर दे और फल उगा दे। (इन्के कसीर) या मतलब है कि तुम दोनों वजूद में आ जाओ।

१२. तो दो दिन में सात आकाश बना दिये, हर आकाश में उसके मुनासिब अहकाम की वही भेज दी, और हमने दुनियावी आकाश को तारों से सजाया और हिफाजत की, यह योजना (तदबीर) अल्लाह ज़बरदस्त जानने वाले की है।

१३. अब भी ये विमुख हों तो कह दीजिए कि मैं तुम्हें उस कड़क (आसमानी अज़ाब) से डरा देता हूँ जो आद क़ौम और समूद क़ौम के कड़क के समान होगा।

१४. उन के पास जब उन के आगे-पीछे से पैगम्बर आये कि तुम अल्लाह के सिवाय किसी की इबादत न करो, तो उन्होंने जवाब दिया कि अगर हमारा रब चाहता तो फ़रिश्तों को भेजता; हम तो तेरी रिसालत का पूरे तौर से इंकार करते हैं।

१५. तो जब आद ने विला वजह धरती पर तकब्बुर शुरू कर दिया और कहने लगे कि हम से ताक़त वाला कौन है, क्या उन्हें यह नहीं दिखायी दिया कि जिस ने उन्हें पैदा किया वह उन से ज़्यादा ताक़त वाला है। वे (आखिर तक) हमारी आयतों का इंकार ही करते रहे।

१६. तो आखिर में हम ने उन पर एक तेज़ गति वाली आंधी, अशुभ (मन्हूस) दिनों में भेज दी कि उन्हें दुनियावी जिन्दगी में अपमान वाले अज़ाब का मज़ा चखा दें। (यकीन करो) कि आखिरत का अज़ाब इस से ज़्यादा रस्वा करने वाला है और वे मदद नहीं किये जायेंगे।

فَقَضَيْنَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِضَوَائِحِهَا وَحِفْظًا ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ﴿١٢﴾

فَإِنِ اعْرَضُوا فَعَلْنَا لَهُمْ صُحُفَةً مِّثْلَ صُحُفَةِ عَادٍ وَتَمُودَ ﴿١٣﴾

إِذْ جَاءَهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۗ قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً فَأَمَّا إِسْرَءِيلُ أَنْزَلْنَاهُ مِثْلَ مَا أَنْزَلْنَا عَلَىٰ مَوْلَىٰ نَارٍ أَنِ اعْبُدْ اللَّهَ وَاعْتَدِ لِلْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَجَاءَهُمْ سَخِرْنَا مِنْهُمْ إِلَىٰ آيَاتِنَا فَهُمْ يُخَسِرُونَ ﴿١٤﴾

فَأَمَّا عَادُ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً مَا أَوْحَيْنَا إِلَيْهِمْ أَنِ اتَّقُوا اللَّهَ ۗ الْإِنشَاءُ خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَكَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿١٥﴾

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي أَيَّامٍ نَحْسَابٍ ۚ فَجَاءَهُمْ عَذَابُ الْغَوْزِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ وَوَعَدْنَا الْأَمْرُؤَ الْآخِرَىٰ وَهُمْ لَا يُنصَرُونَ ﴿١٦﴾

١. لِحَابٍ का अनुवाद (तर्जुमा) कुछ ने लगातार किया है क्योंकि यह हवा सात रातों और आठ दिन तक लगातार चलती रही, कुछ ने तेज़, कुछ ने धूल-धप्पड़ वाली और कुछ ने मन्हूस किया है। आखिरी तर्जुमा का मतलब यह होगा कि यह दिन जिन में उन पर कड़ी हवा की आंधी आयी, उन के लिए बड़े मन्हूस साबित हुए, यह नहीं कि दिन ही खुद मन्हूस (अशुभ) है।

१७. और रहे समुद्र, तो हम ने उनका भी मार्गदर्शन (रहनुमाई) किया फिर भी उन्होंने मार्गदर्शन पर अंधेपन को महत्व (अहमियत) दिया, जिसके सबब उन्हें (पूरे तौर से) अपमान वाली यातना (अजाब) की कड़क ने उन के करतूतों के सबब पकड़ लिया।¹

१८. और ईमानदार और परहेजगारों को हम ने (बाल-बाल) बचा लिया।

१९. और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन नरक की तरफ लाये जायेंगे और उन (सब) को जमा कर दिया जायेगा।

२०. यहाँ तक कि जब नरक के बहुत करीब आ जायेंगे उन पर उन के कान और उनकी आँखें और उनकी खालें उन के अमल की गवाही देंगे।

२१. और ये अपनी खालों से कहेंगे कि तुम ने हमारे खिलाफ गवाही क्यों दी, वह जवाब देंगे कि हमें उस अल्लाह ने बोलने की ताकत दी जिस ने हर चीज को बोलने की ताकत अता की है, उसी ने पहली बार तुम्हें पैदा किया और उसी की तरफ तुम सब लौटाये जाओगे।

२२. और तुम (अपने करतूत) इस वजह से छिपा कर रखते ही न थे कि तुम पर तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें गवाही देंगी² और तुम यह समझते रहे कि तुम जो कुछ भी कर रहे हो उस में से बहुत से कर्मों से अल्लाह अंजान है।

وَأَمَّا نَمُودٌ فَهَدَيْنَهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمَىٰ عَلَىٰ
الْهُدَىٰ فَأَخَذَتْهُمُ طَوعَةً الْعَذَابِ أَلَّوْنَ
بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٧﴾

وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿١٨﴾

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ
يُوزَعُونَ ﴿١٩﴾

حَتَّىٰ إِذَا مَا جَاءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ
وَإَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٠﴾

وَقَالُوا لِمَ اجْعَلُودِجُم لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا قَالُوا
أَنْطَقْنَا اللَّهُ الَّذِي أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ
خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَاللَّيْلُ تُرْجَعُونَ ﴿٢١﴾

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَشِيرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ
سَمْعُكُمْ وَلَا أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ
ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٢﴾

¹ صَاعِدَةٌ (साइकः) सख्त अजाब को कहते हैं, यह कड़ा अजाब उन पर चिंघाड़ और भूकम्प (जलजला) के रूप में आया, जिस ने जिल्लत और रुस्वाई के साथ उन्हें तहस-नहस कर दिया।

² इसका मतलब है कि तुम पाप का अमल करते हुए तो लोगों से छुपने की कोशिश करते थे लेकिन तुम्हें इसका कोई डर नहीं था कि तुम्हारे खिलाफ खुद तुम्हारे अंग भी गवाही देंगे कि जिन से छुपने की जरूरत का आभास करते, इसका सबब उनका दोबारा जिन्दगी से इंकार और कुफ्र था।

२३. और तुम्हारे इसी कुविचार (बदगुमानी) ने जो तुम ने अपने रब के बारे में कर रखे थे, तुम्हें नाश कर दिया, और आखिर में तुम नुकसान उठाने वालों में से हो गये।

२४. अब अगर ये सब करें तो भी उनका ठिकाना नरक ही है और अगर ये तौबा भी करना चाहें तो भी माफ नहीं किये जायेंगे।

२५. और हम ने उन के कुछ साथी निर्धारित (मुकर्रर) कर रखे थे जिन्होंने उन के अगले-पिछले कर्मों को उनकी नजर में खूबसूरत बना रखे थे,¹ और उन के हक में भी अल्लाह का वादा उन कौमों के साथ पूरा हुआ जो उन से पहले जिन्नों और इंसानों की गुजर चुकी है। बेशक वे नुकसान उठाने वाले सावित हुए।

२६. और काफिरों ने कहा कि इस कुरआन को सुनो ही मत (उन के पाठ करने के समय) और बेहूदा बातें करो, क्या अब कि तुम गालिब हो जाओ।

२७. तो बेशक हम उन काफिरों को सख्त अजाब का मजा चखायेंगे और उन्हें उन के बहुत बुरे अमल का बदला (ज़रूर) देंगे।

२८. अल्लाह के दुश्मनों का बदला (दण्ड) यही नरक की आग है, जिस में उनका हमेशा का घर है, (यह) बदला है हमारी आयतों के इंकार करने का।²

وَذَلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرَأَيْتُمْ
فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٣﴾

فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ وَإِنْ يَسْتَعْتِبُوا
فَمَا لَهُمْ مِنَ الْعُتْبِيِّينَ ﴿٢٤﴾

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ
إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿٢٥﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهَذَا الْقُرْآنِ
وَالْعَوَىٰ فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ﴿٢٦﴾

فَلَنُنَزِّلَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَشْرَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٢٧﴾

ذَٰلِكَ جَزَاءُ عَادَآءِ اللَّهِ النَّارُ ۗ لَهُمْ فِيهَا دَارُ
الْخُلْدِ ۗ جَزَاءُ ۙ إِيَّآكَ كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ ﴿٢٨﴾

¹ इन से मुराद वह शैतान, इंसान और जिन्न है जो झूठ पर इसरार (दुराग्रह) करने वालों के संग लग जाते हैं, जो उन्हें कुफ्र और गुनाहों को अच्छा बनाकर दिखाते हैं तो वह इस गुमराही के दलदल में फसे रहते हैं यहाँ तक कि उनकी मौत आ जाती है और वह सदा के नुकसान के लायक बन जाते हैं।

² आयतों से मुराद जैसाकि पहले भी बताया गया है कि वह खुले सुबूत और दलीलें हैं जो अल्लाह

२९. और काफिर लोग कहेंगे कि हे हमारे रब! हमें जिन्नों और इंसानों के उन (दोनों गिरोहों) को दिखा, जिन्होंने हमें भटकया (ताकि) हम उन को अपने पैरों के नीचे डाल दें ताकि वे बहुत नीचे (सख्त अजाब में) हो जायें।

३०. हकीकत में जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उसी पर जमे रहे, उन के पास फरिश्ते (यह कहते हुए) आते हैं कि तुम कुछ भी भयभीत (खौफजदा) और दुखी न हो (बल्कि) उस जन्नत की खुशखबरी सुन लो जिसका तुम्हें वादा दिया गया है।

३१. तुम्हारी दुनियावी जिन्दगी में भी हम तुम्हारे मददगार थे और आखिरत में भी रहेंगे, जिस चीज को तुम्हारा मन चाहे और जो कुछ मांगो सब तुम्हारे लिये [जन्नत में मौजूद (उपस्थित)] है।

३२. बड़ा माफ करने वाला बड़े मेहरवान की तरफ से ये सब कुछ मेहमानी के रूप में है।

३३. और उस से ज्यादा अच्छी बात वाला कौन है जो अल्लाह की तरफ बुलाये, नेकी के काम करे और कहे कि मैं यकीनी तौर से मुसलमानों

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا آيَاتِكَ
مِنَ الْجِنَّةِ وَالْإِنسِ نَجْعَلَهُمَا تَمَتًا أَقْدَامَنَا
لِيَكُونَا مِنَ الْاسْقَلِينَ ﴿٢٩﴾

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا
سَتَتَرَكُنَّا فِي آيَاتِنَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثُونَ
عَلَيْهِمْ أَتَيْتَهُمُ الْآيَاتِ كَذِبًا وَأَلَّا يَحْكُمُوا
بِآيَاتِنَا لَكُنْهُمْ نُوْعُدُونَ ﴿٣٠﴾

نَحْنُ أَوْلَىٰ بِكُمُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ
وَلَكُمُ فِيهَا مَا كُنْتُمْ تُسْأَلُونَ لَكُمُ فِيهَا
مَا تَدْعُونَ ﴿٣١﴾

نُزُلًا مِّنْ عَطْوٍ رَّحِيمٍ ﴿٣٢﴾

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ
صَالِحًا وَقَالَ إِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾

तआला अभिभया (ईशदूतों) पर उतारता है, या वह मोजिजा हैं जो उनको दिये जाते हैं, या पैदाईश के वे सबूत हैं जो दुनिया और प्राणियों (मखलूकात) में फैले हुए हैं। काफिर इन सब ही का इकार करते हैं जिस के सबब वह ईमान से वंचित (महरूम) रहते हैं।

यानी कठिन से कठिन हालत में भी ईमान पर कायम रहे, उस से फिरे नहीं। कुछ ने कायम रहने का मतलब इख्लास लिया है, यानी सिर्फ एक अल्लाह ही की इबादत और इताअत की। जिस तरह हदीस में आता है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से कहा। «मुझे ऐसी बात बतला दें कि आप के बाद मुझे किसी से सवाल करने की जरूरत न हो।» आप ने फरमाया :

«قُلْ آمَنْتُ بِاللَّهِ ثُمَّ اسْتَمْتُمْ»

«कह, मैं अल्लाह पर ईमान लाया, फिर इस पर अडिग रह।» (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबु जाभिअे औसाफिल इस्लाम)

में से हैं।

३४. और नेकी और बुराई बराबर नहीं होते, बुराई को भलाई से दूर करो, फिर वही जिस के और तुम्हारे बीच दुश्मनी है ऐसा हो जायेगा जैसे जिगरी दोस्त।^१

३५. और यह बात उन्हीं की खुशनसीबी में होती है जो सब करें, और उसे बड़े खुशनसीब के सिवाय कोई नहीं हासिल कर सकता।^२

३६. और अगर शैतान की तरफ से कोई शक पैदा हो जाये तो अल्लाह की पनाह चाहो। बेशक वह बड़ा सुनने वाला जानने वाला है।

३७. और दिन-रात और सूरज और चाँद भी उसी की निशानियों में से हैं, तुम सूरज और चाँद के सामने सिर न झुकाओ बल्कि सिर उस अल्लाह के सामने झुकाओ जिस ने उन सबको पैदा किया है, अगर तुम्हें उसी की इबादत करनी है।

३८. फिर भी अगर वे तकबुर करें तो वे (फरिश्ते) जो आप के रब के करीब हैं, वे तो रात-दिन उसकी महिमा (तस्बीह) का बयान करते हैं और (किसी समय भी) नहीं थकते।

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۗ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾

وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۗ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا ذُو حِظٍّ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾

وَمَا يَنْزَعُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْعٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۗ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾

وَمِنَ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۗ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ﴿٣٧﴾

فَإِن اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ يَسْتَحْسِنُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْئُونَ ﴿٣٨﴾

^१ यह एक बहुत ही अहम अखलाकी (नैतिक) हिदायत है कि बुराई को अच्छाई के साथ टालो, यानी बुराई का बदला एहसान के साथ, जुल्म का माफी से, गुस्सा का सब्र से और अप्रिय (बेहूदा) बातों का समझा कर जबाब दिया जाये। इसका असर यह होगा कि तुम्हारा दुश्मन दोस्त बन जायेगा, दूर, करीब और खून का प्यासा तुम्हारा चाहने वाला और जान निछावर करने वाला हो जायेगा।

^२ **حِظٍّ عَظِيمٍ** (बड़ा सौभाग्य) से मुराद जन्नत है, यानी ऊपरी गुण (अवसाफ़) उनको हासिल होते हैं जो बड़े भाग्यशाली (नसीब वाला) होते हैं, यानी जन्नती, जिनका जन्नत में जाना लिख दिया गया हो।

३९. और उस (अल्लाह) की निशानियों में से (यह भी) है कि तू धरती को दबी दबायी (शुष्क) देखता है, फिर जब हम उस पर वर्षा करते हैं तो वह तरौ-ताजा होकर उभरने लगती है। जिस ने उसे ज़िन्दा कर दिया वही निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से मुर्दा को भी ज़िन्दा करने वाला है।^{३९} बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

४०. बेशक जो लोग हमारी आयतों में टेढ़ापन करते हैं वह (कुछ) हम से छिपे नहीं, (बताओ तो) जो आग में डाला जाये वह अच्छा है या वह जो अमन व अमान से (शान्तिपूर्वक) क़यामत के दिन आये? तुम जो चाहो करते जाओ; वह तुम्हारा सब किया कराया देख रहा है।

४१. जिन लोगों ने अपने पास पाक कुरआन पहुँच जाने के बावजूद उस से कुफ़्र किया (वह भी हम से छिपे नहीं), यह बहुत अजीम (सम्मानित) किताब है।

४२. जिस के पास असत्य (बातिल) फटक भी नहीं सकता न उस के आगे से और न उस के पीछे से, यह है नाज़िल की हुई (अल्लाह) हिक्मत वाले और गुणों वाले की तरफ़ से।

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَأْتِي الْأَرْضُ حَاشِعَةً فَيَادَا
أَنزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ فَانفَجَرَتْ وَرَبَّتْ إِنَّ اللَّهَ
أَحْيَاهَا لَتُبْحَى الْمَوْتُ إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ۝ ٣٩

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْهَا
أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ خَبِيرٌ أَمْ مَنْ يَأْتِي آمِنًا
يَوْمَ الْقِيَامَةِ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ إِنَّهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝ ٤٠

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ وَإِنَّهُ
لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ۝ ٤١

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ
خَلْفِهِ تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝ ٤٢

^१ मुर्दा ज़मीन को बारिश के ज़रिये इस तरह जीवन प्रदान कर देना और उस से उपज (खेती) के लायक बनाना इस बात का सुबूत है कि वह मुर्दों को भी बेशक ज़िन्दा करेगा।

^२ यानी उसको मानते नहीं बल्कि उस से मुँह फेरते और झुठलाते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास ने (इल्हाद) का तर्जुमा किया है *وضع الكلام على غير مواضع* इस विना पर इस में वह झुठा गिरोह भी आ जाते हैं जो अपने झूठे यक़ीन और सिद्धान्त (उसूल) की सिद्धि (साधित) करने के लिए अल्लाह की आयतों के मतलब में परिवर्तन (बदलाव) करते और धोखे-धड़ी से काम लेते हैं।

४३. आप से वही कहा जाता है जो आप से पहले के रसूलों से भी कहा गया है। बेशक आप का रब माफ करने वाला और दुखदायी अजाब देने वाला है।

४४. और अगर हम उसे ग़ैर अरबी भाषा (जुबान) का कुरआन बनाते तो कहते कि इसकी आयतें साफ़ तौर से बयान क्यों नहीं की गई? यह क्या कि किताब ग़ैर अरबी और आप अरबी रसूल? (आप) कह दीजिए कि यह ईमानवालों के लिए हिदायत और शिफा है, और जो ईमान नहीं लाते तो उन के कानों में (बहरापन) बोझ है और यह उन पर अधापन है, ये वे लोग हैं जो किसी दूर जगह से पुकारे जा रहे हैं।^१

४५. और बेशक हम ने मूसा (عليه السلام) को किताब अता की थी तो उस में भी मतभेद (इख़्तिलाफ़) किया गया और अगर (वह) बात न होती जो आप के रब की तरफ से पहले ही मुकर्रर हो चुकी है तो उन के बीच (कभी का) फैसला हो चुका होता, यह लोग तो उस के बारे में सख्त बेचैन करने वाली शक में हैं।

४६. जो इंसान नेकी के काम करेगा वह अपने फायदे के लिए और जो बुरा काम करेगा उसका भार भी उसी पर है, और आप का रब बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं।^२

مَا يَقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ
إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿٤٣﴾

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَبِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ
آيَاتُهُ أَهِيَ الْعَجِيبُ وَالْعَرَبِيُّ أَمْ لَوْلَا الَّذِي نَسُوا
هُدًى وَشِقَاقُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ
وَقُرُوءُهُمْ عَلَيْهِمْ غَمٌّ أُولَئِكَ يَتَذَكَّرُونَ مِنْ
مَسْكَانٍ بَعِيدٍ ﴿٤٤﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ لَوْلَا
كَيْسٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَفُضِّلَ بَيْنَهُمْ وَأَنَّهُمْ
لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرْتَبِئِينَ ﴿٤٥﴾

مَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا
وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾

^१ यानी जिस तरह दूर का इंसान दूरी की वजह से पुकारने वाले की आवाज सुनने से मजबूर रहता है, इसी तरह इन लोगों की अक़ल और हवास में कुरआन नहीं आता।

^२ इसलिए कि वह सजा सिर्फ उसी को देता है जो पापी होता है, न कि जिसे चाहे विला वजह ही अजाब में ग्रस्त (मुदितेला) कर दे।

४७. क़यामत का इल्म अल्लाह ही की तरफ लौटाया जाता है, और जो-जो फल अपने गाँधों में से निकलते हैं और जो मादा गर्भवती (हामला) होती है और जो बच्चा वह जन्म देती है, सब का इल्म उस को है, और जिस दिन अल्लाह (तआला) उन (मूर्तिपूजकों) को बुलाकर पूछेगा कि मेरे साझीदार कहाँ हैं; वे जवाब देंगे कि हम ने तो तुझ से कह दिया कि हम में से कोई उसका गवाह नहीं।

४८. और ये (जिन) जिन की पूजा इस से पहले करते थे वे उनकी नज़र से ओझल हो गये, और उन्होंने समझ लिया कि अब उन के लिए कोई बचाव (का रास्ता) नहीं।

४९. भलाई माँगने से इंसान थकता नहीं, और अगर उसे कोई तकलीफ पहुँच जाये तो हताश (मायूस) और नाउम्मीद हो जाता है।

५०. और जो कष्ट उसे पहुँच चुका है, उस के बाद अगर हम उसे किसी दया का मजा चखा दें तो वह कह उठता है कि मैं तो इसका हकदार ही था, और मैं तो विचार नहीं कर सकता कि क़यामत क़ायम होगी और अगर मैं अपने रब की ओर लौटाया गया, तो भी बेशक उसके पास

الْيَوْمَ يَرُدُّ إِلَيْهِمُ الْحَسَابَ وَمَا يُنْتِجُ مِنَ
عَمَلِهِمْ مِنْ شَيْءٍ إِنَّهُمْ أُمُوتُوا مِنْ قَبْلُ
وَمَا يَشْعُرُونَ إِلَّا بِأَلْمِمْهُمْ وَأَنْ
يَكْفُرُوا بِهِمْ وَإِنَّهُمْ لَمَّا أُولُوا
أَدْبَارًا لَمَّا أُولُوا لَمَّا أَتَتْهُمْ
أَسْفَارُهُمْ أُولُوا لَمَّا أَتَتْهُمْ
أَسْفَارُهُمْ أُولُوا لَمَّا أَتَتْهُمْ
أَسْفَارُهُمْ ④٧

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَبْعَدُهُمْ كَمَا كَانُوا
يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ وَكَانُوا
مَّا لَهُمْ مِنْ مَّجْبُوعِينَ ④٨

لَا يَسْتَمِعُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِينَ وَإِنَّ
الْشَّرَّ لَمَّا يَلْمُوكَ فِتْنًا ④٩

وَلَكِنْ إِذْ قُنْتُمْ رَحِمَةً فِرَارًا مِنْ بَعْضِ أَضْرَاءِ
مَسْتَشْتِهِمْ لِيَقُولَ هَذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً
وَلَكِنْ رُجِمْتُ إِلَى رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْبَىٰ
فَلْيَنْهَيْتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَكِنْ نَفْسُهُمْ
مِنْ عَذَابٍ عَلِيظٍ ⑤٠

1 यह अल्लाह के पूरा और व्यापक ज्ञान (वसीअ इल्म) का वयान है, और उस के इस ज्ञान गुण (अवसाफ़) में कोई उसका साझी नहीं, यहाँ तक कि अम्बिया (عليهم السلام) भी नहीं। उन्हें भी इतना ही ज्ञान होता है जितना अल्लाह तआला (परमेस्वर) उन्हें वही जे के जरिये अता कर देता है।

2 यानी मुसीबत पहुँचने पर तो तुरन्त मायूस हो जाता है, जबकि अल्लाह के निःस्वार्थी (मुखलिस) बन्दों की हालत इस से अलग होती है, एक तो वह दुनिया के लालची नहीं होते, उन के सामने हर पल आखिरत ही होती है। दूसरे, दुख पहुँचने पर भी वे अल्लाह की नेमत और रहमत से निराश (मायूस) नहीं होते बल्कि इम्तेहानों को भी गुनाहों का बदला और पदोन्नति (तरक्की) का सबब मानते हैं, मानो निराशा (मायूसी) उन के करीब भी नहीं आती।

भी मेरे लिए भलाई होगी,¹ बेशक हम उन काफिरों को उन के अमल से बाखबर (अवगत) करेंगे और उन्हें सख्त (कठोर) अजाब का मजा चखायेंगे।

५१. और जब हम इंसान पर अपना उपकार करते हैं तो वह विमुख (गुमराह) हो जाता है और पहलू बदल लेता है; और जब उस पर दुख आता है तो बड़ी लम्बी-चौड़ी दुआयें करने वाला बन जाता है।²

५२. (आप) कह दीजिए कि भला यह तो बताओ कि अगर यह (कुरआन) अल्लाह की तरफ से आया हुआ हो फिर तुम ने उसे न माना तो उस से बढ़कर बहका हुआ कौन होगा जो (सच से) विरोध (मुखालफत) में दूर चला जाये।

५३. जल्द ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ दुनिया के किनारों में भी दिखायेंगे और खुद उन के अपने वजूद में भी, यहाँ तक कि उन पर खुल जाये कि सच यही है। क्या आप के रब का हर चीज से अवगत (बाखबर) होना काफ़ी नहीं।

५४. यकीन करो कि यह लोग अपने रब के सामने पेश होने में सशकित (शक में) हैं। याद रखो कि अल्लाह तआला हर चीज को घेरे हुए है।

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَأَى بِجَانِبِهِ
وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ دَئِدُوْا دُعَاؤَ عَرِيضٍ ①

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنَ عِنْدِ اللَّهِ تَمْرٌ
كَفَرْتُمْ بِهِ مِنْ أَصْلٍ مَّا وَفَىٰ شِقَاقِي
بُوعِيْ ②

سَأَرِيَهُمْ أَزِيَّتَنَا فِي الْأَفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ
يَتَّبِعُنَّ لَهُمُ اللَّهُ الْحَقُّ مَا أَوْكَلَكَ بِرَبِّكَ أَكَلَهُ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ③

أَلَا إِنَّهُمْ فِي مِرْيَةٍ مِّنْ لِقَاؤِ رَبِّهِمْ أَأَلَا إِنَّهُمْ
يَكُلُّ شَيْءٌ مَّرْصُومٌ ④

¹ यह कहने वाला मुनाफिक (द्वयवादी) या काफिर है कोई ईमानवाला ऐसी बात नहीं कह सकता काफिर ही यह समझता है कि मेरी दुनिया सुख से गुजर रही है तो आखिरत भी मेरे लिए ऐसी ही होगी।

² यानी अल्लाह के दरवार में रोता गिड़गिड़ाता है ताकि वह मुसीबत को दूर कर दे, यानी दुख में अल्लाह को याद करता है, सुख में भूल जाता है। मुसीबत आने के समय गुहार (फरियाद) करता है, खुशी के समय उसे बह याद नहीं रहता।

सूरतुश्शूरा-४२

सूर: शूरा मक्का में नाज़िल हुई और इस में तिरपन आयतों और पाँच रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. हा•मीम•।

२. ऐन•सीन•काफ।

३. अल्लाह तआला जो ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है, इसी तरह तेरी तरफ और तुझ से पहले के लोगों की तरफ वही भेजता रहा है।^१

४. आकाशों की (सभी) चीज़ें और जो कुछ धरती में है सब उसी का है, और वह सब से बलन्द और बड़ा है।

५. करीब है कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़ें और सारे फरिश्ते अपने रब की पाकीजगी (महिमागान) (हम्द) के साथ बयान कर रहे हैं और धरती वालों के लिए क्षमा-याचना (इस्तिगफ़ार) कर रहे हैं। खूब समझ रखो कि अल्लाह (तआला) ही भाफ करने वाला रहम करने वाला है।

سُورَةُ الشُّورَىٰ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَمْدٌ ①

عَسَقٌ ②

كَذَلِكَ يُوحى إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ
بَيْنِكَ ۗ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

كُلُّ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ④

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرٰنِ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلَائِكَةُ
يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِنَّ وَيسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي
الْاَرْضِ ۗ الْاِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ⑤

¹ यानी जिस तरह यह कुरआन तेरी तरफ नाज़िल किया गया उसी तरह तुझ से पहले अभिब्या पर ग्रन्थ (सहीफे) और किताब नाज़िल की गई, प्रकाशना (वह्यी) वह ईशवाणी है जो फरिश्तों द्वारा अल्लाह तआला अपने पैगम्बरों (सदेशवाहकों) के पास भेजता रहा। एक सहाबी (सहचर) ने रसूलुल्लाह ﷺ से वह्यी की हालत पूछी तो आप ने फरमाया : कभी घंटी की आवाज़ की तरह आती है और यह मुझ पर सब से भारी होती है, जब यह खत्म हो जाती है तो मुझे याद हो चुकी होती है, और कभी फरिश्ता इंसानी रूप (शकल) में आता है और मुझ से बात करता है और वह जो कहता है मैं याद कर लेता हूँ। हज़रत आयेशा رضی الله عنها कहती है कि मैंने कड़े जाड़े में देखा कि जब वह्यी की हालत खत्म होती तो आप पसीने से भीग जाते और आप की पेशानी से पसीने की बूँदें गिर रही होतीं। (सहीह बुखारी, बाबु बदइल वह्यी)

६. और जिन लोगों ने उस के सिवाय दूसरों को औलिया बना लिया है। अल्लाह (तआला) उन्हें अच्छी तरह देख रहा है, और आप उन के उत्तरदायी (जवाबदेह) नहीं है।

७. और उसी तरह हम ने आप की तरफ अरबी कुरआन की वही की है ताकि आप मक्का-वासियों को और उसके करीबी इलाके के लोगों को सावधान (आगाह) कर दें^२ और जमा होने के दिन से^३ जिस के आने में कोई शक नहीं, डरा दें, एक गुट जन्नत में होगा और एक गुट नरक में होगा।

८. अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो उन सब को एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी दया (रहमत) में शामिल कर लेता है, और जालिमों का पक्षधर (वली) और सहायक (मददगार) कोई नहीं।

९. क्या उन लोगों ने अल्लाह (तआला) के सिवाय दूसरे वली बना लिये हैं, (हकीकत में तो) अल्लाह (तआला) ही वली (संरक्षक) है, वही मुद्दों को जिन्दा करेगा और वही हर चीज पर कादिर है।

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لِلَّهِ حَفِيظٌ عَلَيْهِمْ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ﴿٦﴾

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ يَوْمَ الْحَجِّ لِأَنَّ فِيهِ فِتْنَةٌ لِلَّذِينَ فِي الْجَنَّةِ وَكَوْنِي فِي السَّعِيرِ ﴿٧﴾

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يَدْخُلُ مِنَ الْإِشَاءِ فِي رَحْمَتِهِ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٨﴾

أَمِ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۗ قَالَ اللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٩﴾

१ यानी आप इस बात के उत्तरदायी नहीं कि उन को संमार्ग (हिदायत) पर चला दें या पापों पर उन की पकड़ करें बल्कि यह काम हमारे हैं, आप का काम सिर्फ संदेश (पैगाम) पहुँचा देना है।

२ उम्मुल कुरा (उम्मुल कुरा) मक्के का नाम है। इसे 'वस्तियों की माँ' इसलिए कहा गया कि यह अरब की सब से पुरानी वस्ती है, जैसेकि यह सभी वस्तियों की माँ है जिन्होंने इसी से जन्म लिया है, मुराद मक्का के निवासी हैं। وَمَنْ حَوْلَهَا में उस के पश्चिम और पूरब के सभी इलाके शामिल हैं, यानी उन सब को डराये कि अगर वे कुफ्र और शिर्क से न फिरे तो अल्लाह के अजाब के पात्र (मुस्तहक) होंगे।

३ क़यामत के दिन को जमा होने का दिन इसलिए कहा कि उस में अगले-पिछले सभी इंसान जमा होंगे। इस के सिवाय, ज़ालिम, मज़लूम, ईमानदार और काफिर सब जमा होंगे और अपने-अपने अमल के एतबार से बदला या सजा पायेंगे।

१०. और जिस-जिस बात में तुम्हारा मतभेद (इख्तिलाफ) हो उसका फैसला अल्लाह (तआला) ही की ओर है,^१ यही अल्लाह मेरा रख है जिस पर मैंने भरोसा कर रखा है, और जिसकी तरफ मैं झुकता हूँ।

११. वह आकाश और धरती को पैदा करने वाला है। उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारी जाति के जोड़े बना दिये हैं और चौपायों के जोड़े बनाये हैं: तुम्हें वह उस में फैला रहा है, उस जैसी कोई चीज़ नहीं; वह सुनने वाला देखने वाला है।

१२. आकाशों और धरती की चाभियाँ उसी की हैं, जिसकी चाहे रोजी कुशादा कर दे और तंग कर दे, बेशक वह हर चीज़ का जानने वाला है।

१३. अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए वही दीन मुकर्रर कर दिया है जिसको क्रायम करने का उस ने नूह (عليه السلام) को हुकम दिया था, जो (वह्यी के द्वारा) हम ने तेरी तरफ भेज दिया है और जिस का विशेष (खास) हुकम हम ने इब्राहीम और मूसा और ईसा (عليهم السلام) को दिया था।^२ कि इस दीन को क्रायम रखना और इसमें फूट न डालना,^३

وَمَا خَلَقْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ وَحَدَّثَكُمْ إِلَى اللَّهِ
ذُكُورًا وَاللَّهُ رَئِيٌّ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاللَّهُ يَتَّقُ ۝١٠

فَالطُّرُوقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ
أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا يَذُرُّكُمْ فِيهِ
لَيْسَ كَيْفِيَّتُهُ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝١١

لَهُ مَقَائِدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ بِسِطِّ الرَّزْقِ
لَيْسَ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ يَكْتُمُ شَيْءٌ عَلَيْهِمْ ۝١٢

شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وَصَّى بِهِ نُوحًا
وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ
وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا
فِيهِ ط كَذَّبَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا نَدَّ عَوْهُمْ
إِلَيْهِ ط اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ
وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ ۝١٣

^१ इस मतभेद (इख्तिलाफ) से मुराद दीन का इख्तिलाफ है। जैसे यहूदियत, इसाईयत और इस्लाम वगैरह में आपसी इख्तिलाफ है और हर धर्म वाला लम्बा दावा करता है कि उसका धर्म सच्चा है, जबकि सभी धर्म एक समय में सही नहीं हो सकते। सच्चा दीन तो सिर्फ एक ही है और एक ही हो सकता है, दुनिया में सच्चे धर्म और सच्चे रास्ते की पहचान के लिए अल्लाह का कुरआन मौजूद है, लेकिन दुनिया में लोग इस ईश्वरणी को अपना फैसला करने वाला और हाकिम मानने को तैयार नहीं। आखिर में फिर क्रायमत (प्रलय) का दिन ही रह जाता है जिस में अल्लाह इस मतभेद का फैसला करेगा और सच्चों को स्वर्ग में और दूसरों को नरक में दाखिल करेगा।

^२ शर' का मतलब है बयान किया, वाजेह किया और मुकर्रर किया, तुम्हारे लिये। यह माहम्मद (ﷺ) की उम्मत से संबोधन (खिताब) है। मतलब है कि तुम्हारे लिये वही शरीअत मुकर्रर किया है जिसका हुकम इस से पहले सभी अंबिया को दिया जाता रहा है, इस संदर्भ (तअल्लुक से) में कुछ श्रेष्ठ (अफजल) अंबिया के नाम का बयान किया।

^३ सिर्फ एक अल्लाह की इबादत और उसी की इताअत (या उम के रसूल की पैरवी जो हकीकत में अल्लाह ही की इताअत है) एकता और मेल-जोल का आधार (बुनियाद) है और उसकी

जिस चीज की तरफ आप उन्हें बुला रहे हैं वह तो (उन) मुश्रिकों पर भारी होती है। अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपना चुना हुआ बनाता है और जो भी उसकी तरफ ध्यानमग्न होता है वह उनकी ठीक हिदायत करता है।

१४. और उन लोगों ने अपने पास इल्म आ जाने के बाद इख्तिलाफ किया (और वह भी) आपसी हठधर्मी से, और अगर आप के रव की बात एक निश्चित (मुकरर) समय तक के लिए पहले ही से मुकरर की गयी हुई न होती तो वेशक उनका फैसला हो चुका होता, और जिन लोगों को उन के बाद किताब दी गयी है वे भी उसकी तरफ से शक और शुष्हा में पड़े हुए हैं।

१५. तो आप लोगों को उसी तरफ बुलाते रहें, और जो कुछ आप से कहा गया है उस पर मजबूती से रहें, और उनकी इच्छाओं पर न चलें,^२ और कह दें कि अल्लाह तआला ने जितनी किताबें नाजिल की हैं मेरा उन पर ईमान है, और मुझे हुकम दिया गया है कि तुम में न्याय करता रहूँ, हमारा और तुम सब का रव अल्लाह ही है, हमारे अमल हमारे लिए हैं और तुम्हारे अमल तुम्हारे लिए हैं, हम तुम में कोई झगड़ा नहीं, अल्लाह (तआला) हम सब को जमा करेगा और उसी की तरफ लौट कर जाना है।

وَمَا نَقَرُّ قَوْلَ الْأَمِينِ بِمَا جَاءَهُمْ أَلْمَةٌ
بَعِيًا بَيْنَهُمْ وَلَا وَلَا كَلِمَةً سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّتَقْضَىٰ بَيْنَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ
أُورُوا الْكِتَابَ مِنْ بَعْدِهِمْ لَبِئْسَ مَا لَمْ يَكُنْ
مُرِيْبٍ ۝۱۴

فَلِذَلِكَ فَادَعُ ۖ وَاسْتَقْرِكُمْ كَمَا أَمَرْتُ ۖ وَلَا تَتَّبِعِ
أَهْوَاءَهُمْ ۖ وَقُلْ آمَنْتُ بِمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ
كِتَابٍ ۖ وَأَمَرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ الرَّبُّنَا
وَرَبُّكُمْ ۖ لَنَا أَعْمَالُنَا وَلكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۖ
لَا حِجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۖ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۖ
وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝۱۵

इबादत और इताअत से भागना या इन में दूसरों को साझी बनाना फूट और विच्छिन्नता (इन्तिशार) का सबब है, "जिस से फूट न डालना" कह कर रोका गया है।

^१ इस से मुराद यहूदी और इसाई हैं जो अपने से पहले के यहूदियों और इसाईयों के बाद किताब यानी धर्मशास्त्र तौरात और इजील के उत्तराधिकारी (वारिस) बनाये गये, या अरबवासी मुराद हैं जिन में अल्लाह तआला ने अपना पाक कुरआन नाजिल किया और उन्हें कुरआन का वारिस बनाया।

^२ यानी उन्होंने अपनी इच्छा से जो चीजे गढ़ ली हैं, जैसे मूर्तियों की पूजा आदि (बगैरह), इस में उन की आकांक्षा (इबाहिशों) के पीछे न चलें।

१६. और जो लोग अल्लाह (तआला) की बातों में झगड़ा डालते हैं इस के बाद कि (सृष्टि) उसे मान चुकी है, उन का विवाद (झगड़ा) अल्लाह के करीब झूठ है^१ और उन पर क्रोध (गजब) है और उन के लिए सख्त अजाब है।

१७. अल्लाह (तआला) ने हक के साथ किताब नाज़िल की है और तराजू भी (उतारी है) और आप को क्या पता कि शायद क़यामत करीब ही हो।

१८. उसकी जल्दी उन्हें पड़ी है जो उस पर ईमान नहीं रखते और जो उस पर ईमान रखते हैं वे तो उस से डर रहे हैं और उन्हें उसे सच होने का पूरा ज्ञान (इल्म) है। याद रखो, जो लोग क़यामत के बारे में लड़-झगड़ रहे हैं^२ वे दूर की गुमराही में पड़े हुए हैं।

१९. अल्लाह (तआला) अपने बंदों पर बड़ा ही कृपा करने वाला है, जिसे चाहता है ज़्यादा जीविका (रिज़क) देता है, और वह बड़ा ताक़तवर, बड़ा ज़बरदस्त है।

२०. जिसका इरादा आख़िरत की खेती का हो हम उसे उसकी खेती में और वृद्धि (इज़ाफ़ा) करेंगे,^३ और जो दुनियावी खेती की कामना करता हो हम उसे उसमें से ही कुछ दे देंगे।^४ ऐसे इंसान

وَالَّذِينَ يَحْمِلُونَ فِي اللَّهِ مِنْ عَدَا مَا
اسْتَحْيَبَ لَهُ حُجَّتَهُمْ دَاحِضَةً عِنْدَ رَبِّهِمْ
وَعَلَيْهِمْ عَذَابٌ وَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝ (16)

اللَّهُ الَّذِي آتَى الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ
وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ۝ (17)

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا وَالَّذِينَ
آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۝
الَّذِينَ الَّذِينَ يَمُودُونَ فِي السَّاعَةِ لَئِي
صَلِّبٍ يَجِيدٌ ۝ (18)

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ
وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۝ (19)

مَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ
وَمَنْ كَانَ يُرِيدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا
وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ نَصِيبٍ ۝ (20)

१ दاحضة का मतलब, कमज़ोर, वातिल के है जिसका टिकना नहीं।

२ मारुन (युमारुन) से बना है। जिसका मतलब लड़ना-झगड़ना है या मिरुन (मिर्यतून) से है जिसका मतलब शक और झुंझा है।

३ मरुन का मतलब बीज बोना है, यहाँ रूपक (इस्तेआरा) के रूप में कर्मों (अमल) के फल और फायदे पर बोला गया है, मतलब यह है कि जो इंसान संसार में अपने अमल और मेहनत के द्वारा आख़िरत की नेकी और बदला का चाहने वाला है तो अल्लाह उसकी आख़िरत की खेती में इस तरह बढ़ायेगा कि एक नेकी का पुण्य (सबाब) दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक भी प्रदान (अत्ता) करेगा।

४ यानी दुनिया के चाहने वाले को दुनिया तो मिलती है लेकिन इतनी नहीं जितनी वह चाहता है,

का आखिरत (परलोक) में कोई हिस्सा नहीं है ।

२१. क्या उन लोगों ने ऐसे (अल्लाह के) साझीदार (मुकरर कर रखे) हैं जिन्होंने ऐसे धार्मिक हुक्म मुकरर कर दिये हैं, जो अल्लाह के कहे हुए नहीं हैं, अगर फैसले के दिन का वादा न होता तो (अभी ही) उन में फैसला कर दिया जाता । बेशक (उन) जालिमों के लिए ही कष्टदायी यातनायें (अजाब) हैं ।

२२. आप देखेंगे कि (ये) जालिम अपने अमल से डर रहे होंगे जो निःसंदेह (बेशक) उन पर घटित होने वाला है, और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेकी के काम भी किये वे स्वर्ग के वागों में होंगे, वे जो इच्छा (तमन्ना) करेंगे अपने रब के पास मौजूद पायेंगे, यही है बड़ा फजल ।

२३. यही वह है जिसकी खुशखबरी अल्लाह (तआला) अपने उन बंदों को दे रहा है जो ईमान लाये और (सुन्नत के अनुसार) अमल किये, तो कह दीजिए कि मैं उस पर तुम से कोई बदला नहीं चाहता लेकिन नातेदारी की मुहब्बत और जो इंसान नेकी करे हम उस की नेकी को और ज़्यादा बढ़ा देंगे । निश्चय ही अल्लाह (तआला) बड़ा माफ करने वाला बड़ा क़द्रदान है ।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَفُصِّلَ بِهِمْ مَا وَرَأَى الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (21)

تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا وَهُمْ وَاقِعٌ بِهِمْ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فِي رَوْضَةٍ أَلْحَنَتْ لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ذَلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ (22)

ذَلِكَ الَّذِي يُبَيِّرُ اللَّهُ عِبَادَةَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ وَمَن يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّوْدُهَا فَنُفِثَهَا حَسَنًا إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ (23)

बल्कि उतनी ही मिलती है जितनी अल्लाह की मर्जी और भाग्य-लेख के अनुसार होती है ।

१ यह वही विषय है जो सूर: बनी इस्राईल १८ में भी बयान हुआ है । मतलब यह है कि दुनिया तो अल्लाह हर एक को जरूर देता है जितनी उस ने लिख दी है, क्योंकि उसने सब की जीविका (रोजी) का भार ले रखा है, दुनिया के इच्छुक (तलबगार) का भी और आखिरत के इच्छुक का भी, फिर भी जो आखिरत का काम और मेहनत करेगा तो क़यामत के दिन अल्लाह उसे कई गुना नेकी और प्रतिफल (अज़्र) प्रदान करेगा, जब कि दुनिया के चाहने वाले के लिए आखिरत में नरक के अजाब के अलावा कुछ नहीं होगा । अब यह इंसान को खुद सोच लेना चाहिए कि उसका फ़ायदा मायामोह में है या आखिरत का इच्छुक बनने में ।

२४. क्या ये कहते हैं (कि पैगम्बर ने) अल्लाह पर झूठा इल्जाम धर लिया है, अगर अल्लाह (तआला) चाहे तो आप के दिल पर मुहर लगा दे और अल्लाह (तआला) अपनी बातों से झूठ को मिटा देता है और सच को बाकी रखता है। वह सीने की बातों का जानने वाला है।

२५. और वही है जो अपने बन्दों की तौबा को कुबूल करता है^१ और पापों को माफ करता है, और जो कुछ तुम कर रहे हो सब जानता है।

२६. और ईमानवालों और नेक लोगों की सुनता है और उन्हें अपनी कृपा (फ़ज़ल) से और ज़्यादा देता है, और काफ़िरों के लिए सख्त अज़ाब है।

२७. और अगर अल्लाह (तआला) अपने सब बन्दों की रोज़ी कुशदा कर देता तो वे धरती पर फ़साद मचा^२ देते, लेकिन वह अंदाज़ा से जो कुछ चाहता है नाज़िल करता है। वह अपने वंदों से अच्छी तरह वाख़बर है और अच्छी तरह देखने वाला है।

२८. और वही है जो लोगों के निराश (मायूस) हो जाने के बाद वर्षा करता है और अपनी रहमत को विस्तार (कुशदा) कर देता है। वही है वली और बड़ाई और तारीफ़ के लायक।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَىٰ اللَّهِ كَذِبًا ۗ إِنَّ اللَّهَ يَخْتُمُ عَلَىٰ قَلْبِكَ وَيَكُنُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحْيِي الْحَيَّ بِكَلِمَاتِهِ إِنَّكَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۗ

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٢٥﴾

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۗ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿٢٦﴾

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُؤْتِيهِمْ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ ۗ إِنَّكَ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿٢٧﴾

وَهُوَ الَّذِي يَتَرَبَّصُّ بِالْغَيْثِ يُنَزِّلُ مَطَرًا مَّا تَنْظُرُونَ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِنْ سَمَوَاتِهِ مَاءً يُنْزِلُ بِهِ الْحَيَاةَ ۗ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْغَيْبِ ۗ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ﴿٢٨﴾

^१ तौबा का मतलब है गुनाह पर पश्चाताप (नादिमा) और शर्मिन्दा होना और भविष्य (मुस्तकबिल) में उस को न करने का इरादा, केवल मुह से तौबा-तौबा कर लेना या उस पाप और नाफरमानी के अमल को तो न छोड़ना और तौबा का दिखावा करना तौबा नहीं है, यह हंसी और मजाक है, फिर भी ख़ालिस और सच्ची तौबा अल्लाह ज़रूर कुबूल करता है।

^२ यानी अगर अल्लाह हर इंसान को आवश्यकता (हाज़त) और ज़रूरत से ज़्यादा एक बराबर रोज़ी के साधन (वसायल) प्रदान कर देता तो उसका नतीजा यह होता कि कोई किसी की अधीनता (ताबेदारी) कुबूल न करता, हर इंसान फ़साद, बुराई और जुल्म की हद तोड़ने में एक से बढ़ कर एक होता और दुनिया फ़साद से भर जाती।

२९. और उसकी निशानियों में से आकाश और धरती का पैदा करना और उन में जीवधारियों का फैलाना है । वह इस पर भी कादिर है कि जब चाहे उन्हें जमा कर दे ।^१

३०. और जो कुछ भी कष्ट तुम्हें पहुंचते हैं वह तुम्हारे अपने हाथों के करतूत का (बदला) है, और वह बहुत-सी बातों को माफ़ कर देता है ।

३१. और तुम हमें धरती पर विवश (आजिज) करने वाले नहीं हो, और तुम्हारे लिए अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई बली नहीं है और न मदद करने वाला ।

३२. और समुद्र में चलने वाली पर्वतों जैसी नावें उसकी निशानियों में से हैं ।^२

३३. अगर वह चाहे तो हवा बन्द कर दे और ये नवकायें समुद्र में रूकी रह जायें । बेशक इस में हर सब करने वाले शुक्र करने वाले के लिए निशानियाँ हैं ।

३४. या उन्हें उन के करतूतों के सबब बरबाद कर दे ।^३ वह तो बहुत-सी गलतियों को माफ़ कर देता है ।

وَمِن آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سَاعَةٍ ۚ وَمِنْ دَاتِهِمْ إِذَا جَمَعَهُمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ۝

وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فِيمَا كَسَبْتُمْ أَيْدِيَكُمْ وَيَعْتَدُوا عَنْ كَثِيرٍ ۝

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ۝

وَمِن آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ۝

إِنْ يَشَاءُ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَمُنَّ رَوَاكِدَ عَلَى ظَهْرِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

أَوْ يُوقِعَهُنَّ فِيمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيرٍ ۝

^१ ۝ (धरती पर चलने-फिरने वाला) का शब्द साधारण (आम) है, जिस में जिन्न और इन्सान के सिवाय सभी जीव शामिल हैं, जिन के रूप, रंग, बोलियाँ, आदतें, किस्में और जाति एक दूसरे से हमेशा अलग हैं और वह धरती में फैले हुए हैं, इन सभी को अल्लाह तआला क़यामत के दिन एक ही मैदान में जमा करेगा ।

^२ الجوار (अलजेवार) या الجوارى (अलजवारी) جارية جارियह (चलने वाली) का बहुवचन (जमा) है, मतलब है नवकायें, जहाज । यह अल्लाह की पूरी कुदरत का सबूत है कि सागरों में पर्वतों की तरह नवकायें और जहाज उसकी इजाजत से चलते हैं नहीं तो वह इजाजत दे तो यह सागरों में खड़े रह जायें ।

^३ यानी समुद्र को हुक्म दे और उसकी लहरों में बाढ़ आ जाये और यह उन में डूब जायें ।

३५. और ताकि जो लोग हमारी निशानियों में झगड़ते हैं वे मालूम कर लें कि उन क लिए कोई छुटकारा नहीं।

३६. तो तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह दुनियावी जिन्दगी का कुछ थोड़ा-सा साधन (जरिया) है और अल्लाह (तआला) के पास जो है वह उस से कई गुना बेहतर^१ और धाकी रहने वाला है, वह उन के लिए है जो ईमान लाये और केवल अपने रब पर ही भरोसा रखते हैं।

३७. और वे बड़े गुनाहों से और बेहयाई की बातों से बचते हैं और गुस्सा के समय (भी) माफ कर देते हैं।

३८. और अपने रब के हुक्म को कुबूल करते हैं, और नमाज को पावन्दी से कायम करते हैं^२ और उनका हर काम आपसी राय-मशविरा से होता है^३ और जो कुछ हम ने उन्हें अता कर रखा है, उस में से (हमारे नाम पर) देते हैं।

३९. और जब उन पर जुल्म (और क्रूरता) हो तो वे केवल बदला ले लेते हैं।^४

وَيَعْلَمَ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ
مِنْ مَحْضٍ ۝۳۵

فَمَا أُوْتِيتُمْ مِنْ شَيْءٍ فَسَبَّحُوا الْحَمْدَ لِلَّهِ
وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَى لِلَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَى
رَبِّهِمْ يَوَكِّلُونَ ۝۳۶

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْأَثْمِ وَالْفَوَاحِشِ وَإِذَا مَا
عَضِبُوا هُمْ يَغْفِرُونَ ۝۳۷

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ
شُورَىٰ بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝۳۸

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ۝۳۹

^१ यानी अच्छे अमल का जो फल अल्लाह के पास मिलेगा वह दुनिया के सामानों से कहीं ज़्यादा बेहतर है और बाकी रहने वाला भी, क्योंकि उस का अन्त और तबाही नहीं। मतलब यह है कि दुनिया को आखिरत पर प्रधानता (फ़ज़ीलत) न दो, ऐसा करोगे तो पछताओगे।

^२ नमाज की पावन्दी और इक़ामत का खास करके बयान किया गया है कि उपासना (एबादात) में इसकी सय से ज़्यादा अहमियत है।

^३ शूरु यह डक़ी और ब़शरी के समान मضاएة से धातु है। यानी ईमानवाले हर महत्वपूर्ण (अहम) काम आपसी राय-मशविरा से करते हैं, अपने ही ब्याल को आखिरी फैसला नहीं समझते। खुद नबी ﷺ को भी अल्लाह ने हुक्म दिया कि मुसलमानों से परामर्श (मशविरा) करो। (आले इमरान-१५९)

^४ यानी बदला लेने से वह भजबूर नहीं हैं, अगर बदला लेना चाहें तो ले सकते हैं, फिर भी कुदरत होते हुए वह माफ़ी को प्रधानता (तरज़ीह) देते हैं। जैसे नबी ﷺ ने मक्का विजय के दिन अपने खून के प्यासों के लिए आम माफ़ी का एलान कर दिया। हुदैबिया में आप ने ८० इंसानों को

४०. और बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है, और जो माफ़ कर दे और सुधार कर ले तो उनका बदला अल्लाह के ऊपर है। हकीकत में अल्लाह (तआला) जालिमों से मुहब्बत नहीं करता।

४१. और जो इंसान अपने मजलूम होने के वाद (बराबर) बदला ले ले तो ऐसे इंसान पर (मजम्मत का) कोई रास्ता नहीं।

४२. यह रास्ता केवल उन लोगों पर है जो खुद दूसरे पर जुल्म करें और धरती पर नाहक फसाद मचाते फिरें, यही लोग हैं जिन के लिए कष्टदायी यातनायें (अजाब) हैं।

४३. और जो इंसान सब्र कर ले और माफ़ कर दे, तो बेशक यह एक बड़े हिम्मत के कामों में से (एक काम) है।

४४. और जिसे अल्लाह (तआला) भटका दे उसका उस के वाद कोई वली नहीं, और तू देखेगा कि जालिम लोग अजाबों को देखकर कह रहे होंगे कि क्या वापस लौटने का कोई रास्ता है?

४५. और तू उन्हें देखेगा कि वे (नरक के) सामने ला खड़े किये जायेंगे, अपमान के कारण झुके जाते होंगे और कनखियों से देख रहे होंगे, ईमान वाले वाजेह तौर से कहेंगे कि हकीकत में तुकसान उठाने वाले वे हैं, जिन्होंने आज कयामत के दिन अपने आप को और अपने परिवार को तुकसान में डाल दिया। याद रखो कि बेशक जालिम लोग हमेशा रहने वाले अजाब में हैं।

وَجَزَاءٌ سَيِّئًا سَيِّئَةً مِّمَّا هُمْ كَفَرُوا فَسَنَ عَذَابُهُمْ أَزْلَقًا
فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٤٠﴾

وَلَكِنْ أَنْتُمْ بَعْدَ ظُلْمِهِ فَأُولَئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِنْ
سَبِيلٍ ﴿٤١﴾

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ وَيَبْغُونَ
فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ أُولَئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ
أَلِيمٌ ﴿٤٢﴾

وَأَنْتُمْ صَابِرُونَ وَعَفَا إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ﴿٤٣﴾

وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَدْيٍ مِنْ بَعْدِهِ
وَتَرَى الظَّالِمِينَ لِنَارِ أُولِ الْأَعْدَابِ يَنْوَلُونَ
هَٰذَا إِلَىٰ مَرَّةٍ مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤٤﴾

وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا
يَتَخَفَتُونَ مِنْ ظُلْمِ ظَنِيٍّ وَقَالِ الَّذِينَ آمَنُوا
إِنَّ الظَّالِمِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَأَهْلِيَهُمْ
يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِلَّا إِنْ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ
مُقَبَّلٍ ﴿٤٥﴾

माफ़ कर दिया जिन्होंने आप के विरोध में साजिश रचा था। लवीद बिन आसिम यहूदी से बदला नहीं लिया जिसने आप पर जादू किया था, उस यहूदी नारी को आप ने कुछ नहीं कहा जिसने आप के खाने में जहर मिला दिया था, जिसका दर्द आप सारी जिन्दगी महसूस करते रहे ۞ (इब्ने कसीर)

४६. और उनकी कोई मदद करने वाला नहीं, जो अल्लाह (तआला) से अलग उनकी मदद कर सके, और जिसे अल्लाह भटका दे तो उस के लिए कोई रास्ता ही नहीं।

४७. अपने रव का हुक्म मान लो इस से पहले कि अल्लाह की तरफ से वह दिन आ जाये जिसका हट जाना नामुमकिन है। तुम्हें उस दिन न तो कोई पनाह की जगह मिलेगी और न छिप कर अन्जान बन जाने की।

४८. अगर वे विमुख हो जायें तो हम ने आप को उन पर रक्षक (निगार) बना कर नहीं भेजा। आप का फर्ज तो केवल सदेश (पैगाम) पहुँचा देने का है और जब हम इंसान को अपनी रहमत का मजा चखाते हैं, तो वह उस पर इतराने लग जाता है, और अगर उन्हें उन के अमल की वजह से कोई कठिनाई आती है तो निश्चय इंसान बड़ा नासुक्रा है।

४९. आकाशों और धरती का मुल्क अल्लाह (तआला) ही के लिए है, वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसको चाहता है पुत्रियाँ देता है और जिसे चाहता है पुत्र देता है।

५०. या उन्हें जमा कर देता है। पुत्र भी और पुत्रियाँ भी, और जिसे चाहे वाञ्छ कर देता है, वह बड़े इल्म वाला और कुदरत वाला है।

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ أَوْلِيَاءَ يَنْصُرُوهُمْ تَرْنُ دُونَ
اللَّهُ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤٦﴾

إِسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ
لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ مَا لَكُمْ مِنْ مَلْجَأٍ
يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُمْ مِنْ نَكِيرٍ ﴿٤٧﴾

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِيظًا
إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلْعُ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ
مِتْرًا رِخْوَةً فَوَجَّهْنَا إِيَّاهُ وَإِنْ تُبْهِمُوا سِيْرَةً
بِمَا قَدْ مَتَّيْتُمْ أَيْدِيَهُمْ فَإِنَّ الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ﴿٤٨﴾

يَلَهُ مَلِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ
وَهُوَ بِعَيْنِ يَشَاءٍ رَئِيفٌ وَيَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ
الدُّنْيَا ﴿٤٩﴾

أَوْ يُزِجْهُمْ دُرُورًا وَ إِنَّا لَنَاجِمٌ وَ يَجْعَلُ مَنْ يَشَاءُ
عَقِيمًا إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿٥٠﴾

यानी जिसको चाहता है पुत्र-पुत्री दोनों देता है। इस जगह पर अल्लाह ने लोगों का चार दर्जा बयान किया है, एक वह जिन को केवल पुत्र देता है, दूसरे वह जिन को केवल पुत्रियाँ देता है, तीसरे वह जिनको पुत्र-पुत्रियाँ दोनों देता है और चौथे वह जिनको पुत्र न पुत्री। लोगों में यह फर्क और भेद (राज) अल्लाह की कुदरत की निशानियों में से है। इस कुदरती फर्क को दुनिया की कोई ताकत बदल नहीं सकती, यह बटवारा औलाद के हिसाब से है, पिता के हिसाब से भी इंसानों के चार क्रिस्में हैं। आदम عليه السلام को केवल भिड़ी से बनाया, उन के न पिता हैं न माता २- हब्बा को आदम यानी मर्द से पैदा किया, उनकी माता नहीं ३- हजरत ईसा को केवल औरत से पैदा किया, उन के पिता नहीं, ४- और बाक़ी सभी इंसानों को नर-नारी दोनों के मिलान से, उन के पिता भी हैं और माता भी। فَسبحان الله العظيم القدير (इब्ने कसीर)

५१. और नामुमकिन है कि किसी बंदे से अल्लाह (तआला) कलाम करे, लेकिन वहयी के रूप में या पर्दे के पीछे से या किसी फरिश्ते को भेजे, और वह अल्लाह के हुकम से जो वह चाहे वहयी करे।^१ बेशक वह सबसे बड़ा और हिक्मत वाला है।

५२. और इसी तरह हम ने आप की तरफ अपने हुकम से रूह (आत्मा) को नाजिल किया है,^२ आप उस से पहले यह भी नहीं जानते थे कि किताब और ईमान क्या चीज है? लेकिन हम ने उसे नूर बनाया, उस के जरिये अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं हिदायत देते हैं। बेशक आप सच्चे रास्ते की हिदायत करा रहे हैं।

५३. उस अल्लाह के रास्ते की^३ जिसकी मिलिक्यत में आकाशों और धरती की हर चीज है। खबरदार रहो, सभी काम अल्लाह ही की तरफ लौटते हैं।

सूरतुज जुखरुफ-४३

सूर: जुखरुफ मक्का में नाजिल हुई और इस में नवासी आयतें और सात रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो वड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكْتُمَ اللَّهُ إِلَهًُا وَحِيًّا أَوْ مِنْ
وَرَأَىٰ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ
مَا يَشَاءُ ۗ إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيمٍ ۝٥١

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِنْ أَمْرِنَا ۗ مَا كُنْتَ
تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا الْإِيمَانُ وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا
نَهْدِي بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا ۗ وَإِنَّكَ
لَتَهْدِي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝٥٢

صِرَاطَ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ ۗ إِلَّا إِلَىٰ اللَّهِ تُصِيرُ الْأُمُورُ ۝٥٣

سُورَةُ الزُّخْرُفِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

^१ इस आयत में अल्लाह की वहयी के तीन रूप बताये गये हैं। पहला यह कि दिल में कोई बात डाल देना या रूबाब में बतला देना, इस यकीन के साथ कि यह अल्लाह ही की तरफ से है। दूसरा, पर्दे के पीछे से बात करना, जैसे ईशदूत मूसा से तुर पहाड़ पर की गई। तीसरा, फरिश्ते द्वारा अपनी वहयी भेजना, जैसे जिब्रिल عليه السلام अल्लाह का पैगाम लेकर आते और पैगम्बरों को सुनाते थे।

^२ यहाँ روح से मुराद ईशवाणी (कलामे इलाही) पाक कुरआन है, यानी जैसे आप से पहले दूसरे रसूलों पर हम वहयी करते रहे, वैसे ही हम ने आप पर कुरआन की वहयी की है। पाक कुरआन को रूह (आत्मा) कहा गया है कि कुरआन से दिलों को जीवन मिलता है, जैसे रूह में इंसानी जिन्दगी का भेद (राज) छिपा है।

^३ यह صراط مستقیم (सिराते मुस्तकीम) सीधा रास्ता इस्लाम है, उसे अल्लाह ने अपनी तरफ संम्बन्धित (मंसूब) किया है जिस से इस रास्ते की सच्चाई और प्रतिष्ठा (अजमत) बाजेह (स्पष्ट) होती है और उस के एक अकेले नजात का रास्ता होने की तरफ इशारा भी है।

१. हा•मीम• ।

२. क्रसम है इस खुली किताब की ।

३. हम ने इस को अरबी भाषा का कुरआन बनाया है कि तुम समझ लो ।

४. और देखक यह सुरक्षित (महफूज) किताब में है और हमारे नजदीक ऊंचे दर्जे की है, हिक्मत से भरी है ।

५. क्या हम इस सदुपदेश (जिक्र) को तुम से इस आधार पर हटा लें कि तुम सीमा (हद) तोड़ने वाले लोग हो ।

६. और हम ने पिछली जातियों में भी वहुत से नबी भेजे ।

७. और जो नबी उन के पास आया उन्होंने उसका मजाक उड़ाया ।

८. तो हम ने उन से ज़्यादा बलवानों को^१ बरवाद कर डाला और अगलों की मिसाल गुजर चुकी है ।

९. और अगर आप उन से पूछें कि आकाशों और धरती को किस ने पैदा किया तो वेशक उनका जवाब होगा कि उन्हें सब से जवरदस्त और सब से ज़्यादा जानने वाले (अल्लाह ही) ने पैदा किया है ।

خَمِّ ①

وَٱلْكِتَٰبِ ٱلْمُبِينِ ②

إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ③

وَإِنَّهُ فِي أُمِّ ٱلْكِتَٰبِ لَكَيِّنًا لِّعَلَّٰمٍ حَكِيمٍ ④

أَفَتَضْرِبُ عَنْكُمُ ٱلدَّيَّكَرَ صَفْحًا أَن كُنتُمْ

قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ⑤

وَكَمَ ٱرْسَلْنَا مِن نَّبِيِّ فِي ٱلْأَوَّلِينَ ⑥

وَمَا يَٰتِيهِمْ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ⑦

فَأَهْلَكْنَا أَسَٰدًا مِنْهُمْ بِطَٰغَىٰ وَ مَطَىٰ مَثَلِ

ٱلْأَوَّلِينَ ⑧

وَٱلَّذِينَ سَأَلْنَاهُمْ مَّن خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَٱلْأَرْضِ

لَيَقُولُنَّ خَلَقَهُنَّ ٱلْعَزِيزُ ٱلْعَلِيمُ ⑨

^१ इस में कुरआन की उस महानता (अजमत) और प्रधानता (फज़ीलत) का बयान है जो उच्च लोक (आलमे बाला) में उसे हासिल है, ताकि दुनिया वाले भी उसकी महानता और मर्यादा (इज़्जत) को ध्यान में रखते हुए उसे महत्व (अहमियत) दें और उस से हिदायत का वह मकसद हासिल करें जिस के लिए उसे संसार में उतारा गया है । अ.क़ताब (मूलग्रंथ) से मुराद लौहे महफूज (सुरक्षित पट्टिका) है ।

^२ यानी मक्कावासियों से ज़्यादा बलवान थे, जैसे दूसरी जगह पर फ़रमाया: ﴿كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً﴾ "वह तादाद और बल (क़वत) में कहीं उन से ज़्यादा थे ।" (अलमोमिन-८२)

१०. (वही है) जिस ने तुम्हारे लिये धरती को फर्श (और विछौना) बनाया^१ और उस में तुम्हारे लिए रास्ता बना दिये ताकि तुम रास्ता पा लिया करो ।

११. और उसी ने आकाश से एक अंदाजे के अनुसार वर्षा की, तो हम ने उस से मुदा नगर को ज़िन्दा कर दिया । उसी तरह तुम निकाले जाओगे ।

१२. और जिस ने सभी चीजों के जोड़े बनाये और तुम्हारी (सवारी के) लिए नवकाये बनायी और चौपाये जानवर पैदा किये जिन पर तुम सवार होते हो ।

१३. ताकि तुम उन की पीठ पर जमकर सवार हुआ करो, फिर अपने रब के (दिये हुए) उपहारों (नेमतों) को याद करो जब उस पर ठीक-ठाक बैठ जाओ और कहो कि पाक ताकत है उसकी जिस ने उसे हमारे वश में कर दिया, यद्यपि (अगरचे) हमें उसे वश में करने की ताकत नहीं थी ।

१४. और निश्चित (यकीनी) रूप से हम अपने रब की तरफ लौटकर जाने वाले हैं ।^२

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠﴾

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذَلِكَ نُخْرِجُكَ ﴿١١﴾

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلُكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ﴿١٢﴾

لِنَسُوا عَلَىٰ ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذَكَّرُوا بِنِعْمَةِ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحٰنَ الَّذِي سَخَّرْنَا هٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿١٣﴾

وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴿١٤﴾

^१ ऐसा बिस्तर जिस में ठहराव और सुकून हो, तुम इस पर चलते हो, खड़े होते हो और सोते हो, जहाँ चाहते चलते-फिरते हो, उस ने उसको पहाड़ों के जारिये स्थिर (साकिन्) कर दिया ताकि उस में गति (हरकत) और कपन न हो ।

^२ हर चीज को जोड़ा-जोड़ा बनाया, नर-मादा, वनस्पतियाँ-खेतियाँ, फल-फूल और प्राणी सब में नर-मादा का अमल है । कुछ कहते हैं कि इस से मुराद एक-दूसरे की प्रतिकूल (मुखालिफ) चीजें हैं, जैसे उजाला और अंधेरा, रोग और सेहत, ईसाफ और जुल्म, भलाई और बुराई, ईमान (विश्वास) और कुफ्र (इंकार) नरमी और सख्ती वगैरह । कुछ कहते हैं कि जोड़ा, किस्म के मायने में है यानी सभी किस्मों का बनाने वाला अल्लाह है ।

^३ नबी ﷺ जब सवारी पर सवार होते तो तीन बार اللهُ أَكْبَرُ (अल्लाहु अकबर) कहते और سبحانَ الَّذِي سے سبحانَ الَّذِي तक आयत पढ़ते । इसके सिवाय भलाई और कामयाबी के लिए दुआ करते जो दुआओं की किताबों में देख ली जायें । (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, वावु मायकुलु इजा रकिब)

१५. और उन्होंने अल्लाह के कुछ वन्दों को उसका हिस्सा बना दिया, बेशक इंसान वाजेह तौर से नाशुक्रा है।

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا مِمَّنْ الْإِنْسَانَ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿١٥﴾

१६. क्या अल्लाह (तआला) ने अपनी मखलूक में से पुत्रियाँ तो खुद रख ली और तुम्हें पुत्रों से सुशोभित (सुजय्यन) किया?

أَمْ أَلْخَدَّ وَمَتَا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْلَكُمْ بِالْبَنِينَ ﴿١٦﴾

१७. (यद्यपि) उन में से किसी को जब उस चीज की खबर दी जाती है जिसकी मिसाल उस ने अल्लाह दयालु (रहमान) के लिए बयान किया है तो उसका मुँह काला पड़ जाता है और वह गमगीन हो जाता है।

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ظَلَّ
وَجْهَهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿١٧﴾

१८. या क्या (अल्लाह की औलाद पुत्रियाँ हैं) जो गहनों में पलें और झगड़े में (अपनी यात) साफ न कर सकें?!

أَوْ مِمَّنْ يُتَشَفَّؤُنَّ فِي الْحَيَاةِ وَهُوَ فِي الْغُصَامِ
عَزِيزٌ مُّبِينٌ ﴿١٨﴾

१९. और उन्होंने दयालु (रहमान) की इबादत करने वाले फ़रिश्तों को औरत बना दिया। क्या उनकी पैदाईश के समय वे मौजूद थे? उनकी यह गवाही लिख ली जायेगी और उन से उसकी पूछताछ की जायेगी।

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبْدُ الرَّحْمَنِ إِنَاثًا
أَشْهَدًا وَإِذَا حَقَّ لَهُمْ سَمَاتٌ شَهِدَاتُهُمْ
وَيُسْتَأْذَنُونَ ﴿١٩﴾

२०. और कहते हैं कि अल्लाह (तआला) चाहता तो हम उनकी इबादत न करते, उन्हें उसका

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ مَا لَهُمْ
بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿٢٠﴾

- १ औरतों के दो गुणों (सिपतों) का बयान यहाँ खास तौर से किया गया है। १- उनका पालन-पोषण गहनों और जीनत में होता है, यानी बोध (बुद्ध) की आँखें खुलते ही उनका ध्यान शोभा (जीनत) और खूबसूरती की चीजों की तरफ हो जाता है, इस बयान से मतलब यह है कि जिनकी हालत यह है, वे अपनी शखसियत का सुधार करने की भी योग्यता और क्षमता नहीं रखती। २- अगर किसी से वाद-विवाद हो तो वह अपनी यात भी सही ढंग से (प्राकृतिक (फितरी) बर्तन की बजह से) स्पष्ट (वाजेह) नहीं कर सकती, न अपने प्रतिद्वंदी (मुकाविल) के दलील की तोड़ ही कर सकती है, यह औरत की वह दो फितरी कमजोरियाँ हैं जिन की बजह से पुरूष स्त्री पर एक गुणा प्रधानता (फज़ीलत) रखते हैं। जुमले के ऐतदार से भी पुरूष की प्रधानता सफ़ है, क्योंकि बात इसी धारे में यानी नर-नारी में जो अमली फ़र्क है, जिस के कारण (सबब) बच्ची के मुकाबिले में बच्चे के जन्म को ज़्यादा पसन्द किया जाता था, हो रही है।

कुछ ज्ञान (इल्म) नहीं, यह तो केवल अटकल वाली (झूठी बातें) कहते हैं।

२१. क्या हम ने इस से पहले उन्हें (दूसरी) कोई किताब अता की है, जिस ये मजबूती से पकड़े हुए है?

२२. (नहीं-नहीं) बल्कि ये तो कहते हैं कि हम ने अपने पूर्वजों (बुजुर्गों) को एक धर्म पर पाया और हम उन्हीं के निशाने क्रम पर चल कर संमार्ग (हिदायत) प्राप्त हैं।

२३. और इसी तरह आप से पहले भी हम ने जिस वस्ती में कोई डराने वाला भेजा, वहाँ के खुशहाल लोगों ने यही जवाब दिया कि हम ने अपने पूर्वजों (बुजुर्गों) को (एक डगर पर और) एक धर्म पर पाया और हम तो उन्हीं के पद चिन्हों (निशाने क्रम) की पैरवी करने वाले हैं।

२४. (नबी ने) कहा भी कि यद्यपि (अगरचे) मैं उस से बहुत बेहतर (मकसद तक पहुँचाने वाला) रास्ता लेकर आया हूँ जिस पर तुम ने अपने पूर्वजों (बुजुर्गों) को पाया, तो उन्होंने जवाब दिया कि हम उसे नहीं मानने वाले हैं जिसे देकर तुम्हें भेजा गया है।

२५. तो हम ने उन से इन्तिक्राम लिया और देख ले झुठलाने वालों का क्या नतीजा हुआ?

२६. और जबकि इब्राहीम (عليه السلام) ने अपने पिता से और अपनी क्रौम से कहा कि मैं इन बातों से अलग हूँ जिन की तुम इबादत करते हो।

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَسْبِحُونَ ﴿٢١﴾

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ

أَثَرِهِمْ مُهْتَدُونَ ﴿٢٢﴾

وَكَذَلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّنْ

كُنُوزٍ إِلَّا قَالُوا مُتْرُكُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا

عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ ﴿٢٣﴾

قُلْ أَوَلَمْ جَعَلْكُمْ يَأْمُرًا وَمَا وَجَدْتُمْ عَلَيْهِ

آبَاءَكُمْ وَلَا قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ لَغُفُورُونَ ﴿٢٤﴾

فَاتَّبَعْنَا مِنْهُمُ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ

الْمُكذِّبِينَ ﴿٢٥﴾

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي

بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٦﴾

1 यानी अपने बुजुर्गों की पैरवी में इतने पक्के थे कि पैगम्बर का स्पष्टीकरण (वजाहत) और दलील भी उन्हें फेर नहीं सकी। यह आयत अन्धी पैरवी के खंडन (तरदीद) और उसकी निंदा (मुजम्मत) पर बहुत बड़ा सुवृत है। (देखिये शौकानी की फतहल क्रदीर)

२७. सिवाय उस ताकत के जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मेरी हिदायत भी करेगा ।¹

२८. और इब्राहीम (عليه السلام) उसी को अपनी औलाद में भी बाक्री रहने वाली बात कायम कर गये ताकि लोग (शिक से) बचते रहें ।²

२९. बलिक मैंने उन लोगों को और उन के पूर्वजों को सामान (और जरिया) अता किया यहाँ तक कि उन के पास सच और वाजेह तौर से सुनाने वाला रसूल आ गया ।

३०. और सच के पहुँचते ही ये बोल पड़े कि यह तो जादू है, और हम इस का इंकार करने वाले हैं ।

३१. और कहने लगे कि यह कुरआन इन दोनों बस्तियों में से किसी खुशहाल इंसान पर क्यों नाजिल नहीं किया गया ।³

३२. क्या आप के रब की रहमत को ये तकसीम करते हैं? हम ने ही उनकी दुनियावी जिन्दगी का रिज़क उन में तकसीम किया है और एक को दूसरे से बेहतर किया है ताकि एक-दूसरे को अधीन (ताबे) कर लें, और जिसे ये लोग जमा करते फिरते हैं, उस से आप के रब

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ۝۲۷

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ۝۲۸

بَلْ مَتَّعْتُ هَؤُلَاءَ وَآبَاءَهُمْ حَتَّى
جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ۝۲۹

وَلَنَبَأُ جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ
كَافِرُونَ ۝۳۰

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَى رَجُلٍ
مِّنَ الْقُرَيْشِيِّينَ عَظِيمٍ ۝۳۱

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ لَنَحْنُ قَسَمًا بِيْنَهُمْ
مُعِيشَتُهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَرِزْقًا بَعْضُهُمْ
فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِّيَذُنَّ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ سَخِرَ لِنَا
وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْعَلُونَ ۝۳۲

¹ यानी जिस ने मुझे पैदा किया है, वह अपने धर्म की समझ भी मुझे देगा और उस पर कायम भी रहेगा, मैं सिर्फ उसी की इवादात करूँगा ।

² यानी इब्राहीम की औलाद में यह एकेस्वरवादी (मुवहिहद) इसलिए पैदा किये ताकि उन की तौहीद (अद्वैत) की नसीहत से लोग शिक (मिश्रणवाद) से रूकते रहें । लहम में जमीर मक्कावासियों की तरफ फिरता है । यानी बायद मक्कावासी इस धर्म की तरफ लौट आये जो ईशूदत हजरत इब्राहीम का दीन था जो खालिस तौहीद पर आधारित (मबनी) था न कि शिक (वहदेववाद) पर ।

³ दोनों नगरों से मुराद मक्का और ताएफ है, और बड़े व्यक्तियों से मुराद ज्यादातर भाष्यकारों (मुफसिरो) के करीब मक्का का वलीद पुत्र मुगीरह और ताएफ का उरबह पुत्र भसऊद सकफी है । कुछ ने और दूसरे लोगों के नाम उल्लेख (जिक) किये हैं ।

की रहमत बहुत बेहतर है ।¹

३३. और अगर यह बात नहीं होती कि सभी लोग एक ही तरीके पर हो जायेंगे तो दयालु (रहमान) के साथ कुफ्र करने वालों के घरों की छतों को हम चाँदी की बना देते और सीढ़ियों को भी जिन पर वे चढ़ा करते ।

३४. और उन के घरों के दरवाजों और तख्त (आसन) तक भी जिन पर वे तकिया लगा-लगा कर बैठते ।

३५. और सोने के भी, और ये सब कुछ यूँ ही सा दुनियावी फ़ायदेदा है और आखिरत तो आप के रब के करीब केवल परहेजगारों के लिए (ही) है ।

३६. और जो इंसान अल्लाह की याद से सुस्ती करे हम उस पर एक शैतान निर्धारित (मुकरर) कर देते हैं; वही उसका साथी रहता है ।

३७. और वह उन्हें रास्ते से रोकते हैं और यह उसी ख़्याल में रहते हैं कि यह हिदायत याफ़ता है ।

३८. यही तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो कहेगा कि काश मेरे और तेरे बीच पूरब और पश्चिम की दूरी होती, तू बड़ा बुरा साथी है ।

३९. और जबकि तुम ज़ालिम साधित हो चुके तो तुम्हें आज कभी भी तुम सब के अजाब में शरीक होना कोई फ़ायदेमंद न होगा ।

४०. तो क्या तू बहरे को सुना सकता है या अंधे को रास्ता दिखा सकता है और उसे जो खुली गुमराही में हो ।

وَلَوْلَا أَنْ يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً لَجَعَلْنَا لَبِئْسَ يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِيَبْدُوهُمْ سَعْيَاتِهِمْ مَغْلُوبَةً وَمَلَأَ عَلَيْهِمْ يَظْهَرُونَ ﴿٣٣﴾

وَلِيَبْدُوهُمْ أَجْوَابًا وَسُرًّا عَلَيْهَا يَكْتُمُونَ ﴿٣٤﴾

وَرُحْرُقًا وَإِنْ كُنْ لَنَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾

وَمَنْ يُخَشِ عَنِ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نَقِيضَ لَهُ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ كَرِيمٌ ﴿٣٦﴾

وَاللَّهُمَّ لِيَصُدِّقُوا عَنْكَ السَّيِّئَاتِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ﴿٣٧﴾

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ يَا لَيْتَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ بَعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَيَلْسُ الْقُرَيْنِ ﴿٣٨﴾

وَلَنْ يَنْفَعَكُمْ الْيَوْمَ إِذْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ﴿٣٩﴾

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمَْىٰ وَمَنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٤٠﴾

¹ इस रहमत (दया) से मुराद आखिरत के वह वरदान है जो अल्लाह ने अपने नेक बंदों के लिए तैयार कर रखे हैं ।

४१. फिर अगर हम तुझे यहाँ से ले भी जायें तो भी हम उन से बदला लेने वाले हैं।

فَأَمَّا نَدَّاهِبِينَ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُمْ مُنْتَقِمُونَ ﴿٤١﴾

४२. या जो कुछ उन से वादा किया है वह तुझे दिखा दें; हम उन पर भी क्रुदरत रखते हैं।

أَوْ لَوِيتَكَ الَّذِي وَعَدْتَهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِمْ مُقْتَدِرُونَ ﴿٤٢﴾

४३. तो जो बहयी आप की तरफ की गयी है उसे मजबूती से थामे रहें। वेशक आप सीधे रास्ते पर हैं।

فَأَسْتَسِيكَ بِنَدْيِ أَوْرَىٰ إِلَيْكَ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٤٣﴾

४४. और वेशक यह (खुद) आप के लिए और आप की जाति के लिए नसीहत है और करीब भविष्य (मुस्तक़बिल) में तुम लोग पूछे जाओगे।

وَإِنَّكَ لَلْكَرِيمُ ۖ وَلِقَوْمِكَ ۖ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ﴿٤٤﴾

४५. और हमारे उन नवियों से मालूम करो जिन्हें हम ने आप से पहले भेजा था कि क्या हम ने रहमान के सिवाय दूसरे माबूद निर्धारित (मुकरर) किये थे जिन की इबादत की जाये?

وَسَأَلَ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُسُلِنَا ۖ أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِلَهًا يُعْبَدُونَ ﴿٤٥﴾

४६. और हम ने मूसा (عليه السلام) को अपनी निशानियाँ देकर फिरऔन और उसके दरबारियों के पास भेजा तो (मूसा ने जाकर) कहा कि मैं सारे जहाँ के रब का रसूल (सदेशवाहक) हूँ।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ ۖ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٦﴾

४७. तो जब वह हमारी निशानियाँ लेकर उन के पास आये तो वे अचानक उन पर हँसने लगे।

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ فِيهَا يَضْحَكُونَ ﴿٤٧﴾

४८. और हम जो निशानी उनको दिखाते थे, वे दूसरों से बड़ी-चढ़ी होती थी^१ और हम ने उन्हें अज़ाब में पकड़ा ताकि वे रूक जायें।

وَمَا يُدْرِيهِمْ مِنْ آيَةِ الرَّحْمَنِ أَكْبَرُ مِنْ نُحُوتِهِمَا ۖ وَأَخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٤٨﴾

^१ पैगम्बरों से यह सबाल या तो इस्रा और मेरज के मौका पर वैतुल मोकहस में हुआ या आसमान पर किया गया, जहाँ अम्बिया (ईशूतों) से नबी की भेंट हुई। या **أَنْعَام** का शब्द छिपा है, यानी उनके पैरोकारों (अहले किताब यहूदियों और इसाईयों) से पूछो, क्योंकि वे उनकी शिक्षाओं (तालीमात) से परिचित (वाक़िफ़) हैं और उन के ऊपर नाज़िल किताब उन के पास मौजूद है।

^२ इन निशानियों से वह निशानियाँ मुराद हैं जो तूफ़ान, टिड्डी दल, जुयें, मेढक और खून बग़ैरह के रूप में दिखायी गयी, जिनकी चर्चा सूर: अराफ़ आयत नं॰ १३३-१३५ में आ चुकी है। वाद की हर निशानी पहली निशानी से बढ़ कर होती, जिस से हज़रत मूसा की सच्चाई स्पष्ट (वाज़ेह) से स्पष्टतम (वाज़ेह तर) हो जाती।

४९. और उन्होंने कहा कि हे जादूगर! हमारे लिए अपने रब से उसकी दुआ कर जिसका उस ने तुझे वादा दे रखा है। यकीन कर कि हम रास्ते पर लग जायेंगे।

५०. फिर जब हम ने उन पर से वह अजाब हटा लिया तो उन्होंने उसी समय अपना वादा और अहद (प्रतिज्ञा) तोड़ दिया।

५१. और फिरऔन ने अपनी कौम में एलान कराया और कहा, कि हे मेरी जाति के लोगो! क्या मिस्र का देश मेरा नहीं और मेरे राजमहलों के नीचे जो ये नहरें बह रही हैं? क्या तुम देखते नहीं?

५२. बल्कि मैं बेहतर हूँ इसकी अपेक्षा (मुकाबिले) जो हीन (हकीर) है और साफ बोल भी नहीं सकता।

५३. अच्छा, इस पर सोने के कंगन क्यों नहीं उतरे? या उसके साथ झुण्ड और घटा बांधकर फरिश्ते ही आ जाते।

५४. तो उस ने अपनी जाति के लोगों को फुसलाया और उन्होंने उसी की मान ली। बेशक वे सारे ही फ्रांसिक लोग थे।

५५. फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित किया तो हम ने उन से बदला लिया और सब को डुबो दिया।

وَقَالُوا يَا أَيُّهُ الشُّجْرُ أَوْ لَنَا رَبُّكَ بِمَا عٰهَدَ
عِنْدَكَ ۗ إِنَّا لَنَهْتَدُونَ ﴿٤٩﴾

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٥٠﴾

وَكَاذِبٌ وُّرُوعُونَ فِي قَوْمِهِ قَالَ يُغْوِرُ الْاَيْسَ فِي
مُلْكِكَ وَنَضْرُوهَ الْاَنْهَارُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِ ۗ
اَفَلَا تَبْصُرُونَ ﴿٥١﴾

اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِي هُوَ مِهِنٌ ۗ
وَلَا يَكَادُ يَبِينُ ﴿٥٢﴾

فَلَوْلَا الَّذِي عَلَيْهِ السُّورَةُ مِّنْ ذَهَبٍ اَوْ جَاءَ مَعَهُ
السَّيِّئَةُ مُفْتَرِينَ ﴿٥٣﴾

فَاسْتَحَفَّ قَوْمَهُ فَاطَاعُوهُ ۗ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا
فٰسِقِيْنَ ﴿٥٤﴾

فَلَمَّا اَسَفُوْنَا اَنْتَهَمْنَا مِنْهُمْ فَاغْرَقْنٰهُمْ
اَجْمَعِيْنَ ﴿٥٥﴾

1 इससे मुराद नील नदी या उसकी कुछ शाखायें हैं जो उस के राजमहल के नीचे से गुजरती थी।

2 उस जमाने में मिस्र और ईरान के राजा अपनी विशेषता (खुसूसियत) दिखाने के लिए सोने के कंगन पहनते थे और गले में सोने का तौक और सिकड़ी डालते थे जो उनकी बड़ाई की निशानी समझी जाती थी, इसी वजह से फिरऔन ने हजरत मसा के धारे में कहा कि अगर उसकी कोई मर्यादा (इज्जत) की विशेषता होती और कोई जगह होती तो उसके हाथ में सोने के कंगन होने चाहिये थे।

५६. तो हम ने उन्हें गया-गुजरा कर दिया और वाद वालों के लिए नमूना बना दिया।

५७. और जब मरियम के बेटे की मिसाल वयान की गई तो उस से तेरी क्रौम (खुशी से) पुकार उठी।

५८. और उन्होंने कहा कि हमारे देवता (माबूद) अच्छे हैं या वह? तुझ से उनका यह कहना सिर्फ झगड़े के मकसद से है, वल्कि यह लोग हैं ही झगड़ालू।

५९. वह (ईसा عليه السلام) भी केवल बंदा (भक्त) ही है, जिस पर हम ने एहसान किया और उसे इस्राईल की औलाद के लिए (अपने कुदरत की) निशानी बनाया।

६०. अगर हम चाहते तो तुम्हारे बदले फरिस्ते कर देते जो धरती पर एक-दूसरे के वारिस का काम करते।

६१. और बेशक वह (ईसा عليه السلام) कयामत की निशानी है, तो तुम कयामत के बारे में शक न करो और मेरी बात मान लो, यही सीधा रास्ता है।

६२. और सैतान तुम्हें रोक न दे, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

६३. और जब ईसा (عليه السلام) मोजिजे लाये तो कहा कि मैं तुम्हारे पास हिकमत (ज्ञान) लाया हूँ और इसलिए आया हूँ कि जिन कुछ बातों में तुम मतभेद (इखितेलाफ) करते हो, उन्हें स्पष्ट (बाजेह) कर दूँ, तो तुम अल्लाह (तआला) से डरो और मेरा कहा मानो।

६४. मेरा और तुम्हारा रब सिर्फ अल्लाह (तआला) ही है तो तुम सब उसकी इबादत करो, सीधा रास्ता यही है।

فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِلْآخِرِينَ ﴿٥٦﴾

وَلَمَّا صَوَّبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّونَ ﴿٥٧﴾

وَقَالُوا لِلَّهِ تَخَوُّنًا خَيْرٌ أَمْ هُوَ مَا ضَرَبُوهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَبِيثُونَ ﴿٥٨﴾

إِنَّ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ مَثَلًا لِقَوْمٍ إِسْرَائِيلَ ﴿٥٩﴾

وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً فِي الْأَرْضِ يَخْلُقُونَ ﴿٦٠﴾

وَإِنَّهُ لَعَلْمٌ لِّسَاعَةٍ فَلَا آمَنُونَ بِهَا وَأَتَّبِعُونَ طَهَذَا صِرَاطَ مُسْتَقِيمٍ ﴿٦١﴾

وَلَا يَصُدُّكُمْ الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ ﴿٦٢﴾

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَى بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي تَخْتَلِفُونَ فِيهِ ۗ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ﴿٦٣﴾

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ طَهَذَا صِرَاطَ مُسْتَقِيمٍ ﴿٦٤﴾

६५. फिर (इसाईल की औलाद के) गुटों ने आपस में इख्तिलाफ किया, तो ज़ालिमों के लिए खराबी है दुख वाले दिन के अजाब से।

६६. ये लोग सिर्फ क्रयामत के इतेज़ार में हैं कि वह अचानक उन पर आ पड़े और उन्हें खबर भी न हो।

६७. उस दिन (घनिष्ठ) दोस्त भी एक-दूसरे के दुश्मन बन जायेंगे सिवाय परहेज़गारों के।

६८. हे मेरे बंदो! आज तो तुम पर कोई भय और डर है और न तुम गमगीन होगे।¹

६९. जो हमारी आयतों पर इमान लाये और थे भी वे (आज्ञाकारी) मुसलमान।

७०. तुम और तुम्हारी पत्नियाँ आनंदित (मसरूर) और खुश होकर जन्नत में चले जाओ।

७१. उन के चारों तरफ सोने के थालों और सोने के गिलासों का दौर चलाया जायेगा, उन के मन जिस चीज़ को चाहें और जिस से उन की आंखें लज़्ज़त हासिल करें, सब वहाँ होगा और तुम उस में हमेशा रहोगे।

७२. और यही वह जन्नत है कि तुम अपने अमल के बदले इस के उत्तराधिकारी (वारिस) बनाये गये हो।

७३. यहाँ तुम्हारे लिए बहुत मेवे हैं जिन्हें तुम खाते रहोगे।

७४. बेशक पानी (मुजरिम) लोग नरक के अजाब में हमेशा रहेंगे।

فَلتَخْتَلَفِ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ؕ قَوْلٌ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْيَوْمِ (65)

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ (66)

الْأَخِلَاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ (67)

يَعْبَأُ بِكُمْ لِأَخْوَابِكُمْ عَلَيْكُمْ يَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ تَعْرِفُونَ (68)

الَّذِينَ آمَنُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَكَانُوا مُسْلِمِينَ (69)

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ (70)

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ؕ وَفِيهَا مَا كَفَتْهُنَّ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ؕ وَأَنْتُمْ فِيهَا تَخْلُدُونَ (71)

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ (72)

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُمُونَ (73)

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ مُهِينٍ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ (74)

¹ यह क्रयामत के दिन उन नेक लोगों से कहा जायेगा जो संसार में सिर्फ अल्लाह की खुशी के लिए आपस में प्रेम रखते थे, जैसाकि हदीसों में भी उसकी महत्ता (फज़ीलत) आयी है, बल्कि अल्लाह के लिए दोस्ती और दुश्मनी को पूरे इमान का आधार (बुनियाद) बताया गया है।

७५. यह (यातना) कभी भी उन से हल्की न की जायेगी और वे उसी में निराश (मायूस) पड़े होंगे ।

७६. और हम ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद ही जालिम थे ।

७७. और वे पुकार-पुकार कर कहेंगे कि हे मालिक,^१ तेरा रब हमारा काम ही तमाम कर दे, वह कहेगा कि तुम्हें तो (हमेशा) रहना है ।

७८. हम तो तुम्हारे पास हक ले आये, लेकिन तुम में से ज्यादातर लोग हक से नफरत करने वाले थे ।

७९. क्या उन्होंने किसी काम का मजबूत इरादा कर लिया है? तो यकीन करो कि हम भी मजबूत काम करने वाले हैं ।

८०. क्या उनका यह इरादा है कि हम उनकी छिपी बातों को और उनकी काना-फूसी को नहीं सुनते । (बेशक हम बराबर सुन रहे हैं) बल्कि हमारे भेजे हुए उन के पास ही लिख रहे हैं ।

८१. (आप) कह दीजिए कि अगर मान लिया जाये कि रहमान की औलाद हो, तो मैं सब से पहले इबादत करने वाला होता ।

८२. आकाशों और धरती और अर्श का रब जो कुछ (ये) कहते हैं उस से (बहुत) पाक है ।

८३. अब आप उन्हें इसी वाद-विवाद और खेल-कूद में छोड़ दीजिए, यहाँ तक कि उन्हें उस दिन से पाला पड़ जाये, जिनका ये वादा दिये जाते हैं ।

لَا يَفْتُرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْسُوتُونَ ﴿٧٥﴾

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ﴿٧٦﴾

وَتَادُوا يَنْظُرُونَ لِيَقْضِيَ عَلَيْكَ رَبُّكَ مَا قَالَ إِنَّكُمْ فَكِيْرُونَ ﴿٧٧﴾

لَقَدْ جِئْنَاكُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنْ أَكْثَرَكُمْ لِیَحِقَّ كُرْهُونَ ﴿٧٨﴾

أَمْ أَمْرًا مَوْأَمَرًا فَإِنَّا مُبْرَمُونَ ﴿٧٩﴾

أَمْ يَحْسِبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ بَلْ وَرَسُولَنَا لَكَدِیْهِمْ یَكْتُبُونَ ﴿٨٠﴾

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَكْدٌ فَأَنَا أَوَّلُ الْعَابِدِينَ ﴿٨١﴾

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا یَصِفُونَ ﴿٨٢﴾

فَذَرَهُمْ یَخُوضُوا وَیَلْعَبُوا حَتَّى یَلْقُوا یَوْمَهُمُ الَّذِیْ یُوعَدُونَ ﴿٨٣﴾

^१ मालिक, नरक के दरोगा का नाम है ।

८४. और वही आकाशों पर भी पूज्य (माबूद) है और धरती पर भी वही इबादत के लायक है, और वह बड़ा हिक्मत वाला और पूरा जानने वाला है।

८५. और वह बड़ी वाबरकत जात है जिस के पास आकाशों और धरती और उन के बीच का राज्य है, और कयामत का इल्म भी उसी के पास है और उसी की तरफ तुम सब लौटाये जाओगे।

८६. और जिन्हें ये लोग अल्लाह के सिवाय पुकारते हैं वे सिफारिश करने का हक नहीं रखते, हाँ, (सिफारिश के लायक वे हैं) जो सच बात को क़बूल करें और उन्हें इल्म भी हो।^१

८७. और अगर आप उन से पूछें कि उन्हें किस ने पैदा किया है तो जरूर यह जवाब देंगे कि अल्लाह ने, फिर ये कही उल्टे जाते हैं?

८८. और उनका (पैगम्बरों का ज्यादातर) यह कहना कि हे मेरे रब! बेशक यह वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।

८९. तो आप उन से मुँह फेर लें और (विदाई का) सलाम कह दें। उन्हें (खुद ही) जल्द मालूम हो जायेगा।

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٨٤﴾

وَتَذَكَّرُكَ الَّذِي لَكَ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ۗ وَلِيهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٥﴾

وَلَا يَنْبَغُ لِلَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشُّعَاءَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٨٦﴾

وَكَيْنَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَنَّى يُؤْفَكُونَ ﴿٨٧﴾

وَقِيلَ لِرَبِّ رَبِّ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يَتَّقُونَ ﴿٨٨﴾

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٨٩﴾

^१ यह नहीं कि आकाश का पूज्य कोई और हो और धरती का कोई और, बल्कि जैसे इन दोनों का बनाने वाला एक है, पूज्य भी एक ही है। इसी के समानार्थ (मिस्ल) यह आयत है।

﴿وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُونَ﴾

—और वही है सच्चा माबूद आकाशों में भी और धरती में भी, वह तुम्हारी छिपी और जाहिर हालतों को भी जानता है और तुम जो कुछ अमल करते हो उसको भी जानता है।—
(अल-अंआम-३)

^२ सच बात से मुराद कलिमा 'ला इलाहा इल्लल्लाह' है, और यह क़बूल करना सूझबूझ के बिना पर हो, केवल रीति-रिवाज और बूजुर्गों की रसम के रूप में न हो, यानी मुँह से कलमा तौहीद के अदा करने वाले को पता हो कि इस में केवल एक अल्लाह का इकरार और दूसरे सभी उपास्यों (माबूदों) का इन्कार है, फिर उस के मुताबिक अमल हो। ऐसे लोगों के हक में सिफारिश करने वाले की सिफारिश फायदेमंद होगी, या यह मुराद है कि सिफारिश करने का हक सिर्फ ऐसे लोगों को मिलेगा जो सच का इकरार करने वाले होंगे, जैसे अम्बिया, औलिया और फरिस्ते, न कि झूठे माबूदों को जिन्हें मुशरिक अपना सिफारिशी समझते हैं।

सूरतुद दुखान-४४

सूर: दुखान मक्का में नाजिल हुई और इस में उनसठ आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. हा•मीम•।

२. कसम है इस खुली किताब की।

३. बेशक हम ने इसे मुबारक रात^१ में नाजिल किया है। बेशक हम बाखबर कर देने वाले हैं।

४. उसी रात में हर अहम काम का फैसला किया जाता है।

५. हमारे पास से आदेश होकर, हम ही हैं रसूल बनाकर भेजने वाले।

سُورَةُ الدُّخَانِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

حَمْدٌ ۱

وَالْكِتَابِ الْمُنِیْنِ ۲

اِنَّا اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ وَاِنَّا كُنَّا

مُنذِرِیْنَ ۱

فِیْهَا یَقْرَأُ كُلُّ اَمْرِ حَكِیْمٍ ۴

اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا وَاِنَّا كُنَّا مُرْسِلِیْنَ ۵

^१ शुभ रात्रि (मुबारक रात) से मुराद (लैलतुल क़द्र है), जैसाकि दूसरे मुकाम पर बयान (वर्णन) है। (وَاِنَّا اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ) (सूरतुल क़द्र) "हम ने यह कुरआन शबे क़द्र में नाजिल किया।" यह मुबारक रात रमजान के आखिरी दस रात की विषम (ताक) रातों में कोई एक रात होती है। यहाँ क़द्र (सम्मान) की इस रात को मुबारक रात कहा गया है। इस के मुबारक होने में क्या शक हो सकता है, एक तो इस में कुरआन का अवतरण (नुज़ूल) हुआ। दूसरे, इस में फरिस्तों और जिब्रील का नुज़ूल होता है। तीसरे, इस में पूरे साल होने वाले मामले का फैसला किया जाता है (जैसाकि आगे आ रहा है)। चौथे, इस रात की इबादत (उपासना) हजार महीने (यानी ८३ साल ४ महीने) की इबादत से बेहतर है, शबे क़द्र या "लैलये मुबारकह" में कुरआन के नुज़ूल का मतलब यह है कि इस रात नबी ﷺ पर पाक कुरआन नाजिल होना शुरू हुआ या यह मुराद है कि लौहे महफूज़ (सुरक्षित पट्टिका) से इसी रात बेतुल इज्जत (सम्मान गृह) में नाजिल किया गया जो दुनिया के आकाश पर है, फिर वहाँ से ज़रूरत के ऐतवार से २३ सालों तक अलग-अलग बरत में नबी ﷺ पर नाजिल होता रहा। कुछ ने लैलये मुबारकह से शाबान महीने की पंद्रहवीं रात मुराद लिया है लेकिन यह सही नहीं है, जब कुरआन के खुले शब्दों से कुरआन का शबे क़द्र में नाजिल होना साबित है तो इस से "शबे बराअत" मुराद लेना कभी भी सही नहीं, इस के अलावा "शबेबराअत" (शाबान महीने की पंद्रहवीं रात) के धारे में जितनी रिवायतें (वर्णन) हैं जिन में उसकी महत्ता (फ़ज्ीलत) का बयान है या उन में उसे फैसले की रात कहा गया है, यह सभी बयान सुबूत के आधार पर कमजोर और ज़ईफ़ है, यह कुरआन के खुले शब्दों का मुकाबला किस तरह कर सकती है?

६. आप के रब की कृपा (रहमत) से, वही है सुनने वाला और जानने वाला ।

७. जो रब है आकाशों का और धरती का और जो कुछ उनके बीच है, अगर तुम यकीन करने वाले हो ।

८. कोई इबादत के लायक नहीं उसके सिवाय, वही जिन्दा करता है और मारता है, वही तुम्हारा रब है और तुम्हारे पिछले पूर्वजों का ।

९. बल्लिक वे शक में पड़े खेल रहे हैं ।

१०. आप उस दिन के इंतजार में रहें जबकि आकाश खुला हुआ धुआँ लायेगा ।

११. जो लोगों को घेर लेगा, यह दुखदायी अजाब है ।

१२. (कहेंगे कि) हे हमारे रब! यह अजाब हम से दूर कर हम ईमान कुबूल करते हैं ।

१३. उन के लिए नसीहत कहाँ है? साफ़ तौर से बयान करने वाले पैगम्बर उन के पास आ चुके ।

१४. फिर भी उन्होंने उन से मुंह फेरा और कह दिया कि यह सिखाया-पढ़ाया हुआ दीवाना है ।

१५. हम अजाब को थोड़ी दूर कर देंगे तो तुम फिर अपनी उसी हालत में आ जाओगे ।

१६. जिस दिन हम बड़ी कड़ी पकड़ पकड़ेंगे! यकीनी तौर से हम बदला लेने वाले हैं ।

رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝٦

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا إِنَّكُمْ لُمُوقِنِينَ ۝٧

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝٨

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ۝٩

فَارْتَوِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ۝١٠

يَغْشَى النَّاسَ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝١١

رَبَّنَا اكشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ۝١٢

أَلَيْسَ لَهُمُ الَّذِينَ كُفِرُوا وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ۝١٣

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَجْنُونٌ ۝١٤

إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ۝١٥

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبَىٰ ؎

إِنَّا مُنْتَقِمُونَ ۝١٦

1 इस से मुराद बद्र के जंग की पकड़ है, जिस में सत्तर काफिर मारे गये और सत्तर कैदी बना लिये गये । दूसरी व्याख्या (तफसीर) के अनुसार यह कड़ी पकड़ क़यामत (प्रलय) के दिन होगी । इमाम शैकानी फरमाते हैं कि यह उस पकड़ की खास चर्चा है जो बद्र के जंग में हुई, क्योंकि कुरैश ही के बारे में इसकी चर्चा है, यद्यपि (अगरचे) क़यामत के दिन भी अल्लाह तजाला कड़ी पकड़ करेगा, फिर भी वह पकड़ सामान्य (आम) होगी जिस में हर बुरे लोग शामिल होंगे ।

१७. और बेशक हम इस से पहले फिरऔन की जाति की (भी) परीक्षा ले चुके हैं,^१ जिन के पास (अल्लाह वर) सम्मानित (बाबक़र) रसूल आया ।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ
رَسُولٌ كَرِيمٌ ﴿١٧﴾

१८. कि अल्लाह (तआला) के बंदों को मुझे दे दो^२ यक़ीन करो कि मैं तुम्हारे लिए ईमानदार रसूल हूँ ।

أَنْ أَذُوقُوا إِلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ فِي كَلِمٍ
رَّسُولٌ آمِينٌ ﴿١٨﴾

१९. और तुम अल्लाह तआला के सामने सरकशी न दिखाओ, मैं तुम्हारे सामने खुला सुबूत लाने वाला हूँ ।

وَأَنْ لَا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ إِنِّي آتِيكُمْ بِسُلْطٰنٍ
مُّبِينٍ ﴿١٩﴾

२०. और मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह में आता हूँ, इस से कि तुम मुझे पत्थरों से मार डालो ।

وَإِنِّي عُدْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُونِ ﴿٢٠﴾

२१. और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझ से अलग ही रहो ।

وَإِنْ لَمْ تُؤْمِنُوا بِي فَأَعْتَزِلُونِ ﴿٢١﴾

२२. फिर उन्होंने अपने रब से दुआ की कि ये सब पापी लोग हैं ।

فَدَعَا رَبَّهُ أَنْ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ﴿٢٢﴾

२३. (हम ने कह दिया) कि रातों-रात तू मेरे बंदों को लेकर निकल, बेशक तेरा पीछा किया जायेगा ।

فَأَسْرِبْ بِيَاذِي نَيْلًا إِنَّكُمْ مُّسْمِعُونَ ﴿٢٣﴾

२४. और तू सागर को ठहरा हुआ छोड़कर चला जा, बेशक यह सेना डूबो दी जायेगी ।

وَأَتْرِكُ الْبَحْرَ رَهْوًا إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُونَ ﴿٢٤﴾

२५. वे बहुत से वाग और जलस्रोत (चश्मे) छोड़ गये ।

كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَبْثٍ وَعُيُونٍ ﴿٢٥﴾

^१ परीक्षा (इम्तेहान) लेने का मतलब है कि हम ने उन्हें दुनियावी सुख-सुविधा और सम्पन्नता (खुशहाली) दी, और फिर अपना पैगम्बर भी उनकी तरफ भेजा, लेकिन न उन्होंने अल्लाह के वरदानों (नेमतों) का शुक्रिया अदा किया और न पैगम्बर पर ईमान लाये ।

^२ عباد الله (अल्लाह के बंदों) से मुराद यहाँ मूसा عليه السلام की जाति इस्राईल की औलाद है, जिसे फिरऔन ने मुलाभ बना रखा था, हजरत मूसा عليه السلام ने अपनी जाति की आजादी की मांग की ।

२६. और खेतियाँ और अच्छी रिहाईश ।

وَأَرْزُوقًا وَمَقَارٍ كَرِيمًا ﴿٢٦﴾

२७. और वे सुखदायी चीजें जिन में सुख भोग रहे थे ।

وَأَنْعَامًا كَانُوا فِيهَا فَرِحِينَ ﴿٢٧﴾

२८. इसी तरह हो गया, और हम ने उन सब का वारिस दूसरी क्रौम को बना दिया ।¹

كَذَلِكَ نَسُوا أَوْرَثَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ﴿٢٨﴾

२९. तो उन पर न तो आकाश और धरती रोये² और न उन्हें मौका मिला ।

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ﴿٢٩﴾

३०. और हम ने (ही) इस्राईल की औलाद को (बहुत) झिल्लत वाली सजा से मुक्ति (नजात) दी ।

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ﴿٣٠﴾

३१. (जो) फिरऔन की तरफ से (हो रही) थी । हकीकत में वह सरकश और सीमा (हद) पार करने वालों में से था ।

مِنْ فِرْعَوْنَ إِذْ كَانَ عَلِيًّا مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ﴿٣١﴾

३२. और हम ने जान बूझकर इस्राईल की औलाद को दुनिया वालों पर फजीलत अता की ।³

وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمِنَا عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٣٢﴾

३३. और हम ने उन्हें ऐसी निशानियाँ अता की, जिन में खुली परीक्षा (इम्तेहान) थी ।

وَأَتَيْنَهُم مِّنَ الْأَيْتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ﴿٣٣﴾

¹ कुछ के करीब इस से मुराद इस्राईल की औलाद है, लेकिन कुछ के ह्याल से इस्राईली बंध का दोबारा मिश्र आना तारीखी ऐतवार से साबित नहीं, इसलिए मिश्र देश की उत्तराधिकारी (वारिस) कोई दूसरी जाति बनी, इस्राईल की औलाद नहीं ।

² यानी इन फिरऔनियों के नेक काम थे ही नहीं जो आकाश पर चढ़ते और उन के सिलसिले के टूटने (तबाह होने) पर आकाश रोते, न धरती ही पर वह अल्लाह की इबादत करते थे कि उस से बचिच (महकूम) होने पर धरती रोती । मुराद यह है कि आकाश और धरती में से कोई उन के तबाह होने पर रोने वाला नहीं था । (फतहल कदीर)

³ इस दुनिया से मुराद इस्राईल की औलाद के जमाने की दुनिया है । आम तौर से सारी दुनिया नहीं है, क्योंकि पाक कुरआन में मोहम्मद ﷺ की उम्मत को (وَأَنشَأْنَا لَكَ) की उपाधि (लकब) से सम्मानित (नवाज) किया गया है, यानी इस्राईल की औलाद अपने जमाने में दुनिया वालों पर फजीलत रखती थी, उनकी यह फजीलत उस योग्यता (क़ाबलियत) के सबब थी जिसे अल्लाह ही जानता है ।

३४. यह लोग तो यही कहते हैं ।

३५. कि (आखिरी चीज) यही हमारा पहली बार (दुनिया से) मर जाना है और हम दोबारा उठाये नहीं जायेंगे ।

३६. अगर तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों (बुजुर्गों) को ले आओ ।

३७. क्या ये लोग बेहतर हैं या तुव्वअ की कौम के लोग और जो उन से भी पहले थे? हम ने उन सब को बरबाद कर दिया, बेशक वे पापी थे ।¹

३८. और हम ने धरती और आकाशों और उन के बीच की चीजों को खेल के रूप में पैदा नहीं किया ।

३९. बल्कि हम ने उन्हें सही मकसद के साथ ही पैदा किया है, लेकिन ज्यादातर लोग नहीं जानते ।

४०. बेशक फ़ैसले का दिन उन सबका निश्चित (मुकर्रर) समय है ।

४१. उस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ भी काम न आयेगा और न उनकी मदद की जायेगी ।

४२. लेकिन जिस पर अल्लाह की दया (रहमत) हो जाये, वह बड़ा शक्तिशाली (गालिब) और दया (रहम) करने वाला है ।

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿٣٤﴾

إِنَّ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿٣٥﴾

فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٣٦﴾

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۗ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ أَهْلَكْنَاهُمْ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿٣٧﴾

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لِعَيْنٍ ﴿٣٨﴾

مَا خَلَقْنَاهَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٩﴾

إِنَّ يَوْمَ الْفُصْلِ مِيقَاتِهِمْ أَجْمَعِينَ ﴿٤٠﴾

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلَىٰ عَنْ مَوْلَىٰ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤١﴾

وَالَّذِينَ رَزَقْنَاهُمْ مِنْهُ يُبْتَغُونَ وَجْهَ اللَّهِ لَعَلَّ يُرْسِلُ لَهُمْ سَائِقِينَ ﴿٤٢﴾

¹ यानी यह सबका के काफिर तुव्वअ और उन से पहले की जातियाँ आद और समूद आदि (बगैरह) से शक्तिशाली और अच्छे हैं । जब हम ने उनको पापों के बदले में उन से ज्यादा शक्ति और बल रखने पर भी नाश कर दिया तो यह क्या महत्व (अहमियत) रखते हैं? तुव्वअ से मुराद सवा की जाति है, सवा में हिम्यर जाति थी, यह अपने राजा को तुव्वअ कहते थे, जैसे रूम के राजा को कैसर, ईरान के राजा को किसरा, मिश्र के राजा को फिरऔन और हब्शा के राजा को नजाशी कहा जाता था ।

४३. बेशक जवकूम (थूहड़) का पेड़ ।

إِنَّ شَجَرَتَ الرَّقُومِ ۙ (43)

४४. पापी का खाना है ।

كَلَامُ الْإِنْمِ ۙ (44)

४५. जो तलछट की तरह है और पेट में खौलता रहता है ।

كَالْمُهْلِ ۙ يُغْلَىٰ فِي الْبُطُونِ ۙ (45)

४६. तेज गर्म पानी (के खौलने) की तरह ।

كغلي الحميم ۙ (46)

४७. उसे पकड़ लो फिर घसीटते हुए नरक के बीच तक पहुँचाओ ।

خُذُوهُ فَاعْتَلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ ۙ (47)

४८. फिर उस के सिर पर बहुत गर्म पानी की यातना (अजाब) बहाओ ।

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِن عَذَابِ الْحَمِيمِ ۙ (48)

४९. (उस से कहा जायेगा) चखता जा, तू तो बड़ी इज्जत और एहतेराम (सम्मान) वाला था।

ذُقْ ۙ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ۙ (49)

५०. यही वह चीज है जिस में तुम संदेह (शक) किया करते थे ।

إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ۙ (50)

५१. बेशक (अल्लाह से) डरने वाले शान्ति की जगह में होंगे ।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ۙ (51)

५२. बागों और जल स्रोतों (चश्मों) में ।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۙ (52)

५३. बारीक और मुलायम रेशमी कपड़े पहने हुए आमने-सामने बैठे होंगे ।

يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ ۙ

مُتَقَابِلِينَ ۙ (53)

५४. यह उसी तरह है, और हम बड़ी-बड़ी आँखों वाली अप्सराओं (हूरों) से उनका विवाह कर देंगे ।

كَذَلِكَ ۙ وَرَوْحُهُمْ خُحْرٌ عَمِينَ ۙ (54)

५५. निश्चिन्तता (बेखौफ़ी) से वहाँ हर तरह के मेवों की मार्गें कर रहे होंगे ।

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ۙ (55)

५६. वहाँ वे मौत का मजा चखने वाले नहीं सिवाय पहली मौत के, (जो वे मर चुके) उन्हें अल्लाह (तआला) ने नरक के अजाब से बचा दिया ।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ ۙ

الْأُولَىٰ ۙ وَوَقَّهُم عَذَابَ الْجَحِيمِ ۙ (56)

५७. यह केवल तेरे रब की कृपा (रहमत) है ॥ यही है बड़ी कामयाबी ।

५८. हम ने इस (कुरआन) को तेरी भाषा में आसान कर दिया ताकि वे नसीहत हासिल करें ।

५९. अब तू प्रतीक्षा (इंतजार) कर ये भी प्रतीक्षा कर रहे हैं ।

सूरतुल जासिय:- ४५

सूर: जासिय: मक्के में नाजिल हुई, इस में सैतीस आयतें और चार रूकूअ हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

१. हा•मीम• ।

२. यह किताब अल्लाह जबरदस्त हिक्मत वाले की तरफ से नाजिल हुई है ।

३. आकाशों और धरती में ईमानवालों के लिए बेशक बहुत सी निशानियाँ हैं ।

४. और खुद तुम्हारे जन्म में और जानवरों को फैलाने में यक्रीन रखने वाले समुदाय (कौम) के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं ।

५. और रात-दिन के बदलने में और जो कुछ जीविका (रिज़क) अल्लाह (तआला) आकाश से नाजिल करके धरती को उसकी मौत के बाद जिन्दा कर देता है, उस में और हवाओं के बदलने में भी उन लोगों के लिए जो अक़ल

فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ذَٰلِكَ هُوَ الْغَوْرُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾

فَأَنبَأَ بَشْرَهُ لَيْسَ بِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾

فَأَرْقُبْ لَّهُمْ قُرْطُوبِينَ ﴿٥٩﴾

سُورَةُ الْجَاثِيَةِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

حَمْدٌ ۱

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِیْزِ الْحَكِیْمِ ۲

اِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَآیٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِیْنَ ۳

وَفِی خَلْقِكُمْ وَمَا یَبْنٰی مِنْ دَابَّۃٍ اَیۡتٌ لِّقَوْمٍ یُّوقِنُوْنَ ۴

وَإِخْتِلَافِ اللَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رُزُقٍ فَآخِیۡرِهِۦ ۵
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۶
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۷
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۸
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۹
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۱۰
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۱۱
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۱۲
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۱۳
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۱۴
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۱۵
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۱۶
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۱۷
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۱۸
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۱۹
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۲۰
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۲۱
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۲۲
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۲۳
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۲۴
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۲۵
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۲۶
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۲۷
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۲۸
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۲۹
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۳۰
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۳۱
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۳۲
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۳۳
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۳۴
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۳۵
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۳۶
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۳۷
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۳۸
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۳۹
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۴۰
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۴۱
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۴۲
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۴۳
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۴۴
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۴۵
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۴۶
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۴۷
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۴۸
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۴۹
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۵۰
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۵۱
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۵۲
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۵۳
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۵۴
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۵۵
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۵۶
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۵۷
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۵۸
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۵۹
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۶۰
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۶۱
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۶۲
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۶۳
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۶۴
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۶۵
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۶۶
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۶۷
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۶۸
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۶۹
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۷۰
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۷۱
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۷۲
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۷۳
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۷۴
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۷۵
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۷۶
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۷۷
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۷۸
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۷۹
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۸۰
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۸۱
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۸۲
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۸۳
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۸۴
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۸۵
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۸۶
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۸۷
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۸۸
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۸۹
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۹۰
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۹۱
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۹۲
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۹۳
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۹۴
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۹۵
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۹۶
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۹۷
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۹۸
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۹۹
وَأَلۡدَٰرِیۡنَ ۱۰۰

1 जिस तरह हदीस में भी है। फरमाया : यह बात जान लो कि तुम में से किसी का अमल उसे जन्नत में नहीं ले जायेगा। सहाबा (आप के साथियों) ने सवाल किया, «अल्लाह के रसूल! आप को भी?» फरमाया, «हाँ मुझे भी, लेकिन यह कि अल्लाह मुझे अपनी दया (रहमत) और करुणा (शफकत) में ढाँप लेगा।» (सहीह बुखारी, किताब रिक़ाक, बाबुल कस्दे वल मुदावमते अलल अमल और मुस्लिम ऊपरी किताब)

रखते हैं, निश्चानियाँ हैं ।^१

६. यह है अल्लाह (तआला) की आयतें जिन्हें हम आप को हक के साथ सुना रहे हैं, तो अल्लाह (तआला) और उस की आयतों के बाद ये किस बात पर ईमान लायेंगे ।

७. धिक्कार (और खेद है) हर झूठे पापी पर ।^२

८. जो अल्लाह की आयतें अपने सामने पढ़ी जाती हुई सुने फिर भी गर्व करता हुआ इस प्रकार अड़ा रहे जैसेकि सुनी ही नहीं, तो ऐसे लोगों को कष्टदायी अज्ञाब की खबर (पहुँचा) दें ।

९. और वह जब हमारी आयतों में से किसी आयत की खबर पा लेता है तो उसका मजाक उड़ाता है, यही लोग हैं जिन के लिए अपमान (जिल्लत) वाला अज्ञाब है ।

१०. उन के पीछे नरक है, जो कुछ उन्होंने हासिल किया था वह उन्हें कुछ भी फायदा न देगा और न वह (कुछ काम आयेंगे) जिन को उन्होंने अल्लाह के सिवाय वली (और कार्यक्षम) बना रखा था, उनके लिए तो बड़ा भारी अज्ञाब है ।

११. यह (सरासर) हिदायत है^३ और जिन लोगों ने अपने रब की आयतों को न माना उन के लिए बड़ा कठिन अज्ञाब है ।

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ تَنْزُلُهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۝

فَبِأَيِّ حَتَّىٰ بَعْدِ اللَّهِ وَأَيَّتْهُ يَوْمُونَ ⑥

وَيَلَّيْلٌ يَكْفُرُ أَفَّاكٍ أَذِيمٍ ⑦

لَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ كَمَثَلِ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا

كَانَ لَمْ يَسْمَعْهَا ۝ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابِ الْيَوْمِ ⑧

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا

أُوَلِّيكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ⑨

مِنْ ذُرَاهِمٍ جَهَنَّمَ ۝ وَلَا يَغْنُفُ عَنْهُمْ

مَا كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ

أَوْلِيَاءَ ۝ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ⑩

هَٰذَا هُدًى ۝ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ

لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجِيمٍ ⑪

^१ कभी हवा का रूख उत्तर और दक्षिण को, कभी पूरब और पश्चिम को होता है, कभी पानी वाली हवायें, कभी थलीय हवायें, कभी रात को, कभी दिन को, कुछ वर्षा वाली, कुछ फायदेमद, कुछ हवायें आत्मा (रूह) का आहार (गिजा) और कुछ सब कुछ झुलसा देने वाली और केवल धूल धप्पड़ का तूफान । हवा की इतनी क्रिमें भी प्रमाणित (साबित) करते हैं कि इस दुनिया का कोई चलाने वाला है जो सिर्फ एक है, दो या ज्यादा नहीं । सभी इच्छितेयार का मालिक वही एक है, उन में कोई उसका सात्री नहीं, हर तरह का निजाम वही चलाता है, किसी और के पास तनिक भी हक नहीं । इसी मायने की आयत सूर: बकर: की आयत नं० १६४ भी है ।

^२ أَفَّاكٍ (अपमत्तक) كَذَّبَ के मतलब में, أَذِيمٌ (महापापी) وَيَلَّيْلٌ (बिनाश (हलाक) या नरक की एक बांदी का नाम ।

^३ यानी कुरआन, क्योंकि उसके नुजूल का मकसद ही यह है कि लोगों को कुफ्र और शिर्क के अधेरो से निकालकर ईमान की रीशनी में लाया जाये, इसलिए उस के सरासर हिदायत होने में तो कोई शक नहीं, लेकिन हिदायत मिलेगी तो उसे ही जो उस के लिए अपना सीना खोल देगा ।

१२. अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए समुद्र को ताबे बना दिया ताकि उस के हुकम से उस में नावें चले और तुम उसका फ़जल ढूँढो, और ताकि तुम उसका शुक्रिया अदा करो ।

१३. और आकाश और धरती की हर चीज़ को भी उस ने अपनी तरफ से तुम्हारे वश में कर दिया है, जो लोग ख्याल करें, बेशक वे इस में बहुत सी निशानियाँ पायेंगे ।

१४. आप ईमानवालों से कह दें कि वह उन लोगों को माफ़ कर दिया करें जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते, ताकि अल्लाह तआला एक क्रौम को उन के करतूतों का बदला दे ।

१५. जो नेकी करेगा वह अपने खुद के भले के लिए और जो बुराई करेगा उसका बुरा नतीजा उसी पर है, फिर तुम सब अपने रब की तरफ लौटाये जाओगे ।

१६. और बेशक हम ने इस्राईल की औलाद को किताब, मुल्क^२ और नबूवत दिया था, और हम ने उन्हें पाक (और अच्छी) रोजी दी थी, और उन्हें दुनिया वालों पर श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) दी थी ।

१७. और हम ने उन्हें धर्म की खुली निशानियाँ (दलील) अता की, फिर उन्होंने अपने पास इल्म के पहुँच जाने के बाद आपस के द्वेष-विवाद (ज़िद-बहस) के सबब ही इस्तिलाफ़ कर डाला, ये जिन-जिन बातों में इस्तिलाफ़ कर रहे हैं उन

اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمْ الْبَحْرَ لِيَجْزِيَ
الْفُلْكَ فِيهِ بِأَمْرِهِ لِتَسْتَبْخَرُوا مِنْ قَضِيهِ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٢﴾

وَسَخَّرَ لَكُمْ فَمَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا قِنَّةً لِمَنْ فِي ذَلِكَ لآيَاتٍ لِقَوْمٍ
يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٣﴾

قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ
أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ﴿١٤﴾

مَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ
فَعَلَيْهَا ۗ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١٥﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنْ
الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

وَآتَيْنَاهُمْ بَيِّنَاتٍ مِنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا
مِنْ بَعْضِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ لَا بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۗ
إِنَّ رَبَّكَ يُفْضِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿١٧﴾

^१ वश में करने से मुराद यही है कि उनकी तुम्हारी सेवा के लिए नियुक्त (मुतअय्यन) कर दिया है, तुम्हारे अपने फ़ायदे तुम्हारी रोजी सब इन्ही से संबंधित है, जैसे चाँद, सूरज, जगमगाते तारे, वर्षा, बादल और हवा आदि हैं, और अपनी तरफ से का मतलब अपनी खास रहमत और दया से ।

^२ किताब से मुराद धर्मग्रंथ तौरात, حکم (हुकम) से मुल्क और शासन या अक्ल और फ़ैसले की वह योग्यता (क्राबलियत) है जो झगड़ों और लोगों के बीच फ़ैसला करने के लिए जरूरी है ।

का फ़ैसला क्रयामत के दिन उन के बीच तेरा रब (खुद) करेगा।

१८. फिर हम ने आप को धर्म के (वाज़ेह) रास्ता पर क़ायम कर दिया,^१ तो आप उसी पर लगे रहें और नादानों की इच्छाओं का अनुगमन (पैरवी) न करें।

१९. (याद रखें) कि ये लोग कभी अल्लाह के सामने आप के कुछ काम नहीं आ सकते। (समझ लो कि) ज़ालिम लोग आपस में एक-दूसरे के साथी होते हैं और परहेज़गारों का साथी (संरक्षक) अल्लाह (महान) है।

२०. यह (कुरआन) लोगों के लिए सूझ की बातें और हिदायत और रहमत है, उस गिरोह के लिए जो यकीन रखता है।

२१. क्या उन लोगों का जो बुरे काम करते हैं, यह ख़्याल है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाये और नेकी के काम किये कि उनका मरना-जीना बराबर हो जाये, बुरा फ़ैसला है वह जो वे कर रहे हैं।

२२. और आकाशों और धरती को अल्लाह ने बहुत ही इंसफ़ के साथ पैदा किया है और ताकि हर इंसान को उसके किये हुए काम का पूरा बदला दिया जाये और वे जुल्म न किये जायेंगे।^२

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِيحَةٍ مِّنَ الْأُمُورِ أَتَّبِعَهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨﴾

إِنَّهُمْ لَن يَغْنُؤُوا عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۗ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ﴿١٩﴾

هَذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿٢٠﴾

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ أُجْرَتْ حُومًا الشَّيْءَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ۗ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٢١﴾

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِيُخْرِجَ كُلَّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٢﴾

^१ शरिहत (शरीअत) का लफ़्ज़ी मायना है रास्ता, जमाअत और रिवाज़। वड़े रास्ते को भी शारेअ कहा जाता है कि वह मक़सद और लक्ष्य तक पहुँचाता है, इसलिए यहाँ शरीअत से मुराद वह धर्म (दीन) है जो अल्लाह ने अपने बंदों के लिए नियुक्त (मुकरर) किया है ताकि लोग उस पर चल कर अल्लाह की मर्जी का लक्ष्य हासिल कर लें। आयत का मतलब है कि हम ने आप को धर्म के एक साफ़ रास्ता और रिवाज़ पर क़ायम कर दिया है जो आप को सच तक पहुँचायेगा।

^२ और यही इंसफ़ है कि क़यामत के दिन बेलाग़ फ़ैसला होगा और हर एक को उस के अमल के ऐतबार से अच्छा या बुरा बदला मिलेगा। यह नहीं होगा कि अच्छे बुरे दोनों के साथ बराबर सुलूक करे, जैसाकि काफ़िरो का भ्रम है, जिसका खंडन (तरदीद) पिछली कइ आयतों में किया

२३. क्या आप ने उसे भी देखा जिस ने अपनी मनोकामना को अपना पूज्य (मावूद) बना रखा है, और समझ-बूझ के बावजूद भी अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया है, और उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी है और उसकी आँख पर भी पर्दा डाल दिया है? अब ऐसे इंसान को अल्लाह के बाद कौन मार्गदर्शन (रहनुमाई) करा सकता है। क्या अब भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते?

२४. और उन्होंने कहा कि हमारा जीवन केवल दुनियावी जीवन ही है; हम मरते हैं और जीते हैं और हमें केवल काल (जमाना) ही मार डालता है। (हकीकत में) उन्हें उसका कुछ ज्ञान (इल्म) ही नहीं; ये तो केवल अंदाजा और अटकल से ही काम ले रहे हैं।

२५. और जब उन के सामने हमारी वाजेह आयतों का पाठ (तिलावत) किया जाता है तो उन के पास इस क़ौल के सिवाय कोई दलील नहीं होती कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादों को लाओ।

२६. (आप) कह दीजिए कि अल्लाह ही तुम्हें जिन्दा करता है फिर तुम्हें मार डालता है, फिर तुम्हें क़यामत के दिन जमा करेगा जिस में कोई शक नहीं, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

२७. और आकाशों और धरती का मुल्क अल्लाह ही का है, और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी उस दिन असत्यवादी (बातिल परस्त) बड़े नुक़सान में पड़ेंगे।

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَضَلَّهُ
اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمِهِ وَحَدَّمَ عَلَىٰ سَعْيِهِ وَقَلْبِهِ
وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غِشَاوَةً فَمَنْ يَهْدِيهِ
مِنْ بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٣﴾

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا
وَمَا يَهْدِيَنَا إِلَّا الدَّهْرُ وَمَا لَهُم بِذَلِكَ مِنْ
عِلْمٍ ۗ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ ﴿٢٤﴾

وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٌ مَا كَانَ
حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا اقْتُلُوا بِآبَائِنَا
إِنْ لَكُم صِدْقٌ ۖ وَإِنْ ﴿٢٥﴾

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْعَلُكُمْ
إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَارِيبَ فِيهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٦﴾

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ط وَيَوْمَ تَقُومُ
السَّاعَةُ يُومِئِدُنَا يَخْسَرُ الْمُبْطِلُونَ ﴿٢٧﴾

गया है। क्योंकि दोनों को बराबरी के स्तर पर रखना नाइंसाफी है। इसलिए जिस तरह कौटा वो कर अंगूर की पैदावार हासिल नहीं की जा सकती इसी तरह बुराई करके वह मुक़ाम हासिल नहीं हो सकता जो अल्लाह ने ईमान वालों के लिए रखा है।

२८. और आप देखेंगे कि हर क्रौम घुटनों के बल गिरी होगी, हर गिरोह अपने कर्मपत्र (आमालनामा) की तरफ बुलाया जायेगा, आज तुम्हें अपने किये का बदला दिया जायेगा।

२९. यह है हमारी किताब जो तुम्हारे बारे में सच-सच बोल रही है, हम तुम्हारे कर्म (अमल) लिखवाते जाते थे।

३०. तो जो ईमान लाये और उन्होंने नेकी के काम किये तो उनकी उन का रब अपनी कृपा (रहमत) के साथे में ले लेगा, यही स्पष्ट (वाजेह) कामयाबी है।

३१. लेकिन जिन लोगों ने कुफ्र किया तो (मैं उन से कहूंगा) कि क्या मेरी आयतें तुम्हें सुनायी नहीं जाती थीं? फिर भी तुम गर्व (फख्र) करते रहे और तुम थे ही पापी लोग।

३२. और जब कभी कहा जाता कि अल्लाह का वादा यकीनी तौर से सच है और कयामत के आने में कोई शक नहीं तो तुम जवाब देते थे कि हम नहीं जानते कि कयामत क्या (चीज) है? हमें कुछ यों ही सोच-विचार हो जाता है लेकिन हमें यकीन नहीं।

وَتَرَىٰ كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً ۚ كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَىٰ
إِلَىٰ كِتَابِهَا ۚ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

هَذَا كِتَابُنَا يَنْطَلِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۗ وَإِنَّا
كُنَّا لَنَسْتَبِيحُ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٢٩﴾

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فَبِهِمْ جَاهِدُ ۖ فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ هُوَ
الْقَوْلُ السَّيِّئُ ﴿٣٠﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَكُفِّرُوا ۖ وَكُنْ أَيْنَ تَشَاءُ
عَلَيْكُمْ ۖ فَاسْتَكْبَرْتُمْ ۖ وَكُنتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿٣١﴾

وَإِذَا قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ
فِيهَا ۖ قُلْتُمْ مَّا نَدَّبُرِي مَا السَّاعَةُ ۖ إِن نَّظُنُّ
إِلَّا كَلِمًا ۖ وَمَا نَحْنُ بِمُسْتَقْبِرِينَ ﴿٣٢﴾

1 यहाँ भी ईमान के साथ नेकी के काम की चर्चा करके उसकी अहमियत दिखा दिया और नेकी के अमल वह अमल हैं जो सुन्नत के मूलाधिक किये जायें, न कि हर वह अमल जिसे इंसान अपने मन से अच्छा समझ ले और उसे बड़ी पाबन्दी और रूचि से करे, जैसे बहुत सी विदवात (नई बातें) धार्मिक गिरोहों में प्रचलित (राईज) हैं और जो उनके करीब फर्ज और जरूरी धार्मिक कर्मों से भी ज्यादा महत्व रखती हैं, इसलिए वाजिवात और सुन्नत का छोड़ना तो उन के यहाँ आम है, लेकिन विदवात ऐसी जरूरत है कि उन में किसी तरह की सुस्ती की सोच ही नहीं है, जब कि नबी ﷺ ने उसे सब से ज्यादा युरा काम बताया है।

३३. और उन पर अपने कर्मों (अमल) की बुराईयां खुल गयीं और जिसे वे मज्जाक में उड़ा रहे थे, उस ने उन्हें घेर लिया।

३४. और कह दिया गया कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जैसा कि तुम ने अपने इस दिन के मिलने को भुला दिया था, तुम्हारा ठिकाना नरक है और तुम्हारी मदद करने वाला कोई नहीं।

३५. यह इसलिए है कि तुमने अल्लाह (तआला) की आयतों का मज्जाक उड़ाया था और दुनिया के जीवन ने तुम्हें धोखे में डाल रखा था, तो आज के दिन न तो ये (नरक) से निकाले जायेंगे और न उनसे मजबूरी और बहाना कुबूल किया जायेगा।¹

३६. तो अल्लाह के लिए सब तारीफ है, जो आकाशों और धरती और सारी दुनिया का रब है।

३७. और सारी (तारीफ और) बड़ाई आकाशों और धरती में उसी की है, और वही प्रभावशाली (मालिक) और हिक्मत वाला है।

وَبَدَأَ لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ

بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣٣﴾

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنْسِفُكُمْ كَمَا نَسِفْنَا لِقَاءَ يَوْمِكُمْ

هَذَا أَوْ مَا وَدَّكُمْ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِنْ

نُصِيرِينَ ﴿٣٤﴾

ذُلِكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ ثُمَّ آتَى اللَّهُ هُزُؤًا

وَعَذَابًا لِكُمْ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۗ فَالْيَوْمَ

لَا يُخْرَجُونَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ﴿٣٥﴾

قَوْلُهُ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَرَبِّ الْأَرْضِ

رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٦﴾

وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ

وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٣٧﴾

¹ जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह अपने कुछ बंदों से कहेगा : «क्या मैंने तुझे पत्नी नहीं दी थी, क्या मैंने तुझे इज्जत नहीं दी थी, क्या मैंने छोड़े और बैल इत्यादि (वगैरह) तेरे अधीन (मातहत) में नहीं किये थे ? तू सरदारी भी करता और चुंगी भी लेता रहा।» वह कहेगा «हां यह ठीक है भेरे रब।» अल्लाह तआला उस से सवाल करेगा, «क्या तुझे मुझ से मिलने का यकीन था?» वह कहेगा, «नहीं।» अल्लाह फरमायेगा «فَالْيَوْمَ نَنْسِفُكُمْ كَمَا نَسِفْنَا» (तो आज मैं तुझे नरक में डालकर भूल जाऊंगा जैसे तू मुझे भूला रहा)। (सहीह मुस्लिम, किताबुज्जुहद)

² यानी अल्लाह तआला की निशानियों और हुक्म का मज्जाक और दुनिया के धोखे में लिप्त (मशमूल) रहना, यह दो गुनाह ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हें नरक के अजाब का पात्र (मुस्तहिक) बना दिया। अब उस से निकलने की उम्मीद नहीं और न इस बात की उम्मीद कि किसी मौका पर तुम्हें तौबा और क्षमा-याचना का मौका दे दिया जाये और तुम माफी (क्षमा) मांगकर अल्लाह को मना लो।

सूरतुल अहकाफ-४६

सूर: अहकाफ मक्का में नाजिल हुई और इस में पैतीस आयते और चार रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. हा•मीम•।^१

२. इस किताब का नाजिल करना अल्लाह जबरदस्त हिक्मत वाले की तरफ से है।

३. हम ने आकाशों और धरती और उन दोनों के बीच की सारी चीजों को बेहतरीन तदवीर के साथ ही एक निर्धारित (मुकरर) समय के लिए बनाया है, और काफिर लोग जिस चीज से डराये जाते हैं मुंह मोड़ लेते हैं।

४. (आप) कह दीजिए कि भला देखो तो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाय पुकारते हो, मुझे भी तो दिखाओ कि उन्होंने धरती का कौन-सा हिस्सा बनाया है या आकाशों में कौन-सा उनका हिस्सा है? अगर तुम सच्चे हो तो इस से पहले ही की कोई किताब या कोई ज्ञान (इल्म) ही जो उद्दत (नक़ल) किया जाता हो, मेरे पास लाओ।

५. और उस से बढ़कर ज्यादा गुमराह दूसरा कौन होगा जो अल्लाह के सिवा ऐसों को पुकारता है, जो क़यामत तक उसकी दुआ न कुबल कर सकें बल्कि उन के पुकारने से केवल गाफिल हों।^२

سُورَةُ الْأَحْقَافِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حم

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ②

مَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُتُوا مُعْرِضُونَ ③

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ إِنِّي فِي يَدَيْهِمْ قَبْلِ هَذَا أَوْ أَثَرَةٌ مِنْ عَلِيمٍ ④

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنْ دَعْوَاهُمْ غَفُولُونَ ⑤

^१ यह सूरह के शुरूआती अक्षर (हुरूफ) उन मुतशविहात (अनुरूफों) में से है जिनका ज्ञान (इल्म) सिर्फ अल्लाह को है इसलिए उन के मायने और मतलब में पढ़ने की जरूरत नहीं।

^२ यानी यही सब से बड़े गुमराह है जो पत्थर की मूर्तियों या मुर्दा इंसानों को मदद के लिए पुकारते हैं, जो क़यामत तक जवाब देने में मजबूर हैं और मजदूर ही नहीं बल्कि पूरी तरह से बेखबर हैं।

६. और जब लोगों को जमा किया जायेगा तो ये उनके दुश्मन हो जायेंगे और उनकी इबादत से साफ इंकार कर देंगे ।^६

७. और उन्हें जब हमारी स्पष्ट (वाज़िह) आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो काफ़िर लोग सच बात^७ को जब कि उन के पास आ चुकी, कह देते हैं कि यह तो खुला जादू है ।

८. क्या वे कहते हैं कि उसे तो उस ने खुद बना लिया है । (आप) कह दीजिए कि अगर मैं ही उसे बना लाया हूँ तो तुम मेरे लिए अल्लाह की तरफ से किसी चीज़ का हक़ नहीं रखते । तुम इस क़ुरआन के बारे में जो कुछ कह सुन रहे हो, उसे अल्लाह अच्छी तरह जानता है । मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए वही काफ़ी है और वह माफ़ करने वाला बड़ा रहीम है ।

९. (आप) कह दीजिए कि मैं कोई बिल्कुल नया पैग़म्बर तो नहीं^९ और न मुझे यह मालूम है कि मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या किया जायेगा । मैं तो सिर्फ़ उसी की पैरवी करता हूँ जो मेरी

وَإِذَا حُجِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كُفْرِينَ ⑥

وَإِذَا تَنَسَّلْنَا عَلَيْهِمْ آيَاتِنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَنَا جَاءَهُمْ هَذَا بِإِسْحَاقِ مُمِينٍ ⑦

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ طُفْلٌ إِنْ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئًا طَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفَيْضُونَ فِيهِ طَكُفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ ط وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑧

فَلَنْ مَّا كُنْتُ بِدَعَاؤِ مِنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ط إِنْ أَتَيْتُمْ إِلَّا مَا يُؤْتَىٰ الرَّسُولَ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ⑨

^१ यह विषय पाक क़ुरआन में कई जगहों पर ध्यान है, दुनिया में इन उपास्यों (माबूदों) की दो किस्में हैं, एक तो बेजान पत्थर, पेड़-पौधे और सूरज, चाँद वगैरह हैं । अल्लाह उन को जीवन और बोलने की ताकत अता करेगा और हमें यह वस्तुयें (चीज़ें) बोल कर बतलायेंगी कि हमें कभी भी इस का ज्ञान (इल्म) नहीं कि यह हमारी इबादत करते और तेरी इबादत में साझी बनाते थे । कुछ कहते हैं कि बोल कर नहीं उनकी हालत अपनी भावना (एहसास) जाहिर करेगी والله اعلم । माबूदों की दूसरी किस्म वह है, जिस में अम्बिया, फ़रिश्ते और धर्मात्मा हैं, जैसे हज़रत ईसा और उज़ैर और अल्लाह के दूसरे नैक बंदे । यह अल्लाह के दरबार में उसी तरह जवाब देंगे जैसे ईसा (ﷺ) का जवाब क़ुरआन में लिखा है ।

^२ इस सच से मुराद जो उन के पास आया, पाक क़ुरआन है । इस के मौजिज़े और प्रभावशक्ति (तासीर की ताकत) को देखकर वह इसे जादू कहते, फिर उस से भी हट कर या उस से भी बात न बनती तो कहते कि यह तो मोहम्मद (ﷺ) का अपना गढ़ा हुआ कथन (कौल) है ।

^३ यानी पहला और अनोखा रसूल तो नहीं हूँ बल्कि मुझ से पहले भी कई रसूल आ चुके हैं ।

तरफ़ की जाती है और मैं तो केवल वाज़ेह तौर से सावधान (वाख़बर) कर देने वाला हूँ।

१०. (आप) कह दीजिए कि अगर यह (कुरआन) अल्लाह ही की तरफ़ से हो और तुम ने उसे न माना हो और इस्राईल की औलाद का एक गवाह उस जैसी की गवाही भी दे चुका हो और वह ईमान भी ला चुका हो और तुम ने सरकषी की हो, तो बेशक अल्लाह (तआला) ज़ालिम गुट को राह नहीं दिखाता।

११. और काफ़िरों ने ईमानवालों के बारे में कहा कि अगर यह (धर्म) अच्छा होता तो यह लोग उसकी तरफ़ हम से पहल न कर पाते और चूँकि उन्होंने कुरआन से हिदायत नहीं पाया तो यह कह देंगे कि यह पुराना झूठ है।

१२. और इस से पहले मूसा की किताब रहनुमा और रहमत थी, और यह किताब है तसदीक करने वाली अरबी भाषा (ज़ुवान) में ताकि ज़ालिमों को डराये और परहेज़गारों के लिए खुशख़बरी हो।

१३. बेशक जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उस पर मज़बूत रहे तो उन पर न तो कोई डर होगा और न वे शोकग्रस्त (गमगीन) होंगे।

१४. यह तो जन्मत में जाने वाले लोग हैं जो हमेशा उसी में रहेंगे उन अमलों के बदले जो वे किया करते थे।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِنْ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى وَثِيلِهِ قَامَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ط إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ⑩

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَئِنِ آمَنُوا لَوَ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ط وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَذَا إِنْكَارٌ قَدِيمٌ ⑪

وَمَنْ قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَى إِمَامًا وَرَحْمَةً ط وَهَذَا كِتَابٌ مُصَدِّقٌ لِسَانِ عَرَبِيًّا لِيُنذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ط وَبَشْرَى لِلْمُحْسِنِينَ ⑫

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ⑬

أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا ط جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ⑭

। इस इस्राईली सतान (औलाद) के गवाह से कौन मुराद है? कुछ कहते हैं कि यह सामान्य (आम) है, इस्राईल की औलाद में से जो भी ईमान लाये वह मुराद है, कुछ कहते हैं कि मक्का का कोई इस्राईली निवासी मुराद है, क्योंकि यह सूः मक्का में नाज़िल हुई।

१५. और हम ने इंसान को अपने माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया है, उसकी माता ने उसे दुख झेलकर पेट में रखा और दुख सहन करके उसे जन्म दिया ! उस के गर्भ धारण (हमल) और उस के दूध छूड़ाने की मुद्दत तीस महीने की है^२ यहाँ तक कि जब वह अपनी पूरी व्यस्कता (रुश्द) को और चालीस साल की उम्र को पहुँचा तो कहने लगा हे मेरे रब! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरे उस उपकार (नेमत) का शुक्रिया अदा कर सकूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर उपकार किया है, और यह कि मैं ऐसे नेकी के काम करूँ जिन से तू खुश हो जाये और तू मेरी औलाद भी नेक बना, मैं तेरी तरफ़ ध्यान करता हूँ और मैं मुसलमानों में से हूँ।

१६. यही वे लोग हैं जिन के नेकी के काम हम कुबूल कर लेते हैं और जिन के बुरे कामों को माफ़ कर देते हैं, (ये) स्वर्ग में जाने वाले लोगों में हैं, उस सच्चे वादे के अनुसार जो उन से किया जाता था।

وَوَكَّلْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِصْلَاحَ صِلَتِهِ
أُمًّا كَرِهًا وَوَصَّيْتَهُ كُرْهًا وَحَسْلَةً وَفِضْلَةً
تَلَاثُونَ شَهْرًا طَحَّتْ إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ
أَرْبَعِينَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْعِظِي أَنْ أَشْكُرَ
بِعَمَلِكَ الْبِئْسَ الْأَعْمَى عَلَى وَالِدَيْهِ وَأَنْ
أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضَاهُ وَأَصْبَحَ لِي فِي ذُرِّيَّتِي
إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿١٥﴾

أُولَئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوا
وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ فِي أَصْحَابِ الْجَنَّاتِ وَعَدَّ
الَّذِينَ كَانُوا يُوعَدُونَ ﴿١٦﴾

^१ इस दुख और तकलीफ़ की चर्चा करके माता-पिता के साथ अच्छा सुलूक करने पर ख़ास जोर दिया है, जिस से यह भी मालूम होता है कि माता इस अच्छे सुलूक के हुक्म में पिता से पहले है, क्योंकि नौ महीने तक लगातार गर्भ की तकलीफ़ और फिर पैदाईश का दुख सिर्फ़ माँ ही झेलती है, ऐसे ही दूध पिलाने की पीड़ा भी अकेले माँ ही सहन करती है, बाप इस में हिस्सा नहीं लेता। इसीलिए हदीस में भी माँ के साथ अच्छे सुलूक को फ़र्जिलत दी गई है और बाप का पद (मुक़ाम) उसके बाद बताया गया है। एक सहाबी ने नबी ﷺ से पूछा, भेरे अच्छे सुलूक का सब से ज़्यादा हक़दार कौन है? आप ﷺ ने फ़रमाया: तुम्हारी माँ। उस ने फिर यही पूछा, आप ने यही जवाब दिया। तीसरी बार भी यही जवाब दिया। चौथी बार सवाल करने पर आप ने फ़रमाया: तुम्हारा बाप। (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे व सिला पहला अध्याय)

^२ ३ (फिसाल) का मतलब दूध छूड़ाना है। इस से कुछ सहाबा ने यह साबित किया है कि कम से कम गर्भ की मुद्दत छः महीने है, यानी अगर छः महीने के बाद किसी औरत को बच्चा पैदा हो जाये तो वह बच्चा सही है नाजायज़ नहीं, इसलिए कि कुरआन ने दूध पिलाने की अवधि (मुद्दत) दो साल (चौबीस महीने) बताई है (सूर: लुकमान-१४, सूर: बकर: २३३) इस हिसाब से गर्भ की मुद्दत सिर्फ़ छः महीने ही बाकी रह जाती है।

१७. और जिस ने अपने माता-पिता से कहा कि उफ है तुम दोनों पर (तुम से मैं तंग हो गया) तुम मुझ से यही कहते रहोगे कि (मैं मरने के बाद दोबारा) जिन्दा किया जाऊंगा, मुझ से पहले भी समुदाय गुजर चुके हैं, वह दोनों अल्लाह के दरबार में विनती (फरियाद) करते हैं (और कहते हैं) कि तुझे खराबी हो, तू ईमानदार बन जा, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है, वह जवाब देता है कि ये तो केवल पहले के लोगों के क्रिसे हैं !

१८. (यही) वह लोग हैं जिन पर अल्लाह (के अजाब) का वादा सच हो गया, उन जिन्नों और इंसानों के गिरोहों के साथ जो उन से पहले गुजर चुके हैं, यह निश्चित रूप (यकीनी तौर) से घाटे में थे ।

१९. और हर एक को अपने-अपने अमलों के ऐतबार से मुकाम मिलेंगे ताकि उन्हें उन के अमलों के पूरे बदले दे और वे जुल्म न किये जायेंगे ।

२०. और जिस दिन काफिर नरक के किनारे लाये जायेंगे (कहा जायेगा) कि तुम ने अपनी नेकी दुनिया के जीवन में ही नष्ट कर दिये और उन से फ्रायेदा उठा चुके तो आज तुम्हें अपमान के अजाब का दण्ड दिया जायेगा, इस वजह से कि तुम धरती पर अहंकार (तकब्बुर) करते थे और इस वजह से भी कि तुम हुक्म की पैरवी (पालन) नहीं करते थे ।

وَالَّذِي قَالَ لِوَالِدَيْهِ أَيَّ كَلِمَاتٍ أُتِدَّ بِئِي
أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَّتِ الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي وَأَمَّا
يَسْتَفِيئُنَ اللَّهُ وَبِكَ آمِنُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ
فَيَقُولُ مَا هَذَا إِلَّا سَأطُرُ الْأَوَّلِينَ ﴿١٧﴾

أُولَئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أَمْرٍ
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ
إِنَّهُمْ كَانُوا خَسِرِينَ ﴿١٨﴾

وَلِكُلِّ دَرَجَاتٍ مِمَّا عَمِلُوا وَيُوفِّيهِمْ أَجْرَهُمْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿١٩﴾

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَّذِي
كُنْتُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَعْتَمْتُمْ بِهَا
فَالْيَوْمَ تُجْرُونَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ
تَسْكَبُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِذَا كُنْتُمْ
تُقْسَمُونَ ﴿٢٠﴾

† मा-बाप मुसलमान हों और औलाद काफिर तो वहाँ औलाद और मा-बाप के बीच इसी तरह इस्तिलाफ होता है, जिसकी एक भिसाल आयत में दी गई है ।

२१. और आद के भाई को याद करो जबकि उस ने अपनी क्रौम वालों को अहकाफ में (रेत के टीले पर) डराया' और बेशक उस से पहले भी डराने वाले गुजर चुके हैं और उस के बाद भी कि तुम अल्लाह (तआला) के सिवाय दूसरों की इबादत न करो। बेशक मैं तुम पर बड़े दिन के अजाब से डरता हूँ।^२

२२. समुदाय (क्रौम) ने जवाब दिया कि क्या आप हमारे पास इसलिए आये हैं कि हमें अपने देवताओं (की पूजा) से रोक दें, तो अगर आप सच्चे हैं तो जिन अजाबों का आप वादा करते हैं उन्हें हम पर ला डालें।

२३. (हजरत हूद ने) कहा कि (इसका) इल्म तो अल्लाह ही के पास है, मैं तो जो संदेश देकर भेजा गया था वह तुम्हें पहुँचा रहा हूँ, लेकिन मैं देख रहा हूँ कि तुम लोग मूर्खता (बेवकूफी) कर रहे हो।

२४. फिर जब उन्होंने अजाब को बादल के रूप में देखा अपने मैदानों की तरफ आते हुए तो कहने लगे कि यह बादल हम पर बरसने वाला है, (नहीं) बल्कि हकीकत (वास्तव) में यह बादल वह (प्रकोप) है जिसकी तुम जल्दी मचा रहे थे, हवा है जिस में कष्टदायी यातनायें (अजाब) हैं।

وَأَذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أُنذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ
وَقَدْ خَلَّتْ الْغُدُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ
خَلْفِهِ إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ①

قَالُوا لِمَ جِئْتَنَا بِتِلْكَ الْآيَاتِ يَا قَوْمِ
تُعَذِّبُنَا إِن كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ②

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَإِن لَّيُخْبِرُنَا
أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي أَرِيتُمْ قَوْمًا تَجْهَلُونَ ③

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أُدْيَتِهِمْ ذَكَرُوا هَذَا
عَارِضٌ مُّطِيرٌ تَأْتِيهِمْ هَوَماً اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ رِيحٌ
فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ④

^१ أَحْقَافٍ (अहकाफ) جُنُفٍ (हिक्फ) का बहुवचन (जमा) है यानी रेत का ऊँचा लम्बा टीला, कुछ ने इसका मायने पहाड़ और गुफा किया है! यह ईब्रदूत हूद (هُود) कि जाति, पहले आद के इलाके का नाम है जो हम्मूत (यमन) के करीब था। मक्का के काफिरों के झुटलाने की वजह से नबी ﷺ की तसल्ली के लिए पिछले अम्बिया की घटनाओं की चर्चा की जा रही है।

^२ يَوْمٍ عَظِيمٍ (बड़े दिन) से मुराद क्रयामत का दिन है, जिसे उसकी भयानकता की वजह से उचित (मुनासिब) रूप से बड़ा दिन कहा गया है।

२५. जो अपने रब के हुक्म से हर चीज को ध्वस्त (हलाक) कर देगी, तो वे ऐसे हो गये कि उन के घरों के सिवाय कुछ दिखाई न देता था, पापियों के गिरोह को हम इसी तरह सजा देते हैं।

२६. और निश्चित (यकीनी) रूप से हम ने (आद के समुदाय) को वह ताकत दी थी जो तुम्हें दिया ही नहीं, और हम ने उन्हें कान, आँखें और दिल भी दे रखे थे, लेकिन उन के कानों, आँखों और दिलों ने उन्हें कुछ भी फ़ायेदा नहीं पहुँचाया। जबकि वह अल्लाह (तआला) की आयतों का इंकार करने लगे और जिस बात का वे मज़ाक (उपहास) उड़ाया करते थे, वही उन पर उलट पड़ी।

२७. और बेशक हम ने तुम्हारे करीबी (इलाके की) बस्तियाँ ध्वस्त (हलाक) कर दीं और (कई तरह की) हम ने निशानियाँ बयान कर दी ताकि वे वापस आ जायें।

२८. तो अल्लाह की निकटता (क़ुरबत) हासिल करने के लिए उन्होंने जिन-जिन को देवता बना रखा था उन्होंने उनकी मदद क्यों न की, बल्कि वह तो उन से खोये गये, (बल्कि हकीकत में) यह उन का सिर्फ झूठ और (पूरी तरह) इल्जाम था।

تَدْرُوكُنَّ شَيْءًا يَأْمُرُ رَبُّهَا فَاصْبِرُوا لَا يُخِزِي
إِلَّا مَسْكِينَهُمْ ذَكَرْنَا لَكَ نُجُزِيَ الْقَوْمَ
الْمُجْرِمِينَ ﴿٢٥﴾

وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيمَا إِنْ مَكَّنَّاكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ
سَمْعًا وَ أَبْصَارًا وَ أَفْئِدَةً لِّمَا أَعْنَى عَنْهُمْ
سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدُهُمْ مِنْ شَيْءٍ
إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِمْ
مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٢٦﴾

وَلَقَدْ أَهَلَكْنَا مَا حَوَّلْنَاكُمْ مِنَ الْقُرَىٰ وَصَرَفْنَا
الْآيَاتِ لَعَالَهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٢٧﴾

فَلَوْلَا نَصْرُهُمُ الَّذِينَ آمَنُوا مِن دُونِ اللَّهِ
فَوَيْلًا لِلْهَةِ طَبْلٌ صَلُّوا عَنْهُمْ وَذَلِكَ إِفْئَهُمْ
وَمَا كَانُوا يَفْقَهُونَ ﴿٢٨﴾

1 यह मक्कावासियों को संबोधित (मुख्यतः) करके कहा जा रहा है कि तुम क्या हो? तुम से पहली जातियाँ जिन्हें हम ने ध्वस्त (हलाक) किया, शक्ति, बल और मान-मर्यादा में तुम से कहीं ज्यादा थी, लेकिन जब उन्होंने अल्लाह की दी हुई चीजों (कान, आँख और दिल) को सच सुनने, देखने और समझने के लिए प्रयोग (इस्तेमाल) नहीं किया तो आखिर हम ने उन्हें बरबाद कर दिया और यह चीजें उन के कुछ काम न आ सकीं।

2 समीपवर्ती (करीब) से आद, समूद और लूत की वह बस्तियाँ मुराद हैं जो हिजाज के करीब ही थीं और यमन, शाम और फिलिस्तीन की तरफ आते जाते उन से उनका गुजर होता था।

२९. और याद करो, जबकि हम ने जिनों के एक गिरोह को तुम्हारी तरफ फेर दिया कि वे कुरआन सुनें, तो जब वे नदी के पास पहुँच गये तो (एक-दूसरे) से कहने लगे कि चुप हो जाओ, फिर जब पाठ पूरा हो गया तो अपने समुदाय (क्रौम) को सावधान (आगाह) करने के लिए वापस लौट गये।

३०. कहने लगे, हे हमारे समुदाय (क्रौम) के लोगो! हम ने निश्चित रूप (यकीनी तौर) से वह किताब सुनी है, जो मूसा (عليه السلام) के बाद नाज़िल की गयी है, जो अपने से पहले की किताबों की पुष्टि (तसदीक) करने वाली है, जो सच्चे दीन और सीधे रास्ते की तरफ हिदायत करती है।

३१. हे हमारी क्रौम के लोगो! अल्लाह की तरफ दावत देने वाले का कहा मानो, उस पर ईमान लाओ,^१ तो (अल्लाह) तुम्हारे कुछ पाप माफ कर देगा और तुम्हें दुखद अज़ाब से पनाह देगा।^२

وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُونَ
الْقُرْآنَ ۖ فَلَمَّا حَصَرُوهُ قَالُوا أَنُصَلُّوكَ فَكَلَّمَا
قُضِيَ وَكَلُوا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ مُّتَذَرِّينَ ﴿٢٩﴾

قَالُوا يَا قَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنزِلَ مِن
بَعْدِ مُوسَىٰ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي
إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٣٠﴾

يُؤْمِنًا أَجِيبُوا دَعْوَى اللَّهِ وَأَمَّاؤَ بِهِ يُعْزِلُكُمْ
مِّن دُونِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿٣١﴾

^१ सहीह मुस्लिम की हदीस से मालूम होता है कि यह घटना (वाक़ेआ) मक्का के करीब वादिये नखला में घटी, जहाँ आप ﷺ अपने साथियों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ा रहे थे। जिनों को यह खोज थी कि आकाश पर हम पर बहुत कड़ाई कर दी गई है और अब वहाँ जाना लगभग नामुमकिन हो गया है, कोई खास घटना जरूर हुई है जिस की वजह से ऐसा हुआ है। इसलिए पूरब और पश्चिम की कई दिशाओं में जिनों की टोलियाँ कारण (वजह) की खोज में फैल गई, उन में से एक गिरोह ने यह कुरआन सुना और समझ लिया कि नबी ﷺ के भेजे जाने की घटना ही हम पर आकाश में रोक की वजह है और जिनों का यह गिरोह आप पर ईमान लाया और जाकर अपनी क्रौम को भी खबर किया।

^२ यह जिनों ने अपनी जाति को नबी ﷺ की रिसालत (दूतत्व) पर ईमान लाने की दावत दी, इस से पहले पाक कुरआन के बारे में बतलाया कि यह तौरात के बाद एक और आसमानी किताब है जो सच्चे दीन और हिदायत की तरफ मार्गदर्शन (हिदायत) कराता है।

^३ इस विषय में विद्वानों (आलिमों) के बीच इस्तिस्लाफ है कि अल्लाह तआला ने जिन्नात में जिनों में से रसूल (संदेशवाहक) भेजे या नहीं। प्रत्यक्ष (वाज़ेह) कुरआनी आयतों से यही मालूम होता है कि जिन्नात में कोई रसूल (ईशदूत) नहीं हुआ, सभी अम्बिया और रसूल इंसानों ही में हुए हैं।

३२. और जो इंसान अल्लाह की तरफ बुलाने वाले का कहा न मानेगा तो वह धरती पर कहीं (भागकर अल्लाह को) विवश (मजबूर) नहीं कर सकता, और न अल्लाह के सिवाय उसकी कोई मदद करने वाला होगा, यह लोग खुली गुमराही में हैं।

३३. क्या वह नहीं देखते कि जिस अल्लाह ने आकाशों और धरती को पैदा किया और उन के पैदा करने से वह न थका, वह वेशक मुर्दों को जिन्दा करने की कुदरत रखता है, क्यों न हो? वह वेशक हर चीज पर कुदरत रखता है।

३४. और वे लोग जिन्होंने कुफ्र किया, जिस दिन नरक के सामने लाये जायेंगे (और उन से कहा जायेगा) कि यह सच नहीं है? तो जवाब देंगे कि हाँ, क्यों नहीं। क्रसम है हमारे रब की! (सच है)। (अल्लाह तआला) कहेगा कि अब अपने कुफ्र के बदले अजाब का मजा (स्वाद) चखो।

३५. तो (हे पैगम्बर) तुम ऐसा सत्र (धैर्य) करो जैसा सत्र साहसी (बुलन्द हिम्मत) रसूलों ने किया, और उन के लिए (अजाब माँगने में) जल्दी न करो, यह जिस रोज उस अजाब को देख लेंगे जिसका वादा दिये जाते हैं तो (यह महसूस होने लगेगा कि) दिन की एक घड़ी ही (दुनिया में) ठहरे थे, यह है सदेश (पैगाम) पहुँचा देना, कुकर्मियों (बदकारों) के सिवाय कोई नष्ट (हलाक) न किया जायेगा।

وَمَنْ لَا يُجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَكَ مِنْ دُونِ أَوْلِيَاءَ أَوْلِيَاكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٣٢﴾

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْزُبْ عَنْهُمُ خَلْقُهُمْ إِنَّمَا بَدَأَ خَلْقَ الْبَشَرِ فِي الْأَرْضِ عَلَىٰ أَنْ يُلْقِيَ الْمَوْقِيَ ۗ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٣٣﴾

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ ۗ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۗ قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٣٤﴾

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُو الْعُرْسِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ كَانَهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ ۗ لَمْ يَلْبِسُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ بَلِغٌ ۗ فَهَلْ يُهْلِكُ إِلَّا الْقَوْمَ الْفَاسِقُونَ ﴿٣٥﴾

१ यह सबका के काफिरों के बुरे काम के मुकाबले में नबी ﷺ को तसल्ली दी जा रही है और सत्र करने का उपदेश दिया जा रहा है।

२ क्रयामत का भयानक दुर्य (मंजर) देखने के बाद उन्हें दुनिया का जीवन ऐसे ही लगेगा जैसे दिन की सिर्फ एक घड़ी यहाँ गुजारकर गये हैं।

सूरत मुहम्मद-४७

सूर: मुहम्मद* (ﷺ) मदीने में नाज़िल हुई इस में अड़तालीस आयतें और चार रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. जिन लोगों ने कुफ़ किया और अल्लाह के रास्ते से रोका अल्लाह ने उन के अमल बेकार कर दिये।

२. और जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये और उस पर भी यक़ीन किया जो मुहम्मद (ﷺ) पर नाज़िल की गयी है और हकीकत में उन के रब की तरफ़ से सच (धर्म) भी वही है, अल्लाह ने उनके गुनाह मिटा दिये^२ और उनकी हालत का सुधार कर दिया।

३. यह इसलिए कि काफ़िरों ने असत्य (बातिल) का अनुकरण (इत्तेबा) किया और ईमानवालों ने उस सच (धर्म) की इत्तेबा की, जो उन के रब की तरफ़ से है। अल्लाह (तआला) लोगों को उन के हाल इसी तरह बताता है।

४. तो जब काफ़िरों से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो गर्दनों पर वार करो। यहाँ तक कि जब उन को अच्छी तरह कुचल डालो तो अब ख़ूब मज़बूत बन्दीगृह (जेल) में कैद करो। फिर (इख़्तियार है

سُورَةُ مُحَمَّدٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
أَصْحَابُ أَعْمَالِهِمْ ①

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَكَلِمَاتٍ طَيِّبَاتٍ وَأَمْرًا بَسًّا نُزِّلَ
عَلَيْ مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ لَكُفْرًا عَنْهُمْ
سَيِّئِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالِهِمْ ②

ذَلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَأَنَّ الَّذِينَ
آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَبِّهِمْ كَذَلِكَ يَضْرِبُ
اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ ③

فَلَمَّا فَصَمُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضْرَبَ الرِّقَابَ حَتَّى
إِذَا أَغْمَسْتُهُمْ فُسِدُوا الْوُقُوفَ فَإِنَّمَا مَثَلُ بَعْدُ
وَإِنَّمَا فِتْنَةٌ حَتَّى كَفَّعَ الْحَرْبُ أَوَّارَهَا ذَلِكَ

* इसका दूसरा नाम 'अलकिताल' (जंग करना) भी है।

१ कुछ ने इस से मुराद कुरैश के काफ़िर लिये हैं और कुछ ने अहले किताब (यहूदियों और इसाईयों) को लिया है, लेकिन यह आम है, इन के साथ सभी काफ़िर इस में शामिल हैं।

२ यानी ईमान लाने के पहले की ग़लतियों और सुस्ती को माफ़ कर दिया, जैसाकि नबी ﷺ का भी क़ौल है कि इस्लाम पहले के सभी पापों को मिटा देता है। (सहीह जामे सगीर, अलबानी)

कि) उपकार कर के आजाद कर दो, या कुछ अर्घदण्ड (फिदिया) लेकर जब तक कि जग (करने वाले) अपने हथियार रख दे, यही हुक्म है और अगर अल्लाह चाहता तो खुद ही उन से बदला ले लेता, लेकिन (उसकी इच्छा यह है) कि तुम में से एक की परीक्षा (इम्तेहान) दूसरे से ले ले और जो लोग अल्लाह की राह में शहीद कर दिये जाते हैं अल्लाह उन के अमल कभी बरबाद नहीं करेगा।

५. उनकी हिदायत करेगा और उनकी हालत का सुधार कर देगा।

६. और उन्हें उस जन्नत में ले जायेगा जिस से उन्हें परिचित (पहचान) कर दिया गया है।

७. हे ईमानवालो! अगर तुम अल्लाह (के धर्म) की मदद करोगे तो वह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे कदम मजबूत रखेगा।

८. और जो लोग काफिर हो गये उनका विनाश (तबाही) हो, अल्लाह ने उन के अमल को बरबाद कर दिया।

९. यह इसलिए कि वह अल्लाह की नाज़िल की हुई चीज़ से नाराज़ हुए, तो अल्लाह (तआला) ने भी उन के अमल बरबाद कर दिये।

وَكُوَيْشَاءَ اللَّهِ لَا تَنْصَرُونَ مِنْهُمْ وَلَكِنْ لِيَبْلُوَ
بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ وَالَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فَلَنْ يُضِلَّ أَعْمَالَهُمْ ④

سَيَهْدِيهِمْ وَيُضِلُّهُمُ بِاللَّهِ ⑤

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ⑥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَشُرُوا اللَّهَ يَنْصُرْكُمْ
وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ⑦

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسَا لَهُمْ وَأَسَلَّ أَعْمَالُهُمْ ⑧

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ
أَعْمَالَهُمْ ⑨

1. (मन्न) का मतलब है बिना अर्घदण्ड (फिदिया) लिए एहसान करके आजाद कर देना और (फिदाज) का मतलब है कुछ बदला लेकर आजाद करना। क़ैदियों के बारे में हक़ दिया गया कि हालात को देखते हुए जो बात इस्लाम और मुसलमानों के लिए ज़्यादा बेहतर हो वह अपनाई जाये।

2. अल्लाह की मदद करने का मतलब अल्लाह के दीन की मदद है, क्योंकि वह साधनों (जरियों) के खिलाफ़ अपने धर्म की मदद मोमिन बंदों के द्वारा ही करता है। यह मोमिन बंदे अल्लाह के धर्म की रक्षा और उसका प्रचार-प्रसार (दावत-तबलीग) करते हैं तो अल्लाह उनकी मदद करता है यानी उन्हें काफिरों पर विजय (फतह) और प्रभुत्व (गलवा) देता है।

१०. क्या उन लोगों ने धरती में चल-फिर कर इसका निरीक्षण (मुआईना) नहीं किया कि उन से पहले के लोगों का क्या नतीजा हुआ? अल्लाह ने उन्हें बरबाद कर दिया और कफिरों के लिए इसी तरह की सजा है।¹

११. वह इसलिए कि ईमानवालों का संरक्षक (मुहाफिज) खुद अल्लाह (तआला) है और इसलिए कि कफिरों का कोई संरक्षक नहीं।

१२. जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये, उन्हें अल्लाह (तआला) यकीनी तौर से ऐसे बागों में प्रवेश (दाखिल) देगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं और जो लोग कफिर हुए वह (सांसारिक ही) फायदेवा उठा रहे हैं और जानवर की तरह खा रहे हैं, उनका (मूल) ठिकाना नरक है।

१३. और हम ने कितनी बस्तियों को जो ताकत में तेरी इस बस्ती से ज्यादा थी, जिस से तुझे निकाला। हम ने उन्हें नष्ट (हलाक) कर दिया है, जिनकी मदद करने वाला कोई न उठा।

१४. क्या तो वह इंसान जो अपने रव की ओर से दलील पर हो उस इंसान के बराबर हो सकता है, जिस के लिए उस के बुरे काम अच्छे बना दिये गये हों और वह अपनी इच्छाओं का अनुसरण (पैरवी) करता हो?²

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا ﴿١٠﴾

ذٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ الْكٰفِرِيْنَ
لَا مَوْلَى لَهُمْ ﴿١١﴾

إِنَّ اللَّهَ يَدْخُلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحٰتِ
جَنَّتِمْ شَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
يَتَسَوَّعُوْنَ فِيْهَا كَالَّذِيْنَ كَانُوْا الْأَكْعَامُ وَالنَّارُ
مَثْوٰى لَهُمْ ﴿١٢﴾

وَكَايْنٍ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ
الَّتِيْ أَخْرَجْتِكَ ۚ أَهْلَكَنَّاهُمْ فَلَا تَابَ لَهُمْ ﴿١٣﴾

أَفَسَوْفَ كَانَ عَلَىٰ بَيْتِهِ مِّنْ رَبِّهِ كَمَنْ تُوْنِ لَهُ سُوْدٌ
عَلَيْهِ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿١٤﴾

¹ यह मक्कावासियों को डराया जा रहा है कि तुम कुफ्र से न रुके तो तुम्हें भी ऐसी ही यातना (अजाब) हो सकती है और पिछले कफिर समुदायों (क्रौमों) की तरह तुम्हें भी तबाह किया जा सकता है।

² बुरे अमल से मुराद शिर्क और पाप है। मुराद वही है जो पहले कई जगहों पर गुजर चुका है कि मोमिन, कफिर, मुशरिक, एकेश्वरवादी, नेक लोग और बुरे लोग बराबर नहीं हो सकते, एक के लिये अल्लाह के दरबार में अच्छा बदला और जन्नत के सुख है, जबकि दूसरे के लिए नरक की भयानक सजा है। आगामी आयत में दोनों का नतीजा बताया जा रहा है, पहले उस जन्नत की अच्छाईयाँ और फ़ज़ीलतें हैं जिनका वादा सदाचारियों (परहेजगारों) से है।

१५. उस जन्नत की विशेषता (फ़ज़ीलत) जिस का वादा परहेजगारों से किया गया है, यह है कि उस में (शीतल) जल की नहरें बह रही हैं जो बदबूदार नहीं और दूध की नदियाँ हैं जिनका मजा नहीं बदला^१ और मदिरा की नहरें हैं, जिन में पीने वालों के लिए बहुत मजा है और बहुत साफ़ शहद की नहरें हैं^२ और उनके लिए वहाँ पर हर तरह के भेवे (फल) हैं और उन के रब की तरफ से माफ़ी है, क्या ये उस के बराबर हैं जो हमेशा आग में रहने वाले हैं और जिन्हें गर्म उबलता हुआ पानी पिलाया जायेगा, जो उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

१६. और उन में कुछ (ऐसे भी हैं कि) तेरी ओर कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब तेरे पास से जाते हैं तो इल्म वालों से (सुस्ती और भोदेपन की वजह से) पूछते हैं कि उस ने अभी क्या कहा था?^३ यही लोग हैं जिन के दिलों पर अल्लाह ने मोहर लगा दी है और वे अपनी इच्छाओं का अनुगमन (पैरवी) करते हैं।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وَعَدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِنْ
مَاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِنْ لَبَنٍ لَمْ يَتَغَيَّرَ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِنْ
خَمِيرٍ لَذِيٍّ لِلشَّرْبِ يَنْبَغِي وَأَنْهَارٌ مِنْ عَسَلٍ
غُصْقِيٍّ وَلَهُمْ فِيهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَمَغْفِرَةٌ
مِنْ رَبِّهِمْ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً
حَمِيمًا فَقَطَّعَ أَمْعَاءَهُمْ ﴿٤٧﴾

وَمِنْهُمْ مَنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ حَتَّى إِذَا حُوجُّوا
مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ مَاذَا
قَالَ أَنْعَمْتَ أُولَئِكَ الَّذِينَ طَلَعَ اللَّهُ عَلَى
قُلُوبِهِمْ وَانْجَبُوا أَهْوَاءَهُمْ ﴿٤٧﴾

^१ जिस तरह संसार में वह दूध कभी खराब हो जाता है जो सायों, भैसों और बकरियों वगैरह के धनों से निकलता है, जन्नत का दूध चूँकि इस तरह जीवों के धनों से नहीं निकलेगा बल्कि उसकी नहरें होंगी, इसलिए जैसे वह बहुत मजेदार होगा खराब होने से भी सुरक्षित (महफूज) रहेगा।

^२ यानी शहद में जिन चीजों की मिलावट की उम्मीद होती है जिसे दुनिया में आम तौर से देखा जाता है, जन्नत में ऐसी कोई उम्मीद न होगी, बहुत पाक और साफ़ होगा, क्योंकि यह दुनिया की तरह शहद की मक्खियों से नहीं मिलेगा और उसकी भी नहरें होंगी। इसी वजह से हदीस में आता है कि नबी ﷺ ने फ़रमाया : जब तुम दुआ करो तो «जन्नतुल फ़िरदौस» के लिए दुआ करो, इसलिए कि यह जन्नत का मध्यम (दरमियाना) और सब से ऊँचा दर्जा है और वही से जन्नत की नहरें फूटती हैं और उस के ऊपर रहमान का अर्थ है। (सहीह बुखारी, किताबुल जिहाद, बाबु दर्जातिल मुजाहिदीन फी सवीलिल्लाह)

^३ यह मुनाफ़कीन (दुयवादियों) का बयान है, चूँकि उनका इरादा सही नहीं होता था, इसलिए नबी ﷺ की बातें भी उन्हें समझ में नहीं आती थीं। वह सभा से बाहर आकर सवाल करते कि आप ﷺ ने क्या फ़रमाया?

१७. और जो लोग सन्मार्ग (हिदायत) हासिल कर चुके हैं, अल्लाह (तआला) ने उन्हें समार्ग में और बढ़ा दिया है और उन्हें उन का सदाचार (तक्रवा) अता किया है।

१८. तो क्या यह क्रयामत का इतेजार कर रहे हैं कि वह उन के पास अचानक आ जाये। बेशक उस के लक्षण (निशानियाँ) तो आ चुके हैं, फिर जब उन के पास क्रयामत आ जाये उन्हें नसीहत हासिल करना कहाँ होगा?

१९. तो (हे नबी), आप यकीन कर लें कि अल्लाह के सिवाय कोई (सच्चा) उपास्य (माबूद) नहीं और अपने पापों की माफ़ी मांगा करें और ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों के पक्ष (हक) में भी! अल्लाह (तआला) तुम्हारे आने-जाने और निवास स्थान (रहने की जगह) को अच्छी तरह जानता है।

२०. और जो लोग ईमान लाये वे कहते हैं कि कोई सूर: क्यों नाज़िल नहीं की गई, फिर जब कोई स्पष्ट (वाज़ेह) अर्थ वाली सूर: नाज़िल की जाती है और उस में जिहाद का बयान किया जाता है, तो आप देखते हैं कि जिन के दिलों में रोग है, वे आप की तरफ इस तरह देखते हैं कि जैसे उस इंसान की नज़र होती है जो मौत से वेहोश हो गया हो, बस बहुत बेहतर था उन के लिये।

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى
وَأَتَاهُم مِّنْهُم ۝١٧

فَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً
فَلَمَّا جَاءَ أَشْرَاطُهَا قَالُوا لَوْ كُنَّا إِذَا جَاءَتْهُمْ
ذِكْرُهُمْ ۝١٨

فَاعْلَمُوا أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرُوا لِذَنبِكُمْ
وَالْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مُقْتَلِبَكُمْ وَمَثُوكُمْ ۝١٩

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ
فَإِذَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ فَحُكْمَةٌ وَذِكْرٌ فِيهَا
الْقِتَالُ رَأَيْتَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ
يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ تَطْرَفُ الْمَعْشِيَةِ عَلَيْهِمْ مِنَ
السُّورَةِ فَأُولَئِكَ لَهُمْ ۝٢٠

इस में नबी ﷺ को माफ़ी मांगने का हुक्म दिया गया है अपने लिए भी और ईमान वालों के लिए भी। इस्तिगफार (क्षमा मांगने) का बड़ा महत्व (अहमियत) और प्रधानता (फ़ज़ीलत) है। हदीसों में इस पर बड़ा जोर दिया गया है। एक हदीस (कथन) में नबी ﷺ ने फ़रमाया :

«يَا أَيُّهَا النَّاسُ! تَوُوبُوا إِلَى رَبِّكُمْ فَإِنِّي أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ وَأَتُوبُ إِلَيْهِ فِي الْيَوْمِ أَكْثَرَ مِنْ سِتِّينَ مَرَّةً»

«लोगों, अल्लाह से तौबा और इस्तिगफार (क्षमा-याचना) किया करो, मैं भी अल्लाह से प्रतिदिन (रोज़आना) सत्तर बार से ज्यादा तौबा-इस्तिगफार करता हूँ।» (सहीह बुखारी, बाबु इस्तिगफारिन नबीये फिल यौमि वल लैलति)

२१. आज्ञापालन (इताअत) करना और अच्छी बातें कहना, फिर जब काम निर्धारित (मुकरर) हो जाये, तो अगर वे अल्लाह के साथ सच्चे रहें, तो उन के लिए अच्छाई है।

طَاعَةٌ وَقَوْلٌ مَعْرُوفٌ فَإِذَا عَزَمَ الْأُمُورَ فَلَوَسَّوْا هُوَ اللَّهُ لَكَانَ خَيْرًا لَهُمْ ①

२२. और तुम से यह भी दूर (नामुमकिन) नहीं कि अगर तुम को राज्य मिल जाये तो तुम धरती पर फसाद पैदा कर दो और रिश्ते-नाते तोड़ डालो।

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتَقَطَعُوا أَرْحَامَكُمْ ②

२३. यह वही लोग हैं जिन पर अल्लाह की धिक्कार (लानत) है और (अल्लाह ने) जिनकी सुनने की ताकत और आँखों की रोशनी छीन ली है।

أُولَئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعَمَّى أَبْصَارَهُمْ ③

२४. क्या यह कुरआन में चिन्तन-मनन (गौर-फिक्र) नहीं करते? या उन के दिलों पर उन के ताले लग गये हैं?

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَى قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا ④

२५. जो लोग अपनी पीठ के बल फिर गये इस के बाद कि उन के लिए हिदायत स्पष्ट (वाज़िह) हो चुकी, बेश्क़ शैतान ने उन के लिए (उन के कामों को) शोभनीय (मुजय्यन) कर दिया है और उन्हें ढील दे रखी है।

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدَّوْا عَلَى أَدْبَارِهِمْ فُرْقَانٌ بَيْنَ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى وَالشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ وَأَمَلَى لَهُمْ ⑤

२६. यह इसलिए कि उन्होंने उन लोगों से जिन्होंने अल्लाह की नाज़िल की हुई (वहयी) को बुरा समझा, यह कहा कि हम भी करीब भविष्य (मुस्तक़बिल) में कुछ कामों में तुम्हारा कहा मानेंगे, और अल्लाह उनकी छिपी बातों को अच्छी तरह जानता है।

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَئِن لَّنْزِيلَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ اللَّهُ سَنُطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأُمُورِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ⑥

१ इस से मुराद मुनाफिकीन (द्वयवादी) ही हैं, जिन्होंने जिहाद (धर्मयुद्ध) से भाग कर अपने कुफ्र और धर्म परिवर्तन (बदलाव) को जाहिर कर दिया।

२ ये से तात्पर्य (मुराद) उनका इस्लाम धर्म से फिर जाना है।

२७. तो उनकी कैसी (दुर्गत) होगी, जब फरिश्ते उन की जान निकालते हुए उन के मुँह और कमर पर मारेंगे।¹

२८. यह इस वजह से कि ये उस रास्ते पर चले जिस से (उन्होंने) अल्लाह (तआला) को नाराज कर दिया और उन्होंने उसकी खुशी को बुरा जाना तो अल्लाह ने उन के अमल को अकारत कर दिया।

२९. क्या उन लोगों ने जिन के दिलों में रोग है, यह समझ रखा है कि अल्लाह उन के कपट को जाहिर ही न करेगा।²

३०. और अगर हम चाहते तो उन सबको तुझे दिखा देते तो तु उन के मुँह से ही उनको पहचान लेता, और बेशक तू उन्हें उनकी बात के ढंग से पहचान लेगा, तुम्हारे सारे काम अल्लाह को मालूम हैं।

३१. और बेशक हम तुम्हारी परीक्षा लेंगे ताकि तुम में से जिहाद करने वालों और सब करने वालों को देख लें, और हम तुम्हारी हालतों की भी जांच कर लें।

३२. बेशक जिन लोगों ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से लोगों को रौंका और रसूल की मुखालफत की, इस के बाद कि उन के लिए हिदायत बाजेह हो चुकी, यह कभी भी अल्लाह का कोई नुकसान न करेंगे, जल्द ही उन के अमल वह बरवाद कर देगा।

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ
وَأَدْبَارَهُمْ ۗ (27)

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا مَا سَخَطَ اللَّهُ وَكَرِهُوا
رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۗ (28)

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ أَن
كُنْ يُخْرِجُ اللَّهُ أَضْعَافَهُمْ ۗ (29)

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَهُمْ فَعَرَفْتَهُمْ بِسِيمَاهُمْ
وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
أَعْمَالَكُمْ ۗ (30)

وَأَنبِئُوهُمْ حَتَّى تَعْلَمَ الْمُجْرِمِينَ مِنْكُمْ
وَالضَّالِّينَ لَا وَتَبَيَّنُوا أَحْبَابَكُمُ ۗ (31)

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدَّوْا عَن سَبِيلِ اللَّهِ
وَشَاقُوا الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ
الْهُدَىٰ لَكِن يَصُرُّوْا اللَّهُ شَيْطَاطٌ وَسَيَحْبِطُ
أَعْمَالَهُمْ ۗ (32)

¹ यह काफिरों की उस समय की हालत बयान की गई है जब फरिश्ते (यमदूत) उनकी जान निकालते हैं। जान फरिश्तों से बचने के लिए शरीर में छुपते और इधर-उधर भागते हैं तो फरिश्ते कड़ाई से उसे पकड़ते, खींचते और मारते हैं। यह विषय इस से पहले सूः अन्आम-९३ और सूः अफाल-५० में भी गुजर चुका है।

² جُنُود (अजमान) (जिगन) का बहुवचन (जमा) है। जिसका मतलब द्वेष (हसद), कपट और वैर है। मुनाफिकों के दिलों में इस्लाम और मुसलमानों के विरोध (मुखालफत) में जो ईर्ष्या और हसद था, उस के हवाले से कहा जा रहा है कि क्या यह समझते हैं कि अल्लाह तआला उसे जाहिर करने पर समर्थ (क्रादिर) नहीं है?

३३. हे ईमानवालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल का कहा मानो और अपने अमल को वरबाद न करो !

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا
الرَّسُولَ وَلَا تُبْطِلُوا أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٣﴾

३४. वैचक जिन लोगों ने कुफ्र किया और अल्लाह के रास्ते से (दूसरों को) रोका, फिर कुफ्र की हालत में ही मर गये (यकीन कर लो कि) अल्लाह उन को कभी माफ न करेगा ।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ
مَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ﴿٣٤﴾

३५. तो तुम कमजोर बन कर सुलह की दरखास्त पर न उतर आओ जबकि तुम ही (विजयी और) गालिव रहोगे, और अल्लाह तुम्हारे साथ है । (अपने इल्म के जरिये) नामुमकिन है कि वह तुम्हारे अमल बरबाद कर दे ।

فَلَا تَهْتَفُوا بِرَأْيِكُمْ إِلَى السَّلَامِ وَأَنْتُمْ الْأَعْلَوْنَ
وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَبْزِلَكُمْ أَعْمَالَكُمْ ﴿٣٥﴾

३६. हकीकत में दुनियावी जीवन तो खेलकूद है, और अगर तुम ईमान लाओगे और सयम (तकवा) अपनाओगे तो अल्लाह तुम्हें तुम्हारे आमाल का बदला देगा और वह तुम से तुम्हारे धन नहीं मांगता ।

إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُمْ وَإِنْ تُؤْمِنُوا
وَتَشْكُرُوا إِنَّا نَجْزِيكُمْ أَجْرَكُمْ وَلَا نَسْئَلُكُمْ أَمْوَالَكُمْ ﴿٣٦﴾

३७. अगर वह तुम से तुम्हारा माल मांगे और बल देकर मांगे तो तुम उस से कंजूसी करने लगोगे और वह तुम्हारे खोट को जाहिर कर देगा ।

إِنْ يَسْئَلْكُمْ مَا فِى خُفْيِكُمْ تَبَخَّرُوا وَيُخْرِجْ
أَضْحَانَكُمْ ﴿٣٧﴾

' मुराद यह है कि जब तुम तादाद और ताकत में दुश्मन पर प्रभुत्वशाली (गालिव) और बुलन्द हो तो ऐसी हालत में काफिरों के साथ सुलह और कमजोरी का प्रदर्शन (इजहार) न करो, बल्कि कुफ्र पर ऐसी कड़ी मार लगाओ कि अल्लाह का धर्म ऊँचा हो जाये, गालिव और भारी होते हुए कुफ्र के साथ सुलह का मतलब कुफ्र के असर को बढ़ाने में मदद देना है, यह एक बड़ा गुनाह है ! इसका मतलब यह नहीं कि काफिरों के साथ सुलह करने की इजाजत नहीं है, यह इजाजत निश्चित रूप से है लेकिन हर समय नहीं, सिर्फ उस समय जब मुसलमान तादाद में कम और साधनों में नीचे हों, ऐसी हालत में लड़ाई के मुकामिले सुलह में ज्यादा फायदा है ताकि इस मौक़ा का फायदा हासिल कर के मुसलमान भरपूर तैयारी कर लें, जैसे नबी ﷺ ने मक्का के काफिरों से जंग न करने का दस साल के लिए समझौता किया था ।

३८. खबरदार! तुम वह लोग हो कि अल्लाह के रास्ते में खर्च करने के लिए बुलाये जाते हो तो तुम में से कुछ कंजूसी करने लगते हैं, और जो कंजूसी करता है वह वेशक अपने आप से कंजूसी करता है। अल्लाह (तआला) बेनियाज है और तुम मुहताज हो,^१ और अगर तुम मुंह फेरने वाला हो जाओ तो वह तुम्हारे बदले तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को लायेगा जो फिर तुम जैसे न होंगे।

مَا نُنْكُمُ هَؤُلَاءِ تَدْعُونَ بِتَبْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
فِيكُمْ لَمَن يَبْغُلُ وَمَنْ يَبْغُلْ فَإِنَّمَا يَبْغُلْ عَن
نَفْسِهِ وَإِنَّهُ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ وَأَنَّكُمْ الْفُقَرَاءُ وَإِن تَتَوَكَّلُوا
يَسْتَجِيبْ لَكُمْ تَوَكُّلَكُمْ وَلَا يَكُونُوا
أُمَّةً لَّكُمْ (38)

सूरतुल फत्ह-४८

سُورَةُ الْفَتْحِ

सूर: फत्ह* मदनी सूर: है, इस में उन्तीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

^१ यानी अल्लाह तुम्हें खर्च करने की तरगीब (प्रोत्साहन) इसलिए नहीं देता कि उसे तुम्हारे माल की जरूरत है। नहीं, वह तो गनी है, बेनियाज है, वह तो तुम्हारे ही फायदे के लिए यह हुक्म देता है कि एक तो तुम्हारे अपने मनों की पाकी हो। दूसरे, गरीबों की जरूरत पूरी हो। तीसरे, तुम दुश्मन पर गालिब और उच्च रहो, इसलिए अल्लाह की मदद और दया (रहमत) की जरूरत तुम को है न कि अल्लाह को।

* ६ हिजी में रसूलुल्लाह ﷺ और लगभग एक हजार चार सौ सहाबा उमरे के लिए मक्का गये, लेकिन मक्का के निकट हुदैबिया के मुकाम पर काफिरों ने आप को रोक दिया और उमरा नहीं करने दिया। आप ने हजरत उस्मान رضي الله عنه को अपना नुमाईदा बनाकर मक्का भेजा ताकि वह कुरैश के सरदारों से बात कर के उन्हें मुसलमानों को उमरा करने की इजाजत देने पर तैयार करें, लेकिन हजरत उस्मान رضي الله عنه के मक्का जाने के बाद उनकी शहादत (कत्ल) की अफवाह फैल गई, जिस पर आप ﷺ ने सहाबा से हजरत उस्मान رضي الله عنه का बदला लेने के लिए "वैअत" प्रतिज्ञा करायी जो "वैअते रिज्वान" कहलाती है। हुदैबिया से मदीने की तरफ वापस आते हुए मार्ग में यह सूर: नाजिल हुई, जिस में सुलह को खुली विजय कहा गया, क्योंकि यह सुलह मक्का के विजय का आधार साबित हुई और इस के दो साल बाद ही मुसलमानों ने मक्का में विजेता के रूप में प्रवेश किया। इसी वजह से कुछ सहाबा कहते थे कि तुम मक्का के विजय को विजय मानते हो और हम हुदैबिया के समझौते को विजय गिनते हैं, और नबी ﷺ ने इस सूर: के बारे में फरमाया कि आज की रात मुझे पर वह सूरत नाजिल हुई है जो मुझे दुनिया और उसकी हर चीज से ज्यादा प्यारी है। (सहीह बुखारी, किताबुल मगाजी)

१. बेशक (हे नबी)! हम ने आप को एक खुली फत्ह (विजय) अता की है।

२. ताकि जो कुछ तेरे पाप पहले हुए और जो पीछे हुए सबको अल्लाह (तआला) माफ कर दे और तुझे पर अपनी नेमत पूरी कर दे और तुझे सीधे रास्ते पर चलाये।

३. और आप को एक भरपूर मदद अता करे।

४. वही है जिस ने मुसलमानों के दिल में सुकून (और आत्मविश्वास) डाल दिया, ताकि वे अपने ईमान के साथ ही साथ और भी ईमान में बढ़ जायें, और आकाशों और धरती की (सारी) सेनायें अल्लाह ही की हैं, और अल्लाह (तआला) जानने वाला हिक्मत वाला है।

५. ताकि मुसलमान मर्दों और औरतों को उन स्वर्गों में ले जाये, जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जहाँ वे हमेशा रहेंगे और उन से उन के पाप को मिटा दे और अल्लाह के करीब यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

६. और ताकि उन मुनाफिक मर्दों और मुनाफिक औरतों को और मूर्तिपूजक मर्दों और मूर्तिपूजक औरतों को अज़ाब दे जो अल्लाह (तआला) के बारे में बदगुमानी रखने वाले हैं। (हकीकत में) उन्हीं पर बुराई का फेरा है। अल्लाह उन पर नाराज हुआ और उन्हें धिक्कारा और उन के लिए नरक तैयार किया, और वह लौटने की (बड़ी) बुरी जगह है।

७. और अल्लाह ही के लिए आकाशों और धरती की सेनायें हैं और अल्लाह शक्तिशाली (गालिय) और हिक्मत वाला है।

८. बेशक हम ने तुझे गवाही देने वाला और खुशखबरी सुनाने वाला और बाखबर करने वाला बनाकर भेजा है।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِينًا ①

لِيَغْفِرَ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ
وَيُؤَيِّدَ بِنِعْمَتِهِ عَلَيْكَ وَيُهَيِّدَ لَكَ صِرَاطًا
مُسْتَقِيمًا ②

وَيَنْصُرَكَ اللَّهُ نَصْرًا عَظِيمًا ③

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ
لِيُذْهِبَ أَلْهَابَ الشَّاكِكِينَ وَاللَّهُ مُتَوَكِّلٌ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طُوَّكَانَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ حَكِيمًا ④

لِيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفِّرُ عَنْهُمْ
سَيِّئَاتِهِمْ ط وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ قُورًا
عَظِيمًا ⑤

وَلَعَذَابُ الْمُتَفِيقِينَ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ
الظَّالِمِينَ بِأَلْفِ سَوْءٍ ط عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ط
وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ وَعَسَاءَتْ
مَصِيرًا ⑥

وَاللَّهُ جُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط وَكَانَ اللَّهُ
عَزِيمًا حَكِيمًا ⑦

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ⑧

९. ताकि (हे मुसलमानो!) तुम अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान लाओ और उसकी मदद करो और उसका आदर करो, और अल्लाह की पवित्रता (तस्बीह) को सुबह-शाम बयान करो।

لِتَشْكُرُوا لِلَّهِ رَبِّكُمْ وَتَعْبُدُوهُ وَتُوقِرُوهُ
وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ﴿٩﴾

१०. बेशक जो लोग तुझ से वैअत (अल्लाह और उस के रसूल की इताअत और पैरवी का वादा ताकीद से जाहिर करना) करते हैं वह बेशक अल्लाह ही से वैअत करते हैं।^१ उन के हाथों पर अल्लाह का हाथ है,^२ तो जो इंसान वादा तोड़े वह अपने आप पर ही वादा तोड़ता है^३ और जो इंसान उस वादा को पूरा करे जो उस ने अल्लाह के साथ किया है तो उसे जल्द ही अल्लाह बहुत बड़ा बदला (नेकी) देगा।

إِنَّ الَّذِينَ يَبِيعُونَكَ بِمَا لَا يَمْلِكُونَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا
أَلَّا تَحْكُمَ لَهُمْ قَوْمٌ مِّنْ تَحْتِ قَائِمًا يَكْفُرُونَ
عَلَىٰ نَفْسِهِمْ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ
اللَّهُ فَمِثْلُ بِعِثِهِ أَجْرًا عَظِيمًا ﴿١٠﴾

११. देहातियों में से जो पीछे छोड़ दिये गये वे अब तुझ से कहेंगे कि हम अपने माल और औलाद में लगे रह गये तो आप हमारे लिए माफ़ी की दुआ कीजिए,^४ ये लोग अपने मुँहों से वह कहते हैं जो उन के दिल में नहीं है।^५ आप जवाब दे दीजिए कि तुम्हारे लिए अल्लाह की तरफ से किसी बात का भी हक कौन रखता है अगर वह तुम्हें नुकसान पहुँचाना चाहे, या तुम्हें कोई फायदा पहुँचाना चाहे, बल्कि तुम जो कुछ कर रहे हो

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا
أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْنَا يٰ قَوْمُونَ
بِأَلْسِنَتِهِمْ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ طَمَعٌ مِّنْ
ذِمَّتِكَ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا
أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
خَبِيرًا ﴿١١﴾

^१ यह वैअत हकीकत में अल्लाह ही की है, क्योंकि उसी ने जिहाद (धर्मयुद्ध) का हुक्म दिया है। जैसे दूसरी जगह पर फरमाया कि यह अपनी जानों और मालों का जन्त के बदले अल्लाह से सौदा है। (अत्तौवा-१११) यह इसी तरह है, जैसे (مَنْ طَعِبَ الرَّسُولَ فَقَدْ طَاعَ اللَّهَ) (अन-निसाअ: ८०)

^२ आयत से वही वैअते रिज्वान मुसद है जो नबी ﷺ ने हजरत उस्मान की शहादत (कत्ल) की खबर सुनकर उनका बदला लेने के लिए हुदैबिया में मौजूद १४ या १५ सौ मुसलमानों से ली थी।

^३ نَكَتٌ (वादा तोड़ने) से मुराद यहाँ वैअत तोड़ देना यानी वादा के मुताबिक नज़ाई में हिस्सा न लेना है, यानी जो इंसान ऐसा करेगा तो उसका बवाल उसी पर पड़ेगा।

^४ इससे भदीने के आसपास आवाद जातियाँ गिफार, मुज़ैनह, जुहैनह, अस्लम और दूसरी जातियाँ मुराद हैं।

^५ यानी मुँह पर तो यह है कि हमारे पीछे हमारे घरों और बाल-बच्चों का संरक्षक (वली) कोई नहीं था। इसलिए हमें खुद ही रूकना पड़ा, किन्तु हकीकत में उनका पीछे रहना निफाक (अबसरवाद) और मौत के डर के कारण (सबव) था।

उसे अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है ।

१२. (नहीं) बल्कि तुम ने तो यह समझ रखा था कि पैगम्बर और मुसलमानों का अपने घरों की तरफ लौट आना बिल्कुल नामुमकिन है और यही ह्याल तुम्हारे दिलों में बस गया था; तुम ने बुरा ह्याल कर रखा था। (हकीकत में) तुम लोग हो भी नष्ट (हलाक) होने वाले ।

१३. और जो इंसान अल्लाह पर और उस के रसूल पर ईमान न लाये तो हम ने भी ऐसे काफ़िरो के लिए दहकती (प्रज्वलित) आग तैयार कर रखी है ।

१४. और आकाशों और धरती का राज्य (मुल्क) अल्लाह ही के लिए है, जिसे चाहे माफ़ कर दे और जिसे चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह तआला बड़ा माफ़ करने वाला रहम करने वाला है ।^१

१५. जब तुम (लड़ाई से मिले) परिहार (गनीमत) लेने जाने लगोगे तो तुरन्त ये पीछे छोड़े हुए लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने की आज्ञा दीजिए^२ वे चाहते हैं कि अल्लाह (तआला) के कथन (कौल) को बदल दें^३ (आप) कह दें कि अल्लाह (तआला) पूर्व ही में कह

بَلْ كُنْتُمْ أَنْ كُنْ يَنْقَلِبَ الرُّسُولَ وَالْمُؤْمِنُونَ
إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا وَذَرَيْنَ ذَٰلِكَ فِي قُلُوبِكُمْ
وَظَنَّكُمْ ظَنَّ السُّوءِ ۗ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ۝۱۲

وَمَنْ كَفَرَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَرَسُولِهِ فَمَا يَأْتِ
أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۝۱۳

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ يَغْفِرُ لِمَن يَشَآءُ
وَيُعَذِّبُ مَن يَشَآءُ ۗ وَكَانَ اللهُ
عَفُوًّا رَحِيْمًا ۝۱۴

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انطَلَقْتُمْ إِلَىٰ مَغَابِلِهِمْ
لِيُتَاجَرُوا وَهَآ ذُرُوعُنَا نَنْتَهِجْكُمْ ۗ يُرِيدُونَ
أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَ اللهِ ۗ قُلْ لَنْ نُّبَدِّلَ كَلِمَةَ
قَالَ اللهُ مِنْ قَبْلُ ۗ سَيَقُولُونَ بَلْ
تَصَدُّوْنَ بَلَابًا كَالَّذِي لَا يَأْتِيهِمُ إِلَّا قَلِيلًا ۝۱۵

^१ इस में पिछड़ने वालों के लिए माफ़ी माँगने और अल्लाह की तरफ ध्यान करने का प्रलोभन (तरगीब) है कि अगर वह निफ़ाक़ से तौबा कर लें तो अल्लाह तआला उन्हें माफ़ कर देगा, वह बहुत माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है ।

^२ इस में ख़ैबर के युद्ध (जंग) की चर्चा है, जिसकी विजय की खुशख़बरी अल्लाह ने हुदैबियह में दी थी, और अल्लाह ने यह भी फ़रमाया था कि यहाँ से जितना भी माल मिलेगा वह केवल हुदैबियह में शामिल लोगों का हिस्सा है। जैसाकि हुदैबियह से वापसी के बाद जब आप ने यहूदियों के लगातार वादा तोड़ने की वजह से ख़ैबर पर चढ़ाई की योजना बनाई तो उन पिछड़ों ने भी मात्र युद्ध-धन (माले गनीमत) हासिल करने के लिए साथ जाने का इरादा जाहिर किया, जिसे कुवूल नहीं किया गया। आयत में मगानिम से मुराद ख़ैबर में मिला माल ही है ।

^३ अल्लाह के वादे से मुराद अल्लाह का ख़ैबर से मिले माल (गनीमत) को हुदैबियह वालों के लिए विशेष करने का वादा है। मुनाफ़िक़ीन (अवसरवादी) इस में हिस्सा लेकर अल्लाह के वादे को बदलना चाहते थे ।

चुका है कि तुम कभी हमारा अनुगमन (पैरवी) न करोगे तो वे उसका जवाब देंगे (नहीं-नहीं) वल्कि तुम हम से हसद रखते हो। (हकीकत बात यह है) कि वे लोग बहुत ही कम समझते हैं।

१६. (आप) पीछे छोड़े हुए देहातियों से कह दीजिए कि जल्द ही तुम एक बड़ी नहादुर कौम की तरफ बुलाये जाओगे कि तुम उन से लड़ाई करोगे या वे मुसलमान हो जायेंगे, तो अगर तुम आज्ञापालन (इताअत) करोगे तो अल्लाह (तआला) तुम्हें बहुत अच्छा बदला देगा, और अगर तुम ने मुख फेर लिया जैसाकि तुम इस से पहले मुंह फेर चुके हो, तो वह तुम्हें कष्टदायी यातना (अजाब) देगा।

१७. अन्धे पर कोई पाप नहीं, न लंगड़े पर कोई पाप है और न रोगी पर कोई पाप है।^१ और जो कोई अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म का पालन (पैरवी) करे, उसे अल्लाह ऐसे स्वर्ग में दाखिल करेगा जिस के (पेड़ों के) नीचे से नहरें बह रही हैं, और जो मुंह फेर ले उसे कष्टदायी यातनायें (अजाब) देगा।

१८. वेशक अल्लाह (तआला) ईमानवालों से खुश हो गया जब वे पेड़ के नीचे तुझ से बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे।^२ उन के दिलों में जो कुछ था उसे उस ने मालूम कर लिया और उन पर

قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سِتْرٌ مِّنْ عَوْنِ إِلَى قَوْمِ
أُولَىٰ بِأَيْسٍ شِدْدِي تَفَاتُلُوهُمْ أَوْ تُسَلِّمُوا
فَإِنْ يُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا وَإِنْ
تَوَلَّوْا لَنَا تَوَلَّيْتُمْ مِمَّن قَبْلَ يَعْدِبَكُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ﴿١٦﴾

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَىٰ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ
وَلَا عَلَى الْمَرْعِيِّ حَرَجٌ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ وَمِنْ تَحْتِهَا يَجْرِبُ عَذَابًا
أَلِيمًا ﴿١٧﴾

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَايَعُواكَ
تَحْتَ الشَّجَرَةِ لَعَلَّيْكُمْ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَلْفَزُوا
السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ﴿١٨﴾

^१ अंधेपन और लंगड़ेपन की वजह से चल फिर न सकना, यह दोनों तो जरूरी मजबूरी है, ऐसे मजबूर या उनकी तरह दूसरे लाचारों को जिहाद से अलग कर दिया गया। حرج (हरज) का भावने बुराई है, इन के अलावा जो रोग है वह सामयिक (वक्ती) मजबूरी है, जब तक वह हकीकत में रोगी है जिहाद में हिस्सा लेने से अलग है, रोग दूर होते ही वह जिहाद में दूसरे मुसलमानों के साथ भाग (हिस्सा) लेंगे।

^२ यह उन बैअते रिजवान में शामिल सहाबा के लिए अल्लाह की खुशी और उन के पन्के-सच्चे मोमिन होने का प्रमाण (सुबूत) है, जिन्होंने हुदैयिवह में एक पेड़ के नीचे इस बात पर बैअत (प्रतिज्ञा) की कि वह मक्का के कुरैश से लड़ेंगे और भागेंगे नहीं।

शान्ति (सुकून) उतारा और उन्हें करीब की विजय प्रदान (अता) की।

१९. और बहुत से परिहार (गनीमत) जिन्हें वे हासिल करेंगे, और अल्लाह गालिब हिक्मत वाला है।

२०. अल्लाह तआला ने तुम से बहुत सारी गनीमतों (परिहारों) का वादा किया है जिन्हें तुम प्राप्त (हासिल) करोगे, बस यह तो तुम्हें जल्द ही अता कर दी और लोगों के हाथ तुम से रोक दिये ताकि ईमानवालों के लिए यह एक निश्चानी हो जाये, और ताकि वह तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाये।

२१. और तुम्हें दूसरे (गनीमतें) भी देगा जिन पर अब तक तुम ने क़ाबू नहीं पाया। अल्लाह (तआला) ने उन्हें अपने क़ाबू में रखा है, और अल्लाह (तआला) हर चीज पर क़ादिर है।

२२. और अगर तुम से काफिर लड़ाई करते तो बेचक उल्टे पीठ दिखाकर भागते, फिर न तो कोई कार्यक्षम (बली) पाते, न मदद करने वाला।^१

२३. अल्लाह के उस नियम के अनुसार जो पहले से चला आया है,^२ और तू कभी भी अल्लाह के नियम को बदला हुआ न पाओगे।

وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا وَكَانَ اللَّهُ
عَزِيزًا حَكِيمًا ①

وَعَدَّكُمْ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا فَجَعَلَ
لَكُمْ فِيهَا وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ
وَلْيَكُونُوا آيَةً لِلْمُؤْمِنِينَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا
مُسْتَقِيمًا ②

وَأُخْرَى لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللَّهُ بِهَا
وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ③

وَلَوْ قَاتَلَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا الْأَدْبَارَ ثُمَّ
لَا يَمُودُونَ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا ④

سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ⑤ وَلَنْ
تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ⑥

^१ हुदैबियह में काफिरों के हाथ और खैबर में यहूदियों के हाथ अल्लाह ने रोक दिये, यानी उन के हाँसले पस्त कर दिया और वे मुसलमानों से लड़ न सके।

^२ यह हुदैबियह में संभावित (इमकानी) लड़ाई के बारे में कहा जा रहा है कि अगर यह मक्का के कुरैश सुलह न करते बल्कि लड़ने का रास्ता अपनाते तो यह पीठ फेर कर भाग जाते, कोई उनका सहायक (मददगार) न होता। मतलब यह है कि हम वहाँ तुम्हारी मदद करते और हमारे मुक़ाबिले में किसे ठहरने की ताकत है?

^३ यानी यह अल्लाह की रीति पहले से चली आ रही है कि जब कुफ़्र और ईमान के बीच निर्णायक (फैसलाकुन) लड़ाई का मौक़ा आता है तो अल्लाह ईमानवालों की मदद करके सच को ऊँचा करता है, जैसे इस रीति के अनुसार वदर में तुम्हारी मदद की गई।

२४. वही है जिस ने खास मक्का में काफिरों के हाथों को तुम से और तुम्हारे हाथों को उन से रोक लिया, इस के बाद कि उस ने तुम्हें उन पर विजयी कर दिया था, और तुम जो कुछ कर रहे हो अल्लाह (तआला) उसे देख रहा है।

२५. यही वे लोग हैं जिन्होंने कुफ्र किया और तुम को मस्जिदे हराम से रोका और बलि (कुर्बानी) के लिए रूके हुए जानवरों को उस की जगह तक पहुँचने से (रोका),¹ और अगर ऐसे (बहुत-से) मुसलमान मर्द और (बहुत-सी) मुसलमान औरतें न होती, जिन की तुम को खबर न थी कि तुम उनको रौद दोगे जिस पर उन की वजह से तुम को भी अनजाने में हानि पहुँचती (तो तुम्हें लड़ने की इजाजत दे दी जाती, लेकिन ऐसा नहीं किया गया) ताकि अल्लाह (तआला) अपनी कृपा (रहमत) में जिस को चाहे शामिल कर ले और अगर ये अलग-अलग होते तो उन में जो काफिर थे, हम उन को कष्टदायी दण्ड (अजाब) देते।

२६. जबकि उन काफिरों ने अपने दिलों में हमिय्यत (पक्षपात भावना) को जगह दिया और पक्षपात भी जाहीलियत का, तो अल्लाह (तआला) ने अपने रसूल पर और ईमान वालों पर अपनी तरफ से शान्ति नाज़िल किया और मुसलमानों को संयम (तक्रवा) की बात पर दृढ़ (मजबूत)

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُم بِطَرِيقٍ مَّكَّةَ مِنْ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝٢٤

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْمَدِينِ مَكْرًا أَنْ يَبَدِّلَ حَاجَتَهُمْ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ مُؤْمِنَاتٌ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ كَفُّوهُمْ فَتُؤَسِّبَكُمْ بِهِمْ مَعَذَرَةً يُغَيِّرُ عَلَيْهَا يُدْخِلُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ لَوْ تَرَىٰ أُولَ الْأَعْدَاءِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝٢٥

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا لَوْ كَانُ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝٢٦

¹ مَنْوِي (हदी) उस जानवर को कहा जाता है जिसे हज या उमरा करने वाला अपने साथ मक्का ले जाता है। سَحْل (महिल्ल) से मुराद कुर्बानी की जगह है जहाँ उनको ले जाकर जिब्ह किया जाता है। यह जगह उमरा करने वालों के लिए अज्ञानताकाल (जाहीलियत) में 'मर्वह' पहाड़ी के पास और हाजियों के लिए 'मिना' था। इस्लाम में कुर्बानी की जगह मक्का, मिना और पूरा हरम है। مَنكُوف (माकूफन) हाल है, यानी यह जानवर इस इतैजार में रूके थे कि मक्के में प्रवेश (दाखिल) करें ताकि उन्हें बध (जिब्ह) किया जाये। मुराद यह है कि इन काफिरों ने ही तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका था और जो जानवर तुम्हारे साथ थे उन्हें भी कुर्बानी की जगह तक नहीं पहुँचने दिया।

रखा' और वे इस के लायक और ज्यादा हकदार थे, और अल्लाह (तआला) हर चीज को अच्छी तरह जानता है।

२७. हकीकत में अल्लाह ने अपने रसूल को ख़ाब सच दिखाया कि अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम जरूर पूरे अमन व अमान के साथ मस्जिद हराम में दाखिल होगे, सिर मुंडवाते हुए और सिर के बाल कटवाते हुए (शान्ति के साथ) निर्भीक (बेखौफ) होकर,^१ वह उन बातों को जानता है जिन्हें तुम नहीं जानते, तो उस ने उस से पहले एक करीब की जीत तुम्हें दी।^२

२८. वही है जिस ने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म (दीन) के साथ भेजा ताकि उसे हर धर्म पर गालिब^३ करे और अल्लाह (तआला) काफ़ी है गवाही देने वाला।

لَقَدْ صَدَقَ اللهُ رَسُولَهُ الرُّسُلَ بِالْحَقِّ لَتَدْخُلُنَّ
السُّجْدَ الْعَرَامَ إِنْ شَاءَ اللهُ آمِنِينَ مَحْفُوفِينَ
رُءُوسِكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ فَعَلِمَ مَا لَمْ
تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا
قَرِيبًا ﴿٢٧﴾

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ
الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَكُلِّى بِاللهِ
شَهِيدًا ﴿٢٨﴾

^१ इस से मुराद तौहीद और रिस्सालत का कलिमा «ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह» है। जिसे हुदैबियह के दिन मूचरेकीन (बहुदेववादियों) ने इकार किया। (इबने कसीर) या वह सब्र और शान्ति (सम्मान) है जिसका प्रदर्शन (इजहार) उन्होंने हुदैबियह में किया, या वह प्रतिज्ञा (अहद) का पालन और उस पर मजबूती है, जो संयम (तक्वा) का नतीजा है। (फतहुल कदीर)

^२ हुदैबिया की घटना (वाक़ेआ) से पहले रसूलुल्लाह ﷺ को स्वप्न में मुसलमानों के साथ बैतुल्लाह (अल्लाह के घर कअबा) में जाकर तवाफ़ और उमरा करते दिखाया गया। नबी का सपना प्रकाशन (वहयी) के बराबर होता है, फिर भी इस सपने में यह निश्चित नहीं था कि यह इसी साल होगा, किन्तु नबी ﷺ और मुसलमान इसे बड़ी खुशख़बरी समझते हुए उमरे के लिए तुरन्त तैयार हो गये, इसके लिए लोगों में एलान करा दिया और चल पड़े, आखिर में हुदैबिया में वह समझौता हुआ, जिसका विवरण अभी गुज़रा जबकि अल्लाह के ज्ञान (इल्म) में यह स्वप्न आगामी साल पूरा होना था, जैसाकि आगामी वर्ष मुसलमानों ने बहुत सुकून के साथ यह उमरा किया और अल्लाह ने अपने पैगम्बर के सपने को सच कर दिया।

^३ इस से ख़ैबर और मक्का की फ़त्ह के अलावा सुलह के नतीजे में जो ज्यादातर मुसलमान हुए वह भी मुराद है, क्योंकि वह भी फ़त्ह का एक महान रूप है। हुदैबिया समझौते के मौक़ा पर मुसलमान डेढ़ हजार थे, इस के दो साल बाद जब मुसलमान मक्के में विजेता (फ़ातेह) की हैसियत से दाखिल हुए तो उन की संख्या (तादाद) दस हजार थी।

^४ इस्लाम का यह असर तो दूसरे धर्मों पर सबूतों के बिना पर तो हर समय मान्य है, फिर भी दुनियावी और फ़ौजी आधार पर भी पहले ज़माने में और उस के बाद जब तक मुसलमान अपने धर्म पर काम करते रहे उनका प्रभुत्व (ग़लबा) रहा, और आज भी यह मादी (भौतिक) ग़लबा संभव (मुमकिन) है जबकि मुसलमान, मुसलमान बन जायें।

२९. मोहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उन के साथ हैं काफिरों पर कठोर हैं आपस में रहम दिल हैं, तू उन्हें देखेगा कि रूकूअ और सज्दे कर रहे हैं, अल्लाह (तआला) की कृपा (फ़ज़ल) और खुशी की कामना में है। उनका निशान उन के मुँह पर सज्दों के असर से है, उनका यही गुण (उदाहरण) तौरात में है और उनका उदाहरण (मिसाल) इंजील में है उस खेती के तरह जिसने अपना कोंपल निकाला, फिर उसे मजबूत किया और वह मोटा हो गया, फिर अपने तने पर सीधा खड़ा हो गया और किसानों को खुश करने लगा¹ ताकि उन की बजह से काफिरों को चिढ़ायें, और ईमानवालों और नेक लोगों से अल्लाह ने माफ़ी का और बहुत बड़ी नेकी का वादा किया है।²

सूरतुल हुजुरात-४९

सूर: हुजुरात* मदीने में नाज़िल हुई, इस में अट्ठारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

مُحَمَّدًا رَسُولَ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ أَشِدَّاءُ
عَلَى الْكُفَّارِ رَحَمَاءُ بَيْنَهُمْ وَرَأْفًا سَجَدًا
يَتَّبِعُونَ قَضَاءً مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا رِيبًا لَهُمْ
فِي وُجُوهِهِمْ مِنْ أَمْرِ الشُّجْرَةِ لَكَ مَثَلُهُمْ
فِي التَّورَةِ وَالْحَقُّ فِي الْإِنْجِيلِ مَا كَرَّرَ
أَخْرَجَ شَطْرَهُ فَأَزَدَهُ فَاسْتَفَظَّ فَاسْتَوَى عَلَى
سُوقِهِ يُعْجِبُ الرُّزَّاعَ لِيُغَيِّظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ
وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ
مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا (29)

سُورَةُ الْحَجْرَاتِ

¹ यह सहाबा केराम का दृष्टान्त (मिसाल) बयान किया गया है। शुरु में वह कम थे, फिर ज्यादा और शक्तिशाली हो गये, जैसे खेती शुरु में कमजोर होती है, फिर दिन प्रतिदिन मजबूत होती जाती है यहाँ तक कि दूध (मजबूत) तने पर खड़ी हो जाती है।

² इस पूरी आयत का एक-एक भाग सहाबा केराम की अजमत, फज़ीलत और बड़े पुण्य (अज़्र) को बाज़ेह कर रहा है। इस के बाद भी सहाबा (नबी के साथियों) के ईमान में शक करने वाला मुसलमान होने का दावा करे तो उसे मुसलमान होने के दावे में कैसे सच्चा समझा जा सकता है?

* यह तिबाले मुफ़स्सल (विस्तृत) की पहली सूरह है, हुजुरात से नाज़िआत तक की सूरतें तिबाले मुफ़स्सल कहलाती हैं, कुछ ने सूरह 'काफ़' को पहली सूरह कहा है। (इब्ने कसीर, फ़तहूल क़दीर) इन का फ़ज़्र (ओर) की नमाज़ में पढ़ना मसून और मुस्तहब (उत्तम) है। सूरह अबस से सूरहतुश्शम्स तक औसाते मुफ़स्सल (मध्यम) और सूरह जुहा से अन्नास तक किसारे मुफ़स्सल (छोटी) हैं। जोहर और ईशा में औसात और मगरिव में किसार पढ़नी मुस्तहब (उत्तम) हैं। (ऐसरूतफ़ासीर)

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. हे ईमानवालो! अल्लाह और उस के रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरते रहा करो। वेशक अल्लाह (तआला) सुनने जानने वाला है।

२. हे ईमानवालो! अपनी आवाज को नबी की आवाज से ऊँचा न करो और उन से ऊँची आवाज में बात करो जैसे आपस में एक-दूसरे से करते हो। (कहीं ऐसा न हो) कि तुम्हारे अमल बेकार हो जायें और तुम्हें पता भी न हो।^१

३. हकीकत में जो लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने अपनी आवाज धीमी रखते हैं, यही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने सदाचार (तक्वा) के लिए जाँच लिया है, उन के लिए माफ़ी है और बड़ा पुण्य (अज्र) है।^२

४. वेशक जो लोग आप को कमरों के पीछे से पुकारते हैं उन में से ज्यादातर (पूरी तरह से) बुद्धिहीन (बेअक़ल) हैं।^३

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْصُوا عَنَّا كَيْدَ اللَّهِ
وَرَسُولِهِ وَأَتَقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ
صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ
بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَن تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنتُمْ
لَا تَشْعُرُونَ ②

إِنَّ الَّذِينَ يُحْضِرُونَ أَصْوَابَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ
أَوْ لِيَلِجَ النَّبِيُّ أَمْتَحَنَ اللَّهِ قُلُوبَهُمْ لِلشَّقَاوَةِ
لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ③

إِنَّ الَّذِينَ ينادُونَكَ مِنْ وَرَاءِ الْحُجُرَاتِ
كَأَنَّهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ④

^१ इसका मतलब है कि धर्म के बारे में खुद कोई फैसला न करो, न अपनी समझ और विचार को तरजीह (प्रधानता) दो, बल्कि अल्लाह और रसूल के हुक्म का पालन (पैरवी) करो, अपनी तरफ से धर्म में अधिकता (इजाफा) या बिदआत (नई बातें) बनाना अल्लाह और रसूल से आगे बढ़ने की जुरअत है, जो किसी भी ईमान वाले के लिए लायक नहीं। इसी तरह कोई फतवा कुरआन और हदीस में विचार किये बिना न दिया जाये और देने के बाद अगर जरीअत के नुसूस (कुरआन और हदीस) के खिलाफ होना बाजेह हो जाये तो उस पर अड़े रहना भी इस आयत में दी गई इजाजत के खिलाफ है। मुसलमान का आचरण (अखलाक) तो अल्लाह और रसूल के हुक्म के आगे समर्पण और अनुपालन (पैरवी) के लिए सिर झुका देना है, न कि उन के मुकाबले में अपनी बात या किसी इमाम के विचार (खयाल) पर अड़े रहना।

^२ इस में रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये आदर-सम्मान का बयान है, जिसकी हर मुसलमान से माँग है।

^३ इस में उन लोगों की तारीफ है जो रसूलुल्लाह (ﷺ) की मान-मर्यादा का ध्यान रखते हुए अपनी आवाज धीमी रखते थे।

^४ यह आयत कबीला बन् तमीम के कुछ आराबियों (गंवार लोगों) के बारे में नाज़िल हुई, जिन्होंने एक दिन दोपहर के समय जो रसूलुल्लाह (ﷺ) के आराम का समय था, कमरों से बाहर

५. और अगर ये लोग यहाँ तक सन्न करते कि आप (खुद) उन के पास आ जाते तो यही उन के लिए बेहतर होता, और अल्लाह (तआला) माफ करने वाला रहम करने वाला है।

६. हे ईमानवालो! अगर तुम्हें कोई फ्रासिक खबर दे तो तुम उसकी अच्छी तरह छानबीन कर लिया करो,¹ (ऐसा न हो) कि जानकारी न होने की वजह से किसी समुदाय (कौम) को नुकसान पहुँचा दो, फिर अपने किये पर पछतावो।

७. और जान रखो कि तुम में अल्लाह के रसूल मौजूद हैं, अगर वह बहुत-सी बातों में तुम्हारा कहा करते रहें तो तुम कठिनाई में पड़ जाओ, लेकिन अल्लाह (तआला) ने ईमान को तुम्हारे लिए प्यारा बना दिया है और उसे तुम्हारे दिल में सुशोभित (मुजथ्यन) कर दिया है और कुफ्र को और बुराईयों को और नाफरमानी को तुम्हारी नज़र में नापसन्द बना दिया है, यही लोग रास्ता पाये हुए हैं।

८. अल्लाह के उपकार (फज़ल) और अनुग्रह (नेमत) से,² और अल्लाह जानने वाला और हिक्मत वाला है।

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٥﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا أَنْ تُصِيبُوا قَوْمًا بِمَجْهَالِكُمْ فَتُضَيِّبُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ لِرِيبِينَ ﴿٦﴾

وَاعْلَمُوا أَنَّ فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ لَوْ يُضِيعُكُمْ فِي تَبْيِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبِيبٌ إِلَيْكُمْ الْإِنْسَانَ وَذَرَيْنَةَ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمْ الْكُفْرَ وَالسُّوْقَ وَالْوُضْيَانَ ۗ أُولَٰئِكَ هُمُ الرُّشِيدُونَ ﴿٧﴾

فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٨﴾

खड़े होकर जन-साधारण (आम लोगों) के अंदाज में हे मुहम्मद, हे मुहम्मद की आवाज लगायी, ताकि आप ﷺ बाहर आयें। (मुसनद अहमद ३/४८८-६/३९४) अल्लाह ने फरमाया कि इन में ज्यादातर बुद्धिहीन (बेअक़ल) हैं, इसका मतलब यह हुआ कि नबी ﷺ के प्रताप (जलाल) और आप की मान-मर्यादा की भाँगों का ध्यान न रखना बेवकूफ़ी है।

¹ यह आयत ज्यादातर भाष्यकारों (मुफससिरो) के विचार में हज़रत वलीद बिन उक्बा के बारे में उतरी है, जिन्हें नबी ﷺ ने बनू मुस्तलिक के सदके (धर्मदान) बसूल करने के लिए भेजा था, लेकिन उन्होंने आकर खबर दी कि उन्होंने ज़कात देने से इंकार कर दिया है, जिस पर आप ने उन पर हमला करने का इरादा किया, फिर पता लग गया कि यह बात ग़लत थी और वलीद ﷺ वहाँ गये ही नहीं।

² यह आयत भी सहाबा ﷺ की इज़्जत और उन के ईमान और सुधार और संमार्ग (हिदायत) पर होने का खुला सुबूत है।

९. और अगर मुसलमानों के दो गुट आपस में लड़ पड़ें तो उन में मेल-मिलाप करा दिया करो । फिर अगर उन में से एक-दूसरे पर जुल्म करे तो तुम (सब) उस गुट से जो जुल्म करता है लड़ो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ लौट आये,^२ अगर लौट आये तो इंसान के साथ उन के बीच सुलह करा दो और इंसान करो । बेशक अल्लाह (तआला) इंसान करने वालों से मुहब्बत करता है ।

१०. (याद रखो) सभी मुसलमान भाई-भाई हैं, तो अपने दो भाईयों में मिलाप करा दिया करो, और अल्लाह से डरते रहो, ताकि तुम पर कृपा (रहम) की जाये ।

११. हे ईमानवालो ! मर्द दूसरे मर्दों का मजाक न करें, मुमकिन है कि यह उन से बेहतर हों^३ और न औरतों औरतों का मजाक करें, मुमकिन है कि ये उन से बेहतर हों, और आपस में एक-दूसरे पर आक्षेप (ऐब) न लगाओ और न किसी को बुरी उपाधि (लक़ब) दो । ईमान के बाद फिस्क (बुरा लफ़्ज़) बुरा नाम है,^४ और जो

وَأَنْ تَكْفُرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأْتُمُوكُمُ الْمُشْرِكِينَ وَلَئِنَّكُمْ لَفِي عِندِ اللَّهِ كَافِرُونَ ۝۱۰
وَأَنْ تَكْفُرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأْتُمُوكُمُ الْمُشْرِكِينَ وَلَئِنَّكُمْ لَفِي عِندِ اللَّهِ كَافِرُونَ ۝۱۰

وَأَنْ تَكْفُرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأْتُمُوكُمُ الْمُشْرِكِينَ وَلَئِنَّكُمْ لَفِي عِندِ اللَّهِ كَافِرُونَ ۝۱۰

يَذَلُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْعُرُ قَوْمًا مِنْ قَوْمٍ
عَلَىٰ أَنْ يَكُونُوا حَزْبًا مِّنْهُمْ وَلَا يَسَاءُ مِنْ
رِّسَاءٍ عَلَىٰ أَنْ يَكُونَ حَزْبًا مِّنْهُمْ وَلَا تَلْمِزُوا
الْأَنفُسَ وَلَا تَتَّبِعُوا بِالْأَلْقَابِ ۝۱۱
الْإِسْمِ الْفُسُوقِ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۝۱۱ وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝۱۱

^१ इस संधि (सुलह) का ढंग यह है कि उन्हें कुरआन और हदीस की तरफ बुलाया जाये यानी उन की रौबनी में उन के मतभेद (इख़िलाफ) का हल किया जाये ।

^२ यानी अल्लाह और रसूल के हुक्म के मुताबिक अपना इख़िलाफ दूर करने को तैयार न हो और फसाद की नीति अपनाये तो दूसरे मुसलमानों की जिम्मेदारी है कि सब मिलकर फसादियों से लड़ाई करें यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म को मानने के लिए तैयार हो जाये ।

^३ एक इंसान दूसरे किसी इंसान का मजाक उस समय करता है जब वह अपने को उससे बेहतर और उसे हीन और गिरा समझता है, हालांकि अल्लाह के सामने कौन कर्म और ईमान में बेहतर है और कौन नहीं, इस को सिर्फ अल्लाह ही जानता है, इसलिए खुद को अच्छा और दूसरों को गिरा समझने का कोई औचित्य (तुक) ही नहीं है, इस वजह से आयत में उससे रोका गया है ।

^४ यानी इस तरह नाम बिगाड़ कर, या बुरे नाम रखकर बुलाना, या इस्लाम लाने और तौबा कर लेने के बाद उसे पहले धर्म या पाप से मंसूब करके संजोधित (मुखातिब) करना, जैसे हे काफिर, हे व्याभिचारी (जानी), हे शराबी आदि, बुरा काम है । हाँ, कुछ वह नाम जो खास गुण (सिफ़त) के कारण हों, कुछ के करीब इस से अलग हैं जो किसी के लिए मशहूर हो जायें और वह इस पर अपने मन में दुखी न हों, जैसे लंगड़ा होने के कारण किसी का नाम लंगड़ा पड़ जाये, काला रंग होने के कारण कालिया या कालू मशहूर हो जाये आदि। (कुतबी)

माफी न मागे वही ज़ालिम लोग है।

१२. हे ईमानवालो! बहुत बदगुमानियों से बचो; यकीन करो कि कुछ बुरे गुमान पाप हैं,^१ और भेद (राज) न टटोला करो^२ और न तुम में से कोई किसी की बुराई (पीठ पीछे चुगली) करे।^३ क्या तुम में से कोई भी अपने मरे भाई का गोश्त खाना अच्छा समझता है? तुम को उस से घृणा (नफरत) होगी^४ और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह (तआला) माफी कुबूल करने वाला कृपालु (रहीम) है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَ بَعْضُكُم بَعْضًا أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ﴿١٢﴾

- ^१ ظُنُّ (ज़न्न) का मतलब है गुमान करना। मतलब है कि परहेज़गारों और नेक लोगों के बारे में ऐसे गुमान रखना जो बेअसल हों और इल्जाम और तुहमत के अंतर्गत (दायरे) आते हों, इसीलिए इसका अनुवाद बुरा गुमान किया जाता है और इसे हदीस में «أَكْتَبَ الْخَبْرِيَّةِ» (सब से बड़ा झूठ) कहकर इस से बचने पर बल दिया गया है।
- ^२ यानी (अर्थात) इस खोज में रहना कि कोई बुराई मिल जाय ताकि उसे बदनाम किया जाये, यह तजस्सुस है जिस से रोका गया है। हदीस में भी इस से रोका गया है, बल्कि कहा गया है कि अगर किसी की बुराई या गलती तुम्हारे इल्म (ज्ञान) में आ जाये तो उसे छिपाओ, न कि लोगों से चर्चा करते फिरो। आज के ज़माने में आजादी और स्वाधीनता की बहुत चर्चा है इस्लाम ने भी टटोलने से रोक कर इंसान की आजादी और स्वाधीनता को कुबूल किया है, लेकिन उस समय तक जब तक कि वह आम तौर से बेशर्मी का काम न करे या जब तक दूसरों के लिए दुख का कारण न बने। पश्चिम ने खुली स्वाधीनता की शिक्षा (नसीहत) देकर लोगों को साधारण (आम) बिगाड़ की इजाज़त दे दी है जिस से सामाजिक शान्ति का विनाश (बरबाद) हो गया है।
- ^३ غِيْب (गीबत) का मतलब है दूसरे लोगों के सामने किसी की बुराईयों और दोषों की चर्चा की जाये, जिसे वह बुरा समझे, अगर उस से ऐसी बातें जोड़ी जायें जो उस में हों ही नहीं तो वह आरोप (तुहमत) है, अपनी-अपनी जगह दोनों ही बहुत बड़ा गुनाह हैं।
- ^४ यानी किसी मुसलमान भाई की किसी के सामने बुराई करना ऐसे ही है जैसे मुर्दार भाई का गोश्त खाना। मुर्दा भाई का गोश्त खाना तो कोई पसन्द नहीं करता लेकिन गीबत लोगों का बहुत पसंदीदा खाना है।

१३. हे लोगो ! हम ने तुम्हें एक (ही) मर्द और औरत से पैदा किया है^१ और इसलिए कि तुम आपस में एक-दूसरे को पहचानो, जातियाँ और प्रजातियाँ बना दी हैं, अल्लाह की नज़र में तुम सब में वह इज़्जत वाला है जो सब से ज़्यादा डरने वाला है^२ यकीन करो कि अल्लाह जानने वाला अच्छी तरह जानता है ।

१४. ग्रामीण लोग कहते हैं कि हम ईमान लाये। (आप) कह दीजिए कि तुम ईमान नहीं लाये लेकिन तुम यों कहो कि हम इस्लाम लाये (विरोध छोड़कर फ़रमाबरदार हो गये) हालाँकि अभी तक ईमान तुम्हारे दिल में दाखिल ही नहीं हुआ,^३ तुम अगर अल्लाह और उस के रसूल के हुक्म का पालन (पैरवी) करने लगोगे तो अल्लाह तुम्हारे अमलों में से कुछ भी कम न करेगा । बेशक अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला दयालु (रहीम) है ।

१५. ईमानवाले तो वे हैं जो अल्लाह पर और उस के रसूल पर (मज़बूत) ईमान लायें, फिर शंका-सदेह न करें और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में धर्मयुद्ध (जिहाद) करते रहें । (अपने ईमान के दावे में) यही सच्चे हैं !

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ وَأُنْثَى
وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ لِتَعَارَفُوا
إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاهُ إِنَّ اللَّهَ
عَلِيمٌ خَبِيرٌ ﴿١٣﴾

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُلْ لَمْ تُؤْمِنُوا وَلَكِنْ
قُولُوا أَسْلَمْنَا وَكُنَّا مِنْكُمْ فِي الْإِيمَانِ فِي
قُلُوبِكُمْ وَإِنْ تُطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَا يَلِفْكُمْ
مِنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ ذَكِيمٌ ﴿١٤﴾

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ﴿١٥﴾

^१ यानी आदम और हव्वा (अलैहिमुसलाम) से । यानी तुम सब का मूल एक ही है, एक ही माँ-बाप की औलाद हो । मतलब यह है कि किसी के मात्र जाति और वंश के बिना पर कोई गर्व करने का हकदार नहीं, क्योंकि हर एक के नसब का सिलसिला हज़रत आदम ही से मिलता है ।

^२ यानी अल्लाह के सामने प्रधानता (फ़ज़ीलत) का माप परिवार, जाति और वंशक्रम नहीं, जो किसी इंसान के अधिकार (इस्तिथार) ही में नहीं है बल्कि यह माप तक़वा (सयम) है, जिसे अपनाना इन्सान के इरादे और वंश में है । यही आयत उन आलिमों की दलील है जो विवाह में जाति और वंश की बराबरी को ज़रूरी नहीं समझते और सिर्फ़ धर्म (दीन) के आधार पर विवाह को पसंद करते हैं । (इब्ने कसीर)

^३ कुछ भाष्यकारों (मुफ़िस्सरो) के ख़्याल से इन अعرाब (आराब) से मुराद बनू असद और ख़ुज़ैमा के अवसरवादी (मुनाफ़िक) हैं, जिन्होंने अकाल में सदाकों (दानों) को पाने के लिए या क़त्ल और कैदी होने के डर से मुंह से इस्लाम कुबूल किया था । उन के दिल ईमान, सच्चे यकीन और साफ़ मन से ख़ाली थे । (फ़तहल क़दीर)

१६. कह दीजिए कि क्या तुम अल्लाह को अपनी दीनदारी से परिचित (आगाह) करा रहे हो? अल्लाह हर उस चीज को जो आकाशों में और धरती में है अच्छी तरह जानता है, और अल्लाह हर चीज का जानने वाला है।

१७. वे अपने मुसलमान होने का आप पर एहसान जताते हैं, (आप) कह दीजिए कि अपने मुसलमान होने का एहसान मुझ पर न रखो, बल्कि अल्लाह का तुम पर एहसान है कि उस ने तुम्हें ईमान की तरफ हिदायत की अगर तुम सच्चे हो।

१८. यकीन करो कि आकाशों और धरती की छिपी हुई बातें अल्लाह अच्छी तरह जानता है, और जो कुछ तुम कर रहे हो उसे अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

सूरतु काफ-५०

सुर: काफ* मक्का में नाजिल हुई और इस में पैंतालीस आयतें और तीन रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. काफ! बहुत बड़ी शान (गरिमा) वाले इस कुरआन की कसम है।

२. बल्कि उन्हें ताज्जुब हुआ कि उन के पास उन्हीं में से एक डराने वाला आया तो काफिरों ने कहा कि यह एक अजीब चीज है।

قُلْ أَنْعَلِمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١٦﴾

يَمُنُونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُلْ لَا تَمُنُوا عَلَيَّ إِلَّا بِمَا مَلَئَتْهُ بِلِ اللَّهِ يُؤْمِنُ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٧﴾

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

سُورَةُ الْكَافِرَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قَسَمَ الْقُرْآنَ الْمَجِيدُ ﴿١﴾

بَلْ عَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُونَ هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ﴿٢﴾

* नबी ﷺ ईद की नमाज में सूरह काफ और इकतरबतिसाअ: पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, बाबु मा युकरअ बिहि फी सल्लातिल ईदैन) हर जुमे के खुतबे (भाषण) में भी पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमअ: बाबु तखफीफित्सलाते वल खुत्बा) इमाम इब्ने कसीर फरमाते हैं कि दोनों ईदों और जुमे में पढ़ने का मतलब यह है कि बड़े जनसमूहों में आप यह सूरह पढ़ा करते थे, क्योंकि इस में मखलूक की इक्तेदा, दोबारा जिन्दगी, परलोक (आखिरत), हिसाब, स्वर्ग-नरक, नेकी-अजाब, प्रोत्साहन (तरगीब) और तबीह का बयान है।

३. क्या जब हम मर कर मिट्टी हो जायेंगे। फिर यह वापसी दूर की बात है।

४. धरती जो कुछ उन में से घटाती है वह हमें मालूम है और हमारे पास सब याद रखने वाली किताब है।

५. बल्कि उन्होंने सच बात को झूठ कहा, जबकि वह उन के पास पहुँच चुकी तो वे एक उलझन में पड़ गये हैं।^१

६. क्या उन्होंने आकाश को अपने ऊपर नहीं देखा कि हम ने उसे किस तरह बनाया है और उसे शोभा (जीनत) दी है? उस में कोई दरार नहीं।

७. और धरती को हम ने बिछा दिया है और उस पर हम ने पहाड़ डाल दिये हैं और उस में हम ने तरह-तरह की सुन्दर चीजें उगा दी हैं।^२

८. ताकि हर (अल्लाह की तरफ) लौटने वाले वंदे के लिए देखने और समझने का जरिया हो।

९. और हम ने आकाश से शुभ (मुबारक) पानी बरसाया और उस से वाग और कटने वाले खेत के अन्न पैदा किये।^३

عَادًا مِمَّنَّا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذَٰلِكَ رَجْعُ الْبَعِيثِ ۝٣

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِيظٌ ۝٤

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَّرِيحٍ ۝٥

أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ ۝٦

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَفْجَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ مَهِيجٍ ۝٧

تَبْصِرَةً وَذِكْرَىٰ لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ۝٨

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبَارَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ جَبْتًا وَحَبَّ الْحَبِيدِ ۝٩

^१ हक (सच बात) से मतलब पाक कुरआन, इस्लाम या मोहम्मद ﷺ की नबूवत (दूतत्व) है। मायने सबका एक ही है। مَرِيح (मरीज) का मतलब उलझाव, असमजस्य (कश्मकश्) या शक है, यानी ऐसा विषय जो उन पर उलझ गया है, जिस से वे उलझाव में हैं कभी उसे जादूगर कहते हैं, कभी कवि (शायर) और कभी भविष्यवत्ता (नजूमी)।

^२ कुछ ने رَوْح (जौज) का मतलब जोड़ा लिया है, यानी सभी तरह की वनस्पतियाँ और चीजें जोड़ा-जोड़ा (नर-मादा) बनाया है। مَهِيج (बहीज) का मायने अच्छा मंजर, हरी-भरी और खूबसूरत।

^३ कटने वाले अन्न से मुराद वह खेतियाँ हैं जिन से गेहूँ, मकई, ज्वार, बाजरा, दालें और चावल आदि (बगैरह) उगाते हैं और फिर उनका भंडार कर लिया जाता है।

१०. और खजूरों के ऊँचे-ऊँचे पेड़ जिन के गुच्छे तह पर तह हैं ।

وَالنَّخْلُ يُسْقَتُ لَهَا طَافٌ نَّضِيدٌ ⑩

११. बंदों की जीविका (रोजी) के लिए, और हम ने पानी से मृत नगर को जिन्दा कर दिया । इसी तरह (कब्रों से) निकलना है ।

وَرِزْقًا لِّلْعِبَادِ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلَدًا كَآثِمِينَ
كَذَٰلِكَ الْخُرُوجُ ⑪

१२. उन से पहले नूह के समुदाय (क्रौम) ने और 'रस्स' वालों ने^१ और समूदियों ने झुठलाया था ।

كَذَٰبَتْ قَبْلَهُم مَّوَدُّعٌ وَأَصْحَابُ الرَّيْسِ
وَسُؤْدٌ ⑫

१३. और आद ने और फिरऔन ने और लूत के भाईयों ने ।

وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطَ ⑬

१४. और ऐका वालों^२ ने और तुब्बअ के समुदाय (क्रौम) ने^३ भी झुठलाया था । सब ने पैगम्बरों को झुठलाया तो मेरी सजा का वादा उन पर सच हो गया ।

وَأَصْحَابُ الْإِinkَةِ وَهُمْ يُبِيعُونَ كُفْرًا كَذَّبَ الرُّسُلَ
فَآخِذُوا بِعِينِهِ ⑭

१५. क्या हम पहली बार पैदा करने से थक गये? बल्कि ये लोग नये जीवन की तरफ से शक में हैं ।

أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ مِنْ
خَلْقِ جَدِيدٍ ⑮

१६. हम ने इंसान को पैदा किया है और उस के दिल में जो विचार पैदा होते हैं हम उन्हें जानते हैं,^४ और हम उस के प्राणनाड़ी (शहरग) से भी

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسُّوْسُ بِهِ
نَفْسُهُ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيدِ ⑯

^१ रस्स के रहने वालों के निर्धारण के बारे में भाष्यकारों (मुफिस्सरो) में बड़ा इत्तेलाफ है । इमाम इब्ने जरीर तवरी ने इस कथन को अधिमान (तरजीह) दिया है जिस में उन्हें अरहावे उखदूद (खाईयो वाले) कहा गया है, जिन की चर्चा सूरह वुरूज में है । (तफसील के लिये देखिए तफसीर इब्ने कसीर और फतहुल कदीर, सूर: अल-फुरकान-३८) ।

^२ तुब्बअ जाति के लिए देखिये सूरतुशुअरा आयत १७६ का हाशिया ।

^३ तुब्बअ जाति के लिए देखिये सूर: अदुखान आयत ३७ का हाशिया (तटलेख) ।

^४ यानी इंसान जो कुछ छिपा रखता और मन में छिपा रखता है वह सब हम जानते हैं । बखसा दिल में आने वाले विचारों को कहा जाता है जिसका इल्म उस इंसान के सिवा किसी को नहीं होता, लेकिन अल्लाह इन विचारों को भी जानता है । इसीलिए हदीस कुदसी में आता है : «मेरे अनुगामियों (पैरोकारों) के दिल में आने वाले विचारों को अल्लाह ने माफ कर दिया है, यानी उन पर पकड़ नहीं करेगा जब तक उसे मुंह से जाहिर न करे या उसके अनुसार अमल न

ज्यादा उस के करीब है।

१७. जिस समय दो लेने वाले जो लेते हैं, एक दायीं तरफ और दूसरा बायीं तरफ बैठा हुआ है।

१८. (इंसान) मुँह से कोई शब्द (लफ्ज) निकाल नहीं पाता लेकिन उस के करीब रक्षक (पहरेदार) तैयार है।

१९. और मौत की बेहोशी सत्य (हक) लेकर आ पहुँची, यही है जिस से तू कतराता फिरता था।

२०. और नरसिंघा (सूर) फूंक दिया जायेगा, यातना (अजाब) के वादे का दिन यही है।

२१. और हर इंसान इस तरह आयेगा कि उस के साथ एक हाँक लाने वाला होगा और एक गवाही देने वाला।

२२. बेशक तू इस से असाबधान (गाफिल) था, लेकिन हम ने तेरे सामने से पर्दा हटा दिया तो आज तेरी नजर बहुत तेज है।

२३. उस के साथ रहने वाले (फरिश्ते) कहेंगे यह हाज़िर है जो कि मेरे पास था।^१

२४. दोनों डाल दो नरक में हर काफिर उदण्ड (सरकश) को।

२५. जो नेक काम से रोकने वाला, सीमा (हद)

إِذْ يَتَلَقَى السَّالِقِينَ عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ
قَوِيْدًا ①٧

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ عَتِيدٌ ①٨

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ذُنُوبَكَ مَا كُنْتَ
مِنْهُ تَعِيْدًا ①٩

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ذُنُوبَكَ يَوْمَ الْوَعِيْدِ ②٠

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَعَهَا سَائِقٌ وَشَهِِيْدٌ ②١

لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا فَكُفِّنَّا عَنْكَ
غَيْظَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ②٢

وَقَالَ قَرِينُهُ هَذَا مَا لَدَىٰ عَتِيْدٍ ②٣

الْوَيْلَىٰ فِي جَهَنَّمَ كُلٌّ كَلِْمٌ عَتِيْدٌ ②٤

فَتَنَادَى لِّلْغَيْرِ مُعْتَبٍ مُّرْتَبٍ ②٥

करे। (अल-बुखारी, किताबुल ईमान, बाबु इजा हनस नासियन फिल ऐमान, मुस्लिम वायु तजावुमिल्लाह अन हदीसिन नपसे वल ख्वातिरे बिल कल्बे इजा लम तस्तकिर)

^१ इसका दूसरा मायने 'मौत की कठिनाई सत्य (हक) के साथ आयेगी' है यानी मौत के समय सब जाहिर और उन वादों की सच्चाई स्पष्ट (वाज्हेह) हो जाती है जो क्रयामत (प्रलय) और स्वर्ग और नरक के बारे में अम्बिया अलैहिमुस्सलाम करते रहे हैं।

^२ यानी फरिश्ता इंसान का पूरा रिकार्ड सामने रख देगा कि यह तेरा कर्मपत्र (आमालनामा) है जो कि मेरे पास था।

तोड़ने वाला और शक करने वाला था ।

२६. जिस ने अल्लाह के साथ दूसरा माबूद (देवता) बना लिया था, तो उसे कठोर अजाब में डाल दो ।

२७. उसका साथी (शैतान) कहेगा कि हे हमारे रब! मैंने इसे रास्ते से भटकाया नहीं था, बल्कि यह खुद ही दूर के भटकावे में था ।

२८. (अल्लाह तआला) कहेगा कि बस मेरे सामने झगड़े की बात न करो, मैं तो पहले ही तुम्हारी तरफ अजाब का वादा भेज चुका था ।

२९. मेरे पास बात बदलती नहीं और न मैं अपने भक्तों (बन्दों) पर तनिक भी झुलम करने वाला हूँ ।

३०. जिस दिन हम नरक से पूछेंगे कि क्या तू भर चुकी? वह जवाब देगी कि क्या कुछ और ज़्यादा भी है?

३१. और जन्नत सदाचारियों (परहेजगारों) के लिए बिल्कुल करीब कर दी जायेगी, तनिक भी दूर न होगी ।

३२. यह है जिसका वादा तुम से किया जाता था हर उस इंसान के लिए जो ध्यानमग्न और पाबन्दी करने वाला हो ।

३३. जो दयालु (रहमान) का छिपे तौर से डर रखता हो और आकर्षित (मुतबज्जिह) होने वाला दिल लाया हो ।

३४. तुम इस जन्नत में ज्ञान्ति (सलामती) के साथ दाखिल हो जाओ, यह हमेशा रहने का दिन

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيهِ فِي
الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ﴿٢٦﴾

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْعَمْتُهُ وَلَكِنْ كَانِ فِي
ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿٢٧﴾

قَالَ لَا تَخْصِمْنَا الْكَذَّابَ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُمْ
بِالْوَعْدِ ﴿٢٨﴾

مَا يَبْدَأُ الْقَوْلَ لَدَيَّ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ
لِّلْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأَتْ وَنَقُولُ هَلْ
مِن مَّزِيدٍ ﴿٣٠﴾

وَأَذَلَّتِ الْجَنَّةَ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ﴿٣١﴾

هَذَا مَا وَعَدُونَا لَكِنَّا أَكْرَهًا ﴿٣٢﴾

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ الْغَيْبَ وَجَاءَ بِقَلْبٍ
مُؤْمِنٍ ﴿٣٣﴾

إِذْ خُلِّيَتْهَا سَلَامٌ ذَلِكَ يَوْمُ الْعَاوِيَةِ ﴿٣٤﴾

1 यानी जब ईमान वाले जन्नत और उसकी सुख-सुविधाओं (ऐशों आराम) को करीब से देखेंगे तो कहा जायेगा कि यही वह स्वर्ग है जिसका वादा हर अल्लाह में ध्यानमग्न और उसकी आज्ञापालन (इताअत) करने वाले से किया गया था ।

है।

३५. ये वहाँ जो कुछ चाहें उन्हें मिलेगा (बल्कि) हमारे पास और भी ज्यादा है।

३६. और उन से पहले भी हम बहुत से समुदायों को बरबाद कर चुके हैं, जो उन से ताकत में बहुत ज्यादा थे, वे नगरों में फिरते ही रह गये कि कोई भागने का ठिकाना है?

३७. इस में हर उस इंसान के लिये नसीहत है जिस के दिल हो या कान धरे और वह हाज़िर हो।

३८. बेशक हम ने आकाशों और धरती और दोनों के बीच की जो कुछ चीज़ें हैं, सब को (सिर्फ) छः दिन में पैदा कर दिया और हमें थकान ने स्पर्श (छुआ) तक नहीं किया।

३९. इसलिए आप उन बातों पर सब करें और अपने रब का पवित्रतागान (तस्बीह) तारीफ के साथ सूरज निकलने से पहले भी और डूबने से पहले भी करें।

४०. और रात के किसी समय भी महिमागान (तस्बीह) करें और नमाज़ के बाद भी।^१

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٥﴾

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَّجْذُوبٍ ﴿٣٦﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَنَذِيرٍ لِّمَن كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٣٧﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُغُوبٍ ﴿٣٨﴾

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ﴿٣٩﴾

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَآدْبَارَ السُّجُودِ ﴿٤٠﴾

^१ इस से अभिप्राय (मुराद) अल्लाह का दर्शन (जियारत) है जो जन्नत वालों को मिलेगा, जैसा कि ﴿لَتَنبِيْنَ أُنْحَرُوا أُنْحَرُوا وَزِيَادَةٌ﴾ (यूनूस-२६) की तफसीर (व्याख्या) में गुज़र।

^२ यानी अल्लाह की तस्बीह करें। कुछ ने इस से वह तस्बीहें मुराद ली हैं, जिन के पढ़ने पर फ़र्ज़ (अनिवार्य) नमाज़ों के बाद नबी ﷺ ने जोर दिया है जैसे سُبْحَانَ اللَّهِ (सुबहानल्लाह) ३३ बार, الْحَمْدُ لِلَّهِ (अल्हम्दु लिल्लाह) ३३ बार, اللَّهُ أَكْبَرُ (अल्लाहो अकबर) ३४ बार आदि। (अल-बुखारी, किताबुल अज़ान, बाबुज़ जिक्के बादस सलाति, मुस्लिम बाबु इस्तिहवाबिज्जिक्रे, बादस सलाति व बयानु सिफतिही) कुछ ने कहा है कि आदबारुलसजुद से मुराद भग़रिब की नमाज़ के बाद की दो रकअतें हैं, कुछ ने कहा कि उपर बयान की गई तस्बीहें आयत के उतरने के बहुत समय बाद बताई गई थीं।

४१. और सुन रखें कि जिस दिन एक पुकारने^१ वाला करीब ही की जगह से पुकारेगा ।^२

४२. जिस दिन उस कड़ी आवाज को यकीन के साथ सुनेंगे, यही निकलने का दिन होगा ।^३

४३. हम ही जिन्दा करते और मारते हैं और हमारी तरफ ही फिर कर आना है ।

४४. जिस दिन धरती फट पड़ेगी और यह दौड़ते हुए (निकल पड़ेंगे), यह जमा कर लेना हम पर बहुत ही आसान है ।

४५. हम अच्छी तरह जानते हैं जो कुछ यह कह रहे हैं और आप उन्हें बलपूर्वक (ताकत के जोर पर) मनवाने वाले नहीं, बस आप उन्हें कुरआन के द्वारा समझाते रहें जो मेरी धमकी से डरते हों ।^४

وَأَسْمِعْ يَوْمَ يُنَادُوا الْمَتَا مِنْ مَكَانٍ
قَرِيبٍ ﴿٤١﴾

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذَلِكَ
يَوْمَ الْخُرُوجِ ﴿٤٢﴾

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٤٣﴾

يَوْمَ نَشَقُّ الْأَرْضَ عَنْهُمْ سَرَاعًا ذُنُوبًا كَثُورًا
عَلَيْهَا يَسِيرُونَ ﴿٤٤﴾

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْفُرُونَ وَمَا آتَتْ عَلَيْهِمْ
بِجَبَابٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ
وَعِيدِ ﴿٤٥﴾

^१ यह पुकारने वाला इस्त्राफ़ील फ़रिश्ता होगा या जिब्रिल और यह वह पुकार होगी जिस से लोग मैदाने महशर में जमा हो जायेंगे, यानी दूसरी फूंक ।

^२ इस से कुछ ने वित्तल मोकदस के करीब का सखर: (चटान) मुराद लिया है । कहते हैं कि यह आकाश से बहुत करीब की जगह है । कुछ के करीब इसका मतलब यह है कि हर इंसान यह आवाज इस तरह सुनेगा जैसे उस के करीब ही से आवाज आ रही है । (फतहल कदीर) और यही सही लगता है ।

^३ यह चीख यानी यह क्रयामत की फूंक जरूर होगी, जिस में वह दुनिया में शक करते थे, और यही दिन कब्रों से निकलने का दिन होगा ।

^४ यानी आप की दावत और सदुपदेश (नसीहत) से वही नसीहत हासिल करेगा जो अल्लाह और उसकी धमकियों से डरता और उस के वादे पर यकीन रखता होगा, इसीलिए हजरत कतादा यह दुआ किया करते थे ।

«اللَّهُمَّ اجْعَلْنَا مِنْ يَخَافُ وَعِيدِكَ وَيَرْجُو مَوْعِدَكَ يَا بَارُئُ يَا رَحِيمُ»

«हे अल्लाह हमें उनमें से कर जो तेरी धमकियों से डरते और तेरे वादों से उम्मीद रखते हैं । हे एहसान करने वाले, हे रहम करने वाले ।» (इब्ने कसीर)

सूरतुज ज़ारियात-५१

सूर: ज़ारियात मक्का में नाज़िल हुई और इस में साठ आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. क्रसम है उड़ाकर विखेरने वालियों की,
२. फिर बोझ उठाने वालियों की,
३. फिर धीमी चाल से चलने वालियों की,^१
४. फिर काम का बटवारा करने वालियों की।
५. यकीन करो कि तुम से जो वचन (वादे) दिये जाते हैं (सब) सच है।
६. और बेशक इसाफ होने वाला है।
७. क्रसम है रास्तों वाले आकाश की।^२
८. निश्चित रूप (यकीनी तौर) से तुम मुहल्लिफ बातों में पड़े हुए हो।
९. उस से वही फेरा (रोका) जाता है जो फेर दिया गया हो।
१०. निर्मूल (अटकल) बातें करने वाले नाश कर दिये गये।
११. जो अचेत (गाफिल) हैं और भूले हुए हैं।
१२. पूछते हैं कि बदले का दिन कब होगा?

سُورَةُ الذَّارِيَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالذَّارِيَاتِ ذُرَّاتًا ①

فَالْحُمَيْتِ وَقُورًا ②

فَالْحَبِيرَاتِ يُسْرًا ③

فَالْمَقْتَسِمَاتِ أَمْرًا ④

إِنَّمَا تُوْعَدُونَ تَصَادِقًا ⑤

وَإِنَّ الدَّيْنِ لَوَاقِعٌ ⑥

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُوبِ ⑦

إِنَّكُمْ لَبِئْسَ قَوْلَ الْمُتَكَلِّفِينَ ⑧

يُؤْفِكُكَ عَنْهُ مِنَ امْرَأَتِكَ ⑨

قَوْلِ الْخَصْمُونَ ⑩

الَّذِينَ هُمْ فِي عَمْرٍؤِ سَاهُونَ ⑪

يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمِ الدِّينِ ⑫

^१ جارियात (ज़ारियात) पानी में चलने वाली नवकायें, يُسْرًا (युस्सन) आसानी से सरलता से।

^२ दूसरा अनुवाद (तर्जुमा) खूबसूरत और मुजद्ध्यन किया गया है, चांद, सूरज, नक्षत्र और जगमगाते तारे उसकी ऊँचाई और फैलाव, यह सब आसमान की जीनत और खूबसूरती की वजह है।

१३. (हां) यह वह दिन है कि ये आग पर तपाये जायेंगे।

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُقْتَلُونَ ﴿۱۳﴾

१४. मजा चखो, यही है जिस की तुम जल्दी मचा रहे थे।

ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ﴿۱۴﴾

१५. बेश्क अल्लाह से डर रखने वाले स्वर्गों और (बीतल) जल स्रोतों (चश्मों) में होंगे।

إِنَّ الشَّقِيقِينَ فِي جَهَنَّمَ وَالْحَمِيمِينَ ﴿۱۵﴾

१६. उन के रब ने जो कुछ उन को दिया है उसे ले रहे होंगे, वे तो उस से पहले ही नेकी करने वाले थे।

أَجْرِيْنَ مَا أَنزَلْنَاهُمْ بِهِمْ وَأَنزَلْنَا لَهُمْ كِتَابًا فَذَرْهُمْ مُخْسِرِينَ ﴿۱۶﴾

१७. वे रात को बहुत कम सोया करते थे।

كَانُوا قَلِيلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ﴿۱۷﴾

१८. और वे रात के आखिरी पहर (भोर) में इस्तिगफार किया करते थे।^१

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ﴿۱۸﴾

१९. और उनके माल में मांगने वालों का और सवाल करने से बचने वालों का हक था।^२

وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْسُورِ ﴿۱۹﴾

२०. और यकीन करने वालों के लिए तो धरती में बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿۲۰﴾

२१. और खुद तुम्हारे अस्तित्व (वजूद) में भी, तो क्या तुम नहीं देखते हो।

وَفِي أَنفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿۲۱﴾

२२. और तुम्हारी जीविका (रिज़क) और जो तुम

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ﴿۲۲﴾

^१ भोर का समय दुआ के कुबूल होने का बहुत अच्छा वक़्त है। हदीस में आता है कि जब रात का तिहाई हिस्सा बाकी रह जाता है तो अल्लाह दुनिया के आकाश पर उतर आता है और आवाज़ देता है कि कोई तौबा करने वाला है कि उसकी तौबा कुबूल करूँ, कोई माफी मांगने वाला है कि मैं उसे माफ करूँ, कोई भिखारी है कि मैं उसकी माँग पूरी कर दूँ, यहाँ तक कि फ़ज्र (प्रभात) हो जाती है। (सहीह मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफिरीन बाबुत तरगीबे फिद दुआये वज़ जिक्रे फी आखिरिल लैले बल एजाबति फीहि)

^२ *عسوم* (महरूम) से मुराद वह है जो ज़रूरत होने पर भी नहीं माँगता, तो उस के लायक होते हुए भी उसे लोग नहीं देते, या वह इंसान है जिसका सब कुछ आकाश और धरती की आपदा (आफत) की बजह से नाश हो जाये।

को वादा दिया जाता है सब आकाश में है।

२३. तो आकाश और धरती के रब की कसम! यह बिल्कुल सच है ऐसा ही जैसे कि तुम बातें करते हो।

२४. क्या तुझे इब्राहीम (عليه السلام) के सम्मानित मेहमानों की खबर भी पहुँची है?

२५. वे जब उनके यहाँ आये तो सलाम किया, (इब्राहीम) ने सलाम का जवाब दिया (और कहा ये तो) अंजान लोग हैं।

२६. फिर (चुपचाप जल्दी-जल्दी) अपने परिवार वालों की तरफ गये और एक मोटे बछड़े का (गोश्त) लाये।

२७. और उसे उनके पास रखा और कहा आप खाते क्यों नहीं?

२८. फिर दिल ही दिल में उन से डर गये! उन्होंने कहा कि आप डरे नहीं^१ और उन्होंने (हजरत) इब्राहीम को एक ज्ञानी (आलिम) पुत्र के होने की खुशखबरी दी।

२९. तो उनकी पत्नी ने तअज्जुब में आकर^२ अपने मुँह पर हाथ मार कर कहा कि मैं तो बुद्धिया हूँ, साथ ही बौद्ध।

३०. उन्होंने कहा कि हाँ तेरे रब ने इसी तरह कहा है, बेशक वह हिकमत वाला और जानने वाला है।^३

قَوَّ رَّبِّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنْطِقُونَ ﴿٢٣﴾

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْعِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٤﴾

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا قَالَ سَلَامًا قَوْمًا مُّشْكِرُونَ ﴿٢٥﴾

فَرَأَى إِلَىٰ آهْلِهِ فَنَجَّىٰ بَعْضَ سَيِّئِينَ ﴿٢٦﴾

فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٧﴾

فَادْجَسَ مِنْهُمْ خُفْيَةً فَقَالُوا لَا تَخَفْ وَابْشُرُوا بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٢٨﴾

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَخَةٍ فَصَكَتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿٢٩﴾

قَالُوا كَذَّبَ إِلَهُكُمُ الَّذِي قَالُوكُمُ اسْمُهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٣٠﴾

^१ डर का एहसास इसलिए किया कि हजरत इब्राहीम ने सोचा कि यह आने वाले किसी अच्छे विचार (इरादे) से नहीं आये हैं बल्कि बुरे इरादे से आये हैं।

^२ हजरत इब्राहीम (عليه السلام) के मुँह पर डर के चिन्ह देखकर फरिश्तों ने कहा।

^३ حَرْ: (सरतिन) का दूसरा मायने है चीख और पुकार यानी चीखते हुए कहा।

^४ यानी जैसे हम ने तुझ से कहा है, यह हम ने अपनी तरफ से नहीं कहा है बल्कि तेरे रब ने इसी तरह कहा है, जिस से हम तुझे खबर कर रहे हैं, इसलिए इस में न आश्चर्य (ताज्जुब) की जरूरत है न शक की, क्योंकि जो अल्लाह चाहता है जरूर होकर रहता है।

३१. (हजरत इब्राहीम عليه السلام ने) कहा कि अल्लाह के भेजे हुए (फरिश्तो!) तुम्हारा क्या उद्देश्य (मकसद) है?

३२. उन्होंने जवाब दिया कि हम पापी लोगों की तरफ भेजे गये हैं।

३३. ताकि हम उन पर मिट्टी के कंकरियों की वर्षा करें।

३४. जो तेरे रव की तरफ से नामांकित (नामजद) हो चुकी है उन सीमा (हद) तोड़ने वालों के लिए।

३५. तो जितने ईमान वाले वहाँ थे, हम ने उन्हें निकाल दिया।

३६. और हम ने वहाँ मुसलमानों का सिर्फ एक ही घर पाया।

३७. और वहाँ हम ने उन के लिए जो कष्टदायी अजाब का डर रखते हैं, एक पूरी निशानी छोड़ी।

३८. और मूसा की कथा में (भी हमारी तरफ से चेतावनी है) जबकि हम ने उसे फिरऔन की तरफ साफ प्रमाण (सुबूत) देकर भेजा।

३९. तो उस ने अपने बल वूते पर मुंह मोड़ा^३ और कहने लगा कि यह जादूगर है या दीवाना है।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣١﴾

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٢﴾

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ جَارًا مِّن طِينٍ ﴿٣٣﴾

مُسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٤﴾

فَاخْرَجْنَا مَن كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٥﴾

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ السُّيُوفِ ﴿٣٦﴾

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِّلَّذِينَ يَخَافُونَ

العَذَابِ الْآلِيمِ ﴿٣٧﴾

وَفِي مِثْقَلِ إِذْ أُرْسِلْنَاهُ لِيُفْضِعُوا عَنْهُ نَارًا يُسْقِطُونَ

فَبِئْسَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٨﴾

فَتَوَلَّى بَرَكِيئَةَ وَقَالَ سَجَرًا أَوْ مَعْبُوتًا ﴿٣٩﴾

1 इस से अभिप्राय (मुराद) लूत की क्रौम है, जिस का सब से बड़ा गुनाह लिवातत (समलैंगिक मैथुन) था।

2 और यह अल्लाह के पैगम्बर (सदेष्टा) हजरत लूत عليه السلام का घर था, जिस में उनकी दो पुत्रियाँ और कुछ ईमान वाले थे।

3 मजबूत पहलू को रुक्न कहते हैं, यहाँ मुराद उसकी अपनी ताकत और सेना है।

४०. आखिर हम ने उसे और उसकी सेना को अपनी यातना (अज़ाब) में पकड़ कर समुद्र में डाल दिया, वह था ही निंदनीय (मलामत के लायक) ।

४१. उसी तरह आदियों में भी (हमारी तरफ से तंबीह है) जब कि हम ने उन पर वाँझ (अशुभ) आधी भेजी !

४२. वह जिस-जिस चीज पर आती थी उसे जीर्ण अस्थियों (बोसीदा हड्डियों) की तरह चूर-चूर कर देती थी !^१

४३. और समुद्र (की कथा) में भी (नसीहत है) जब उन से कहा गया कि तुम कुछ दिनों तक फायेदा उठा लो !

४४. लेकिन उन्होंने अपने रब के हुक्म की नाफरमानी की, जिस पर उन्हें उन के देखते-देखते (तेज़) कड़क ने बरबाद कर दिया ।

४५. फिर न तो वह खड़े हो सके और न बदला ले सके ।

४६. और नूह (عليه السلام) की क्रौम का भी इस से पहले (यही हाल हो चुका था) वे भी बड़े अबज्ञाकारी (नाफरमान) लोग थे ।

فَأَخَذْنَاهُ وَجُنُودَهُ فَنَبَذْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلَيَّمٌ ۝٤٠

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَةَ ۝٤١

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلْنَاهُ كَالرِّيزِيقِ ۝٤٢

وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّى حِينٍ ۝٤٣

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذْنَا نُهُمُ الضَّرِيْعَةَ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ۝٤٤

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَارٍ وَمَا كَانُوا مُتَّبِعِينَ ۝٤٥

وَقَوْمَ نُوحٍ لَمَّا كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝٤٦

^१ (الريح العقيم) (वाँझ हवा) जिस में खैर व बरकत नहीं थी । वह हवा पेड़ों को फलदार करने वाली थी न वर्षा (बारिश) की खबर देने वाली, बल्कि केवल तवाही और अज़ाब की हवा थी ।

^२ यह उस हवा का असर था जो आद की क्रौम पर प्रकोप (अज़ाब) के रूप में भेजी गई, यह तेज़ हवा सात रातों और आठ दिन लगातार चलती रही । (अल-हाबक:-७)

^३ यानी जब उन्होंने अपने ही माँग किये चमत्कार (मोजिजे) से प्रकट जँटनी को क़त्ल कर दिया तो उन से कह दिया गया कि अब तीन दिन तुम और दुनिया का मजा ले लो । तीन दिन के बाद तुम तवाह कर दिये जाओगे, यह इसी तरफ इशारा है । कुछ ने इसे सालेह (عليه السلام) की नबूअत के शुरू का वादा माना है, लफ़्ज़ों का यह मायने भी हो सकता है बल्कि पहले वाक्य-क्रम (स्याक) से यही मायने ज़्यादा ठीक है ।

४७. और आकाश को हम ने (अपने) हाथों से बनाया है और बेशक हम विस्तार (कुशादगी) करने वाले हैं।

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ﴿٤٧﴾

४८. और धरती को हम ने फर्श बना दिया है तो हम बहुत अच्छे बिछाने वाले हैं।

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْيَهْدُونَ ﴿٤٨﴾

४९. और हर चीज को हम ने जोड़ा-जोड़ा पैदा किया है ताकि तुम नसीहत हासिल करो।

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٤٩﴾

५०. तो तुम अल्लाह की तरफ दौड़-भाग (यानी ध्यान) करो। बेशक मैं तुम्हें उसकी तरफ से साफ तौर से आगाह करने वाला हूँ।

فَقَدْ وَآ إِلَى اللَّهِ إِنِّي لَكُمْ فِيهِ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥٠﴾

५१. और अल्लाह के साथ किसी दूसरे को देवता (माबूद) न बनाओ। बेशक मैं तुम्हें उसकी तरफ से स्पष्ट (वाजेह) रूप से सचेत (आगाह) करने वाला हूँ।

وَلَا تَتَّخِذُوا مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ إِنِّي لَكُمْ فِيهِ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٥١﴾

५२. इसी तरह जो लोग उन से पहले गुजरे हैं, उन के पास जो भी रूपल आया उन्होंने कह दिया कि या तो यह जादूगर है या दीवाना है।

كَذَلِكَ مَا آتَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا قَالُوا سَآجِرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٥٢﴾

५३. क्या ये इस बात की एक-दूसरे को वसीयत करते गये हैं, नहीं बल्कि ये सभी सरकश हैं।

أَوَأَصَابَهُمْ يَبَلٌ مِمَّا كَانُوا يَكْفُرُونَ ﴿٥٣﴾

५४. तो आप उनसे मुंह फेर लें, आप पर कोई मलामत (इल्जाम) नहीं।

فَقَوْلَ عَنَّهُمْ فَمَا آنتَ بِمُؤْمِرٍ ﴿٥٤﴾

५५. और शिक्षा (नसीहत) देते रहें, बेशक ये शिक्षा ईमानवालों को फायेदा देगी।^१

وَكَذَٰلِكَ قَوَّانَ الْبَآكِرَى تَشْفَعُ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٥٥﴾

१ यानी बिस्तर की तरह उसे बिछा दिया।

२ यानी हर चीज को जोड़ा-जोड़ा नर और मादा या उस के मुकाबिल और विलोम (जिद) को भी पैदा किया है। जैसे अंधेरा-उजाला, थल-जल, चांद-सूरज, भीठ-कडुवा, रात-दिन, भला-बुरा, जीवन-मृत्यु, ईमान-कुफ्र, सौभाग्य-दुभाग्य, स्वर्ग-नरक, जिन्न-इंसान, आदि (वगैरह)। यहाँ तक कि जानदार के मुकाबले में वेजान। इसलिए जरूरी है कि दुनिया का भी जोड़ा हो यानी परलोक (आखिरत), दुनिया के मुकाबिले में दूसरी जिंदगी।

३ इसलिए कि नसीहत से फायेदा उन्हीं को पहुंचता है, या मतलब यह है कि आप शिक्षा

५६. मैं जिन्नात और इंसानों को सिर्फ इसीलिए पैदा किया है कि वे केवल मेरी इबादत करें !

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾

५७. न मैं उन से जीविका (रिज़क) चाहता हूँ, न मेरी यह इच्छा है कि ये मुझे खिलायें ।

مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُونِ ﴿٥٧﴾

५८. यकीनन अल्लाह (तआला) तो खुद रोजी देने वाला ताकत वाला और बलवान है ।

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْبَتِينِ ﴿٥٨﴾

५९. तो जिन लोगों ने ज़ुल्म किया है उन्हें भी उन के साथियों के हिस्से के बराबर हिस्सा मिलेगा, इसलिए वे मुझ से जल्दी न मांगें ।

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجَلُونَ ﴿٥٩﴾

६०. तो खराबी है काफ़िरों को उन के उस दिन की जिसका वह वादा दिये जाते हैं ।

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦٠﴾

सुरतुत्तूर-५२

सूर: तूर मक्का में नाज़िल हुई और इस में उन्चास आयते और दो रूकूअ हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है ।

سُورَةُ الطُّورِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

१. कसम है तूर की !^१

وَالتُّورِ ﴿١﴾

(नसीहत) देते रहें, इस से वह ज़रूर फायेदा हासिल करेंगे, जिन के वारे में अल्लाह के ज्ञान (इल्म) में है कि वह ईमान लायेंगे ।

^१ इस में अल्लाह के उस इरादे (मशीयत) को जाहिर किया गया जो शरीअत के अनुसार वह बंदों से चाहता है कि सारे इंसान और जिन्न सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करें और आज्ञापालन (इताअत) भी उसी एक की करें, अगर इसका सम्बन्ध उत्पत्ति (तक्वीन) के इरादे से होता तो सब उसकी इबादत और आज्ञापालन के लिए मजबूर होते और कोई उस से फिरने की कुदरत न रखता, यानी इस में इंसानों और जिन्नों को उन के जीवन का मकसद याद कराया गया है, जिसे अगर उन्होंने भूलाये रखा तो आखिरत में कड़ी पृछ होगी और वह उस इन्तेहान में नाकाम माने जायेंगे जिस में अल्लाह ने उन्हें इरादे और पसंद की आज्ञा दी दे रखी है ।

^२ तूर वह पहाड़ है जिस पर मूसा (क़ुत्तूब) से अल्लाह ने बात की ! उसे तूर सीना भी कहा जाता है, अल्लाह ने उस के इसी महत्व (अहमियत) की वजह से उसकी कसम ली है ।

२. और लिखी हुई किताब की ।

وَكُتِبَ مُسْتَوْفٍ ②

३. जो झिल्ली के खुले हुए पन्नों में है ।

فِي رَقٍ مُّشْوَرٍ ③

४. और आबाद घर की ।^१

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ④

५. और ऊँची छत की ।

وَالشَّقْبِ الرَّفِيعِ ⑤

६. और भड़काए हुए सागर की ।

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ⑥

७. बेशक आप के रब का अजाब होकर रहने वाला है ।

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ⑦

८. उसे कोई रोकने वाला नहीं ।

مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ⑧

९. जिस दिन आकाश धरधराने लगेगा ।^२

يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مُمْرًا ⑨

१०. और पहाड़ चलने-फिरने लगेंगे ।

وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ⑩

११. उस दिन झुठलाने वालों की (पूरी) खराबी है ।

قَوْلِيلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ⑪

१२. जो अपनी बेहूदा बातों में उछल-कूद कर रहे हैं ।

الَّذِينَ هُمْ فِي حُوفٍ يُلْعَبُونَ ⑫

^१ यह सूर (बैतें मअमूर) सातवें आसमान पर वह इबादत घर है, जिस में फरिश्ते इबादत करते हैं, यह इबादत घर फरिश्तों से इस तरह भरा रहता है कि रोज सत्तर हजार फरिश्ते इबादत के लिए आते हैं, जिनकी फिर कयामत तक दोबारा बारी नहीं आयेगी, जैसाकि मेराज की हदीसों में बयान किया गया है, कुछ ने बैतें मअमूर से खानये काबा मुराद लिया है जो इबादत के लिए आने वाले इसानों से हर समय भरा रहता है । मअमूर का मतलब है आबाद और भरा हुआ ।

^२ मूर (मौर) का मतलब है गति और उथल-पुथल, कयामत के दिन आकाश के प्रबंघ (निजाम) में जो उथल-पुथल और तारों की टूट-फूट की वजह से जो बिखराव पैदा होगा, उसको इन शब्दों से व्यंजित (ताबीर) किया गया है, और यह उपर बयान किये गये अजाब के लिए समय है, यानी यह अजाब उस दिन होगा जब आकाश धरधरायेगा और पहाड़ अपनी जगह छोड़कर रूई के गालों की तरह और रेत के कणों (जरों) की तरह उड़ जायेंगे ।

१३. जिस दिन वे धनके दे-देकर जहन्नम की आग की तरफ लाये जायेंगे।

يَوْمَ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ تَارِحِهِمْ دَعْوًا ⑬

१४. यही (नरक की) वह आग है जिसे तुम झूठ कहते थे।

هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنتُمْ بِهَا تُكذِّبُونَ ⑭

१५. (अब बताओ) क्या यह जादू है? या तुम देखते ही नहीं हो।

أَفَيْعَرُ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تَبْصُرُونَ ⑮

१६. इस में जाओ, (नरक में) अब तुम्हारा धैर्य (सब्र) रखना और न रखना तुम्हारे लिए बराबर है, तुम्हें केवल तुम्हारे कर्मों (अमल) का बदला दिया जायेगा।

أَصْلُوهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ⑯

لَكِنَّمَا تُجْرُونَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ⑰

१७. बेश्क सदाचारी (परहेजगार) लोग जन्नत में और सुखों में हैं।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُجَيْرٍ ⑱

१८. उन्हें जो उन के रब ने दे रखी है, उस पर खुश हैं, और उन्हें उनके रब ने नरक के अजाब से भी बचा लिया है।

لَكِهِمْ بِمَا أَنَّهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقَّهُمْهُمْ ⑲

عَذَابِ الْجَحِيمِ ⑳

१९. तुम मजे से खाते-पीते रहो उन अमलों के बदले जो तुम करते थे।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ㉑

२०. बराबर बिछे हुए खूबसूरत तख्त पर तकिये लगाये हुए। और हम ने उन की शादी बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरों से कर दिये हैं।

مُتَّكِنِينَ عَلَىٰ سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ㉒

وَزَوْجَهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ㉓

२१. और जो लोग ईमान लाये और उन की औलाद ने भी ईमान में उन का अनुगमन (पैरवी) किया हम उन की औलाद को उन तक पहुँचा देंगे और उन के कर्मों से हम कुछ कम न करेंगे, हर इंसान अपने-अपने कर्मों (अमल) का गिरवी है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُم بِإِيمَانٍ ㉔

أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَا أَلَتْنَاهُمْ مِنْ عَمَلِهِمْ ㉕

مِنْ شَيْءٍ ㉖ كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهينًا ㉗

1. مَصْنُوفَةٍ (सफूफः) एक-दूसरे से मिले हुए, जैसेकि वह पंक्तिबद्ध (सफूबस्ता) है, या कुछ ने उसका मतलब बयान किया है कि वह आपस में आमने-सामने होंगे, जैसे मैदाने जग में सेनायें (फौजें) आमने-सामने होती हैं।

२२. और हम उन के लिए मेवे और मजेदार (मरगूब) गोश्त की रस-पेल कर देंगे।

२३. (खुशी के साथ) वे एक-दूसरे से (शराब के) प्याले की छीना-झपटी करेंगे, जिस शराब के मजे में न बेहूदा कलाम निकलेंगे और न पाप होगा।¹

२४. और उन के चारों तरफ सेवा के लिए (सेवक) बालक चल-फिर रहे होंगे, जैसेकि वे मोती थे जो छिपाकर रखे थे।

२५. और वे आपस में एक-दूसरे की तरफ मुंह करके सवाल करेंगे।

२६. कहेंगे कि इस से पहले हम अपने घर वालों में बहुत डरा करते थे।

२७. तो अल्लाह (तआला) ने हम पर बड़ा उपकार (एहसान) किया, और हमें तेज गर्म हवाओं के प्रकोप (अजाब) से बचा लिया।²

२८. हम इस के पहले ही उस को पुकारा करते थे³ बेशक वह बड़ा एहसान करने वाला और बड़ा दयालु (रहम करने वाला) है।

२९. तो आप सभझाते रहें, क्योंकि आप अपने रब की नेमत से न तो काहिन (ज्योतिषी) हैं न दीवाना।

३०. क्या (काफिर) इस तरह कहते हैं कि यह शायर है, हम उस पर कालचक्र (यानी मौत) का इतैज्जार कर रहे हैं।

وَأَمْدَدْنَاهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّنَّا
يَشْتَبُونَ ﴿٢٢﴾

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأَسَا لَا تَعُوفِيهَا
وَلَا تَأْتِينَا ﴿٢٣﴾

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ نُورٌ
فَلَكُونُوا ﴿٢٤﴾

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٥﴾

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ﴿٢٦﴾

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَدْنَا عَدَابَ السَّوْمِ ﴿٢٧﴾

إِنَّا كُنَّا مِن قَبْلُ نَدْعُوهُ إِنَّهُ هُوَ
الْبَرُّ الرَّحِيمُ ﴿٢٨﴾

فَذَكِّرْ قَمَا أَنْتَ بِتَعْبَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ
وَلَا مَجْنُونٍ ﴿٢٩﴾

أَمْ يَتْلُونَ شَاعِرًا كَتَرَبُّصٍ بِهِ رَبِّيبُ السُّنُونِ ﴿٣٠﴾

¹ उस शराब में दुनियावी शराब का असर नहीं होगा, उसे पीकर न कोई बहकेगा कि अपशब्द कहे, न इतना बेसुध होगा कि गुनाह करे।

² सौम (समूम) सू, झुलसाने वाली गर्म हवा को कहते हैं, नरक के नामों में से एक नाम भी है।

³ यानी केवल उसी एक की बंदना (इबादत) करते थे, उस के साथ किसी को साझी नहीं करते थे, या यह मतलब है कि उसी से जहन्नम के अजाब से बचने की दुआ करते थे।

३१. (आप) कह दीजिए कि तुम इतैजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इतैजार करने वालों में हूँ।

قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُرْتَبِصِينَ ﴿٣١﴾

३२. क्या उनकी बुद्धियाँ (अकलें) उन्हें यही सिखाती हैं? या ये लोग ही उदण्ड (सरकश) हैं।

أَمْ تَأْتُمُّهُمْ أَهْلَامُهُمْ بِهَذَا أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاعُونَ ﴿٣٢﴾

३३. क्या ये कहते हैं कि इस (नबी) ने (कुरआन) खुद गढ़ लिया है, हकीकत यह है कि वे ईमान नहीं लाते।

أَمْ يَقُولُونَ لَقَوْلُهُ بَلْ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٣﴾

३४. अच्छा, अगर यह सचचे हैं तो भला इस जैसी एक (ही) बात यह (भी) तो ले आयेँ।

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا صَادِقِينَ ﴿٣٤﴾

३५. क्या ये बिना किसी (पैदा करने वाले) के खुद ही पैदा हो गये हैं, या ये खुद पैदा करने वाले हैं?

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخَالِقُونَ ﴿٣٥﴾

३६. क्या उन्होंने ने ही आसमानों और जमीन को पैदा किया है? बल्कि ये यकीन न करने वाले लोग हैं।

أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بَلْ لَّا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٦﴾

३७. या क्या इन के पास तेरे रब के खजाने हैं? या (उन खजानों के) ये रक्षक (मुहाफिज) हैं।

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُونَ ﴿٣٧﴾

३८. या क्या इन के पास कोई सीढ़ी है, जिस पर चढ़कर सुनते हैं? (अगर ऐसा है) तो उनका सुनने वाला कोई वाजेह सुबूत पेश करे।

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ مِّنْ سَمَوَاتٍ فِيهِمْ فَلْيَأْتِ مُسْتَعِينُهُمْ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾

३९. क्या अल्लाह की तो सब पुत्रियाँ हैं और तुम्हारे लिए पुत्र हैं?

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمْ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾

४०. क्या तू इन से कोई मजदरी माँगता है कि ये उसके बोझ से दबे जा रहे हैं?

أَمْ نَسَأُ لَهُمْ أَجْرًا فَهَمَّ مِنَ مَعْرُوفٍ مُّتَقَلِّبُونَ ﴿٤٠﴾

४१. क्या इन के पास परोक्ष (मैब) का इल्म है जिसे ये लिख लेते हैं?

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾

। यानी अगर यह अपने दावे में सचचे हैं कि यह कुरआन मोहम्मद (ﷺ) ने खुद गढ़ लिया है तो फिर यह भी इस जैसी किताब बनाकर पेश कर दें, जो बलागत, मौजिजे और असर, उसलूब, इजहार हकीकत और मसलों (समस्याओं) के हल में इसका मुकाबला कर सके।

४२. क्या ये लोग कोई छल करना चाहते हैं? तो (यकीन कर लें) कि छल करने वाला गुट काफिरों का है।

४३. क्या अल्लाह के सिवाय उनका कोई दूसरा माबूद है? (कभी नहीं) अल्लाह (तआला) उन के धिर्क से (बुद्ध) और पाक है।

४४. अगर ये लोग आकाश के किसी टुकड़े को गिरता हुआ देख लें, तब भी कह दें कि यह तह पर तह बादल है।

४५. तो आप उन्हें छोड़ दें यहाँ तक कि वे अपने उस दिन से मिल जायें जिस में ये बेहोश कर दिये जायेंगे।

४६. जिस दिन उन्हें उनकी चाल कुछ काम न आयेगी और न वे मदद किये जायेंगे।

४७. बेशक ज़ालिमों के लिए इस के सिवाय दूसरे अजाब भी हैं, लेकिन उन लोगों में से ज़्यादातर लोग अंजान हैं।

४८. तू अपने रब के हुक्म की इतेज़ार में सब से काम ले, बेशक तू हमारी आँखों के सामने है, और सुबह जब तू उठ^२ अपने रब की पाकी और प्रशंसा (हम्द) का जिक्र कर।

४९. और रात को भी उसकी तस्बीह^३ कर, और तारों के डूबते समय भी।

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۖ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾

أَمْ لَهُمْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ ۖ سُبْحَانَ اللَّهِ عَنَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾

وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿٤٤﴾

فَذَرَهُمْ حَتَّى يَأْتِيَهِمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾

يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ﴿٤٩﴾

^१ मुराद यह है कि अपने कुफ्र और उदगडता (सरकशी) से फिर भी नहीं रूकेगे, बल्कि ढीठार्ड करते हुए कहेंगे कि यह प्रकोप (अजाब) नहीं बल्कि एक पर एक बादल चढ़ा आ रहा है। जैसाकि कुछ मौकों पर ऐसा होता है।

^२ इस खड़े होने से कौन-सा खड़ा होना मुराद है? कुछ कहते हैं कि जब नमाज़ के लिए खड़े हों, जैसाकि नमाज़ के शुरू में «سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ» पढ़ी जाती है। कुछ कहते हैं कि जब जाग कर खड़े हों, उस समय भी अल्लाह की तस्बीह महिमागान और तारीफ मस्तून (उचित) है, कुछ कहते हैं कि जब किसी बैठक (सभा) से खड़े हों।

^३ इस से अभिप्राय (मुराद) क्यामुल्लैल यानी तहज्जुद की नमाज़ है, जो ज़िन्दगी भर नबी ﷺ का नियम रहा।

सूरतुन नज्म-५३

سُورَةُ النَّجْمِ

सूर: नज्म* मक्का में नाज़िल हुई, इसमें वासठ आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

१. कसम है सितारे की जब वे गिरे।^१

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ۝۱

२. कि तुम्हारे साथी ने न रास्ता खोया है न वह टेढ़े रास्ते पर है।^२

مَا صَلَّ صَلَاحُكُمْ وَمَا هَوَىٰ ۝۲

३. और न वह अपनी मर्जी से कोई बात कहते हैं।^३

وَمَا يَنطِقُ عَنِ الْهَوَىٰ ۝۳

४. वह तो केवल वहयी (आकाशवाणी) है जो नाज़िल की जाती है।^४

إِنَّ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ۝۴

५. उसे पूरी ताकत वाले फरिश्ते ने सिखाया है।^५

عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ۝۵

६. जो ताकतवर है^६ फिर वह सीधा खड़ा हो गया।^६

ذُو مِرَّةٍ فَاسْتَوَىٰ ۝۶

७. और वह उच्च आकाश के किनारों (उफुक) पर था।^७

وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ۝۷

८. फिर करीब हुआ और उतर आया।^८

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ۝۸

* यह पहली सूर: है जिस को रसूलुल्लाह ﷺ ने काफिरों के जन-समूह (मजमे) में सुनाया। इस के बाद जितने लोग आप के पीछे थे सब ने सज्दा किया सिवाये उमय्या बिन खलफ के, उस ने अपनी सुट्टी में भिट्टी ले कर उस पर सज्दा किया, आखिर में वह कुफ्र ही की दशा (हालत) में मारा गया। (सहीह बुखारी)

^१ कुछ भाष्यकारों (मुफिस्सरो) ने तारा से सुरय्या (कृतिका नक्षत्र) मुराद लिया है और कुछ ने जोहरा तारा लिया है, और कुछ ने साधारण (आम) तारा लिया है।

^२ इस से अभिप्राय (मुराद) जिब्रिल फरिश्ता है जो बलवान और बहुत ज्यादा ताकत वाला है। पैगम्बर पर वहयी लाने और उसे शिक्षा देने वाला यही फरिश्ता है।

९. तो वह दो कमान के बराबर दूरी पर रह गया, बल्कि उस से भी कम ।

१०. तो उस ने अल्लाह के बंदे को संदेश (पैगाम) पहुँचाया जो भी पहुँचाया ।

११. दिल ने झूठ नहीं कहा जिसे (रसूल ने) देखा।

१२. क्या तुम झगड़ा करते हो उस पर जो (पैगम्बर-संदेश) देखते हैं ।

१३. उसे तो एक बार और भी देखा था ।

१४. सिदरतुल मुन्तहा के करीब ।^२

१५. उसी के करीब जन्नतुल मावा है ।^३

१६. जबकि सिदरह को छिपाये लेती थी वह चीज जो उस पर छा रही थी ।

१७. न तो नजर बहकी, न सीमा (हद) से बढ़ी ।

१८. निश्चय (यक्रीनन) उस ने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियाँ देख ली ।

१९. क्या तुम ने लात और उज्जा को देखा ।

لَكِنَّانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ۙ ﴿٩﴾

فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ۙ ﴿١٠﴾

مَا كَذَّبَ الْقُودُ مَا رَأَىٰ ۙ ﴿١١﴾

أَفَتَسْتَوُونَ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ۙ ﴿١٢﴾

وَلَقَدْ رَأَاهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۙ ﴿١٣﴾

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ ۙ ﴿١٤﴾

عِنْدَ مَا جَعَلْنَا الْبَابَ ۙ ﴿١٥﴾

لِيُبَيِّنَ لَهُ سِندْرَةَ مَا يُبَيِّنُ ۙ ﴿١٦﴾

مَا رَأَىٰ الْبَصَرُ وَمَا طَفَىٰ ۙ ﴿١٧﴾

لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ ۙ ﴿١٨﴾

أَوَّعَيْنَاكَ اللَّهُ وَالْعُزَّىٰ ۙ ﴿١٩﴾

^१ कुछ ने अनुवाद (तर्जुमा) किया है, दो हाथों के बराबर, यह नबी ﷺ और जिब्रिल ﷺ की आपस में समीपता (क़ुरवत) का बयान है। अल्लाह तआला और नबी ﷺ के करीब होने का बयान नहीं, जैसाकि कुछ लोग यक्रीन दिलाते हैं ।

^२ यह भेराज की रात में जब जिब्रिल को असली रूप (शकल) में देखा, उसका बयान है। यह सिदरतुल मुन्तहा एक बैरी का पेड़ है, जो छठें या सातवें आकाश पर है और यह आखिरी हव है, उस से ऊपर कोई फ़रिश्ता नहीं जा सकता, फ़रिश्ते अल्लाह का हुकम भी यहीं से हासिल करते हैं ।

^३ इसे "जन्नतुल मावा" इसलिए कहते हैं कि आदम ﷺ का आवास और निवास यहीं था, कुछ कहते हैं कि आत्मायें (रूहें) यहीं आकर जमा होती हैं ।

२०. और तीसरे आखिरी मनात को ।¹

२१. क्या तुम्हारे लिए पुत्र और उस (अल्लाह) के लिए पुत्रियाँ है?

२२. यह तो अब बड़ी नाइंसाफी का बटवारा है ।

२३. असल में ये केवल नाम हैं जो तुम ने और तुम्हारे बाप-दादा ने उन के रख लिये हैं, अल्लाह ने उनका कोई सुबूत नहीं उतारा। ये लोग तो केवल अटकल और अपनी मनोकामनाओं (ख्वाहिशत) के पीछे पड़े हुए हैं, और बेशक उन के रव की तरफ से उनके पास मार्गदर्शन (हिदायत) आ चुका है ।

२४. क्या हर इंसान जो कामना (तमन्न) करे उसे सुलभ (हासिल) है?

२५. अल्लाह ही के लिए है यह लोक और वह आखिरत ।

२६. और वहुत से फरिश्ते आकाशों में हैं जिन की सिफारिश कोई लाभ नहीं दे सकती, लेकिन यह दूसरी बात है कि अल्लाह (तआला) अपनी इच्छा से और अपनी खुशी से जिसे चाहे आज्ञा (इजाजत) दे दे ।²

وَمَنُوءَ النَّائِبَةِ الْآخِرَىٰ ⑳

أَلَمْ يَكُ الذَّكَوَّةَ الْآخِرَىٰ ㉑

تِلْكَ إِذَا قَسَبَهُ جُنُوزَىٰ ㉒

إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَإِنَّا أَكْثَرُ

مَا أَنْزَلَ اللَّهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ إِنْ يَكْفُرُونَ إِلَّا

الْفُتْرَ وَمَا يَنْهَوَى الْأَنْفُسَ ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ

رَبِّهِمْ الْهُدَىٰ ㉓

أَمْ لِيْلِإِنْسَانٍ مَا تَكْتُمِي ㉔

فَبِئْسَ الْأَخْرَجَ وَالْأُولَىٰ ㉕

وَكَمْ مِنْ قَبْلِكَ فِي السَّمَوَاتِ لِأَقْبَابٍ شَفَاعَتُهُمْ

شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يُأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ

وَيَرْضَىٰ ㉖

¹ यह मुशरकीन (बहुदेववादियों) को फटकारने के लिए कहा जा रहा है कि अल्लाह तो वह है जिस ने जिवील جبل जैसे महान फरिश्तों को पैदा किया। मोहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ जैसे उस के संदेशवाहक (रसूल) हैं, जिन्हें उस ने आकाशों पर बुलाकर अपनी बड़ी-बड़ी निशानियों को भी दिखाया और उन पर प्रकाशना (वहयी) भी उतारता है, क्या तुम जिन पूज्यों (माबूदों) की इबादत करते हो उन में भी यह या इस तरह के गुण (सिपत) हैं?

² यानी फरिश्ते जो अल्लाह की क़रीबी मख़लूक (सृष्टि) हैं उनको भी सिफारिश का हक़ केवल उन्हीं लोगों के लिये होगा जिन के लिये अल्लाह पसन्द करेगा। जब यह बात है तो फिर यह पत्थर की मूर्तियाँ कैसे सिफारिश कर सकेंगी जिन से तुम उम्मीद लगाये बैठे हो? फिर अल्लाह मुशरिकों (मिश्रणवादियों) के लिए किसी को सिफारिश करने का हक़ ही कहाँ देगा जब कि शिर्क उस के यहाँ माफ़ होने वाला नहीं है, जिसे वह कभी माफ़ नहीं करेगा?

२७. बेशक जो लोग आखिरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, वे फ़ारिस्तों को देवियों का नाम देते हैं।

२८. अगरचे उन्हें इसका कोई ज्ञान (इल्म) नहीं, वे केवल अपने गुमान के पीछे पड़े हुए हैं, और बेशक वहम (और अनुमान) सच के सामने कुछ काम नहीं देता।

२९. तो आप उस से मुंह मोड़ लें जो हमारी याद से मुख़ मोड़े और जिनका उद्देश्य (मक़सद) केवल दुनियावी जीवन के अलावा कुछ न हो।

३०. यही उन के ज्ञान (इल्म) की हद है, आप का रब उसे अच्छी तरह जानता है जो उस के रास्ते से भटक गया है, और वही अच्छी तरह जानता है उसे भी जो संमार्ग (हिदायत) प्राप्त है।

३१. और अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, ताकि वह (अल्लाह तआला) बुरे काम करने वालों को उन के कर्मों (अमल) का बदला दे और नेक लोगों को अच्छा बदला दे।

३२. उन लोगों को जो बड़े गुनाहों से बचते हैं और बेशर्मी से भी सिवाय किसी छोटे से पाप के, बेशक तेरा रब उदार (कुशादा) माफ़ करने वाला है, वह तुम्हें अच्छी तरह जानता है जबकि उस ने तुम्हें धरती से पैदा किया और जबकि तुम अपनी माताओं के गर्भ में बच्चे थे, तो तुम अपनी पाकी खुद बयान न करो, वही

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيَسْتَوْنَ
الْمَلَائِكَةَ تَسْبِيَةً الْأُنثَى (27)

وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِنْ يَكْفُرُونَ إِلَّا الظَّنُّ
وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْعَقَبِ شَيْئًا (28)

فَاعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّى لَاعَنَ ذِكْرًا وَلَهُمْ عُرْدٌ
إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا (29)

ذَلِكَ مِمَّا كَفَرُوهُمْ مِنَ الْوَالِدِينَ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ
صَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ اهْتَدَى (30)

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ لِيَجْزِيَ
الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ الَّذِينَ
أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَى (31)

الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا
الْكَمِيرَ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْغُفُورِ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ
إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجْنَةٌ فِي
بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ فَلَا تُزَكُّوْا أَنْفُسَكُمْ هُوَ أَعْلَمُ
بِمَنْ أَكْفَى (32)

1 कबायेर (कबायेर) का बहुवचन (जमा) है। महापाप की तारीफ़ में मतभेद (इस्तिलाफ़) है। ज्यादातर धर्म ज्ञानियों (आलिमों) के क़रीब हर वह पाप महापाप है जिस पर नरक की चेतावनी है या जिस के करने पर कड़ी निंदा क़ुरआन और हदीस में की गई है, और धर्मज्ञानी यह भी कहते हैं कि छोटे पाप भी बार-बार और हमेशा करने से महापाप बन जाते हैं।

नेक लोगों को अच्छी तरह जानता है ।

३३. क्या आप ने उसे देखा जिस ने मुंह मोड़ लिया ।

३४. और बहुत कम दिया और हाथ रोक लिया।

३५. क्या उसे परोक्ष (गैब) का ज्ञान है कि वह (सब कुछ) देख रहा है?

३६. क्या उसे उस बात की खबर नहीं दी गयी जो मूसा (ﷺ) के सहीफे (ग्रन्थ) में थी ।

३७. और वफादार इब्राहीम (ﷺ) के ग्रन्थ में थी?

३८. कि कोई इंसान किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा ।

३९. और यह कि हर इंसान के लिए केवल वही है जिस की कोशिश खुद उस ने की ।

४०. और यह कि बेशक उसकी कोशिश जल्द देखी जायेगी ।^१

४१. फिर उसे पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा ।

४२. और यह कि आप के रब ही की तरफ पहुँचना है ।

४३. और यह कि वही हंसाता है और वही ह्लाता है ।

४४. और यह कि वही मारता है और वही जिन्दा करता है ।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّى

وَاعْتَصَلَ وَبَيْلًا ذَا الَّذِي

أَعْنَدَهُ عِلْمَ الْغَيْبِ فَهَوَّيْرِي

أَمْ لَمْ يُنَبِّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَى

وَإِنْزِيلِهِمَ الَّذِي وَفَى

أَلَا تَوَدُّ وَأَرْزُقًا وَذَرَ أُخْرَى

وَأَنْ كَيْسَ لِمَنْ يَلْتَمِسُ إِلَّا مَا سَعَى

وَأَنْ سَعِيَّةٌ سَوْفَ يُرَى

ثُمَّ يُجْزَاهُ الْجَزَاءَ الْأَوَّلَى

وَأَنْ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَى

وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَى

وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا

^१ यानी जिस तरह कोई किसी दूसरे के पाप का जिम्मेदार नहीं होगा, इसी तरह उसे आखिरत में फल भी उसी चीज का मिलेगा, जिस में उस ने अपनी मेहनत की होगी ।

^२ यानी उस ने दुनिया में अच्छा या बुरा जो कुछ भी किया, छिपे या खुले तौर से किया, कयामत के दिन आगे आ जायेगा और उस पर उसे पूरा बदला दिया जायेगा ।

४५. और यह कि उसी ने जोड़ा यानी नर-मादा पैदा किया है।

४६. वीर्य (नुतफा) से जबकि वह टपकाया जाता है।

४७. और यह कि दोबारा जिन्दा करना उसी की जिम्मेदारी है।

४८. और यह कि वही धनवान बनाता है और धन देता है।^१

४९. और यह कि वही शेअरा (तारे) का रब है?

५०. और यह कि उसी ने पहले आद को नष्ट (हलाक) किया है।

५१. और समूद को भी (जिन में से) एक को भी बाक़ी न रखा।

५२. और उससे पहले नूह की क़ौम को, बेशक वे बड़े ज़ालिम और उदृण्ड (सरकश) थे।

५३. और मूतफिका (नगर या उल्टी हुई बस्तियों को) उसी ने उलट दिया।

५४. फिर उस पर छा दिया जो छा दिया।

५५. तो हे इंसान! तू अपने रब के किस-किस उपहार (निमत) पर झगड़ेगा?

५६. यह (नबी) डराने वाले हैं, पहले के डराने वालों में से।

وَأَنْتَ خَلَقَ الرُّوحَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى (45)

مِنْ نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَى (46)

وَأَنْتَ عَلَيْهِ النَّشَأَةُ الْأُخْرَى (47)

وَأَنْتَ هُوَ أَعْفَى وَأَعْفَى (48)

وَأَنْتَ هُوَ رَبُّ السَّمَوَاتِ (49)

وَأَنْتَ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَى (50)

وَسُودًا فَمَا أَبْقَى (51)

وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْلَى (52)

وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَى (53)

فَغَشَّيْهَا مَا غَشَّى (54)

فِي أَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَى (55)

هَذَا تَذْوِيرٌ مِنَ التَّذْوِيرِ الْأُولَى (56)

^१ अर्थात् (यानी) किसी को इतना धन देता है कि उसे किसी की जरूरत नहीं होती और उसकी सभी जरूरतें पूरी हो जाती हैं। किसी को इतना धन दे देता है कि उस के पास जरूरत से ज्यादा बच जाता है और उसे जमा कर के रखता है।

^२ पालनहार तो वह हर चीज़ का है, यहाँ इस तारे का नाम इसलिए लिया है कि बरब के कुछ क़बीले उसकी उपासना (इबादत) करते थे।

५७. आने वाली घड़ी करीब आ गयी है ।

५८. अल्लाह के सिवाय उसका (सुकररर समय पर खोल) दिखाए वाला दूसरा कोई नहीं ।

५९. तो क्या तुम इस बात पर आश्चर्य (ताज्जुब) करते हो?

६०. और हंस रहे हो, रोते नहीं?

६१. (बल्कि) तुम खेल रहे हो ।

६२. अब अल्लाह के सामने सज्दे करो (नत-मस्तक हो जाओ) और (उसी की) इवादात करो।

सूरतुल क़मर-५४

सूर: क़मर* मक्का में नाज़िल हुई, इस में पचपन आयतें और तीन रूकूअ हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

१. क़यामत करीब आ गई और चाँद फट गया।

२. ये अगर कोई चमत्कार (मोजिजा) देखते हैं तो मुँह फेर लेते हैं और कह देते हैं कि ये पहले से चला आता हुआ जादू है ।

أَزْفَتِ الْأَرْفَاقُ ٥٧

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ٥٨

أَلَيْسَ هَذَا الْحَدِيثُ لَكُمْ عَجَبٌ ٥٩

وَكُفَّحَتُمْ وَلَا تَبْكُونَ ٦٠

وَأَنْتُمْ سِيدُونَ ٦١

فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ٦٢

سُورَةُ الْقَمَرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِفْكَرَيْتِ السَّاعَةَ وَأَنْشَقَّ الْقَمَرُ ١

وَلَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعْرَضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ

مُسْتَوْرٌ ٢

* यह भी उन सूतों में से है जिसे रसूलुल्लाह ﷺ ईद की नमाज में पढ़ा करते थे, जैसाकि पहले बयान हो चुका ।

१ यह वह चमत्कार (मोजिजा) है जो मक्कावासियों की माँग पर दिखाया गया, चाँद के दो हिस्से हो गये यहाँ तक कि लोगों ने हिरा पहाड़ को उस के बीच देखा, यानी उसका एक हिस्सा पहाड़ के उस तरफ और एक हिस्सा इस तरफ हो गया । (सहीह बुखारी, मनाकिबुल अंसार) सभी पहले और बाद के विद्वानों (आलिमों) की यही राय है । (फतहूल कदीर) इमाम इब्ने कसीर लिखते हैं: "आलिमों के करीब इस बात पर इत्तेफाक है कि चाँद के दो हिस्से नबी ﷺ के युग में हुए और यह आप ﷺ के स्पष्ट (वाजेह) चमत्कारों में से है, सही हदीस इसको वाजेह करती है ।"

३. और उन्होंने झुठलाया और अपनी इच्छाओं का अनुसरण (इत्तेबा) किया और हर काम निश्चित समय पर ही निर्धारित (मुकरर) है।

४. बेशक उन के पास वे खबरें आ चुकी हैं जिन में डांट-फटकार (वाली शिक्षा) है।

५. और पूरी हिक्मत की बात है, लेकिन इन डरावनी बातों ने भी कोई फ़ायदा न दिया।^१

६. (तो हे नबी!) तुम उन से मुँह फेर लो जिस दिन एक पुकारने वाला नापसन्द चीज़ की तरफ पुकारेगा।

७. ये झुकी आँखों से क़ब्रों से इस तरह उठ खड़े होंगे कि जैसे वह फैला हुआ टिड्डी दल है।^२

८. पुकारने वाले की तरफ दौड़ते होंगे और काफ़िर कहेंगे कि यह दिन तो बड़ा कठिन है।

९. उन से पहले नूह की क़ौम ने भी हमारे बंदे को झुठलाया था और पागल बताकर झिड़क दिया था।

१०. तो उस ने अपने रब से दुआ की कि मैं बेसहारा हूँ तू मेरी मदद कर।

११. तो हमने आक़श के दरवाज़ों को मूसलाधार बारिश से खोल दिया।^३

وَكَلَّمَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَآتَيْنَاهُم مِّنْ لَّدُنَّا آيَاتٍ ۚ وَلَقَدْ أَهْوَاءَهُمْ وَكُلَّ أَمْرٍ مُّسْتَعْتَبٍ ۝۳

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْآكِبَاءِ مَا فِيهِ مُرْدَجَةٌ ۝۴

حِكْمَةٌ بِاللَّغَةِ فَمَا لَنِ النَّذِيرُ ۝۵

فَتَوَكَّلْ عَلَيْهِمْ يَوْمَ تَكُفَّ الْأَعْيُنُ إِلَىٰ آسَافٍ ۝۶

تَكْوِينٍ ۝۶

خُسْفًا أَبْصَارُهُمْ يَبْتَغُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ ۝۷

كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ۝۷

مُهْطِعِينَ إِلَىٰ النَّعَاقِ يُقُولُ الْكَافِرُونَ هَذَا ۝۸

يَوْمٍ عَسِيرٍ ۝۸

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا عَبْدَنَا وَقَالُوا ۝۹

مَجْنُونٌ وَازْدُجِرَ ۝۹

كَدَمًا رَبِّيَ إِنِّي مَغْلُوبٌ فَأَبْتَصِرُ ۝۱۰

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّطَهَّرٍ ۝۱۱

१ यानी अल्लाह ने जिस के लिए दुर्भाग्य (बदबख्ती) लिख दिया है और उस के दिल पर मोहर लगा दी है, उसे पैगम्बरों की चेतावनी (तन्वीह) क्या फ़ायदा दे सकती है? इसे तो डराना न डरना बराबर वाली बात है।

२ यानी क़ब्रों से निकलकर वह ऐसे फैलेंगे और हिसाब की जगह की तरफ इतनी तेज़ चाल से जायेंगे कि जैसे टिड्डी दल हो जो फ़ौरन अंतरिक्ष में फैल जाता है।

३ यानी बहुत बहुत ज़्यादा जोरदार मंत्र बहने के मतलब में आता है। कहते हैं कि चालीस दिन तक लगातार घोर वर्षा होती रही।

१२. और धरती से चरमों को जारी कर दिया तो उस काम के लिये जो तक्दीर में लिख दिया गया था (दोनों) पानी जमा हो गया ।

१३. और हम ने उसे पटरों और कीलों वाली नाव पर सवार कर लिया ।¹

१४. जो हमारी आँखों के सामने चल रही थी । बदला उसकी तरफ से जिस का कुफ़ किया गया था ।

१५. और बेशक हम ने इस घटना (वाक़ेआ) को निशानी बनाकर बाक़ी रखा, तो है कोई नसीहत हासिल करने वाला ।

१६. तो (बताओ) मेरा अज़ाब और मेरी डराने वाली बातें कैसी रही?

१७. और बेशक हम ने क़ुरआन को समझने के लिए आसान कर दिया है,² तो क्या कोई नसीहत हासिल करने वाला है?

१८. आद के समुदाय ने भी झुठलाया तो कैसा हुआ मेरा अज़ाब और मेरी डराने वाली बातें ।

وَقَدَّرْنَا لِلْأَرْضِ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاء عَلَى أَمْرٍ
قَدٍّ قَدِيرٍ ﴿١٢﴾

وَصَلَّيْنَاهُ عَلَى ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسُرٍ ﴿١٣﴾

تَجْرِي بِأَعْيُنِنَا جَزَاءً لِمَن كَانَ كُفِرًا ﴿١٤﴾

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا آيَةً قَهْلَ مَنْ كُفِرًا ﴿١٥﴾

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ﴿١٦﴾

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ قَهْلَ مَنْ كُفِرًا ﴿١٧﴾

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرٍ ﴿١٨﴾

¹ दसरा (दुसुर) (दिसार) का बहुवचन (जमा) है, वह रस्सियाँ जिन से नवका के तख़्ते बांधे गये या वह कीलों और खूटियाँ जिन से नवका को जोड़ा गया ।

² यानी उस के मायने और मतलब को समझना, उस से नसीहत हासिल करना और उसे याद करना हम ने आसान बना दिया है । हकीकत यह है कि पाक क़ुरआन अपने चमत्कार, (मोज़िज़े) असर और भाषा शैली के बिना पर सब से ऊँची किताब होने के बावजूद कोई इंसान तनिक भी ध्यान दे तो वह अरबी व्याकरण (ग्रामर) और भाषा शैली की किताबों पढ़े बिना भी उसे आसानी से समझ लेता है । इसी तरह यह दुनिया की सिर्फ़ एक किताब है जो एक-एक शब्द (लफ़्ज़) याद कर ली जाती है, नहीं तो छोटी से छोटी किताब को भी इस तरह याद कर लेना और उसे याद रखना बड़ा कठिन है, अगर इंसान अपने मन और दिमाग के दरवाज़े खोलकर उसे नसीहत की आँखों से पढ़े, नसीहत के कानों से सुने और समझने वाले दिल से उस पर विचार करे तो लोक-परलोक (दुनिया-आख़िरत) की झुञ्चनसीबी के दरवाज़े उस पर खुल जाते हैं और यह उस के दिल की गहराईयों में उतरकर कुफ़्र और पाप की सभी गंदमियों को साफ़ कर देता है ।

१९. हम ने उन पर तेज लगातार चलने वाली हवा एक लगातार मन्हूस दिन में भेज दी।

२०. जो लोगों को उठा-उठाकर पटक देती थी, जैसेकि वे जड़ से कटे खजूर के पेड़ हैं।

२१. तो कैसा रहा मेरा अजाब और मेरा डराना?

२२. और बेशक हम ने कुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

२३. समूद के समुदाय ने (भी) डराने वालों को झूठलाया।

२४. और कहने लगे कि क्या हमीं में से एक इंसान का हम अनुगमन (पैरवी) करने लगे? तब तो हम जरूर बुराई और पागलपन में पड़े हुए होंगे।

२५. क्या हम सब के बीच सिर्फ उसी पर प्रकाशना (बह्यी) नाज़िल की गयी? नहीं, बल्कि वह झूठा गर्व (फख़) करने वाला है।

२६. अब सब जान लेंगे कल को कि कौन झूठा और घमंडी था?

२७. बेशक हम उनकी परीक्षा के लिए ऊँटनी भेजेंगे, तो (हे स्वालेह!) तू उनका इतेज़ार कर और सब्र कर।

२८. और उन्हें खबर कर दे कि पानी उन में बटवारा है, हर एक अपने फेरे पर हाज़िर होगा।

२९. तो उन्होंने अपने साथी को पुकारा, जिस ने (ऊँटनी पर) हमला किया और (उसकी) कोचें काट दीं।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَبِيرٍ ١٩

تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أُصْحَابُ بُخَيْرٍ مُّذْقَرٍ ٢٠

كَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِي ٢١

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّذَكِّرٍ ٢٢

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ٢٣

فَقَالُوا أَبَشْرًا مِّمَّنَّا وَاجِدًا لِّتَّبِعَةَ إِنَّا إِدْرَاكُنْ فَصَلِّ وَسَلِّمْ وَنَسُوا ٢٤

ءَالِئِئِذٍ ذُكِّرُوا عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ كُذِّبُوا ٢٥

سَيَعْلَمُونَ عَذَابَ كَذِّبِ الْإِشْرَارِ ٢٦

إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَهُمْ فَارْتَبِعْهُمْ وَاصْطَبِرْ ٢٧

وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ شِرْبٍ مُحْتَضَرٌ ٢٨

فَنَادُوا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ ٢٩

। मुराद है कि हर एक का हिस्सा उस के साथ ही खास है जो अपनी-अपनी वारी पर हाज़िर होकर हासिल करे, दूसरा उस दिन न आवे, شَرِبَ (शिर्ब) पानी का हिस्सा।

३०. तो कैसा हुआ मेरा अजाब और मेरा डराना ।

३१. हम ने उन पर एक चीख (तेज आवाज) भेजी तो वे ऐसे हो गये जैसे बाड़ बनाने वाले की रौंदी हुई घास ।

३२. और हम ने नसीहत हासिल करने के लिए कुरआन को आसान कर दिया है, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

३३. लूत के समुदाय (क्रौम) ने भी डराने वालों को झूठलाया ।

३४. वेशक हम ने उन पर पत्थर की बारिश करने वाली हवा भेजी, सिवाय लूत (عليه السلام) के परिवार वालों के, उन्हें सुबह के वक्त^२ हम ने सुरक्षा (मुक्ति) अता कर दी ।^३

३५. अपनी कृपा (फ़ज़ल) से ! हर शुक्रगुजार को हम इसी तरह बदला देते हैं ।

३६. वेशक उस (लूत) ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया था, लेकिन उन्होंने डराने वालों के बारे में शक और झुब्हा और झगड़ा किया ।

३७. और लूत (عليه السلام) को उन के मेहमानों के बारे में वहलाना चाहा तो हम ने उनकी आंखें अंधी कर दी, (और कह दिया) मेरा अजाब और मेरा डराना चखो ।

كَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِي ③٠

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمَسْتَوْرِ ③١

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ③٢

كَذَّيْتُمْ كَوْمَ لُوطٍ بِالنُّذُرِ ③٣

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ لُوطٍ إِنَّا جَعَلْنَا لُوطَ بْنَ مَرْيَمَ إِسْمًا ③٤

رَبْعَةً مِنْ عِنْدِنَا كَذَلِكَ نَجْزِي مَنْ شَكَرَ ③٥

وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ ③٦

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ صَيفِيهِ فَطَسَّنَا أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذُرِي ③٧

^१ خطيرة (हजीरह) مطهورة (महजूरह) के मतलब में है, यानी बाड़ जो सूखी लकड़ियों और झाड़ियों से जानवरों के लिए बनाई जाती है। हशिम (हशीम) सूखी घास या कटी हुई सूखी खेती यानी जैसे एक बाड़ बनाने वाले की सूखी लकड़ियाँ और झाड़ियाँ लगातार रोंदे जाने से चूरा-चूरा हो जाती है ऐसे ही वह हमारे अजाब से चूर-चूर हो गये ।

^२ आले लूत से मुराद खुद ईशूदत लूत (عليه السلام) और उन पर ईमान लाने वाले लोग हैं, जिन में लूत की पत्नी शामिल नहीं, क्योंकि वह ईमान नहीं लाई थी। हाँ, लूत की दो बेटियाँ उन के साथ थी, जिनको नजात दी गई। सर (सहर) से मुराद रात का आखिरी हिस्सा है ।

^३ यानी उनको अजाब से बचाना हमारी दया (रहमत) और अनुग्रह (फ़ज़ल) था जो उन पर हुआ ।

३८. और तय बात है कि उन्हें सुबह ही एक जगह पर पकड़ने वाले निर्धारित (मुकरर) अजाब ने बरबाद कर दिया।

وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُسْتَقِرٌّ ﴿٣٨﴾

३९. तो मेरे अजाब और मेरे डराने (चेतावनी) का मजा चखो।

فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذْرِي ﴿٣٩﴾

४०. और वेशक हम ने कुरआन को शिक्षा और नसीहत के लिए आसान कर दिया है, तो क्या है कोई नसीहत हासिल करने वाला?

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدْرِكٍ ﴿٤٠﴾

४१. और फिर औनियों के पास भी डराने वाले आये।

وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النَّذْرُ ﴿٤١﴾

४२. उन्होंने हमारी सभी निशानियों को झुठलाया, तो हम ने उन्हें बड़ा ज़बरदस्त और शक्तिशाली पकड़ने वाले की तरह पकड़ लिया।

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٤٢﴾

४३. (हे मक्कावालो!) क्या तुम्हारे काफिर उन काफिरों से कुछ बेहतर है? या तुम्हारे लिए पहले की किताबों में छुटकारा लिखा हुआ है?

أَلْقَارِكُمْ خَيْرٌ مِنْ أُولَئِكَ أَمْ لَكُمْ بَرَاءَةٌ فِي الزُّبُرِ ﴿٤٣﴾

४४. क्या यह कहते हैं कि हम गालिब होने वाले लोग (जमाअत) हैं।

أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَبِيحٌ مُنتَصِرٌ ﴿٤٤﴾

४५. करीब ही यह समूह पराजित किया जायेगा और पीठ दिखाकर भागेगा।

سَيَهْرَمُ الْجَبِيحُ وَيُولُونَ الدُّبُرَ ﴿٤٥﴾

४६. बल्कि क़यामत (प्रलय) की घड़ी उन के वादा का समय है, और क़यामत बहुत कठिन और बड़ी कड़वी चीज़ है।^१

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهَىٰ وَأَمَرٌ ﴿٤٦﴾

^१ इस सूरह में पाक कुरआन को आसान बनाने की चर्चा बार-बार करने से उद्देश्य (मकसद) यह है कि कुरआन को याद कर लेना और समझने को आसान कर देना अल्लाह का बड़ा अनुग्रह (एहसान) है। उस के शुक्रिये से इंसान को कभी मुंह फेरने वाला नहीं होना चाहिए।

^२ زُبُر (ज़ुबुर) से मुराद पिछले अम्बिया (ईशूतों) पर नाज़िल किताबें (धर्मशास्त्र) हैं, यानी क्या तुम्हारे बारे में पहले की नाज़िल किताबों में साफ़ कर दिया गया है कि यह अरब या कुरैश जो इच्छा हो करते रहें, उन पर कोई प्रभावशाली (गालिब) नहीं होगा।

^३ أَمْ (अमर) | أَمْ (अदहा) | نَعَا (दहाअ) से बना है, घोर अपमानकारी (सख्त ज़लील करने वाला)।

५७. बेशक पापी (मुजरिम) भटकावे में और यातना में है ।

إِنَّ الْجُورِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ﴿٤٧﴾

५८. जिस दिन वे अपने मुंह के बल आग में घसीटे जायेंगे (और उन से कहा जायेगा) नरक की आग लगने का मजा चखो ।^१

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ﴿٤٨﴾

५९. बेशक हम ने हर चीज को एक (निर्धारित) अंदाजा पर पैदा किया है ।^२

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ﴿٤٩﴾

५०. और हमारा हुक्म केवल एक बार (का एक लफ्ज) ही होता है, जैसे पलक का झपकना ।

وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَفِجٍ بِالنَّاصِرِ ﴿٥٠﴾

५१. और हम ने तुम जैसे बहुतों को हलाक कर दिया है, तो कोई है नसीहत हासिल करने वाला ।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ﴿٥١﴾

५२. और जो कुछ उन्होंने (कर्म) किये हैं सब कर्मपत्र (आमाल नामा) में लिखे हुए हैं ।

وَكُلُّ شَيْءٍ وَفَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾

५३. (इसी तरह) हर छोटी-बड़ी बात लिखी हुई है ।

وَكُلُّ صَوْرَةٍ لَّا تُكْمَلُ بِمَنْسَطَرٍ ﴿٥٣﴾

५४. बेशक परहेजगार लोग जन्नत और नहरों में होंगे ।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ﴿٥٤﴾

५५. सच्चाई और इज्जत की बैठक में सामर्थ्य (कुदरत) वाले मालिक के पास ।

فِي مَقْعَدٍ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

مَرَارَةٍ (मरारह) से है, बहुत कड़वा, यानी यह दुनिया में जो कल्ल किये गये, बन्दी बनाये गये आदि, उन का आखिरी अजाब नहीं, बल्कि और भी कड़ी यातनायें उन्हें कयामत के दिन दी जायेंगी जिस का उन से बादा किया जाता है ।

^१ سَقَرَ (सकर) भी नरक का नाम है, यानी उसकी गर्मी और अजाब की कड़ाई का मजा चखो ।

^२ अइम्मये सुन्नत (इस्लामी धर्म के विशेषज्ञों) ने इस आयत और इस तरह की दूसरी आयतों से अल्लाह के कदर (किस्मत के लिखे) को साबित किया है, जिसका मतलब यह है कि अल्लाह तआला को सृष्टि (मखलूक) के पैदा करने से पहले ही सबका इल्म था और उस ने सब की तकदीर लिख दिया है और कद्रिया सम्प्रदाय (फिरका) का खण्डन (तरदीद) किया है जो सहाबा के युग (दौर) के आखिर में जाहिर हुआ ।

सूरतुरहमान-५५

सूर: रहमान* मदीने में नाज़िल हुई, इस में अदठहत्तर आयतें और तीन रूकूअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. दयालु (रहमान) ने।
२. कुरआन सिखाया।
३. उसी ने इंसान को पैदा किया।
४. उसे बोलना सिखाया।
५. सूरज और चाँद (निर्धारित) हिसाब से है।
६. और तारे और पेड़ दोनों सज्दा करते हैं।
७. उसी ने आसमान को ऊँचा किया और उसी ने तराजू रखी।
८. ताकि तुम तौलने में हद पार (उल्लंघन) न करो।
९. और इंसान के साथ तौल सही रखो और तौल में कम न दो।
१०. और उसी ने सृष्टि (मखलूक) के लिए धरती बिछायी।

سُورَةُ الرَّحْمٰنِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الرَّحْمٰنِ ①

عَلَّمَ الْقُرْآنَ ②

خَلَقَ الْاِنْسَانَ ③

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ④

الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ بِحُسْبَانٍ ⑤

وَالنَّجْمِ وَالشَّجَرِ يَسْجُدْنَ ⑥

وَالسَّابَّأَةُ رُفَعَهَا وَاَوْضَعَ الْيُسْبَانَ ⑦

اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْيُسْبَانَ ⑧

وَاَنْتُمْ اِلَآئِدَانِ بِالْوِزْنِ بِالْقِسْطِ وَلَا تُمْسِكُوا بِالْيَمَانِ ⑨

وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِالْاَنْبَا ⑩

* इस सूर: को लोगों ने मदीने (मदीने में नाज़िल) माना है, लेकिन सही यह है कि यह मक्की (मक्के में नाज़िल) है। (फ़तहूल कदीर)

† यानी अल्लाह के मुक़र्रर किये हिसाब से अपनी-अपनी जगहों पर चल रहे हैं, उसके खिलाफ नहीं करते।

११. जिस में मेवे हैं और गुच्छे वाले खजूर के पेड़ हैं।^१

१२. और भूसा वाला अनाज है^२ और सुगन्धित (खुशबूदार) फूल हैं।

१३. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।^३

१४. उस ने इंसान को खंखनाती मिट्टी से पैदा किया जो ठिकरी की तरह थी।^४

१५. और जिन्नात को आग की लपट से पैदा किया।

१६. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।^५

१७. वह रब है दोनों पूरबों और दोनों पश्चिमों का।^६

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَلْمَامِ (۱۱)

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ (۱۲)

فَيَا اَيُّ الْاِيَّةِ رَبِّكُمْ تَكْفُرُونَ (۱۳)

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ (۱۴)

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ لَّاهٍ (۱۵)

فَيَا اَيُّ الْاِيَّةِ رَبِّكُمْ تَكْفُرُونَ (۱۶)

رَبُّ الشَّرْقَيْنِ وَرَبُّ الْبَغْرَيْنِ (۱۷)

१ (अकमाम) (किम्म) का बहुवचन (जमा) है, खजूर पर चढ़ा हुआ आवरण (पर्दा)।

२ (हब्ब हब्ब (दाना) से मुराद हर वह खाने वाली चीज है जो इंसान और जानवर खाते हैं, सूखकर उसका पौधा भूसा बन जाता है जो जानवरों के काम आता है।

३ यह इंसान और दानव (जिन्न) दोनों से संबोधन (खिताब) है। अल्लाह अपने एहसानों को गिना कर उन से सवाल कर रहा है। यह बार-बार कहना उस इंसान की तरह है जो किसी पर लगातार एहसान करे, किन्तु वह उस के एहसान का इंकार करता हो, जैसे कहे कि मैंने तेरा अमुक-अमुक (पला-पला) काम किया, क्या तू इंकार करता है? अमुक-अमुक चीज तुझे दी, क्या तुझे याद नहीं? तुझे पर अमुक एहसान किया, क्या तुझे हमारा तनिक भी ध्यान नहीं? (फतहल कदीर)

४ (सलसाल) सूखी मिट्टी जिस में आवाज हो। (फखार) आग में पकी मिट्टी, जिसे ठीकरी कहते हैं। उस इंसान से मुराद हजरत आदम हैं, जिनका पहले मिट्टी से पतला बनाया गया और फिर अल्लाह ने उस में आत्मा (रूहें) फूँकी, फिर उनकी बायीं पसली से 'हब्बा' को पैदा किया, फिर इन दोनों से इंसानी वंश चला।

५ यानी तुम्हारी यह पैदाईश और फिर तुम से ज्यादा वंशों की पैदाईश और अधिकता भी अल्लाह के एहसानों में से है, क्या तुम इस एहसान का इंकार करोगे?

६ एक गर्मी का पूरब और एक जाड़े का पूरब, इसी तरह पश्चिम है। इसलिए दोनों को द्विवचन

१८. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿١٨﴾

१९. उस ने दो दरिया प्रवाहित (जारी) कर दिये जो एक-दूसरे से मिल जाते हैं।

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ﴿١٩﴾

२०. उन दोनों के बीच एक आड़ है कि उस से बढ़ नहीं सकते।

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ﴿٢٠﴾

२१. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٢١﴾

२२. उन दोनों में से मोती और मूंगे निकलते हैं।

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾

२३. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٢٣﴾

२४. और अल्लाह ही की (मिल्कियत में) है वह (जहाज) जो समुद्रों में पहाड़ की तरह ऊँचे (खड़े हुए) चल रहे हैं।

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَعْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٢٤﴾

२५. तो (हे इंसानों और जिन्नो!) तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।^१

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمَا تُكذِّبِينَ ﴿٢٥﴾

२६. धरती पर जो कुछ भी है सब नद्वर (फ़ानी) है।

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ﴿٢٦﴾

२७. केवल तेरे रब का मुँह (बजूद) जो महान और बाइज़त है, बाकी रह जायेगा।

وَيَبْقَى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ ﴿٢٧﴾

(तसनीया) बयान किया है। ऋतुओं (मौसम) के अनुसार पूरब और पश्चिम के भिन्न होने में भी इस में जिन्नों और इंसानों के बहुत से फायदे हैं, इसलिए इसे भी एहसान कहा गया है।

^१ الْجَوَارِ (अलजवार) جَارِيَةٌ (जारियह) चलने वाली का बहुवचन (जमा) है और छिपे मौसम السُّنُونِ (नवकार्य) का विशेषण (सिफत) है। مَرْفُوعَات का मतलब है, ऊँची की हुई, मतलब पाल (बादवान) है, जो हवा पोतों में झंडों के बराबर ऊपर और ऊँची बनाई जाती है। कुछ ने इसका मतलब निर्मित (मसूज) किया है, यानी अल्लाह की बनाई हुई जो समुद्रों में चलती है।

^२ इन के द्वारा (ज़रिये) भी यातायात और भारवाहन की जो सहुलतें हासिल हैं उसे बताने की ज़रूरत नहीं, इसलिए यह भी अल्लाह की बड़ी अनुकम्पा (नेमत) है।

२८. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمَا تَكْذِبِينَ ﴿٢٨﴾

२९. सब आकाश और धरती वाले उसी से मांगते हैं, हर दिन वह एक काम में है ।^१

يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ط كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ﴿٢٩﴾

३०. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمَا تَكْذِبِينَ ﴿٣٠﴾

३१. (हे जिन्नों और इंसानों के गिरोहो!) जल्द ही हम तुम्हारी तरफ पूरी तरह आकर्षित (मुतवज्जिह) हो जायेंगे ।^२

سَنَفَعُكُمْ لَكُمْ آيَةَ الثَّقَلَيْنِ ﴿٣١﴾

३२. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

فِي أَيِّ آيَةٍ رَبِّكُمَا تَكْذِبِينَ ﴿٣٢﴾

३३. (हे जिन्नों और इंसानों के गिरोहो!) अगर तुम में आकाशों और धरती के किनारों से निकलने की ताकत है तो निकल भागो, बिना गल्बा (और ताकत) के तुम नहीं निकल सकते ।^३

يَمْشُرَ الْبِحْرَيْنِ وَالْإِنْسِ إِنْ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوا وَلَا تَنْفُذُونَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ﴿٣٣﴾

^१ प्रतिदिन (हर दिन) का मायने हर पल (क्षण) | شان (शान) का मतलब काम और विषय, यानी हर समय वह कुछ न कुछ करता रहता है, किसी को रोगी बना रहा है तो किसी को सेहतमंद, किसी को अमीर बना रहा है तो किसी अमीर को गरीब, किसी को रंक (भिखारी) से राजा तो किसी को राजा से रंक, किसी को ऊँचा मनसब (पदासीन) दे रहा है तो किसी को नीचे गिरा रहा है और किसी को फना (नारित) और फना को बक्रा (आस्ता) दे रहा है आदि (वगैरह) । संक्षेप (मुख्तसर) में दुनिया में यह सब बदलाव उसी के हुक्म और मर्जी से हो रहे हैं और रात दिन का कोई ऐसा पल नहीं जो उसकी शान से खाली हो ।

^२ इसका मतलब यह नहीं कि अल्लाह को फरागत (अवकाश) नहीं, बल्कि यह मुहाबरे के रूप में कहा गया है, जिसका मकसद (उद्देश्य) धमकी देना और फटकारना है । تَنْفُذُونَ सकलान (जिन्न और इंसान को) इसलिए कहा गया है कि उन्हें शरीअत के पालन का पाबंद किया गया है, इस रुकावट और भार से दूसरी मखलूक (सृष्टि) अलग है ।

^३ अल्लाह की लिखी-तकदीर और फ़ैसले से बचकर तुम कहीं भाग सकते हो तो चले जाओ, लेकिन यह ताकत किस में है, और भाग कर जायेगा कहां? कोई जगह ऐसी है जो अल्लाह के अधिकार से बाहर हो? यह भी धमकी है जो उपर बयान की गई धमकी की तरह एहसान है । कुछ ने कहा कि यह महशर के मैदान में कहा जायेगा जब फरिश्ते हर तरफ से लोगों को घेर रखे होंगे, दोनों ही मायने अपनी जगह पर सही हैं ।

३४. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾

३५. तुम पर आग के शोले और धुआँ छोड़ा जायेगा फिर तुम मुकाबला न कर सकोगे।

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شَوْابُ مِثْلِ نَارٍ كَالَّذِي لَا يُرَىٰ عَلَيْهِ سَافِرٌ فَسَوَاءٌ كَذَّبْتُمَا أَمْ لَمْ تَكُنْ لَهُ مَالًا فَسَأَلَ لَعْنَةُ رَبِّكُمَا الْكٰفِرِينَ ﴿٣٥﴾

३६. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾

३७. फिर जबकि आकाश फटकर लाल हो जायेगा, जैसा कि लाल (मुलायम) चमड़ा हो।^१

وَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ﴿٣٧﴾

३८. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٨﴾

३९. उस दिन किसी इंसान और किसी जिन्न से उस के पापों की पूछताछ न की जायेगी।

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ وَلَا جَانٌّ ﴿٣٩﴾

४०. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

४१. पापी केवल अपने हुलिया से ही पहचान लिये जायेंगे^२ और उन के माथों के बाल और पैर पकड़ लिए जायेगे।

يَعْرِفُ الْمَجْرُمُونَ سِيسِمَهُمْ فَيُؤَخَّدُونَ بِالْوَأصِي وَالْأَقْدَامِ ﴿٤١﴾

४२. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٢﴾

४३. यह है वह नरक जिसे अपराधी (मुजरिम) झूठा मानते थे।

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا الْمَجْرِمُونَ ﴿٤٣﴾

^१ कयामत (प्रलय) के दिन आसमान फट जायेगा, जमीन पर फरिस्ते उतर आयेंगे, उस दिन यह आसमान जहन्नम की आग की सख्त तपिश (ताप) से पिघलकर लाल चमड़े की तरह हो जायेगा, لَحْمًا लाल चमड़ा।

^२ यानी जिस तरह इंसानबालों का निशान होगा कि उन के बजू के अंग चमकते होंगे, उसी तरह पापियों के मुँह काले होंगे, आँखें नीली और वे डरे हुए होंगे।

४४. उस के और गर्म उबलते पानी के बीच चक्कर खायेंगे ।

४५. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

४६. और उस इंसान के लिए जो अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा, दो जन्नत है ।^१

४७. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

४८. दोनों जन्नतें बहुत डालियों (और शाखाओं) वाली हैं ।

४९. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

५०. उन दोनों (स्वर्गों) में दो बहने वाले चरमे (जलस्रोत) हैं ।^२

५१. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

५२. उन दोनों (स्वर्गों) में हर तरह के मेवों के जोड़े (दो तरह) होंगे ।

५३. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

५४. जन्नत में रहने वाले ऐसे फ़र्शों पर तकिये लगाये हुए होंगे जिन के अस्तर मोटे रेशम के होंगे, और उन दोनों जन्नतों के मेवे बहुत क़रीब होंगे ।

يَطْوُونَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ ۝٤٤

فِي أَيِّ آيَةِ رَبِّكُمَا تَكْذِبِينَ ۝٤٥

وَلَيْسَ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّاتٍ ۝٤٦

فِي أَيِّ آيَةِ رَبِّكُمَا تَكْذِبِينَ ۝٤٧

ذَوَاتًا أَفْئَاتٍ ۝٤٨

فِي أَيِّ آيَةِ رَبِّكُمَا تَكْذِبِينَ ۝٤٩

فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرِينِ ۝٥٠

فِي أَيِّ آيَةِ رَبِّكُمَا تَكْذِبِينَ ۝٥١

فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجِينَ ۝٥٢

فِي أَيِّ آيَةِ رَبِّكُمَا تَكْذِبِينَ ۝٥٣

مُتَّكِنِينَ عَلَى فُؤُوسٍ بَاطِنُهَا مِنْ اسْتَبْرَقٍ ۝٥٤

وَجَنَّاتٍ الْجَنَّتَيْنِ دَاخِلٍ ۝٥٤

^१ हदीस में आता है कि दो बाग चांदी के हैं जिन के बर्तन और सभी चीजें चांदी की होंगी और दो बाग सोने के हैं और उस के बर्तन और सब चीजें सोने ही की होंगी । (सहीह बुखारी, तफसीर सूर: अर्रहमान) कुछ कथनों (हदीसों) में है कि सोने के बाग खास ईमानवालों (समीपवर्तियों) के लिए होंगे और चांदी के बाग आम ईमानवालों के लिए होंगे । (इब्ने कसीर)

^२ एक का नाम 'तस्नीम' और दूसरे का 'सत्सबील' है ।

५५. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

५६. वहाँ (शमीली) नीची निगाहें वाली हूरें हैं, जिन्हें उन से पहले किसी जिन्न और इंसान ने हाथ न लगाया होगा ।¹

५७. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

५८. वे (हूरें) मणि (याकूत) और मूंगे की तरह होंगी ।

५९. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

६०. एहसान का बदला एहसान (प्रतिफल) के सिवाय क्या है ?²

६१. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

६२. और उन के सिवाय दो जन्नतों और है? ³

६३. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

६४. जो दोनों गाढ़े हरे रंग की स्याही मायल हैं ।

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ﴿٥٥﴾

فِيهِنَّ قُصُورٌ الطَّرْبُ لَمْ يَطْمِئِنَّ رُسُ
قَمَبَهُمْ وَلَا جَانِ ﴿٥٦﴾

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ﴿٥٧﴾

كَالْحُمَّى الْيَاكُوتِ وَالسَّرَّجَانِ ﴿٥٨﴾

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ﴿٥٩﴾

هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ﴿٦٠﴾

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ﴿٦١﴾

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَيْنِ ﴿٦٢﴾

فِي آيِ الْآءِ رَبِّكُمْ تَكْذِبِينَ ﴿٦٣﴾

مُذَهَبَتَيْنِ ﴿٦٤﴾

¹ यानी कुबारी होगी, इस से पहले वह किसी के विवाह में नहीं रही होगी, यह आयत और इस से पहले की कुछ आयतों से साफ तौर से मालूम होता है कि जो जिन्न ईमानवाले होंगे वे भी ईमान वाले इंसानों की तरह जन्नत में जायेंगे, और उन के लिए भी वही होगा जो दूसरे ईमानवालों के लिए होगा ।

² पहले एहसान से मुराद नेक काम और अल्लाह के हुक्म का पालन (पैरवी) है और दूसरे एहसान से उसका बदला यानी जन्नत और उसकी सुख-सुविधायें (ऐबो आराम) है ।

³ دُونِهِمَا से यह मतलब भी निकाला गया है कि यह दो भाग फ़ज़ीलत और अजमत में पहले दो बागों से, जिनकी चर्चा आयत न० ४६ में गुज़री, कमतर होंगे ।

६५. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

६६. उन में दो (तेज चाल से) उबलने वाले जलस्रोत (चश्मों) हैं ।

६७. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

६८. उन दोनों में मेवे और खजूर और अनार होंगे ।

६९. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

७०. उन में अच्छे चरित्र (किरदार) वाली खूबसूरत औरतें हैं ।^१

७१. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

७२. (गोरे रंग की) हूरें (अप्सरायें) जन्नत के खेमों में रहने वाली हैं ।

७३. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

७४. उन (हूरों) को कोई इंसान और जिनन ने इस से पहले हाथ नहीं लगाया (उन से नहीं मिला) ।

७५. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।

فِي آيَاتِنَا لَعْنَةُ رَبِّكَ لِمَا كَذَّبْتُمْ عَنْهَا

فِيهَا عَيْنَانِ مُضْتَلِّتَانِ

فِي آيَاتِنَا لَعْنَةُ رَبِّكَ لِمَا كَذَّبْتُمْ عَنْهَا

فِيهَا قَائِمَةٌ وَتَخْلُ وَرُمَّانٌ

فِي آيَاتِنَا لَعْنَةُ رَبِّكَ لِمَا كَذَّبْتُمْ عَنْهَا

فِيهِنَّ حَيْرَاتٌ حِسَانٌ

فِي آيَاتِنَا لَعْنَةُ رَبِّكَ لِمَا كَذَّبْتُمْ عَنْهَا

حُورٌ مُّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ

فِي آيَاتِنَا لَعْنَةُ رَبِّكَ لِمَا كَذَّبْتُمْ عَنْهَا

لَمْ يَطْمِئِنَّ قُلُوبَهُمْ وَلَا جِانٌ

فِي آيَاتِنَا لَعْنَةُ رَبِّكَ لِمَا كَذَّبْتُمْ عَنْهَا

^१ حَيْرَاتٌ से मुराद अखलाक (आचरण) और किरदार (स्वभाव) की अच्छाईयाँ हैं और حिसान का मतलब खूबसूरती और ज़ीनत (शोभा) में बेमिसाल ।

७६. हरे गहों और सुन्दर विछौनों पर तकिये लगाये होंगे ।^१

७७. तो तुम अपने रब के किन-किन उपकारों (नेमतों) को झुठलाओगे ।^२

७८. बड़ा शुभ है तेरे प्रतापवान (जलाल वाले) और इज्जत वाले रब का नाम ।^३

सूरतुल वाक़िअः-५६

सूरः वाक़िअः* मक़का में नाज़िल हुई और इस में छियानवे आयते और तीन रूकूअ है ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है ।

१. जब क्रयामत (प्रलय) क्रययम हो जायेगी ।

२. जिसके घटित होने में कोई झूठ नहीं ।

३. वह ऊँच-नीच करने वाली होगी ।

४. जबकि धरती भूकम्प (जलजला) के साथ हिला दी जायेगी ।

مُكَيِّمِينَ عَلَى رُفُوفٍ خُضِرَ وَعَبَقَرِي
حَسَانٍ 76

فِي آيِ الْآةِ رَبِّكُمْ كَذَّابِينَ 77

تَبَرَّكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ 78

سُورَةُ الْوَاقِعَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ 1

لَيْسَ لِقَوْمِهَا كَادِبَةٌ 2

خَافِضَةٌ رَافِعَةٌ 3

إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًا 4

^१ رُفُوفٍ (रुफरुफ) गद्दा, गालीचा या इस तरह का अच्छा विछौना, عَبَقَرِي (अबकरी) हर अच्छी और कीमती चीज को कहा जाता है । नबी ﷺ ने यह शब्द हजरत उमर के लिये इस्तेमाल किया । «قَلِمَ أَرَعَبْرًا بِعَرِي قَرِي» - «मैंने कोई अबकरी (श्रेष्ठ) ऐसा नहीं देखा जो उमर की तरह काम करता हो ।» (सहीह अल-बुखारी, किताबुल मनाक़िब)

^२ यह आयत इस सूरः में ३१ वार आई है, अल्लाह ने इस आयत में अपने कई तरह के उपहारों (नेमतों) की चर्चा की है, और हर एक या कुछ उपहारों की चर्चा के बाद यह सवाल किया है ।

* इस सूरः के बारे में मशहूर है कि यह सूरतुल गिना (सम्पन्नता की सूरः) है और जो इंसान इसे हर रात को पढ़ेगा उसे कभी भूखमरी नहीं आयेगी । किन्तु हकीकत में इस सूरः के महत्व (अहमियत) में कोई सहीह हदीस नहीं है, हर रात पढ़ने तथा बच्चों को सिखाने की हदीसों भी जईफ़ वल्कि बनावटी हैं । देखिये (अल-अहादीसुज्जईफ़ा, लिल अलवानी हदीस न० २८९, २९०, भाग १/४५७)

५. और पहाड़ बिल्कुल कण-कण (रेजा-रेजा) कर दिये जायेंगे ।

وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ۝٥

६. फिर वह बिखरी धूल की तरह हो जायेंगे ।

فَكَانَتْ حَبًّا مَّنْثَرًا ۝٦

७. और तुम तीन गुटों में बंट जाओगे ।

وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ۝٧

८. तो दाहिने हाथ वाले कैसे अच्छे हैं, दाहिने हाथ वाले ।^१

فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحَابُ

الْمَيْمَنَةِ ۝٨

९. और बायें हाथ वाले, क्या हाल है बायें हाथ वालों का ।^२

وَأَصْحَابُ الشُّعْبَةِ مَا أَصْحَابُ

الشُّعْبَةِ ۝٩

१०. और जो आगे वाले हैं वे तो आगे वाले ही हैं ।^३

وَالشَّاقِقُونَ الشَّاقِقُونَ ۝١٠

११. वह बिल्कुल नजदीकी हासिल (प्राप्त) किये हुए हैं ।

أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ۝١١

१२. ऐश व आराम वाले स्वर्गों में हैं ।

فِي بَحْتِ التَّجْوِيمِ ۝١٢

१३. (बहुत बड़ा) गुट तो पहले लोगों में से होगा ।

ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ۝١٣

१४. और थोड़े से पिछले लोगों में से ।^४

وَقَلِيلٌ مِنَ الْآخِرِينَ ۝١٤

१५. (ये लोग) सोने के तारों से बुने हुए तद्दतों पर ।

عَلَى سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ۝١٥

^१ इस से साधारण (आम) ईमानवाले मुराद हैं जिन को उन के कर्मपत्र (आमालनामा) दायें हाथ में दिये जायेंगे, जो उनकी खुशनसीबी का निशान होगा ।

^२ इस से अभिप्राय (मुराद) काफिर हैं, जिनको उन के आमालनामा बायें हाथ में दिये जायेंगे ।

^३ इन से मुराद खास ईमान वाले हैं । यह तीसरा प्रकार (क्रिस्म) है, जो ईमान लाने में आगे और नेकी के कामों में बड़ चढ़कर हिस्सा लेने वाले हैं, अल्लाह उन्हें खास समीपता (नजदीकी) देगा । यह वाक्य (जुमला) ऐसा ही है जैसे बोलते हैं कि तू तू है और ज़ैद ज़ैद, इस में जैसाकि ज़ैद की अहमियत और उसकी प्रधानता (अजमत) का बयान है ।

^४ ۝ (सुल्लः) उस बड़े गिरोह को कहा जाता है जिसकी गिनती असंभव (नामुमकिन) हो ।

१६. एक-दूसरे के सामने तकिया लगाये बैठे होंगे ।^१

१७. उन के करीब ऐसे लड़के जो हमेशा (लड़के ही) रहेंगे, आया-जाया करेंगे ।

१८. प्याले और सुराही लेकर और मदिरा का प्याला लेकर जो छलकते मदिरा से भरा हो ।

१९. जिस से न सिर में चक्कर हो और न अक्ल खराब हो ।^२

२०. और ऐसे भेवे लिए हुए जिसे वे पसन्द करें।

२१. और पक्षियों के गोश्त जो उन्हें (बहुत) मजेदार हों ।

२२. और बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरें ।

२३. जो छिपे हुए मोतियों की तरह हैं ।

२४. यह बदला है उन के कर्मों (अमल) का ।

२५. न (वे) वहाँ बेकार की बात सुनेंगे और न पाप की बात ।

२६. केवल सलाम ही सलाम (शान्ति ही शान्ति) की आवाज होगी ।^३

مُتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَّقِلِينَ ①⑥

يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ①⑦

بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقٍ هَٰ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ①⑧

لَّا يَصَدَّ عَنْهُنَّ أَنتُهُنَّ وَلَا يَمْنُرُونَّ ①⑨

وَكَأَكْهِبَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ②⑦

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ②⑧

وَخُودٍ عِينٍ ②⑨

كَأَمْثَالِ الْكَوْكُبِ ②⑩

جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ②⑪

لَّا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْتِيهِمْ ②⑫

إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ②⑬

^१ याने और जड़े हुए, यानी उक्त (मज्जकूरा) जन्मती सोने के तारों से बुने और जवाहरों से जड़े हुए तख्तों पर एक-दूसरे के सामने तकियों पर बैठे होंगे ।

^२ صِدَاعٌ (सुदाअ) सिर के ऐसे दर्द को कहते हैं जो शराब के नशे के सबब हो । إِرَابٌ (इनजाफ) का मतलब वह अक्ल का बिगाड़ है जो नशे की वजह से हो । दुनिया की शराब से यह दोनों बातें होती हैं । परलोक (आखिरत) की शराब में खुशी और मजा तो जरूर होगा लेकिन यह खराबियाँ नहीं होंगी । مَعِينٌ (मअीन) बहते सोत (चरमा) जो सूखता न हो ।

^३ यानी दुनिया में तो आपस में लड़ाई-झगड़े होते हैं, यहाँ तक कि बहन-भाई भी इससे सुरक्षित (महफूज) नहीं । इस मतभेद (इख्तिलाफ) और झगड़े से दिलों में मैल और दुश्मनी पैदा होती है, जो एक-दूसरे के खिलाफ बुरे शब्द, गाली-गलोज और चुगली बगैरह पर इंसान को उकसाती

२७. और दाहिने हाथ वाले क्या ही अच्छे हैं,
दाहिने हाथ वाले ।

२८. वे बिना कांटों के बैर,

२९. और तह पर तह किलों,

३०. और लम्बी-लम्बी छाओं,

३१. और बहता पानी,

३२. और बहुत ज्यादा फलों में,

३३. जो न खत्म हों, न रोक लिये जायें,

३४. और ऊँचे-ऊँचे फर्शों पर होंगे ।

३५. हम ने उन (की पत्नियों) को खास तौर से बनाया है ।

३६. और हम ने उन्हें कुंवारियाँ बना दिया है ।

३७. प्रेम करने वालियाँ बराबर उम्र की हैं ।

وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ۚ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۚ (27)

فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ (28)

وَطَلْحٍ مُنْقُودٍ (29)

وَوَيْلٍ مُّندُودٍ (30)

وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ (31)

وَأَكْهَبَةٍ كَثِيرَةٍ (32)

لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ (33)

وَفُرشٍ مُّرفُوعَةٍ (34)

إِنَّا أَنشَأْنَهُنَّ إِنشَاءً (35)

فَجَعَلْنَهُنَّ أَبْكَارًا (36)

عُرُبًا أَتْرَابًا (37)

है । जन्मत इन तमाम नैतिक (अखलाकी) गदगियों और बुराई से न केवल पाक होगी बल्कि वहाँ सलाम ही सलाम की अवाजेँ सुनने में आयेगी, फरिश्तों की तरफ से भी और एक-दूसरे जन्नतियों की तरफ से भी, जिसका मतलब यह है कि वहाँ सलाम और एहतेराम तो होगा लेकिन मन और क्रौल की वह खराबियाँ नहीं होंगी, जो दुनिया में आम हैं यहाँ तक कि बड़े-बड़े मजहबी पेन्ना भी इन से महफूज नहीं ।

1. غُرُبٌ यह غُرُوبَة का बहुवचन (जमा) है, यानी ऐसी नारी जो अपनी खूबसूरती, जीनत और दूसरे गुणों (सिफत) की वजह से अपने पति की बहुत प्रिय हो । اَتْرَابٌ यह اَتْرَابٌ का बहुवचन है हम उम्र यानी जन्नतियों की पत्नियाँ सभी एक उम्र की होंगी, जैसा कि हदीस में बयान किया गया है कि सब जन्मती ३३ साल की उम्र के होंगे । (तिर्मिजी, बाबु माजाअ फी सिन्ने अहलिल जन्न्ते) यह भी मतलब हो सकता है कि अपने पतियों के उम्र के बराबर होंगी, दोनों का मतलब एक ही है ।

३८. दाहिने हाथ वालों के लिए हैं ।

لَأَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٣٨﴾

३९. (बहुत) बड़ा गिरोह है पहले लोगों में से ।

ثُمَّ مِنَ الْأُولَىٰ ﴿٣٩﴾

४०. और (बहुत) बड़ा गिरोह है पिछलों में से।

وَتِلْكَ مِنَ الْآخِرِينَ ﴿٤٠﴾

४१. और बायें हाथ वाले क्या हैं; बायें हाथ वाले ।^१

وَأَصْحَابِ الشِّمَالِ مِمَّا
أَصْحَابِ الشِّمَالِ ﴿٤١﴾

४२. गरम हवा और गरम पानी में (होंगे) ।

فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ﴿٤٢﴾

४३. और काले धुयें की छाया में ।

وَأظِلُّونَ مِنْ تَحْتِهِمْ ﴿٤٣﴾

४४. जो न ठंडी है, न सुखद ।

وَلَا يَأْتِيهِمْ
الْحَارِثُ وَلَا الْكَرِيمُ ﴿٤٤﴾

४५. बेशक ये लोग इससे पहले बहुत खुशहाली में पले हुए थे ।

إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ﴿٤٥﴾

४६. और महापापों पर इसरार करते थे ।

وَكَانُوا يُصِرُّونَ عَلَى الْحِنثِ الْعَظِيمِ ﴿٤٦﴾

४७. और कहते थे कि क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी और हड्डी हो जायेंगे, तो क्या हम बोबारा जिन्दा करके खड़े किये जायेंगे ।

وَكَانُوا يَقُولُونَ أَآبَاؤُنَا وَآبَاؤُنَا
وَأَبْنَاؤُنَا كَانُوا يُسْرِئُونَ ﴿٤٧﴾

४८. और क्या हमारे बाप-दादा भी?^२

أَوْ آبَاؤُنَا الْأُولُونَ ﴿٤٨﴾

४९. (आप) कह दीजिए कि बेशक सब अगले और पिछले ।

ثُمَّ إِنَّ الْأُولَىٰ وَالْآخِرِينَ ﴿٤٩﴾

^१ इस से अभिप्राय (मुराद) नरकवासी है, जिनको उन के कर्मपत्र (आमालनामा) बायें हाथ में पकड़ाये जायेंगे, जो उन की बदकिस्मती की अलामत होगी ।

^२ इस से मालूम हुआ कि परलोक (आखिरत) के ईमान का इंकार ही कुफ्र, शिर्क और पापों में तीन रहने की असल वजह है । यही बात है कि जब आखिरत का तसव्वुर (कल्पना) उस के मानने वालों के विचार में धुंधला जाती है तो उन में दुराचार और बुराई बहुत हो जाती है, जैसे आजकल आम तौर से मुसलमानों की हालत है ।

५०. जरूर जमा किये जायेंगे एक निर्धारित (मुकरर) दिन के समय ।

لَسَجْمُوعُونَ لِمَالِي وَمِثْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٥٠﴾

५१. फिर तुम हे भटके लोगो, झुठलाने वालो!

ثُمَّ إِنَّكُمْ أَنتُمْ الظَّالِمُونَ السَّكَدُونَ ﴿٥١﴾

५२. जरूर खाने वाले हो जककूम (थूहड़) का पेड़ ।

لَا يَكُونُ مِنْ شَجَرٍ مِنْ زُقُومٍ ﴿٥٢﴾

५३. और उसी से पेट भरने वाले हो ।

فَبَالِقُونَ مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿٥٣﴾

५४. फिर उस पर गर्म उबलता हुआ पानी पीने वाले हो ।

فَشَرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ﴿٥٤﴾

५५. फिर पीने वाले भी प्यासे ऊंटों की तरह ।¹

فَشَرِبُونَ شُرْبَ الْهَيْبِ ﴿٥٥﴾

५६. कयामत के दिन उनकी मेहमानी यही है ।²

هَذَا نُذِئُهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ﴿٥٦﴾

५७. हम ने ही तुम सब को पैदा किया है, फिर तुम क्यों नहीं मनाते?

نَحْنُ خَلَقْنَاكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ﴿٥٧﴾

५८. अच्छा फिर यह तो बताओ कि जो वीर्य (मनी) तुम टपकाते हो ।

أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُمْنُونَ ﴿٥٨﴾

५९. क्या उस से (इंसान) तुम बनाते हो या सप्टा (खालिक) हम ही हैं?³

وَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَهَا أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ ﴿٥٩﴾

¹ हीम (हीम) का बहुवचन (जमा) है, उन प्यासे ऊंटों को कहा जाता है जो एक खास बीमारी की वजह से पानी पर पानी पीते जाते हैं लेकिन उनकी प्यास नहीं जाती । मतलब यह है कि जककूम खाकर पानी भी वैसे ही नहीं पियोगे जो साधारण (आम) ढंग से होता है, बल्कि एक तो सजा के रूप में तुम्हें पीने के लिए खौलता पानी मिलेगा, दूसरे तुम उसे प्यासे ऊंट की तरह पीते ही चले जाओगे लेकिन तुम्हारी प्यास दूर नहीं होगी ।

² यह सजाक के तौर पर फरमाया : नहीं तो मेहमानी तो वह होती है जो मेहमान के एहतेराम के लिये किया जाता है । जैसे कुछ जगहों पर फरमाया :

(فَيُرْتَمَى بِمَنْدَابِ الْهَيْمِ)

«उन को दुखदायी अजाब की खुशखबरी सुना दो ।» (आले इमरान-२१)

³ यानी तुम्हारी पत्नियों से संभोग (जिभाअ) के नतीजे में तुम्हारे वीर्य (मनी) की जो बूँद स्त्रियों के गर्भाशय (रिहम) में जाती है, उन से इंसानी रूप रेखा बनाने वाले हम हैं या तुम?

६०. हम ही ने तुम में मौत को मुकद्दर कर दिया है और हम उस से हारे हुए नहीं हैं ।

६१. कि तुम्हारी जगह पर तुम जैसे दूसरे पैदा कर दें और तुम्हें नये रूप से (उस दुनिया में) पैदा करें जिस से तुम (हमेशा) अन्जान हो ।

६२. और तुम्हें निश्चित रूप (यकीनी तौर) से पहले जन्म का ज्ञान (इल्म) भी है, फिर नसीहत क्यों नहीं हासिल करते?

६३. अच्छा फिर यह भी बताओ कि तुम जो कुछ बोते हो ।

६४. उसे तुम ही उगाते हो या हम उगाने वाले हैं ।

६५. अगर हम चाहें तो उसे कण-कण कर दें और तुम ताज्जुब के साथ बातें बनाते ही रह जाओ ।

६६. कि हम पर तो दण्ड (सजा) ही पड़ गया ।

६७. बल्कि हम तो पूरी तरह से वंचित (महरूम) ही रह गये ।

६८. अच्छा यह बताओ कि जिस पानी को तुम पीते हो ।

६९. उसे बादलों से भी तुम ही ने उतारा है या हम बारिश करते हैं ।

७०. अगर हमारी इच्छा हो तो हम उसे कड़ुवा (जहर) कर दें फिर तुम हमारा शुक्रिया क्यों नहीं अदा करते?²

نَحْنُ قَدَرْنَا بَيْنَكُمْ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِسَبِقُونَ ﴿٦٠﴾

عَلَىٰ أَنْ يُبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ فِي مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦١﴾

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُولَىٰ فَلَوْلَا تَتَذَكَّرُونَ ﴿٦٢﴾

أَكْرَمَكُمْ مَا تَحْكُمُونَ ﴿٦٣﴾

ءَأَنْتُمْ تَزْرَعُونَ ؕ أَمْ نَحْنُ الزَّارِعُونَ ﴿٦٤﴾

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ حُطًا مَّا تَلَّكُمْ تَفْهَمُونَ ﴿٦٥﴾

إِنَّا لَنَعْرَمُونَ ﴿٦٦﴾

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ﴿٦٧﴾

أَكْرَمَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ﴿٦٨﴾

ءَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ﴿٦٩﴾

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَاهُ آجَا فَلَولا تَشْكُرُونَ ﴿٧٠﴾

¹ यानी जमीन में तुम जो बीज बोते हो वह एक पौधा बनकर उगता है । अन्न के एक बेजान दाने को फाड़कर और धरती की छाती को चीरकर इस तरह पेड़ उपजाने वाला कौन है? यह भी वीर्य (मनी) की बूंद से इंसान बना देने की तरह हमारे ही सामर्थ्य (कुदरत) की कलाकारी है या तुम्हारी किसी कोशिश या छू मंतर का नतीजा है?

² यानी इस अनुग्रह (नेमत) पर हमारे हुक्म का पालन (पैरवी) करके हमारा व्यवहारिक (अमली) शुक्रिया क्यों अदा नहीं करते?

७१. अच्छा यह भी बताओ कि जो आग तुम सुलगाते हो।

७२. उस के पेड़ को तुम ने पैदा किया है या हम उस के पैदा करने वाले हैं ?

७३. हम ने उसे नसीहत हासिल करने का साधन (जरिया) और यात्रियों के फ्रायेदा की चीज बनाई है।

७४. तो अपने महान (अजीम) रब के नाम की तस्वीह बयान किया करो।

७५. तो मैं क्रसम खाता हूँ सितारों के गिरने की।

७६. और अगर तुम्हें इल्म हो तो यह बहुत बड़ी क्रसम है।

७७. कि बेशक यह कुरआन बड़ी इज्जत वाला है।

७८. जो एक महफूज किताब में (लिखित) है।

७९. जिसे केवल पाक लोग ही छू सकते हैं।^१

८०. यह सारी दुनिया के रब की तरफ से नाज़िल किया गया है।

८१. तो क्या तुम ऐसी बात को साधारण (और हकीर) समझ रहे हो?

أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ﴿٧١﴾

ءَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنشِئُونَ ﴿٧٢﴾

نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذَكُّرًا وَرَمَاحًا لِلْمُقِيمِينَ ﴿٧٣﴾

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾

فَلَا أَقْسَمُ بِمَوْجِجِ النُّجُومِ ﴿٧٥﴾

وَإِنَّهُ لَكَسَمٌ لِّوَسْلَمُونَ عَظِيمٌ ﴿٧٦﴾

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ﴿٧٧﴾

فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ﴿٧٨﴾

لَا يَشْفَعُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ﴿٧٩﴾

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٨٠﴾

أَفَبِهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُذْهِبُونَ ﴿٨١﴾

^१ فَلَأَقْسَمُ में 'ला' ज्यादा है, जो बल देने के लिये है या यह ज्यादा नहीं है बल्कि पहले की किसी चीज को नकारने के लिए है, यानी यह कुरआन ज्योतिष (कहानत) या शायरी नहीं, बल्कि मैं तारों के गिरने की क्रसम लेकर कहता हूँ कि यह कुरआन इज्जत वाला है। मुवाजिह मुवाजिहों से मुराद तारों के निकलने और डूबने की जगह और मदार (धुन्न) है।

^२ لَا يَشْفَعُ में सर्वनाम (जमीर) लौहे महफूज की तरफ फिरता है, पाक लोगों से मुराद फरिश्ते हैं। कुछ ने उसको कुरआन की तरफ फिराया है यानी उसे फरिश्ते ही छूते हैं, यानी आकाश पर फरिश्तों के सिवा किसी की भी पहुँच कुरआन तक नहीं होती। मतलब मुशरकीन का खंडन (तरदीद) है जो कहते थे कि कुरआन बैतान लेकर उतरते हैं, अल्लाह ने फरमाया यह कैसे मुमकिन है, यह कुरआन बैतानी असर से हमेशा महफूज है।

८२. और अपने हिस्से में यही लेते हो कि झुठलाते फिरो ।

८३. तो जब कि (जान) गले तक पहुँच जाये ।

८४. और तुम उस समय (आँखों से) देखते रहो।

८५. और हम उस इंसान से तुम्हारे मुकाबले में ज्यादा करीब होते हैं, लेकिन तुम नहीं देख सकते ।

८६. तो अगर तुम किसी की आज्ञा (इताअत) के अधीन (मातहत) नहीं ।

८७. और उस क़ौल में सच्चे हो तो तनिक उस प्राण (रूह) को तो लौटाओ ।

८८. तो जो कोई भी (अल्लाह के दरबार में) करीब होगा ।^२

८९. उसे तो सुख है और खाना है और सुखदायी जन्नत है ।

९०. और जो इंसान दाहिने हाथ वालों में से है।^३

وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَكْثَرَ ثَلَاثِينَ ۝۸۲

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُقُوفَ ۝۸۳

وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْظُرُونَ ۝۸۴

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا تُبْصِرُونَ ۝۸۵

فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ۝۸۶

تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝۸۷

فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ۝۸۸

فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتْ نَجِيمٌ ۝۸۹

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝۹۰

^१ यानी मरने वाले के हम तुम से भी ज्यादा करीब होते हैं, अपने इल्म, कुदरत और दर्शन (वसीरत) की बुनियाद पर, या हम से मुराद अल्लाह के कार्यकर्ता (कारकुन) यानी मौत के फरिश्ते हैं जो उसका प्राण (रूह) निकालते हैं ।

^२ सूर: के शुरू में कर्मों (अमल) के अनुसार इंसानों के जो तीन भेद (क्लिस्म) बयान किये गये थे, उनका दोबारा बयान किया जा रहा है, यह उनकी पहली क्लिस्म है जिन्हें मुकर्रबीन के सिवा साबिकीन (अग्रणि) भी कहा जाता है, क्योंकि वह नेकी के हर काम में आगे होते हैं, ईमान लाने में भी दूसरों से आगे होते हैं और अपने इन्हीं गुणों (सिपतों) की वजह से वह अल्लाह के दरबार के समीपवर्तियों (मुकर्रबीन) में होते हैं ।

^३ यह दूसरा दर्जा है, साधारण (आम) इंसानवाले । यह भी नरक से बचकर जन्नत में जायेंगे लेकिन पदों (ओहदों) में साबिकीन (पहले के लोगों) से कमतर होंगे । मौत के समय उनको भी फरिश्ते शान्ति (सलामती) की खुशखबरी देते हैं ।

९१. तो भी सलाम है तेरे लिए कि तू दाहिने वालों में से है।

९२. लेकिन अगर कोई झुठलाने वाले पथभ्रष्टों (गुमराहों) में से है।^१

९३. तो खौलते हुए पानी से मेहमानी है।

९४. और नरक में जाना है।

९५. यह (खबर) सरासर हक और बिल्कुल निश्चित (यक़ीनी) है।

९६. तो तू अपने (बड़े अर्जाम) रब के नाम की पवित्रता (पाकीजगी) वयान कर।^२

सूरतुल हदीद-५७

सूर: हदीद मदीने में नाजिल हुई और इस में उन्तीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. आकाशों और धरती में जो कुछ है (सभी) अल्लाह की तस्बीह (महिमागान) कर रहे हैं, और वह शक्तिशाली (गालिब) हिक्मत वाला है।

२. आकाशों और धरती का राज्य (मुल्क) उसी का है, वही जिंदगी देता है और मौत भी, और वह सभी चीज़ पर क़ादिर है।

قَسَلَّمَ لَكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ 91

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكْفَرِينَ
الصَّالِينَ 92

فَكُرْءٍ مِنْ حَيْمِهِ 93

وَأَنْصَلِيَهُ جَحِيمٍ 94

إِنَّ هَذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِينِ 95

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ 96

سُورَةُ الْحَدِيدِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحْ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ 1

لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يُحْيِي
وَيُمِيتُ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ 2

¹ यह तीसरा दर्जा है जिन्हें सूरह के शुरू में أصحاب النعمة "असहाबुल मशअम:" कहा गया था, बायें हाथ वाले या अशुभ (नहुसत) वाले। यह अपने कुफ्र और पाखंड (सरक़बी) की सज़ा या उसका अशुभ, नरक की यातना (अजाब) के रूप में भुगतेंगे।

² हदीस में आता है कि दो शब्द (कनिमा) अल्लाह को बहुत प्यारे हैं, वोलेन में हल्के और तौल में भारी हैं। «سبحان الله وبحمده سبحان الله العظيم» (सहीह बुखारी, आखिरी हदीस और सहीह मुस्लिम, किताबुज़ जिज़, धाबु फ़जलित तहलील वतस्वीह वहुआ।)

३. वही पहला है और वही आखिरी, वही खुला है और वही छिपा,^१ और वह हर चीज को अच्छी तरह जानने वाला है।

४. वही है जिसने आकाशों और धरती को छः दिन में पैदा किया, फिर अर्ध पर बलंद हुआ, वह (अच्छी तरह) जानता है उस चीज को जो धरती में जाये और जो उस से निकले, और जो आकाश से नीचे आये और जो कुछ चढ़कर उस में जाये और जहाँ कहीं तुम हो वह तुम्हारे साथ है^२ और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह देख रहा है।

५. आकाशों और धरती का राज्य उसी का है, और सभी काम उसी की ओर लौटाये जाते हैं।

६. वही रात को दिन में दाखिल कराता है और वही दिन को रात में दाखिल कराता है, और सीनों में छिपी हुई बातों का वह पूरा इल्म (ज्ञान) रखने वाला है।

७. अल्लाह पर और उस के रसूल (सन्देश) पर ईमान ले आओ और उस माल में से खर्च करो जिस में अल्लाह ने तुम्हें (दूसरों का) वारिस बनाया है,^३ तो तुम में से जो ईमान लायें और खर्च करें उन्हें बहुत बड़ा पुण्य (अब्ज) मिलेगा।

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۗ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٣﴾

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۗ يَعْلَمُ مَا يَلْبِغُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا ۗ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٤﴾

لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ﴿٥﴾

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۗ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ﴿٦﴾

آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْقُضُوا أَيْمَانَكُمْ ۗ كُنْتُمْ حَافِظِينَ فِيهَا لِلَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْقُضُوا لَهُمْ أَيْمَانَكُمْ كَيْفَ تَعْلَمُونَ

^१ वही पहला है यानी उस से पहले कुछ न था, वही आखिरी है, जिस के बाद कोई चीज नहीं होगी। वही जाहिर है यानी सब पर प्रभुत्वशाली (गालिब) है, उस पर कोई प्रभुत्व (गल्वा) नहीं रखता। वही बातिन है, यानी बातिन की सभी बातें केवल वही जानता है या लोगों की आंखों और बुद्धियों (अक्लों) से छिपी है। (फतहूल कदीर)

^२ यानी तुम जल में हो या धल में, रात हो या दिन, घरों में हो या जंगलों में, हर जगह पर हर समय वह अपने ज्ञान (इल्म) और कुदरत के आधार (बुनियाद) पर तुम्हारे साथ है, यानी तुम्हारे एक-एक कर्म (अमल) को देखता है, तुम्हारी एक-एक बात जानता और सुनता है। यही विषय सूरः हूद-३, सूरः रजद-१० और दूसरी आयतों में भी बयान किया गया है।

^३ यानी यह माल इस से पहले किसी दूसरे के पास था, इस में इस बात की तरफ इशारा है कि तुम्हारे पास भी यह धन नहीं रहेगा, दूसरे उस के वारिस बनेंगे, अगर तुम ने उसे अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं किया तो बाद में इस के वारिस उसे अल्लाह के रास्ते में खर्च करके तुम से ज्यादा सौभाग्य (सआदत) प्राप्त कर सकते हैं और अगर वह नाफरमानी में खर्च करेंगे तो तुम भी मदद करने के अपराध (जुर्म) में पकड़े जाओगे। (इब्ने कसीर)

८. तुम अल्लाह पर ईमान क्यों नहीं लाते? जबकि खुद रसूल तुम्हें अपने रब पर ईमान लाने की दावत दे रहा है और अगर तुम ईमानवाले हो तो वह तुम से मजबूत वादा भी ले चुका है।

९. वह (अल्लाह) ही है जो अपने वंदे पर स्पष्ट (वाज़िह) आयतें नाज़िल करता है ताकि वह तुम्हें अंधेरे से उजाले की तरफ ले जाये। बेशक अल्लाह (तआला) तुम पर शफ़कत, रहम करने वाला है।

१०. और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के रास्ते में खर्च नहीं करते? हकीकत में आकाशों और धरती की (सभी) मीरास (चीजों) का मालिक (अकेला) अल्लाह ही है। तुम में से जिन लोगों ने फ़तह से पहले अल्लाह के रास्ते में दिया है और जिहाद किया है वह (दूसरों के) बराबर नहीं, बल्कि उन से बहुत ऊँचे पद के हैं, जिन्होंने फ़तह के बाद दान किया और जिहाद किया। हाँ, भलाई का वादा तो अल्लाह तआला का उन सब से है,^१ और जो कुछ तुम (लोग) कर रहे हो उसे अल्लाह जानता है।

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالرَّسُولِ يَدْعُوكُمْ
لِأُمُومَاتٍ بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ

عُلَمَاءِ ۝ ٨

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ
لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَإِنَّ اللَّهَ

بِكُمْ لَرؤُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ ٩

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلِلَّهِ

مِيرَاتُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَا يَسْأَلُكُمْ مِنْكُمْ

كَمَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ النَّبِيِّ فَوَسَّلْنَا أَوْلِيَّكَ

أَعَظَمُ دَرَجَةً مِنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدُ

وَفَتَنُوا ۚ وَكَلَّا وَعَدَدَ اللَّهُ النَّسْفَةَ لِلَّهِ

بِمَا تَعْمَلُونَ خَيْرٌ ۝ ١٠

^१ फ़तह (विजय) से मुराद ज्यादातर मुफिस्सरो के करीब मक्का की विजय (फ़तह) है। कुछ ने हुदैबिया की सुलह को खुली विजय (फ़तह मदीना) मानकर उसे ही मुराद लिया है, जो भी हो, हुदैबिया सुलह या मक्का की विजय से पहले मुसलमान तादाद और ताक़त में कम थे और मुसलमानों की माली हालत भी बहुत कमज़ोर थी। इन हालातों में अल्लाह के रास्ते में खर्च करना और जिहाद में हिस्सा लेना बहुत कठिन और बड़े हिम्मत का काम था, जबकि मक्का विजय के बाद यह हालत बदल गई। मुसलमान ताक़त और तादाद में भी बढ़ते चले गये और उनकी आर्थिक दशा (माली हालत) भी पहले से कहीं अच्छी हो गई, इस में अल्लाह तआला ने दोनों ज़मानों के मुसलमानों के बारे में फ़रमाया कि यह नेकी में बराबर नहीं हो सकते।

^२ इस में साफ़ कर दिया कि सहाबा ॐ के बीच प्रतिष्ठा (फ़जीलत) और दर्जों में फ़र्क ज़रूर है, किन्तु दर्जों में फ़र्क का मतलब यह नहीं कि बाद के मुसलमान होने वाले सहाबा ॐ ईमान और नैतिकता (अख़लाक) में गये गुज़रे थे, जैसाकि कुछ लोग हज़रत मुआविया ॐ और उन के पिता और दूसरे ऐसे ही अज़मत वाले सहाबा के बारे में बुरा कलाम या उन्हें 'तुलका' कहकर उनकी तौहीन और अपमान (बेइज़ज़त) करते हैं। नबी ॐ ने सभी सहाबा के बारे में फ़रमाया : «لَا نَبِيَّاءَ أَحْسَبِي» मेरे सहाबा को अपशब्द (बुरा कलाम) न कही, कसम है उस शक्ति (जात) की जिस के हाथ में मेरी जान है, अगर तुम में से कोई ओहद पहाड़ जितना सोना भी अल्लाह की राह में खर्च कर दे तो वह मेरे सहाबा के एक मुद्द बल्कि आधे मुद्द (वज़न) के बराबर भी नहीं ॐ (सहीह बुखारी, मुस्लिम, किताबु फ़जाएलिसु सहाबा)

११. कौन है? जो अल्लाह (तआला) को अच्छी तरह से कर्ज़ दे, फिर अल्लाह (तआला) उस के लिए उस को बढ़ाता चला जाये और उसका अच्छा बदला साबित हो जाये।^१

१२. [क्रयामत (प्रलय) के] दिन तू देखेगा कि ईमानवाले मर्दों और औरतों का प्रकाश (नूर) उन के आगे-आगे और उन के दायें दौड़ रहा होगा।^२ आज तुम्हें उन स्वर्गों की खुशखबरी है, जिन के नीचे (ठंडे पानी) की नहरें बह रही हैं, जिनमें हमेशा रहेंगे, यह है बड़ी कामयाबी।

१३. उस दिन द्वयवादी (मुनाफिक) पुरुष और महिलायें ईमानवालों से कहेंगे कि हमारा इतेज़ार तो करो कि हम भी तुम्हारी रौशनी से कुछ रौशनी ले लें? जवाब दिया जायेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ और रौशनी की खोज करो, फिर उन के और उन के बीच एक दीवार क़ायम कर दी जायेगी, जिस में दरवाज़ा भी होगा, उस के भीतरी भाग में कृपा (रहमत) होगी और बाहरी भाग में यातना (अज़ाब) होगी।

१४. ये चिल्ला-चिल्ला कर उन से कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न धे? वे कहेंगे कि हाँ थे तो जरूर, लेकिन तुम ने अपने आप को भटकावे में डाल रखा था, और इतेज़ार में ही रहे और शक व शुब्हा करते रहे और तुम्हें तुम्हारी (बेकार) आकांक्षाओं (आरजूओं) ने धोखे में ही रखा, यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचा और तुम्हें अल्लाह के बारे में धोखा देने वाले ने धोखे में ही रखा।

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ﴿١١﴾

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرَاكُمُ الْيَوْمَ جَنَّتُ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٢﴾

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ لِلَّذِينَ آمَنُوا انظُرُوا وَاتَّخِذُوا مِنَّا نُورًا فَقَدِ ابْتَدَأُوا فَجْرًا بَيْنَهُمْ بِسُورَةٍ لَهُ بَابٌ مَبْطُورَةٌ فِيهِ الرِّصْمَةُ وَظَاهِرَةٌ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ﴿١٣﴾

يَتَّوَدُّونَهُمْ لَمَّا كَانُ مَعَكُمْ قَالُوا بَلَىٰ وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّبْتُمْ الْأَمَانِي حَتَّىٰ جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ وَغَزَّكُمْ بِأَنَّهُ الْغُرُورُ ﴿١٤﴾

^१ अल्लाह को अच्छा कर्ज़ देने का मतलब यह है कि अल्लाह के रास्ते में दान और नेकी करना।

^२ यह क्रयामत में पुल सिरात पर होगा, यह प्रकाश (नूर) उन के ईमान और नेकी के कर्मों (अमल) का बदला होगा, जिस के प्रकाश में वह जन्नत का रास्ता आसानी से तय कर लेंगे।

^३ यह मुनाफिक कुछ दूर ईमानवालों के साथ उन के प्रकाश में चलेंगे, फिर अल्लाह तआला मुनाफिकों पर अंधेरा अच्छादित (मुसल्लत) कर देगा, उस समय वे ईमानवालों से यह कहेंगे।

१५. तो आज न तुम से फ़िदिया (और न बदला) कुबूल किया जायेगा और न काफ़िरों से, तुम सब का ठिकाना नरक है, वही तुम्हारा साथी है^१ और वह बुरा ठिकाना है।

१६. क्या अब तक ईमानवालों के लिए समय नहीं आया कि उन के दिल अल्लाह की याद से और जो हक नाज़िल हो चुका है, उस से कोमल हो जायें, और उन लोगों की तरह न हो जायें जिन्हें इनसे पहले किताब दी गयी थी, फिर जब उन पर एक लम्बी मुदत खतम हो गई तो उन के दिल कठोर हो गये, और उन में ज़्यादातर फ़ासिक (अवज्ञाकारी) हैं।

१७. यकीन करो कि अल्लाह ही धरती को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है, हम ने तो तुम्हारे लिए अपनी निशानियाँ बयान कर दी ताकि तुम समझो।

१८. बेशक दान देने वाले पुरुष और महिलायें और जो अल्लाह को प्रेम (शुद्धता) के साथ कर्ज दे रहे हैं, उनके लिए यह बढ़ाया जायेगा,^२ और उन के लिए अच्छा (प्रतिफल एवं) अज़्र है।

१९. अल्लाह और उस के रसूल (सदेष्टा) पर जो ईमान रखते हैं, वही लोग अपने रब के करीब सच्चे और शहीद हैं, उन के लिए उनका बदला और उन की दिव्य ज्योति (नूर) है, और जो कुफ़र करते हैं और हमारी निशानियों को झुठलाते हैं वे नरकवासी (जहन्नमी) हैं।

فَالْيَوْمَ لَا يُطْعَمُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا مِنَ الَّذِينَ
كَفَرُوا مَا وَكُمُ النَّارُ هِيَ مَوْلَاكُمْ
وَيَلَسَ النَّصِيرُ ⑮

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوبُهُمْ
لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ وَلَا يَكُونُوا
كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ قَبْلُ فَكَالَ عَلَيْهِمُ
الْأَمْدُ فَكَسَتْ قُلُوبَهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ
فُاسِقُونَ ⑯

اعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمْ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ⑰

إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَّدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ
قَرْضًا حَسَنًا لِيُضْعِفَ لَهُمْ وَا لَهُمْ أَجْرٌ زَائِدٌ ⑱

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَئِكَ هُمُ
السَّادِقُونَ وَالشَّاهِدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ لَهُمْ
أَجْرُهُمْ وَأَنْزُورُهُمْ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ⑲

^१ उसको कहते हैं जो किसी के काम का संरक्षक (निगरी) यानी जिम्मेदार बने, मानो अब नरक ही इस बात की जिम्मेदार है कि उन्हें कड़ी से कड़ी यातना का मजा चखाये। कुछ कहते हैं कि सदा साथ रहने वाले को भी मौला कह लेते हैं, यानी अब नरक की आग ही हमेशा के लिए उनकी साथी तथा संगी होगी। कुछ कहते हैं कि अल्लाह नरक को भी अक्स और समझ देगा और वह काफ़िरों के खिलाफ गुस्सा और ताव दिखायेगा, यानी उनका साथी बनेगा और उन्हें दुखदायी यातना (अजाब) से दोचार करेगा।

^२ यानी एक के बदले कम से कम दस गुना और उससे ज़्यादा सात सौ गुना, बल्कि उस से भी ज़्यादा। यह अधिकता (इजाफा) मन की पाकी, ज़रूरत, जगह और वक्त के ऐतबार से हो सकती है। जैसे पहले बयान हुआ कि जिन लोगों ने मक्का विजय (फतह) से पहले खर्च किया वह नेकी और अज़्र में उन से ज़्यादा होंगे जिन्होंने उस के बाद खर्च किया।

२०. याद रखो कि दुनियावी जीवन केवल खेल और तमाशा और जीनत और आपस में फ़ख़ (और अहंकार) और माल और औलाद में एक-दूसरे से अपने आप को ज़्यादा बतलाना है, जैसे वर्षा और उसकी पैदावार किसानों को अच्छी लगती है, फिर जब वह सूख जाती है तो पीले रंग में उस को तुम देखते हो, फिर वह बिल्कुल चूरा-चूरा हो जाती है,^१ और आखिरत (परलोक) में सख़्त अज़ाब और अल्लाह की माफ़ी और खुशी है, और दुनियावी जिन्दगी केवल धोखे के सामान के सिवाय कुछ भी तो नहीं।

२१. (आओ) दौड़ो अपने रब की माफ़ी की तरफ़ और उस जन्नत की तरफ़ जिसकी चौड़ाई आकाश और धरती की चौड़ाई के बराबर है। यह उन के लिए बनायी गयी है जो अल्लाह पर और उस के रसूलों (सन्देशवाहकों) पर ईमान रखते हैं, यह अल्लाह की कृपा (रहमत) है जिसे चाहे अता करे, और अल्लाह बड़ा फ़ज़ल वाला है।

२२. न कोई कठिनाई (संकट) दुनिया में आती है^२ न विशेष तुम्हारी जानों पर,^३ लेकिन इस से पहले कि हम उस को पैदा करें वह एक खास किताब में लिखी हुई है।^४ बेशक यह काम

إِعْلَمُوا أَنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَزِينَةٌ وَتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَكِبْرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ مَا كُنْتُمْ عِنْدَ الْعَلَمَاءِ نَبَاتًا ثُمَّ يَجْعَلُ فِتْرَتَهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حَطَامًا وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَمَا مَخْفَىٰ مِنْ شَيْءٍ عِنْدَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْفُرُورِ ﴿٢٠﴾

سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ لَذِكِ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٢١﴾

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلِ أَنْ نَبْرَأَهَا إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٢٢﴾

^१ 'कुपफार' किसानों को कहा गया है, इसलिए कि इसका शाब्दिक अर्थ (लपजी भायने) है छिपाने वाला। काफ़िरों के दिलों में अल्लाह और आखिरत का इंकार छिपा होता है, इस वजह से उसे काफ़िर कहा जाता है, किसानों के लिए यह शब्द इस वजह से प्रयोग (इस्तेमाल) किया गया है कि वह भी धरती में बीज बोते यानी उन्हें छिपा देते हैं।

^२ यहाँ दुनियावी जीवन के जल्द ख़त्म हो जाने को खेती से मिसाल दी गई है कि जिस तरह खेती हरी होती है तो भली लगती है जिसे देखकर किसान बहुत खुश होते हैं, लेकिन वह जल्द ही सूखी और पीली होकर चूर-चूर हो जाती है। इसी तरह दुनिया की शोभा (जीनत) और सुन्दरता (ख़बसूरती), धन, औलाद और दूसरी चीज़ें इंसान का मन लुभाती हैं, लेकिन यह जीवन कुछ दिन ही का है, इसे भी स्थायित्व (हमेशगी) और करार नहीं।

^३ जैसे सूखा, बाढ़ और दूसरी धरती और आकाश की मुसीबतें।

^४ जैसे रोग, थकान, गरीबी बग़ैरह।

^५ यानी अल्लाह ने अपने इल्म के मुताबिक पूरी मख़लूक को पैदा करने से पहले ही यह सब बातें लिख दी, जैसे हदीस में है, नबी ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह ने आकाश और धरती के पैदा करने से पचास

अल्लाह (तआला) पर (बड़ा) आसान है ।

२३. ताकि तुम अपने से छिन जाने वाली चीज पर दुखी न हो जाया करो और न अता (प्रदान) की हुई चीज पर गर्व करने लगो^१ और इतराने वाले फख करने वालों से अल्लाह प्रेम नहीं करता ।

२४. जो (खुद भी) कंजूसी करे और दूसरों को (भी) कंजूसी की शिक्षा (तालीम) दें । (सुनो!) जो भी मुंह फेरे, अल्लाह बेनियाज और प्रशंसा (तारीफ) के लायक है ।

२५. बेशक हम ने अपने सदेष्टाओं (रसूलों) को खुली निशानियां दे कर भेजा और उन के साथ किताब और न्याय (तराजू) नाजिल किया^२ ताकि लोग इंसान पर बाकी रहें, और हम ने लोहे को भी नाजिल किया^३ जिस में बड़ी (हैवत और) ताकत है और लोगों के लिए दूसरे भी बहुत से फायदे हैं,^४ और इसलिए भी कि अल्लाह जान ले

لِكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ﴿٢٣﴾

الَّذِينَ يَبِخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ۗ وَمَنْ يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَرْشُ الْحَمِيمُ ﴿٢٤﴾

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۗ وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنْفَعٌ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ مَنْ يَنْصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۗ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢٥﴾

हजार साल पहले ही सभी तकदीर लिख दिया था ।» (सहीह मुस्लिम, किताबुल क़द्र)

- ^१ यहाँ जिस गम और खुशी से रोका गया है, यह वह गम और खुशी है जो इंसानों को नाजायज़ कामों तक पहुँचाती है, नहीं तो दुख पर गम और सुख पर खुशी एक फितरी बात है, लेकिन मोमिन दुख पर सब्र करता है कि अल्लाह की मर्जी और तकदीर का लिखा है, रोने-चिल्लाने से बदल नहीं सकता और सुख पर इतराता नहीं । अल्लाह का क़तज़ (शुक्रगुज़ार) होता है कि यह सिर्फ़ उस की कोशिश का फल नहीं बल्कि अल्लाह की दया और उसका एहसान है ।
- ^२ میزان मीज़ान (तुला) से मुराद इंसान है और मतलब यह है कि हम ने लोगों को इंसान करने का हुस्म दिया है, कुछ ने इसका अनुवाद (तर्जुमा) तराजू किया है, तराजू उतारने से अभिप्राय (मुराद) है कि हम ने तराजू की ओर लोगों को रास्ता दिखाया कि उस के द्वारा (जरिये) लोगों को तौलकर उनका पूरा-पूरा हक दो ।
- ^३ यहाँ भी उतारा का मायने है पैदा करना और उसकी कला सिखाना । लोहे से अनगिनत चीज़ें बनती हैं, यह सब अल्लाह के उस निर्देश (इल्हाम) और इरशाद का नतीजा है जो उस ने इंसान को किया है ।
- ^४ अस्त्र-इस्त्र (हथियार) के अलावा लोहे से और भी बहुत से सामान बनते हैं जो घरों और बहुत से उद्योगों में काम आते हैं, जैसे लूरी, चाकू, कैची, हथौड़ा, सुई, खेती, बड़ई और निर्माण (तामीर) आदि के सामान और छोटी बड़ी अनगिनत मशीनें और सामान ।

कि उसकी और रसूलों की मदद बिना देखे कौन करता है। बेशक अल्लाह (तआला) शक्तिशाली और सामर्थ्यवान (गालिब) है।

२६. बेशक हमने नूह और इब्राहीम (عليهما السلام) को (सन्देश) बनाकर भेजा और हम ने उन दोनों की औलाद में पैगम्बरी (दूतत्व) और किताब जारी रखी, तो उन में से कुछ रास्ते पर आये और उन में से बहुत ज़्यादा नाफरमान रहे।

२७. उन के बाद फिर भी हम लगातार अपने सन्देशों (रसूलों) को भेजते रहे और उनके बाद हम ने ईसा पुत्र मरियम को भेजा और उन्हें इंजील दी और उन के पैरोकारों के दिल में प्रेम और दया (रहम) का जजबा रख दिया,¹ हाँ बैराग तो उन्होंने खुद खोज लिया था² हम ने उन पर फ़र्ज़ नहीं किया था³ सिवाय अल्लाह की

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِي
دُورَتَيْهِمَا الشُّكْرَ وَالْكِتَابَ فَمِنْهُمْ مُهْتَدٍ
وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسْقُونَ ﴿٢٦﴾

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آدَامِهِمْ بُرُوسِنًا وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى
ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ الْإِنْجِيلَ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ
الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً وَرَهَابِنِيَّةً
لِيَسْتَذِخِرُوا مَا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَضْوَانِ
اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقًّا وَعَاقِبَتُنَا الَّذِينَ
أَسَاءُوا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسْقُونَ ﴿٢٧﴾

¹ رَأْفَةً (राफ़:) का मतलब है कोमलता, और रहमत का मतलब है दया। पैरोकारों से मुराद ईसा के साथी हवारी हैं, यानी उन के दिलों में एक-दूसरे के लिए प्यार और मुहब्बत का जजबा पैदा कर दिया, जैसे सहावा के राम एक-दूसरे से प्रेम मुहब्बत करने वाले थे। رَحْمَةً مِنْهُمْ। यहूदी इस तरह आपस में हमदर्दी नहीं रखते थे जैसे हजरत ईसा के मानने वाले थे।

² رَهَابِنِيَّةً (रहबानियत) رَهَاب (डर) से बना है या رَهَابَانٌ (रहबान) से संबंधित (मुताल्लिक) है। रहबानियत का मतलब बैराग है, यानी दुनिया से संबंध (तान्लुक) तोड़ कर जंगल में जाकर अल्लाह की इबादत करना, इसकी पृष्ठभूमि (पसमंजर) यह है कि ईशदूत ईसा के बाद ऐसे राजा हुए जिन्होंने तौरात और इंजील में बदलाव कर दिया जिसको एक गिरोह ने नहीं माना और राजा के डर से पहाड़ों और गुफा में पनाह लिया, यह उसका आरम्भ था, जिसका आधार मजबूरी थी। लेकिन बाद के लोगों ने अपने बड़ों के अंधे अनुसरण (तकलीद) में इस नगर त्याग को इबादत का एक नया ढंग बना लिया और खुद को गिरजाघरों और पूजा स्थलों (इबादतगारों) में बंद कर लिया और उस के लिये दुनिया के त्याग और बैराग को फ़र्ज़ कर लिया, उसी को अल्लाह ने اِبْرَاع (खुद गढ़ना) कहा है।

³ यह पिछली बात ही की पुष्टि (तसदीक) है कि यह बैराग उनका खुद बनाया हुआ था, अल्लाह ने उसकी इजाजत नहीं दी।

खुशी की खोज के' तो उन्होंने उस का पूरा पालन (इताअत) न किया, फिर भी हम ने उन में से जो ईमान लाये थे उन्हें उनका बदला दिया, और उन में ज्यादातर लोग अवज्ञाकारी (फ्रासिक) है।

२८. हे लोगो जो ईमान लाये हो, अल्लाह से डरते रहा करो और उस के सदेष्टा (रसूल) पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी दया (रहमत) का दुगुना हिस्सा देगा^२ और तुम्हें दिव्य ज्योति (नूर) देगा, जिस की रौशनी में तुम चलो-फिरोगे और (तुम्हारे पाप भी) माफ़ कर देगा, अल्लाह माफ़ (क्षमा) करने वाला दयावान (रहीम) है।

२९. यह इसलिए कि अहले किताब (ग्रन्थ वाले) जान लें कि अल्लाह की कृपा (फ़ज़ल) के किसी हिस्से पर भी उन्हें हक़ नहीं और यह कि सारी कृपा अल्लाह के हाथ में ही है, वह जिसे चाहे दे और अल्लाह (तआला) ही बड़ा फ़ज़ल वाला (कृपालु) है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا بِرَسُولِهِ
يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا
تَمْشُونَ بِهِ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ (28)

لَعَلَّكُمْ يَتَّقُونَ عَلَيَّ شَيْءٌ
مَنْ قَضَى اللَّهُ وَرَأَى الْقَضَىٰ بَيْنَ اللَّهِ وَيُؤْتِيهِ
مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ (29)

¹ यानी हम ने तो उन पर अनिवार्य (फ़र्ज़) किया था कि हमारी खुशी की खोज करें। दूसरा अनुवाद यह किया गया है कि उन्होंने यह काम अल्लाह को खुश करने के लिए किया था, लेकिन अल्लाह ने साफ़ कर दिया कि अल्लाह की खुशी दीन में अपनी तरफ से नई बातें बनाने से हासिल नहीं हो सकती, चाहे वह कितनी ही अच्छी क्यों न हों, अल्लाह की खुशी तो उस की इताअत ही से मिलती है।

² यह दुगुना प्रतिफल (अज़्र) उन ईमानवालों को मिलेगा जो नबी ﷺ से पहले के नबी पर ईमान रखते थे फिर आप ﷺ पर भी ईमान लाये, जैसाकि हदीस में बयान किया गया है। (सहीह-अल-बुखारी, किताबुल इल्म, सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान) एक दूसरी व्याख्या (तफ़सीर) के अनुसार जब अहले किताब ने इस बात पर गर्व (फ़ख़) का प्रदर्शन (इज़हार) किया कि उन्हें दुगुना पुण्य (अज़्र) मिलेगा तो अल्लाह ने मुसलमानों के पक्ष (हक़) में यह आयत उतारी। (तफ़सील के लिये तफ़सीर इब्ने कसीर देखिये)

सूरतुल मुजादिल:-५८

سُورَةُ الْمُجَادِلَةِ

सूर: मुजादिल: मदीना में नाज़िल हुई और इस में बाईस आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. निश्चय (यक़ीनन) अल्लाह (तआला) ने उस औरत की बात सुनी जो तुझ से अपने पति के बारे में विवाद (तकरार) कर रही थी और अल्लाह के सामने शिकायत कर रही थी, अल्लाह (तआला) तुम दोनों की बातचीत (बाद-विवाद) सुन रहा था।^१ बेशक अल्लाह (तआला) सुनने देखने वाला है।

२. तुम में से जो लोग अपनी पत्नियों से जिहार करते हैं (यानी उन्हें माँ कह बैठते हैं) वह हकीकत में उनकी मातायें नहीं हैं, उनकी मातायें तो वही हैं जिन के गर्भ से उन्होंने जन्म लिया है,^२ बेशक ये लोग एक अनुचित (मुन्कर) और झूठी बात कहते हैं। बेशक अल्लाह (तआला) भामाशील (बख़्शने वाला) और माफ़ करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَعَاوُرَكُمَا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ①

الَّذِينَ يظهِرُونَ مِنْكُمْ مَنْ نَسَاهُمْ مَا هُنَّ أُمَّهَاتُهُمْ إِنَّ أُمَّهَاتَهُمْ إِلَّا الْبَنَىٰ وَلَدَهُمْ وَوَلَّهُمْ لِكَيْفَ قَالُوا شُرَكَاءُ مِنَ الْقَوْلِ وَزُورًا وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُوفٌ غَفُورٌ ②

^१ यह इशारा है हज़रत ख़ौल: की घटना (बाक़ेआ) की तरफ, जिन के पति हज़रत औस पुत्र सामित ने उन से जिहार कर लिया था, जिहार का मायने है अपनी पत्नी (बीबी) से कह देना «أنتِ عليّ كظمير أُمِّي» (तू मुझ पर मेरी माँ की पीठ के बराबर है) जेहालत के दौर में जिहार को तलाक़ (विवाह-विच्छेद) समझा जाता था। हज़रत ख़ौल: बहुत परेशान हुईं, उस समय तक इस बारे में कोई हुक़म नहीं उतरा था, इसलिए वह नबी ﷺ के पास आयी तो आप भी कुछ रूके रहे, वह आप से झगड़ा और तकरार करती रही जिस पर यह आयतें उतरीं, जिन में जिहार की समस्या (सूरत) और उसका हुक़म और प्रायश्चित (कफ़ारा) को बयान कर दिया गया। (अबू दाऊद, किताबुत्तलाक़)

^२ यह जिहार का हुक़म बताया कि तुम्हारे कह देने से तुम्हारी पत्नी (बीबी) तुम्हारी माँ नहीं बन जायेगी।

३. और जो लोग अपनी पत्नियों से जिहार करें फिर अपनी कही हुई बात वापस लें तो उन के ऊपर आपस में एक-दूसरे को हाथ लगाने से पहले एक दास (गुलाम) को आजाद करना है, इस के जरिये तुम उपदेश (नसीहत) दिये जाते हो और अल्लाह (तआला) तुम्हारे सभी अमलों को जानता है।

४. हाँ, जो इंसान न पाये तो उस के ऊपर दो महीने का लगातार रोजा है इस से पहले कि एक-दूसरे को हाथ लगायें, और जिस इंसान की यह भी ताकत न हो उस पर साठ गरीबों को खाना खिलाना है, यह इसलिए कि तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर इमान लाओ। यह अल्लाह (तआला) की मुकर्रर की हुई सीमायें (हदें) हैं और काफिरों के लिए ही दुखदायी अजाब है।

५. बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल की मुखालफत करते हैं वे अपमानित (जलील) किये जायेंगे, जैसे उन से पहले के लोग जलील किये गये,^१ और बेशक हम खुली आयतें नाज़िल कर चुके हैं और काफिरों के लिए जलील करने वाला अजाब है।

६. जिस दिन अल्लाह (तआला) उन सब को उठायेगा, फिर उन्हें उन के किए हुए अमल से बाख़बर करायेगा, (जिसे) अल्लाह ने गिन रखा है और जिसे ये भूल गये थे^२ और अल्लाह (तआला) हर चीज़ से अवगत (बाख़बर) है।

وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَصَحِّدْ لَهُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَآتُوا ذَلِكُمْ تُوعَظُونَ بِهِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ③

فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَآتُوا فَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ فَإِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ذَلِكَ لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاللَّهُ بِمَا عَمَلْتُمْ حَسِيبٌ ④

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادِّثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنُوا لَعْنًا كَبِيرًا ⑤
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ
وَاللَّكْفُورِينَ عَذَابٌ مُهِينٌ ⑤

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا أَحْصَاهُ اللَّهُ وَسُوهُ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ⑥

^१ इस से अभिप्राय (मुराद) पिछली कौम हैं जो इसी मुखालफत की वजह से वरबाद हो गईं।

^२ यह दिल में पैदा होने वाले शक का जवाब है कि पापों की इतनी अधिकता और इतने रूप हैं कि उनकी गिनती जाहिरी तौर से नामुमकिन है। अल्लाह तआला फरमाता है कि तुम्हारे लिए बेशक नामुमकिन है, बल्कि तुम्हें तो अपने किये सब कर्म भी याद नहीं होंगे, लेकिन यह अल्लाह के लिए कोई कठिन नहीं, उस ने एक-एक का कर्म सुरक्षित (महफूज) कर रखा है।

७. क्या तुने नहीं देखा कि अल्लाह आकाशों और धरती की हर चीज जानता है, तीन इंसानों की कानाफूसी नहीं होती, लेकिन अल्लाह उनका चौथा होता है और न पांच की लेकिन वह उनका छठा होता है और न उस से कम की और न ज्यादा की, लेकिन वह उन के साथ ही होता है जहाँ भी वे हों फिर क्रयामत (प्रलय) के दिन उन्हें उन के अमल से बाखबर करायेगा, बेशक अल्लाह (तआला) हर चीज का जानकार है।

८. क्या तुने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी से रोक दिया गया था? वे फिर भी उस मना किये हुए काम को दोबारा करते हैं, और आपस में पाप की और नाइसाफी की और रसूलों की नाफरमानी की, कानाफूसियाँ करते हैं और जब तेरे पास आते हैं तो तुझे उन शब्दों (लफजों) में सलाम करते हैं, जिन शब्दों में अल्लाह (तआला) ने नहीं कहा, और अपने दिल में कहते हैं कि अल्लाह (तआला) हमें हमारे इस कहने पर सजा क्यों नहीं देता? उन के लिए नरक (दण्ड) काफी है, जिसमें ये जायेंगे? तो वह कितना बुरा ठिकाना है।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَا يُكُونُ مِنْ نَجْوَى ثَلَاثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَا آدْنَى مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ آيِنٌ مَّا كَانُوا ثُمَّ يَنْفِثُهُمْ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٧﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ النَّجْوَى ثُمَّ يُعْوَدُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَبَّهُونَ بِالْآثِمِ وَالْمُؤَدِّينَ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي الْغَيْبِ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ لِمَ صَلَوٰنُهَا فَوَيْسَ الْمُجِيرِ ﴿٨﴾

¹ इस से मदीने के यहूदी और मुनाफिक़ मुराद है, जब मुसलमान उन के पास से गुजरते तो यह आपस में सिर जोड़ कर ऐसे कानाफूसी करते कि मुसलमान समझते कि शायद उन के खिलाफ कोई षड़यंत्र (साजिश) रच रहे हैं, या मुसलमानों की किसी सेना पर हमला करके दुश्मन में नुकसान पहुँचाया है, जिसकी खबर उन्हें मिल गई है। मुसलमान इन बातों से डर जाते, इसलिए नबी ﷺ ने इस तरह की कानाफूसियों से रोक दिया, लेकिन कुछ ही समय बाद उन्होंने फिर यह बुरा काम शुरू कर दिया, आयत में उन के इसी काम की चर्चा की जा रही है।

² अल्लाह ने फरमाया कि अगर अल्लाह ने अपनी इच्छा और हिस्मत की वजह से दुनिया में तुरन्त पकड़ नहीं की तो क्या वह आखिरत में भी नरक के अजाब से बच जायेगा? नहीं, निश्चय (यकीनन) नहीं, नरक उन के इंतजार में है जिस में वह दाखिल होंगे।

९. हे ईमानवालो! तुम जब कानाफूसी करो तो ये कानाफूसी पाप, उदृष्टता (सरकबी) और रसूल की नाफरमानी की न हो, बल्कि नेकी और तक्रवा की बातों पर कानाफूसी करो, और उस अल्लाह से डरते रहो जिस के पास तुम सब जसा किये जाओगे।

१०. (बुरी) कानाफूसी शैतान का काम है, जिस से ईमानवालों को दुख हो,^१ यद्यपि (अगरचे) अल्लाह तआला की मर्जी के बिना वह उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता, और ईमानवालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें।

११. हे ईमानवालो! जब तुम से कहा जाये कि सभाओं (मजलिसों) में तनिक खुल कर बैठो, तो तुम जगह कुशादा कर दो,^२ अल्लाह (तआला) तुम्हें कुशादगी (विस्तार) अता करेगा, और जब कहा जाये कि उठकर खड़े हो जाओ, तो तुम उठकर खड़े हो जाओ, अल्लाह (तआला) तुम में से उन लोगों के जो ईमान लाये हैं और जो इल्म दिये गये हैं पद ऊँचे कर देगा,^३ और अल्लाह

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَنَاجَوْا بِالْإِطْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَةِ الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ
وَالتَّقْوَىٰ وَالْقَوْلَا لِلَّهِ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشُرُونَ ﴿٩﴾

إِنَّمَا التَّكْوِي وَنَ الشَّيْطَانِ لِيُخْزِنَ الَّذِينَ آمَنُوا
وَلَيْسَ بِضَاؤِهِمْ شَيْءًا إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَعَلَى اللَّهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٠﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا فِي الْمَجَالِسِ
فَانفَسِحُوا لِلَّهِ لَكُمْ وَأَذًا قِيلَ اشْرُؤُوا
فَأَشْرُؤُوا يَرْفَعِ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ
أُوتُوا الْوَهْمَ دَرَجَاتٍ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ﴿١١﴾

^१ गुनाह, बुरे काम और रसूल ﷺ की नाफरमानी पर आधारित (मबनी) कानाफूसियाँ शैतानी काम हैं, क्योंकि शैतान ही इन पर उकसाता है ताकि वह इस के द्वारा मोमिनो को दुखी और शोकग्रस्त (गमगीन) कर दे।

^२ इस में मुसलमानों को सभा के शिष्टाचार (आदाब) बताये जा रहे हैं। मजलिस शब्द आम है जो हर उस मजलिस को शामिल है जिस में मुसलमान भलाई और नेकी हासिल करने के लिए जमा हों, शिक्षा-दिआ (तालीम-नसीहत) के लिये मजलिस हो या जुमा की हो। (तफसीर अल कुर्तबी) «खुल कर बैठो» का मतलब है कि सभा (मजलिस) का दायरा कुशादा रखो ताकि बाद में आने वालों के लिये भी जगह मिले। दायरा तंग न रखो कि जो बाद में आये खड़ा रहे या दूसरे को हटाकर अपनी जगह बनाये, यह दोनों बातें मुनासिब नहीं हैं। जैसे कि नबी ﷺ ने फरमाया कि कोई इंसान दूसरे को हटाकर उस जगह पर न बैठे, इसलिए मजलिस का दायरा कुशादा कर लो। (सहीह बुखारी, किताबुल जुमअः, बाबु मुस्लिम, किताबुस सलामः)

^३ यानी ईमान वालों के दर्जे ईमान न लाने वालों पर और जानियों (आलिमों) के दर्जे अज्ञानियों (जाहिलों) पर ऊँचा करेगा। जिसका मतलब यह हुआ कि ईमान के साथ धार्मिक ज्ञान (इल्म) की जानकारी दर्जे को ज्यादा ऊँचा करती है।

(तआला) (हर उस काम को) जो तुम कर रहे हो (अच्छी तरह) जानता है ।

१२. हे मुसलमानो! जब तुम रसूल से अकेले में बात करना चाहो, तो अपनी इस अकेले में बात करने से पहले कुछ दान (सदका) कर दिया करो, यह तुम्हारे हक में अच्छा और पाक है, हाँ, अगर न पाओ तो बेशक अल्लाह (तआला) माफ करने वाला रहम करने वाला है ।

१३. क्या तुम अपनी अकेले की बातों (काना-फूसी) से पहले दान (सदका) करने से डर गये तो जब तुम ने यह न किया और अल्लाह (तआला) ने भी तुम्हें माफ कर दिया तो अब (सही तरीके से) नमाजों को कायम रखो, जकात देते रहा करो और अल्लाह (तआला) और उस के रसूल के हुक्म का पालन (पैरवी) करते रहो और तुम जो कुछ भी करते रहो उन सब से अल्लाह (अच्छी तरह) परिचित (बाखबर) है ।

१४. क्या तूने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने उस समुदाय (क्रौम) से दोस्ती की जिन पर अल्लाह नाराज हो चुका है, न ये (भ्रष्टाचारी) तुम्हारे ही हैं न उन के हैं, और इल्म होने के बावजूद भी झूठ पर क्रसमें खा रहे हैं ।

१५. अल्लाह (तआला) ने उन के लिए कठोर अजाब तैयार कर रखा है, यकीनी तौर से जो कुछ ये कर रहे हैं बुरा कर रहे हैं ।

१६. इन लोगों ने तो अपनी क्रसमों को ढाल बना रखा है' और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं तो उन के लिए अपमानकारी अजाब है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَجَاوَزْتُمُ الرُّسُولَ فَمَنْ بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَةٌ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۖ فَإِنْ لَمْ تَجِدُوا فَوَٰكِلَ اللَّهِ عَفْوَ رَحِيمٌ ﴿١٢﴾

عَٰشِقْتُمْ أَنْ تَقْرَبُوا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوَاكُمْ صَدَقَةٌ ۖ فَإِذَا لَمْ تَجِدُوا وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَاقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَتُوا الزَّكَاةَ وَاطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۗ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٣﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِمَّا كَفَرُوا فَهُمْ وَلَا أَوْلِيَّاهُمْ وَيَحْرَمُونَ عَلَى الْكُذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٥﴾

إِنَّمَا أَيْدِيَهُمْ جُمُوعُهُمْ حَصَدُوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ فَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ﴿١٦﴾

١. اِيْمَانُ (ऐमान) यमिन (यमीन) का बहुवचन (जमा) है, मायने है क्रसम । यानी जैसे ढाल से दुश्मन के हमले को रोक कर अपना बचाव कर लिया जाता है, इसी तरह उन्होंने अपनी क्रसमों को मुसलमानों की तलवार से बचने के लिए ढाल बना रखा है ।

१७. उनका माल और उनकी औलाद अल्लाह के सामने कुछ काम न आयेगी, यह तो नरक में जाने वाले हैं, हमेशा ही उस में रहेंगे।

لَنْ نُعْطِيَهُمْ عَنْهُمْ آمَالَهُمْ وَلَا أَوْلَادَهُمْ قَمِنْ اللَّهِ شَيْئًا ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿١٧﴾

१८. जिस दिन अल्लाह (तआला) उन सबको उठा खड़ा करेगा तो यह जिस तरह तुम्हारे सामने कसम खाते हैं, अल्लाह (तआला) के सामने भी कसम खाने लगेंगे और समझेंगे कि वे भी किसी (दलील) पर हैं, यकीन करो कि वेशक वही सूठे हैं।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جُجُوعًا فَيُحْلِفُونَ لَهُ كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ عَلَىٰ شَيْءٍ ۗ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَاذِبُونَ ﴿١٨﴾

१९. उन पर शैतान ने प्रभाव (गलबा) हासिल कर लिया है^१ और उन्हें अल्लाह की याद से भुला दिया है, ये शैतान की सेना है। सुनो! शैतान की सेना ही नुकसान उठाने वाली है।

اسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنسَهُمْ ذِكْرَ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۗ أَلَا إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْفَاسِقُونَ ﴿١٩﴾

२०. वेशक अल्लाह (तआला) का और उस के रसूल का जो लोग विरोध करते हैं,^२ वही लोग सब से ज्यादा अपमानितों (जलीलों) में हैं।

إِنَّ الَّذِينَ يَحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۗ أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَىٰ لَبِينٌ ﴿٢٠﴾

२१. अल्लाह (तआला) लिख चुका है कि वेशक मैं और मेरे रसूल गालिब (विजयी) रहेंगे। वेशक अल्लाह तआला ताकतवर और गालिब (प्रभावशाली) है।

كَتَبَ اللَّهُ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِأَنَا وَرَسُولِيَ ۗ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ عَزِيزٌ ﴿٢١﴾

२२. अल्लाह (तआला) पर और क्रयामत के दिन पर ईमान रखने वालों को आप अल्लाह और उस के रसूल के विरोधियों (मुखालिफों) से

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ ۖ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ ۖ أَوْ

^१ اسْتَحْوَذَ का मतलब 'घेर लिया', जमा कर लिया है, इसलिए उसका तर्जुमा 'प्रभुत्व (गलबा) हासिल कर लिया' किया जाता है, क्योंकि गलबा में यह सभी मायने आ जाते हैं।

^२ حَادَّ (मुहादत) ऐसे कड़े विरोध (मुखालफत), दुश्मनी और झगड़े को कहते हैं कि दोनों पक्षों का मेल बहुत मुश्किल हो। मानो दोनों दो किनारों (सीमा) पर हैं जो एक-दूसरे के खिलाफ हैं। इसी से यह 'रोकने' के मायने में इस्तेमाल होता है और इसीलिए पहरेदार को भी 'हदाद' कहा जाता है।

प्रेम करते हुए कभी न पायेंगे,¹ चाहे वे उन के पिता या उन के पुत्र या उन के भाई या उन के सम्बन्धी (परिवार के क़रीब) ही क्यों न हों,² यही लोग हैं जिन के दिल में अल्लाह (तआला) ने ईमान लिख दिया है और जिनकी पुष्टि (ताईद) अपनी आत्मा (रूह) से की है और जिन को उन स्वर्गों में प्रवेश (दाखिला) देगा जिन के नीचे (ठंडे) पानी की नहरें बह रही हैं, जहाँ ये हमेशा रहेंगे, अल्लाह उन से खुश है और ये अल्लाह से खुश हैं,³ यह अल्लाह की सेना है, जान लो कि बेशक अल्लाह के गिरोह वाले ही कामयाब लोग हैं।

सूरतुल हश्म-५९

सूर: हश्म* मदीने में नाज़िल हुई, इसमें चौबीस आयतें और तीन रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

إِنَّمَا هُمْ رِجَالٌ مِّمَّنْ دَخَلُوا فِي بَيْتِنَا أَن يَقُولُوا إِنَّمَا هُمْ فَسِقَةٌ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَدُوًّا مُّبِينًا
وَأَيُّكُمْ يَرْجِعْ إِلَىٰ مَا كَانَ عَلَىٰ يَمِينِهِ أَوْ يَسَارِهِ فَرَأَىٰ إِلَهَ اللَّهِ فَصَلَّىٰ
مَنْ صَلَّىٰ فَلَا تَجْرَبُونَهُمْ وَلَا يَجْرَبُونَ
أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُغْلِبُونَ ﴿٢٢﴾

سُورَةُ الْحَشْرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

¹ इस आयत में अल्लाह तआला ने साफ़ किया है कि जो अल्लाह पर अक़ीदा (आस्था) और आखिरत पर ईमान में पूरे होते हैं, वह अल्लाह और रसूल ﷺ के दुश्मनों से मुहब्बत और दिली लगाव नहीं रखते, यानो ईमान और अल्लाह और रसूल ﷺ के दुश्मनों से मुहब्बत और समर्थन (ताईद) एक दिल में जमा नहीं हो सकते। यह विषय पाक क़ुरआन के दूसरे भी कई जगहों पर बयान किया गया है, जैसे आले-इमरान-२८, सूर: तौबा-२५, वग़ैरह।

² इसलिए कि उनका ईमान उनको उन के प्रेम से रोकता है और ईमान का तक्राजा पिता, पुत्र, भाई और वंश और परिवार के प्रेम और पक्ष से ज़्यादा जरूरी होता है, जैसाकि सहाबये केराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम ने यह करके दिखाया।

³ यानी जब पहला मुसलमान, सहाबये केराम ईमान के बिना पर अपने संबन्धियों और रिश्तादारों पर खिन्न हो गये, यहाँ तक कि उन्हें अपने हाथों क़त्ल करने में भी संकोच नहीं किया तो उस के बदले अल्लाह ने उन्हें अपनी खुशी दे दी और उन पर इस तरह अपने अनुग्रह (नेमत) की वर्षा की कि वह अल्लाह से खुश हो गये।

* यह सूरह यहूद के एक क़बीले वनू मज़ीर के बारे में नाज़िल हुई है। इसलिए इसको सूरतुन्नज़ीर भी कहते हैं। (सहीह बुख़ारी, तफ़सीर सूरतिल हश्म)

१. आकाशों और धरती की हर चीज अल्लाह तआला की पवित्रता (तस्बीह) बयान करती है, और वह गालिब हिक्मत वाला है।

२. वही है जिस ने अहले किताब में से काफिरों को उन के घरों से पहला हश्श (जमाव) के समय निकाला,^१ तुम्हारा अंदाज़ा (भी) न था कि वे निकलेंगे और वह खुद (भी) समझ रहे थे कि उन के (मजबूत) किले उन्हें अल्लाह (के अजाव) से बचा लेंगे, तो उन पर अल्लाह (का अजाव) ऐसे स्थान से आ पड़ा कि उन्हें अंदाज़ा भी न था और उन के दिलों में अल्लाह (तआला) ने डर डाल दिया, वे अपने घरों को अपने ही हाथों उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों (बरबाद करवा रहे थे) तो हे आखिं वालो! नसीहत हासिल करो।

३. और अगर अल्लाह (तआला) ने उन पर देश निकाला न लिख दिया होता तो यकीनी तौर से उन्हें दुनिया में ही अजाव देता,^२ और आखिरत में (तो) उन के लिए आग का अजाव है ही।

४. यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह (तआला) और उस के रसूल का विरोध किया, और जो भी अल्लाह का विरोध करेगा तो अल्लाह (तआला) भी कठोर अजाव देने वाला है।

سَخَّحَ لِيَوْمَ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۝
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْيَنْبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا أَنَّهُمْ مَالِحَتُهُمْ حُصُونَهُمْ مِنْ اللَّهِ فَأَنذَرْتُهُمُ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَدَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ فَالْعَبْرُ ۝ وَيَأُولِي الْأَبْصَارِ ②

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَاءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ③

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۝ وَمَنْ يُشَاقِ اللَّهَ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ④

^१ मदीने के आसपास यहूदियों के तीन कबीले आबाद थे, बन् नजीर, बन् कुरैजा और बन् कैनुकाअ। मदीना आने के बाद नबी ﷺ ने उन से सुलह भी किया था, लेकिन यह लोग अन्दर से षड़यन्त्र (साजिश) करते रहे और मक्का के काफिरों से भी मुसलमानों के खिलाफ सम्पर्क (रावेता) रखा।

^२ यानी अल्लाह के लेख में इसी तरह उनका देश निकाला पहले से लिखा न होता तो उनको इस दुनिया ही में घोर यातना (अजाव) दे दी जाती, जैसाकि बाद में उन के भाई यहूद के एक-दूसरे कबीले (कुरैजा) को ऐसी ही यातना में डाला गया कि उन के जबानों को कत्ल कर दिया गया और दूसरों को कैदी बना लिया गया और उनका माल मुसलमानों के लिये गनीमत बना दिया गया।

५. तुम ने खजूरों के जो पेड़ काट डाले और जिन्हें तुम ने उन की जड़ों पर बाक्री रदने दिया, यह सब अल्लाह (तआला) के हुक्म से था और इसलिए भी कि कुकर्मियों (फ्रांसिको) को अल्लाह (तआला) अपमानित (जलील) करे ।^१

६. और उनका जो माल अल्लाह (तआला) ने अपने रसूल के हाथ लगाया है जिस पर तुम ने न घोड़े दौड़ाये हैं और न ऊँट, बल्कि अल्लाह (तआला) अपने रसूल को जिस पर चाहे प्रभावशाली (गालिव) कर देता है^२ और अल्लाह तआला हर चीज पर कादिर है ।

७. बस्तियों वालों का जो (धन) अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लड़ाई किये बिना ही अपने रसूल के हाथ लगाया, वह अल्लाह का है और रसूल का, क़रीबी रिश्तेदारों का, यतीमों का, गरीबों का और यात्रियों का है, ताकि तुम्हारे धनवानों के हाथों में ही यह धन चक्कर लगाता न रह जाये,^३ और तुम्हें जो कुछ रसूल दें तो ले

مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لَيْبَةٍ أَوْ نَرَتْكُمْ وَقَابَلْتُمْ عَلَىٰ
أَصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْرِجَ الْفَاسِقِينَ ﴿٥﴾

وَمَا آفَاءَ اللَّهِ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أُجِزْتُمْ عَلَيْهِ
مِنْ حَيْبٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَيِّطُ رُسُلَهُ
عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٦﴾

مَا آفَاءَ اللَّهِ عَلَىٰ رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ فَلِلَّهِ
وَالرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّكِينِ وَابْنِ
السَّبِيلِ ۗ كَيْ لَا يَكُونَ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ
وَمَا أَتاكمُ الرُّسُولُ فَخُذُواهُ ۗ وَمَا نَهَكُمُ عَنْهُ
فَأْتَهُوا ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ طَرِيقَ اللَّهِ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿٧﴾

^१ (लीन:) खजूर की एक किस्म है, जैसे अजवा, बनी आदि (बगैरह) खजूरों की किस्में हैं ।

^२ बन् नजीर का यह इलाका जो मुसलमानों के अधिकार में आया, मदीने से तीन-चार मील की दूरी पर था, यानी मुसलमानों को इस के लिए लम्बी यात्रा की जरूरत नहीं हुई, मुसलमानों को ऊँट, घोड़े नहीं दौड़ाने पड़े, ऐसे ही लड़ना भी नहीं पड़ा और सुलह के जरिये यह इलाका फलतः हो गया, इसलिए यहाँ से मिले माल को फँ माना गया जिसका हुक्म गनीमत (परिहार) से अलग है । मानो वह माल फँ है, जो दुश्मन बिना लड़े छोड़ कर भाग जाये या समझौता से मिले और जो धन गनीमत रूप से लड़ाई और प्रभुत्व (गलबा) हासिल करने से मिले, वह गनीमत है । गनीमत का क़ानून यह है कि उस के पाँच हिस्से किये जायें, चार हिस्से मुजाहिदों में बाँटा जायेगा और पाँचवाँ हिस्सा अल्लाह के रसूल के लिए यानी मुसलमानों के बैतुलमाल (कोष गृह) के लिए है, लेकिन फँ का माल मुजाहिदों में बाँटा नहीं जायेगा, सभी माल अल्लाह के रसूल का है, यानी मुसलमानों के बैतुलमाल में रखा जायेगा ।

^३ (दूलह) उस चीज को कहते हैं जो कुछ लोगों के बीच फिरती रहे, उन से बाहर न निकले । यह माले फँ के इस्तेमाल की बजह बताया है, उसे मुजाहिदीन में बाँटने की जगह बैतुलमाल का हिस्सा इसलिए करार दिया है कि यह धन धनवानों के बीच ही न फिरता रहे बल्कि समाज के दूसरे लोग भी उस से फ़ायदा हासिल करें ।

लो और जिस से रोकें रुक जाओ और अल्लाह (तआला) से डरते रहा करो, वेशक अल्लाह (तआला) कठोर अजाब वाला है।

८. (फै का धन) उन गरीब मुहाजिरो के लिए है जो अपने घरों से और अपने धनों से निकाल दिये गये हैं, वे अल्लाह की रहमत और खुशी के इच्छुक हैं और अल्लाह (तआला) की ओर उस के रसूल की मदद करते हैं, यही सच्चे लोग हैं।

९. और (उन के लिए) जिन्होंने इस घर में (यानी मदीने में) और ईमान में उन से पहले जगह बना लिया है^२ और अपनी तरफ हिजरत कर के आने वालों से मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरो को जो कुछ दे दिया जाये, उस से वे अपने सीनों में कोई संकोच नहीं करते, बल्कि खुद अपने ऊपर उनकी प्राथमिकता (तरजीह) देते हैं चाहे खुद उनको कितनी ही ज़्यादा जरूरत हो^३ (बात यह है) कि जो भी अपनी मनोकांक्षा (नपस की कंजूसी) से बचाया गया वही कामयाब (और मुराद पाया हुआ) है।^४

لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ
وَأَمْوَالِهِمْ يُبْتَغُونَ فُضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا
وَيُنصَرُونَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ أُولَئِكَ هُمُ
الصَّادِقُونَ ﴿٨﴾

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ
يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي
سُودِ وُجُوهِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْتُونَ عَلَى
أَنْفُسِهِمْ وَلَا كَانَ بِهِمْ حَصَصَةٌ وَلَا مَن يُؤْتِ شَيْءٌ
نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٩﴾

^१ इस में फै के माल का एक सही खर्च बताया गया है और साथ ही मुहाजिरीन की श्रेष्ठता (फज्ीलत) का इजहार है, जिस के बाद उन के ईमान में शक करना मानो कुरआन का इंकार करना है।

^२ इस से मुराद मदीना के अंसार हैं जो मुहाजिरीन के मदीने आने से पहले मदीने में आबाद थे और मुहाजिरीन के हिजरत करके आने से पहले ईमान भी उन के दिलों में रच-बस गया था। यह मुराद नहीं है कि मुहाजिरीन के ईमान लाने से पहले यह अंसार ईमान ला चुके थे, क्योंकि उनकी ज़्यादा तादाद मुहाजिरीन के ईमान लाने के बाद ईमान लाई है।

^३ यानी अपने मुक्राबले में मुहाजिरीन की जरूरत को प्राथमिकता (तरजीह) देते हैं, खुद भूखे रहते हैं, लेकिन मुहाजिरीन को खिला देते हैं।

^४ हदीस में है कि मनोकांक्षा (आरजूओ) से बचो, क्योंकि इस मनोकांक्षा ने ही पहले लोगों को बरबाद किया, उसी ने उन्हें खून-खराबा पर तैयार किया और उन्होंने निषेधित (हराम) को वैध (उचित) बना लिया। (सहीह मुस्लिम, किताबुल बिर्रे, बाबु तहरीमिज् जुल्मे)

१०. और (उन के लिए) जो उन के बाद आयें, जो कहेंगे कि हे हमारे रब ! हमें माफ़ कर दे और हमारे उन भाईयों को भी जो हम से पहले ईमान ला चुके हैं और ईमानवालों की तरफ से हमारे दिल में कपट (और दुश्मनी) न डाल, हे हमारे रब ! बेशक तू प्रेम और दया (रहम) करने वाला है ।

११. क्या तूने मुनाफ़िकों को नहीं देखा जो अपने अहले किताब काफ़िर भाईयों से कहते हैं कि अगर तुम देश से निकाल दिये गये तो हम भी जरूर तुम्हारे साथ देश छोड़ देंगे और तुम्हारे बारे में हम कभी भी किसी की बात क़ुबूल न करेंगे, और अगर तुम से युद्ध (जंग) किया जायेगा तो जरूर हम तुम्हारी मदद करेंगे, लेकिन अल्लाह (तआला) गवाही देता है कि ये बिल्कुल झूठे हैं ।

१२. अगर वे देश से निकाल दिये गये तो ये उन के साथ न जायेंगे और अगर उन से युद्ध छिड़ गया तो ये उनकी मदद (भी) नहीं करेंगे, और अगर यह (मान भी लिया जाये कि) मदद पर आ भी गये तो पीठ दिखाकर (भाग खड़े) होंगे, फिर मदद न किये जायेंगे ।¹

१३. (मुसलमानो! यकीन करो) कि तुम्हारा डर उन के सीनों में अल्लाह के डर के मुक़ाबले में बहुत ज़्यादा है, यह इसलिए कि ये समझते नहीं²

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٠﴾

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ نَاقَتُوا يَقُولُونَ لإِخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِن أُخْرِجُوا لَتَخْرُجُنَّ مَعَهُمْ وَلَا تَطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِن كُنتُمْ لَتَنْصُرَنَّهُمْ وَاللَّهُ شَهِيدٌ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١١﴾

لَئِن أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ ۗ وَلَئِن قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُوهُمْ ۗ وَلَئِن نَصَرُوهُمْ لَيُؤْتِنَ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَنْصُرُونَ ﴿١٢﴾

لَا تَتَمَّ أَشَدُّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ۗ ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١٣﴾

¹ मतलब यहूदी हैं, यानी जब उन के सहयोगी मुनाफ़िक ही हार कर भाग खड़े होंगे तो यहूद कैसे विजयी और कामयाब होंगे? कुछ ने इस से मुराद मुनाफ़िक लिये हैं कि वह मदद नहीं किये जायेंगे, बल्कि अल्लाह उन्हें अपमानित (ज़लील) करेगा और उनका निफ़ाक (द्वयवाद) उन के लिए फ़ायदेमंद नहीं होगा ।

² यानी तुम्हारा यह डर उन के दिलों में उनकी नासमझी की वजह से है, नहीं तो अगर वह समझ रखते तो समझ जाते कि मुसलमानों का प्रभुत्व (ग़ल्बा) और विजय अल्लाह की तरफ से है, इसलिए डरना अल्लाह ही से चाहिए न कि मुसलमानों से ।

१४. ये सब मिलकर भी तुम से लड़ नहीं सकते, लेकिन यह अलग बात है कि किला से घिरे जगहों में हों या दीवारों की ओट में हों, उनकी लड़ाई तो आपस में ही बहुत कठोर है, यद्यपि (अगरचे) आप उनको एकमत समझ रहे हैं, लेकिन हकीकत में उन के दिल आपस में अलग हैं, यह इसलिए कि ये बेअक्ल लोग हैं।

१५. उन लोगों की तरह जो उन से कुछ ही पहले गुजरे हैं, जिन्होंने अपने पापों का मजा चख लिया और जिन के लिए दुखदायी अजाब (तैयार) है।

१६. शैतान की तरह कि उसने इंसान से कहा, कुफ्र कर, जब वह कुफ्र कर चुका तो कहने लगा कि मैं तो तुझ से अलग हूँ, मैं तो सारी दुनिया के रब से डरता हूँ।

१७. तो दोनों का नतीजा यह हुआ कि (नरक की) आग में सदा के लिए गये और जालिमों की यही सजा है।

१८. हे ईमानवालो! अल्लाह से डरते रहो,^१ और हर इंसान देख-भाल ले कि कल (क्यामत यानी प्रलय) के लिए उस ने कर्मों (अमल) का क्या (भण्डार) भेजा है,^२ और (हर वक्त) अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह तुम्हारे सारे कर्मों से परिचित (वाकिफ) है।

لَا يُقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قَوْمٍ مَّحَصَّنَةٍ
أَوْ مِنْ قَرَاءٍ جُدْرًا بِأَسْهُمٍ بَيْنَهُمْ شَرِيدًا
تَحْسِبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ شَتَّىٰ ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ ﴿١٤﴾

كَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمًا ذَاوَابًا
أَمْرُهُمْ وَأَنَّهُمْ عَذَابُ الْعِزَّةِ ﴿١٥﴾

كَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ فَلَمَّا كَفَرَ
قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ
رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿١٦﴾

فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدِينَ
فِيهَا ۗ وَذَٰلِكَ جَزَاؤُ الظَّالِمِينَ ﴿١٧﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ
مَّا قَدَّمَتْ لِغَيْرِهِ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۗ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ
بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١٨﴾

^१ यह यहूद और मुनाफिकों की एक और मिसाल दी है कि मुनाफिकों ने यहूदियों को ऐसे ही विना मदद के छोड़ दिया जैसे शैतान इंसान के साथ सुलूक करता है, पहले वह इंसान को गुमराह करता है और जब इंसान शैतान का अनुसरण (पैरवी) करके कुफ्र कर लेता है तो शैतान उस से अपनी निर्दोषता (बराअत) दिखाने लगता है।

^२ ईमानवालों को संबोधित (मुखातिब) करके उन्हें उपदेश (नसीहत) दिया जा रहा है, अल्लाह से डरने का मतलब है उसने जिन चीजों का हुक्म दिया है उन्हें पूरा करो, जिन से रोका है उन से रुक जाओ। आवत में यह बल देने के लिए दो बार फरमाया है, क्योंकि यह 'तक़वा' (अल्लाह का डर) ही इंसान को नेकी करने और बुराई से रुकने पर तैयार करता है।

^३ कल से मुराद क्यामत (प्रलय) है, उसे कल से व्यजित (ताबीर) करके इस तरफ भी इशारा कर दिया कि उसका होना बहुत दूर नहीं करीब ही है।

१९. और तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन लोगों ने अल्लाह (के हुक्म) को भुला दिया तो अल्लाह ने उन्हें अपने आप से भुला दिया, ऐसे ही लोग नाफरमान होते हैं।

२०. नरक वाले और स्वर्ग वाले, (आपस में) बराबर नहीं,^१ जो स्वर्ग वाले हैं वही कामयाब हैं।

२१. अगर हम इस कुरआन को किसी पहाड़ पर नाज़िल करते^२ तो तू देखता कि अल्लाह के डर से वह झुक कर कण-कण (रेजा-रेजा) हो जाता। हम इन मिसालों को लोगों के सामने बयान करते हैं ताकि वे चिन्तन-भनन (सोच-फिक्र) करें।

२२. वही अल्लाह है जिस के सिवाय कोई (सच्चा) पूज्य नहीं, छिपी और खुली का जानने वाला, वही माफ और दया (रहम) करने वाला।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ

أَنْفُسَهُمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ﴿١٩﴾

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ وَأَصْحَابُ

الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ﴿٢٠﴾

لَوْ أَنْزَلْنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَرَأَيْتَهُ خَاشِعًا

مُتَّصِفًا عَاتِمًا مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ

نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١﴾

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ السَّلَامُ

وَالشَّهَادَةُ ۚ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ﴿٢٢﴾

^१ जिन्होंने अल्लाह को भुला कर यह बात भी भुलाये रखी, इस तरह वह खुद अपनी ही जानों पर जुल्म कर रहे हैं और एक दिन आयेगा कि इस के फलस्वरूप (नतीजे में) उन के यह शरीर, जिन के लिए वह दुनिया में बड़े-बड़े पापड़ बेलते थे, नरक की आग का ईंधन बनेंगे, और उन के मुकाबले में दूसरे वह लोग थे जिन्होंने अल्लाह को याद रखा, उस के आदेशानुसार (हुक्म के मुताबिक) जिन्दगी गुजारा। एक समय आयेगा कि अल्लाह तआला उन्हें उसका अच्छा बदला (अज़्र) देगा और अपने स्वर्ग में उन्हें दाखिल करेगा, जहाँ उन के आराम के लिए हर तरह का ऐश व आराम होगा। यह दोनों गिरोह यानी नरक वाले और स्वर्ग वाले बराबर नहीं होंगे, भला यह बराबर हो भी कैसे सकते हैं? एक ने अपने अंत (नतीजा) को याद रखा और उस के लिए तैयारी करता रहा, दूसरा अपने अंत से निश्चिन्त (बेखबर) रहा इसलिए उस के लिए तैयारी में भी विमुखता (गफलत) अपनायी।

^२ यानी हम ने पाक कुरआन में जो असर, सफ़ाई, शक्ति, दलील, शिक्षा और उपदेश (नसीहत) के ऐसे पक्ष बयान किये हैं कि उन्हें सुनकर पहाड़ भी इतनी कड़ाई, फैलाव और ऊँचाई के बावजूद अल्लाह के डर से कण-कण (रेजा-रेजा) हो जाते। यह इंसान को बतलाया और समझाया जा रहा है कि तुझे समझ-बूझ की योग्यता (काबलियत) दी गई है, लेकिन अगर कुरआन सुन कर तेरे दिल पर कोई असर नहीं पड़ता तो तेरा नतीजा अच्छा नहीं होगा।

२३. वही अल्लाह है जिसके सिवाय कोई (सच्चा) पूज्य नहीं, मालिक, बहुत पाक, सभी बुराईयों से आजाद, शान्ति अंता करने वाला, रक्षक (निगारी), गालिब, ताकतवर, अजीम, पाक है अल्लाह उन चीजों से जिन्हें ये उसका साझीदार बनाते हैं।

२४. वही अल्लाह है पैदा करने वाला, बनाने वाला, रूप देने वाला, उसी के लिए (बहुत) अच्छे नाम हैं, हर चीज चाहे आकाशों में हो या धरती में हो उसकी पाकी बयान करती हैं, और वही जबरदस्त और हिक्मत वाला है।

सूरतुल मुम्तहिन:-६०

सुर: मुम्तहिन: मदीने में नाजिल हुई और इस में तेरह आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. हे वे लोगो जो ईमान लाये हो ! मेरे और अपने दुश्मनों को अपना दोस्त न बनाओ ! तुम तो दोस्ती से उनकी ओर संदेश भेजते हो और वे उस सच का जो तुम्हारे पास आ चुका है इंकार करते हैं, रसूल को और खुद तुम को भी सिर्फ इस वजह से निकालते हैं कि तुम अपने रव पर ईमान रखते हो, अगर तुम मेरे रास्ते में जिहाद के लिए और मेरी खुशी की खोज में निकले हो (तो उन से दोस्ती न करो) तुम उन के पास प्रेम का संदेश छिपा-छिपा कर भेजते हो और मुझे अच्छी तरह मालूम है जो तुम ने छिपाया और

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ
بِالسُّلُوكِ الْمُنَافِقِينَ الْعَرِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ
سُبْحٰنَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۙ

هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَاءُ
الْحُسْنَىٰ ۗ يُسَبِّحُ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٠﴾

سُورَةُ الْمُتَحِنَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّیْ وَعَدُوِّكُمْ
اَوْلِیَآءَ تُلَفُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمُوْدَةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا
جَآءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ ۗ یُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِیَّاكُمْ
اِنْ تُوْمِنُوْا بِاللّٰهِ رَبِّكُمْ ؕ اِنْ كُنْتُمْ حَرَجْتُمْ جِهَادًا فِیْ
سَبِیْلِیْ وَاَبْقَاءَ مَرْضٰتِیْ تُسِرُّوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمُوْدَةِ ۗ
وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَا اَخْفَيْتُمْ وَمَا اَعْلَنْتُمْ وَمَنْ یُّفْعَلْهُ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِیْلِ ﴿٦٠﴾

१ मक्का के काफिरों और नबी ﷺ के बीच हुदैबिया में जो समझौता हुआ था मक्का वालों ने उसकी खिलाफवर्जी की। इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने भी छिपे तौर से मुसलमानों को लड़ाई की तैयारी का हुक्म दे दिया, जिसकी खबर हातिब पुत्र अबू वल्लतआ जो एक बड़ी मुहाजिर सहाबी थे जिनको कुरैश के साथ कोई नाता नहीं था, लेकिन उनकी पत्नी और बच्चे मक्का ही में थे, उन्होंने यह संदेश एक औरत के माध्यम (जरिये) से लिखित रूप में मक्कावासियों की तरफ भेज दिया, जिसकी खबर नबी ﷺ को बहयी द्वारा दे दी गई। उसी समय यह आयतें उतारी ताकि भविष्य (मुस्तकबिल) में कोई मुसलमान किसी काफिर के साथ ऐसी दोस्ती कायम न करे (सहीह बुखारी, तफसीर सूरतिल मुम्तहिनः, मुस्लिम, किताबु फजायलिस सहाबा)

वह भी जो तुम ने जाहिर किया, तुम में से जो भी इस काम को करेगा वह बेशक सीधे रास्ते से भटक जायेगा।

२. अगर वे तुम पर कहीं काबू पा लें तो वे तुम्हारे (खुले) दुश्मन हो जायें और बुराई के साथ तुम पर हाथ उठाने लगे और बुरे शब्द (लफ्ज) कहने लगे और (दिल से) चाहने लगे कि तुम भी कुफ्र करने लगे।^१

३. तुम्हारी नातेदारियाँ (और रिश्ते) और औलाद तुम्हें क़यामत (प्रलय) के दिन काम न आयेगे? अल्लाह (तआला) तुम्हारे बीच फ़ैसला कर देगा और तुम जो कुछ कर रहे हो उसे अल्लाह अच्छी तरह देख रहा है।

४. (मुसलमानो!) तुम्हारे लिए (हजरत) इब्राहीम में और उन के साथियों में बहुत अच्छा नमूना है, जबकि उन सब ने अपनी क़ौम से साफ़ शब्दों में कह दिया कि हम तुम से और जिन-जिन की तुम अल्लाह के सिवाय पूजा करते हो, उन सब से पूरी तरह से विमुख (बरी) हैं। हम तुम्हारे (अक़ीदे का) इंकार करते हैं, और जब तक तुम अल्लाह के एक होने पर ईमान न लाओ हम में तुम में हमेशा के लिए कपट और बैर पैदा हो गई^२ लेकिन इब्राहीम की इतनी बात तो अपने पिता से हुई थी कि मैं तुम्हारे लिए क्षमा-

إِنْ يَنْقُضُوكُمْ كُفُورًا لَكُمْ عَذَابٌ وَيَسْبُطُونَ
إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَسْئَلُهُمْ بِالسَّوءِ وَوَدُّوا
لَوْ تَكْفُرُونَ ﴿٢﴾

لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
يَفْضَلُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٣﴾

فَدَانَتْ لَكُمْ أَسُوءَةٌ حَسَنَةً فِي إِبْرَاهِيمَ
وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَءُ
وَمِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ كُفْرًا
يَكُمُ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ
أَبَدًا أَحَقُّ تَوَمَّنَا بِاللهِ وَحَدَاةَ الْأَقْوَالِ إِبْرَاهِيمَ
لِإِبْرَاهِيمَ لَا اسْتَفْقَرُونَ لَكَ وَمَا أَمَلِكَ لَكَ مِنَ اللَّهِ
مِنْ شَيْءٍ ۗ رَبَّنَا عَلَيْنَا نَوَكَلْنَا وَإِلَيْكَ آتَبْنَا
وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٤﴾

^१ यानी तुम्हारे विरोध (मुखालफत) में उन के दिलों में तो इस तरह बैर है और तुम हो कि उन के साथ प्रेम की पीयें बढ़ा रहे हो।

^२ यानी जिस संतान (औलाद) के लिए तुम काफिरों के साथ प्रेम दिखाते हो, यह तुम्हारे कुछ काम नहीं आयेगी, फिर उस की वजह से तुम काफिरों से दोस्ती करके क्यों अल्लाह को नाखुश करते हो? क़यामत के दिन जो चीज काम आयेगी वह तो अल्लाह और उस के रसूल ﷺ का आज्ञापालन (इताअत) है, इसका प्रबन्ध (इन्तेजाम) करो।

^३ यानी यह विलगाव और विमुखता (बराअत) उस समय तक रहेगी जब तक तुम कुफ्र और शिर्क को छोड़ कर तौहीद (अद्वैत) को न अपना लो। हाँ, जब तुम एक अल्लाह को मानने लगोगे तो फिर यह बैर प्रेम से बदल जायेगा और दुश्मनी प्रेम भाव में।

याचना (इस्तिगफार) जरूर करूंगा और तुम्हारे लिए मुझे अल्लाह के सामने कोई हक भी नहीं। हे हमारे रब! तुझ पर ही हमने भरोसा किया है, और तेरी ही तरफ हम आकर्षित (मुतवज्जह) होते हैं और तेरी ही तरफ फिर आना है।

५. हे हमारे रब! तू हमें काफिरों के इम्तेहान में न डाल, और हे हमारे रब! हमारी गलतियों को माफ कर, बेशक तू ही प्रभावशाली (गालिब) और हिक्मत वाला है।

६. बेशक तुम्हारे लिए उन में अच्छे आदर्श (उसवा) (और अच्छी पैरवी है खास कर) हर उस इंसान के लिए जो अल्लाह और क़यामत के दिन की मुलाकात पर यकीन रखता हो, और अगर कोई विमुख (मुंह फेरने वाला) हो जाये तो अल्लाह (तआला) पूरी तरह से बेनियाज़ है और बड़ाई और तारीफ के योग्य (लायक) है।

७. क्या ताज्जुब कि करीब ही अल्लाह (तआला) तुम में और तुम्हारे दुश्मनों में प्रेम पैदा कर दे,^२ अल्लाह (तआला) को सभी कुदरत है और अल्लाह बड़ा माफ करने वाला और रहम करने वाला (दयालु) है।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا قِدْمَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَاعْقِبْنَا
رَبَّنَا إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑤

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ
يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَرَمَىٰ تَمَٰثُلًا ۖ إِنَّ اللَّهَ
هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑥

عَسَىٰ لِلَّهِ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ
عَادَيْتُمْ مَوَدَّةً ۗ وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۗ وَاللَّهُ
عَفُورٌ رَّحِيمٌ ⑦

^१ (भरोसा) का मतलब है, जाहिरी संसाधनों (असबाब) को अपनाने के बाद मामला अल्लाह के हवाले कर दिया जाये, यह मतलब नहीं कि असबाब को अपनाये बिना ही अल्लाह पर भरोसा दिखाया जाये, इससे हम को रोका गया है। एक व्यक्ति नबी ﷺ की सेवा में हाज़िर हुआ और ऊँट को बाहर खड़ा करके भीतर आ गया, आप ﷺ ने पूछा तो कहा कि मैं ऊँट अल्लाह के हवाले कर के आया हूँ। आप ने फरमाया कि यह भरोसा नहीं। *اغفل و توكّل*। "पहले उसे बांध फिर अल्लाह पर भरोसा कर।" (तिर्मिजी)

^२ यानी उन्हें मुसलमान बनाकर तुम्हारा भाई और साथी बना दे, जिस से तुम्हारे बीच की दुश्मनी दोस्ती और प्रेम में बदल जायेगी, और ऐसा ही हुआ, मक्का विजय (फतह) के बाद लोग गिरोहों में मुसलमान होना शुरू हो गये और उन के मुसलमान होते ही नफरतें प्रेम में बदल गईं, जो मुसलमानों के खून के प्यासे थे वह हाथ पांव बन गये।

८. जिन लोगों ने तुम से धर्म के बारे में युद्ध नहीं किया और तुम्हें देश से नहीं निकाला, उन के साथ अच्छा सुलूक और एहसान करने और इंसान वाला बताव करने से अल्लाह (तआला) तुम्हें नहीं रोकता, (बल्कि) बेशक अल्लाह (तआला) तो इंसान करने वालों से प्रेम करता है।^१

९. अल्लाह (तआला) तुम्हें केवल उन लोगों से प्रेम करने से रोकता है, जिन्होंने तुम से धर्म के बारे में लड़ाई किया और तुम्हें देश से निकाला और देश से निकालने वालों की मदद की, जो लोग ऐसे काफिरों से प्रेम करें वही (यकीनी तौर से) ज़ालिम है।

१०. हे ईमानवालो! जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें हिजरत करके आयें तो तुम उनकी परीक्षा (इम्तेहान) ले लिया करो, हकीकत में उन के ईमान को अच्छी तरह जानने वाला तो अल्लाह ही है, लेकिन अगर वे तुम्हें ईमान वाली मालूम हों तो अब तुम उन्हें काफिरों की तरफ वापस न करो, यह उन के लिए हलाल (वैध) नहीं और न वे इन के लिए हलाल हैं, और जो खर्च उन काफिरों का हुआ हो वह उन्हें अदा कर दो, उन औरतों को उनकी महर देकर उन से विवाह कर लेने में तुम पर कोई पाप नहीं,^२ और

لَا يَنْهَى اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي
الْيَمِينِ وَلَا يُخْرِجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوهُمْ
وَتُقسطُوا إِلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقسطِينَ ⑧

إِنَّمَا يَنْهَى اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي
الْيَمِينِ وَأَخْرَجُوكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ وَظَهَرُوا عَلَى إِخْرَاجِكُمْ
أَنْ تَتَّوَّهُمُ ۚ وَمَنْ يَتَّوَّهُمُ فَأُولَئِكَ
هُمُ الظَّالِمُونَ ⑨

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمْ الْمُؤْمِنَاتُ فَهَجِّرْتِ
فَأَمْتَحِنُوهُنَّ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعْنَ ۚ فَإِنْ
عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ
لَا هُنَّ حِلٌّ لَهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ ۚ وَآتُوهُم
مَّا نَفَقُوا ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ
إِذَا اتَّيَسَّرُوهُنَّ ۚ وَلَا تَمْسِكُوا بِعَصَمِ
الْكُوفْرِ وَاسْتَلُوا مَّا نَفَقْتُمْ وَلَيْسَ لَكُم مَّا نَفَقُوا
ذَلِكُمْ حَلْمٌ ۚ اللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ⑩

^१ इस में इंसान करने की तरगीव (प्रोत्साहन) है यहाँ तक कि काफिरों के साथ भी।

^२ यह मुसलमानों से कहा जा रहा है कि यह औरतें जो ईमान के लिए अपने पतियों को छोड़कर तुम्हारे पास आ गई हैं, तुम उन से विवाह कर सकते हो, शर्त यह है कि उनकी महर उन्हें दे दो, किन्तु यह विवाह सुन्नत के अनुसार ही होगा, यानी एक तो इदत पूरी हो जाने (रिहम की सफाई) के बाद होगा, दूसरे उस में वली (सरसक) की इजाजत और दो न्यायी गवाहों की मौजूदगी भी फर्ज है। हाँ, अगर औरत से पति ने सहवास (जिमाअ) नहीं किया है तो फिर बिना मुदत तुरन्त विवाह (शदी) भी जायेज है।

काफिर औरतों के विवाह बन्धन को अपने कब्जे में न रखो' और जो कुछ तुम ने खर्च किया हो मांग लो, और जो कुछ उन काफिरों ने खर्च किया हो, वह भी मांग लें, यह अल्लाह का फैसला है जो तुम्हारे बीच कर रहा है, और अल्लाह (तआला) जानने वाला (और) हिक्मत वाला है।

११. और अगर तुम्हारी कोई पत्नी तुम्हारे हाथ से निकल जाये और काफिरों के पास चली जाये, फिर तुम्हें बदले का समय मिल जाये तो जिनकी पत्नियाँ चली गयी हैं उन्हें उन के खर्च के समान अदा कर दो, और उस अल्लाह से डरते रहो जिस पर तुम ईमान रखते हो।

१२. हे रसूल! (सदेष्टा) जब मुसलमान औरतें आप से इन बातों पर बैअत करने आयें कि वह अल्लाह के साथ किसी को साझीदार नहीं बनायेंगी, चोरी न करेंगी, व्याभिचार (बदकारी) न करेंगी, अपनी औलाद को न मार डालेंगी और न कोई ऐसा आक्षेप (बुहतान) लगायेंगी जो खुद अपने हाथों-पैरों के सामने गढ़ लें और किसी नेकी के काम में तेरी नाफरमानी न करेंगी, तो आप उन से बैअत कर लिया करें^१

وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ
فَمَا قَبَلْتُمْ فَأْتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ
يَتَّخِذُوا مَا آتَوْا وَاللَّهُ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ
مُؤْمِنُونَ ﴿١١﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَى
أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا
يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِمَهْتَاكِ
يَفْتَرِينَ بَيْنَ أَيِّدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَحْضِينَكَ
فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٢﴾

^१ عَمَمٌ (एसम) इस्मत (इस्मत) का बहुवचन (जमा) है, यहाँ इस से मुराद विवाह बंधन है। मतलब यह है कि अगर पति मुसलमान हो जाये और पत्नी उसी तरह काफिर और मुशरिक रहे तो पत्नी को अपने विवाह में रखना जायज नहीं है, उसे तुरन्त तलाक़ देकर अपने से अलग कर दिया जाये, और इस हुक्म के बाद हजरत उमर رضي الله عنه ने अपनी दो मुशरिक पत्नियों को और हजरत तलहा पुत्र उबैदुल्लाह ने अपनी पत्नी को तलाक़ दे दिया। (इन्ने कसीर) हाँ, अगर पत्नी किताबिया (यहूदी और ईसाई) हो तो उसे तलाक़ देना जरूरी नहीं है, क्योंकि उन से विवाह उचित (जायज) है। इसलिए अगर वह पहले ही से बीवी के रूप में तुम्हारे पास है तो इस्लाम कुबूल करने के बाद उसे अलग करने की जरूरत नहीं है।

^२ यह बैअत (प्रतिज्ञा) उसी समय लेते जब औरतें हिजरत करके आती, जैसाकि सहीह बुखारी तफसीर सूरह मुत्तहिना में है। इस के अलावा मक्का विजय के दिन भी आप صلوات الله وسلامه عليه केवल जुबानी वादा लेते। किसी औरत के हाथ को नहीं छूते।

और उनके लिए अल्लाह से माफी मागे, बेशक अल्लाह (तआला) माफ करने वाला दयालु है।

१३. हे मुसलमानो! तुम उस कौम से दोस्ती न रखो, जिन पर अल्लाह का अज़ाब आ चुका है। जो आखिरत से इस तरह निराश हो चुके हैं जैसेकि मुर्दे कब्र वालों से काफिर मायूस हैं।

सूरतुस सफ़-६९

सूर: सफ़* मदीने में नाज़िल हुई, इस में चौदह आयतें और दो रूक़ुज़ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. आकाशों और धरती की हर चीज़ अल्लाह (तआला) की पवित्रता (पाकीजगी) बयान करती है और वही प्रभावशाली (गालिब) और हिम्मत वाला है।

२. हे ईमानवालो! तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं?

३. तुम जो करते नहीं, उसका कहना अल्लाह (तआला) को नापसन्द है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ
قَدْ تَوَلَّوْا مِنْ الْأَمْرِ كَمَا لَيْسَ الْكَافِرِينَ
أَصْحَابِ الْقُبُورِ ﴿١٣﴾

سُورَةُ الصَّفِّ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحْ بِحَمْدِ اللَّهِ فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٢﴾

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ﴿٣﴾

1 इस से कुछ ने यहूद, कुछ ने अवसरवादी (मुनाफिक) और कुछ ने काफिर सुराद लिया है। यह आखिरी बात ही ज्यादा सही है, क्योंकि इस में यहूद और द्वयवादी (मुनाफिक) भी आ जाते हैं। इस के सिवा सभी काफिर ही अल्लाह के अज़ाब के मुस्तहिक हैं, इसलिए मतलब यह होगा कि किसी भी काफिर से दोस्ती का रिश्ता न रखो, जैसाकि यह विषय कुरआन के कई जगहों पर बयान किया गया है।

* इस सूर: के अवतरण (तुज़ूल) की वजह में आता है कि कुछ सहाबा (नबी के सहचर) आपस में बातें कर रहे थे कि अल्लाह को जो अमल सब से ज्यादा प्यारा है वह रसूलुल्लाह ﷺ से पूछने चाहिए ताकि उस के मुताबिक अमल किया जाये, किन्तु आप के पास जाकर पूछने की हिम्मत कोई नहीं कर रहा था, इस पर अल्लाह ने यह सूरह उतारी। (मुसनद अहमद ५: ४५२, तिर्मिजी तफसीर सूरतुससफ़)

४. बेशक अल्लाह (तआला) उन लोगों को प्रिय रखता है जो उस के रास्ते में पंक्तिबद्ध (सफबस्ता) होकर जिहाद करते हैं, जैसेकि वे सीसा पिलाई हुई इमारत हैं।

५. और (याद करो) जब मूसा ने अपने समुदाय (क्रौम) से कहा कि हे मेरी क्रौम के लोगो! तुम मुझे क्यों पीड़ित कर रहे हो जबकि तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का रसूल हूँ, तो जब वे लोग टेढ़े ही रहे तो अल्लाह ने उन के दिलों को और टेढ़ा कर दिया, और अल्लाह (तआला) नाफरमान क्रौम को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं देता।

६. और जब मरियम के पुत्र ईसा ने कहा कि हे (मेरी क्रौम) इस्राईल की औलाद! मैं तुम सब की तरफ अल्लाह का रसूल हूँ, मुझ से पहले की किताब तौरात की पुष्टि (तसदीक) करने वाला हूँ, और अपने बाद आने वाले एक रसूल की खुशखबरी सुनाने वाला हूँ जिनका नाम अहमद है,^३ फिर जब वह उन के सामने साफ निशानियाँ लाये तो वे कहने लगे कि यह तो खुला जादू है।

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا
كَالَّذِينَ بَنِيَانًا مَّرْمُومًا ④

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ لِمَ تَقُولُونَ لِمَ تَقُولُونَ
وَقَدْ كَلَّمْتُمُونَنِي رَسُولَ اللَّهِ وَإِنَّمَا إِلَهُ الْكَافِرِينَ فَلَمَّا رَأَوْهُ
كِرَالًا اللَّهُ فَكَلَّمَهُمْ وَأَنَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْفَاسِقِينَ ⑤

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِنِّي
رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ فَمَكِّدًا قِيلَ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ
أَنزَلْنَاهُ فِي رُوحِنَا وَأَتَيْنَاكَ الْوَحْيَ وَإِنَّمَا إِلَهُ الْكَافِرِينَ
فَلَمَّا رَأَوْهُ كِرَالًا فَكَلَّمَهُمْ بِالنَّبِيِّ كَالَّذِينَ هَذَا
سِحْرٌ مُّبِينٌ ⑥

^१ यह जानते हुए भी कि हजरत मूसा عليه السلام अल्लाह के सच्चे रसूल हैं, इस्राईल की औलाद उन्हें अपने मुँह (बात) से कष्ट देती थी, यहाँ तक कि कुछ जिस्मानी एंव उन से संबन्धित (मंसूब) कटती थी जबकि वह रोग उन में नहीं था।

^२ ईबदूत ईसा عليه السلام की कहानी का बयान इसलिए किया कि इस्राईल की औलाद ने जैसे ईबदूत मूसा عليه السلام की नाफरमानी की, वैसे ही उन्होंने हजरत ईसा का भी इंकार किया, इस में नबी ﷺ को तसल्ली दी जा रही है कि यह यहूद आप ﷺ ही के साथ ऐसा नहीं कर रहे हैं, बल्कि इनका तो पूरा इतिहास ही ईबदूतों को झुठलाने से भरा है।

^३ यह हजरत ईसा عليه السلام ने अपने बाद आने वाले आखिरी रसूल हजरत मोहम्मद ﷺ की खुशखबरी सुनाई। जैसेकि नबी ﷺ ने फरमाया :

«मैं अपने पिता इब्राहीम की दुआ और ईसा की खुशखबरी का चरितार्थ (मिस्ताक) हूँ।»
(ऐसरूतफासीर)

७. और उस इंसान से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह (तआला) पर झूठ गढ़े? जबकि वह इस्लाम की तरफ बुलाया जाता है, और अल्लाह ऐसे ज़ालिमों को हिदायत नहीं देता।

८. वे चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपनी फूँक से बुझा दें, और अल्लाह अपनी दिव्य ज्योति (नूर) को उच्च पदों तक ले जाने वाला है, चाहे काफिर बुरा मानें।

९. वही है जिस ने अपने रसूल (संदिष्टा) को मार्गदर्शन (हिदायत) और सच्चा दीन (धर्म) दे कर भेजा ताकि उसे दूसरे सभी धर्मों पर प्रभावशाली (गालिब) कर दे, चाहे मूर्तिपूजक नाबुख हों।

१०. हे ईमानवालो! क्या मैं तुम्हें वह व्यापार बताऊँ^१ जो तुम्हें कष्टदायी (तक्लीफ़दह) अज़ाब से बचा ले?

११. अल्लाह (तआला) पर और उस के रसूल पर ईमान लाओ और अल्लाह के रास्ते में अपने तन, मन और धन से जिहाद करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम में ज्ञान (इल्म) हो।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ الْكِبْرَ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٧﴾

يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَاللَّهُ صُمَّتْ نُورُهُ وَكُفِرَ الْكُفْرُوتُنَّ ﴿٨﴾

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ﴿٩﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدْرَكُمْ عَلَىٰ تِجَارَةٍ تُحِبُّونَهَا مِن عَدَابِ اللَّهِ ﴿١٠﴾

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَنُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١١﴾

^१ प्रकाश (नूर) से मुराद पाक कुरआन, इस्लाम, मोहम्मद ﷺ, दलील और सूबूत है। मुंह से बुझा देने का मतलब वह व्यंग (तंज़) और कटाक्ष (तंकीद) है जो उन के मुंह से निकलते थे।

^२ इस कर्म (यानी ईमान और जिहाद) को व्यापार से व्यञ्जित (ताबीर) किया, इसलिए कि इस में भी इन्हें व्यापार की तरह फ़ायदा होगा और वह फ़ायदा क्या है? स्वर्ग में प्रवेश और नरक से आज़ादी, इस से बड़ा फ़ायदा और क्या होगा? इस बात को दूसरी जगह पर इस तरह बयान किया है।

﴿إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنْ لَهُمُ الْجَنَّةُ﴾

«अल्लाह ने मोमिनों से उनकी जानों और मालों का सौदा जन्नत के बदले में कर लिया है।»
(अत्तौबा-१११)

१२. (अल्लाह तआला) तुम्हारे पाप माफ कर देगा और तुम्हें उन स्वर्गों में पहुँचायेगा जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी और (सुद्ध) साफ घरों में जो "अदन" के स्वर्ग में होंगे, यह बहुत बड़ी कामयाबी है।

१३. और तुम्हें एक दूसरा (उपहार) भी देगा जिसे तुम चाहते हो, वह अल्लाह की मदद और जल्द फल है, और ईमानवालों को खुशखबरी दे दो।

१४. हे ईमानवालो! तुम अल्लाह (तआला) की मदद करने वाले बन जाओ,^१ जिस तरह (हजरत) मरियम के पुत्र (हजरत) ईसा ने हवारियों (मित्रों) से कहा कि कौन है जो अल्लाह के रास्ते में मेरा मददगार बने। (उन के) मित्रों ने कहा कि हम अल्लाह के रास्ते में मददगार हैं तो इस्राईल की औलाद में से एक गुट तो ईमान लाया और एक गुट ने कुफ्र किया^२ तो हम ने ईमानवालों की उन के दुश्मनों की तुलना में मदद की, तो वे विजयी हो गये।

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَسُكُنِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿١٣﴾

وَأُخْرَىٰ يُحِبُّونَهَا طَصَوْنَ مِنَ اللَّهِ وَقُتِبَ قَرِيبًا
وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَصْوَارَ اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ط قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَاَمْتَنَّا ط كَذَّبَتْ طَاغُوتُ قَوْمَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَكَفَرَتْ طَاغُوتُ ط قَالَتُ نَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيَّ عَدُوٌّ هُمْ فَاصْبِرُوا ط ظَهَرَ مِنْ ﴿١٤﴾

^१ सभी हालतों में अपने वादों और अमलों के जरिये भी और धन और जान के द्वारा भी, जब भी जिस समय भी और जिस हालत में भी अल्लाह और उसका रसूल अपने धर्म की सहायता (मदद) के लिए पुकारे तुम तुरन्त उनकी पुकार पर कहो कि हम मौजूद हैं, जैसे हवारियों ने ईसा की पुकार पर कहा।

^२ यह यहूदी थे जिन्होंने ईसा عليه السلام की नववृत्त (दूतत्व) का इंकार ही नहीं किया बल्कि उन पर और उन की माँ पर लांछन (इल्जाम) भी लगाया। कुछ कहते हैं कि यह मतभेद (इस्तिस्लाम) और बिखराव उस समय हुआ जब हजरत ईसा को आसमान पर उठा लिया गया। एक ने कहा कि ईसा के रूप में अल्लाह (प्रभु) ही धरती पर प्रकट हुआ था (जैसे सनातन धर्म में इंद्रदूतों को अवतार मानते हैं) अब वह फिर आकाश पर चला गया, यह सम्प्रदाय (फिर्का) "याकूबिया" कहलाता है, नस्तूरिया फिर्का ने कहा कि वह अल्लाह के पुत्र थे, पिता ने पुत्र को आकाश पर बुला लिया। तीसरे ने कहा कि वह अल्लाह के भक्त (बंदे) और उसके संदेष्टा (रसूल) थे, यही फिर्का सही था।

सूरतुल जुमअः-६२

सूरः जुमअः* मदीने में नाज़िल हुई, इस में ग्यारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. आकाशों और धरती की सभी चीज़े अल्लाह (तआला) की पवित्रता (तस्वीह) बयान करती हैं, जो बादशह और बड़ा पाक (है) गालिब (और) हिक्मत वाला है।

२. वही है जिस ने अनपढ़ लोगों में उन ही में से एक रसूल भेजा, जो उन्हें उस की आयतें पढ़ कर सुनाता है और उन को पाक करता है और उन्हें किताब और ज्ञान (हिक्मत) सिखाता है, वेशक ये उस से पहले साफ़ (स्पष्ट) भटकावे में थे।

३. और दूसरों के लिए भी उन्हीं में से जो अब तक उन से नहीं मिले, और वही गालिब (और) हिक्मत वाला है।

४. यह अल्लाह की कृपा (फ़ज़ल) है जिसे चाहे अपनी कृपा अता करे और अल्लाह (तआला) बड़ा कृपालु (फ़ज़ल वाला) है।

سُورَةُ الْجُمُعَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مُسْتَجِبٌ يُدْعَى فِي السَّلَواتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ
الْقَدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ①

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمَمِينَ رُسُلًا وَمِنْهُمْ
يَسْتَأْذِنُ عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُذَكِّرُهُمْ وَيُعَلِّمُهُمُ
الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ لَافِقِينَ
صَلَّى مُبِينٍ ②

وَالْآخِرِينَ وَمِنْهُمْ لَنَّا يُلْحِقُوا بِهِمْ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ④

* नबी ﷺ जुमअः की नमाज़ में सूरः जुमअः और सुनाफिक़ून पढ़ा करते थे। (सहीह मुस्लिम, कितानुल जुमअः, बाबु मा युकरउ फ़ी सलातिल जुमअः) फिर भी इन का जुमअः की रात को ईशा की नमाज़ में पढ़ना सहीह रिवायत से सिद्ध (साबित) नहीं। हाँ, एक कमज़ोर रिवायत में ऐसा आता है। (लिसानुल मीज़ान ले इव्ने हज़र, तर्जुमा सईद विन सम्माक दिन हरब)

५. जिन लोगों को तौरात के (अनुसार) काम करने का हुक्म दिया गया फिर उन्होंने उस पर काम नहीं किया, उनकी मिसाल उस गधे जैसी है जो बहुत सी किताब लादे हो। अल्लाह की बातों को झुठलाने वालों की बहुत बुरी मिसाल है, और अल्लाह ऐसे जालिमों को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं देता।

६. कह दीजिए कि ऐ यहूदियों! अगर तुम्हारा दावा है कि तुम अल्लाह के दोस्त हो दूसरे लोगों के सिवाय, तो तुम मौत की कामना (तमन्ना) करो अगर तुम सच्चे हो।

७. यह मौत की तमन्ना कभी नहीं करेंगे उन अमलों की वजह से जो अपने हाथों अपने पहले भेज रखे हैं और अल्लाह (तआला) जालिमों को अच्छी तरह जानता है।

८. कह दीजिए कि जिस मौत से तुम भाग रहे हो वह तो तुम तक जरूर पहुँचेगी, फिर तुम सब छिपी और खुली बातों के जानने वाले (अल्लाह) की तरफ लौटाये जाओगे और फिर वह तुम्हें तुम्हारे किये हुए सभी अमलों को बता देगा।

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَا أُتُوا
بِهَا لَئِنْ لَمْ يَنْجِبُوا لَهُمْ نَجْوًا لَأَخَذْنَا مِنْهُمُ
الْحَبْرَ وَيَحْمِلُونَهَا أَسْفَارًا وَسَاءَ لِمَنْ يَسْئُرْ
مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ
كَانُوا بِآيَاتِنَا كَافِرِينَ ﴿٥﴾

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَكُمْ
أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ فَتَمَتَّعُوا
بِالْمَوْتِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٦﴾

وَلَا يَسْتَسْوُونَكَ أَيْدِيَهُمْ إِنَّهُمْ
كَانُوا كَافِرِينَ ﴿٧﴾

قُلْ إِنْ الْمَوْتُ أَلَّتْ إِلَيْكَ فَبِئْسَ الْكَيْدُ
مَنْ كَفَرَ بِآيَاتِنَا ثُمَّ نَبْذُوكَ إِلَىٰ عِلْمِ
الْغَيْبِ وَاللَّهْمُ أَعْلَمُ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٨﴾

१. اسْفَارًا (अस्फार) सफ़र (सिफर) का बहुवचन (जमा) है, मायने है बड़ी किताब। किताब जब पढ़ी जाती है तो इंसान उस के मायनों में यात्रा (सफर) करता है, इसलिए किताब को भी यात्रा कहा जाता है, (फतहल कदीर)। यह निष्कर्म (बेअमल) यहूदियों की मिसाल दी गई है कि जिस तरह गधे को ज्ञान (इल्म) नहीं होता कि उस के ऊपर जो किताबें लदी हुई हैं उन में क्या लिखा है? या उस पर किताबें लदी हैं या कूड़ा-करकट। इसी तरह यह यहूदी हैं, यह तौरात तो लिये फिरते हैं, उसे पढ़ने और याद करने की बातें भी करते हैं, लेकिन उसे समझते हैं न उसके आदेशानुसार (अहकाम के मुताबिक) कर्म (अमल) करते हैं, बल्कि उस में फेर-बदल और तहरीफ से काम लेते हैं, इसीलिए हकीकत में यह गधे से भी बुरे हैं।

२. यानी कुफ़र, नाफरमानी और अल्लाह की किताब में जो हेर-फेर और बदलाव ये करते रहे हैं, उन की वजह से कभी भी यह मौत की कामना (तमन्ना) नहीं करेंगे।

९. हे वह लोगो जो ईमान लाये हो! जुमअ: के दिन (शुक्रवार को) नमाज की अज्ञान दी जाये तो तुम अल्लाह की याद की तरफ जल्द आ जाया करो और क्रय-विक्रय (खरीद-फरोख्त) छोड़ दो, यह तुम्हारे पक्ष (हक) में बहुत अच्छा है अगर तुम जानते हो।

१०. फिर जब नमाज हो जाये तो धरती पर फैल जाओ और अल्लाह की कृपा (फजल) को खोजो, और अल्लाह का बहुत ज़्यादा बर्णन (जिक्र) करो ताकि तुम कामयाबी हासिल कर लो।

११. और जब कोई सौदा विकता देखें या कोई तमाशा दिखायी पड़ जाये तो उसकी तरफ दौड़ जाते हैं और आप को खड़ा ही छोड़ देते हैं। (आप) कह दीजिए कि अल्लाह के पास जो कुछ है वह खेल और व्यापार (तिजारात) से अच्छा है, और अल्लाह (तआला) सब से अच्छा जीविका (रिज़क) देने वाला है।

सूरतुल मुनाफिकून-६३

सूर: मुनाफिकून मदीने में नाजिल हुई, इस में ग्यारह आयतें और दो रूक़ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا دُعِيَ لِلصَّلَاةِ مِنْ يَوْمِ
الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ
ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩﴾

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي الْأَرْضِ
وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا
لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ﴿١٠﴾

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا اتَّخَذُوا إِلَيْهَا
وَتَرَكُوا قَابِلَةً مَّا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرًا مِّنَ اللَّهِوِ
وَمِنَ التِّجَارَةِ وَاللَّهُ خَيْرُ الرَّازِقِينَ ﴿١١﴾

سُورَةُ الْمُنَافِقِينَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1 यह "अज्ञान" कैसे दी जाये और इस के शब्द (अलफाज) क्या हों? यह कुरआन में कहीं नहीं है, हाँ! हदीस में है, जिस से मालूम हुआ कि कुरआन बिना हदीस के समझना मुमकिन है न उस पर कार्यरत (अमल) होना ही। जुमअ: को जुमअ: इसलिए कहते हैं कि उस दिन अल्लाह हर सृष्टि (मखलूक) को पैदा कर के पैदाईश के काम से फ़ारिग हो गया था, ऐसे मानो उस दिन पूरी मखलूक जमा हो गई, या नमाज के लिये लोग जमा होते हैं।

2 इस से मुराद कारोबार और व्यापार है, यानी जुमअ: की नमाज पढ़कर फिर अपने काम-धंधे में लग जाओ। उद्देश्य (मकसद) यह बताना है कि जुमअ: के दिन कारोबार बंद रखने की ज़रूरत नहीं, सिर्फ नमाज के समय ऐसा करना आवश्यक (फ़र्ज़) है।

१. तेरे पास जब मुनाफिक आते हैं तो कहते हैं कि हम इस बात के गवाह हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं,^१ और अल्लाह (तआला) जानता है कि आप बेशक उस के रसूल हैं, और अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफिक निश्चित रूप (यक्नीनी तौर) से झूठे हैं।

२. उन्होंने अपनी कसमों को ढाल बना रखा है तो अल्लाह के रास्ते से हक गये^२ बेशक बुरा है वह काम जिसे ये कर रहे हैं।

३. यह इस वजह से है कि ये ईमान लाकर दोबारा काफिर हो गये,^३ तो उन के दिलों पर मोहर लगा दी गई, अब ये नहीं समझते।

४. और जब आप उन्हें देख ले तो उन के शरीर (जिस्म) आप को आकर्षक (लुभावना) मालूम हों, और जब ये बातें करने लगे तो उनकी बातों पर आप (अपना) कान लगायें, जैसाकि ये लकड़ियाँ हैं दीवार के सहारे से लगायी हुई,^४ (वे) हर (ऊँची) आवाज को अपने खिलाफ समझते हैं। वही वास्तविक (हकीकी) दुश्मन हैं, उन से बचो, अल्लाह उन्हें नाश करे! कहीं फिरे जाते हैं।

وَإِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ
وَأَن نَّعْلَمُ بِكَ لَمَّا كُنَّا نَسْمَعُ ۗ وَاللَّهُ يَسْمَعُ
الْمُنَافِقِينَ كَلِمَاتِهِمْ ۝

وَإِذْ ذُكِّرُوا بِنِعْمَةِ اللَّهِ فَوَسَّوْا لَهُمْ
اللَّهُ طَائِفًا مِّنْهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ
عَمَّا لَا يَفْقَهُونَ ۝

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۗ وَإِنْ يَقُولُوا
تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ ۗ كَأَنَّ لَهُمْ خُشُبًا مُّسْتَدْرَأًا ۗ
يَسْمَعُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُّ
فَأَحْذَرُ لَهُمْ ۗ فَمَا لَهُمْ بِاللهِ أَنَّى يُؤْفَكُونَ ۝

^१ मुनाफिकून से भ्रातर अब्दुल्लाह विन उवैय और उस के साथी हैं, ये जब नबी ﷺ की सेवा (खिदमत) में हाजिर होते तो कसम खा-खाकर कहते कि आप ﷺ अल्लाह के रसूल हैं।

^२ दूसरा अनुवाद (तर्जुमा) यह है कि इन्होंने शक और बुद्धा पैदा करके अल्लाह के रास्ते से रोका।

^३ इस से मालूम हुआ कि अबसरवादी (मुनाफिक) भी वाजेह काफिर हैं।

^४ यानी अपने जिस्मानी डील-डौल और जाहिरी शकल व सूरत और भलाई की कमी में ऐसे हैं जैसे दीवार पर लगाई लकड़ियाँ हों, जो देखने में तो भली लगती हैं लेकिन किसी को फायेदा नहीं पहुँचा सकती या यह मुब्तिदा है और इसका विषय लुप्त (पोबीदा) है और मतलब यह है कि यह रसूलुल्लाह ﷺ की सभा में ऐसे बैठते हैं जैसे दीवार से लगी लकड़ियाँ हैं, जो कोई बात समझती हैं न जानती हैं। (फतहल कदीर)

५. और जब उन से कहा जाता है कि आओ तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल तौबा करें तो अपने सिर मोड़ लेते हैं, और आप उन्हें देखेंगे कि वे गर्व (फख) करते हुए रूक जाते हैं।

६. उन के पक्ष (हक) में आप का माफी की प्रार्थना (दुआ) करना और न करना दोनों बराबर है, अल्लाह (तआला) उनको कभी माफ न करेगा,¹ बेशक अल्लाह (तआला ऐसे) फासिकों (अवज्ञाकारियों) को रास्ता नहीं दिखाता।

७. यही वे हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के पास हैं, उन पर कुछ खर्च न करो, यहाँ तक कि वे इधर-उधर हो जायें, हालाँकि आकाशों और धरती के सारे खजाने अल्लाह ही का स्वामित्व (मिल्कियत) है लेकिन ये मुनाफिक समझते नहीं।

८. ये कहते हैं कि अगर हम अब लौटकर मदीने जायेंगे तो इज्जत वाला वहाँ से वे इज्जत को निकाल देगा।² (सुनो!) सम्मान तो केवल अल्लाह (तआला) के लिए और उस के रसूल के लिए और ईमानवालों के लिए है,³ लेकिन ये

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ﴿٥﴾

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ﴿٦﴾

هُمْ الَّذِينَ يَصُدُّونَ لَا تَنْفَعُوا عَلَيَّ مِنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّى يَنْقُضُوا بِرِئَابِهِمْ خَزَائِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ﴿٧﴾

يَعْتَدُونَ لَكِن رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لِيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٨﴾

¹ अगर इसी निफाक की हालत में मर गये तो उन के लिए माफी नहीं। हाँ, अगर वह जीवन में कुफ्र और निफाक से तौबा कर लें तो और बात है, फिर उन के लिए क्षमा मुमकिन है।

² इसका कहने वाला मुनाफिकों का प्रमुख (सरदार) अब्दुल्लाह बिन उवैय था, बाइज्जत से उसका मरसद था वह खुद और उस के साथी और बेइज्जत से (अल्लाह की पनाह!) रसूलुल्लाह ﷺ और मुसलमान।

³ यानी इज्जत और प्रभुत्व (गल्बा) केवल अल्लाह के लिए है, वह अपनी तरफ से जिसको चाहे इज्जत और गल्बा दे, जैसे कि वह अपने रसूलों और उन पर ईमान लाने वालों को इज्जत और कामयाबी अता करता है, न कि उन को जो नाफरमान हों। यह मुनाफिकों के कौल का खंडन (तरदीद) किया है कि इज्जत का मालिक केवल अल्लाह तआला है और बाइज्जत (सम्मानित) भी वही है जिसे वह बाइज्जत समझे, न कि वह जो खुद को बाइज्जत या जिसे दुनिया वाले बाइज्जत समझें। अल्लाह के करीब बाइज्जत सिर्फ और सिर्फ ईमानवाले होंगे, काफिर और मुनाफिक नहीं।

द्वयवादी (मुनाफिकीन) जानते नहीं।

९. हे ईमानवालो! तुम्हारा धन और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से माफिल न कर दें! और जो ऐसा करें वे बड़े ही नुकसान उठाने वाले लोग हैं।

१०. और जो कुछ हम ने तुम्हें अता कर रखा है, उस में से (हमारे रास्ते में) उस से पहले खर्च करो? कि तुम में से किसी को मौत आ जाये, तो कहने लगे कि हे मेरे रब! मुझे तू थोड़ी देर की छूट क्यों नहीं देता? कि मैं दान दूँ और सदाचारी (सालेहीन) लोगों में से हो जाऊँ।

११. और जब किसी का निर्धारित (मुकरर) समय आ जाता है फिर उसे अल्लाह (तआला) कभी मौका नहीं देता, और जो कुछ तुम करते हो, उसे अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَا
أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ
فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ ﴿٩﴾

وَأَنْفُسُكُمْ مِنْ مَا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ
أَحَدَكُمْ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ
أَجَلٍ قَرِيبٍ فَأَصْدَقَ وَأَكُنْ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿١٠﴾

وَأَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا
وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ﴿١١﴾

१ यानी माल और औलाद की मुहब्बत का तुम पर इतना असर न हो जाये कि तुम अल्लाह के बतलाये हुए हुकमों और कर्तव्यों से बेफिक्र हो जाओ और अल्लाह की मुकरर की हुई हलाल (वैध) और हराम (अवैध) की सीमाओं (हदों) की फिक्र न करो। मुनाफिकों की चर्चा के बाद तुरन्त इस चेतावनी (तंवीह) का मकसद यह है कि यह मुनाफिकों का तरीका है, जो इंसान को नुकसान में डालने वाला है। ईमानवालों का तरीका इस के उल्टा होता है और वह यह है कि वह हर पल अल्लाह को याद रखते हैं, यानी उसके हुकमों और अनिवार्यताओं (वाजिबों) का पालन और हलाल और हराम में अन्तर (फर्क) करते हैं।

२ खर्च करने का मतलब जकात देने और दूसरे अच्छे कामों में खर्च करना है।

३ इस से मालूम हुआ कि जकात (धर्मदान) देने और अल्लाह के रास्ते में खर्च करने और इसी तरह अगर हज्र करने का सामर्थ्य (कुदरत) हो तो उसे अदा करने में देर नहीं करनी चाहिए, इसलिए की मौत पता नहीं कब आ जाये और यह फर्ज उस के ऊपर रह जाये, मौत के समय कामना (तमन्ना) करने का कोई फायदा नहीं होगा।

सूरतुत तगाबुन-६४

सूर: तगाबुन मदीने में नाजिल हुई और इस में अट्ठारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. आकाशों और धरती की हर चीज अल्लाह की पवित्रता (तस्बीह) बयान करती है, उसी का राज्य (मुल्क) है और उसी की प्रशंसा (तारीफ) है और वह हर चीज पर सामर्थ्यवान (कादिर) है।

२. उसी ने तुम्हें पैदा किया है, तो तुम में से कुछ तो काफिर हैं और कुछ ईमानवाले हैं, और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह (तआला) अच्छी तरह देख रहा है।

३. उसी ने आकाशों को और धरती को हक के साथ (दानाई और हिक्मत) से पैदा किया, उसी ने तुम्हारे रूप बनाये और बहुत सुन्दर बनाये और उसी की तरफ लौटना है।

४. वह आसमानों और जमीन की सभी चीजों का ज्ञान (इल्म) रखता है और जो कुछ तुम छिपा रखो और जो जाहिर करो वह (सब को) जानता है। अल्लाह तो सीनों तक की बातों को जानने वाला है।

سُورَةُ التَّغَابُنِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَسْبِغُ لَكُمْ لِبَسَاتِكُمْ وَمَا فِي الْأَرْضِ
لَهُ الْمُلْكُ وَهُوَ الْحَدِيدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيرٌ ①

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْكُمْ كَافِرًا وَمِنْكُمْ مُؤْمِنًا
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ②

خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ
فَأَحْسَنُ صُورَكُمْ ③ وَالْيَوْمَ الْآخِرُ ④

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ
مَا تُسْرُونَ وَمَا تُنْفِقُونَ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِدَاتِ الصُّدُورِ ④

१ यानी इंसान के लिए नेकी, पाप, भलाई, बुराई, कुफ्र और ईमान के रास्तों को साफ करने के बाद अल्लाह ने इंसान को इच्छा और पसन्द का अधिकार (इस्तिथार) दिया, जिस के अनुसार किसी ने कुफ्र और किसी ने ईमान का रास्ता अपनाया है, उस ने किसी पर दबाव नहीं डाला, अगर वह दबाव डालता तो कोई कुफ्र और पाप का रास्ता अपनाए पर कादिर ही नहीं होता, लेकिन इस तरह से इंसान का इम्तेहान मुमकिन (संभव) नहीं था, जबकि अल्लाह की भर्जी इंसान का इम्तेहान लेना था।

५. क्या तुम्हारे पास इस से पहले के काफिरों की खबर नहीं पहुँची, जिन्होंने अपने अमलों के नतीजा का मजा खख लिया और जिन के लिए कष्टदायी (तक्रलीफ़दह) अजाब है?

६. यह इसलिए कि उन के पास उन के रसूल बाजेह दलायल (चमत्कार) लेकर आये तो उन्होंने कह दिया कि क्या इंसान हमारी हिदायत करेगा? तो इंकार कर दिया और मुँह फेर लिया और अल्लाह ने भी वेनियाज़ी की, और अल्लाह तो है ही बड़ा वेनियाज़ सभी गुणों (सिफ़तों) वाला ।

७. उन काफिरों ने भ्रम (गुमान) किया है कि दोबारा जिन्दा न किये जायेंगे, आप कह दीजिए कि क्यों नहीं, अल्लाह की कसम ! तुम जरूर फिर से जिन्दा किये जाओगे, फिर जो कुछ तुम ने किया है उस की खबर दिये जाओगे, और अल्लाह (तआला) के लिए यह बहुत ही आसान है ।

८. तो तुम अल्लाह पर और उस के रसूल पर और उस ज्योति (नूर) पर जिसे हम ने नाज़िल किया है ईमान लाओ, और अल्लाह तआला तुम्हारे हर अमल से बाख़बर है ।

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا لَهُمْ
وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑤

ذَلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ
فَكَأَنَّهُمْ أَبْصَرُ يُبْهَدُونَ وَنَسُوا فَكَفَرُوا وَتَوَلَّوْا
وَاسْتَفْتَى اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَىٰ حَسْبٍ ⑥

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَنْ يُبْعَثُوا قُلْ بَلْ
وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ
وَذَلِكَ عَلَىٰ اللَّهِ يَسِيرٌ ⑦

فَأْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورَ الَّذِي
أَنْزَلْنَا وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ⑧

1 यह उन के कुफ़्र की बजह है कि उन्होंने यह कुफ़्र, जो दोनों लोक में उनकी यातना (सजा) की बजह बना, इसलिए अपनाया कि उन्होंने एक इंसान को अपना मार्गदर्शक (रहनुमा) मानने से इंकार कर दिया, यानी एक इंसान का रसूल बनकर लोगों की रहनुमाई और हिदायत के लिए आना उन के लिए नाक्राबिले क़बूल (अस्वीकार्य) था, जैसाकि आज भी विद्वानों के लिये रसूल को इंसान मानना बड़ा भारी और कठिन है । مَدَامُ اللَّهِ تَعَالَى

2 पाक कुरआन की तीन जगहों पर अल्लाह तआला ने अपने रसूल को यह हुक्म दिया है कि अल्लाह की कसम लेकर यह एलान करो कि अल्लाह जरूर दोबारा जिन्दगी देगा, उन में से एक यह स्थान (जगह) है और इस से पहले एक जगह सूरह यूनुस आयत ५३ और दूसरा सूरह सबा आयत ३ है ।

९. जिस दिन तुम सब को उस जमा होने के दिन जमा करेगा, वही दिन है हार और जीत का, और जो (इंसान) अल्लाह पर ईमान लाकर नेक काम करे अल्लाह उस से उसकी बुराईयाँ दूर कर देगा और उसे स्वर्गों में ले जायेगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिस में वे हमेशा रहेंगे, यही बहुत बड़ी कामयाबी है।

१०. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वे सभी नरक में जाने वाले हैं, जिस में वे हमेशा रहेंगे, वह बहुत बुरी जगह है।

११. कोई मुसीबत अल्लाह की आज्ञा (इजाज़त) के बिना नहीं पहुँच सकती, और जो अल्लाह पर ईमान लाये अल्लाह उस के दिल को मार्गदर्शन (हिदायत) देता है और अल्लाह हर चीज़ को अच्छी तरह जानने वाला है।

१२. (लोगो!) अल्लाह के हुक्म की पैरवी करो और रसूल के हुक्म का पालन करो, फिर अगर तुम विमुख (मुंह फेरने वाले) हुए तो हमारे रसूल का फ़र्ज केवल साफ़ तौर से पहुँचा देना है।

يَوْمَ يَجْعَلُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذُلِكُمْ يَوْمَ التَّغَابُنِ
وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُكْفِرْ عَنْهُ
سَيَأْتِهِ وَيُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَلِكَ الْقَوْرُ
الْعَظِيمُ ﴿٩﴾

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ الْخَالِدِينَ فِيهَا وَأُولَٰئِكَ سَاءَ
مَأْوَٰءٌ ﴿١٠﴾

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَمَنْ
يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
عَلِيمٌ ﴿١١﴾

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ
فَأَنَّا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿١٢﴾

१ क़यामत को यौमुल जमअ (जमा होने का दिन) इसलिए कहा कि उस दिन शुरू से आखिर तक के सभी लोग एक ही मैदान में जमा होंगे। फ़रिश्ता पुकारेगा तो सब उसकी पुकार सुनेंगे, हर एक की नजर आखिर तक पहुँच जायेगी, क्योंकि बीच में कोई चीज़ आड़ न बनेगी, जैसे दूसरी जगह पर फ़रमाया :

﴿قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ۝ لَنَجْمُوهُنَّ إِلَىٰ صِفَاتٍ يَوْمَ مَعْلُومٍ﴾

“आप (ﷺ) कह दीजिए कि बेशक सभी अगले और पिछले जरूर जमा किये जायेंगे, एक निर्धारित (सुकरर) दिन के समय।” (अल-बाकेअ: ४९, ५०)

२ यानी वह जान लेता है कि जो कुछ उसे पहुँचता है अल्लाह के चाहने ही से पहुँचता है, इसलिए वह सब और तक्रदीर पर खुशी जाहिर करता है। इन्ने अब्वास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि उस के दिल में पक्का यक़ीन कर देता है जिस से वह जान लेता है कि उसको पहुँचने वाली चीज़ उससे चूक नहीं सकती और जो चूक जाने वाली है उसे पहुँच नहीं सकती। (इब्ने कसीर)

१३. अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं और ईमानवालो को केवल अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए ।^१

१४. हे ईमानवालो! तुम्हारी कुछ पत्नियाँ और कुछ सन्तानें (औलादें) तुम्हारे दुश्मन हैं^२ तो उन से होशियार रहना और अगर तुम माफ़ कर दो और छोड़ दो और माफ़ कर दो तो अल्लाह (तआला) माफ़ करने वाला रहीम है ।^३

१५. तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद (तो बिल्कुल) तुम्हारी परीक्षा (इस्तेहान) हैं^४ और बहुत बड़ा बदला अल्लाह के पास है ।

१६. तो जहाँ तक तुम से हो सके अल्लाह से डरते रहो और सुनते और आज्ञापालन (इताअत) करते चलो और (अल्लाह के रास्ते में) दान करते रहो जो तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो लोग अपने नफ़स की लालच से सुरक्षित (महफूज) रखे गये वही कामयाब हैं ।

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُونَ ﴿١٣﴾

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ مِنْ أَوْلَادِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ
عَدُوًّا لَكُمْ فَاحْذَرُوهُمْ وَإِنْ تَعَفَّوْا وَتَصَفَّحُوا
وَتَعَفَّرُوا فَإِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤﴾

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ
وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿١٥﴾

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوا وَأَطِيعُوا
وَآتُوا خَيْرًا لِأَنْفُسِكُمْ طَوْسًا مِنْ يَدَيْكُمْ
نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْبَالِغُونَ ﴿١٦﴾

^१ यानी सभी मामले अल्लाह को समर्पित (सिपुर्द) करें, उसी पर यकीन करें और केवल उसी से दुआ करें, क्योंकि उस के सिवा कोई कारसाज और संकटहारी (मुधिकलकुशा) नहीं है ।

^२ यानी जो तुम्हें नेकी के कामों और अल्लाह के आज्ञापालन (इताअत) से रोके, समझ लो कि वह तुम्हारे हितकारी नहीं दुश्मन है ।

^३ इस के अवतरित (नाज़िल) होने की वजह यह बताई गई है कि मक्का में मुसलमान होने वाले कुछ मुसलमानों ने मक्का छोड़कर मदीना आने का इरादा किया, जैसाकि उस समय हिज्रत का हुक्म बलपूर्वक दिया गया था, लेकिन उनकी पत्नियाँ और बच्चे रुकावट बन गये और उन्होंने उन्हें हिज्रत नहीं करने दिया, फिर जब बाद में वह रसूलुल्लाह ﷺ के पास आ गये तो देखा कि उन से पहले आने वालों ने धर्म में बहुत समझ प्राप्त (हासिल) कर ली है तो उन्हें अपनी पत्नियों और बच्चों पर गुस्सा आया, जिन्होंने उन्हें हिज्रत से रोका था, इसलिए उन्हें सजा देने की सोची, अल्लाह ने इस में उन्हें माफ़ कर देने और छोड़ देने का हुक्म दिया । (तिर्भिजी, तफसीर सूरह तगावुन)

^४ जो तुम्हें हराम कमाई पर उभारते हैं और अल्लाह का हक पूरा करने से रोकते हैं, तो इस इस्तेहान में तुम उसी समय सफल हो सकते हो जब तुम अल्लाह की अवज्ञा (नाफरमानी) में उनका अनुसरण (इतेबा) न करो । मतलब यह हुआ कि माल और औलाद जहाँ अल्लाह के ताहफे हैं, वही यह इंसान के इस्तेहान के साधन (जरिया) भी हैं, इस दंग से अल्लाह देखता है कि मेरा आज्ञाकारी (बरमायिरदार) कौन है और अवज्ञाकारी (नाफरमान) कौन ?

१७. अगर तुम अल्लाह को अच्छा कर्ज दोगे (यानी उस के रास्ते में खर्च करोगे) तो वह उसे तुम्हारे लिए बढ़ाता जायेगा और तुम्हारे गुनाह भी माफ़ कर देगा और अल्लाह बड़ा कद्रदान और सहन करने वाला है।

१८. वह छिपी और खुली का जानने वाला, ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

सूरतुत्तलाक-६५

सूर: तलाक़ मदीने में नाज़िल हुई, इसमें बारह आयतें और दो रूक़अ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. हे नबी! (अपनी उम्मत से कहो) जब तुम अपनी पत्नियों को तलाक़ देना चाहो तो उनकी इद्त (मुद्त के शुरू) में उन्हें तलाक़ दो और इद्त की गिनती रखो,^२ और अल्लाह से जो तुम्हारा ख़ब है डरते रहो, न तुम उन्हें उन के घरों से निकालो,^३ और न वे (खुद) निकलें,^४ हाँ, यह दूसरी बात है कि वह खुली बुराई कर बैठें। यह अल्लाह की मुकर्रर की हुई सीमायें (हदें) हैं, और जो इंसान अल्लाह की हदों को

إِنَّ تَقْرُؤًا لِلَّهِ قَرْضًا حَسَنًا يُضْعَفُ لَكُمْ
وَيَغْفِرُ لَكُمْ ۗ وَاللَّهُ شَكُورٌ حَلِيمٌ ﴿١٧﴾

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿١٨﴾

سُورَةُ الطَّلَاقِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَقْتُمُ النِّسَاءَ فَطَلِّقُوهُنَّ
إِعْتِدَاتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ ۗ وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ
لَا تَخْرُجُوهُنَّ مِنْ بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّا
أَنْ يَأْتِيَنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبِينَةٍ ۗ وَتِلْكَ
حُدُودُ اللَّهِ ۗ وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ

^१ नबी ﷺ से संबोधन आप की श्रेष्ठता (फज़ीलत) और प्रतिष्ठा (शरफ़) की वजह है, नहीं तो हुक्म तो पैरोकारों को दिया जा रहा है, या आप ही को ख़ास तौर से संबोधित (मुख़ालिफ़) किया गया है और बहुवचन (जमा) का इस्तेमाल इज़्जत की वजह से है और पैरोकारों के लिए आप का नमूना ही काफ़ी है। طَلِّقُوا का मतलब है जब तलाक़ देने का पक्का इरादा कर लो।

^२ यानी उस के शुरू और आख़िर का ध्यान रखो, ताकि स्त्री उस के बाद दूसरा विवाह कर सके, या अगर तुम ही फिर रखना चाहो (पहली और दूसरी तलाक़ की हालत में) तो इद्त (अबधि) के भीतर फिर रख सको।

^३ यानी तलाक़ देते ही स्त्री को अपने घर से न निकालो, बल्कि इद्त तक उसे घर ही में रहने दो, और उस समय तक रहने और खाने और कपड़े का खर्च तुम्हारी जिम्मेदारी है।

^४ यानी इद्त (अबधि) के भीतर स्त्री खुद भी बाहर निकलने से परहेज़ करे, लेकिन यह कि कोई बहुत ज़रूरी मामला हो।

तोड़े उस ने यक़ीनी तौर से अपने ऊपर जुल्म किया, तुम नहीं जानते कि शायद उस के बाद अल्लाह (तआला) कोई नई बात पैदा कर दे।

२. तो जब ये (महिलायें) अपनी अवधि (मुद्दत) पूरी करने के करीब पहुँच जायें तो उन्हें बाकायदा अपने विवाह में रहने दो या बाकायदा उन्हें अलग कर दो^२ और आपस में से दो इंसान करने वाले इंसानों को गवाह बना लो, और अल्लाह की खुशी के लिए ठीक-ठाक गवाही दो,^३ यही है वह जिसकी शिक्षा (नसीहत) उन्हें दी जाती है, जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हों, और जो इंसान अल्लाह से डरता है अल्लाह उस के लिए छुटकारे का रास्ता निकाल देता है।

३. और उसे ऐसी जगह से रोज़ी उपलब्ध (मुहैय्या) कराता है जिसका उसे अंदाज़ा भी न हो, और जो इंसान अल्लाह पर भरोसा करेगा, अल्लाह उस के लिए काफ़ी होगा। अल्लाह (तआला) अपना काम पूरा करके ही रहेगा, अल्लाह (तआला) ने हर चीज़ का एक अंदाज़ा

ظَلَمَ نَفْسَهُ ط لَا تَذَرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثَ
بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ①

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ
أَوْ قَارِئُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَى عَدْلٍ
مِّنْكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ذَلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ
مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ط وَمَنْ
يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ②

وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ط وَمَنْ يَتَوَكَّلْ
عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ط إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ط
قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ③

^१ यानी पति के मन में तलाक़ दी हुई औरत की रुचि (रग़बत) पैदा कर दे और वह फिर से रखने पर तैयार हो जाये, जैसाकि पहली और दूसरी तलाक़ के बाद पति को अवधि (इद्दत) के भीतर फिर से रखने का हक़ है। इसलिए कुछ भाष्यकारों (मुफ़िस्सरो) का विचार है कि अल्लाह ने इस आयत में सिर्फ़ एक तलाक़ देने की शिक्षा (तालीम) दी है और एक समय में तीन तलाक़ देने से रोका है, क्योंकि अगर वह एक ही समय (वक़्त) में तीन तलाक़ दे डाले [और धर्म-विधान (शरीअत) उसे जायेज़ करके लागू भी कर दे] तो फिर यह कहना बेकार है कि शायद अल्लाह तआला कोई नई बात पैदा कर दे। (फ़तहूल क़दीर)

^२ मुतस्लका मदख़ूला (जिस स्त्री से पति ने संभोग किया हो और उसे तलाक़ दिया है तो) उसकी अवधि (इद्दत) तीन माहवारी है, अगर उसे फिर से रख लेने का इरादा हो तो इद्दत (अवधि) पूरी होने से पहले-पहले रुज़ूअ कर लो, नहीं तो उन्हें बाकायदा अपने से अलग कर दो।

^३ यह गवाहों को कहा गया है कि बिना पक्षपात (जानियदारी) और बिना लालच के सही-सही गवाही दें।

निर्धारित (मुकरर) कर रखा है।

५. तुम्हारी औरतों में से जो औरतें माहवारी से मायूस हो गयी हों, अगर तुम्हें शक हो तो उनकी इद्दत तीन माह है और उनकी भी जिन्हें अभी माहवारी (हैज) शुरू ही न हुआ हो, और गर्भवती (हामला) औरतों की इद्दत (अवधि) उनका बच्चे को जन्म देना है,² और जो इंसान अल्लाह तआला से डरेगा, अल्लाह उस के (हर) काम में आसानी पैदा कर देगा।

५. यह अल्लाह का हुक्म है जो उसने तुम्हारी तरफ उतारा है, और जो इंसान अल्लाह से डरेगा अल्लाह उस के गुनाह मिटा देगा और उसे बहुत भारी बदला देगा।

६. तुम अपनी ताकत के अनुसार जहाँ रहते हो वहाँ उन (तलाक वाली) औरतों को रखो³ और

وَالَّذِي يَتَّبِعُ مِنَ الْغَيْبِ مِنْ نِسَائِكُمْ إِنْ
ارْتَبْتُمْ فَوَدَّعْتُهُنَّ ثَلَاثَةَ أَشْهُرٍ وَالَّذِي لَمْ
يَحْضُنْ طَوْأُولَاتِ الْأَحْصَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ
يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ طَوْمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ
مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ④

ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ طَوْمَنْ يَتَّقِ
اللَّهُ يَكْفُرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمَ لَهُ أَجْرًا ⑤

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وُجْدِكُمْ

¹ यह उन की इद्दत (अवधि) है जिनकी माहवारी ज्यादा उम्र की वजह से रूक गई हो या जिन्हें माहवारी आना शुरू ही नहीं हुई। मालूम है कि ऐसा कभी-कभी होता है कि स्त्री बड़ी होकर पति के साथ रहती है परन्तु उसे माहवारी नहीं आती।

² मुतल्लका (तलाक शुदा औरत) अगर गर्भवती (हामला) हो तो उसकी अवधि प्रसव (विलादत) है, चाहे दूसरे दिन ही विलादत हो जाये, इस के सिवा आयत से जाहिर यही है कि हर गर्भवती की यही इद्दत है चाहे वह तलाक शुदा हो या उसका पति मर गया हो, हदीसों से भी इसे समर्थन मिलता है (देखिए सहीह बुखारी, मुस्लिम और दूसरी सुनन, किताबुत तलाक) दूसरी स्त्रियाँ जिन के पति मर जायें उनकी इद्दत ४ महीना १० दिन है। (सूर: बकर: -२३४)

³ मुतल्लका रजइया को (यानी दो तलाक तक जिस में पत्नी को मुद्दत के भीतर फिर से रख सकता है) इसलिए कि जो वायेन: है (पूरी तीन तलाक कई मौका पर दे दिया है) उस के लिए आवास (रिहाईश) और खर्च जरूरी ही नहीं है, जैसाकि पिछले पन्नों में बयान किया गया, अपनी ताकत के अनुसार रखने का मतलब यह है कि अगर घर बड़ा हो और उस में कई कमरे हों तो एक कमरा उस के लिए ख़ास कर दिया जाये, नहीं तो अपना कमरा उस के लिए ख़ाली कर दें। इस में हिक्मत यही है कि पास रह कर अवधि (इद्दत) पूरी करेगी तो हो सकता है कि पति को तरस आ जाये और उसे फिर से रखने की रूचि (रग़बत) मन में पैदा हो जाये, ख़ास कर के अगर बच्चे भी हों तो फिर चाहत और फिर से रख लेने की ज्यादा उम्मीद है। लेकिन अफसोस की बात है कि मुसलमान इस निर्देश (हिदायत) के अनुसार काम नहीं करते जिस की वजह से इस हुक्म के फायदे और ख़ूबी से भी वह वंचित (महरूम) है। हमारे समाज

उन्हें तंग करने के लिए कण्ट न दो और अगर वे हामिला हों तो जब तक बच्चा जन्म ले ले उन्हें खर्च देते रहा करो, फिर अगर तुम्हारे कहने से वही दूध पिलाये तो तुम उन्हें उनका पारिश्रमिक (उजरत) दे दो! और आपस में अच्छी तरह राय-मशविरा कर लिया करो और अगर तुम आपस में तनाव रखो तो उस के कहने से कोई दूसरी दूध पिलायेगी।

७. धन वाले को अपने धन के अनुसार खर्च करना चाहिए और जिसकी जीविका (रिज़क) उस के लिए कम की गयी हो तो उस को चाहिए कि जो कुछ अल्लाह (तआला) ने उसे दे रखा है, उसी में से (अपनी ताकत के अनुसार) दे, किसी इंसान पर अल्लाह बोझ नहीं रखता लेकिन इतना ही जितनी ताकत उसे दे रखी है।^१ अल्लाह (तआला) गरीबी के बाद माल भी अता (प्रदान) करेगा।^२

وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ وَإِن كُنَّ
أُولَاتٍ حَمِلْنَ فَلْيَضْحَكُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ
حَمْلَهُنَّ ۚ وَإِن أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَارْتُوهُنَّ أَجْرَهُنَّ
وَأْتِيروا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَإِن تَعَارَفْتُمْ
فَسَرِّحْهُنَّ لِهَٰ أُخْرَى ۝

لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ ۗ وَمَنْ قَدِرَ عَلَيْهِ
رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ
نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۗ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ
يُسْرًا ۝

में तलाक (विवाह-विच्छेद) के साथ ही जिस तरह औरत को तुरन्त अछूत बनाकर घर से निकाल दिया जाता है या कई वार लड़की वाले उसे अपने घर ले जाते हैं, यह रिवाज कुरआन करीम की खुली शिक्षा (तालीम) के खिलाफ है।

- १ यानी तलाक देने के बाद अगर वह तुम्हारे बच्चे को दूध पिलाये तो उसका पारिश्रमिक (उजरत) तुम्हारे ऊपर है।
- २ इसलिए वह गरीब और दरिद्र को यह हुक्म नहीं देता कि वह दूध पिलाने वाली को ज्यादा ही पारिश्रमिक (उजरत) दे। मतलब इन निर्देशों (हिदायत) का यह है कि बच्चे की माँ और उसका बाप ऐसा उचित (मुनासिब) ढंग अपनाये कि एक-दूसरे को तकलीफ न पहुँचे और बच्चे को दूध पिलाने का मामला खटाई में न पड़े। जैसे दूसरी जगह पर फरमाया :

﴿لَا تُضَارُّوْا الْوَالِدَةَ وَلَا مُرْوَدًا لَهُ يُوْالِدُهُ﴾

..न माँ को बच्चे की वजह से दुख पहुँचाया जाये और न बाप को।- (अल-बकर: -२३३)

- ३ इसलिए जो अल्लाह पर यक्रीन और भरोसा करते हैं, अल्लाह उन के लिए आसानी और विस्तार (कुशादगी) भी देता है।

८. और बहुत सी बस्ती (वालों) ने अपने रब के हुक्म से और उस के रसूलों की नाफरमानी की तो हम ने भी उन से कड़ा हिसाब लिया और अनदेखा (कठोर) अजाब उन पर डाल दिया।

९. तो उन्होंने अपने करतूतों का मजा खूब लिया और परिणाम स्वरूप (नतीजतन) उन का नुकसान ही हुआ।

१०. उन के लिए अल्लाह तआला ने सख्त अजाब तैयार कर रखा है, तो अल्लाह से डरो हे अक्लमंद ईमानवालो! निश्चित रूप (यकीनी तौर) से अल्लाह ने तुम्हारी तरफ शिक्षा (नसीहत) भेज दी है।

११. (यानी) रसूल जो तुम्हें अल्लाह के स्पष्ट (वाजिह) हुक्म पढ़ कर सुनाता है ताकि उन लोगों को जो ईमान लायें और नेक काम करें, वह अंधेरे से उजाले की तरफ ले आये। और जो ईमान अल्लाह पर ईमान लाये और नेक काम करे अल्लाह उसे ऐसे स्वर्ग में प्रवेश (दाखिला) देगा जिस के नीचे नहरें बह रही हैं, जिस में वे हमेशा-हमेश रहेंगे। वेशक अल्लाह ने उसे सब से अच्छी जीविका (रिज़क) दे रखी है।

وَكَانَ مِنْ قَرِيْبَةٍ عَشَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا
وَرُسُلِهِ فَمَا سَوْنَهَا لِحِسَابٍ شَدِيْدٍ
وَعَذَابٍ بِئْسَ عَذَابًا لِّكُفْرًا ⑧

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ
أَمْرِهَا خُسْرًا ⑨

أَعَدَّ اللهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۖ فَاتَّقُوا اللهَ
يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۗ الَّذِينَ آمَنُوا ۗ قَدْ أَنْزَلَ
اللهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ⑩

رُسُوْلًا يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِ اللهِ مُبَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَ
الَّذِيْنَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنَ الظُّلُمَاتِ
إِلَى النُّوْرِ ۗ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَعَمِلْ صَالِحًا
يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِيْنَ فِيْهَا أَبَدًا ۗ قَدْ أَحْسَنَ اللهُ لَهُ
رِزْقًا ⑪

¹ यह रसूल की जिम्मेदारी और फर्ज बयान किया गया है कि वह कुरआन के द्वारा (जरिये) लोगों को अखलाकी गिरावट और शिर्क (बहुदेववाद) और गुमराही के अंधकारों से निकाल कर ईमान और नेकी के उजाले की तरफ लाता है। यहाँ رسول रसूल (संवेष्टा) से मुराद الرسول यानी मोहम्मद ﷺ हैं।

१२. अल्लाह वह है जिसने सात आकाश बनाये और उसी की तरह धरती भी। उस का हुक्म उन के बीच नाज़िल होता है^२ ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है, और अल्लाह (तआला) ने हर चीज को अपने ज्ञान (इल्म) की परिधि (इहाते) में घेर रखा है।^३

सूरतुत्तहरीम-६६

सूर: तहरीम मदीने में नाज़िल हुई, इसमें बारह आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. हे नबी ! जिस चीज को अल्लाह ने आप के लिए वैध (हलाल) कर दिया है, उसे आप अवैध (हराम) क्यों करते हैं?^४ (क्या) आप अपनी

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَ مِنَ
الْأَرْضِ وَمَا لَهُنَّ ۖ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ
يَتَلَمَّسُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذُنُوبِهِمْ
وَإِنَّ اللَّهَ قَدَّ أَحْكَمَا بِكُلِّ شَيْءٍ ۖ وَعَلِمًا ۝۱۲

سُورَةُ التَّحْرِيمِ الْمَدِينِيَّةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ ۗ
كَبُرَتْ لِي كِبْرًا ۗ وَأَنَّ اللَّهَ عَظِيمٌ ۝۱

^१ أي خلق من الأرض مثلها ۖ यानी सात आकाशों की तरह अल्लाह ने सात धरतियाँ भी पैदा की हैं। कुछ ने इस से सात महाद्वीप (बर्रे आजम) मुराद लिया है, लेकिन यह सही नहीं, नहीं तो जिस तरह ऊपर तले सात आकाश हैं उसी तरह सात धरतियाँ हैं, जिन के बीच फर्क और दूरी है और हर धरती में अल्लाह की सृष्टि (मखलूक) आवाद है। (अल कुर्तबी)

^२ यानी जैसे हर आकाश पर अल्लाह का हुक्म लागू और गालिब है, इसी तरह हर धरती पर उसका हुक्म चलता है, आकाशों की तरह वह सभी धरतियों की भी व्यवस्था (तदबीर) करता है।

^३ तो उस के ज्ञान (इल्म) से कोई चीज बाहर नहीं चाहे वह कैसी ही हो।

^४ नबी ﷺ ने जिस चीज को अपने लिये हराम कर लिया था वह क्या थी? जिस पर अल्लाह ने अपनी अप्रियता (नापसंदी) जाहिर की, इस मामले में एक तो वह मशहूर बाक़ेआ है जो बुखारी और सहीह मुस्लिम वगैरह में रिवायत हुई है कि आप ﷺ हजरत ज़ैनब विन्ते ज़हश के पास कुछ देर रुकते और वहाँ शहद पीते। हजरत हफ़सा और आयेशा (رضي الله عنهما) दोनों ने वहाँ आप ﷺ को ज़्यादा देर तक ठहरने से रोकने के लिए यह योजना बनाई कि उन में से जिस के पास भी रसूलुल्लाह ﷺ जायें तो वह उन से यह कहे कि आप के मुँह से मगाफीर (एक तरह का फूल जिस में नापसंद बू होती है) की गंध आ रही है और उन्होंने ऐसा ही किया। आप ने फरमाया कि मैंने तो ज़ैनब के घर केवल शहद पिया है। अब मैं कसम खाता हूँ कि यह नहीं पिऊंगा, लेकिन यह बात तुम किसी को बतलाना नहीं। (सहीह बुखारी, तफ़सीर सूरतुत्तहरीम) इस से यह बात भी साफ़ हो जाती है कि अल्लाह की हलाल चीजों को हराम करने का हक़ किसी को भी नहीं, यहाँ तक कि रसूलुल्लाह ﷺ भी यह अधिकार (हक़) नहीं रखते।

पत्नियों की खुशी हासिल करना चाहते हैं और अल्लाह माफ़ करने वाला बड़ा रहीम है।

२. बेशक अल्लाह (तआला) ने आप के लिए क्रसमों से निकलने का तरीका मुकर्रर कर दिया है और अल्लाह आप का कार्यक्षम (कारसाज) है और वही (पूरा) इल्म वाला और हिक्मत वाला है।

३. और (याद करो) जब नबी ने अपनी कुछ पत्नियों से एक बात चुपके से कही तो जब उस ने उस बात की खबर कर दी और अल्लाह ने अपने नबी को उस पर अवगत (आगाह) कर दिया तो नबी ने कुछ बात तो बता दी और कुछ टाल गये, फिर जब नबी ने अपनी उस पत्नी को यह बात बता दी तो वह कहने लगी कि इस की खबर आप को किसने दी,^१ कहा कि सब कुछ जानने वाले पूरी खबर रखने वाले अल्लाह ने मुझे बता दिया है।^२

४. (हे नबी की दोनों पत्नियो!) अगर तुम अल्लाह से माफ़ी मांग लो (तो बहुत अच्छा है) बेशक तुम्हारे दिल झुक गये हैं, और अगर तुम रसूल के खिलाफ़ एक-दूसरे की मदद करोगी तो बेशक उसका संरक्षक (वली) अल्लाह है और जिब्रील और नेक ईमानवाले और उन के सिबाय फरिश्ते भी मदद करने वाले हैं।

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَجَلَّةَ أَيَّمَانِكُمْ ۖ وَاللَّهُ
مَوْلَاكُمْ ۖ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ (2)

وَإِذْ أَسْرَأَ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا
فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ وَأَخْبَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَفَ
بَعْضَهُ ۖ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضِ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهَا
بِهِ قَالَتْ مَنْ أُنَبِّئُكَ هَذَا ۖ قَالَ تَبَيَّنَ
الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝ (3)

إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَحَتْ قُلُوبُكُمَا ۖ
وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ
وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ
بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝ (4)

^१ वह छिपी बात मधु (शहद) या दासी मारिया को हराम करने वाली बात थी, जो आप ﷺ ने हजरत हफसा से की थी।

^२ यानी हफसा ने वह बात आयेशा रजि अल्लाहु अन्हा को बता दी।

^३ जब नबी ﷺ ने हजरत हफसा को बतलाया कि तुम ने मेरा भेद खोल दिया है तो वह हैरत में हुई, क्योंकि उन्होंने हजरत आयेशा के सिवा किसी को यह बात नहीं बतलाई थी और आयेशा से उन्हें उम्मीद न थी कि वह आप ﷺ को बतला देगी, क्योंकि वह मामले में साझी थी।

^४ इस से मालूम हुआ कि कुरआन के सिबाय भी आप ﷺ पर प्रकाशना (वहयी) का अवतरण (नुज़ूल) होता था।

५. अगर वह (रसूल) तुम्हें तलाक दे दें तो बहुत जल्द उन्हें उन का खब तुम्हारे बदले तुम से अच्छी बीवियाँ अता करेगा, जो इस्लाम वालियाँ, ईमान वालियाँ, अल्लाह के सामने झुकने वालियाँ, माफ़ी माँगने वालियाँ, इबादत करने वालियाँ, व्रत (रोज़े) रखने वालियाँ होगी विधवाये (बेवायें) और कुंवारियाँ ।^१

६. हे ईमानवालो! तुम खुद अपने को और अपने परिवार वालों को उस आग से बचाओ^२ जिस का ईंधन इंसान है और पत्थर, जिस पर कठोर दिल वाले सख्त फरिश्ते तैनात हैं, जिन्हें जो हुक्म अल्लाह (तआला) देता है उसकी नाफरमानी नहीं करते बल्कि जो हुक्म दिया जाये उसका पालन (पैरवी) करते हैं ।

७. हे काफ़िरो! आज तुम (मजबूरी और) बहाना मत जाहिर करो, तुम्हें केवल तुम्हारे कुकर्मों (बुरे आमाल) का बदला दिया जा रहा है ।

عَسَىٰ رَبُّهُ إِنْ طَلَّقَكُنَّ أَنْ يُبَدِّلَهُ
أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكَ مَسْلُوبَاتٍ مِّمَّنْ
فَدَّتْ كَيْدَ تَيْبَتٍ عِزِّتٍ لَسِيخَتٍ تَيْبَتٍ
وَأَبْكَارًا ⑤

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ
نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا
مَلَائِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَا يَعْصُونَ اللَّهَ
مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ ⑥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَبُوا أَيُّومَ
إِنَّمَا تُحْزَنُونَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ⑦

^१ كَيْدَاتٍ (सैयेबात) كَيْبٍ (सथियब) का बहुवचन (जमा) है (लौट आने वाली) विधवा (बेबा) औरत को 'सथियब' इसलिए कहा जाता है कि वह पति से वापस लौट आती है, फिर इसी तरह बिना पति के रह जाती है जैसे पहले थी। كَيْدَاتٍ (अबकार) كَيْرٍ (बिक्र) का बहुवचन है कुंवारी स्त्री को बिक्र (नई) इसलिए कहते हैं कि यह अभी अपनी पहली हालत पर होती है जिस पर पैदा हुई है। (फ़तहूल कदीर)

^२ इस में ईमान वालों को उन की एक बहुत अहम जिम्मेदारी की तरफ ध्यान दिलाया गया है और वह यह है कि अपने साथ अपने घर वालों का भी सुधार और उनकी इस्लामी शिक्षा-दीक्षा (तालीम) की व्यवस्था (तदबीर) करें, ताकि यह सब नरक का ईंधन बनने से बच जायें। इसीलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया है कि जब बच्चा सात साल का हो जाये तो उसे नमाज़ का हुक्म दो और दस साल की उम्र में नमाज़ में सुस्ती देखा तो उन्हें मारो। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, किताबूस सलात) धर्मविदों (आलिमों) ने कहा है कि इसी तरह रोज़े भी उन से रखवाये जायें और दूसरे धार्मिक आदेशों (शरई अहकाम) के पालन का निर्देश (हिदायत) दिया जाये ताकि जब वह बोध (शउर) की उम्र को पहुँचें तो उन में धार्मिक बोध (शरई शउर) भी मिल चुका हो। (इब्ने कसीर)

८. हे ईमानवालो ! तुम अल्लाह के आगे (सच और) खालिस माफ़ी मांगो^१ मुमकिन है कि तुम्हारा रब तुम्हारे पाप मिटा दे और तुम्हें ऐसी जन्नत में दाखिल करेगा जिन के नीचे नहरें बह रही हैं, जिस दिन अल्लाह (तआला) नबी (सदेष्टा) को और ईमानवालों को जो उन के साथ है अपमानित (रुस्वा) न करेगा, उनकी ज्योति (नूर) उन के आगे और उन के दायें दौड़ रही होगी, ये दुआयें करते होंगे कि हे हमारे रब ! हमें पूरा नूर अता कर^२ और हमें माफ़ कर दे, बेशक तू हर चीज़ पर क्रुदरत रखने वाला है ।

९. हे नबी! काफ़िरों और मुनाफ़िकों से धर्मयुद्ध (जिहाद) करें, और उन पर कड़ाई करें, उन का ठिकाना नरक है, और वह बहुत बुरी जगह है ।

१०. अल्लाह (तआला) ने काफ़िरों के लिए नूह की और लूत की पत्नियों की मिसाल दिया है । ये दोनों हमारे बन्दों में से दो नेक बन्दों के परिवार में थी, फिर उन्होंने उन के साथ ख्यानत (विश्वासघात) किया^३ तो वे दोनों (भक्त) उन से

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً
نُصُوحًا ۚ وَعَسَىٰ أَنْ يَكْفُرَ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ
وَيُدْخِلَكُم جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ وَالَّذِينَ آمَنُوا
مَعَهُ ۚ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ
وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا آتِنَا لَنَا نُورًا
وَاعْفِرْ لَنَا ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٨﴾

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ
عَلَيْهِمْ ۚ وَمَا لَهُمْ جَهَنَّمَ ۙ وَمَنْ لَمْ يَصُبْ ۙ

حَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَاتُ
لُوطَ ۙ وَامْرَأَاتُ عَادٍ ۙ وَمَنْ
عَادِنَا صَالِحِينَ ۚ فَخَاتَمَهُمَا فَلَمْ يُغْفِرَا

^१ विशुद्ध (खालिस) तौबा यह है : १- जिस पाप से माफ़ी मांग रहा है उसे छोड़ दे, २- उस पर अल्लाह के सामने लज्जित (शर्मिन्दा) हो, ३- भविष्य (मुस्ताक़विल) में उसे न करने का मजबूत इरादा करे ४- और उसका संबन्ध (ताल्लुक) बंदों के हक से है जिस का हक़ मारा है तो उसकी क्षतिपूर्ति (हरजाना) करे, जिस के साथ जुल्म किया है उस से माफ़ी मांगे, केवल मुंह से तौबा-तौबा कर लेना कोई भायने नहीं रखता ।

^२ यह दुआ ईमानवाले उस समय करेंगे जब मुनाफ़िकों का प्रकाश (नूर) बुझा दिया जायेगा, जैसाकि सुरह हदीद में ख्यानत गुजरता । ईमानवाले कहेंगे कि जन्नत में जाने तक हमारा यह नूर बाकी रख और इसे पूरा कर दे ।

^३ यहाँ विश्वासघात (ख्यानत) से मुराद सतीत्व (इस्मत) में ख्यानत नहीं, क्योंकि इस बात पर 'इजमाअ' (सहमति) है कि किसी नबी की पत्नी (बीवी) बदकार नहीं होती । (फ़तहूल कदीर) ख्यानत का मतलब यह है कि यह अपने पतियों (शौहरों) पर ईमान नहीं लायी, निफ़ाक़ (दुविधा) में पड़ी रही और उनकी हमदर्दिया अपनी काफ़िर जाति के साथ रही, जैसाकि नूह की पत्नी हज़रत नूह عليه السلام के बारे में लोगों से कहती कि यह दीवाना है और लूत की पत्नी अपने सम्प्रदाय (क्रौम) को घर में आने वाले मेहमानों की खबर पढ़चाती थी, कुछ लोग कहते हैं कि यह दोनों अपनी जाति के लोगों में अपने पतियों की चुगलियाँ खाती थी ।

अल्लाह की (किसी अज्ञात को) न रोक सके! और हुक्म दे दिया गया कि (औरतो!) नरक में जाने वालों के साथ तुम दोनों भी चली जाओ।^१

११. और अल्लाह (तआला) ने ईमानवालों के लिए फिरऔन की बीबी की मिसाल बयान की, जबकि उस ने दुआ की, हे मेरे रब! मेरे लिए अपने पास जन्नत में घर बना और मुझे फिरऔन से और उस के कर्म (अमल) से बचा और मुझे जालिमों से मुक्ति (नजात) दे।

१२. और (मिसाल बयान किया) मरियम पुत्री इमरान की,^२ जिसने अपने सतीत्व (इस्मत) की हिफाजत की, फिर हम ने अपनी तरफ से उस में प्राण (रूह) फूँके और (मरियम) ने अपने रब की बातों^३ और उस की किताबों की तसदीक की और वह इबादत करने वालियों में से थी।^४

عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَوَيْلٌ أَدْخَلَا النَّارَ
مَعَ الدَّٰخِلِينَ ﴿١٠﴾

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتَ
فِرْعَوْنَ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِي عِنْدَكَ بَيْتًا
فِي الْجَنَّةِ وَتَخِفْنِي مِّنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهِ
وَتَخِفْنِي مِنَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١١﴾

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَتْ فَرْجَهَا
فَنَفَخْنَا فِيهِ مِن رُّوحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمَاتِ
رَبِّهَا وَكُتِبَ لَهَا مِنَّا الصَّالِحَاتُ ﴿١٢﴾

^१ यानी नूह और लूत दोनों अल्लाह के पैगम्बर (संदेश्ठा) थे, जो अल्लाह के करीबी बंदे होते हैं, फिर भी अपनी पत्नियों (बीबियों) को अल्लाह के अज्ञात से नहीं बचा सके।

^२ यह उन से क्रयामत के दिन कहा जायेगा या मौत के समय उन्हें कहा गया, कारिफरों की मिसाल यहाँ खास तौर से बयान करने का मतलब पाक पत्नियों को यह चेतावनी (तंबीह) देनी है कि वह बेशक उस रसूल के घर की शोभा (जीनत) हैं, जो पूरी सृष्टि (मखलुक) में सब से अच्छे हैं। लेकिन उन्हें याद रखना चाहिए कि अगर उन्होंने रसूल के खिलाफ किया या उन्हें दुख पहुँचाया तो वह भी अल्लाह की पकड़ में आ सकती हैं, और अगर ऐसा हो गया तो कोई उनको बचाने वाला नहीं होगा।

^३ हजरत मरियम की चर्चा से उद्देश्य (मकसद) यह बयान करना है कि यद्यपि (अगरचे) वह एक विगड़ी जाति के बीच रहती थी, किन्तु अल्लाह ने उन्हें दुनिया और आखिरत की इज्जत और चमत्कार से वाइज्जत किया और पूरी दुनिया की औरतों पर उन्हें श्रेष्ठता (फजीलत) दी।

^४ रब के शब्दों (लफ्जों) से मुराद अल्लाह के धर्म-विधान (शरीअतें) हैं।

^५ यानी ऐसे लोगों या परिवार में से थी जो फरमाबदार, इबादत गुजार, सुधार और इतायत में मशहूर था, हदीस में है कि जन्नती औरतों में सब से अच्छी हजरत खदीजा, हजरत फातिमा, हजरत मरियम और फिरऔन की पत्नी हजरत आसिया हैं। (मुसनद अहमद ११२९३, मजमउज्जवाबायेद ९१२२३, अस्सहीह लिल अलबानी न० १५०८) एक दूसरी हदीस में है कि मर्दों में तो मुकम्मल बहुत हुए हैं, किन्तु औरतों में मुकम्मल सिर्फ फिरऔन की पत्नी आसिया, मरियम पुत्री इमरान और खदीजा पुत्री ह्वैलिद हैं, आयेशा रजि अल्लाह अन्हा की प्रधानता (फजीलत) औरतों पर ऐसे है जैसे सरीद (खाने) को तमाम खानों पर फजीलत हासिल है। (बुखारी, कितावु बद्इल खल्क, मुस्लिम, किताबुल फजाइल, वावु फजाइल खदीजा)

सूरतुल मुल्क-६७

सूर: मुल्क* मक्का में नाज़िल हुई, इस में तीस आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. बड़ी बरकत वाला है वह (अल्लाह) जिसके हाथ में राज्य (मुल्क) है और जो हर चीज पर कुदरत रखने वाला है।

२. जिस ने जिन्दगी और मौत को इसलिए पैदा किया कि तुम्हारा इस्तेहान ले कि तुम में से अच्छे अमल कौन करता है, और वह गालिब और माफ़ करने वाला है।

३. जिस ने सात आकाश ऊपर-नीचे पैदा किये (तो हे देखने वाले! अल्लाह) रहमान की पैदाईश में कोई असंगति (बेजाबतगी) न देखेगा, दोबारा पलट कर देख ले कि कि क्या कोई चीज भी दिखाई दे रही है।

سُورَةُ الْمَلِكِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيُبْلِغَكُمْ إِلَهُكُمْ أَحْسَنَ عَمَلًا وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ②

الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا مَا تَرَى فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِنْ تَفَوتٍ ۚ فَارْجِعِ الْبَصَرَ هَلْ تَرَى مِنْ فُطُورٍ ③

* इस की प्रधानता (फ़ज़ीलत) में कई हदीसों आयी हैं, जिन में से कुछ सहीह या हसन हैं, एक में रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "अल्लाह की किताब में एक सूरह है जिस में सिर्फ़ ३० आयतें हैं, यह इंसान की सिफ़ारिश करेगी यहाँ तक कि उसे माफ़ कर दिया जायेगा।" (तिर्मिज़ी, अबु दाऊद, इब्ने माज़ा और मुसनद अहमद २:२९९, ३२१) एक रिवायत अल्लामा अलबानी ने अस-सहीहा में नक़ल की है (सूरा: تَبَارَكَ هِيَ الْمُنْتَهَى مِنْ عَذَابِ النَّارِ) "सूरह मुल्क क़ब्र के अज़ाब से रोकने वाली है।" (न- ११४०, भाग ३, पेज १३१) यानी जो उसे पढ़ता रहेगा उम्मीद है कि क़ब्र के अज़ाब से सुरक्षित (महफूज़) रहेगा, शर्त यह है कि वह इस्लाम के हुक्म और वाज़िबात (अनिवार्यताओं) का पालन करता रहे।

१ आत्मा (रूह) एक ऐसी दिखाई न देने वाली चीज है कि जिस शरीर से उसका रिश्ता और लगाव हो जाये वह जिन्दा कहलाता है और जिस शरीर से उसका रिश्ता टूट जाये वह मौत से मिल जाता है। अल्लाह ने यह बक़्ती जिन्दगी का सिलसिला इसलिए कायम किया है ताकि वह इस्तेहान ले कि इस जिन्दगी का सही इस्तेमाल कौन करता है? जो उसे ईमान और हुक्म की पैरवी के लिए इस्तेमाल करेगा उस के लिए अच्छा फल है और दूसरों के लिए अज़ाब।

४. फिर दोहराकर दो-दो बार देख ले, तेरी नियाह तेरी तरफ जलील (और मजबूर) होकर थकी हुई लौट आयेगी।

५. और बेशक हम ने दुनियावी आसमान को दीपों (तारों) से सुशोभित (मुजय्यन) किया और उन्हें चैतानों को मारने का साधन (जरिया) बना दिया^१ और चैतानों के लिए हम ने (जहन्नम में जलाने वाला) अजाब तैयार कर दिया।

६. और अपने रब के साथ कुफ्र करने वालों के लिए नरक (जहन्नम) का अजाब है, और वह क्या ही बुरी जगह है।

७. जब उस में ये डाले जायेंगे तो उसकी यड़े जोर की आवाज सुनेंगे और वह उवाल खा रहा होगा।^२

८. (जाहिर होगा कि अभी) मुस्से के मारे फट पड़ेगा,^३ जब कभी उस में कोई गिरोह डाला जायेगा उस से नरक (जहन्नम) के दरोगा पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया था?

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَائِسًا وَهُوَ حَسِيرٌ ④

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّاطِطِينَ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ⑤

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَيَسُوسُ الْإِنْسِيُّ ⑥

إِذَا الْفُؤَادُ فِيهَا سَعْوَالَهَا شَهيقًا وَهِيَ تَفُورٌ ⑦

تَكَادُ تَمَيَّرُ مِنَ الْقَيْظِ كُلَّمَا أَلْقَى فِيهَا فُجُوعًا سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيرٌ ⑧

^१ यहाँ तारों के दो मकसद बताये गये हैं, एक आकाशों की शोभा (जीनत) क्योंकि वह चिरागों की तरह जलते दिखाई देते हैं। दूसरे अगर चैतान आकाशों की तरफ जाने की कोशिश करते हैं तो यह आग बनकर उन पर गिरते हैं। तीसरे उनका यह मकसद है जिसे दूसरी जगह पर बयान किया गया है कि उन से जल-धल में रास्ते का इशारा मिलता है।

^२ شهِيقٌ उस आवाज को कहते हैं जो गधा पहली बार निकालता है, यह बहुत बुरी आवाज होती है। जहन्नम भी गधे की तरह चीख चिल्ला रही और आग पर रखी हाँडी के समान खौल रही होगी।

^३ यानी गुस्सा और गजब के मारे उस के एक हिस्से एक-दूसरे से अलग हो जायेंगे, यह जहन्नम काफिरों को देखकर गुस्सा हो जायेगी, जिसकी समझ अल्लाह तआला उस के भीतर पैदा कर देगा, अल्लाह तआला के लिए जहन्नम के भीतर बोध (अउर) और संवेदन (एहसास) पैदा कर देना कोई कठिन नहीं है।

९. वे जवाब देंगे कि बेशक आया तो था, लेकिन हम ने उसे झुठलाया और कहा कि अल्लाह (तआला) ने कुछ भी नाज़िल नहीं किया, तुम बहुत बड़ी गुमराही में ही हो।

१०. और कहेंगे कि अगर हम सुनते होते या समझते होते तो नरकवासियों में (शामिल) न होते।

११. तो उन्होंने अपने गुनाह को कुबूल कर लिया, अब ये नरकवासी (जहन्नमी) हट जायें (दूर हों)।

१२. बेशक जो लोग अपने रब से बिना देखे ही डरते रहते हैं, उन के लिए माफ़ी है और बड़ा बदला है।

१३. और तुम अपनी बातों को चुपके से कहो या ऊँची आवाज़ में, वह तो सीनों में (छिपी हुई) बातों को भी अच्छी तरह जानता है।

१४. क्या वही न जाने जिस ने पैदा किया? फिर वह बारीक देखने और जानने वाला भी हो।

१५. वह वही है जिस ने तुम्हारे लिए धरती को पस्त (और कोमल) बनाया,^१ ताकि तुम उस के रास्तों पर आना-जाना (आवागमन) करते रहो और उस की दी हुई जीविका (रिज़क) को खाओ-पिओ, उसी की तरफ़ (तुम्हें) जीकर उठ खड़ा होना है।

قَالُوا بَلْ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا
مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ وَإِنَّا نَتَّبِعُ إِلَّا فِ
ضَلَالٍ كَبِيرٍ ۙ

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا
فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ۙ

فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ فَسُحِقًا لِأَصْحَابِ السَّعِيرِ ۙ

إِنَّ الْيَتِيمَ يُخشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ
مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۙ

وَأَسْرَوْا قَوْلَهُمْ أَوْ اجْتَرُوا بِهِ طِرَافًا عَلَيْهِمْ
يَدَابِتِ الضُّمُورِ ۙ

إِلَّا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ط وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ۙ

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامشُوا فِي
مَنَازِكِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ ط وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ۙ

^१ لَطِيفُ का मतलब है बारीक देखने वाला, «यानी जिसका ज्ञान (इल्म) इतना बारीक है कि दिल की बातों को भी वह जानता है।» (फ़तहूल क़दीर)

^२ ذُلُولُ का मतलब है पस्त, जो तुम्हारे आगे झुक जाये, सिर न फेरे, यानी धरती को तुम्हारे लिए कोमल और आसान कर दिया है, उसे इतनी कड़ी नहीं बनाया कि तुम्हारा उस पर आबाद होना और यातायात (सफ़र) कठिन हो।

१६. क्या तुम इस बात से निडर हो गये हो कि आकाशों वाला तुम्हें धरती में धंसा दे और अचानक धरती कपकपा उठे।

१७. या क्या तुम इस बात से निर्भीक (बेखौफ) हो गये हो कि आकाशों वाला तुम पर पत्थर बरसा दे? फिर तो तुम्हें मालूम हो ही जायेगा कि मेरा डराना कैसा था।

१८. और उन से पहले के लोगों ने भी झुठलाया था (तो देखो) उन पर मेरा अजाब कैसा कुछ हुआ:

१९. क्या ये अपने ऊपर कभी पंख खोले हुए और (कभी-कभी) समेटे हुए (उड़ने वाले) पक्षियों को नहीं देखते,^१ उन्हें (अल्लाह) रहमान ही (फिजा और आकाश में) थामे हुए है। बेशक हर चीज उसकी निगाह में है।

२०. अल्लाह के सिवाय तुम्हारी कौन सी सेना है जो तुम्हारी मदद कर सके, काफिर तो पूरी तरह से धाँखे ही में हैं।

२१. अगर अल्लाह (तआला) अपनी रोजी रोक ले, तो (बताओ) कौन है, जो फिर तुम्हारी रोजी देगा? बल्कि (काफिर) तो सरकशी और विदकने पर मजबूत हो गये हैं।

२२. अच्छा वह इंसान ज्यादा हिदायत पर है जो अपने मुँह के बल औंधा होकर चले^२ या वह जो सीधा (पैरों के बल) सीधे रास्ते पर चल रहा हो?

ءَأَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمْ الْأَرْضَ
فَإِذَا هِيَ تَمُورٌ ﴿١٦﴾

أَمْ أَمِنْتُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ
حَاصِبًا ۗ فَاسْتَعْلَمُونَ كَيْفَ نُنَادِيهِ ﴿١٧﴾

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَمَكَفٍ كَانَ
نَادِيهِ ﴿١٨﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَفْتٌ وَيُقْبَضْنَ مِنْ
مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَنُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ
بَصِيرٌ ﴿١٩﴾

أَمَّنْ هَذَا الَّذِينَ هُوَ جُنْدُهُمْ يَنْصُرُهُمْ
مِن دُونِ الرَّحْمَنِ إِنَّ الْكُفْرَ بَدِيعٌ غَدُورٌ ﴿٢٠﴾

أَمَّنْ هَذَا الَّذِينَ يَزُودُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهُ
بَل لَّجُوعًا فِي عُنُقِهِ وَنُفُورٌ ﴿٢١﴾

أَلَمْ يَنْشِئْهُمُ مِثْبَاتًا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ
أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٢٢﴾

१ जैसे उस ने लूत की जाति (कौम) और असहाबुल फील (हाथी वाले अवरहा और उसकी सेना) पर बरसाये और पत्थरों की वारिश से उनका विनाश (हलाक) कर दिया।

२ यानी पंखी जब हवा में उड़ता है तो वह पंख फैला लेता है और कभी उड़ने के बीच पंखों को सिकोड़ लेता है, यह फैलाना صَبَّ (सफफ) और सिकोड़ना نَمَن (कब्ज) है।

३ मुँह के बल औंधे चलने वाले को दायें-बायें और आगे कुछ नहीं दिखता, न वह ठोकरो से सुरक्षित (महफूज) रहता है, क्या ऐसा इंसान अपने मकसद तक पहुँच सकता है? बेशक (निश्चय) वह नहीं पहुँच सकता। इसी तरह दुनिया में अल्लाह के हुक्म को न मानने वाला इंसान आखिरत (परलोक) की कामयाबी से महरूम (बंचित) रहेगा।

२३. कह दीजिए कि वही (अल्लाह) है जिस ने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे कान, आँखें और दिल बनाये, तुम बहुत ही कम शुक्रिया अदा करते हो।

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا مَّا تَشْكُرُونَ ﴿٢٣﴾

२४. कह दीजिए कि वही है जिसने तुम्हें धरती पर फैला दिया और उसकी तरफ तुम जमा किये जाओगे।

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ﴿٢٤﴾

२५. और (काफिर) पूछते हैं कि वह वादा कब जाहिर होगा अगर तुम सच्चे हो (तो बताओ)?

وَيَسْأَلُونَ صِفَىٰ هَذَا الْوَعْدِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٥﴾

२६. (आप) कह दीजिए कि इसका ज्ञान (इल्म) तो अल्लाह ही को है, मैं तो साफ तौर से आगाह कर देने वाला हूँ।^१

قُلْ إِنَّمَا أَعْلَمُهُ عِنْدَ اللَّهِ وَمَا أَنَا بِنَذِيرٍ مُّبِينٍ ﴿٢٦﴾

२७. जब ये लोग उस (वादे) को करीब पा लेंगे, उस समय इन काफिरों के मुँह बिगड़ जायेंगे^२ और कह दिया जायेगा कि यही है जिसे तुम माँगा करते थे।

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَدَّعُونَ ﴿٢٧﴾

२८. (आप) कह दीजिए! कि ठीक है अगर मुझे और मेरे साथियों को अल्लाह (तआला) हलाक करें दे या हम पर रहम करे, (जो भी हो, यह तो बताओ) कि काफिरों को कष्टदायी (तक्लीफदह) अजाब से कौन बचायेगा?^३

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكْنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ أَوْ رَحِمَنَا لِمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابِ الْيَوْمِ ﴿٢٨﴾

^१ जिन से तुम सुन सको, देख सको और अल्लाह की रचना (तखलीक) में गौर-फिक्र कर उसका इल्म हासिल (प्राप्त) कर सको। तीन ताकतों की चर्चा किया है, जिन से इंसान देखने, सुनने और समझने की चीजों का इल्म हासिल कर सकता है। यह एक तरह से दलील की तकमील (पूर्ति) भी है और अल्लाह के इन एहसानों पर शुक्रिया न करने की निन्दा (मज्रममत) भी। इसी तरह आगे फरमाया: "तुम बहुत ही कम शुक्रिया अदा करते हो।"

^२ यानी मेरा काम तो उस नतीजा से डराना है जो मुझे झूठलाने की वजह तुम्हारा होगा, दूसरे लफ्जों में मेरा काम सावधान (आगाह) करना है, गैब (परोक्ष) की खबरें बताना नहीं, लेकिन यह कि जिस के बारे में अल्लाह खुद मुझे बता दे।

^३ यानी जिल्लत, दहशत और डर से उन के चेहरों पर हवाईयाँ उड़ रही होंगी, जिस को दूसरी जगहों पर चेहरों के काले होने से व्यजित (ताबीर) किया गया है। (आले-इमरान : १०६)

^४ मतलब यह है कि इन काफिरों को तो अल्लाह के अजाब से कोई बचाने वाला नहीं है, चाहे अल्लाह अपने रसूल और उस पर ईमान लाने वालों को मौत या कत्ल द्वारा बरबाद कर दे या उन्हें मौका दे दे, या यह मतलब है कि हम ईमान लाकर भी डर और उम्मीद के बीच है "तो तुम्हारे कुफ्र के वावजूद तुम्हें अजाब से कौन बचायेगा...?"

२९. (आप) कह दीजिए कि वही रहमान है, हम तो उस पर ईमान ला चुके और उसी पर हम ने भरोसा किया, तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा कि साफ भटकावे में कौन है?

३०. (आप) कह दीजिए ठीक है, यह तो बताओ कि अगर तुम्हारे (पीने का) पानी धरती चूस जाये, तो कौन है, जो तुम्हारे लिए निथरा हुआ साफ पानी लाये ।।

सूरतुल कलम-६८

सूर: कलम मक्के में नाजिल हुई, इस में बावन आयतें और दो रूकूअ हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

१. नून^१ कसम है कलम की^२ और उस की जो कुछ कि वे (फरिस्त) लिखते हैं ।

قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ أَمَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۲۹

قُلْ آدَاءُكُمْ إِنْ أَسْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ
يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَّعِينٍ ۳۰

سُورَةُ الْقَلَمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

ن وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ۱

^१ (गौर) का मतलब है सूख जाना या इतनी गहराई में चला जाना कि वहाँ से पानी निकालना मुमकिन न हो, यानी अगर अल्लाह तआला पानी सुखा दे कि उसका अस्तित्व (बजूद) ही न रह जाये या इतनी गहराई में कर दे कि पानी निकालने की सब मशीनें नाकाम हो जाये तो बताओ फिर कौन है जो बहते हुए, साफ, निथरा पानी मुलभ (सुहैया) करा दे? यानी कोई नहीं है, यह अल्लाह की दया (रहमत) है कि तुम्हारी नाफरमानी के बावजूद भी वह तुम्हें पानी से महरूम (बंचित) नहीं करता ।

^२ उसी तरह के अलग अक्षरों (हुरूफ) में से है, जैसे इस से पहले ن और दूसरी सूरतों के शुरूआती अक्षर (हरफ) गुजर चुके हैं ।

^३ कलम की कसम खाई जिसकी इसलिए एक अहमियत है कि इस के द्वारा (जरिये) बयान और तफसीर होती है । कुछ कहते हैं कि इस से मुराद वह खास कलम है, जिसे अल्लाह ने सच से पहले पैदा किया और उसे तक्दीर लिखने का हुक्म दिया, इसलिए उस ने आखिर तक सभी होने वाली चीजों को लिख दिया । (तिर्मिजी, तफसीर सूरह नून वल कलम और अलबानी ने इसे सहीह कहा है)

२. आप अपने रब की कृपा (नेमत) से पागल नहीं हैं ।

مَا أَنْتَ بِمَجْنُونٍ ②

३. और बेशक आप के लिए न खत्म होने वाला बदला है ।

وَأَنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَسْئُونٍ ③

४. और बेशक आप बहुत (अच्छे) स्वभाव (अखलाक) पर हैं ।

وَأَنَّكَ لَكَلِّ حُلُقٍ عَظِيمٍ ④

५. तो अब आप भी देख लेंगे और यह भी देख लेंगे ।

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ ⑤

६. कि तुम में से फितना में पड़ा कौन है ।

بِأَيِّكُمُ الْمَفْتُونُ ⑥

७. बेशक तेरा रब अपनी राह से भटकने वालों को अच्छी तरह जानता है, और वह हिदायत पाये को भी अच्छी तरह जानता है ।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ⑦

وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ⑦

८. तो आप झुठलाने वालों की (बात) कुबूल न करें ।

فَلَا تَطْعَمُ الْمُلْكَ بَيْنَ ⑧

९. वे तो चाहते हैं कि आप तनिक ढीले हों तो ये भी ढीले पड़ जायें ।

وَدُّوا لَوْ تَدَّهِنُ قَيْدَهُنَّ ⑨

१ यह क्रम का जवाब है, जिस में काफिरों के कौल का खण्डन (तरदीद) है, वह आप को दीवाना कहते थे ।

२ नबूवत (दूतत्व) के फरायेज को पूरा करने के लिए जो भी दुख आप ने सहन किये और दुश्मनों के ताने आप ने सुने हैं उस पर अल्लाह की तरफ से कभी न खत्म होने वाला बदला आप के लिए है, $عَنْ$ का मतलब काटना है ।

३ $حُلُقٍ عَظِيمٍ$ से मुराद दीने इस्लाम या पाक कुरआन है, मतलब यह है कि तू उस तरीका पर है जिसका हुक्म तुझे अल्लाह ने कुरआन में या दीने इस्लाम में दिया है, या इस से मुराद वह सभ्यता, सिष्टाचार (आदाब), नमी, इफ़क़त, अमानत, सच्चाई, संजीदगी, श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) और दूसरे अखलाकी सिफ़ात हैं, जिन में आप $ﷺ$ नबी होने से पहले फ़ज़ीलत रखते थे और नबी होने के बाद भी उन में ज़्यादा ऊँचाई और फैलाव हुआ । इसीलिए जब आयेशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से आप के अखलाक के बारे में सवाल किया गया तो फरमाया: «كَانَ خَلْفَ الْقُرْآنِ» (मुस्लिम, किताबुल मुसाफ़िरीन, वाबु जामेए सलातिल लैले वं मन नाम अन्ह औ मरेज) हजरत आयेशा का जवाब खुल्के अज़ीम «حُلُقٍ عَظِيمٍ» के मज़क़ूरा दोनो मायनों को घेरें हुए है ।

४ यानी वह तो चाहते हैं कि तू उन के पूज्यों के वारे में नर्म तरीका अपनाये, लेकिन झूठे के साथ नर्म तरीका का नतीजा यह होगा कि बातिल के पुजारी अपनी बातिल की पूजा छोड़ने में ढीले

१०. और आप किसी ऐसे इंसान का भी कहना न मानें जो ज़्यादा कसमें खाने वाला हीन (जलील) हो ।

وَلَا تُطِيعْ كُلَّ حَلَائِفٍ مَّهْدِينٍ ⑩

११. कमीना, ऐब निकालने वाला और चुगली करने वाला हो ।

هَتَّاءٍ مَّشَّائِمٍ بِنِينٍ ⑪

१२. भलाई से रोकने वाला, हद से बढ़ जाने वाला पापी हो ।

مَنَاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَبٍ أَثِيمٍ ⑫

१३. घमंडी फिर साथ ही कुबंश (वेनसब) हो ।

عَتَبٍ بَعْدَ ذَلِكَ رَنِيمٍ ⑬

१४. (उसकी सरकशी) केवल इसलिए है कि वह धनवान और पुत्रों वाला है ।

أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ⑭

१५. जब उस के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो यह कह देता है कि ये तो पहले के लोगों की कथायें (किस्से) हैं ।

إِذَا تَثُلَ عَلَيْكُمُ آيَاتُنَا قَالِ اسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ⑮

१६. हम भी उसकी सूँड (नाक) पर दाग देंगे ।^१

سَنَسِفُهُ عَلَى الْحُرطُومِ ⑯

१७. बेशक हम ने उनकी उसी तरह परीक्षा (इम्तेहान) ली,^२ जिस तरह हम ने बाग वालों की परीक्षा ली थी^३ जबकि उन्होंने कसम खायी

إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ ⑰

إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرُنَّ مِنْهَا مُصْبِحِينَ ⑱

हो जायेंगे, इसलिए सच के वारे में सुस्ती, धर्म के प्रचार (तबलीग) के लिए और नबूवत (दूतत्व) के काम के लिए बहुत नुकसान दायक है ।

^१ कुछ के नजदीक इस का तआल्लुक दुनिया से है, कहा जाता है कि बद्र की लड़ाई में उन काफिरों की नाकों को तलबारों का निशाना बनाया गया । कुछ कहते हैं कि यह क्रयामत के दिन नरकवासियों का निशान होगा कि उनकी नाकों को दाग दिया जायेगा, या इसका मतलब चेहरों की कालिमा (स्याही) है, जैसाकि काफिरों के चेहरे उस दिन काले होंगे । कुछ कहते हैं कि काफिरों का यह नतीजा लोक-परलोक (दुनिया-आखिरत) दोनों जगह मुमकिन है ।

^२ मतलब मक्कावासी है, उन्हें माल और औलाद दिया ताकि वह अल्लाह का शुक्र करें, लेकिन उन्होंने नाशुकी और घमण्ड का रास्ता अपनाया तो हम ने उन्हें भूख और सूखा के इम्तेहान में डाल दिया, जिस में वह नबी ﷺ के शाप (बहुआ) की वजह से कुछ दिन फंसे रहे ।

^३ बाग वालों की कथा अरबों में मशहूर थी । यह वाग सन्धा (यमन) से दो फरसंग (छ: मील) की दूरी पर था, उसका मालिक उसकी पैदावार में से कुछ हिस्सा गरीबों और फकीरों पर भी खर्च करता था जब उसकी औलाद उसकी बारिस बनी तो उन्होंने कहा कि हमारा खर्च ही कठिनाई से पूरा होता है तो हम उसकी आय (आमदनी) गरीबों और फकीरों को कैसे दें इसलिए अल्लाह

कि सुबह होते ही उस (बाग) के फल तोड़ लेंगे।

१८. और इन्शा अल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) न कहा।

१९. तो उस पर तेरे रब की तरफ से एक बला चारों तरफ से घूम गयी और वे सो ही रहे थे।

२०. तो वह (बाग) ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती।

२१. अब सुबह होते ही उन्होंने एक-दूसरे को 'आवाजें दीं।

२२. कि अगर तुम्हें फल तोड़ना है तो अपनी खेती पर सुबह ही चल पड़ो।

२३. फिर ये सब चुपके-चुपके बातें करते हुए चले।

२४. कि आज के दिन कोई गरीब तुम्हारे पास न आये।

२५. और जल्दी-जल्दी सुबह ही पहुँच गये (समझ रहे थे) कि हम क़ाबू पा गये।

२६. फिर जब उन्होंने बाग देखा तो कहने लगे कि बेशक हम रास्ता भूल गये।

२७. नहीं-नहीं, बल्कि हम महरूम (वंचित) कर दिये गये।

२८. उन सब में जो अच्छा था उस ने कहा कि मैं तुम सब से न कहता था कि तुम (अल्लाह की) तस्बीह क्यों नहीं करते?²

وَلَا يَسْتَكْبِرُونَ ⑱

فَخَافَ عَلَيْهَا كَأَن يَكُونَ مِنْ رَبِّهَا
وَهُمْ تَائِبُونَ ⑲

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيرِ ⑳

فَتَنَادَوْا مُصِيبِينَ ㉑

أَن آتَدُوا عَلٰى حَرْبِكُمْ إِن كُنْتُمْ
ضَرِيبِينَ ㉒

فَأَنطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ㉓

أَن لَّا يَدْعُلَهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مَسْكِينٌ ㉔

وَعَدُوا عَلٰى حَرْبٍ قَدِيرِينَ ㉕

فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَالُونَ ㉖

بَلْ نَحْنُ مَعْرُومُونَ ㉗

قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ لَوْلَا
لَسْتُمْ حُرُونَ ㉘

ने उस बाग ही को तबाह कर दिया। कहते हैं कि यह घटना (बाकेआ) हज़रत ईसा عليه السلام के आकाश पर उठाये जाने के कुछ समय बाद ही हुई। (फ़तहल कदीर) यह सभी बयान तफ़्सीर वाली रिवायतों का है।

¹ यानी जैसे खेती कटने के बाद सूख जाती है, उसी तरह पूरा बाग उजड़ गया। कुछ ने अनुबाद (तर्जुमा) किया है, 'काली रात की तरह हो गया' यानी जलकर।

² कुछ ने यहाँ तस्बीह का मायने "इन्शा अल्लाह" कहना लिया है।

२९. (तो) सब कहने लगे कि हमारा रब पाक है, बेशक हम ही जालिम थे ।

३०. फिर वे एक-दूसरे की तरफ मुंह करके बुरा-भला कहने लगे ।

३१. कहने लगे हाय अफसोस! बेशक हम सरकश थे ।

३२. क्या विचित्र (अजाब) है कि हमारा रब हमें इस से अच्छा बदला दे दे, बेशक हम अब अपने रब से ही उम्मीद रखते हैं ।

३३. इसी तरह अजाब आता है, और आखिरत का अजाब बहुत बड़ा है । काश! उन्हें अकल होती ।

३४. बेशक परहेजगारों के लिए उन के रब के पास उपहारों (नेमतों) वाली जन्नतें हैं ।

३५. क्या हम मुसलमानों को मुजरिमों के बराबर कर देंगे ।

३६. तुम्हें क्या हो गया, कैसे फ़ैसले कर रहे हो?

३७. क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिस में तुम पढ़ते हो?

३८. कि उस में तुम्हारी मनमानी बातें हों?

३९. या हम से तुम ने कुछ ऐसी क्रसमे ली है जो क़्यामत (प्रलय के दिन) तक बाकी रहें कि तुम्हारे लिए वह सब है, जो तुम अपनी तरफ से

قَالُوا سُبْحٰنَ رَبِّنَا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَتَلَٰوَمُوْنَ ﴿٣٠﴾

قَالُوا يٰوَيْلَنَا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٣١﴾

عَلٰى رَبِّنَا اَنْ يُّهَيَّا لَنَا خَيْرًا مِنْهَا اِنَّا اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ﴿٣٢﴾

كَذٰلِكَ الْعَذٰبُ ؕ وَاَلْعَذٰبُ الْاٰخِرُوْۤىٕ اَكْبَرُ مَرۜوۤا كَاثُوۤا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٣﴾

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنۜدَ رَبِّهِمْ جَنَّٰتٍ الْجَنۜبِۤىٕ ﴿٣٤﴾

اَفَتَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾

مَا لَكُمْ فِىۡ كَيْفٍ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾

اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِىۡهِ تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾

اِنَّ لَكُمْ فِىۡهٖ لَآ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٨﴾

اَمْ لَكُمْ اٰيٰتٌ عَلَيْنَا بِالْعَنۜةِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۗ

اِنَّ لَكُمْ لَآ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٩﴾

। यानी अब उन्हें मालूम हुआ कि हम ने अपने धाप के तरीके के उल्टा काम करके गलती की है, जिसकी सजा अल्लाह ने हम को दिया है। इस से यह भी मालूम हुआ कि पाप का इरादा और उस के लिए शुरूआती काम भी पाप ही के तरह गुनाह है जिस पर पकड़ हो सकती है, केवल वह इरादा माफ़ है जो दिल की सीमा (हद) तक रहता है ।

निर्धारित (मुकरर) कर लो?

४०. उन से पूछो कि उन में से कौन इस बात का जिम्मेदार (और दावेदार) है।

४१. क्या उन के कुछ साझीदार हैं? तो चाहिए कि अपने-अपने साझीदारों को ले आयें अगर ये सच्चे हैं।

४२. जिस दिन पिंडली खोल दी जायेगी और सज्दा करने के लिए बुलाये जायेंगे तो (सज्दा) न कर सकेंगे।¹

४३. उन की आंखें नीची होंगी और उन पर जिल्लत (और रुसवाई) छा रही होगी, हालांकि ये सज्दे के लिए (उस समय भी) बुलाये जाते थे जब भले-चंगे थे।

४४. तो मुझे और इस बात के झुठलाने वाले को छोड़ दे, हम उन्हें इस तरह धीरे-धीरे खींचेंगे कि उन्हें मालूम भी न होगा।²

سَلِّمُوا إِلَيْهِمْ يُدْلِكْ زَعِيمٌ ٤٠

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فَلَئِمَّا تُوِشِرُكَائِهِمْ
إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ ٤١

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعُونَ إِلَى
السُّجُودِ فَلَا يَسْتَجِيبُونَ ٤٢

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُهُمْ ذُلَّةٌ طَوْقًا
كَانُوا يُدْعُونَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ
سَلِيمُونَ ٤٣

فَدَارَيْنَا وَمَنْ يُكْتَبُ بِهِدَا الْحَدِيثُ ط
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ٤٤

¹ कुछ ने पिंडली खोलने का मायने कयामत की कठिनाईयाँ और भयानकता ली हैं, लेकिन एक सही हदीस में इसकी व्याख्या (तफसीर) इस तरह बयान हुई है कि कयामत के दिन अल्लाह अपनी पिंडली खोलेगा (जैसे उसकी शान के लायक है) तो हर मोमिन मर्द और औरत उस के आगे सज्दे में गिर जायेंगे। हाँ, वह लोग बाकी रह जायेंगे जो दिखावे और नाम के लिए सज्दे किया करते थे, वह सज्दा करना चाहेंगे तो उनकी रीढ़ की हड्डी तख्ते की तरह बन जायेगी जिस की बजह से उनका झुकना नामुमकिन हो जायेगा। (सहीह बुखारी, तफसीर सूरह नून वल कलम) अल्लाह यह पिंडली कैसे खोलेगा और यह कैसी होगी? यह हम न जान सकते हैं न बयान कर सकते हैं, इसलिए जिस तरह किसी उपमा (तशबीह) के बिना हम उसके कान, आँख और हाथ वगैरह पर यकीन रखते हैं, ऐसे ही पिंडली की बात भी कुरआन और हदीस में है, जिस पर बिना तशबीह के यकीन रखना जरूरी है। यही सलफ और मुहद्दीसीन (हदीस के आलिमों) की राय है।

² यह उसी ढील देने का बयान है जिसे कुरआन में कई जगहों पर वयान किया गया है और हदीस में भी साफ किया गया है कि नाफरमानी के वाबजूद माल और साधन का ज्यादा होना अल्लाह की दया (रहमत) नहीं है, उस के मौका देने के क्रानून का नतीजा है, फिर जब वह पकड़ने पर आता है तो कोई बचाने वाला नहीं होता।

४५. और मैं उन्हें ढील दूंगा, वेशक मेरी योजना (तदबीर) बड़ी मजबूत है।

وَأْمُرِي لَهُمْ طَرِيقَ الْكَيْدِ الْفَتِينِ ﴿٤٥﴾

४६. क्या तू उन से कोई पारिश्रमिक (उजरत) चाहता है, जिस के भार से ये दबे जाते हों।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرُومٍ مُثْقَلُونَ ﴿٤٦﴾

४७. या क्या उनके पास परोक्ष (गैब) का इल्म है जिसे वे लिखते हों।

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤٧﴾

४८. तो तू अपने रब के हुक्म का सब से (इतैज़ार कर) और मछली वाले की तरह न हो जा,^१ जबकि उस ने दुख की हालत (अवस्था) में पुकारा।^२

فَأَصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوتِ إِذْ نَادَى وَهُوَ مَكْظُومٌ ﴿٤٨﴾

४९. अगर उसे उस के रब की नेमत (कृपा) न पा लेती तो वेशक वह बुरी हालत में ऊसर धरती पर डाल दिया जाता।

لَوْلَا أَنْ تَدَارَكُ نِعْمَةَ رَبِّهِ لُنْجِدًا بِالْعُرَاقِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ﴿٤٩﴾

५०. तो उसे उस के रब ने फिर निर्वाचित किया^३ और उसको सदाचारियों (सालेहीनों) में कर दिया।^४

فَأَجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٥٠﴾

१ जिन्होंने अपनी जाति के झुठलाने के रवय्या को देखते हुए उतावलेपन से काम लिया और अल्लाह के फ़ैसले के बिना ही अपने-आप अपनी जाति को छोड़कर निकल गये।

२ जिस के परिणामस्वरूप (नतीजतन) उन्हें मछली के पेट में जबकि वह शोक (गम) और चिन्ता से भरे हुए थे, अपने रब को सहायता (मदद) के लिए पुकारना पड़ा। जैसाकि बयान पहले गुज़र चुका है।

३ इसका मतलब यह है कि उन्हें अच्छा और स्वस्थ (सहतमंद) करने के बाद फिर रिसालत से सम्मानित (सरफ़राज़) करके उन्हें अपनी जाति (क्रौम) की तरफ़ भेजा गया, जैसा कि सूरह साफ़ात १४६ से भी स्पष्ट (वाज़ेह) है।

४ इसलिए रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि कोई यह न कहे कि मैं यूनस पुत्र मत्ता से बेहतर हूँ। (सहीह मुस्लिम, किताबुल फ़जाएल बाबुन फ़ी जिक्के यूनस ...) और ख़ास देखिये सूर: बकर: की आयत न० २५३ की तफ़सीर।

५१. और करीब है कि (ये) काफिर अपनी (तेज) निगाह से आप को फिसला दें, जब कभी कुरआन सुनते हैं और कह देते हैं कि यह तो यकीनी तौर से दीवाना है।

५२. और हकीकत में यह (कुरआन) तो सारी दुनिया वालों के लिए पूरी शिक्षा ही है।^१

सूरतुल हाक्क:-६९

सूर: हाक्क: मक्का में नाज़िल हुई, इस में बावन आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. साबित (सिद्ध) होने वाली।^१

२. क्या है साबित (सिद्ध) होने वाली।

३. और तुझे क्या पता है कि वह साबित होने वाली क्या है?

وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُوقُونَكَ
بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ
إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ﴿٥١﴾

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٥٢﴾

سُورَةُ الْحَاقَّةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

﴿١﴾ الْمَآثِقَةُ

﴿٢﴾ الْمَآثِقَةُ

﴿٣﴾ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْمَآثِقَةُ

^१ यानी अगर तुझे अल्लाह की मदद और सुरक्षा न मिलती तो इन काफिरों की हसद (ईर्ष्या) वाली निगाहों से तू बुरी नज़र का शिकार हो जाता, यानी उनकी नज़र तुझे लग जाती। इमाम इब्ने कसीर ने इसका यही मतलब बयान किया है, फिर लिखते हैं कि यह इस बात का सबूत है कि नज़र का लग जाना और अल्लाह की इजाज़त से उसका दूसरों पर प्रभावकारी (असरअंदाज़) होना सच है। जैसाकि कई हदीसों से भी साबित है और हदीसों में उस से बचने के लिए दुआओं का बयान भी है, और यह भी कहा गया है कि तुम्हें कोई चीज़ अच्छी लगे तो ماشاء الله (माश्वा अल्लाह) या बारक الله (बारकल्लाह) कहा करो ताकि उसे नज़र न लगे। ऐसे ही किसी को नज़र लग जाये तो फ़रमाया कि उसे स्नान (गुस्ल) करा कर उसका पानी उस पर डाला जाये जिसको उसकी नज़र लगी है। (तफ़सील के लिये देखिए तफ़सीर इब्ने कसीर और हदीस की किताबें) कुछ ने इसका मायने यह लिया है कि यह तुझे धर्म का प्रचार (तब्लीग) करने से फेर देते।

^२ जब सच यह है कि यह कुरआन जिन्नो और इंसानों की हिदायत और निर्देश (रहनुमाई) के लिए आया है तो फिर इस को लाने और बयान करने वाला उन्मत्त (दीवाना) कैसे हो सकता है?

^३ यह क्रयामत के नामों में से एक नाम है। इस में अल्लाह का हुक्म साबित होगा और यह खुद भी होने वाला है, इसलिए इसे अलहाक्क: से व्यजित (ताबीर) किया।

४. उस खड़का देने वाली को समुद्रियों और आदियों ने झूठला दिया था ।

كذبت سُودٌ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ④

५. (जिसके नतीजे में) समुद्र तो बड़ी तेज (और भयानक ऊँची) ध्वनि (चीख) से हलाक कर दिये गये ।^१

فَأَمَّا سُودٌ فَأَهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ⑤

६. और आद बड़ी तेज गति की पाले वाली आंधी से बरबाद कर दिये गये ।^२

وَأَمَّا عَادٌ فَأَهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ⑥

७. जिसे उन पर लगातार सात रात और आठ दिन तक (अल्लाह ने) लगाये रखा^३ तो तुम देखते कि ये लोग धरती पर इस तरह पछाड़े गये हैं जैसे खजूर के खोखले तने हों ।^४

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثَمَنِيَةَ أَيَّامٍ^۱
حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَىٰ كَأَنَّهُمْ

أَعْجَازٌ نُّحْلٍ خَاوِيَةٍ ⑦

८. तो क्या उन में से कोई भी तुझे बाकी दिखायी दे रहा है ?

فَهَلْ تَرَى لَهُم مِّنْ بَاقِيَةٍ ⑧

९. फिरऔन और उस से पहले के लोग और जिनकी बस्तियाँ उलट दी गयीं, उन्होंने भी गलतियाँ (पाप) की ।

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالنُّوَافِلَتْ

بِالْحَاطِئَةِ ⑨

१०. और अपने रब के रसूल की नाफरमानी की, (आखिर में) अल्लाह ने उन्हें (भी) पकड़ में ले लिया ।

حَصَّوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخَذَةً رَّابِيَةً ⑩

११. जब पानी में बाढ़ आ गयी तो उस समय हम ने तुम्हें नाव पर चढ़ा लिया ।

إِنَّا لَنَّاظِمُونَ الْبَاءَ حَمَلَتِكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ⑪

१ طَائِفَةٌ ऐसी चीख जो सीमा पार कर जाये, यानी बड़ी भयानक और ऊँची चीख से समुद्र के समुदाय को विनष्ट (हलाक) किया गया, जैसाकि पहले कई जगहों पर गुजर ।

२ صَرْصَر (सरसर) पाले की हवा, عَاتِيَةٍ (आतियह) सरकश, किसी के वश में न आने वाली, यानी बड़ी तेज और प्रचंड, आंधी के जरिये नबी हूद عليه السلام की कौम आद को बरबाद किया गया ।

३ حُسْم (हसम) का मतलब काटना और अलग-अलग कर देना है और कुछ ने हُسُومًا का मतलब निरन्तर (मुसल्लसल) किया है ।

४ इस से उन के शारीरिक (जिस्मानी) लम्बाई की तरफ भी इशारा है खाविये (खावेयह) । खोखले, बेजान शरीर (जिस्म) को खोखले तने से मिसाल दी है ।

१२. ताकि उसे तुम्हारे लिये नसीहत (और यादगार) बना दें और (ताकि) याद रखने वाले कान उसे याद रखें ।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذَكُّرًا وَنُوعِمَهَا آذُنًا وَأَعْيُنًا ۝١٢

१३. तो जब नरसिंघा (सूर) में एक फूक फूकी जायेगी ।

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۝١٣

१४. और धरती तथा पहाड़ उठा लिये जायेंगे और एक ही चोट में कण-कण (ज़र्ज़र-ज़र्ज़र) बना दिये जायेंगे ।

وَصَلَّتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۝١٤

१५. उस दिन हो पड़ने वाली घटना (क्रयामत) हो पड़ेगी ।

فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝١٥

१६. और आसमान फट जायेगा तो उस दिन वड़ा कमज़ोर हो जायेगा ।

وَأَنشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۝١٦

१७. और उसके किनारों पर फरिश्ते होंगे और तेरे रब का अर्श (आसन) उस दिन आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठाये हुए होंगे ।^१

وَالسَّلَكُ عَلَى أَرْجَائِهِمْ وَيَعْمِلُ عَرَشُ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمَنِيَةٌ ۝١٧

१८. उस दिन तुम सब सामने पेश किये जाओगे, तुम्हारा कोई राज छिपा न रहेगा ।

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝١٨

१९. तो जिस का कर्मपत्र (आमालनामा) उस के दाहिने हाथ में दिया जायेगा तो वह कहने लगेगा कि लो मेरा कर्मपत्र पढ़ो ।

فَأَمَّا مَنْ أُوثِقَ كِتَابُهُ بِيَمِينِهِ فَيَقُولُ هَذَا مَا أَدْرَأُ ۝١٩

^१ यानी आसमान तो टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे फिर आसमानी राष्टि (मखलूक) फरिश्ते कहाँ रहेंगे? फरमाया : वह आकाशों के किनारों पर होंगे । इसका एक मतलब तो यह हो सकता है कि फरिश्ते आकाश के फटने के पहले अल्लाह के हुक्म से धरती पर आ जायेंगे तो मानो वे धरती के किनारे पर होंगे, या यह मतलब हो सकता है कि आकाश टूट-फूटकर कई टुकड़ों में होगा तो उन टुकड़ों पर जो धरती के किनारों में और अपनी जगह स्थित (क्रायम) होंगे उन पर होंगे । (फतहूल क़दीर)

^२ यानी इन खास फरिश्तों ने अल्लाह के अर्श (आसन) को अपने सिरों पर उठाया होगा, यह भी मुमकिन है कि इस अर्श से मुराद वह अर्श हो जो फ़ैसले के लिए धरती पर रखा जायेगा जिस पर अल्लाह का अवतरण (नुज़ूल) होगा । (इब्ने कसीर)

२०. मुझे तो पूरा यकीन था कि मैं अपना हिसाब पाने वाला हूँ।

إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلَيِّقٌ حِسَابِيَّةً ۚ (20)

२१. तो वह एक सुखद (खुशहाल) जीवन में होगा।

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ (21)

२२. ऊँचे (और खूबसूरत) जन्नत में।

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ (22)

२३. जिस के फल झुके पड़े होंगे।

قَطُوفُهَا دَانِيَةٌ (23)

२४. (उन से कहा जायेगा) कि मजे से खाओ पियो, अपने उन कर्मों (अमल) के बदले जो तुम ने पिछले जमाने में किये।

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ (24)

२५. लेकिन जिसे उस का कर्मपत्र (आमाल-नामा) बायें हाथ में दिया जायेगा, वह तो कहेगा कि हाय मुझे मेरा कर्मपत्र दिया ही न जाता।

وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ ۖ فَيَقُولُ
يَلَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَةَ (25)

२६. और मैं जानता ही नहीं कि हिसाब क्या है।

وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَّةً (26)

२७. काश! मौत (मेरा) काम ही खत्म कर देती।

يَلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاطِيَةَ (27)

२८. मेरे धन ने भी मुझे कोई फायेदा (लाभ) न दिया।

مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَّةً (28)

२९. मेरा राज्य भी मुझ से जाता रहा।

هَلَّاكَ عَنِّي سُلْطَانِيَّةً (29)

३०. (हुकम होगा) उसे पकड़ लो फिर उसे तौक पहना दो।

حَدُّوهُ فَغُلُّوهُ (30)

३१. फिर उसे नरक (जहन्नम) में डाल दो।

ثُمَّ أَلْجِئِمُ صَلْوَةً (31)

१ स्वर्ग (जन्नत) में कई दर्जे होंगे, हर दर्जे के बीच बड़ी दूरी होगी, जैसे मुजाहिदीन के वारे में नबी ﷺ ने फरमाया : «स्वर्ग (जन्नत) में सौ दर्जे हैं जो अल्लाह ने मुजाहिदीन के लिए तैयार किये हैं, दो दर्जे के बीच आकाश और धरती जितनी दूरी होगी।» (सहीह मुस्लिम, किताबुल इमारः, सहीह बुखारी, किताबुल जिहाद)

३२. फिर उसे ऐसी जंजीर में जिस की नाप सत्तर हाथ की है, जकड़ दो ।¹

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا
فَأَسْكُوهُ ۝ (32)

३३. बेशक यह अल्लाह महान पर ईमान न रखता था ।

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۝ (33)

३४. और गरीब को खिलाने पर नहीं उभरता था ।²

وَلَا يَخْضُ عَلَى طَعَامِ الْيَسِيرِينَ ۝ (34)

३५. तो आज यही उसका न कोई दोस्त है,

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هُنَا حَمِيمٌ ۝ (35)

३६. और न पीप के सिवाय उसका कोई खाना है ।

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غَسَلِينِ ۝ (36)

३७. जिसे पापियों के सिवाय उसको कोई नहीं खायेगा ।³

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝ (37)

३८. तो मुझे क्रसम है उन चीजों की जिन्हें तुम देखते हो ।

فَلَا أُفِيحُمْ بِمَا تُبْصِرُونَ ۝ (38)

३९. और उन चीजों कि जिन्हें तुम नहीं देखते ।

وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ۝ (39)

४०. कि बेशक यह (कुरआन) प्रतिष्ठित (बाइज्जत) रसूल का कौल है ।⁴

إِنَّكَ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝ (40)

¹ यह ذِرَاعُ जिंराअ (हाथ) किसका हाथ होगा और कितना होगा? इसकी तफसीर मुमकिन नहीं । फिर भी इस से इतना मालूम हुआ कि जंजीर की लम्बाई सत्तर हाथ होगी ।

² यानी इबादत और अनुपालन (इताअत) के जरिये अल्लाह का हक अदा न करता था न हक जो बंदों का बंदों पर है । मानो ईमानवालों में यह बात होती है कि वह अल्लाह के हक और बंदों के हक दोनों को पूरा करते हैं ।

³ خاطئون से मुराद नरकवासी (जहन्नमी) हैं, जो कुफ्र और शिर्क की वजह से जहन्नम में दाखिल होंगे, क्योंकि यही ऐसे पाप हैं जो नरक में सदा रहने की वजह हैं ।

⁴ प्रतिष्ठित (बाइज्जत) रसूल से मुराद मोहम्मद ﷺ हैं और कौल (कथन) से मुराद पढ़ना है, यानी सम्मानित (बाइज्जत) रसूल का पढ़ना, या कौल से मुराद ऐसा कौल है जो यह बाइज्जत रसूल अल्लाह की तरफ से तुम्हें पहुँचाता है, क्योंकि कुरआन रसूल या जिब्रील का कौल नहीं है बल्कि अल्लाह का कौल है जो उस ने फरिश्ते के द्वारा (जरिये) पैगम्बर पर उतारा है, फिर पैगम्बर उसे लोगों तक पहुँचाता है ।

४१. यह किसी शायर का कौल नहीं, (अफसोस) तुम बहुत कम यकीन रखते हो।

४२. और न किसी ज्योतिषी (काहिन) का कौल है, (अफसोस) तुम बहुत कम नसीहत हासिल कर रहे हो।

४३. (यह तो) सारी दुनिया के रब का नाजिल किया हुआ है।

४४. और अगर यह हम पर कोई भी बात गढ़ लेता।

४५. तो जरूर हम उसका दाहिना हाथ पकड़ लेते,^२

४६. फिर उस के दिल की नस काट लेते।^३

४७. फिर तुम में से कोई भी (मुझे) उस से रोकने वाला न होता।

४८. बेसक यह (कुरआन) परहेजगारों के लिए शिक्षा (नसीहत) है।

४९. और हमें पूरा इल्म (ज्ञान) है कि तुम में से कुछ उस के झूठलाने वाले हैं।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا تُؤْمِنُونَ ﴿٤١﴾

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيلًا مَّا تَدَّكَّرُونَ ﴿٤٢﴾

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٣﴾

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ﴿٤٤﴾

لَا خَظْنَا مِنْهُ بِأَيْمِينِنَا ﴿٤٥﴾

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ﴿٤٦﴾

فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ﴿٤٧﴾

وَإِنَّهُ لَتَذَكَّرٌ لِّمَتَّبِعِينَ ﴿٤٨﴾

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ ﴿٤٩﴾

^१ यानी अपनी तरफ से गढ़कर हम से संबन्धित (मंसूब) कर देता, या उस में कमी-बंशी कर देता तो तुरन्त हम उसकी पकड़ करते और उसे ढील न देते जैसाकि अगली आयतों में फरमाया।

^२ या दायें हाथ से उसकी पकड़ करते, क्योंकि दायें हाथ से पकड़ कड़ी होती है और अल्लाह के तो दोनों हाथ ही सीधे हैं, जैसाकि हदीस में है।

^३ ध्यान रहे कि यह सजा खास कर नबी ﷺ के बारे में आई है जिसका मकसद आप की सच्चाई दिखाना है, इस में यह नियम नहीं बताया गया है कि जो भी नबूवत का झूठा दावा करेगा तो नबूवत के झूठे दावेदार को हम तुरन्त सजा देंगे, इसलिए इस से किसी झूठे नबी को सच्चा नहीं कहा जा सकता कि वह दुनिया में अल्लाह के अजाब से सुरक्षित (महफूज) रहा। घटनायें (वाक़ेआत) भी गवाह हैं कि कई लोगों ने नबूवत के झूठे दावे किये और अल्लाह ने उन्हें ढील दी और वह दुनियावी पकड़ से आम तौर से महफूज ही रहे, इसलिए अगर इसे नियम मान लिया जाये तो फिर बहुत से नबूवत के झूठे दावेदारों को सच्चा नबी मानना पड़ेगा।

५०. वेशक (यह झुठलाना) काफिरों के लिए पछतावा है ।

५१. और वेशक यह यकीनी सच है ।

५२. तो तू अपने महिमावान (अजीम) रव की पवित्रता (तस्वीह) बयान कर ।

सूरतुल मआरिज-७०

सूर: मआरिज मक्का में नाजिल हुई, इस में चञ्चालिस आयतें और दो रूकूअ है ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

१. एक माँग करने वाले ने उस अजाब की माँग की जो (वाक़े) होने वाला है ।

२. काफिरों पर जिसे कोई हटाने वाला नहीं ।

३. उस अल्लाह की तरफ से जो सीढ़ियों वाला है ।

४. जिस की तरफ फरिश्ते और रूह चढ़ते हैं^१ एक दिन में जिसकी अवधि (मुद्दत) पचास हजार साल की है ।^२

وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ﴿٥٠﴾

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ﴿٥١﴾

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ﴿٥٢﴾

سُورَةُ الْمَعَارِجِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ﴿١﴾

لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ﴿٢﴾

مِّنَ اللّٰهِ ذِي الْمَعَارِجِ ﴿٣﴾

تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ

مُقَدَّرًا ۚ ذِكْرًا خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ﴿٤﴾

^१ रूह (आत्मा) से मतलब जिब्रील (फरिश्ता) है, उनकी प्रधानता (फ़जीलत) की वजह से उनका अलग खास तौर से बयान किया गया है, नहीं तो फरिश्तों में वह भी शामिल हैं, या रूह से मतलब इंसानी रूहें हैं जो मौत के बाद आसमान पर ले जाई जाती हैं, जैसाकि कुछ रिवायतों (हदीसों) में है ।

^२ उस दिन के निर्धारण (तअय्युन) में बहुत मतभेद (इख़िलाफ़) है, एक कथन (कौल) यह है कि यह क़्यामत के दिन की तादाद है, यानी काफिरों पर हिसाब का दिन पचास हजार साल की तरह भारी होगा, किन्तु मोमिन के लिए दुनिया में एक फ़र्ज (अनिवार्य) नयाज़ पढ़ने से भी संक्षिप्त (मुख़्तसर) होगा । (मुसनद अहमद ३/७५) इमाम इब्ने कसीर ने इसी कौल को प्राथमिकता (तरजीह) दी है, क्योंकि हदीसों से भी इसे ताईद (समर्थन) मिली है । जैसाकि एक हदीस में ज़कात (देयदान) न चुकाने वाले को क़्यामत के दिन जो अज़ाब दिया जायेगा उसकी

५. तो तू अच्छी तरह से सब्र कर ।
 ६. बेशक ये उस (अजाब) को दूर समझ रहे हैं।
 ७. और हम उसे करीब ही देखते हैं ।
 ८. जिस दिन आसमान तेल की तलछट की तरह हो जायेगा ।
 ९. और पहाड़ रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे ।
 १०. और कोई दोस्त किसी दोस्त को न पूछेगा ।
 ११. (अगरचे) एक-दूसरे को दिखा दिये जायेंगे, पापी उस दिन के अजाब के बदले (फिदये) में अपने पुत्रों को देना चाहेगा ।
 १२. अपनी पत्नी को और अपने भाई को ।
 १३. और अपने परिवार को जो उसे पनाह देता था ।
 १४. और धरती के सभी लोगों को, ताकि यह उसे मुक्ति (नजात) दिला दे ।
 १५. (लेकिन) कभी यह न होगा, बेशक वह शोले वाली (आग) है ।
 १६. जो (मुंह और सिर की) खाल खीच लेने वाली है ।

- فَأَصْبِرْ صَبْرًا جَبِيلًا ⑤
 إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ⑥
 وَنَرَاهُ قَرِيبًا ⑦
 يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالرَّهْلِ ⑧
 وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ⑨
 وَلَا يَسْأَلُ حَبِيبٌ حَبِيبًا ⑩
 يُبْصِرُونَ لَهُمُ يَوْمَ الْمُجْرِمِ لَوْ يَفْقَدُونَ ⑪
 مِنْ عَذَابٍ يَوْمَئِذٍ بِبَنِيهِ ⑪
 وَصَاحِبَتِهِ وَأَخِيهِ ⑫
 وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ⑬
 وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا لَنُرْجِيهِ ⑭
 كَلَّمَ إِنَّمَا لَفِ ⑮
 نَزَّاعَةً لِّلْأُتَى ⑯

बर्चा करते हुए रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया :

«حَتَّى يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَ عِبَادِهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا تَأْتُونَ»

«यहाँ तक कि अल्लाह अपने बन्दों के बीच फैसला कर देगा, ऐसे दिन में जिसकी सृष्ट तूम्हारी गिनती के अनुसार पचास हजार साल होगी।» (सहीह मुस्लिम, किताबुज जकात, बाबु इस्मे मानेइज जकात)

१७. वह हर उस इंसान को पुकारेगी जो पीछे हटता और मुंह मोड़ता है ।

تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى ۝ (17)

१८. और जमा करके संभाल रखता है ।

وَجَمَعَ فَأَوْعَى ۝ (18)

१९. बेशक इंसान बड़े कच्चे दिल वाला बनाया गया है ।^१

إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ۝ (19)

२०. जब उसे तकलीफ पहुँचती है तो हड़बड़ा जाता है ।

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۝ (20)

२१. और जब सुख हासिल होता है तो कंजूसी करने लगता है ।

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۝ (21)

२२. लेकिन वह नमाजी ।

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ۝ (22)

२३. जो अपनी नमाज पर पाबंदी रखने वाले हैं।^२

الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۝ (23)

२४. और जिन के धन में मुकर्रर हिस्सा है ।

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ۝ (24)

२५. मांगने वालों का भी और सवाल करने से बचने वालों का भी ।

لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝ (25)

२६. और जो इंसान के दिन पर यकीन रखते हैं।

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۝ (26)

^१ यानी जो दुनिया में सच्चाई से पीठ फेरता और मुंह मोड़ता है और धन जमा करके खजानों में सैत-सैत कर रखता था, उसे अल्लाह के रास्ते में खर्च करता था न उस में से जकात (धर्मदान) निकालता था, अल्लाह तआला नरक को बोलने की ताकत देगा और वह अपने मुंह से बोलेगी और ऐसे लोगों को पुकार कर कहेगी जिन के कर्मों के बदले नरक अनिवार्य (बाजिब) होगा ।

^२ बड़ा लालची और बहुत रोने वाले को *مَلُوعٌ* (हलूअ) कहा जाता है, जिसे अनुवाद (तर्जुमा) में बड़े कच्चे दिल वाला कहा गया है, क्योंकि ऐसा इंसान ही कंजूस, लालची और बड़ा रोने चिल्लाने वाला होता है, आगे उसका गुण (सिफत) बताया गया है ।

^३ मतलब हैं पूरे मोमिन एकेरवरवादी (सुबहिहद) । उन में उपर बयान की गई कमजोरी नहीं होती बल्कि इस के खिलाफ वह अच्छे गुणों (सिफत) के रूप होते हैं, रोज नमाज पढ़ने का मतलब है वह नमाज में सुस्ती नहीं करते, वह हर नमाज उस के समय पर बड़ी पाबंदी से पढ़ते हैं, कोई काम उन्हें नमाज से नहीं रोकता और कोई दुनियावी फायदा उन्हें नमाज से विमुख (माफिल) नहीं करता ।

२७. और जो अपने रब के अजाब से डरते रहते हैं ।

وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابٍ رِيبِهِمْ مَشْفُوقُونَ ﴿٢٧﴾

२८. बेशक उन के रब का अजाब बेखौफ होने की बात नहीं ।

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَا يُؤْمِنُونَ ﴿٢٨﴾

२९. और जो लोग अपने गुप्तागों (चर्मगाहों) की (हराम से) हिफाजत करते हैं ।

وَالَّذِينَ هُمْ يُقْرَوْنَهُمْ خُوفُونَ ﴿٢٩﴾

३०. लेकिन उनकी पत्नियों और दासियों के बारे में जिन के वे मालिक हैं वे मलामत वाले (निन्दित) नहीं ।

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾

३१. अब जो कोई इस के सिवाय (रास्ता) ढूँढेगा, तो ऐसे लोग हद (सीमा) पार करने वाले होंगे ।

فَمَنْ ابْتغىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾

३२. और जो अपनी अमानतों का और अपने वादे और प्रतिज्ञा (अहद) का ध्यान रखते हैं ।

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رُغُوعُونَ ﴿٣٢﴾

३३. और जो अपनी गवाहियों पर सीधे (और अडिग) रहते हैं ।

وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٣﴾

३४. और जो अपनी नमाजों की सुरक्षा (हिफाजत) करते हैं ।

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ ﴿٣٤﴾

३५. यही लोग जन्नत में इज्जत (और सम्मान) वाले होंगे ।

أُولَٰئِكَ فِي جَنَّاتٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٥﴾

३६. तो काफिरों को क्या हो गया है कि वे तेरी तरफ दौड़ते आते हैं ।

قَبَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مُهْطِعِينَ ﴿٣٦﴾

१ यानी इंसान की इस्वाहिब की तकमील (तुप्ति) के लिए अल्लाह ने दो हलाल रास्ते रखे हैं, एक पत्नी, और दूसरा दासी। आज के दौर में दासी का मामला इस्लाम की बतलाई नीति (तदबीर) के मुताबिक लगभग खत्म हो गया है, फिर भी कानूनी तौर से उसे इसलिए खत्म नहीं किया गया है कि भविष्य (मुस्तक़बिल) में यदि ऐसी हालत पैदा हो जाये तो इस से फायदा उठाया जा सकता है, जो भी हो ईमानवालों की एक विशेषता (फ़ज़ीलत) यह भी है कि इस्वाहिब की तकमील को पूरा करने के लिए हराम रास्ता नहीं अपनाते ।

३७. दायें और दायें से गुट के गुट ।¹

३८. क्या उन में से हर एक की इच्छा यह है कि वे ऐशो-आराम वाले स्वर्ग में प्रवेश (दाखिला) पा जायेंगे?

३९. (ऐसा) कभी न होगा, हम ने उन्हें उस (चीज) से पैदा किया है जिसे वे जानते हैं ।

४०. तो मुझे क्रसम है पूर्वी और पश्चिमो² के रब की (कि) हम यक्रीनी तौर से कादिर है ।

४१. इस पर कि उन के बदले में उन से अच्छे लोग ले आयें, और हम मजबूर नहीं हैं ।

४२. तो आप उन्हें झगड़ता खेलता छोड़ दें यहाँ तक कि ये अपने उस दिन से जा मिलें, जिस का उन से वादा किया जाता है ।

४३. जिस दिन कब्रों से ये दौड़ते हुए निकलेगे, जैसेकि वह किसी थान (जगः) की तरफ तैज चाल से जा रहे हैं ।

४४. उन की आंखें झुकी हुई होंगी, उन पर अपमान (जिल्लत) छा रहा होगा, यह है वह दिन जिसका उन से वादा किया जाता था ।

عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ (37)

أَلَطَّبِعَ كُلَّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ (38)

كَلَّا إِذَا خَلَقْنَاهُمْ مَتًّا يَعْلَمُونَ (39)

فَلَا أَقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا لَقَادِرُونَ (40)

عَلَى أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا مِنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوبِينَ (41)

فَذَرَهُمْ يَخْوَطُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّى يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ (42)

يَوْمَ يُخْرِجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلَى نُصُبٍ يُوفِضُونَ (43)

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُقُهُمْ ذُلَّةٌ وَذَلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ (44)

¹ यह नबी ﷺ के दौर के काफ़िरो की चर्चा है कि वह आप ﷺ की मजलिस (सभा) में दौड़े-दौड़े आते, लेकिन आप की बातें सुनकर अमल करने की जगह उनका मज़ाक करते और टोलियों में बंट जाते, और दावा यह करते कि अगर मुसलमान जन्नत में गये तो हम उन से पहले जन्नत में जायेंगे, अल्लाह ने आगामी आयत में उनके इस गुमान का खंडन (तरदीद) किया ।

² हर दिन सूरज अलग-अलग जगह से निकलता है और अलग-अलग जगह में डूबता है । इस बिना पर पूरब भी बहुत है और पश्चिम भी उतने ही । विवरण (तफसील) के लिए सूरह साफ़ात ५ देखिये ।

सूरतु नूह-७१

सूर: नूह मक्का में नाजिल हुई और इस में अठठाईस आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. बेशक हम ने नूह (عليه السلام) को उन के समुदाय (क्रौम) की ओर भेजा कि अपनी क्रौम को डरा दो (और आगाह कर दो) इस से पहले कि उन के पास कष्टदायी (सख्त) अजाब आ जाये।

२. (नूह عليه السلام) ने कहा कि हे मेरे समुदाय (क्रौम) के लोगो! मैं तुम्हें स्पष्ट (वाजेह) रूप से डराने वाला हूँ।

३. कि तुम अल्लाह की इबादत करो और उसी से डरो और मेरा कहना मानो !^१

४. तो वह तुम्हारे पाप माफ कर देगा और तुम्हें एक मुकर्रर वक्त तक छोड़ देगा,^२ बेशक अल्लाह का वादा जब आ जाता है तो रकता नहीं, काश! तुम्हें मालूम होता।

سُورَةُ نُوحٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ

مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ①

قَالَ يَوْمَ إِيَّاكُمْ نَذِيرٌ مُّبِينٌ ②

أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُوا ③

يَعْفُرْ لَكُمْ زَنْ دُؤُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ

مُسَمًّى إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ

لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ④

१ हजरत नूह महान ईश्वरूतों (रसूलों) में से हैं, सहीह मुस्लिम वगैरह की इफ़ाअत (अभिस्तावना) वाली हदीस में है कि यह पहले रसूल है, यह भी कहा जाता है कि उन्ही की क्रौम से शिर्क शुरू हुआ। अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी जाति के मार्गदर्शन (हिदायत) के लिए भेजा।

२ यानी मैं तुम्हें जिन बातों का हुक्म दूँ, उस में मेरा अनुपालन (इताअत) करो, क्योंकि मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का रसूल और उसका प्रतिनिधि (नुमाइन्दा) बनकर आया हूँ।

३ इसका मतलब यह है कि ईमान लाने की हालत में तुम्हारी मौत की अवधि (मुदत) जो मुकर्रर है, उसे टालकर तुम्हें ज्यादा उम्र देगा और वह अजाब तुम से दूर कर देगा जो ईमान न लाने की हालत में तुम्हारा नसीब था। इस आयत से दलील (तर्क) निकालते हुए कहा गया है कि आज्ञापालन (इताअत), सदाचार (नेकी) और रिश्तेदारों के साथ अच्छे सुलूक से हकीकत में उम्र बढ़ती है। हदीस में भी है «صِلَةُ الرَّحِمِ تَزِيدُ فِي الْعُمْرِ» «रिश्तेदारों से अच्छा सुलूक उम्र के बढ़ने की वजह है।» (इब्ने कसीर) कुछ कहते हैं टालने का मतलब बरकत है, ईमान से उम्र में बरकत होगी, ईमान नहीं लाओगे तो इस बरकत (शुभ) से वंचित (महरूम) रहोगे।

५. (नूह ने) कहा कि हे मेरे रब! मैंने अपनी कौम को रात-दिन तेरी तरफ बुलाया है।

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ⑤

६. लेकिन मेरे बुलाने से ये लोग भगमने में और बढ़ते ही गये।

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَاؤِي إِلَّا فِرَارًا ⑥

७. और मैंने जब कभी उन्हें तेरे मार कर देने के लिए बुलाया उन्होंने अपनी ऊंगलियाँ अपने अपने कानों में डाल लीं और अपने कपड़ों को ओढ़ लिया^१ और अड़ गये और बड़ा अहंकार (तकम्बुर) किया।

وَإِنِّي كُنْتُ مَدْعُوهُمْ لِيَتَّخِذُوا أَيْدِيَهُمْ حِمْلًا وَأَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا ⑦

८. फिर मैं ने उन्हें ऊँची आवाज से बुलाया।

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جَهَارًا ⑧

९. और बेशक मैंने उन से खुल कर भी कहा और चुपके-चुपके भी।

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ⑨

१०. और मैं ने कहा कि अपने रब से अपने गुनाहों की माफी करवा लो। (और क्षमा माँगो) बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला है।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ⑩

११. वह तुम पर आकाश को खूब वर्षा करता हुआ छोड़ देगा।^२

يُرْسِلُ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ⑪

^१ यानी मेरी पुकार की वजह से यह ईमान से और ज्यादा दूर हो गये हैं, जब कोई समुदाय (कौम) गुमराही के आखिरी कमार पर पहुँच जाये तो उसकी यही हालत होती है, उसे जितना अल्लाह की तरफ बुलाओ वह उतना ही दूर भागता है।

^२ ताकि मेरा मुँह न देख सके या अपने सिरों पर कपड़े डाल लिये ताकि मेरी बात न सुन सके। यह उनकी तरफ से कड़ी दुरमनी का और नसीहत से नफरत का प्रदर्शन (इजहार) है, कुछ कहते हैं कि अपने को कपड़ों से ढाँक लेने का मकसद यह था कि पैगम्बर (सदैफ्टा) उनको पहचान न सके और उन्हें दावत कुबूल करने पर मजबूर न करे।

^३ कुछ विद्वानों (आलिमों) ने इसी आयत की वजह से इस्तिस्का (वर्षा के लिये) नमाज में सूरह नूह पढ़ने को अच्छा कहा है। रिवायत है कि हजरत उमर भी एक बार इस्तिस्का की नमाज के लिये मंच (मिम्बर) पर चढ़े तो केवल आयत इस्तिगफार, (क्षमा-याचना वाली आयतें) पढ़ कर मिम्बर से उतर आये, और फरमाया कि मैंने वर्षा (बारिश) को वर्षा के उन रास्तों से माँगा है जो आकाशों में हैं, जिन से वर्षा धरती पर उतरती है। (इब्ने कसीर)

१२. और तुम्हें खूब माल और औलाद में बढ़ा देगा और तुम्हें बाग देगा और तुम्हारे लिए नहरें निकाल देगा ।

وَيُزِيدُكُمْ أَمْوَالًا وَيُزِيدُكُمْ بَنِينَ وَيُجْعَلُ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيُجْعَلُ لَكُمْ أَنْهَارًا ﴿١٢﴾

१३. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की वरतरी पर यकीन नहीं करते ।

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ﴿١٣﴾

१४. हालाँकि उस ने तुम्हें कई तरह से पैदा किया है ।

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ﴿١٤﴾

१५. क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह (तआला) ने किस तरह ऊपर तले सात आकाश पैदा कर दिये हैं ।^१

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ﴿١٥﴾

१६. और उनमें चाँद को खूब जगमगाता बनाया है और सूरज को रौशन चिराम बनाया है ।

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ﴿١٦﴾

१७. और तुम को धरती से (एक खास तरीके से) उगाया है^२ (और पैदा किया है) ।

وَاللَّهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ طِبَاقًا ﴿١٧﴾

१८. फिर तुम्हें उसी में लौटा ले जायेगा और (एक खास तरीके से) फिर तुम्हें निकालेगा ।

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا ﴿١٨﴾

१९. और तुम्हारे लिये धरती को अल्लाह (तआला) ने फर्श बनाया है ।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ مَسَاقًا ﴿١٩﴾

२०. ताकि तुम उस के विस्तृत (कुशादा) रास्तों में चलो फिरों ।^३

لَتَسْلُكُوا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾

१ जो उस के सामर्थ्य (कुदरत) और कारीगरी के कमाल को जाहिर करते और इस बात की तरफ इशारा करते हैं कि माबूद सिर्फ वही एक अल्लाह है ।

२ यानी तुम्हारे बाप आदम عَلَيْهِ السَّلَام को जिन्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर उस में अल्लाह ने आत्मा (रूह) फूँकी, या अगर सभी मानव जाति को संबोधित (मुख़ातिब) समझा जाये तो मतलब यह होगा कि तुम जिस वीर्य (मनी) से पैदा होते हो वह उसी रिजक से बनता है जो धरती से मिलता है इस बिना पर सभी की पैदाईश इसी धरती से साबित होती है ।

३ बहुवचन (जमा) है سَبِيلٌ का और बहुवचन (जमा) है نَجٌّ (कुशादा रास्ता) का, यानी उस ने धरती पर बड़े-बड़े कुशादा रास्ता बना दिये हैं ताकि इंसान एक जगह से दूसरी जगह, एक नगर से दूसरे नगर और एक देश से दूसरे देश में जा सके, इसलिए यह रास्ता भी इंसान की कारोबारी और सामाजिक जरूरत है, जिस की व्यवस्था (तदबीर) करके अल्लाह ने इंसान पर एक बड़ा अनुग्रह (नेमत) किया है ।

२१. नूह (ﷺ) ने कहा कि हे मेरे रब! उन लोगों ने मेरी नाफरमानी की और ऐसों का आज्ञापालन (इताअत) किया जिन के माल और औलाद ने उन को (बेशक) नुकसान ही में बढ़ाया।

قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَابْتَغَوْا مِنِّي كَيْدًا مِّنْكَ
يَزِيدُهُ مَالَهُ وَوَلَدَهُ إِلَّا خَسَارًا ۝٢١

२२. और उन लोगों ने बहुत बड़ा धोखा किया।

وَمَكْرُوهًا مَّكْرًا كَبِيرًا ۝٢٢

२३. और उन्होंने कहा कि कभी अपने देवताओं को न छोड़ना और न बढ़, सुबाअ, यगूस, यअुक और नस्र को छोड़ना।^१

وَقَالُوا لَا تَنْدِكُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَسْتَرْجِي وِدًّا
وَلَا سُوَآنًا لَهُ وَلَا يَعْثُونَ وَيَعْوَقُونَ وَكُنُسًا ۝٢٣

२४. और उन्होंने बहुत से लोगों को भटकाया, (हे रब!) तू उन जालिमों के भटकावे को और बढ़ा दे।

وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۗ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ
إِلَّا ضَلَالًا ۝٢٤

^१ यह धोखा और छल क्या था? कुछ ने कहा कि उनका कुछ लोगों को नूह (ﷺ) के कत्ल करने पर उभारना था, कुछ कहते हैं कि माल और औलाद की वजह से जिस स्वार्थ (नफस) के धोखे में वह ग्रस्त (मुश्तिला) हुए, यहाँ तक कि उन में से कुछ ने कहा कि अगर यह सच पर न होते तो इन को यह सुख-सुविधाएँ (ऐशो-आराम) क्यों हासिल होती? कुछ के ख्याल में उन के सरदारों का यह कहना था कि तुम अपने देवताओं की उपासना (इबादत) न छोड़ना और कुछ के ख्याल में उनका कुफ्र (इंकार) ही बड़ा धोखा था।

^२ यह नूह (ﷺ) की क्रीम के "पाँच सदाचारी (नेक) आदमी" थे जिनकी वह इबादत करते थे, और उन की इतनी सुहरत हुई कि अरब में भी उन की पूजा-अर्चना होती रही, जैसे 'बद्द' दूमतुल जनदल (जगह) में कबीला कल्ब का, 'सुबाअ' समुद्र तट के कबीला हुजैल का, 'यगूस' सबा के करीब जुर्फ नाम की जगह में मुराद और बनू गुतैफ का। 'थऊक' हमदान कबीले का और 'नस्र' हिम्यर जाति का कबीला जुल कलाअ का उपास्य (माबूद) रहा। (इन्हे कसीर, फतहुल कदीर) यह पाँचों नूह की जाति के नेक लोगों के नाम थे, जब यह मर गये तो शैतान ने उन के श्रद्धालुओं (अक्रीदतमंदों) से कहा कि उन के चित्र (फोटो) बनाकर अपने घरों और दूकानों में रख लो ताकि वह याद रहें और उन का ध्यान कर के तुम भी नेक काम करते रहो, जब यह चित्र बनाकर रखने वाले मर गये तो उन के वंश को शैतान ने यह कहकर चिर्क में लिप्त (मुश्तिला) कर दिया कि तुम्हारे पूर्वज (बुजुर्ग) तो इनकी उपासना करते थे, जिन के चित्र तुम्हारे घरों में लटक रहे हैं, इसलिए उन्होंने उनकी पूजा शुरू कर दी। (सहीह बुखारी, तफसीर सूरह नूह)

२५. ये लोग अपने पापों की वजह से (पानी में) डूबो दिये गये और जहन्नम में पहुँचा दिये गये और अल्लाह के सिवाय उन्होंने अपना कोई मदद करने वाला न पाया।

२६. और नूह (عليه السلام) ने कहा कि हे मेरे रब! तू धरती पर किसी काफिर को रहने-सहने वाला न छोड़ !'

२७. अगर तू उन्हें छोड़ देगा तो बेशक ये तेरे दूसरे बंदों को भी भटका देंगे और ये कुकर्म (बुरे काम) करने वाले काफिरों ही को जन्म देंगे।

२८. हे मेरे रब! तू मुझे और मेरे माता-पिता और जो भी ईमान लाकर मेरे घर में आये और सभी ईमानवाले मर्दों और सभी ईमानवाली औरतों को माफ़ कर दे और काफिरों को बर्बादी के अलावा दूसरी किसी बात में न बढ़ा।

सूरतुल जिन्न-७२

सूर: जिन्न भक्का में नाजिल हुई और इस में अट्ठाईस आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. (हे मोहम्मद ﷺ) आप कह दें कि मुझे बह्यी (प्रकाशना) की गयी है कि जिन्नों के एक गिरोह ने (कुरआन) सुना,^१ और कहा कि हम ने अजीब कुरआन सुना है।

مِمَّا خَطَبْتَهُمْ أَعْرَفُوا فَأَدْجَلُوا نَارًا لَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ﴿٢٥﴾

وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْنِي عَلَى الْأَرْضِ مِنْ الْكٰفِرِيْنَ دَعِيًّا ﴿٢٦﴾

إِنَّاكَ إِنْ تَذَرَهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَكُوْنُوْنَ إِلَّا فٰجِرًا كَفٰرًا ﴿٢٧﴾

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيْ مُؤْمِنًا وَبِلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَلَا تَجْعَلِ الْظٰلِمِيْنَ اِلٰهًا تَبٰرَكَ ﴿٢٨﴾

سُوْرَةُ الْجِنِّ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِيْ اِلَيَّ اِنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرُوْنَ مِنَ الْجِيْنِ فَمَا رَوٰوْا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ﴿١﴾

^१ यह शाप (बहुआ) उस वक़्त दिया जब ईशदूत (नबी) नूह ﷺ उन के ईमान लाने से बहुत मायूस हो गये और अल्लाह ने भी खबर कर दिया कि अब उन में से कोई ईमान नहीं लायेगा।

^२ यह घटना (बाक़ेआ) सूरह अहकाफ २९ में गुजर चुकी है कि नबी ﷺ बादिये नखला में सहावा केराम को फ़ज की नमाज़ पढ़ा रहे थे कि कुछ जिन्नों का वहाँ से गुजर हुआ तो उन्होंने आप का कुरआन सुना, जिस से वे प्रभावित (मुतास्सिर) हुए। यहाँ बतलाया जा रहा है कि उस समय जिन्नों के कुरआन सुनने का ज्ञान (इल्म) आप को नहीं हुआ, बल्कि बह्यी के जरिये आप को इस से सूचित (बाखबर) किया गया।

२. जो सच्चे रास्ते की तरफ मार्गदर्शन (हिदायत) देता है हम तो उस पर ईमान ला चुके, (अब) हम कभी अपने रब का किसी दूसरे को साझीदार न बनायेंगे ।

يَهْدِي إِلَى الْبُرْهَانِ فَأَمَّا بِهِ لَوْ كُنَّا نُشْرِكُ بِهِ رَبَّنَا أَحَدًا ②

३. और बेशक हमारे रब की शान बुलन्द है, न उस ने किसी को (अपनी) पत्नी बनाया है और न औलाद ।

وَأَنَّهُ تَعَلَّى جَدًّا رَبَّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ③

४. और बेशक हम में का बेवकूफ अल्लाह के बारे में झूठी बातें कहता था ।

وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ④

५. और हम तो यही समझते रहे कि नामुमकिन है कि इंसान और जिन्नात अल्लाह पर झूठी बातें लगायें ।

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّن نَّقُولَ الْإِنسَ وَالْجِنِّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ⑤

६. हकीकत यह है कि कुछ इंसान कुछ जिन्नों से पनाह माँगते थे,^३ जिस से जिन्नात अपनी उदण्डता (सरकशी) में और बढ़ गये ।

وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالِنَا مِن بَعْضِهِمْ قَزَازًا وَهُمْ كَذِبٌ أُولَاءُ ⑥

७. और (इंसानों) ने भी जिन्नों की तरह ये समझ लिया था कि अल्लाह कभी किसी को नहीं भेजेगा । (या किसी को दोबारा जिन्दा न करेगा)

وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَن لَّن يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ⑦

^१ سَفِيهُنَا (हमारे बेवकूफ) से मतलब कुछ ने शैतान लिया है, कुछ ने उनके साथी जिन्न और कुछ ने आम तौर से हर वह इंसान लिया है, जो यह गलत धर्म (गुमान) रखता है कि अल्लाह की औलाद है । كَذِبًا के कई मायने किये गये हैं, जुल्म, झूठ, बातिल और कुफ्र में बढ़ा हुआ वगैरह। मकसद दरमियानी रास्ता से दूरी और सीमा (हद) पार कर जाना है । मतलब यह है कि यह बात कि अल्लाह की औलाद है, उन बेवकूफों की बात है जो दरमियानी और सीधे रास्ता से दूर, सीमा से परे, झूठ और इल्जाम लगाने वाले हैं ।

^२ इसलिए हम उसकी पुष्टि (तसदीक) करते रहे और अल्लाह के बारे में यह आस्था (अक्रीदा) रखे रहे यहाँ तक कि हम ने कुरआन सुना तो फिर हम पर इस अक्रीदा का झूठ होना खल गया ।

^३ अज्ञानकाल (जाहिलियत) में एक प्रथा (रिवाज) यह भी थी कि वे कहीं यात्रा (सफर) पर जाते तो जिस वादी में रुकते वहाँ जिन्नों से पनाह माँगते, जैसे इलाके के सरदार और बड़े से पनाह माँगी जाती है । इस्लाम ने इस को खत्म किया और सिर्फ एक अल्लाह से पनाह माँगने पर जोर दिया ।

८. और हम ने आसमान को टटोल कर देखा तो उस को सख्त चौकीदारों और तेज शोलों (ज्वालाओं) से भरा पाया ।

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَا مُلَائِكًا حَرِيصًا
شَوِيذًا وَشَهَابًا ۝٨

९. और इस से पहले हम बातें सुनने के लिए आकाश में जगह-जगह पर बैठ जाया करते थे, अब जो भी कान लगाता है वह एक शोले को अपनी ताक (घात) में पाता है ।

وَأَنَّا لَمَّا نَقَعْدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلْمَسْمُوعِ لَمَعْنَا
يَسْمُوعِ الْآنَ يَجِدُ لَهُ شَهَابًا وَصَدًا ۝٩

१०. और हम नहीं जानते कि धरती वालों के साथ किसी बुराई का इरादा किया गया है या उनके रब का इरादा उनके साथ भलाई का है ।

وَأَنَّا لَا تَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدُ بِمَنْ فِي الْأَرْضِ
أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝١٠

११. और यह कि (बेचक) कुछ तो हम में से नेक है और कुछ उस के उल्टा भी है । हम कई तरह से बटे हुए हैं ।^१

وَأَنَّا مِنَّا الظَّالِمُونَ وَمِنَّا دُونَ ذَلِكَ لَمَّا
طَرَّيْنَا قَدًّا ۝١١

१२. और हमें पूरा यकीन हो गया^२ कि हम अल्लाह तआला को धरती में कभी मजबूर नहीं कर सकते और न हम भाग कर उसे हरा सकते हैं ।

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَنْ لَنْ نُعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ
نُعْجِزَهُ هَرَبًا ۝١٢

१३. और हम हिदायत की बात सुनते ही उस पर ईमान ला चुके, और जो भी अपने रब पर ईमान लायेगा उसे न किसी नुकसान का डर है न ज़ुलम (और दुख) का ।

وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْحَدَىٰ آمَنَّا بِهِ لَمَّا
يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ فَلَا يَحَافُ بِخَسَا وَلَا رَهَقًا ۝١٣

१४. और हम में से कुछ मुसलमान हैं और कुछ बेइसाफ है,^३ तो जो मुसलमान हो गये उन्होंने सीधे रास्ते की खोज कर ली ।

وَأَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ لَمَّا
أَسْلَمُوا فَآؤْلَيْكَ تَكْفُرُوا رَشَدًا ۝١٤

^१ (चीज के टुकड़े) وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ उस बन्त बोलते हैं जब उनकी हालत एक-दूसरे से असंग हो, यानी हम कई समूहों (गुप्तों) और कई स्थानों में बटे हुए हैं, यानी जिन्नों में भी मुसलमान, काफिर, यहूदी, इसाई, मजूसी बगैरह हैं । कुछ कहते हैं कि उन में भी मुसलमानों की तरह कदरिया, मुरजिया, राफिजा आदि (बगैरह) हैं । (फतहल कदीर)

^२ यहाँ यकीन के मायने में है, जैसे कि और भी कुछ जगहों पर है ।

^३ यानी जो मोहम्मद (ﷺ) की नबूवत (हूतत्व) पर ईमान ले आये वह मुसलमान और जिन्होंने इंकार किया वह नाईसाफ (अन्यायी) हैं ।

१५. और जो ज़ालिम हैं वे नरक का ईंधन बन गये ।¹

१६. और यह कि अगर ये लोग सीधे रास्ते पर मजबूत रहते तो जरूर हम उन्हें बहुत ज्यादा पानी पिलाते ।

१७. ताकि हम उस में उन का इम्तेहान ले लें और जो इंसान अपने रब के स्मरण (ज़िक्र) से मुंह मोड़ लेगा तो अल्लाह (तआला) उसे कठोर अज़ाब में डाल देगा ।

१८. और यह कि मस्जिदें केवल अल्लाह ही के लिए (खास) हैं, तो अल्लाह (तआला) के साथ किसी दूसरे को न पुकारो ।²

१९. और जब अल्लाह का वंदा (भक्त) उसकी इबादत के लिए खड़ा हुआ तो करीब था कि वे भीड़ की भीड़ बनकर उस पर पिल पड़ें ।³

२०. (आप) कह दीजिए कि मैं तो केवल अपने रब को ही पुकारता हूँ और उस के साथ किसी को साझीदार नहीं बनाता ।⁴

وَأَمَّا الْقَيْظُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾

وَأَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ لَأَسْقِيَهُمْ مَاءً غَدَقًا ﴿١٦﴾

لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ وَ مَنْ يُعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾

وَأَنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ أَحَدًا ﴿١٨﴾

وَأَنَّهُ لِنَتَا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ أَحَدًا ﴿٢٠﴾

¹ इस से मालूम हुआ कि इंसानों की तरह जिन भी स्वर्ग और नरक में जायेंगे, उन में से काफिर नरक में और मुसलमान स्वर्ग में, यहाँ तक जिन्नो की बात पूरी हो गई। अब आगे फिर अल्लाह का क़ौल है।

² مسجد का मतलब सज्दे की जगह है, सज्दा भी नमाज़ का एक इकन (स्तम्भ, फर्ज अमल) है इसीलिए नमाज़ पढ़ने की जगह को मस्जिद कहा जाता है, आयत का मतलब साफ है कि मस्जिदों का मक़सद सिर्फ एक अल्लाह की इबादत है, इसलिए मस्जिदों में किसी दूसरे की इबादत, किसी दूसरे से दुआ, फ़रियाद और किसी और से गुहार या उसे मदद के लिए पुकारना वैध (जायज़) नहीं। अगर यहाँ भी अल्लाह के सिवा किसी को पुकारा जाने लगे तो यह बहुत बुरा और बहुत जुल्म होगा, लेकिन बदकिस्मती से नाम के मुसलमान अब मस्जिदों में भी अल्लाह के साथ दूसरों को मदद के लिए पुकारते हैं, बल्कि मस्जिद में ऐसे शिला लेख (लौहे) लटकायें हुए हैं जिन में अल्लाह को छोड़कर दूसरों को मदद के लिए पुकारा गया है।

³ عَبْدُ اللَّهِ (अल्लाह के दास) से मतलब रसूलुल्लाह ﷺ है, और मतलब यह है कि जिन्न और इंसान मिलकर चाहते हैं कि अल्लाह के इस प्रकाश (नूर) को अपनी फूँकों से बुझा दें, इस के दूसरे मायने भी बयान किये गये हैं लेकिन इमाम इब्ने कसीर ने इसे प्रधानता (फ़ज़ीलत) दी है।

⁴ यानी जब सभी आप की बुझनी पर एक मत हो गये और तुल गये हैं तो आप कह दीजिए कि मैं तो सिर्फ अपने रब की इबादत करता हूँ, उसी से पनाह माँगता और उसी पर भरोसा करता हूँ।

२१. कह दीजिए कि मुझे तुम्हारे लिए किसी फायदे-नुकसान का अधिकार (हक) नहीं।

२२. कह दीजिए कि मुझे कभी कोई अल्लाह से नहीं बचा सकता और मैं कभी उस के सिवाय पनाह की जगह भी नहीं पा सकता।

२३. लेकिन (मेरा काम) तो केवल अल्लाह की यात और उसका सन्देश (लोगों को) पहुँचा देना है, (अब) जो भी अल्लाह और उस के रसूल की नाफरमानी करेगा उस के लिए नरक की आग है जिस में ऐसे लोग हमेशा रहेंगे।

२४. यहाँ तक कि जब उसे देख लेंगे जिसका उन को वादा दिया जाता है, तो करीब भविष्य (मुस्तक़बिल) में जान लेंगे कि किसका सहायक (मददगार) कमज़ोर और किसका गिरोह कम है?।

२५. (आप) कह दीजिए कि मुझे इल्म नहीं कि जिस का वादा तुम से किया जाता है वह करीब है या मेरा रव उस के लिए दूर की मुदत निर्धारित (मुकरर) करेगा।

२६. वह ग़ैब का जानने वाला है और अपने ग़ैब पर वह किसी को अवगत (बाख़बर) नहीं कराता।

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝٢١

قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ وَلَا أَلْتَمِسُ
أَجْدًا مِنْ دُونِهِ مُلْتَحِدًا ۝٢٢

إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَةً ۗ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ
وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا
أَبَدًا ۝٢٣

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَيَسْأَلُونَ مَنْ
أَضَعَفُ نَاصِرًا وَآقِلُ عَدَدًا ۝٢٤

قُلْ إِن أَدْرِي أَقْرَبُ مَّا تُوعَدُونَ
أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّي أَمَدًا ۝٢٥

عِلْمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا ۝٢٦

1 यानी मुझे तुम्हारी हिदायत और गुमराही और फायदे-नुकसान का हक नहीं, मैं तो सिर्फ एक का बन्दा हूँ, जिसे अल्लाह ने प्रकाशना (बहयी) और रिसालत के लिये चुन लिया है।

2 यानी उस बक्त उनको पता लगेगा कि मुसलमानों का सहायक (मददगार) कमज़ोर है या मुशरिकों (बहुदेववादियों) का, और तौहीद वालों (एकेश्वरवादियों) की तादाद कम है या अल्लाह के अलावा के पुजारियों की? मतलब यह है कि मुशरिकों का तो सिरे से कोई मददगार ही नहीं होगा और अल्लाह की असंख्य (बेशुमार) सेना के आगे इन मुशरिकों की तादाद भी आटे में नमक के बराबर ही होगी।

२७. सिवाय उस रसूल के जिसे वह पसंदीदा बना ले,¹ इसलिए कि उस के भी आगे-पीछे पहरेदार मुकर्रर (निर्धारित) कर देता है।²

२८. ताकि मालूम हो जाये कि उन्होंने अपने रब के संदेश पहुँचा दिये,³ अल्लाह (तआला) ने उन के करीबी चीजों को घेर रखा है और हर चीज की तादाद की गिनती कर रखी है।

सूरतुल मुज्जम्मिल-७३

सूर: मुज्जम्मिल मक्का में नाज़िल हुई और उस में बीस आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. हे चादर में लिपटने वाले!⁴

إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِن رَّسُولٍ فَإِنَّهُ يَسْلُكُ مِن بَيْنِ يَدَيْهِ وَيَمْنُ خَلْفَهُ رَصَدًا ﴿٢٧﴾

لِيَعْلَمَ أَنَّ قَدْ أُنزِلَتْ رِسَالَتُهُمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَخْضَىٰ كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

سُورَةُ الْمُزَّمِّلِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الْمَرْءُ

¹ यानी अपने पैगम्बर (संदेशदाता) को कुछ परोक्ष (गैब) की बातों से खबर कर देता है, जिस का तआल्लुक या तो संदेश पहुँचाने से होता है या उन के रसूल होने का सूचित होते हैं, और खुली बात है कि अल्लाह के खबर करने से रसूल गैब का जानने वाला नहीं हो सकता, क्योंकि अगर पैगम्बर को भी गैब का ज्ञान (इल्म) होता तो फिर अल्लाह की तरफ से उसे गैब से बाखबर करने का कोई मतलब ही नहीं रह जाता। अल्लाह तआला अपना गैब उसी वक़्त अपने रसूल पर जाहिर करता है जब उसे पहले से इस गैब का इल्म नहीं होता, इसलिए गैब का इल्म सिर्फ अल्लाह ही को है, जैसाकि यहाँ भी इसे साफ किया गया है।

² यानी वहयी उतरने के समय पैगम्बर के आगे-पीछे फरिश्ते होते हैं जो जिन्नों और शैतानों को प्रकाशना (वहयी) की बातें नहीं सुनने देते।

³ मैं जमीर किसकी तरफ फिरता है? कुछ के ख़्याल में रसूल ﷺ हैं, ताकि आप जान लें कि आप से पहले रसूलों ने भी अल्लाह का संदेश इसी तरह पहुँचाया जिस तरह आप ने पहुँचाया, या पहरेदार फरिश्तों ने अपने रब का पैगाम पैगम्बर को पहुँचा दिया है। कुछ ने उसे अल्लाह की तरफ फिराया है, इस हालत में मतलब यह होगा कि अल्लाह अपने फरिश्तों के जरिये (द्वारा) अपने पैगम्बरों की हिफ़ाज़त करता है ताकि वह रिसालत (संदेश पहुँचाने) के काम को अच्छी तरह से कर सकें, वह उस वहयी की भी हिफ़ाज़त करता है जो पैगम्बरों को भेजी जाती है ताकि वह जान ले कि उन्होंने अपने रब के पैगाम लोगों तक सही-सही पहुँचा दिये हैं।

⁴ जिस वक़्त इन आयतों का अवतरण (नुज़ूल) हुआ, नबी ﷺ चादर ओढ़ कर लेटे हुए थे, अल्लाह ने आप की इसी हालत की चर्चा करते हुए मुखातिब किया, मतलब यह है कि अब चादर छोड़ दें और रात में थोड़ा खड़े रहें यानी तहज्जुद की नमाज़ पढ़ें। कहा जाता है कि इस हुक्म के एतबार से आप ﷺ पर तहज्जुद की नमाज़ अनिवार्य (फ़र्ज़) थी। (इब्ने कसीर)

२. रातों को उठ खड़े हो जाओ, (तहज्जुद की नमाज के लिए) लेकिन थोड़ी देर।

३. आधी रात या उस से भी कुछ कम।

४. या उस पर बढ़ा दे और कुरआन को ठहर-ठहर कर (साफ) पढ़ा कर।

५. बेशक हम तुझ पर बहुत भारी बात जल्द ही नाजिल करेंगे।^१

६. बेशक रात का उठना मन की यकसूई (एकाग्रता) के लिए बहुत मुनासिब है और बात को बहुत मुनासिब (उचित) करने वाला है।^२

७. बेशक तुझे दिन में बहुत से काम होते हैं।

८. और तू अपने रव के नाम का जिक्र किया कर और सभी सृष्टि (मखलूक) से अलग होकर उसकी तरफ ध्यानमग्न (मुतवज्जिह) हो जा।^३

قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيلًا ②

بَضْعَةً أَوْ انْقِصُ مِنْهُ قَلِيلًا ③

أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ④

إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ⑤

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْأً وَأَقْوَمُ

قِيلًا ⑥

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْعًا وَثَوِيلًا ⑦

وَادِّكِرْ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيلًا ⑧

^१ रात का (क्याम) खड़ा रहना चूँकि इन्सानी मन के लिए आम तौर पर कठिन है, इसलिए यह दरमियानी बात के रूप में कहा कि हम इस से भी भारी बात तुम पर नाजिल करेंगे, यानी कुरआन। जिस के हुक्मों और कर्तव्यों (वाजिबात) पर कार्यरत (आमिल) होना, इसकी हदों की पाबंदी और उस का प्रचार-प्रसार (दावत-तबलीग) एक भारी और मुश्किल काम है। कुछ ने बोझ (भारीपन) से वह बोझ मलतब लिया है जो वहयी के वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ पर पड़ता था, जिस की वजह से कड़े जाड़े में भी आप पसीने से भीग जाते थे। (इब्ने कसीर)

^२ दूसरा भायने यह है कि दिन के मुक़ाबले रात को कुरआन पढ़ना ज्यादा साफ और मन के लगाव के लिए ज्यादा प्रभावशाली (असरअंदाज) है, इसलिए कि उस वक़्त दूसरी आवाजें नहीं होती, माहौल शान्त (खामोश) होता है, उस वक़्त नमाजी जो पढ़ता है वह आवाजों, शोर और दुनिया के कामों की भेंट (नजर) नहीं होता, बल्कि नमाजी उस से महफूज रहता है और उस के असर को महसूस करता है।

^३ تَبَتَّلْ का मतलब कटन और अलग होना है, यानी अल्लाह की इबादत और उस से दुआ और विनय (सरगोशी) के लिए अकेला और पूरी तरह से उसकी तरफ ध्यानमग्न (मुतवज्जिह) हो जा, यह रहबानियत (साधुत्व) से अलग चीज है, रहबानियत तो दुनियावी रिश्तों के छोड़ने और बैराग का नाम है। تَبَتَّلْ नाम है दुनियावी कामों के पूरा करने के बाद इबादत में लग जाना और अल्लाह से दुआ करना, जो इस्लाम में अच्छा है।

९. पूरब और पश्चिम का रब जिस के अलावा कोई पूज्य (इलाह) नहीं, तू उसी को अपना संरक्षक (वकील) बना ले।

१०. और जो कुछ वे कहते हैं तू सहन करता रह और उन्हें अच्छी तरह से छोड़ रख।

११. और सुन्ने और उन झूठलाने वाले नेमत वाले लोगों को छोड़ दे और उन्हें तनिक मौका दे।

१२. बेशक हमारे यहाँ कठोर बेड़ियाँ हैं और सुलगाता हुआ नरक है।

१३. और गले में अटकने वाला खाना है और दर्द देने वाला अजाब है।

१४. जिस दिन धरती और पहाड़ थरथरा जायेंगे और पहाड़ भुरभुरी रेत के टीलों की तरह हो जायेंगे।

१५. बेशक हम ने तुम्हारी तरफ भी तुम पर गवाही देने वाला रसूल भेज दिया है, जैसा कि हम ने फिरऔन की तरफ रसूल भेजा था।

१६. तो फिरऔन ने उस रसूल की नाफरमानी की तो हम ने उसे घोर मुसीबत में पकड़ लिया।

१७. तुम अगर काफिर रहे तो उस दिन किस तरह बचोगे, जो दिन बच्चों को बूढ़ा कर देगा।¹

رَبِّ الشَّقِيقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
فَأَجِدُهُ وَكَيْلًا ⑨

وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا
جَبِيلًا ⑩

وَدَرْبِي وَالْمَلَائِكَةُ أُولَى النَّعْمَةِ وَمَهَلُكُمْ
قَلِيلًا ⑪

إِنَّ لَنَا لَأَيْمَانًا أَكْثَرًا وَجَحِيمًا ⑫

وَطَعَامًا ذَا عِضَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ⑬

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ
الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ⑭

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ
كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ⑮

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا
وَبِيلًا ⑯

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ
الْوِلْدَانَ شِيبًا ⑰

¹ شَيْبٌ (शीब) اَشْيَبٌ (अशयब) का बहुवचन (जमा) है। क़यामत के दिन की भयानकता की वजह से हकीकत में बच्चे बूढ़े हो जायेंगे, या मिसाल के तौर पर ऐसा कहा।

हदीस में भी आता है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला आदम عليه السلام से कहेगा कि अपनी औलाद में से जहन्नम के लिए अलग निकाल ले। हज़रत आदम कहेंगे कि हे अल्लाह! किस तरह? अल्लाह फ़रमायेगा कि हर हज़ार में से ९९९। इस वक़्त गर्भवती (हामला) औरतों के गर्भ गिर जायेंगे और बच्चे बूढ़े हो जायेंगे। (अलहदीस, अलबुख़ारी, तफ़सीर सूरतुल हज़्ज)

१८. जिस दिन आकाश फट जायेगा, अल्लाह (तआला) का यह वादा पूरा होकर ही रहेगा।

१९. बेशक यह शिक्षा (नसीहत) है, तो जो चाहे अपने रब की तरफ के रास्ते को अपना ले।

२०. बेशक तेरा रब अच्छी तरह जानता है कि तू और तेरे साथ के लोगों का एक गुट लगभग दो तिहाई रात को और आधी रात को और एक तिहाई रात को (तहज्जुद की नमाज के लिए) खड़े होते हैं, और रात-दिन का पूरा अंदाजा अल्लाह (तआला) को ही है, वह (अच्छी तरह) जानता है कि तुम उसे हरगिज न निभा सकोगे तो उस ने तुम पर कृपा की, इसलिए जितना कुरआन पढ़ना तुम्हारे लिए सरल हो उतना ही पढ़ो वह जानता है कि तुम में कुछ रोगी भी होंगे, कुछ दूसरे, धरती पर सैर करके अल्लाह तआला की कृपा (यानी रोजी भी) खोजेंगे और कुछ अल्लाह तआला के रास्ते में जिहाद भी करेंगे^१ तो तुम आसानी से जितना (कुरआन) पढ़ सकते हो पढ़ो, और नमाज पाबन्दी से पढ़ो

إِنَّ السَّمَاءَ مُنْقَطِرَةٌ أَنفُهَا كَأَنَّهَا غَمَامٌ مُّثْقَلَةٌ إِنَّ رَبَّكَ لَبَشِيرٌ نَذِيرٌ ۗ قَدْ جَاءَ الْوَحْيَ فِي رَبِّكَ

إِنَّ هَذِهِ تَذَكُّرٌ ۗ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿١٩﴾

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِن مُّكْنِي اللَّيْلِ وَيَضَعُكَ وَأُتْبِئُهُ وَأَخَذَ مِنَ الَّذِينَ مَعَكَ وَاللَّهُ يَعْتَدِرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۗ يَعْلَمُ أَنَّ كُنْ تُحْصِيهِ فَتَأْتِيكَ عَلَيْكُمْ فَأَقْرَأُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۗ يَعْلَمُ أَنَّ سَيَاوُنَ مِنْكُمْ قَرَضَىٰ ۗ وَأَخْرُوجُونَ يَتَّبِعُونَ فِي الْأَرْضِ ۗ يَتَّبِعُونَ مِنْ فَضْلِ اللَّهِ ۗ وَأَخْرُوجُونَ يُعَاقِبُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۗ فَأَقْرَأُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ

^१ जब सूरह के शुरू में आधी रात या उस से कम या ज्यादा कयाम (नमाज के लिए खड़े होने) का हुक्म दिया गया तो आप और आप के साथियों का एक गिरोह रात में नमाज पढ़ने लगा, कभी दो तिहाई से कम, कभी आधी रात और कभी एक तिहाई रात जैसाकि यहाँ बयान है, लेकिन एक तो यह रात की लगातार नमाज बड़ी कठिन थी, दूसरे समय का यह अंदाजा आधी रात या तिहाई या दो तिहाई हिस्सा नमाज पढ़ना इस से भी बड़ा कठिन था, इसलिए अल्लाह ने इस आयत में हलका करने का हुक्म उतारा, जिसका मायने कुछ के हवाल में तहज्जुद की नमाज छोड़ने की इजाजत है और कुछ के हवाल में यह है कि उसके फर्ज (अनिवार्य होने) को इस्तिहबाब (उत्तम होने) से बदल दिया गया, अब यह न आप के पैरोकारों के लिए फर्ज है न नबी ﷺ के लिए। कुछ का कहना है कि यह छूट केवल उम्मत के लिए है, नबी ﷺ के लिए इसका पढ़ना फर्ज था।

^२ इसी तरह जिहाद (धर्मयुद्ध) में भी कठिन यात्रायें (सफ़र) करनी पड़ती हैं, यह तीनों बातें रोग, यात्रा और जिहाद बारी-बारी सब के सामने आती हैं। इसलिए अल्लाह तआला ने तहज्जुद में छूट दे दी है, क्योंकि इन में कठिनाईयाँ हैं।

और जकात (भी) देते रहा करो और अल्लाह तआला को अच्छा कर्ज दो, और जो नेकी तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसे अल्लाह (तआला) के यहाँ सब से अच्छे तरीके से बदले में ज्यादा पाओगे ।¹ और अल्लाह तआला से माफी माँगते रहो । बेशक अल्लाह तआला माफ़ करने वाला रहम करने वाला है ।

सूरतुल मुद्दसिर-७४

सूर: मुद्दसिर मक्का में नाज़िल हुई और इस में छप्पन आयतें और दो रूकूअ है ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

१. हे कपड़ा ओढ़ने वाले !²

२. खड़ा हो जा और होशियार कर दे ।

३. और अपने रब ही की महिमा (तकबीर) बयान कर ।

४. और अपने कपड़ों को पवित्र (पाक) रखा कर ।

وَاقْرَأْهُ وَاللَّهُ فَرَضًا حَسَنًا وَمَا تَكْفُرُ مَوْلَا نَفْسِهِمْ
مَنْ خَيْرٌ لِّجَمَادٍ وَهُوَ خَيْرٌ وَأَعْظَمُ
أَجْرًا وَاسْتَغْفِرُوا لِلَّهِ لَنْ يُغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ عَقُورٌ رَّجِيمٌ 20

سُورَةُ الْمَدْثُرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

يَا أَيُّهَا الْمَدْثُرُ ①

قُمْ فَأَنْذِرْ ②

وَرَبِّكَ فَكَبِّرْ ③

وَيَسِّرْكَ فَيَسِّرْ ④

¹ यानी नफिल नमाज़ें, सदाका, खैरात और जो दूसरे नेक काम करोगे उसका अल्लाह के पास बेहतर बदला पाओगे । ज्यादातर भाष्यकारों (मुफससिरो) ने इस सूर: के आधे हिस्से को मदनी और आधे हिस्से को मक्की माना है जिसकी वजह आयत न- २० है जो मदनी है ।

² सब से पहले जो बहयी उतरी वह *فَرَأَى اسْمَ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ* है । उस के बाद बहयी में देरी हो गई और नबी ﷺ बड़े बेचैन हो गये और परेबान रहने लगे । एक दिन अचानक वही फरिश्ता जो हिरा (पहाड़) की गुफ़ा में बहयी लेकर पहली बार आया था, आप ﷺ ने देखा कि ज़मीन और आसमान के बीच एक कुर्सी पर बैठा है, जिस से आप पर एक डर छा गया और घर जाकर घर वालों से कहा कि मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, मुझे कपड़ा ओढ़ा दो, इसलिए उन्होंने आप को एक कपड़ा ओढ़ा दिया, इसी हालत में यह बहयी नाज़िल हुई । (सहीह बुखारी, मुस्लिम, सूरतुल मुद्दसिर और किताबुल ईमान) इस बिना पर यह दूसरी बहयी (प्रकाशना) और बहयी के देरी के बाद पहली बहयी है ।

५. और अपवित्रता (नापाकी) को छोड़ दे ।¹
६. और एहसान करके ज्यादा लेने की इच्छा (तमन्ना) न कर ।
७. और अपने रव के रास्ते में सब्र कर ।
८. तो जब नरसिंघा (सूर) में फूका जायेगा ।
९. तो वह दिन बहुत कठोर दिन होगा ।
१०. (जो) काफिरों पर आसान न होगा ।
११. मुझे और उसे छोड़ दे, जिसे मैंने अकेला पैदा किया है ।²
१२. और उसे बहुत धन दे रखा है ।
१३. और हाज़िर रहने वाले पुत्र भी ।
१४. और मैंने उसे बहुत कुछ कुशादगी दे रखी है ।
१५. फिर भी उसकी तमन्ना (कामना) है कि मैं उसे और ज्यादा दूँ ।
१६. नहीं-नहीं, वह हमारी आयतों का विरोधी (मुखालिफ) है ।³

- وَالرُّجْزَ فَاهْبِطْ ⑤
- وَلَا تَمَنَّ أَنْ تَسْكَوْهُ ⑥
- وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ⑦
- وَإِذَا نُفِخَ فِي النُّفُوفِ ⑧
- فَذَلِكَ يَوْمٌ عَسِيرٌ ⑨
- عَلَى الْكَافِرِينَ عَذَابٌ يُسِيرٌ ⑩
- ذُرِّيٌّ وَمَنْ خَلَقْتُ وَجِدًا ⑪
- وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَمْدُودًا ⑫
- وَبَيْنَ شُهُودًا ⑬
- وَمَهْدَتُّ لَهُ تَهْمِينًا ⑭
- لَهُ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ⑮
- كَلَّا إِنَّكَ كَأَنَّ لِبَآئِنَا عَيْنًا ⑯

¹ यानी मूर्तियों की पूजा (इबादत) छोड़ दे, यह हकीकत में लोगों को आप के माध्यम (जरिया) से हुबम दिया जा रहा है ।

² यह शब्द चेतावनी (अलफ़ाज तम्बीह) और धमकी के लिए है कि उसे जिसे मैंने माँ के पेट से अकेला पैदा किया, उस के पास माल था न औलाद, और मुझे अकेला छोड़ दो, यानी मैं खुद ही उस से निपट लूंगा । कहते हैं कि यह वलीद पुत्र मुगीरा की तरफ इशारा है, यह कुफ़्र और फ़साद में बहुत बड़ा हुआ था, इसलिए खास तौर से उसकी चर्चा की है ।

³ यह كَلَّا की वजह है । عَيْنًا उस इंसान को कहते हैं जो सच को जानते हुए उसका विरोध (मुखालफ़त) करे और उसका खण्डन (तरदीद) करे ।

१७. जल्द ही मैं उसे एक कठिन चढ़ाई चढ़ाऊँगा ।
१८. उस ने सोच करके अंदाजा किया ।
१९. उस का नाश हो! उस ने कैसे अंदाजा किया?
२०. वह फिर नष्ट हो! किस तरह अंदाजा किया?¹
२१. उस ने फिर देखा ।
२२. फिर मुँह सिकोड़ लिया और मुँह बना लिया ।
२३. फिर पीछे हट गया और गर्ब (घमंड) किया ।
२४. और कहने लगा कि यह तो सिर्फ जादू है जो नक़ल किया जाता है ।
२५. (यह) इंसान के क़ौल के अलावा कुछ भी नहीं ।
२६. मैं जल्द ही उसे नरक में डालूँगा ।
२७. और तुझे क्या पता ² कि नरक (जहन्नम) क्या चीज़ है?
२८. न वह बाक़ी रखती है और न छोड़ती है ।
२९. खाल को झुलसा देती है ।
३०. और उस पर उन्नीस (फरिश्ते तैनात) हैं ।

سَارِقَهُ صَعُودًا ①

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ②

فَقَتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ③

ثُمَّ قَتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ④

ثُمَّ نَظَرَ ⑤

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ⑥

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ⑦

فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّؤْتَرٌ ⑧

إِنَّ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ⑨

سَأَصْلِبُوهَ سَقَرًا ⑩

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرٌ ⑪

لَا تُبْقِي وَلَا تَذَرُ ⑫

لَوَا حَاةٌ لِلْبَشَرِ ⑬

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ⑭

¹ यह उस के बारे में बहुआ (अभिघाप) के लफ़्ज़ हैं कि नाश हो, मारा जाये, क्या बात उस ने सोची है?

² नरक के नामों और दर्जों में से एक का नाम "सक़र" भी है ।

३१. और हम ने नरक के रक्षक (निगरा) केवल फरिश्ते रखे हैं, और हम ने उनकी तादाद केवल काफिरों की परीक्षा के लिए निर्धारित (मुकरर) कर रखी है^१ ताकि अहले किताब यकीन कर लें और ईमान वाले ईमान में बढ़ जायें और अहले किताब और मुसलमान शक न करें, और जिन के दिल में रोग है वे और काफिर कहें कि इस मिसाल से अल्लाह तआला का क्या मुराद है?^२ इसी तरह अल्लाह तआला जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है और तेरे रब की सेनाओं को उस के सिवाय कोई नहीं जानता,^३ यह सारे इंसानों के लिए (सरासर) नसीहत (और भलाई) है।

३२. हरगिज नहीं!^४ चांद की क्रसम।

३३. और रात की जब वह पीछे हटे।

३४. और सुबह की जब वह रौशन हो जाये।

وَمَا جَعَلْنَا نَجْمَ الْوَجْدِ إِلَّا مَوَازِينًا
عَدَّاهُمْ إِلَّا قِيسَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۗ لَيْسَتِيقِينَ
الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزَادُ الَّذِينَ آمَنُوا
إِيمَانًا وَلَا يَزَادُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ
وَالْمُؤْمِنُونَ ۗ وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمْ
قُرْآنٌ مَّكْرُومٌ ۗ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا
مَثَلًا ۗ لَكِنَّا نَبِيضُ اللَّهُ مِنْ يَشَاءَ وَنَهْدِي
مَنْ يَشَاءُ ۗ وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ
وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلنَّاسِ ﴿٣١﴾

كَلَّا وَالْقَمَرِ ﴿٣٢﴾

وَاللَّيْلِ إِذَا أَدْبَرَ ﴿٣٣﴾

وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ﴿٣٤﴾

^१ यह कुरैश के मूर्तिपूजकों व खंडन (तरदीद) है, जब नरक के अधिकारियों (निगरा) की अल्लाह ने चर्चा की तो अबूजहल ने कुरैश के समूह को मुखातिब करते हुए कहा कि तुम मे हर दस इंसानों का गिरोह एक-एक फरिश्ते के लिए काफी नहीं होगा। कुछ कहते हैं कि किलदा नाम के इंसान ने जिसे अपने बल पर बड़ा घमन्ड था, कहा कि तुम सभी सिर्फ दो फरिश्ते संभाल लेना, १७ फरिश्तों को तो मैं अकेला ही देख लूंगा। कहते हैं कि उसी ने रसूलुल्लाह ﷺ को कुशती की भी कई बार चुनौती दी और हर बार हारा लेकिन ईमान नहीं लाया।

^२ दिल के रोगी से मुराद मुनाफिक (अवसरवादी) है या फिर वह है जिन के दिलों में शक था, क्योंकि मक्का में मुनाफिक नहीं थे यानी यह पूछेंगे कि उनकी तादाद को यहाँ चर्चा करने में अल्लाह की क्या हिबमत है ?

^३ यानी यह काफिर और मुश्रिक समझते हैं कि नरक में १९ फरिश्ते ही तो हैं, जिन पर कबू पाना कौन सा बड़ा काम है? लेकिन उनको पता नहीं कि रब की सेना तो इतनी है जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई जानता ही नहीं, केवल फरिश्ते ही इतनी तादाद में हैं कि ७० हजार फरिश्ते रोजाना अल्लाह की उपासना (इबादत) के लिए "वैतुल मामूर" में दाखिल होते हैं, फिर क्रयामत तक उन की वारी नहीं आयेगी। (सहीह बुखारी और मुस्लिम)

^४ ۞ यह मक्कावासियों के गुमान का इकार है, यानी जो वह यह समझते हैं कि हम फरिश्तों को हरा देंगे, कभी ऐसा न होगा, कमम है चांद की और रात की जब वह पीछे हटे यानी जाने लगे।

३५. कि (बेशक वह जहन्नम) बड़ी चीजों में से एक है।

إِنَّهَا لِأَحَدَى الْكَبِيرِ ﴿٣٥﴾

३६. इंसान को उराने वाली।

نَذِيرًا لِلْبَشِيرِ ﴿٣٦﴾

३७. उन इंसान के लिए जो तुम में से आगे बढ़ना चाहे या पीछे हटना चाहे।

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ﴿٣٧﴾

३८. हर इंसान अपने अमलों के बदले गिरवी है।

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَوِيَّةٌ ﴿٣٨﴾

३९. लेकिन दायें हाथ वाले।

إِلَّا أَصْحَابَ الْمِيَمِينِ ﴿٣٩﴾

४०. (कि) व जन्नतों में (वैठे हुए) सवाल करते होंगे।

فِي جَنَّتٍ مَّا يَكْتَسِبُونَ ﴿٤٠﴾

४१. पापियों (मुजरिमों) से।

عَنِ الْمُجْرِمِينَ ﴿٤١﴾

४२. तुम्हें जहन्नम में किस बात ने डाला।

مَا سَأَلَكُمْ فِي سَقَرٍ ﴿٤٢﴾

४३. वे जवाब देंगे कि हम नमाजी न थे।

قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمَصَلِينَ ﴿٤٣﴾

४४. न भूखों को खाना खिलाते थे।

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمُسْكِينِ ﴿٤٤﴾

४५. और हम बेकार बात (इंकार) करने वालों के साथ बेकार बात में व्यस्त (मशगूल) रहा करते थे।

وَكُنَّا تَخَوَّضُ مَعَ الْغَائِضِينَ ﴿٤٥﴾

४६. और हम बदले के दिन को झुठलाते थे।

وَكُنَّا نَكْذِبُ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٤٦﴾

¹ गिरवी रखने को कहते हैं, यानी हर इंसान अपने अमल का गिरवी है, वह अमल उसे अजाब से आजाद करा लेगा (अगर नेक होगा) या नष्ट (हलाक) कर देगा। (अगर बुरा होगा)

² नमाज अल्लाह के हक में से है और गरीबों का खिलाना बंदों के हक में से है। मतलब यह हुआ कि हम ने अल्लाह के हक पूरे किये न बंदों के।

४७. यहाँ तक कि हमारी मौत आ गयी !

حَتَّىٰ آتَيْنَا الْيَقِينَ ﴿٤٧﴾

४८. तो उन्हें सिफारिश करने वालों की सिफारिश फायदेदा देने वाली न होगी !^१

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ﴿٤٨﴾

४९. उन्हें क्या हो गया है कि वे नसीहत से मुह मोड़ रहे हैं?

فَمَا لَهُمْ عَنِ النَّذِيرَةِ مُعْرِضِينَ ﴿٤٩﴾

५०. जैसे कि वे भड़के हुए गधे हैं ।

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَفِئِرَةٌ ﴿٥٠﴾

५१. जो घेर से भागे हों ।

فَوَّتَّ مِنْ قَسْوَرَةٍ ﴿٥١﴾

५२. बल्कि उन में से हर इंसान चाहता है कि उसे स्पष्ट (वाजेह) किताबें दी जायें ।

بَلْ يُرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُؤْتَىٰ صُحُفًا مُّنَشَّرًا ﴿٥٢﴾

५३. कभी ऐसा नहीं (हो सकता), बल्कि ये क्रयामत (प्रलय) से बेखौफ हैं ।

كَلَّا بَلْ لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ﴿٥٣﴾

५४. कभी नहीं! यह (कुरआन) एक नसीहत है ।

كَلَّا إِنَّهُ تَذَكُّرٌ ﴿٥٤﴾

५५. अब जो चाहे उससे नसीहत हासिल करे ।

فَمَنْ شَاءَ ذَكُرًا ﴿٥٥﴾

५६. और वे उस समय नसीहत हासिल करेंगे, जब अल्लाह तआला चाहे, वह इसी लायक है कि उससे डरें और इस लायक भी कि वह माफ करे ।

وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۗ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْبَغْفَةِ ﴿٥٦﴾

^१ यानी (निश्चित) का मायने मौत है, जैसे अल्लाह ने दूसरी जगह पर फरमाया :

(وَأَعِدُّرْكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ)

«अपने रव की इबादत मौत के आने तक करते रहो !» (अल-हिज्र : ९९)

^२ यानी जो उपरोक्त (मजकूरा) बुराईयों में मस्त होगा उसे किसी की सिफारिश भी फायदेदा नहीं पहुँचायेगी, क्योंकि वह कुफ्र की वजह से सिफारिश के हकदार नहीं होंगे, सिफारिश तो सिर्फ उन के लिए फायदेमद होगी जो ईमान की वजह से सिफारिश के हकदार होंगे, अल्लाह की तरफ से सिफारिश की इजाजत भी उन्हीं के लिए मिलेगी न कि हर एक के लिए ।

सुरतुल क़ियामः-७५

सूरः क़ियामः मक्का में नाज़िल हुई और इस में चालीस आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. मैं क़सम खाता हूँ क़यामत (प्रलय) के दिन की।^१

२. और क़सम खाता हूँ उस मन की जो धिक्कार (निन्दा) करने वाला हो।

३. क्या इंसान यह ख़याल करता है कि हम उसकी हड्डियाँ जमा करेंगे ही नहीं।^२

४. हाँ जरूर करेंगे, हम को सामर्थ्य (कुदरत) है कि हम उसकी पोर-पोर को ठीक कर दें।

५. बल्कि इंसान तो चाहता है कि आगे-आगे नाफ़रमानी (और अवहेलना) करता जाये।

६. पूछता है कि क़यामत (प्रलय) का दिन कब आयेगा।

७. तो जिस समय आखे पत्थर जायेंगी।

سُورَةُ الْقِيَامَةِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا أُقْسِمُ بِبَدْرِ الْقِيَامَةِ ①

وَلَا أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ النَّوَامَةِ ②

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ نَجْعَلَ عِظَامَهُ ③

بَلَىٰ قَدِيرِينَ عَلَيَّ أَنْ نَسْوَىٰ بَنَاتِهِ ④

بَلَىٰ يَرِيئُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهُ ⑤

يَسْتَأْذِنُ بَلَىٰ إِنْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ⑥

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ⑦

^१ 'لَا أُقْسِمُ' में 'ي' ज्यादा है जो अरबी की एक भाषा-बैली (अंदाज़) है जैसे (مَا تَقُولُ الْأَنْجِدُ) (अल-आर्राफ़-१२) और (يَوْمَ يَنْفَعُ الْغُنَّابُ) (अल-हदीद-२९) और दूसरी बहुत सी जगह पर है। कुछ कहते हैं कि क़सम से पहले काफ़िरों की बात का इंकार है, वे कहते थे कि मौत के बाद कोई जीवन नहीं। 'ي' के द्वारा (जरिये) कहा गया कि जैसे तुम कहते हो बात ऐसी नहीं मैं क़यामत के दिन की क़सम खाता हूँ, क़यामत (प्रलय) के दिन की क़सम खाने से मक़सद उस के महत्व (अहमियत) और गंभीरता (संजीदगी) को स्पष्ट (वाज़ेह) करना है।

^२ यह क़सम का जबाब है। इंसान से मुराद यहाँ काफ़िर और नास्तिक इंसान है जो क़यामत (प्रलय) को नहीं मानता, उसकी सौंच ग़लत है। अल्लाह तआला यकीनी तौर पर इंसानों के अंच (अंग) को जमा करेगा, यहाँ हड्डियों की ख़ास तौर से चर्चा है इसलिए कि हड्डियाँ ही पैदाईश का असल ढाँचा और क़ालिब (फर्मा) हैं।

८. और चाँद प्रकाशहीन (बेनूर) हो जायेगा !^१

وَحَسَفَ الْقَمَرُ ⑧

९. और सूरज और चाँद इकट्ठा कर दिये जायेंगे !^२

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ⑨

१०. उस दिन इंसान कहेगा कि आज भागने की जगह कहाँ है?

يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفْزُ ⑩

११. नहीं-नहीं, कोई पनाह की जगह नहीं !

كَلَّا لَا وَزَرَ ⑪

१२. आज तो तेरे रब की तरफ ही ठिकाना है !

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ⑫

१३. आज इंसान को उसके आगे भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए से अवगत (खबर) कराया जायेगा !

يُنَبِّئُ الْإِنْسَانَ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ⑬

१४. बल्कि इंसान खुद अपने आप पर हुज्जत है !^३

بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ⑭

१५. यद्यपि (अगरचे) कितने ही बहाने पेश करे !

وَلَوْ أَنفَىٰ مَعَاذِيرُهُ ⑮

१६. (हे नबी) आप कुरआन को जल्दी (याद करने) के लिए अपनी जुबान को न हिलायें !^४

لَا تُخَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَتَّجَلَ بِهِ ⑯

१७. उसको जमा करना और (आप के मुँह से) पढ़ाना हमारा फर्ज है !^५

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ⑰

- जब चाँद को गहन लगता है तो उस समय भी वह बेनूर हो जाता है, लेकिन यह चाँद गहन जो क्रियामत की निशानियों में से है जब होगा तो उस के बाद उस में प्रकाश (नूर) नहीं आयेगा ।
- यानी बेनूर होने से मुराद है कि चाँद की तरह सूरज का भी नूर खत्म हो जायेगा ।
- यानी उस के अपने हाथ, पाँव, जुबान और दूसरे अंग गवाही देंगे, यानी यह मायने है कि इंसान अपनी बुराई खुद जानता है ।
- हजरत जिवील जब बहयी (प्रकाशना) लेकर आते तो नबी ﷺ भी उन के साथ जल्दी से पढ़ते जाते कि कहीं कोई शब्द भूल न जायें ! अल्लाह ने आप को फरिश्तों के साथ-साथ इस तरह पढ़ने से रोक दिया । (सहीह बुखारी, तफसीर सूरतूल क्रियामः)
- यानी आप के सीने में उस को जमा कर देना और आप की जुबान पर इसे जारी कर देना हमारी जिम्मेदारी है, ताकि उसका कोई हिस्सा आप के याद से न निकले और आप को न भूले ।

१८. (इसलिए) हम जब उसे पढ़ लें, तो आप उस के पढ़ने का अनुकरण (इत्तेबा) करें।

فَإِذَا قَرَأْتَهُ فَاسْتَمِعْ قُرْآنَهُ ﴿١٨﴾

१९. फिर उसको स्पष्ट (वाजेह) कर देना हमारा काम है।

ثُمَّ إِنِّ عَلَيْنَا بَيَانُهُ ﴿١٩﴾

२०. नहीं-नहीं, तुम तो जल्द हासिल होने वाली (दुनिया) से मुहब्बत रखते हो।

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾

२१. और परलोक (आखिरत) को छोड़ बैठे हो।

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ﴿٢١﴾

२२. उस दिन बहुत से मुंह ताजा (और रौशन) होंगे।

وَجُودٌ يُؤْمِنِينَ تَاصِرَةً ﴿٢٢﴾

२३. अपने रव की तरफ देखते होंगे।^१

إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾

२४. और कितने मुंह उस दिन (बद्सूरत और) उदास होंगे।^२

وَوُجُودٌ يُؤْمِنِينَ بَاسِرَةً ﴿٢٤﴾

२५. समझते होंगे कि उन के साथ कमर तोड़ देने वाला सुलूक किया जायेगा।

تَنْظُنُّ أَنْ يُفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾

२६. नहीं-नहीं जब (जान) हंसुली तक पहुँच जायेंगे।^३

كَلَّا إِذَا بَلَغَتِ النَّارَ ﴿٢٦﴾

^१ यानी उस के मुश्किल जगहों की तफसीर (व्याख्या), हलाल और हराम का स्पष्टीकरण (वजाहत) हमारी जिम्मेदारी है, इसका वाजेह मायने यह है कि नबी ﷺ ने कुरआन के संक्षेपों (इख्तसार) का जो बयान, मुहमों (गुदों) की तफसीर और उस के आम विषयों की जो खुसूसियत बताई है, जिसे हदीस कहा जाता है, यह भी अल्लाह की तरफ से बहयी और सुझाई बातें हैं इसलिए उन्हें भी कुरआन की तरह मानना जरूरी है।

^२ यह इंसानवालों के चेहरे होंगे जो अपने अच्छे नतीजे की वजह से शान्त, खुश और रौशन होंगे, फिर अल्लाह की जियारत से भी खुश होंगे, जैसाकि सहीह हदीसों से साफ है और अहले सुन्नत का अकीदा है।

^३ यह काफ़िरो के चेहरे होंगे। *बासिर* बदले हुए, पीले, गम और फिक्र से काले और बद्सूरत होंगे।

^४ *नार* यह *नूरु* का बहुवचन (जमा) है, यह गरदन के करीब सीने और कंधे के बीच एक हड्डी है यानी जब मौत का पंजा तुम्हें अपनी जकड़ में ले लेगा।

२७. और कहा जायेगा कि कोई झाड़-फूंक करने वाला है ।

وَقِيلَ مَنْ مَسْرُوقٍ ﴿٢٧﴾

२८. और उसने यक्रीन कर लिया कि यह जुदाई का समय है ।

وَلَقَدْ آتَاهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾

२९. और पिंडली से पिंडली लिपट जायेगी ।^१

وَالْتَقَّتْ السَّائِي بِالسَّائِي ﴿٢٩﴾

३०. आज तेरे रब की तरफ चलना है ।

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَافِرُ ﴿٣٠﴾

३१. तो उस ने न तो पुष्टि (तसदीक) की न नमाज पढ़ी ।^२

فَلَا صَدَقَ وَلَا وُضِعَ ﴿٣١﴾

३२. बल्लिक झूठलाया और पलट गया ।

وَلَكِنَّ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ﴿٣٢﴾

३३. फिर अपने घरवालों की तरफ इतराता हुआ गया ।^३

ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَمْتَسِلُ ﴿٣٣﴾

३४. अफसोस है तुझ पर, पछतावा है तुझ पर।

أَوَّلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿٣٤﴾

३५. फिर दुख है और खराबी है तेरे लिए ।

ثُمَّ أَوَّلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ﴿٣٥﴾

३६. क्या इंसान यह समझता है कि उसे बेकार छोड़ दिया जायेगा ।

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾

३७. क्या वह एक गाढ़े पानी की बूंद न था, जो टपकाया जाता है?

أَلَمْ يَكُنْ لَكُمْ نُطْفَةٌ مِّنْ مَّنِيٍّ يُنْفَىٰ ﴿٣٧﴾

३८. फिर वह खून का लोथड़ा हो गया, फिर (अल्लाह ने) उसे पैदा किया और ठीक रूप से बना दिया ।^४

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ فَخَالِقٍ سَوْىٰ ﴿٣٨﴾

^१ इस से या तो मौत के वक़्त पिंडली का पिंडली से मिल जाना मुराद है या लगातार दुख । आम मुफ़सिरो (भाष्यकारों) ने दूसरा मायने लिया है । (फ़तहल क़दीर)

^२ यानी इस इंसान ने अल्लाह, रसूल और क़ुरआन को न माना और न नमाज पढ़ी, यानी अल्लाह की इबादत नहीं की ।

^३ इतराता और अकड़ता हुआ ।

^४ نُزِيَ यानी उसे ठीक-ठाक किया, उसको पूरा किया और उस में रूह फूँकी ।

३९. फिर उस से जोड़े यानी नर-मादा बनाये ।

فَجَعَلَ مِنْهُ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ﴿٣٩﴾

४०. क्या (अल्लाह तआला) इस (बात) पर कादिर नहीं कि मुर्दा को ज़िन्दा कर दे ।^१

أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ﴿٤٠﴾

सूरतुल इंसान-७६

سُورَةُ الْإِنْسَانِ

सूर: इंसान* मदीने में नाज़िल हुई और इस में इक्तीस आयतें और दो रूकूअ है ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

१. यकीनन ही इंसान पर जमाने का एक वह वक़्त भी गुज़र चुका है जबकि वह कोई बयान करने लायक चीज़ न था ।

هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ

شَيْئًا مَّذْكُورًا ﴿١﴾

२. बेशक हम ने इंसान को मिले जुले वीर्य (नुत्फ़े) से इम्तेहान के लिए पैदा किया, और उस को सुनने वाला देखने वाला बनाया ।

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ ۚ نَّبْتَلِيهِ

فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ﴿٢﴾

३. हम ने उसे रास्ता दिखाया, अब चाहे वह शुक्रगुज़ार बने या नाशुक्रा !^२

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ ۖ إِنَّمَا شَاكَرًا وَإِنَّمَا كَفُورًا ﴿٣﴾

४. बेशक हम ने काफ़िरो के लिए जज़ीरें और तौक़ और भड़कनी आग तैयार कर रखी है ।

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَاقًا

وَسَعِيرًا ﴿٤﴾

^१ यानी जो अल्लाह इंसानों को इस तरह कई हालतों से गुज़ार कर पैदा करता है क्या मरने के बाद उन्हें दोबारा ज़िन्दा करने पर समर्थ (कादिर) नहीं है ?

^{*} इस के मक्की और मदीनी होने में मतभेद (इख़िलाफ़) है । आम आलिम (विद्वान) इसे मदीनी मानते हैं, कुछ कहते हैं कि आख़िरी दस आयतें मक्की हैं बाकी मदीनी है । (फ़तहल क़दीर) रसूलुल्लाह ﷺ जुमअ: के दिन फ़ज़ की नमाज़ में: ألم تَرَىٰ السُّجْدَ: (अलिफ़ • लाम • मीम तंजीलुस सज्दा) और सूरह इंसान (दहर) पढ़ा करते थे । (सहीह मुस्लिम, किताबुल जुमुअ:) इस सूर: को सूर: दहर भी कहा जाता है ।

^२ यानी ऊपर बयान की गई ताक़तों और सलाहियतों के अलावा हम ने खुद भी अम्बिया अलैहिमुससलाम, अपनी किताबों और सच का प्रचार (तब्लीग़) करने वालों के जरिये सच्चाई के रास्ते को साफ़ कर दिया है, अब यह उसकी पसन्द है कि अल्लाह के हुक्म की पैरवी करके शुक्रगुज़ार बन्दा बन जाये या नाफ़रमानी का रास्ता अपनाकर नाशुक्रा बन जाये ।

५. बेशक सदाचारी (नेक) लोग उस प्याले से पियेंगे जिस में काफूर की मिलावट है।

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا
كَافُورًا ۝۵

६. जो एक स्रोत (चश्मा) है, जिस से अल्लाह के बंदे पियेंगे, उसकी नहरें निकाल ले जायेंगे (जिधर चाहेंगे)

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا
تَفْجِيرًا ۝۶

७. जो मन्नत पूरी करते हैं^१ और उस दिन से डरते हैं जिसकी वुराई चारों तरफ फैल जाने वाली है।

يُؤْفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ
مُسْتَوْتِرًا ۝۷

८. और अल्लाह (तआला) की सुहब्बत में खाना खिलाते हैं, गरीब, यतीम (अनाथ) और कैदियों को।

وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ مِسْكِينًا
وَآسِيرًا ۝۸

९. हम तो तुम्हें केवल अल्लाह (तआला) की खुशी के लिए खिलाते हैं, तुम से बदला चाहते हैं न झुक्रिया।

إِنَّمَا نَطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً
وَلَا شُكُورًا ۝۹

१०. बेशक हम अपने रब से उस दिन का डर रखते हैं जो तंगी और कठोरता (सख्ती) वाला होगा।

إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَطَطًا ۝۱०

११. तो उन्हें अल्लाह तआला ने उस दिन की वुराई से बचा लिया और उन्हें ताजगी और खुशी पहुँचायी।^२

فَوَقَّهْمُ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ وَلَهُمْ نَصْرَةٌ
وَسُورًا ۝۱१

^१ यानी सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करते हैं, मन्नत भी मानते हैं तो सिर्फ अल्लाह के लिए, और फिर उसे पूरी करते हैं, इस से मालूम हुआ कि मन्नत पूरी करना भी जरूरी है, शर्त यह है कि नाफरमानी की न हो। जैसाकि हदीस में है कि जिस ने मन्नत मानी हो कि वह अल्लाह का आज्ञापालन (इताअत) करेगा तो उसका पालन करे और जिस ने अल्लाह की नाफरमानी की मन्नत मानी हो तो वह अल्लाह की नाफरमानी न करे यानी उसे पूरी न करे। (सहीह बुखारी, किताबुल ऐमान, बाबुन नज्जे फित ताअते)

^२ ताजगी चेहरों पर होगी और खुशी दिलों में, जब इंसान का दिल खुश होता है तो उस का चेहरा भी खुशी से खिल जाता है। नबी ﷺ के बारे में आता है कि जब आप ﷺ खुश होते तो आप का चेहरा ऐसे रौशन होता मानो चांद का टुकड़ा है। (अलबुखारी, किताबुल मगाजी)

१२. और उन्हें उन के सब्र के बदले' जन्नत और रेचमी कपड़ा अता किये ।

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ۝۱۲

१३. ये वहाँ तरुतों (आसनों) पर तकिये लगाये हुए बैठेंगे, न वहाँ सूरज की गर्मी देखेंगे न जाड़े की कठोरता ।^१

مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمْهَرِيرًا ۝۱۳

१४. और उन (स्वर्ग) के साये उन पर झुके होंगे और उन के (मेवे) और गुच्छे नीचे लटकाये हुए होंगे ।

وَدَائِبَةٍ عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذُلَّتْ أَطْوْفُهَا تَذَلِيلًا ۝۱۴

१५. और उन पर चांदी के बर्तनों और उन गिलासों का दौर चलाया जायेगा जो शीशे के होंगे ।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِآنِيَةٍ مِنْ فِضَّةٍ وَأَلْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا ۝۱۵

१६. शीशे भी चांदी के जिन को (पिलाने वालों ने) अंदाजा से नाप रखा होगा ।

قَوَارِيرًا مِنْ فِضَّةٍ قَدَرُوهَا تَقْدِيرًا ۝۱۶

१७. और उन्हें वहाँ वे पेय पदार्थ (मशरूब) पिलाये जायेंगे जिन में सोंठ की मिलावट होगी।^२

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَلَسًا كَانَ مَرًّا جَهًا زَنْجَبِيلًا ۝۱۷

१८. जन्नत की एक नहर से, जिसका नाम सलसबील है ।

عَيْنًا فِيهَا تُسْقَى سَلْسَبِيلًا ۝۱۸

१९. और उन के चारों तरफ़ वे कम उम्र बच्चे घूमते-फिरते होंगे जो हमेशा रहने वाले हैं, जब तू उन्हें देखे तो समझे कि वे बिखरे हुए (सच्चे) मोती हैं ।

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُخَلَّدُونَ ۝۱۹

إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَنثورًا ۝۱۹

^१ सब्र का मतलब है दीन के रास्ते में जो तकलीफ़ आयें उन्हें खुशी-खुशी सहन करना, अल्लाह के रास्तों में मनोक़ाक्षा (तमन्ना) और गर्ज़ का छोड़कर और नाफरमानी से बचना ।

^२ زَمْهَرِيرٌ कड़े जाड़े को कहते हैं, मुराद यह है कि वहाँ सदा एक ही ऋतु (मौसम) रहेगी, और वह है बसन्त ऋतु, न बहुत गर्मी न बहुत कड़ी सर्दी ।

^३ زَنْجَبِيلٌ (सोंठ, सूखी अदरक) को कहते हैं । यह गर्म होती है, इस की मिलावट से एक मजबूत कडुवापन आ जाता है, इस के सिवा यह अरबों की पसंदीदा चीज़ है, इसलिए उनके कहने में भी अदरक की मिलावट होती है । मतलब है कि जन्नत में एक मदिरा वह होगी जो ठंडी होगी जिस में कपूर मिला होगा और दूसरी गर्म जिस में सूखी अदरक की मिलावट होगी ।

२०. और तू वहाँ जिस तरफ भी नजर डालेगा पूरी नेमत और अजीम मुल्क ही देखेगा ।

وَإِذَا رَأَيْتَ نَجْمًا رَآيَتْ نَجْمًا وَمَلَأُ كَيْدًا ۝٢٠

२१. उन के (शरीर) पर हरे महीन और मोटे रेशमी कपड़े होंगे^१ और उन्हें चाँदी के कंगन का गहना पहनाया जायेगा और उन्हें उन का रव पाक और साफ शराब पिलायेगा ।

عَلَيْهِمْ فِيكَ سُدُنٌ حُضْرٌ وَإِسْتَبْرَقٌ ۖ
وَحُلُوفٌ أَسْوَدٌ مِنْ فِضَّةٍ وَسَقَمَهُمْ رُبُّهُمْ
شَرَابًا طَهُورًا ۝٢١

२२. (कहा जायेगा) कि यह है तुम्हारे अमलों का बदला और तुम्हारी कोशिश की तारीफ की गई ।

إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيَكُمْ
شُكُورًا ۝٢٢

२३. वेशक हम ने तुझ पर धीरे-धीरे कुरआन नाज़िल किया है ।^२

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ۝٢٣

२४. तो तू अपने रव के हुक्म पर अटल रह और उन में से किसी पापी या नाशुके का कहना न मान ।^३

فَأصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ آوًا
أَوْ كُفُورًا ۝٢٤

२५. और अपने रव के नाम का सुबह और शाम वर्णन (ज़िक्र) किया कर ।^४

وَاذْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝٢٥

२६. और रात के समय उस के सामने सज्दे कर और बहुत रात तक उसकी महिमागान (तस्बीह) किया कर ।^५

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيلًا ۝٢٦

^१ (सुन्दुस) महीन रेशमी कपड़े और (इस्तब्रक) मोटा रेशम ।

^२ यानी एक ही बार न उतार कर जरूरत के ऐतवार से कई समयों में उतारा । इसका दूसरा मायने यह भी हो सकता है कि यह कुरआन हम ने उतारा है, यह तेरा अपना गढ़ा हुआ नहीं है, जैसाकि मुशरिकीन दावा करते हैं ।

^३ यानी अगर यह तुझे अल्लाह के नाज़िल किये अहकाम से रोके तो उनका कहना न मान, बल्कि धर्मप्रचार (दीन की तबलीग) और शिक्षा-दीक्षा (वाज़-नसीहत) का काम जारी रख और अल्लाह पर भरोसा रख वह लोगों से तेरी हिफाज़त करेगा ।

^४ सुबह और शाम से मुराद है, हर समय में अल्लाह का स्मरण (ज़िक्र) कर, या सुबह से मुराद फज़ की नमाज़ और शाम से अन्न की नमाज़ है ।

^५ 'रात में सज्दा कर' से मुराद कुछ ने मगरिव और इश्रा की नमाज़ें ली हैं और (तस्बीह) का मायने है कि जो बातें अल्लाह के लायक नहीं उन से उसकी पाकी बयान कर । कुछ ने इस से रात की नफिल नमाज़ तहज्जुद लिया है । امر (अहकाम) यहाँ अच्छाई और बेहतर के लिए है ।

२७. बेशक ये लोग जल्द मिलने वाली (दुनिया) को चाहते हैं और अपने पीछे एक बड़े भारी दिन को छोड़ देते हैं।

२८. हम ने उन्हें पैदा किया और हम ने ही उन के जोड़ (और बंधन) मजबूत किये, और हम जब चाहें उन के बदले उन जैसे दूसरो को बदल लायें।

२९. बेशक यह तो एक नसीहत है, तो जो चाहे अपने रब का रास्ता हासिल कर ले।

३०. और तुम न चाहोगे लेकिन यह कि अल्लाह तआला ही चाहे। बेशक अल्लाह तआला जानने वाला और हिक्मत वाला है।

३१. जिसे चाहे अपनी कृपा (रहमत) में शामिल कर ले, और पापियों (जालिमों) के लिए उस ने कष्टदायी अजाब तैयार कर रखी है।

सूरतुल मुर्सलात-७७

सूर: मुर्सलात* मक्का में नाजिल हुई, इस में पचास आयतें और दो रूकूअ हैं।

إِنَّ هَؤُلَاءِ يُجِبُّونَ الْعَاقِلَةَ وَيَذُرُونَ
وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ⑲

نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ وَإِذَا شِئْنَا
بَدَلْنَا أَمْثَالَهُمْ تَبْدِيلًا ⑳

إِنَّ هِذِهِ تَذَكُّرٌ ؕ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ
سَبِيلًا ㉑

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۗ
إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ㉒

يَدْخُلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۗ وَالظَّالِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ㉓

سُورَةُ الْمُرْسَلَاتِ

1 यानी तुम में से कोई इस बात पर समर्थ (कादिर) नहीं कि वह खुद को सीधे रास्ते पर लमा ले, अपने लिए कोई फायदा हासिल कर ले। हाँ, अगर अल्लाह चाहे तो ऐसा मुमकिन है, उस के चाहे बिना तुम कुछ नहीं कर सकते। हाँ, सही इरादा पर वह बदला (प्रतिफल) जरूर देता है। «إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ وَالسَّالِكُ لِأَمْرٍ وَمَا نَوَىٰ» अमल इरादे से होते हैं, हर इंसान के लिए वह है जिस का वह इरादा करे। (सहीह बुखारी, पहली हदीस)

* यह सूरह मक्की है, जैसाकि सहीहैन (बुखारी और मुस्लिम) में रिवायत है: हजरत इब्ने मसऊद फरमाते हैं कि हम बिना की एक गुफा में थे कि आप पर सूरह मुर्सलात नाजिल हुई, आप उसे पढ़ रहे थे और मैं उसको आप से हासिल कर रहा था कि अचानक एक नाग आ गया, आप   ने फरमाया कि इसे मार दो, किन्तु वह तेजी से भाग गया। आप ने फरमाया कि तुम उस की बुराई से और वह तुम्हारी बुराई से बच गया। (बुखारी, तफसीर सूरतिल मुर्सलात, मुस्लिम, किताबु कतलिल हय्याते व ग़ौरहा) कभी-कभी रसूलुल्लाह   ने मगरिब की नमाज में भी यह सूरह पढ़ी है। (बुखारी, किताबुल अजाने, बाबुल किराअते फिल मगरिब, मुस्लिम, किताबुस सलाते, बाबुल किराअते फिस सुबहे)

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. दिल को मोहने वाली लगातार चलने वाली धीमी हवा की कसम !

२. फिर जोर से झोंका देने वालियों की कसम!

३. और (बादल को) उभार कर फैलाने वालियों की कसम !

४. फिर सच-झूठ को अलग-अलग करने वाले!

५. और बहयी (प्रकाशना) लाने वाले फरिश्तों की कसम!

६. जो (बहयी) इल्जाम उतारने या आगाह कर देने के लिए होती है।

७. बेशक जिस चीज का तुम से वादा किया जाता है वह निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से होने वाली है।^१

८. तो जब तारे प्रकाशहीन (बेनूर) कर दिये जायेंगे।

९. और जब आकाश तोड़-फोड़ दिया जायेगा।

१०. और जब पहाड़ टुकड़े-टुकड़े करके उड़ा दिये जायेंगे।^२

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

وَأَنْرَسَلْتِ عُرْفًا ①

فَالْغِصْبَتِ عَصْفًا ②

وَالنُّشْرَاتِ نَشْرًا ③

فَالْفَرْقَتِ فَرْقًا ④

فَالْمُلْقِيَتِ ذِكْرًا ⑤

عُدْرًا أَوْ نُذْرًا ⑥

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعَ ⑦

وَإِذَا النُّجُومُ طُوسَتِ ⑧

وَإِذَا السَّمَاءُ فُجِّرَتْ ⑨

وَإِذَا الْجِبَالُ سُفَّتْ ⑩

१ कसम का मतलब जिसकी कसम खाई जाये उसका महत्व (अहमियत) लोगों पर स्पष्ट (वाज़ेह) करना और उसकी सच्चाई को जाहिर करना होता है। जिसकी कसम ली जा रही है वह (या कसम का जबाब) यह है कि तुम से क़्यामत का जो वादा किया जा रहा है वह ज़रूर वाक़ेअ (घटित) होगी, यानी उस में शक करने की नहीं बल्कि उस के लिए तैयारी करने की ज़रूरत है, यह क़्यामत कब आयेंगी? आगे की आयतों में वाज़ेह किया जा रहा है।

२ यानी उन्हें धरती से उखाड़कर कण-कण (जरा-जरा) कर दिया जायेगा और धरती पूरी तरह से साफ़ और बराबर हो जायेगी।

११. और जब रसूलों को मुकर्रर वक्त पर लाया जायेगा ।
१२. किस दिन के लिए (उन्हें) ठहराया गया है?¹
१३. फ़ैसले के दिन के लिए ।
१४. और तुझे क्या मालूम कि फ़ैसले का दिन क्या है?
१५. उस दिन झुठलाने वालों के लिए खराबी है?²
१६. क्या हम ने पहले के लोगों को नष्ट नहीं किया?
१७. फिर हम उन के बाद पिछलों को लाये ।³
१८. हम पापियों (मुजरिमों) के साथ इसी तरह करते हैं ।
१९. उस दिन झुठलाने वालों के लिए हलाकत (विनाश) है ।
२०. क्या हम ने तुम्हें तुच्छ (हकीर) पानी से (नुतफे से) पैदा नहीं किया ।
२१. फिर हम ने उसे मजबूत (और सुरक्षित) जगह में रखा ।

وَإِذَا الرُّسُلُ أُوتِيَتْ ۝۱۱

لَأَيَّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ۝۱۲

يَوْمَ الْقَضِ ۝۱۳

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الْقَضِ ۝۱۴

وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۱۵

الْمُتَّبِعِ الْآخِرِينَ ۝۱۶

ثُمَّ نَتَّبِعُهُمُ الْآخِرِينَ ۝۱۷

كَذَلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝۱۸

وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۱۹

الْمَ نَخْلُقُكُمْ مِنْ مَّاءٍ مَهِينٍ ۝۲۰

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَكِينٍ ۝۲۱

¹ यह सवाल बड़ाई और ताज्जुब के लिए है, यानी कैसे महान दिन के लिए, जिसकी सक्ती और गभीरता लोगों के लिए बड़ी ताज्जुब वाली होगी, इन पैगम्बरों को जमा होने का वक्त दिया गया है ।

² यानी विनाश (हलाक) हो, कुछ कहते हैं कि **يَلَّ** जहन्नम (नरक) की एक वादी का नाम है, यह आयत इस सूरह में बार-बार दुहराई गई है, इसलिए कि हर झुठलाने वाले का गुनाह दूसरे से अलग तरह का होगा और इसी हिसाब से अजाब भी कई तरह के होंगे, इस तवाही के कई प्रकार (किस्में) हैं, जिन्हें झुठलाने वालों के लिए अलग-अलग बयान किया गया है । (फ़तहूल क़दीर)

³ यानी भक्का के काफ़िर और उन से सहमत लोग, जिन्होंने रसूलुल्लाह ﷺ को झुठलाया ।

२२. एक निर्धारित (मुकरर) समय तक ।

إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ﴿٢٢﴾

२३. फिर हम ने अंदाजा लगाया' तो हम क्या अच्छा अंदाजा लगाने वाले हैं ।

فَقَدَرْنَا لَكُمْ الْقُدْرُونَ ﴿٢٣﴾

२४. उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश (हलाकत) है ।

وَيَوْمَئِذٍ يُؤْمِنُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبُرْهَانِ ﴿٢٤﴾

२५. क्या हम ने धरती को समेटने वाली नहीं बनाया?

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ﴿٢٥﴾

२६. जिन्यों को भी और मुदों को भी ।

أَحْيَاءَ وَأَمْوَاتًا ﴿٢٦﴾

२७. और हम ने उसमें ऊंचे (और भारी) पहाड़ बना दिये और तुम्हें सींचने वाला मीठा पानी पिलाया ।

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَاهِقَاتٍ وَأَسْقَيْنَاكُمْ مَاءً قَرَاتًا ﴿٢٧﴾

२८. उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश (हलाकत) है ।

وَيَوْمَئِذٍ يُؤْمِنُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالْبُرْهَانِ ﴿٢٨﴾

२९. उस (जहन्नम) की तरफ जाओ जिसे तुम झुठलाते रहे थे ।

إِنطَلِقُوا إِلَىٰ مَا كُنتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٢٩﴾

३०. चलो तीन शाखाओं वाले साये की तरफ ।

إِنطَلِقُوا إِلَىٰ ظِلِّ ذِي كَلْبِ شُعَبٍ ﴿٣٠﴾

३१. जो हकीकत में न छाया देने वाली है और न ज्वाला (चोले) से बचा सकती है ।

لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ النَّهَبِ ﴿٣١﴾

३२. बेशक (जहन्नम) चिंगारियां फेंकती है जो महल की तरह हैं ।

رِثْمًا تَرْمِي بِشَرِّهِ كَالْقَصْرِ ﴿٣٢﴾

३३. जैसे कि वे पीले ऊंट हैं ।

كَأَنَّهُ جُمَلٌ صُفْرٌ ﴿٣٣﴾

१ यानी माँ के गर्भाशय (रिहम) में जिस्म (शरीर) की बनावट और बनावट का सहीह अंदाजा किया कि दोनों आँखों, दोनों कानों, दोनों हाथों और पाँवों के बीच कितनी दूरी रहनी चाहिए ।

२ سُرٌّ यह अَسْرٌ (पीला) का बहुवचन (जमा) है, किन्तु अरब में इसका इस्तेमाल काले के मायने में भी है । इस मायने के आधार पर मतलब यह है कि उसकी एक-एक चिंगारी इतनी बड़ी होगी जैसे महल या किला, फिर हर चिंगारी के इतने बड़े-बड़े टुकड़े हो जायेंगे जैसे ऊंट होते हैं ।

३४. उस दिन झुठलाने वालों की दुर्गति (हलाकत) है।

وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٤﴾

३५. आज (का दिन) वह दिन है कि ये बोल भी न सकेंगे।¹

هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ﴿٣٥﴾

३६. न उन्हें उन्न (बहाना) करने की इजाजत दी जायेगी।²

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَرِوْنَ ﴿٣٦﴾

३७. उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है।

وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾

३८. यह है फ़ैसले का दिन, हम ने तुम्हें और पहले के लोगों को (सब को) जमा कर लिया है।³

هَذَا يَوْمُ الْقِصْلِ جَمَعْنَكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿٣٨﴾

३९. तो अगर तुम मुझ से कोई चाल चल सकते हो तो चल लो।

فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُوا ﴿٣٩﴾

४०. दुख है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।

وَيَلَّ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٠﴾

४१. बेशक सदाचारी (मुत्तक़ी) लोग साये में होंगे और बहते हुए चरमों (स्रोतों) में।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلِّ وَعُرْوُونَ ﴿٤١﴾

४२. और उन फलों में जिनकी वे इच्छा (तमन्ना) करें।

وَأَفْوَاكِهِ وَمَا يَشْتَهُونَ ﴿٤٢﴾

¹ महशूर में काफ़िरों की अलग-अलग हालतें होंगी, एक वक़्त वह होगा जब वे वहाँ भी झूठ कोलेंगे, फिर अल्लाह तआला उन के मुँह पर मुहर लगा देगा और उनके हाथ-पांव गवाही देंगे, फिर जिस पल उनको नरक में ले जाया जा रहा होगा उस वक़्त बेचैनी और बेक्रारी की हालत में उन की जबानें सूँगी हो जायेगी। कुछ कहते हैं कि बोलेंगे तो जरूर लेकिन उन के पास कोई तर्क (दलील) नहीं होगा, मानो उन्हें बात करनी ही नहीं आती, जैसे हम दुनिया में भी ऐसे इसान के बारे में कहते हैं जिस के पास संतोपजनक (तसल्ली बख़्श) जबाब नहीं होता, वह तो हमारे आगे बोल ही नहीं सका।

² मतलब यह है कि उन के पास पेश करने के लिए कोई उचित तर्क (दलील) ही नहीं होगा जिसे वह पेश करके आज़ाद हो सकें।

³ यह अल्लाह तआला बंदों को संबोधित (मुखातिब) करेगा कि हम ने तुम्हें अपने पूरी कुबरत संफ़ैसले करने के लिए एक ही मैदान में जमा कर लिया है।

४३. (हे जन्नत वालो!) खाओ-पिओ मजे से अपने किये हुए कर्मों (अमल) के बदले।

४४. बेशक हम नेकी करने वालों को इसी तरह बदला देते हैं।¹

४५. उस दिन झुठलाने वालों के लिए दुख (खेद) है।

४६. (हे झुठलाने वालो!) तुम (दुनिया में) थोड़ा सा खा-पी लो और फायेदा उठा लो, बेशक तुम पापी हो।²

४७. उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश (हलाकत) है।

४८. उन से जब कहा जाता है कि रूकूअ कर लो तो नहीं करते।³

४९. उस दिन झुठलाने वालों का विनाश (हलाकत) है।⁴

५०. अब इस (कुरआन) के बाद किस बात पर ईमान लायेंगे?⁵

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَرَبًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٣﴾

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٤﴾

وَيَلُؤْمِئِينَ لِلْمُكذِّبِينَ ﴿٤٥﴾

كُلُوا وَكَسَبُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ فَجْرٌ مُّؤْمِنُونَ ﴿٤٦﴾

وَيَلُؤْمِئِينَ لِلْمُكذِّبِينَ ﴿٤٧﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٨﴾

وَيَلُؤْمِئِينَ لِلْمُكذِّبِينَ ﴿٤٩﴾

فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٠﴾

¹ इस में भी इस बात का प्रलोभन (तरगीब) और निर्देश (हिदायत) है कि अगर आखिरत (परलोक) में अच्छे नतीजे की इच्छा रखते हो तो दुनिया में नेकी (सत्कर्म) और भलाई का रास्ता अपनाओ।

² यह क्रयामत के झुठलाने वालों को संबोधित (मुखालिफ) किया गया है, तथा यह हुक्म धमकी और चेतावनी (तंबीह) के लिए है। अच्छा कुछ दिन मजा ले लो, तुम जैसे अपराधियों के लिए यातना (अजाब) का शिकंजा तैयार है।

³ यानी उनको नमाज पढ़ने का हुक्म दिया जाता है तो नमाज नहीं पढ़ते।

⁴ यानी उन के लिए जो अल्लाह तआला के हुक्मों, आज्ञा (इजाजत) और निषेधों (मना) को नहीं मानते।

⁵ यानी जब इस कुरआन पर यकीन नहीं करेंगे तो इस के बाद कौन सी बाणी है जिस पर ईमान लायेंगे? यहाँ भी "हदीस" कुरआन को कहा गया है।

सूरतुन नबा-७८

सूरतुन नबा* मक्का में नाज़िल हुई और इस में चालीस आयतें और दो रूक़ुअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. ये लोग किस चीज़ की पूछताछ कर रहे हैं?

२. उस बड़ी ख़बर की?

३. जिस में ये कई राय हैं।

४. यक़ीनी तौर से ये अभी जान लेंगे।

५. फिर यक़ीनी तौर से उन्हें बहुत जल्द मालूम हो जायेगा।^१

६. क्या हम ने धरती को फ़र्श नहीं बनाया।

७. और पहाड़ों को खूँटा नहीं बनाया।^२

سُورَةُ النَّبَاِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ①

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِیْمِ ②

الَّذِیْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُونَ ③

كَلَّا سَوْعَدَةٌ ④

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ⑤

اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ وَمِثْلًا ⑥

وَالْجِبَالَ اَوْتَادًا ⑦

* सूरतुन नबा : जब नबी (ﷺ) को नबूअत से सम्मानित (सरफराज़) किया गया और आप ने तौहीद और क़यामत वगैरह की चर्चा की और पाक क़लाम क़ुरआन सुनाया तो काफ़िरों और मुशरिकों ने एक-दूसरे से सवाल करना शुरू किया कि क्या यह मुमकिन है? जैसा कि यह दावा कर रहे हैं या यह क़ुरआन हकीकत में अल्लाह की तरफ से नाज़िल है, जैसा कि मोहम्मद (ﷺ) कहता है, सवाल के जरिये अल्लाह ने पहले इन चीज़ों की हकीकत उजागर की जो उनकी हैं, फिर खुद ही जवाब दिया।

^१ यह डाँट फटकार है कि जल्द ही सब कुछ मालूम हो जायेगा, आगे अल्लाह अपनी-कारीगरी और अज़ीम कुदरत की चर्चा कर रहा है। ताकि तौहीद की सच्चाई उन के आगे स्पष्ट (वाज़ेह) हो और ईशूदूत उन्हें जिस चीज़ की दावत दे रहा है उस पर यक़ीन करना उन के लिये आसान हो जाये।

^२ وَأُتَادًا यह اَوْتَادًا का बहुवचन (जमा) है! खूँटे यानी पहाड़ों को धरती के लिये खूँटे बनाये ताकि धरती कायम रहे हिले नहीं, क्योंकि हिलने-डालने की हालत में धरती रहने लायक ही नहीं होती।

८. और हम ने तुम्हें जोड़े-जोड़े पैदा किये ।^१

९. और हम ने तुम्हारी नींद को तुम्हारे आराम की वजह बनाया ।^२

१०. और रात को हम नें पर्दा बनाया ।

११. और दिन को हम ने रोजी हासिल करने का समय बनाया ।^३

१२. और तुम्हारे ऊपर हम ने सात मजबूत आसमान बनाये ।

१३. और एक चमकता हुआ रौशन चिराग पैदा किया ।

१४. और वादलों से हम ने मूसलाधार पानी बरसाया ।^४

१५. ताकि उस से अन्न और वनस्पति (नवातात) उगायें ।^५

१६. और घने बाग भी (उगायें) ।^६

وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ۝۸

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝۹

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ رِيَاسًا ۝۱۰

وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝۱۱

وَبَيَّنَّا فَوْقَكُمُ سَبْعًا سَمَاوَاتًا ۝۱۲

وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَقَاسًا ۝۱۳

وَأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ۝۱۴

لِيُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۝۱۵

وَجَنِّبَ الْغَالِقًا ۝۱۶

१ पुरूष-स्त्री, नर-मादा, यानी أزواج का मतलब किस्म और वर्ण है यानी कई रूपों और रंगों में पैदा किया, (खूबसूरत-बदसूरत), लम्बा, छोटा, गोरा, काला, आदि (वगैरह) ।

२ نَوْمُ का भायने काटना है, रात भी जीव-जन्तुओं की सारी हरकतें कम कर देती है ताकि सुकून हो जाये और वे आराम से सो सकें, या मतलब यह है कि रात तुम्हारे कर्नो (अमलों) को खत्म कर देती है, काम खत्म होने का मतलब आराम है ।

३ मतलब यह है कि दिन को प्रकाशमान (रौशन) बनाया ताकि लोग रोजी हासिल करने के लिये मेहनत कर सकें ।

४ المُرَاتُ الْمُعْصِرَاتُ वह बदलियाँ जो पानी से भरी हुई हो लेकिन अभी बरसी न हों । जैसे البرد المتصره उस औरत को कहते हैं जिसकी विलादत का वक़्त करीब हो, ثَجَّاجُ ज्यादा मूसलाधार पानी ।

५ حَبٌّ (दाना) वह अन्न जिसे खाने के लिये ढेर कर लिया जाता है, जैसे गेहूँ, चावल, जौ, मकाई वगैरह और वनस्पतियाँ, तरकारियाँ और चारे वगैरह जो जानवर खाते हैं ।

६ الْغَالِقُ शाखाओं के ज्यादा होने की वजह से एक-दूसरे से मिले पेड़ यानी घने बाग ।

१७. बेशक फ़ैसले का दिन निर्धारित (मुकरर) है।

१८. जिस दिन कि नरसिंघ (सूर) फूँका जायेगा, फिर तुम सब दल के दल बन कर आओगे।¹

१९. और आकाश खोल दिया जायेगा तो उस में दरवाज़े-दरवाज़े हो जायेंगे।

२०. और पहाड़ चलाये जायेंगे तो वे सफेद बालू हो जायेंगे।²

२१. बेशक नरक घात में है।

२२. उद्दण्डियों (सरकशों) की जगह वही है।

२३. उस में वे कई युगों (और सदियों) तक पड़े रहेंगे।³

२४. न कभी उस में ठंड का मजा चखेंगे न पानी का।

२५. सिवाय गर्म पानी और बहती हुई पीप के।

२६. (उन को) पूरी तरह से बदला मिलेगा।

२७. उन्हें तो हिसाब की उम्मीद ही न थी।

२८. वे बेबाकी से हमारी आयतों को झुठलाते थे।

إِنَّ يَوْمَ الْفُصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ﴿١٧﴾

يَوْمَ يَنْفُخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَقْبَابًا ﴿١٨﴾

وُفِّحَتِ السَّمَاوَاتُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ﴿١٩﴾

وَسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾

لِلظَّالِمِينَ مَا بَأْسًا ﴿٢٢﴾

لِيُذِيقَهُمْ فِيهَا أَحْقَابًا ﴿٢٣﴾

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾

إِلَّا حَمِيمًا وَعَسَاقًا ﴿٢٥﴾

جَزَاءً وَنِقَامًا ﴿٢٦﴾

إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾

وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كِذَابًا ﴿٢٨﴾

¹ कुछ ने इस का मायने यह बयान किया है कि हर क़ैम अपने रसूल के साथ हश्र के मैदान में आयेगी यह दूसरा नफ़खा (फूँक) होगा जिस में सब लोग कब्रों से जिन्दा होकर निकल आयेंगे।

² वह रेत जो दूर से पानी लगे, पहाड़ भी रेत के समान दूर से दिखने वाली चीज़ बनकर रह जायेंगे, और फिर बिल्कुल ख़त्म हो जायेंगे उनका निशान तक नहीं रह जायेगा।

³ बहुवचन (जमा) है حُطِّب का मतलब है युग (जमाना)। मतलब सदा और हमेशा है, वह सदा के लिये जहन्नम में रहेंगे, यह अज़ाब काफ़िरों और मुशरिकों के लिये है।

३९. हम ने हर बात को लिख कर सुरक्षित (महफूज) रखा है।

३०. अब तुम (अपने किये का) मजा चखो, हम तुम्हारा अजाब ही बढ़ाते जायेंगे।

३१. बेशक परहेजगारों के लिये कामयाबी है।

३२. वागात है और अंगूर है।

३३. और नवयुवती कुंवारी हम उम्र औरतें हैं।

३४. और छलकते हुए मदिरा के प्याले हैं।

३५. वहाँ न तो वे अश्लील (लज्ब) बातें सुनेंगे और न झूठी बातें सुनेंगे।

३६. (उनको) तेरे रब की तरफ से (उनकी नेकियों का) यह बदला मिलेगा जो काफी उपहार (इंआम) होगा।

३७. (उस) रब की तरफ से मिलेगा जो कि आकाशों का धरती का और जो कुछ उस के बीच है उनका रब है और बड़ा दयालु (रहमान) है। किसी को उस से वातचीत करने का हक नहीं होगा।

३८. जिस दिन रूह (आत्मा) और फरिश्ते सफ बांध कर खड़े होंगे, तो कोई बात न कर सकेगा, लेकिन जिसे बड़ा दयालु (रहमान) आज्ञा दे और वह ठीक बात मुँह से निकाले।

३९. यह दिन सच है, अब जो चाहे अपने रब के पास (नेक काम कर के) जगह बना ले।

وَكُلُّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ﴿٣٩﴾

فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣١﴾

حَدَائِقَ وَأَعْنَابًا ﴿٣٢﴾

وَكَوَاعِبَ أُنثَىٰ ﴿٣٣﴾

وَكَأْسًا وَمِهَاقًا ﴿٣٤﴾

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا كِدَابًا ﴿٣٥﴾

جَزَاءً مِّن رَّبِّكَ عَطَاءً حَسَبًا ﴿٣٦﴾

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمَنُ

لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْبَاطِنَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ

إِلَّا مَن أُوذِيَ لهُ الرِّحْنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَن شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ

رَبِّهِ مَأْتًا ﴿٣٩﴾

। उस आने वाले दिन को सामने रखते हुए इंसान और तक्वा का जीवन अपनाये ताकि उस दिन उसे वहाँ अच्छी जगह मिल जाये।

५०. हम ने तुम्हें करीब भविष्य (मुस्तक़बिल) में घटित (वाक़े) होने वाले अज़ाब से डरा दिया (और आगाह कर दिया) जिस दिन इंसान अपने हाथों की कमाई को देख लेगा, और काफ़िर कहेगा कि काश मैं मिट्टी बन जाता।^१

सूरतुन नाजिआत-७९

यह सूरात मक्का में नाज़िल हुई और इस में छियालीस आयतें और दो रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. डूबकर कठोरता (सख़्ती) से खीचनें वालों की क़सम।^२

२. बंधन खोल कर छुड़ाने वालों की क़सम।

३. और तैरने फिरने वालों की क़सम।^३

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ عَلَيْكَ آيَاتٍ كَرِيمًا ۖ يَوْمَ يُنظَرُ الْمَرْءُ مَا كَفَأَتْ يَدَاؤُهُ وَيَقُولُ الْكٰفِرُ يٰئِيَّتِي كُنْتُ تُرَابًا ﴿٤٠﴾

سُورَةُ النَّازِعَاتِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

وَاللّٰزِعَاتِ غَرْبًا ﴿١﴾

وَالنّٰسِطَاتِ نَسْكًَا ﴿٢﴾

وَالشّٰرِبَاتِ سِبْغًا ﴿٣﴾

^१ जब वह अपने भयानक अंजाम का अवलोकन (मुआहिदा) करेगा तो यह कामना (तमन्ना) करेगा। कुछ कहते हैं अल्लाह जानवरों के बीच भी इसाफ से फ़ैसला करेगा, यहाँ तक कि एक सींग वाली बकरी ने बिना सींग की बकरी पर कोई जुल्म किया होगा तो उस का भी बदला दिलायेगा। इस के बाद अल्लाह जानवरों को हुक्म देगा कि मिट्टी हो जाओ तो वह मिट्टी हो जायेंगे, उस समय काफ़िर भी तमन्ना करेंगे कि काश वह भी जानवर होते और आज मिट्टी बन जाते। (इब्ने कसीर)

^२ सूरतुन नाजिआत : غَرْبًا का मतलब है कड़ाई से खींचना। غَرْبًا डूब कर- यह जान निकालने वाले फ़रिश्तों का बयान है, फ़रिश्ते काफ़िरों का प्राण (रूह) बड़ी कड़ाई से निकालते हैं और शरीर में डूबकर।

^३ سِبْغًا का मतलब तैरना है। फ़रिश्ते जान निकालने के लिये इंसान के शरीर (जिस्म) में ऐसे तैरते फिरते हैं, जैसे गोताखोर मोती निकालने के लिये समुद्र की गहराईयों में तैरता है या यह मतलब है कि बहुत तेज़ गति से अल्लाह का हुक्म लेकर आकाशों से उतरते हैं, क्योंकि तेज़ रफ़्तार घोड़े को भी سِبْغًا कहते हैं।

४. फिर दौड़ कर आगे बढ़ने वालों की कसम।
५. फिर कामों का इन्तेज़ाम करने वालों की कसम।
६. जिस दिन कांपने वाली कांपेंगी।^१
७. उस के बाद एक पीछे आने वाली (पीछे-पीछे) आयेगी।^२
८. (बहुत से) दिल उस दिन धड़कते होंगे।
९. जिन के नेत्र (निगाहें) नीचे होंगे।
१०. कहते हैं कि क्या हम पहले जैसी हालत में फिर लौटाये जायेंगे?
११. क्या उस समय जब हम कमजोर हाड्डियों में हो जायेंगे।
१२. कहते हैं कि यह लौटना फिर नुकसान वाला है। (मालूम होना चाहिये)
१३. वह तो केवल एक (भयानक) फटकार है कि (जिस के पैदा होते ही)।
१४. वह फौरन मैदान में जमा हो जायेंगे।
१५. क्या मूसा (عليه السلام) की कहानी भी तुम्हें मालूम है?

- قَالَتْ يَبْئُتُ سَبَقًا ④
- قَالَمَدَّ يَبْرُتْ أَمْرًا ⑤
- يَوْمَ تَرْجَعُ الرَّاغِبَةُ ⑥
- تَتَّبِعُهَا الرَّاوِدَةُ ⑦
- قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ⑧
- أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ⑨
- يَقُولُونَ إِنَّا لَنَرُّوْ دُونَ فِي الْعَافِرَةِ ⑩
- وَإِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخْرَةً ⑪
- قَالُوا بَلْ كُنَّا إِذَا كُنَّا خَاسِرَةً ⑫
- قَاتِلَا هِيَ زَجْرًا وَوَّاحِدَةً ⑬
- فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ⑭
- هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ⑮

^१ यह पहला नफ़खा (फूंक) होगा, जिसे विनाश (फना) की फूंक कहते हैं, जिस से पूरी धरती कांपने लगेगी और हर चीज़ बरबाद हो जायेगी।

^२ यह दूसरा नफ़खा होगा, जिस से सब ज़िन्दा हो जायेंगे और कब्रों से निकल आयेंगे। यह दूसरा नफ़खा (फूंक) पहले नफ़खा के चालीस साल बाद होगा, इसे رَادَّةٌ इसलिये कहा जाता है कि यह पहली फूंक के बाद ही होगा यानी दूसरा नफ़खा पहले नफ़खे के पीछे होगा।

१६. जबकि उन के रव ने उन्हें पाक मैदान तुवा में पुकारा ।^१

إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝۱۶

१७. कि तुम फिरऔन के पास जाओ उस ने उद्दण्डता (सरकबी) अपना ली है ।

إِذْ هَبَّ إِلَى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَى ۝۱۷

१८. उस से कहो कि क्या तू अपना सुधार और शोधन (इस्लाह) चाहता है ।

فَقُلْ هَلْ لَكَ إِلَهٌ إِلَّا أَنْ تَرْجَى ۝۱۸

१९. और यह कि मैं तुझे तेरे रव का रास्ता दिखाऊँ ताकि तू (उस से) डरने लगे ।

وَأَهْدِيكَ إِلَى رَبِّكَ فَتَخْضَى ۝۱۹

२०. तो उसे बड़ी निशानी दिखायी ।

فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَى ۝۲۰

२१. तो उस ने झुठलाया और नाकरमानी की ।

فَكَذَّبَ وَعَصَى ۝۲۱

२२. फिर पलटा कोशिश करते हुए ।^२

ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَى ۝۲۲

२३. फिर सब को जमा करके ऊँची आवाज़ में पुकारा ।

وَحَشَرَ مَنَادَى ۝۲۳

२४. कहा कि तुम सब का बड़ा रव मैं ही हूँ ।

فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَى ۝۲۴

२५. तो (सब से बुलन्द और अजीम) अल्लाह ने भी उसे आखिरत और इस दुनिया के अजाबों में घेर लिया ।

فَلَحَذَرَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْأَجْدَادِ وَالْأُولَى ۝۲۵

^१ यह उस वक़्त की कहानी है जब मूसा (عليه السلام) मदन से वापसी पर आग की खोज में तूर पहाड़ पर पहुँच गये थे तो वहाँ एक पेड़ की आड़ से अल्लाह ने मूसा से बातचीत की, जैसा कि सबिस्तार (तफसील) सूरत ताहा के शुरू में गुजर। طُوًى तुवा उस जगह का नाम है, बात करने से मुराद नबूअत और रिसालत (दूतत्व) से सम्मानित (सरफराज) करना है यानी मूसा (عليه السلام) आग लेने गये और अल्लाह ने उन्हें सदेबवाहक (रसूल) मुकर्रर कर दिया, जैसे कि आगे फरमाया ।

^२ यानी उस ने ईमान और हुक्म पालन (पैरबी) से इंकार ही नहीं किया बल्कि धरती में फसाद फैलाने का और मूसा के मुकाबले की कोशिश करता रहा, और जादूगरो को जमा करके मूसा (عليه السلام) से मुकाबला कराया ताकि उन को झूठा साबित किया जा सके ।

२६. बेशक इस में उस इंसान के लिये इब्रत (नसीहत) है, जो डरे।^१

२७. क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है या आकाश का? अल्लाह तआला ने उसे बनाया।

२८. उस की ऊँचाई बढ़ायी फिर उसे ठीक-ठाक कर दिया।^२

२९. और उस की रात को अंधकारमय बनाया और उस के दिन को निकाला।

३०. और उस के बाद धरती को (बराबर) बिछा दिया।^३

३१. उस में से पानी और चारा निकाला।

३२. और पहाड़ों को (मजबूत) रूप से गाड़ दिया।

३३. ये सब तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के फायदे के लिये (हैं)।

३४. तो अब वह बड़ी मुसीबत (क्यामत) आ जायेगी।

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَن يَخْشَى ﴿٢٦﴾

ءَأَنْتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ بَدُنْهَا ﴿٢٧﴾

رَفَعْنَا سَنَكُمَا فَعَسَاوُمَا ﴿٢٨﴾

وَأَعْمَشْنَا لَيْلَهَا وَأَخْرَجْنَا ضُحَاهَا ﴿٢٩﴾

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا ﴿٣٠﴾

أَخْرَجْنَا مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ﴿٣١﴾

وَالجِبَالَ أَرْسَاهَا ﴿٣٢﴾

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَةُ الْكُبْرَى ﴿٣٤﴾

^१ इस में नबी (ﷺ) के लिये सात्वना (तसल्ली) है और मक्का के काफिरों को चेतावनी है कि अगर उन्होंने पिछले लोगों की घटनाओं (वाक़ेआत) से नसीहत हासिल न की तो उनका अंत फिरऔन की तरह हो सकता है।

^२ कुछ ने سَنَكُمَا का भावने छत भी किया है, ठीक-ठाक करने का मतलब उसे ऐसी शकल में ढालना है जिस में कोई फर्क, फटन और ऐब दाक़ी न रहे।

^३ यह हा मीम अससज्दः ९ में गुजर चुका है कि خَلَقْنَا (पैदा करना) और चीज है और نَسَى (बराबर करना) दूसरा विषय है, धरती की रचना (बनाना) आकाश से पहले हुई है, लेकिन इस को बराबर आसमान बनाने के बाद किया गया है और यहाँ इसी हकीकत का बयान है और बराबर करने और फैलाने का मतलब धरती को रहने लायक बनाने के लिये जिन चीजों की जरूरत है अल्लाह ने उनकी व्यवस्था (तदबीर) की, जैसे धरती से पानी निकाला उस में चारा और अनाज पैदा किया, पहाड़ों को कीलों की तरह मजबूत गाड़ दिया ताकि धरती न डोले जैसाकि यहाँ आगे भी यही बयान है।

३५. जिस दिन कि इंसान अपने किये हुए कर्मों (अमल) को याद करेगा।

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَى ﴿٣٥﴾

३६. और (हर) देखने वाले के सामने जहन्नम जाहिर कर दी जायेगी।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيمُ لِمَن يَأْتِي ﴿٣٦﴾

३७. तो जिस (इंसान) ने उद्वण्डता (सरकशी) अपनायी (होगी)।

فَأَمَّا مَنْ طَغَى ﴿٣٧﴾

३८. और दुनियावी जिन्दगी को बरीयता (तरजीह) दी (होगी)।

وَأَثَرَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾

३९. तो (उसका) ठिकाना जहन्नम ही है।

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَى ﴿٣٩﴾

४०. लेकिन जो इंसान अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहा होगा और अपने मन की इच्छाओं से रोका होगा।

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ﴿٤٠﴾

४१. तो उसकी जगह जन्नत ही है।

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَى ﴿٤١﴾

४२. लोग आप से क़्यामत (प्रलय) कायम होने का समय पूछते हैं।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ﴿٤٢﴾

४३. आप को उस के बयान करने से क्या सम्बन्ध (ताल्लुक)?

فِيمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرِهَا ﴿٤٣﴾

४४. उस के (इल्म का) अंत तो आप के रब की तरफ है।

إِلَىٰ رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ﴿٤٤﴾

४५. आप तो केवल उस से डरते रहने वालों को सावधान (आगाह) करने वाले हैं।

إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ مَّن يَخْشَاهَا ﴿٤٥﴾

४६. जिस दिन ये उसे देख लेंगे तो ऐसा प्रतीत (महसूस) होगा कि केवल दिन का आखिरी हिस्सा या पहला हिस्सा ही (संसार में) रहे हैं।

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبُثُوا إِلَّا عَشِيَةً أَوْ صُحُورًا ﴿٤٦﴾

1 यानी आप का काम केवल مُنذِر (डराना) है, न कि परोक्ष (गौब) की खबरें देना, जिस में क़्यामत का इल्म है जो अल्लाह ने किसी को नहीं दिया है। مِنْ يَخْشَاهَا इसलिए कहा कि तबीह (चेतावनी) और दीन की तबलीग से असली फ़ायदा उसी को मिलता है जिन के दिलों में अल्लाह का डर होता है, नहीं तो डराने और संदेश पहुँचाने का हुक्म तो हर एक के लिये है।

सूरतु अबस-८०

सूरतु अबस मक्का में नाज़िल हुई और इस में बयालिस आयतें और एक रूक़ुअ है।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. उस ने खट्टा मुंह बनाकर मुंह मंझ लिया।
२. (केवल इसलिये) कि उस के पास एक अंधा आया।^१
३. तुझे क्या पता शायद वह सुधर जाता।
४. या नसीहतें सुनता और उसे नसीहतें फ़ायेदा पहुँचाती।
५. (लेकिन) जो लापरवाही करता है।
६. उसकी तरफ़ तो तू पूरा ध्यान दे रहा है।
७. हालाँकि उसके न सुधरने से तेरी कोई हानि (नुक़सान) नहीं।^२
८. और जो इंसान तेरी तरफ़ दौड़ता हुआ आता है।

سُورَةُ عَبَسَ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

عَبَسَ وَكُؤِيَ ①

أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَى ②

وَمَا يَذُرُّكَ لَعَلَّهُ يَريُّكَ ③

أَوْ يَدَّبَّرَ تَفْتَعَهُ الدُّكُؤَى ④

أَمَّا مَنِ اسْتَعْفَى ⑤

فَأَنْتَ لَهُ كَصَدَى ⑥

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَرَى ⑦

وَأَمَّا مَنْ جَاءَكَ يَسْعَى ⑧

^१ सूरतु अबस : इस के नाज़िल होने के बारे में सभी मुफ़सि़सों का इतेफ़ाक़ है कि यह अब्दुल्लाह पुत्र उम्मे मक़तूम के बारे में उतरी। एक बार नबी (ﷺ) की खिदमत में कुरैश के प्रमुख (सरदार) लोग मौजूद बातें कर रहे थे कि अचानक इन्ने उम्मे मक़तूम जो अंधे थे हाज़िर हुए और नबी (ﷺ) से धर्म की बातें पूछने लगे, नबी (ﷺ) ने इसे बुरा माना और कुछ कम ध्यान दिया, इसलिए तंबीह के तौर पर इन अम्यतों का अवतरण (नुज़ूल) हुआ। (तिर्मिज़ी, सूरतु अबस, अलबानी ने इस हदीस को सहीह कहा है)

^२ आप को ज़्यादा ध्यान दिलाया गया कि मुछलिसों को छोड़ कर मुखालिफ़ लोगों की तरफ़ ध्यान देना सही बात नहीं है।

९. और वह डर (भी) रहा है।
 १०. तो तू उस से बेखुशी बरतता है।
 ११. यह ठीक नहीं! (कुरआन तो) शिक्षा की (चीज) है।
 १२. जो चाहे उस से शिक्षा ले।
 १३. यह तो बाइज़त सहीफो में है।
 १४. जो बुलन्द और पाक और साफ़ है।
 १५. ऐसे लिखने वालों के हाथों में है।
 १६. जो ऊँचे दर्जे के पवित्र (पाक) हैं।
 १७. अल्लाह की मार, इंसान भी कितना कृतघ्न (नाशुक्रा) है।^१
 १८. उसे किस चीज से पैदा किया।
 १९. एक वीर्य (नुतफा) से पैदा किया,^२ फिर उसको अंदाजा पर रखा।

- وَهُوَ يَخْشَى ۙ
 فَأَنْتَ عَنْهُ تَأَخَى ۙ
 كَلَّا إِنَّهَا تَأْكُرُ ۙ
 مَن شَاءَ ذَكَرْهُ ۙ
 فِي صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۙ
 رُّفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۙ
 بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۙ
 كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۙ
 قَتِيلَ الْإِنْسَانَ مَا الْقُرْءَا ۙ
 مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۙ
 مِنْ نُّطْفَةٍ مُّخَلَّقَةٍ فَقَدَرَهُ ۙ

^१ यानी ऐसे लोगों का तो सम्मान बढ़ाने की ज़रूरत है न कि उन से मुंह फेरने की। इस आयत से यह बात मालूम हुई कि आमंत्रण (दावत) और धर्म के प्रचार (तवलीया) में किसी को विशेष नहीं करना चाहिये। बल्कि अमीर-गरीब, मालिक-नौकर, नर-नारी, छोटे-बड़े को एक तरह समझा जाये और सब को एक साथ सम्बोधित (मुख़ातिब) किया जाये, अल्लाह जिसे चाहेगा अपनी हिक्मत से हिदायत से सम्मानित (सरफ़राज) करेगा।

^२ इस से वह इंसान मुराद है जो बिना दलील और सबूत के क्रयामत का इंकार करते हैं **قَوْلٍ** का मतलब **قَوْلٍ** और **قَوْلٍ** ताज्जुब के तौर पर है, कितना नाशुक्रा है, आगे इस नाशुक्रा इंसान को गौर-फिक्र करने का आमन्त्रण (दावत) दिया जा रहा है ताकि हो सकता है वह अपने कुफ़ से रुक जाये।

^३ यानी जिसकी उत्पत्ति (पैदाईश) ऐसी तुच्छ (हकीर) पानी की बूद से हुई है, क्या उसे घमंड शोभा (जीनत) देता है।

२०. फिर उस के लिये रास्ता आसान किया ।

ثُمَّ السَّيْلَ يَسْرَهُ ⑳

२१. फिर उसे मौत दी फिर कब्र में गाड़ दिया ।

ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ㉑

२२. फिर जब चाहेगा उसे जीवन प्रदान (अता) करेगा ।

ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنْشُرَهُ ㉒

२३. कभी नहीं, उस ने अब तक अल्लाह के हुक्म का पालन (पैरवी) नहीं किया ।

كَلَّا لَمَّا يُفْضِ مَا أَمَرَهُ ㉓

२४. इन्सान को चाहिए कि अपने आहार (खाने) की तरफ देख ले ।

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانَ إِلَى طَعَامِهِ ㉔

२५. कि हम ने खूब पानी बरसाया ।

أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ㉕

२६. फिर धरती को अच्छी तरह फाड़ा,

ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ㉖

२७-२८. फिर उस में अन्न उपजाये और अंगूर और तरकारी

فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ㉗ وَعَبْتًا وَمُضْبًا ㉘

२९. और जैतून और खजूर

وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ㉙

३०. और घने बाग

وَحَدَائِقَ غُلْبًا ㉚

३१. और सूखे फल और (घास) चारा भी

وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ㉛

३२. तुम्हारे प्रयोग (इस्तेमाल) और फायदे के लिये और तुम्हारे चौपाये के लिये

فَتَنَامُوا وَلَمْ تَلْمُوهَا ㉜

३३. फिर जब कान बहरे करने वाली (क्यामत)^२ आ जायेगी

وَإِذَا جَاءَتِ الصَّلَاةُ ㉝

३४. तो आदमी उस दिन भागेगा अपने भाई से

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ㉞

३५. अपनी माँ और बाप से

وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ㉟

१. वह घास चारा जो खुद उगता है जिसे पशु खाते हैं ।

२. क्यामत (प्रलय) को صَلَاةٌ बहरा करने वाली इसलिये कहा कि वह एक तेज चीख के साथ घटित (बाक) होगी जो कानों को बहरा कर देगी ।

३६. अपनी पत्नी और संतान (औलाद) से
 ३७. उन में से हर एक को उस दिन एक ऐसी
 फिक्र (गम) होगी जो उसे (मशगूल रखने को)
 काफी होगी ।
 ३८. बहुत से चेहरे उस दिन रौशन होंगे ।
 ३९. (जो) हँसते हुए खुश होंगे ।
 ४०. और बहुत से चेहरे उस दिन धूल में अटे
 होंगे ।
 ४१. उन पर कलिमा (स्याही) चढ़ी होगी ।
 ४२. वे यही काफिर दुराचारी लोग होंगे ।

सूरतुत तकवीर-८१

सूरतुत तकवीर* मक्का में नाजिल हुई और
 इस में उन्तीस आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा
 मेहरबान और रहम करने वाला है ।

وَصَاحِبَةٍ وَبَنِيهِ ﴿٣٦﴾

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ

يُقَرِّبُهُ ﴿٣٧﴾

وَوَجْهٌ يُّورِيهِ يَوْمَئِذٍ مِّنْ سُنْبُرَةٍ ﴿٣٨﴾

صَاحِبَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ﴿٣٩﴾

وَوَجْهٌ يُؤَافِيهِ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ﴿٤٠﴾

تَرْتَفِقُهَا فَكْرَةٌ ﴿٤١﴾

أُولَئِكَ هُمُ الْكُفْرَةُ الْفَجْرَةُ ﴿٤٢﴾

سُورَةُ التَّكْوِيْنِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

1 या अपने करीबी रिश्तेदारों और दोस्तों से बेनियाज और वेपरवाह कर देगा । हदीस में आता है कि नबी (ﷺ) ने फरमाया : सब लोग हज्र के मैदान में नंगे शरीर नंगे पावों पैदल और बिना खतना के होंगे हजरत आयेशा ने सवाल किया, इस तरह शर्मगाहों पर निगाह नहीं पड़ेगी, आप ने इस के जबाब में यही आयत पढ़ी, यानी (لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ) सक्षिप्त (मुख्तसर) आयत ।

2 यह ईमान वालों के चेहरे होंगे जिन को उन के कर्मपत्र (आमालनामा) उन के दायें हाथ में मिलेंगे, जिस से उन्हें अपनी आखिरत की सआदत (सौभाग्य) और कामयाबी का यकीन हो जायेगा जिस से उन के चेहरे खुशी से दमक रहे होंगे ।

* सूरतुत तकवीर : इस सूरेह में खास तौर से क़यामत का चित्रण (जिक्क) किया गया है । इसीलिये रसूल अल्लाह (ﷺ) का कथन है कि जो इंसान चाहे कि क़यामत को इस तरह देखे जैसे आँखों से देखा जाता है तो उसे चाहिए कि वह (إِنَّا الشُّعْرُ كُوْرَتٌ) और (إِنَّا الشَّاءُ فَطْرَتٌ) ध्यान से पढ़े । (तिर्मिजी, तफसीर सूरतुत तकवीर, मुसनद अहमद २: २७, ३६, १०० जकरहुल अलबानी फिस सहीह: न० १०८१, भाग-३)

१. जब सूरज लपेट लिया जायेगा ।^१
२. और जब सितारे बिना प्रकाश (रौशनी) के हो जायेंगे ।
३. और जब पहाड़ चलाये जायेंगे ।
४. और जब गर्भवती (हामेला) उटनियाँ छोड़ दी जायेंगी ।^२
५. और जब वन प्राणी (वहशी, दरिद्र) जमा किये जायेंगे ।
६. और जब समुद्र भड़काये जायेंगे ।
७. और जब प्राणें (रूहे) मिला दी जायेंगी ।
८. और जब जिन्दा गाड़ी गयी लड़कियों से सवाल किया जायेगा ।
९. कि किस पाप की वजह से उन को कत्ल किया गया ।
१०. और जब कर्मपत्र (आमालनामा) खोल दिये जायेंगे ।^३
११. और जब आकाश की खाल खींच ली जायेगी ।^४

- ۱ إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝
- ۲ وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ۝
- ۳ وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝
- ۴ وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝
- ۵ وَإِذَا الْوُحُوشُ حُجِرَتْ ۝
- ۶ وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝
- ۷ وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ۝
- ۸ وَإِذَا النُّفُوسُ سُئِلَتْ ۝
- ۹ يَا أَيُّ ذُنُوبِكُمْ مُبِيَّتْ ۝
- ۱۰ وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝
- ۱۱ وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ۝

^१ यानी जिस तरह सिर पर पगड़ी लपेटी जाती है, उसी तरह सूरज को लपेट दिया जायेगा, जिस की वजह से उसकी रौशनी खुद खत्म हो जायेगी ।

^२ ʿEshar बहुवचन (जमा) है ʿEshar का गर्भवती (हामेला) यानी गाभिन उटनियाँ जब उनका गर्भ (हमल) दस महीनों का हो जाता है तो अरबों में यह पसन्दीदा और क्रीमती मानी जाती थी । जब क्रयामत होगी तो ऐसा भयानक दृश्य (मंजर) होगा कि अगर किसी के पास इस तरह की क्रीमती उटनियाँ होगी तो उन्हें भी छोड़ देगा और उनकी परवाह नहीं करेगा ।

^३ मौत के वक्त यह कर्मपत्र (आमालनामा) लपेट दिये जाते हैं, फिर क्रयामत के दिन हिसाब के लिये खोल दिये जायेंगे जिन्हें हर इंसान देख लेगा बल्कि हाथों में पकड़वा दिये जायेंगे ।

^४ यानी वह इस तरह उधेड़ दिये जायेंगे जैसे छत उधेड़ दी जाती है ।

१२. और जब जहन्नम भड़कायी जायेगी ।
१३. और जब जन्नत करीब कर दी जायेगी ।
१४. तो उस दिन हर इंसान यह जान लेगा, जो कुछ लेकर आया होगा ।
१५. मैं कसम खाता हूँ पीछे हटने वाले ।
१६. चलने-फिरने वाले छिपने वाले सितारों की
१७. और रात की जब जाने लगे ।
१८. और सुबह की जब चमकने लगे ।
१९. बेशक यह एक वाइज़हत रसूल का कथन (क्रौल) है ।
२०. जो ताकत वाला है, अर्श वाले (अल्लाह) के करीब बुलन्द मर्तवा है ।
२१. जिसका वहाँ (आसमानों पर आज्ञा का) पालन किया जाता है (वह) न्यासिक (अमीन) है।
२२. और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है ।^१
२३. उस ने उस (फरिश्ते) को आकाश के खुले किनारे पर देखा भी है ।

وَلَمَّا الْحَجِيمُ سُورَتْ ﴿١٢﴾

وَلَمَّا الْجِنَّةُ أُزْلِفَتْ ﴿١٣﴾

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ﴿١٤﴾

فَلَا أَقِيمُ بِالْخُفْسِ ﴿١٥﴾

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ﴿١٦﴾

وَالَيْلِ إِذَا عَسَفَسَ ﴿١٧﴾

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ﴿١٨﴾

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ﴿١٩﴾

ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ﴿٢٠﴾

مُطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ﴿٢١﴾

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِجُنُونٍ ﴿٢٢﴾

وَلَقَدْ رَآهُ بِالأُلْفِ الْعَيْنِينَ ﴿٢٣﴾

^१ عَنْس का दोनों मतलब है आना और जाना, यह इन दोनों ही मायनों में इस्तेमाल होता है, फिर भी यहाँ जाने के मायने में है ।

^२ यह खिताब मक्का के लोगों को है और साथी से मुराद रसूल अल्लाह (ﷺ) है यानी जो तुम सोचते हो कि तुम्हारा साथी मोहम्मद (ﷺ) दीवाना है तो ऐसा नहीं, तनिक कुरआन पढ़कर तो देखो क्या कोई पागल ऐसे इल्म और हिक्मत का बयान कर सकता है और पिछली समुदायों (क्रौम) की सही-सही हालत बता सकता है जो इस कुरआन में बयान किये गये हैं ।

२४. और यह परोक्ष (मैव) की बातें बताने में कजूस भी नहीं है ।'

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٌ ﴿٢٤﴾

२५. और यह (कुरआन) धिक्कृत (मरदूद) रैतान का क्रील नहीं ।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَّجُومٍ ﴿٢٥﴾

२६. फिर तुम कहाँ जा रहे हो ।

فَأَيْنَ تَذْهَبُونَ ﴿٢٦﴾

२७. यह तो सारी दुनिया वालों के लिए नसीहत है ।

إِنَّ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلظَّالِمِينَ ﴿٢٧﴾

२८. (खास तौर से उस के लिये) जो तुम में से सीधे रास्ता पर चलना चाहे ।

لِيَمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ﴿٢٨﴾

२९. और तुम बिना सारी दुनिया के रब के चाहे कुछ नहीं चाह सकते ।^१

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾

सूरतुल इफितार-८२

سُورَةُ الْإِنْقِطَارِ

सूरतुल इफितार मक्का में नाजिल हुई और इस में उन्नीस आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

१. जब आकाश फट जायेगा ।

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾

२. और जब सितारे झड़ जायेंगे ।

وَإِذَا النُّجُومُ انْتَثَرَتْ ﴿٢﴾

^१ यह नबी (ﷺ) के बारे में स्पष्ट (बाज़ेह) किया जा रहा है कि आप को जिन बातों की खबर दी जाती है, जो आज्ञा (अहकाम) और फरायेज आप को बतलाये जाते हैं इन में से कोई बात आप अपने पास नहीं रखते, बल्कि संदेश (पैगाम) पहुँचाने के जिम्मेदारी का एहसास करते हुए हर बात और हुक्म लोगों को पहुँचा देते हैं ।

^२ यानी तुम्हारी चाहत अल्लाह की मेहरबानी पर निर्भर (मुन्हसिर) है जब तक तुम्हारी चाहत के साथ अल्लाह की इच्छा और दया भी शामिल न हो उस समय तक तुम सीधा रास्ता नहीं अपना सकते । यह वही विषय है जो आयत (إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ) बगैरह में बयान हुआ है ।

३. और जब समुद्र वह चलेगा ।

وَإِذَا الْبِحَارُ فَجُورَتْ ③

४. और जब कब्रें (फाड़कर) उखाड़ दी जायेंगी।

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ④

५. उस समय हर इंसान अपने आग भेजे हुए और पीछे छोड़े हुए (यानी अगले-पिछले कर्मों को) जान लेगा ।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ⑤

६. हे इंसान! तुझे अपने दयालु रब से किस चीज ने बहकाया !^१

يَأْتِيهَا الْإِنْسَانُ مَا عَزَاكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ⑥

७. जिस (रब ने) तुझे पैदा किया फिर ठीक-ठाक किया फिर (मुनासिब तरीके से) बराबर बनाया ।

الَّذِي خَلَقَكَ فَسَوَّبَكَ مُغَدَّاكَ ⑦

८. जिस रूप में चाहा तुझे बना दिया और तुझे ढाला !^२

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ⑧

९. कभी नहीं, बल्कि तुम तो सजा और बदले के दिन को झुठलाते हो ।

كَلَّا بَلْ تُكَلِّمُونَ بِالذِّمِينِ ⑨

१०. बेशक तुम पर रक्षक (निगरां)

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ⑩

११. इज्जत वाले-लिखने वाले निर्धारित (मुकरर) हैं ।

كِرَامًا كَاتِبِينَ ⑪

१२. जो कुछ तुम करते हो वे जानते हैं ।

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ⑫

१३. बेशक नेक लोग (जन्नत के ऐशो आराम और) नेमतों से फायदेवा उठाने वाले होंगे ।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ⑬

^१ यानी किस चीज ने तुझे धोखे में डाल दिया कि तूने अपने रब के साथ कुफ्र किया जिस ने तुझे अस्तित्व (वजूद) दिया, तुझे समझ बूझ दी और जिन्दगी के सामान तेरे लिए तैयार किये ।

^२ इसका एक मतलब तो यह है अल्लाह बच्चे को जिस तरह चाहे कर दे । बाप के, माँ के या मामू या चचा की तरह । दूसरा मतलब है वह जिस रूप में चाहे ढाल दे यहाँ तक कि बद्सूरत जानवर की तरह भी पैदा कर सकता है, लेकिन यह उसका करम और मेहरबानी है कि वह ऐसा नहीं करता और अच्छे इंसानी रूप में ही पैदा करता है ।

१४. और यकीनी तौर से बुरे लोग जहन्नम में होंगे ।

وَأِنَّ الْعَجَّارَ لِنَفِي جَحِيمٍ ﴿١٤﴾

१५. बदले वाले दिन उस में जायेंगे ।

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٥﴾

१६. वे उस में से कभी गायब न हो पायेंगे ।

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ﴿١٦﴾

१७. तुझे कुछ पता भी है कि बदले का दिन क्या है?

وَمَا آذْرَكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٧﴾

१८. मैं दोबारा (कहता हूँ कि) तुझे क्या पता कि बदले (और सजा) का दिन क्या है ।

ثُمَّ مَا آذْرَكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ﴿١٨﴾

१९. (वह है) जिस दिन कोई इंसान किसी इंसान के लिये किसी चीज का सुखतार न होगा, और सभी हुक्म उस दिन अल्लाह के ही होंगे ।

يَوْمَ لَا تَنْفِكُ نَفْسٌ لِنَفْسٍ شَيْئًا وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ﴿١٩﴾

सूरतुल मुतफफेफीन-८३

سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ

सूरतुल मुतफफेफीन* मक्का में नाजिल हुई और इस में छत्तीस आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

१. बड़ी बुराई है नाप-तौल में कमी करने वालों के लिये ।

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ﴿١﴾

२. कि जब लोगों से नाप कर लेते हैं, तो पूरा-पूरा लेते हैं ।

الَّذِينَ إِذَا كَتَبُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ﴿٢﴾

३. और जब उन्हें नाप कर या तौल कर देते हैं तो कम देते हैं ।

وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وُزَنُوا لَهُمْ يُخْسِرُونَ ﴿٣﴾

* सूरतुल मुतफफेफीन : कुछ लोग इसे मक्की और कुछ मदीनी करार देते हैं, कुछ के ह्याल से मक्का और मदीना के बीच नाजिल हुई, इस के अवतरण (नुजूल) के बारे में यह रिवायत है कि जब नबी (ﷺ) मदीने में आये तो मदीना के लोग नाप-तौल में बहुत बुरे लोग थे इसलिए अल्लाह ने यह सूरत उतारी, जिस के बाद उन्होंने अपनी नाप-तौल सुधार ली ।

४. क्या उन्हें अपने मरने के बाद जिन्दा हो उठने का यकीन नहीं है।

५. उस बड़े भारी दिन के लिए।

६. जिस दिन सभी लोग सारी दुनिया के रब के सामने खड़े होंगे।

७. बेशक बदकारों का कर्मपत्र (आमालानामा) सिज्जीन में है।¹

८. तुझे क्या पता कि सिज्जीन क्या है?

९. (यह तो) लिखी हुई किताब है।

१०. उस दिन झुठलाने वालों की बड़ी दुर्गति (खराबी) है।

११. जो बदले और सजा के दिन को झुठलाते रहे।

१२. उसे केवल वही झुठलाता है, जो हद से तजाबुज कर जाने वाला और पापी होता है।

१३. जब उस के पास हमारी आयतों का पाठ (तिलावत) होता है, तो कह देता है कि यह पहले के लोगों की कहानियाँ हैं।

१४. यह नहीं! बल्कि उन के दिलों पर उन के कर्म (अमल) की वजह से मोरचा (जंम) चढ़ गया है।

۴ اَلَا يَتْلُوْنَ اَوْلِيَاكَ اَنْهَم مَبْعُوْتُوْنَ ۙ

۵ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۙ

۶ يَوْمٍ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ

۷ كَلَّا اِنَّ كِتٰبَ الْفَجٰرِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ۙ

۸ وَمَا اَدْرٰكَ مَا سِجِّيْنٍ ۙ

۹ كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ۙ

۱۰ وَيَلْوِيْ وَيَمْسِي الْكٰتِبِيْنَ ۙ

۱۱ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ يَوْمَ النَّوِيْنِ ۙ

۱۲ وَمَا يَكْتُمُ بِهٖ اِلَّا كُلُّ مَعْصِيَ الْاَيْمٰنِ ۙ

۱۳ اِذَا تَتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا فَآل

اَسَاطِيْرَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ

۱۴ كَلَّا بَلْ سَوَّآءَ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَا كَانُوْا

يَكْسِبُوْنَ ۙ

¹ सिज्जीन कुछ कहते हैं कि सिज्जीन (कारागार) से है यानी जेल की तरह एक तंग जगह है। कुछ कहते हैं कि यह पाताल में एक जगह है जहाँ काफिरों, बहुदेववादियों (मुशरिकों) और जालिमों की आत्मायें (रूहें) और उन के कर्मपत्र (आमालानामा) जमा और महफूज होते हैं, इसलिए आगे उसे लिखी हुई किताब कहा है।

१५. यही नहीं, ये लोग उस दिन अपने रब के दर्शन (जियारत) से भी वंचित (महरूम) रहेंगे ।^१

كَلَّا إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ
لَمَحْجُورُونَ ﴿١٥﴾

१६. फिर ये लोग यक़ीनी तौर से जहन्नम में झोंक दिये जायेंगे ।

ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ﴿١٦﴾

१७. फिर कह दिया जायेगा यही है वह जिसे तुम झुठलाते रहे ।

ثُمَّ يُقَالُ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ
تَكْذِبُونَ ﴿١٧﴾

१८. अवश्य अवश्य सदाचारियों का कर्मपत्र (आमालनामा) इल्लीईन में है ।^२

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ﴿١٨﴾

१९. तुझे क्या पता कि इल्लीईन क्या है?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيِّينَ ﴿١٩﴾

२०. (वह तो) लिखी हुई किताब है ।

كِتَابٌ مَرْقُومٌ ﴿٢٠﴾

२१. उसके निकट समीपवर्ती (मुकर्रब) फरिश्ते मौजूद होते हैं ।

يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢١﴾

२२. यक़ीनी तौर से सदाचारी लोग बड़े सुख में होंगे ।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ﴿٢٢﴾

२३. मसहरियों पर (बैठ) देख रहे होंगे ।

عَلَى الْأَرْبَابِ يُنظَرُونَ ﴿٢٣﴾

२४. तू उन के मुंह से ही सुखों की ताजगी को पहचान लेगा ।^३

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ لَضِرَّةَ النَّعِيمِ ﴿٢٤﴾

२५. ये लोग बहुत शुद्ध (मुहरबन्द) शराब फिलाये जायेंगे ।^४

يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَعْمُورٍ ﴿٢٥﴾

^१ इस के विपरीत ईमान वाले अल्लाह के दर्शन (जियारत) से सम्मानित (सरफराज) होंगे ।

^२ इल्लीईन उलू (ऊँचाई) से है । यह सिज्जीन के विपरीत आकाशों में या स्वर्ग या सिद्धतुल मुन्तहा या अर्श (अल्लाह के सिंहासन) के पास जगह है जहाँ नेक लोगों की आत्मायें (रूहें) और उन के कर्मपत्र महफूज होते हैं जिस के करीब मुकर्रब फरिश्ते मौजूद रहते हैं ।

^३ जिस तरह दुनिया के खूबहाल लोगों के चेहरे पर आम तौर से ताजगी और हरियाली होती है जो उन के सुख-सुविधाओं का द्योतक (मजहर) होती है जो उन्हें ज्यादा से ज्यादा हासिल होती है । इसी तरह जन्नत वालों पर आदर-सम्मान और उपहारों की जो अधिकता होगी उस के असर उन के चेहरों पर भी दिखाई पड़ेंगे और अपनी खूबसूरती, जीनत, रौशनी और नूर से पहचान लिये जायेंगे कि वह स्वर्गीय (जन्नती) हैं ।

^४ मَعْمُورٌ रहीक पाक या साफ शराब को कहते हैं जिस में किसी चीज की मिलावट न हो । मुहर लगी हुई, इस की सफाई की ज्यादा स्पष्टीकरण (वजाहत) के लिये है ।

२६. जिस में कस्तूरी की मुहर लगी होगी इच्छा (तमन्ना) करने वालों को उसी की ही इच्छा करनी चाहिये ।

२७. और उस में तस्नीम की मिलावट होगी !^१

२८. यानी वह जल श्रोत (चश्मे) जिसका पानी निकटवर्ती (मुकर्रब) लोग पीयेंगे ।

२९. बेशक पापी लोग ईमान वालों का मजाक उड़ाया करते थे ।

३०. और उनके करीब से गुजरते हुए कनखियों (और इशारे से) उनकी बेइज्जती करते थे ।^२

३१. और जब अपनों की तरफ लौटते तो दिल्लीगी करते थे ।

३२. और जब उन्हें देखते तो कहते कि बेसक ये लोग गुमराह (कुमार्ग) हैं ।^३

३३. ये उन पर रक्षक (निगरा) बनाकर तो नहीं भेजे गये ।

३४. तो आज ईमानवाले उन काफिरों पर हंसेंगे ।

حَتْمُهُمْ مَسْكٌ وَفِي ذَلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ
الْمُتَنَافِسُونَ ﴿٢٦﴾

وَمِزَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ﴿٢٧﴾

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ﴿٢٨﴾

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا
يَضْحَكُونَ ﴿٢٩﴾

وَإِذَا آمَرُوا بِهِمْ يْتَغَامَزُونَ ﴿٣٠﴾

وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا
فَكَهِينٌ ﴿٣١﴾

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَالُونَ ﴿٣٢﴾

وَمَا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ﴿٣٣﴾

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ
يَضْحَكُونَ ﴿٣٤﴾

^१ तस्नीम का मतलब ऊँचाई है, ऊँट की कोहान जो उस के शरीर से ऊँची होती है उस नाम सिनाम कहा जाता है। कब्र के ऊँचा करने को भी तस्नीम तसनीम कुबूर कहा जाता है, मतलब यह है कि उस में तसनीम नाम की शराब की मिलावट होगी, जो स्वर्ग के ऊपरी हिस्सों से एक चश्मा (श्रोत) के जरिये आयेगी यह जन्नत की सब से अच्छी और बेहतर शराब होगी ।

^२ तस्नीम का मतलब होता है पत्कों और भवों से इशारा करना, यानी एक-दूसरे को पत्कों और भवों का इशारा करके उनकी बेइज्जती और उन के धर्म पर ताना करते थे ।

^३ यानी मुसलमान, मुशरिकों की निगाह में और ईमान वाले काफिरों की नजर में गुमराह (कुपथ) होते हैं, यही हालत आज भी है, गुमराह अपने को सच्चा और सच्चे को गुमराह विश्वास (यकीन) कराते हैं ।

३५. सिंहासन पर बैठे देख रहे होंगे ।

عَلَى الْأَرْسَالِكِ يَنْظُرُونَ ﴿٣٥﴾

३६. कि अब इंकार करने वालों ने जैसा ये किया करते थे पूरा-पूरा बदला पा लिया !

هَذَا ثُوبَ الْكَفَّارِ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ﴿٣٦﴾

सूरतुल इश्किाक-८४

سُورَةُ الْاِنْشِقَاقِ

सूरतुल इश्किाक मक्का में नाज़िल हुई और इस में पच्चीस आयतें हैं ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है ।

१. जब आकाश फट जायेगा ।

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ﴿١﴾

२. और अपने रब के हुक्म को कान लगाकर सुनेगा, और उसी के लायक वह है ।

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحَسَّتْ ﴿٢﴾

३. और धरती (खींच कर) फैला दी जायेगी ।

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾

४. और उस में जो है उगल देगी और खाली हो जायेगी ।^१

وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ﴿٤﴾

५. और अपने रब के हुक्म पर कान लगायेगी, और उसी के लायक वह है ।

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحَسَّتْ ﴿٥﴾

६. हे इंसान! तू अपने रब से मिलने तक यह कोशिश और सभी काम और मेहनत करके उस से मुलाकात करने वाला है ।

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلِيقِيهِ ﴿٦﴾

७. तो उस समय जिस इंसान के दाहिने हाथ में कर्मपत्र (आमालनामा) दिया जायेगा ।

فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ﴿٧﴾

^१ ثُوبٌ का मतलब है أُوبٌ बदला दिये गये, यानी क्या काफिरों को वह जो कुछ करते थे बदला दिया गया है ।

^२ यानी जो मुर्दे ज़मीन में गड़े हैं, सब ज़िन्दा होकर बाहर निकल आयेगे, जो खजाने उस के भीतर मौजूद है वह उन्हें जाहिर कर देगी और खुद बिल्कुल खाली हो जायेगी ।

८. उसका हिसाब तो बड़ी आसानी से लिया जायेगा ।¹

فَسَوْفَ يَحَاسِبُ حَسَابًا يَسِيرًا ⑧

९. और वह अपने परिवार वालों की तरफ खुश होकर लौट आयेगा ।

وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ⑨

१०. लेकिन जिस इंसान का कर्मपत्र (आमाल-नामा) उसकी पीठ के पीछे से दिया जायेगा ।

وَأَمَّا مَنْ أُوثِيَ كِتَابَهُ وِرَاءَ ظَهْرِهِ ⑩

११. तो वह मौत को बुलाने लगेगा ।

فَسَوْفَ يَدْعُوا ثُبُورًا ⑪

१२. और भड़कती हुई जहन्नम में दाखिल होगा ।

وَيُضَلَّىٰ سَعِيرًا ⑫

१३. यह इंसान अपने परिवार में (संसार में) खुश था ।

إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ⑬

१४. उसका विचार था कि अल्लाह की तरफ लौटकर ही न जायेगा ।

إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَحُورَ ⑭

१५. यह कैसे हो सकता है, हालांकि उसका रब उसे अच्छी तरह देख रहा था ।

بَلَىٰ ۗ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ⑮

१६. मुझे शम की लाली (सुखी) की कसम !²

فَلَا أَقْسِمُ بِالشَّفَقِ ⑯

¹ सरल हिसाब यह है कि मोमिन का आमालनामा पेश किया जायेगा उस के दोष (गुनाह) भी उस के सामने लाये जायेंगे फिर अल्लाह अपनी रहमत और फजल से उसे माफ़ कर देगा । हजरत आयेशा फरमाती हैं कि रसूल अल्लाह (ﷺ) ने फरमाया : जिसका हिसाब लिया गया वह बर्बाद हो गया । मैंने कहा हे अल्लाह के रसूल ! अल्लाह मुझे आप पर वलिदान (कुर्बान) करे, क्या अल्लाह ने नहीं फरमाया कि जिस के दायें हाथ में कर्मपत्र दिया गया उसका हिसाब आसान होगा । (हजरत आयेशा का मतलब यह था कि इस आयत के मुताबिक तो मोमिन का भी हिसाब होगा लेकिन वह तबाही से दोचार नहीं होगा) । आप ने स्पष्ट (बाजेह) किया यह तो पेशी है~ यानी मोमिन के साथ हिसाब का मामला नहीं होगा एक सरसरी पेशी होगी! मोमिन अल्लाह के आगे पेश किये जायेंगे जिस से पूछताछ हुई वह मारा गया । (सहीह बुखारी, तफसीर सूरतुल इश्किाक)

² शफ़क़ उस सली को कहते हैं जो सूरज के डूबने के बाद आकाश में प्रकट (जाहिर) होती है और ईश का समय शुरू होने तक रहती है ।

१७. और रात की और उसकी जमा चीजों की कसम ।

وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝۱۷

१८. और पूरे चांद की कसम ।^१

وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝۱۸

१९. बेशक तुम एक हालत से दूसरी हालत में पहुँचोगे ।^२

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَن طَبَقٍ ۝۱۹

२०. उन्हें क्या हो गया है कि ईमान (विश्वास) नहीं लाते ।

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝۲۰

२१. और जब उन के पास कुरआन पढ़ा जाता है तो सज्दा नहीं करते ।^३

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۝۲۱

२२. बल्कि जिन्होंने कुफ्र किया वह झुठला रहे हैं ।

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يَكْذِبُونَ ۝۲۲

२३. और अल्लाह (तआला) अच्छी तरह जानता है, जो कुछ ये दिलों में रखते हैं ।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ ۝۲۳

२४. तो उन्हें दर्दनाक अजावों की खुशखबरी सुना दे ।

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝۲۴

२५. लेकिन ईमानवालों और सदाचारियों (नेक लोगों) को अनगिनत और बहुमार बदला दिया जायेगा ।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ۝۲۵

^१ **إِذَا اتَّسَقَ** का मतलब है जब वह पूरा हो जाये जैसे वह तेरहवी की रात से सोलहवी तारीख तक की रात में रहता है ।

^२ **طَبَقًا** का असल मायने कठिनाई है, यहाँ अभिप्राय (सुराह) वह कठिनाईयाँ हैं जो क़यामत के दिन घटित (बाक़ेअ) होंगी यानी उस दिन एक से बढ़कर एक हालत आयेगी (फ़तहूल बारी, तफ़सीर सुरतुल इश्काक) यह क़सम का जवाब है ।

^३ हदीसों से यहाँ नबी (ﷺ) और सहावा का सज्दा करना सिद्ध (साबित) है ।

सूरतुल बुरूज-८५

सूरतुल बुरूज भक्का में नाज़िल हुई और इस में वाईस आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. बुजों वाले आकाश की कसम ।^१
२. वादा किये हुए दिन की कसम ।
३. हाज़िर होने वाले और हाज़िर किये गये की कसम ।^२
४. (कि) खाई वाले मारे गये ।
५. वह एक आग थी ईंधन वाली ।
६. जबकि वह लोग उस के आसपास बैठे थे ।
७. और मुसलमानों के साथ जो कर रहे थे उस को अपने सामने देख रहे थे ।

سُورَةُ الْبُرُوجِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ①

وَالْيَوْمِ الْوَعْدِ ②

وَشَاهِدٍ وَمَشْهُودٍ ③

فَمِثْلِ أَصْحَابِ الْأَنْدَادِ ④

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ⑤

إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ⑥

وَهُمْ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ⑦

सूरतुल बुरूज : नबी (ﷺ) जोहर और असर में सूरतुत्तारिक और सूरतुल बुरूज पढ़ते थे। (तिर्मिजी)

^१ بُرُوجُ यह بُرُوجُ (अवन का गुंबद) का बहुवचन (जमा) है। بُرُوجُ का असल भायना है जुहर, यह सितारों की मंजिलें हैं जिन्हें उन के घर की हैसियत हासिल है जाहिर और रौशन होने के बजह से उन्हें बुरूज कहा जाता है, तफसील के लिये देखिये अलफुरकान ६१ का हाशिया। कुछ ने बुरूज से मुराद सितारे लिये हैं यानी सितारों वाले आकाश की कसम। कुछ के ख्याल में इस से आकाश के दरवाजे या चांद की मंजिल मुराद है। (फतहल कदीर)

^२ شَاهِدٍ और مَشْهُودٍ की व्याख्या (तफसीर) में बड़ा इख्तिलाफ है। इमाम शौकानी ने हदीसों और रिवायतों की बिना पर कहा है कि शाहद से मुराद जुमा (सुक्रवार) का दिन है। इस दिन जिस ने जो कर्म (अमल) किया होगा यह कयामत के दिन उसकी गवाही देगा और मशहूद से अफर् (१ जिलहिज्जा) का दिन है, जहाँ लोग हज के लिये जमा और हाज़िर होते हैं।

८. ये लोग उन मुसलमानों से किसी दूसरे पाप का बदला नहीं ले रहे थे, सिवाय इस के कि वे बड़े गालिब तारीफ के लायक अल्लाह की ताकत पर ईमान लाये थे।¹

९. जिस के लिये आकाशों और धरती का राज्य है और अल्लाह (तआला) के सामने है हर वस्तु (चीज)।

१०. बेशक जिन लोगों ने मुसलमान मर्दों और औरतों को सताया, फिर माफ़ी भी न मागी, उन के लिये नरक की यातना (अजाब) है और जलने का अजाब है।

११. बेशक ईमान कुबल करने वालों और नेक काम करने वालों के लिए वे बाग हैं जिन के नीचे (ठंडे पानी की) नहरे बह रही हैं, यह बड़ी कामयाबी है।

१२. बेशक तेरे रब की पकड़ बड़ी सख्त है।

१३. वही पहली बार पैदा करता है और वही दोबारा जिन्दा करेगा।

१४. वह बड़ा माफ़ करने वाला और बहुत प्रेम करने वाला है।

१५. अर्ब का स्वामी (मालिक) महान है।

१६. जो चाहे उसे कर देने वाला है।

१७. तुझे सेनाओं की खबर भी मिली है।

१८. यानी फिरऔन और समूद की।

وَمَا تَقْوَامُهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ
الْحَمِيدِ ⑧

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَى
عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ⑨

إِنَّ الَّذِينَ قَتَلُوا النَّفْسَيْنِ وَالنُّفُسِ
ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ
عَذَابُ الْحَرِيقِ ⑩

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ⑪

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ⑫

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ⑬

وَهُوَ الْغَفُورُ الْودُودُ ⑭

ذُو الْعَرْشِ الْحَمِيدُ ⑮

فَقَالَ لِمَا يُرِيدُ ⑯

هَلْ أَمَّاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ⑰

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ⑱

1 यानी उन लोगों का अपराध जिनको अग में झोका जा रहा था यह था कि वह प्रभुत्वशाली (गालिब) अल्लाह पर ईमान लाये थे इस (किया का बयान सहीह हदीसों में मौजूद है।

१९. (कूछ नहीं) वल्कि काफिर तो झुठलाने में पड़े हुए है।

२०. और अल्लाह (तआला) भी उन्हें हर तरफ से घेरे हुए है।

२१. वल्कि यह कुरआन है बहुत महिमा (तारीफ) वाला।

२२. सुरक्षित (महफूज) किताब में लिखा है।

सूरतुत्तारिक-८६

सूरतुत्तारिक* मक्का उतरी और इस में सतरह आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. कसम है आसमान की और अंधेरे में प्रकट (जाहिर) होने वाले की।

२. तुझे मालूम भी है कि वह रात को जाहिर होने वाली चीज क्या है।

३. वह रौशनी वाला सितारा है।^१

४. कोई ऐसा नहीं जिस पर रक्षक (फरिश्ते) न हों।^२

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ①

وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ②

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ ③

فِي نُوحٍ مُّحْفُوظٍ ④

سُورَةُ الطَّارِقِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ①

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ②

التَّجْمُ الثَّاقِبُ ③

إِنْ كُنْ نَفِيسًا عَالِيهَا حَافِظٌ ④

* सूरतुत्तारिक : हजरत खालिद उदवानी ने कहा कि मैंने रसूल अल्लाह (ﷺ) को सक्कीफ के बाजार में धनुष या लाठी के सहारे खड़े देखा, आप उन के पास उन से मदद लेने आये थे, वहाँ मैंने आप से सूरतुत्तारिक सुनी और मैंने उसे याद कर लिया, जब कि मैं अभी मुसलमान नहीं हुआ था फिर मुझे अल्लाह ने इस्लाम से सम्मानित (सरफराज) किया और इस्लाम की हालत में मैंने उसे पढ़ा। (मुसनद अहमद ४१३३५)

^१ तारिक से क्या मुराद है, कुरआन ने खुद साफ कर दिया प्रकाशमान (रौशन) सितारा। طَارِقٌ यना है طُرُوقٌ से जिसका मतलब खटखटाना है, लेकिन طَارِقٌ रात के आने वाले के लिए इस्तेमाल होता है, तारों को भी तारिक इसी बजह से कहा जाता है कि वह दिन को छुप जाते और रात को निकलते हैं।

^२ यानी हर जान पर अल्लाह की तरफ से फरिश्ते तैनात हैं जो उसके भले-बुरे सभी कर्म (अमल) लिखते हैं।

५. इंसान को देखना चाहिए कि वह किस चीज से बनाया गया है ।
६. वह एक उछलते पानी से पैदा किया गया है।
७. जो पीठ और छाती के बीच से निकलता है ।
८. बेशक वह उसे फेर लाने पर जरूर सामर्थ्य (कुदरत) रखने वाला है ।^१
९. जिस दिन छिपे भेदों (राज) की जांच पड़ताल होगी ।
१०. तो न कोई जोर चलेगा उसका और न कोई मददगार होगा ।
११. वर्षा वाले आकाश की क्रसम ।^२
१२. और फटने वाली धरती की क्रसम ।^३
१३. बेशक यह (कुरआन) यकीनन दो टूक फेंसले करने वाली भाषा (जुबान) है ।
१४. और यह हँसी की (और वेकार की) बात नहीं ।
१५. लेकिन वे (काफिर) दाँव-घात में हैं ।^४

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ﴿٥﴾

خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ﴿٦﴾

يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ ﴿٧﴾

إِنَّهُ عَلَى رَجُوعِهِ لَقَادِرٌ ﴿٨﴾

يَوْمَ تَبْلَى السَّرَائِرُ ﴿٩﴾

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ﴿١٠﴾

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ﴿١١﴾

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الطُّنُجِ ﴿١٢﴾

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ﴿١٣﴾

وَمَا هُوَ بِأَهْوَأُ ﴿١٤﴾

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ﴿١٥﴾

^१ यानी इंसान के मरने के बाद वह उसे दोबारा जिन्दा करने पर सामर्थ्य (कादिर) है ।

^२ رَجْعِ का शब्दिक अर्थ (लपझी भायने) है, लौटना और पलटना, वर्षा भी वार-वार पलट-पलट कर होती है, इसलिए वर्षा को رَجْعِ के शब्द से व्यंजित (ताबीर) किया गया है। कुछ कहते हैं कि बादल समुद्रों से पानी लेता है फिर वही पानी समुद्र को पलटा देता है, इसलिए वर्षा को رَجْعِ कहा जाता है ।

^३ यानी धरती फटती है तो उस से पौधा बाहर निकलता है, धरती फटती है तो चश्मा (स्रोत) जारी हो जाता है। इसी तरह एक दिन आयेगा कि धरती फटेगी और मुर्दे जिन्दा होकर बाहर निकल आयेगे इसलिये धरती को फटने वाली कहा गया है ।

^४ यानी नबी (ﷺ) जो धर्म लेकर आये हैं उसे नाकाम करने की साजिश रचते हैं, या नबी (ﷺ) को धोखा देते हैं और मुंह पर ऐसी बातें करते हैं कि दिल में उसके खिलाफ होता है ।

१६. और मैं भी एक दाव चल रहा हूँ।^१

१७. तू काफ़िरो को मौका दे, उन्हें थोड़े दिनों के लिए छोड़ दे।

सूरतुल आला-८७

सूरतुल आला* भक्का में नाज़िल हुई और इसमें उन्नीस आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अपने बहुत ही बलन्द रब के नाम की पाकी बयान कर।^१

२. जिस ने पैदा किया और सही और स्वस्थ (सेहतमंद) बनाया।

३. और जिस ने अंदाज़ा लगाकर मुकर्रर किया फिर रास्ता दिखाया।

४. और जिस ने ताजा घास पैदा की।

५. फिर उस ने उसको (सुखा कर) काला कूड़ा कर दिया।

६. हम तुझे पढ़ायेंगे, फिर तू न भूलेगा।

وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝١٦

فَمَهْلِكُ الْكَافِرِينَ أَهْمَهُمْ زُرُودًا ۝١٧

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ الْعَلِيُّ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ۝١

الَّذِي خَلَقَ قَسْوَى ۝٢

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى ۝٣

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى ۝٤

فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَى ۝٥

سَنُقَرِّبُكَ فَلَا تَنْسَى ۝٦

^१ यानी उनकी चालों और षडयंत्रों (साजिश) से अचेत (माफ़िल) नहीं हूँ, मैं भी उन के खिलाफ उपाय कर रहा हूँ, या उनकी चालों का तोड़ कर रहा हूँ, छिपी साजिश को कहते हैं जो बुरे उद्देश्य (मक़सद) के लिए हो तो बुरी है और मक़सद भला हो तो धुरा नहीं।

* सूरतुल आला : रसूल अल्लाह (ﷺ) यह सूरत और सूरतुल गाशिया इदैन एवं जुमा में पढ़ते थे। इसी तरह वित्र की पहली रकअत में सूरतुल आला, दूसरी में अलकाफिरून और तीसरी में सूरतुल इखलास पढ़ते थे। हज़रत मुआज़ को जिन सूरतों के पढ़ने का हुकम दिया था उन में एक यह भी थी (सिहाह में यह सभी तफसील मौजूद हैं)।

^२ यानी ऐसी चीज़ों से अल्लाह की पवित्रता (पाकीज़गी) जो उस के लायक नहीं है। हदीस में आता है कि नबी (ﷺ) इस के जवाब में पढ़ा करते थे। (सुखनरि الأعلیٰ) (मुसनद अहमद, १२३२ अबू दाऊद, कितानुस सलात, बावुद दुआ फिस सलाते, अलवानी ने सहीह कहा है)।

७. लेकिन जो कुछ अल्लाह चाहे वह खुले और छिपे को जानता है ।

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ
وَمَا يَخْفَى ⑦

८. हम आप के लिए आसानी पैदा कर देंगे ।

وَنُبَيِّنُكَ لِيُسْرَى ⑧

९. तो आप शिक्षा (नसीहत) देते रहें अगर शिक्षा कुछ फायदे दे ।

فَذَكِّرْ إِنْ نَفَعَتِ الْذِكْرَى ⑨

१०. डरने वाला तो नसीहत हासिल कर लेगा ।^१

سَيَذَكِّرْهُ مَنْ يَخْشَى ⑩

११. (लेकिन) दुर्भाग्यपूर्ण (बदनसीब) उस से दूर रह जायेगा ।

وَيَجْنِبُهَا الرَّسُقَى ⑪

१२. जो बड़ी आग में जायेगा ।

الَّذِي يَصُلِّ النَّارَ الْكُبْرَى ⑫

१३. जहाँ फिर न वह मर सकेगा न जियेगा^२ (वल्कि जान निकलने की हालत में पड़ा रहेगा)

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ⑬

१४. बेशक उस ने कामयाबी प्राप्त (हासिल) कर ली, जो पाक हो गया ।

فَإِنَّا فَخَّرْهُ مِنْ تَرْتِيبَى ⑭

१५. और जिस ने अपने रब का नाम याद रखा और नमाज पढ़ता रहा ।

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ⑮

^१ यह भी मिसाल है, हम आप पर प्रकाशना (बह्यी) आसान कर देंगे ताकि उसे याद करना और उसके मुताबिक अमल करना आसान हो जाये, हम आप को वह रास्ता दिखायेंगे जो आसान होगा । हम जन्नत के काम आप के लिये आसान कर देंगे । हम आप के लिये ऐसे अमल और कौल आसान कर देंगे जिन में भलाई हो और हम आप के लिये ऐसी शरीअत मुकरर करेंगे जो सरल-सीधी और मुनासिब होगी, जिस में कोई टेढ़ापन, उलझन और तंगी नहीं होगी ।

^२ यानी आप की शिक्षा से वह जरूर नसीहत हासिल करेंगे, जिन के दिलों में अल्लाह का डर होगा, उन में अल्लाह के डर और अपने सुधार की ख्वाहिश ज्यादा शक्तिशाली हो जायेगी ।

^३ इस के खिलाफ जो लोग सिर्फ अपने पापों की सजा भोगने के लिये सामायिक रूप (बक्ती तौर) से नरक में रह गये होंगे उन्हें अल्लाह (तआला) ए५. तरह मौत देगा, यहाँ तक कि वह आग में जलकर कोयला हो जायेंगे, फिर अल्लाह अम्बिया बगैरह की सिफारिश से उनको गरोहों के रूप में नरक से निकालेगा उनकी जन्नत की नहर में डाला जायेगा, जन्नती भी उन पर पानी डालेंगे । जिस से वह इस तरह जिन्दा हो जायेंगे जैसे बाढ़ के कूड़े पर अन्न उग आता है । (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान)

१६. लेकिन तुम तो सांसारिक जीवन को श्रेष्ठता (फजीलत) देते हो।

१७. और परलोक (आखिरत) बहुत बेहतर और स्थाई (दायमी) है।

१८. ये बातें पहले की किताबों में भी हैं।

१९. (यानी) इब्राहीम और मूसा की किताबों में।

सूरतुल गाशिया-८८

सूरतुल गाशिया* मक्का में उतरी और इस में छब्बीस आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. क्या तुझे भी छिपा लेने वाली [(प्रलय) (क्रियामत)] की खबर पहुँची है।

२. उस दिन बहुत से मुँह जलील होंगे।

३. (और) दुखों से पीड़ित कण्ठों में होंगे।

४. वे दहकती हुई आग में जायेंगे।

५. और बहुत गर्म (उबलते हुए) स्रोत (चरमे) का पानी उन को पिलाया जायेगा!†

६. उन के लिए मात्र काँटेदार पेड़ों के अलावा कुछ खाना न होगा।‡

بَلْ تُؤْتُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝۱۶

وَالْآخِرَةَ خَيْرًا وَأَبْقَى ۝۱۷

إِنَّ هَذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُولَى ۝۱۸

صُّحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ۝۱۹

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ۝۱

وَجُودًا يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةً ۝۲

عَالَمَةً تَأْسِبَةً ۝۳

صَلَّى نَارًا حَامِيَةً ۝۴

تُسْفَى مِنْ عَيْنٍ أَمِينَةٍ ۝۵

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ صَرِيحٍ ۝۶

* सूरतुल गाशिया : कुछ रिवायत में है कि रसूल अल्लाह (ﷺ) जुमआ की नमाज में सूरतुल जुमआ के साथ सूरतुल गाशिया पढ़ते थे।

† यहाँ वह बहुत खौलता पानी अभिप्राय (सुराद) है जिसकी गर्मी चरम सीमा (इन्तिहा) को पहुँची हो। (फ़तहूल क़दीर)

‡ यह एक काँटेदार झाड़ी है जिस के सूखने पर जानवर उसे खाना पसन्द नहीं करते। जो भी हो यह भी जम्कूम की तरह एक बहुत कड़ुवा दुर्गाधित (बदबूदार), बेमजा अपवित्र (नापाक) खाना होगा जो न शरीर का हिस्सा बनेगा न भूक ही जायेगी।

७. जो न शरीर में वृद्धि (इजाफा) करेगा और न भूख मिटायेगा ।
८. बहुत से मुंह उस दिन खुश और प्रफुल्लित (आसूदा) होंगे ।
९. अपने कर्मों (अमल) की वजह से खुश होंगे ।
१०. बुलन्द जन्नत में होंगे ।
११. जहाँ कोई अश्लील (लर्ब) बात कान में न पड़ेगी ।
१२. जहाँ (ठंडे) जल स्रोत (चश्में) बह रहे होंगे ।
१३. (और) उस में ऊँचे-ऊँचे सिंहासन होंगे ।
१४. और प्याले रखे हुए (होंगे) ।
१५. और एक पकित में रखे हुए तकिये होंगे ।
१६. और कोमल कालीनों बिछी होंगी ।
१७. क्या ये ऊँटों को नहीं देखते कि वे किस तरह पैदा किये गये हैं ।
१८. और आकाशों को, कि किस तरह ऊँचा किया गया है ।
१९. और पहाड़ों की तरफ, कि किस तरह गाड़ दिये गये हैं ।

لَا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ۝۷

وَجُودًا يُؤْمِنُ بِئِنَّامَةٍ ۝۸

لَسَعِبًا رَاضِيَةً ۝۹

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝۱०

لَا تَسْمَعُ فِيهَا لَغْوَةً ۝۱१

فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝۱२

فِيهَا سُرُرٌ مَرْفُوعَةٌ ۝۱३

وَأَكْوَابٌ مَوْضُوعَةٌ ۝۱४

وَنَمَارِقٌ مَضْفُوفَةٌ ۝۱५

وَزَكَرَاتٍ مَبْنُوتَةٌ ۝۱६

أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝۱७

وَأِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝۱८

وَأِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝۱९

↑ ऊँट अरब में साधारणतः (आम) थे और इन अरबों की ज्यादातर सवारी यही थी, इसलिये अल्लाह ने ऊँटों की चर्चा कर के फरमाया कि इनकी रचना पर ख्याल करो। अल्लाह ने उसे कितना बड़ा अस्तित्व (वजूद) दिया है और कितनी शक्ति और बल उस में रखा है इस के बावजूद भी वह तुम्हारे लिये नर्म और ताबे है, तुम उस पर जितना चाहो थोड़ा लादो वह इकार नहीं करेगा, तुम्हारे ताबे होकर रहेगा, इस के सिवा इस का गोस्त तुम्हारे खाने के और उसका दूध तुम्हारे पीने के और उसका ऊन गर्मी हासिल करने के काम आता है ।

२०. और धरती की तरफ, कि किस तरह विछायी गयी है।

وَالِى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ⑳

२१. तो आप नसीहत दे दिया करें (क्योंकि) आप केवल नसीहत देने वाले हैं।

فَذَكِّرْهُنَّ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ㉑

२२. आप कुछ उन पर दारोगा तो नहीं है।

كُنتَ عَلَيْهِم بِصَبِيْرٍ ㉒

२३. लेकिन जो व्यक्ति (इंसान) मुंह फेरने वाला हो और कुफ्र करे।

إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكُفِرَ ㉓

२४. उसे अल्लाह (तआला) बड़ी कठोर यातना (अजाब) देगा।

يُعَذِّبُهُ اللهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ㉔

२५. बेशक हमारी तरफ उनकी लौटाना है।

إِنَّا إِنبَأْنَا إِيَابَهُمْ ㉕

२६. फिर बेशक उन से हिसाब लेना हमारा काम है।

ثُمَّ إِنَّا عَلَيْنَا حِسَابُهُمْ ㉖

सूरतुल फज्र-८९

سُوْرَةُ الْفَجْرِ

सूरतुल फज्र मक्का में उतरी इसमें तीस आयतें हैं।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. कसम है फज्र की।

وَالْفَجْرِ ①

२. और दस रातों की।

وَلَيْالٍ عَشْرِ ②

¹ मशहूर है कि इस के जबाब में اللَّهُمَّ حَسْبِنَا حَسْبَانَا يُسْرًا पढ़ा जाये यह हुआ तो नबी (ﷺ) से सिद्ध (साबित) है जो आप अपनी कुछ नमाजों में पढ़ते थे जैसाकि सूरतुल इबिकाक में गुजरा, लेकिन इस के जबाब में यह पढ़ना आप से सिद्ध नहीं है।

² सूरतुल फज्र : इस से मुराद साधारण (आम) फज्र है किसी खास दिन की फज्र नहीं।

³ इस से ज्यादातर व्याख्याकारों (मुफत्सिरों) के विचार में «जिलहिज्जा» की शुरू की दस रातें मुराद हैं, जिनकी प्रधानता (फज्ीलत) हदीसों में साबित है। नबी (ﷺ) ने फरमाया «जिलहिज्जा» के दस दिनों में किये गये नेक काम अल्लाह को सब से ज़्यादा प्रिय हैं यहाँ तक की अल्लाह के रास्ते में जिहाद भी इतना प्रिय नहीं सिवाय उस जिहाद के जिस में इंसान शहीद (यलिदान) ही हो जाये। (अल बुखारी, किताबुल ईदैन)

३. और सभ और विषम (ताक और जोड़े) की ।

وَالشَّفَعِ وَالْوَتْرِ ③

४. और रात की जब वह चलने लगे ।

وَالنَّيْلِ إِذَا يَسِيرُ ④

५. क्या उन में बुद्धिमानों (अकलमद) के लिए काफी क्रसम है?¹

هَلْ فِي ذَلِكَ مَسْمُورٌ لِّذِي حِجْرٍ ⑤

६. क्या आप ने नहीं देखा कि आप के रब ने आदियों के साथ क्या किया?

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ⑥

७. स्तम्भों (सुतूनों) वाले इरम के साथ ।

إِرمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ⑦

८. जिन के जैसे लोग (दूसरे किसी नगर और) देशों में पैदा नहीं किये गये ।

الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ⑧

९. और समूदियों के साथ जिन्होंने घाटियों में बड़े-बड़े पत्थर काटे थे ।

وَالْمُودِ الَّذِينَ جَاءُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ⑨

१०. और फिरऔन के साथ जो खूंटों वाला था?²

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ⑩

११. उन सभी ने नगरों में सिर उठा रखा था ।

الَّذِينَ طَعَفُوا فِي الْبِلَادِ ⑪

१२. और बहुत उपद्रव (फसाद) मचा रखा था ।

فَاكْتَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ⑫

१३. आखिर में तेरे रब ने उन सब पर अजाब का कोड़ा बरसाया ।

فَصَبَّ عَلَيْهِمُ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ⑬

१४. बेचक तेरा रब घात में है ।

إِنَّ رَبَّكَ لَبَازِلٌ مُّصَادٍ ⑭

१५. इंसान (का यह हाल है) कि जब उसका रब उस की परीक्षा (इम्तेहान) लेता है और

فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ ⑮

¹ اُنَّ से जिन चीजों की क्रसम खाई गई है उनकी तरफ इशारा है, यानी क्या इनकी क्रसम बुद्धिमानों के लिये काफी नहीं है? हिज्र का मतलब होता है रोकना मना करना, इंसानी बुद्धि (अकल) भी उसे गलत कामों से रोकती है, इसलिये अबल को भी हिज्र कहा जाता है ।

² इसका मतलब यह है कि भारी सेनाओं वाला था, जिस के पास खेमों की अधिकता थी जिन्हें खूंटे गाड़ कर खड़ा किया जाता था, या उसकी सद्धती और ज़ुल्म की तरफ इशारा है कि खूंटों के जरिये (द्वारा) उन्हें यातनायें (अजाब) देता था । (फतहुल कदीर)

मान और इज्जत देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा सम्मान (इज्जत) किया ।^१

१६. और जब वह उसकी परीक्षा लेते हुए उसकी जीविका (रोजी) को कम कर देता है, तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मेरा अपमान (बेइज्जती) किया ।^२

१७. ऐसा कभी नहीं,^३ बल्कि (वात यह है कि) तुम (ही) लोग अनाथों (यतीमों) की इज्जत नहीं करते ।^४

१८. और गरीबों को खिलाने की एक-दूसरे को प्रेरणा (तरगीब) नहीं देते ।

१९. और (मृतकों का) उत्तराधिकार (मीरास) समेट-समेट कर खाते हो ।

२०. और धन से जी भरकर प्रेम करते हो ।

२१. बेशक जिस समय धरती कूट-कूटकर बिल्कुल (समतल) बराबर कर दी जायेगी ।

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ
فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ﴿١٦﴾

كَلَّا بَلْ لَأَكْفِرُنَّ الْيَتِيمَ ﴿١٧﴾

وَلَا تَحْضُونَ عَلَى طَعَامِ الْيَسِيرِ ﴿١٨﴾

وَتَأْكُلُونَ التَّرَاثِ الْكَلِيلَةَ ﴿١٩﴾

وَتُحِبُّونَ الْمَالَ حُبَّ جِنَانِ ﴿٢٠﴾

كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًا ﴿٢١﴾

^१ यानी जब अल्लाह किसी को आजीविका (रिज़क) और धन-दौलत देता है तो वह अपने बारे में इस भ्रम (गुमान) में पड़ जाता है कि अल्लाह उस पर बड़ा मेहरबान है जबकि यह वसायल इस्तेहान और परख के लिये होता है ।

^२ यानी वह तंगी में डाल देता है और परीक्षा (इस्तेहान) लेता है तो अल्लाह के बारे में गलत संदेह (शक) करने लगता है ।

^३ यानी वात इस तरह नहीं है जैसे लोग समझते हैं । अल्लाह धन अपने प्यारे बन्दों को भी देता है और नापसंदीदा लोगों को भी, तंगी में भी अपना और परायों दोनों को ग्रस्त (मुब्तिला) करता है, जब अल्लाह धन दे तो उसका झुक दिखाये, गरीबी आये तो सब करे ।

^४ यानी उस के साथ अच्छा सुलूक नहीं करते जिस के वह पात्र (मुस्तहक) है । नबी (ﷺ) का कौल है वह घर सब से अच्छा है जिस में अनाथ के साथ अच्छा व्यवहार किया जाये तथा वह घर सबसे बुरा है जिस में अनाथ (यतीम) के साथ बुरा सुलूक किया जाये फिर अपनी उंगली की तरफ इशारा कर के फरमाया : मैं और अनाथ का पालने वाला जन्नत में इस तरह साथ-साथ होंगे, जैसे यह दो उंगलियाँ साथ मिली हैं । (अबू दाऊद, किताबुल अदब, बाबुन फ़ी जम्मिल यतम)

२२. और तेरा रब (खुद) आ जायेगा और फरिश्ते सफ़े वीध कर आ जायेंगे ।

وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝۲۲

२३. और जिस दिन नरक भी लाया जायेगा, उस दिन इंसान नसीहत हासिल करेगा, लेकिन आज नसीहत हासिल करने का फ़ायदा कहीं?

وَجَاءَ يَوْمَئِذٍ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّى لَهُ التَّوَكُّلُ ۝۲۳

२४. वह कहेगा कि काश, कि मैंने इस जीवन के लिए कुछ (नेकी के काम) पहले से कर रखे होते ।

يَقُولُ يَا لَيْتَنِي قَدَّمْتُ لِحَسَبِي ۝۲۴

२५. तो आज (अल्लाह) की यातनाओं जैसी यातना (अजाब) किसी की न होगी ।

يَوْمَئِذٍ لَا يَعْذُبُ عَذَابًا أَحَدًا ۝۲۵

२६. न उसके बन्धन के जैसा किसी का बन्धन होगा ।

وَلَا يُؤْتِي وَفَاءَةً أَحَدًا ۝۲۶

२७. ऐ सन्तावना (इत्मिनान) वाली आत्मा (रूह) ।

يَا أَيُّهَا النَّفْسُ الطُّمَئِنِّتَةُ ۝۲۷

२८. तू अपने रब की तरफ लौट चल, इस तरह कि तू उस से खुश (प्रसन्न) वह तुझ से खुश ।

ارْجِي إِلَىٰ رَبِّكَ رَاضِيَةً مُّرَضِيَةً ۝۲۸

२९. तो मेरे विशेष दासों (गुलामों) में शामिल हो जा ।

فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۝۲۹

३०. और मेरी जन्नत में चली जा ।

وَادْخُلِي جَنَّاتٍ ۝۳۰

१ उस दिन सभी हक़ केवल एक अल्लाह के हाथ में होंगे दूसरे किसी को उस के आगे साँस लेने की हिम्मत न होगी, यहाँ तक कि उसकी आज्ञा (इजाजत) के बिना कोई किसी की सिफ़ारिश भी नहीं कर सकेगा, ऐसी हालत में काफ़िरों को जो यातना (अजाब) होगी और जिस तरह वह अल्लाह के बन्धन में जकड़े होंगे उसे यहाँ सोचा भी नहीं जा सकता, यह तो अपराधियों और ज़ालिमों की हालत होगी, लेकिन ईमानवालों और नेक लोगों की हालत इस से विल्कुल अलग होगी जैसाकि आगे की आयतों में है ।

सूरतुल बलद-९०

सूरतुल बलद मक्का में नाज़िल हुई और इस में बीस आयते हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. मैं इस नगर की क़सम खाता हूँ^१।

२. और आप इस नगर में मुक़ीम हैं^२।

३. और क़सम है मानवीय पिता और औलाद की^३।

४. बेशक हम ने इंसान को (बहुत) परिश्रम (मुशक्कत) में पैदा किया है।

५. क्या यह विचार करता है कि यह किसी के बश में ही नहीं?

६. कहता (फिरता) है कि मैंने तो बहुत माल खर्च कर डाला।

سُورَةُ الْبَلَدِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَا أُقْسِمُ بِهَذَا الْبَلَدِ^①

وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَذَا الْبَلَدِ^②

وَوَالِدٍ وَمَا وَلَدًا^③

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ^④

أَيْسَبُ أَنْ تَنْ يُقَدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ^⑤

يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَا لَا لُبِّيكَ^⑥

^१ सूरतुल बलद : इस से मुराद मक्का नगर है जिसमें इस सूरत के अवतरण (नुज़ूल) के समय नबी (ﷺ) का निवास था, आप की पैदाईश की जगह भी यही नगर था, यानी अल्लाह आप की पैदाईश की जगह (जन्मभूमि) और रहने की जगह की क़सम ली है जिस से उसकी प्रतिष्ठा (फ़ज़ीलत) का ज़्यादा स्पष्टीकरण (बजाहत) होता है।

^२ यह इशारा है उस वक़्त की तरफ जब मक्का विजय (फ़तह) हुआ, उस वक़्त इस पाक नगरी में अल्लाह ने लड़ाई को वैध (हलाल) कर दिया था जबकि उस में लड़ाई की इजाज़त नहीं, जैसे हदीस है नबी (ﷺ) ने कहा इस नगर को अल्लाह ने उस वक़्त से हुरमत वाला बनाया है जब से आकाश और धरती बनाईं। फिर यह अल्लाह की ठहराई हुरमत की बज़ह से क़यामत तक हुरमत वाला है, न इसका पेड़ काटा जाये न उसके काँटे उखाड़े जाये, मेरे लिए इसे केवल एक पल के लिए हलाल किया गया था आज उसका आदर फिर उसी तरह लौट आया जैसे कल था ----- अगर यहाँ कोई लड़ाई के लिए दलील के तौर पर मेरी लड़ाई पेश करे तो उस से कहो कि अल्लाह के रसूल को इसकी अनुमति (इजाज़त) अल्लाह ने दी थी, जबकि उस ने तुम को यह इजाज़त नहीं दी। (सहीह अलबुखारी, किताबुल इल्म)

^३ कुछ ने इसका मतलब हज़रत आदम और उनकी औलाद लिया है और कुछ के ह्याल से यह साधारण (आम) है हर बाप और औलाद इस में शामिल है।

७. क्या (इस तरह) समझता है कि किसी ने उसे देखा (ही) नहीं?

أَيَحْسَبُ أَنْ لَمْ يَرَهُ أَحَدٌ ۗ (7)

८. क्या हम ने उसकी दो आंखें नहीं बनायीं?

أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۙ (8)

९. और एक जुवान और दो होंठ (नहीं बनाये)?

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۙ (9)

१०. और उसको दोनों रास्ता दिखा दिये।

وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۚ (10)

११. तो उस से न हो सका की घाटी में दाखिल होता।

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۚ (11)

१२. और तू क्या समझा कि घाटी है क्या?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۚ (12)

१३. किसी गर्दन (दास-दासी) को आजाद करना

فَأَنْتَ رَكَبَتِهَا ۚ (13)

१४. या भूख वाले दिन खाना खिलाना।

أَوْ أَطْعَمَهُ فِي يَوْمٍ مُمَسَّكٍ ۚ (14)

१५. किसी क़रीबी यतीम को।

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۚ (15)

१६. या ज़मीन पर पड़े दरिद्र (मिस्कीन) को।

أَوْ مَسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۚ (16)

१७. फिर उन लोगों में से हो जाता जो ईमान लाये^१ और एक-दूसरे को सत्र की और दया (रहम) करने की वसीयत करते हैं।^२

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا بِالضَّرْفِ
وَتَوَاصَوْا بِالرِّحْمَةِ ۚ (17)

१८. यही लोग हैं दायें हाथ वाले।

أُولَئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۚ (18)

१९. और जिन लोगों ने हमारी आयतों के साथ कुफ़्र किया, वही लोग हैं बायें हाथ वाले।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ أَصْحَابُ الشِّمَالِ ۚ (19)

२०. उन्हीं पर आग होगी जो चारों तरफ से घेरे हुए होगी।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤَصَّدَةٌ ۚ (20)

^१ इस से मालूम हुआ कि मजकूर अमल उसी बरत फायदेमंद और परलौकिक सौभाग्य (उखरवी सआदत) की वजह होंगे जय उनका करने वाला ईमान रखता होगा।

^२ ईमानवालों की खासियत है कि वह एक-दूसरे को सत्र और दया की हिदायत देते हैं।

सूरतुब शम्स-९९

सूरतुब शम्स मक्का में उतरी और इसमें पन्द्रह आयते हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. क्रसम है सूरज की और उसकी धूप की।^१

२. क्रसम है चाँद की जब उस के पीछे आये।

३. क्रसम है दिन की जब सूरज को जाहिर करो।

४. क्रसम है रात की जब उसे ढाँक ले।

५. क्रसम है आकाश की और उसके बनाने की।

६. क्रसम है धरती की और उसे बराबर करने की।

७. क्रसम है आत्मा (रूह) की और उसका सुधार करने की।^२

८. फिर समझ दी उस ने पाप की और उस से बचने की।^३

९. जिसने उसे पाक किया वह सफल (कामयाब) हो गया।^४

سُورَةُ الشَّمْسِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ①

وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَّهَا ②

وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّهَا ③

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ④

وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا ⑤

وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا ⑥

وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ⑦

فَالهَمَّاهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ⑧

قَدْ أَلَّخَ مِنْ ذَلَّهَا ⑨

^१ या उस के प्रकाश (रौशनी) की या شمس से मुराद दिन है यानी सूरज और दिन की क्रसम।

^२ या जिस ने उसे सुधार, सुधारने का मतलब है उसके अंगों को संतुलित (मुनासिब) बनाया, बेडब और बेडंगा नहीं बनाया।

^३ النفس का मतलब यह है कि उन्हें अच्छी तरह समझा दिया और नवियों और आसमानी किताबों के जरिये भलाई-बुराई से परिचित (आगाह) करा दिया, यानी मतलब यह है कि उनकी प्रकृति (फितरत) और समझ में भलाई-बुराई, नेकी और पाप का बोध (खबर) रख दिया ताकि वह नेकी को अपनायें और पाप से बचें।

^४ शिकं से पाप से और अखलाकी खराबी से पाक किया, वह आखिरत की भलाई से और कामयाबी से अलंकृत (मुजय्यन) होगा।

१०. और जिस ने उसे मिट्टी में मिला दिया वह नाकाम हो गया ।

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّهَا ﴿١٠﴾

११. समूदियों ने अपनी उद्वण्डता (सरकड़ी) की वजह से झूठलाया ।

كَذَّبَتْ سَمُودٌ بِطُغْيَانِهَا ﴿١١﴾

१२. जब उनमें का बड़ा दुर्भाग्यशाली (बदबख्त) उठ खड़ा हुआ ।

إِذْ انشَبَعَتْ أَشْقَاهَا ﴿١٢﴾

१३. उन्हें अल्लाह के रसूल ने कह दिया था कि अल्लाह (तआला) की ऊँटनी और उस के पीने की बारी की (सुरक्षा करो) ।

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ وَسُقْيَاهَا ﴿١٣﴾

१४. उन लोगों ने अपने रसूलों को झूठा समझ कर उस ऊँटनी को मार डाला^१ तो उन के रव ने उन के पाप की वजह से उन पर विनाश (हलाकत) डाल दिया और फिर विनाश को आम लोगों के लिए कर दिया और उस वस्ती को बराबर कर दिया ।

فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوهَا وَفَدَّ مَدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذُنُوبِهِمْ فَنَسَوْنَهَا ﴿١٤﴾

१५. वह इस प्रकोप (अजाब) के नतीजा से बेखौफ है ।

وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ﴿١٥﴾

सूरतुल लैल-९२

سُورَةُ اللَّيْلِ

सूरतुल लैल मक्का में उतरी और इस में इक्कीस आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

^१ जिस का नाम व्याख्याकारों (मुफस्सिरो) ने केदार विन सालिफ वताया है उस ने ऐसा बुरा काम किया कि हतभागों (बदबख्तों) का सरदार बन गया, सब से बड़ा बदबख्त ।

^२ यह बुरा काम एक ही इंसान केदार ने किया था, लेकिन उस के बुरा काम में पूरी कौम भी उस के साथ थी इसलिए इन सबको बराबर का दोषी माना गया और झूठाने और ऊँटनी के मारने को पूरी कौम से सम्बन्धित (मुताल्लिक) किया गया, जिस से यह नियम मालूम हुआ कि एक बुरा काम अगर कोई बुरा इंसान करे लेकिन पूरी कौम उस बुरे काम का इकार न करे धल्कि उसे अच्छा समझे तो पूरी कौम इस बुरे काम की दोषी मानी जायेगी और इस गुनाह या बुरे काम में बराबर की साझीदार समझी जायेगी ।

१. कसम है रात की जब छा जाये ।
२. और कसम है दिन की जब रौशन हो जाये ।
३. और कसम है उस (ताकत) की जिस ने नर-
मादा को पैदा किया ।
४. बेशक तुम्हारा प्रयत्न (कोशिश) कई तरह
का है ।
५. तो जो इंसान देता रहा और डरता रहा ।
६. और अच्छी बातों की पुष्टि (तसदीक) करता
रहा ।
७. तो हम भी उस के लिये आसानी पैदा कर
देंगे ।^१
८. लेकिन जिसने कजूसी की और निश्चिन्तता
(वेनियाजी) जाहिर किया ।
९. और अच्छी बातों को झुठलाया ।
१०. तो हम भी उस पर तंगी और कठिनाई का
साधन उपलब्ध (मुहय्या) करा देंगे ।^२
११. और उसका माल उस के (मुंह के बल)
गिरते समय कोई काम न आयेगा ।

- ۱ وَآيَلٍ إِذَا يُغْشَى
- ۲ وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى
- ۳ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى
- ۴ إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتَّى
- ۵ فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى
- ۶ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى
- ۷ فَسَنِّيئِرُهُ لِلْيُسْرَى
- ۸ وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى
- ۹ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى
- ۱۰ فَسَنِّيئِرُهُ لِلْعُسْرَى
- ۱۱ وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّى

^१ **يُسْرَى** का मतलब नेकी और **الْحُسْنَى** है, यानी हम नेकी और आज्ञापालन (पैरवी) की उस योग्यता (सलाहियत) देते और उन को उस के लिये सहज कर देते हैं। व्याख्याकार (मुफ़ास्सरीन) कहते हैं कि यह आयत हजरत अबु बक्र सिद्दीक के बारे में उतरी है जिन्होंने छः गुलाम आज़ाद किये, जिन्हें मुसलमान होने के वजह से मक्का के लोग कड़ी सजायें देते थे। (फतहल क़दीर)

^२ **عُسْرَى** (तंगी) से मतलब कुफ़, नाफ़रमानी (अबज़ा) और दुराचार है, यानी हम उस के लिये नाफ़रमानी का रास्ता आसान कर देंगे, जिस से उस के लिये भलाई और सौभाग्य (सआदत) के रास्ते कठिन हो जायेंगे ।

१२. बेशक रास्ता दिखा देना हमारा दायित्व (फर्ज) है।

إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدَىٰ ^{نَهْط} (12)

१३. और हमारे ही हाथ परलोक (आखिरत) और यह लोक (दुनिया) है।

وَأَنَّ لَنَا لِلْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ (13)

१४. मैंने तो तुम्हें शोले मारती आग से डरा दिया है।

فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ (14)

१५. जिस में केवल वह वदनसीब ही प्रवेश (दाखिल) करेगा।

لَا يَصِلُهَا إِلَّا الْأَشْقَىٰ (15)

१६. जिस ने झुठलाया और (उस की पैरवी से) मुख फेर लिया।

الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ (16)

१७. और उस से ऐसा इंसान दूर रखा जायेगा जो सदाचारी (परहेजगार) होगा।

وَسَيَجْعَلُهَا الْأَشْقَىٰ (17)

१८. जो पाकी हासिल करने के लिए अपना माल देता है।

الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ (18)

१९. किसी का उस पर कोई उपकार (एहसान) नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो।

وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَكَ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَىٰ (19)

२०. बल्कि केवल अपने वुलन्द रब की खुशी हासिल करना होता है।

إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ (20)

२१. बेशक वह (अल्लाह भी) जल्द ही खुश हो जायेगा।²

وَأَسْوَفَ يُرْضَىٰ (21)

¹ यानी जो अपना धन अल्लाह की आज्ञानुसार खर्च करेगा ताकि उसका मन और धन पाक हो जाये।

² या वह खुश हो जायेगा, यानी जो इन खुसूसियत से युक्त (मुजय्यन) होगा। अल्लाह (तआला) उसे जन्नत की अनुकम्पारों (नेमतों) और इज्जत अता करेगा जिस से वह खुश हो जायेगा। ज्यादातर व्याख्याकारों (मुफस्सिरो) ने कहा है बल्कि कुछ ने पूरी तरह से सहमति (मर्जी) तक नक़ल किया है कि यह आयतें हजरत अबू बक्र सिद्दीक की शान में उतरी है फिर भी मतलब और मायने के बिना पर साधारण (आम) है, जो भी इन ऊँची सिफ़ात से मुजय्यन होगा वह अल्लाह के दरबार में इसका मुस्तहिक होगा।

सूरतुदुहा-९३

सूरतुदुहा* मक्का में उतरी और इस में ग्यारह आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. कसम है चाशत (सूरज के ऊंचे हो जाने) के समय की।^१

२. और कसम है रात की जब छा जाये।

३. न तो तेरे रब ने तुझे छोड़ा है, न बेजार हो गया है।

४. बेशक तेरे लिए आखिर घुरु से अच्छा है।

५. तुझे तेरा रब जल्द ही (पुरस्कार) देगा और तू खुश हो जायेगा।^२

६. क्या उसने तुझे अनाथ (यतीम) पाकर जगह नहीं दिया?

७. और तुझे रास्ता भूला पाकर हिदायत नहीं दी?^३

سُورَةُ الضُّحَىٰ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالضُّحَىٰ ①

وَآيَلٍ إِذَا سَجَىٰ ②

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ③

وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ④

وَلَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ⑤

أَلَمْ يَجِدَكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ⑥

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ⑦

* सूरतुदुहा : एक बार नबी (ﷺ) बीमार हो गये दो-तीन रातों आप ने तहज्जुद की नमाज नहीं पढ़ी। एक औरत आप के पास आई और कहने लगी, हे मोहम्मद (ﷺ) लगता है तेरे बैतान ने तुझे छोड़ दिया है, दो-तीन रातों से देख रही हूँ कि वह तेरे पास नहीं आया। जिस पर अल्लाह ने यह आयत उतारी। (सहीह अल-बुखारी, तफसीर वददुहा) यह औरत अबूलहब की पत्नी उम्मे जमील थी। (फतहुल बारी)

^१ चाशत (दुहा) उस वक्त को कहते हैं जब सूरज ऊंचा होता है, यहाँ मतलब पूरा दिन है।

^२ इस से सांसारिक विजय (फ़तह) और परलोक (आखिरत) की कामयाबी मुराद है, इस में वह सिफारिश का हक भी शामिल है जो आप को अपने समूह के पापियों के लिये मिलेगा।

^३ यानी तुझे दीन, शरीअत और इंसान का पता नहीं था, हम ने तुझे हिदायत दी, नबूअत दिया और किताब उतारा, नहीं तो तू इससे पहले तो हिदायत के लिये कोशिश कर रहा था।

८. और तुझे गरीब पाकर अमीर नहीं बना दिया?

وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَى ﴿٨﴾

९. तो अनाथ (यतीम) पर तू भी कठोरता न किया कर।

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾

१०. और मांगने वाले को न डाँट-डपट।

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾

११. और अपने स्व के उपकारों (नेमतों) का बयान करता रह।^१

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿١١﴾

सूरतु बरह-९४

سُورَةُ الشَّرْحِ

सूरतु बरह मक्का में उतरी इस में आठ आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

१. क्या हम ने तेरे लिए तेरा सीना नहीं खोल दिया।

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ﴿١﴾

२. और तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया।^२

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ﴿٢﴾

^१ यानी अल्लाह ने तुझ पर जो एहसान किये हैं, जैसे हिदायत, रिसालत और नबूअत से सम्मानित (बाइज़्जत) किया, अनाथ होने के बावजूद तेरे पालन-पोषण और निगरानी की व्यवस्था (तदबीर) की, तुझे सब और माल दिया, उन्हें बुकिया और एहसान की भावना के साथ बयान कर। इस से मालूम हुआ कि अल्लाह की अनुकम्पाओं (नेमतों) की चर्चा और उनका इज़हार अल्लाह को प्यारा है, लेकिन घमन्ड और फख के तौर पर नहीं बल्कि अल्लाह की दयालुता और अनुग्रह (नेमत) का एहसानमद होते हुए उसकी ताकत और कुदरत से डरते हुए कि वह कहीं हम को इन नेमतों से वंचित (महरूम) न कर दे।

^२ यह बोझ चालीस साल नबूअत से पहले का बोझ है, उस ज़माने में आप को अगर अल्लाह ने पापों से सुरक्षित (महफूज़) रखा, किसी मूर्ति को आप ने सज्दा नहीं किया कभी मदिरा पान नहीं किया और दूसरे पापों से भी अलग रहे, फिर भी अल्लाह की इबादत न आप जानते थे न की, इसलिये इस चालीस साल इबादत और आज़ापालन (इताअत) न करने का बोझ आप पर था जो हकीकत में तो नहीं था लेकिन आप के एहसास और बरत ने उसे बोझ बना रखा था। अल्लाह ने उसे उतार देने का एलान करके आप पर एहसान किया।

३. जिस ने तेरी पीठ तोड़ दी थी ।
४. और हम ने तेरा चर्चा बुलन्द कर दिया ।
५. तो बेशक कठिनाई के साथ आसानी है ।
६. बेशक कठिनाई के साथ आसानी है ।
७. तो जब तू खाली हो तो (इबादत में) मेहनत कर ।
८. और अपने रब की तरफ दिल लगा ।

सूरतुत्तीन-९५

सूरतुत्तीन मक्का में उतरी और इस में आठ आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है ।

१. क्रसम है इंजीर की और जैतून की ।
२. और सनायी के तूर (पर्वत) की ।
३. और इस शान्ति (अमन) वाले नगर की ।

الَّتِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ①

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ②

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ③

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ④

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ⑤

وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ⑥

سُورَةُ التِّينِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ①

وَطُورِ سِينِينَ ②

وَهَذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ③

1 यानी जहाँ अल्लाह का नाम आता है, जैसे नमाज़, अजान और दूसरे बहुत सी जगहों पर आप का नाम भी आता है, पुरानी किताबों में आप की चर्चा और सिफ्तों का बयान है । फारिश्तों में आप की शुभ चर्चा है, आप के आज्ञापालन (इताअत) को अल्लाह ने अपना आज्ञापालन कहा है और अपनी इताअत के साथ आप की इताअत का भी हुक्म दिया है, इत्यादि ।

2 इस से अभिप्राय (मुराद) पाक नगर मक्का है जिस में लड़ाई अवैध (हराम) है, इस के सिवा जो इस में दाखिल हो जाये उसको शान्ति मिल जाती है । कुछ व्याख्याकारों (मुफसिरो) का कहना है कि हकीकत में तीन जगहों की क्रसम है, जिन में से हर एक में महान (बड़ा) पैगम्बर भेजे गये । इंजीर और जैतून से मुराद वह इलाका है जहाँ इसकी उपज है और वह वैतुल मोकद्दस है जहाँ हजरत ईसा पैगम्बर (इश्दत) बनकर आये । सिना पहाड़ या सीनीन पर हजरत मूसा को नुबूअत (दूतत्व) प्रदान की गई और मक्का में पैगम्बरों के सरदार हजरत मोहम्मद रसूल अल्लाह (ﷺ) को भेजा गया । (इब्ने कसीर)

४. वेशक हम ने इंसान को बहुत अच्छे रूप में पैदा किया ।

५. फिर उसे नीचों से नीचा कर दिया ।

६. लेकिन जो लोग ईमान लाये और फिर नेकी के काम किये, तो उन के लिए ऐसा बदला है जो कभी खत्म न होगा ।

७. तो तुझे अब बदले के दिन को झुठलाने पर कौन-सी बात उत्साहित (आमादा) करती है ?

८. क्या अल्लाह (तआला) सभी हाकिमों का हाकिम नहीं है?

सूरतुल अलक-९६

सूरतुल अलक* मक्का में उतरी और इस में उन्नीस आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है ।

१. अपने रब का नाम लेकर पढ़ जिस ने पैदा किया ।

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ①

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ②

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ③

فَمَا يَكْفُرُ بِكَ بَعْدَ الْبَيِّنَاتِ ④

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمَ الْحَاكِمِينَ ⑤

سُورَةُ الْعَلَقِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ①

1 यह इशारा इंसान की खूबसूरत उम्र (बहुत ज्यादा उम्र की तरफ) जिस में जवानी और यौवन के बाद बुढ़ापा और कमजोरी आ जाती है और इंसान की समझ बच्चे की तरह हो जाती है ।

2 यह इंसान से खिताब है फटकार के लिए कि अल्लाह ने तुझे अच्छे रूप में बनाया और इसके खिलाफ वह तुझे अपमान के गड़हे में भी गिरा सकता है इसका मतलब है कि दोबारा जीवन देना कठिन नहीं इस के बाद भी तू क्रयामत और बदले का इंकार करता है ।

* सूरतुल अलक : यह सब से पहली प्रकाशना (बह्यी) है जो नबी (ﷺ) पर उस समय आई जब आप हिरा पर्वत की गुफा में उपासना (इबादत) में लीन (मशगूल) थे । फरिश्ते ने आकर कहा पढ़, आप ने फरमाया : मैं तो पढ़ा हुआ नहीं हूँ, फरिश्ते ने आप को ज़ोर से भींचा और कहा पढ़, आप ने फिर वही जवाब दिया, इस तरह तीन बार आप को भींचा (तफसील के लिये देखिए सहीह अलबुखारी, बाब बदउल बह्यी-मुस्लिम अलईमान वाबु बदइल बह्यी) اقرأ जो तेरी तरफ बह्यी की जाती है वह पढ़ خلق जिस ने सारी दुनिया को बनाया ।

२. जिस ने इंसान को खून के लोथड़े से पैदा किया ।
३. तू पढ़ता रह तेरा रब बड़ा करम वाला है ।
४. जिस ने क़लम के द्वारा (ज्ञान) सिखाया ।
५. जिस ने इंसान को वह सिखाया जिसे वह नहीं जानता था ।
६. हकीकत में इंसान तो आपे से बाहर हो जाता है ।
७. इसलिए कि वह अपने आप को बेफ़िक्र (या धनवान) समझता है ।
८. बेचक लौटना तेरे रब की तरफ़ है ।
९. (भला) उसे भी तूने देखा जो (एक बन्दे को) रोकता है ।
१०. जबकि वह बन्दा नमाज़ अदा करता है ।
११. भला बताओ तो अगर वह सीधे रास्ते पर हो ।
१२. या परहेज़गारी का अनुदेश (हुक़्म) देता हो।
१३. भला देखो तो अगर यह झुठलाता हो और मुँह फेरता हो तो ।
१४. क्या यह नहीं जानता कि अल्लाह (तआला) उसे अच्छी तरह देख रहा है ।

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ②

إِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ③

الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ④

عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمُ ⑤

كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِكَفْرٍ ⑥

بِذَنِّهِ إِنَّ زَاوَجَهُ أَتَقَدَّرُ ⑦

إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَىٰ ⑧

أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَىٰ ⑨

عَبْدًا إِذَا صَلَّىٰ ⑩

أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَىٰ الْهُدَىٰ ⑪

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ⑫

أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ⑬

أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ⑭

यानी ख़ालिस, तौहीद (एकेश्वरवाद) और नेकी के कामों की शिक्षा, जो नरक की आग से इंसान को बचा सकती है, तो क्या यह चीज़े [नमाज़ पढ़ना और संयम (तक़वा) की शिक्षा (नसीहत देना)] ऐसी बातें हैं कि उनका विरोध (मुख़ालफ़त) किया जाये और उस पर उसे धमकियाँ दी जायें?

१५. बेशक अगर ये नहीं रूका तो हम उस की पेशानी (ललाट) के बाल पकड़कर घसीटेंगे।

كَلَّا لَئِن لَّمْ يَنْتَهُ لَنَنْفَعُنَا
بِالْقَائِمَةِ ⑮

१६. ऐसी पेशानी जो झूठी और पापी है।

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ⑯

१७. वह अपने सभा वालों को बुला ले।

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ⑰

१८. हम भी नरक के रक्षकों (निगराँ) को बुला लेंगे।

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ⑱

१९. सावधान! उसका कहना कभी न मानना और सज्दा करो और करीब हो जाओ।

كَلَّا لَا تَطِعَهُ وَأَسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ⑲

सूरतुल क़द्र-१७

سُورَةُ الْقَدْرِ

सूरतुल क़द्र* मक्का में उतरी और इस में पांच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

१. बेशक हम ने उसे क़द्र (वरकत) की रात में नाजिल किया।^१

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ①

२. तु क्या समझा कि क़द्र (वरकत) की रात क्या है?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ②

१ पेशानी के इस गुण (सिपत) का मतलब है कि वह झूठी है अपनी बात में, पापी है अपने काम में।

* सूरतुल क़द्र : इस सूरत के मक्की और मदीनी होने में मतभेद (इख्तिलाफ) है, इसका नाम रखने के कारण में इख्तिलाफ है, क़द्र के मायने एहतेराम के भी है, इसी वजह से क़द्र की रात कहते हैं, इसका अर्थ (मायेना) अंदाजा लगाना और फैसला करना भी है, इस में पूरे साल का फैसला किया जाता है, इसीलिये इसे لَيْلَةُ الْحُكْم भी कहते हैं।

२ यानी उतारना शुरू किया और लौहे महफूज से बैतुल इज्जत में जो पहले आकाश पर है उतारा, और वहाँ से जरूरत के मुताबिक नबी (ﷺ) पर उतारता रहा। यहाँ तक कि लगभग २३ साल में पूरा हो गया और लैलतुल क़द्र रमजान ही में होती है। जैसाकि कुरआन की आयत ﴿شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ﴾ से साफ है।

३. कद्र की रात एक हजार महीनों से बेहतर है।

४. इस में (हर काम को पूरा करने के लिये) अपने रब के हुक्म से फरिश्ते और रूह (जिब्रील) उतरते हैं।^१

५. यह रात साक्षात् (सरासर) शान्ति की होती है, और फज्र के निकलने तक (होती है)।

सूरतुल बय्यिन:-९८

सूरतुल बय्यिन: * मदीनें में नाज़िल हुई और इस में आठ आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. अहले किताब के काफ़िर और मूर्तिपूजक लोग, जब तक कि उन के पास स्पष्ट (बाजेह) निशानी न आ जाये रूकने वाले न थे (वह निशानी यह थी कि)

२. अल्लाह (तआला) का एक रसूल जो पाक किताब पढ़े।

३. जिस में ठीक और सही अहकाम हों।^२

لَيْلَةُ الْقَدْرِ حَيَّرَ مَنْ أَلْفَ شَهْرٍ ③

تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ④

سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ⑤

سُورَةُ الْبَيِّنَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
وَالشُّرِكِينَ مُتَّقِلِينَ حَتَّىٰ تَأْتِيَهُمُ
الْبَيِّنَةُ ①

رَسُولٌ مِنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُطَهَّرَةً ②

فِيهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ③

^१ रूह से अभिप्राय (मुराद) हजरत जिब्रील है, यानी फरिश्ते हजरत जिब्रील सहित इस रात धरती पर उतरते हैं और उन कामों को पूरा करते हैं जिनका फ़ैसला इस साल में अल्लाह (तआला) फरमाता है।

* सूरतुल बय्यिन: इसका दूसरा नाम सूरत लम्बिका है। हदीस में है, नबी (ﷺ) ने हजरत उवय्य बिन काब से फरमाया: अल्लाह ने मुझे आज्ञा दी है कि, मैं सूरत (لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا) तुझे पढ़ कर सुनाऊँ। हजरत उवय्य ने पूछा, क्या अल्लाह ने आप के सामने मेरा नाम लिया है, आप ने फरमाया हाँ, जिस पर (बहुत खुशी से) उवय्य की आँखों में आँसू आ गये। (सहीह बुखारी, तफसीर सूरत लम्बिका)।

^२ यहाँ كُتُبٌ किताबों से मुराद शरीअत और क़ुरआन संतुलित (मोतदिल) और सीधे।

४. अहले किताब अपने पास साफ निशानी आ जाने के बाद ही मतभेद (इख्तिलाफ) में पड़कर बंट गये ।

५. उन्हें इस के सिवाय कोई हुकम नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें उसी के लिए धर्म को शुद्ध (खालिस) कर रखें । (इबाहीम) 'एकेश्वरवादी' के धर्म पर, और नमाज़ को कायम रखें और जकात देते रहें, यही धर्म सीधी मिल्लत का है ।

६. बेशक जो लोग अहले किताब में से काफिर हुए और मूर्तिपूजक, वे नरक की आग (में जायेंगे) जहाँ वे हमेशा रहेंगे, ये लोग बहुत बुरी मखलूक हैं ।

७. बेशक जो लोग ईमान लाये और नेकी के काम किये, ये लोग बेहतरीन मखलूक हैं ।

८. उनका बदला उन के रब के पास हमेशा रहने वाले स्वर्ग है जिन के नीचे (ठंडे पानी की) नहरें बह रही हैं जिन में वे हमेशा रहेंगे । अल्लाह (ताआला) उन से खुश हुआ और ये उस से । ये है उसके लिये जो अपने रब से डरे ।^१

وَمَا تَقْرَأُ الَّذِينَ أُولُوا الْكِتَابِ إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَةُ ۗ ﴿٤﴾

وَمَا أُرِيدُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ حَقَّاءَ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ ۗ وَذَلِكَ دِينُ الْقَيِّمَةِ ۗ ﴿٥﴾

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَالشُّرَكِيِّينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۗ أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۗ ﴿٦﴾

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۗ ﴿٧﴾

جَزَاءُ وَّهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ عَدْنٍ يَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۗ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۗ ذَلِكَ لِمَنْ حَسَنَىٰ رَبِّيَ ۗ ﴿٨﴾

^१ حَسَنَى का मतलब है झुकना, एकाग्र (यकसू) होना, बहुवचन (जमा) है यानी बहुदेववाद से एकेश्वरवाद की तरफ और सभी मतों में कटकर इस्लाम धर्म की तरफ झुकते और यकसू होते हुए, जैसे हजरत इबाहीम ने किया ।

^२ यानी यह बदला और खुशहाली उन लोगों के लिये है जो दुनिया में अल्लाह से डरते रहते हैं और इस डर की वजह से अल्लाह की अवज्ञा (नाफरमानी) से बचते हैं । अगर किसी समय इंसानी तकाज़ा की वजह से अल्लाह की नाफरमानी हो गई तो तुरन्त क्षमायाचना (तौबा) कर ली और भविष्य (मुस्तकबिल) के लिये अपना सुधार कर लिया यहाँ तक कि उनकी मौत इसी आज्ञापालन (इताअत) पर हुई न कि नाफरमानी पर । इसका मतलब यह है कि जो अल्लाह का डर रखता है वह नाफरमानी पर दुराग्रह (इसरार) नहीं करता न उस पर वाक़ी रहता और जो ऐसा नहीं करता है हक़ीकत में उसका दिल अल्लाह के डर से खाली है ।

सूरतुज जिल्जाल-९९

सूरतुज जिल्जाल* मदीने में नाजिल हुई और इस में आठ आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. जब धरती पूरी तरह से झिझोड़ दी जायेगी।^१

२. और अपने वोझ बाहर निकाल फेंकेगी।^२

३. और इंसान कहने लगेगा कि उसे क्या हो गया?

४. उस दिन धरती अपनी सभी सूचनायें (खबर) बयान कर देगी।^३

५. इसलिए कि तेरे रब ने उसे हुक्म दिया होगा।

६. उस दिन लोग मुखतलिफ जमाअतों (समूहों) में होकर लौटेंगे ताकि उन्हें उनके कर्म (अमल) दिखा दिये जायें।

سُوْرَةُ الزَّلْزَلَاتِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ①

وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَنْفَالَهَا ②

وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ③

يَوْمَئِذٍ تُخْبِرُكَ اَنْفَالَهَا ④

بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ⑤

يَوْمَئِذٍ يَخْبِرُ الْاِنْسَانَ اَنْفَاتًا لَا يَخْبِرُهَا

اَعْمَالَهُمْ ⑥

* सूरतुज जिल्जाल : इस के मक्की और मदीनी होने में मतभेद (इखितेलाफ) है, इसकी प्रधानता (फज्जिलत) में अनेकों रिवायतें हैं, लेकिन उन में से कोई भी सही नहीं है।

^१ इसका मतलब यह है कि सख्त भूचाल (जलजला) से पूरी धरती कांप जायेगी और हर चीज टूट-फूट जायेगी, यह समय होगा जब पहला नफ़्खा (फूक) होगा।

^२ यानी धरती में जितने इंसान गड़े हुए हैं वह धरती का वोझ है, जिन्हें धरती क्यामत के दिन निकाल फेंकेगी, यानी अल्लाह के हुक्म से सब जिन्दा होकर बाहर निकल आयेंगे यह दूसरे नफ़्खे (फूक) में होगा। इस तरह धरती के खजाने भी बाहर निकल आयेंगे।

^३ यह शर्त का जवाब है। हदीस में है कि नबी (ﷺ) ने यह आयत पढ़ी और सवाल किया, जानते हो धरती की सूचनाएँ क्या हैं? सहाबा ने जवाब दिया अल्लाह और उस के रसूल अच्छी तरह जानते हैं। आप ने फरमाया : उसकी सूचनायें यह हैं कि जिस बन्दे या बन्दी ने धरती के ऊपर जो कुछ किया होगा उसकी गवाही देगी कहेगी अमुक-अमुक (फला-फला) इंसान ने अमुक-अमुक काम अमुक-अमुक दिन किया था। (तिर्मिज़ी, अबबावु सिफातिल क्रियाम: और तफसीर इजा जुलजिलत, मुसनद अहमद २/३७४)

७. तो जिस ने कण (जर्र) के बराबर भी पुण्य (नेकी) किया होगा वह उसे देख लेगा ।

८. और जिस ने कण (जर्र) के बराबर भी पाप किया होगा, वह उसे देख लेगा ।

सूरतुल आदियात-१००

सूरतुल आदियात मक्का में नाजिल हुई और इस में ग्यारह आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है ।

१. हाँपते हुए दौड़ने वाले घोड़ों की क्रसम ।^१

२. फिर टाप मारकर आग झाड़ने वालों की क्रसम ।^२

३. फिर सुबह (प्रातःकाल) में धावा बोलने वालों की क्रसम ।^३

४. तो उस समय धूल उड़ते हैं ।^४

५. फिर उसी के साथ सेनाओं के बीच घुस जाते हैं ।^५

६. बेशक इंसान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा (कृतघ्न) है ।^६

७. और यक्रीनी तौर से वह खुद भी उस पर गवाह है ।^७

८. और ये माल के प्रेम में भी बड़ा कठोर (सख्त) है ।^८

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۗ

وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۗ

سُورَةُ الْعَادِيَاتِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

۱ وَالْعَادِيَاتِ ضَبْحًا

۲ فَالْمُؤَيَّتِ قَدْحًا

۳ فَالْمُؤَيَّرَاتِ صُبْحًا

۴ فَاتَّرْنَ بِهِ نَقْعًا

۵ فَوَسَطْنَ بِهِ جَمْعًا

۶ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ

۷ وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَلِكَ لَشَهِيدٌ

۸ وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ

^१ सूरतुल आदियात : غازیات यह عادیه का बहुवचन (जमा) है, यह عذر से है जैसे غزو है غازیات की तरह उस के «बाब» को भी या से बदल दिया गया ।

९. क्या उसे वह समय मालूम नहीं, जब कब्रों में जो कुछ है निकाल दिये जायेंगे।

१०. और सीनों में छिपी बातों को जाहिर कर दिया जायेगा।

११. बेशक उन का रब उस दिन उन के हाल से पूरी तरह से परिचित (वाकिफ) होगा।

सूरतुल कारिअः-१०१

सूरतुल कारिअः मक्का में नाजिल हुई और इस में ग्यारह आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. खड़खड़ा देने वाली?

२. क्या है वह खड़खड़ा देने वाली?

३. तुझे क्या पता कि वह खड़खड़ा देने वाली क्या है?

४. जिस दिन इंसान बिखरे हुए पतियों की तरह हो जायेंगे।

५. और पहाड़ धुने हुए रंगीन ऊन की तरह हो जायेंगे।^१

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ⑨

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ⑩

إِنَّ رَبَّهُم بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ ⑪

سُورَةُ الْقَارِعَةِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

① الْقَارِعَةُ

② مَا الْقَارِعَةُ

③ وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ

④ يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ

⑤ وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ

^१ सूरतुल कारिअः : यह भी क़यामत के नामों में से एक नाम है जैसे इस से पहले इस के कई नाम गुज़र चुके हैं, जैसे الْحَاقَةُ अलहाककः, الطَّائِفَةُ अतताम्मः, الْمَسْأَلَةُ अससाख्खः, النَّاشِئَةُ अलगाशियः, السَّاعَةُ अससाअः, الرَّايَةُ अलवाकिअः आदि (बग़ैरह)। अलकारिअः इसे इसलिये कहते हैं कि यह अपनी भयानकता की वजह से दिलों को डराने और अल्लाह के दुश्मनों को अजाब से खबर करेगी जैसे दरवाजा खटखटाने वाला करता है।

^२ عَنْهُنَّ उस ऊन को कहते हैं जो कई रंगों के रंगे हुये हों مَنْفُوش धुने हुए। यह पर्वतों की हालत बताई गई है जो क़यामत के दिन उनकी होगी।

६. फिर जिस के पलड़े भारी होंगे ।
 ७. वह तो बड़े सुखदायी जीवन में होगा ।
 ८. और जिस के पलड़े हल्के होंगे ।
 ९. उसका ठिकाना 'हाविया' है !
 १०. तुझे क्या पता कि वह क्या है ।
 ११. वह बहुत तेज भड़कती हुई आग है !^१

सूरतुत तकासुर-१०२

सूरतुत तकासुर मक्का में नाज़िल हुई और इस में आठ आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

१. अधिकता (ज्यादती) के प्रेम ने तुम्हें अचेत (माफ़िल) कर दिया ।
२. यहाँ तक कि तुम क़ब्रिस्तान जा पहुँचे ।^२
३. कभी नहीं तुम जल्द ही मालूम कर लोगे ।

فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۝٦

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ۝٧

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۝٨

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ۝٩

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَ ۝١٠

نَارٌ حَامِيَةٌ ۝١١

سُورَةُ التَّكَاثُرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَلَيْسَ لَكُمُ التَّكَاثُرُ ۝١

حَتَّى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝٢

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝٣

^१ हाविये नरक का नाम है, उस को हाविया इस वजह से कहते हैं कि नरकीय उसकी गहराई में गिरागा और उसे 'हाँ' (हाँ) से इसलिये व्यंजित (ताबीर) किया गया कि जिस तरह माँ बच्चों के लिए पनाह की जगह होती है इसी तरह नरकीयों के पनाह की जगह नरक होगी । कुछ कहते हैं कि 'हाँ' मायने दिमाग होता है, नरकीय नरक में सिर के बल डाले जायेंगे । (इब्ने कसीर)

^२ जैसे हदीस में है कि इंसान दुनिया में जो आग जलाता है यह नरक की आग का सत्तरवाँ हिस्सा है, नरक की आग दुनिया की आग से उनहत्तर गुना ज्यादा है । (सहीह अलबुखारी)

^३ इस का मतलब यह है ज्यादा पाने के लिए मेहनत करते-करते तुम्हें मौत आ गई और तुम समाधि स्थलों (कब्रों) में जा पहुँचे ।

४. फिर कभी नहीं तुम्हें जल्द ही मालूम हो जायेगा ।

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ﴿٤﴾

५. कभी नहीं अगर तुम यकीनी तौर से जान लो ।

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ﴿٥﴾

६. तो देखक तुम नरक देख लोगे ।

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ﴿٦﴾

७. तो तुम उसे यकीन की आँख से देख लोगे ।

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ﴿٧﴾

८. फिर उस दिन तुम से जरूर-जरूर उपहारों (नेमतों) का सवाल होगा ।^१

ثُمَّ لَتَسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ﴿٨﴾

सूरतुल अस्र-१०३

سُورَةُ الْعَصْرِ

सूरतुल अस्र मक्का में नाज़िल हुई और इस में तीन आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

१. जमाने की क्रसम ।^२

وَالْعَصْرِ ﴿١﴾

^१ यह सवाल उन नेमतों (अनुकम्पाओं) के बारे में होगा जो अल्लाह ने दुनिया में दी है, जैसे आँख, कान, दिल, शान्ति, सेहत, धन, दौलत और संतान (औलाद) आदि कुछ कहते हैं कि सवाल केवल काफिरों से होगा । कुछ कहते हैं कि हर एक ही से होगा क्योंकि केवल सवाल ही अजाब की वजह नहीं होगा, जिन्होंने नेमतों का इस्तेमाल अल्लाह के हुकम के आधीन (ताबे) रहकर किया होगा वह सवाल के बावजूद भी यातना (अजाब) से महफूज रहेंगे और जिन्होंने नाशुक्री की होगी वह धर लिये जायेंगे ।

^२ सूरतुल अस्र : युग (जमाने) से मुराद रात-दिन का यह चक्कर है और उनका अदल-वदल कर आना, रात आती है तो अंधेरा हो जाता है और दिन से हर चीज प्रकाशित (रौशन) हो जाती है, इस के सिवा कभी रात लम्बी और दिन छोटा और रात लम्बी हो जाती है अगर दिनों का यही चक्कर जमाना है जो अल्लाह की पूरी ताकत और क़ुदरत का इशारा देता है इसलिए पालनहार ने उसकी क्रसम ली है । यह पहले बतलाया जा चुका है कि अल्लाह तो अपनी सृष्टि (मखलूक) में से जिसकी चाहे क्रसम खा सकता है लेकिन इंसान के लिये अल्लाह के सिवाय किसी की क्रसम खाना वैध (जायज) नहीं है ।

२. वास्तव (हकीकत) में सारे इंसान सरासर घाटे में है।

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُفٍ ②

३. उन के सिवाय जो ईमान लाये और नेक काम किये और (जिन्होंने) आपस में सच की वसीयत की और एक-दूसरे को धैर्य (सब्र) करने की नसीहत की।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَّصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَّصَوْا بِالصَّبْرِ ③

सूरतुल हुमज: -१०४

سُورَةُ الْحَمْدِ

सूरतुल हुमज: मक्का में नाज़िल हुई और इस में नौ आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

१. बड़ी खराबी है उस इंसान की जो त्रुटियाँ (और) टटोलने वाला चुगली करने वाला हो।^१

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ①

२. जो माल को जमा करता जाये और गिनता जाये।^२

إِنَّمَا يَجْمَعُ مَالًا وَعَدَدُهُ ②

३. वह समझे कि उस का माल उस के पास हमेशा रहेगा।

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدُهُ ③

४. हरगिज नहीं यह तो जरूर तोड़-फोड़ देने वाली आग में फेंक दिया जायेगा।

كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ④

५. और तुझे क्या पता कि ऐसी आग क्या कुछ होगी?

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْحُطَمَةُ ⑤

१ सूरतुल हुमज: **هُمَزَةٌ** और **لُّمَزَةٌ** कुछ के ख्याल में पर्यायवाची (सूतरादिफ) हैं, कुछ उस में कुछ फर्क करते हैं। हुमजा वह इंसान जो सामने बुराई करे और लुमजा जो पीछे-पीछे बुराई करे। कुछ इस से उल्टा मायने करते हैं, कुछ कहते हैं हमज आँखों और हाथों के इशारे से बुराई करना और लम्ज जबान से।

२ इस से अभिप्राय (सूराद) यही है जमा करना और गिन-गिन कर रखना, यानी सैत-सैत कर रखना और अल्लाह की राह में खर्च न करना, नहीं तो धन रखना निषेध (हराम) नहीं यह उसी समय बना है जब ज़कात सदके (दान) और अल्लाह के रास्ते में खर्च करने का इन्तेजाम न हो।

६. वह अल्लाह (तआला) की सुलगायी हुई आग होगी।

نَارُ اللَّهِ الْمَوْقَدَةُ ⑥

७. जो दिलों पर चढ़ती चली जायेगी।

الَّتِي تَكْبُحُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ⑦

८. हर तरफ से बंद की हुई होगी।

إِنهَا عَلَيْهِمْ مُّوَصَّدَةٌ ⑧

९. उन पर बड़े-बड़े स्तम्भ (सुतूनों) में।

فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ⑨

सूरतुल फील-१०५

سُورَةُ الْفِيلِ

सूरतुल फील मक्का में नाजिल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

१. क्या तूने नहीं देखा कि तेरे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया।^१

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ①

२. क्या उस ने उनकी चाल को बेकार नहीं कर दिया?

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ②

३. और उन पर पक्षियों के झुरमुट भेज दियो?

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ③

४. जो उन्हें मिट्टी और पत्थर की कंकरियाँ मार रहे थे।^२

تَرْمِيهِمْ حِجَارًا حَصْبًا مِنْ سِجِّيلٍ ④

५. तो उन्हें खाये हुए भूसे की तरह कर दिया।

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ⑤

^१ सूरतुल फील : इस में हाथी वालों का बयान है जो यमन से खाना कआवा को ढाने आये थे अल्लह का मतलब है أَلَمْ تَرَ क्या तुझे ज्ञान (इल्म) नहीं? यह सवाल सकारात्मक (मुसबत) है, यानी तू जानता है या वह सब लोग जानते हैं जो तेरे जमाने में है, यह इसलिये फरमाया कि अरब में यह घटना घटे अभी ज्यादा समय गुजरा नहीं था। मशहूर कौल के मुताबिक यह घटना (वाकआ) उस समय घटी जिस साल नबी (ﷺ) का जन्म हुआ था इसलिये अरब में उस की खबरें प्रसिद्ध (मशहूर) और लगातार थीं।

^२ سِجِّيلٍ यह किसी पक्षी का नाम नहीं इसका मतलब है टुन्ड !

^३ سِجِّيلٍ मिट्टी को आग में पकाकर बनाये हुए कंकड़। इन छोटे-छोटे कंकड़ों ने तोप के गोलों और बंबूक की गोलियों से ज्यादा विनाश (हलाकत) का काम किया।

सूरतु कुरैश-१०६

सूरतु कुरैश मक्का में नाजिल हुई और इस में चार आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. कुरैश* को प्रेम दिलाने के लिए।
२. (यानी) उन्हें जाड़े और गर्मी की यात्रा (सफर) का आदी बनाने के लिए।
३. तो (उस शुक्रीये में) उन्हें चाहिए कि इसी घर के रब की इबादत करते रहें।
४. जिस ने उन्हें भूख में खाना दिया और डर (और भय) में अमन अता किया।^१

सूरतुल माऊन-१०७

सूरतुल माऊन* मक्का में नाजिल हुई इस में सात आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. क्या तूने (उसे भी) देखा जो बदले (के दिन) को झुठलाता है।
२. यही वह है जो अनाथ (यतीम) को धक्के देता है।^२

سُورَةُ قُرَيْشٍ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

لِأَيِّ قُرَيْشٍ ①

الْفِهِمَ رِحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ②

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ③

الَّذِي أَطْعَمَهُم مِّنْ جُوعٍ لَّهُ وَآمَنَهُمْ مِّنْ حَوَافٍ ④

سُورَةُ الْمُاعِنُونَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالذِّكْرِ ①

فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ الْيَتِيمَ ②

* सूरतु कुरैश : इसे सूरतुल ईलाफ भी कहते हैं, इस का तआल्लुक भी पहले की सूरत से है।

१ अरब में क्रत्ल (हत्या) और लूटपाट सामान्य (आम) थी लेकिन मक्का के कुरैश को हरम की वजह से जो आदर-मान हासिल था उस की वजह से वे भय और डर से महफूज थे।

* सूरतुल माऊन : इस सूरत को सूरतुदीन, सूरत अरअैत, और सूरतुल यतीम भी कहते हैं। (फतहूल क्दरीर)

२ इसलिये कि एक तो कजूस है, दूसरे क्रयामत का इंकारी है, भला ऐसा इंसान यतीम के साथ क्योंकर अच्छा सुलूक कर सकता है? जिस के दिल में धन की जगह मानवीय मूल्यों और अखलाकी उसूलों का महत्व (अहमियत) और प्रेम होगा वही यतीम के साथ सुलूक करेगा, दूसरे यह कि उसे इस बात का यक्रीन हो कि उस के बदले मुझे क्रयामत के दिन अच्छा बदला मिलेगा।

३. और गरीब (भूखे) को खाना खिलाने की प्रेरणा (तरगीब) नहीं देता ।

४. उन नमाजियों के लिए 'वैल' (नरक की एक जगह) है ।

५. जो अपनी नमाज से अचेत (गाफिल) है ।

६. जो दिखावे का काम करते हैं ।

७. और प्रयोग (इस्तेमाल) में आने वाली चीजें रोकते हैं ।^१

सूरतुल कौसर-१०८

सूरतुल कौसर* मक्का में नाज़िल हुई और इस में तीन आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

१. बेश्क हम ने तुझे कौसर (और बहुत कुछ) दिया है ।

وَلَا يَحْضُ عَلَىٰ طَعَامِ الْمِسْكِينِ ۝۳

فَوَيْلٌ لِلْمَصَلِّينَ ۝۴

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝۵

الَّذِينَ هُمْ يَرَاءُونَ ۝۶

وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ۝۷

سُورَةُ الْكَوْثَرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِنَّا آخِطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ۝۱

^१ इस से वह लोग तात्पर्य (मुराद) हैं जो नमाज या तो पढ़ते ही नहीं या पहले पढ़ते रहे फिर आलसी (सुस्त) हो गये, या नमाज उस के नियमित (मुकरर) समय से नहीं पढ़ते या देर से पढ़ने की आदत बना लेते हैं या खुशूअ और ध्यान से नहीं पढ़ते । यह सभी मतलब इस में आ जाते हैं, इसलिए नमाज में सभी गफलतों से बचना चाहिये । यहाँ इस जगह पर चर्चा करने से यह भी स्पष्ट (वाजेह) है कि नमाज यह सुस्ती उन्हीं से होती है जो परलोक (आखिरत) के प्रतिकार (बदले) और हिसाब, किताब पर यकीन नहीं रखते ।

^२ थोड़ी चीज को कहते हैं । कुछ इसका मतलब ज़कात (देयदान) लेते हैं, क्योंकि वह भी असल माल के मुकाबले बहुत कम होती है । (ढाई प्रतिशत) कुछ ने इससे घरों में इस्तेमाल की चीजें ली हैं जो पड़ोसी एक-दूसरे से मंगनी में मांग लिया करते हैं । मतलब हुआ घरेलू प्रयोग की चीजें मंगनी में दे देना, इस में तंगी न जाहिर करना अच्छे गुण (सिपत) हैं और इस के खिलाफ वखीली और कंजूसी बरतना यह क्रयामत के मुकियों का आचरण (अखलाक) है ।

* सूरतुल कौसर : इसका दूसरा नाम सूरतुन नहर भी है ।

२. तो तू अपने रब के लिए नमाज पढ़ और कुर्बानी कर ।^१

३. बेशक तेरा दुश्मन ही लावारिस और बेनाम व निशान है ।

सूरतुल काफिरून-१०९

सूरतुल काफिरून* मक्का में नाजिल हुई और इस में छः आयतें हैं ।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है ।

१. आप कह दीजिये कि हे काफिरो!

२. न मैं इबादत करता हूँ उसकी जिसकी तुम पूजा करते हो ।

३. और न तुम इबादत करने वाले हो उसकी जिसकी मैं इबादत करता हूँ ।

४. और न मैं इबादत करने वाला हूँ उसकी जिस की तुम ने इबादत की ।

५. न तुम उसकी इबादत करोगे जिसकी इबादत मैं कर रहा हूँ ।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَأَنْحَرْ ②

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ③

سُورَةُ الْكَافِرُونَ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ①

لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ②

وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ③

وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ④

وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ⑤

^१ यानी नमाज भी केवल अल्लाह के लिये और कुर्बानी भी केवल एक अल्लाह के नाम पर । मुघरिकों की तरह इस में दूसरों को शामिल न कर। *نَحَرَ* का असल माथेना है ऊँट के गले में नीचा या छुरी मार कर बध (जिब्ह) करना । दूसरे जानवरों को जमीन पर लिटाकर उन के गलों पर छुरी फेरी जाती है उसे जिब्ह करना कहते हैं लेकिन यहाँ नहर से मुराद आम कुर्बानी है, इस के सिवा इस में दान-पुष्य (सदक़ा-खैरात) के रूप में वलि (कुर्बानी) देना, हज के मौक़ा पर मिना में इदुल अजहा के दिन कुर्बानी करना सब शामिल है ।

* सूरतुल काफिरून: सही हदीसों से साबित है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) तवाफ़ की दो रकअतों, और फ़ज़ और मगरिब की सुन्नतों में (قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ) और सूरतुल इक्लास पढ़ते थे । इसी तरह आप ने कुछ सहाबा से फरमाया कि रात को सोते समय यह सूरत पढ़कर सोओगे तो बिकर से बरी माने जाओगे । (मुसनद अहमद ५\४५६, तिर्मिजी ३४०३, अबूदाऊद न० ५०५५)

६. तुम्हारे लिये तुम्हारा धर्म (दीन) है और मेरे लिये मेरा धर्म है।

सूरतुन नस्र-११०

सूरतुन नस्र* मदीने में नाज़िल हुई और इस में तीन आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. जब अल्लाह की मदद और विजय (फतह) हासिल हो जाये।

२. और तू लोगों को अल्लाह के धर्म की तरफ झुंड के झुंड आता देख ले।

३. तो तू अपने रब की महिमा (तस्वीह) और तारीफ करने में लग, और उस से माफ़ी की दुआ कर, वेशक वह माफ़ करने वाला है।

सूरतुल लहब -१११

सूरतु लहब* मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِي دِينِ ⑥

سُورَةُ النَّصْرِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ①

وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَنْزِلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ

أَفْوَاجًا ②

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَأَسْتَغْفِرْهُ

إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ③

سُورَةُ الْتَّهَبِ

* सूरतुन नस्र : अवतरण (नुज़ूल) के हिसाब से यह आखिरी सूरत है (सहीह मुस्लिम, किताबुत तफसीर) यह सूरत उतरी तो कुछ सहाबा समझ गये कि अब नबी (ﷺ) का अन्तिम समय आ गया है, इसलिये आप को तस्वीह और क्षमायाचना (तौबा) का हुक्म दिया गया है, जैसे हजरत इब्ने अब्बास और हजरत उमर का कलाम सहीह बुखारी में है। (तफसीर सूरतुन नस्र)

1 अल्लाह की मदद से अभिप्राय (मुराद) है इस्लाम और मुसलमानों का कुफ्र और काफिरों पर गल्बा, और फतह से मुराद मक्का की फतह है, मक्का फतह से लोगों पर यह बात खल गई कि आप अल्लाह के सच्चे पैगम्बर (सदेष्टा) है और इस्लाम धर्म (दीन) सच्चा धर्म है जिस के बिना आखिरत की नजात मुमकिन नहीं, अल्लाह ने फरमाया कि जब ऐसा हो तो।

* सूरतुल लहब : इसे सूरतु तब्बत भी कहते हैं इस के अवतरण (नुज़ूल) के बारे में आता है कि जब नबी (ﷺ) को हुक्म हुआ कि अपने करीबी रिश्तेदारों को डरायें और उपदेश दें, तो आप ने सफा पर्वत पर चढ़कर بِأَسْمَاء की आवाज़ लगाई, ऐसी आवाज़ खतरे की निशानी मानी जाती थी।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बहुत मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. अबू लहब के दोनों हाथ टूटे गये और वह (खुद) नाश हो गया।

२. न तो उसका माल उसके काम आया और न उसकी कमायी।

३. वह मुस्तक़बिल करीब में भड़कने वाली आग में जायेगा।

४. और उसकी पत्नी भी (जायेगी), जो लकड़ियाँ ढोने वाली है।

५. उसकी गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुई रस्सी होगी।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

كَيْتَبْتَ يَدَا اَبِيْ لَهَبٍ وَتَبَّ ①

مَا اَغْنٰی عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ②

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ③

وَامْرَاَتُهُ حَمٰلَةَ الْحَطِیْبِ ④

فِيْ جَهَنَّمَ حٰبِلًا مِنْْ نَّسَبٍ ⑤

आप (ﷺ) की पुकार पर लोग जमा हो गये। आप ने फरमाया : तनिक बताओ, अगर मैं तुम को खबर दूँ कि इस पहाड़ के पीछे एक घुड़सवार सेना है जो तुम पर हमला करना चाहती है, तो तुम मेरी बात मानोगे? उन्होंने कहा क्यों नहीं। हम ने आप को कभी झूठा नहीं पाया। आप ने फरमाया : फिर मैं तुम्हें एक बड़े प्रकोप (अजाब) से डराने आया हूँ। (अगर तुम कुफ़्र और शिर्क पर डटे रहे) यह सुनकर अबूलहब ने कहा إِنَّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِ तेरा नाश हो, क्या तूने हमें इस के लिये जमा किया था जिस पर अल्लाह ने यह सूरत उतारी। (सहीह अलबुख़ारी, तफ़सीर सूरतु तब्बत) अबूलहब का वास्तविक नाम अब्दुल उज्ज़ा था, उसकी खूबसूरती, शोभा (जीनत) और चेहरे की लाली की वजह से उसे अबू लहब कहा जाता था, इस के सिवा अपने अन्त के आधार पर भी उसे नरक का ईंधन बनना था। यह नबी (ﷺ) का सगा चचा था किन्तु आप का कट्टर दुश्मन और उसकी पत्नी उम्मे जमील बिनते हर्ब भी दुश्मनी में अपने पति से कम न थी।

① गर्दन में खजूर की छाल की बटी हुई रस्सी, वह मूँज की या खजूर की छाल की, या लोहे के तारों की। जैसाकि कई लोगों ने इसका अनुवाद (तर्जुमा) किया है। कुछ ने कहा कि यह दुनियाँ में डाले रखती थी, जिसका बयान किया गया, लेकिन ज़्यादा सहीह बात यह लगती है कि नरक में उस के गले में जो तौक होगा वह लोहे के तारों से बटा होगा। ⑤ से उपमा उसकी कड़ाई और मजबूती को स्पष्ट (साफ़) करने के लिये दी गई है।

सूरतुल इक्लास-११२

सूरतुल इक्लास* मक्का में नाज़िल हुई और इस में चार आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरवान और रहम करने वाला है।

१. (आप) कह दीजिये कि वह अल्लाह एक (ही) है।

२. अल्लाह (तआला) बेनियाज़ है।^१

३. न उस से कोई पैदा हुआ और न उसे किसी ने पैदा किया।^२

४. और न कोई उसका समकक्ष (हमसर) है।^३

سُورَةُ الْإِخْلَاصِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ①

اللَّهُ الصَّمَدُ ②

لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ③

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ④

* सूरतुल इक्लास : यह संक्षिप्त (सुलतसर) सूरत बड़ी प्रधानता (फज़ीलत) रखती है। इसे नबी (ﷺ) ने एक तिहाई कुरआन कहा है और इसे रात को पढ़ने का प्रलोभन (तरगीब) दिया है। (सहीह अलबुखारी) कुछ सहाबा दूसरी सूरतों के साथ हर रकअत में इसे मिलाकर जरूर पढ़ते थे, जिस पर नबी (ﷺ) ने उनसे फरमाया: तुम्हारा इस से प्रेम तुम्हें स्वर्ग में ले जायेगा। (बुखारी, किताबुत तौहीद, किताबुल अज़ान, बाबुल ज़मओ बैनस सूरतैने फिर रकअ: मुस्लिम, किताबु सलमतिन मुसाफिरीन) इस के उतरने की वजह यह बताई गई है कि मुश्रिकीन ने आप से कहा कि अपने रब का नसब बताओ। (मुसनद अहमद, ५(१३३,१३४)

^१ यानी सब उस के सामने मुहताज़ हैं और वह सब से निस्पूह (बेनियाज़) और निरपेक्ष है।

^२ यानी न उस से कोई चीज़ निकली है न वह किसी चीज़ से निकला है।

^३ न उस की ज़ात में न उसकी विशेषताओं में न उस के कर्मों (अमल) में (अथ शूरा-११) हदीसे कुदसी में है कि अल्लाह (तआला) फरमाता है कि इंसान मुझ को गाली देता है यानी मेरे लिये संतान सिद्ध (साबित) करता है। जबकि मैं अकेला हूँ, निस्पूह (बेनियाज़) हूँ, मैंने न किसी को जन्म दिया है, न मैं किसी से पैदा हुआ, न कोई मेरे बराबर है। (सहीह बुखारी, तफसीर कुल हुबल्लाहु अहद) इस सूरत में उनका भी खण्डन (तरदीद) हो गया जो अनेक ईश्वर मानते हैं और उनकी भी जो अल्लाह की औलाद मानते हैं और उनकी भी जो दूसरों को उसका साझी कहते हैं और उनकी भी जो अनिश्चरवादी (नास्तिक) हैं।

सूरतुल फलक-११३

सूरतुल फलक* मक्का में नाज़िल हुई और इस में पाँच आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. आप कह दीजिये कि मैं सुबह के रव की पनाह में आता हूँ।^१

२. हर उस चीज़ की बुराई से जो उस ने पैदा की है।

३. और अंधेरी रात की बुराई से, जब उसका अंधेरा फैल जाये।

४. और गाँठ (लगाकर उन) में फूँकने वालियों की बुराई से (भी)

५. और द्वेष (हसद) करने वाले की बुराई से भी जब वह द्वेष करे।^२

سُورَةُ الْفَلَقِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ①

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ②

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ③

وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ④

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ⑤

* सूरतुल फलक : इस के बाद सूरतुल नास है। इन दोनों की शामिल फज़ीलत कई हदीसों में आई है। मिसाल के तौर पर एक हदीस में नबी (ﷺ) ने फ़रमाया: आज रात मुझ पर कुछ ऐसी आयतें ज़तरी हैं जिन के समान मैंने कभी नहीं देखी। यह फ़रमा कर आप ने यह दोनों सूरतें पढ़ी। (सहीह मुस्लिम, किताबु सलातिल मुसाफ़िरीन) आप (ﷺ) का यह भी नियम था कि रात को सोते समय सूरतुल इख़लास और सुअव्वज़तैन पढ़कर अपने दोनों हथेलियों पर फूँकते फिर उन्हें पूरे शरीर पर मलते, पहले सिर, चेहरे और शरीर के अगले हिस्से पर हाथ फेरते, इस के बाद जहाँ तक आप के हाथ पहुँचते तीन बार आप ऐसा करते। (सहीह अलबुख़ारी, किताबु फ़जायेलिल क़ुरआन, वाबु फ़ज़लिल सुअव्वज़ात)

^१ फ़्लक का सहीह मायना भोर है, सुबह को इसलिये खास किया कि जैसे अल्लाह (तआला) रात को अंधेरा ख़त्म करके दिन की रोशनी ला सकता है वह इसी तरह भय और डर को दूर करके पनाह माँगने वालों को शान्ति भी प्रदान (अता) कर सकता है, या इंसान रात को जिस तरह इस बात के इंतज़ार में रहता है कि सबेरे उजाला हो जायेगा, इसी तरह डरा हुआ इंसान पनाह के ज़रिये कामयाबी के सूरज के निकलने की उम्मीद रखता है। (फ़तहूल क़दीर)

^२ ईप्या (हसद) यह है कि हसद करने वाला दूसरे की अच्छी चीज़ों की ख़त्म करने की कामना (तमन्ना) करता है, इसलिए उस से भी पनाह माँगी गई है, क्योंकि हसद भी एक बड़ा अख़लाकी रोग है जो नेकी को खा जाता है।

सूरतुन नास-११४

सूरतुन नास* मक्का में नाज़िल हुई और इस में छः आयतें हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता है, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. आप कह दीजिये कि मैं लोगों के रय की पनाह में आता हूँ।^१

२. लोगों के मालिक की। (और)

३. लोगों के पूजने लायक की (पनाह में)।^२

४. शंका (शक) डालने वाले पीछे हट जाने वाले की बुराई से।

५. जो लोगों के सीनों में शंका (वसवसा) डालता है।

६. (चाहे) वह जिन्न में से हो या इंसान में से।^३

سُورَةُ النَّاسِ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ①

مَلِكِ النَّاسِ ②

إِلَهُ النَّاسِ ③

مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ④

الَّذِي يُوسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ⑤

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ⑥

* सूरतुन नास : इसकी फ़ज़ीलत पहले की सूरत के साथ बयान की जा चुकी है। एक दूसरी हदीस में है कि नबी (ﷺ) को नमाज़ में बिच्छू ने डस लिया नमाज़ के बाद आप ने पानी और नमक मंगवाकर उसके ऊपर भला और साथ-साथ (قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ) पढ़ते रहे। (मज्मूअज जवायेद ५/१११ और हैसमी ने कहा कि इसकी सनद हसन है)

१ (रब) का मतलब है जो (शुरू) ही से जब इंसान अभी माँ के गर्भाशय ही में होता है उस की तदबीर और सुधार करता है यहाँ तक कि वह बालिग हो जाता है फिर वह यह तरीक़ा केवल कुछ खास लोगों के लिये नहीं बल्कि सभी मानव जाति के लिये करता है और सभी मानव जाति के लिये ही नहीं अपनी पूरी मख़लूक के लिये करता है, यहाँ केवल इंसानों की चर्चा उसकी प्रतिपत्न (फ़ज़ीलत) और प्रधानता (अज़मत) दिखाने के लिये है जो उन्हें पूरी मख़लूक पर हासिल है।

२ जो सारी दुनिया का पालनहार हो, पूरी सृष्टि (मख़लूक) उसी के ताबे है। वही सत्ता इस बात के लायक है कि उसकी उपासना (इबादत) की जाये और वही सब लोगों का पूज्य (माबूद) हो, इसलिए उसी महान और बुलन्द जात की पनाह प्राप्त (हासिल) करता है।

३ यह वसवसा (गुप्त ध्वनि) डालने वाले दो तरह के हैं जिन्नातों के शैतान और मानव जाति के। पहले शैतान को अल्लाह तआला ने इंसान को गुमराह करने की ताकत दी है, उस के सिवाय हर इंसान के साथ उसका एक शैतान साथी होता है जो उसका गुमराह करता रहता है। हदीस में है कि जब नबी (ﷺ) ने यह बात बताई तो सहाबा ने सवाल किया, हे अल्लाह के नबी क्या वह आप के साथ भी है, आप ने कहा, हाँ। लेकिन अल्लाह ने मेरी मदद की है और वह मेरा आज्ञाकारी (फरमावर्दार) है, मुझे भलाई के सिवाय किसी चीज को नहीं कहता। (सहीह मुस्लिम, किताबु सिफ़तिल क्रियामः)।

www.minhajusunat.com

MADARSA AISHA SIDDIQAH LIL-BANAT

Bazed Pur, Gorhaulsharif, Dist. Sitamarhi (Bihar)

Pin Code : 843318 Mob : +966597839988

E-mail : zahidmuslim2008@gmail.com

youtube. channel dcrnkhalis